



# नमः मिक्सानम्बिशहाम्।

# মার্কণ্ডেয় পুরাণ।

# মূল ও বঙ্গানুবাদ-সমেত।

# নিরপেক্ষ-ধর্ম-সঞ্চারিণী সভা হইতে

শ্রীল শ্রীযুক্ত পূজ্যপাদ ভগবান্ সান্তানন্দাচার্য্য মহাপ্রভুর প্রদাদে চতুর্ব্বেদান্তর্গত "অফোত্তরশতোপনিষ্ণ" "পঞ্চদশী" "বেদান্তসার" "গায়জ্ঞী" ও ষড্ দর্শনাদি বিবিধশাস্ত্র প্রকাশক

শ্রীমহেশচন্দ্র পাল-কর্তৃক

সঙ্কলিত ও প্রকাশিত।

( উপনিষং কার্য্যালয়; ১৪১ নং, বারাণদী ঘোষের খ্রীট্; কলিকাতা।)

--:4:--

# কলিকাতা।

বোড়াগাঁকে ; ১৪১ নং, বাবাণদী বোষের ষ্ট্রীট্ ; নিরপেক্ষ ধরে
শ্রীনবকুমার বহু ধারা মুদ্রিত।

শকাব্দাঃ ১৮১২, মাঘ। (All rights reserved.)



RMIC 10421

# সূচীপত্র। ——

| व्यक्षा     | বি ।        | বিষয়                   |       | शृक्षा । | <b>ञ</b> श्  | য়।   | বিষয়                    |                    |         | पृष्ठी ।     |
|-------------|-------------|-------------------------|-------|----------|--------------|-------|--------------------------|--------------------|---------|--------------|
| ১ম ও        | ম:।         | বপুর প্রতি ছর্কাদার শা  | প     | >        | ৩৪ ণ         | ष:।   | সদাচার                   |                    | •••     | ð            |
|             |             | চটকগণেব উৎপত্তি         | • • • | ૭        | ৩৫শ          | ত্য:। | বর্জ্যাবর্জ্য            | •••                | •••     | ৮৬           |
| ৩য় ৭       | ষঃ।         | চটকগণের বিদ্ধ্যপ্রাপ্তি | • • • | ¢        | ৩৬¥          | অ:।   | মদালদোপা                 | খ্যানসমাপ্তি       | • • • • | 66           |
| 8ৰ্থ ব      | ষঃ।         | <b>চতু</b> ৰ্বাহাৰতার   |       | ٦        | তণশ          | ष:।   | আত্মবিবেক                | •                  | • • •   | ঠ            |
| ৫ম ত        | <b>4:</b> 1 | ইন্দ্ৰবিতিয়            |       | >>       | 96.m         | অ:।   | 역박 …                     |                    | •••     | ە ش          |
| क्ष्र       | ষ:।         | বলদেবের ব্রহ্মহত্যা     | •••   | >>       | ৩৯শ          | ত্য:। | বোগাধ্যায়               | •••                | •••     | 22           |
| ৭ম ৭        | অ:।         | দ্রোপদীব পুত্রোৎপত্তি   | •••   | 28       | 8•₩          | ত্য:। | যোগদিদ্ধি                | •••                |         | >8           |
| ৮ম ৭        | ষ:।         | রাজা হরিশ্চজ্রেব উপাথ   | ্যান  | >9       | 82¥          | षः।   | যোগিচৰ্য্যা              | •••                | • • •   | ৯৬           |
| <b>२ग</b> ः | অ:।         | আড়িবকযুদ্ধ …           | •••   | २৮       |              |       | ওঙ্কারস্বরূপ             | কথন                | •••     | *9           |
| ১০ম ৭       | অঃ।         | জীববিপত্তি ···          | • • • | २२       | 8०भ          | ত্য:। | অফ্রিষ্টকথন              | •••                |         | کاھ          |
| ऽऽ¥ ए       | ষঃ।         | গর্ভোৎপত্তিক্রম ···     | •••   | ೨೨       | 88*          | ষ:।   | জর্জেপাখ্যা              | ন …                | • • •   | >०२          |
| ऽ२×१ ९      | অ:।         | নবকাখান …               | • • • | ા        |              |       | ব্ৰ:কাংপত্তি             | •••                | • • •   | 208          |
| ১০শ '       | ञ:।         | देवत्मञ्चाका ···        | •••   | ૭૭       | 8 5 <b>*</b> | ষ:।   | একাব আগু                 | র পবিমাণ           | •••     | ५०१          |
| 78×1        | হাঃ।        | বিবিধ নরকছঃথ বর্ণন      | • • • | ৩৭       |              |       | প্ৰাক্ত ও                | বিক্তফ্ষ্টি        | •••     | ን o b        |
| sem s       | অঃ।         | নবকবর্ণন …              | • • • | 8.2      |              |       | স্ষ্টিপ্রকরণ             | • • • •            | • • •   | >>.          |
| 7.5m        | অ:।         | অনস্যার বব প্রাপ্তি     |       | 88       |              |       | স্থানকল্পনা              | •••                | ٠       | 225          |
| 7*PC        | ञः।         | দতাতেয়েব জন্ম          | • • • | 86       |              |       | यक्ष्यभागन               |                    |         | ٥.٠          |
|             |             | গর্গবাক্য …             | •••   | 68       |              |       | (मोःमःहाः?               | ाडि <b>मगां</b> खि | •••     | 224          |
|             |             | দভাত্রেয়ী সমাপ্তি      | • • • | 62       |              |       | इन् <b>प्र</b> ष्टि      | •••                | •••     | ) <b>? 3</b> |
|             |             | কুবলয়াখেব উপাথাান      | •••   | co       |              |       | মধ্যরকাশন                |                    | • • •   | 258          |
|             |             | মদালসার পরিণ্য          | • • • | æ        |              |       | <b>जश्</b> त्री পवर्गन   |                    | •••     | 252          |
|             |             | মদালদাব বিয়োগ          | • • • | હેરુ     |              |       | ভাবতক্থন                 | •••                | • •     | <b>३</b> २४  |
|             |             | কুবলয়াখের পাতালপ্র     | বশ    | ৬১       |              |       | বৰ্ণবৰ্ণন                | ··•                | •••     | ঐ            |
|             |             | মনাশসার প্রাপ্তি        |       | 30.50    |              |       | ভারতবর্ষবণ               |                    | • • •   | 700          |
|             |             | মদালদার পুরায়শাদন      | •••   | ખુલ      |              |       | কৃৰ্মনিবেশ               |                    | •••     | 255          |
|             |             | পুত্রামূশাসন · · ·      | •••   | 66       |              |       | উত্তৰকুত্ৰবৰ             | न …                | • •     | 2 28         |
|             |             | রাজধর্ম ···             | •••   | 95       |              |       | <b>वर्षदर्शन</b>         | •••                | • • •   | 300          |
|             |             | বৰ্ণাশ্ৰমধৰ্মকথন · · ·  | • • • | 93       |              |       | বাদণবাক্য                |                    | •••     | 208          |
|             |             | গাইস্থাধর্ম ···         | •••   | 98       |              |       | বর্ষপিনীকথ               |                    | •••     | 2 09         |
|             |             | নৈমিত্তিকাদি শ্রাদ্ধকল  | ना    | 40       |              |       | স্বরোচির প               |                    | •••     | 282          |
|             |             | পাৰ্বণশ্ৰাদ্ধকল ···     | •••   | 99       | ৬৪ষ্টি       |       | <b>\( \frac{1}{2} \)</b> | ঐ                  | •••     | 280          |
|             |             | তিথিকল …                | •••   | 95       |              |       | মৃগবাক্য                 | •••                | •••     | >88          |
| ೨೨೫         | অ: ।        | কামাশ্রাদ্ধকলকথন        |       | 63 1     | ৬৬🕏          | वः ।  | স্বরোচির পু              | ণ্যলোকণায়         | 3       | 286          |

# সূচীপত।

| व्यथाप्र। विव                  | ায                   |       | পৃষ্ঠা।    | অধ্যার।   | বিষয়              |                     |           | পৃষ্ঠা।       |
|--------------------------------|----------------------|-------|------------|-----------|--------------------|---------------------|-----------|---------------|
| ৬৭ষ্টি অঃ। স্বরে               | চির মশ্বস্তর         | •••   | >89        | ১০২তম আ   | । মার্গুমাহা       | ब्रा                |           | २५०           |
| ৬৮ টি আ:। নিধি                 | निर्ণय …             | •••   | >84        | ১০৩ চম অঃ | । ব্রহ্মার স্বষ্টি | •••                 | •••       | <b>₹</b> \$\$ |
| ৬৯টি আ:। ঋষিব                  | াক্য …               | •••   | >60        | l .       | । দিবাকরস্তুতি     |                     | •••       | २১১           |
| ৭০ তি অ:। বিজ                  | ভার্যানয়ন           | •••   | >৫৩        | ১০তেম অঃ  | । মার্ক্তভোৎপা     | ন্তি · · ·          | •••       | २১७           |
| ৭১তি সঃ। উত্তঃ                 | <b>অপ্ৰ</b> ত্যাগ্ৰন | •••   | >44        |           | । স্থ্যের তে       | <del>ৰানিশা</del> ত | •्( · · · | <b>₹</b> \$8  |
| ৭২তি অ:। উত্ত                  | মের জন্ম             | • • • | 569        | ১০৭তম্ব:  |                    | •••                 | •••       | २५१           |
| ণ৩তি আং। উত্ত                  | মমস্ভর …             | •••   | 744        |           | । স্থামাহাত্মা     | ফলঐতি               | •••       | २७४           |
| ৭৪তি <b>অঃ</b> । তাম           | সময়স্তর ···         | •••   | 606        | ১০৯তম অ:  | । ভাহুন্তব         | • • •               | •••       | २५५           |
| १६७ घः। देवर                   | তময়স্তর \cdots      | •••   | 393        | ১১০তম অং  | । ভারুমাহাকু       | ••••                | •••       | २२२           |
| ৭৬ <b>তি অ:</b> । চাকু         | र्यगव्छत्र ···       | •••   | 2.98       | ১১১তম অঃ  | । বংশাপ্তক্রম      | • •                 | •••       | <b>२</b> २8   |
| ৭৭তি আ:। স্থে                  | ার <b>তেজঃক্ষ</b> য় | •••   | ১৬৭        | ১১২তম অ:  | । পৃষধের শূদ্র     | তা প্রাপ্তি         | •••       | ঐ             |
| <b>৭৮তি অ:।</b> বৈব            | <b>ন্বতোৎ</b> পত্তি  | •••   | ১৬৯        | ১১৩তম আ   | । নাভাগচরিয        | 5                   | •••       | २२७           |
| <b>৭৯তি অঃ।</b> বৈব            | <i>াম</i> তমধন্তর    | • • • | 290        | ১১৪তম সং  | । প্রমতিশাপ        | •••                 | •••       | २२१           |
| ৮ <b>০তি অঃ</b> । সাব          |                      | •••   | 292        | ১১৫তম অং  | । নাভাগচরিত        | 5                   | •••       | २२৯           |
| ৮> ভি সং। শীশী                 |                      |       | ,          | ১১৬তম অ:  | । বংদপ্রীচরিত      | <b>5</b> ···        | •••       | २७०           |
| •                              | क्रेडिंच्य 🥻         | •••   | 292        | ১১৭তম অ:  | । খনিত্রচরিত       | •••                 | •••       | २७७           |
| ৮২তি আ:। মহিয                  |                      | •••   | 39¢        | '১১৮তম অ: | । के के            | •••                 | •••       | २०৫           |
| ৮০তি অ:। মহিষ                  |                      | •••   | 296        | ১১৯তম অ:  | । বিবিংশচরিত       | 5                   | •••       | ૨ <i>૭</i> ७  |
| ৮৪তি অ:। দেবং                  |                      | •••   | ১৭৯        | ১২০ তম অ: | । খনীনে হচরি       | <b>⋽</b> ···        | •••       | २७१           |
| ৮৫ চি হাঃ। স্গ্রী              |                      | •••   | <b>३४२</b> |           | । করন্ধমচরিত       |                     | • • •     | २०त           |
| ৮৬ <b>তি অ:</b> । ধৃম <i>ে</i> |                      | •••   | 246        | ১२२ ठम घः | । অবীক্ষিতচরি      | ত⊶                  | •••       | ₹8•           |
| ৮৭তি অ:। চওাম্                 | •                    | •••   | ১৮৬        |           | । অবীক্ষিতের       |                     | •••       | २८५           |
| ৮৮তি অ:। রক্ত                  |                      | •••   | >>9        |           | । অবীক্ষিতচরি      | াত⋯                 | •••       | २८७           |
| ৮৯তি অ:। নিভ                   |                      | •••   | ১৮৯        | ১২৫তম অঃ  |                    | •••                 | •••       | २8⊄           |
| ৯০তি অ:। ৩ ভ                   |                      | •••   | 292        | ১২৬তম অ:  |                    |                     | •••       | २89           |
| ৯১তি অ:। দেবী                  |                      | •••   | >७२        |           | । মরুতের জন্ম      |                     | •••       | <b>२</b> 8२   |
| ৯২তি অ:। দেবী                  |                      | •••   | 386        |           | । মক্তবাভিষেক      | ş                   | •••       | २७५           |
| ৯ <b>৩তি অঃ</b> । দেবী         |                      | •••   | ১৯৬        |           | । মুকুত্তচরিত      | •••                 | •••       | २৫२           |
| ৯৪তি অ:। সর্কাস                |                      | •••   | 199        | ১৩০ তম সঃ | _                  | • • •               | •••       | ર <b>¢</b> 8  |
| ৯৫ <b>তি অ:</b> । কৃচি         | • • • •              | •••   | 724        | ১৩১ তম অঃ |                    | •••                 | •••       | २६६           |
| ৯৬ <b>তি অঃ</b> । পিতৃ         |                      | •••   | 222        |           | । নরিষাস্তচরি      |                     | •••       | २৫१           |
| ৯৭ <b>তি আ:</b> । পি হৃণ       |                      | • • • | २०२        |           | । স্থমনাস্বর্ধর    |                     | •••       | २६५           |
| ্ন৮তি অ:। মানি                 |                      | •••   | २०७        |           | । इन्द्रामनात्र क  | ৰ্যি প্ৰবেশ         | •••       | २७১           |
| ୍ନ ৯ ডি আ:। অधि                |                      | •••   | २०४        | ১৩৫ তম অ: |                    | •••                 | •••       | २७७ ।         |
| ১০০তম অ:। চতুর্                |                      | •••   | २०१        | ১৩৬তম অ:  |                    | •••                 | •••       | २७৪           |
| ১০১ <b>তম অ:। আ</b> হি         | रेड)बन्न ⋯           |       | २०२        | L         | । মার্কণ্ডের পু    | রাণ-ফলশ্র           | তি        | २७७           |
|                                |                      | সূচী  | ীপত্ৰ      | সমাপ্ত।   |                    |                     |           |               |

দূচীপত্ৰ সমাপ্ত

# মার্কভেয়পুরাণম্।

# প্রথমোইধ্যায়ঃ।

বৃদ্বোগিভির্ভরাঠিবিনাশযোগ্যমাধাদ্য বনিত্যতীব বিবিজ্চিতৈঃ। ভবঃ পুনাতু হরিপাদ্দরোজ্যুগ্যমাবির্বংক্রমবিশ্জিবত্তুর্বঃ খঃ॥ পাবাং স বঃ সকলকল্যভেদদক্ষঃ কীবোদক্কিজ্পিডোগনিবিউম্রিঃ। খাসাবধ্তস্লিলোংক্পিকাকগানঃ সিদ্ধুঃ প্রেন্তামিব যন্তঃক্রোতি সঙ্গাং॥

নাবারণং নমস্ভা নরঞ্চৈব নরোভ্যম্। 🔆 দেবীং সর্মভীং ব্যাসং ততো জয়মূদীর্মেৎ ॥ তপঃস্বাধ্যামনিরতং মার্কভ্রেং মহামুনিম্। ব্যাস্পিষ্যো মহাতেজা জৈমিনিঃ প্র্যুপ্তত ॥ ভগবন্ ভারতাখ্যানং ব্যাদেনোকং মহাত্মনা। পূর্ণমন্তমলৈঃ ভটেন্রন্নি।শাস্ত্রসমূচ্চবৈঃ॥ জাতিগুলিসমাযুক্তং সাধুশব্দেগে শোভিতন্। পূর্বপক্ষো ক্রিসিদান্তপরিনিষ্ঠাসমবিতম্॥ जिल्लानाः यथा विकृषि लिलाः वाकारा। यथा। ভূষণানাঞ্চ সর্কেষাং यथा চূড়ামণিকরঃ॥ यथायुधानाः कृतिनिमिख्यानाः रणा मनः। তত্থের সর্কাশালাণাং মহাভারতমূত্রম্।। অত্রার্থ টেশ্চব ধর্মান্চ কামো মোক্ষশ্চ বর্ণাতে। পরস্পরামুবর্দা<u>\*</u>চ সামুবন্ধা\*চ তে পৃথক্॥ ধর্মাজমিদং শ্রেষ্ঠমর্থশার্ত্রমম্। কামশান্ত্রনিদং চাগ্রাং মোক্ষশান্ত্রমিদং পরম্॥ চতুরাশ্রমধর্মাণামাচারস্থিতিসাধনম্। প্রোক্তমেত মহাভাগ বেদব্যাদেন ধীমতা।। ভথা তাত ক্বতং হেতদ্ব্যাদেনোদারকর্মণা। ষধা ব্যাপ্তং মহাশাল্তং বিরোটধর্নাভিভূয়তে॥ ব্যাসৰাক্যজলোঘেন কৃতৰ্কভক্ষহারিণা। বেদদৈশাৰতীৰ্ণেন নীরজ্বা মহী কুতা।

कलभक्तरहार्यः मधाशानि वतासूक्षम्। कथाविङीर्गिलिनः काछर त्रामशङ्गम ॥ তদিবং ভারতাথ্যানং বহুর্থং ঐতিবিস্তর্ম। তত্ত্বতো জ্ঞাতুকামোহ্ছং ভগবংখ্যামুপস্থিতঃ॥ ক্যানামুষতাং প্রাপ্তো নিও গোহপি জনার্দনঃ বাস্থদেবে। জগংফ্তিস্থিতিসংযমকারণম্॥ কশাচ্চ পাণ্ডুপুৰাণামেক। সা জপদাশ্মজা। পঞানাং মহিধী ক্লফা হতে নঃ সংশ্যোমহান্॥ ভেষজং ব্রহতারো বলদেবো মহাবলঃ। তীর্থাত্রাপ্রসঙ্গেন কক্ষাচ্চক্রে হলায়ধঃ॥ कर्पक ट्योनटनशांट उरुकु उनाता महात्रवाः। পাও নাথা মহাত্মানো বধমাপুরনাথবং॥ এতং সর্দ্রং বিস্তরশো সমাথ্যাতুমিহাইসি। ভবস্থে। মূচবৃদ্ধীনাং অববোধকরাঃ সদা॥ ইতি ভক্ত বচঃ শ্রহা মার্কভেয়ো মহামূনিঃ। দশাইদোধরহিতে। বজুং সমুপচক্রমে॥

• মার্কণ্ডের উবাচ।

জিমাকালোহ্যসন্থাকং সাম্প্রভং সংপ্রবর্তনে। বিস্তবে চাপি বক্তবে। নৈম কালঃ প্রশস্ততে॥ মে তুবক্ষান্তি বক্ষোহ্দা তানহং কৈমিনে তব। তথা চন্ট্যমেকঃ ডাং ক্রিয়ান্তি প্রিণঃ॥ পিকাক্ষণ্ড বিবোধণ্ড স্থপতঃ সুমুধস্তথা। জোণপুত্রাঃ খগশ্রেঠা স্বব্জাঃ শান্ত্রচিস্তকা: ॥ বেদশাস্ত্রার্থবিজ্ঞানে যেষামব্যাহতা মতিঃ। বিদ্যাকন্দরমধ্যস্থাংস্তান্ত্পাস্ব চ পুছত চ। এবমুক্তন্তদা ভেন মাক্তেয়েন ধীমতা। প্রভাবাচর্ষিশার্দ্য বিশ্বয়োৎকুল্লোচনঃ ॥ देकिंगिनिक्द १ ।

অতান্ত্রমিদং একান্থগবাগিক মাতুষী। যৎ পক্ষিণত্তে বিজ্ঞানমাপুরতাতত্ত্তিম্॥ তিৰ্যাগ্যোক্তাং যদি ভবস্তেষাং জানং কুতে ২ভবৎ কর্থক দ্রোণভনগাঃ প্রোচাত্তে তে পতত্তিণঃ॥ কশ্চ দ্রোণঃ প্রবিখ্যাতো যক্ত পুত্রচতৃষ্ট্রম্। षाতং গুণবতাং তেযাং ধর্মকানং মহামানাম্।

### মার্কভেয় উবাচ।

**मृ**ंप्षाविहित्त्। ভূषा यम्त्रुलः नन्तन পूरा । শক্রতাপরসাধ্যেব নারদক্ত চ সঙ্গমে॥ नांत्रमा नमस्नवश्चर प्रश्चनीन्नभानम्। শকং"স্থাধিরাজানং ত্যুথাসকলোচনম্॥ म टब्निर्विदिक्षंत पृष्ठेभावः भहीशिटः। गमूछएको अकशादिय प्रतावामनगापदार ॥ তং দৃষ্টা বলধুতামুম্খিতং তিদশাক্ষনাঃ। প্রশেষ স্তাশ্চ দেবর্ষিং বিন্যাবনতাঃ স্থিতাঃ॥ তাভিরভার্চ্চিতঃ দে।প উপবিষ্টে শতক্রতৌ। यशोर्टर कुळमञ्जायः कथाम्हरक मरनातमाः॥ ততঃ কথান্তবে শক্তসুবাচ মহাস্নিম। দেহাজাং নৃত্যামাশাং তব যাভিমতেতি বৈ॥ রম্ভা বা কর্কশা বাথ উর্ব্বগুথ তিলে।ত্তমা। ম্বতাচী মেনকা বাপি যত্র বা ভবতো ক্রচিঃ। এত চছ জা হিজমেটো বাচং শক্রতা নারদঃ। বিচিন্তা।পারসঃ প্রাহ বিনয়াবনতাঃ স্থিতাঃ॥ युषाकि मिरु मर्का मार करली नार्या खना धिकम । আতানং মক্তে যা তু সা নৃত্যুতু ম্মাগ্ৰত:॥ खनक्र परिशीनांगाः मिकिनां हास नासि देव । চার্ক্ষিষ্ঠ নবলুতাং নৃত্যমক্ষ্পিত্রনম্॥

#### মার্কণ্ডের উবাচ।

**७ म् वो का मम को लक्ष्य ( ) के का छा न को छह: ।** অহং গুণাধিকা ন বং ন বং চান্তাত্রবীদিদম॥ তাদাং সম্ভ্ৰমনালোক্য ভগবান পাকশাসনঃ। পুছতাাং মুনিবিত হি বক্তা যাং বো গুণাধিকাম্॥

শক্রচ্ছনামুযাতাভিঃ পৃষ্টস্তাভিঃ স নারদঃ। প্রোবাচ যন্তদা বাকাং জৈমিনে তল্পিবোধ মে। তপক্ততং নগেঞ্জং যা বঃ কোভয়তে বলাং। ছর্কাদদং মুনিশ্রেষ্ঠং তাং বো মক্তে গুণাধিকাম ॥ তত্ত তহচনং শ্রহ্মা সর্বা বেপিতকন্ধরাঃ। অশক্যমেতদ্মাক্ষিতি তাশ্চক্রিরে কথাঃ॥ তত্রাপ্ররা বপুর্নাম মুনিকোভণগর্বিতা। প্রত্যবাচামুযাভামি যত্তাসৌ সংস্থিতো মুনিঃ ॥ অদ্য তং দেহযন্তারং প্রাযুক্তে ক্রিয়বাজিনম্। সারশস্ত্রগলজ্ঞিং ক্রিষ্যামি কুদার্থিম্॥ ব্ৰহ্মা জনাৰ্দনো বাপি যদি বা নীললোহিতঃ। তমপ্যদ্য করিষ্যামি কামবাণক্ষতান্তর্ম ॥ हेकुको ध्वजनामाय धारनमानिः वर्षका। মুনেস্তপঃপ্রভাবেণ প্রশান্তশাপদাশ্রম ॥ मा श्राद्धः किलमाधूर्या। यजारिक म महामूनिः। কোশমাত্রং স্থিত। তত্মাদগায়ত বরাপ্সরা:॥ তদগীতধ্বনিমাকণ্য মুনিবিস্মিতমানসঃ। জগাম তত্র যতান্তে সা বালা কচিরাননা। তাং দৃষ্টা চাক্সক্ষাঙ্গীং মুনিঃ সংস্কৃতা মানসম। ক্ষোভণায়াগতাং জ্ঞাত্বা কোপামর্যসময়িতঃ॥ উবাচেদং ততো বাক্যং মহর্ষিস্তাং মহাতপাঃ। যক্ষাদ্রগার্জিত শ্রেষ্ঠ তপদো বিল্লকারণাৎ। আগতাসি মদোনতে মম ছঃথায় থেচরি॥ তত্মাৎ স্থপর্বগোতে স্বং মৎক্রোধব লুধীক্বতা। जन व्यात्मानि इल्लेट्ड यावन्तर्यानि (याष्ट्रभू॥ নিজরপং পবিতাজা পৃক্ষণীরপ্ধারিণী। চহারস্থে চ তন্য়। জনিষাস্তেহ্ধমাপ্সরঃ ॥ অপ্রাপা তেয়ু চ প্রীতিং শত্রপূতা পুনর্দিবি। বাসমাপাসি বক্তব্যং নোত্তরং তে কথঞ্ন॥ ইতি বচনমস্থা কোপসংরক্তদৃষ্টি-**म्हलकत्त्रवाञ्चार गानिनीः आवशिषा ॥** তরলভরতরঙ্গাং গাং পরিভালা বিপ্র:

প্রথিত ওণগণীঘাং সংপ্রয়াতঃ খগঙ্গাম্॥

ইতি শ্রীমার্কভেয়পুরাণে বপুশাপো নাম व्यवस्था ३४ ।

### बिजीरमा ३ था महा

-- 0:0 --

#### মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

অরিষ্টনেমিপুল্লাহ্ভূদ্গকড়ো নাম পক্ষিরাট্।
গকড়স্তাভবং পুলঃ সম্পাতিরিতি বিশ্রুতঃ ॥
তত্যাপ্যাসীং স্কঃ শ্বঃ স্পার্থে। বায়্বিক্রমঃ।
স্পার্থতনয়ঃ কৃষ্টিঃ কৃষ্টিপুলঃ প্রশোল্পঃ॥
তত্যাপি তনয়াবাতাং কয়ঃ কয়র এব চ॥
কয়ঃ কৈলাসশিধরে বিছাজ্রপেতিবিশ্রুতম্।
দেশশিষ্কপত্রাকঃ রাক্ষসং ধনদাস্গম্॥
আপানাসক্রমনল্রপানাম্বরধারিণম্।
ভার্যাসহায়মাসীনং শিলাপট্টেহ্মলে গুলে॥
তচ্টমাত্রং কয়েন রক্ষঃ কোপসম্বিভ্র্ম।
প্রোবাচ ক্মালায়তেশ্বমিতো হাওলাধ্য॥
প্রীস্থিকর্ষে তিঠিতং ক্মালাম্প্সপ্ন।
নৈষ ধর্মঃ স্বুদ্ধীনাং মিথোনিম্পাদ্যবস্তুষ্॥
কয়াত্বাচ।

সাধারনোহয়ং শৈলেক্তো যথা তব তথা ময়। অভোষাকৈৰ জন্তুনাং মম্ভা ভবতোহৰ কা॥

ম:কণ্ডেয় উবাচ। ক্রবাণ্মিপং থড়েগন কন্ধং চিচ্ছেদ রাক্ষসঃ। ক্রৎক্তজ্বীভৎসং বিক্রস্থমচেত্নম্ ॥ কল্প: বিনিহতং শ্রন্থা কন্ধরঃ ক্রোধমূচ্ছিতঃ। বিছাজাপ্রধায়াভ মনশ্চক্রেইগুজেখরঃ॥ স গতা শৈলশিখরং কছো যত্র হতঃ স্থিতঃ। তশ্য সন্ধালনং চক্রে ভ্রাতৃর্জ্যেষ্ঠশ্য থেচর:॥ कि शामि विवृद्धात्का नाराक्त देव निः यमन । জগামাথ সু যুৱাত্তে ভ্রাতৃহা তভা রাক্ষ্য ॥ পক্ষবাতেন মহতা চালয়ন ভূধরান্ ব্যান্। বেগাৎ পয়েদজালানি বিকিপন্ ফতজেকণঃ। ক্ষণাৎ ক্ষয়িতশক্তঃ স পক্ষ ভাগং ক্রান্তভূধরঃ॥ পানাস্ক্মতিং তত্তং দদ্শ নিশাচ্ব্য। আতান্ত্ৰক নয়নং হেমপ্ৰ্যক্ষাঞ্চিত্য্॥ ত্রন্দামাপুরিতশিখং হরিচন্দনভূথিতম্। কেতকীপত্রগর্ভাটভর্দ কৈর্ঘোরভরাননম্॥ ব'মোকমাশ্রিতাং চাক্ত দদর্শান্ধতলোচনাম্। পত्नीः मननिकाः नाम श्रुः । किनकगत्रनाम् ॥ ততো বোদপরীতাত্মা কন্ধরঃ কন্দরন্বিতম্। তমুকাচ হুত্তী খ্লেছি বুধাস বৈ ময়া 🛚

যক্ষ: হেজাঠোমন লাতা বিশ্রকো ঘাতিত স্বয়া। তক্ষারাং মদসংসক্তং নয়িষো যমসাদনম্॥ যান্তনে নির্যান্সকাংভাংস্বন্য ময়া হতঃ॥

ু মার্কভেয় উবাচ।

ইত্যেবং পতগেক্তেণ প্রোক্তং স্ত্রীসন্নিধৌ তদা। রক্ষঃ ক্রোধসমাবিষ্টং প্রত্যভাষত পক্ষিণম। যদি তে নিহতো ভ্ৰাতা পৌৰুষং তদ্ধি দ্শিত্ম ত্বামপাদা হনিষ্যেহং থড়েলনানেন থেচর॥ তিষ্ঠ ক্ষণং নাত্র জীবন পতগাধম যাস্তুদি। हेजू कि अन्तर्भाजः विभवः थक्त्रामितः ॥ ততঃ পতগরাজভা যক্ষাধিপভটভা চ। বভূব যুদ্ধমতুলং যথা গরুড়শক্রয়োঃ ॥ ততঃ স<sup>7</sup>রাক্ষসঃ জোধাং ঋঞ্গমাবিধ্য বৈগবং। চিক্ষেপ পতগেক্সায় নির্বাণাক্সারবর্চসম॥ পতগেল্ড ডুং থড়াং কিঞ্চিৎপ্লভা ভূতলাং। বকে প জ গাহ তদা গরুড়ঃ পর্গং যথা॥ বক্পাদতলৈভিঙ্কাচকে কোভমণাওল:। তি সিন্ভ গে ততঃ থড়েগ বাহ্যুদ্ধ মবর্ততে॥ ততঃ প্তগ্রাজেন বক্ষাক্রমা রাক্ষ্যঃ। বক্ত পাদকরৈরাশু শিরসা চ বিযোজিতঃ॥ ত্রিন বিনিহতে সাজী থগং শরণমভ্যগাৎ। কিকিৎসঞ্জাত দল্লাসা প্রাহ ভার্য্যা ভবামি তে। তাম।দার থগশ্রেষ্ঠ: স্বকং গৃহ্মগাৎ পুনঃ। গতা স নিয়ভিং ভাতুবিছাজপনিপাতনাৎ 🛭 क क्र अञ्च ह मा (वश्र व्याप्त) फहा क्र नधा विशे । মেনকাতনয়া স্কুলঃ সৌপর্বং রূপমাদদে॥ তভাং স জনয়ামাস তাক্ষীরাম স্বভাং তদা। মূনিশাপাগিবিপ্লুটাং বপুমপ্লরসাংবরাম্। ত্তা নাম তদা চক্রে তাকীমিতি বিহঙ্গম:॥ মন্দ্রণাল্যত। ক্রাসংশ্চতারোৎমিতবৃদ্ধয়ঃ। জরিতারিপ্রভৃতয়ো দ্রোণাস্তা ধিলসভ্তমা:॥ তেষাং জবভো ধর্মাত্মা বেদবেদাঞ্গারগঃ। উপবেমে স তান্তাকীং কন্ধরাত্মতে ওভাম॥ কন্ত চিত্ৰথ কালন্ত তাক্ষী গৰ্ভমবাপ হ। সপ্তপক।হিতে গর্ভে কুক্লেত্রং জগাম সা॥ क्क्रभाश्वरयाय्दिक वर्षमात्म स्नाकरण। ভাবিত্বাটের কার্যাক্ত রণমধ্যং বিবেশ সা ॥ তত্রাপশ্রৎ তদা যুদ্ধং ভগদত্তকিরীটিনোঃ। निवायवाः भरेववामीमाकाभः भगरेखविव ॥

পার্থকোদগুনিমু স্কিমাসন্নমতিবেগবৎ। एका ज्लामहिलानः पहः हिल्किम काठेतीम् ॥ ভিলে কোঠে শশাস্থাতং ভূমাব ওচতু छेत्रम्। আ। মুখঃ সাবশেষভাৎ তুলরাশাবিবাপতৎ ॥ তংপাত্রমনকালঞ্জ স্থাতীকাদ্গজোত্তমাৎ। প্রপাত মহতী ঘটা বাণ্দংচ্ছিরবন্ধনা।। সমং সমস্তাং জাপা ত নির্ভিন্নধরণীতলা। ছাদ্য স্ত্রী থগা গুলি স্থিতানি পিশিতোপরি॥ হতে চ ভিছিন্পতে) ভগদতে নরেশরে। বহুত্তহাত চুদযুদ্ধ কুকপা ওবদৈভাষোঃ॥ ব্রু যুদ্ধে ধর্মপুত্রে গতে শান্তন্থান্তিকম্। ভীল্ম গদতোহশেষান্ শ্রোতৃং ধর্মান্ মহাত্মনঃ ॥ পণ্টাগতানি ভিষ্ঠতি বতাগুনি দিজেতিম। আজগান তমুদ্দেশং শনীকো নাম সংব্নী॥ স তত্র শক্ষস্থে।জিডীকুটীতিবাশতাম্। বাল্যাদক্টবাক্যানাং বিজ্ঞানেহপ্লি পরে সতি ॥ অথ্যি: শিষাসহিতো ঘণ্টামুৎপাটা বিশ্বিতঃ। অমাতৃপিতৃপক্ষাণি শিশুকানি দদর্শ হ॥ তানি তত্র তথা ভূমৌ শমীকো ভগবান মূনিঃ। দুষ্টা স বিষয়াবিষ্টঃ প্রোবাচাত্রগতান বিজান ॥ স্বাগুক্তং দিজাগ্রোণ গুকেণোশন্সা স্বয়ং। পলামনপরং দৃষ্টা দৈত।দৈতং স্থাদিতম্ ॥ ন গন্তবাং নিবর্ত্তধ্বং কস্মাদ্রজত কাতরাঃ। উৎস্ভা শোষ।বশ্দী ক গত্বা ন মরিষাথ ॥ নখতো যুধাতো ব!পি তাবদ্ভবতি জীবিজম্। যাবদ্ধাতাকজৎ পূর্দ্ধং ন যাবনানদেক্সিতং ॥ একে ভিষয়ে বগৃহে পলায়স্তো>পরে জনাঃ। ভুপ্তে। হরং তথৈবাপঃ পিবস্থো নিধনং গতাঃ॥ विवागिनखरेथवाटण कामगाना निवामगाः। অবিক্ষতাঙ্গাঃ শহৈশ্য প্রেতরাজবশন্ধতাঃ ॥ অত্যে তপশুভিরতা নীতাঃ প্রেভনুপারুগৈঃ। বোগাভাবে রতাশ্চাতে নৈব প্রাপুরমৃত্যুতাম্॥ শহরায় পুরা কিপ্তং বজ্রং কুলিশপাণিনা। হাদয়েহভিহ**ততে**ন তথাপি ন মৃতোহসুরঃ॥ **टिटेनव थ**न् वर्जन ८७टेनरवटक्मन मानवाः। खार्थ कारन इंडा टेल्डाखर्क्मनाशिवनः शंडाः। িটিট নেলে সন্ধাসঃ কর্তুব্যো বিনিবর্ত্তত। কৈ: ুপতে দৈতাভিজ্য মরণ**জং ভর**ম্॥ ই ত শুক্রবচঃ সত্যং ক্লতমেভিঃ থগোন্তমৈঃ। বে যুক্তেংশি ন সংপ্রাপ্তাঃ পঞ্জমতিমানুষে ॥

काञानाः পতनः विद्याः क घन्छ। পতनः म्या क ह भारमवनावरेक क्रितास्वता किया। কেহপ্যেতে সর্বাথা বিপ্রা নৈতে সামান্তপ্রিকণঃ। দৈবামুকুলতা লোকে মহাভাগাপ্রদর্শিনী॥ এবমুক্তা স তান বীক্ষা পুনর্বচনমত্রবীৎ। নিবৰ্ত্তভাশং যাত গৃহীত্বা পক্ষিবালকান্ ॥ মার্জারাথুভয়ং যত্র নৈষামগুরুজন্মনাম্। গ্রেনতো নফুলাদ্বাপি স্থাপ্যস্তাং তত্ত্ব পক্ষিণঃ॥ দিলাঃ কিং বা তিয়ত্নেন মার্যান্তে কর্মভিঃ স্বকৈঃ। রক্ষ্যন্তে চাখিলা জীবা যথৈতে পক্ষিবালকাঃ॥ তথাপি যত্নঃ কর্তব্যো নরৈ: দর্কেষু কর্মস্থ। কুর্মন্ পুক্ষকারস্ত বাচ্যতাং যাতি নো সভাম্ ॥ ইতি মূনিবরচো দতান্ততন্তে মুনিতনরাঃ পরিগৃহ্ পক্ষিণস্তান। তরুবিটগ্সমাশ্রিতালিসংঘং ব্যুব্থ তাপ্সর্ম্যাশ্রমং স্ম্।। স চাপি বন্যং মনসাভিকামিতং व्यग्र भूगः कुद्रभः कनः कुनान । চকার চক্রায়ুধরুদ্রবেধসাং স্থরেক্ত বৈবস্বতজাতবেদসাম্॥ অপাংপতেগীস্পতিবিত্তরক্ষিণোঃ সমীবণস্থাপি তথা দিজোত্তমঃ। धाजूविभाजुख्य देवश्वरत्विकाः শ্রতিপ্রযুক্তা বিবিধান্ত সৎক্রিয়া: ॥ ইতি শ্রীমার্কণ্ডেয়পুবাণে চটকোৎপত্তি ন্মি দিভীয়োহধাবেঃ।

# তৃতীয়োঽধ্যায়ঃ।

-- o; o --

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

অংগ্রহনি বিপ্রেক্ত দেওবাং মুনিসন্তমঃ।
চকারাহারপয়দা তথা গুপ্তা চ পোষণম্॥
মাদমাত্রেণ জগাতে ভানোঃ ক্রন্দনবন্ধনি।
কৌতৃহলবিলোলাকৈন্তী মুনিকুমারকৈঃ॥
দৃষ্য মহীং দনগ্রাং দাভোনিধিদরিদ্বরাম্।
রথচক্রপ্রমাণাং তে পুনরাশ্রমমাগভাঃ॥
শ্রমক্রান্তারালানা মহান্ধানো বিযোনিজাঃ।
জ্ঞানঞ্জান্তরাভূতং তত্র তেবাং প্রভাবকঃ॥

श्रायः नियाञ्चकम्लार्थः वत्राचा धन्यभिक्षयम्। कुषा व्यक्तिनः मदर्स চরণাবভাবাদয়ন্॥ উচুশ্চ মরণাদ্ঘোরাঝোঞ্চিতাঃ স্বস্থয়া মুনে। আবাসভক্ষ্যসূদাং ডং নো দাতা পিতা গুরুঃ॥ গর্ভস্থানাং মৃতা মাতা পিতা নৈবাপি পালিতাঃ। ত্বয়ানো জীবিতং দতং শিশবো যেন রক্ষিতাঃ॥ ক্ষিতাবক্ষততেজান্তঃ ক্বমীণামিব শুষাভাম্। গজবণ্টাং সমুৎপাট্য কুতবান্ ছঃখরেচনম্॥ কথং বর্ষেয়ুববলাঃ থন্ডান্ডক্ষামাহং কলা। কদা ভূমেক্র মং প্রাপ্তান দ্রুক্ষান্তরং গভান कर्मा (म महस्रो कास्तिः পार्खना नामरमघाछ । এষাং পক্ষানিলোভিতেন মৎসমীপ্রিচারিণাম ॥ ইতি হৈয়তা তাত ভবতা প্রতিপালিতাঃ। তে সাম্প্রভং প্রবৃদ্ধাঃ আঃ প্রবৃদ্ধাঃ করবাম কিম্ 🛭 ইত্যুষির্বাচনং তেষাং শ্রুষা সংস্কারবৎ ফুটুমু। শিবৈয়ঃ পরিবৃতঃ সর্কিঃ সহ পুত্রেণ শৃদ্ধিণা॥ কৌভূহলপরো ভূতা রোমাঞ্পটদংবৃতঃ। উবাচ তত্বতো ব্রুত প্রবুত্তেঃ কারণং গিরঃ॥ কস্ত শাপাদিয়ং প্রাপ্তা ভবন্তির্কিকিয়া পরা। রূপভাবচসকৈতব তল্মে বক্তৃমিহার্থ॥ পক্ষিণ উচুঃ।

বিগুল্সানিতিগাতিঃ প্রাগাসীখূনিসন্তম:।
তক্ত পুত্রবয়ং জজে স্কুষন্তম্কতথা ॥
স্কৃষত্ত বাং পুত্রা-চ্ছারঃ সংযতাত্মন:।
তক্তর্যের্কিন্দাচারভক্তিন্দাঃ সদৈব হি ॥
তপশ্চরণসক্তন্ত শাভ্যমানেক্রিয়ন্ত চ ।
যথাভিমত্যায়াভিত্রদা ওক্তোপপাদিতম্ ॥
সমিং পুলাদিকং স্কং যটেচবাভাবহারিকম্ ।
এবং তত্ত্বাথ বস্তাং তভাত্মাকঞ্চ কাননে ॥
আজ্গাম মহাব্দা ভ্রাপ্রেলা ক্রারিতঃ।
আতাত্রনেত্রঃ স্রস্তারা পক্ষী ভূছা স্ব্রেশ্বরঃ ॥
সত্যশৌচক্ষমাচার্যতীবোন।ব্যানস্ম্ ।
জিজাস্ত্রমৃষ্প্রেপ্রস্তাপভ্রায় চ ॥

পক্ষাবাচ।

থিজন্ত মাং ক্ষাবিষ্টং পরিরাজ্মিহাইসি।
ভক্ষণাথী মহাভাগ গতির্ভব মমাত্লা॥

বিদ্ধান্ত শিথরে তিষ্ঠন্ পরিপরেরিতেন বৈ।
পতিতোক্মি মহাভাগ খগনেনাতিরংহ্দা॥
সোহং মোহদমাবিষ্টো ভূমৌ সপ্তাহমস্থৃতিঃ।

বিভওজাইমেনাফা চেতনাং প্রাপ্তবান্হম॥

প্রাপ্ত চেতাঃ ক্ধাবিষ্টো ভবস্তঃ শরণং গতঃ।
ভক্যার্থী বিগতানন্দা দ্যমানেন চেতসা।
তৎ ক্রমানলমতে মৎআণায়াচলাং মতিম্।
প্রাক্ত ভক্যং বিপ্রেম্ব প্রাণ্যাআক্ষমং মম ॥
স এবম্কঃ প্রোবাচ ভমিদ্রং পদ্দির্দিণম্।
প্রাণস্কারণার্থায় দাভে ভক্যং তবেন্সিতম্॥
ইত্যুক্তা পুনরপোনমপুজ্ৎ স বিজ্ঞাত্মঃ।
আহারঃ কন্তবার্থায় উপকল্লো ভবেন্মা॥
স চাহ নরমাংসেন ত্প্তিভ্বিতি মে প্রা॥
ধ্যিক্রণাচ।

কৌমারং তে ব্যতিক্রান্তং অতীতং যৌবনঞ্চ তে। বয়সঃ পরিণামস্তে বর্ততে নুনমগু**ল**। यश्चित्रद्रांगाः मर्ट्सयामर्भरयद्धा निवर्त्तरत् । স কমান্বুদ্ধভাবেপি স্বৃশংসাথাকো ভবান ॥ ক মাহ্যস্থ পিশিতং ক বয়শ্চরমং তব। সর্বাঘা ছন্টভাবানাং প্রশমো নোপপদ্যতে॥ অথবা কিং মরৈতেন প্রোক্তেনান্তি প্রয়োজনম্। প্রতিশ্রতা সদা দেয়মিতি নো ভাবিতং মনঃ॥ ইত্যুক্তা তং স বিপ্লেক্সন্তেথিতি কুতনিশ্চয়:। শীঘ্ৰমস্মান্ সমাহূয গুণতোমুপ্ৰশস্ত চ॥ উবাচ क् कश्रदश म्निर्वाकाः स्निष्ठं त्रम । বিনয়।বনতান্স্কান্ভক্তিযুক্তান কুভাঞ্লীন॥ ক্তাআনো ধিজভোষা ধাণৈমুক্তা ময়া সহ। জাতং শ্রেষ্ঠমপতাং বো যূয়ং মম যথা বিজা: ॥ ওকঃ পুজাো যদি মতো ভবতাং প্রমঃ পিতা। ততঃ কুক্ত মে বাকাং নির্ম্বালীকেন চেতদা॥ তথাকাসমকালঞ্চ প্রোক্তমমাভিরাদৃতৈঃ। যদক্ষাতি ভবান তবৈ ক্লতমেবাবধাৰ্যতাম্॥ ঋযিকবাচ।

মামেৰ শরণং প্রাপ্তের বিহলঃ কুত্রাধিতঃ।

যুমনাংসেন দেনান্ত কণং তৃথিভ্রেত বৈ।

তৃষ্যক্ষমণ্ট রকেন তথা শীঘ্রং বিনীয়তাম্॥
ততো বমং প্রব্যথিতাঃ প্রকম্পোভূতসাধ্বসাঃ।
কথং কষ্টমিতি প্রোচ্য নৈতৎ কর্মেতি চাক্রবন্॥
কথং পরশরীরভ হেতে।ধেহং শ্বং বৃধঃ।
বিনাশয়েদ্যাতয়েদ্বা যথা হাল্মা তথা হতঃ॥
পিতৃদেবমন্থ্যাগাং যাহ্যকানি ঋণানি বৈ।
তাভাপাকুকতে পুজো ন শরীরপ্রদঃ হতঃ॥
তন্মানৈত্র ক্রিয়ানো নো চীর্ণং যং পুরাতনৈঃ।
ভীবন্ ভ্রাগাবারোতি জীবন্পুণাং করোতি বৈ॥

মৃতভ্য দেহনাশত ধর্মাত্যপরতিভ্রপা। व्याचानः नर्काटात्रकामोद्धर्यविद्या कराः ॥ हेथः अष्। वटहात्राकः मूनिः द्वारीमित जनन्। প্রোবাচ পুনরপামান নির্দহরিব লোচলৈঃ॥ প্রতিজ্ঞাতং বচো মহাং যক্ষারৈতৎ করিষাথ। তবাৰছাপনিৰ্দ্ধান্তিৰ্গাগ্যোনে পতিষাধ॥ এবমুক্তা তদা দোস্বাংস্তং বিহঙ্গমমত্রবীৎ। অত্তেটিমাত্মনঃ কুড়া শাস্ত্তেটের দিহিক্ম্। ভক্ষর স্থবিশ্রের মামত্র ছিজ্পত্র। আহারীকৃত্যেত্তে ময়া দেহমিহামন: ৷৷ এতাবদেব বিপ্রস্থ ব্রাহ্মণতং প্রচক্ষাতে। যাবৎ পতগদাতার অসতাপরিপালনম্॥ न गरेक के किना निष्य प्रनार लाभार य महर। কর্মণানোন বা বিটপ্রর্যং সভাপবিপালনাং॥ हैकारवर्त्ताहनः क्या (माञ्चर्तियामिङ्गः। প্রাকাচ মুনিং শক্রঃ প্রিক্রপ্ধরস্তদা ॥ (गांशमाञ्चाम विष्योख छ। एक मर यर करण वत्रम। खीवष्ड्र हि वित्थक्त न ज्ञामि कपाइन ॥ ত তৈত্ত ব্চনং শ্রুপা যোগসুকোত বন্নিঃ। তং তম্ম নিশ্বয়ং জ্ঞাত্বা শক্রোপ্যাহ অদেহভূৎ। ভো ভো বিপ্রেক্ত বুধাস বুদ্ধা বোধ্যং বুধাত্মক **ব্রিক্তাদার্থ: স্বায়: তে অপরাধঃ কুতোন**ঘ॥ তৎ ক্ষমবামলমতে কা চেচ্ছা ক্রিয়তাং তব। পালনাৎ সভাবাকাক্ত প্রীতিমের্গরমা ত্রি॥ অদ্য প্রভৃতি তে জানমৈন্ত্র: প্রাত্তরিয়াতি। তপক্তথ তথা ধর্মেন তে বিদ্রো ভবিদাতি॥ ইতাক্তা ভূ গতে শক্তে পিতা কোপদম্বিতঃ। প্রথম্য শির্পাথাভিরিদমুক্তো মহামূনিঃ। বিভাতাং মরণাতাত অম্মাকং মহামতে। ক্তম্প্রি দীনানাং জীবিত প্রিয়ত। হি নঃ ॥ ত্বগন্থিমাংসদংঘাতে প্রশোণিতপুরিতে। কর্ত্তবা। ন রতির্গতা তত্তাস্মাক্ষ্যিং রতিঃ॥ শ্রমতাঞ্চ মহাভাগ যথা লোকো বিমৃহতি। कामरकानामि जिर्फाटेयत्रवनः व्यवनाति जिः॥ প্রজাপ্রাকারসংযুক্তমন্তিসূণং পুবং মহ**ং**। চর্মজিজিমহাবোধং মাংদশোণিতলেপনম॥ নবদারং মহায়াসং সর্বতঃ লায়ুবেষ্টিত্য। নৃপশ্চ পুক্ষন্তত্ত চেতনাবানবস্থিত: ॥ मिंडिरनी ज्ञा वृक्षिण मनदेग्हर विरविधिरनी। যতেতে বৈরনাশায় তাবু গবিতরেতরম্।

নুপস্ত তম্ভ চত্বারো নাশমিচ্ছতি বিদ্বিষঃ। কাম: কোধন্তথা লোভঃ মোহশ্চাক্তরথা রিপুঃ॥ যদা তুস নুপস্তানি দারাণ্যারুত্য ভিঠতি। তদা স্বস্থবলভৈব নিরাতক্ষ জায়তে। জাতামুরাগো ভবতি শক্রভিনাভিভূয়তে ॥ যদা তু সর্বাধারাণি বিবৃতানি স মুঞ্তি। রাগোনাম তদা শত্রনেজাদিশ্বরমূচ্ছতি॥ সর্বব্যাপী মহায়ামঃ পঞ্চন্বারপ্রবেশনঃ। তভাতুমার্গং বিশতি তবৈ ঘোরং রিপুত্যম। প্রবিশ্রাপ স বৈ তত্ত্র বারৈরিক্রিয়সংজ্ঞকৈ:। বাগঃ সংশ্লেষমায়াতি মনসা স সহেতবৈঃ ॥ हे खिया नि मन टेम्ह व वर्ग कृषा छुड़ा मनः। দারাণি চ বশে কুলা প্রাকারং নাশয়তাথ। মনন্তস্থাশ্রিতং দৃষ্ট 1 বৃদ্ধির্ন গ্রন্তি তৎক্ষণাৎ। অমাত্যরহিতন্তক পৌরবর্গোছ্কিতন্তথা।। রিপুর্ভিলরবিবরঃ স নূপো নাশমৃচ্ছতি। এবং রাগন্তথা মোহো লোভঃ ক্রোধন্তথৈর চ॥ প্রবর্তম্ভ তুরাত্মানো মহুধ্যস্তিনাশকাঃ। রাগাৎ ক্রোধঃ প্রভবতি ক্রোধালোভোভিজায়তে লোভান্তবতি সম্মোহঃ সম্মোহাৎ স্মৃতিবিভ্রমঃ। স্মৃতিভংশাদ্বুদ্ধিনাশো বুদ্ধিনাশাৎ প্রণশুতি ॥ এবং প্রণপ্তবৃদ্ধীনাং রাগলোভান্তবর্তিনাম্। জীবিতে চ সশোভানাং প্রদাদং কুক সত্তম। (यायर भारता जगरजा मनः म न जरवन्या। ন তামণীং গতিং কষ্টাং ব্ৰজেম সুনিস্তুম্॥ ঋষিক্রবাচ।

যন্ত্রাক্তং ন ভন্মিথাা ভবিষাতি কদাচন।
ন মে বাগন্তং প্রাহ যাবদদ্যেতি পুল্কাঃ॥
দৈবমল পর মত্তে ধিক্ পৌক্ষমনর্থকম্।
ভকার্য্যং কারিতো যেন বলাদহমচিন্তিভম্
যথাচে যুম্মাভিরহং প্রাণিপত্য প্রাাদিতঃ।
তথাৎ তির্যুক্ত্রমাপনাঃ পরং জ্ঞানমবাপ্যার্থ॥
জ্ঞানদর্শিভমার্গান্ড নির্ভুত্রেশকল্মবাঃ।
মৎপ্রানাদদনদিশ্বঃ পরাং দিদ্ধিমবাপ্যার্থ॥
কৈনিনেঃ প্রশ্নদেশহান যদা বক্ষার্থ পুল্কাঃ।
তদা মোক্ষ্যুর্থ মচ্ছাপাদেষ বোহ্মুগ্রহঃ কৃতঃ॥
এবং শপ্তাঃ আ ভগবন্ পিজা দৈববশাৎ পুরা।
ততঃ কালেন মহতা বোক্সন্তর্ম্পাগতাঃ॥
জাতাশ্চ রণমধ্যে বৈ ভবতা পরিপালিতাঃ।
বয়মিথাং বিজ্ঞান্ত প্রাহঃ সম্পাগতাঃ॥

নান্ত্যসাৰিহ সংসারে যো ন দিটেন বাধ্যতে। সর্বেষামেব জস্তুনাং দৈবংধীনং হি চেষ্টিতম্॥ মার্কণ্ডেম্ন উবাচ।

ইতি তেষাং বচ: শ্রুণা শমীকো ভগবান মুনি:
প্রত্যাচ মহাভাগঃ স্মীপ্রায়িনো বিজ্ঞান ॥
পূর্বনেব ময়া প্রোক্তং ভবতাং সয়িধাবিদম্।
সামাজপদিনো নৈতে কেহপ্যেতে বিজ্ঞসন্তমাঃ।
যে যুদ্ধেহপি ন সম্প্রাপ্তাং পঞ্চমতিমাহ্যে ॥
ভতঃ প্রীতিমতা তেন তেহস্প্রাতা মহাম্মনা।
জগ্মঃ শিথরিণাং শ্রেষ্ঠং বিদ্ধাং ক্রমলতাযুত্ম্ ॥
যাবদদ্য স্থিতান্ত বিশ্বচলে ধর্মপ্রক্রিং।
তপঃস্বাধ্যামনিরতাঃ সমাধৌ ক্রতনিশ্বাঃ॥

ইতি ম্নিবরলক্ষণ ক্রেমাতে ম্নিতনয়া বিহলত্বম ভ্রেপেতাঃ। গিরিবরগহনেহতি পুণ্তে:মে যতমনদো নিবসন্তি বিদ্যাপুঠে॥

ইতি শ্রীমার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে বিশ্ব্যপ্রাপ্তি-নাম তৃতীয়োহধ্যায়॥৩॥

# চহুর্থোহধ্যায়ঃ।

-- 0 # 0 --

মার্কভেয় উবাচ।

এবং তে ছোণতন্যাঃ পক্ষিণো জ্ঞানিনোইভবন। বদস্তি হচলে বিন্ধ্যে তামুপাস্ব চ পুচ্ছ চ॥ ইত্যুষের্মাচনং শ্রাহা মার্কত্তেম্বর্জ কৈনিনিঃ। জগাম বিন্ধাশিখরং যত্র তে ধর্মপক্ষিণঃ॥ ভন্নগাসন্ত্তক শুলাব পঠতাং ধ্বনিম। শ্ৰুতা চ বিশ্বয়াবিষ্ট শ্চিস্তরামাস জৈমিনি:॥ স্থানসেষ্টিবসম্পারং জিত্রাসমবিশ্রমম্। বিস্পষ্টম পদোষঞ্চ পঠাতে শিক্ষসভূমেঃ॥ বিযোনিমপি সম্প্রাপ্তানেতান্মুনিকুমারকান্। চিত্রমেতদহং মতে ন জহাতি সর্পতী॥ 'বন্ধুবর্গস্থামিতং যচেচটমপরং গুহে। ত্যকৃ। গছতি তং দর্কংন জহাতি দর্শতী॥ ইতি সঞ্চিম্বরনেব বিবেশ গিরিকলরম্। প্রবিশ্র চ দদর্শ:সৌ শিলাপ্টগত:ন্ ছিলান্॥ পঠত छान् मभारताका म्थरनावविवर्ष्कि छान्। সোহণ শোকেন হর্ষেণ স্কানেবাভ্যভাষত॥

यकाच (वा विकासकी देविमिनिर मार निर्वाशक। व्यानिषामञ्ज्ञाश्चः खब्डाः पर्यत्नारञ्जम् ॥ মহার্থলু কর্তব্যা যৎ পিত্রাভীবমহানা। मश्रीः थगषमानद्याः नर्स्तथा निष्ठेरम् उ ७०॥ ফীতদ্রব্যে কুলে কেচিজ্জাতা: কিল মনস্থিন:। স্ত্রবানাশে বিজেক্তান্তে শ্বরেণ স্থ্যান্তিতা:॥ দক্তা যাচন্তি পুরুষা হতা বধ্যন্তি চাপরে। পাত্রিছা চ পাত্যস্তে ত এব তপসঃ ক্ষাৎ॥ এতদৃষ্টং স্থবন্ধা বিপরীতং তথা ময়া। ভাবাভাবসমূচ্ছেটদরজল্রং ব্যাকুলং জগ্ৎ॥ ইতি সঞ্চিত্তা মনসান শোকং কর্তুমইথ। कानच गनामजानाका करोर्स तथुवा छ।॥ **ততত্তে জৈমিনিং সর্কে পাদ্যার্থাভ্যামপুরু**য়ন্। অনাময়ঞ পথেছে প্রণিপত্য মহামুনিম্॥ অথোচুঃ ধগমাঃ দর্কে ব্যাসশিব্যং তপোনিধিম। স্বংপাপবিষ্টং বিশ্রান্তং পকানিলহতক্রমম্।

# পক্ষিণ উচুঃ।

অদ্য নঃ সফলং জন্ম জীবিতক স্কীবিতন্।

যৎ পশ্রাম স্থারবন্দাং তব পাদাস্ক্রমন্ ॥

পিতৃকোপাথিকজুতো যো নো দেহেষু বর্ততে।

সোহন্য শাঝিং গতো বিপ্র যুদ্দশনবারিণা ॥

কচিত্তে কুশলং ব্রুলাশ্রমে মৃগপ্রিন্ ।

ব্রেম্বণ লতাগুল্লাক্রমারভানাতির ॥

অথবা নৈতত্তাং হি সম্যাপাল্লাভিরাদূতৈঃ।

ভবতা সলুমো যেযাং তেষামকুশলং কুতঃ॥

প্রাদক্ষ কুক্রা ক্রের্গাস্মনকারণম্।

দেবানামিব সংসর্গো ভবতোহ্ভ্যুদ্যো মহান্।

কেনামভাগণ্ডকণা আনীতো দৃষ্টিগোচরম্॥

### জৈমিনিকবাচ।

শারতাং বিজ্ঞার্প লাঃ কারণং যেন কলরম্।
বিদ্যান্তেহাগতো রন্যং রেবাবারিকণোক্ষিত্ম্।
সন্দেহান্ ভারতে লাজে তান্ প্রতুং গতবানহম্।
মার্কণ্ডের° মহাজানং পূর্বং ভৃগুক্লোবহম্।
তমহং পৃষ্টবান্ প্রাহ্ সন্দেহান্ ভারতং প্রতি।
স চ পৃথ্টো ময়া প্রাহ্ সন্তি বিক্ষো মহাচলে।
স্থোপ্রা মহাথানতে বক্ষান্তার্থবিত্তরম্।
তহাকাচোদিতশ্চমনাগতোহহং মহাগিরিম্।
তচ্পুর্বনশ্বেশ শ্রাবাাবাাত্মহণ্।

### - পক্ষিণ উচুঃ।

িবরে সতি বক্ষামো নির্কিশকঃ শৃণুম্ব তৎ।
কথা বর বনিধ্যানো যদক্ষদ্বৃদ্ধিগোচরম্॥
চতুর পি হি বেদের্ ধর্মশাধের্ চৈব হি।
সমস্তের্ তথাসের্ মচান্তিধেদস্মিতম্॥
এতের্ গোচরেংখাকং ব্দ্বেক্সিনসভ্ম।
গুতিজান্ত স্মারোচ্ং তথাপি ন হি শকুমঃ॥
তক্ষাদ্ধন্থ বিশ্রকং সন্দির্ধং যদ্ধি ভারতে।
বক্ষামন্তব ধর্মজ্ঞ ন চেন্মাহেং ভবিষ্যতি॥

# देक्षितिकवीष्ठः।

শিক্ষানীই বস্তৃনি ভারতং প্রতি যানি সে।
শৃণ্ধ্বমমলান্তানি শ্রুৱা বাাথাাতুমইথ ॥
কথানাম্যতাং প্রাপ্তো নিগুণে ২ণি জনার্দনঃ।
বাহদেবে। হথিলাধারঃ সর্বকারণকারণম্ ॥
কথাচ্চ পাণ্ডুপুলাণামেকা সা জপদাত্মজা।
পঞ্চানাং মহিষী ক্ষণা স্থমহানত্ত সংশ্যঃ ॥
ভেষজং জ্লহত্যায়া বলদেবো মহাবলঃ।
ভীর্থনাতাপ্রস্কেন ক্ষাচ্চকে হলায়ুদঃ ॥
কথঞ্চ জৌপদেয়ান্তেইক্তদাবা মহারণাঃ।
পাণ্ডুনাথা মহাত্মানো বধমাপুরনাগ্বং ॥
এতৎ সর্বং কথাতাং মে সন্দির্ধং ভারতং প্রতি।
ক্রাপেথিইং স্থাং বেন গচ্ছেরং নিজ্মাপ্রমন্॥

# পক্ষিণ উচু:।

নমস্কৃত্য স্থবেশায় বিষ্ণবে প্রভবিষ্ণবে। পুরষায়াপ্রমেয়ায় শাখকায়াব্যয়ায় চ ॥ ্চতুর্হিস্মনে তবৈ জিগুণায়াগুণায় চ। বরিষ্ঠায় গরিষ্ঠায় বরেণ্যামৃতায় চ॥ যস্মাদণুভরং নান্তি স্মাল†তি বৃহত্তবম্। रयन विश्वभिनः वाशिभाष्ट्रम अंगनानिना ॥ আবিভাবতিরোভাবদৃষ্টাদৃষ্টবিলক্ষণম্। বদক্তি যৎস্টমিদং তথৈবাজে চ সংস্তম্॥ अक्षरण होधिरमवाग्र नमक्ष्र हा जमाधिना । থক সামাস্যাদিগরন্বকৈ গঃ পুনাতি জগভয়ম্॥ প্রণিপত্য তথেশানমেকবাণবিনির্জ্জিটেত:। यमाञ्चलपर्वेष्ठा विल्पार्छ न यक्षिनाम्॥ প্রবিক্যামো মতং কুৎসং ব্যাসস্যাদ্ভুতকর্মণঃ। বেদ ভারতমুদ্দিশু ধর্মাদ্যাঃ **প্রকটীকৃতাঃ**॥ আপো নারা ইতি প্রোক্তা নুনিভিন্তব্দশিভি:। জননং তসাতাঃ পূর্কং তেন নারায়ণঃ স্মৃতঃ॥

य (मरवा छगवान् मर्वाः वाराषा नात्रां प्ररणा विज्यः। চতুর্দা সংস্থিতো ত্রহ্মন্ সগুণো নিগুণস্তথা।। এক। মৃর্ত্তিরনির্দেখা শুক্লাং পখান্তি তাং ব্ধা:। जानाभारनाशककात्री निक्षा मा (योजिनाः शदा ॥ দ্বস্থাচান্তিকস্থাচ বিজেয়োসাগুণাতিগা। বাস্থদেবাভিধানা২দৌ নিৰ্মানত্বেন দৃশুতে॥ রূপবর্ণাদয়স্তস্তা ন ভাবাঃ কল্পনাময়া:। অস্ত্রেব সা সদা শুদ্ধা স্থপ্রতিঠৈকর পিণী॥ দিতীয়া পৃথিবীং মৃদ্ধা শেষাখ্যা ধারয়ত্যধঃ। তামদী দা দমাখ্যাতা তির্য্যক্ত সম্পাশ্রিতা॥ তৃতীয়া কর্ম কুরুতে প্রজাপালনতৎপরা। সত্বোদ্রিকা তু সা জেয়া ধর্মসংস্থানকারিণী॥ চতুথী জলমধ্যস্থা শেতে পরগতল্পা। রম্বস্তা গুণঃ সর্গং সা করোতি সদৈব হি ॥ যা তৃতীয়া হরেমুর্তিঃ প্রজাপালনতৎপরা। সা তু ধর্মব্যবস্থানং করোতি নিয়তং ভূবি॥ প্রোদ্তানম্রান্ হস্তি ধর্মানিচ্ছিত্তিকারিণঃ। পাতি দেবান্ সতশ্চাভান্ধর্মরকাপরায়ণান্॥ যদা যদা হি ধর্মস্য গ্লানির্ভবতি ক্রৈমিনে। অভ্যুথানমধর্মা তদাঝানং স্ফত্যসৌ॥ ভূত্বা পুৰা বরাহেন তুণ্ডেনাপো নির্দাচ। একয় দিং ষ্ট্রির হৈ থাতি নিলিনী ব বস্তুন্ধবা ॥ কৃতা নৃসিংহরণঞ হিরণ্যক**শিপুর্হ**তঃ। বিপ্রচিত্তিমুখা শ্চাত্তে দানবা বিনিপাতিতাঃ॥ বামনাদীংস্থৈবাভান্ন সংখ্যাতৃমিহোৎসহে। অবতারাংশ্চ তসােহ মাথুরঃ সাম্প্রতং জয়ম্॥ ইতি সা পাত্তিকী মূর্ত্তিরবতারানু করে।তি বৈ। প্রহামেতি চ সা থ্যাতা রক্ষাকর্মণ্যবস্থিতা॥ দেবতেহথ মন্ত্রাত্তে তির্যাগ্রোনৌ চ সংস্থিত।। গৃহাতি তংসভাবঞ্চ বাস্তদেবেচ্ছয়া সদা n ইত্যেতংতে সমাথ্যাতং কৃতক্বত্যোহপিয়ৎ প্রভুঃ মাহ্যতং গতে। বিষ্ণুঃ শৃবুখাদ্যোত্রং পুনঃ ॥ ইতি শ্রীমার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে চতুর্গৃহাব-তাৰো নাম চতুৰ্থোইধ্যায়ঃ।

# পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:--

পিক্লিণ উচ্:। ছটা প্রজাপতিঃ পূর্বং তদ্যাসীৎ ত্রিশিরাঃ স্বতঃ। অধোম্থন্ত বং কুর্বন্হতঃ শক্রেণ শঙ্রা ॥ ষ্ট্ৰপুত্ৰে হতে পূৰ্বাং ব্ৰহ্মনিজ্ঞস্য তেজদঃ। ব্রশাহত্যাভিভূত্স্য পরা হানিরঞায়ত ॥ ভদ্ধং প্রবিবেশাথ শাক্রতেজোপচারতঃ। নিস্তেজ্ঞা ভবচ্চক্রে। ধর্মে তেজ্ঞা নির্পতে ॥ ততঃ পূত্রং হতং শ্রুষা ঘটা কৃদ্ধ: প্রজাপতি:। व्यवनुका करोरमकामिषः वहनभववी ।। काना शक्क हा वीर्याः कार्या (मार्काः मानवकाः । স চ পশ্রতু ছবু দ্বিত্র হা পাকশাসনঃ ॥ স্বকর্মাভিরতো যেন মংস্থতো বিনিপাভিতঃ। ইত্যুক্। কোপরকাকে। জটামগ্রৌ জ্হাব তাম্॥ **ততো বৃद्ध: म**मुख्य हो आसामानी महास्वः। মহাকায়ো মহাদংষ্ট্রো ভিরাঞ্জনচয় এভঃ ॥ **ইন্দ্রশ**ক্রমেয়াত্মা ওষ্টুতেলোপবৃংহিতঃ। অহস্ত্নি সোহ্বদ্ধিষ্পাতং মহাবল:॥ বধায় চাত্মনো দৃষ্টা বুত্রং শক্রো মহাস্তবং। প্রেষয়ামাস সপ্রীন্সরিমিছন্ভয়াতুরঃ॥ স্থ্যঞ্জুস্তভন্তদ্য বুজেণ সময়াংস্তথা। ঋষয়ঃ প্রীতমনসঃ সর্কভৃতহিতে রভাঃ॥ সময়স্থিতিমুল্জ্যা যদা শংক্রণ ঘাতিতঃ। বুৱো হত্যাভিভূতস্য তদা বলনশীৰ্ঘ্যত ॥ তচ্চক্রদেহবিভ্রত্তং বলং মারুডমাবিশং। मर्खेराभिनम्याङः दलदेगादाधिरेनवज्ञ् ॥ অহল্যাঞ্যদা শক্তো গৌতমং দ্রপমান্তিতঃ। ধর্মবাস দেবেক্সতলা রূপমহীয়ত॥ অঙ্গপ্রত্যুক্তাবণ্যং যদতীর মনোর্মম্। বিহাৰ ছুঠং দেবেক্সং নাসভাগৰগমৎ ভতঃ॥ ধর্মেণ তেজদা ত্যক্তং বলহীনমন্পিণ্য। জ্ঞাতা স্থরেশং দৈতেয়াত্তজ্জনে চকু ক্ল্যুন্ন্। त्रा क्वामू क्रिकारी रंगांगाः त्नरवक्तः विकिशीनवः। কুলেছতিবলা দৈত্যা অজায়ন্ত মহামুনে॥ कमाहित्र्यं कालमा ध्रती ভाরপীড়িতা। क्रशांम रमक्रियंत्रः मरमा बर्ख भिरवोकमान्॥ তেষাং দা কথয়ানান ভূরিভারাবপীড়িন্তা। पञ्चा ग्रक्षेत्रकटेनट्डा । ११ ८थनका त्रनमा ग्रनः ॥ এতে ভবস্তিরস্থরা নিহতাং পৃথুলৌজদঃ। ভে সর্বে মায়ুষে লোকে জাতা গেহেযু ভুভুতান্ অকৌহিল্যে হি বহুলাস্তম্ভারার্তা ত্রছান্যধ:। তথা क्कथरः जिल्ला यथा नाल्डिइंदियाग ॥

পক্ষিণ উচুঃ। তেজোভাগৈন্ততো দেবা অবতেক্ষিবো মহীম্। প্রশ্নামুপকারার্থ: ভ্ভারহরণার চ ॥

যদিলদেহজং তেজন্তমুমেচ শ্বরং র্ক: ।

ক্রাং জাতো মহাতেজান্ততো জাতো ম্বিপ্লির: ॥

বলং মুমোচ পবনন্ততো ভীমো বাক্ষারত ।
শক্রবীর্যার্রতশ্চর জজ্ঞে পার্থো বনজ্ম: ॥

উৎপন্নো যমজৌ মাজাং শক্তরূপে মহাকুতী।

পঞ্চধা ভগবানিথমবতীর্থ: শক্তরূপ্য: ॥

তম্যোৎপন্না মহাভাগা পদ্মী কৃষ্ণা ভ্তাশনাং।

শক্রমোকস্য সা পদ্মী কৃষ্ণা নান্য্যা ক্যাচিং।

যোগীশ্বরং শরীরাণি ক্র্বিভি বহুলান্যাপি ॥

পঞ্চানামেকপদ্মীহ্মিভ্যেতং ক্থিতং ত্ব।

ক্রারতাং বলদেবাহিপি যথা যাতঃ সরম্বতীমু॥

ইতি শ্রমার্ক্তিরে মহাপুরাণে ইক্রবিক্রিদ্যা

নাম পঞ্চমোহ্যার:।

# यर्छा २ धाराः।

রাম: পার্থে পরাং প্রীতিং জ্ঞাতা ক্লফ্র্যা লাঙ্গলী। চিত্তয়ামান বহুধা কিং কুতং স্থকুতং ভবেৎ :: कुरक्षन हि विना नाहर योष्ट्रा इर्रिशांधनाश्चिकम्। পা গুৰান্বা সমাখ্রিতা কথং ছুর্য্যোধনং নুপম্॥ জানাতরং তথা শিষ্যং ঘাত্রিষ্যে নরেশ্রম্। তথান পার্থং যাস্যামি নাপি ছর্টোধনং নুপম্॥ তীর্থেম্বাপ্লাবয়িষ্যামি তাবদাত্মানমাত্মনা। কুলগাং পা **ওবানাঞ্চ যাবদন্তায় কলতে**॥ ইত্যামস্ত্র জ্বাকেশং পার্থসুর্যোধনাবপি। জগাম দাবকাং শৌরিঃ স্বট্রন্যপরিবারিত: ॥ গঙা ধাৰবতীং রামো ছউপুউজনাকুলাম্। (चांश खरतायु छीरर्थयु भरशो भानः हलायुषः ॥ পীতপানো জগামাথ বৈবতোদ্যানমৃদ্ধিমৎ। হতে গৃহীত। সমদাং রেবতীমপ্দরোপমান্॥ औकनवकमधारष्टा गर्यो मखः शना श्रमन्। पनर्भ ह वनः वौद्धा त्रमनीद्रम**ञ्**ख्यम्॥ मर्त्त कुं कल भूव्या हाः नाथा मृश्या क्लम्। পুণ্যং পদ্মবনোপেতং দপল্লমহাবনম্॥ স পৃণ্ন প্রীতিজননান্বহৃন্মদকলান্ভভান। **ভোত্রমান্ স্মধ্রান্ শ**কান্ থগস্থেরিভান্। व्यवधर भागभाःख्व विष्टेशव्यनामिकान् ।

আয়ানায়াতকান্ভবাান্ নারিকেলান্ সভিন্কান্ षाविवकाः छथा की बान् माफ़ियान् वीखश्रकान् প্ৰসান্তকুচান্মোচান্নীপাংশ্চাতিমনোহরান্ পারাবভাংক ককোলান নলিনানমবেতসান ॥ ভলাতকানামলকাংস্তিলকাংশ্চ মহাফলান্। ইঙ্গান্ করম্পাংশ্চ হরীতক্বিভীভকান্॥ এতানভাংশ্চ স তর্ন ্দদর্শ ব্ত্নন্দ :। ভবৈধাশোকপুলাগকেভকীবকুলানথ। চম্পকান্ সপ্তপর্ণংশ্চ কর্ণিকারান্ সমালতীন্। পারিজাতান্ কোবিদারান্ মন্দারান্ বদরাংস্তথা ॥ পাটলান্ পুলিপতান্ রম্যান্দেবদারুক্তমাংতথা শালাংভালাংভমালাংশচকিংওকান্বপুলান্বরান ॥ **চেকেটের: শাতপতিত্রশ্চ ভৃঙ্গরালৈ** স্তথা গুরিক:। (काक्टिन: क्निविटेक्क हात्रीटेडकींवसीवटेक: ॥ ব্দিরপুরেশ্চাতকৈশ্চ তথাকৈ বিবিধঃ থলৈ:। শ্রেরমাং স্মধুরং কৃজ্জিশ্চাপ্যধিষ্ঠিতম্।। नदौः नि ह मरनाङ्गानि क्षेत्रद्वनिलानि ह। কুমুদৈঃ পুগুরীকৈন্চ তথা নীলোৎপলৈঃ শুভৈ: ॥ কহলারেঃ কমলৈশ্চাপি আচিতানি সমস্ততঃ। কাদবৈশ্চক্রবাবৈশ্চ তবিধব জলকুরুটেঃ 🛭 कात्र छरेवः श्लरेवर्रः देमः कृरेर्य्यम् ए छिएतव छ । এভিশ্চাকৈশ্চ কীর্ণানি সমস্তাজ্ঞলচারিভি:॥ क्रांटिया वर्षः वर्षः देशे विविक्तियारम् । স্পামাস্থাত: স্ত্রীভিল্তাগৃহমতুত্মম। त प्रमर्भ विकाश्यक द्यमद्यमात्रभात्। কৌশিকান্ভার্বাংকৈত ভারভাঞান্ সর্গোত্যান विविधियु ह मञ्जान् वश्यम् पिक्रमञ्जान । কণাশ্ৰবণবদ্ধেৎকামুপবিষ্ঠান্ মহৎসূচ ॥ क्रका कित्ना खत्री रयस् क्रमेय् ह त्यी यू ह। স্তঞ্চ তেষাং মধ্যস্থ: কথ্যানং কথাঃ গুড়াঃ। পৌরাণিকীঃ স্থরধীণামাদ্যানাং চরিতাশ্রয়াঃ ॥ मृह्ये त्रामः विकाः मर्स्य मधुभानाकृत्वकृत्म । মত্তো হ্রমিতি মধানাঃ সমুত্রু ত্রাবিতাঃ ॥ পুৰুষ্টো হলধরমূতে তং স্তবংশক্ষ॥ তত: কোধসমাবিষ্টো হলী স্তং মহাবল:। **নিজ্বান বিবৃত্তাক্ষ: ক্ষোভিতাশেষদানব:**॥ অধ্যান্ততি পদং বাদং ত্মিন্ স্তে নিপাতিতে। निकां डाट्ड विकाः गटर्स वना९ कृष्णाकिनांचताः ॥ অবধ্তং তথাতানং মস্তমানো হলাযুধঃ। চিত্তমানাস অনহত্ত্বা পাণ্মিদং ক্রতম ॥

বাদ্ধং খানং গতো হোৰ যৎ হতো বিনিপাতিতঃ।
তথা হীমে ৰিজাঃ সর্কে মামবেক্স বিনির্মাণ্ডাঃ এ
পরীরস্ত চ মে গলো লোহস্তেবাস্থাবহঃ ।
আ্থানকাবগছামি ব্রক্সমির কুংনিভম্ ॥
থিগমর্বং তথা মদামতিমানমভীকতাম্।
বৈরাবিটেন স্মহন্ময়া পাপমিদ্ধি কৃতম্ ॥
তৎক্ষাথিং চরিবাামি ব্রভং বাদ্পবাবিভম্ ।
তৎক্ষাথিং চরিবাামি ব্রভং বাদ্পবাবিভম্ ।
তথ্যতাপনং কুর্বন প্রার্শিত্বমস্ত্রমম্ ॥
তথ্যতাপনং ক্র্বন প্রার্শিত্বমস্ত্রম্ম ॥
তথ্যতাপনং ক্রেম তথিবাত্রী ময়াধুনা।
এতামের প্রায়ভামি প্রতিশোমাং সরম্বতীম্
ততঃ পরং শৃণ্দেমং পাওবেরকথাপ্রয়ম্ ॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে বলদেরবক্ষ

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে বলদেবক্রক্ষ-হত্যাকথনং নাম বর্ঞে হ্ধাায়ঃ।

### সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

-:+:-

### পক্ষিণ উচুঃ।

হরিশ্চন্দ্রেভি রাজ্যিরাদীৎ ত্রেভাযুগে পুরা। ধর্মাত্রা পৃথিবীপাল: শ্রোলসৎকীভিক্তম: ॥ न इर्डिकः न ह वाधिनीक विषय इर्ग नृशीय । নাধর্মক্রয়ঃ পৌরাস্তক্ষিন্ শাস্তি পার্থিবে # বভুবুর্ন তথে। অভা ধনবীয়াতপোমলৈ:। नांबात्रक जित्रदेश्वत कांश्विमध्याश्वरवादनाः॥ স কদাচিনাহাবাছররখোহতুসরন্মৃগম্। শুপ্রাব শব্দসকুৎ ত্রায়ম্বেতি চ যোষিতাম্ n দ বিহায় মৃগং রাজা মা ভৈষীরিতাভাষত। মরি শাদতি ছুর্মেধাঃ কোহ্রমক্তারবৃত্তিমান্। তৎক্রনিতামুগারী চ সর্বারম্ভবিদাতকুং। এত মিলস্তরে রৌদ্রো বিমরাট্ সমচিস্তরৎ 🛭 বিখামিতোহ্যমতুলং তপ আছায় বীর্যাবান্। প্রাগসিদ্ধা ভবাদীনাং বিদ্যা: সাধয়তি ব্রতী ॥ সাধ্যমানাঃ ক্ষমামৌনচিত্তসংঘ্যমিনামুনা। তা বৈ ভয়াৰ্তাঃ ক্ৰন্দস্তি কথং কাৰ্য্যমিদং ময়া ॥ তেজ্বী কৌশিকপ্রেষ্ঠো বয়মস্ত স্কুর্বলা:। কোশস্তোতান্তথা ভীতা তুষ্পারং প্রতিভাতি মে॥ অথবায়ং নৃপঃ প্রাপ্তো মাতৈরিতি বদন মূহ:। ইমমেব প্রবিশ্বাভ সাধ্যিষ্টেয় যথেপিতম ॥

ইভি সঞ্চিত্তা রৌদ্রেণ বিশ্বরাজেন বৈ ততঃ। (जमंबिरही नृशः (काशामिकः वहनमञ्बी ।॥ (कार्त्रः वदां ि वद्यां क्ष्यः भावकः भाभकृत्रतः। বলোঞ্ভেজ্যা দীপ্তে মৃদ্ধি পভ্যাৰুপস্থিতে ৷ **८कारुण मर्कार्य्यकारक्रशिविक्री विक्रायटेतः।** भदेवविकित्रमर्काका भीर्घनिष्ठाः **श्र**दकाि ॥ विश्वविषय छः क्षः अषा उग्र १८७र्वतः। কুদ্ধে চর্ষিবরে ভশ্মিন্ নেগুর্বিদ্যা: ক্ষণেন তা: ॥ স চাপি রাজা ভংগৃষ্টা বিখামিতাং তপোনিধিম্ । **भीजः व्यारव प्रकाला अर्थः महमायथ पर्व व**्रा স ছরাত্মরিতি যদা মুনিন্তিষ্ঠেতি চাত্রবীং। ততঃ স রাজা বিনয়াৎ প্রণিপত্যাভ্যভাষত ॥ ভগবলেষ ধর্মো মে নাপরাধে। মম প্রভো। ৰ কোদ্বাহ্দি মুনে নিজধর্মরতভা মে।। দাতব্যং রক্ষিতব্যঞ্চ ধর্মজ্ঞেন মহীক্ষিতা। চাপিঞােদ্যম্য যোদ্ধবাং ধর্মশাছাত্মদারত:॥

বিশ্বামিত্র উবাচ।

দাতব্যং কভা কে রক্ষ্যাঃ কৈর্ঘোদ্ধব্যঞ্চ তে নুপ। ক্ষিপ্রমেতৎ সমাচক ব্দ্যধর্মভয়ং তব ॥ ছরিশ্চক্র উবাচ।

দাতব্যং বিপ্রমুখ্যেভ্যো যে চাল্লে রুশর্ত্তয়ঃ। রক্ষা ভীতাঃ সুদা যুদ্ধং কর্ত্তব্যং পরিপছিভি:॥

বিখামিত্র উবাচ। যদি রালা ভবান্ সম্যগ্রাজধর্মমবেক্ষতে। নিবে'ইুকামো বিপ্রোহ্হং দীয়তামিউদক্ষিণা॥

পক্ষিণ উচ্:। এতন্তাজা বচ: শ্রুষা প্রস্তুহনান্তরাত্মনা। পুনর্জাতমিবাত্মানং মেনে প্রাহ চ কৌশিকম্॥

পুনর্জাতমিবাত্মানং মেনে প্রান্থ চ কৌশিকম্॥ হরিশ্বল উবাচ।

উচ্যতাং ভগবৎ যৎ তে দাতব্যমবিশন্ধিতম্।
দত্তমিত্যের তদিন্ধি যদ্যপি ভাৎ স্কৃত্রভিম্॥
হিরণ্যং বা স্ক্বর্ণং বা প্রঃ পত্নী কলেবরম্।
শ্রোণা রাজ্যং পুরং দক্ষীর্যদভিত্রেতমাত্মনঃ॥

বিখামিত উবাচ। রাজন্ প্রতিগৃহীতোহরং যতে দতঃ প্রতিগ্রহঃ। প্রবহু প্রথমং তাবদক্ষিণাং রাজস্মিকীম্॥

রাজোবাচ। ব্রহ্মংস্তানপি দাজানি দক্ষিণাং ভবতো হুহ্ম্। ব্রিহ্বচাঃ বিজ্ঞান্দূল বস্তবেষ্টঃ প্রতিপ্রহঃ॥ বিখা মিত্র উবাচ ।
সদাগরাং ধরানেতাং সভ্ভদ্তান পজনাম্।
রাজ্যক সকলং বীর রথখগলসভ্গম্॥
কোঠাগারক কোবক বচ্চান্তবিদ্যতে তব।
বিনা ভার্যাক পুত্রক শরীরক তবানঘ॥
ধর্মক সক্ষেত্রক বো যাস্তমস্পচ্ছতি।
বহনা বা কিম্তেন স্ক্নেডৎ প্রদীয়ভাম্॥

পক্ষিণ উচ্:। প্রস্তাষ্টেইনৰ মনসা সোহবিকারমুখো নৃগ:। তত্ত্বের্বর্তনং শ্রুছা ভবেত্যাহ ক্বতাঞ্চলি:॥ বিখামিত্র উবাচ।

সর্বাদং যদি মে দত্তং রাজ্য মুর্বী বলং ধনম্। প্রভূষং কভা রাজধে রাজ্যতে তাপদে ময়ি ॥ হরিশচকা উবাচ।

বিমিরপি মরা কালে দন্তা ব্রহ্মরা। ত্মিরপি ভবান্ স্বামী কিম্তাদ্য মহীপ্তি:॥

বিখা**মিত উ**বাচ।

যদি রাজংগুরা দতা মম সর্কা বস্থন্ধরা।

যত্র মে বিষয়ে স্থাম্যং তত্মান্ধিকান্তমর্হদি ॥
শ্রোণিস্তাদি সকলং মৃক্ষা ভূষণসংগ্রহম্।
তক্ষবক্লমাবধ্য সহ পদ্ধা স্তেন চ॥

পকিণ উচ্:। তথেতি চোক্ষা কৃষা চ রাক্ষা গন্ধং প্রচক্রমে। স্পাজা শৈব্যমা সাধিং বাগকেনাম্মকেনে চ ॥ বজতঃ স ততো কৃষ্ণা পছানং প্রাহ তং নৃপৃষ্। কু যাক্ষ্যীতাদ্বা মে দক্ষিণাং রাক্স্যুকীয়ু॥

হরিশ্চক্র উবাচ। ভগবন্ রাজ্যমেতৎ তে দত্তং নিহতক্তীকৃষ্। অবশিষ্টমিদং ব্রহ্মদা দেহজন্ন: মম॥

বিখামিত উবাচ।
তথাপি থলু দাতব্যা দ্বরা মে যজ্ঞদকিপা।
বিশেষতো আক্ষণানাং হস্ত্যালন্তং প্রতিশ্রতম্ ॥
যাবৎ তোবো মাজস্বের আক্ষণানাং ভবের প।
তাবদেব তু দাতব্যা দক্ষিপা রাজস্মিকী॥
প্রতিশ্রত্য চ দাতব্যং যোজব্যকাতভামিভিঃ।
রক্ষিতব্যান্তথা চার্ডান্থবৈব প্রাক্ প্রতিশ্রতম্॥

হরিশ্চক উবাচ। ভগবন্ সাম্প্রতং নাত্তি দাজে কালক্রমেণ তে। প্রসাদং কুক বিপ্রবেশ স্ভাবমন্টিকাচ।

### বিশামিত উবাচ।

কিন্দ্রনালে। মরা কালঃ প্রেডীক্যান্তে জনাধিপ। শীঘ্রমাচজ্ শাপারিরক্তথা স্বাং প্রধক্ষাতি॥

### হরিশ্চন্দ্র উবাচ।

মাদেন তব বিপ্রব্ধে প্রদান্তে দক্ষিণাধনম্। সাপ্রেতং নান্তি মে বিভ্রমস্কুজাং দাতৃম্ক্সি॥ বিশ্বামিক উবাচ। গচ্ছ গচ্ছ নৃপপ্রেষ্ঠ অধর্মমস্পালয়। শিবশ্চ তেহধবা ভবতু মা সন্তু পরিপন্থিনঃ॥ পক্ষিণ উচুঃ।

ততঃ স রাজ্যবিরো বিশ্বয়াবিষ্টমানসঃ। অমুক্তাভণ্চ গচ্ছেতি জগাম বস্থুণাধিপঃ॥ পদ্যামসুচিতা গ্রুমব্গচহত তং প্রিয়া॥ তং সভাষ্যং নূপশ্রেষ্ঠং নির্যান্তং সমূতং পুরাং। पृष्ठे 1 व्यक्तक ए: Ceोश ताळ टेम्डवाक्याशिनः ॥ হা নাথ কিং জহাত্তমানু নিত্যা বিপরিপীভিতান ত্বং ধর্মতৎপরো রাজন্ পৌরার গ্রহক্রও তথা। नम्रात्रानित्र ताक्षर्य यक्ति भर्यभटनकरम् ॥ মুহুর্ত্তং তিষ্ঠ রাজেন্দ্র ভবতে। মুখপক্ষর। পিবামো নেত্রমবৈঃ কদা দ্রক্ষাম্যে পুনঃ॥ ষক্ত প্রেমাতক্ত পুরো যান্তি প্রেচ চ পার্থিবাঃ। ভক্তানুষাতি ভার্যোরং গৃহীবা বালকং সুত্র ॥ যশু ভূত্যা: প্রয়াত শু যাস্ত্যতো কুঞ্জর স্থিত।ঃ। স এষ পদ্তাং রাজেন্তো হরিশ্চন্তোহদ্য গছতি। হা রাজন্ অকুমারং তে অক্ অবচমুল্নম্। পথি পাংশুপরিক্লিউং মুখং কীদৃগ্ভবিষ্যতি॥ ভিষ্ঠ ভিষ্ঠ নৃপশ্ৰেষ্ঠ অধ্যমমুপালয়। আনৃশংস্থং পরে। ধর্মঃ ক্ষ্তিযাণাং বিশেষতঃ ॥ किः माटेतः किः ऋटेखनांथ धटेनधारेखादथाणि ता न সক্ষেত্ৎ পরিত্যজ্য জ্বায়াভূতা বয়ং তব ॥ হা নাথ হা মহারাজ হা স্বামিন্ কিং জহাসি নঃ যত पः তত হি বয়ং তৎ স্লুখং যত বৈ ভবান্। নগরং তদ্ভবান্ যত্ত স অর্গো যত্ত নো নৃপঃ॥ ইতি পৌরবচঃ শ্রুতা রা**জা** শোকণবিপ্লতঃ। **অতি**ষ্ঠৎ স তদা মার্দে তেষামেবালুকম্পায়া॥ বিখামিত্রোহপি ভং দৃষ্টা পৌরবাক্যাকুলীকৃতম্ रत्रायामर्यविवृ**खाकः ममाग**मा वटांश्ववौ । धिक् जाः वृष्टेनमाठात्रमनृष्ठः विकालाविनम्। मभ प्राकाक नवा गः श्रमः आकरे मिक्ति॥

ইত্যক: পরুষং তেন গছানীতি স্বেপ্র্:।
ক্রবরেবং যথে শীঘ্রমাকর্যন্ দ্বিতাং করে॥
কর্যক্রাং ততো ভার্য্যাং স্কুমারীং শ্রমাতুরাম্।
সহসা দওকাঠেন ভাড়রামাস কৌশিকঃ॥
ভাং তবা ভাঙিডাং দৃষ্ট্রা হরিশ্চন্তে। মহীপতিঃ।
গছামীতাাই হংখার্জো নাক্তং কিঞ্ছিত্বদাহর ॥
অধ বিখে তদা দেবাং পরু প্রান্ত: কুপানবঃ।
তদবস্থং কুতং দৃষ্ট্রা হরিশ্চন্তেং নরেশ্বরম্।
বিখামিত:স্পাপোহ্রং লোকান্কান্সমবাপ্রাতি
যেনারং যজনাং শ্রেষ্ঠ: স্বরাক্যাদবরোপিতঃ॥
কক্র বা শ্রদ্রা পৃতং স্কৃতং সোমং মহাধ্বরে।
পীষ্যা ব্রং প্রযান্তামো মৃদ্রু মন্ত্রপুরঃসরম্॥
পিক্লিণ উচুঃ।

ইতি তেষাং বচঃ শ্রন্থা কৌশিকোহ্ ত্রিক্ষা বিতঃ।
শণাপ তান্ মন্ত্রান্থং সর্প্রে যুয়মবাক্ষ্যথ ॥
প্রাদিত হচ তৈঃ প্রাহ পুনরের মহামুনিঃ।
মান্ত্রন্থেই পি ভবতাং ভবিত্রী নৈর সন্ততিঃ॥
ন দারসংগ্রহণৈচন ভবিতা ন চ মৎসরঃ।
কামক্রোধবিনির্মান্তলা ভবিষ্যথ স্থরাঃ পুনঃ॥
ততোহ্বতেরুরংশৈঃ সৈর্দেবান্তে ক্রবেশনি।
দোগদীগর্ভসম্ভাং পঞ্চ বৈ পান্ত্রনালাঃ॥
এতমাৎ কাবণাৎ পঞ্চ পান্তবেরা মহার্থাঃ।
ন দারসংগ্রহং প্রাপ্তাং শাপাৎ তক্ত মহামুনেঃ॥
এতৎ তে সর্প্রমান্তাং পান্তবের্য্রক্থা শ্রন্থা।
প্রাং চতুইয়ং গীতং কিম্ন্ত চ্ছে ত্র্যিচ্ছিসে॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ক্রোপদেয়ে। পত্তিনাম সপ্তমোহধায়িঃ।

# অউমোহধ্যায়ঃ।

-- ° 0 ° ---

### देशिनिक्वाह।

ভবভিরিদনাথাতিং যথাপ্রশ্নমস্ক্রমাৎ।
মহৎ কৌতৃহলং মেহন্তি হরিশ্চন্ত্রকথাং প্রতি ॥
অহো মহাত্মনা তেন প্রাপ্তং কুছে মম্ভ্রম্।
কচিচেং স্থমস্থাপ্তং ভাদূগেব বিজ্ঞোভ্রমাঃ ॥
পক্ষিণ উচুঃ।

বিখামিত্রবচঃ শ্রুখা স রাজা প্রথযৌ শনৈ:। শৈব্যসার্গতো ডঃখী ভার্যায়া বালপুলুয়া।। স গন্ধ বস্থাপালে। দিব্যাং বারাণ্সীং পুরীষ্।
নৈবা মন্থ্যভোগ্যেতি প্লপাণেঃ পরিপ্রছঃ ॥
জগাম পদ্ধাং হংখার্ডঃ সহ পদ্ধান্ত্র্লর।।
পুরীপ্রবেশে দদ্শে বিখামিত্রম্পন্থিত্র্য ।
তং দৃষ্টা সমন্থাপ্তঃ বিনয়াবনতোহভবও।
প্রাহ চৈবাঞ্লিং কুলা হরিশ্চক্রো মহামুনিম্ ॥
ইমে প্রাণাঃ স্তশ্চার্মিয়ং পদ্ধী মুনে মুম।
বেন তে কুত্যমন্ত্রাণ্ড ভদ্পহাণ্যি।মৃত্যম্ ॥
যহান্ত্রৎ কার্য্যাভিত্তদন্ত্রাতুমইলি ॥

বিখামিত্র উবাচ। পূর্ণ: স মাসো রাজর্ষে দীরতাং মম দক্ষিণা। রাজস্থনিমিত্তং হি স্মর্থাতে স্বৰচো যদি॥ হ্রিশ্চক্র উবাচ।

প্রক্ষরদাৈব **স্ব**ম্পূর্ণে। মাধ্যোভ্যানতপোধন। তিঠত্যেতদ্দিনার্দ্ধং যৎ তৎ প্রতীক্ষপ মা চিরম্। বিখামিত্র উবাচ।

এবনস্ত মহারাজ আগমিয়াম্যছং পুনঃ।
শাপং তব প্রদান্তামি ন চেদদ্য প্রদান্তামি ॥
ইত্যুক্তা প্রথম বিজ্ঞো রাজা চাচিত্তয়ৎ তদা।
কথমশৈ প্রদান্তামি দকিলা যা প্রতিক্রতা ॥
কৃতঃ পুরানি মিত্রালি কুতো হর্থঃ সাম্প্রতং মম।
প্রতিগ্রহঃ প্রতুরো মে নাহং যাম্মাম্যঃ কথম্ ॥
কিম্ প্রাণান্ বিম্কানি কাং দিশং যাম্মাকিঞ্নঃ।
যদি নাশং গমিয়ামি অপ্রদায় প্রতিক্রতম্।
প্রস্তুর্থ ক্রমিঃ পাপো ভবিষ্যাম্যনাধ্যঃ ॥
অথবা প্রেষ্যভাং যান্তে ব্রমেবাত্মবিক্রয়ঃ॥

# পক্ষিণ উচুঃ।

রাজানং ব্যাকুলং দীনং চিত্তমানমধোন্থন্।
প্রেত্যবাচ তদা পত্নী বাষ্পালগদায় গিরা॥
তাল চিত্তাং মহারাজ অসত্যামসুশালয়।
শশানবহজনীয়ে নরং সত বহিদ্ধৃতঃ॥
নাতঃ পরতরং ধর্মং বদন্তি পুরুষতা তৃ।
বাদৃশং পুরুষবাছি অসত্যপরিপালনম্॥
অধিহোত্রমধীতং বা দানদোশ্চাধিলাঃ ক্রিয়াঃ।
ভজতে ততা বৈফল্যং যতা বাক্যমকারণম্॥
সত্যমতাভাম্দিতং ধর্মশাক্রের্ধীমতাম্।
তারণায়ান্তং তবং পাতনামাক্রতাজ্বনাম্॥
সপ্তাব্যমনাক্রতা রাজস্মঞ্চ পার্বিঃ।
কৃতিনাম চ্যতঃ অ্রাদ্যজ্বতনাং সক্রং॥

রাজন্ জাতমপত্যং মে ইডুাজ্যা প্রকরোদ হ।
বালপাপুগুতনেআন্তামুবাচেদং মহীপতিঃ ॥
হরিশক্ত উবাচ।
বিম্ঞ ভজে সন্তাপময়ং তিষ্ঠতি বালকঃ।
উচ্যতাং বকুকামাসি যদা সংগ্রাকা।
পজুবাচ।
রাজন্ জাতমপত্যং মে সভাং পুত্রকলাঃ ক্রিরঃ।
স্মাং প্রদায় বিজেন দেছি বিপ্রায় দক্ষিণাম্॥
পক্ষিণ উচুঃ।

এতদ্বাক্যমুপশ্রতা যথৌ মোহং মহীপভি:।
প্রতিলভা চ সংজ্ঞাং স বিললাপাতিছ্:বিভ:॥
সহদ্ব:বিদিং ভল্লে যৎ ঘমেবং প্রবীধি মাম্।
কিং তব বিতসংলাপা মম পাপশু বিশ্বতা:॥
হা হা কথং ঘ্যা শক্যং বকুমেতচ্চুচিকিতে।
দুর্গাচামেত্বচনং কর্ত্বং শকোমাহং কথম্॥
ইত্যুক্তা স নরশ্রেটো বিশ্বিগিত্যসকৃদ্ববন্।
নিপপাত মহীপৃটে মুদ্ধুরাভিপরিপ্লুত:॥
শ্রানং ভ্বি দৃষ্ঠাতং হবিশ্চশ্রং মহীপতিম্।
উবাচেদং সককণং রাজপদ্ধী শুহ্:বিতা॥
পদ্যুবাচ।

হা মহারাজ কভেদমণ্ধানম্পশ্বিতম্।

যৎ বং নিপতিতো ভূমৌ রাজবাতরগোচিতঃ ॥

যেন বেটাগ্রগোবিতং বিপ্রাণামপবর্জিতম্।

ন এব পৃথিবীনাথো ভূমৌ স্বশিতি মে পতিঃ ॥

হা কঠং কিং ভবানেন কৃতং দেব মহীক্ষিতা।

যদিলোপেকতৃল্যাহ্যং নীতঃ প্রস্থাপনীং দশাম্॥

ইত্যুক্য সাণে সুলোগী মৃক্তিতা নিপপতে হ।

ভর্তংখনহাভারেণাসহেন নিপীড়িতা॥

তৌ তথা পতিতৌ ভূমাবনাথৌ পিতরৌ শিতঃ

দৃষ্টাতাতং ক্ষাবিতঃ প্রাহ বাকাং স্ক্থিতঃ॥

হাত তাত দদসারম্ভাভ ভোজনং দদ।

ক্মো বলবতী জাতা জিহ্বাগ্রং ভ্যাতে তথা॥

পক্ষিণ উচুঃ।

এত সিরস্থরে প্রাপ্তো বিশামিত্রো মহাতপা:।
দৃষ্ট্র তুতং হরিশ্চক্তং প্তিডং তৃবি মৃদ্ধিত্ম ।
ন বারিণা সমত্ক্ষ্যে রাজানমিদমন্ত্রীৎ।
উত্তিগৈতিই রাজেক্র তাং দদপেইদক্ষিণাম্।
ঝণং ধাররতো হংগমহক্তদ্দি বস্থতে ॥
আপ্যায্যমান: স তদা হিম্মীতেন বারিণা।
অবাপ্য চেতনাং রাজা বিশাম্ত্রম্বক্ষ্য চ।

**পুনপোदः সমাপেদে সচ কোধং যযৌ মুনিঃ**॥ স সমাখাত রাজানং বাকামাহ বিজোভন:। দীয়তাং দক্ষিণা দা মে যদি ধর্মমবেক্ষদে॥ সভোনার্কঃ প্রভণতি সভ্যে তিষ্ঠতি মেদিনী। সভ্যঞোকং পরে। ধর্মঃ স্বর্গ: সভ্যে প্রভিষ্ঠিত:॥ অখনেধসহত্রঞ্সত্যঞ্জুলয়া ধৃতম্। অখ্যেধসহস্রাদ্ধি সভ্যমেব বিশিষ্যতে 🛭 অথবা কিং মনৈতেন সামা প্রোকেন কারণম। অমনাৰ্গ্যে পাপসকলে কুরে চান্তবাদিনি । ছয়ি রাজ্ঞি প্রভবতি সন্তাবঃ শ্রমতাময়ম্॥ আন্দুনে দকিণাং রাজন্ন দাস্ততি ভবান্যদি। অন্তাচলং প্রোতেহর্কে শব্দামি হাং ততো ধ্রুবম ইজ্যুক্তাৰ যথৌ বিশ্ৰো রাজা চাদীস্তয়াভুরঃ। কান্দিগ্ভূতোহ্ধমো নিঃখো নৃশংস্ধনিনাৰ্দ্দিতঃ॥ ভার্যাক্ত ভুষঃ প্রাহেদং ক্রিয়তাং বচনং মম। भा भागानवनिक्धः शक्षप्रम्थयात्रि॥ স তথা চোদ্যমানস্ত রাজা পর্যা পুনঃ পুনঃ। প্রাহ ভত্তে করোমোষ বিক্রমং তব নিঘুণঃ। নৃশংলৈরপি যৎ কর্ত্তুংন শক্যং তৎ করোম্যহম্। যদি মে শক্যতে বাণী বক্তুমীদৃক্ স্ত্র্বিচঃ॥ এবমুক্তা ভতো ভার্যাং গছা নগরমাতুর:। বাষ্পপিহিতকঠাকস্ততো বচনমত্রবীৎ॥

রাজোবাচ।

ভো ভো নাগরিকা: সর্ব্ধে শৃণ্ধং বচনং মন।
কিং নাং পৃদ্ধে কত্তং ভো নৃশংসে।২ইমনামূধঃ ॥
রাক্ষসো বাতিকঠিনস্ততঃ পাপতরোহণি বা।
বিক্রেত্ং দয়িতাং প্রাপ্তো যোন প্রাণাংস্তাজামাহম্
যদি বং কন্ততিৎ কার্য্য দালা প্রাপেইয়া মন।
স ত্রবীতু স্বাযুক্তো যাবৎ সন্ধারয়ামাহম্ ॥
পক্ষিণ উচুঃ।

জ্ব বুদ্ধো বিজঃ কশ্চিদাগত্যাই নরাধিপম্।
সমর্পমন্থ মে দাসীমহং ক্রেডা ধনপ্রদা।
ভাতি মে বিভ্রমন্তোকং স্কুমারী চ মে প্রিদা।
গৃহকর্মনান শক্ষোতি কর্তুমন্তাৎ প্রথছ মে ॥
কর্মনাভাবহোকপশীলানাং তব ঘোষিতঃ।
ভাস্কপমিদং বিভং গৃহাণার্শার মেহবলাম্॥
এবমুক্ত বিপ্রেণ হরিলক্তেভ ভূপতেঃ।
ব্যদীর্ঘাত মনো হংখার চৈনং কিঞ্চিদ্রবীৎ॥
ভতঃ স বিপ্রো নৃপত্রেশ্বলান্তে দৃঢ়ং ধনম্।
বৃদ্ধা কেশেশ্বণাশ্র নৃপপত্রীমক্ষ্থ।

করেদে রোহিতাখেহিশি দুই কুইছে মাতরম্।
হতেন বস্তমাকর্ষন্ কাকপক্ষর: শিশুঃ ॥
রাজপদ্মাবাচ।
মুঞার্য্য মুঞ্চ ভাবন্ধাং যাবৎপশ্সামাহং শিশুম্।
ফুলভং দুর্শনং তাত পুনরস্ত ভবিষ্যতি ॥
পত্তৈহি বৎস মামেবং মাতরং দাস্তভাং গতাম্।
মাং মা প্রাক্ষী রাজপুত্র অপ্রাহং তবাধুনা ॥
ততঃ সুবালঃ সহসা দুই কিইছে মাতরম্।
সমভ্যধাবদ্যেতি কদন্ সাআবিলেকণঃ ॥
তমাগতং ঘিলঃ কোধাঘালমভ্যাহনৎ পদা।
বদংত্তথাপি সোহ্যেতি নৈবাম্ঞ্ত মাতরম্॥
রাজপ্ত্যবাচ।

थिमानः क्क तम नाथ कौगीरममक वानकम्। कौरामि नादः खबराजा विदेननः कृषिमाधिका॥ देथाः ममान्नामाः थिमानस्म्रश् खब। माः मरश्याका वालन वर्षमान पत्रिनीम्॥ खास्त्र खेवाह।

গৃহতাং বিত্তমেতৎ তে দীয়তাং বালকো মম। শ্বীপুংসোধৰ্মশাহুতৈঃ কৃতমেব হি বেতনম্। শতং সহস্ৰং লক্ষ্ণ কোটিমূল্যং তথা পরে:॥ পক্ষিণ উচ:।

ভবৈধ তক্ত ভিছিৎ বদ্ধোত্ত বৃপটে তক্তঃ।
প্রগৃষ্ঠ বালকং মাত্রা সহৈকত্বমবন্ধ্য ।
নীয়মানৌ তু ভৌ দৃষ্টা ভার্যাপুজৌ স পার্থিবঃ॥
বিললাপ স্বতঃধার্তো নিশুক্তোফং পুনং পুনঃ॥
ঘাং ন বাযুর্ন চাদিত্যো নেন্দ্র্ন চ পৃথগুজনঃ।
দৃষ্টবন্তঃ পুরা পজীং সেয়ং দাসী ছমাগতা॥
স্থাবংশ প্রস্তোহ্যং স্ক্র্মারকরাঙ্গুলিঃ।
সম্প্রাপ্রা বিক্রয়ং বালো ধিয়ামস্ত স্ক্র্মিঃ।
হা প্রিয়ে হা শিশো বৎস ম্মানার্য্য ত্র্মিঃ।
দৈবাধীনাং দৃশাং প্রাপ্তোন মৃত্তাহ্মি তথাপি ধিক্

এবং বিলপতো রাজ: স বিপ্রোইস্করধীয়ত।
বৃক্ষগেহাদিভিস্ত কৈন্তাবাদার দ্বাহিত: ॥
বিধানিত্ততঃ প্রাপ্তো নৃপং বিভ্রমণাচত।
তব্দু সমর্পর্যাস হরিশ্চনোহিপি ভদ্ধন্য।
তদ্বিভং ভোকমালোক্য দারবিক্রমন্তবন্ ॥
শোকাভিভূতং রাজানং কুপিতঃ কৌশিকোহববীৎ
ক্ত্রবদ্ধা মন্মাং দ্বং সৃদৃশীং যুজ্ঞদক্ষিণাম্।
মন্তব্য দি তৎ ক্ষিপ্রং প্রাস্থাব্য ব্যাব্য প্রম্॥

তপ্লোহ্য স্থেত্থত ব্ৰাস্থণ্যতমেশত চ। মংপ্ৰভাবত চোগ্ৰত বছতাধ্যমনত চ। হবিশক্ত উবাচ।

বাস-চল্ল ওবাচ।
অক্সাং দাভামি ভগৰন্ কালঃ কন্চিৎ প্রতীক্ষ্যতাম্
সাম্প্রতং নান্তি বিক্রীতা পদ্মী প্রক্ত বালকঃ ॥
বিশ্বামিক উবাচ।

চতুর্ভাগঃ স্বিতো যোহরং দিবসক্ত নরাধিপ । এষ এব প্রতীক্ষ্যো মে বক্তব্যং নোভরং ভ্রা॥ পক্ষিণ উচুঃ।

তমেবমুকা রাজেক্স নিষ্ঠুবং নিম্মৃণং বচঃ।
তদাদার ধনং তৃণং কুপিতঃ কৌশিকো যথৌ॥
বিশামিকে গতে রাজা ভরশোকাকিমধ্যগঃ।
সর্কাকারং বিনিশ্চিত্য প্রোবাচোটেচরধাম্ধঃ॥
বিভক্রীতেন মো হুর্থী ময়া প্রেয়োগ মানবং।
দ ব্রবীত অবাযুক্তো যাবৎ তপতি ভাল্পরঃ॥
অধাজ্যাম অরিতো ধর্মশুণ্ডালরপধৃক্।
ফর্গন্ধো বিক্তো রক্ষ: শাশ্রুণো দত্তরো ঘূলী॥
ফক্ষো লহোদরঃ পিক্সক্ষাকঃ প্রধাক্ষরঃ।
সৃহীতপক্ষিপৃঞ্জন্ড শ্বমানৈগ্রলক্ষতঃ॥
কপালহতো দীর্ঘাল্যো ভৈরবোহতিবদন্ মৃতঃ।
ম্বাণাভিরতো ঘোরো ঘৃষ্টিহতো নিরাক্কতিঃ॥
চণ্ডাল উবাচ।

জহম্থী তথা শীঘং কথ্যস্থাত্মবেতনম্। ত্যোকেন বহুনা বাপি যেন বৈ লভ্যতে ভ্ৰান্॥

পক্ষিণ উচ্:। ভং তাদৃশমথালক্ষ্য ক্রুন্টিং স্থনিষ্ঠুরম্।

ক্ৰেপ্তমতিছ:শীলং কল্মিতঃ।ই প্ৰিব: ॥ চণ্ডাল উবাচ।

স্তালোহ্ছমিহাথাতে: প্রবীরেতি পুরোত্তমে। বিধাতো বধ্যবধকো মৃতক্ষলহারক:॥

হরিশ্চক উবাচ। বাহং চঙাপদাসভ্যিতেছয়ং ক্রিগহিত্যু। বেং শাপায়িনা দঝোন চঙাপ্রশং গতঃ।

পক্ষিণ:উচুঃ।

• তৈবং বদতঃ প্রাপ্তো বিখামিততপোনিধিঃ।
কাপামর্থবিবৃত্তাকঃ প্রাহ চেদং নরাধিপৃস্॥
বিখামিত উবাচ।

■বিশামিত উবাচ।

ব দীয়তে মহুম্পেবা ব্লুদ্কিণা॥

হরি**শক্ত উবাচ।**ভগবন্ স্থ্যবংশোখনাত্মানং বেলি কৌনিক।
কথং চণ্ডানদাসতং গমিধ্যে বিত্তকামুকঃ॥

বিখামিত্র উবাচ।

যদি চণ্ডালবিত্তং ত্মাত্মবিক্রয়জং মম। ন প্রদান্তনি কালেন শপামি তামসংশয়ম্॥

পকিণ উচুঃ।

হরিশ্রপ্রতাে রাজা চিস্তাবস্থিতজী বিতঃ। প্রদীদেতি বদন্ পাদাব্যেজগ্রাহ বিছবেশঃ॥

হরিশ্চন্দ উবাচ।

দাসোহস্মার্কোহন্দি ভীতে।হন্দি ত্বস্তুক বিশেষ্তঃ
কুক প্রসাদং বিপ্রবর্ধ কট্টন্ডথালসম্বর: n
ভবেয়ং বিভ্তশেষেণ সর্কক্ষক্রো বশং।
তবৈব মুনিশার্দ্দূল প্রেষ্যদিভামুবর্জকঃ n

বিশ্বামিতা উবাচ।

ষদি প্রেষ্যোমম ভবান্ চণ্ডালায় তভো মরা। দাসভাবমস্প্রাধ্যো দভো বিত্তার্কুদেন বৈ ॥

পক্ষিণ উচু:।

এবমুক্তে তথা তেন **খণাকো ন্তুমানদঃ।** বিখামিতায় ভদ্জব্যং দ্বা বন্ধা নরেখরম্ ॥ দওপ্রহারসম্ভান্তমতীব ব্যাকুলেঞ্জিয়ম। देष्टे वक्त् विद्यां गार्ख मनय विकास पर नम्॥ হরিশ্চন্দ্রতো রাজা বসংশচতালপত্তনে। প্রাতর্মগাহুদময়ে সার্টঞ্তদগায়ত ॥ वाला तीनम्थी पृष्ट्रा वालः तीनम्थः श्रवः। মাং অরত্যস্থাবিষ্টা মোচয়িষ্যতি নৌ নৃণঃ। উপাত্তবিতাে বিপ্লায় দথা বিত্তমতােহধিকম। ন সা মাং মুগশাবাকী বেতি পাপভরং ফুভস্॥ রাজ্যনাশ: অুস্ত্যাগো ভার্যাতনমবিক্রয়:। প্রাপ্তা চণ্ডালভা চেরমহো ছঃখণরম্পরা। এবং স নিবসন্ নিভ্যং সন্মার দরিতং স্থতমূ। ভার্যাঞ্জানমাবিষ্টাং জতদর্বশ আভুরঃ॥ কস্তচিত্বপ কাল্ফ মৃতচেলাপহারক:। হরিশ্চ**স্তে হিভবজালা শ্মশানে তর্শায়ুগঃ** ॥ চণ্ডালেনাত্রশিষ্টশ্চ মৃতচেলাপহারিণা। শ্বাগ্মন্ম্বিচ্ছলিছ ডিঠ দিবানিশ্যু ৪ ইদং রাজ্ঞেহলি দের্ঞ ষড্ভাগন্ত শবং প্রতি 4

ইতি প্রতিসমাদিটো জগাম শবমন্দিরম্। দিশন্ত দক্ষিণাং যত্র বারাণভাং স্থিতং তদা ॥ শাশানং ঘোরসংনীদং শিবাশতস্মাকুলম্। গ্রগোমাযুদকীর্ণ খবুন্দপরিবারিতম্॥ অস্থিসজ্বাত্সমীর্ণং মহাত্র্যক্ষসক্ষ্ম। নানামৃতস্ক্রাদরৌদ্রকোলাহলাযুত্যু ॥ হা পুত্র মিত্র হা বস্কো ভাতবর্ৎস প্রিয়াদ্য মে। হা পতে ভগিনী মাতর্হ। মাতুল পিতামহ॥ মাতামহ পিত: পৌল্ৰ ক গতোহত্তেহি বাৰুব। ইত্যেবং বদতাং যত্ত্র ধ্বনিঃ সংশ্রেষতে মহান ॥ **জলরাংসবসামেদজহম**ছমিতসঙ্লম্॥ ব্দিকাঃ শ্বাঃ শ্বামা বিকস্দন্তপংক্তয়:। হসস্তীবাগ্নিধান্তাঃ কায়ত্তেয়ং দশা বিভি॥ **অগ্নেন্টটটাশব্দো ব্যসাম**স্থিপংক্তিযু। বান্ধবাঞ্ৰশশকত পুক্ষেষ্ প্ৰহৰ্ষজঃ॥ গায়তাং ভূতবেতালপিশাচগণরক্ষদাম্। শ্রেছান্ বোর: কলান্ত ইব নিস্নঃ॥ মহাম্হিষকারীষ্ণোশকুডাশিস্ভুলম্। **ভত্তথন্তম্কুটে চ বুতং সাম্বিভিক্**লতৈঃ॥ नारमा शहा बचानी भकाक विरक्ष भका निक्या। **অনেকশন্ধবন্ত্রং শাশানং নরকাযতে** ॥ সবছিগুটের্ডারশিবৈঃ শিবারুটত-র্নিনাদিতং ভীষণরাবগহবরম । खब्रः खब्रञाभाभमञ्जनतेन् ५ শ্মশানমাক্রনবিরাবদারণম্॥ স রাজা তত্র সম্প্রাপ্তো ছঃথিতঃ শোচনোদাতঃ হা ভুত্তা। মন্ত্ৰিণাে বি প্ৰা: ক তদ্ৰাজ্যং বিধে গতম হা শৈবোপুত হাবলৈ মাংত্যক াম কভাগ্যক্ষ্ বি**খামিত্র**ন্ত দোষেণ গতাঃ কুত্রাণি তে মম ॥ ইছোবং চিন্তয়ংন্তত্ত চণ্ডালোক্তং পুনঃ পুনঃ। मिनित्ना क्रक्रमस्राचः (क्रम्यान् शक्तवान् श्वकी॥ লক্টী কালকল্লচ ধাবংশ্চাপি ততস্ততঃ। ব্দিন্দির ইদং মূলাং প্রাপ্তং প্রাপ্যামি চাপুত ইদং মম ইদং রাজের মুখ্যচাণ্ডালকে জ্বিন্। हेि थावन मित्या बाका कीवन त्याना खबर शकः **জীর্ণকর্ণ টম্রগ্রাস্থিক তক্ষ**রাপরিগ্রহ:। চিতাভশার**ভোলিওম্থ**বাছ্দরাজিন্কঃ॥ নানামেদোবদামজ্জলিপ্রপাক্তপ্রলঃ খসন। নামাশবোদনকুতাহারত্থিপরায়ণ: ॥

অয়স্ত মম ভাগাঃ স্থাধে ভিগে তব বেতনম্॥

তদীয়মাল্যসংশ্লেষক্রতমন্তক্মগুন:। ন রাত্রো ন দিবা শেতে হা হেতি প্রবদন্ মৃতঃ ॥ এবং দাদশমাসাস্ত নীতাঃ শতস্মাপমাঃ। न कपाहिन् পশ्चिष्ठः आखा वक्वविद्यागवान्॥ নিদ্রাভিভৃতো রক্ষাঙ্গো নিশ্চেষ্ট: স্থপ্ত এব চ। তক্রাপি শয়নীয়ে স দৃষ্টবানস্ততং মহৎ ॥ শাশানাভ্যাস্থোগেন দৈবকা বলবভয়া। অন্তদেহেন দ্বা তু গুরুবে গুরুদক্ষিণাম ॥ তদা ঘাদশ বর্ষাণি জ্থেদানাত্ত্রিফ্ডি:। আত্মানং স দদশাথ প্রসীগর্ভসম্ভবম্॥ তত্রস্থাপ্যমৌ রাজা সোহচিত্তয়দিদং তদা। ইতো নিজ্ঞান্তমাতো হি দানধর্ম্ম করোমাহম॥ অনস্তরং স জাতস্ত তদা পুরুসবালক:। শশানমৃতসংস্কারকরণেযু সদোদাত:॥ প্রাপ্তে তু সপ্তমে বর্ষে শাশানেইথ মুতো দ্বিজঃ। আনীতো বন্ধভিদ্ইতেন তত্রাধনো গুণী॥ মূল্যার্থিনা তু তেনাপি পরিভূতাস্ত ব্রাহ্মণাঃ। উচুত্তে ব্ৰাহ্মণান্তম বিশামিত্রন্ত চেষ্টিতম্॥ পালিষ্ঠম ভভং কর্ম কুরু ত্বং পাপকারক। হরিশ্চন্দ্রঃ পুবা রাজা বিখামিত্রেণ পুরুদঃ। ক্তঃ পুণাবিনাশেন ব্রাহ্মণসাপনাশনাৎ॥ যদান ক্ষমতে তেষাং তৈঃ স শপ্তো ক্ষা তদা। গচ্ছ घः नत्रकः (पात्रमधूटेनव नत्राथम ॥ ইত্যুক্তমাতে বচনে স্বপ্তঃ সু নুপস্তদা। অপখদ্যমদূতান বৈ পাশহতান্ভয়াবহান্॥ रेजः मरशृशीजभाषानः नीयमानः जना वनार । পশুতি স্ম ভূশং থিরো হা মাতঃ পিতর্দ্য মে ॥ এবম্বাদী স নরকে তৈলম্বোণ্যাং নিপাতিতঃ॥ ক্রকটেচঃ পাটামা**নস্ত ক্ষ্**রধার:ভিরপ্যধঃ। অন্দে তমদি ছঃখার্ত্তঃ পুযশোণিতভোজনঃ॥ मश्चवर्षः মৃতাত্মানः পুरुमण्ड नन्भ र। দিনং দিনস্ত নরকে দহুতে পচ্যতেইগুতঃ॥ থিদাতে ক্ষোভাতে২কত্র মার্যাতে পাটাতে২কতঃ কার্য্যতে দীপাতেহন্তত শীতবাতাহতে;হন্ততঃ ॥ একং দিনং বর্ষশতপ্রমাণং নর্কেইভবৎ। তথা বর্ষশতং তত্র প্রাবিতং নরকে ভটৈঃ ম ততো নিপাতিতো ভূমৌ বিষ্ঠাশী খা ব্যজায়ত। বাস্তানী নীতদগ্র**ণ্ড মাদ্যাতে মৃতোহপি সং**॥ অথাপশ্রহ ধরং দেহং হস্তিনং বানরং পশুম্। ছাগা বিভালং কল্প গমিবিং প্রক্রিণ কুমিম !

मर्जः कृषीः वदाह्य याविषः कृक्षेः ७कम्। भात्रिकाः स्वावताः टेन्टव नर्शयकाः 🗝 ८५ हिनः ॥ ं पिरत्य प्रित्य अन्य व्यानिनः व्यानिनछप्।। অপশুদ্রংশসম্ভাষ্ঠো দিনং বর্ষশতং তথা ॥ এবং বর্ষশতং পূর্বং গতং ভক্ত কুযোনিযু। অপশ্চত কদাচিৎ স রাজা তৎস্বকুলোম্ভবমূ॥ তত্র স্থিতভা ওভাপি রাজাং দূাতেন হারিভম্। ভার্যা হ'ডা চ পুত্রণ্চ স চৈকাকী বনং গভঃ॥ ভত্রাপশ্রৎ স সিংহং বৈ ব্যাদিতাক্তং ভয়াবহুম্। বিভক্ষয়িষুমায়াতং শরভেণ সময়িতম্॥ পুনশ্চ ভক্ষিত: সোহপি ভার্যাং শোচিতুমুদ্যত:। হা শৈব্যে ক গতাস্থদ্য মামিহাপাস্ত ছ:থিতম্ ॥ অপশৃৎ পুনরেবাপি ভার্যাং স্বাং সহপ্ত্রকাম্। আগ্নস্ব বং হরিশ্চন্দ্র কিং দৃংতেন তব প্রভো॥ পুত্ৰন্তে শোচ্যতাং প্ৰাপ্তো ভাৰ্য্যয়া শৈব্যয়া সহ। স নাপশুং পুনর পি ধাবমানঃ পুনঃ পুনঃ॥ অথাপশ্রং পুনরপি স্বর্গন্ধ: স নরাধিপ:। নীয়তে মুক্তকেশী সা দীনা বিবসনা বলাৎ।। হাহাবাক্যং প্রামুঞ্জী ত্রায়ম্বেতাসকুৎস্বনা। অথাপশ্রং পুনন্তত্ত ধর্ম্বাজ্ঞ শাস্নাৎ॥ আক্রনন্ত। তরীক্ষণা আগচ্ছেহ নরাধিপ। বিখামিত্রেণ বিজ্ঞপ্তো যমো রাজংস্তবার্গতঃ ॥ ইত্যুক্তা স্পূপিশৈস্ত নীয়তে বলব্দিভূ:। শ্রহ্মদেবেন কথিতং বিখামিরস্ত চেষ্টিতম। তত্রাপি তথ্য বিক্বতিন।ধর্মোখা ব্যবদ্ধত। এতাঃ দর্কা দশান্তত যাঃ গগে সম্প্রদর্শিতাঃ॥ मर्काखात्छन मधुका यावष्यानि धानम । অতীতে দাদশে বর্ধে নীয়মানে! ভটের্কলাৎ॥ যমং সোহপ্রভাল কারাত্বাচ চ নরাধিগম্। বিখামিত্রত্ত কোপোহ্যং ছনিবার্য্যো মহাল্লন: ॥ পুজ্রত তে মৃত্যুদ্পি প্রেদাগুতি স কৌশিক:। शष्ट्र पर मोद्युर रनांकर घुः ५८ मध्य कुल्ला देव । গতহা তত্ত্ব বাজেন শ্রেমন্তব ভবিষ্যতি॥ বাতীতে থাদশে বর্ষে ছঃথস্তান্তে নরাধিপঃ। অস্তরীক্ষাচ্চ পতিতো যমদূতৈ: প্রণোদিত: ॥ পতিতো যমণোকাচ্চ বিবুদ্ধো ভয়সন্ত্রমাৎ। অহো কইমিতি ধ্যাত্বা ক্ষতে ক্ষারাব্দেচনম্॥ স্বাপে হংশং মহদ টং যভাতো নোপলভাতে। ংগে দৃষ্টং নয়া যত, কিং হু মে বাদশাঃ সহাঃ॥ গতেত্যপৃচ্ছৎ তত্ৰস্থান্ প্ৰসাংস্ত স সন্ত্ৰনাং।

নেতৃ। চুং কেচিৎ তক্ষা অব্যেক্ত শিক্ষেত্র ক্র ।

শুলা চুংলী তদা রাজা দেবান্ শর্পমীযিবান্।

বিত্তি ক্রেড মে দেবাং শৈব ারা বালকন্ত চ ॥

নমো ধর্মায় মহতে নমং কুলান্ধ বেধদে।

পরাবরার গুলাল পুরাণারাব্যমায় চ ॥

নমো বৃহম্পতে ভূত্যং নমন্তে বাসবায় চ!

অবসূক্রা স রাজা ভূ যুক্তঃ পুরুদক্ষেণি ॥

শ্বানাং মুশ্যকরণে পুনর্ম ইন্মৃতির্ধা।

মণিনো জটিশং কুফো শক্টা বিহললো রুবং ॥

মণিনো জটিশং কুফো শক্টা বিহললো রুবং ॥

মনবিলা কাটশং কুফো শক্টা বিহললো রুবং ॥

মণিনো জটিশং কুফো শক্টা বিহললো রুবং ॥

তার্মা হেডা ন ভার্মা ভূ তন্ত বৈ স্মৃতিগোচবে।

অথাজগাম স্মৃত্তং মৃত্যালায় লাপিনী।

ভার্মা তন্ত্র নরেক্সন্ত স্পদন্তং হি বালকম্ ॥

হা বংস হা পুত্র শিশো ইত্যেবং স্থাতী মৃত্য়।

কুশা বিবর্ণা বিমনাঃ পাংক্রম্বন্ত শিরোক্রা॥

### রাজপজুয়বাচ।

হা রাজন্দ্য বালং বং পশুদীমং মহীতলে। রমমাণং পুরা দৃষ্টং দৃষ্টং ছ্টাহ্না মৃতম্॥ তহা বিলাপশদং তমাকণ্য স নরাধিপঃ। জগাম ৎরিতোহত্তেতি ভবিতা মৃতক্ষলঃ॥ স তাং রোকদতীং ভার্যাং নাভাজানাত্ত্রপার্থির:॥ চির প্রবাসসম্ভাং পুনর্জাতামিবাবলাম্।। সাপি তং চাককেশান্তং পুবা দৃষ্টা জ্টালকম্। নাভাজানায়পস্তা ওকর্কোণ্যং নূপ্য ॥ সোহপি কৃষ্ণ পটে বালং দৃষ্ট্যাশীবিষপীড়িতম্। नरवक्तनकर्मारभेकः हिन्दामान्य नरत्रचतः॥ অহো কট্টং নবেক্সতা ক্যাপ্যেষ কুলে শিশুঃ। জাতো নীতঃ কুতাত্ত্বে কামপ্যাশাং ছ্রাঘ্না॥ এবং দৃষ্টা হি মে বালং মাজুরুৎসঙ্গশাধিনম্। স্বিমভ্যাগতো বালো রোহিতাখোহজলোচনঃ॥ পে:২প্রেডামের মে বৎসো বয়ে। হ্রস্থারভ:। নীতো যদি ন ঘোরেণ কুতাজেনাম্মনো বশন্॥

### রাজপত্মবাচ।

হা বংস কসঃ পাপস্য অপধানাদিদং মহং।
হাংব্যাপতিতং ঘোরং যস্যান্তো নোপলভাতে॥
হাংনাধ রাজন্ভবতা নামনাশাস্য হাবিতাম.।
কাপি সন্তিঠতা হানে বিশ্রন্ধং হীয়তে কথম ॥
রাজ্যনাশঃ স্বহন্তাগো ভাগ্যাতনয়বিক্রমঃ।
হরিশ্চন্তাস্য রাজর্বেং কিং বিধেন কৃতং হয়া॥

ইতি ত্ন্যা বচ: শ্রুণা রাজা স্থানতশচ্যত:।
প্রত্যতিজ্ঞায় দয়িতাং পুরুঞ্চ নিধনং গত্ম্॥
কষ্টং শৈব্যেয়মেষা হি স বালোহয়মিতীর্যন্।
ক্রোদ হংখসন্তথো মূর্জামিতিজ্ঞাম চ॥
সাচ তং প্রত্যতিজ্ঞায় তামব্যাম্গাগতম্।
মূর্জিতা নিপণাতার্তা নিশ্চেটা ধর্ণীতলে॥
চেতঃ সম্প্রাপ্রেরা রাজপদ্মী চ তৌ সমম্
বিলেশভুঃ স্বস্তথো শোকভারাব্দী দিতে।॥

রাজোবাচ।

হা বৎস স্কুনারং তে স্ব কিজনাসিকালকম্।
পাশুতো মে মৃথং দীনং হৃদয়ং কিং ন দীর্যাত ॥
তাত তাতেতি মধুরং ফ্রেবাণং স্বয়মাগতম্।
উপগুত্ব বিদেষা কং বৎস বৎসেতি সৌরুদাং ॥
কস্য জালুপ্রীতেন পিলেন কিতিরেণুনা।
মনোত্তরীয়ম্ৎসলং তথালং মলমেষ্যতি ॥
অঙ্গপ্রাস্থলে মনোহালয়নন্দনঃ।
ময়া কুপিতা হা বৎস বিক্রীতো যেন বস্তবং ॥
হুদ্ম রাজ্যমশেষং মে সসাধনধনং মহং।
দৈবাহিনা নৃশংসেন দুটো মে ভনমন্ততঃ ॥
অহং দৈবাহিদইস্য প্রস্থাননপত্তমন্।
নিরীক্রমণি ঘোরেশ বিষেণানীকৃতেংহধুনা ॥
অবম্জ্বা তমাদায় বালকং বাল্পাল্যাং।
গ্রিষ্ক্য চ নিশ্চেষ্টো মৃদ্ধ্যা নিপ্পাত হ ॥
রাজপ্রুবাচ।

অয়ং স্ পুরুষব্যাঘ্রঃ স্বরেটেণবোণলক্ষ্যতে। विष्ठज्जनमनभ्रतका इतिभ्रतका न मः भरः॥ তথান্য নাদিকা তুঙ্গা অগ্রতে!২গোমুখং গতা। দস্তাশ্চ মুকুলপ্রথা: থ্যাতকীর্ত্তর্মহাত্মন:॥ শ্রশানমাগত: কম্মাদটেদায় স নরেশরঃ। অপহায় পুল্রশোকং সাপশুৎ পতিতং পতিম্॥ প্রকৃষ্টা বিশ্বিতা দীনা ভর্তপুত্রাধিপীড়িতা। বীক্ষী দা ততোহপশুস্ত্র্দণ্ডং জুগুপিতম্। শ্বণাক। ইমতো মোহং জগামায়তলোচনা। প্রোপ্য চেতশ্চ শনকৈ: সগলাদমভাষত। ধিক্ আং দৈবাভিককৃণং নিশ্বর্যাদং জুগুপি এম্। বেনায়মমরপ্রথো নীভোরাজা খপাকতাম্॥ রাজ্যনাশং স্থন্ধত্যাগং ভার্য্যাতনয়বিক্রয়ম্। প্রাপরিতাপি নো মৃক্তশ্চতালোহয়ং কুতো নৃপ:॥ হা রাজন্জাতসন্তাপামিখং মাং ধরণীতলাৎ। উত্থাপ্য নাদ্য পর্যাস্ক্রমারোহেতি কিমুচাতে॥

নাল্য পশ্যামি তে ছ্তাং ভ্রমাণবা প্ন:।
চানরং বাজনঞ্চাপি কোহ্যং বিধিবিপর্যায়: ॥
যস্যাতে ব্রজতঃ পূর্বং রাজানো ভ্র্ডাংগতাঃ।
গোহরীদৈরকুর্বস্ত নীরকস্কং মহীতলম্॥
সোহরং কপালসংলগ্রঘটীঘটনিরস্তরে।
ম্তনির্মাল্যস্ত্রাস্তর্গু চকেশে স্থলাক্ষণে ॥
বসানিস্তলসংগুজমহীপুটকমন্ডিতে।
ভ্রমারির্ম্যান্থিনিজ্ন্তর্তীবলে॥
গ্রগোনায়্নানার্ডনিষ্ট্রুত্রিক্রম।
চিতাধুনাততিক্চা নীলীকুত্রিগস্তরে॥
চরত্যমেধ্যে রাজেক্রঃ শ্রশানে হঃধ্পীড়িতঃ ॥
এব্যুক্র্যু স্মালিষ্য কঠং রাজ্যে নুপাস্থলা।
কইশোকশতাধারা বিল্লাণার্ড্রা গিরা॥
রাজপদ্মুবাচ।

রাজন্ সংগ্রাহ্থ তথ্য হ বা মনেতনা ক্সতে ভবান্।
তৎ কথ্যতাং মহাভাগ মনো বৈ মৃহতে মম ॥
যন্যেতদেবং ধর্মজ নান্তি ধর্মে সহায়তা।
তথেব বিপ্রদেবাদিপুজনে পালনে ভ্বং॥
নান্তি ধর্মঃ কুতঃ সতামার্জবং চানৃশংসতা।
যত্র হং ধর্মপরমঃ স্বরাজ্যাদবরেমিপিতঃ॥
ইতি ভসা বচঃ শ্রুমা নিশ্লোফং স্ গদগদম্।
কণ্যামাস ত্যুস্যা যথা প্রাপ্তা স্থপাকতা॥
কদিয়া সাপি স্কৃতিরং নিশ্লোফ্য হঃথিতা।
সপ্ত্রমরণং ভীক্র্থণাস্তঃ স্তব্দ্যেৎ॥
রাজোবাচ।

প্রিয়েন বেরাচয়ে দীর্ঘং কালং ক্লেশম্পাসিত্ম।
নায়ায়ভশ্চ তল্পি পশু মে মন্দভাগ্যভাম্॥
চণ্ডালেনানফ্জাতঃ প্রবেক্ষ্য জলনং যদি।
চণ্ডালদাসভাং যাস্থে পুনরপায়জনান॥
নরকে চ পভিষামি কীটকঃ কুমিভোজনঃ।
বৈতরণাং মহাপুষ্বসাস্ফ্রায়ুপিছিলে॥
অসিপত্রবনে প্রাপ্য ছেদং প্রাপ্যামি দারণম্।
ভাপং প্রাপ্যামি বা প্রাপ্য মহারৌরবরেরীরেরী।
মগ্রস্য ভংগজনামি বা প্রাপ্য মহারৌরবরেরীরেরী।
মগ্রস্য ভংগজনথী পারঃ প্রাণবিয়োজনম্।
একোহপি বালকো মোহয়মানীদংশকরঃ স্কভঃ॥
মমুদ্রৈর্ম্ববেগন মগ্রঃ সোহপি বলীয়সা।
কথং প্রাণান্ বিম্কামি প্রায়ভ্রেহিয়ি ভ্রতঃ॥
অথবা নার্জিনা ক্লিটো নক্রং পাপমবেক্ষতে।
ভির্মিন্তেন্ কান্তি ভদ্বংখং নাসিপত্রবনে ভথা।
বৈতরণাং কুভ্তাদৃগ্যাদৃশং পুত্রিপ্রবেণ।

সোহহং স্তেশরীরেণ দীপ্যমানে ছভাশনে ।
নিপতিষ্যামি তবলি কস্তব্যং কুকৃতং মম ॥
অম্জ্ঞাতা চ গচ্ছ ছং বিপ্রবেশ শুচিশ্মতে।
মম বাক্যঞ্চ তবলি নিবোধাদৃতমানসা ॥
যদি দন্তং যদি ছতং শুরবো যদি ভোষিতাঃ।
পরত্র সঙ্গমো ভ্রাৎ পুরেণ সহ চ ছয়া ॥
ইহ লোকে কৃতত্বেতস্তবিষ্যতি মমেন্দিতম্।
ঘরা সহ মম প্রেরা গমনং পুরমার্গণে ॥
যক্রা হসতা কিঞ্জিত্ততে বা শুচিশ্মিতে।
অল্লীলমূকং তং সর্কাং ক্তব্যং মম যাচতঃ ॥
রাজপত্নীতি গর্কোন নাবজ্বেঃ স তে ছিলঃ।
সর্ক্যত্রন তে তোষাঃ আমিনৈবতবচ্চুভে ॥
রাজপত্নাবাচ।

অহমপাত্র রাজর্থে দীপামানে ছতাশনে। তৃঃধভারাসহালৈ ব সহ যাস্যামি বৈ ত্রা॥ পক্ষিণ উচুঃ।

ততঃ কৃষা চিতাং রাজা আরোপা তনয়ং স্বক্ষ্।
ভার্যায়া সহিত্তাগো বিষাঞ্জলিপ্টভাগা ॥
চিন্তয়ন্ পরমাঝানমীশং নারায়ণং হরিম্।
হুৎকে।টরগুহাসীনং বাস্কদেবং স্পরেশ্বরম্।
অনাদিনিধনং ব্রহ্ম কৃষ্ণং পীতায়য়ং শুভম্॥
তদ্য চিন্তয়মানস্য সর্কে দেবাঃ সবাসবাঃ।
ধর্ম্মং প্রম্পতঃ কৃষা সমাজ্য বুরায়িতাঃ॥
আগত্য সর্কে প্রোচ্তে ভো ভো রাজন্ শৃণ্ প্রভো
অয়ং পিতামহঃ সাক্ষাজর্মশত ভগবান্ সয়ম্॥
সাধ্যাশ্চ বিষে মক্তো লোকপালাঃ সবাহনাঃ।
নাগাঃ সিদ্ধাঃ সগন্ধর্মা কুজাশ্তেব তথাখিনো॥
এতে চাল্ডে চ বহুবো বিশামিত্রন্তথিব চ।
বিশ্বরেদ্ব বো মিত্রং কর্তুং ন শকিতঃ পুরা ০
বিশামিত্রন্ত তে মৈত্রীমিইকাহর্ত্ মিচ্ছতি।
আক্রেমাহতঃ প্রাধেজঃ।

### ধৰ্ম উবাচ।

মা রাজন্ দাহদং কার্বীর্দ্রোহহং খামুপাগত:। তিতিকানমদত্যালৈঃ খণ্ডলৈঃ পরিতোষিত: ।

#### ইব্ৰু উবাচ।

হরিশ্চন মহাভাগ প্রাপ্ত:শক্তেহ্সি তেহ্নিকম্। স্বা সভার্যপুত্রেণ বিতা লোকা: সনাতনা:॥ আবেরাহ জিদিবং রাজন্ ভার্যাপুত্রসম্বিত:। স্বহুপ্রাপং নবৈর্বস্তিবিভানামীরক্সভি:॥ ততে হিমৃত্য যং বর্ষ পদ্ভূ বিনাশনম্।
ইক্র: প্রাস্থান কাশা চিচ্চা হানগতঃ প্রভূ: ॥
পুশা বর্ষ স্মহদেব হৃদ্ভিনিম্বনম্।
ততততে বর্তমানে সমাজে দেবসঙ্গে ॥
সম্ত্রে ততঃ প্রো রাজত স্য মহামুন:।
মুক্মারতম্য স্থাঃ প্রায়াল ক্রমানসঃ॥
ততো রালা হরিশ্চক্র: পরিমুল্য স্তঃ ক্ষণাং।
সভার্যঃ স্প্রায়া ব্রেলা দিব্যমাশ্যাম্বরাহিতঃ॥
মুদ্য সম্পূর্ণ ক্রমেরা বৃত্তঃ।
বছর তৎক্ষণা দিক্রো ভূমিশ্চনমভাবত ॥
সভার্যা হং সপ্রশ্চ প্রাপ্রায়েং সপ্রশ্চ প্রাম্।
সমারোহ মহাভাগ নিজানাং কর্মণাং ফলৈঃ॥

হরিশ্চক্র উবাচ। দেবরাজানফুজাতঃ স্থামিনা খপচেন বৈ। অগতা নিক্কং তস্য নারোক্যেইহং স্কুরালয়মূ॥

ভবৈনং ভাবিনং ক্লেশমবগম্যাত্মমার্মা। আমা খণাকতাং নীতো দর্শিতং তচ্চ চাপলম্॥ ইস্রু উবাচ।

ধর্ম উবাচ।

প্রার্থাতে যথ পরং স্থানং সমইন্তর্মান্ত্রি। তদারোহ হরিশ্চক্র স্থানং পুণাক্কতাং নৃণাম্॥ হরিশ্চক্র উবাচ।

দেবরাজ নমস্তভ্যং বাক্যকৈত নিবোধ মে।
প্রাণাল কুমুথং যুৱাং এবীনি প্রশ্রমাধিতঃ ॥
মচ্ছোক্ষরমনসঃ কোশলানগরে জনাঃ।
তিঠন্তি তালপোহাল্য কথং যাস্যাম্যহং দিবম্॥
ব্রহ্মহত্যা গুরোর্ঘাতো গোবংঃ জীব্যক্তথা।
তুলানে ভির্মহাপাপং ভক্ততাগেহপুদাহত্যম্॥
ভল্তনং ভক্তন ভ্যাল্যমহুইং ভ্যন্ততঃ ক্থম্।
দেহ নামুত্র পঞ্চানি তত্মাচ্চক্র দিবং ব্রহ্ম॥
যদি তে সহিতাঃ কুগং ময়া যান্তি কুরেশার।
ভত্তাহহ্মপি যাস্যামি নরকং বাপি তৈঃ সহ্॥

### ইঙ্ৰ উবাচ।

বছনি পুণ্যপাপানি তৈষাং ভিলানি বৈ পৃথক্। কথং সজ্বাতভোগ্যং ছং ভূষঃ ঘর্নমবাঙ্গাদি॥ হরিশ্চক্র উবাচ।

শক ভ্ঙ্কে নৃপোরাজ্যং প্রভাবেন ক্টুথিনাম। বজতে চ মহাবজৈঃ কর্প পৌর্জং করেতি চ॥ তচ্চ তেখাং প্রভাবেন ময়া স্ক্মিষ্টিতম্। উপক্রুন্ন স্তাক্ষ্যে তানহং অগ্লিপ্যা॥ তত্মাদ্যমান দেবেশ কিঞ্চিদন্তি স্চেষ্টিভন্। দত্তমিষ্টমথো অংথং দামান্তং তৈত্তদন্ত নঃ ॥ বত্কালোপভোগ্যং হি ফলং যমম কর্মাণঃ। তদন্ত দিনমপ্যেকং তৈঃ সমং ত্বপ্রদাদ্তঃ॥ পশ্চিণ উচুঃ।

এবং ভবিষ্যতীত্যুক্তা শক্রম্নিভুবনেশ্বঃ। व्धनन्नरहजा धर्मान्ह विश्वामिजन्ह गाधिकः॥ বিমানকোটিসম্বন্ধং স্বৰ্গলোকান্মহীতল্ম। গ্রাযোধ্যাজনং প্রাহ দিব্যারুহতানিতি। তদিরস্থে বচঃ শ্রম্বা প্রীত্যা তম্ম চ ভূপতে:। ষ্পানীয় রোহিভার্ঞ বিখামিত্রো মহাতপাঃ॥ ব্দযোধাাথ্যে পুরে রম্যে দোহভানিঞ্নু পাত্মজম্। cमटेवन्छ मूनिकिः निटेश्वत्रिक्षिष्ठा नताधिशम् ॥ বাজ্ঞা মহ তদা সর্কে হাইপুইস্ক্লজনাঃ। সপুত্রভাগারাত্তে দিব্যাক্রত্জনাঃ॥ পদে পদে বিমানাৎ তে বিমান্যগমন নরাঃ। তদা সম্ভতহর্ষোহসৌ হরিশ্চত্র চ পার্থিবঃ॥ সম্পাপ্য ভূমিমভুলাং বিমানঃ স মহীপতিঃ। ष्यागांकरक भूताकारत वध्यशाकातमः तृष्ट ॥ তত্ত্তভাৰিমালোক্য প্লোকং তথোশনা জ্বা। देन ভাগিংগা মহাভাগঃ সর্বালাম্বভত্তি ।॥

হবিশ্চন্ত্রসমো রাজান ভূতোন ভবিষাতি।
য: শুনোতি স্ত্রথাতঃ স স্বথং মহদাপুষাৎ॥
অর্গার্থী প্রাপ্নার স্থাৎ স্বর্গং পুত্রার্থী প্রমান নুষাং।
ভার্যার্থীপ্রাপ্নার ব্যাং রাজ্যার্থী রাজ্যমাপুষাং
অহো তিভিক্ষাহান্ত্র্যান্ধান দানকলং মহৎ।
যদাণতো হবিশ্চন্ত্রপ্রীকেন্ত্রমাপ্রবান্॥
পক্ষিণ উচুঃ।

শুক্র উবাচ।

এতৎ তে সর্ধ্যাধাতিং হ্রিশ্চন্দ্রবিচেষ্টিতম্। অতঃ পরং কথাশেষং শ্রমতাং মুনিসন্তন ॥ বিপাকো রাজস্মত পৃথিবীক্ষমকারণম্। তবিপাকনিমিত্তক যুদ্ধমাড়িবকং মহৎ॥

ইতি মার্কতেরে মহাপুরীণে হবিশ্চজো-পাব্যানং নামান্তমোহধ্যায়ঃ॥ নবমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

পক্ষিণ উচুঃ।

বাজ্যচুতে হরিশ্চক্তে গতে চ জিদশালয়ন্।
নিশ্চক্রাম মহাতেজা জলবাসাং প্রোহিতঃ ॥
বশিষ্ঠো দ্বানান্থাকে গলাপ্যুবিতো মুনিঃ।
শুশাব চ সমস্তম্ভ বিখামিত্রবিচেষ্টিতম্॥
হরিশ্চল্রজ নাশক রাজ্যশোদারকর্মাণঃ।
চঙালস্প্রয়োগক ভাগ্যাতনর্বিক্রমন্॥
শ শ্রম স্বনহাভাগঃ প্রীতিমানবনীপতে।।
চকাব কোপং তেজ্বী বিখামিত্রমূবিং প্রতি॥

বশিষ্ঠ উবাচ।
মন পুল্লশতং তেন বিশ্বামিত্বেশ দাতিতম্।
ত্রাপি নাভবং ক্রোধস্তাদৃশো যাদৃশোহদ্য মে॥
কালা নংখিনিমাং স্বরাজ্যাদবরোপিপম্।
মহাজ্বানং মহাভাগং দেবরাজ্বপুঞ্জকম্॥
যত্বাৎ ন সভাবাক্ শান্তঃ শক্রাবিপি বিমংসরঃ।
কলাগৈশ্চের ধর্মাত্রা অপ্রমন্ত্রো মদাশ্রঃ ॥
সপরীভ্তাপ্রস্ত প্রাপিতোহন্ত্যাং দশাং নৃপঃ।
স বাজ্যাক্তানিতোহনেন বহুশশ্চ থিলীকৃতঃ॥
তত্মাদ্ব্রাত্রা ব্রজ্থিট্ প্রাক্তানামবরোপিতঃ।
মচ্ছাণোগহতো মৃতঃ স বক্রমবাপ্যতি॥
পক্ষিণ উচুঃ।

শ্ৰুতা শাপং মহাতেজা বিশ্বামিত্ৰোহপি কৌশিক: ষ্বাশ্যাড়ির্ভবম্বেতি প্রতিশাপ্রয়দ্ভত ॥ অত্যোহন্ত্রশাণাতো প্রাপ্তে তির্ঘাক্ত পরমন্থাতী। বশিষ্ঠঃ স মহাতেজা বিশ্বামিত্রণ্চ কৌশিকঃ॥ অক্সজাতিসমাযোগং গভাবপ্যমিতৌজনৌ। বুমুধাতে হতি সংরক্ষে মহাবল পরাক্রমৌ॥ যোজনানাং সহস্রে ৰে প্রমাণেনাড়িক ছি ড:। ষ্প্ৰব্যাধিকং ব্ৰহ্মন্সহম্ৰতিভয়ং বকঃ 🛭 তৌতুপক্ষপ্রহোরাভ্যামন্তোহ্মতোরুবিক্রমৌ প্রহরতে। ভয়ং ভীবং প্রদানাং চক্রতুন্তদা ॥ বিধুয় পক্ষাণি বকো রক্তোৰ ভাক্ষিরাছনৎ। আড়িং সোহপার ভগ্রীবো বকং পত্তামভাত্রং ॥ তয়ো: পক্ষানিলাপান্তা: প্রপেতুর্গিরয়ো ভূবি। গিরিপ্রপাতাভিহতা চকম্পে চ বস্তব্ধরা॥ লা কম্পদান। জলধী হুত্ ভাত্বংশ্চকার চ। ननाम देवकशार्यन शांजानगमत्नाम्यी ॥

(किंक्शितिनिशां एक किंग्रह्णिक विकास । (किनिश्रीमण्डनार श्रीयपुः श्रीविनः क्रमम् ॥ ইতি দৰ্শং পরিত্রন্তং হাহাভূতমচেতনম্। জগদাসীৎ স্থসন্ত্রান্তং পর্যন্তক্ষিতিমগুলম্ । হা বৎসহা কান্ত শিশো প্রদাহে যোহত্মি সংস্থিত: হা প্রিরে কান্ত শৈলোহয়ং পতত্যাত পলায়ভাম ইত্যাকুলীক্বতে লোকে সম্ভাসবিমুখে তদা। স্থরৈঃ পরিবৃতঃ সর্কৈরাজগাম পিতামহ:॥ **প্রাত্যার চ বিশ্বেশস্তাব্ভারতিকোপিতৌ।** যুদ্ধং বাং বির**মত্বেতলোকাঃ সা**স্থ্যং ব্রজ্ঞ চ॥ শৃণ্ডাবপি তৌ বাকাং ত্রন্ধণোহ্বাক্তজনান:। কোপামৰ্থনমাবিষ্ঠো যুযুধাতে ন তহতু:॥ ত उः পিতাম হো দেব छः দৃষ্টা লোক সজ্জ सম্। তয়ো 🕫 হিতমবিচ্ছন্ তিৰ্যাগ্ভাৰমপাত্ৰণ ॥ তততো পূর্বদেহস্থে প্রাহ দেব: প্রজাপতি:। ব্যুদত্তে তামদে ভাবে বশিষ্ঠকৌশিকর্ষভৌ ॥ জহি বৎস বশিষ্ঠ ছং ত্রঞ্চ কৌশিক সভম। তামদং ভাবমাশ্রিতা ঈদৃগ্যুদ্ধং চিকীর্ষিতম্॥ রাজস্মবিপাকোহ্যং হরিশ্চ**ন্দ্রত** ভূপতেঃ। যুব্যোর্বিগ্রহশ্চায়ং পৃথিনীক্ষয়কারকঃ॥ ন চাপি কৌশিকশ্রেষ্ঠন্তক্ত রাজ্যেইপরাধ্যতে। স্বর্গপ্রাপ্তিকরে। ত্রহ্মন্পকারপদে স্থিত:॥ তপোবিশ্বস্থ কর্ত্তারে কামক্রোধবশং গতে।। পরিতাজত ভদ্রং বে বৃদ্ধা বৃদ্ধা বিশ্ব বৃদ্ধা এবম্জৌ ভতন্তেন লজ্জিতে) তাবুভাবপি। ক্ষনরামাসতুঃ প্রীত্যা পরিষজ্ঞা পরস্পরম্॥ ততঃ স্থরৈর্বন্যমানো ব্রহ্মা লোকং নিজং যথে।॥ বশিষ্ঠোহপ্যাত্মনঃ স্থানং কৌশিকোহপি স্বমাশ্রমম এত লাজিবকং যুদ্ধং হরি**শ্চন্ত্রকথাং** তথা। কথ্যিষ্যন্তি যে মৰ্ত্যা: সমাক শ্ৰোষ্যন্তি চৈব যে 🛭 তেষাং পাপাপনোদম্ভ শ্রুতং ক্লেব করিষ্যতি। ন চৈব বিপ্লকার্য্যাণি ভবিষ্যস্তি কলাচন।

> ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে আজিবক-যুক্কং নাম নবমোহধ্যায়:।

> > দশমোহধ্যায়ঃ।

—•:•— কৈমিনিক্বাচ।

সংশরং বিজ্ঞার্কুলাঃ প্রেক্ত মম পৃচ্চতঃ। আবিভাবভিবোভাবে) ভূতানাং যত্ত সংস্থিতে ॥ কথং সঞ্জায়তে জন্তঃ কথং বা স বিবৰ্দ্ধতে।
কথং বোদরমধ্য ছতি ঠ তাল নিপী ভিতঃ ।
নিজ্ঞান্তিমৃদ্ধাং প্রাণ্য কথং বা বৃদ্ধিমৃদ্ধতি।
উৎক্রান্তিকালে চ কথং চিডাবেন বিশ্বস্থাতে ।
কথং মৃতন্ত্রপাশতি উভে স্থাকৃতহৃদ্ধতে।
কথং তে চ তথা তাল কলং সম্পাদমন্ত্যত ।
কথং ন জীব্যতে তত্র পিন্তীকৃত ইবাশয়ে।
ত্রীকোঠে যত্র জীব্যতে ত্রুনি স্থাক্রপাপি।
ভক্ষ্যাণি যত্র নো জন্ত্রপাঁহাতে কপমন্নকঃ।
এতন্ম ব্রত সকলং সন্দেহোকিবিবর্জ্জিত্র।
তদ্যেতং পরমং গুহুং যত্র মৃহন্তি কন্তবং।
পক্ষিণ উচুঃ।

প্রিভারোহয়মভূলয়য়ায়ায় নিবেশিত:।

হর্তাবা: সর্কাজ্তানাং ভাবাভাবসমাপ্রিত:॥
তং শৃর্ল মহাভাগ যথা প্রাহ পিতু: পুরা।
পুলং পরমধর্মায়া স্মতিনাম নামত:॥
বাক্ষণো ভাগ্ন: কশ্চিৎ স্তুমাহ মহামতি:।
ক্তোপন্বনং শাস্তঃ স্মতিং জড়ক্পিশ্ম॥
বেদানধীষ স্মতে যথাকুক্মমাদিত:।

পিতোবাচ।

গুরুত্ত ক্রমধনে ব্যথো তৈকারকুতভোজন: ॥
ততো গার্হ্যমান্থার চেট্ট্রা যজ্ঞানস্ত্রমান্।
ইটম্ৎপাবয়াপত্যমাশ্রমেথা বনং তত্ত: ॥
বনস্থাত ততো বৎস পরিব্রাড়্নিপ্রিগ্রহ:।
এবমাঞানি তদ্বক্ষ যত গথান শোচ্দি॥
পক্ষিণু উচ:।

শাক্ষণ উচ্:।
ইত্যেবমুক্তো বহুশো জড়খানাই কিঞ্চন।
পিত।পি তং স্ববহুশঃ প্রাহে প্রীত্যা পুন: পুন: ॥
ইতি পিতা স্বত্নেহাৎ প্রলোভি মধুরাকরম্।
স চোবামানে। বহুশঃ প্রহন্তেদমথারবীৎ ॥
তাতৈত্বহুশোহতাতং যৎ ব্যাদ্যোপদিশুতে।
ভবৈবাজানি শারাণি শিরানি বিবিধানি চ ॥
জন্মনাম্যুতং সাগ্রং মম স্থতিপথং গতম্।
নির্কোদাঃ পরিভোষাণ্ড করবুদ্যুদ্রের রতাঃ ॥
শ্রুমিত্রকল্রাণাং বিয়োগাঃ সক্ষমান্তথা।
মাতরো বিবিধা দৃষ্টাঃ পিতরো বিবিধান্তথা ॥
অম্ভূতানি সোধানি হংথানি চ সহ্রশঃ।
বান্ধবা বহুবঃ প্রাপ্তাং পিতরুক্ত পুণ্যিধাঃ ॥
বিশ্ ত্রপিছিলে জীণাং তথা কোঠে ম্যোবিত্ন্
পীড়াক্ত স্তুশং প্রাপ্তা রোগাণাঞ্চ মহ্র্লশঃ ॥

গর্ভছ:बাজনেকানি বালছে বৌবনে তথা। বুদ্ধভারাং ভথাপ্তানি তানি সর্ন্ধাণি সংশ্বরে । बाक्रानक खित्रविभाः भूषानाकाणि त्यानियु। পুনশ্চ পশুকীটানাং মৃগাণামথ পক্ষিণাম্॥ ত্তথৈৰ রাজভূত্যানাং রাজ্ঞাঞাহবশালিনাম্। সমূৎপদ্নোহন্মি গেছেষু তথৈৰ তব বেশানি ॥ ভূত্যতাং দাসভাবৈশ্ব গতোহন্মি বহুশো নুণাম্। সামিত্বনীশ্বরত্বঞ্চ দ্রিদ্রত্বং তথা গতঃ॥ হতং ময়া হত•চাতৈত্বতং মে বাতিতং তথা। দত্তং মুমাইক্তরকোভোগ ময়। দত্মনেকশঃ॥ পিতৃমাতৃস্তস্তাতৃকলতাদিকতেন চ। তুষ্টোহ্দকুৎ তথা দৈল্লমশ্রুধোতাননো গতঃ॥ এবং সংগারচক্রেছিনিন্ ভ্রমতা তাত সঙ্কটে। জ্ঞানমেত্রুয়া প্রাপ্তং মোক্ষস্ন্তাপ্রিকার্কন্। বিজ্ঞাতে যত্ত্ব সর্কোইয়সুগ্যজুঃসামসং জ্ঞিতঃ। ক্রিয়াকলাপো বিগুণো ন সম্যক্ প্রতিভাতি মে তক্ষাতৃৎপরবোধন্ত বেলৈ: কিং মে প্রয়োজনম্। ত্তক্ষবিজ্ঞানতৃপ্তত নিরীহন্ত সদাত্মনঃ॥ ষট্প্রকারক্রিয়াতঃখন্ত্রখহর্পরবৈশ্চ যৎ। 🐿 গৈশ্চ বর্জিতং ব্রহ্ম তৎ প্রাপ্সামি পরং পদ্ম बन्दर्बल्यार्षश्काषामर्यक्रवाजूबाम्। বিজাতাং অমৃণগ্রাহিসক্পাশশতাকুলাম্ ॥ তত্মাদ্যাপ্তাম।হং তাত তক্তে,মাং হঃধসস্ততিম্। অয়ীধর্মধর্মাচ্যং কিম্পাকফলসলিভ্ন্॥ পক্ষিণ উচুঃ।

ভত্ত তৰ্বনং শ্ৰুতা হৰ্ষবিষয়গদাৰম্। পিতা প্ৰাহ মহাভাগঃ স্বস্তুতং হুইমানস্॥

#### পিতোৰাচ।

কিমেতখদদে বৎস ক্ততে জানসন্তব:।
কেন তে জড়ভা পূর্কমিদানীঞ্চ প্রবৃদ্ধতা ॥
কিনু শাপবিকারে।২মং মুনিদেবকুতত্তব।
যং তে জ্ঞানং তিরোভূতমাবিভাবমুপাগতম্॥
শ্রোভূমিচ্ছামি তং সর্কং পরং কৌতৃহলং হি মে
সর্কং তদ্ক্রিহি মে বৎস যথা বৃত্তং পুরা তব॥

### পুত্ৰ উবাচ।

শূণু তাত যথা বৃদ্ধে মমেদং স্থক্:থদম্। যশ্চাহমাসমঞ্জান্জনঞ্জাংপরত যথ॥ অহমাসং পুরা বিধো অভোগা প্রমাল্পনি। আম্বাদ্ধিতি[বেসু প্রাংনিটামুণাগত:॥

সততঃ যোগযু<del>জত</del> সততাভ্যাসস<del>ল</del>মাৎ। मरमः गागार अञ्चलावाधिकात्रविधिरमाधनार ॥ ভশিরেব পরা প্রীতির্মমাদীদ্যুঞ্জঃ সদা। আচার্য্যতাঞ্চ সম্প্রাপ্তঃ শিষাসন্দেহস্তমঃ॥ ততঃ কালেন মহতা ঐকান্তিকমুপাগতঃ। অজ্ঞানাকুষ্টদন্তাবো বিপক্ষত প্রমাদত:॥ উৎক্রান্তিকালাদারভ্য স্থৃতিলোপো ন মেহভবৎ মাবদৰ্যং গতকৈব জন্মনাং স্মৃতিমাগতম্॥ পূর্ব্বাভাগেন তেনৈব সোহহং তাত জিতেঞ্চিয়ঃ यिवग्रीमि उथा कर्जुः न खितरा यथा भूनः ॥ জ্ঞানদানফলং হেতদ্যজ্জাতিম্বরণং মম। ন হেতৎ প্রাপ্যতে তাত অয়ীধর্মাশ্রিতৈর রৈঃ ॥ (गार्हः পूर्वाञ्चमात्मव निष्ठांधर्षम् भाञ्चितः। একান্তিবমুপাগমা যতিষ্যাম্য। আমে। ক্ষণে ॥ তদ্রুহি বং মহাভাগ যৎ তে দাংশয়িকং হৃদি। এতাৰতাপি তে প্ৰীতিমুৎদাদ্যানুণ্যমাপুষাম্॥ পক্ষিণ উচ়ঃ।

পিতা প্রাহ ততঃ পুলং শ্রদধৎ তত তরচঃ। ভবতা যধ্যং পৃষ্ঠাঃ সংসারগ্রহণাশ্রম্ ॥ পুল উবাচ।

শৃণু তাত যথাতত্ত্বমহুভূতং মরাসকুৎ। সংসারচক্রমজরং স্থিতির্বস্থ ন বিদ্যুতে ॥ দোহহং বদামি তে সর্ব্ধং তবৈবাত্মজ্ঞয়া পিতঃ। উৎক্রান্তিকাশাদারভা যথা নাজো বদিষ্যতি॥ উন্না প্রকুপিতঃ কায়ে তীব্রবানুসমীরিত:। ভিনত্তি মর্মানানি দীপ্যমানো নিরিন্ধনঃ॥ উদানো নাম প্রনন্তত শ্চোদ্ধং প্রবর্ততে। ভুকানামস্ভক্ষ্যাণামধােগতিনিরোধকুৎ ॥ ততো যেনামুদানানি কুতাক্সরুদান্তথা। দত্তাঃ স তহ্ম আহ্লাদমাপদি প্রতিপদ্যতে ॥ অন্নানি যেন দ্ভানি শ্রদ্ধাপুতেন চেতদা। সোহপি তৃপ্তিমবাপ্লোভি বিনাপ্যন্তেন বৈ তদা ॥ যেনানুতানি নোজানি প্রীতিভেদ: কুতো ন চ। আভিক: শ্রদ্ধানশ্চ স স্থং মৃত্যুদ্ভতি॥ प्तिवडाक्राश्वाद्याः (य त्रां नांक्ष्य्यदः । ভক্লা বদাভা হ্রীমন্তত্তে নরা: স্থমৃত্যব:॥ (या न कामान मःत्रञ्जान (चराक्षाम् पूर्क्टकर ! যথোক্তকারী সৌম্যুক্ত স স্থুখং মৃত্যুমুচ্ছতি॥ व्यवातिमाप्तिस्ना माहः क्यांकानक्रमाप्तिनः। প্রাপুবন্ধি নরাঃ কালে তন্মিন্ মৃত্যাবুপস্থিতে ॥

गौठः व्यवधीकनमाञ्चालः हक्तनमात्रिनः। व्यानधीः विषनाः कहाः व ठाक्टबनकात्रिनः॥ े भारास्कान अभाजातः व्याभू वस्ति मरस्त्रम्। বেদনাভিক্দগ্রাভি: শ্রপীড্যক্তেইধমা নরা: ॥ কুটদাক্ষী মুধাবাদী যশ্চাদদমূশান্তি বৈ। তে মোহমৃত্যব: সর্ব্বে তথা বেদবিনিশকা: ॥ বিভীষণাঃ পৃতিগন্ধাঃ কৃটমূল্যরপাণরঃ। আগিছভি ত্রালানে। যমত পুরুষাতদাং ॥ প্রাপ্তের্ দৃক্পথং ভেরু জায়তে ভক্ত বেপপু:। ক্রন্ত্যবিরতং সোহ্থ আত্মাতৃস্তান্থ ॥ সাজ বাগক্ষুটা ভাত একবর্ণা বিভাব্যতে। দৃষ্টিশ্চ ভ্ৰাম্যতে ত্ৰাসাক্ষ্যাল্যালাক্ষ্যাল্যালানন্। উর্ন্বাসাধিত: সোহথ দৃষ্টিভঙ্গসম্বিত:। ততঃ স বেদনাবিষ্টস্তচ্হরীরং বিমুক্তি॥ বায্প্রদারী ভজপেং দেহমগ্রৎ প্রপদাতে। তৎ কৰ্মজং যাতনাৰ্থং ন মাতৃপিতৃসন্তবম্। তংপ্রমাণবয়োহ্বস্থাসংস্থানৈ: প্রাগ্ভবং ঘ্রা ॥ ততো দুতো যমস্তাও পালৈকাগ্নতি দাকুলৈ:। দওপ্ৰহারসন্তান্তং কৰ্ষতে দকিণাং দিশম্ 🛭 কুশকত কবলা কশৰ্মপাধাণকৰ্মণ। তথা প্ৰদীপ্তজননে কচিচ্ছ ভ্ৰশতোংকটে ॥ প্রদীপ্তাদিতাতথ্যে চ দহ্মানে তদংওভি:। ক্ষাতে বমদ্তৈকাশিবসরাদভীব**ৈ** ॥ বিক্রয্যমাণকৈর্ঘেটেরভক্সমাণঃ শিব।শতৈঃ। তায়াতি দাকণে মার্গে পাপকর্মা যমক্ষয়ম্॥ ছতোপানৎপ্রদাতারো যে চ বছপ্রদা নরা:। তে যাস্তি মহুলা মার্গং তং হুখেন তথাল্লা:॥ এবং ক্লেশানমুভবন্নবশঃ পাপপীড়িতঃ। 🕽 নীয়তে ভাদশাহেন ধর্মরাজপুরং নর:॥ কলেবরে দহমানে মহাস্তং দাহমূচ্ছতি,। ভাডামানে তথৈবার্ত্তিং ছিদামানে চ দক্ষিণাম ॥ ক্লিন্যমানে চিরভরং জন্তহ্ :থমবাপ্লুতে। খেন কর্মবিপাকেণ দেহাস্তরগতোহপি সন্॥ তত্ৰ বৰান্ধবাক্টোয়ং প্ৰায়চ্ছক্তি ভিলৈ: সহ। বচ্চ পিওং প্রথচ্ছি নীয়মানস্তদশুতে॥ टेजनाভारका वाक्तवानामक्रमः नाहनक घर। তেন চাপ্যায়তে জন্তর্যশ্চান্নন্তি স বান্ধবা: ॥ ভূমৌ অপন্তিনতোত্তং ক্লেশমাপ্রেতি বাদ্ধবৈ:। मानः मनस्रिक्त ख्या व्यवनार्यागारस्य मुखः॥ নীয়মানঃ স্বকং গেহং ছাদশাহং স পশ্চতি।

উপভূঙ্কে তথা দত্তং ভোষপিঞাদিকং ভূবি ॥ ৰাদশাহাৎ পরং ঘোরমারসং ভীষণাক্বতিম্। যামাং পশুতাথে। জন্তঃ কুষামাণঃ পুরস্তভঃ॥ গতমাত্রে:২তিরজাক্ষং ভিন্নাঞ্নচন্নপ্রভম্। মৃত্যুকালান্তকাদীনাং মধ্যে পশুতি বৈ যমমু॥ দংষ্ট্রাকরালবদনং জ্রকুটীদারুণাক্বভিম্। বিরুটপভীষ্টপর্কটিক্র তং ব্যাধিশতে: প্রভুম্ ॥ मधामकः মহাবাছः পাশহন্তং ছুटेखत्रवम्। তরিদিষ্টাং ততো যাতি গতিং জন্তঃ গুভাগুভাম ॥ রৌরবে কৃটদাকী ভু যাভি যশ্চানুভো নরঃ। তক্ত স্বরূপং গদতে। রৌরবক্ত নিশাময়॥ त्याकनानाः नहत्व एव (द्रोदरता हि व्यमानकः। জাতুমাত্রপ্রমাণ চ তত: খব্র: সূত্রর:॥ ততাঙ্গারচয়োপেতং কুতঞ্ধরণীদমম্। জাজনামানস্তীব্ৰেণ তাপিতালারভূমিণা॥ তন্মধ্যে পাপকর্মাণং বিমুঞ্জি যমানুগা:। দ দক্ষানন্তীত্রেণ বহিনা তক্র ধাবতি॥ পদে পদে চ পাদোহ अभी र्याट की र्याट श्राः। অন্তোরাত্রেণোজ্রণং পাদ্**তাদঞ্গচ**্ভি । এবং সহস্তীর্ণো যোজনানাং বিমুচ্যতে। ততে। হতং পাপভকাৰ্থং তাদৃঙ্নিরয়মৃচহতি ॥ ততঃ দৰ্লেয়ু নিভীৰ্ণঃ পাপী তিহাক্ত্মশ্ৰতে। क्रिमिकी छे शक्त क्ष्म भागरम मनका मित्रू॥ গমা গজক্রমাদোষু গোষখেষু ভবৈধব চ। অক্তান্ত হৈব পাপান্ত হঃথদান্ত চ যোনিবু॥ মহুষ্যং প্রাপ্য কুজো বা কুৎসিতো বামনোপি বা। চণ্ডালপুকসাদ্যাস্থ নরে। যোনিবু আরেভে॥ অবশিষ্টেন পাপেন পুণ্যেন চ সমন্বিত:। ততশ্চারোহণীং জাতিং শুক্তবৈশুনুপাদিকাম্॥ विधारतत्वका अभि किना हिनवर बाह् नीम्। এবন্ত পাপকর্মাণো নরকেষু পভন্তাধ:॥ यथी পूर्वाकृत्वा याखि जत्म निगमजः भृग्। তে যমেন বিনির্দিষ্টাং যান্তি পুণ্যাং গভিং নরা:॥ প্রগীতগন্ধর্গণাঃ প্রদৃত্তাপ্রসাংগণাঃ। হারনুপুৰমাধুর্যাশোভিতামুত্তমানি চ। व्यशास्त्रात्र विभागीनि नानां पिराव्यक्षक्षणाः ॥ তর।চচ প্রচু।তা রাজ্ঞানভেষাঞ্ মহাত্মনাম্। জারত্তে চ কুলে তত্ত্র সদ্বৃত্তপরিপালকা:॥ ভোগান্ সম্প্রাপ্রপ্রাপ্রাংস্ততো যাত্যার্মস্তর্থা। অবরোহণীঞ সম্প্রাপ্য পূর্ববন্দান্তি মানবা: ।

অততে সংব্যাণ্যাতং যথা জন্তবিপদ্যতে।
অত: শৃশ্ব বিপ্রার্থ যথা গর্ভং প্রপদ্যতে॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে পিতাপুত্রসংবাদে দশ্মেহিধায়েঃ॥

# একাদশোহধ্যায়ঃ।

--:•:--

পুত্ৰ উবাচ।

निरवकः मानवः श्रीगाः वीखः ८ श्रीशः त्रक्रण्य । বিষ্ণুক্তমাত্রো নরকাৎ স্বর্গাছাপি প্রপদ্যতে। তেনাভিভতং তৎ দ্বৈর্ঘ্যং যাতি বীজ্বমং পিত:। কললত্বং বুদবুদত্বং ততঃ পেশিব্যেব চ॥ পেশ্রাং ব্যাসুবীজং স্থাদকুরন্তন্ত্রাতে। অঙ্গানাঞ্চ তেথেৎপতিঃ পঞ্চানাসভূভাগশঃ॥ উপাঙ্গাক্তত্বলীনেজনাগাক্তপ্রবণানি চ। প্রবোহং যান্তি চাঙ্গেভান্তবৎ তেভ্যো নথাদিকম ছচি রোমাণি জায়স্তে কেশাকৈচৰ ততঃ পরম্। नगः नमुक्तिभाताि एउटेन द्वांखवरकायकम् ॥ নারিকেলফলং যদ্ধৎ স্কোষ্ণ বৃদ্ধিমুদ্ধতি। তৰৎ প্রয়াত্যদৌ বৃদ্ধিং সকোষোহধোমুথ: স্থিতঃ তলে তু জামুপার্ঘাভ্যাং করে। গুলু স বর্জতে। অঙ্গুটো চোপরি অতে জাবোরতাে তথালুলী ॥ আফুপুঠে তথা নেত্রে জাতুমধ্যে চ নাসিকা। ক্ষিচৌ পাঞ্চি ৰয়ত্তে চ বাত্জজ্যে বহিঃস্থিতে॥ এবং বৃদ্ধিং ক্রমাদ্যাতি জন্ত: স্ত্রীগর্ভনংস্থিত: । অক্তমবোদরে জন্তোর্যথা রূপং তথা স্থিতি:॥ কাঠিক্সমন্নিনা যাতি ভুক্তপীতেন জীবতি। পুণ্যাপুণাশ্রষমন্ত্রী স্বিতির্বস্তেব্যেলরে ॥ নাজী চাপ্যায়নী নাম নাভাাং ডক্ত নিবধাতে। স্ত্ৰীণাং তথান্তগুষিরে সা নিবদ্ধোপলায়তে॥ कामस्य जुक्तभीजानि श्रीगाः शर्जामस्य यथा। তৈরাপ্যায়িতদেহোহদৌ লয়ুর্জিমুলৈতি বৈ॥ স্ফীতত প্রেমাতাত বহর: সংসারভূময়:। ততো নিৰ্কেদমাগাতি পীডামান ইচস্তত: 🛚 भूनदेन दः कत्रियामि मुक्तमाखः हेटशानता ।। তথা তথা বতিব্যামি গর্ভং নাপ্যামাহং বথা ॥ ইতি চিন্তরতে শ্বছা জন্মহঃধশতানি বৈ। যানি পূৰ্বাত্মভূতানি দৈবভূতানি যানি বৈ॥

ততঃ কালক্রমাজ্জত্বঃ পরিবর্ততাধােমুখঃ। নব্যে দশমে বাপি মাসি সঞ্চায়তে যতঃ॥ নিক্রামামানো বাতেন প্রাজ্ঞাপত্যেন পীড়াতে। নিজ্ঞামাতে চ বিলপন ছাদি হ:খনিপীড়িত: ॥ निकास्य काम प्राम्य कि निकास क প্রাপ্রোতি চেতনাঞ্চাদৌ বাযুম্পর্শসমন্বিত:॥ **७७७: देवस्वी मात्रा नमाऋक्कि स्माहिनी।** ভয়া বিমোহিতাত্মানৌ জ্ঞানলংশমবাপুতে 🛭 ভ্ৰম্ভানো বালভাবং ততো **ভন্তঃ প্ৰ**পদ্যতে। ভতঃ কৌমারকাবস্থাং যৌবনং বুদ্ধতামপি ॥ পুনশ্চ মরণং তমজ্জনা চাপ্লোতি মানব:। ভতঃ সংসারচক্রেহস্মিন্ ভ্রাম্যতে ঘটিষন্ত্রবৎ ॥ ক্লাচিং স্বর্গমাপ্নোতি ক্লাচিলিরয়ং নর:। নরকঞ্চৈব স্বর্গঞ্চ কদাচিচ্চ মৃত্যেহিশ্ন তে॥ ক্লাচিনত্রৈব পুনর্জাতঃ স্বং কর্ম সোহন্ন তে। কণাচিতুক্তকর্মাচ মৃতঃ স্বল্লেন গছতি॥ কদাচিদরৈশ্চ ততো জায়তেহত ভভাভতৈ:। স্বলেতিক নরকে চৈব ভুক্তপ্রায়ো বিকোত্তম ॥ न तरक्यू भरुकृः थरभजन्य ९ अर्थरानिनः । দুখ্যতে তাত মোদত্তে পাত্যমানাশ্চ নারকা:॥ অর্গেঙ্পি ছঃখমতুলং যদারোহণকালতঃ। প্রভূত্যহং পতিষ্যামীত্যেতন্মনসি বর্ততে॥ নারকাংটেশ্চব সম্প্রেক্য মহদ্য:থমবাপ্যতে। এতাং গতিমহং গস্তেত্যহনিশ্মনির তিঃ। গর্ভবাদে মহদ্যুং জায্মান্স যোনিত:। ফাতস্ত বালভাবে চ বুদ্ধত্বে ছঃখমেব চ ॥ কানের্য্যাক্রোধসম্বন্ধং যৌবনে চাতিছঃসহম। ছ: থপ্রারা বৃদ্ধতা চ মরণে ছ: খমুত্তমম্॥ ক্ষ্যমাণ্ড যামে । নরকেষু চ পাত্যত:। পুনশ্চ গর্ভং জ্মাথ মরণং নরক্তথা 🛭 এবং সংসারচক্রেইস্মিন জন্তবো ঘটিবস্তবৎ। ভ্ৰাম্যন্তে প্ৰাকৃতৈব্বৈদ্বদ্ধ। বধ্যন্তি চাদকুৎ ॥ নাস্তি তাত স্থং কিঞ্চিদত্র ছ:খশতাকুলে। তথানোকার যততা কথং সেকা মরা ত্রী ৷

ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে পিতাপুত্র-সংবাদে একাদশোহধ্যায়ঃ।

## बान्दर्भाष्ट्रशायः।

----

### পিতোৰাচ।

সাধু বংস ছয়াখ্যাতং সংসারগছনং পরম্।
কানপ্রদানসভূতং সমাপ্রিত্য মহাফলম্ ॥
তত্র তে নরকা: সর্কে যথা বৈ রৌরবতথা।
বর্ণিতাতান্ সমাচক্ বিভরেণ মহামতে ॥
পুত্র উবাচ।

Cत्रोत्रवरक नमांथााजः व्यथमः नत्ररका मग्रा। মহায়ৌরবসংজ্ঞন্ত শৃণুত্ব নরকং পিত: ৷ যোজনানাং সহস্রাণি সপ্ত পঞ্চ সমস্ততঃ। তত্র তাম্রময়ী ভূমিরধক্ত ছতাশনঃ॥ ভতাপতথা সর্বাশা প্রোদ্যদিন্দুসমপ্রভা। বিভাত্যতিমহারৌদ্রা দর্শনম্পর্শনাদিয়ু ॥ ভক্তাং বন্ধ: করাভ্যাঞ্চ পদ্ধাবিশ্ব যমাসুবৈশ:। মুচ্যতে পাপকুলধে। লুঠমান: স গছতি॥ कारेकर्वरेकत्र काल्टेकत्र भिट्टेकर्प्रभटेकछथा। खकामानखबा शृदेखेळ किः मादर्ग विकृषाट ॥ দহ্মান: পিত্রাতভাতিতাতেতি চাকুল:। বদত্যসক্তৃথিয়ে। ন শাস্তিমধিগচ্ছতি ॥ এবং তত্মান্ধরৈর্মোকো ছতিকাত্তৈরবাপ্যতে। বর্ষাযুতাযুটভঃ পাশং হৈঃ ক্লভং ছুইবৃদ্ধিভিঃ 🛭 তথাক্সস্ত তমোনাম সোহতিশীতঃ স্বভাবত:। মহারৌরববদীর্ঘত্তপা স তম্পারত: ॥ শীতার্তান্তত্ত্ব ধাবস্তে। নরান্তম্সি দারুণে। পরম্পরং সমাদাদ্য পরিরভ্যাশ্রয়ন্তি চ 🛚 দস্তান্তেষাঞ্চ ভকাত্তে শীতার্ত্তিপরিকম্পিতা:। কুড ফাপ্রবলান্তর তথৈবান্তেহপু।পদ্রবা:॥ হিমথগুৰহো বায়ুভিনজ্যন্থীনি দারুণ:। यब्डान्ट्रश्रमिकः एत्रामञ्जूरिक क्र्याविकाः। লেলিছমানা ভাষ্যত্তে পরস্পরস্মাগ্যে। এবং ততাপি স্থমহানু ক্লেশন্তম্যি মান্ট্র:। প্রাপ্যতে ব্রাহ্মণশ্রেষ্ঠ যাবন্ত্রতস্ংক্ষঃ ॥ নিক্সন ইতি খ্যাতস্ততোহজো নরকোত্রম:। তত্মিন্ কুলালচকাণি ভ্রাম্যস্থাবিরতং পিতঃ। যেখারোপ্য নিকুত্যক্তে ক্লেস্ত্রেণ মানবা:। যম।সুগাঙ্গুলিভেন আপাদতলমগুকম্॥ ন চৈৰাং জীবিতভ্ৰংশো জায়তে বিজস্তম। ছিমানি তেষাং শত**শঃ ধণ্ডাল্রেক্যং ব্রন্ধ**তি চ**॥** 

এবং বর্ষদহস্রাণি ছিদ্যক্তে পাপক্ষিণঃ। णावम्यावमरणवर देव छ० शागर हिं<mark>द्रकंतर अ</mark>क्रम् ॥ भक्षिष्ठिष्ठं नवकः मृन्ष गन्छ। सम । यकदेश्वन् । त्रदेकश्रः श्वयमञ्ज्ञस्कृत्रद्व ॥ ত:ত্তেব তক্র চক্রাণি ঘটাযন্ত্রাণি চাক্তত:। ছংৰভ হেতুভূতানি পাপকৰ্মকৃতাং নৃণাম্॥ চক্রেবারোপিতাঃ কেচিড্রাম্যস্তে তক্র মানবাঃ। যাব্ধর্যসহস্রাণি ন ডেবাং স্থিতিরস্করা ॥ ष्ठीयरञ्जयू टेठवारञ्चा वकरञ्चारत्र यथा घरो। লাম্যতে মানবা রক্তমুদ্গিরতঃ পুনঃ পুনঃ॥ ष्यदेवपूर्वविनिकारिष्ठः स्मिटेवप्रस्वविष्याः। হংখানি তে প্রাপ্রবন্তি যাস্ত্রস্থানি লভভি:॥ অসিপত্রবনং নাম নরকং শৃণু চাপরম্। যোজনানাং সহলং যো অলদগ্যান্তভাবনিঃ॥ তথাঃ সুৰ্যাক্রৈশ্চতেওৰ্যতাতীৰ স্থলাক্ষ্রে:। প্রপত্তি সদা তত্র প্রাণিনো নরকৌকস: 1 তন্মধ্যে চ বনং রম্যং লিগ্ধপত্তং বিভাব্যতে। পতাণি তত্ৰ ৰজ্গানাং ফলানি শ্বিজসতম ॥ খানশ্চ তত্ত্ব স্বলাঃ খনস্কাযুত্তশোভিতাঃ। মহাবক্তা মহাদংখ্রী ব্যাহ্রা ইব ভয়ানকা: ॥ ততত্ত্বনমালোক্য শিশিরচ্ছায়মগ্রত:। প্রথান্তি প্রাণিনন্তর ভীরভূট্পরিপী ড়িডা: ॥ হা মাতহা তাত ইতি ক্রন্তোহতীবছ:থিতা:। দহ্যানাতিবুযুগলা ধরণীছেন বহিনা॥ তেষাং গতানাং তহাসিপত্রপাতী সমীরণ:। প্রবাতি তেন পাত্যক্তে তেষাং থড়্গান্তথোপরি॥ ততঃ পভস্তি তে ভূমৌ অলংপাবকদঞ্চা। লেলিহ্যানে চাতত ব্যাপ্তাশেষমহীতলে॥ সারমেয়াস্তত: শীভাং শাতয়ন্তি শরীরত:। তেষামঙ্গানি ক্লডামনেকান্যতিভীষণাঃ ॥ অসিপত্রবনং ভাত মহৈতৎ কীর্ত্তিতং তর। ষ্ঠঃ পরং ভীষ্ঠরং তপ্তকৃষ্ঠং নিবোধ মে॥ সমস্তত্তপ্ৰকৃতা বহিন্দালাসমাবৃতা:। অলদ্যিচয়ে। ছুত্তৈ লার শচ্পপুরিতা: ॥ তেयु इक्ष्ठकर्यात्ना यादेगाः किला खर्धाम्बाः। কাথ্যতে বিক্ষুটদগাত্ৰগলম**ক্ষল**শবিলাঃ॥ क् हेरकभागतिबाहिष्टिमामाना विजीवरेनः। গৃটএরুৎপাট্য মুচ্যক্তে পুনক্তেখেব বেগিতৈ: ॥ পুনঃ সিমসিমারতে তৈলেনৈক্যং একতি চ। দ্রবীভূতে: শিরোগাত্রসাযুমাংসত্বসন্থিতি: ॥

**ততো যা**रेगार्न देवबाछ पर्स्ता पष्टेनचि छेडाः। ক্লভাবর্ত্তে মহাতৈলে মথ্যস্তে পাপক্ষিণঃ॥ এব তে বিস্করেণোকস্তপ্তকুম্বো ময়া পিত:।। ইতি মাৰ্কভেমে মহাপুৰাণে মহাবেরিবাদি-नत्रकाथानः नाम बाम्यार्थायः।

### व्यानिर्भाश्यायः।

### পুত্ৰ উবাচ।

অহং বৈশুক্লে জাতে। জ্মান্যাত্র সপ্তমে। সমতীতে গ্ৰাং বোধং নিপানে কুত্বান পুরা॥ বিপাকাৎ কর্মণস্তস্ত নরকং ভূপদারুণম্। সম্প্রাপ্তোহমিশিখাঘোরময়োমুগথগাকুলম্ট যন্ত্রপীড়নগাত্রাস্ত্প্রবাহোত,ভক্দমম্। বিশস্মানহৃষ্ণিতিরিপাতরবাকুলম্॥ পাত্যমানস্থ মে তত্ত্ব সাগ্রাং বর্ষশতং গ্রহম। মহাতাপার্তিতপ্তস্ত তৃঞাদাহারিতস্ত চ 🛚 ততাহলাদকর: সদ্যঃ প্রনঃ প্রশীতলঃ। করন্তবালুকাকুন্তমধ্যস্থা মে সমাগত:॥ তৎসম্পর্কাদশেষাণাং নাভবদ্যাতনা নুণাম্। মম চাপি যথা স্বর্গে স্বর্গিণাং নির্কৃতিঃ পরা ॥ কিমেতদিতি চাহলাদবিস্তারস্থিমিতেকণে:। দৃষ্টমস্মাভিরাসঙ্গং নররত্বমস্ত্রম্ম্ यामा में पूक्रवा (घारता मध्हरखाइमनिश्रज:। পুরতো দর্শয়ন মার্গমিত এহীতি বাগথ॥ পুরুষঃ স তথা দৃষ্ট্র যাতনাশতসঙ্গুলম্। নরকং প্রাহ তং যাম্যং কিন্ধরং ক্লপ্রান্থিত:॥

#### পুরুষ উবাচ।

ভো যাম্য পুক্ষাচক্ষু কিং ময়া ছৃদ্ধতং কুতম্। যেনেদং যাতনাভীমং প্রাপ্তোহত্মি নরকং প্রম্॥ বিপশ্চিদিভি বিখ্যাতো জনকানামহং কুলে। জ্বাতো বিদেহবিষয়ে সম্যয়স্ক্পালক:॥ যকৈ প্রেষ্টং বছভিধ্মিতঃ পালিতা মহী। (नां रष्ट हे कि न प्रशास्त्रा नां जिथि किंत्र मूर्या जंजः ॥ পিতৃদেবর্ধিভ্ত্যাশ্চ ন চাপ্চরিতা ময়া। কুতা স্পৃহাচন ময়াপরশ্লীবিভবাদিবু 🛭 পর্কালেষু পিতরভিধিকালেষু দেবতা:। प्रक्षः चयमात्राखि निभानिषद (धनदः॥

যতন্তে বিমুখা যান্তি নিশ্বস্য গৃহমেধিন:। তত্মাদিষ্টশ্চ পূৰ্ত্তশ্চ ধৰ্মে। দ্বাবপি নশ্ভতঃ । পিতৃনিখাসবিধ্ব**তঃ সপ্তজ্ঞা**ৰ্জ্জিতং শুভুম্। ত্রিজন্মপ্রভবং দৈবো নিশাদো হস্ক্যসংশয়ম। তস্মাদৈবে চ পিত্রো চ নিতামেব হিতোহভব সেহিহং কথমিমং প্রাপ্তো নবকং ভূপদারুণম

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে পিভাপুদ্র-भः वारत देवरतह वाकाः नाम व्यवानस्मिर्शातः।

# চতুর্দ্দশোহধ্যায়ঃ।

পুত্ৰ উবাচ।

ইতি পৃষ্টস্তদা তেন শৃণ্তাং নো মহাক্রনা। উবাচ পুরুষো যাম্যো ঘোরোহপি প্রস্তুতং বচ যমকিঙ্কর উবাচ।

মহারাজ যথাত্থ ডং তথৈতলাত্র সংশয়:। কিন্তু স্বল্লং কুতং পাপং ভবতা স্মারয়ামি তৎ। বৈদৰ্ভী তব যা পত্নী পীৰত্নী নাম নামতঃ। ঋতুমত্যা ঋতুর্বন্ধান্ত্রমা তস্যাঃ কু**ভঃ পুরা**॥ স্থােভনায়াং কৈকেয্যামাসকেন তভো ভবা ঋতুব্যতিক্রমাৎ প্রাপ্তো নরকং বোরমীদৃশম্॥ হোমকালে যথা বহিরাজ্যপাতমবেক্ষতে। থতৌ প্রজাপতিস্তবদীজপাত্মবেক্ষতে॥ যস্ত্রজ্যা ধর্মাত্ম। কামেছাস্ক্রিমান্ ভবেৎ। স তু পিত্রাাদৃণাৎ পাপমবাপ্য নরকং পতেং। এতাবদেব তে পাপং নান্ত কিঞ্চন বিদ্যুত তদেহি গচ্ছ পুণ্যানামুপভোগান্ন পা**র্থি**ব n

#### রাজোবাচ।

যাস্যামি দেবাসুচর যত্র ত্বং মাং নয়িষ্যাসি। কিঞ্চিৎ পূচ্চামি তলে যং যথাবদকু মইসি॥ বজ্রত গ্রমী কাকাঃ পুংদাং নয়নহারিণঃ। পুন: পুনশ্চ নেত্র।ণি তথ্দেষাং ভবস্তি हि ॥ কিং কর্মা কৃতবস্তশ্চ কথবৈয়ভজ্জ্পপিত্রম্। इत्राखायाः उथा बिस्ताः कायमानाः भूनर्नाम করণতেশ পাটাস্তে কন্মাদেতেহভিত্ঃধিতাঃ। করম্ভবালুকাম্বেডে পচাস্তে তৈলগোচরা:॥ व्यत्यामूरेयः धरेशरेक्टरा क्रुवारस्य किः विधा वन বিলিউদেহবন্ধার্ত্তিমহারাববিরাবিণঃ ॥

আরলঞ্নিপাতেন সর্বাক্তত হংথিতা:।
কিমেতে হনিউক র্তারস্ত দাতে হহনিশং নরা:॥
এতাশ্চানাশ্চ দৃশুতে যাতনা: পাপক শিগাম্।
যেন কপ্রবিপাকেণ তল্মাশেষতো বদ ॥
যম্কিঙ্কর উবাচ।

বন্নাং পৃচ্ছসি ভূপাল পাপকৰ্মফলোদ্যম্। তৎ তেহ্**হং সম্প্রক্যামি সজ্ফেপেণ যথাতথ**ম্॥ পুণ্যাপুণ্যে হি পুরুষ: পর্যায়েণ সমল্বত। ভূঞ্জভদ্দ ক্ষরং ধাতি পাপং পুণ্যমথাপি বা ॥ ন তু ভোগাদৃতে পু্ণাং কিঞ্ছা কৰ্ম মানবম্। পাপকং বা পুনাত্যাশু ক্ষয়ো ভোগাৎ প্ৰজায়তে পরিতাজতি ভোগাচ্চ পুণাাপুণ্যে নিবোধ মে। ছভিকাদেব ছভিকং ক্লেশং ক্লেশং ভয়ান্তয়স্॥ মৃতেভাঃ প্রমৃতা যান্তি দরিদ্রাঃ পাপকর্মিণঃ। গতিং নানাবিধাং যান্তি জন্তবঃ কর্ম্মবন্ধনাৎ ॥ উৎসবাহৎসবং যাস্তি স্বর্গাৎ স্বর্গং স্থপাৎ স্থথম। শ্রদ্ধানাশ্চ শাস্তাশ্চ ধনদাঃ গুভকারিণঃ॥ ব্যালকুঞ্চরহর্গাণি সর্পচৌরভমাণি তু। হতা: পাপেন গছে স্তি পাপিনঃ কিমতঃ পরম্॥ ञ्च शक्ति माना प्रविद्याना पूर्वा नामना ।। खुषमानाः नना याखि श्रेगः श्नाविवीषित ॥ অনেকশতসাহস্রজন্মস্থয়সঞ্চিত্ম। **পুণাপুণাং নৃণাং তদ্বৎ স্থেতঃথা**কুরোভবম্॥ বধা বীজং হি ভূপাল পদ্বাংসি সমবেক্ষতে। পুণ্যাপুণ্যে তথা কালদেশান্তকৰ্মকারকম্॥ স্বল্প পাপং ক্বতং পুংসা দেশকালোপপাদিতম্। পদিস্থাসকুতং **হঃ**ধং **ৰুণ্ট**কোখং প্ৰয়চ্ছতি॥ **5९ প্রভৃততরং সূলং শ্লকীলক**সস্তবেম্। হঃখং যছেতি ভৰচ শিরোরোগাদি ছঃসহম্॥ অপথ্যাশনশীতোঞ্জমতাপাদিকারকম্। তথাতোহ্ভমপেক্ষে পাপানি ফলসক্ষে ॥ এবং মহান্তি পাপানি দীবরোগ।দিবিক্রিয়াম্। **डवष्ट्या**शिकुष्ट्रार्डिवसनामिकनात्र देव ॥ ষলং পুণাং ওভং গদ্ধং হেলরা সম্প্রয়ন্ত্তি। পৰ্শং ৰাপ্যথবা শব্যং রুসং ক্রপমথাপি বা॥ টরাদগুরুতরং ভ্রমহাস্তমপি কালজ্ম্। वबक ऋषषःथानि श्रृगाश्र्राग्रह्यानि देव । ত্রানেহনেকসংসারসম্ভবানী**হ ভি**টভি ॥ গতিদেশবৈক্ষানি জানালানফলানি চ। তিষ্ঠন্তি তত্ত্ব যুক্তানি লিপমাত্তেণ চাত্মনি॥

বপুষা মনসা বাচা ন কদাচিৎ কচিন্নর:। অকুৰ্মন্ পাপকং কৰ্ম পুণাং ৰাপাৰভিষ্ঠতে॥ यम्य ८ व्योद्योजि श्रक्तसा इः धः ऋधमधानि त।। প্রভূতমধ্বা স্বলং বিজিয়াক।রি চেড্স:॥ তাৰতা ভক্ত পুণ্যং বা পাপং ৰাপ্যথ চেভৱৎ । উপভোগাৎ ক্ষয়ং যাতি ভূজামানমিবাশনম্॥ এবমেতে মহাপাপং যাতনাভিরহর্নিশম্। ক্ষপরস্তি নরা খোরং নরকান্তর্বিবর্ত্তিনঃ॥ তথৈব রাজন্পুণা। নি স্বর্গলোকে ২ম রৈ: সহ। গন্ধবিদাপারদাং গীতাদ্যৈকপভূষতে॥ দেবতে মাহ্ৰতে চ তিৰ্য্যক্তে চ গুভাগুভম্। পুণ্যপাপোদ্ভবং ভূঙ্ভে স্থগ্ঃথোপলক্ষণম্॥ যং স্বং পৃচ্ছসি মাং রাজন্ যাতনাঃ পাপকর্মিণাম্ কেন কেনেতি পাপেন তৎ তে বক্ষ্যাম্যশেষতঃ घटछेन ठक्षा पृष्ठीः পরদারা নরাধর্ম:। মানদেন চ ছভেন পরক্তব্যঞ্চ সম্পৃতিহ:॥ বজ্রত্থাঃ থগান্তেষাং হরস্তোতে বিলোচনে। পুনঃ পুনশ্চ সম্ভৃতিরক্ষোরেষাং ভবত্যথ ॥ যাবতোহকিনিমেধাংস্ত পাপমেভিনুভি:কৃতম্। তাবন্ধ্যহস্থা নেকার্ডিং প্রাপ্রস্কাত ॥ অসক্ষাজ্ঞোপদেশাস্ত বৈদ্তা বৈশ্চ মন্ত্রিতা:। **मग्रागृह्दितिनाभाग तिश्रामिश मानदेव: ॥** यः नाज्यमञ्जला त्थांकः देवत्रमदाश्वनाञ्चा । (विषया विकाजी नां: श्रुदानिना ह देश: कुछा ॥ रुविष ८७वाः **बिस्वाम्य सावाः भूनः भूनः।** তাবতো বৎসরানেতে বক্তব্তাঃ স্থারণাঃ॥ মিত্রভেদং তথা পিতা পুত্রস্ত স্বন্ধনস্ত চ। যাব্যোপাধ্যায়য়োমাত্তা স্বতন্ত সহচারিণ: ॥ ভার্য্যাপভ্যোশ্চ যে কেচিন্তেদং চকুর্নরাধ্যাঃ। ত ইমে পশুপাট্যক্তে করপত্তেণ পার্থিব॥ পরোপতাপকা যে চ যে চাহলাদনিষেধকাঃ। তালরস্তানিলস্থানচন্দনোশীরহারিণ:॥ व्यानास्त्रिकः मञ्चानमञ्जूष्ठीनाकः त्यर्थमाः। করন্তবালুকাসংস্থান্ত ইমে পাপভাগিন:॥ ভুঙ্জে আছিত যোহস্ত নরেহিন্তেন নিমন্তিত: দৈবে বাপ্যথবা পিত্রো স বিধা ক্লয়াভে থলৈঃ ॥ মৰ্মাণি যন্ত সাধ্নামস্বাগৃভিনিক্সতি। তমিমে তুদমানাত প্রাতিষ্ঠত্তাবারিভা: 🗈 য়ঃ করেতি চ পৈওক্তমক্তবাগনাথামতিঃ। পাট্যতে হি দিধা জিহবা ডল্ডেখং নিশিতৈঃ কুঠিরঃ

८गाजाक्रगांत्रयः म्लृष्टा देवक्रिक्टिबेन दिश्येत्र । তেষামেতে হগ্নিকৃত্তে যুলেলিহতা। হিডাঃ করা: ॥ स्ट्रान्युजातका पृष्टी देशक्रिक्टिष्टेख कामजः। Co शाः यारेमार्न देवर्त्माता नारका विकः नरमशास्त्र গাবোহগিজননী বিশ্বো জোঠতাতা পিতা খদা यामरमा श्वत्रदा दुका देयः म्ल्रेटोख लाग नृष्टिः॥ বদ্ধাত্য মতে নিগতৈত্বে তিহরগ্নিপ্রতাপিতে:। অঙ্গাররাশিমধ্যস্থান্তির্নত্তাকাহদাহিন: ॥ भावमः कुभवः ছार्णा रमरावानि চ यानि देव। ভুক্তানি যৈরসংস্কৃত্য তেষাং নেত্রাণি পাণিনাম্। নিপাভিতানাং ভূপৃষ্ঠ উদ্তাক্ষি নিরীক্তাম্। ननः देन: পश्च कृषाट्य नदेवर्गादेमामू बाद ज्जः ॥ श्वक्र दाविकाजीनाः (वर्षानांक नदांष्ट्रेयः। নিকা নিশমিতা যৈক পাপানামভিনকতাম ॥ Coयामायाम् कीनानधिवर्गान् भूनः भूनः। কর্ণেষ্ব প্রেরয়স্ত্যেতে যামা। বিলপতায়পি 🛭 रियः व्यनारमविरव्योरकारमवागत्र-मञाः एजाः। ভঙ্কা বিধ্বংসমানীতাঃ ক্রোধলোভামুবর্ডিভিঃ তেয়ামেটভঃ শিটভঃ শটস্তমু ভবিলপভাং ছচঃ। পুথক কুর্ব্বন্তি বৈ যাম্যা: শরীরাণতিদারুণাঃ ॥ গোত্রাহ্মণার্কমার্গাংস্ত যেহবমেহস্তি মানবাঃ। टिकारमङानि क्रमारख अल्पनाञ्चानि वाष्ट्ररेः ॥ দ্বাকভাং যত্ৰ কল্মৈ দিতীয়ায় প্ৰয়েছতি। म (चरः निकथा फिन्नः कात्रनमारः श्रेवाश्टल ॥ স্বপোষণ্পরো যস্ত পরিত্যজ্ঞতি মানবঃ। পুত্রভূত্যকলতাদিবন্ধুবর্গম্কিঞ্নম্ ॥ ত্তভিক্ষে সন্ত্রমে বাপি সোহপ্যেবং যমকিস্করে:। উৎকৃত। দতানি মুখে স্বমাংসাক্তমুতে কুধা ॥ শরণাগভান যন্তাজতি লোভাগুত্যপঞ্জীবিন:। সোহপোৰং বন্ত্ৰপীড়াভি: পীড়াতে ব্যক্তিকরৈ: ॥ ত্মকুতং যে প্রেমছেডি যাবজ্জন্মকুতং নরা:। তে পিষ্যম্ভে শিলাপেট্যুর্যথৈতে পাপকর্মিণঃ॥ স্থাসাপহারিণো বন্ধাঃ সর্বগাতেষু বন্ধনৈঃ। ক্রমির্শ্চিককাকোলৈভূ ভাত্তেইহনিশং নরাঃ॥ কুংকামাস্ট্পভজ্জিহবা ভালবো বেদনাভুরা:। দিবামৈথুনিনঃ পাপাঃ পরদারভূ**জ**ক যে ॥ তবৈধৰ কউকৈ দীবৈৰ্যায় দৈঃ পশ্য শাহ্ম দিম্। আরোপিতা বিভিন্নালা: প্রভৃতাস্ক্সবাবিলা:॥ ম্যায়ামপি পটেগুতান্ নাখ্যমানান্ যয়াহুলৈঃ। পুরুবৈ: পুরুষব্যাজ পরদারাব্যধিনঃ ॥

উপাধ্যায়**মধঃ कुषा छ ह्या (यश्या**य्या स्वार नदः। গৃহাতি শিল্পথবা সোহপ্যেবং শিল্পা শিলাম্॥ বিভ্ৰৎ ক্লেশমবাপ্নোতি জনমার্পেইতিপীড়িত:। কুৎক্ষামোহ্ছনিশং ভারপীড়াব্যথিতমন্তক:॥ মৃত্রশ্নেমপুরীষাণি থৈকৎস্টানি বারিণি। ত ইমে শ্লেমবিগা অহপদ্ধি নরকং গভাঃ॥ পরম্পরক মাংদানি ভক্ষরন্তি কুধাবিতাঃ। ভুক্তং নাতিখ্যবিধিনা পূর্কমেভিঃ পরম্পরম্॥ অপবিদ্ধান্ত থৈৰ্বেদা বহুরশ্চাহিতাগ্লিভি:। ত ইমে শৈলশৃদাগ্রাৎ পাত্যস্তে২ধঃ পুনঃ পুনঃ ॥ পুনভূপিতমো জীর্ণা যাবজ্জীবস্তি যে নরা:। ইমে ক্লমিত্বমাণনা ভক্ষাত্তেহত পিপীলিকৈ: ॥ পতিতপ্রতিগ্রহাদানাদ্যজনারিত্যদেবনাৎ। পাষাণ্মধ্যকীটবং নর: সতভ্যস্ত্র তে। পশ্রতো ভূতাবর্গস্থ মিত্রাণামভিপেতথা। একো মিষ্টারভূগভূঙ কে জলদঙ্গারসঞ্সম।। तुरेकर्डग्रहरेतः शृष्टेः निष्ठामत्त्राशक्षाटः । পুঠমাংদং নুদৈতেন যতো লোকভ ভক্তিৰ ॥ অন্নোহণ বধিরো মুকো ভ্রাম্যতেহ্যং কুধাতুর:। অকৃতজোহ্ধমঃ পুংসামুপকারেষু বর্ততান্ 🛭 অযং কুতল্পে মিত্রাণামপকারী স্বত্র্মতিঃ। তপ্তকুম্বে নিপত্তি ততো যাস্ততি পেষণম্ 🏾 করম্ভবালুকাং তত্মাৎ ততো যন্ত্রাবপীড়নম্। অসিপতাবনং তত্মাৎ করপত্তেণ পাটনম্॥ কালস্ক্রে তথা চ্ছেদমনেকালৈচৰ যাতনাঃ। প্রাপ্য নিম্বৃতিমেতক্ষার বেল্মি কথমেষ্যতি ॥ শ্রাদ্ধনক্ষতিনো বিপ্রা: সমুৎপত্য পরস্পরম্। ছুটা হি নিঃস্তং ফেনং সর্বাচ্চেভাঃ পিবস্তি বৈ॥ স্থবর্ণস্থেমী বিপ্রম্ব: স্থরাপো গুরুতর্গ:। অধশ্চোর্ম্ব দীপ্তাগ্রৌ দহুমানাঃ সমস্ততঃ॥ তিষ্ঠস্থান্সহস্ৰাণি স্থবহুনি ততঃ পুনঃ। कात्रत्य मानवाः क्ष्रंकत्रत्यांशांविहिङ्काः 🏻 মৃতা: পুনশ্চ নরকং পুনর্জাতাশ্চ তাদৃশম্। ব্যাধিমৃচ্ছন্তি কল্লান্তপরিমাণং নরাধিপ 🛭 (शाष्त्रा नानजद्रः याजि नद्रत्कश्य जिल्हानि। তথোপপাতকানাঞ্চ সর্বেধামিতি নিশ্চয়ঃ ॥ নরকঞাচ্যতা যানি ধৈটের্ধবিহিতপাতকৈ:। প্রয়ান্তি যোনিজাতানি তন্মে নিগদত: শৃণু 🛊 ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ব্রুড়োপাখ্যানে পিতাপুত্রসংবাদে চতুর্দশোহধ্যার:।

### शकनत्नार्थाग्रः।

--- • : • ---

### যমকিষর উবাচ।

পতিতাৎ প্রতিগৃহার্থং ধর্ষোনিং ব্রন্দেক্ষ:। নরকাৎ প্রতিমৃক্তস্ত কুমি:পতিভ্যাদক: ॥ উপাধ্যায়বালীকন্ত কৃত্বা স্থা ভবতি দিল:। তজায়াং মনসা বাঞ্ন্তদ্দ্ৰব্যঞাপ্যসংশয়ম্ ॥ গৰ্দভো জায়তে জন্তঃ পিজোশ্চাপ্যবমানকঃ। মাতাপিতরাবাকুল্য শারিকা সম্প্রদায়তে ॥ প্রাতৃপাত্মাবমস্তা চ কপোতত্বং প্রপদাতে। ভামেৰ পীড়য়িছা তুকচ্ছপত্বং প্ৰেপদ্যতে। ভর্পিওমুপাশ্নন্ যন্তদিষ্টং ন নিষেবতে। ্সাহপি মোহসমাপলো জায়তে বানরো মৃতঃ ॥ ম্বাসাপহর্তা নরকাধিমুক্তো জায়তে কুমি:। অস্থ্ৰকণ্চ নরকামুডো ভবতি রাক্ষ্য: ১ বিশ্বাসহস্তা চ নরো মীনযোনৌ প্রজায়তে। धाकाः यवाःखिलान् भाषान् क्लथान् मर्पशान्। क्नायान् क्नमान् मूक्तान् शाध्मान् करीख्या । শস্তান্তানি বা হ্বতা মোহাজ্জস্তরচেতনঃ। দঞ্চায়তে মহাবক্টো মৃষিকো বক্তসরিভ:। পরদারাভিমর্ঘাত, বুকো ঘোরোইভিজায়তে ॥ धा मृताला वत्का तृत्धा वाफः कहछथा क्रमार। ভ্ৰাতৃভাৰ্য্যাঞ্চ ছুৰ্ব্যুদ্ধিৰ্যো ধৰ্ষয়তি পাপকৃৎ ॥ পুংকোকিলত্বমাপ্রোতি স চাপি নরকাচ্চ্যতঃ 🛭 দ্বিভার্ব্যাং গুরোর্ডার্য্যাং রাজভার্য্যাঞ্চ শাপকুৎ। প্রধর্ষ রিতা কামাত্মা শ্করে। জায়তে নর: । যজ্ঞদানবিবাহানাং বিদ্নকর্তা ভবেৎ কুমি:। পুনদাতা চ ক্সামা: ক্মিরেবোপজারতে । দেবতাপিতৃবিপ্রাণামদতা যে হাম্মরুতে। বিমৃক্তো নরকাৎ দোহতি বারস: সম্প্রজারতে। জ্যেষ্ঠং পি**ড়দমং বা**পি ভ্রাতরং যোহ্বমন্ততে। নরকাৎ সোহপি বিভাষ্টঃ ক্রোঞ্চনোনো প্রজারতে। **म्यन्ठ डाम्नगैर शघा कृत्रि**रशास्त्री क्षेत्रग्रह । তভামপভামুৎপাদ্য কাঠান্ত:কীটকো ভবেৎ 🛭 শ্কর: কৃমিকো মদ্ওশুগোলন্চ প্রজায়তে। व्यक्त व्यक्ति । श्री विश्व कि निव्यक्ति । ক্ৰতম্ম ক্ৰমিকঃ কীটা পতলো বুশ্চিকন্তথা। মৎক্তম্ব বারস: কুর্ম: পুরুসো জারতে ততঃ॥

व्यवस्थान्यः श्रुक्तः इषा नद्रः मक्षाद्राट्य श्रेदः । কুমিঃ জীবধক্তা চ বালহস্তা চ জারতে ॥ ভোজনং চোররিছা ভূ মক্ষিকা জায়তে নরঃ। তত্রাপান্তি বিশেষো বৈ ভোজনক্ত শৃণুষ ত**ৎ**॥ হুখানত্ত স মার্জারো জারতে নরকাচ্চ্যুত:। তিলপিণ্যাকসংমিশ্রমন্নং হ্রত্বা তু মৃবিক: ॥ चुठः रुपा ह नक्नः कांटका मन्द्रबामियम्। মৎস্তমাংসাপদ্ধৎ কাকঃ শ্রেলো মার্গামিযাপদ্ধৎ॥ বীচীকাকস্বপহৃতে লবণে দধনি ক্রিমিঃ। চোররিছা পরশ্চাপি বলাকা সম্প্রজায়তে ॥ যন্ত চোরমতে তৈলং ভৈলপায়ী স জায়তে। মধু হড়ানরোদংশঃ পুপং হড়োপিশীলিকঃ॥ চোরয়িতা তু নিম্পাবান্ স্বায়তে গৃহগোলক:। আসবং চোররিমা তু ভিত্তিরিম্বমবাপ্রয়াৎ 🛭 অয়ো হড়া তু পাণাত্মা বায়দঃ সম্প্রভায়তে। হতে কাংস্তে চ হারীতঃ কপোতে।রূপ্যভা**র**নে॥ ষ্যা ছু কাঞ্চনং ভাত্তং ক্লমিযোনৌ প্রকারতে। পত্রোর্ণং চোরয়িত্বা ভুক্তকরত্বঞ্চ গচছতি । কোষকারশ্চ কোষেয়ে হুতে বল্লেহভিজারতে। ত্কুলে শাঙ্গিকে পাপো হুতে চৈবাংগুকে গুক:॥ **उरेशराकारिकः इषा रज्ञः क्लोमक काग्रटः।** কাৰ্পাদিকে হুতে ক্ৰোঞো ৰান্ধহন্তা বৰুত্তথা ॥ ময়ুরো বর্ণকান হড়া শাকপঞ্জ জায়তে। জীবঞ্জীবকতাং যাতি রক্তবন্তাপহন্নর:॥ ছুচ্ছুন্দরিঃ গুভান্ গদ্ধান্ বাসো **হুছা শশো** ভবেৎ॥ যক্তঃ ফলপিহরণাৎ কাষ্ঠত পুণকীটকঃ॥ পুষ্পাপহৃদ্ধিদ্রশ্চ পঙ্গুর্ধানাপহররঃ। শাকহর্তা চ হারীতন্তোগহর্তা চ চাতক: ॥ पृर्श्वी नवकान् शंषा द्वोत्रवामीन् स्रमाक्रगान्। তৃণ-গুৰুলভাবল্লিছক্সারভক্তাং ক্রম।৫। প্রাপ্য ক্ষীণাল্লপাণস্ত নরো ভবতি বৈ ততঃ। কুমিঃ কীটঃ পতঙ্গোহধ পক্ষী ভোষচরো মুগঃ। গোত্বং প্রাপ্য চ চঙালপুক্সাদিজ্গুপ্সিতম্ ॥ পলুকো বধির: কুটা বন্দ্রণাচ প্রপীড়িত:। মুথরোগাক্ষিরোগৈশ্চ শুদরোগৈশ্চ বাধ্যতে ॥ অপসারী চভবতি **প্রস্থ স** পছতি 🛭 এৰ এব ক্ৰমো দুটো গোস্থৰণাপহারিণাম্। विन्ताश्रहिनदण्डाका निक्क्यवः भिरना श्रद्धाः ॥ ভারামন্তভ শুক্ষঃ পারক্যাং প্রতিপাদয়ন। প্রাপ্নোতি ষণ্ডবাং মৃঢ়ো যাতনাষ্ট্য: পরিচ্যুত:॥

यः করোতি নরো হোমমসমিদ্ধে বিভাবসৌ। সোহজীৰ্ব্যাধিত্বংখ তেঁ। মন্দাগিঃ সম্প্ৰজায়তে ॥ পরনিকা কুতল্বং পরমর্থাব্যট্নম্। रेनर्ह्माः नियुं पदक প्रकार्तापरम्यनम् ॥ পরস্বহরণাশোচং দেবতানাক কুৎসনা। নিক্তা বঞ্দং নূণাং কার্পণ্যঞ্চ নূণাং বধঃ ॥ যানি চ প্রতিষিদ্ধানি তৎপ্রবৃত্তিক সম্বতা। উপলক্ষ্যাণি জানীয়!মুক্তানাং নবক।দহু॥ দয়া ভূতেযু সহাদঃ পরণোকপ্রতিক্রিয়া। मठाः ভৃতহিতার্থোক্তির্মেদ গ্রামাণ্যদর্শনম্॥ ওকদেবর্ষিসিক্ষিপূজনং সাধুসঙ্গমঃ। সৎক্রিয়াভাঁদনং গৈতীমিতি বুদ্ধোত পণ্ডিত:।। অক্তানি চৈব সন্ধর্ম ক্রিয়া ভূতানি যানি চ। স্বৰ্গ ছালাং লিক। নি পুক্ষাণামপাপিনাম্॥ এতহদেশতো রাজন্ভবতঃ কথিতং ময়া। স্বকর্মফলভোক্ত গং পুণানাং পা পিনাত্তথা।। তদেহাতার গচছামো দৃষ্টং দর্কং ময়াধুনা। ত্যা দুটো হি নরকন্তদেহান্তর গাম্চান্।

### • পুজ্ৰ উবাচ।

ততন্ত মগ্রতঃ কুলা স রাজা গ্রম্বাতঃ।
ততন্ত সংক্রিংক্টাং বাতনান্থায়িভিন্তিঃ॥
প্রসাদং কুক ভূপেতি ভিন্ন তাবিলায় ইকম্।
অবস্থান ধনো মনো হলাব্যতে হি নঃ॥
পরিতাপঞ্চ গাত্রেভাঃ পীড়াবাধাশ্য কুৎস্থাঃ।
অপহন্তি নরবাান্ত দ্যাং কুক মহীপতে॥
এতৎ শ্রুণা বচন্তেষাং তং ধামাপুরুষং নূপঃ।
পপ্রচ্ছ কথমেতেষামাহলাদো মন্নি ভিন্তি॥
কিং ময়া কর্মা তৎ পুণাং মঠ্যলোকে মহৎ কুতম্
আহলাদশান্নী বৃষ্টির্থেনেয়ং ভ্রুদীরয়॥

# যমপুরুষ উবাচ।

পিতৃদেবাতিথিপৈরা শিটেনারেন তে তন্তুঃ।
প্রিমভাগতা যক্ষাৎ তলগতঞ্চ মনো যতঃ॥
ততত্বলগাকসংসর্গী প্রনো ফ্লানলায়কঃ।
পাপকর্মকুতো রাজন্ যাতনা ন প্রবাধতে॥
অখনেধানয়ো যজ্ঞান্তরেটা বিধিবদ্যতঃ।
ততত্ত্বদর্শনান্যাম্যা যন্ত্রশন্তিবায়সাঃ॥
পীড়নচ্ছেন্দাহানিমহাত্বেয় হেতবং।
মৃত্বমাগতা রাজন্তেক্সাপহতাত্ত্ব॥

রাজোবাচ।

ন স্বর্ণ একলোকে বা তৎ স্থং প্রাণ্যতে নইরঃ।
বলার্ভ স্থনিক্রিণদানোথমিতি মে মতিঃ॥
বলি মৎসন্ধিবৈতোন্ যাতনা ন প্রবাধতে।
ততো ভদুম্থাতাংং স্থাস্তে স্থাপুরিবাচলঃ॥
যমপুক্ষ উবাচ।

এহি রাজন্ প্রগচ্ছামো নিজপুণাসমর্জিতান্। ভূঙ্ক ভোগানপাভেহ যাতনাঃ পাপকর্মণাম্। রাজোবাচ।

তথার তাবদবাভামি বাবদেতে স্কৃথবিতা।
মৎসিরিধানাৎ স্থবিনো ভর্মন্ত নরকৌকসঃ॥
ধিক্ তভা জীবনং প্ংসঃ শরণাধিনমাতৃরম্।
বো নার্তমন্ত্রাতি বৈরিপক্ষমপি ধ্রুবম্॥
যজ্ঞনানতপাংসীহ পরত চন ভূতয়ে।
ভবস্তি ভভা যভার্তপিরিত্রাপে ন মানসম ॥
নরভা যভা কঠিনং মনো বালাভুরাদির্।
বৃদ্ধের্ চন তং মভো মানুষং রাক্ষদো হি সঃ॥
এতেযাং সিনিকর্ধাৎ তু যদারিপরিতাপজম্।
তথোগালজং বাপি ছংখং নরকস্ভবম্॥
কৃথপি।সভিবং ছংখং যচ মৃক্ষ্পিদং মহৎ।
এতেযাং তাণদানভ মতে বর্গস্থাৎ পরম্॥
প্রাপ্রান্তা যদি স্থাংবহবো ছংখিতে ময়ি।
কিন্ন প্রাপ্তং ময়ান ভাতসাত্ব জ্ব মাচিরম ॥

যমপুরুষ উবাচ। 10 4 2 11

এষ ধর্মশত শক্রুত ছাং নেতৃং সমুপাগতৌ। অবশ্যম্মালাস্তব্যং তন্মাৎ পার্থিব গম্যতাম্॥

ধর্ম উবাচ।

নরামি স্বামহং স্বর্গং স্ক্রা সম্যপ্রপাসিত:। বিমানমেতদাকৃত্ব মা বিলম্বস্থ সম্যতাম্॥

রাজোবাচ।

নরকে মানবা ধর্ম পীডাস্তেইত সহস্রশ:। আংশীতি চার্ত্তা: ক্রন্সন্তি মামতোন ব্রন্ধামাহম্। ইফ্রন্টবাচ।

কর্মণা নরকপ্রাপ্তিরেভেষাং পাপকর্মিণাম্। স্বর্গন্ধাপি গন্তব্যোন্প পুণ্যেন কর্মণা॥ রাজেবোচ।

যদি জানাসি ধর্ম যং যং বা শক্র শচীপতে। মন যাবংপ্রমাণত শুভং তদ্বজুম**র্থ**ে।

#### ধৰ্ম উবাচ।

অবিকৰে বা বথা ভোগে যথা বা দিবি তারকাঃ।
যথা বা বর্ষতো ধারা গঙ্গারাং সিকতা যথা ॥
অসংথ্যেয়া মহারাজ যথা বিল্যাদ্যো হুপাম্।
তথা তবাপি পুণান্ত সম্খ্যা নৈবোপপাতে ॥
অম্কম্পামিমান্য নারকেবিহ কুর্মতঃ।
তদেব শতসাহস্রমন্ধামুপগতং তব ॥
তদগত্ব থং নৃপত্রেষ্ঠ তভোক্মেমবালয়ম্।
এতেহপি পাপং নরকে কপরস্ক স্বক্র্মন্ম।
রাজোবাচ।

কথং স্থাং করিষান্তি মৎসম্পর্কের্ মানবাঃ।

যদি মৎসন্নিধাবেষ।মূৎকর্ষো নোপজায়তে ॥
তত্মাদ্যৎ স্কৃতং কিঞ্চিন্মমান্তি ত্রিদশাধিপ।
তেম মুচান্ত নরকাৎ পাপিনো যাত্তনাং গতাঃ॥

ইক্ল উবাচ।

এবমূর্ক্তরং স্থানং জয়াবাপ্তং মহীপতে। এতাংশ্চ নরকাৎ পশু বিমূক্তান্ পাপকারিণঃ॥ পুত্র উবাচ।

ততে হিপতৎ পুলাবৃষ্টিস্ত ভোণরি মহীপতে:।
বিমানকাধিরো পৈয়নং সর্লোকমনমন্ধরি:॥
অহকাকে চ যে তত্র যাতনাভ্যঃ গরিচ্যতা:।
অকর্মকনির্দিষ্টং ততো জাতান্তরং গতাঃ॥
এবমেতে সমাথ্যতা নরকা বিজসতম।
যেন যেন চ পাপেন যাং যাং যোনিমুলপতি বৈ॥
তৎ তৎ সর্বং সমাথ্যতাং যথা দৃষ্টং ময়া পুরা।
পুরাম্ভবজং জানমবাগ্যাবিতথং তব।
অতঃ পরং মহাভাগ কিম্ভুৎ কথ্যানি তে॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে পিতা-পুত্র-সংবাদে পঞ্চদশোহধ্যায়:॥

# ষোড়শোহধ্যায়ঃ।

\_\_\_\_\_

পিতে।বাচ।

কথিতং মে জ্বা বৎস সংসারত ব্যবস্থিতম্।
বরূপমতিকেরত ঘটীব্রবদ্বারম্ ॥
ব্বেৰমেতদ্বিলং মরাবগত্মীদৃশম্।
কং মরা বদ কর্ত্ব্যমেবমন্দিন্ ব্যবস্থিতে॥
পুত্র উবাচ।
বিদি মন্চনং তাত শ্রদ্ধান্তবিশক্তিঃ।

তৎ পরিতাল্য গার্হস্থাং বানপ্রস্থাৎরা ভব ॥
তমস্ঠার বিধিবদ্বিহারাগ্লিপরিগ্রহম্।
আত্মভাত্মানমাধার নির্দ্রে নিজারিগ্রহ: ॥
একান্তরাশী বখাত্মা তব ভিক্রতজ্ঞিতঃ ।
তত্র যোগপরো ভূজা বাহ্মপর্শবিবর্জিতঃ ॥
ততঃ প্রাঞ্জাসি তং যোগং চঃখসংযোগভেবজম্
ম্কিহেভুমনৌপন্যমনাধ্যেরমসন্তিন্ম্।
যৎসংযোগার তে যোগো ভূরো ভূতৈভবিযাতি॥
পিতোবাচ।

বৎদ ঘোগং মমাচক্ষু মৃক্তিহেতুমতঃ পরম্।

যেন ভূতৈঃ পুনভূতি। নেদৃগ্ছংখমবাপু রাম্॥

যতাসকিপরভাষা মম সংসারবন্ধনৈ:।

নৈতি যোগমযোগেইপি তং যোগমধুনা বদ ॥

সংসারাদিত্যতাপাত্তিবিপু যাদেহমানসম্।

বক্ষজানাম্পাতেন সিঞ্চ মাং বাকাবারিণা॥

অবিদ্যাক্ষসপেণ দৃষ্ঠং ত্রিষপীড়িতম্।

স্বাকাব্যুত্পানেন মাং জীব্য পুনমৃতিম্॥

পুত্রদারগৃহক্ষেত্রমমন্তনিগড়াদিত্রম্।

মাং মোচয়েইসভাববিজ্ঞানোদ্যাটনৈল্বরন্॥

পুত্র উবাচ।

শৃথ্ ভাত যথা যোগো দ্বাত্তেমেণ ধীমতা। অলকায় পুৰা প্ৰোক্তঃ সমাক্ পৃষ্টেন বিস্তরাৎ॥ পিতোবাচ।

দতাতোমঃ স্থতঃ কস্ত কথং বা যোগমূকবান্। ক\*চানকোং মহাভাগো যো যোগং পরিপৃষ্টবান্॥ পুল্ল উবাচ।

কৌশিকো আক্ষণং কশ্চিৎ প্রতিষ্ঠানেহভবৎ পুরে
সোহস্তজনাকতৈঃ পার্টণঃ কুন্তরোগাড়রোহভবং॥
তং তথা ব্যাধিতং ভার্যা। পতিং দেবমিবার্চরং।
পাদা ভাঙ্গাঙ্গশংবাহয়ানাচ্ছাদনভোজনৈঃ॥
প্রেম্নুলপুরীবাস্ক প্রবাহকালনেন চ।
রহশ্চেবোপচারেণ প্রিয়সম্ভারণেন চ॥
স তয়া প্জামানোহিপি সদাতীববিনীতয়া।
অতীবতীবকোপছায়ির্ভং সম্মতি নিষ্কুরঃ॥
তথাপি প্রণতা ভার্যা। তমমন্তত দৈবতম্।
তং তথাপাতিবীভৎসং সন্ধপ্রেষ্ঠমমন্তত॥
আচংক্রমণশীলোহিপি স কদাচিদ্ধিজ্ঞান্তমঃ।
প্রাহ্ ভার্যাং নম্বশ্রেত ছং মাং তত্তা নিবেশন্ম্॥
বা সা বেস্তা ময়া দৃষ্টা রাজ্মার্গে গৃহহাবিতা।
তাং মাং প্রাপম্ম ধর্গত্তে দৈব মে শ্বন্ধি বৃত্ততে॥

দৃষ্টা স্র্য্যোদ্যে বালা রাত্রিশ্চেমমুপাগতা। দর্শনানস্তরং সামে জদয়ারাপস্পতি। यि मा ठाक्नर्याकी शीन टानिश्राधरा। নোপগৃহতি তবজী তনাং দ্রক্যাসি বৈ মৃতম্॥ বাম: কামো মন্ত্ৰ্যাণাং বহুছিঃ প্ৰাৰ্থ্যতে চ সা মমাশক্তিশ্চ গমনে সঙ্গুলং প্রতিভাতি মে 🏾 তৎ তদা বচনং শ্রুত্বা ভর্ত্তঃ কামাত্রক্ত সা। তৎপত্নী স্বকুলোৎপন্না মহাভাগা পতিব্ৰতা।। গ। एः পরিকরং বদ্ধা শুক্ষমাদায় চাধিকম্। স্বন্ধে ভর্তারমাদায় জগাম মৃহগামিনী। निभि (मघाखराज द्यामि हल विद्या व्यन मिंटा। রাজমার্গে প্রিয়ং ভর্তৃশ্চিকীর্যস্তী দিজাঙ্গনা। পথি শূলে তথা প্রোতমচৌরং চৌরশঙ্কয়া। মাওব্যমভিত্ব: থার্তমন্ধকারে ২৭ স বিজঃ। পত্নীক্ষকে সমারুড়শ্চালয়ামাস কৌশিক:। शानावमर्यगां**८ कुरका माध्यास्त्रम्**वाह इ ॥ যেনাহমেবমতার্থং ছঃথিতশ্চালিতঃ পদা। দশাং কটামহুপ্ৰাণ্ডঃ স পাপাত্মা নরাধমঃ ॥ क्टर्यामरप्रश्वनः व्यादेविदियांकाजि न मः भग्नः। ভাস্করালোকনাদের স বিনাশমবাপাতি ॥ ভক্ত ভার্যা ততঃ শ্রুষা তং শাপ্মতিদারুণম্। প্রোবাচ ব্যথিতা হুর্য্যো নৈবোদয়মুপেয়াতি॥ ততঃ সুর্য্যোদয়াভাবাদভবৎ সম্ভতা নিশা। বহুসতঃপ্রমাণানি ততো দেবা ভয়ং যযুঃ 🛭 নিঃ স্বাধ্যায়বষ্টকারস্থাসাহাবিবজ্জিতম। कर्थः सू थविनः नर्सः न शटक्द नःक्रयः क्रार ॥ অহোরতেব্যবস্থায়া বিনা মাসর্ভূসংক্ষয়:। তৎসংক্ষরার ত্বয়নে জ্ঞায়েতে দক্ষিণোত্তরে॥ বিনা চায়নবিজ্ঞানাং কাল: সংবৎসর: কৃত:। সংবৎসরং বিনা নাক্তৎ কালজানং প্রবর্ততে ॥ পতিব্রতায়া বচনা নোদাচ্ছতি দিবাকর:। पूर्यामग्रः विना देनव ज्ञानमानामिकाः कियाः ॥ নাগ্রেবিহরণকৈব ক্রম্মভাবশ্চ লক্ষ্যতে। ন বাপ্যায়নমন্ত্ৰাকং বিনা ছোমেন ভায়তে॥ यत्रभाभातिका मटेकायककाटेशर्यवाहिटेकः। বৃষ্ট্যা তানমুগৃহীমো মর্ত্যানু শক্তানিসিদ্ধয়ে॥ निर्णापिতात्यांवधीयू मर्छा। यस्क यक्ति नः। **उत्तर देश अयष्ट्रांगः कामान् यळा मिश्रृष्टिजाः** ष्यर्थ। हि वर्षाम वयः मर्खगात्माई अविधिनः । ভোরবর্ষেণ হি বরং হবির্ক্ষেণ মানবা: ॥

य नामाकः व्यवक्षत्र निष्ठादेनमिष्ठिकौः कियाः क्जूडाराः इत्रोद्यानः चत्रकान्नखिः लानुभाः ॥ বিনাশার বরং ভেষাং ভোরস্থ্যাগ্নিমারুতান্। कि जिक्ष नन् वदायः भाभानायभाविष्यम् ॥ ছুইতে।য়াদিভোগেন তেষাং ছৃদ্ধুতকর্মিণাম্। উপদর্গা: প্রবর্তত্তে মরণার স্থলাকণা: ॥ (ए च्यान् श्रीनिविषा जू ज्वार भिषमाचना । তেষাং পুণান वश्रः लोकान् विषधाम महाश्रानाम् তন্নান্তি সর্কমেবৈত্তিবিনষাং স্পষ্টসংস্থিতিম্। কথং জু দিনসর্গ: ভাদজোহভুমবদন্ স্বাঃ ॥ তেষামেব সমেতানাং যজবু।চিছত্তিশঙ্কিনাম্। দেবানাং বচনং শ্রুত্বা প্রাহ দেব: প্রজাপতি:॥ তেজঃ পরং তেজসৈব তপসা চ তপস্থপা। প্রশাম্যতে হমরাত ক্মাচছ, বুধবং বচনং মম ।। পতিব্রতায়া মাহাত্মালোকাচ্ছতি দিবাকর:। ততা চাফুদ্যাদ্ধানিমন্ত্যানাং ভবতাং তথা এ তক্ষাৎ পতিব্ৰভামতেরনস্থাং তপস্বিদীম্। প্রসাদয়ত বৈ পত্নীং ভানোক্রদয়কাম্যয়া 🛭 পুত্ৰ উবাচ। ৈতঃ সা প্রসাদিতা গত্বা প্রাহেষ্টং ক্রিয়তামিতি। অযাচস্ত দিনং দেবা ভবত্বিতি যথা পুরা 🛭 অনহয়োবাচ। পতিব্ৰতায়া মাহাত্ম্যং ন হীয়েত কথন্থিতি। স্থান্য তথাৎ তাং সাধ্বীমহঃ প্রকাম্যহং স্কুরাঃ॥ ষ্থা পুনরহোরাত্রসংস্থানমুপজায়তে। যথাচ তভাঃ খপতিন সাধ্বা। নাশমেষাতি॥ পুত্ৰ উবাচ। এবস্কু। স্থরাংগুভা গড়া সা মন্দিরং গুভা। উবাচ কুশলং পৃষ্টা ধর্ম্মং ভর্ত গুথামূন: 🛭 অনুহয়োবাচ। किछन्निमि कन्यानि चक्क मूर्यमर्गना । क किको बिन दि दि उने में अपन्य का निकः शिकः शिकः ভর্ত্তশ্রবাদেব ময়া প্রাপ্তং মহৎ কলম্। नर्सकामफनावाश्चा श्रज्ञाहाः পরিবর্তিতাः॥ **পঞ্জানি মহুব্যেণ সাধিব দেয়ানি সর্বাদা।** তথাত্মবর্ণধর্মেণ কর্ত্তব্যোধনসঞ্চয়ঃ॥ প্রাপ্তস্থার্থতঃ পাত্রে বিনিযোজ্য বিধানতঃ। मञ्जाब्दवरुभागोदनद्वश्चायुटका ভবেৎ मना ॥ ক্রিয়াশ্চ শান্তনির্দ্দিষ্টা রাগবেষবিবর্জিকতাঃ। কর্তব্যা অবহং শ্রদ্ধাপুরস্কারে**ণ শক্তিতঃ** ॥

আছাতিৰিহিতানেব লোকানাপ্ৰোতি যানবঃ।
ক্লেশেন মহতা গাধিব প্ৰাঞ্চাণত্যাদিকান্ ক্ৰমাণ
জ্বিয়েবং সময়ত নৱৈছ্ থাজ্ঞিতত বৈ।
পুণ্যতাৰ্দ্ধাণহাবিণ্যঃ পতিগুক্ষবইব হি ॥
ছাতি জীণাং পুথপ্ৰজোন প্ৰাছং নাপাণোষিত্য
ভৰ্তু গুক্ষবইবইৰতান্ লোকানিষ্টান্ ব্ৰজন্তি হি ॥
তত্মাৎ মাধিব মহাভাগে পতিগুক্ষবণং প্ৰতি।
ছবা মতিঃ স্লা কাৰ্য্যা মতো ভৰ্ত্তা প্ৰা গতিঃ ॥
বদ্দেৰেভাগ যাত পিত্তাগতেতাঃ

ক্র্বান্ত ক্রান্ত ক্র্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত ক্রান্ত নির্দ্ধি ক্রেন্স নির্দ্ধিত ক্রেন্স নির্দ্ধিত ক্রেন্স ক্র

ভজাত্তহনং শ্রুদ্ধা প্রতিপূলা তথাদরাং।
প্রভাবাচাত্ত্রিপল্লীং তামসূস্যামিদং বচঃ ।
ধজাত্মান্থ্যহীতাত্মি দেবৈশ্চাপাবলোকিতা।
বন্মে প্রকৃতিকল্যানি শ্রুদ্ধার বর্দ্ধার প্রকৃতিকল্যানি শ্রুদ্ধার বর্দ্ধার প্রকৃতিকল্যানি শ্রুদ্ধার বর্দ্ধার প্রকৃতিকল্যানিং কাচিৎ পতিসমা গতিঃ।
তৎপ্রীতিশ্চোপকারায় ইহ লোকে পরত্র ৮॥
পতিপ্রসাদানিহ চ প্রেত্য হৈব যশস্থিনি।
নারী স্থপমবাপ্রোতি নার্ধ্য ভর্তা হি দেবতা॥
সা ত্বং ক্রিষ্ট্রাভাগে প্রপ্রায়ামম মন্দিরম্।
আর্ধ্যারা যন্মন্না কার্যাং তথার্গোনাপি বা ওতে।

এতে দেবাঃ সহেকেণ মামুপাগমা ছঃখি ডাঃ।
তথাকা।পাল্পসংক্ষদিননকংনিরূপণাঃ॥
বাচল্ডেইনিশাসংস্থাং যথাবদিবিধি ডিডাম্।
ভাষ্য তদর্থমারাতা শৃণ্ চৈত্রচো মম॥
দিনাভাবাৎ সমস্তানামভাবো যাগকর্মণাম্।
তদভাবাৎ স্ববঃ পৃষ্টিং নোপরান্তি তপরিনি॥
অক্টেশ্চৰ সমুছেদাহছেদঃ স্ক্রিশ্পাম্।
তহুছেদোদনার্ট্যা জগহছেদেমেয়াতি॥
তৎ স্বিজ্ঞিন চেদেত্র জগহুর্কু গুলাপদঃ।
প্রাধি সাধিব লোকানাং প্রবিষ্বর্ত্রাং রবিঃ।

অনহয়োবাচ।

আক্রণাবাচ। মাওধ্বান মহাভাগে শপ্তেণ ভর্তা মনেখরঃ। সুর্ব্যোদয়ে বিনাশং জং প্রাপ্যাসীত্যভিমস্থানা॥ স্মনসুরোবাচ।

ষদি বা বোচতে ভজে ততত্ত্বদ্বনাদ্হম্। করে।মি পুর্ববদেহং ভর্তারঞ্চ নবং তব ॥ মরা হি সর্বাণ দ্রীণাং মাহাস্থাং বর্বার্ণি। পতির্ভানামারাধানিতি সন্মানরামি তে ॥
পুত্র উবাচ।
তথেতাকে তরা স্থামাজ্হার তপন্থিনী।
অনস্রার্থাম্বামা দশরাত্রে তলা নিশি ॥
তত্তো বিবলান্ ভগবান্ ফুরণলারণাকৃতি:।
শৈবরাজানমূল্যমারুবোহোরুমগুলা:॥
সমনস্তর্মেবালা ভর্তা প্রাইণ্রাযুক্তাত।
পপাত চ মহীপৃষ্টে শতস্কং জগ্রে চ চা।॥

অনস্ধোবাচ। ভদ্রে কর্ত্তবাঃ পশ্র

ন বিষাণন্ত্যা ভলে কর্ত্ববাং পশ্চ সে বলন্।
পতি ভাইৰমাবাধাং তপসং কিং চিরেপ তে ॥
যথা ভর্ত্ত সমং নাজমপশ্চং পুরুষং কচিং।
রূপতঃ শীলতো বৃদ্ধা বাল্লাধূর্যাদিভূষণৈ: ॥
তেন সত্যেন বিপ্রোহয়ং ব্যাধিমুক্তঃ পুনর্বা।
প্রাপ্লোচু জীবিতং ভার্যাসহারঃ শরদাং শতন্ ॥
যথা ভর্ত্তনং নাজমহং পশ্চামিঃ দৈবতন্।
তেন সভ্যেন বিপ্রোহয়ং পুনজ্জীবভনাময়ঃ ॥
কর্মণা মনসা বাচা ভর্ত্রারাধনং প্রতি।
যথা মমোদ্যমো নিতাং তথায়ং জীবতাং বিজঃ

পুত্র উবাচ।
ততো বিপ্র: সম্ততো ব্যাধিম্ক: পুনর্থা।
সভাভিভানয়ন্ বেশা বৃন্দারক: ইবাজ্ব:॥
ততোহপত্ত প্রসাবষ্টিকবিবাদ্যাদিনিস্বন:।

ততোহপতৎ পূস্পর্ষ্টিকেববাদ্যাদিনিখন:। শেভিবে চ মুদং দেবা অনস্থামধাক্রবন্॥ দেবা উচ্:।

বরং র্ণীল কল্যানি দেবকার্ব্যং মহৎ ক্রন্তম্। দ্যা ধন্মাং ভত্তো দেবা ব্রদাত্তে তপ্সিনি॥ জ্ঞানস্কোবাচ।

যদি দেবাঃ প্রদার মে পিতামহপুরোগমাঃ।
বরদা বরযোগ্যা চ ষদাহং ভবভাং মতা ॥
তদ্যান্ত মম প্রভং ব্রহ্মবিক্মহেশরাঃ।
যোগক প্রাপ্নুমাং ভর্তৃদহিতা ক্লেশসুকরে ॥
এবমবিতি তাং দেবা ব্রহ্মবিক্সিবাদয়ঃ।
প্রোক্য কর্ম্ম্যান্ত তপ্রিনীম্॥

ইতি মার্কভেরে মহাপ্রাণে শিভাপুর-সংবাদে অনস্মাবরপ্রাপ্তিন্ম বোড়শোহগারে:।

#### সপ্তদশোহধ্যায়ঃ।

----

#### পুদ্র উবাচ।

তত: কালে বছতিথে বিতীয়ো ত্রহাণ: সূত:। পভার্যাণ ভগবানত্রিরনস্যামপশুত। ঋতুলাতাং স্কার্কলীং লোভনীয়োভমাকৃতিম্। সকামো মনসা ভেজে স মুনিন্তামনিনিতাম্॥ ভন্তাভিধ্যারভন্তার বিকারো যোহরজায়ত। তমেবোবাহ প্রনম্ভিরশ্চোর্ক্ষ বেগবান্॥ ব্ৰহ্মপঞ্ শুক্লাভং প্ৰমানং সমস্ততং। নোমরূপং রজোপেতং দিশস্তং জগৃত্দিশ। স সোমো মানসো জজে তস্তামতে: প্রজাপতে: পুত্র: সমস্তদ্রানামাযুরাধার এব চ।। তুষ্টেন বিফুনা জজে দতাতেয়ো মহামানা। স্বশরীরাৎ সমুৎপাদ্য সর্বোদ্রিজ্যে বিজোত্তমঃ ॥ দতাত্রেয়ঃ ইতি ধ্যাতঃ দোহনস্মান্তনং পণে।। বিফুরেবাবতীর্ণোহসৌ বিতীয়োহতেঃ স্লভোহতবং সপ্তাহাৎ প্রচাতো মাতুরদরাৎ কুপিতো যতঃ। হৈহয়েক্ত মুপাবৃত্তমপরাধ্যক্তম্॥ पृष्ठे रिको कूलिङ: मरना नक्ष कामः म रेश्हमम्। গ্ৰহাসমহায়াসহ:খাম্বসম্বিতঃ ॥ হুর্বাসাম্ভমসোদ্রিকো রুদ্রাংশঃ সমজায়ত। ইতি পুত্রহয়ং তভা জভে বেকোশবৈঞ্বম্। সোমো ব্রহ্মাভব্দিফুর্দ্তাবেয়ো ব্যক্ষায়ত:। ত্র্বাসাঃ শহরো জজে বরদানাদিবৌকসাম্॥ সোমঃ পরশ্বিভিঃ শীতেক্ষীক্ষোষ্ধিমানবান্। আপ্যায়মন সদা স্বর্গে বর্ত্ততে স প্রজাপতি:॥ मखारकाः काकाः भाषि क्षेरेमकानिवर्गाए। শিষ্টামুগ্রহক্ষতেতি জেরশ্চাংশঃ স বৈফবঃ ॥ নির্দ্দহতাবমন্তারং ছ্র্মাসা ভগবানজঃ। রৌদ্রং সমাশ্রিতা বপুরু ভূমনোবাগ্ভিক্ষত:।। সোমত্বং ভগবানত্রি: পুনশ্চক্রে প্রজাপতি:। দতাতেয়োহিপি বিষয়ান্যোগছো বুভুজে হরি: ত্র্বাদাঃ পিতরং হিছা মাতরঞোত্তমং ব্রতম্। উন্মতাধ্যং সমাপ্রিত্য পরিবল্রাম মেদিনীম্॥ মুনিপুত্রবৃতো যোগী দতাতেয়োহ্প্যসঙ্গিত।ম্। অভীপামান: সর্সি নিম্মজ্জ চিরং প্রভু:॥ তথাপি ডং মহাম্মানমতীবপ্রিয়দর্শনম। ততাজুর্ন কুমারাজে সরুদতীর্মাঞ্রিতা: ॥

দিবো বর্ষণতে পূর্ণে ধলা তে ল তাজতি তম্। তৎপ্রীন্তা। সরস্ভীরং শর্কে মুনিকুমারকাঃ ॥ ততো দিবাাম্বরধরাং চারুপীননিতবিনীম্। নারীমানার কন্যানীমৃততার জনায়্নিঃ ॥ স্ত্রীসন্ধিক্রবান্বনাতে পরিত্যক্ষান্তি মামিতি। মুনিপুত্রান্ততোহস্পী হাজামীতি বিচিত্তরন্ ॥ তথাপি তং মুনিস্তা ন ত্যক্তি যদা মুনিম্। ততঃ সহ তয়া নার্যা মদ্যপানমথাপিবৎ ॥ স্বরাপানরতং তে ন সভার্যাং তত্যক্ততঃ। গীতবাদ্যাদিবনিতাভোগসংস্পৃদ্ধিতম্। মন্ত্রমানা মহাম্মানং পীতাসবস্বিক্রম্ ॥ নার্যাপ নেবং যোগীশো বারুণীং স্ পিবর্পি। অস্তাব্যারিবেশা ক্রেপিতরিশা বস্ত্রির ॥ স্বাং পিবন্ সপত্নীকন্তপত্তেপে স বোগবিং। যোগীখরন্টিস্তামানো যোগিভিক্ ভিক্লাজ্কিভিত্তিত

ইতি মার্কণ্ডেমে মহাপুবাণে পিতাপুত্র সংবাদে দত্তাতেয়োৎপতিনাম সপ্তদশো২গাসঃ।

# অফ্টাদশোহধ্যায়ঃ।

------

পুত্ৰ উবাচ।

কশুচিত্বপ কালশু কুত্বীর্যাাত্মজোহর্জুনঃ। কুত্রীর্য্যে দিবং যাতে মক্সিভিঃ সপুরোহিতৈঃ পৌরৈশ্চাত্মাভিষেকার্থং সমাহুতোহ্এবীদিদম नाहर तांकार कतियामि मलिएगा नत्रकांखतम् যদর্থং গৃহুতে গুল্কং তদনিস্পাদয়ন্ বুধা॥ পণ্যানাং বাদশং ভাগং ভূপালায় বণিগ্রুনঃ দ্রার্থরক্ষিভির্মার্গে রক্ষিতো যাতি দস্থাতঃ॥ গোপাশ্চ মৃতভক্রাদে: ষড্ভাগশ্চ ক্ষীবলা: দ্বাক্তন্ত্ৰে দহাৰ্ঘদি ভাগং ততোহধিকম্। পণ্যাদীনামশেষাণাং বণিজো গৃহতস্ততঃ। ইষ্টাপুর্তবিনাশায় তদ্রাজ্ঞদেচীরদর্শ্বিণঃ॥ यहारेनाः পাণ্যতে লোকস্তৰ্ত্যস্তরসংশ্রিতঃ গ্হুতো বলিষড়ভাগং নৃপতেন্রকো ঞ্বেম্॥ নিরপিতমিদং রাজঃ পৃর্কেরকণবেতনম্। **चत्रकः (म्होत्रज्यम्होर्य)ः ज्यानत्मा नृभर**जर्ज्यदः তত্মাদ্যদি ভপত্তপ্ৰ প্ৰাক্ষ্যে যোগিছমীপিত ভুব: পালনসামর্থ্যকুক্ত একে। মহীপতিঃ ॥

পৃথিব্যাং শৃষধুবাঞ্চত্বহমেবর্দ্ধিসংযুতঃ। ততো ভবিষ্যে নাত্মানং করিব্যে পাপভাগিনম্। পুত্র উবাচ।

ভক্ত ভারক্ষং জ্ঞাণা মন্ত্রিমধ্যে ছিভোইএবীং।
গর্গো নাম মহাবৃদ্ধিম্নিশ্রেটো ব্যোহভিগ: ॥
বদ্যেবং কর্তৃকামস্থং রাজ্যং সমাক্ প্রশাসিভূম্।
ভতঃ শৃণ্দ মে বাক্যং কুফল চ নৃপাত্মজ ॥
দভাত্রেয়ং মহাভাগং সহলোগীকুভাশ্রয়ম্।
ভমারাধ্য ভূপাল পাতি যো ভ্বনত্রমম্।
বোগযুকং মহাভাগং সর্বত্র সমদর্শিনম্।
বিকোরংশং জগভাত্রবতীর্ণং মহীভলে ॥
যমারাধ্য সহলাক্ষঃ প্রোপ্রবান্ পদমাত্মনঃ।
হতং ভ্রাত্মভিদৈতিভার্জ্যান চ দিতেঃ স্থভান্॥
ভক্ত্ন উবাচ।

কথমারাধিতো দেবৈর্দ্ধভাতের: প্রতাপবান্। কথকাপদতে: দৈতৈ।রিক্রতং প্রাপ বাদব:॥ গর্গ উবাচ।

দেবানাং দানবানাঞ্যুদ্ধাসীৎ স্থদারুণম্।
দৈত্যানামীখবো জডো দেবানাঞ্চ শচীপতিঃ॥
তেষাঞ্যুধ্যমানানাং দিব্যঃ সম্বংসবো গতঃ।
ততো দেবাঃ পরাভূতা দৈত্যা বিজয়িনোহ্ভবন্
বিপ্রচিভিমুবৈর্দেবা দানবৈতে পরাজ্তাঃ।
পলায়নকতোৎসাহা নিকংসাহা দ্বিজ্জয়ে॥
বৃহস্পতিমুপাগম্য দৈতাদৈসভ্যবংপ্রবঃ।
অমন্ত্রম্ভ সহিতা বালিধিলোত্তথ্যিভিঃ॥

বৃহস্পতিক্বাচ।
দত্তাকেয়ং মহাস্থান্মকে: পুত্ৰং তপোধনম্।
বিক্তাচয়ৰং ভক্তা সকোব্যিত্মহঁথ ॥
স বো দৈতাবিনাশায় বয়দো দাভতে বয়ম্।
ততো হনিষ্যধ সুধা সহিতা দৈত্যদান্বান্ ॥

গর্গ উবাদ।
ইত্যুক্তাত্তে তদা লগ্যু দ্বভাত্তেরাশ্রমং স্থরাঃ।
দদ্ওক্ত মহাপ্রানং তং তে লক্ষ্যা সম্বিত্ম ॥
উদগীন্ধনানং গন্ধকৈ: স্থরাপানরতং মৃনিম্।
তে তন্ত গন্ধা প্রপতিমবদন্ সাধ্যসাধনম্ ॥
চকু: তবকোপলা কুর্তক্যভোলা প্রগাধিকম্।
তিইন্তমন্তিইন্তি বাত্তং বান্তি দিবৌকসঃ।
আরাধ্যামান্ত্রখংহিতাতিইন্তমাসনে ॥
স্প্রাহ্ প্রপতান্ দেবান্ দ্বাত্তেরঃ কিমিষাতে।
মত্যে ভবত্তিব্নেরং কুক্রমা ক্রিয়তে সম্।

त्वा छेट्ः।

मानदेवम् निर्माकृत कछाटेमाङ् ज्वानिकम्।

श्वादः देवलाकामाळमा क्रान्डां क्षान्यः ।

ज्वाद क्रान्द्रिः पः निर्वादामा त्वादेनच्।

प्रथानामजीन्तामः भूनः श्वाद्यः विनिष्ठेनम् ॥

मजीव्यत्र छेवातः।

मनामण्डारकार्रुक्तिः ।

मनामण्डारकार्रुक्तिः । देवनारः श्विष्ठिस्यः।

মদ্যাদক্তোহ্যম্ছিটো ন চৈবাহং জিতে ক্রিয়:। কথমিছেপ মত্তোহণি দেবা: শক্তপরাভবম্॥ দেবা উচু:।

জনঘত্তং জগন্নাথ ন লেপত্তৰ বিদ্যতে। বিদ্যাক্ষাদনশুদ্ধান্তনিবিষ্টজ্ঞানদীধিতে॥ দত্তাকেয়ে উবাচ।

সত্যমেতৎ ক্রা বিদ্যা মমাজি স্থদশিন:।
অভান্ত যোথিত: সক্ষাদহমূজ্ছিউতাং গত:॥
জীসভোগে। হি দোষায় সাতভ্যেনাপদেবিত:।
এবমূকান্ততো দেবা: পুনর্কচনমক্রবন্॥
দেবা উচু:।

অনবেয়ং বিজ্ঞান্ত জগনাতান ত্ৰাতে। যথাংভ্ৰমালা স্থাক্ত বিজ্ঞত্তালস্থিনী॥ গৰ্গ উৰাচ।

এবমুক্ত স্ততো দেবৈর্দ্ধ তাতে রোহ ব্রী দিনম্।
প্রহল্য তিনশান্ দর্জান্য দেয়ত স্তবতাং মতম্॥
তদাহ্যা হ্রান্দর্পান্য ক্রায় স্থরসভ্যা:।
ইহানয়ত মদৃষ্টিগোচরং মা বিলম্বত॥
নদৃষ্টিপাত হত তৃক্প শীণবলতে লস:।
বেন নাশমশেষাতে প্রয়ান্তি মম দর্শনাং॥
গর্ম উবাচ।

তত্ত তছচনং প্রাথা দেবৈবদৈত্যা মহাবলা:।
আহবার সমাত্ত তা জ্যা দেবগণান্ করা।
তে হত্তমানা দৈতেরৈদেবাং শীঅং ভরাত্রা:।
দ তাত্তেরাপ্রমং জ্যাঃ সমেতাঃ শরণার্থিন:।
তমের বিবিভর্দৈত্যাঃ কালরজ্যে দিবৌকস:।
দল্ভক মহাত্মানং দত্তাত্তেরং মহাবলম্।
বামপার্যভিতামিন্তামেশ্যজ্পতাং ভূজান্।
ভার্যাঞ্চান্ত স্কার্মলীং ললীমিন্নিভাননাম্।
নীলোৎপলাজনরনাং পীনপ্রাণিপ্রোধরাম্।
গান্তীং মধুরাং ভাষাং স্কর্বিবিদিল্বিগ্রুতাম্।
তে তাং দৃই।গাতো বৈত্যাঃ নাভিলাবা মনোভব্ম
ন শেক্কভ্রং বৈর্যাক্ষন্যা বোদুমাত্রাঃ।
ত্যজ্যা দেবান্ বিষং তাত হেন্ত্রামা হতোজসঃ

তেন গাণেন মৃত্তঃ সংস্কান্তে ততেইকুবন্॥
শীরত্মতৎ তৈলোক্যে সারং নো যদি বৈ ভবেৎ
কৃতকু গান্ততঃ সর্ক ইতি নো ভাবিতং মনঃ ॥
তমাৎ সর্কে সম্ৎক্ষিণ্য শিবিকায়াং স্থরার্দনাং।
আবোপ্য স্বমধিষ্ঠানং নয়াম ইতি নিশ্চিতাঃ॥
গর্গ উবাচ।

সাহরাগান্তততে তু প্রোকৃ। চেখং পরস্পরম্।
তত্ত তাং যোবিতং সাধ্বীং সম্পক্ষিপ্য স্মরাদিতাঃ
শিবিকাষাং সমারোপ্য সহিতা দৈত্যদানবাঃ।
শিবঃস্থ শিবিকাং কথা স্থানাভিম্থং যয়ঃ॥
দত্তাত্বেয়ন্ততো দেবান্ বিহত্তেদমধাত্রবীৎ।
দিট্ট্যা বৰ্দ্ধথ দৈত্যানামেষা লন্ধীঃ শিবোগতা।
সপ্ত স্থানাস্তিকান্ধা নরম্ভুম্বৈষ্তি॥

দেবা উচ্:।
কথরস জগরাথ কেব্ স্থানেখবস্থিতা।
পূক্ষত ফলং কিংবা প্রবাহত তাথ নখাতি ॥
দতাতের উবাচ।

नृंगाः পদে शिष्ठा नक्षीर्मिनमः मुख्यम्बर्छि । সক্থোশ্চ সংস্থিতা বস্ত্রং তথা নানাবিধং বস্থু॥ কলঅঞ্ গুহুদংস্থা ক্রোড়স্থাপত্যদায়িনী। মনোরথান্ পুরয়তি পুরুষাণাং হৃদি স্ভা ॥ লক্ষীলক্ষীবভাং শ্ৰেষ্ঠা কণ্ঠস্থা কণ্ঠভূষণম্। অভীষ্টবন্ধদার্বৈশ্চ তথাপ্লেষং প্রবাসিভিঃ॥ স্ত্রীসুবাক্যলাবণ্যমাজ্ঞামবিত্থাং তথা। भूथनः 🗷 के विषक्ष चष्ठ्जु निधिन छव। ॥ শিরোগতা সম্ভাজতি ততোহক্তং যাতি চাশ্রবম্। **নে**য়ং শিরোগতা চৈতান্পরিত্যক্তি সাম্প্তম্ প্রগৃহাল্লাণি বধ্যস্তাং তত্মাদেতে স্থরারয়:। ন ভেতব্যং ভূশকৈতে ময়া নিস্তেজ্য: কুতাঃ। পরদরোবমর্বাচ্চ দক্ষপুণ্য। হতে।জনঃ॥ ভভত্তে বিবিটেগরক্তৈর্বব্যমানাঃ স্করারয়:। মুর্কি, লক্ষ্যা সমাক্রাস্তাবিনেওরিতি নঃ শ্রুতম্॥ লন্ধীশ্চোৎপদ্ধা সম্প্রাপ্তা দতাতেরং মহামুনিম। छ यमाना ऋटेबः मटेक्टिक्छानामासूनाविटेखः ॥ व्यनिभका करका त्मवा मकारकयः मनीविनम्। नाक पृष्ठे मञ्जारा वर्षा पृक्तः गडबदाः ॥ তথা प्रमि बारकद्य यतीक्दिन घरथिकाउम्। প্রাপ্রমেখর্থামজুলং ভূর্ণারাধ্য়ত্ব তম্ ॥ रेजि मार्करश्रद महाभूतात गर्गताकाः

नामाडीमर्माश्यायः ॥

ঊনবিংশোহধ্যায়ঃ।

-:+:-

পুত্ৰ উবাচ।

ইত্যেকেরিনং শ্রুণা কার্ত্বীর্ব্যো নরেশর:।
দত্তাকেরাশ্রমং গড়া তং ভক্ত্যা সমপুক্ষং ॥
পাদসংখাহনাদ্যেন মধ্বাদ্যাহরণেন চ।
অক্চন্দনাদিগরাধুফলাদ্যানরনেন চ।
তথারসাধনৈত্ত উচ্ছিইাপোহনেন চ।
পরিত্টো ম্নিভূ পং তম্বাচ তথৈব স:॥
যথৈবোকা: প্রা দেবা মদ্যভোগাদিক্ৎসনম্।
ত্রী চেমং মন পার্যস্তেভিত্তোগাচচ ক্ৎণিভ্মু॥
সদৈবাহং ন মামেবমুপ্রোক; ড্মার্হিন।
অশক মুপ্কারায় শক্তমারাধ্যুম্ম ভো:॥

পুত্ৰ উবাচ।

एडिनवम्राकां म्निनां ख्रषां शर्शवह कर । প্রভাবাচ প্রণমৈদনং কার্ত্তবীর্যাই ক্রতদা ॥

# অৰ্জুন উবাচ।

কিং নাং নোহয়েলে দেব খাং মায়াং সম্পাশ্রিতঃ
অন্তব্য তথৈবেয়ং দেবী সর্প্রভবার বিঃ ॥
ইত্যুক্তঃ প্রীতিমান্ দেবস্তত্তং প্রত্যাচ হ ।
কার্ত্রবীর্দাং মহাভাগং বশীকুতমহীতল্ম ॥
বরং বৃণীত্ব প্রজ্ঞান বহা ব্যাদ্য মম পাথিব ॥
বেচ মাং পৃজ্রিষান্তি গদ্ধমালাদিভির্নাঃ ।
নাংসমদ্যোপহারেশ্চ মিষ্টানৈশ্চাল্ডাসংষ্টতঃ ॥
লক্ষ্মানের ইমর্বীণাবেণ্শুআদিভিস্তা ॥
বেটার্দ্মবাত্র হি প্রদারধনাদিকম্ ।
প্রদান্তা গ্রহাত বিষ্টান্য মন্ত্রাম্ ।
প্রদান্তা গ্রহাত বিষ্টান্য মন্ত্রাম্ ॥
সংবর্ষ ভল্পতে ব্রং যন্ত্রনাং ॥
কার্ত্রবীর্ঘ্য উবাচ ।

যদি দেব প্রসার্থ তৎ প্রয়ন্ত্রিম্ভ্রাম্।
যরা প্রকাঃ পালরেংহং ন চাধর্মবাপুরাম্
পরান্ত্রমবংশ জানমপ্রতিব্লুতাং রলে।
সহস্রমাধুমিজামি বাহুনাং লঘুতাগুণ্ম্।
জনসা গতরা সক্ত শৈলাকাশাস্ত্মিষ্।
গাতালেষ্চ সংক্ষ্রেধ্যাগাধিকালবাং ॥

তথোন্মার্গপ্রস্বাস্থ চান্ত সন্মার্গদেশক:।
সন্ধ মেহতিধর: শ্লাবা বিভদানে ভথাকরে।
অনষ্ট্রস্বাতা রাষ্ট্রেমমাফুদ্মরণেন চ।
দ্বি ভ্ ক্রিশ্রমৈথান্ত নিত্যমথাভিচারিণী ॥
দন্তাজের উথাচ।

যক্র তে কীন্তিভাঃ সর্ক্ষেতান্ বরান্ সমধাশ্যাসি। মংপ্রসাদাচ্চ ভবিভা চক্রবর্তী ঘ্নীবরঃ ॥ পুক্র উবাচ।

প্রণিপতা ততন্তমৈ দভাতোরার গোহর্জুনঃ। আনায়া প্রকৃতী: সমাগভিষেকমগৃহত । আঘোষয়ামাস তদা খিতো রাজ্যে স হৈহয়:। দতাতেরাৎ পরামৃদ্ধিমবাপ্যাতিবলাবিত:। অদাপ্রভৃতি যঃ শল্পং মামুতেহজো গৃহীয়াতি। হস্তব্য: স ময়া দফ্য: পর্হিংসারতোহপি বা ॥ ইত্যাজপ্তে न ভদ্রাষ্ট্রে কশ্চিদাযুণধৃঙ্নর:। ভম্তে পুরুষব্যাত্রং বভূবোরুপরাক্রমম্॥ স এব আমপালোহভূৎ পশুপাল: স এব চ। ক্ষেত্রপাল: স এবাসীদ্বিভাতীনাঞ্চ রক্ষিতা। তপদ্মিনাং পালয়িতা সার্থপাল্ভ সোহভবৎ। দস্মাব্যালাগ্নিশস্ত্রাদিতমেঘকৌ নিমজ্জতাম্॥ অতাস্থ চৈব মগানামাপৎস্থ পরবীরহা। স এব সংশ্বতঃ সদ্যঃ সমুদ্ধতি।ভবলুণাম্॥ অনষ্টদ্রব্যতা চাদীৎ তিম্মন শাসতি পার্থিবে। তেনেষ্টং বছভির্যট্ডাঃ সমাপ্রবরদক্ষিণৈঃ ॥ তেনৈৰ চ তপন্তপ্তং সংগ্ৰামেম্বতিচেষ্টিতম্। **ভ**দার্দ্ধিয়তিমানঞ্ দৃষ্টা প্রাহালিরা মূনি:॥ न नृतः कः खंबीयामा गिजिः योगाखि পोर्थियाः। যহৈ জদানৈ স্তপোভিকা সংগ্রামে চাতিচেটিতৈ:। म्डाब्बियामित्न यश्चिन् म व्यानिक्रिः नत्त्रभतः। ত বিংস্ত স্থিন দিনে যাগং দভাতে যুদ্য দোহকরোৎ ত এব **চ প্রজা: সর্কান্ত**িষয়ংনি ভূপতে:। তন্তৰিং প্ৰমাং দৃষ্ট্ৰ যাগং চকু: সমাধিনা ৪ ইত্যেতৎ ভক্ত মাহাম্মাং দন্তালেয়ন্ত ধীমত:। বিফোশ্চরাচরগুরোরনত্ত মহাত্মন:॥ ध्यावृक्षांवाः भूतार्गवृ कथारक भारेक धविनः। चनदर्जाथायत्रत्र मध्यक्रत्रत्राहरू: ह এতভ্র পরমং ক্লপং যশ্চিত্তয়তি মানবং। স স্থা স চ সংসারাৎ সমৃতীর্থাহচিরান্তবেৎ n गरेमव देवकवानाक जल्हाहः क्षमरलाश्चि (लाः। हैए डावर यद्य देव बाहरूर कथर नाम्यद्यक्रकाः ॥

অধশত বিনাশার বর্ণাচারার্থিবে চ।
অনাদিনিধনো দেবঃ করোভি ছিভিপালনম্ ॥
তথৈব জন্ম চাধ্যাতমলর্কং কথরামি তে।
তথা চ যোগঃ কথিতো দভাতেরেণ তত্ত বৈ।
পিতৃতকত রাল্ধেরল্কত মহাপ্রনঃ ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে দ্বুাজেনীরং প্রকরণং নামোনবিংশোহ্যারঃ ॥

# বিংশোহধ্যায়ঃ।

----

পুত্ৰ উবাচ।

প্রাগ্রভূব মহাবীর্য্য: শক্রজিরাম পার্থিবঃ। তুতোষ যক্ত যজেষু দোমাবাপ্তা। পুরন্দর: ॥ তভাত্মকো মহাবীর্যো বভুবারিবিদাবশ:। वृक्षिविक्रमणावरेगार्श्वक्रमकाशिष्टिः नमः ॥ न नमानवरत्रावृद्धिनविक्तगरहिष्टेकः। নৃপপুত্রো নৃপস্টতর্নিভাষাত্তে সমার্ভঃ॥ কদাচিচ্ছান্ত্রসম্ভারবিবেককৃত নিচ্ছর:। কদাচিৎ কাব্যসংলাপগীতন।টক্সস্তবৈ:॥ তবৈথবাক্ষবিনোদৈশ্চ শক্তান্তবিনরেষু চ। যোগ্যানিযুদ্ধনাগাখন্তদানভ্যাসতৎপরঃ॥ রেমে নরেরপুলোহসৌ নরেক্সতনবৈঃ সহ यरेथव हि निवा उद्याखाविति मूना युष्टः ॥ তেষাম্ব ক্রীড়তাং তত্র বিষভূপবিশাং সূত্রা সমানবয়স: প্রীত্যা রস্কমায়াস্তানেকশ:॥ কন্তচিত্বপ কালন্ত নাগলোকাশহীতলম্। কুমারাবাগতো নাগে পুতাবখতরভ তু॥ वक्षक्र नथा जिल्ला कि कार्यों विकार में रही। তৌ তৈর্পস্থতৈঃ সার্ধ্ন তবৈধনাক্তৈ দিল্লা বিনোবৈধবিধিস্তম তত্ত্ব প্রীভিসংমুভৌ সর্বে চ তে নৃপস্থতান্তে চ ব্রন্থবিশাং স্থতাঃ नागवाकाणात्को एको ह श्रानमः बाह्मापिकम् वज्ञशक्काञ्चरयुकाः ठक्ञ्छाशक्षिकियाम् ॥ অহন্তহন্তপ্রাপ্তে তৌ চ নাগকুমারকৌ। আৰগাতুমুদা যুক্তো প্ৰীভ্যা স্নোৰ্মহীপতে স চ তাতাাং নুপস্তঃ পরং নির্মাণমাপ্তবান্ वितारिवर्विविरेवर्राष्ठमःनानाविष्ठित्वव ह ॥ বিনা তাভ্যাং ন বৃভুজে ন সমৌ ন পণৌ ম ন বরাম ন কথাহ পালাণ্যাত্মগুর্মে ॥

রসাতলে চ ভৌ রাত্রিং বিনা তেন মহান্মনা।
নিখাসপরমৌ নীখা জগ্মতুন্তং দিনে দিনে ॥
অথ কালেন মহতা পিতা পুত্রাবপূচ্ছত।
মঠ্যলোকে পরা প্রীতির্জবতোঃ কেন পুত্রকৌ॥
দৃষ্টো ন চাপি পাতালে বহুনি দিবসানি মে।
দবা রজস্তামেবোভৌ পশ্তামি প্রিরদর্শনৌ॥

পুর উবাচ। ইতি পিলা ময়ং পৃট্টো প্রনিপতা কতাঞ্লী। প্রত্যত্ম্হাভাগাব্রগাধিপতে: স্থতৌ ॥ পুলাবৃচতু:।

পুত্র: শক্রজিতন্তাত নামা থ্যাত খাতপ্রজ:।
ক্রপবানার্জ্রবিপেত: শ্রো মানী প্রিমংবদ: ।
অনাপৃষ্টকথো বাগ্মী বিধান নৈতো গুণাকর:।
নাত্রমানমিতা ধীমান শ্লীমান বিনয়ভূষণ: ॥
তত্তোপচারসভ্যীতিসভোগাপস্থত: মন:।
নাগলোকে ভূবো লোকে ন রভিং বিদ্তে পিত:।
তদ্বিয়োগেন ন ভাত ন পাতালঞ্জীতলম্।
প্রিভিপ্য তৎসন্ধানাহ্লাবায় রবিদ্বা॥

🚜 পিতোবাচ। श्रुद्धः श्नावर**ा ४**छः म यरेखवः ভविषेरेधः। পরোক্সভাপি গুণিভিঃ ক্রিয়তে গুণকীর্ত্তনম্॥ गिष्ठि भाजावित्माश्मीनाः मिष्ठ मूर्थ। स्वभौनिनः। শাল্পীলসমং মত্তে পুত্রৌ ধন্ততরন্ত তম্॥ যক্ত মিত্রগুণান্ মিত্রাণ্যমিতাশ্চ পরাক্রমন্। কথয়ন্তি দদা দংস্থ পুত্রবাংস্তেন বৈ পিতা॥ তভোপকারিণঃ কচিতত্ত্বস্ত্যামভিবাহ্নিতম। किश्वितालानिंदः य० हो। शतिराचीया (ठाउँमाः ॥ স ধরো জীবিতং তম্ম তম্ম জন্ম স্কান্ন:। যন্তার্থিনো ন বিমুখা মিতার্থোন চ ছর্বল:॥ अन्तर्रह यद ऋवर्गानि त्रञ्जः वाहनमाननम्। যচ্চাক্তৎ প্রীতমে তহ্ম তদ্দেয়মবিশক্ষা। ধিক্তভ জীবিতং পুংসো মিত্রাণামূপকারিণাম্। **প্রতিরূপম্কুর্বন্ধোজ**ীবামীতাবগছে**তি।** উপকারং স্থল্ভবর্গে যোহপকারণ শত্রুষ্। নুমেঘে। বর্ষতি আধাজ্ঞতভেচ্ছতি সদোরতিম্॥ পুতাবৃচতুঃ।

কিং তন্ত কৃতকৃত্যত কর্ত্বং শক্যেত কেনচিৎ।
যত্ত মর্কাবিনো গেছে দর্ককাটমঃ দদার্চিতাঃ ॥
যানি রম্নানি তদ্পেছে পাতালে তানি নঃ কৃতঃ।
বাহনাদন্যানানি ভূষণাস্তম্বরাণি চ॥

বিজ্ঞানং তজ যক্তান্তি তদক্তত ন বিদ্যুতে। প্ৰাক্তানামপ্যদৌ ভাত সৰ্বসন্দেহন্তৰ: ॥ একং তন্তান্তি কৰ্ত্বামসাধ্যং তচ্চ নৌ মতম্। হির্ণ্যগর্হগোবিকশ্ব(দীনীখ্রাদৃতে॥

#### পিতোবাচ।

তথাপি শ্রোভূমিছামি তক্ত যৎ কার্যামৃত্তমম্।
অসাধ্যমথবা সাধ্যং কিং বাসাধ্যং বিশশ্চিতাম্॥
দেবত্বমমরেশবং তৎপূজ্যত্বঞ্চ মানবাঃ।
প্রশান্তি বাছিতং বাক্তদ্ভং যে ব্যবসামিনঃ॥
ন:বিজ্ঞাতং ন চাগম্যং নাপ্রাপ্যং দিবি চেহ বা।
উদ্যতানাং মহুষ্যাপাং যতচিতেক্তিমান্সনাম্॥
যোলনানাং সহস্রাপিঃ বজন্ যাতি পিপীলিকঃ।
অগক্ষন্ বৈনতেয়োহপি পাদমেকং ন গছতি ॥
অযুক্রানাং মহুষ্যাপাং গ্রমাগ্রম্যং ন বিদ্যতে।
ক ভূতলং ক চ প্রোবং স্থানং যৎ প্রাপ্তবান্ প্রবঃ
উত্তানপাদন্পতেঃ প্রঃ সন্ ভূমিগোচরঃ॥
তৎ কথ্যতাং মহাভাগ কার্য্যান্ বেন প্রকৌ।
গ ভূপালস্কঃ গাধুর্বেনান্গ্যং ভবেত বাম্॥

### পুজাব্চতুঃ।

তেনাথ্যাতমিদং ভাত পূর্ববৃত্তং মহাত্মনা। কৌমারকে যথা ভক্ত বৃত্তং সদৃত্যশালিনঃ । তম্ব শক্রম্পিতং তাত পূর্বাং কণ্চিন্দিজোত্তমঃ। গালবোহভ্যাগমন্ধীমান্ গৃহীত্বা তুরগোত্তমম্ ॥ প্রত্যবাচ চ রাজানং সমুপেত্যাপ্রমং মম। কোহপি দৈত্যাধমো রাজন্ বিধ্বংসয়তি পাপকুৎ তত্তজ্পং সমাস্থায় সিংহেভবনচারিণাম্। অত্যেষাঞ্চালকায়ানামহর্নিশমকার্ণাৎ 🛭 সমাধিধ্যানযুক্তভ মৌনব্ৰতর্বভভ চ । তথা করোতি বিদ্নানি যথা চলতি মে মনঃ 🛚 एक: cकालाधिना महाः ममर्थयः वदः न छू। তুঃখাৰ্জিভন্ত তপ্ৰে। ব্যয়মিক্ছামি পাৰ্থিব॥ একদা তুমরা রাজরতিনির্বিপ্রচেত্সা। তৎক্লেশিতেন নিখাদো নিরীক্ষ্যান্থরমূজ্ঝিতঃ 🖟 ততোহ্যরভলাৎ স্লা: পতিতোহ্যং তুর্দ্ম: ১ বাক্চাশরীরিণী প্রাহ নরনাথ শৃণুম ভাম 🖟 অপ্রান্তঃ সকলং ভূমের্বলয়ং তুরগোন্তমঃ। সমর্থ: ক্রান্তমর্কেণ ভবাদং প্রজিপাদিত: ॥ পাতাল। মরতোরেযু ন চাদ্য বিহতা গতিঃ। সমন্তৰিকু ব্ৰুতো ন ভন্ন: পৰ্বতেষপি ॥

বতো ভ্বলয়ং সর্ক্মপ্রাছোহয়ং চরিবাতি।
আতঃ কুবলরো নারা ধ্যাতিং লোকে প্রলাসাতি।
ক্লিপ্রতাহর্নিশং পাপো মক্ত ছাং দানবাধমং।
তমপ্যেনং সমারুহু বিজপ্রেষ্ঠ হনিবাতি॥
শক্রনিমার ভূপালস্তস্য পুত্র ঝতধ্বয়ং।
প্রাপ্যেত্রমার দ্বক খ্যাতিমেতেন বাস্যতি॥
সোহহং ছাং সমন্ত্রাপ্রত্পসো বিদ্নকারিণম্।
তং নিবারয় ভূপাল ভাগভাঙ্ নুপতির্যতঃ॥
তদেতল্পরয়ং তে ময়া ভূপ নিবেদিতম্।
প্রমাজ্ঞাপয় তথা যথা ধর্মোন লুপ্যতে॥
স তস্য বচনালালা তং বৈ প্রমৃতধ্বয়ম্।
তমপরয়সারোপ্য কৃতকোভ্রমক্রম্।
অপ্রেময়র ধর্মালা গালবেন সমং তদা।
সামার্মপদং সোহপি তমালায় যথে। মুনিঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে বিংশোহধ্যায়:।

একবিংশোহধ্যায়ঃ।

--:0:--

পিতোবাচ।

গালবেন সমং ধ্বা নৃপপুজেণ তেন যং। কতং তৎ কথাতাং পুলৌ বিচিতা যুবয়োঃ কথা॥ পুলাবৃচতুঃ।

म গালবাশ্রমে রম্যে তিষ্ঠন্ ভূপালনলন:। সর্কবিল্লোপশ্যনং চকার ত্রহ্মবাদিনাম ॥ বীরং ফুবলয়াখং তং বসস্তং গালবা শ্রমে। মহাবলেপোপহতো নাজানাদানবাধম:॥ ততন্তং গালবং বিপ্রং সদ্বোপাসনতৎপরম্। শৌকরং রূপমান্থায় প্রধর্ষয়িতুমাগতম্॥ म् नि**लिटेवा प्ररचा ९ कुर्छिनी ख्रम**। कृञ्क ७१ व्याम् । অবধাৰদ্বাহং তং নৃপপুত্র: শরাসনী 🛚 व्यावनान ह बार्णन हक्काक्षीकाव्रवर्धन।। আক্লয় বলবচ্চাপং চাক্লচিত্রোপশোভিতম্॥ নারাচাভিহত: শীখ্রমাত্মতাণপরো মৃগঃ। গিরিপাদপসভাধাং সোহৰক্রামনাহাট্বীম্॥ তমন্বধাৰ্বদেৱেন জুন্নগোহসৌ মনোজ্ব:। চোদিতো রাজপুজেণ পিছুরাদেশকারিণা।। অতিক্রমাথ বেগেন যোলনানি সহস্রশ:। ধরণাং বিবৃত্তে পর্ত্তে নিপপাত লমুক্রম: ॥

**उज्ञानखत्रस्वा ७ (मारुशाची नृष्टा: ऋड:।** নিপপাত মহাগর্জে তিমিরৌষসমারতে ॥ ততো নাদুখত মুগ: স তব্দিনু রাজকুত্না। প্রকাশক স পাতালমণশ্রৎ তত্ত্র নাপি তম্ 🛚 ততোহপশ্ৰৎ স সৌবর্ণপ্রাসাদশভদকুলম্। পুরন্দরপুরপ্রথাং পুরং প্রাকারশোভিতম্॥ তৎ প্রবিশ্য স নাপশ্রৎ তত্ত্র কঞ্চিররং পুরে। ভ্ৰমতা চ তভো দৃষ্টা তল দোৰিং **খ**রাবিতা **স**্ সাপ্টাতেন তম্বলী প্রস্থিতাকেন কন্তরা। নোবাত কিঞ্ছিৎ প্রাসাদমারুরোছ চ ভাবিনী ॥ দোহপাখনেকতো বদ্ধা তামেবাকুসসার বৈ। বিস্বয়োংফুলনয়নো নিঃশক্ষোনুপতে: স্বত: ॥ ততে। ইপশ্ৰৎ স্থবিস্তীর্ণে পর্যাক্ষে সক্ষকাঞ্চনে। নিষয়াং কল্লকামেকাং কামযুক্তাং রভীমিব॥ বিস্পট্টেন্মুখীং স্কলং পীনশ্রোণিপদ্বোধরাম্। বিখাধরৌষ্ঠীং ত্রকীং নীলোৎপলবিলোচনাম্ রকতুঙ্গনধীং ভামাং মৃধীং ভামকরাজ্যি কাম্। করভোকং **স্**দশনাং নীলস্ক্ষ**ন্থিরালকা**ম্॥ তাং দৃষ্ট্র চারুসর্বাজীমনস্বাস্ত্রতামিব। নোহ্মভাৎ পাথিবিস্কৃতভাং রদা**তলদেবভা**ম্। সাচ দৃটে বৈ তং বালানী লকু ফিত সৃদ্ধি লম্। পীনোরুক্তরবাহং তমমংস্ত মদনং ভঙা ॥ উত্তেষ্টে মহাভাগা চিন্তকোত্তমবাপা সা। लब्बाविश्वय्रदेषञ्चानाः महास्वयौ वर्णः गडा ॥ कार्यः (परवा स्याप्ता वा शक्र स्वा

বোরগোহপি বা।
বিলাধবো বা সম্প্রাপ্ত: কৃতপুণারতির্নর: ॥
এবং বিচিন্তা বহুধা নিশস্ত চ মহীতলে।
উপবিশ্ত ততো ভেজে সা মৃদ্ধাং সদিবেক্ষণা ॥
সোহপি কামশরাঘাতমবাপা নুপতে: কৃতঃ।
তাং সমাখাসগ্রমান ন ভেতবামিতি ক্রবন্ ॥
সা চ জী না তলা দৃষ্টা পূর্কং তেন মহাক্মনা।
তালবৃত্তমুপানায় পর্যাধীক্ষদাক্ষ্মা ॥
সমাখাস্ত তলা পৃষ্টা ভেন নম্মানকারণম্।
কিঞ্জিলজাবিতা বালা স্ক্রে স্বৈধ্য ক্রবেদরং ॥
সা চামে কথ্যামান নৃপপ্তাম বিভ্রাং।
মোহন্ত কারণং স্ক্রি ভেল্লাক্ষ্মিক্রম্।
ব্ধা তয়া সমাধাতিং তক্তাক্কে ভাবিনী ॥
জ্যুবাচ।

বিখাবহুরিতি থাতে। দিবি গকর্মরাট্প্রচো।

ততেরমাত্মকা হুজুনীয়া খ্যাতা মদাশ্যা। वश्रक्ताः श्रुडाकार्या मानत्वाश्त्रिविमादनः। পাতালকেভূবিধাতিঃ পাতালান্তরদংশ্রঃ ॥ তেনেরমুদ্যানগতা কথা মারাং তমোময়ীম। অপহতা ময়া হীনা বালা নীতা হুৱায়ুনা॥ ষ্পাৰ্থা মন্ত্ৰাণ আমেৰ ক্ষাতি কিলা হয়:। স ভু নাইভি চার্বজী শুদ্রো বেদশ্রতীমিব॥ অতীতে চ দিনে বাণামাত্মব্যাপাদনোদ্যতাম। স্থরভি: প্রাহ নামং হাং প্রাপ্সাতে দানবাধম:॥ मर्खारमाकमञ्रक्षां थः य अनः (ছ० छट छ भटेतः। শ তে ভর্তা মহাভাগে অচিরেণ ভবিষাতি। অহখাতা: দ্ধী নামা কুণ্ডলেতি মন্ত্রিনী। মুড়া বিদ্বাৰতঃ পত্নী বীরপুষ্কর্মালিনঃ ন হতে ভর্তরি ওজেন তীর্থাৎ তীর্থমমুদ্রতা। চরামি দিবারা গভা। পরলোকার্থমূদ্যতা। পাতালকেতৃত্বীয়া বারাহং বপুরাস্থিত:। কেনাপি বিদ্ধো বাণেন মুনীনাং ত্রাণকারণাৎ ॥ তঞাহং ভবতোহবিষ্য প্ররিত। সমুপাগতা। সত্যমেব স কেনাপি তাড়িতো দানবাধম:॥ ইয়ঞ মুদ্রমিগমৎ কারণ যথ শৃনুস্ব তং। ष्वि खीलिमजी वाना पर्यनात्मव मानप ॥ ८ परभू ट्यां भरम ठाक्र वां का कि खन्मा नि । कार्या हामच विहिठा (यन विक: म मानव: ! এতসাৎ কারণামোহং মহাস্তমিয়মাগতা। यावक्कीवक उपनी इः धरमरवाभर जाकार । ত্বয়ক্ষা জনমং রাগি ভর্তা চাক্ষো ভবিষ্যতি। যাবজ্জীবমতো ছঃখং স্থরভ্যা নাক্তথা বচ: ॥ অহং বৃষ্ঠাঃ প্রভা প্রীত্যা হঃখিতার সমাগতা याजा विष्याया देनवाचि चम्योनिकामहायाः । যদ্যের।ভিনতং বীরং পতিমাপ্লোভি শোভনা। ভতত্তপত্তং কুর্য্যাং ির্বাণীকেন চেত্রসা॥ षड কো বা কিমৰ্থং বা সম্প্রাপ্তোহত মহামতে। **८मटना टेमटला स् शक्तर्यः भवनः किवारवार्शन** वा ন হজ মাছবগতিন চেদ্খামুবং বপুঃ। ভৰ্মাথ্যাহি ক্ৰিডং যথৈবাবিভণং মহা # क्रननाथ देवाह ।

ক্ৰলয়াৰ উৰাচ।
বন্যাং পৃচ্চলি ধৰ্মকে কথং কিং বা সমাগৃতঃ।
তচ্চ গুৰামলঞ্জে কথয়ামাদিভত্তৰ ॥
রাজঃ শক্তৰিতঃ পুত্ৰঃ পিত্ৰা সম্পেৰিতঃ ওতে।
মূনিরক্ষণমূদ্ধি গালবাশ্রমমাগৃতঃ॥

কুক্তে মন বক্ষাক মুনীনাং ধর্মচারিণাম্।
বিমর্থনাগতঃ কোহণি শৌকরং ক্রণমাহিতঃ ॥
নরা স বিছো বাণেন চল্লার্কাকারহর্চসা।
অপকাস্থোহতিবেগেন তমশ্বাস্থাতো হরী ॥
পপাত সহসা গর্জে স কোড়োহখন্দ মানকঃ।
সোহহমখং সনাক্রত্তমতেকঃ পরিল্লমন্ ॥
প্রকাশনাসাদিতবান্ দৃষ্টা চ ভবতী ময়া।
পৃষ্টমা চ ন নে কিঞ্জিবত্যা দত্মভ্রমন্ ॥
খাকৈবাস্প্রবিটোহস্মিনং প্রাসাদম্ভ্রমন্ ।
ইত্যেতৎ ক্বিতং স্তাং ন দেবে।হ্হং ন দানবঃ ॥
ন প্রগো ন গর্কাং কিমরো বা শুচিশ্বিতে।
সম্বোহিশ্বি বিশ্বা তে ন কর্ত্রাক্র কহিচিৎ ॥
প্রাবৃচ্তঃ ।

ততঃ প্রস্থা সা ক্রা স্থাবদনম্ভ্রম্।

ক্জাক্ডং বীক্ষাণা কিঞ্জোবাচ ভাবিনী ॥

সা স্থা পুনরপ্যোগং প্রস্থা প্রত্যাবাচ হ।

যথাবং কথিতং তেন স্বভ্যা বচনান্ত্রে॥

কুওলোবার।
বীর সত্যমসন্দির্ধং ভবভাভিহিতং বরঃ।
নান্যত্র হৃদয়স্থা দৃষ্ট্বা হৈর্য্যং প্রযাক্ততি ॥
চক্রমেবাধিকা কাস্তিঃ সম্পুতিজু রবিং প্রভা।
ভূতিধন্যং ধৃতিধীরং ক্ষান্তিরভোতি চোডমম্॥
স্থারতঃ বান্ধেহসন্দিদ্ধং স পাপো দানবাধমঃ।
স্থাতঃ সা গবাং মাতা কথং মিধাা বিদ্যাতি ॥
ভদ্ধন্যায়ং সভাগ্যা চ স্বংস্ক্রং সমেত্য বৈ।
কুক্স্ব বীর যৎ কার্য্যং বিধিটনৰ সমান্তিম্
শুক্রাবৃচ্তুঃ।

शवरानश्मिण्डाः वाकशृद्धः म छाः भिन्छः।

जाम्बरः कथः वानाः जित्यागामृत्ज विमाम्॥

मा मा वत्मम्क त्मणाः त्मवक्ताः व्यम्बरः।

जत्यज्ञात्कन (क्तेनव मम्प्रामादिकः जना॥

मा च जः जिख्यामाम क्ष्यूकः जिल्क्षाः क्षम् ।

मा च जः जिख्यामाम क्ष्यूकः जिल्क्षाः क्षम् ।

मा च जः जिख्यामाम क्ष्यूकः जिल्क्षाः क्षम् ।

मा च जः जिख्यामाम क्ष्युकः जिल्क्षाः विकासि क्ष्याः।

मा च जः जिख्यामाम क्ष्युकः ज्ञानिक विश्वाः।

स्वाना भावाः मच्योजाः क्ष्या विश्वाः।

देवाहिकविधिः कना। व्यज्ञिषाः विश्वान ।

मा च क्षाम्यमा क्षाः वानाः क्ष्यां विवान ।

मा च क्षाम्यमा मुद्राः च वानाः क्ष्यां विनीमः।

ভপত্তপে ২ংমত্লং নির্বালীকেন চেতদা।
-ভীপাপুধ্তপাপা চ ভবিত্তী নেদৃশী যথা ॥
ভঞ্চ রাজপুত্রং সা প্রশ্রমাবনতা তদা।
গত্তকামা নিম্পশীলেহবিক্লবভাবিণী ॥
কুগুলোবাচ।

পু ভিবপামিকপ্রজ্ঞ নোপদেশে। ভবদ্বিধে। ম তবাঃ কিমুৱ ছীভিরতো নোপদিশামি তে ॥ কিন্তুসাক্ষিত্রস্থাবিঃ স্নেহাকুটেন চেত্রা। ত্যা বিপ্রস্তিতা চাস্মি স্থারয়াম্যরিস্পন ॥ ভৰ্ত্তব্যা রক্ষিতব্যা চ ভার্যা হি পতিনা সদা। धर्मार्थकाममः मिटेशा खोषा। खर्ज्मवामिनी ॥ যদা ভার্ষা চ ভর্তা চ পরস্পরবশারুগৌ। তদা ধৰ্মাৰ্থকামানাং ভ্ৰমাণাম্পি সভ্তম্। कशर ভাर्यनामृत्व धन्त्रमर्थः वा भूक्षः श्राटा। প্রাপ্রোভি কামমধ্বা ত্স্যাং ত্রিভন্নাহিত্য ্ ॥ ভবৈৰ ভৰ্তারমূতে ভাৰ্য্য ধৰ্মাদিসাধনে। ন সমর্থা ত্রিবর্গোহয়ং দাম্পতাং সমুপা শ্রিতঃ॥ **কেবভাপিতৃত্তা।ণাম্ভিণীনাঞ্পুজনম্।** ন পুংভিঃ শকাতে কর্মতে ভার্যাং নৃপাত্মজ। প্রাপ্তোহণি চার্থো নমুকৈবানীতোহণি নিজংগৃহম্ ক্ষমেতি বিনা ভার্যাঃ কুভার্যাসংশ্রয়েহপি বা কামস্ত ভদ্য নৈবান্তি প্রভাকেণে।প্রক্তে। দম্পত্যোঃ সহধর্ষেণ ত্রীধর্ষমবাপ্রাৎ॥ পিতন্ প্তৈন্ত থৈবাল্লসাধনৈর তিথীন্ নরঃ। পুজাভিরমবাংস্তদ্ধ সাঞ্জীং ভার্যাং নবোহবতি ॥ ষ্কিয়াশ্চাপি নিনা ভর্তা ধর্মকামার্থসম্ভতিঃ। নৈব ভক্ষাৎ ত্রিবর্গোহয়ং দাম্পতামধিগচ্ছতি॥ এতরায়োক্তং যুৰ্যোগিছামি চ্যথেপিত্যু। ৰদ্ধ অমনমা সাদিং ধনপ্তস্থায়্যা। পুলাব্চতু:।

ইত্তি কা পরিষক্ষা অসথীং তং নমসা চ।
জগাম দিবালা গত্যা যথাভিগেতনাথান: ॥
সোহিবি শক্ষিক: পুল্ঞাগারোণা ত্রঙ্গন্য।
নিগ্রকাম: পাতালাবিজ্ঞাতো দহুসভবৈ: ॥
তহন্তে: সহুনোকুইং দ্রিরতে দ্রিগতেহতি বৈ।
কন্তারদ্ধানীতং দিবং পাতালকেছুনা ॥
তহুং পরিঘনিস্তিংশগদাশ্লশরামুধন্।
দানবানাং বলং প্রাপ্তং সহু পাতালকেছুনা ॥
তিই ভিঠেতি জ্বাস্ততে তথা দানবার্থা:।
শরবর্ধস্তা শ্লৈক্বর্দ্পানক্ষনম্॥

স্চ শক্ৰভিঃ পুদ্ৰস্থাণ্ডিৰীৰ্যাবান। তিচ্ছেদ শবজালেন প্রাহসন্ত্রিব লীলয়া।। কণেন পাত¦লতলমসিশিকৃ।ইশিংগ্ৰৈক:। **छिटेतः मञ्ज्ञमञ्ज्ञम्हभ्यक्रम्टतार्कटेतः** ॥ ততোহস্বং ডাষ্ট্রমানায় চিক্ষেপ প্রতি দানবান্। তেন তে দানবাঃ সর্বে সহ পাতালকেতুনা॥ জালামালাভিতীত্রেণ ফ্রছিছিচয়া: কুডা:। নির্দ্ধাঃ কাপিলং তেজঃ স্মাসাল্যের সাগরা: ॥ ততঃ স রাজপুলোহখী নিহত্যাস্থরসভ্যান্। স্ত্রীরত্বেন সমং তেন স্মাগচ্ছং পিতৃঃ পুরুম॥ প্রাণিপতা চ তৎ সর্বং স তু পিতে ক্লবেদয়ং। পাতালগমনকৈব কুওলায়াশ্চ দর্শনম্॥ ভৰ্মদাল্যাপ্ৰাপ্তিং দান্ট্ৰশ্চাপি সঙ্গরম্। বধ্ধ তেষামন্ত্রেশ পুনরাগমনং তথা।। ইতি শ্রুষা পিতা ওক্ত চবিতং চারুচেত্রস:। প্রীতিমানভবচেচদং পরিষঞ্চাহ চাতাল্স্ ॥ সংপালেণ জ্যা পুল তাবিতোহ্ছং মহাত্মনা। ভ্রেছ্যে মুনয়ন্ত্রাতা মেন সন্ধর্মচারিণ: ॥ মংপৃথৈরিঃ থাতিমানীতং মনা বিস্তারিতং পুনঃ পরাক্রমণতা বীর হয়া তম্বলীকুতম। যহুপাত্তং যশ: পিতা ধনং বীৰ্য্যমথাপি বা। তর হাপয়তে যম্ম স নরো মধ্যম: শ্বভঃ ॥ তথীর্যাদ্ধিকং যস্ত পুনরস্তৎ স্বশক্তিতঃ। নিস্পাৰ্য়তি ভং প্রাঞ্জা: প্রবদ্ধি নবোত্তমম ॥ যঃ পিতা সম্পাতানি ধনবীৰ্ঘ্যশাংশি কৈ। ন্যতাং নয়তি প্রা**জাতমাতঃ পুরুষা**রম্ম ॥ তন্মা আহ্মণতাণং কুত্যাদীদ্যথা হয়া। পাতালগমনং যচচ যচচাত্রবিনাশনম্। এতদপাধিকং বৎস তেন ত্বং পুরুষোত্তমঃ॥ তদ্ধতোহত্তথ বাল ত্মহমেব গুণাধিকম্। ছাং পুল্মীদৃশং ঞাপ্য খ্লাঘাঃ পুণ্যবভামপি।। न्त्र शृह्यकुठाः खीठिः मरत्र खार्शान्ति मानवः। পুরেণ নাতিশয়িতো यः প্রজাদানবিক্রমৈ:॥ ধিগ্জনা তহা যঃ পিতা লোকে বিজায়তে নর:। য: পুল্লাৎ খ্যাতিষভ্যেতি তত্ত জন্ম স্কন্মন:॥ জালুন। জারতে ধকো মধ্য: পিতৃপিভানহৈ:। মাতপক্ষেণ মাআ চ ধ্যাতিমেতি নরাধন: ॥ তৎ পুদ্ৰ ধনবীৰ্টে) স্বং বিবৰ্দ্ধস্ব স্থাধন চ। গৰক্তিনয়া চেৰং মা হয়া বৈ বিষ্ক্যতান্ ॥ हे जि शिखा वह विधः विषय मुकः भूनः भूनः।

পরিষ্ক্য অমাবাসং সভাব্যঃ স বিস্ক্তিভঃ ॥
স তথা ভার্যায়া সাদ্ধিং রেমে ভন্ন পিতৃঃ পুরে।
অস্তেষ্ চ তথোন্যানবনপর্বতসামূর্॥
অঞাখন্তরয়োঃ পাদৌ প্রাণিপত্য চ সা ভূভা।
প্রাতঃ প্রাত্ততত্তেন সহ রেমে সুমধ্যমা॥

ইতি মার্কভেরে মহাপুরাণে কুবলয়াখীয়ে মদালসাপরিণ্যনং নামৈক-বিংশোহধাায়ঃ।

দ্বাবিংশোহধ্যায়ঃ।

-----

পুদ্রাবৃচজুঃ।

ততঃ কালে বছভিথে গতে রাজা পুন: স্বতম্। প্ৰাহ গচ্ছাত বিপ্ৰাণাং ত্ৰাণায় চব মেদিনীম্॥ ष्यभाष्य न भाक्ष श्री कः श्री किंग्लि मिरन । ष्यतांशं विषयू भागांगाय हेता गटेनव हि। ছ্রু ভা: সভ্তি শতশো দানবাঃ পাপ্যোনয়ঃ । তেভ্যোন ভাদ্যপা বাধা মুমীনাং पং তথা ক্র স মথোক্তভঃ পিতা তথা চকে নৃপায়জঃ। পরিক্রমা মহীং সর্বাং ববলে চরণৌ পিডু: ॥ অহ্তহন্ত্রপাথে পুর্মাহে নৃপনন্দনঃ। তভদ্য শেষং দিবসং তয়া বেমে স্থাধারা। একদা তু চরন্ সোহথ দদর্শ যম্নাতটে। পাভালকেতোরহুজং তালকেতৃং কুতাপ্রমন্॥ মারাবী দানবঃ সেহিধ মুনিরূপং সমাস্থিত:। স প্রাহ রাজপুলং ডং পূর্ববৈরময় সরন্ দ त्राष्ट्रभुद्ध वरोमि षाः ७९ क्रू व यही क्रिमि । ন চ তে প্রার্থনাভঙ্গ: কার্য্য: সত্যপ্রভিশ্রব॥ यक्ता यक्तन धर्याय कर्खवार्गम उत्पष्टियः। চিত্ৰস্তত্ত্ৰ কৰ্ত্তবাৰ নাস্তি মে দক্ষিণা বতঃ॥ ভাত: প্রথমহ মে বীর হিরণ্যার্থং অভ্বণম্। বদেতৎ কণ্ঠলগ্নং ভে রক্ষ চেমং মমাশ্রমম্॥ বাবদস্তর্জনে দেবং বরুণং যাদসাং পতিন্। বৈদিকৈর্বাক্তবশ্বক্তৈঃ প্রজানাং পৃষ্টিছেতৃকৈঃ ॥ অভিটুর জরাষ্জঃ সমভ্যেমীতি বাদিনস্। কং অধন্য হত: আনাং স তকৈ কণ্ঠভূৰণম্॥ व्यः इ टेहनर क्रथान् यां कृ निर्वामी दिन ए इसी। স্বাভাষি তাৰদহৈত্ৰ ত্ৰাশ্ৰমসমীপতঃ ॥ ত্ৰাংদশাকাহাভাগ বাৰ্দাগমনং তৰ।

ন তেহত কশ্চিলাবাধাং করিবাতি মরি হিতে। বিশ্রকশ্চাথরন্ অন্ধন্ কুরুৰ জং মনোগতম্॥ পুতাব্চছুঃ।

এবমুক্ততত্ত্বেন স মমজ্জ নদীক্ষলে।
ররক্ষ সোহপি তইছাব মাধাবিহিতমাশ্রম্ ॥
গত্বা জলাশ্রাৎ তথাৎ তালকেতৃশ্চ তৎপরম্।
মদালসারা: প্রতাক্ষনোষ্ট্রতভূক্তবান্॥
তালকেতৃক্বচি।

বীরঃ ক্বলয়াশেহসৌ মমাশ্রমসমীপতঃ।
কেনাপি সৃষ্টদৈত্যেন ক্র্ন্ রক্ষাং তপন্থিনাম্॥
স্ধ্যমানো যথাপকি নিম্ন্ রক্ষান্থিরে যুধি।
মাঘামাশ্রিত্য পাপেন ভিরঃ শ্লেন বক্ষসি॥
গ্রিয়মানেন তেনেদং দতঃ মে কণ্ঠভ্যপম্।
প্রাপিত-চারিসংঘোগং স বনে শ্রুতাগগৈনঃ॥
কুতার্ত্রেমাশন্দো বৈ রক্তঃ সাঞ্জ্বিলোচনঃ।
নীতঃ সোহশ্বন টেই রক্তকারিপা।
যদ্রান্ত্রং কুত্রকারিপা।
যদ্রান্ত্রং কুত্রকারিপা।
হদ্যাখাসনকৈত্ন্গৃত্যাং কণ্ঠভ্যণম্।
নালাকং হি স্বর্ণেন কুত্রমন্তি তপন্নিম্॥
প্রাবৃচ্তুঃ।

ইত্তে হ'ংস্জা ভল্ডেনী স জগাম যথাগভন্। নিপপাত জন: সোহ্থ শোকার্ডো মৃচ্ছ গ্লিতুর: ম তৎক্ষণাৎ চেত্ৰনাং প্ৰাপ্যে সৰ্ব্বান্তা নূপযোষিতঃ বাজপত্না•চ রাজা স বিলেপুরভিছঃথিতাঃ॥ মদালস। তুতদৃষ্ঠা তদীয়ং কঠভূষণম্। তত্যালাও প্রিয়ান্ প্রাণান্ শ্রুতা চ নিহতং পতিম্ ততত্ত্বপা মহাক্রন: পৌরাণাং ভবনে । যগৈৰ তম্ভ নুপতেঃ স্বগেছে সমৰ্বৰ্তত ॥ রাজা চ তাং মৃতাং দৃষ্টা বিনা ভর্ত্তা মদালসাম্ প্রভাবাচ জনং দর্কা বিষ্ধা স্থস্মানসঃ॥ ন বোদিতবাং পশ্চামি ভবভামাত্মনন্তথা। সর্বেধানের সঞ্জি জা সম্ধানামনিতাভাষ্ ॥ কিং হু শোচামি তনয়ং কিং হু শোচামাহং সু্ধাম্ বিম্ধা কৃতকৃতাভাশতেখণোচ্যাব্ভাবণি ॥ মচ্ছু শ্ৰম্পাৰচনাদ্বিজ্বক্ষণ্ডৎপর:। প্রাথ্যে মে যা হুছো মৃত্যুং কথা শোচ্যা স ধীমভাম্॥

অবঞাং যাতি যদেহং তদ্বিকানাং কৃতে বদি। মম পুত্ৰেণ সন্তঃজং নৰভাগদকাবি তৎ॥ ইয়ঞ্চ সংক্লোংশরা ভর্ত্যোবমস্বতা।
কথং স্থাপোচ্যা নারীশাং ভর্ত্তর্নার দৈবতম্।
অসাকং বাদ্ধবানাঞ্চ তথানোষাং দরাবতাম্।
পোচ্যা হেখা ভবেদেবং যদি ভর্তা বিষোগিনী।
যা তু ভর্ত্তর্মং শ্রুতা তংক্ষণাদেব ভাবিনী।
ভর্তারমস্থাতেরং ন পোচাাতো বিপশ্চিতাম্।
তাঃ শোচ্যা যা বিয়োগিন্যে। ন শোচ্যা যা
মৃতাং সহ।

ভর্বিরোগন্ধন্যা নার্ভ্তঃ কৃতজন্ম।
দাতারং সর্বদৌধ্যানামিহ চাম্ত্র চোভরোঃ।
লোকরোঃ কা হি ভর্তারং নারী মন্যেত মার্ষম্ নাসৌ শোচ্যো ন চৈবেরং নাহং জজ্জননী ন চ।
ভাজভা ত্রাহ্মণার্ধার প্রাণান্ সর্বে আ ভারিভাঃ।
বিপ্রাণাং মম ধর্মস্ত গতঃ স হি মহামতিঃ।
আন্গামর্কভ্কস্ত ভাগান্দেহস্ত মে স্কুতঃ॥
মাতৃঃ সভীত্বং মহংশবৈমলাং শোর্যমাত্মনা।
সংগ্রামে সম্ভাজৎ প্রাণান্ নাত্যজন্ধি জবক্ষনে॥

পুত্রাবৃচ্ছ:। ভতঃ কুবলরাপজ মাতা ভর্রনস্তবম্। শ্বা প্রবাধ তাদৃক্ প্রাহ দৃষ্ট্য ভূ তং পতিম্ মাডোবাচ।

ন মে মাকা ন মে স্বস্রা প্রাপ্তা প্রতিন্ পেদৃশী।
ক্রম্বা ম্নিপরিকানে হতং প্রং যথা ময়া॥
শোচতাং বারবানাং বে নিশ্বসন্তেঃহতিছংথিতাঃ
ব্রিয়ন্তে ব্যাধিনা ক্লিটাতেবাং মাতা ব্থাপ্রজা॥
সংগ্রামে যুধ্যমানা যেহভীতা গোদ্ধিজরক্ষণে।
ক্রা শক্রৈবিপদ্যন্তে ত এব ভ্বি মানবাঃ॥
অথিনাং মিত্রবর্গন্ত বিদ্ধিংক প্রায়্থয়্।
যোন যাতি পিতা তেন প্রী মাতা চ বীরক্ং॥
গর্ভক্রেশঃ ক্রিরো মন্যে সাফ্ল্যং ভলতে তদা।
যাবিবিজয়ী বা ভাৎ সংগ্রামে বা হতঃ ক্রতঃ॥
প্রাবৃচ্তঃ।

ততঃ স রাজা সংস্কারং পুত্রপত্নীমলন্তরং।
নির্গম্য চ বহিঃ স্বাতো দদৌ পুত্রার চোলকম্ ।
তালকেতৃশ্চ নির্গম্য তথৈব মম্নান্ধলাং।
রাজপুত্রম্বাচেদং প্রণয়ার্ধুরং বচঃ॥
গক্ষ ভূপালপুত্র সংক্রতার্থেছিহং কৃতস্থা।
কার্বাং চিরাভিল্যিতঃ স্ব্যাত্রবিচলে স্থিতে॥
বারণং যজকার্যাঞ্চ জলেশক্ত মহারানঃ।
তম্বা সাধিতং স্ক্রি ব্রমানীদ্ভীপিত্র ॥

প্রণিপত্য স তং প্রারাজ্যাজপুত্র: পুরং পিতৃ:।
সমাকৃষ্ঠ তমেবাখং স্থপগানিলবিক্রমন্॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে কুবলরাখীরে মদালসাবিরোগো নাম
ঘাবিংশোহধ্যায়:।

**जर**शाविः (भाश्यागः।

--:\*:--

পুত্রাবৃচ্ছঃ।

স রাজপুত্র: সম্প্রাপ্য বেগাদাত্মপুরং ভত:। शिर्द्धार्विवनिष्युः शांदनो निमृक्ष् मनानगाम्॥ ममर्भ कनम्बिशमध्यक्षष्ठेम्थः भूतः। পুনশ্চ বিশ্বিভাকারং প্রস্তুবদনং ততঃ ॥ অঅস্ৎফুলনয়নং দিষ্টা। দিষ্টোভিবাদিনম। পরিষজ্ঞ মত্যোক্তমতিকৌতৃহ্লাবিতম ॥ চিরং জীবোরকল্যাণ হতাত্তে পরিপন্থিন:। পিৰোঃ প্ৰহলাদয় মনন্তথাস্বাক্মক্তকম॥ हेटजावःवामिण्डिः ८भोटेतः भूतः भूटर्छ ह मःबुष्ठः , তৎক্ষণপ্ৰভ্বানন্দঃ প্ৰবিবেশ পিছুগৃহিম্॥ পিতা ह जः পরিষক্ষ্য মাতা होत्ता ह वासवाः। চিরং জীবেতি কল্যাণীর্দত্তকৈ তদাশিষঃ ॥ প্রণিপত্য ততঃ দোহথ কিমেতদিতি বিশ্বিতঃ। পপ্রচ্ছ পিতরং তাত সোহকৈ সম্যক্ তহ্জবান্॥ স ভার্য্যাং তাং মৃতাং শ্রন্থা জনমেষ্টাং মদালসাম্। **लि**ज्दरो ह भूदरा मृष्ट्री नड्डाटमाका किमधाराः॥ চিন্ত্রামাস সাবালামাং শ্রুতানিধনং গ্রুম। ততাজি জীবিতং সাধবী ধিঙ্মাং নিষ্রমানসম্॥ नृ भः रमार्था । इस विना छाः मृगत्मा हनाम् म९कृट्ड निभनः श्रांशाः यञ्जीदांगाडिनियु नः ॥ পুন: স চিত্তরামাদ পরিসংভভা মানসম। মোহোদগমমপাকাভ মিশ্বকোচ্ছ ভাতুর:॥ মৃতেতি সামরিমিতং ত্যজামি যদি জীবিতম। কিং ময়োপকুতং তহাঃ প্লাঘ্যমেতভূ বোষিভাষ্ यनि द्यानिमि वा भीटना हा व्याद्या वनन् मूहः। ত্থাপ্যস্লাঘ্যমেত্রো বরং হি পুরুষা: বিংল ॥ जय (लाकबाड़ा होनः यका होता मनाविजः। বিপক্ষত ভবিষামি ভতঃ পরিভবাম্পদম ॥ মরারিশাতনং কার্যাৎরাজঃ ওঞাষণং পিতৃ:। জীবিতং তম্ম চায়ত্তং সম্ভাব্যং তৎ কৰং ময়। ॥

কিন্তুর নত্তে কঠবান্ত্যাগো ভোগত যোষিতঃ।
স চাপি নোপকারার ত্যপ্যাঃ কিন্তু সর্কণা ।
ময়। নৃশংতং কঠবাং নোপকার্য্যপকারি চ।
যা মদর্থেইত্যুক্ত প্রোণাংক্তদর্থেইর মিদং মম ॥

পুতাবৃচড়:।

ইতি কুতা মতিং সোহথ নিস্থানোদকদানিকম্ ক্রিয়াশ্চানস্তরং কুতা প্রত্যুবাচ গুতুহবেজঃ॥

খাতধ্বজ্ঞ উবাচ।

যদি সা মম তথকী ন ভাঙাধা মদালসা।
তালিন্ জন্মনি নাভা মে ভবিত্রী সহচারিলী॥
তাম্তে মৃগশাবাকীং গর্ককেনমানহম্।
ন ভোক্ষে ধোষিতং কাঞ্চিদিউসতাং ময়োদিতম্
সভ্র্মিচাবিলীং পত্নীং তাং মুক্রা গলগামিনীম্।
কাঞ্চিনাকীক্রিয়ামীতোতং সতাং ময়োদিতম্
পুলাব্চতৃঃ।

পরিতাজা চ দ্বীভোগান্ তাত সর্বাংজয়া বিনা।
ক্রীড়লাজে সমং ভূলৈব্রিত্তঃ শীলসম্পদা ॥
এত তক্ত পরং কার্যাং তাত তৎ কেন শক্যতে।
কর্পুসভার্থল্পাপামীষ্টরঃ কিম্তেত্টিরঃ ॥
দ্বুড় উবচি।

ইতি বাক্যং তয়ো: শ্রুছা বিমর্থমগনৎ পিতা। বিমূষ্য চাহ তৌ পুজৌ নাগরাট্ প্রহদন্ধিব ॥

নাগরাড়খতর উবাচ।

যদাশকানিতি জ্ঞাড়া ন করিষান্তি মানবাঃ।
কর্মনামম্দ্যোগহালা হানিস্ততঃ পরম্ ।
আবহেত নর: কর্ম খংশীর্বমহাপ্যন্।
নিশান্তিঃ কর্মণো দৈবে শৌক্ষম চ বাবস্থিতা ।
তথাদহং তথা যত্নং করিষো পুলকাবিতঃ।
তপশ্চ্যাং সমাধার যথৈতৎ সাধাতেচিরাৎ ॥

জভ উবাচ।

জগভাতী মহং দেবী মারিরাধরিবৃ: ও ভাম্। ত্যোষ্যে প্রথম্য শিরসা প্রজ্বোদিং সর্বতীম্। সদসদেবি বৎ কিঞ্জিলাক্ষরচার্থবৎ পদম্। ও২ সর্বং ত্রাসংযোগং খোগবদেবি সংস্থিতম্। অম্কুত্রং পরং দেবি যত্ত স্বং প্রতিষ্ঠিতম্।

অক্ররং প্রমং দেবি সংস্থিতং প্রমাণুব্ধ 🛭 অকরং পরমং একা বিশ্ববৈশ্বতৎ করাত্মকম। দারুণ্যবৃহিতো বৃহিতো মাশ্চ প্রমাণ্ব: 🛭 তথা দ্বি স্বিতং ব্ৰহ্ম জগচেদমশেষতঃ। জোংকারাকরসংস্থানং যভু দেবি স্থিরান্থিরম্ ॥ তত্র মাত্রাত্রয়ং সর্ব্বমন্তি ৰদেবি নান্তিচ। जरता लाकाश्वरता द्वारेखिवारः शावकवात्रम ॥ ত্রীণি ক্যোতীংষি বর্ণাশ্চ ত্রেরো ধর্মাগমস্তথা। जरमा खनाजमः मनाजरमा द्वारा अभाज्याः । তার: কাণাস্তথাবস্থা: পিতরোহ্ছনিশাদর:। এতনা রাত্ররং দেবি তব রূপং সরস্বতি॥ বিভিন্মদর্শিনামাদ্যা ব্রহ্মণো হি স্নাত্নাঃ। নোমসংস্থা হবিঃসংস্থাঃ পাকসংস্থাশ্চ সপ্ত যা: # তাম্বচ্চারণ!দেবি ক্রিয়ত্তে ব্রহ্মবাদিভি:। **ज**निर्फ्नः उथा ठांग्रनक्षमां वांबिङः भव्रम । ष्यविकोर्गाक्षत्रः निवाः পরিণামবিবজ্জিভম। তবৈতৎ পরমং রূপং যন্ন শক্যং মধ্যে দিছুমু। ন চাত্তেন চ তজিহ্বাতাবোঠাদিভিক্চাতে ৷ ইক্রোহপি বসবো ব্রহ্মা চন্দ্রাকৌ ক্যোভিরেই চ বিখাবাদং বিশ্বরূপং বিশ্বেশং পর্মেশ্বরুম্ 🛭 সাংখ্যবেদান্তবাদো<del>তেং বছশাধান্তিরীকুতম্।</del> ष्यन। पिमधानिधनः **मुप्तमः माप्त्य यए ॥** একস্থনেকং নালোকং ভবভেদসমাঞ্জিম্। अनाबार राष्ट्र १८१८ वर्गा वर्गा वर्गा वर्गा है। नानामिकिमछ। दम्बर मिक्टिव खिवर शत्रम्। স্থাস্থং মহাদ্যোগারপং দ্যি বিভাবাতে ॥ **এবং দেবি फन्ना व्याश्वः मकनः निकृत्क यूर।** অবৈতাবস্থিত: ত্রন্ধ যচচ বৈতে ব্যবস্থিতস্ঞ বৈহৰ্ণা নিভাগ যে বিনশ্ৰন্তি চাল্ডে যে বা সুল। যে চ হৃদ্মতিহৃদ্ধাঃ। বে বা ভূমৌ বেহস্তরীক্ষেহস্ততো বা তেষাং তেষাং **তত্ত** এবোপল্**রিঃ** ॥ यकामूर्डः यक मूर्तः नमखः যথা ভূতেখেকমেকঞ কিঞিৎ। যদিব্য**তি স্নাতলে ধেহক্ততো বা** ष्रमञ्जर ष्रयदेवर्ग**अ**टेनम्ह ॥ এবং खडा उना रम्बी वि**रकार्किस्ता मन्नप**डी । প্রতাবাচ মহাত্মানং নাগমখভরং ভত: 🕆 সরমভাবার।

বরং তে কম্বভাত: প্রেবজ্যমূরগাধিপ।

ভত্চাতাং প্রদাভামি বৎ তে মন্সি বর্ততে।

জাখতর উবাচ।

সহারং দেহি দেবি ত্থ পূর্কং ক্রণমেব মে।
সমস্তব্যসম্ক্রভ্রো: সম্প্রত্তি।

সপ্ত শরা প্রামন্থা: সপ্ত প্রগদত্ম।
গীতকানি চ সহিথব তাবতী শ্চাপি মৃচ্ছ না: ॥
তালাকৈ কোনপ্রধাশৎ তথা গ্রামত্ত্রক হং।
এতৎ সর্কাং ভবান গাতা কম্মশত তথান্য ॥
জাতদে মৎপ্রসাদেন ভ্রুগেক্সাপরং তথা।
চতুর্বিধং পদং তালং ত্রিপ্রকারং লয়ত্রম্ম ॥
যতিএরং তথা তোলাং ময়া দত্তং চতুর্বিধ্ম।
এতত্ত্বান্ মৎপ্রসাদাৎ প্রগেক্সাপরক হৎ ॥
অভাত্তর্গতিমায়তাং স্বরব্যঞ্জনস্মিতম্।
তদশেষং ময়া দত্তং ভবতং কম্মলত্ত ॥
তথা নাক্তত্ত্বাকে পাতালে চাপি প্রগ।
প্রণেতাকৌ ভবস্তো চ সর্বস্তাত্ত ভবিষ্তা:।
গাতালে দেবলোকে চ ভ্রেকি ক্রেব প্রগা॥

🕶 ড় উবাচ। ইত্যকুৰ সাতদা দেবী সর্কজিহবা সরস্ভী। कर्गामामर्भनः मामा नागक कमालकर्गा॥ তমোশ্চ তদ্বধাবৃত্তং ভ্রাতোঃ দর্কমঞ্চারত। বিজ্ঞানমুভয়োরগ্রাং পদতাল্ভরাদিকম্॥ ভত: কৈলাদলৈলেক্ত্রশিবরস্থিরম্। গীতকৈ: সপ্তভিনাগৌ তন্ত্ৰীলয়দম্বিতৌ ॥ আবরাধরিষু দেবমনকাকহরং হরম্। প্রচক্রতঃ পরং যতুমুভৌ সংহত্রাকলৌ। প্রতিনিশারাং মধাাত্র সন্ধারোশ্চাপি তৎপরে।। তয়ো: কালেন মহতা ভুষমানো ব্যধ্বজ:। তুতোষ গীভবৈজে চ প্রাইহশো গৃহতাং বর: ॥ ততঃ প্রেণম্যাখতরঃ কম্বলেন সম্থ তদা। ব্যজ্ঞাপয়নুহাদেবং শিতিকঠমুমাণতিম্॥ यकि तो छशवान् खीरा दिवरक्विताहनः। ততো यथा ভिन्विष्ठः वत्र स्मनः क्षेयष्ट् (नो ॥ মৃতা কুৰলয়াখন্ত পত্নী দেব মদালদা। তেনৈৰ বয়সা সদ্যো ছহিত্বং প্ৰয়াতু মে 🛭 ষাতিশ্বরা যথা পূর্বং তৰ্ৎকান্তিসময়িতা। যোগিনী যোগমাতা চ মদ্গেহে জায়তাং ভব 🗈

মহাদেব উবাচ।

যথোকং পরগলের সর্বমেতভবিষ্যতি।

শ্রাদ্ধে তু সমমূপ্রাপ্তে মধ্যমং পিওমান্মন।। ভক্ষরেপ: ফণিশ্রেষ্ঠ গুচি: প্রস্তমানস:॥ ভ ক্তিত ভূ ততন্ত্ৰিন্ভবতো মধ্যমাৎ ফণাৎ ॥ সম্ৎপৎসাতি কল্যাণী তথাকপা বধা মৃতা। কামঞ্মেমভিধার কুরু ত্বং পিভৃত্তর্পণম্। তৎকণাদেব সা হৃত্র: খদতো মধ্যমাৎ ফণাৎ। সম্ংপংস্যতি কল্যাণী তথারপা ধথা মৃতা ॥ এতচ্ছা তততো তু প্রণিপত্য মহেশরম্। রদাতলং পুনঃ প্রাপ্তো পরিভোষসম্বিতে। ॥ তথা চ ব্ৰুতবান আছেং স নাগঃ ক্ষুণামূজঃ। পিওঞ্চ মধ্যমং তত্বদ্যথাবত্বপভুক্তবান ॥ ভঞাপি ধারিত: কামং ভতঃ দা ভহুমধ্যমা। জজে নিখসত: সৃদ্য জলেশ। মধ্যমাৎ ফণাৎ॥ ন চাপি কথয়াযা**স কন্তচিৎ স ভুজজম:।** অন্তর্গ হৈ তাং স্থানতীং দ্বীভিগু প্রামধারমৎ ॥ তৌ চাহদিনমাগদা পুরৌ নাগপতেঃ স্থম্। ঋতধ্বজেন সহিতৌ চিক্রীড়াতে হ্মরাবিব 🛭 একদা তু স্থতৌ श्राह नागतात्वा प्रावितः। যন্মাপুর্বম্জত ক্রিয়তে কিংন তৎ তথা। স রাজপুত্রে। যুবয়োজপকারী মমাস্তিকম্। কস্মাল।নীয়তে বংসাব্পকারায় মানদঃ॥ এবমুকৌ ততহেন পিতা লেহৰতা তু তৌ। গতা ভক্ত পুরং স্থারেমাতে তেন ধীমতা॥ ততঃ কুবলয়াখং তৌক্তা কিঞ্চিং কথান্তরমূ। ষ্মক্রতাং প্রণয়োপেতং স্বগেছগমনং প্রতি ॥ তাবাহ নৃপপুজোহসৌ নবিদং ভবতোগৃহিম্। ধনবাহনবজাদি যন্দীয়ং তদেব বাম্ ॥ যতুবাং বাঞ্ছিভং দাভুং ধনং রত্নমথাপি বা। ভদীয়তাং হিজন্মতৌ যদি বাং প্রণয়োময়ি॥ এতাবভাহং দৈবেন বঞ্চিভোহন্মি গুরাত্মনা। যন্তবন্তাং মমন্তং নো মনীয়ে ক্রিয়তে গৃহে॥ যদি বাং মৎপ্রিয়ং কার্য্যমন্ত্রাভোছদি বাং বদি। তদ্বে মম গেছে চ মম্বম্কর্তাম্॥ ষুবলোর্মানীরং তকামকং ধুবরোঃ অকম্। এতৎ সভাং বিদানীতং ধুবাং প্রাণা বহিক্রা: ॥ भूगरेनियः विभिन्ना**र्थः वक्तनाः विक्रमख**रमो । मरक्षत्रां परिता क्षीला **मा**निरलो हमस्त्रन (म ॥ ততঃ মেহার্ডবদনৌ তাবুছো নাগনন্দনৌ। উচতুন্পতে: প্লং কিঞ্ছিং প্রণরকোপিতে ॥

मर्थानामगनिकाः मृन् ८५ मः जूजकम ॥

শতধ্যক ন সলেহে যথৈবাহ ভবানিদম্।
তথৈব চাল্লনসি নাত চিন্তামভোহকথা ।
কিন্তাবয়েঃ শ্বয়ং পিতা প্রোক্তমেত্রহাত্মনা।
স্তাইঃ কৃবলয়াশং ভমিচ্ছামীতি পুনঃ পুনঃ ॥
তঙ্কঃ ক্বলয়াশোহসৌ সম্খায় বরাসনাং।
যথাহ ভাতেতি বদন্ প্রণামমকরোছ্বি॥

ক্বলয়াখ উবাচ।
ধক্তো ২ছমতিপুলো হৈং কে:২তে হৈ সিদৃশো ময়া
যৎ তাতে। মামভিত্ত ইঃ করে।তি প্রবাং মনঃ॥
তহু বিষ্ঠত গজামন্তামাজাং ক্রণমণাছম্।
নাতিকান্তমিহেছে।মি পন্তাং তম্ভ শ্পামাহম্॥

#### হাড়ে উবাচ।

এবমুক্তা যথে। সে:২৭ সহ ভাভাগং নৃপাত্মজঃ। প্রাপ্তন্দ গোমতীং পুণাাং নির্গমা নগরাছছি:॥ खनार्थान ययूरख देव नार्शकुन्थनकनाः। মেনে চ রা**জপু**কো২সৌ পারে তহ্তান্তয়োগৃহিন্। ভতশাক্ষা পাতালং তাভ্যাং নীতো নৃপাত্মজঃ পাতালে দদৃশে চোভৌ স পরগক্মাবকৌ। ফণামণিকুভোদ্যোতৌ ব্যক্তস্বস্তিকলকণৌ 🎚 বিলোক। ভৌ হুরপান্ধে বিশ্বয়োৎফুরলোচনঃ। বিৎস্ত চাব্রবীৎ প্রেমা সাধু স্তো বিজসতমৌ 🛭 কথরামাসভুজে চ পিতরং পরগের রম্। भा छम्या छत्रः नाम माननीयः मिटवीकनाम् ॥ রম্ণীয়ং ভতে হিপ্তাৎ পাতালং স নৃপাত্মজঃ। कुमारेत्र छक्ररेनव्रिक्त क्रतरेशक भरमा ভिত्रम्॥ তবৈধৰ নাগকস্থাভি: ক্রীড়স্তীভিরিতস্ততঃ। চারুকু এবহারাভিন্তারাভির্গগনং যথা॥ जी उभ**े** देख खथा **छ व**ेषा (दिव्यवा क्रेने:। মৃদক্পণবাতোদ্যং হারিবেশাশভাকুলম্ ॥ ৰীক্ষমাণঃ স পাতালং যযৌ শক্জজিতঃ হৃতঃ। সহ তাভাগমভীপ্তাভাগং পরগাভাগমরিক্মঃ ॥ ততঃ প্রবিশ্র তে সর্বের নাগরাঞ্দিবেশনম্। দদৃভত্তে মহাস্থানমুরগাবিপতিং ভিতম্ ॥ षिवामानाम्बद्धदश्यानक्**ञन**्यगम्। সংস্কাদলৰ ভাহারিহারোপশোভিতম্॥ (क्युत्रिनः महाङोगमान्यत नर्सकांक्यत । মণিবিজ্মবৈদুর্যাজালা স্তরিতরপকে।। স তাভাাং দশিতভক্ত তাতোহস্মাকমসাবিতি। বীর: কুবলরাখোহরং পিত্রে চাসে নিবেদিত: ॥

ততো ননাম চরণো নাগেলত অতথ্য ।
তম্থাপা বলাদাাঢ়ং নাগেল: পরিষম্প্রে ॥
মৃদ্ধি চৈনমুপাছার চিরং জীবেজাবাচ সং।
নিহতামিত্রবর্গন্য পিত্রো: শুলাবাং ক্র ॥
বংস ধন্তত্য কথাতে পরোক্তাপিতে গুণাং।
ভবতো মম প্রাভামসামান্তা নিবেদিতাং॥
অমেবানেন বর্দ্ধেণা মনোবাকারচেটিতৈঃ।
জীবিতং গুণিন: প্লাঘাং জীবরের মৃতোহগুণাং॥
গুণবান্ নির্তিং পিত্রো: শত্পাং হুদয়য়য়য়।
ক্রোভাগ্রহিতং কুর্মন্ বিখাসঞ্চ মহাজনে॥
দেবতাঃ পিতরো বিপ্রা মিত্রার্থিবিক্লাদয়ঃ।
বাদ্ধবাদনির্ভানাং হুপত্রের দ্যাবতাম্।
গুণিনাং স্ক্রং জন্ম সংশ্রেতানাং বিপদ্গতেঃ॥
জড় উবাচ।

এবমূক্রা স তং বীরং প্রাবেদমধারবীং।
পূজাং কুবলয়াখন্ত কর্তৃকানো ভূজসমং !
লানাদিককামং কৃতা সর্বামের যথাকামম্।
মধুপানাদিসভোগমাহারক যথেজিতম্ ॥
ততঃ কুবলয়াখেন হৃদলোংসবভ্তয়া।
কথয়া সল্লকং কালং স্বাহামো ক্টনেতসং ॥
অন্তানের চ তলোনী বচঃ শক্জিতঃ স্তঃ।
তথা চকার নৃপ্তিঃ প্রগানামুদারধীঃ ॥

সমেত। তৈরাজ্জভূপনক্টন-ম্হোরগাণামধিপ: স সত্যবাক্। মুসালিতে।হ্লানি মধ্নিচাজ্বান্ যথোপযোগং বুভূজে স ভোগভূক্॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুবাণে মদানদোপাথ্যানে ত্রোবিংশোহণ্যায়ঃ।

# চতুর্বিংশোহধ্যায়ঃ।

-- 0:0--

পুত্র উবাচ।
কুতাহারং মহাত্মানমধিশং প্রনাশিনাম্।
উপাসাঞ্চিরের পুত্রো তুপালতনরতথা ॥
কথাভিরমুরপাভিঃ স মহাত্মা তুজঙ্গমঃ।
প্রীতিং সঞ্জনমানাস পুত্রস্থাক্রবাচ চ ॥
তব তদ্র স্থাং ক্রহি গেহমভ্যাগতন্ত যৎ।
কর্ত্বামুৎস্কাশক্ষাং গিত্রীৰ স্থাতো মরি॥

রজতংবা হবেশং বা বসং বাহনমাসনম্। বহাতিমতমতাৰ্থং চুৰ্লভং তদুণুদ মাম্॥ কুবলয়াখ উবাচ।

ত্ব প্ৰসাদাস্কগ্ৰন্ স্থ্ৰণাদি গৃছে মম ৷ পিতৃরভি মমাল্যাপি ন কিঞ্চিৎ কার্য্মীলৃশম্ 🏾 তাতে বর্ষসহস্রাণি শাস্তীমাং বস্থুররাম্। তথৈব ছয়ি পাতালং ন মে যাচ্কোৰুখং মন:॥ তে স্বর্গাশ্চ **স্থপ্**ণ্যাশ্চ যেষাং পি**ত**রি জীবতি। তৃণকোটিসমং বিভঃ ভারুণাধিত্তকোটিযু॥ মিত্রাণি ভুল্যশিষ্টানি তহদেহমনাময়ম্। জনিতা ধ্রিয়তে বিভং ধৌবনং কিলুনাভি মে 🗈 অবস্বাৰ্থে নৃণাং যাচ্ঞাপ্ৰবৰ্ণ জায়তে মনঃ। লতাশেষে কথং যাচ্ঞাং মম জিহ্বা করিষাতি **#** বৈৰ্ন চিন্তাং ধনং কিঞ্জিয় ম গেহেছন্তি নাত্তি ব পিতৃবাহতকচ্ছায়াং সংশ্ৰিতাঃ স্বৰিনো হি তে॥ যে তুৰাল্যাৎ প্ৰভৃত্যেব বিনা পিতা কুটুম্বিনঃ। তে স্থামাদবিভ্রংশান্মকে ধাত্রৈব বঞ্চিত। ।। **७६**यः **४२ श्रमात्मन धन त्रञ्जामिमक्षश्चान् ।** পিতৃমুকান্ প্ৰয়জ্যম: কামতো নিভাম্থিনামু দ তৎ সর্কমিহ সম্প্রাপ্তং यদ জিঘু যুগলং তব। मक्रुषामनिना न्लृष्टेः यकात्रन्तर्भाभावान् ॥ **জ**ড় উবাচ।

ইত্যেবং প্রস্তং বাক্)মুক্তঃ পরগস্তম: । প্রাহ রাজস্কুতং প্রীত্যা পুত্রেরেপকারিণন্ ॥ নাগ উবাচ।

যদি রক্সবর্গদি মহোহ্বাপুংন তে মন:। যদক্রন্দা: প্রীতৈয় ভদ্ত্তিহি স্বং দ্দাম্যহম্॥ ক্রশয়ার উবাচ।

ভগবংল্থ প্রসাদেন প্রাথিতন্ত গৃত্য মম।
সর্ক্মন্তি বিশেবেণ সম্প্রাপ্তিকে গৃত্য মম।
কতক্রোচ্লি চৈতেন সফলং জীবিতঞ্চ মে।
বদসসংশ্লেষমিতক্তব দেবক্ত মাহুদং ॥
মনোত্তমালে জ্থপানরজ্গা যদিহাস্পদ্ম।
কতং তেনৈৰ ল প্রাপ্তং কিং মরা পরগেশর ॥
যদি অবশ্রং লাতবাো বরো ম্ম যথেকিতে:।
তথপ্যকর্দ্দিংস্থারো ভ্রন্মান বাবৈপ্তু মে॥
স্বর্ণমিনির্মাদি বাহনং গৃহ্মাসনম্।
প্রিরোহ্রপানং প্রাশ্চ চাক্রমান্যান্ত্রপনম্য॥
এতে চ বিবিধাং কামা গীতবাদ্যাদিকক যথ।
স্ক্মেত্রম মতং ফ্লং প্রাবনস্পতে:॥

ত্মাররেণ তন্মূলসেকে যত্ন: ক্রত। স্থনা। কর্তবা: পুণাসক্তানাং ন কিঞ্ছিব ছর্লভ্রম্॥ সম্মতর উবাচ।

এবং ভবিষাতি প্রাক্ত তব ধর্মাপ্রিতা মতিঃ।
সতঃকৈতৎ ফলং সর্বাং ধর্মগ্রেক্তাক্তং যথা ত্বরা॥
তথাপ্যবশুং মদেগ্র্মাগতেন ত্বাধুনা।
প্রাস্থ্য যুনামূবে লোকে হুপ্রাপং ভবতো মতম্॥
কড় উবাচ।

তক্ত ভ্ৰচনং শ্ৰুছা স ভদা নৃপনন্দন:। মুধাবলোকনং চক্ৰে প্রগেশ্বর পুত্রে:॥ ততন্তৌ প্রণিপভ্যোভৌ রাজপুত্রক্ত যুত্রতম্। তৎ পিতু: সকলং বীরৌ কপ্রামাসতু: ফুটম্।

পুত্র:বৃচতু:।

ততাংশু গন্ধী দ্যিতা শ্রেমং বিনিপান্তিত ম্।
সত্যালদায়তান্ প্রাণান্ বিপ্রশান্ধা ছ্রান্ধা।
কেনাপি কৃতবৈরেশ দানবেন ক্র্দ্ধানা।
গন্ধরালশু স্তা নামা খাতা মদালসা।
কৃতপ্রোংসং তত্তাত প্রতিজ্ঞাং কৃতবানিমান্।
নালা ভাগ্যা ভবিকীতি বর্জ্বিদ্ধা মদালসাম্।।
প্রইং তাং চার্মধ্যীময়ং বীর ক্তধ্বলঃ।
তাত বাঞ্তি যদ্যেতং ক্রিমতে তৎ কুতং ভবেৎ
ক্ষ্মত্ব উব্চ।

ভূতৈৰিলোগিনো যোগতাদ্শৈরের তাদৃশ:। কথমেতদিনা স্বগ্ন মায়াং বা শহরোদিতামু॥ জড় উবাচ।

প্ৰণিপতা ভূজকেশং পুল: শক্তৰিতত্ত:। প্ৰভাব।চ মহায়ানং প্ৰেমলজ্ঞাসম্বিত: ॥ মারাময়ীমপাধুনা নম তাত মদালস।ম্। যদি দশ্র তৈ মতো পরং রতমন্থেইমু॥

অখতর উবাচ।

ত সাথ পঞ্চে বংস সং মারাকেদ্রুমিজনী। সন্থাহো ভয়ন্ গেহং বাংলা>্পাভা গভা গুরু: ॥

### জড় উবাচ।

আনরামাস নাগেকো গৃহ গুৱাং মদালসাম্। তেষাং সম্মোহনাধার জজর চ ততঃ কৃট্ম্ ॥ দর্শরামাস চ তদা রাজপুত্রার তাং ওভাম্। সেরং ন বেতি তে ভাষ্যা রাজপুত্র মদালসা॥ স দৃহ্য তাং তদা তথীং তংকণাধিগতত্রপঃ। প্রিবেতি তানভিমুধং ববৌ বাচমুণীরস্থা। নিবারয়ামাস চ তং নাগঃ দে। হ্যতর ক্বন্॥ অখতর উবাচ।

মারেরং প্র মা প্রাক্ষী: প্রাকের কথিতং তব।
অন্তর্জানম্বৈত্যাশু মারা সংস্পর্শনাদিভিঃ ॥
ততঃ পণাত মেদিন্যাং স তু মৃদ্ধাপরিপ্ল ঃ ॥
হা প্রিয়েতি বদন্ দোহধ চিন্তমামান ভাবিনীম্
অহো স্লেহোহক্ত নূপভেমমোপর্য্যচলং মনঃ।
যেনারং পাতনোহ্রীণাং বিনা শক্ষেণ পাতিতঃ ॥
মাষ্টেত দর্শিতা তেন মিধ্যা মারেতি যং ক্টুম্।
বাযুম্তেজ্বাং ভূমেরাকাশক্ত চেটেরা॥

পুজ্ৰ উবাচ।

ততঃ কুবলয়াখং তং সমাখাত ভ্রন্ম: ।
কণয়।মান তৎ সর্কং মৃতসঞ্জীবনাদিকম্ ॥
ততঃ প্রান্ধ্যীঃ প্রতিলভ্য কাস্তাং
প্রণমা নাগং নিজগাম নোইণ ।
সংশোভমানং অপুরং তমখমারুহ্ সঞ্চিত্তিতমভ্যুপেতম্ ॥
ইতি মার্কণ্ডেমে মহাপুরাণে মদালসাপ্রাপ্তিনমি চভুর্কিংশোহধামঃ ॥

পঞ্চবিংশোহধ্যায়ঃ।

—:•:— ত্ৰড় উবাচ।

আগমা অপুরং সোহও পিতোঃ সর্কমশেষতঃ।
কথমামাস ভবলী যণা প্রাপ্তা প্রম্তা ।
ননাম সা চ চরণো শ্রশ্বরুরেরাঃ গুড়া।
স্ক্রনঞ্চ যথাপুর্বং বন্দনাস্লেবণাদিভিঃ ।
প্রয়ামাস তবলী যথাকায়ং যথাবয়ঃ।
ততো মহোৎসবো ক্তন্তে পৌরাণাং ততা বৈ পুরে
শতপ্রকাশ স্চিরং তথা রেমে স্নমধ্যা।
নির্বর্ চ শৈলানাং নিম্বাপুলিনের্ চ।
কাননের্ চ রম্যের্ তথৈবোপবনের্ চ।
ক্যাকরং বাঞ্মানা সাপি কামোপভোগতঃ।
সহ তেনাভিকান্তেন রেমে রম্যান্থ ভ্নির্ ॥
ততঃ কালেন মহতা শক্রিৎ স নরাধিপঃ।
সমাক্ প্রশান্ত বস্থাং কালধ্র্ম্পেরিবান্ ॥
ততঃ পৌরা মহান্থানং পূকং তক্ত শতব্রক্ষ্।
ভতঃ বিশ্বর বাজানম্বারাচারচেন্তিত্য ॥

সমাক্ পালরতভাত প্রাজাঃ পুজানিবোরসান্।
মদালসায়াঃ সঞ্জে পুতঃ প্রথমজভাতঃ ॥
ভাত চকেে পিতা নাম বিকাতে ইতি ধীমতঃ।
ভূতৃব্তেন বৈ ভূতা। জহাস চ মদালসা ॥
সা বৈ মদালসা পুতঃ বালম্ভানশারিনম্।
উলাপনচ্লেনাহ কদমান্মবিস্কুম্ ॥

শুদ্ধোহসি রে তাত ন তেহস্তি নাম कुष्ठः हि ८७ कज्ञनशांधूरेनव । পঞ্চাত্মকং দেহমিদং ভবৈত-দৈবান্ত দং রোদিষি কক্ত হেজোঃ। ন বা ভবানু রোদিতি বৈ খজনা শকোহয়মাদালা মহীশস্তুম্। বিকল্পানা বিবিধা গুণাল্ডে-২গুণাশ্চ ভৌতাঃ সকলেক্তিয়েরু॥ ভূতানি ভূতৈঃ পরিহর্কলানি वृक्तिः नमाग्राखि यत्थर शूःनः। অন্নামুদান।দিভিরেব কক্স ন তেহন্তি বৃদ্ধিন চ তেহন্তি হানি: ॥ ত্বং কঞ্কে শীৰ্য্যমানে নিজেহস্মিং-ন্ত সিংশ্চ দেহে মৃঢ়তাং মা ব্ৰেপাঃ। শুভাশুভৈঃ কর্মজিদেহমেত-न्मनानिभूटेषः कक्करुखश्रि नदः। তাতেতি কিঞ্চিৎ তনয়েতি কিঞ্চি-দম্বেতি কিঞ্চিদ্যারতেতি কিঞ্চিৎ। মমেতি কিঞ্চিল মমেতি কিঞ্চিৎ ত্বং ভূতস্ত্বং বহুমনিয়েশাঃ 🖠 হু:ধানি ছু:থোপশমায় ভোগান্ স্থায় জানাতি বিমৃচ্চেতাঃ। তাবেব ছঃধানি পুনঃ স্থানি জানাত।বিখান্ স্বিষ্চ্চেডা: # হাসোহস্থিদন্দন্মকিবুগা-মত্যুজ্জলং তর্জনমঙ্গনায়ঃ। কুচাদি পীনং পিশিতং ঘনং তৎ স্থানং রতে: কিং নরকং ন ধোষিৎ । যানং ক্ষিতে যানগভঞ্চ দেহং (मरहरू नि ठ:छः भूकरवा निविद्धेः। মমতবৃদ্ধিন তথ। বণা স্বে দেহেহতিমালেং বত মৃঢ়তৈবা 🛭 ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে মদালসো-পাখ্যানে পঞ্চবিংশোহ্ধ্যার: ॥

# ষড়বিংশোহধ্যায়ঃ।

-- 0:0 --

#### জড় উবাচ।

বর্জনানং স্কৃতং সা জুরাজপদ্মী দিনে দিনে।
তমুলাপাদিনা বোধমনম নিশ্মাত্মকম্ ॥
যথাযথং বলং লেভে যথা লেভে মতিং পিতৃ: !
তথা তথাজ্ববোধঞ্চ সোহ্বাপ মাতৃভাষিতৈ: ॥
ইথং তয়া স তনয়ো জন্মপ্রভৃতি বোধিতঃ।
চকার ন মতিং প্রাক্তো জার্জে তভ্ত নামাকরোৎ পিতা।

ন্ধবাহরমাস্ত্রকে সা জহাস মদালসা।
তমপ্যেবং যথাপুর্বাং বালমুল্লাপবাদিনী ॥
প্রোহ বাল্যাৎ স চ প্রাপ তথা বোধং মহামতিঃ।
তৃতীয়ং তনয়ং জাতং স রাজা শক্তমর্দনম্॥
বদাহ তেন সা স্কুজর্ভগাসতিচিবং পুনঃ।
তৃতিথব সোহপি ত্রস্যা বালজাদববোধিতঃ॥
ক্রিশক্তমার নিজানো ন কিঞ্জ্পকারকম্।
তৃত্থস্ত স্কুজ্যাথ চিকীর্নাম ভূমিপঃ॥

# তামাহ রা**লা** হসতীং কিঞ্ছিৎ কৌতৃহলাবিত:॥ রাজোবাচ।

দদর্শ তাং ভভাচারামীযকাদাং মদালসামু।

ক্রিয়নাপে সক্রমান্ধি কথাতাং হাজকারপন্। বিক্রাপ্তশ্চ স্থবাহশ্চ তথাকাঃ শক্রমান্দনঃ ॥ শোভনানীতি নামানি ময়া মন্যে ক্রতানি বৈ। যোগ্যানি ক্ষত্রবন্ধুনাং শৌধ্যাটোপ্তানি চ॥ অসংস্থাতানি চেড্ডন্তে ধদি তে মন্সি ভিত্র্। তদ্ভা ক্রিয়তাং নাম চতুর্থস্য স্ক্রস্য মে॥

মদালদোবাচ।

গণাজ্ঞা ভবতঃ কার্য্যা মহার জে যথাথ মাম্।
তথা নাম করিষ্যামি চতুর্ধস্য শ্রুতস্য তে ॥
অনর্ক ইতি ধর্মজ্ঞঃ থ্যাতিং শোকে প্রয়াস্যতি।
কনীষ্মানেষ তে পুরো মতিমাংশ্চ ভবিষ্যতি॥
ডজ্জ্বা নাম পুজ্রস্য কুতং মাত্রা মহীপতিঃ।
অনুক ইত্যসম্বদ্ধ প্রহাস্যক্ষথাব্রবীং॥

রাজোবাচ। ভবত্য। বদিদং নাম মংপুল্রস্য কৃতং গুলে। কিমীদুশমসম্বন্ধয় কোহস্য মদালসে॥

#### মদালসোবাচ।

कब्रानद्वः महातास कुछ। ना वावहातिकौ। খংকতানাং তথা নামাং শৃণু ভূপ নিরর্থতাম্॥ वनिष्ठि भूक्षाः ध्याख्या व्याभिनः भूक्ष्यः यकः। ক্র।স্থি"চ গতিকদিষ্টা দেশদেশাস্তরস্ক যা॥ गर्करभा न क्षयाजी जि वाशी तमरहचरता यजः। ততো विकाखनः एक यः मठा सम निवर्षका ॥ স্বাহরিতি যা সংজ্ঞা কুডাগুছ স্তম্ম তে। নিরর্থ। সাপ্যমূর্তভাৎ পুরুষক্ত মহীপতে॥ পুজ্রত যৎ কুতং নাম তৃতীয়তারিমর্দন:। मत्त्र उपशासकः मृत् हानाव कात्रनम्॥ এক এব শরীরেষু সর্কেষু পুরুষো যদা। তদাত রাজন্ক: শক্র: কো বা মিত্রমিছেয়তে॥ ভূতৈভূতি। নি মৃদাত্তে অমুর্তে। মৃদাতে কথন্। काधामीनाः পृथभ् जावाद कन्नात्वः निवर्धका ॥ যদি সংব্যবহারার্থমসলাম প্রেকল্লাভে। নামি কমাদলকাথো নৈর্থ্যং ভবতো মতম।। ष्ट्र উবাচ।

এবমুক স্বন্ধা সাধু মহিব্যা স মহীপতি:।
তথেত বিং মহাবৃদ্ধি যিতাং তথ্যবাদিনী মূ ॥
তথাপি সা স্বতং স্ক্রেধণা পৃক্ষিস্তাংওণা।
প্রোবাচ বোধজননং ভাম্বাচ স পার্থিব:॥
বাজোবাচ।

করোষি কিমিদং মূঢ়ে মমাভাবার সম্ভতে:। ছ্টাবৰোধদানেন যথাপূৰ্বং স্থতেমুমে॥ यमि एक मर्थाव्याः कार्याः यमि व्याकः वटा मम। उत्पनः जनगः भार्ति अनुरत्तः महित्याक्त्र ॥ কম্মার্গঃ সমুচ্ছেদং নৈবং দেবি গমিষাতি। পিড়পিওনির্ভিশ্চ নৈবং সাধিব ভবিষ্যতি ॥ পিতরো দেবলোকস্থান্তথা নির্যাক্তমাগতা:। তপ্নামুষ্যতাং যাতা ভূতবর্গে চ সংখ্রের: ॥ সপ্ণাানসপ্ণাংক ক্ৎকামান্ ভূট্পরিপ্লভান। পিডোদকপ্রদানেন নর: কর্ম্মণাবস্থিত:। সদাপ্যায়য়তে হক্ত তথদেবাতিশীনপি। দেবৈৰ্মপুৰোঃ পিভৃভিঃ প্ৰেটেভভূতিতঃ সঞ্ছেটকঃ বয়েভি: কুমিকীটেক্ট নর এবেপেন্সীব্যতে॥ তথাং তথকি পুলং মে যৎ কার্যাং কল্লযোনিভি: ঐহিকাম্খিকফলং তৎ সন্যক্ প্রতিপাদর॥ ८७ रेनरमूका मा ऋर्तु। यद्गनादी मनानमा । অলকং নাম ভনয়মুবাচোলাপ্ৰাদিনী॥

পুল বৰ্দ্ধ মন্ত ধুমনো নন্দয় কণাভিঃ। মিতাণ্মপকারায় হছ দাং নাশনায় চ ॥ ধত্যোহ্সি রে যো বস্ত্রধামশক রেকশ্চিরং পাশমিতাসি পুত্র। **७९ शामगां मस स्रांश शिला**रणा ধর্মাৎ ফলং প্রাঞ্চাস চাসরখন্॥ ধরামরান পর্বাস্থ তর্পয়েধাঃ সমীহিতং বন্ধু পুরয়েথা:। হিতং পরতৈম হাদি চিন্তয়েথা মন: পরস্কীষু নিবর্ত্তয়েখা: ॥ यदेळात्ररगदेकार्कात्र्वपाग्कस-भटेर्थिष कान व्यीगग्र मः खिठाः । **ब्रियम्ड काटेश्द्रकृटेन** मिठद्राय যুকৈ শচারীংভোগমি শাসি বীব ॥ वारमा मरना ननम वासवानाः खरत्राख्याकाकत्रदेगः क्रुमातः। **छीनाः युवा मरक्ल**ञ्चनानाः वृक्षा वरन वरम दरनहत्रागीम्॥ ताकाः कूर्वन् स्कटना नन्तरप्रथाः সাধৃনুরকংক্তাত যকৈর্ঘজেপাঃ। ष्ठीन् निष्नन् देवित्रगमा किंगरशा গোবিপ্রার্থে বংগ মৃত্যুং ব্রক্ষেথাঃ ॥ ইতি মার্কণ্ডেরপুরাণে ষড্বিংশোহধায়ে:।

> সপ্তবিংশোহধ্যায়ঃ। —•:•— জ্বড় উবাচ।

বব্ধ বয়সা বালো বৃদ্ধা চালকঁসংজ্ঞিতঃ ॥
স কৌমানকমাসালা ঋতধ্যজ্ঞত্তওঃ ।
সুতোপনয়নঃ প্রাক্তঃ প্রণিপত্যাহ মাতরম্ ॥
অলক উবাচ ।
ময়া যদত্ত কর্ত্তবাইমহিকাম্মিকায় বৈ ।
স্থায় বদ তৎ সর্কং প্রেশ্রযাবনতত মে ॥
মদালসোবাচ ।
বৎস রাজ্যেহভিষিজেন প্রেলারঞ্জনমাদিতঃ ।
কর্ত্তবামবিরোধেন অধ্যাত্ত মহীভূতা ॥
বাসনানি পরিতা্জা সপ্তমূলহরাণি বৈ ।

জাত্ম। রিপুভা: সংরক্ষো বহির্মপ্রবিনির্গমাং ॥

অষ্ট্রধা নাশমাপ্লোভি স্কৃচক্রাং জ্ঞানাদ্যথা। তথা রাজাপ্যসন্দিগ্ধং বহির্মন্থবিনির্গমাৎ ॥ कुष्टीकृष्टे। " अने आन्या ज्यान विद्याय ज्या চরৈশ্ররাক্তথা শতোরেরেষ্টবাাঃ প্রযন্তরঃ॥ বিখাগোন তুকঠবোরাজা মিতাপ্তবন্ধুরু। কার্যাবোগাদমিতেইপি বিশ্বদীত নরাধিপ:॥ शानमुक्तिकारछन साष्ट्र छन। छनिनायन।। ভবিত্রাং নরেন্দ্রেশ ন কামবশবর্তিনা ॥ প্রাগায়। মন্ত্রিণকৈর ততো ভূংগা মহীভূতা। জেয়াশ্চানস্করং পৌরা বিরুদ্ধ্যেত তভোহরিভিঃ॥ যত্তে তানবিজি তৈয়ৰ বৈরিশো বিক্লিগীয়তে। সোহ'জতামা জিতামাতাঃ শক্রবর্গেণ বাধাতে। তত্মাৎ কামাদয়ঃ পূর্বাং ক্সোঃ পুত্র মহীভূজা। তজ্ঞরে হিজ্ঞোহবখাং রাজা নখ্যতি তৈর্জিতঃ॥ কানঃ ক্রেধেশ্চ লোভশ্চ মদো মানভবৈধ্ব চ। হর্মন্ত শত্রবো হেতে বিনাশায় মহীভূতাম্॥ কামপ্রসক্ষাত্মানং শ্বর। পাঙাুং নিপাতিতম্। নিবর্তমেৎ তথা ফোধাদমুব্রাদং হতাত্মজম্। হত্তমলং তথা লোভানাদাদেশং দিজৈহত্য। भागानगायुगा পুত্রং বলিং হ্র্যাৎ পুরঞ্জান্॥ এভিজ্ঞিতৈজ্জিতং স্বাং মকতেন মহায়না। याचा विवर्कारमराजार मायान श्रीमान मशील हिः काकरकां किल जुल्लाश मृगवानिश्विनाम्। হংসকুকুটলোহানাং শিক্ষেত চরিতং নূপঃ॥ কাটকন্ত ক্রিয়াং কুর্য্যাদ্বিপক্ষে মহুজেখর: 🖰 (ठहे: तित्री विकास कात जुल: ध्वनर्भाय । (छत्र: त्रिविक्त् निक्रांनाः **वीक्र**ाठ्डे। ठ भागाणः। চক্রত্য। সরপেশ নীতার্থে পৃথিবীক্ষিত। । বন্ধকীপন্মশরভশ্লিকাগুবিংণীস্তনাং। প্রজা নূপেন চাদের। তথা গোপালযোষিত: ॥ শক্রাক্যমসোমানাং তদ্বসায়োর্মহীপতি:। রূপাণি পঞ্ কুক্ষীত মহীপালনকর্মণি ॥ যথেক্র চতুরো মাদান্ তোষোং দর্গেণ ভূগতম্। আপন্যয়েং তথা লোকং প্রিটরক্ষহীপ্তিঃ॥ মাদানটো যথা স্থাত্তায়ং হরতি রশিভিঃ। प्रकारेगव ज़ार्शासन ७०१ ७ सामिकः नृतः ॥ যবা যুমঃ প্রিয়হেষ্যে প্রাপ্তকালে নিব্ছতি। তথা প্রিয়াপ্রিয়ে রাজা চ্টাচ্টে সমো ভবেৎ ॥ পুর্ণেদুমালোক্য যথা প্রীতিমান্ জায়তে নরঃ। এবং যত্ৰ প্ৰজাঃ সৰ্কা। নিবৃত্তিভিচ্ছশিৱতম্ ॥

মাজ তঃ সর্কাভ্ তেমু নিগুড় চরতে বথা।

এবং নৃপশ্চবেচ্চারৈঃ পৌরামাত্যাদিবজুরু॥
ন লোভারা ন কামান্তা। নার্থারা যক্ত মানসম্।

যথাকৈঃ কুষ তে বংদ দ বাজা পর্যাচ্চতি ॥
উংশথপ্রাহিণো মুটান্ প্রধ্যাচ্চলতো নরান।

যঃ করোতি নিজে ধর্মে দ রাজা পর্যাচ্ছতি ॥
বর্ণধর্মা ন দীনন্তি যক্ত রাজ্যে তথা শ্রমাঃ।
বংদ তক্ত স্থাং প্রেতা প্রত্তে চ শাখতম্॥
এত প্রাক্তঃ পরং কুতাং তথৈতং দিন্ধিকাবকম্।
স্বর্শাস্থাপনং নুগাং চাল্যতে যথ কুর্নিভিঃ॥
পালনেনৈর ভূতানাং কুতকুতোা মহীপতিঃ।
সমার্থ পালন্তি। ভাগাং ধর্মাজাপ্রাতি বত্নতঃ॥
এবং যো বর্গতে রাজা চাত্র্বণিক্ত রক্ষণে।

দ স্ব্রী বিহ্বতে।ব শক্রতৈতি সলোকতাম্॥
ইতি মার্কাতেয়ে মহাপ্রাণে পুলাম্পাদনং

ভ মার্কভেয়ে মহাপুরাণে পুত্র।ফুশাসনং নাম সপ্তবিংশোহধা:য:।

# অষ্টাবিংশোহধ্যায়ঃ।

-:\*:--

জড় উবাচ।

ত্যাতৃধিচনং শ্রুষ গোহলকো মাত্রং পুনঃ। প্রথছে বর্ণধর্মাংশ্চ ধর্মা যে চাশ্রমেযুচ ।

# व्यवर् डेवाह।

কপিতোহয়ং মহাভাগে রাক্সভেল্লাঞিতস্বলা। ধর্মং তমহমিচ্ছামি শ্রোতুং বণাশ্রমায়কন্॥ মদাশসোবাচ।

দানমধারনং যজো আক্ষণক ত্রিধা মতঃ।
নাতাত তুর্বো ধর্মোহেন্তি ধর্মন্তকাপনং বিনা ॥
বাজনাধাপিনে শুদ্ধে তুপা প্তপবিগ্রহঃ।
এবা সমাক্ সমাধ্যাতা নিবিধা চাতা জীবিকা ॥
দানমধারনং যজা ক্ষতিরকাপায়ং বিধা।
কর্মাং পোক্তং ক্ষতে রক্ষা শন্তাজীবক জীবিকা ॥
দানং যজোহব প্রক্রান্ত ক্ষিতেবাল্য জীবিকা ॥
দানং যজোহব প্রক্রাহ্মি ক্ষাতীনাং নিধা ম্যা
ব্যাব্যাতঃ শুদ্ধর্মোহিশি ক্ষীবিকা ক্ষিক্রা ।
ব্রক্ষাভিত্রকার পোষ্ণং ক্রের্বিক্রেরী।
ব্রধ্যাভিত্রকার প্রাক্ষাং চাল্রান্তরা এবার্যা

ববর্ণদথাং সংসিদ্ধিং নর: প্রাপ্রোতি ন চ্যুত:।
প্রমাতি নরকং প্রেচা প্রতিবিদ্ধনিষেবণাং॥
যাবত্নোপনয়নং ক্রিয়তে বৈ দ্বিদ্ধনা:।
কানচেষ্টোক্তিভক্ত তাবস্তবতি পুত্রক॥
কতোশনয়ন: সমাগত্রক্ষারী গুরোগৃহি।
বসেং তত্র চ ধর্মোইস্থাকে গুলেত স্তং নিবোধ মে
ক্রাগ্রেহিগান্তিভক্ষা স্লানং ভিক্লাটনং তথা।
গুবে নিবেদা ভচ্চারমস্ক্রাতেন সর্বাদ।
গুবো: কর্মণি সোদ্বোগ: সমাক্ প্রীত্যা-

তেনাছতঃ পঠেতৈকৰ তৎপৰো নাম্মানস:॥ একং ৰৌসকলান্বাপি বেদান্ প্ৰাণ্য গুলো-শুথাং।

অমুক্তাতে হেপ বনিদ্বা দক্ষিণাং গুরুবে ভতঃ॥ গাহস্ত শ্রমকামন্ত গ্রহাল্মমাবদেৎ। বানপ্রস্থাশ্রমং বাপি চতুর্থঞ্চেছ্যাস্থানঃ॥ उदेनव वा खरतार्दार दिस्सा निष्ठीमवाञ्चार। গুবোরভাবে তৎপুলে তচ্ছিষ্যে তৎস্কুতং বিনা ॥ ওঞাধুনির ভীমানো অক্ষচগ্যাশ্রমং ব্দেৎ। উপার্তস্ততকাদ্গৃহস্থাশ্রমকামায়া॥ তজোহসমান্ধিকুলাং তুল্যাং ভাষ্যামরে।গিণীম্ উদ্বের্যায়ভোহ্যাঙ্গাং গৃহস্থাশ্রমকারণাৎ॥ प्रकर्मना धनः नक्षा शिकृत्मवाजियौ रखना। मभाक् मख्लीनम् ज्वा (পान्यक। श्रिकाः छणा ভূত্যা মুজান্জ।ময়েহিথ দীনাক্পতিতানপি। यथाभक्तात्रभारतन व्याःमि भभवस्था ॥ এষ ধর্মে। গৃহস্তু ঋত্বিভিগম্ভথা। अक्षम् क्रविभानस्य यथा**णका। न श्राथर्य ॥** পিছদেবাতিথিজাতিভূকশেষং শ্বয়ং নর:। ভূজীত চ সমং ভূতৈয়ৰ্যণাবিভ্ৰমাদৃত: ॥ थग ज्रामनकः (क्यारका शृहक्षणाः समा। বান গ্ৰন্থ ধৰ্মং তে কথয়ামাৰধাৰ্যাভাম ॥ অপতাসস্থতিং দৃষ্ঠ্য প্রাজ্ঞোদেহস্ত চানতিম্ ৮ रानव्यशास्त्रः शरक्रमाञ्चनः अक्तिकात्रगार् ॥ তকাৰণোগভোগত তপোভি**ভাত্ৰধ্**ণম। ভূনৌ শ্যা বন্ধচৰ্য্যং পিতৃদেবাভিথিক্রিয়াঃ ॥ হোমজিসবনলানং **জ**টাব**ক্ল**ধারণস্। ताशां 🖘 । ता देवत व **कार्यह** निरंदित । 🖟 रेटाम भागक्षार्थमाञ्चन (मठाभकात्रकः। বানপ্রভাষমন্তমান্তিকোক চরমোহপরঃ ॥

চতুর্থক স্বর্পন্ত শ্রেষ্টামশ্রিমক মে। যঃ স্বধর্মোইভা ধর্মজৈঃ প্রোক্তন্ত মহাক্ষভিঃ স্ক্রসঙ্গপরিত্যাগো এক্ষচর্য্যমকোপিতা। যতে ক্রিখন বাবাসে নৈক স্মিন্বস্তি শিচরম্॥ ष्यनात्रश्चर्याशास्त्रा देशकारियदेनककानिना । তাল্মজানাববোধেচছা তথা চামাবলোকনম্। চতুর্থে ডাশ্রমে ধর্মো ময়ায়ং তে নিবেদিতঃ। সামাজমভবর্ণানামাশ্রমাণাঞ্চ মে পুরু॥ সত্যং শৌচমহিংসাচ অনস্য়াতথা ক্ষমা। অ:নৃশংস্যমকার্পণ্যং সম্ভেষিশ্চান্তমো গুণঃ॥ এতে সংক্ষেপতঃ প্রোক্তাধর্মা বর্ণাশ্রমেষু তে। এতেবুচ সধর্মেবু সেবু তিঠেৎ সমন্তঃ॥ যাশ্চারত্যা স্বকং ধর্মাং স্বর্ণাশ্রমদংজিতম্। নরোহস্তথা প্রবর্ত্তের সাদত্যো ভূভূতো ভবেং ॥ যে চ সধর্মসন্ত্যাগাৎ পাপং কুর্কন্তি মানবাঃ। উপেক্ষতন্তান্ নুপভেরিষ্টাপূর্বং প্রণগ্রতি ॥ তত্মান্ত্রাজ্ঞা প্রয়েনে সর্পে বর্ণাঃ স্বধর্মতঃ। প্রবর্তত্বে হিত্রখা দণ্ডাঃ ছাপা:লৈচন সকর্মস্থ । ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে পিতাপুত্রনংবাদে পুত্রামুশাসনে মদাশসাবাক্যং নামা-ষ্টাবিংশোহধ্যায়ঃ।

একোনতিংশোহধ্যায়ঃ।

অলর্ক উবাচ।

যৎ কাৰ্য্যং পুক্ষাণাঞ্চ গাৰ্হস্থামন্ত্ৰস্তি। বন্ধ-চ ভাৰকরণে ক্রিয়ায়া যন্ত চোচ্ছিতি: ॥ উপকারায় যন্ধাং যচ্চ বৰ্জ্যং গৃহে সভা। যথা চ ক্রিয়তে তল্মে যথাবৎ পৃচ্ছভো বদ॥

मनानरमावां ।

বংস গার্হস্থামাদার নর: সর্ক্ষিদং জগৎ।
পুঞাতি তেন লোকাংশ্চ স জয়তাভিবাঞ্চিতান্॥
পিতরো মূনমো দেবা ভৃতানি মসুজান্তণা।
কুমিকীটপতলাশ্চ বয়াংসি পশবোস্থাঃ॥
গৃহস্থ্যপজীবন্তি ততন্তৃপিং প্রয়ান্তি চ।
স্থাঞ্গান নিরীক্ষন্তে ক্ষণি নো দান্ততীতি বৈ॥
সর্ক্তাধারভূতেরং বংস ধেহুস্থামিষী।

যক্তাং প্রতিষ্ঠিতং বিশ্বং বিশ্বহেতুশ্চ যা মতা॥ **ঋক্পৃঠ∷দৌ यজুর্মধ্যা সামৰক্তৃ শিরোধরা।** ইট্রাপ্তবিষাণা চ দাধুস্কতন্কহা॥ শান্তিপুষ্টিশক্ক মূতা বর্ণপাদপ্রতিষ্ঠিতা। আজীবামানা জগতাং সাক্ষমা নাপচীয়তে॥ সাহাকারমধাকারে) বষট্কারশ্চ পুত্রক। হস্তকারস্তথা চাক্সস্তান্তন্তর্যুদ্।। সাহাজারং স্তনং দেবাঃ পিতর 🕫 স্বধানয়ম্। म्नग्रम्ठ वयष्कातः त्मवज्ञञ्चदत्रज्ञाः । হস্তকরেং মনুষ্যাশ্চ পিবস্তি সভতং শুনুম্। এবমপেণায়য়তে যুখা বৎস ধেকুল্লয়ীময়ী॥ C वर्षा म्टब्ह्म क र्वा ह (या नर्दा के का खान कर । স তমভারতামিত্রে তামিত্রে চ নিমজ্জতি॥ यर\*ठभाः मानद्या (४२० देश्वं द्यदेशव्यवानि जिः। পাম্মত্যুচিতে কালে স স্বর্গায়োপপদ্যুতে॥ তত্মাৎ পুত্র মন্ত্রোণ দেবধিপিতৃমানবাঃ। ভূতানি চাহুদিবদং পোষ্যাণি স্বত্তুর্যথা।। তথাৎ স্নাতঃ শুচিভূজা দেব্যিপিতৃত্রপ্ণম্। গ্ৰন্থাত ভাষা প্ৰাভিত্ত কৰি ক্ৰাণ্ড সমাহিত:॥ द्धगरनौगन्नभृदेश क (प्रवान नार्फा) मानवाः । , ততোহয়ে তথিণং কুৰ্য্যান্দেয়াশ্চ ব**লয়ন্তথা**॥ ব্রহ্মণে গৃহমধ্যে তু বিশ্বেদেবেভ্য এব চ। ध्य छतिः सम्क्रिश श्रां छन्। हार विनः किर्पर ॥ প্রাচাণে শক্রার যাম্যারাং যমায় বলিমাহরেৎ। প্রতীচাাং বরুণায়াথ সোমায়োত্তরতো বলিম্॥ দন্যাদ্ধাতে বিধাতে চেবলিং শ্বারে গৃহস্ত তু। অর্থানেহথ বহিদদা।দ্গৃ**হেভ্যশ্চ সমস্ততঃ**॥ নক্রঞ্জেরভ্যো ভূতেভ্যো বলিমাকাশতো হরেৎ। পিতৃণাং নিকাপেটেচৰ দক্ষিণাভিমুখস্থিতঃ ॥ গৃহস্তত্পরো ভূড়া স্থাসমাহিত্যান্দ:। তভভোষমুপাণায় ভেষেবাচমনায় ৰৈ॥ হানেষু নিক্ষিপেৎ প্রাক্তন্তান্তা উদ্দিশ্র দেবতাঃ। এবং গৃহবলিং **রুত্ব। গৃহে গৃহপতিঃ শুচিঃ ॥** আপ্যায়নায় ভূতানাং কুর্যাছৎদর্গদাদরাৎ। খভাশ্চ খণচেভাশ্চ বয়ে।ভাশ্চাবপেডুবি॥ देवचंदात्रवः हि नादेग छ ९ मात्रः व्या छक्रना ऋ छ म्। আচমা চ ততঃ কুৰ্য্যাং প্ৰাজ্ঞো দারাবলোকনম্॥ মুহু র্ন্তান্তমং ভাগমুদীক্ষ্যোহপ্যতিথিভবেং। অতিথিং তত্ত্ব সম্প্রাপ্তমন্নাদ্যে । । সম্পূল্যেদ্যথাশ ক্তি গন্ধপুষ্পাদি ভিন্তথা।

ন মিত্রমতিথিং কুর্যাটেরক্রামনিবাসিন্ম্ । অজ্ঞাতকুশনামানং তৎকালসমূপভিতম্। वृङ्क्यागजः आधिः योष्ट्यानमकिकनम्। বান্ধণং প্রান্থরভিধিং স পুরুঃ শক্তিতো বুধৈ:॥ ন প্চেছদেগাত্রচরণং স্বাধা**ারঞাপি পণ্ডিতঃ।**\* শোভনাশোভনাকারং বং মন্তেত প্রজাপতিম্॥ শ্লনিতাং হি শ্বিতং যশ্মাৎ তন্মাদতিথিকচাতে। ल्जिः छ छ नुगरका थ। जुना म्राहः ज्रेश स्री । **जन्मा अनदा त्या जूक् रक अग्रः कि विषज्क् नतः।** স পাপং কেবলং ভুঙ্কে পুরীষঞ্চান্মজন্মনি॥ অতিথির্যস্ত ভগ্নাশো গৃহাৎ প্রতিনিবর্ততে। স দত্তা ভ্রুতং ভবৈম পুণ্যমাদায় গছতি।। অপ।সুশাকদানেন যদাপ্যশ্তি স সমম্। পূজ্জেং ভুনরং শক্তা তেনৈবাতিথিমাদরাৎ ॥ कूर्या। छा इत्रः आक्रिम नारमारमारक न छ। পিত্রুদিখ্য বিপ্রাংশ্চ ভোজয়েদিপ্রমেব বা॥ অরস্তারং তত্কৃত্য বান্ধণাধেশপাদয়েৎ। ভিকাঞ যাচতাং দদাাৎ পরিবাড় ব্রুচারিণাম্ ॥ গ্রাসপ্রমাণা ভিক্ষা স্থানগ্রং গ্রাসচভুষ্টয়ম্। অগ্রং চতুও নিং প্রান্তইস্তকারং দিকোত্যা: । ভোজনং হস্তকারং বা অগ্রণ ভিক্ষাম্থাপি বা। অৰ্থা তুন ভোক্তব্যং যথাবিভ্ৰমাত্মনঃ॥ পূজ্যিখাতিথীনিষ্টান্ জাতীন্ বৃদ্ধেপ।থিনিঃ। বিকলনে বালবৃদ্ধাংশ্চ ভোজবেচচাতৃবাংশুপা।। বাঞ্তে কুৎপরীতাকা যচ্চাক্তোহ্রমকিঞ্ন:। কুটুমিনা ভোজনীয়ঃ সমর্থোবিভবে সতি 🗈 শ্রীমস্তং জ্ঞাতিমাসাদ্য যো জ্ঞাতিরবসীদতি। সীদতা যৎকুতং তেন তৎ পাপং স সমর্তে॥ সায়কৈব বিধিঃ কার্যাঃ সুর্য্যোচ্ং তত্র চাতিথিম। পুজয়েত যথাশক্তি শ্বনাসনভেগ্জনৈঃ ॥ এবন্বহতন্ত্ৰত গাইস্থাং ভারমাহিভম্। ব্দুর্বিধাতা দেবাশ্চ পিতর**শ্চ মহর্**যয়ঃ॥ শ্রেয়েছভিবর্ষিণঃ সর্কে তথৈবাতি পিবান্ধবাঃ। পত্ৰপক্ষিগণান্তপ্ৰা যে চাত্তে ফুল্কীটকা: 🏾 গাঁথাশ্চাত্র মহাভাগ প্রমত্তিরপ্যিত। তাঃ শুণুৰ মহাভাগ গৃহভাশ্ৰমসংগ্ৰিতাঃ ॥ নেবান্ পিতংশ্চাতিথীংশ্চ তৰং সম্পূজা বান্ধবান্ ळा ठी:ख्रथा खत्रः रेन्हव गृहत्या विकटव मृहि॥ খভাশ্চ ঋপচেভাশ্চ ৰয়োভাশ্চাবপেদ্ধি। देवज्ञात्मवः वि नाटेमछ० क्याप् मात्रः उथा नित्न

মাংসমরং তথা শাকং গৃহে যচোপসাধিতম্।
ন চ তৎ স্বয়মশ্লীয়াছিধিবদ্ধর নির্কপেৎ ॥
ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে মদালসংসাণদেশো নামৈকোনবিংশোহধ্যায়ঃ ॥

ত্রিংশোহধ্যায়ঃ।
--:-মদান্দোবাচ।

निजाः निमि खिकरेक्षव निजारेनभिखकः छथा। গৃহস্থ তিধা কর্ম ডরিশাময় পুত্রক। পঞ্চযজ্ঞাশ্রিতং নিতাং যদেতৎ কথিতং তব। নৈমিভিকং তবৈধবান্তৎ পুত্রজন্মক্রিয়াদিকম । নিতানৈমিত্তিকং জ্ঞেয়ং পর্বস্রান্ধাদি পণ্ডিতৈ:। ততা নৈমিত্তিকং বক্ষো শ্রাধ্মভ্যাদ্যং তব ॥ পুল্জনানি যৎ কার্যাং জাতকর্মসমং নরে:। বিবাহাদৌ চ কর্ত্তবাং সর্কং সমাক্ ক্রমোদিভম্॥ পিতর ভাতে সম্প্রা: খাতা নালীম্থাস্ত যে। পিঙাংশ্চ দ্ধিসংমিশ্রান্দ্দ্যাদ্যবসম্বিতান্॥ উদ্ভাৰ: প্ৰাভাবো বা যজমান: সমাহিত:। रिवचरमविविद्योनः ७९ क्रिकिम्बिक्खि मानवाः ॥ যুগান্চাত্র দিলাঃ কার্যান্তে চ পূজাাঃ প্রদক্ষিণম্ এতরৈমিত্তিকং বুদ্ধৌ তথাক্তচৌর্দ্দিহিক্স ॥ মৃতাহনি চ কর্ত্তব্যমেকোদিয়ং শৃণুদ্ব তৎ। দৈৰহীনং তথা কাৰ্য্যং তথৈবৈকপ্ৰিত্ৰক্ষু॥ আবাহনং ন কর্ত্তবামগ্রোকরণবর্জিতম্। প্রেত্ত পিওমেকঞ্দদ) হিচ্ছিট্রসরিদৌ ॥ তিলোদকঞ্চাপসব্যং তন্নামশ্বরণাধিতম্। ঋক্ষয়মমুকদ্যেতি স্থানে বিপ্রবিদর্জনে ॥ অভিরম্যতামিতি জ্বাদ্জ্যুন্তেইভির্তা: শহে। **अ**जिमानः ভरেरमञ्ड कार्यामावदनत्रः महेतः ॥ অথ সম্বৎসরে পূর্ণে যদা বা ক্রিয়তে নরৈঃ। দ্পিঞ্জীকরণং কার্য্যং তস্যাপি বিধিক্ষচ্যতে ॥ ভচ্চাপি দৈবরহিতমেকার্ছৈকপ্বিত্রকম্। নৈবাল্লৌকরণং তত্র ভচ্চাবাহনবৰ্চ্ছিডম্। অপস্ব্যঞ্জলাপি ভোজয়েদয়ুকো বিজান্ দ नित्मवञ्ज कारनाक्षि श्राष्ट्रभागः कित्राधिकः। **७: क्थामानभ्यकात्वा वन्छा (म:निनामग्रा**॥ जिनशरकारिकर्यकः जन्न भावानपृहेत्रम्। কুর্য্যাং পিতৃপাং ত্রিতয়মেকং প্রেড্সা পুত্রক ॥

भाविकास (अवभाविभवं देशन अरमहस्य । নে সমানা ইতি জপন্ পূর্ববৈচ্ছেদমাতরেৎ॥ द्धौन।मरभावस्मरेत्डरमध्यम् ऋष्ठेमूमाञ्चमः। সপি ভীকরণং ভাদাং পুত্র।ভাবে ন বিন্যতে॥ अिन: १९मवः कार्यास्मरकामिष्ठे गरेतः तियाः। मृठ इति यशांगाग्नः नृशाः यत्रिष्टशांति छम्॥ পুলাভাবে সপিওাস্ত ভদভাবে সংহাদকা:। মাতৃঃ দলিওা যে চ স্থার্যে চ মাতৃঃ দহে দকাঃ ॥ কুগু (বেনং বিধিং সমাগপুত্র সা স্থাইতঃ । কুৰ্ত্মাতামহাব্যৈবং পুজিকাতনয়াত্তণা ॥ धाः भूतास्य न १९ छ। छ मा सम्बद्धि । भू अद्ययुर्यथान । वर आदिक्र देन भिष्ठिदेकद्र थि॥ স্কাভাবে জিয়ঃ কুষ্ঠি সভত্ণান্মস্কন্। তদভ'বে চ নুপতিঃ কাবয়েৎ স্কুটু, ঘনা ॥ ख्द्धा और मनदेश: मभागना शामा: मकना: किया: সক্রেষামের বর্ণানাং বান্ধবো নুপতির্যতঃ।। এভাস্ত ক্ৰিভা বংস নিজ টেন্মিডিকাস্তথা। কিয়াং লাদ্ধাশ্রমামভাং নিত্যনৈমিভিকীং শুনু॥ দশ্তক নিমিতং বৈ কালশচক্রক্যাত্মক:। নিতাতাং নিয়তঃ কালপ্ততাঃ সংস্চয়তাগ "

ইতি মার্কভেয়ে মহাপুরাণেহলকারশাসনে ान इ देन विकिकाति आक्षक दवा गांव जि.रमारुधाराः।

# একত্রিংশোহধ্যায়ঃ।

মপি ভীকরণা দৃধিং পিতৃর্ব: প্রপিতামহ:। ম তুৰেপভূজো যাতি প্ৰলুপঃ পিতৃগিওতঃ॥ टिशामग्र•७ जूटर्शा यः भूजदान न ज्कात ज्का । দোহণি সম্বরতো হীনমুপভে.গং প্রাপদ তে॥ শিতা শিতামহটেশ্চৰ তথৈৰ প্ৰপিতামহঃ। পিওসম্বন্ধিনো ছেতে বিজেয়া: পুরুষালয়:॥ লেপদম্ধিনশ্চান্তে পিতামহপিতামহাং। প্রভুতাজার্মতেষাং যুদ্দানশ্চ সপ্তম: ॥ ইত্যেষ মুনিভি: প্রোক্ত: সমন্ধ্য: গাপ্তপৌরুষ:। যজমানাং প্রভৃত্। জমহুলেপভূজতথা। ততে। इत्त्र शृक्षणाः मद्भ दम ठाट्य नद्रको कमः। যে চ তিৰ্যঃজনুমাণলা যে চ ভূতাদিসং ছিতাঃ॥

मभाषासम्बद्ध वदम (यन एक् मृत्य ७९॥ অরপ্রকিরণং যৎ ভু মহুবৈ।ঃ ক্রিয়তে ভূবি। তেন ভৃত্তিমুপাযান্তি যে পিশাচত্বমাগতাঃ ॥ বদমু সানবস্বোখং ভূমৌ পততি পুত্ৰক। ্তন তে ভকতাং প্রাপ্তাধ্যেষ্য তৃপ্তিঃ প্রসায়তে যান্ত গাড়ামুকণিকাঃ পতন্তি ধ্বণীতলে। ভাভিরাপ্যায়নং তেষাং যে দেবজং কুলে গভা:॥ তাভিরাপ্যায়নং প্রাপ্তাবে তির্যাক্ত কুলে গডা: (त व। मधीः कृत्व वालाः किमार्यामा श्रमः कृषः। বিপরাত্তেইরবিকিরসমার্জনজনাশিনঃ ॥ ভুকু । চ.চামতাং যচে জলং যচ। জিবু সেচনে। ব্ৰাহ্মণানাং ভবৈথবাকে তেন তৃপ্তিং প্ৰয়ান্তি বৈ॥ এবং যো যজমানত যশ্চ তেষ!ং দ্বিজনানাম। क निरुष्क नात्र विष्क्षणः अहिक क्रिष्ठे ध्वय या॥ তেনায়ে তৎকুলে তত্র তওদ্যোগুরুরং গতাঃ। প্রাভাণায়নং বংস সমাক্ আক্রিয়াবভাম্ ॥ यन्गाः नाभार्क्किटे ब्रदेशेन छन्। किया व नदेव : কৃণ্যন্তে তেন চা গালপুক্ষান্যান্ত্ যোনিযু ॥ শ্রাদ্ধ কুর্বান্তি বর্মান্ত্রিন্দুকেপেণ জাঙ্গতে। তক্ষ।চচ।দ্ধং নবো ভক্তা। শাকৈরপি যথাবিধি। কুৰ্ব্বীত কুৰ্ব্বতঃ শ্ৰাদ্ধং কুলে কশ্চিন্ন দীদতি॥ ত্ত্ত কালানহং বক্ষ্যে নিত্যনৈমিত্তিক:অকান্। বিধিনা বেন চ নবৈঃ ক্রিয়তে ভল্লিবোধ মে॥ কাষ্যং প্রাদ্ধনাবাস্থাং নাসি মাস্থাড় পক্ষে। তথাইক। স্বণাবশ্রমিচছ:কালং নিবোধ মে । विभिष्ठे बाञ्चन श्रारको स्राम्बर्धरारु । বিষুবে ৰণিসংক্রান্তে বাভিপাতে চ পুত্রক 🛭 শ্রাকাইদ্রবাসম্প্র প্রে তথা ছঃম্বর্নসর্শনে। জনাক্ষগ্ৰহপীড়াম শ্ৰান্ধং কুৰবীত চেচ্ছয়া। विभिष्ठः (चाजिया योगी (वनविष्कार्धनामगः। ত্রিণাচিকেভঞ্জিমধুস্ত্রিস্পর্ণঃ ষড়ঙ্গবিৎ॥ নৌহিত্র ঋতিগ্রামাত্ স্ঞীয়া: শ্তরস্ত্রণা ম शकाधिकवानिष्ठेण ट्रानिष्ठांश्य मा**डूनः ॥** মাত্র'পিতৃপরশৈচক শিষ্যসম্বন্ধিবান্ধবাঃ। এতে বিজোলগাঃ আছে সমস্তাঃ কেতনক্ষমাঃ ॥ जिले जिला ८ दोशी न्। नण्डादेक छ लासिकः। শেনভবন্তথা কাৰঃ কুণ্ডো গোলোহৰ পুত্ৰক ॥ ভানু দর্পান্ বলমানো বৈ আছেং কুর্পন্ যথাবিধি নিত্র প্রক্ কুন্থী ক্লীবঃ ভাবদত্তে। নিগ্রুতিঃ।

অভিশক্তস্ত ভাতেন পিঞ্ন: দোমবিক্রয়ী ॥ কন্যাদ্ৰয়িতা বৈদ্যো গুরুপিতোস্তথে।জ্যুকঃ। ভূতকাধ্যাপকোহ্মিত্র: পরপূর্বাগতিস্তগা॥ (वरनाष्ट्याश्यात्रिमञ्जाती त्रवनी পতिन् विटः। তথানো চ বিকর্মন্থা বর্জ্জাঃ পিজোষু বৈ দ্বিদাঃ নিমন্ত্রেত পুর্বেজ্য: পূর্বোকান্ বিজপত্নান্। देनदर निरम्नारम भिट्या ह सांख्येथरवालक हाराव তৈশ্চ সংযতিভিভাবাং যশ্চ শ্রাদ্ধং কবিষাতি। শ্ৰাদ্ধং দৰা চ ভূকু। চ মৈথুনং যোহসুগচ্ছতি ॥ পিতরক্ত তথ্যোর্দানং ত্রিন্রত্সি শেরতে॥ গছাচ যোৰিতং প্ৰাছে যোভুঙ্কে যশ্চ গচ্ছতি বেতোম্ত্রকভাহারান্তনাদং পিতরভয়ো:॥ তত্মাত্র প্রথমং কার্য্যং প্রাক্তেনোপনিমন্থ্রাম্। ष्यथारश्ची छिम्तिन हालि वर्ष्क्या (याचिरश्चमद्भिनः। ভিক্ষার্থমাগতান বাপি কালে সংয্মিনো ঘতীন ভোজ্যেৎ প্রণিপাতালৈ: প্রসান। যতমানসং॥ ষ্টেথ্য শুক্লপক্ষাবৈ পিতৃণাম্পিতঃ প্রিয়ঃ। তথাপরাহঃ পূর্মাহাং পিতৃণামতিবিচাতে ॥ সম্পূজ্য পাগতেনৈতানভাগেতান্গুহে বিজান্। পবিত্রপানিরাচান্তানাসনেষ্পবেশ্যেং ॥ পিতৃণামযুদ্ধঃ কর্যাদ্যুগ্যান্ দৈবে ছিছো ভ্যান্। একৈকং বা পিতৃণাঞ্চ দেবানাঞ্চ সংশক্ষিতঃ। তথা মাতামহান। ए जूनाः वा देव श्रेट विकम्। পৃথক্ ত্রোস্তথা চানো কেচিদিছ্তি মানবাঃ ॥ প্ৰাম্থান্ দৈবসকল্লান্ ইপ্ৰচান্ ক্ৰচাছদম্থান্ তবৈৰ মাতামহানাং বিধিক্তো মনী্যিভিঃ॥ বিষ্ঠরার্থে কুশান্দ্রা পূজ্য চার্গদিনা বৃধ:। পবিত্ৰকাদি বৈদ্যা তেভে; হহুজামব:পাচ ৷ क्रवीमिनाइनः श्रीटब्डा (मर्गानाः मञ्जरता विकः यवार छा कि खा। ठा घीर में बारित देव धरमित कम् n शक्ष माना सूर्वक प्रवास माक् स्वीलक स्। অপদ্বাং পিভূণাঞ্চ সর্কমেৰোণকল্লেং॥ ' দ'ৰ্ভা'\*চ দ্বিগুণান্দ্বা তেভাোইকুজামবাপাচ। মম্বপূর্বাং পিতৃণাঞ্চ কুর্যাদ বাহনং বৃধঃ॥ অপ্সবাং তথা চার্ঘ্যং যবার্থঞ তথা ভিলৈ:। নিস্পাদয়েনাছাভাগ পিতৃণাং প্রীণনে র**ত:** ৷ ত্ৰা কাৰ্যামনুজ্ঞাতঃ কুলুছেতি ততো ছিলৈঃ। ভূহয়। স্বাঞ্চনকারবর্জন মলং যথাবিধি। অগ্নরে কব্যবাহার স্বাহেতি প্রথমাত্তি:। সোমায় বৈ পিতৃমতে স্বাহেত্যন্যা তথা ভবেৎ।

যমাম প্রেভপভয়ে খাহেতি ত্রিভয়াছতি:। হতাবশিষ্টা দশাকি ভাজনেষু বিজয়নাম্॥ ভাজনাनस्रनः कृषा मन्त्राक्रान्तर यथाविधि। যণা হথং জ্যধ্বং ভো ইতি বাচামনি ঠু বন্॥ ভূঞ্জীবংশ্চ ভততেঃহপি ভচ্চিত। মৌনিনঃ সুখম্। ষদ্যদিষ্ঠ ভমং ভেষাং তৎ ভদলমসভ্রম্। অকুধ্যং চনরো দদ্যাৎ সম্ভবেন প্রকোভয়ন্॥ तकाञ्च : "ठ करणनाञ्चाः खिरेन" ठ विकिरवना शेम । সিদ্ধ প্রকশ্চরকার্থং শ্রাদ্ধংহি প্রচুরচভণম্॥ প্তৈস্তৃতি শ্ৰুচ তৃপ্তা: স্থ তৃপ্তা: স্ম ইতিবাদিভি:। অনুজাতে। নরস্বলং প্রেকিরেডুবি সর্বতঃ।i ण्डमाठननार्थाय ममामाना अकुर अकुर। অসুজাঞা ভভঃ প্রাপা যতব(কায়মানসঃ॥ সভিলেন ততোহয়েন পিঙান্ মবোন পুত্রক। পিত্র দিতা দর্ভেকু দদাক্তিছ টসলিধৌ ॥ পিতৃতীর্থেন ভোয়ঞ্চ দদাং ভেডাঃ সমাহিজঃ। পিত্তুদিখা যতক।। যজ गানো নৃপাত্মজ।। তথ্যাতামহ নাঞ্দ্বা পিগুন্মথাবিধি। গ্রমাণ্যাদিসংযুক্তং দদ্যাদাচমনং ভভ: ॥ দ্বাচ দক্ষিণাং শক্ত্যা স্থন্ত্ৰধান্ত্ৰিত তান ২দেৎ তৈ চ ভুটেই ক্তথে ভাকু। বাচমে দৈখনে বিকান্॥ व्यीय छ। मिकि ভजः (वा विस्थानवा हेकी ब्रह्मः। তথেতি চোকে তৈর্কিপ্র: প্রার্থনীয়াওদাশিষঃ বিস্জামেং প্রিয়াগুছে । প্রণিপতাচ ভক্তিত:। আদাব্যসূগচেত্চাগচেত্চারুপ্রমোদিত: ॥ ততো নিত্যক্রিয়াং কুর্যাা.স্তাঙ্গমেচ ওথাতিথীন্ নিত্যক্রিয়াং পিতৃণাঞ্চ কেচিপিছ্ছ স্তি সন্ত্যা: ॥ न পिতृशाः उदेशनात्म (भवः शृक्तवनात्रद्र । পুণক্ পাকেন নেভাতো কে চিৎ পৃঠাঞ্চ পূর্দাবং। ততস্ত্রং ভূঞীত সহ ভৃত্যানিভিন্র:॥ এবং কুৰ্বীত ধৰ্মজঃ প্ৰাদ্ধং পিজাং সমাহিতঃ। যথাবা বিজমুখ্যানাং পরিতোধে ২ভিজ মতে॥ ত্রীণি শ্র দে পবিতাণি দৌহিত্রং কুতপতিলা:। বর্জননি চাত্রিবৈপ্রেক্ত কোপোইধাগমনং ত্বরা॥ সাজতক তথা পাত্রং শপ্তং প্রা:ক্ষু পুত্রক। नक्र का कार्याः मर्भनः मानत्मव वा ॥ বাজতে হি স্থা ছগ্ধা পিতৃভি: শ্রেমতে মহী। ত্র ও পিতৃণাং রজতমভীটং প্রীভিবর্দ্ধনম্ ॥ ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপ্রাণে পার্কণশ্রাদ্ধ-

क द्या गोरेमक जिल्ला भगायः।

### দ্বাত্রিংশোহধ্যায়ঃ।

-- 0:0 --

#### भवामस्मावाह ।

অতঃ পবং শৃণ্ছেমং পুত্র ভক্তা যদাহতম্। পিতৃণাং প্রীভয়ে যথা বর্জ্ঞাং বাছপ্রীভিকারকম্॥ মাদং পিতৃণাং ভৃপ্তিশ্চ হবিষাল্লেন জায়তে। মাসন্বয়ং মৃৎভামাংলৈজুপ্তিং যাত্তি পিতামহাঃ॥ ত্রীন মাদান হারিণং মাংসং বিজ্ঞেয়ং পিতৃত্প্রয়ে চভূর্মাসাংস্থ পুঞাতি শশস্ত পিশিতং পিতৃন্॥ भाकृतः शक देव मानः न् वयानान् भूकवाभिषम्। हागनः मश्र देव मानादेनर्गब्रकाहेमानिकीम्। করোতি ভৃপ্তিং নব বৈ ক্রোমাংসং ন সংশয়:। গ্ৰয়ক্তামিষং ভৃপ্তিং করেতি দশমাসিকীম্॥ তবৈকাদশমাদাংস্ক ঔরভ্রং পিতৃতৃপ্রিদম্। मच ९ मतः छथा शवाः शवः शायमात्मव वा ॥ वाऔं निमासियः लोहः कालभाकः छथा सधू। (मोहिकां सिष्मण्यक यक्तां ज र चक्तां खेदेवः ॥ অনস্তাং বৈ প্রয়চ্ছন্তি তৃপ্তিং গৌরীস্থতন্তথা। পিতণাং নাত্র সন্দেহো গয়াপ্রাদ্ধঞ্চ পুত্রক ম খ্যামাকরাজখ্যামাকৌ তথচৈত্ব প্রসাতিকা:। নীবারাঃ পৌদ্ধলাকৈত্ব ধাক্সানাং পিতৃত্প্তয়ে॥ যবব্রীহিদগোধুমতিলা মুল্যাঃ সুদর্ধপাঃ। खियक्रवः Cकाविनाता निष्ठावाकां जिल्लावाकां ॥ বজ্জা মক্টকাঃ শ্রাংদে রাজমাধান্তথাণবঃ। বিপ্রাদিকা মহুরাশ্চ শ্রাদ্ধকর্মণি গহিতা:॥ লভনং গৃঞ্জনকৈঃক পলাভুং পিওম্ককম্। করন্তঃ যানি চাক্তানি হীনানি রসবর্ণতঃ॥ शाकात्रिकांमलावृनि लवगःन्। यदाणि ६। আরক্তা যে চ নির্যাসাঃ প্রত্যক্ষলবণানি চ ॥ বৰ্জ্জান্তেভানি বৈ প্ৰাদ্ধে যচ্চ বাচা ন শস্ততে। যচেবাংকোচাদিনা প্রাপ্তং পতিতাদ্যত্পার্জিতম্ অঞ্যারকন্যাগুল্বেথেং দ্রব্যঞ্চাত্র বিগহিতম্। তুর্গন্ধি ফেনিলঞ্চামু তথৈবালতবোদকম্॥ ন লভেদ্যতা গৌতৃপ্তিং নক্তং যচ্চাপ্যুগাহতম্। यक नर्सक्तारण्डेश यक्तारकाकाः निभानकम् ॥ তৰ্জ্জ্যং সলিলং ভাভ সদৈব পিতৃকৰ্মণি। मार्गमाविकरमोद्वेष्ठ मस्तरेमकन्यक यर ॥ माहियः हामत्रदेशव (धवा शाम्हानात्रिक्नम्। পিত্রর্থং মে প্রয়হ্ছেক্রেড্রাজ্য যচ্চাপ্যপাছতম্।

বৰ্জনীয়ং সদা সন্তিত্তৎ পয়ঃ শ্ৰান্ধকৰ্মণি॥ বৰ্জনা জন্তমতী রক্ষা কিংতি: পুটা তথাগিনা। অনিউত্তশলোগ্রত্র্মা চাত্র কথাপি ॥ কুলাপমানকাঃ শ্র দ্ধে ব্যাযুদ্ধাকুলহিংসকাঃ। নগ্নঃ পাত্রকিনশ্চৈব হত্ন্যুষ্ট্যা পিভৃক্রিয়াম্॥ অপুমানপবিদ্ধশ্চ কুকুটো গ্রামশ্কর:। चा रेहर इंखि बाक्षानि याष्ट्रधानाम्ह पर्मनार्॥ ভত্মাৎ স্থদংবৃতো দখ্যাৎ ভিলৈশ্চাৰকিবন মহীন এবং রক্ষা ভবেচছাদ্ধে ক্বতা তাভোভয়োরপি॥ শাবস্তকদংস্পৃষ্টং দীর্ঘরোগিভিরেব চ। পতিতৈমণিনৈ শৈচৰ ন পৃষ্ণাতি পিতামহান্॥ বৰ্জনীয়ং তথা প্ৰাদ্ধে তথোদক্যাশ্চ দৰ্শনস্। মুগুশৌগুসমাভাগে । যজমানেন চাদরাৎ। কেশকীটাবপন্নঞ তথা খন্তিরবৈক্তিম্। পৃতি পর্যাষভক্ষৈব বার্ত্তাক্যভিষবাংস্কথা। বৰ্জনীয়ানি বৈ প্ৰান্ধে বচ্চ বস্তানিলাহতম্॥ শ্রদ্ধা প্রয়া দত্তং পিতৃণাং নামগোত্রতঃ। যদাহারাস্ত তে জাতান্তদাহারত্বমেতি তৎ॥ তন্মাচ্ছাদ্ধবতা পাত্রে যচ্চন্তং পিতৃকর্মণি। যথাৰকৈচৰ দাতবাং পিতৃণাং তৃপ্তিমিচ্ছতা ॥ যোগিনশ্চ সদা আক্ষেভোজনীয়া বিপশ্চিতা। যোগাধারা হি পিতরক্তমাং তান্ পূজ্যেং সদা वाक्रानाः महस्वर्ष्णा (यांत्री प्रशानता यनि । যজনানঞ্ভোকুংশ্চ নৌরিবান্তসি ভারয়েৎ॥ পিতৃগাথাস্তবৈধবাত্ত গীয়স্তে ব্ৰহ্মবাদিভিঃ। যা গীতা: পিতৃভি: পূর্বমৈলভাষীনাহীপতে:॥ ক্দা নঃ সস্তভাবগ্ৰাঃ কস্তচিদ্ধবিতা স্থভঃ। বো যোগিভুক্তশেষারো ভূবি পিণ্ডং প্রদান্ততি গ্যায়াম্থ্যা পিণ্ডং প্জামাংসং মহাহ্বিঃ। কাশশাকং ভিলাচ্যং বা ক্লমরং মাসভ্প্রয়ে ॥ 'देवचटलवक्ष स्त्रोमाक्ष थङ्शमाःनः भतः हविः। বিষ্পাণকজ্ঞাওজাপ্তা। আস্ব্যঞ্চাল বামতে॥ দদ্যাৎ আদ্ধং ত্রয়োদ্খাং মঘাস্থ চ যথাবিধি। মধুসর্পি:সমাযুক্তং পায়সং দক্ষিণায়নে ॥ ত্সাৎ সম্পুজ্যেভক্তা স্পিতৃন্পুতামানব:। কামানভীপ্সন্সকলান্ পাণাচ্যাম্বিমোচনম্ 🛚 বস্ন্কদ্রাংভাগ দিভাান্নক্ত্রহতারকা:। প্রীণয়ন্তি মহুষ্যাণাং পিতর: প্রান্ধতর্পিতাং ॥ জায়ু: প্রজ্ঞাং ধনং বিদ্যাং স্বর্গং মোকং স্থ্রানি। প্রয়জ্ঞ তথা রাজ্যং পিতর: প্রাদ্ধতপিতা: ॥

এতং তে পুত্র কথিতং শ্রাদ্ধকর্ম যথোদিতম্।
ক নানাং শ্রয়তাং বৎদ শ্রাদ্ধানাং তিপিকীর্ত্তনম্
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে শ্রাদ্ধতার।
নাম দাক্রিংশাহধ্যার:।

# ত্রয়ক্তিংশোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

মদালদোবাট।

প্রতিপদ্ধনলা ভাগ দিতীয়া দিপদপ্রদা। বরাণিনী তৃতীয়া তু চতুর্থী শক্রনাশিনী॥ শ্রিষং ঝাপ্রে তি পঞ্চন্যাং ষ্ট্রাং পূজ্যো ভবেররঃ। जनानिश्वाः मुख्यागिष्ठेमााः तृष्टिम् उमान् ॥ ব্রিষো নবম্যাং প্রাথ্যোতি দশম্যাং পূর্ণকামতাম্। বেদাংক্তথাপুমাৎ সর্বানেকাদ্রাং ক্রিয়াপরঃ ॥ ঘ'দখাং জয়লাভঞ্ প্রাপ্নেতি পিতৃপুত্রকঃ। প্রকাং মেধাং পশুং বুদ্ধিং স্বাতস্ক্রাং পৃষ্টিমূত্ত্ব।ম্। नोर्चयायुत्र देशचर्या **क्**र्यानख करगाननाम्। অবাপ্নোতি ন সন্দেহঃ প্র.ম্বং প্রশ্নাপবে। নরঃ॥ यशाम छो विकारस्य अधिकम्लारममसिकः। যুবানঃ পিতরো যত মৃতাঃ শঙ্গেপ বা হতাঃ॥ তেন কাৰ্য্যং চতুৰ্দ্নপ্ৰাং তেষাং প্ৰীতিমভীপাতা। শ্রাদ্ধং কুর্বের্মাবভাং যজেন পুরুষঃ ভূচিঃ ॥ দৰ্পান্ কামানবাপ্লে।তি স্বৰ্গঞানস্তমশুতে। করিক।স্থ পিতৃনর্চ্য স্বর্গমাপ্রোতি মানবঃ॥ অপত্যকামো রোহিণ্যাং গৌমো চৌঞ্সিতাং

শৌর্মার্ক্রাস্ক চাপ্লোতি ক্ষেত্রাদি চ প্নর্ক্রেমা ।
পৃষ্টিং প্রেয় স্বাভ্যর্ক্য আলায়ার বরান্ ত্রান্ ।
মবাস্ক সন্ধান্ত্রিক্র সোভাগ্যং দল্পনীবু চ ।
প্রানি শোভার্তি সাপতাশ্চের্রিয় চ ।
প্রাতি শ্রেষ্ঠতাং স্ত্যং হত্তে প্রাক্ষ প্রদানরঃ ॥
কপর্ কৃষ্ণ চিত্রাস্ক তথাপত্যাত্রবাপ্রাথ ।
বাণিজ্যলাভদা স্বাতির্ক্রিশাখা পুত্রকামদা ॥
কুর্মস্কান্তর্বাধাস্ক লভক্তে চক্রবর্ত্তিয়ে ।
ক্ষাপিত্যেক্ষ জ্যোর্ত্রিস্মৃশ্বে চ্বেগ্যাস্ত্রম্ ॥
কাম্যাত্রিক্র ব্লোক্রিক্র ব্লোক্রম্ ॥
ব্লাব্রিক্র ব্লোক্রিক্র ব্লিক্রের্ক্রির্ক্তি ভিষক্সিক্রির্ক্র ব্লেবে ।
ক্ষাবিকং ক্রেষ্ট্রিস্ক্রের্ক্রিক্রের্ক্রের্ক্রের্লিকর ব্লিকরে ॥
ক্ষাবিকং ক্রেষ্ট্রিস্ক্রের্ক্রিকর ব্লিকরে ॥

রেবতীর তথা ক্পাদখিনীর ত্রজমান্। শ্রাহং ক্রিংজথাপোতি ভরণীখাযুক্তমম্। তথাৎ কান্যানি ক্রীত খলেবেতের তথাবিৎ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপ্রাণে কান্যশ্রাহ্নকণ-কথনং নাম অয়্জিংশোহ্ধায়ঃ॥

# চতুব্রিংশোহণ্যায়ঃ।

-:\*:-

अनामरमार्गाठ ।

এবং পুল গৃহত্তেন দেবতা: পিতরস্তথা।
সম্পুদ্ধা হব্যকবা ভাষেরেনাভিপিবান্ধবা: ॥
ভূতানি ভূতাা: সকলা: পশুপক্ষিপিপীলিকা:।
ভিক্ষবো বাচমানাশ্চ যে চাক্তে বস্তা গৃহে ॥
সদাচারবতা ভাত সাধুনা গৃহমেধিনা।
পাপং ভূত্তে সমূরজ্য নিতানৈমিত্তিকী: ক্রিয়া:
অলক উবাচ।

কথিতং মে ছয়া মাতনিত্যং নৈমিত্তিকঞ্ যৎ। নিত্যনৈমিত্তককৈবে ত্ৰিবিধং কক্ম পৌক্ষম্॥ সদাচবেমহং শ্ৰোভূমিছামি ক্লনন্দিন। যং কুৰ্বন্ স্থেমাপ্ৰোভি প্ৰত্ৰেছ চুমানৰ:॥

মদালদোবার। গৃহত্তন সদা কার্যামাচারপরিপালনম। ন হাচারবিহীনভা স্থমতা পরতাবা।। যজদানত পাংদীহ পুরুষতা ন ভূতমে। ভবস্তি যঃ সদাচারং সমুল্লজ্যা প্রবর্ততে॥ **ছ্বাচারো হি পুরুষো নেহায়ুর্ন্ধিন্দতে মহৎ।** কার্ষেটা যত্নঃ সদাচারে আচারো হস্তালক্ষণম।। তম্ম প্রপং বক্ষামি সদাচারস্থ পুত্রক। তন্ম নৈক্ষনাঃ শ্ৰুষা ভবৈধ্ব প্ৰিপালয়॥ जिवर्गमाधरम् यञ्चः कर्छरता। गृहरमधिमा । তংসংসিজে । গৃহস্তাসি কির্কাণর কাচ॥ পালেনার্থস্থ পারত্যাং কুর্য্যাং সঞ্চয়মাস্মবান। অর্ফেন চায়ভরণং নিভাবৈমিত্তিকালিতম্। পাৰকাঝাৰ্থনায়ভা মূলভূতং বিবৰ্দ্ধয়েৎ। এবমাচরত: পুত্র জার্থ: সাফল্যসইতি॥ उदर राजनिरम्पार्थः भषः कार्या। विलम्हिन। প্রত্রার্থং ভ**বৈশার: কামো**হবৈত্রৰ ফলপ্রদঃ দ প্রতাবারভয়াৎ কাম্যন্তপাঞ্চাবিবোধবান। विभा कारमाश्री शिष्ठि खिवर्शकाविरवाधकः ॥

পরস্পরাত্ত্বশাংশ্চ সর্বানেতান্ বিচিন্তয়েৎ। विপরীত। সুবন্ধাংশ্চ ধর্মানীংস্তান্ শৃণুষ মে ॥ धार्या धर्याष्ट्रवसार्था धर्या नामार्थवाधकः। উভাভ্যাঞ্ বিধা কামন্তেন তৌ চ বিধা প্র:॥ ব্ৰান্ধে মৃহুর্ত্তে বুদ্ধ্যেক ধর্মাপৌ চাপি চিস্তবেৎ। কাৰ্যাক্ষেশাংস্ত তন্ত্ৰান্ বেদতবাৰ্থমেব চ॥ সমুখার তথাচম্য প্রায়ুখো নিরত: শুচি:। शृक्तीः प्रकार गनकवाः शन्तियाः प्रतिवाकत्र।म्। উপাসীত যথাক্সারং নৈনাং জহাদনাপদি॥ अन्दान विन्तु वाक्याक वर्कार । অসচছান্ত্রমসভাদমসংসেণাঞ্চ পুত্রক॥ সায়ং প্রাতন্তথা হোমং কুর্বীত নিয়তাম্বান্। নোদয়াস্তমনে বিশ্বমূদীকেউ বিবস্বতঃ ॥ Cकम@नाधनावर्मकर्मनः प्रसारनम्। পূর্মাহ এব কার্যাণি দেবতানাঞ্চ তর্পণম ॥ প্রামাবদথভীর্থানাং কেক্রাণাঞ্চৈব বর্ম নি। বিগুত্তং নাহতিষ্ঠেত ন কুটে ন চ গোবজে ॥ নগ্নাং পরস্তিয়ং নেকের পঞ্চোদাত্মন: শকুৎ। উদক্যা দর্শনং স্পর্শে। বর্জ্জ্যং সম্ভাষণং তথা। নাপ্স মৃত্রং পুরীষং বা দৈযপুনং বা সমাচরেৎ। নাধিতিষ্ঠেচ্ছকুমূত্রকেশভত্মকপালিকাঃ॥ ভুষাকারাত্তিশীর্ণানি রজ্জুবল্লাদিকানি চ। नाभिजिएंडे उथा खां छः भिथ रेहनः उथा ज्वि । পিতৃদেবমহুষ্যাণাং ভূতানাঞ্চ তথার্চনম্। ক্রতা বিভ্বতঃ পশ্চাদ্গৃহস্থো ভোকুমইতি॥ প্ৰাৰুখোৰৰুখে। বাপি স্বাচান্তো বাপ্ৰতঃ শুচিঃ। ভুঞ্জীতান্নঞ্চ ভচ্চিতো হার্ড্জারু: সদা নর:॥ উপঘাতাদৃতে দোষং নাক্তক্তাদীরয়েৰুধ:। প্রত্যক্ষণবৰণং বর্জ্যমন্নমত্যুফ্টমেব চ॥ ন গচহন চ ভিঠন বৈ বিগুতোৎ দর্মাস্থান্। কুবৰীত নৈৰ চাচমন্যৎ কিঞ্চিদিপি ভক্ষরেৎ। উচ্চিষ্টো নালপেৎ কিঞ্চিৎ স্বাধারঞ্চ বিবর্জ্জয়েৎ। গাং ব্রাহ্মণং তথা চাগ্রিং স্বমুদ্ধনেঞ্চ ন স্পৃশেৎ॥ ন চ পশ্রেদ্রবিং নেন্দুং ন নক্ষত্রাণি কামতঃ। ভিন্নাসনং তথা শ্ব্যাং ভালনঞ বিবৰ্জ্জয়ে९॥ ওরণামাসনং দেরমভ্যথানাদিসংকৃতম্। क्षरूक्तः उथानाभमि विवासन भूर्वकम्। ভথামুগমনং কুৰ্য্যাৎ প্ৰতিকৃদং ন সঞ্জপেৎ ॥ देनकरखन्छ ज्ञील न क्यांत्रकरलाईनम्। न वार्याक्षान् नायो ८४२: क्सीं उ व्हिमान् ॥

श्रीष्ठ न नत्या नत्या न भन्नीक कर्माहन । । ন পাণিভ্যামুভাভ্যাঞ্ক ততুরেত শিরস্তপা। ন চাভীক্ষং শিরঃস্নানং কার্য্যং নিষ্কারণং নরৈঃ। শির:সাতশ্চ তৈলেন নাকং কিঞ্চিদপি স্পৃশেৎ॥ व्यनशास्त्रम् मर्व्यम् श्वाशाम्यः विवर्क्कस्य । ব্ৰাহ্মণানিলগোস্ব্যান্ন মেছেত ক্ষাচন। উमञ्जूरथा निव। त्रावाव्यमर्शः मिक्नाम्यः । অবাধাস্ যথাকামং কুর্য্যাগ্রতপুরীষয়োঃ ॥ ष्ट्रकुडः न खरदोर्जि शेष्ट्रकुक्तरेकेनः क्षेत्रोप्तरहर । পরিবাবং ন শৃণুয়াদভেষামপি কুর্বভাম্ ॥ পস্থা দেয়ো আহ্মণানাং রাজ্ঞো ছঃখাতুরস্ত চ। বিদ্যাধিকশু শুর্বিণ্যা ভাষার্বস্থ যবীষ্দ:॥ মুকার বিধিরাণাঞ্চ মত শোর ভেকস্ত চ। পুংশ্চলাাঃ কুড়বৈরক্ত বালস্ত পতিভ্রস্য চ ॥ দেবালয়ং চৈভ্যভক্ষং ভবৈৰ চ চতুষ্পথম্। বিদ্যাধিকং গুরুং দেবং বুধঃ কুর্যাৎ প্রদক্ষিণম্। উপানদ্বস্থমাল্যাদি ধৃত্যটেন্যর্ন ধারয়েৎ। উপবীতমলঙ্কারং করকঞ্চৈব বর্জ্বেৎ ॥ চতুর্দ্মপ্রাং তথাষ্টম্যাং পঞ্চদ্যাঞ্চ পর্বস্থ। তৈলাভ্যঙ্গং তথা ভোগং যোষিতক্ষ বিবর্জ্জয়েৎ । न किश्रभावसम्बन्धाः शास्त्रस्थित कर्ताहन । न हालि विकिट्यर शामी शामः शामन नाक्रामः মর্মাভিঘাতমাকোশং পৈশুনাঞ্চ বিবর্জয়েৎ। দন্তাভিমানতীকানি ন কুব্বীত বিচক্ষণঃ॥ মৃথোনাতব্যদনিনো বিক্পান্ মায়িনস্তথা। न्। नाष्ट्राः भाष्ट्रां काष्ट्राः विष्या । পরস্য দণ্ডং নোদ্যচ্ছেচ্ছিক্ষার্থং পুত্রশিষ্যয়ো:। ভদ্লোপবিশেৎ প্ৰাজঃ পাদেনাক্ৰম্য চাদনম্। সংযাবং কুসরং মাংসং নাঝার্থমুপসাধ্যেৎ। সায়ং প্রাতশ্চ ভোক্তব্যং কৃত্বা চাতিথিপূজনম্। প্রাগ্নে। দল্পো বাপি বাগ্যতো দস্তধাবনম্। কুৰ্ববীত সততং বৎস বৰ্জ্জেয়ে ছৰ্জ্জাবী ৰূধ:॥ নোদক্শিরা: খপেজ্জাত্ন চ প্রতাক্শ্রিরা নরঃ শিরস্যান্তঃমাহায় শস্বীতাপ প্রন্দরম্॥ ন তুগৰুবতী ৰপদু সায়ীত ন তথা নিশি। উপরাগে পরং লানমৃতে দিনমুদান্তম্॥ অপমৃজ্যার চামাতো গাতাণ্যমরণাণিভি: । न ठालि ध्नेरप्र (क्नान् वाननी न ठ ध्नरम् ॥ নামূলেপনমাদদ্যাদসাতঃ কহিচিদ্ব্ধঃ। ন চাপি রক্তবাসা: স্যাচ্চিত্রাসিতধরোহপি বা

न ह कूर्यादिभयान्यः वानरमानीभि कृतरम। বৰ্জাঞ্চ বিদশং বছমভাস্থোপ্তভঞ্চ যৎ ৷ কেশকীটাবপরঞ্জুঞ্জ শ্বভিরবেকিতম্। অবলীঢ়াবপরঞ্চ সাবোদ্ধরণদ্ধিতম্॥ পুর্চমাংসং বুধামাংসং বর্জামাংসঞ্চ পুত্রক। ন ভক্ষরীত সভতং প্রতাক্ষলবণানি চ॥ বৰ্জ্জাং চিরোবিতং পুত্র ভক্তং পযু্রিষিতঞ্চ যৎ। পিষ্টশাকেক্পয়সাং বিকারান্নুপনন্ন ॥ তথা মাংসবিকারাংশ্চ তে চ বর্জ্জ্যাশ্চিরোমিডাঃ উদ্ভারসমনে ভানো: শয়নঞ্চ বিবর্জন্মৎ ॥ নাল।তো নৈৰ সংবিষ্টো ন চৈৰান্যমনা নরঃ। न देवत भग्रत त्न। व्हापूर्विष्टे। न भक्त । ন চৈকবজোন বদন্ প্ৰেক্ষতামপ্ৰদায় চ। ভুঞ্জীত পুরুষ: লাত: সায়ং প্রাতর্যগাবিধি ॥ প্রদারা ন গন্তব্যাঃ পুরুষেণ বিপশ্চিতা। ইটাপুর্তাযুষাং হন্ত্রী পরদারগতিনু ণঃম্॥ ন হীদৃশমনায়ুষ্যং লোকে কিঞ্চন বিদাতে। যাদৃশং পুরুষদোহ পরদাবাভিমর্থন্॥ (मरार्फ्रनाधिकार्यानि छथा अर्ऋिजाननम्। কুৰ্বীত সমাগাচমা তথদন্ত্ৰিকিয়াম্॥ অফেনাভিরগন্ধাভির দ্ভিরচ্ছাভিরাদরাৎ। আচামেৎ পুত্ৰ পুণ্যাভি: প্ৰান্ত্ৰোদল্বথোহণি বা অন্তৰ্জনাদাৰস্থাৰুলীকান্ম ধিকস্থলাং। ক্রতশৌচাবশিষ্টা ত বর্জ্জয়েৎ পঞ্চ বৈ মৃদঃ॥ প্রকালা হত্তৌ পানে চ সমভুক্ষা সমাহিতঃ। অন্তৰ্জাত্বস্তথাচামেৎ ত্রিশ্চতুর্ক। পিবেদপঃ॥ পরিমৃজ্যা বিরাস। তেং স্থানি মৃদ্ধানমেব চ। দমাগাচম্য ভোষেন ক্রিয়াং কুর্ববীত বৈ শুচিঃ। দেবতানামূষীণাঞ্চ পিতৃণাক্টেৰ যত্ৰতঃ। সমাহিতমনা ভূজা কুক্ষীত সততং নরং॥ কুরা নিষ্ঠীবা বাসশ্চ পরিধারাচমেদুবুধঃ। ক্তেহবলিতে বাত্তে চ তথা নিষ্ঠীবনাদিষু॥ क्रां। नाहम नः म्लर्नः (जाल्डमार्कनर्ननम्। क्कीं जानवनकाि प्रक्रिग्यावनमा देव ॥ যথাবিভবতো (ছতৎ পূর্মভাবে ততঃ পরম্। অবিদামানে পূর্ব্বোক্তে উত্তর প্রাপ্তিরিব্যাতে ॥ ন কুৰ্য্যাদ্স্তসভ্ৰৰ্ষং নাশ্মনো দেহভাড়নম্। यशाधात्रनाचाकानि मन्तारमान्त विवर्कत्वर ॥ সন্ধ্যায়াং মৈথুন্ঞাপি তথা পছান্মেব চ।। পূর্কাছে তাভ দেবানাং মহুষ্যাণাঞ্চ মধ্যমে।

ভক্তা তথাপরাছে চ কুর্বীত পিভৃপুত্রনম্॥ শিরঃমাতশ্চ কুর্বীত দৈবং পৈত্র্যমধাপি বা। প্রায়ুখোদব্যুখো বাপি শ্বশ্রুকর্ম চ কার্যেৎ॥ ব্যক্তিনীং বর্জ্জয়েৎ কন্যাং কুলজামপি রোগিণীম্। বিক্বতাং পিক্লাকৈৰ বাচাটাং সৰ্বসূষিভাম্॥ অবাঙ্গীং সৌম্যনাগাঞ্চ সর্বলক্ষণক্ষিতাম । তাদৃণীমুদ্ধহেৎ কতাং শ্রেদ্ধঃকামোলরঃ সদা 🕸 उदरहर পিতৃমাজোশ্চ मश्रमीः পश्रमीः उसा। রক্ষেদারান তাজেদীর্ঘাং দিবা চ স্বপ্লটমগুনে ॥ পরোপতাপকং কর্ম জন্তুপীড়াঞ্চ বর্জ্জয়েৎ। উদক্যা দর্ববর্ণানাং বর্জ্যা রাজিচভৃষ্টমুম্॥ স্ত্রীজন্মপরিহারার্থং পঞ্চমীমপি বর্জন্বেৎ। ততঃ ষষ্ঠাং বজেন্তাত্যাং শ্রেষ্ঠা মুগ্মাস্থ পুত্রক॥ যুগান্ত পুতা জায়তে স্থিয়োযুগান্ত রাজিয়। তম দ্যুগাস্থ পুত্রাণী সংবিশেত সদা নর:। বিধিমিণোহহি পূর্বাথ্যে সন্ধ্যাকালে চ পুত কাঃ কুরকর্মণি বাজে চেজীসভাগে চেপুদ্রক। সায়ীত চেলবান্ প্রাজঃ কটভূমিমুপেভাচ ॥ দেববেদ ছিজাতীনাং সাধুস ভামহাত্মন।মৃ। গুরোঃ পতিব্রতানাঞ্তথা যত্ত্তপথিনাম্॥ পরিবাদং **ন কুর্ব্বীত পরিহাসঞ্চ পুত্রকঃ।** কুর্ব্ব তামবিনীতানাং ন শ্রো চব্যং কথঞ্চন ॥ त्ना९कृष्टेभयगमनत्यार्नाभकृष्टेख हाक्टह्र । ন চামকলাবেশঃ ভার **চামকলা**বাগুভবেৎ॥ ধবলাম্বরদংবীতঃ সিতপুষ্পবিভূষিতঃ। নোদ্ধতোরস্তম্ট্রু নাবিনীতৈক পঞ্জিঃ॥ शरक्रदेनाजीः न हानीटेनर्न ह टहार्यामिन्सिटेजः । न ठाडिवाय्रगीरेनम्ड न न्रेंबर्नानि रेवविणिः॥ न वक्तकी जिन्ने नारेनर्वक्तकी পতि जिख्या। मार्क्तः न विनिष्ठः कूर्याप्त ह नारेनर्न निन्मिरेष्ठः ॥ न मर्ख्यक्रिकिनिकार न ह देववशदेवनदेवः ॥ কুৰ্বীত সাধুভিমৈঁগ্ৰীং সদাচারাবলম্বিভি:। প্রাটক্সরপিশুনৈ: শক্তৈ: কর্ম্বাদ্যোগভাগিভি: বেদ্বিস্যাত্রভন্নাইড: সহাসীত সদা বুধ:। সুস্দীকিতভূপালয়াতক্ৰওৱৈ: সহ ॥ ঋত্বিগাদীন্ ষড়র্ঘ।ইনের্চ্চেরেচ্চ গৃহাগভান্। যথা বিভবতঃ পুত্র বিজ্ঞান্ সম্বংসরোষিতান্॥ অৰ্চয়েন্মধুপৰ্কেণ ষ্থাকালমভব্ৰিভ:। ভিষ্ঠেচ শাসনে ভেষাং শ্রেরস্থামো বিলোভমঃ। न ह छान् विवासकी भागां कृष्टे का नि देखः नमा ॥

नगागुगुगुर्हितः कृदा यथ। शानमञ्जन्मा । मुम्बद्धर जरना विकार मन्तर्रोठक वाह नी: क्रमार व्यवभार तकरन ममार व्यवानार भाउरम छड:। তৃতীয়াকৈব গুহেছাঃ কশাপায় তথাপরাম ॥ करकारसम्बद्धाः पद्धाः प्रमाप्त्रक्विलः उकः। পূর্ব্বাথ্যাতং ময়া য়ং তে নিভাকশ্বক্রিয়াবিধৌ॥ বৈশ্বদেবং ততঃ কুর্য্যাদ্বলয়স্ততা মে শুলু। যণাস্থানবিভাগন্ত দেবাফুদ্দিশা বৈ পূথক্ ॥ পর্জন্যালেধরিজীণাং দদ্যাক্ত মানকে ত্রয়ম। বায়বে চ প্রতিদিশং দিগভাঃ প্র'চ্যাদিতঃ ক্রমাৎ ত্রন্ত চাস্তবীকায় ক্র্যায় চ ম্থাক্রমম। বিধেভাইশ্চৰ দেবে**ভো। বিশ্বভৃতেভা** এৰ চ॥ উম্পে ভূতপত্তে দ্ব্যাচ্চোত্রভন্তত:। সধা নম ইতীতাক। পিত্ভাশ্চাপি দক্ষিণে ॥ ক্লখাপ্যব্যং বায়ব্যাং যলৈতন্তেতি ভাজনাৎ। का वर्भविष्ठिन देव ट्यांग्रन्म निमान्यवाविधि ॥ ততোহগাঁথং সমুদ্ধ তা হস্তকারোপকল্লনম। यथाविधि यथानगां भः जांक्यनात् यां भनामत् ॥ কুর্য্যাৎ কর্মাণি তীর্থেন স্বেন স্বেন যথাবিধি। নেবানীনাং তথা কুৰ্য্যাৰ ক্ষেণাচমনজিযাম্॥ অঙ্গৃঠোন্ডরতো রেখা পাণের্য। দক্ষিণস্ত তু। এতদান্দ্রমিতি থ্যাতং তীর্থমাচননায় বৈ॥ ज्ब्जिनालुष्ठेरशांतसः रेभकाः **औ**र्यमुनाझ्डम । পিতৃণাং তেন তোয়াদি দদ্যারান্দীমুখাদৃতে॥ ष्यञ्जलाद्य ड्या देनदः ८०न (प्रविक्रिमानिधिः । তীর্থং কনিষ্টিকামূপে কায়ং তেন প্রজাপতেঃ ॥ এবনেভিঃ দদা তীবৈর্দেবানাং পিত্তভিঃ সহ। সদা কার্য্যাণি কুবরীত নান্যতীর্থেন কহিচিৎ॥ जारक्षणाहमनः गुरु शिकाः रेशकान गर्सना । নেবভীর্থেন দেবানাং প্রাক্ষাপত্যং নিজেন চ॥ নালীমধানাং কুবর্বীত প্রাক্তঃ পিণ্ডোদক্তিয়াম্ পোজাপত্যেন তীর্থেন যচ কিঞ্চিৎ প্রজাপতে:॥ যুগপজ্জলমগ্রিঞ বিভূমান্ন বিচক্ষণঃ। গুরুদেখান প্রতি তথা ন চ পাদৌ প্রসারয়েং॥ नाठको उ ध्राखीः शाः खनः नाञ्जलिन। लिटवर ॥ (मोहकारलयू मर्द्यम् अक्ष्यद्वयु वा भूनः। ন বিলম্বেড শৌচার্থং ন মুখেনানলং ধনেৎ॥ তত্র পুত্র ন বস্তব্যং যত্র নাস্তি চতুষ্টরম্। ঋণপ্রদাতা বৈদ্যশ্চ শ্রোত্রিয়: দজলা নদী ॥ জিতানিত্রো নূপো যতা বলবান্ধমতৎপর:।

ভক্ত নিত্যং বদেৎ প্রাঞ্জ: কুভ: কুন্পতে ইংধ্দ্।

ঘলাপ্রধ্বা নুপভিষ্ত শক্তবত মহী।

পোরাঃ স্থাংবতা যত সভতং ন্যায়বর্তিনঃ।

ঘলামৎসরিলে। লোক।ভক্ত বাদ: স্থোদয়ঃ॥

শক্ষিন কুষীবলা রাষ্ট্রে প্রায়শে। নাভিভোগিনঃ।

ঘলৌশধান্যশেষানি বদেৎ তক্ত বিচক্ষণঃ॥

তক্ত পুল্ল ন বস্তব্যং যকৈত্ত ভিত্তবং সলা।

জিগীয়ুঃ পূর্ববৈরশ্চ জনশ্চ সততোৎসবঃ॥

বদেরিভাং স্থালেল্যু সহবাসিষু পপ্তিছঃ।

ইত্যেতৎ কপিতং পুল্ল ময়া তে হিতকাম্যয়া॥

ইতি মাক্পেরে মহাপুরালে জলকান্ত্রশাদনে

সলাচারো নাম চভুদ্ধিংশাহ্যায়ঃ।

# পঞ্জিংশোহধ্যায়ঃ।

#### মদালদোবাচ।

অতঃ পরং শুণুষ ত্বং বর্জ্জা বর্জ্জা প্রতিক্রিয়াম। ভোজামরং পর্যবিতং স্বেহাক্তং চিবস্ম্ভতম ॥ অক্ষেহান্টাপি গোধম্যবগোর্যবিক্রিষাঃ। শশকঃ কচ্চপো গোধা শাবিৎ থডোগাইথ পত্ৰক II ভক্ষা হেতে তথা বৰ্জ্জো গ্ৰামশকবক্সটো। পিতৃদেবাদিশেষশ্চ প্রান্ধে ত্রান্ধণকাম্যয়। প্রোক্ষিতকোম্পার্থক থাদন মাংসং ন ছ্যাতি॥ শ্র্যাশ্রমণ রূপ্যাণাং রজ্জ নামপ বাদসাম। শাক্ষুলফলানাঞ্জপা বিদল্ডমুণাম॥ মণিবজ্পবালানাং তথা মৃক্তাফ্লস্ত চ। গাত্রাপাঞ্চ মন্ত্রষা:পামসুনা শৌচনিষ্যতে॥ यथायमानाः ८३/८म् । । वनः मञ्चर्यतन ह। मस्मश्रामक जालागाः किष्किकस्थन वार्तिना ॥ **म्**र्रिशनाकिनानाक प्रताल्थ**लक** ह। সংহতানাঞ্চ বস্তাণাং ক্রোক্ষণাৎ সঞ্চয়সা চ ॥ বৰ বানামশেৰাণামখুমুচছোচমিষ্যতে। তৃণকাগ্রীষধীনাঞ্চ প্রোক্ষণাচ্ছৃদ্ধিরিষ্যতে॥ আবিকানাং সমন্তানাং কেশানাঞ্চাপি মেধাতা। সিদ্ধার্থকানাং কছেন তিলককেন বা পুনঃ॥ সাধুনা ভাত ভবতি উপঘাত্বতাং সদা। তথা কার্পাদিকানাঞ্ বিশ্বদ্ধিজ্লভ্যানা॥ দাকদন্তান্ত্রিশুঙ্গাণাং ভক্ষণাচ্ছুদ্ধিরিয়তে। পুন:পাকেন ভাণ্ডানাং পার্থিবানাঞ্চ মেধ্যতা॥ শুচিটৈৰ্জ্ঞাং কাক্ত্স্তঃ পণ্যং যোষিমুখং তথা।

র্থ্যাগ্তমবিভাতং দঃস্বর্গাদিনাস্তম্ ॥ বাক্পশতং চিয়াতীতমনেকান্তরিতং লঘু। অতিপ্ৰভৃতং বালঞ্চ বৃদ্ধাতুরবিচেষ্টিভম্ ॥ কর্মান্তাকারশালাশ্চ স্তনন্ধয়স্কুতাঃ প্রিয়ঃ। ঙ্চিনাশ্চ ভবৈথবাপঃ প্রবস্ত্যোহগন্ধবুদ্দাঃ॥ इनिर्वित्रशास्त्र कानामाहशाङ्कनरशाक्रदेगः। (लपाइत्लगमार (मकादिय मःमार्क्जनार्कनार ॥ কেশকীটাবপরে চ গোঘাতে মিক্ষকায়িতে। মৃদস্ভবানা ভাত প্রোক্ষিতব্যং বিওদ্ধরে॥ উত্তরাণাময়েন কারেণ ত্রপুদীসয়ো:। ভত্মাৰুভিন্ঠ কাংদানাং গুদ্ধি: প্লাবো দ্ৰব্যা চ ॥ অমেধাকিদা মৃত্তে दिश्लका পহরণেন ह। ष्यत्मिगोरेक्षव जिल्ल देवार्वनशक्ता भशावजः॥ ঙ্চি গোভৃপ্তিকুৎ ভোয়ং প্রকৃতিভঃ মহীগ্রুম্। তথা মাংসঞ্চ ভাশক্রব্যাদাদিনিপাতিতম ॥ বণ্যাগতঞ্চ চে**লানি** ভাত বাতাচ্চুচি স্থুতুম্॥ রজোহগ্রিরখো গৌশ্ছায়া রশায়ঃ প্রনো মহী। বিক্রযো মিককাদ্যাশ্চ ছষ্ট্রমঙ্গাদদোষিণ:॥ अकारको भूथर**ङ। ८**मरभूगे न ८गाव९ मम्। हानगम् মাতৃঃ প্রস্রবণং মেধ্যং শকুনিঃ ফলপাতনে 🛭 আসনং শয়নং যানং নাবঃ পথি তৃণানি চ। সোমস্ব্যাংওপবনাঃ গুণুত্তে তানি পণ্যবৎ ॥ রথ।বিদর্পণস্থানকুৎপানমানকর্মস্থ। আচামেচ্চ যথানায়ং বাসে। বিপরিধায় চ ॥ लुडोनामभागश्मदेशीविवशाकर्कन्ता छनाम । প্রেটরচিতানাঞ্চ মেধ্যতা বা্যুস্স্নাৎ॥ প্রতাপহতাদরাদগ্র**ংমুক্তা সম্ভা**তেও। শেষদ্য প্রোক্ষণং কুর্যনাদান্তম্যা স্তর্থণ মূদ্য ॥ উপবাদলিরাত্তমত ছষ্টভকাশিনো ভবেৎ। অজাতে জ্ঞানপুর্বস্ত তদোযোগশমেন ত ॥ উদক্যা**খশুগালানী**ন স্তিকাস্থাবিদায়িনঃ। 🚟 👸। সামীত শৌচার্থং ভবৈধৰ মৃতহারিণঃ ॥ নারং প্রপ্তাতি সমেহং স্নাতঃ খ্যাতি মানবঃ। আচম্মেৰ ভূ নিংশ্বেহং গামান ভাৰ্ক্ষীক্ষা বা ॥ न नज्यस्य उदेशवास्क्षीवरनाधर्कनानि ह। नानानामो विकालम् बाक्क छिए केन कन ॥ ন চালপেজ্জনদ্বিষ্টাং বীরহীনাং তথা প্রিয়ম। গৃহাহচ্ছিষ্টবিশ্ম ত্রপাদাস্থা দি কিপেন্ধৰিঃ॥ পঞ্চ পিণ্ডানমুদ্ধ ভা ন স্নায়াৎ পরবারিণি। থায়ীত দেবথাতেমু গঙ্গাহ্রদসরিৎস্থ চ॥

(मवङा পिङ्गका बयक मञ्जलि निकटेकः। ক্লতা তু স্পৰ্শনালাপং ওধ্যে ভাৰ্কাবলোকনাৎ ॥ অবলোক্য তথোদক্যামস্তঃব্ধং পতিতং শ্বম্। বিধৰ্মিত্তিকাৰগুবিবল্পস্তাবেদায়িনঃ ॥ স্ত্রিগাতকালৈচব প্রদাররভাশ্চ যে। এতদেব হি কর্ত্তব্যং প্রাক্তিঃ শোধনমাম্মনঃ । অভোদাং স্তিকাষ গুমার্জ্রাপুশকুরুটান্। পতিতাবিদ্ধচণ্ডালমূ ইহাবাংশচ ধর্মবিৎ ॥ गःल्रा ७ थाट झानाष्ट्रकृताशाम्कद्वो । ত্বচ্চ স্তিকাশোচদ্বিতান **পু**রুষানপি ॥ তশ্ৰ চামুদিনং হানিগুহে নিভাক্ত কৰ্মণঃ। যশ্চ ব্ৰাহ্মণসম্ভাক্তঃ কি বিধী স নরাধনঃ॥ निकास कर्याणा शानः न कून्तीक कन हन। তস্ত অকবণে বন্ধঃ কেবলং মৃতজন্মসু॥ प्रभादः जान्नपश्चिष्टिक्षान्तरहामापिविक्किन्छः। क जित्या धारणां ३४० देव एक। माराई तमन ह ॥ শুদ্রস্ত মাসমাধীত নিঞ্কর্মবিবর্জিত:। ৩তঃ পরং নিজং কর্ম্ম কুর্য্যুট সর্মের গণোদিতম্॥ প্রেভার সালগং দেয়ং বহিদ্যা তু গোতিকৈ:। व्यथरमञ्जू हजूर्य ह मश्रम नगरम छणा ॥ ভত্ম-श्रिष्ठगनः कोर्याः हजुर्त्य शाखिरेकिफित्न। উৰ্দ্ধণ সঞ্চয়নাৎ ছেষানঙ্গস্পৰ্শো বিধীয়তে॥ সোন কৈন্ত জিয়া: সর্বা কার্যা।: সঞ্চয়নাৎ পরম ম্পূৰ্ণ এব সপিতানাং মৃতাহনি তথোভয়ো:॥ অবেকসৃক্ষমাশস্ত্রতায়োহরন বহিষ্। বিষপ্রণাত। দিমৃতে প্রায়ে। নাশক্ষোবিপি॥ বালে দেশাস্থ্যে ৮ তথা প্রেক্তিতে মৃতে। मनाः लोहमवारेङ्गक द्वारमुक्कमलीहकम ॥ স্পি ভানাং স্থিত স্তু মৃতে হল খিন মূলে। প্রসাম্পোচসমাধ্যাতৈঃ কার্য্যান্তত্ত্ব দিলৈঃ ক্রিয়াঃ এষ এৰ বিধিদ হৈ। জনাভাগি হি হতকে। স্পিতানাং স্পিতেষ যথাবৎ সোদকেষ্ চ॥ জাতে পুত্রে পিড়ঃ স্নানং সচেশস্ত বিধীয়তে॥ ততাপি যদি চাঞ্জিন ফাতে লামতে চাপর:। ততাপি শুদ্ধিকৃদিয়া প্ৰবিধানবতো দিনৈ:॥ प्रभवानभगामार्क्षभागमः देथा फिटेनर्ग देखः। चाः चाः कर्षाक्रियाः कूर्याः मर्स्स वर्गा यथाविधि ॥ প্রেতমুদ্দিশ্র কর্ত্তব্যমেকো দিষ্টং ততঃ পরম। मानानि हेर रमशानि बान्नर्गाटमा मनी विकि:॥ যদ্যদিষ্টতমং লোকে যতাপি দ্বিতং গৃহে।

তত্ত্বদ্ধণৰতে দেৱং তদেবাক্ষমিক্তা।
পূৰ্বৈত্ত দিবলৈ: স্ট্ৰা সলিলং বাহনাবুধম্।
প্ৰতোদদণ্ডোচ তথা সমাধ্যা: কুতক্তিমা: ॥
ক্ৰ্ব্ঃ: সমন্তা: শুচিন: প্ৰতেই চ ভূতিদা: ॥
ক্ৰ্য্ঃ: সমন্তা: শুচিন: প্ৰতেই চ ভূতিদা: ॥
ক্ৰ্য্ঃ: সমন্তা: শুচিন: প্ৰতেই চ ভূতিদা: ॥
ক্ৰেয়েত্বা অমী নিত্যং ভৰিত্ব্যং বিণশিচ চা।
ধৰ্মতো ধনমাহাৰ্য্যং ঘটব্যকাপি বজ্ত: ॥
ঘচ্চা পি কুৰ্কতো নাজা ভূতপ্ৰামেতি পূত্ৰক।
তৎ কৰ্ত্বামশক্ষেন যৱ গোল্যং মহাজনে ॥
এবমাচরতো বংশ পুক্ষত্ত গৃহে সক্তঃ।
ধৰ্মাৰ্থিকাসক্ত্ৰান্তা প্ৰতেই চ শোভনম্॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণেহলকাত্র-শাদনে বর্জ্জাবর্জ্জাকথনং নাম পঞ্চত্তিংশোহধ্যায়ঃ।

## ষট্তিংশোহধ্যায়ঃ।

---:--

#### ৰত উবাচ।

স এবমত্বিট: সন্ মাকা সম্প্রাপ্য যৌবনম্।
ঋতধ্যজন্ত শ্চকে সম্যুক্ষারপরিগ্রহম্ ॥
পুলাংশ্চেৎপাদরামাস যকৈ জশ্চাপ্যজ্বিত্য।
পিতৃশ্চ সর্বকালের চকারাজ্ঞালুপালনম্ ॥
ততঃ কালেন মহতা সম্প্রাপ্য চরমং বয়: ।
চক্রেহভিষেকং পুল্রস্ত তক্ত রাজ্যে ঋতধ্বজঃ ॥
ভার্যায়া সহ ধর্মান্যা যিয়া মুস্তপ্সে বনম্ ।
অবতার্ণো মহারকো মহাভার্গো মহাপ্তি: ॥
মানাল্যা চ তানরং প্রাহেদং পশ্চিমং বচঃ ।
কামোপভোগ্যংস্প্রহানায় স্বৃত্ত বৈ ॥

যদা ছ: থমসহাং তে প্রিয়বন্ধ্বিয়োগজম্।
শক্রবাধোত্তবং বাপি বিত্তনাশা অসভবম্॥
ভবেং তৎ কুর্বতো রাজ্যং গৃহধর্মাবশহিনঃ।
ছ: থায়তনভূতো হি মমঘালম্বনো গৃহী॥
তদত্বং পুত্র নিম্ময় মন্তাদ্দ্লীয়কাং।
বাচ্যং তে শাসনং পটে স্বাক্ষরনিবেশিতম্॥

ममानरमाग्हा

ৰুড় উবাচ। ইত্যুক্তা প্ৰদদে ওকৈ সোবৰ্ণ সালুলীয়কম্। আনিষ্চাপি বা বোগ্যাঃ পুক্ষন্ত গৃহে সতঃ॥ ততঃ কুবলয়াখোহসৌ সাচ দেবী মদালসা। পুলায় দহা তজাজ্যং তপসে কাননং গতঃ॥ ইতি মার্কভেয়ে মহাপুরাণে মদালসোপা-খ্যানং নাম ষট্জিংশোহধায়ঃ।

#### সপ্ততিংশোহধ্যায়ঃ।

\_\_ 0 0 0 \_\_

#### জড় উবাচ।

(मार्शामार्का यथे शांषः भूखवम् मिखाः अवाः। পালয়ামাদ ধর্মাত্মা তে তে কর্মণাবস্থিতাঃ॥ इट्डियू मधः निष्डियू मगुक् ह পরিপালনম্। কুর্বন্পরাং মুদং লেভে ইয়াজ চ মহামথৈ:।। অজায়ত্ত সূতাশ্চাসা মহাবলপরাক্রমা:। धर्याञ्चारना महाञ्चारना विमार्गलवित्रशिहनः॥ চকার সোহর্থং ধর্মেণ ধর্মমর্থেন চাত্মকান্। তয়ে। বৈশ্চবাবিবোধেন বুভূজে বিষয়ানপি ॥ এবং বহুনি বর্ষাণি তস্য পালয়তো মহীম্। धर्मार्थकाममञ्जूष ख्यारुतकमर्थ्या ॥ বৈরাগ্যং নাদ্য সঞ্জে ভুঞ্জো বিষয়ান্ প্রিয়ান্। ন চাগ্যলমভূৎ তদ্য ধর্মার্থোপার্জনং প্রতি॥ তং তণা ভোগদংদর্গপ্রমন্তম জিতে ক্রিয়ম্। সুবাহন।ম ভ্রাব্রাতা ভক্ত বনেচরঃ॥ তং বুবোধয়িষু: সোহ্থ চিরং ধাাছা মহীপ্তি:। তবৈরিদংশ্রহং তহ্স শ্রেমেয়ামন্ত ভূপতেঃ॥ ততঃ দ কাশিভূপালমুদীর্বলবাহনম্। স্বাজ্য: প্রাপ্তমাগচ্ছছ**ল: শরণ: কুতী**॥ সোহপি চক্রে বলোদ্যোগমলর্কং প্রতি পার্থিব:। দৃত্ঞ প্রেষয়।মাদ রাজ্যমদৈয় প্রেদীয়তাম্॥ সোহপি নেচ্ছ । তদা দা হুমাজাপুর্বং স্বধর্মবিং। প্রত্যবাচ চ তং দ্তমলর্ক: কাশিভৃভ্ত:॥ মামেবাভ্যেত্য হার্ক্যেন যাচতাং রা**জ্যমগ্রত্তঃ।** নাকোন্তা সম্প্রদাস্যামি ভয়েনালামপি ক্ষিতিম্। স্থবাহরণি নো যাক্রাং চকার মতিমাংস্তদা। ন ধর্ম: ক্ষজিয়স্যেতি যাক্রা বীর্যাধনো হি স:॥ ততঃ সমস্তদৈত্তেন কাশীশঃ পরিবারিতঃ। আক্ৰান্তমভাগান্তাষ্ট্ৰমলক্ষ্য মহীপতে:॥ ञनखटेत्रक मःरक्षयमरङाङा छपनखत्रम्। ८७भाषनाज्येमक् टेजाः नमाक्रमानव्यमम् ॥

ष्यशिष्यक मामखाः खमा बार्ड्डोभरत्राधदेनः। ভথা ছুৰ্মান্থপালাংশ্চ চক্ৰে চাটবিকান বংশ ॥ काः किटकां पञ्चमात्मन काः किटब्रुटमन पार्थिवान्। সাল্মবান্যান্ বশং নিজে নিভ্তার্ত্তীয় যেহভবন্। ততঃ সোহল্লবলো রাজা পরচক্রাবপীড়িতঃ। (काषक्षत्रमवात्भातेकः भूत्रकाक्षत्रभाजातिना ॥ हेचः मन्त्रीष्ठामानञ्च कींगरकारमा निरन मिरन। বিষাদমাগাং প্রমং বাক্লছঞ্চেভ্সঃ॥ আর্ত্তিং স পরমাং কাপ্য তৎ সম্মারাঙ্গুরীয়কম্। যত্দিশ্র পুরা প্রাহ মাতা তদ্য মদালদা॥ ততঃ স্নাতঃ ওচিভূজি। ৰাচয়িতা বিজোতম:ন্। নিস্কব্য শাদনং ভক্ষাদদৃশে প্রক্টাক্রম্॥ তত্ত্ব লিখিতং মাতা বাচয়ামান পার্থিক:। **अकाम भूगका (काश्या)** अहर वी ९ कृत्र (गाउन: ॥ সঙ্গঃ সর্কাত্মনা ভ্যাজাঃ স চেৎ ভাকুং ন শকাতে স সন্তি: সহ কর্ত্তব্য: সতাং সঙ্গে। হি ভেষজন্॥ কামঃ সর্বাত্মনা হেয়ে। হাতুঞ্চেছকাতে ন স:। মুমুক্ষাং প্রতি তৎ কার্য্যং দৈব ত্র্যাপি ভেবজন্ ॥ বাচয়িত্ব। তু বহুশো নৃণাং শ্রেয়ঃ কথস্থিতি। মুমুক্ষয়েতি নি: শিচ্তা সাচ তৎসক্ষতো যতঃ॥ ততঃ স সাধুসম্পর্কং চিন্তয়ন্ পৃথিবীপতিঃ। দতাত্রেয়ং মহাভাগমগচ্ছৎ পরমার্তিমান্।। তং সমেতা মহাআনিমকলাধমস্পিন্য। প্রণিপত্যাভিদম্পুরু যথাভাগমভাষত ॥ একন্ কুরু প্রসাদং মে শরণং শরণার্থিনাম্। হংখাপহারং কুরু মে ছংখার্ডদাভিকামিন:॥ দতাতেম উবাচ।

হঃথাপহারমলৈয়ৰ করোমি তব পার্থিব। সতাং ক্রহি কিমর্থং তে হঃধং তৎ পৃথিবীপতে॥

সভা উবাচ।

ইত্যক্ত কি স্থগানাগ স রাজা তেন ধীমত।।

তিবিধস্তাপি তৃঃথক্ত স্থানমাত্মানমের চ ॥

স বিম্ব্য চিরং রাজা পুনঃ পুনঞ্চলারধীঃ।

আ্যানমাত্মনা ধীরঃ প্রহেলদমধারবীং॥

নাহম্বরী ন সলিলং ন জ্যোতিরনিলো ন চ।

নাকাশং কিন্তু শারীরং সমেতা ক্থমিব্যতে ॥

কুনাতিরিকতাং যাতি পঞ্চেক্ছিন্ ক্থাক্থম্।

মদি স্থান্ম কিং ন স্যাদস্তত্ম্পে হিতং মির ॥

নিত্যপ্রভ্তস্তাবে ন্নাধিক্যানতোলতে।

মনস্বস্থিতং তৃঃধং ক্থং বা সানস্ক্ষ ধং।

যভক্তে। ন মে ছঃধং অংধং বান ফ্রং মনঃ ॥ নাইকারোন চ মনো বুদ্দিন্হং যভক্তঃ। অক্তরণকং ছঃধং পারকাং মম ডৎ কথম্॥

নাহং শরীরং ন মনো ঘটোইছং शृथक् भन्नी द्रायानमञ्जवाहम्। তৎ সম্ভ চেডক্সধ্বাপি দেছে स्थानि इ:थानि ह किः समाज ॥ রাজ্যস্য বাহ্বাং কুরুতেহরজোহ্স্য (पर्मा (ह९ भक्षमद्रः म त्राणिः। গুণপ্রবৃত্যামম কিং মুত্ত তৎত্ব: স চাহঞ্চ শ্রীরতে।১্ভা:॥ न यमा इञ्जामिकम्भारमधः মাংসং ন চাষীনি শিরাবিভাগ:। कछमा नांगाचंत्रशामित्कादेवः সংলাহপি সম্বন্ধ ইহান্তি পুংস:॥ তত্মার মেহরিন চ মেহতি ছ:খং न म् इसर नाशि भूतः न दकायः। ন চাৰ্যনাগা দি বলং ন ভদ্য নাক্ত্রা বা ক্সাচিতা মুমান্তি॥ যথা পটাকুন্তকমগুলুন্থ-याकां नरमकः वह्या हि पृष्टेम्। তথা স্থবাতঃ স চ কাশিপোহ্হং भत्त्र ह (मर्विष् भंदीद्र खटेन:॥ ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে পিতাপুল-সংবাদে আত্মবিবেকো নাম मश्रकिःरमार्थागः।

অফতিংশোহধ্যায়ঃ।

ব্দ ভ উবাচ।

দন্তাত্ত্বাহ কৰে। বিশ্বং প্রশিপতা স পাথিব:।
প্রত্বোহ মহায়ানং প্রশ্লাবনতো বচ: ॥
সমাক্ প্রপশ্ততো ব্রহ্মন্ মম ছংখং ন কিঞ্ন।
অসমাদার্শিনো মগ্নাঃ সর্কদৈবাস্থাণ্বে ॥
যমিন্ যমিন্ সমাণকা বৃদ্ধিঃ প্রংসঃ প্রশায়তে।
তত্ত্তঃ সমাদার ছংখাত্তের প্রায়ক্তি ॥
মার্জারভক্তিত ছংখং যাদৃশং গৃহকুক্টে।
ন তাদৃঙ্মমতাশ্তে কলবিকেহণ ম্বিকে ॥
সোহহং ন ছংখী ন স্থী যতোহহং প্রক্তেঃ পরঃ
বো ভ্তাতিত্বো ভূটিঃ স্থত্থ্থাম্কাকে। হি সঃ

प्रसारकम छेवात । এবমেতররবার ষ্টেপ্তরাগতং হয়।। মনেতি মূলং ছঃধ্যান মমেতি চ নিরুতেঃ॥ মৎ প্রাদেব তে জ্ঞান মৃৎ প্রমিন মৃত্যম্। মনেতি প্রত্যাধো যেনে কিংপাঃ শালালিতুলবং ॥ অহ্মিত্যস্থাৎপলে। মুমেতিক্ষরবান মহান। গৃহক্ষেত্রোচ্চশার্শন প্রাদারা দণল্লব:॥ धन्य . जग्राशिका देनककान व्यविद्धः। পুণ্যাপুণারপুত্রশত স্থত্ঃখমহাফল:॥ তত্র মুক্তিণথব্যাপী মৃত্দম্পর্কদেচনঃ। বিধিৎসাভৃত্বমালাটো স্থাজানমহাতকঃ ॥ সংসারাধ্বপরিশ্রান্তা যে তচ্ছায়াং সমাশ্রিতঃ। ভ্ৰান্তিজানস্থাধীনান্তেষামাত্যন্তিকং কৃতঃ॥ বৈস্ত সংসক্ষণাধাণশিতেন মনভাতকঃ। ছিলো বিদ্যাকুঠারেণ তে গঙাস্তেন বর্মনা ॥-क्षांत्रा उक्षवनः भीठः नीत्रकश्वयकणेकम्। প্রাপ্রতির পরাং প্রাক্ষা নির্তিং বৃত্তিবর্জিতাঃ ॥ ভূতে ভিৰেময়ং সূলং ন জং রাজন্ন চাপাহম্। ন তন্মাত্রং ময়া বাচ্যং নৈবাস্কঃকবণাত্মকৌ॥ কংবা পশুমি রাজেজ জাধানময়মাবয়োঃ। যতঃ পরে। হি ক্ষেত্রজঃ সভ্যাতে। হি গুণায়কঃ। मन(का पृष्ठदेव यो का गृष्ठ न ८ छा छ मार यथ।। এক ত্বেহপি পুথগভাবস্তথা ক্ষেত্রাল্মনোর্প ॥ অণৰ্ক উবাচ।

ভ গবংস্থং প্রধান দিন মমাবিভূতিমূত্মম্।
জ্ঞানং প্রধান চিচ্ছা কিবিবেক কর্মী দৃশম্॥
কিন্তু বিষয়াক্রান্তে দৈহাঁববং ন চেত্রি।
ন চা প বেল্মি মুচ্যেয়ং কথং প্রকৃতিবক্ষনাং॥
কথং ন ভূমাং ভূমশ্চ কথং নিগুণতামিয়াম্।
কথক ব্রহ্মনৈকজং ব্রহ্মেয়ং শাবতেন বৈ॥
তব্মে যোগং তথা ব্রহ্মন্ প্রশতামাভিবাচতে।
সমাগ্রহি মহাপ্রাক্ষ সংসক্ষো ভূপকৃষ্ণাম্॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে পিতাপুত্রনংবাদে প্রামাই কিংলা হামাই কিংলাহধ্যায়: ।

# ঊনচত্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

-----

#### 😝 দন্তাত্ত্বেম উবাচ।

कानभूटकी विद्यार्था (याश्कारनन मह (याणिन সা মুক্তিব্ৰহ্মণ। তৈকামনৈকাং প্ৰাকৃতিভ থৈ:। মুক্তির্যোগাৎ তথা যোগঃ সমাগ্রানামহীপতে জানং হু:থে দ্বং হঃথং মম্বাদকতেত্বগাম্॥ তথাং দক্ষং প্রবরেন মুমুক্ষ্ট সন্ত্যজেররঃ। স্পাভাবে ম্মেত্যস্যা: খ্যাতেইানি: প্রজায়তে निर्माभवः स्थारेग्रव देवत्रांगां क्लायम्भनम्। জ্ঞানাণেৰ চ বৈরাগ্যং জ্ঞানং বৈরাগ্যপূর্ব্বকম। তদ্গহং যত্ৰ বসভিস্তভোষ্যং যেন জীবতি। यमुक्तरप्र करनरदोकः कानमळानम्यथा॥ উপভোগেন প্ৰাানামপুৰাানাঞ্চ পাৰ্থিব। কর্ত্রবালাঞ্চ নিত্যানামকামকরণাৎ তথা।। অদঞ্যাদপূর্বাদা ক্ষয়াৎ পূর্বা জ্রিতস্য চ। কর্মণো ব্রমাপোতি শ্রীরং ন পুনঃ পুনঃ॥ এতৎতে কথিতং রাজন যোগং চেমং নিযোধ ে যং প্রাপ্য বন্ধণো যোগী শাশতারাভাতাং ব্রজেৎ व्यारंगवाञ्चाचना रखरमा रंगाशिनाः म ६ छर्जयः কুবরীত ভজ্জরে যত্নং তস্যোপারং শৃণুম মে॥ প্রাণায়ামৈদহেদোবান ধারণাভিশ্চ কিলিমম। প্রত্যাহারেণ বিষয়ান্ধ্যানেনানীশ্রান্ গুণান্ যথ। পৰ্বতিধাতৃনাং দোধা দহৃত্তি ধানাতামূ। তথেক্রিয়কুতা দোষা দহুন্তে প্রাণনিগ্রহা২॥ <u>लायभः नांधनः कूर्यागः व्यानायाममा (गांगविषः ।</u> প্রাণাপাননিরোণস্ত প্রাণায়াম উদাহত:॥ लचू मरधा छ दो वाचाः व्यागाया मिद्धिर्या नि छः। তস্য প্রমাণং বক্ষামি তদলক শৃণুম্ব মে॥ লবুর দিশমত্রেস্ত দ্বিওণঃ সূতুমধ্যমঃ। এি গুণাভিস্ত মাত্রাভিক্তমঃ পরিকীর্তিতঃ। निरम्रायास्य भोजा-कारणां नघुकः ब्रुथा। প্রাণাগ্রামস্য সম্বার্থিং স্মৃতো ছাদশনাত্রিক: ॥ প্রথমেন জয়েৎ সেদং মধ্যমেন চ বেপথুম্। বিষাদং হি ভূতীয়েন জ্যেনোধানস্ক্রমাৎ।। মৃত্ত্বং সেবামানাস্ভ সিংহশাদ্দিক্সরা:। যথা যান্তি তথা প্রাণো বখ্যো ভবতি যোগিন: বগুং মত্তং যথেচ্ছাতো নাগং নয়তি হস্তিপ:। **उटेशव (शांती ऋछ्नः आंगः नम्नजि गांविडम् ॥** 

यथा हि प्राधिकः गिः दश मृशान् इश्विन मानवान्। তর विकि**পব**নঃ **কি खियः न नृ**गाः उन्नूम्। ত্মান্যুক: সদা যোগী প্রাণাধানপরে। ভবেৎ ॥ প্রয়তাং মুক্তিফলদং তদা।বস্থাচতুইয়ন্॥ ध्विष्ठः श्वात्रिख्या प्रसिः श्विमान्क मशैनटा। সকপং শুণু হৈচভেষাং কথ্যমানমহক্রমাৎ ॥ কর্ম্মণামিষ্টত্তীনাং জায়তে ফলসংক্ষর:। চেত্রে। ১পক্ষারত্বর সাধ্বব্রিকচাতে॥ ঐহিকামুল্লিকান কংমান লোভমোহাল্লকান স্বয়ম্ निक्षाटि मना (याती आश्रिः मा मार्किका लिकी । ষতীতাশাগতান্থান বিপ্রকৃষ্টতিবোহিতান। বিজানাতীলুত্ব, জ গ্রাণাং জানসম্পদা ॥ তুল্যপ্রভাবস্ত যদা যোগী প্রাপ্রাভি সম্পদম। তদা স্থিদিতি খাতো প্রাণায়াম্স্য সংস্থিতিঃ। यां छि अमानः (यनां मा मनः भक्ष ह वां सनः। ই ক্রিয়াণী ক্রিয়ার্থ শচ স প্রেমার ইতি আরু ছঃ॥ ইণ্য চ মহীপাল প্রাণারাম্যাল লক্ষ্ম। युक्ष उन्ह मना (याज्ञ यान्धि विकासनम् ॥ প্রাম্ক্রাস্নক।পি তথা স্বস্তিক্রাস্ন্ম। আহায় যোগং যুঞ্জীত কুড়া চ প্রণাণ জদি॥ খনঃ সমাসনো ভূষো সংজ্ঞাচরণাবুভৌ। সংবত্তাস্ত্রপ্রোক সম্যাথিষ্ট চা চাগ্রতঃ॥ भाविक सार निक्न देव भाव भाव अव इंड व्यक्त । কি স্বিত্রামিতশিবা দত্তৈর্দ্তার সংস্পৃত্রে ॥ ১প্রেখন ন: নিকাগ্রং সং দিশশ্চানবলোকয়ন্। বজ্যা তম্পো বুলিং সম্বোর্জস্তুপা 🖪 সঞ্জাদ্য নিৰ্ম্মালে ভৱে স্থিতে। যুঞ্জীত যোগবিং। हे जिया वी चित्र। र्राष्ट्राः था वा नी न् मन এव ह ॥ নিগহা সমবাধেন প্রভ্যাঞ্চরমু ক্রমেং। यस প্রতাহরেৎ কাখান সর্বাপাণীর কছেলঃ॥ সলাগ্রভিরেকছঃ পশুত্যাঝানমান্ত্রনি। ষ ৰাজ্যভাস্তৰং শৌচং নিজ্পাৰ ব হঠ বাভিতঃ॥ পুৰ্যিয়া বুধো দেহং প্রভাগিতমুপ্রাংমৎ। ুগ বৈ যোগযুক্তম্য যোগিনো নিয়তাত্মনঃ॥ যদের দোনাঃ প্রণশুন্তি স্বস্ত দৈচবোশজারতে। <sup>বীক্ষতে</sup> চ প**রং বৈক্ত** প্রাক্তাংশচ গুণান্পূথক্॥ .বাংমাদিপরমাণংশ্চ তথাঝান্মকল্মবম্। <sup>ইথং</sup> যোগী যতাহার: প্রাণায়ামপরায়ণ:॥ <sup>জিতাং</sup> জিতাং শনৈভূমিমারোহেত যথা গৃহম্। ৰাবান ব্যাধংকেশা মোহমাকাতাভূবনিজিভা॥

বিবর্দ্ধতি নারোহেং তক্মান্ত মিমনিজ্জিতাম্। প্রাণানাম্পদংরোধাৎ প্রাণায়াম ইতি শ্বতঃ॥ ধারণেত্যুচ্যতে চেয়ং ধার্যতে যশ্মনো যয়া। শব্দাদিভাঃ প্রবৃত্তানি যদকাণি ষ্তাম্মভিঃ। প্রত্যাহ্রিয়ম্ভে যোগেন প্রত্যাহারস্ততঃ স্থৃতঃ॥ উপায়শ্চাত্র কথিতো যোগিভি: প্রম্মিভি:। रयन वर्गाधानरमा (नाया न काम्रस्य हि रगणिनः ॥ যথা তোয়াথিনস্তোয়ং যন্ত্রনালাদিভিঃ শনৈ:। আপিবেযুক্তপা বায়ুং পিবেদেযাগী জিতশ্ৰম:॥ প্রাঙ্নাভ্যাং হৃদয়ে চাত্র তৃতীয়ে চ তথোরসি। কঠে মুখে নাদিকাগ্রে নেত্র-ভ্রমধ্য-মুর্দ্ধস্থ॥ কিঞ্তক্মাং প্রক্মিংশ্চ ধারণা প্রমাস্থতা। দশৈতা ধারণাঃ প্রাপ্য প্রাপ্রোত্যক্ষর্যাম্যতাম্॥ তস্ত নোজাগতে মৃত্যু নঁজ্যান্চ বৈ ক্লম:। ন প্রান্তিরবসাদোথ তুরীয়ে সততং স্থিতিঃ॥ <sup>ইসং</sup> বৈ যোগভূমিঃ ভাৎ সঠিপ্তব পরিকীর্ত্তিতা। যত্র হিতে একস্থিতিং **লভতে নাত্র সংশ্যঃ**॥ নাগাতঃ কুধিতঃ আভো ন চ ব্যাকুলচেতন:। যুঞ্জীত যোগং রাজে<del>ল্ল</del> যোগী সিদ্ধার্থমাদৃতঃ ॥ নাতিশাতে ন চোঞে বৈ ন শ্বলৈনানিলায়কে। কালেবেতেযু যুঞ্জীত ন যোগং ধ্যানতংপর:॥ मन्नाधिकलाच्यारम कीर्नरगर्छ हजुन्नर्ग। শুষ্পর্ণচয়ে নদ্যাং শাশানে সম্রীস্থান্ত ॥ সভয়ে কৃপভীরে বা চৈত্যবন্ধীকসঞ্চযে। দেশেদেতেমু তত্তকো যোগাভ্যাসং বিবর্জায়েং॥ मदञाञ्जलाद हो ए दिन्यकालः विवर्द्धाः । না কো দৰ্শন োগে তত্মাৎ তৎ পরিবর্জ্জন্তে ॥ দুঢ়তা চিত্ত গ্ৰিশ্চ জাগতে নাত্ৰ সংশয়ঃ। স্থানকালপ্রভাবেণ নিশ্চয়ং বিদ্ধি ভূমিপ। ত্ৰায়দ্য কুত্ৰিত স্তা দেশকালম্থী তথা।। দেশানে তাননাদ্ত্য মৃঢ়ত্বাদেষা যুনক্তি বৈ। বিল্লাণ তফ্ত বৈ দোষা জায়ত্তে তান্নিবোধ মে॥ বাধিৰ্য্যঃ জড়তা লোপঃ স্মৃতেম্কি**লম**ক্ষতা। জরশ্চ জায়তে সদ্যস্তত্ত্বজ্ঞানযোগিনঃ॥ প্রমানালোগিনো দোষা যদ্যেতে স্ত্রাশ্চিকিৎ-**मि**ত्य।

তেনাং নাশায় কর্ত্তনাং যোগিনাং তরিবোধ মে॥
স্পিন্ধাং নবাগুনত্যকাং ভূকা তত্ত্বৈ ধারয়েও।
বাতগুলপাস্থার্দাবর্তে তপোদরে॥
নবাগুং বালি প্রনং বায়গ্রন্থি গুতিক্ষিপ্ত।

তবং করে মহাদৈলং স্থিয়ং মনসি ধারয়ে ॥
বিঘাতে বচসো বাচং বাধির্যাং শ্রবণেক্রিয়ম্।
য়বৈধামদলং ধ্যারেং তৃষ্ণার্জা রসনেক্রিয়ে ॥
য়িমন্ মিমিন্ ক্লা দেহে তিমিংস্তহ্পকারিনীম্ ॥
য়ারয়েজারণামুষ্ণে শীতাং শীতে চ দাহিনীম্ ॥
কীলং শিরসি সংস্থাপ্য কাঠং কাঠেন তাড়য়ে ।
লুপ্তস্মতে: স্থতি: সদ্যো ঘোগিনক্রেন জায়তে ॥
দ্যাবাপ্থিরো) বাযুমী ব্যাপিনারপি ধারয়ে ।
আমাহ্যাৎ সর্জাবা বাধাক্রেতাশ্চিকিৎসিতাং ॥
আমাহ্যাৎ সর্জাবা বাধাক্রেতাশিক্রিং সিতাং ॥
আমাহ্যাৎ সর্জাবা বাধাক্রেতাশিক্রিং ।
বাযুমিধারণেননং দেহসংস্থং বিনির্দ্রহে ।
ববং সর্কান্থনা রক্ষা কার্যা ঘোগবিদা নূপ ।
ধর্মার্থকামমোক্ষাণাং শরীয়ং সাধনং যতং ॥
প্রের্ত্তলক্ষণাথ্যানাক্ষেণিনো বিস্মাৎ তথা ।
বিজ্ঞানং বিলয়ং যাতি তক্মাক্ষোপাঃ প্রস্তরঃ ॥

আলোল্যমারোগ্যমনিষ্ঠুরত্বং
গদ্ধ: গুলাদ: অরুরৌষমলম্।
কান্তি: প্রসাদ: অরুরৌমায়তা চ
যোগপ্রবুৱে: প্রথম: হি চিক্ন্॥
অনুরাগী জনো যাতি পরোক্ষে গুণকীর্তুনম্।
ন বিভাতি চ দ্বানি সিদ্ধের্গক্ষণমূভ্যম্॥
শীভোকাদিভিরত্যুবৈগ্র বাধা ন বিদ্যুতে।
ন ভীতিমেতি চাত্মেভাত্তত সিদ্ধিরপন্থিতা॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে জড়ো-পাথ্যানে যোগাধ্যায়ে নামেকো-নচড়ারিংশোহধ্যায়ঃ।

# **ठञ्चा**तिः टगा ३ था ।

--•:• – দন্তাত্ত্রেয় উবাচ।

উপদর্গা: প্রবর্ত্তে দৃষ্টে হায়নি যোগিন: ।
যে তাংত্তে সংপ্রবক্ষ্যামি সমাসেন নিবাধ মে ॥
কাম্যা: ক্রিয়ান্তথা কামান্ মান্ত্রানভিবাঞ্তি।
বিয়ো দানকলং বিদ্যাং মায়াং কুণ্যং ধনং দিবম্
নেবত্বমমরেশত্বং রসায়নচয়: ক্রিয়া: ।
মাদংপ্রপতনং যজ্ঞং জলায়্যাবেশনং তথা।
প্রান্ধানা সর্কানানাং ফলানি নিয়য়াংতথা ॥
তথোপবাদাং প্রাচ্চ দেবতাভ্যর্চনালপি।
তেভাত্তেভাশ্চ কর্মজ্য উপস্টোছভিবাঞ্তি॥

চিত্তমিখং বর্তমানং যত্নাদেবাগী নিবর্ত্তয়েৎ। ব্ৰহ্মসঞ্চি মন: কুৰ্বালুপদৰ্গাৎ প্ৰেম্চাতে ॥ উপদর্গৈর্জিটেতরেভিফ্রপ্রস্গাস্ততঃ পুন:। যোগিনঃ সম্প্রবর্তন্তে সাত্তরাজসভামসা:॥ প্রাতিভঃ শ্রাবণো দৈনো ভ্রমাবর্ত্তে তথাপরে।। পকৈতে যোগিনাং যোগবিত্মায় কটুকোন্যাঃ॥ বেদার্থাঃ কাব্যশাস্তার্থা বিদ্যাশিলান্তশেষতঃ। প্রতিভান্তি যদভেতি প্রাতিভ: স তু যোগিন: ॥ শকার্থানথিলান বেত্তি শকং গৃহাতি চৈব যং। যোজনানাং সহস্রেভ্যঃ শ্রাবণঃ সোহভিধীয়তে ॥ সমস্তাৰীক্ষতে চাষ্টো স যদা দেবতোপমঃ। উপদৰ্গং তমপ্যাহদৈবমুম্মত্তবদুধা:॥ ভ্রাম্যতে য়নিবালম্বং মনো দোষেণ যোগিন:। সমস্তাচাববিলংশাদ্রমঃ স পরিকীর্ত্তিতঃ॥ আবর্ত্ত ইব তোয়স্ত জ্ঞানাবর্ত্তে। যদাকুল:। নাশয়েচিত্তমাবর্ত্ত উপদর্গঃ স উচ্যতে ॥ এতৈর্নাশিতযোগাস্ত সকলা দেবযোনয়:। উপসুর্বৈর্মহাঘোরেরাবর্তত্তে পুন: পুন: ॥ প্রাবৃত্য কম্বলং উক্লং যোগী তত্মান্মনোময়ম্। চিস্তয়েৎ পরমং এন্ধ কৃতা তৎপ্রবণং মনঃ॥ যোগযুক্ত: সদা যোগী লঘাহারো জিতেক্রিয়: । স্ক্ষান্ত ধারণাঃ সপ্ত ভ্রাদ্যা মৃদ্ধি ধারবেং ॥ ধরিত্রীং ধাবয়েদেয়াগী তৎসোথ্যং প্রতিপদ,তে। আশ্বানং মন্ততে চোৰ্কীং তদ্বন্ধঞ্চ জহাতি সঃ॥ তথৈবাপ্সু রসং স্ক্রং তদ্ধজপঞ্চ তেজ্সি। স্পূৰ্ণ বায়ে তথা তদ্বিভ্ৰত্ত্ত ধারণাম্॥ বোায়ঃ সৃন্ধাং প্রবৃত্তিঞ্চ শব্দং তত্বজ্জহাতি সঃ॥ মনসা সক্ষভূতানাং মনস্থাবিশতে যদা। মানসীং ধারণাং বিভ্রমনঃ স্ক্রঞ্জায়তে॥ তদ্ব দ্ধিমশেষাণাং সত্তানামেত্য যোগবিৎ। পরিতাজতি সম্পাপ্য বুদ্ধিসৌক্ষমহত্মম্॥ পরিতাজতি স্ক্রাণি সপ্ত ছেতানি যোগবিৎ। সম্যথিজ্ঞায় যোহলর্ক তহ্মার্থ্তন বিদ্যতে॥ এতাদাং ধারণানান্ত সপ্তানাং সৌল্মাত্মবান। দুঠা দুঠা তত: সিদ্ধিং ত্যক্তা ত্যক্তা পরাং ব্রে যশ্মিন্ যশ্মিংশ্চ কুরুতে ভূতে রাগ**ং ম**হীপতে। তস্মিংস্তামিন্ সমাসক্তিং সম্প্রাপ্য স বিনশ্রতি ৷ তত্মাদিদিত্বা হক্ষাণি সংসক্তানি পরস্পরম্। পরিত্যজ্ঞতি যো দেহী স পরং প্রাপ্নুরাৎ পদম্ 🛭 এতাত্তেৰ ভু সন্ধায় সপ্ত ক্ষমাণি পাৰ্থিব।

ভূতাদীনাং বিরাগোহত সভাবজ্ঞ মুক্তরে॥ গুরাদিরু **সমাসক্তিং সম্প্রা**প্য স বিনশুতি। পুনরাবর্ত্তে ভূপ স ব্রহ্মাপরমানুষম্॥ সপ্তৈতা ধারণা ধোগী সমতীত্য যদিচ্ছতি। তব্যিংস্তব্সিংলয়ং স্থান্দ্র ভূতে যাতি নরেশ্বর॥ (मरानामस्त्रांगाः वा शक्रत्यातशतकाम्। দেহেযু লয়মায়াতি সঙ্গং নাপ্নোতি চ কচিৎ॥ অণিমা লখিমা চৈব মহিমা প্রাপ্তিরেব চ। প্রাকাম্যঞ্চ তথেশিস্থং বশিস্থঞ্চ তথাপরমূ॥ যত কামাবসায়িত্বং গুণানেতাংস্তবৈশ্বরান্। প্রাধ্যেত্যপ্তে নরব্যান্ত পরং নির্বাণস্চকান॥ স্ক্লাৎ স্ক্লভমোহণীয়ান শীঘ্ৰতং লঘিমা গুণঃ। মহিমাংশেষপূজ্যতাৎ প্রান্তির্না প্রাপ্যমন্ত যং॥ প্রাকাম্যন্ত চ ব্যাপিত্বাদী শিত্তকেশ্বরো যতঃ। বশিবাদ্দশিমা নাম যোগিনঃ সপ্তমো গুণঃ॥ যত্রেচ্ছান্মপ্যক্তং যত্র কামাবসায়িতা। ঐশর্যাকারণৈরেভির্যোগিন: প্রোক্তমষ্ট্রধা। মুক্তিসংস্চকং ভূপ পরং নির্মাণমাত্মনঃ। ততো ন জায়তে নৈব বৰ্দ্ধতে ন বিনশ্ৰতি ৷ নাপি ক্ষয়মবাপ্লোতি পরিণামং ন গচ্চতি। ছেদং ক্লেদং তথা দাহং শোষং ভূৱাদিতো ন চ॥ ভূতবর্গাদবাপ্নোতি শব্দাদ্যে: ব্রিম্বতে ন চ। ন চান্ত স**ত্তি শক্ষাদ্যান্তত্যোক্তা** তৈন যুজ্যতে ॥ यथा हि कनकः थ अभने अव वावन विना। দগ্ধদোবং দিতীয়েন খণ্ডেনৈক্যং ব্ৰজেন্নুপ ॥ ন বিশেষমবাপ্লোতি তদ্বদেষাগাগ্নিনা যতিঃ। निर्फिक्ष मायत्वरेनकाः धाराजि उक्का मह॥ यशिवतथी मःकिथः ममानषमञ्ज्ञ छः। তদাপ্যস্তন্মাে ভূতো ন প্ৰেড বিশেষত:॥ পরেণ ব্রহ্মণা তবৎ প্রাপ্যৈক্যং দগ্ধকি বিষ:। শোগী যা**তি পূথগ্ভাবং ন ক**দাচিন্মহীপতে॥ यथा जलः छटनरेनकाः निकिश्चरू नगरू छ । তথা খা সামামভ্যেতি যোগিনঃ প্রমান্সনি॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে গোগিদিদ্ধি-র্নাম চন্ধারিংশোহধ্যায়॥ একচত্বারিংশোহধ্যায়:।

-:\*:--

অনৰ্ক উবাচ।

ভগবন্ যোগিন কথ্যাং শ্রোত্মিছামি তবত: । ব্রহ্মবর্ম স্থা যোগী ন সীদতি॥ দতাতের উবাচ।

मानाशमारनी यारवरकी खालु द्वाकरती नृगाम् তাবেব বিপরীতাথৌ যোগিন: সিদ্ধিকারকৌ ॥ মানাপমানৌ যাবেতৌ তাবেবাছর্মিযামতে। অপমানোহমুতং তত্ত্ব মানস্ত বিষমং বিষম্॥ চকু:পুতং অসেৎ পাদং বিস্তপুতং জলং পিবেং। সতাপূতাং বদেছাণীং বৃদ্ধিপুতঞ্চ চিন্তয়েৎ॥ वाडिशासाक्षयरक्षम् (प्रविगार्विष्मरविष् ह । মহাজনঞ্চ সিদ্ধার্থং ন গচ্ছেদ্বোগবিৎ কচিং ॥ वारस विश्रम वाशास्त्र मर्कायन जूकवर्जन । অটেড যোগবিৱৈক্ষ্যং ন তু ত্ৰিছেৰ নিত্যশঃ 💵 যথৈবমবমস্ততে জনাঃ পরিভবস্তি চ। তথা युक्त करतरामाती मजाः वर्षा न मृयग्रन्॥ दिक्काः हरत्रम्श्रहत्त्रव् यायात्वत्रश्रहेन् ह । শ্রেষ্ঠা তু প্রথমা চেতি কৃত্তিরভোপদিখতে।। অথ নিত্যং গৃহক্ষেষ্ শালীনেষু চরেদ্বতিঃ। শ্রদ্ধানের দান্তের শ্রোতিরের মহাত্মস্ন॥ অত উৰ্দ্ধং পুনশ্চাপি অন্নষ্টাপতিতেষু চ। ভৈক্যচর্য্যা বিবর্ণেরু জ্বঘন্তা বৃত্তিরিষ্যতে ॥ ভৈক্ষ্যং যৰাগৃং ভক্ৰং বা পয়ো যাবকমেব বা। ফলং মূলং প্রিয়ঙ্গুং বা কণ্পিণ্যাকশক্তবঃ ॥ ইত্যেতে চ শুভাহারা যোগিনঃ সিদ্ধিকারকাঃ 🛭 তং প্রযুক্তাশুনিউক্ত্যা পরমেশ সমাধিনা॥ অপ: পূর্বং সকুং প্রাশ্র ভূষীং ভূষা সমাহিত: 🕨 প্রাণায়েতি ততন্ত্রত প্রথমা **হাছতি: মৃতা** ॥ অপানায় দ্বিতীয়া তু সমানায়েতি চাপরা। উদানায় চতুৰী ভাষ্যানায়েতি চ পঞ্মী॥ প্রাণায়ামৈ: পৃথক্ ক্বছা শেষং ভূজীত কামত: । অপঃ পুন: স্কুং প্রাক্তং আচম্য হৃদয়ং স্পুলেৎ # অস্তেয়ং ব্ৰহ্মচৰ্য্যঞ্চ তাাগোহলো<del>ডমেথৈৰ চ।</del> ব্রতানি পঞ্চ ভি**ক্ষণামহিংসাপরমাণি বৈ**॥ অক্রেক্রের গুরুত্র বা শৌচমাহারলাপ্রম্। নিতাৰাধ্যায় ইত্যেতে নিয়মা: পঞ্চ কীৰ্টিডা: 🕸 সারভতমুপাদীত জানং ষৎ কার্য্যাধকম্।

জ্ঞানানাং বহুণা যেয়ং নোগৰিয়করা হি সা॥
ইনং জ্ঞোনানং জ্ঞোনতি যস্ত্যিতশ্চরেং।
অপি কল্পন্থের নৈব জ্ঞেননাপ্লুযাং॥
ত্যক্তসঙ্গো জিতজোণো ল্যুহারো জিতেজ্ঞিরঃ
বিধায় বৃদ্ধা দারাণি মনো গ্যানে নিবেশ্রেং॥
শ্থেবেবাবকাশেমু গুহাস্ক চ বনেরু চ।
নিত্যবৃক্ত: মদা যোগী গ্যানং সম্যগুপক্রমেং॥
বাগ্দণ্ড: কর্ম্মণণ্ডশ্চ মনোদণ্ডশ্চ তে অয়ঃ।
যথৈতে নিযতা দণ্ডা: স জিদণ্ডী মহাযতিঃ॥
সর্কানাম্মন্মং যস্ত সদস্ক্রগণীদৃশন্।
গুণাপ্রণ্মং তক্ত কঃ প্রিয়ঃ কো নৃপাপ্রিয়ঃ॥

বিশুদ্ধবৃদ্ধিঃ সমলোষ্ট্রকাঞ্চনঃ
সমস্তভূতের চ তং সন্টিতঃ।
স্থানং পরং শাখতমব্যবঞ্চ
পরং হি মন্ধা ন পুনঃ প্রজাবতে॥
বেদাঃ শেষ্টাঃ সর্কাযজ্জিরাশ্চ
যজ্ঞাজপ্যং জ্ঞানমার্গশ্চ জপাং।
জ্ঞানাদ্ধানং সন্ধর্যাব্যপেতং
তন্মিন্ প্রাপ্তে শাখতস্থোপলিজিঃ॥
সমাহিতো ব্রহ্মপরোহপ্রমাদী
শুচিস্তবৈকাস্তরতির্যতেজিয়ঃ।
সমাপু বাদেশাগ্মিমং মহাম্মা
বিম্ক্তিমাপ্রোতি ততঃ স্বনোগতঃ॥
ইতি মার্কপ্তেমে মহাপুরাবে যোগিত্ব্যা

# দ্বিচত্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

नोरिमकहचादिः स्थितिशायः॥

দত্তাত্রের উবাচ।

এবং যো বর্ততে বোলী স্মাগ্রোগব্যবস্থিত:।
ন স ব্যাবর্ত্তিই শক্ষো জন্মান্তরশতৈরপি ॥
। ই চ প্রমান্ত্রানং প্রত্যক্ষং বিশ্বরূপিণন্।
বিশ্বপাদশিরোতীবং বিশেশং বিশ্বভাবনন্॥
তৎপ্রাপ্তরে মহৎ প্রামোমিত্যেকাক্ষরং জপেই।
তদেবাধ্যানং তম্ম স্কুলং শৃণ্তঃ প্রম্।
আকারণ্ট তথোকারো মকারশ্চাক্ষরত্ত্ত্বন্।
এতা এব ত্রেমা মাত্রাঃ সাব্রাজস্তামসাঃ ॥
নিত্তি বোলিগ্রাম্যান্তা চার্মাত্রোক্সংস্থিতা।

গান্ধারীতি চ বিজ্ঞো গান্ধারস্বরসংশ্রমা। পিপীলিকাগতিস্পর্শা প্রযুক্তা মৃদ্ধি লক্ষ্যতে। যথা প্রবৃক্ত ওমার: প্রতিনির্যাতি মৃদ্ধনি। তথোস্কারময়ো যোগী ত্বন্ধরে স্করো ভবেং।। প্রাণো ধরুঃ শরো হাত্মা ত্রন্ধ বেধামমূত্রম্। অপ্রমান্ত্র বেদ্ধব্যং শরবৎ তম্ময়ে ভবেৎ ॥ ওমিত্যেতৎ ত্রয়ো বেদাস্থা লোকাস্থ্রোহ্রাই বিফুর্দা হরণৈচব ঋক্সামানি যজুংয়ি চু॥ মাত্রাঃ সাদ্ধান্ত তিব্রশ্চ বিজ্ঞেয়াঃ প্রমার্থতঃ। তত্র যুক্তস্ত যো যোগী স তল্পমবাপুযাৎ।। অকারত্তপ ভূর্লোকঃ উকারশ্চোচ্যতে ভুবং। नवाञ्चरमा मकात्रक चरलीकः পुर्तिकहार्छ॥ ব্যক্তা তু প্রথমা মাত্রা দ্বিতীয়াব্যক্তসংজ্ঞিত।। নাত্রা তৃতীয়া চিচ্ছক্তির্দ্ধনাত্রা পরং পদম্॥ चारनरेनव करमण जा विष्क्रिया र्याशङ्गमः। ওমিত্রাচ্চারণাৎ সর্ব্ধং গৃহীতং সদসভবেৎ।। হ্রসা তু প্রথমা মাত্রা দ্বিতীয়া দৈর্ঘ্যসংযুতা। তৃতীয়া চ প্লুভাদ্ধাথ্যা বচসূত্র সা ন গোচরা॥ ইত্যেতদক্ষরং ব্রহ্ম প্রমোক্ষারসংক্ষিত্রন্। যস্ত বেদ নর: সমাক্ তথা ধ্যায়তি বা পুনঃ ॥ সংশ্বচক্রমুৎস্পা তাক্তবিধিবস্কনঃ। প্রার্থোতি ব্রন্ধণি লয়ং পরমে প্রমান্ত্রনি। অক্ষীণকর্মবন্ধশ্চ জাধা মৃত্যুমরিষ্টতঃ। উৎক্রান্তিকালে দংস্মৃত্য পুনর্যোগিত্বমৃচ্ছতি ॥ তস্বাদসিদ্ধবোগেন সিদ্ধবোগেন বা পুনঃ। ক্ষেয়ান্তরিষ্টানি সদা যেনোৎক্রান্তৌ ন সীদতি॥ ইতি মার্কভেয়ে মহাপুরাণে যোগধক্ষে ওঞ্চাব-স্বলপকথনং নাম দিচতারিংশো২ধ্যায়ঃ॥

### ত্রিচত্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

---: +;--

দত্ত তেথ উবাচ।
অরিটানি মহারাজ শৃথ্ বক্যামি তানি তে।
যেষামালোকান্দুড়াং নিজং জানাতি যোগবিং॥
দেবনার্গং ক্রবং ওকং সোমছারামকক্ষতীম্।
যোন পল্ডেম জীবেং স নরঃ সংবংসরাং পরম্॥
অরিমি বিষং হুর্যান্ত বহিং চৈবাংগুমালিনম্।
দৃটৈ কাদশমাসাং তুনরো নোর্দ্ধন্ত জীবতি॥
বান্তে মূনপুরীবে চ যঃ স্বর্ণং রজতং তথা।
এত্যকং কুকতে স্ব্রে জীবেং স দশমাসিকম্॥

मृष्ट्रा এ তেপিশাচাণীন্ গন্ধর্বনগরাণি চ। স্বৰ্ণবৰ্ণান্ বৃক্ষাংশ্চ নব মাসান্ স জীবতি॥ ্সূল: ক্লশ: ক্লশ: স্থুলো যোহকন্মাদেব জায়তে। প্রকৃতেশ্চ নিবর্ত্তেত জন্মায়ুশ্চাইমাসিকম্॥ খণ্ডং যন্ত্ৰ পদং পাঞ্চ নাং পাদস্তাত্ৰে চ বা ভবেং। পাং ভক্ষময়োশ্বধ্যে সপ্ত মাসান্স জীবতি॥ গ্তঃ কপোতঃ কাকোলো বায়সো বাপি মুদ্ধনি। क्रवारमा वा थरमा नीनः वधानापुः अमर्नकः॥ হন্ততে.কাকপঙ্জীডি: পাংশ্বর্যেণ বা নর:। স্বাং ছায়ামগ্রপা দৃষ্ট্রা চতুঃপঞ্চ স জীবতি॥ অনত্রে বিহাতং দুট্রা দক্ষিণাং দিশনাশ্রিতাম্। রাত্রাবিক্রধমুশ্চাপি জীবিতং দ্বিত্রিমানিকম্॥ ঘু.ত তৈলে তথাদৰ্শে তোবে বা নাম্মনস্তমুম্। যঃ পশ্চেদশিরস্কাং বা মাদাদুর্দ্ধং ন জীবতি॥ যত বস্তমমো গন্ধো গাতে শ্বসমোহপি বা। তভার্মাসিকং জেয়ং যোগিনো নূপ জীবিতম্॥ যতা বৈ স্নাত্মাত্রতা হৃৎপাদ্যবভ্যাতে। পিৰতশ্চ জ্বলং শোষো দশাহং সোহপি জীবতি ॥ সন্থিয়ো মারুতে। যন্ত মর্ম্মসানানি রুম্বতি। ক্ষাতে নাম্সংস্পাশিৎ তন্ত মুচাক্পস্থিতঃ ॥ अक्तानत्रधानत्थः। शायन त्यां निक्तिशः निन्म । স্থা প্রয়ান্তি তত্তাপি ন মৃত্যুঃ কাল্মুচ্ছতি॥ বক্তক্ষণাম্বরধবা গায়ন্তী হসতী চ যম্ i দিজিণাশাং নয়েয়ারী স্বপ্নে সোহপি ন জীবতি॥ নগ্নং সন্ধীক্ষ্য বল্গভং বিদ্যান্যভূগমুপস্থিতম্॥ আমন্তক তলাণ্যস্ত নিমগ্রং পক্ষসাগরে। স্থ্যে পশুতাথায়ানং স সদ্যো খ্রিয়তে নরঃ॥ কেশাঙ্গারাংশুথা ভন্ম ভুজন্বান নিৰ্জ্ঞলাং নদীম্। দৃষ্ট্য স্বপ্নে দশাহাং তু মৃত্যুবেকাদশে দিনে॥ कदारेनिर्विकरेष्ठः कृटेकः शूक्रदेशक्रमाजागुरेधः। পাষা**গৈতাড়িত: খণ্ডে সদ্যো মৃত্যু: লভের**র: ॥ স্থ্যোদয়ে যস্তা শিবা কোশতী যাতি স্থাথন্। বিপরীতং পরীতং বা স সদো৷ মৃত্যুমুচ্ছতি ॥ <sup>বস্তু</sup> বৈ ভূক্তমাত্রস্ত হৃপয়ং বাধতে কুধা। জায়তে দ**ন্তহর্ষণ্চ স** গতাবুর্ন সংশয়ঃ ॥ দীপগন্ধং ন যো বে**ভি অহ্যত্যহ্নি তথা নিশি**। নীয়ানং প্রনেত্রস্থং বীক্ষতে ন স জীবতি॥ শক্রাণুধক্ষাদ্ধরাত্রে দিবা গ্রহগণং তথা। দৃই। মন্তেত সংক্ষীণমাত্মজীবিতমাত্মবিৎ॥ नां मिका वक्र ठारमिक कर्गरमार्भमाम ही।

নেত্রঞ্চ বামং স্রবৃতি ষস্ত তন্তায়ুক্দগতম্॥ আরকতামেতি মুখং জিহবা বা খ্যামতাং যদা তদা প্রাজ্ঞো বিজানীয়ামূত্যুমাসল্লমাত্মনঃ॥ উষ্ট্রবাসভ্যানেন যঃ স্বপ্নে দক্ষিণাং দিশম। প্রয়াতি তঞ্চ জানীয়াৎ সদ্যোমৃত্যুং ন সংশয়ঃ॥ পধাय करली निर्दायः न भूरनाच्याश्चमञ्जवम् । নশ্যতে চক্ষুষোৰ্জ্জ্যোতিৰ্যস্ত সোহপি ন জীবতি॥ পততো যশু বৈ গর্ত্তে স্বপ্নে দারং পিধীয়তে। ন চোৰিষ্ঠিতি যঃ শ্বলাং তদস্তং তক্ত জীবিতম্॥ উৰ্দ্ধাচ দৃষ্টিৰ্ন চ সম্প্ৰতিষ্ঠা রক্তা পুন: সম্পরিবর্ত্তমানা। মুথ্য চোমা শুষিরঞ্চ নাভে: শংসন্তি পুংসামপরং শরীরম্॥ স্বপ্রেই প্রিশেন্স্স ন চ নিজ্ঞ মতে পুন:। জনপ্রবেশাৰপি বা তদস্তং তক্ত জীবিতম। য\*চাভিহন্ততে ছুঠেভু তৈরাত্রাবথো দিবা। স মৃত্যুং সপ্তরাত্তত্ত নর: প্রাপ্তোসংশ্যম্॥ স্বস্মমলং শুকুং রক্তং পশুতাথাদিতম্। यः পুমান মৃত্যুমাসরং তত্তাপি হি বিনির্দিশেং॥ সভাববৈপরীতান্ত প্রকৃতেশ্চ বিপর্যায়ঃ। कथव्यक्ति मञ्जय । । । । यमा महामहाने यमा खटको ॥ বেষাং বিনীত: সততং সেম্ম পৃক্যতমা মতা। তানেব চাবজানাতি তানেব চ বিনিন্দতি॥ त्निनान् नाफ्रियटक वृक्षान् श्वज्ञन् विशाः कि निक्कि. মাতাপিকোর্ন সংকারং জামাতৃণাং করোতি চ॥ যোগিনাং জানবিত্যামভেষাক মহাম্বনাম। প্রাপ্তে তু কালে পুরুষস্তবিজ্ঞেয়ং বিচক্ষণৈ:॥ যোগিনাং সততং যত্নাদরিষ্টাগ্রবনীপতে। সম্বংসরাস্তে তজ্জেয়ং ফলদানি দিবানিশ্য॥ वित्नाकम विभाग देवयाः कलाशकः स्नृ ीयना । বিজায় কার্যো মন্সি স চ কালো নরেশ্বর॥ জাহা কালঞ্চ তং সমাগ্রবস্থানমাশ্রিত:। যুঞ্জীত যোগী কালোহসৌ যথা নাস্তাকলো ভবেং দৃষ্টারিষ্টং তথা যোগী তাজা মরণজং ভয়ম। তৎস্বভাবং তদালোক্য কালে যাবত্যুপাগতম্॥ তম্ম ভাগে তথৈবাল্লো যোগং যুঞ্জীত যোগবিৎ। পূর্দ্ধাহে চাপরাকে চ মধ্যাকে চাপি তদিনে॥ যত্র বা রজনীমাদে তদরিটং নিরীকিতম। ত্তরৈব তাবদ্যুঞ্জীত যাবৎ প্রাপ্তং হি তদ্দিনম্॥ ততত্ত্যক্রা ভয়ং সর্বাং জিম্বা তং কালমাম্ববান।

ততৈবাবসথে স্থিয়া যত্র বা স্থৈর্যায়ন:॥ যুঞ্জীত যোগং নির্জিত্য জীন্ গুণান্ পরমায়নি। তন্ময়শ্চাত্মনা ভূতা চিছু ত্তিমপি সন্ত্ৰেৎ।। ততঃ পরমনির্বাণমতীক্রিয়মগোচরম্। যদ্বুদ্ধের্যর চাথ্যাতুং শক্যতে তৎ সমশুতে॥ এতং সর্বাং সমাখ্যাতং তবালর্ক যথার্থবং। প্রাপ্যাসে যেন তদবন্ধ সংক্ষেপাং তল্পিবোধ মে॥ শশান্ধরশ্মিদংযোগাচ্চন্দ্রকাস্তমণিঃ পয়:। সমুংস্জতি নাযুক্ত: সোপমা যোগিনঃ স্মৃতা॥ যজার্করশ্মিসংযোগাদর্ককান্তো হতাশনম্। আবিষ্ণরোতি নৈকঃ সরুপ্র সাপি যোগিনঃ॥ तिभी विकाणू न कू नगृह र गांधा क् शिक्ष नाः। বসন্তি স্বামিব**লোহে ধ্বন্তে** যান্তি ততোইয়ত:॥ ছ: থস্ক স্বামিনো ধ্বংদে তস্ত তেষাং ন কিঞ্চন। বেশানো যতা রাজেক্ত সোপমা ষোগসিদ্ধয়ে॥ মদেহিকাল্লদেহাপি মথাগ্রেণাপ্যণীয়সা। করোতি মৃদ্তারচয়মুপদেশ: স যোগিন:॥ পশুপক্ষিমনুষ্যাদৈঃ পত্ৰপুষ্পফলাবিতম্। বৃক্ষং বিলুপ্যমানত্ত দৃষ্ট্ৰ সিধ্যন্তি যোগিন:॥ ক্রশাববিষাণাগ্রমালক্য তিলকাকৃতিম্। সহ তেন বিবৰ্দ্ধন্তং গোগী বিদ্ধিমবাপুষাৎ ॥ ক্রবপূর্ণমূপাদায় পাত্রমারোহতো ভ্ব:। তুঙ্গমন্থং বিশোক্যোটেচর্বিজ্ঞাতং কিং ন যোগিনাম॥

সর্কবে জীবনাধালং নিথাতে পুরুষন্ত যা।
চেষ্টা তাং তরতো জ্ঞারা গোগিনঃ রতক্বতাতা॥
তদগৃহং যত্র নসতিস্তদ্যোজাং যেন জীবতি।
যেন সম্পনতে চার্যস্তং স্কথং মমতাত্র কা॥
অভ্যর্থিতোহপি তৈঃ কার্য্যং কবোতি করণৈর্যথা
তথা বৃদ্ধাদিভির্যোগী পারকাঃ সাধ্যেৎ পরম্॥

পুত্র উবাচ।
ততঃ প্রণমাাত্রিপুত্রমলর্কঃ স মহীপতিঃ।
প্রশ্রমাবনতো বাকাম্বাচাতিমুদাধিতঃ॥
অলক উবাচ।

। দিট্যা দৈবৈরিদং একন্ পরাভি ভবসন্তবম্॥
উপপাদিতমত্যাগ্য: প্রাণদদেহদং ভয়ম্॥
দিট্যা কাশিপতেভ্রিবলসম্পৎপরাক্রম:।
যত্তেলাদিহায়াতঃ স যুখৎসক্রদো মম॥
দিট্যা কোষঃ ক্রঃ যাতো দিট্যাহং ভীতিমাগতঃ
দিট্যা অপ্রাদযুগলং মম স্থিপিথং গ্রম।

দিষ্টা শ্বহক্তর: সর্বা মম চেত্রি সংস্থিতা: ॥
দিষ্টা জ্ঞানং মনোৎপরং ভবতদ্ব সমাগমাৎ।
ভবতা চৈব কারুণ্যং দিষ্টা ব্রহ্মন্ রুতং মম ॥
অনর্বোহপার্থতাং বাতি পুরুষন্ত গুভোদরে।
যবেদম্পকারার ব্যসনং সঙ্গমাৎ তব ॥
অবাহরুপকারী মে স চ কাশিপতিঃ প্রভা।
যব্যাঃ রুতে২হং সম্প্রাপ্তা বোগীশ ভবতোহস্তিক্ম্
সোহহং তব প্রসাদাগ্রিনির্দ্ধাজ্ঞানকিবিব:।
তগা যতিষ্যে যেনেদৃঙ্ন ভ্যাং হঃধভাজনম্॥
পরিত্যজ্জিং সমাসাদ্য জ্ঞানদাতুর্মহান্মনঃ॥
দত্তাহরুগ্রাং সমাসাদ্য জ্ঞানদাতুর্মহান্মনঃ॥
দত্তাহরুগ্রাং সমাসাদ্য জ্ঞানদাতুর্মহান্মনঃ॥
দত্তাহরুগ্রাং সমাসাদ্য জ্ঞানদাতুর্মহান্মনঃ॥

গচ্ছ রাজেক্স ভক্তং তে যথা তে কথিতং ময়া। নির্ম্মোনিরহকারস্তমা চর বিমুক্তয়ে॥ পুত্র উবাচ।

এবমুক্ত: প্রণমোনমান্ত্রণাম দ্বাবিত:।

যত্র কাশিপতির্প্রতি স্কর্বাহশ্যন্ত সোহগ্রক:॥

সমুপেত্য মহাবাহং সোহলক: কাশিভৃপতিম্।

স্বাহোরপ্রতো বীরম্বাচ,প্রহমন্ত্রির॥

বাজাকামুক কাশীশ ভূজাতাং রাজামূর্জ্জিতম্।

যথা বা রোচতে তন্ত্বং স্ক্রাহো: সম্প্রমান্ত্র ।

কাশিরাজ উবাচ।

কিনলক পরিত্যক্তং রাজাং তে স'যুগং বিনা। ক্লিয়স্থ ন ধর্মোংয়ং ভবাংশ্চ ক্ষত্রধর্মবিং॥ নির্জ্জিতানাত্যবর্গন্ত ত্যকৃ মরণজং ভয়ম্। সন্দ্বীত শরং রাজা লক্ষ্যমূদিখ্য বৈরিণম্॥ তং জিয়া নৃণতির্জোগান্ যথাভিল্যবিতান্ বরান্। ভুঞ্জীত পরমং সিধৈয়ে যজেত চ মহামধৈঃ॥

### ष्णवर्ष উবাচ।

এবমীদৃশকং বীর মমাপাসীম্মনঃ পুরা।
সাম্প্রকং বিপরীতার্থং শৃণ্ চাপাত্র কারণম্॥
যথায়ং ভৌতিকঃ সক্ষত্তপাস্তঃকরণং নৃণাম্।
গুণাস্ত সকলাত্তবদশেষের জন্তর্
।
চিচ্ছক্তিবেক এবায়ং বদা নাক্তোহস্তি কশ্চন।
তদা কা নৃপতে জ্ঞানামিত্রারিপ্রভুভ্তাতা ॥
তন্ময়া ছঃখমাসাদ্য স্বন্ধেরমূর্মম্।
দ্বাত্রেরপ্রসাদেন জ্ঞানং প্রাপ্তং নরেশ্ব॥
নির্জিতেক্রিরবর্গন্ত ত্যক্র্য সন্নমশেষতঃ।
মনো রক্ষণি সন্ধান্ধ তজ্ঞরে প্রমো জয়ঃ॥

সংসাধ্যমন্তৎ তৎসিজ্যৈ যতঃ কিন্দিয় বিদ্যতে।
ইক্রিয়াণি চ সংযম্য ততঃ সিদ্ধিং নিযদ্ধতি ॥
সোহহং ন তেহরির্ন মমাসি শক্রঃ
স্থবাহরেষা ন মমাপকারী।
দৃষ্টং ময়া সর্কমিদং যথাবদ্বিষ্যতাং ভূপ রিপুত্বয়ান্তঃ ॥
ইথং স তেনাভিহিতো নরেক্রো
ক্রাইঃ সমুখার ততঃ স্থবাহঃ।
দিষ্ট্রোতি তং ভ্রাতরমাভিনন্দ্য
কাশীখরং বাক্যমিদং বভাষে ॥
ইতি মার্কভ্রেম মহাপ্রাণেহরিষ্টকথনং
নাম ক্রিচ্ডারিংশোহধ্যায়ঃ॥

চতুশ্চত্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

--:-:--

#### স্থবাছৰুবাচ।

বদর্থং নৃ পশার্দ্ ল ডামহং শরণং গতঃ।
তন্ময়া সকলং প্রাপ্তং যাস্তামি ডং স্থবী ভব॥
কাশিরাজ উবাচ।
কিং নিমিত্তং ভবান্ প্রাপ্তো নিম্পার্মাহর্থশ্চ কন্তব
স্থবাহো তন্মমাচক্ষ্ পরং কৌতৃহলং হি মে॥
সমাক্রাস্তমলর্কেণ পিতৃপৈতামহং মহৎ।
রাজ্যং দেহীতি নির্জিত্য ড্বয়াহমভিচোদিতঃ॥
ততাে ময়া সমাক্রম্য রাজ্যমস্তান্ত্রস্ত তে।
এতং তে বশমানীতং তত্ত্ত্কে স্বকুলাচিতম্॥
স্থবাহরুবাচ।

কাশিরাজ নিবোধ দং যদর্থময়মুদ্যম:।
কতো ময়া ভবাংকৈব কারিতোহতান্তমুদ্যমম্॥
ভাতা মমায়ং প্রাম্যের্ শক্তো ভোগের্ তর্বিং।
বিমৃটো বোধবন্তে চ ভাতরাবশেকো মম॥
তয়ের্মাম চ যন্মাত্রা বাল্যে স্তম্বং যথা মুখে।
তথাববোধা বিক্তন্তঃ কর্ণয়োরবনীপতে॥
তয়ের্মাম চ বিজ্ঞেয়া: পদার্থা যে মতা নৃভি:।
প্রকাশ্রং মনসো নীতান্তে মাত্রা নাক্ত পার্থিব॥
যথৈকসার্থমাতানামেক্সিরবনীদতি।
হঃবং ভবতি সাধ্নাং তথাস্মাকং মহীপতে॥
গাহিস্যমোহমাপরে সীদত্যক্ষিন্ নরেশর।
সম্বিক্তিত দেহক্ত বিভ্তি ভাতৃক্রনার্॥

ততো ময়া বিনিশ্চিত্য ছঃধাৰৈবাগ্যভাবনা। ভবিষ্যতীত্যস্ত ভবানিত্যদেষাগার সংশ্রিত:॥ তদন্ত হংধাৰৈরাগ্যং সম্বোধাদ্বনীপতে। সমুদ্ধ তং কৃতং কাৰ্য্যং ভদুং তেইস্ক ব্ৰহ্মায়হম্। উট্টামদালসাগর্ভে পীতা তহ্যান্তথা স্তনম্। নাঅনারীস্কটভর্যাতং বন্ধ যান্তিতি পার্থিব: ॥ বিচার্য্য ভদ্মরা সর্কং যুদ্মৎসংশ্ররপূর্ক্রকম্। কৃতং তচ্চাপি নিষ্পন্নং প্রয়ান্তে সিদ্ধয়ে পুন: ॥ উপেক্যতে সীদমান: স্বন্ধনো বান্ধব: স্বন্ধৎ। বৈৰ্নরেজ্ঞ ন তানুমজে সেক্রিয়াবিকলাহি তে॥ স্থাদি সম্ভাবে বন্ধে সমর্থে যোহবসীদতি। ধর্মার্থকামমে।ক্ষেভ্যো বাচ্যাক্তে তত্ত্ব ন হুসৌ॥ এতৎ ত্বংসন্ধাদ্ভূপ ময়া কার্য্যং মহৎ কুতম। স্বস্তি তেইস্ত গমিষ্যামি জ্ঞানভাগ্ভৰ সত্তম। কাশিরাজ উবাচ। উপকাবস্থরা সাধোর**লর্কন্ত ক্বতো** মহানু। মমোপকারার কথং ন করোবি অমানসম। क्लमात्री प्रजाः प्रक्षिः प्रकरमा नाकरना रजः। তশাৎ ছৎসংশ্রয়াদ্যুকা ময়া প্রাপ্তা সমুন্নতি:।।

স্থবাছক্ষবাচ। ধর্মার্থকামমোক্ষাধ্যং পুরুষার্থচতুষ্টরম। তত্র ধর্মার্থকামান্তে সকলা হীয়তে২পর:॥ তৎ তে সংক্ষেপতো বক্ষ্যে তদিহৈকমনাঃ দৃণু। শ্রুপা চ সম্যাগালোচ্য যতেথা: শ্রেষ্কে নুপ॥ মমেতি প্রত্যয়ো ভূপ ন কার্য্যোহহমিতি ত্বয়া। সম্যাগালোচাধর্মো হি ধর্মাভাবে নিরাশ্রয়:॥ কস্তাহমিতি সংজেয়মিত্যালোচ্য ত্বয়ামুনা। বাহাস্তর্গতমালোচ্যমালোচ্যাপররাত্রিয়। অব্যক্তাদিবিশেষাস্তমবিক।রমচেতনম্। যথাব্যক্তং ত্বয়া জ্বেয়ং জ্বাতা কশ্চাহ্মিত্যুত।। এতসিলেব বিজ্ঞাতে বিজ্ঞাতম্থিলং ত্বয়া। অনাম্বন্তামবিজ্ঞানমধ্যে স্বমিতি মৃঢ়তা॥ সোহহং দর্বগভো ভূপ লোকসংবাবহারত:। ময়েদমুচ্যতে সর্বাং ত্রা পুটো ব্রজাম্যহম্ ॥ এবপুকু। যথৌ ধীমানু স্থান্তঃ কাশিভূ মুপুমু। কা শরক্ষেহিপি সম্পৃত্ত্য সোহলর্কং স্বপুরং যথৌ # অলর্কোহপি স্থতং জ্যেষ্টমভিষিচ্য নরাধিপম। वनः क्याम मस्राक्तमस्यम् चित्रहृत्य ॥ তত: কাণেন মহতা নির্দ্রো নিপারিগ্রহ:। প্রাণ্ড যোগর্দ্ধিফুল;ং পরং নির্বাণযাপ্তবান্॥

পশান্ জগদিং সকং সদেব হৈ কৰা হ্বম্।
পাশৈ গুলিন হৈ বৰ্ধ কৰা বৰ্ধ না অধি ।
পুত্ৰাদি ভালিক পারক্যাদিভাবিতৈ ।
আকু ব্যাদি করি কৈ হৈ কৈ ভিন্ন দ্ন্
আজান পদ্ধ করি কৈ হৈ কৈ ভিন্ন দ্ন্
আজান পদ্ধ করি কৈ হাবা কি ।
আজান পদ্ধী বং গাথানে তাম গান্ত ॥
আহা কঠং বদসাভিঃ পূর্বং রাজ্যমন্ত্রী ৯ম্।
ইতি পশ্চানারা জাতং যোগ রাভি পরং ন্ত্রম্

তাতৈনং তং সমাভিঠ মুক্রে যোগমূত্তমন্।
প্রাপ্সাসে যেন তদ্বক্ষ থক গছা ন শোচসি॥
ততেঃহংমণি যাস্যামি কিং যহৈ জঃ কিং জ্পেন মে
কুতকুত্যস্য করণং ব্রহ্মতাবার করতে॥
ছত্তেঃহুমুজামবাপ্যাহং নির্ভিন্।
প্রয়তিষ্যে তথা মুক্টো যথা যাস্যামি নির্ভিন্।
পক্ষিণ উচুঃ।

এংমৃক্ত্বা স পিতরং প্রাণ্যান্থ জাং ততক সং।

রক্ষন্ জগাম মেধারী পরিত্যক্তপরিগ্রহং ॥

গোপি তদ্য পিতা তবং ক্রমেণ স্থনখানতিং।
বানপ্রস্থং সমান্বায় চতুর্থা শ্রমনভ্যগাৎ ॥

তত্রাত্মজং সমান্বায় হিলা বন্ধং গুণাদিকম্।
প্রাণ দিলিং পরাং প্রাক্তপ্রকাণোপাত্তসম্মতিং॥

অবং তে ক্রিখং ব্রহ্মন্যং পৃষ্টা ভবতা বয়ম্।

স্থিবিস্তরং য্রাংচ্চ কিম্মুচ্চে ভূমিছেদি॥

ইতি সাক্ষেত্রে মহাপুরাণে পিতা পুত স্থাণে জ্বড়োপাধ্যানং নাম চতু শ্চড়ারিংশোহ্ধ্যায়ঃ।

পঞ্চত্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

-:\*:--

देखमिनिक्वाह।

সমাপেত অমাখ্যাতং ভব দ্বিধিজ সত্তমাং।
প্রার্ত্তিশ্চ নির্ত্তিশ্চ বিবিধং কর্ম বৈদিকম্॥
অংহা পিতৃপ্রসাদেন ভবতাং জ্ঞানমীদৃশম্।
যেন তির্যাক্ত্ মপ্যেতং প্রাণ্য সোহস্তিরস্কৃতঃ॥
ধত্যা ভবস্তঃ সংশিক্ষা প্রাণ্য বছা বিভাগে বতঃ।
ভবতাং বিষ্যোদ্ধ তৈন মোকংগুরেন ধীনতা।
ভবস্থো বৈ সমাধ্যাতাঃ স্ক্রন্দেহত্ত্বাঃ॥

সংগারেহস্মিন্ মনুষ্যাপাং ভ্রমতামতিসঙ্কটে। ভব্রিধঃ সমং সঙ্গে। জায়তে ন তপ্সিনাম্॥ যদ্যহং সঙ্গমানাদ্য ভবস্তিজ্ঞানদৃষ্টিভি:। ন স্যাং কৃত।প্তিমুনং ন মেইন্সতা কৃতাপ্তা ॥ প্রবৃত্তে চ নিবৃত্তে চ ভবকাং জ্ঞানকর্মণি। মতিমন্তমণাং মত্যে যথা নাগ্ৰদ্য ক্স্যাচিৎ ॥ যদি অমুগ্রহবতী ময়ি বুদ্ধিবিজ্ঞোভ্যাঃ। ভবতাং তৎসমাথ্যাতুমহতেদমশেষতঃ 🏾 কথমেতৎ সমুদ্তং অবেণ ভাবেরজঙ্গনম্। কপঞ্জলযং কালে পুনর্যাস্যতি সন্তম 🕯 ॥ কথঞ্চ বংশাদে । ধিপিতৃভূতাদিসন্তবা:। মন্তরাণি চ কথং বংশাত্চরিতঞ্ধং ধং ॥ यावजाः ष्ट्रष्ठेग्रटेश्वर योवस्यः क्षालग्रास्त्रधा । যথা কলবিভাগশ্চ যা চমন্তর্বেছিভিঃ॥ যথা চ ক্ষিতিসংস্থানং যৎ প্রেমাণঞ্চ বৈ ভুবঃ। যথান্থিতাঃ সমুদ্রান্তিনিম্নাঃ কাননানি চ ॥ ভূর্বেক। দিস্বর্লোকানাং গণঃ পাতালসংখ্যা: । গতিস্তথ। কঁসোমাদিগ্রহর্কজ্যোতিধামপি ॥ শ্রোত্মিচ্ছাম্যহং সর্বমেতদাভূতসংপ্রবম। উপসংহতে চ যচ্ছেষং জগত্যন্মিন ভবিষ্যতি 🛭

পঞ্চিব উচুঃ।

প্রশ্নভারে। হয়নত্লো যন্থয়া ম্নিসভন।
পৃষ্ঠতং তে প্রক্রামনভাজ গৃষ্ধই জৈনিনে।
মার্কভেরেন কণিতং পুবা ক্রোষ্ট্রকরে যথা।
দিজপুরায শাস্তায় ব্রত্মাতায় ধানতে ॥
মার্কভেরেং মহাত্মান মুণাসীনং বিজ্ঞোতিনৈঃ।
ক্রোস্কঃ পরিপপ্রছ যদেও পৃষ্টবান্প্রভা
তক্ত চাকথয়ং প্রীত্যা যল্নিভ্ভিনন্দনঃ।
তৎ তে প্রক্রিয়ামঃ শৃরু ছং দিজসভম ॥
প্রণিপত্য জগরাগং পদ্যোনিং পিতামহম্।
জগদ্যোনিং বিতং ক্রেটা বিজ্বরূপিণ্ম্
প্রণমে চাত্তকভিরিং রৌজং ক্রম্বরূপিণ্ম্।

মাক্তেষ উবাচ।
উৎপল্লমাত্রস্য পুরা ব্রহ্মণেইব্যক্তজ্মনঃ।
পুরাণ্যেত্রেদাশ মুখেত্রেইস্থিনিঃস্ভাঃ॥
পুরাণ্যাইতাশক্ত কুর্লহ্লাঃ পরমর্থয়ঃ।
বেদানাং প্রবিভাগশ্চ কুত্তৈন্ত সহস্তশং॥
ধন্মোজান্ফ বৈরাগানেম্বাঞ্মহাল্লনঃ।
ভিস্যোপ্দেশেন বিনা ন হি সিদ্ধা চতুইয়ম্॥

वलान् मश्रवप्रख्या ज्जग्रहसमा मानगाः। ्रतानः अग्रह्मिना। म्नस्यमा माननाः॥ ভূগোঃ সকাশাচ্চাবনস্তেনো ক্রঞ্ছিক্সনাম্। ঋষিভিশ্চাপি দকার প্রোক্তমেতরাং ছিঃ॥ দক্ষেণ চাপি কথিভমিদমানীৎ ভদা মম। তং তুভাং কথয়াম্যদ্য কলিকঅধনাশনম্॥ সর্বমেতকাহা ভাগ ক্রমতাং মে সমাধিনা। यथा अप्रकार भाषा श्रृद्धाः एकना गप्तका मूल ॥ প্রণিপতা জগদ্যোনিমজমব্যয়মাশ্রম্। চরাচরসাজাগতো ধাতারং পরমং পদ্ম ॥ अकानमामिश्रक्षम् २ शिखि विविश्यतः । যৎ কারণমনৌরদাং যতা সর্বাং প্রতিষ্ঠিতম্॥ তবৈ হিবণ্যগ্ৰীয় লোকতন্ত্ৰায় ধীমতে। প্রাণমা সম্যাপক্যামি ভূতসর্থমনু ॥ ম্হলাল্য বিশেষাস্তং স্টেবরূপ্যং স্লক্ষ্য । প্রমাণেঃ পঞ্চির্গম্যং স্রোতোভিঃ সন্তির্বিত্য ॥ পুক্ষাধিষ্ঠিতং নিভাগনিভামিব চ স্থিতুম্। প্রধানং কারণং যত্তদব্যক্তাখ্যং মহর্ষয়ঃ। যদাহঃ প্রাকৃতিং স্ক্রাং নিত্যাং সদসদ।ত্মিকান্॥ क्षायक्षामञ्जासम्। গন্ধকপ্ৰদৈহীনং শক্ষ্প্ৰবিৰ্জ্জিতম্॥ অনাদ্যন্তং জগদ্যোনিং ত্রিগুণপ্রভবা গ্রম্। অসাধ্পত্মবিজ্ঞেয়ং ব্রহ্মাগ্রে সমবর্ত্ত ॥ প্রারম্যার তেনেদং ব্যাপ্তমাদীদশেষতঃ। গুণশাম্যাং তভন্তমাৎ ক্ষেত্রজা ধিষ্ঠিতাগুনে॥ গুণভাবাৎ স্থভ্যমানাৎ সর্গকালে ভতঃ পুন:। প্রবানং ভর্মুছ,তং মহা ४ং তৎ সমারুণোৎ ॥ যথা বীজং জ্বচা ভশ্পব্যক্তেনাবুতে। মহান্। স।বিকো রাজসকৈচৰ তামসক তিধে।দিত: ॥ তত্তসাদহস্কারস্তিবিধাে বৈ ব্যঙ্গায়ত। বৈকঃরিক**ত্তৈজ্ঞসশ্চ** ভূতাদিশ স তামসঃ॥ মহতা চারতঃ সোহপি যপাবাজেন বৈ মহন্। ভূগদিস্ত বিকুর্কাণ: শক্তরাক্কং তত:॥ সসজ্জ শক্তন্মাত্রাদাক।শং শক্লফণুম্। জাকাশং শব্দমাত্রস্ত ভূতাদিশ্চার্ণোৎ ততঃ॥ স্পর্শতিকা।অমেবেহ জারতে নাজ সংশয়ঃ। <sup>বলবান্</sup> জায়তে বায়ুস্তদ্য স্প**র্ল**গণো মতঃ। অ:কাশং শব্দমাত্রস্ত স্পর্শমাত্রং সমানুলোৎ ॥ वास्कालि विक्रवीरना क्रमभाजः नमर्क ह।

জ্যোতিরৎপদ্যতে বায়োস্তজ্ঞপগুণমূচ্যতে॥ স্পর্মাত্রস্ত বৈ বায়ু রূপমাত্রং সম রুলোং। জোতি শচাপি বিকুরাণং রসমা**ত**ং সমর্জ হ॥ সম্ভবন্তি ততো হাপেশ্চাসন্ বৈ তা রসাত্মিকাঃ। রসমাতাস্ত তা হাপো কণমাতং সমার্ণোৎ॥ আলশ্চাপি বিকৃশ্বিভ্যে। গ্রুমাত্রং স্পজিরে। সজ্যাতো জায়তে তত্মাং তস্য গল্পো গুণো মতঃ তিমিংস্তমিংস্ক তনাতেং তেন তনাত্রতা স্বৃহা। অবিশেষবাচকত্বাদবিশেষাস্তত=চ তে ॥ ন শাস্তা নাপি পোরাস্তে ন মৃঢ়াশ্চাবিশেষতঃ। ভূততনাত্রসর্গোহয়মহস্কারাৎ তু তামনাৎ॥ বৈকারিকাৰহন্ধাবাৎ সধ্যোদ্রিকাৎ তু সাহিকাং বৈকারিকঃ স সর্গস্ত ঘুগপৎ সম্প্রবর্ততে ॥ वृक्षी क्रियाणि भटेकव भक्ष कर्या क्रियाणि है। তেজসানী ক্রিয়াণ্য।ছর্দেবা বৈকারিকাঃ স্মৃতা:॥ শ্ৰেতিং ত্বক্ চকুষী জিহ্বা নাদিক। চৈব পঞ্মী। শক্ষাদীনামবাপ্তার্থং বৃদ্ধিযুক্তানি বক্ষাতে ॥ পाको भाष्क्रभन्न **इ**त्छो ताक् भक्षभी ७८व९। গতি বিবিদর্গো হানকঃ শিল্প: বাক্যঞ্জ কর্ম তৎ॥ আকাশং শব্দমাত্রন্ত স্পর্নমাত্রং স্মারিশং। ত্রিওণো জাগতে বায়ুস্তস্ত স্পর্শো ওণো মত॥ কপং তথৈবা বিশতঃ শক্ষপ্ৰভাবুভৌ। ষি গুণস্থ ভতশ্চাগ্নিঃ স শক্ষপর্শক্রপ্রান্॥ শকঃ স্পর্শত রূপঞ্রসমাত্রং সমাবিশৎ। তত্মাচচ কুগুণা ফাণো বিজেয়ান্তা রদাব্যিক::॥ শকঃ স্পর্ণক রূপক রুদো গন্ধং স্মারিশৎ। সংহতা গন্ধমাত্রেণ আবুণুংতে মহীমিমাম্॥ তিলাং পঞ্জণা ভূমিঃ ফুল। ভূতেমু দুখাতে। শ:স্তা ঘোরাশ্চ মৃঢাশ্চ বিশেষাজ্যেন তে স্বতাঃ ॥ পরস্পরাক্তপ্রবেশাদ্ধাররন্তি পরস্পারম্। ভূমের छ खिमः স<sup>2</sup>ति शाकारमाकः घनातृ उम्॥ বিশেষ!শেচক্রিয়গ্রাহা নিয়ত।চচ তে স্বতা:। खनः পূर्वक পूर्वक आश्र वद्या उदया उत्रम्॥ ननावीयाः পृथगञ्चाः मदेश्रदक मरहिः विना । ना नकू वन् अवाः खहै यममा भगा कु ९ सनः॥ সমেত্য জেলি সংযোগনভোকা আনি ৭ শচ তে। একসজ্ব। তচিহ্নাশ্চ সম্প্রাপ্রেকমণেষ ১:॥ পুন্ধাধিতিষ্ঠভাচ্চ অব্যক্তানুগ্রেছেণ চ। মহন:দ্যা বিশেষাস্ত। হুওমুংপাদয়স্তি তে॥ जगरूप्र्वर उक क्रमारेष तृक्षिम, গতন্।

कृरत्रकार्धः महात्रक तृहर कष्ट्रतरु भग्नम् ॥ প্রাকৃতেহতে বিরুদ্ধঃ সন্কেরজো ব্রহ্ম সংজ্ঞিতঃ স বৈ শ্রীবী প্রথমঃ দ বৈ পুরুষ উচাতে॥ আদিকতা চ ভূতানাং ব্রন্ধারো সমবর্তত। তেন সর্কমিদং ব্যাপ্তং তৈলোক্যং সচরাচরম্॥ মেরস্তমানুসভৃতো জরায়ুশ্চাপি পর্বতাঃ। সমুদ্রা গর্ডদলিলং তক্তাওক্ত মহায়ন: 🛭 তিমাতে জগৎ সর্বং সদেবাসুর্মাতৃষ্ম। দ্বীপাদ্যন্তিদমুত্তাশ্চ সম্ব্যোতির্লোকসংগ্রহ:॥ জন্মনিলানলাকালৈততো ভূতাদিনা বহিঃ। বুতমণ্ডং দশগুণৈরেকৈত্বেন তৈঃ পুনঃ॥ মহতা তৎপ্রমাণেন স্টেহ্বানেন বেষ্টিতঃ। **মহাংক্তঃ সহিতঃ স্করিবর্যকেন স্মার্তঃ** ॥ অভিরাবরণৈরতাং সপ্তভিঃ প্রাকৃতিবুর্তিম্। অভোক্সাবৃত্য তা অংধী প্রকৃত্যঃ স্থিতাঃ॥ এষা সা প্রকৃতিনিতা। তদন্তঃ পুরুষণ্চ সঃ। ব্ৰহ্মাথাঃ কথিতো যতে সমাসাচ্ছয়তাং পুনঃ॥ যথামগোজালে ক শি6 সুনাজ্জন্জ লস্ভ বস্। জালাঞ্জিপতি ব্ৰহ্মাস তথাপ্ৰকৃতিবিভুঃ॥ অবাক্তং কেত্রমুদ্দিষ্টং ব্রহ্মা ক্ষেত্রভ উচাতে। এতৎ সমস্তং জানীয়াৎ কেওকেওজলকণম্।। ইত্যেষ প্রাকৃতঃ সর্বঃ ক্ষেত্রজাধিষ্ঠিভস্ত সঃ। অবৃদ্ধিপূর্ব: প্রথম: প্রাছভূতি তড়ি দ্বণা ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে এক্ষোৎপত্তি-নাম পঞ্চতাবিংশোহ্ধায়ঃ॥

### ষট্চস্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

-----

ভগবংশ্ব গ্ৰন্থ ভিৰ্যাগাৰৎ কথিতা সম।
ব্ৰহ্মতে ব্ৰহ্মণো জনা তথা চোক্ৰং মহাস্থানঃ ॥
ব্ৰহ্মতি কাহং শ্ৰোতৃং ঘটো ভৃত্তকুলোন্তৰ।
কথং বা স্প্টিভূতিনাং ভবত্যেব পুন্ধিতো।
কালে বৈ প্ৰাম্ভান্তে স্ক্সিন্পুসংহতে॥
মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

যদা তু প্রকৃতে বাতে লয়ং বিশ্বনিদং জগৎ।
তদোচাতে প্রাকৃতোহনং বিশ্বত্তঃ প্রতিসঞ্চরঃ॥
ত্বান্থতোহবাকে বিকারে প্রতিসংস্তে।
পাঞ্জি: পুরুষদৈচন সাধ্যোগাবভিষ্ঠতঃ॥
তদা তমণ্চ স্বঞ্চ স্মত্ম গ্রেণী স্থিটো।

অহ্রিজ বন্নৌচতৎ গ্রীতোচ প্রস্পরম্।। তিলেষু বা যথা তৈলং ঘুতং পয়সি বা ভিতম্। তথা তমসি সত্ত্বেচ রজোইপামুস্তং স্তিম্। অহমুথে প্রবৃদ্ধন্ত জগদাদিরনাদিমান। সর্বহৈতুরচিন্তাত্মা পরঃ কোহণ্টপরক্রিয়ঃ।। প্রকৃতিং পুরুষকৈব প্রাবিশ্বাও জগৎপতিঃ। (का ज्याभीन (यार्गन भरतेन भेडरभेदेः ॥ यथा माला नवहीं नार यथा वा माधवानिनः। অর্প্রবিষ্টঃ কোভার তথাসে বোগমূতিমান্ ॥ প্রধানে ক্ষেত্রমাণে তুল দেনে। ব্রহ্মদংজ্ঞিত:। সমুৎপরোহওকোষত্যে গথা তে ক্থিতং ময়া॥ স এব কোভকঃ পূর্বং স কোভ্যঃ প্রকৃতেঃ পতি म मरकाठिकामा छार अधाग (ष्ठ्लि छ विष्टः ॥ উৎপরঃ স জগদ্যোনিরগুণোহপি রজোগুণম্। ভুঞ্জন প্রাবর্ততে সর্গে ব্রহ্মত্বং সমুণা শ্রহঃ॥ ব্ৰহ্মত্বে স প্ৰেলাঃ স্ষ্টু। ততঃ স্বাতিবেকবান্। বিফুজ্মেতা ধর্মেণ কুকতে প্রতিপালনম্॥ ততন্তমোগুণে।দ্রিকো রম্রবে চাধিলং জ্গৎ। উপসংস্কৃত্য বৈ শেতে ত্রৈকাল্যে ত্রিগুণোহগুণঃ যথা প্রাথ বাপকঃ ক্ষেত্রী পালকো লাবক স্থা। তথা স সংজ্ঞামায়াতি ব্রহ্মবিষ্ণীশকারিণীম্ ॥ ব্ৰহ্মতে স্থাতে লোকান্ রুদ্রতে সংহৰতাপি। বিফুত্বে চাপ্যদাদীন স্তিস্রোহ্বস্থাঃ সমস্ত্রঃ॥ রজো ব্রহ্মা তমো রজো বিষ্ণু: সৃত্তং জগৎপতি: এত এব কয়ো দেবা এত এব ত্রয়ো গুণাঃ॥ অভ্যান্ত মিথুনা হোতে অভোগ্ন্যাশ্রমিণ্ডথা। ক্ষণং বিয়োগোন হোষাং ন তাজ স্থি প্ৰস্পর্য : এবং এন্ধা জগৎপূর্বো দেবদেব । চতুমু খঃ। বজোভণং সমাশ্রিত্য স্তুত্বে স বাব্ছিতঃ॥ **बित्रगागरङ्ग (मर्वानित्रगामिक शर्धात छः।** ভূপদাক্শিকাসংখ্যে ব্ৰহ্মাগ্ৰে সম্ভায়ত॥ তশ্য বর্ষণতং ত্বেকং প্রমায়ুর্মহাত্মনঃ। ভ্রান্ধোলৈৰ হি মানেন ভক্ত দংখ্যা নিৰ্বেধ মে নিমেরৈর্দ্ধশভিঃ কাষ্ঠা তথা পঞ্চিবটাতে। কলাস্বিংশচ্চ বৈ কাষ্ঠ। মুহূর্ত্তং ত্রিংশভিঃ কলাঃ। অহোরাত্রং মৃত্র্রানাং নৃণাং ক্রিংশভূ বৈ স্থত্য करहात्रदिवक जिल्लिखः भएको एको मांग छेठाए टेज: यष् ভित्रयनः वर्षः (घश्यटन मकिर्गाख्टत् । তদ্বোনামহোর।তাং দিনং ততোত্তরায়ণম্॥ দিবৈ। কার্ষদ্ধবৈস্ত কৃতত্তে তাদিশং জিতম্।

চতুৰু গং হাদশভিক্ত হিভাগং শৃণুহ মে॥ চ্বারি তু সহস্রাণি বর্ষাণাং কুতমুচাতে। শতানি সন্ধ্যা চত্বারি সন্ধ্যাংশশ্চ তথাবিধঃ।। ত্তেতা ত্রীণি সহস্রাণি দিব্যাকানাং শতত্ত্বম। তৎসন্ধা তৎসমা চৈব সন্ধাংশশ্চ তথ।বিধ:॥ ঘাপরং দ্বে সহত্রে তু বর্ষাণাং দ্বে শতে তথা। ভক্ত সন্ধ্যা সম্থ্যিতো দ্বে শতাকে তদংশকঃ॥ किनः महस्यः नियानाभक्षानाः विक्रमख्यः। এষা দাদশসাহস্ৰী যুগাখ্যা কবিভি: কুতা॥ এতৎ সহস্তুণিত্মহ্রাক্ষাম্দাহত্য ॥ वकारण निवरम बक्तन मनवः साम्हजूकमा ভবস্তি ভাগশন্তেষাং সহস্ৰং তদ্বিভক্ষাতে ॥ দেবাঃ দপ্তর্যঃ দেবা মহুস্তৎস্নবো নুপাঃ। ।মুনা সহ স্জান্তে সংক্রিয়ন্তে চ পূর্বাবৎ ॥ ্তুৰু গাণাং সংখ্যাতা সাধিকা ছেকসপ্ততিঃ। ারস্তরং তহ্য সংখাাং মাতুষাকৈনিবোধ মে॥ ত্রংশৎকোটাস্ত সম্পূর্ণাঃ সংখ্যাতাঃ সংখ্যায়া দ্বিজ াপ্তৰষ্টিত্তথান্যানি নিযুতানি চ সংখ্যয়া॥ বংশতিশ্চ সহস্রাণি কালোহয়ং সাধিকং বিনা। ।তন্মৰ তবং প্ৰেণ কং দিই বাৰ্ক ধৈনিবোধ মে॥ অটো শতসহস্রাণি দিব্যরা সংখায়া যুক্তম্। ধিপঞ্চাশং তথান্যানি সহস্রাণাধিকানি ত॥ চতুদিশপ্তণো ছেষ কালো আক্ষামহ: স্তুম্। তস্তাম্ভে প্রলয়ঃ প্রোজে বন্ধন নৈমিতিকো বুধৈঃ ভূলেকি হথ ভুবলেকিঃ মূর্লোকশ্চ বিনাশিনঃ। তথা বিনাশমায়াতি মহলোকশ্চ তিষ্ঠতি॥ ७ व। मित्नारुषि जारुभन अनत्नोकः अग्रास्ति देव। একার্ণবে চ তৈলোকে ব্রহ্মা স্থপিতি বৈ নিশি ॥ তংপ্রমানৈর দা রাজিন্তদন্তে স্কাতে পুনঃ। এবস্থ ব্ৰহ্মণো বৰ্ষমেকং বৰ্ষশভস্ত ভং ॥ শতং হি তক্স বর্যাণাং পরমিত্য ভিনীয়তে। ° ঞ শ ভিত্তথা বহৈ গ পরান্ধামিতি কীর্তাতে ॥ এবমস্ত পরার্ছান্ত বাতীতং বিজস্তমঃ। <sup>যস্তা</sup>ন্তেইভুনাহাকলঃ পাশ ইত্যভিবিশ্রত:॥ ৰিতীয়স্থ পরার্কান্ত বর্তুমা**নগু** বৈ ধিজ। ৰবাহ ইতি কলোহয়ং প্রথমঃ পরিকল্লিডঃ॥ ইতি মার্কভেয়ে মহাপুরাণে ত্রহ্মাযুঃপ্রমাণং

नाम वर्षे हजातिः त्नार्थायः।

#### সপ্তচন্বারিংশোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

ক্ৰেষ্ট্ৰিকবাচ।

যথা সদৰ্জ হৈ ব্ৰহ্মা ভগবানা দিকুৎ প্ৰাঞ্চাঃ দ প্ৰাঞ্জাপতিপতিৰ্দ্দেবস্তমে বিস্তরতো বদ ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ । কথয়ামোষ তে ব্ৰহ্মন্ সদৰ্জ ভগবান্যথা।

লোক কুচ্ছাখত: কুৎলং জগৎ স্থাবরজন্মম ম পদাবিদানে প্রলয়ে নিশাস্থায়ে থিতঃ প্রভুঃ। সত্যোজিকতাদা ব্ৰহ্মা শূন্যং লোকমবৈক্ষত ॥ ইনঞোদাহরস্তাত্র শ্লোকং নারায়ণং প্রতি। ব্দাদরপিশং দেবং জগতঃ প্রভ্বাপায়ম্।। আপো নারা বৈ তন্ব ইত্যপাং নাম ওঞ্ম। তান্ত্রে স যন্মাচ্চ তেন নারায়ণঃ স্মৃতঃ ॥ বিবৃদঃ সলিলে ভিক্মিন বিজ্ঞায়ায়ের্গভাং মহীম।। জহুমানাৎ সমুদ্ধারং কর্ত্তকামস্তদা কিতে:॥ অকরোৎ স তন্রন্যাঃ কল্পাদিযু যথা পুরা। মৎস্থ্যাদিকান্তদ্বারাহং বপুরান্থিত:॥ त्वमयळमञ्रः भिवाः (वमयळम्राञ्चा विज्ः। क्र कर किरवेगान्य मर्क्व मर्क्व मर्ख्य कर ॥ সমুকৃতাচ পাত†লাৰুমোচ দলিলে ভু∢ম্। জনলোকস্থিতিঃ সিবৈশিচস্তামানো জগৎপতি:॥ তভোপরি কলোঘত মহতী নৌরিব ছিতা। বিততভাৎ তুদেহত ন মহী যাতি সংপ্রবম ॥ ততঃ ক্ষিতিং সমীকতা পৃথিবাাং সে৷২স্ফালারীন্ প্রাক্সর্গে দহুহানে তু তদা সম্বর্তকাগ্নিনা। তেলাগিনা বিশীর্ণান্তে পর্বতা ভূবি সর্বশ: । শৈলা একাৰ্ণৰে মগ্না বায়ুনাপস্ত সংহতাঃ। নিষকা যত যতাসংস্ত ভতাচশাহভবন্। ভূবিভাগং ততঃ ক্লবা সপ্তদীলোপশোভিতম। ভূরাদ্যাংশচভূরো লোকান্ পূর্ব্বৎ সমকল্লয়ৎ 🖟 স্টিং চিম্বয়তন্তক কল্লাদিষু ষ্থা পুরা। মবুদ্ধিপূর্বকন্তমাৎ প্রাগ্রন্থ ক্রেমানম: ॥ তমো মোহো মহামোহস্তামিত্রো অন্ধ্রণজ্ঞিতঃ অবিদ্যা পঞ্চপুটের্কাবা প্রাছ্মভূতা মহাস্থান:॥ পঞ্চাৰস্থিতঃ সৰ্গো ধ্যায়তোহপ্ৰতিবোধবান্। বহিরস্তশ্চাপ্রকাশঃ সংবৃত্তাত্মা নগাত্মকং ॥ 🕏 মুখ্যা নগা যত শেচাকা মুখ্যস্গ স্তত্ত্বস্। তং দৃষ্টা সাধকং সর্গমমন্যদপরং পুনঃ ॥

তম্মান্তিশ্যায়তঃ দর্গং ভিষাক্স্রোতে। হাবর্ত্ত । যুখাং তিৰ্গাক প্ৰবৃত্তিঃ দা তিৰ্যাক্ষোত্ততঃ স্মৃতঃ পশ্বদেয়তে বিখ্যাতান্তমঃপ্রায়া হাবেদিনঃ। উৎপথগ্রাহিণদৈর তেইজ্ঞানে জ্ঞানমানিনঃ॥ অহরতা অহংমানা অষ্টাবিংশবিধাতাক':। অন্তঃপ্রকাশান্তে সর্কে আবৃতান্ত পরস্পর্ম। তম্পাদাধকং মন্ত্র ধার্যিকোইনাস্ত্রেহিভবং। উৰ্ন্ধাতত গীয়ন্ত সান্ধিকোৰ্দ্ধাবৰ্ত্ত॥ তে সুখল্পীতিবল্লা বহিরম্ভনার্ডাঃ। প্রকাশা বহিরস্থ<sup>4</sup>ট উর্দ্ধাকঃসমুদ্ধবাঃ॥ ভঠান্মনস্ত গ্রীয়ন্ত দেবদর্গে। হি দ স্মৃতঃ। ত্রিন সর্গেইভবৎ প্রীতিনিষ্পন্নে রন্ধণস্তদা। ততে হিনাং স তদা দধে। সাধকং সগ্রুত্মন্। তথাভিধায়ত স্তস্ত সত্যাভিধ্যায়িনস্তত: ॥ প্রাতুর্মতৌ তদাগ্যকাদর্মাক্সোতস্ত সাধকঃ। যথাদকীগাবর্ত্ত ততোহসাক্সোতস্ত তে॥ তে চ প্রকাশবছণা সমোদ্রিকা বজোহধিকা:। তথাৎ তে ছঃথবছলা ভূয়োভূয়শ্চ কারিণঃ। প্রেকাশা বহিরস্তশ্চ মন্ত্র্যাঃ সাধকাশ্চ তে॥ পঞ্চন।২মুগ্রঃ সর্গঃ স চতুর্দ্ধা বাবস্থিত:। বিপর্যায়েণ সিদ্ধ্যা চ শাস্থ্যা তুপ্তা তথৈব চ।। নিবুজিং বর্ত্তমানঞ্চ তেহর্বাং জানান্তি বৈ পুনঃ। ভতাদিকানাং ভতানাং ষষ্ঠঃ সর্গঃ স উচ:তে ॥ তে পরিগ্রহিণঃ সর্বে সংবিভাগরতান্তথা। চোদনাশ্চাপ।শীলাশ্চ জেয়া ভূ গাদিকাশ্চ তে॥ প্রথমে। মহতঃ দর্গো বিজেয়ো ব্রহ্মণস্ত সং। তনা বাণাং দ্বিতীয়স্ত ভূতদৰ্গঃ দ উচ্যতে॥ হৈবকারিকস্তীয়স্ত সর্গদৈচ ঞািষকঃ স্মৃতঃ। ইত্যেষ প্রাক্তঃ দর্গঃ সম্ভূতো বুদ্ধিপূর্বকঃ॥ মুখাদর্গ ততুর্থস্ত মুখা। বৈ স্থাবরাঃ স্মৃতাঃ। তির্যাক্সোতস্ত যঃ প্রোক্তন্তির্যাপ্যোন্যঃ স পঞ্চমঃ ততোহৰ্দ্ধশ্ৰোভদাং ষষ্ঠো দেবদগন্ত দ স্মৃতঃ। ততে হর্মাক্সো হসাং সর্গঃ সপ্তমঃ স তু মামুষঃ॥ অষ্টমোহতুত্রহ: সর্গ: সাত্তিকস্তামদশ্চ সং। প্রিক্তে বৈক্তা: দ্র্গা: প্রাকৃতান্ত তম: স্বৃতা:।। প্রাক্তের বৈক্তবৈশ্ব কৌমারো নবম: শ্বত:। ইডেনতে বৈ সমাখ্যাতা নব সর্গাঃ প্রজাপতে: 🛭 ইতি মাৰ্কভেয়ে মহাপুরাণে প্রাক্তবৈক্তসর্গো नाम मश्रद्धातिः (भाव्याप्रः।

অফী চ চম্বারিংশোহধ্যায়ঃ।
অফী চলং স্ব
—ছাহণ:
কোষ্ট কিল্লানিনি

সমাসাৎ কথিতা স্টিঃ সমাগ্ভগবভা মম। দেবাদীনাং ভবং ব্ৰহ্মন বিস্তৱাং তু ব্ৰবীহি মে মাৰ্কণ্ডেম উনাচ। কুশলাকুশলৈত্রস্থান্ ভাবিতা পূর্বাকর্মভিঃ। খ্যাত। তথা হৃনির্ফা: প্রলয়ে হৃপসংস্তা: ॥ দেবান্যাঃ ছাববাস্তাশ্চ প্রজা ব্রহ্মংশ্চতুর্বির্ধাঃ। ব্ৰহ্মণঃ কুৰ্ব্মতঃ সৃষ্টিং জ্ঞাজিরে মান্সাস্তদাঃ॥ ততো দেব!স্থ্যপিতৃন্মান্ন্যাংশচ চতুষ্টয়ম্। সিস্ক্রভাংভোতানি সমাঝানম্যুজ্ৎ।। যুকাত্মনন্তমোমাতা উদ্রিকাভূৎ প্রজাপতেঃ। িস্কোর্জঘনাৎ পূর্ধমস্থরা জ্ঞাজেরে ততঃ। উৎসদৰ্জ ততন্তান্ত তমোমাকা স্মিকাং তমুম। সাপবিদ্ধা তমুস্তেন সদ্যো রাত্রিরজায়ত। অক্তাং তমুসুগাদায় সিস্ফু: গ্রীতিমাপ স:। সবোদেকান্ততো দেবা মুখতন্তস্ত জজিরে ॥ উৎদদর্জ চ ভূতেশস্তমুং তামপ্যদৌ বিভুঃ। সা চাপবিদ্ধা দিবসং গৈতৃপ্ৰায়মজায়ত ॥ সর্মাত্রাত্মিকামের ভভোহস্তাং জগৃহে তরুম্। পিতৃবনাম্মানস্ত পিতবস্তস্ত জাজিরে॥ স্টা পিত্রৎসমর্জ তরুং তামপি স প্রভু:। সা চোৎস্টাভবৎ সন্ধ্যা দিননকান্তরশ্বিতা। রজোমাত্রাঝিকামন্তাং তহুং ভেজেহণ স প্রভু: ততো মহুষাাঃ সভাতা রজে:মাতাগেমুদ্ভবাঃ ॥ স্থা মন্ত্রান স বিভ্রুৎসমূজ ভরুং ভতঃ। (का। देवा मगडवर मा क ने का त्यु हेर्म्म, देव के या। ইত্যেতান্তনবন্তম দেবদেবম্ম দীমতঃ। থাতো রাজ্যহনী চৈব সন্ধ্যা জ্যোৎস্মা চ বৈ বি জোৎসা সন্ধ্যা ভবৈবাহ: সন্তমাত্রাত্মকং ত্রা তমোনাত্রাত্মিকা রাত্রি: সা বৈ তমাৎ তিষা তত্মাদেব। দিব। রাত্তাবস্থরাস্ত বলায়িতা:। জেগৎসাগমে চ মমুজাঃ সন্ধায়াং পিতরস্ত ভবস্তি বলিনোহধুৰাা বিপক্ষাণাং ন সংশরঃ ত্বিপ্ৰয়য়মাদাদ্য প্ৰয়ান্তি চ বিপ্ৰয়য়ম্॥ জ্যোৎসা রাত্র্যহনী সন্ধ্যা চত্বার্য্যেতানি বৈ প্র ত্রদাণস্ক শরীরাণি ত্রিগুণোপশ্রেতানি তু॥ চত্বাৰ্য্যেত**াল্যেশে**শাদ্য **তমুমস্তাং প্ৰদাপতি** 

রজন্তমোনধীং রাজে। জগৃহে কৃত্ডবিতঃ ॥ তদরকারে কুৎকামানস্জন্তগ্রানজঃ। বিরপান্ শশেলানভুমারকঃভে চ তাং তরুম্॥ 🖛 🛪 ইতি তেভোাহতে য উচুত্তে তু রাক্ষসা:। যকাম ইভি যে চোচুন্তে যকা যকণাদিক । তাन् मृहे। श्राव्याया क्याः नीर्याख (वधमः। সমারোহণহীনাশ্চ শিরদো ত্রহ্মণস্ত তে। সর্পণাৎ তেহ্ছবন্ সর্পা হীনতাদহয়: শ্বতা:॥ স্পান্দুষ্ট্ৰ ততঃ কোধাৎ কোধাত্মানো বিৰিন্দ্ৰে বর্ণেন কপিলেনোগ্রান্তে ভূভা: পিশিতাশনা:॥ ধারতো গাং ভতততে গন্ধবি। জ্ঞিরে সূত্র:। জ্জিরে পিবতো বাচং গন্ধর্মান্তেন তে স্মৃতাঃ॥ ষ্পত্তাম্ব স্থাম্ব দেববোনিষু স প্রাভুঃ॥ **७७: यटम्भ्ट**ार्रेशांनि वयाः ति भन्दार्श्कः । মুখতোহজাঃ সদৰ্জাথ বক্ষদ=চাবয়ে। হত্তৰং। গাবলৈচবোৰরাজ্জা পার্যভ্যাঞ্বিনির্মমে ॥ প্তাকিশান্ স্মাতকান্রাস্ভাঞ্শকান্মুগান্। উট্রানখতবাংশেচৰ নানারূপাশচ জাত্যঃ॥ ওষধ্যঃ ফলমূলিতে (রোমভ্যস্ত জ্ঞিতে ॥ এবং পশোষধীঃ স্তুর হাদজচ্চাধ্বরে বিভৃঃ। তথাৰাদো তুকলভা তেতাযুগমুথে তদা॥ গৌবজো মহিষো মেষঃ অখাখতরগর্দভাঃ। এতান্ গ্রামান্ পশ্নাছরারণ্যাংশচ নিবোধ মে॥ খাপদং বিখুরং হন্তী বানবাঃ প্রিক্পঞ্মাঃ। र्छनकाः भगवः वर्षः मश्रमाञ्च मवीस्रशाः॥ গাঁঘলীক ড়াচকৈব তিবুৎ সাম রুপস্কবম। গিটোমঞ্চ যজ্ঞানাং নির্মানে প্রথম: কুথাৎ ॥ যজৃংষি তৈতি ভং ছনদঃ স্তোমং পঞ্চদশং তথা। त्ररमाम जः भाक्यक मिक्नामम्कन्मूथार ॥ সামানি জগতীক্তনঃ স্তোভং পঞ্চদশং তথা। বৈকপমতিরাতঞ্নির্মমে পশ্চিমালুখাৎ ॥ **धकविः समयक्तानमादश्राग्रामानः मन छ।** অনুষ্ঠুভং সটবরাজমুত্তরাদস্জন্মুখাৎ ॥ বিছাতোহশনিমেঘাংশ্চ রোহিতে এধনুংষি চ। বয়াংসি চ সমর্জ্জাদৌ কল্পন্ত ভগবান্ বিভূ:॥ উচ্চাবচানি ভূতানি গালেভাতভ জ্ঞিরে। रहे। চত্ইয়ং পূর্বং দেবাস্থরপিতৃন্ প্রজাঃ ॥ ততোহস্ত্রৎ স ভূতানি স্থাবরাণি চরাণি চ। यकान् शिभाष्ठान् शक्कर्ताः छटेथवाश्मत्रप्राः भगान् ॥ नविकश्रवत्रकाः मि वग्नः পশুমুগোরগান्।

ञ्च राय्यक्षे या प्रदेश ये या निष्ठः ज्ञानु अवस्थान् ॥ टिक्शः (व यानि कर्षानि श्राक् श्रः श्रेडिशिनिदः) তান্যের প্রতিপদায়ে স্কামানাঃ পুনঃ পুনঃ ॥ হিংলাহিংলে মৃত্কুরে ধর্মাধর্মাবৃতানুতে। তম্ভাবিতা: প্রপদ্যম্ভে তম্মাৎ তৎ তম্ভ রোচতে ॥ ই চিম্মার্থের্ভূতেরুশরীরেরুচ স ঐভুঃ। नौनाषः विनिष्माशक शाटेक्व वामश्राद अध्यम्॥ নাম রূপঞ্জ ভূতানাং কুতানিক প্রাপ্দনম্। (दनमत्यका विवास) दनवानी नाः हकात मः ॥ **अधी गाः नाम एस ग्रानि यान्ठ ८ एर रव्यू ऋहेनः।** শৰ্ক্যান্তে প্ৰস্তানামনোষাঞ্চলাতি সঃ॥ যণভার্তৃলিকানি নানারূপাণি পর্য যে। দৃশুস্তে তানি তান্যেব তথা ভাষা যুগাদিরু॥ এব বিধাঃ স্প্তীয়স্ত জক্ষণে হিবাক্ত জন্মন:। শর্কান্তে প্রবৃদ্ধশু কল্পে কল্পে ভবস্তিনৈ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে স্ষ্টেপ্রকরণে-

#### একোনপঞ্চাশোহধ্যায়ঃ।

২ষ্টচতারিংশোহধ্যায়ঃ।

-- 0:0 ---

### ক্রেষ্ট্ কিরুবাচ।

অৰ্ক(ক্ৰোভন্ত কথিতে) ভবতা যন্ত মাত্ৰ:। ব্ৰহ্মন্বিভাৱতো ক্ৰিছি ব্ৰহ্মা সমস্ভালৰপা॥ যথাচ বৰ্ণানস্ভালৰদ্পুণাশ্চ মহামতে। যচচ বেষাং স্মৃতং কথাবিশ্ৰাদীনাং বদস্ব তং॥ মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

ব্ৰহ্ণ হজতঃ প্ৰাং সতাভিধানিকতা।
নিগ্নানাং সহস্ত মুখাৎ সোহথাকজননে ॥
জাতাতে জুপপদাতে সব্যোজিকাঃ দচেতদঃ।
সহস্ৰমন্ত্ৰকতো মিথ্নানাং সদৰ্জ হ ॥
তে দৰ্ফে রজসোজিকাঃ শুমিণানাস্মর্থিণঃ।
সদর্জানাৎ সহস্ত দ্বানামূকতঃ পুনঃ॥
রজস্তমোভ্যামুজিকা ঈহামীলান্ত তে স্বতঃ।
গভ্যাং সহস্ৰমন্ত মিথ্নানাং সদর্জ হ ॥
উত্তিজাত্মসা সর্কে নিঃ মকা হ্লাচেতদঃ।
ততঃ সংহর্ষমাণাতে দ্বোধানাং সাক্রিঃ।
অন্যোনাইচ্ছু রাবিষ্ঠা মৈথ্নানাং হি সন্তবঃ॥
মাসি মাসাভিবং বৎ তুন ত্বাসীৎ তুবোধিতাম্

ভশাং ভদান স্ব্যুং সেবিতৈরপি নৈথুনৈঃ॥ আয়ুবেংছত্তে প্রস্থান্তে মিপু ানোব তা: সক্তৎ। ততঃ প্রভৃতি কল্পেং শিথ্নানাং হি সম্ভবঃ ॥ ধানেন মনসা ভাগাং প্রজানাং জায়তে সকুৎ। শদাদিবিবিষয়: শুদ্ধঃ প্রত্যেকং পঞ্চলক্ষণম।। ইত্যেষা মাননী সৃষ্টির্যা পূর্ব্বং বৈ প্রজাপতেঃ। তপ্লারণায়সভূতা ধৈরিদং পুরিতং জ্বগৎ ॥ স্রিৎস্রঃসমুদ্রাংশ্চ সেবস্তে পর্বভানপি। তান্তদা হুল্লীতোফা মুগে তব্মিংশ্চরন্তি বৈ॥ जुलिः नाडाविकीः लाला विषयायु महामट्ड । ন তাদাং প্রতিঘাতো২ন্তিন দেযো নাপি মৎসরঃ পর্বতোদধিসেবিলো হানিকেতান্ত সর্বাশঃ। তা বৈ নিক্ষামচারিণ্যে। নিত্যং মুদিতমানসাঃ॥ পিশাচোরগরকাংসি তথা মৎসরিণো জনাঃ। পশ্বঃ প্ৰাণিটেক নকো মৎস্থা স্থী স্পাঃ ॥ অবারকা হওজা বা তে হধর্মপ্রস্ত্রঃ। ন মূলফলপুজাণি নার্ত্তবা বংস্রাণি চ॥ স্ক্রকালস্থাঃ কালে। নাত্যর্থং ঘর্মশীতভা। কালেন গছভো ভেষাং চিতা সিদ্ধিরজায়ত॥ তত্ত্ৰ তেষাং পূৰ্দ্ধাহে মধ্যাহে চ বিভৃগুতা। পুনস্তথেচ্ছতাং তৃপ্তিরনায়াদেন সাভবং॥ ইচ্ছতাঞ্চ তথায়াদো মনসঃ সমজায়ত। অপাং দৌক্ষাাৎ ততন্তাসাং সিদ্ধিন্না রুসোল্লসা। সমজায়ত চৈবালা সর্বকামপ্রদায়িনী। कानःकार्ट्याः भन्नीरेत्रभ्ठ व्यक्तांखाः चित्ररयोजनाः । তাদাং বিনা তু সঙ্গল্প জায়ত্তে মিথুনাঃ প্রজাঃ। সমং জনাচ রূপঞ্ মিখতে তে চৈব তাঃ সমস্॥ অনিচছাছেষদংযুকা বর্ততে ডুপরস্পরম্। তুল্যরূপায়ুধঃ সর্কা অধ্যোত্মতাং বিনা॥ চত্বারি তু সহস্রাণি বর্ষাণাং মারুষাণি তু। আয়ু: প্রমাণং জীবস্তি ন চ কেশাছিপত্য:॥ স্থাৎ সুথতর: কালন্তাসাং বৈ নিয়ত স্থির:। নাভাবো বিদ্যুতে তেষাং নানাভাবত্তথাপিবা # কালেন গছতা নাশমুপয়ান্তি যথ। প্ৰজা: । তথা তাঃ ক্রমশো নাশং জগ্মঃ সর্বক সিদ্ধরঃ। তারু সর্বাহু নটারু নভদঃ প্রচ্।তা নরা:॥ প্রায়শঃ কল্পকান্তে সভূতা গৃহসংজিতা:। স্ক্প্রত্যুপভোগশ্চ তাসাং তেভ্যঃ প্রকায়তে॥ বর্ত্তরম্ভি কা ভেভান্ডাক্তেত্রাযুগমুখে তদা। ততঃ কালেন বৈ রাগস্তাদামাকস্মিকোইভবং॥

মাদি মাস্তার্তবে ৎপত্তা গর্ভেৎপত্তি: পুন: পুন রাগোৎপত্তা ভতন্ত:সাং বৃক্ষাত্তে গৃহসংজ্ঞিতাঃ ব্ৰহ্মৰপৰেষাত্ত পেতৃঃ শাথা মহীকহাম্। বস্তাণি চ প্রাস্থ্যক্তে ফলেম্ভেরণানি চ ॥ ভেষেব আয়তে ভেষাং গন্ধবর্ণরসাম্বিভম্। অমাক্ষিকং মহাবীর্যাং পুটকে পুটকে মধু॥ তেন বা বর্ত্তয়ন্তি শা মুখে জেন্ডাযুগস্থ বৈ। ততঃ কালাস্তরেবৈণব পুনর্লো ভাষিতাস্ত তাঃ॥ বুকাংস্তাঃ পর্যাগ্রুম্ভ মম্বাবিষ্টচেত্রনঃ। নে ভত্তেনাপচারেণ তেহপি তাসাং মহীকহা: # ততো দ্বভাগ্নন্ত শীতোঞ্জুনুথানি বৈ। তান্ত ছন্দোপযাতার্থং চকুঃ পূর্বং পুরাণি ভু॥ মর্ধরর ছর্গেষু পর্বতেষু দরীষু চ। সংশ্রুষ্ঠিত ছুর্গাণি বার্ক্ষং পার্বভ্রেমীদক্ষ্ ॥ কুতিমঞ্চতথ। ছুর্গং মিছা মিত্রাত্মনোহৃদুলৈ:। মানার্থানি প্রমাণানি তান্ত পূর্বাং প্রচক্রিরে॥ পরমানুঃ পরং সৃক্ষং তাদরেনুর্মাহীরজঃ। वानाखरेकव निकाक युकाकाथ यरवामत्रम्॥ একাদশগুণং তেষাং যবমধাং তথাঙ্গুলম্। ষ্ডৃঙ্গুলং পদং তচ্চ বিভস্তি দ্বিগুণং স্মৃত্যু॥ দে বিতন্তী তথা হত্তো ব্ৰাক্ষ্যতীৰ্থাদিবেষ্টনম্। চতুর্হতঃ ধহুর্দভো নাড়িকাযুগমেব চ॥ ধনুষাং দ্বে সহস্রে তু গবৃ।তিন্তচ্চতুঞ্ গম্। প্রোক্তঞ্চ যোজনং প্রাইজ্ঞঃ সংখ্যানার্থমিদং পর্য চতৃণামথ ছগাণাং স্বসম্খানি ত্রীণি তু। চতুৰ্থ: কুক্ৰিমং হুৰ্গ: ভচ্চ কুৰ্যা । সভস্ত ভে ॥ পুরঞ থেটক কৈব ভদ্দদোণীমুখং विজঃ। শাখানগরকঞাপি ভগা কর্বটকং তেয়ী॥ গ্রামসজ্বোষবিভাসেং তেষু চাবস্থান্ পৃথক্ ৮ সোৎসেধবপ্রকারঞ সর্বতঃ পরিখার্তম্॥ যোজন। ক্রান্ধবিক্তমন্তভাগার তং পরম্। প্রাপ্তদক্পবনং শস্তং গুদ্ধবংশবহিপ্মম্। उन्दर्भन उथा (४ है: उद्यादिन ह कर्वि है । ন্যনং জোণীমুখং তক্ষাদষ্টভাগেন চোটাতে॥ শাথ্যনগর্কঞান্তরান্ত্রিদামন্তভুক্তিমৎ॥ তথা শূদ্রজনপ্রায়াঃ স্বনমৃদ্ধিকৃষীবলাঃ। কেকোপভোগ্যভূমধ্যে বস্তিপ্রমিশংজ্ঞিতা ॥ অন্তস্ম। মগরাদেয়া কার্য্যমুদ্দিশু মানবঃ। ক্রিয়তে বস্তি: সা বৈ বিজেয়া বস্তিন্রী: # ত্তপ্রায়ো বিনা কেতৈঃ পরভূমিচরে। বলী।

গ্রাম এবাকিমীসংজ্ঞোরাজবল্লভসংশ্রয়: ॥ 5 এবং নগরাদীংস্ত কুত্বা বাদার্থমাত্মনঃ। নকেতনানি দ্বন্ধানাং চক্রাবস্থান্ন বৈ ॥ াহাকারা যথা পূর্বাং তেষামাদন্ মহীরুহাঃ। চ্পা সংস্কৃত্য তৎ সর্বং চকুর্বেশানি তাঃ প্রজাঃ। करेक्चवः त्रकाः भाषां छरेषवक्षां भन्ना श्रकाः। তাকৈবোরভাকৈব তৰজালা: প্রচক্রিরে॥ া: শ'ণা: করবৃক্ষাণাং পুর্কমাসন্ ছিজে।তম। া এব শাৰা গেহানাং শালাখং তেন ভাস্তু তৎ ত্বা ছল্কোপঘাতং তে বার্ত্তোপায়মচিস্তয়ন্। निष्टियु मधुना मार्कः कन्नवृष्किष्य मध्यः॥ বিষাদব্যাকুলান্তা বৈ প্রজান্তৃঞাকুধার্দিতা:। ভতঃ প্রাহর্কভৌ ভাষাং দিদ্ধিশ্বেত।মুখে তদা ॥ বার্ত্ত।স্বসাধিতা হস্তা বৃষ্টিস্তাদাং নিকামতঃ। তাসাং বৃষ্ট্রাদকানীহ যানি নিমগতানি বৈ ॥ বৃষ্ট্যাবক্র দৈরভবৎ স্রোতঃথাতানি নিম্নগাঃ। যে পুরস্তাদপাং স্তোকা আপরাঃ পৃথিবীতলে। ভতো ভূমেশ্চ সংযোগালে। যধ্ব স্বাস্তলাভবন্। অফালকৃষ্টাশ্চারুপ্তা আমারণ্যাশচভুর্দণ ॥ ঋতুপূষ্পদলাই দ্ব বৃক্ষা গুলা দ্ব জ জিবে । প্রাহর্ভাবস্ত ত্রেভারামাদে গ্রহমীয়ধক্ত তু॥ তেনৌষধেন বর্ত্তরে প্রেক্ত বের তাযুগে মুনে। রাগলোভৌ সমাদাদ্য প্রজান্চাক্সিকৌ তদা।। তহস্তাঃ পর্যাগৃহস্ত নদীক্ষেত্রা নি পর্বভান। व्यक्त खटल्यो वसी टेन्ट वसा खाळा वा स्वर्गावल स्व তেন (म: रवन छ। ८न इर दावरमा। भिव छा: विका ষ্থাসন্তুৰ্পুপৎ তাস্তদৌষধো। মহ।মতে॥ প্ৰভান্থ প্ৰন্তীয় বিভ্ৰান্তান্তঃ পুনঃ প্ৰহাঃ। বিদাণিং শরণং জগাঃ কুধার্তাঃ পরমেষ্টিনম্॥ স চাপি তম্বতো জ্ঞাত্বা তদা গ্ৰন্থাং বহুদ্ধবাম্। <sup>বৎসং</sup> কৃষা সুমেক্স ছেলোহ ভগবান্ বিভৃঃ॥ হক্ষেমং গৌন্তদা তেন শদানি পৃথিবীতলে। জজ্জিরে তানি বীজানি গ্রাম্যারণ্যাস্ত তাঃ পুনঃ ওষ্ণাঃ ফলপাকান্তা গ্ণাঃ সপ্তদশ স্তাঃ। वीर्यम्ह यसदिन्हत (शाध्या व्यवस्थिताः ॥ প্রিয়ঙ্গবো অনুদারাশ্চ কৌরদ্শাঃ সচীনকাঃ। মাৰা মূলা। মহুরা চ নিপাবা: সকুলখকা:॥ আ। ঢ়কা শচণকালৈচৰ গণাঃ সপ্তদশ স্তাঃ। ইতে।তা ওষধীনান্ত আম্যাণাং জাতয়ঃ পুরা॥ अवस्या मक्कियारे कत आभावनार क्लूकिन।

ত্রীহ 🗝 ম াকৈচৰ গোধুমা অৰ্থ স্কলা: ॥ প্রিয়সুসপ্তমা হেতে অন্তমাপ্ত কুলথকা:। খানাকাত্বপ নীবারা যতিলাঃ সগবেধুকাঃ ॥ क्किविन्सा सर्के हेकां छथांट नुश्माण्ड (य। প্রাম্যারণ্য : স্থৃতা ছেতে ওষধ, শচ চতুর্দশ। यमा व्यन्त्रहो उषरक्षा न क त्राहिष्ठ छाः भूनः। ততঃ স তাসাং বৃদ্ধ্যং ৰ তে পায়ং চকার হ॥ ত্ৰকা স্বৰুভগবান্ হন্তসিদ্ধিক কৰ্মপাম। ততঃপ্রভাবৌষদাঃ কুট্রপচাস্ত জ্ঞাজ্ঞিবে ॥ সংশিদ্ধারাম্ভ বার্ত্তায়াং স্বয়ংপ্রতু । **गर्यानः चानग्रामान गर्थाशायः गर्था**खनम्॥ वर्गानाभाभागाक धर्मान् धर्माञ्डाः वतः। লোকানাং সর্ব্বর্ণানাং সমাগ্রশ্বর্থিপালিনাম্॥ প্রাকাপত্য বাহ্মণানাং স্মৃতং স্থানং ক্রিয়াবতাম্ স্থানমৈক্রং ক্ষতিয়াণাং সংগ্রামেশ্বপল গ্রিনাম্॥ বৈগ্রানাঃ মাজতং জানং সধর্মমুবর্ততাম্। গান্দৰিং শুদুজা জীনাং পরিচর্যাহ্রবর্তাম্॥ অষ্ট:শীভিদহস্রাণামূদীণামূদ্ধরেতদাম্। खु छः ( उर्था ह य९ ज्ञानः छ एन व छ क्वा निनाम् ॥ मश्रमी वाख यर शानः श्रुडः उदेव बटनी कमाम्। প্রাজ্ঞাপত্যং গৃহস্থানাং ভাগিনাং ব্রহ্মণঃ ক্ষয়ম্। যোগিনা মূতং ভানমিতি বৈ সানকল্লনা।।

ইতি মার্কডেরে মহাপুরাণে স্টেপ্রকরণে একোনপঞ্চলেহিধ্যারঃ।

### পঞ্চাশোহধ্যায়ঃ।

---:0:---

মার্কণ্ডের উবাচ।
তভোহতিধ বিত্তপা জ্ঞিবে মানসীঃ প্রেলাঃ।
তাজেরীরসমুংপরিঃ কার্টির কৈ কার্টিরঃ কার্টিরঃ কর্টির সহা।
কেনজাঃ সমন্ত্রি গাত্তেভাল্ডসা ধীমতঃ।
তে সর্প্রেলাক্তাক্তির বে মরা প্রাণ্ডাল্ডাঃ।
কেবলাঃ হাবরাস্তান্ত তৈঞ্জাবিষয়াঃ স্কৃতাংন
এবস্থতানি স্বরানি হাবরাণি চয়ালি চ॥
বলাস্য তাঃ প্রজাঃ সর্পান বার্দ্ধির ধীমতঃ।
তথান্যান্ মানসান্ পুরান্ সঙ্গানায়নোহস্কর্
ভ্তং পুলস্তাং পুবহং কেতুমিকরসঃ তথা।
মরীচিং দক্ষম্বিক বলিঠকৈব মানসম্॥
নব ব্রহ্বাতে পুরাণে নিক্ষাং গ্তাঃ।

ততোহস্ত্ৰৎ পুনর কা কলং কোধাত্মদন্তবম্। नक्ष्यरेक्व धर्मक शृर्त्वयामिश शृत्वकम्। त्रनन्तानत्या (य ह পृतिः स्ट्टीः सम्बूर।॥ ন তে লোকেষু সজ্জন্তে। নিরপেকঃ সমাহিতাঃ সর্কে তেহনাগভজানা বীভরাগা বিমংস্বা:॥ তেখেবং মিরপেকেষু লোকস্তৌ মহাআন । ব্রদ্রবোহভূনহাকোধস্ততোৎপরোহর্কসল্লিভং॥ অদ্ধিনারীনরবপুঃ পুরুষোহতিশ্বীরবান্। বিভজাত্মানমিত্যকু । স তদাস্তদ্ধে ততঃ ॥ म (ठाटका देव পृथक् बीजः भूकवण जवाकत्वार। विट्डिम পुरुषदक मन्या हिकसा कू मः॥ সোমানোটেগান্তপা শাটেষ্ট পুংবং জীবক স প্রভঃ বিভেদ বভ্ধা দেবঃ পুরুদৈবদিতৈঃ সিতৈঃ॥ ততো ত্রন্ধাত্মসম্ভুহং পূর্কাং সামস্ভুবং প্রভূঃ। আবান: সদৃশং কুতা প্রকাপালো মনুং দিজ:॥ भठत्रभाक जाः नातीः जर्भानिध् जकवासम्। স্বায়স্ত্ৰো মহুর্দেবঃ পত্নীত্বে জগৃহে বিভূ:॥ তস্মান্ত পুরুষাং পুর্ত্তো শতরূপা ব্যস্তায়ত। প্রিয়ত্রতোত্তানগাদৌ প্রথ্যাতাবাত্মকর্মভি:॥ কন্যে দ্বে চ তথা ঋদ্ধিং প্রস্তিঞ্চ ততঃ পিতা। দদৌ প্রস্তিং দক্ষায় তথা ঋদ্ধিং কচেঃ পুবা॥ প্রজাপতি: স জ্ঞাহ ত্যোর্যজ্ঞ: সদক্ষিণঃ। পুলো জজে মহাভাগ দম্পতী মিথুনং ততঃ। यक्षक मिक्नायां अ भूजा वामम कि छिदा। यामा हे जि ममानाजा (पर्वा: न्यायुष्ट्रहरूद ॥ প্রেস্ত্যাঞ্চণা দক্ষণতে স্রো বিংশতিস্তথ। ॥ সদৰ্জ কনাভাগাঞ্পমাঙ্নামানি মে শুণু। শ্ৰদ্ধা লক্ষীধু তিস্তৃষ্টি: পৃষ্টিৰ্মেধা ক্ৰিয়া তথা। বুদ্ধিল জ্জা বপু: শাস্তি: দিদ্ধি: কীর্তিপ্রয়োদশী। পত্তার্থে প্রতিজ্ঞাহ ধর্মো দাক্নায়ণীঃ প্রভুঃ॥ ভাজাঃ শিঠা য়ুৱীয়ুস্ত একাদশ স্থলোচনাঃ। থাতিঃ সত্যণ সস্তৃতিঃ স্বৃতিঃ প্রীতিস্তথা ক্ষমা। ভ্তত্তবো মরীচিশ্চ তথা চৈবংঙ্গিরা মুনিঃ॥ श्रवाः भूतहरेन्द्र क्रांकृष्ट समग्रख्या । বশিষ্ঠোহত্তিস্তথা বহিঃ পিতর\*চ ম্থাক্রমম্॥ थााकाामा अपृद्धः कना मूनस्य मूनिप्रक्याः। শ্রকাক। মংশ্রীশচ দর্পংনিয়মং ধৃতির। অংজম্॥ मरकायक ज्या ज्षिःर्लाङः भूष्टिवकायजः। মেধা শ্রুতং ক্রিয়া দণ্ডং নয়ং বিনয়মেব চ॥ বোধং বৃদ্ধিন্তথা লজ্জ। বিনয়ং বপুরাত্মজম্।

ব্যবসায়ং প্রজভেন্তেচ কেমং শাস্তিরসূত্রত 🏾 স্থাং সিদ্ধিশঃ কীর্ত্তিরিত্যেতে ধর্মস্নবঃ। কাগাদতিম্দং হৰ্ষং ধর্মপৌজ্ঞস্থাত ॥ হিংসা ভার্যা অধর্ম তভাং জ্ঞে তথান্তম্। কলাচ নিশ্বতিস্তশাং স্থতৌ দৌ নরকং ভয়ম্।। " भाषा ह त्वलना टेहर मिथूनः खब्रासकर्याः। **७८**वार्ब्स्टळ २० देत भाषा मृज्युः ভূতাপহারिगम् ॥ বেদনামুস্তফাপি ছ:থং জজেহণ রৌরবাৎ। মত্যোক্যাধিজরাশেক্তৃকাক্রে। ছ: থোন্তনাঃ স্মৃতা ছেতে সর্বে বাধর্মলক্ষণাঃ। নৈষাং ভার্যান্তি পুত্রো বা সর্বে তে হ্যূর্নবে তসঃ নিশ্বতিশ্চ তথা চাক্সা মৃত্যোর্ভাগ্যাভবনুনে। অলক্ষীর্নাম তহাকি মৃতোঃ পূলাশ্চতুর্দশ ॥ অলক্ষ্যপুত্রকা হেতে মৃত্তোরোদেশকারিণ:। বিনাশকালেযু নরান্ ভজস্তোতে শৃণুষ তান্॥ ইন্দ্রিষুদশ্পেতে তথা মনসি চ স্থিতাঃ। एव एव नवः खित्रः वांशि विषया याजग्रिख हि ॥ অথে क्रियानि छ। क्रमा त्रांश क्रांसि छिर्न तान्। যোজয়ন্তি যথা হানিং যান্তাধৰ্মাদিভিদ্বিজ ॥ অহস্কারগভ=চান্সস্তথান্তো বুদ্ধিসংস্থিতঃ। বিনাশায় নরাঃ স্তীণাং ষতস্তে মোহসংশ্রিতাঃ 🛭 उदेवदारम गृहह शूरमार ष्टुःमरहा नाम विकायः। ক্ৎকামোহধোম্থো নগ্লীরী কাকসমসনঃ॥ স সর্জান্ থাদিতুং স্তটো ব্রহ্মণা তপসো নিধিঃ। দংষ্ট্রাকরালমভার্থং বিবৃতাভাং স্কুটভরবম্॥ তমজুকামমাহেদং ব্ৰহ্মা লোকপিতামহঃ। স্ক্রিকাম্য়ঃ গুদ্ধঃ কারণং জগতে হিব্যয়ঃ॥

ব্ৰেন্থোবাচ।
নাত্তবাং তে জগদিদং জহি কোণং শমং ব্ৰহ্ম।
ভ্যক্তৈনাং ভামসীং বৃত্তিমপাস্য রঞ্জসঃ কলাম্।
ছঃসহ উবাচ।

কুংকামোহস্মি জগরাথ পিণাস্কাপি তুর্বলঃ। কথং তৃপ্তিমিয়াং নাপ ভবেয়ং বলবান্ কথম্। কশ্চাশ্রামে মমাধ্যাহি বর্তেঃং যত্ত নির্তঃ। ব্সোবাচ।

তবাশ্ররো গৃহং পুংদাং জনশ্চাধার্মিকো বলম্।
পুষ্টিং নিত।ক্রিরাহান্তা তবান্বংদ গমিষাতি॥
বৃথা ক্রেটাণ্ড তে বস্ত্রমাহারঞ্দদামি তে।
ক্তং ক্রীটাবপন্নঞ্জধা খভিরবেক্তিম্॥
ভগ্নভাগুগতং তহুং মুধ্বাতোপশামিতম্।

উ क्रिहा भक्य चित्र मत्नी ए मनः खु उम् ॥ ভিগাসনভিতৈভুঁজিং স্কাষোণ্চ বিশিলু্ধম্॥ क्षित्रकार्श्वा इंड क्षेत्रकार्ने हराय है। ব্লুচোপঘাতবং কিঞ্ছিক্সং পেশ্বমণাপি বা। শ্ৰিতাৰি তব পুষ্টাৰ্থমক্সচাপি দ্লামি তে। অশ্রমা হতং দত্তমজ্ঞাই ভর্মদবজ্ঞ য়া। ग्राम्पूर्श्वकः किश्वमनशैक्व ज्ञान ह। তাক মাৰিশ্বতং যৎ তু দত্তকৈবাতিবিশ্বয়াৎ। ছুঠং কুদ্ধান্ত্ৰৰঞ্চ যক্ষ ভদ্জাগি তৎ ফলস্॥ যচ্চ পৌনর্ভব: কিঞ্চিৎ করোত্যামুম্মিকং ক্রমম্ মচ্চ পৌনৰ্ভবা যোষিৎ তৎ যক্ষ তব ছপ্ৰয়ে॥ क्या ७ त्या १४। नात्र ममू भारत भन किया। তবৈৰ যক্ষ পুটাৰ্থমসচ্চান্ত্ৰিক্যাশ্চ যা:॥ गछार्थः निर्वे जः कि किनधीजः यज्ञ मुकाएः। তং দৰ্মাং তব কালাংশ্চ দ্বামি তব সিদ্ধ্যে॥ গুলিণাভিগ্যে স্ক্রানিত্যকার্য্যাতিকতে॥ অসজাম্বক্রিয়ালাপদ্বিতেষু চ হঃসহ। ভবাভিভবসাম্থাং ভবিষাতি সদা নৃষু 🛭 পংক্তিভেদে বুথাপাকে পাকভেদে তথা ক্রিয়া। নিত্যক্ষ গেহকলহে ভবিতা বসভিন্তব ॥ অপোষামাণে চ তথা বদ্ধে গোবাহনাদিকে। অসন্ধাতাকিতাগারে কালে হতো ভয়ং নুগাম ॥ নক্ষত্রপ্রহলীড়াস্থ ত্রিবিধাৎপাতদর্শনে। অশান্তিকপরান্যক নরানভিভবিষাসি॥ সংধাপবাদিনো মন্ত্রা দ্যতন্ত্রীযু সদা রভাঃ। ওয়াবণোপকর্তারো বৈভালত্রতিকাশ্চ যে॥ ষ্মরন্দর:বিণাধীতনিক্সা চ:বিজ্ঞা কুড়া। उत्भावत्न आभाजूकाः उरेशवानिक्किं जासनाम् ॥ ান্দিণফত্রিমবিশাং শূদ্রাণাঞ্চ স্বকর্মতঃ। প্ৰিচ্যতানাং যা চেষ্টা প্ৰলোক(ৰ্যমীপ্ৰভাম ॥ ভক্তাশ্চ যং ফলং সর্ধাং তৎ তে যক্ষ ভবিষাতি। <sup>মান্তক</sup> তে প্রেষজ্ঞামি পুষ্টার্থং সংনিবোপ তৎ॥ च्वरका देवश्वरात्व नारमाक्कावनश्वर्यक्रम्। এতং তবেতি দাভাস্তি ভবতো বলিম্জিতন্॥ দঃ সংস্কৃতাশী বিধিবচ্ছুচিরস্কস্তথা বহিঃ। মলোলুপোহজিভন্তীকস্তদোহমপ্রজন ॥ र्षाद्ध इराक्या छा १ (प्रकाः शिक्वस्थी। াময়েহতিপয়শ্চাপি তদেগছং ফক বৰ্জয়॥ তি নৈতী গৃহে বালবুদ্ধযে যিরুরেযুচ। 5থ। স্বজনবর্গেষু গৃহং তচ্চাপি বর্জন্ন ॥

যোষিতোহ ভরভা যদ্র म বহির্গননোং স্থকা:। লক্ষাবিতাঃ দদা গেহং মক্ষ তৎ পরিবর্জয়॥ वयः गचक त्यां यो नि भयना छ। मना नि ह। যত্র গেছে বয়া যক্ষ তথ্যজ্ঞাং ব্যহামান। যত্র কাকণিকা নিত্যং সাধুকর্মণ্যবন্তিতা:। সামাভোগকরৈয়ু ক্রিডাজেণা যক তদ্গৃহ্ম ॥ যত্রাদনস্থাতিষ্ঠৎস্থ গুরুবুদ্ধিদাতিষু। ল তিষ্ঠন্তি গৃহং তচ্চ বর্জ্যং যক্ষ দ্ব্যা স্থা ॥ তকগুলাদিভিদ্।রংন বিদ্ধং যস্ত বেশ্মনঃ। ম্মতেনোহথবা পুংস্তুচ্ছে য়ো ভবনং ন তে ॥ দেবতাপিতৃষভ্যানামভিথীনাঞ্বর্তন্। যক্তাবলিষ্টেনালেন প্রংসম্ভন্ত গৃহং তাজ। সত্যবাক্যান ক্ষাশীলানহিংস্থান নামুভাগিনঃ। পুক্ষানীদৃশান্ ধক তাজেথাশ্চানস্যুকান ৷ ভত্ত শুক্ষৰণে যুক্তামসংস্ত্ৰীসক্ষৰজ্জিত।মৃ। কুটুসভর্তু শেষারপুষ্ঠাঞ্চ তাজ যোষিতম্॥ যজনাধ্যয়না ভ্যাগদানাসক্তমতিং সদা। যাজনাধ্যাপনানানকুতবৃত্তিং বিজং তাজ ॥ मानाक्षयनयरकासू सर्माम्यूकक इःसर। ক্ষত্রিং তাজ সজুক্ষশক্ষাজীবাত্তবেত্রম ॥ जिङिः शृक्तं छ**े**गयू **कः** शाक्रभानाव निकार्याः । কুষেশ্চাবাপুরুত্তিঞ্জাজ বৈশ্রমকন্সন্ম मार्गका विक्र अभवा ७९ शवः यक न छात्र । मुप्तक बक्तनामीमाः **ए**क्षतातृखिल्यायकम् ॥ क्षित्र बारिकार्यम कु ब्रु छिर्श्र १ शही। যত্র ভত্র চ ভৎপত্নী ভটেগুবাসুগভাগ্মিকা॥ यब भूत्वा खरबाः भूत्राः त्नवानाम ज्या भिद्यः। পদ্দী চ ভর্ত্ত কুক্তে ততাশিশী ভয়ং কু::॥ যদার লিপুং সন্ধায়ে গৃহমধুগমু ফিতম। कुछ्पुष्पविश्यक्ष न दश्मक्कावि वीकिञ्जा। जाञ्चवानुष्ठेभगानि निजाधिम्बिनानि छ। क्रमाधिताकभीवानि नक्सा श्रिमानि जासनम् ॥ यत्ताकः। हन्तनः वीषा जानत्ना मधुमर्शिनी । বিপ্রাশ্চ ভাষাণাবাপি ভদগৃহং ন ভবাগ্রয়ঃ॥ यञ्च कण्डे किरमा तुका यञ्ज निक्तायदशयो । ভাগ্যা পুনভূ বিল্ঞীকস্তদ্শক তব মনিরম্॥ যান্মিন গতে নবাঃ পঞ্চীত্রে তাবতীক গাঃ। অন্নকারেন্ধনা থিঞ্চ তদ্গৃহং বস্তিস্তব ॥ একচ্চ:গং ধিবালেয়ং তিরগবং পঞ্চমাহিবন। ষ্ড্রাং স্প্রাভঙ্গং গৃহং যক্ষাত শোষ্য ॥

ক্দালদাঅপিঠকং তবং কাল্যানিভালনম্।

যার উত্তব কিপ্তানি তব দত্য: প্রতিশ্রম্ ॥

নুধ্নোল্থলে দ্বীণামান্তা তদ্ভ্দ্বরে।

অব্যান্তে যাত্র পান্তানি পকাপকানি বেশানি।

সমন্ত্রালি তার সং যথেইং চর ক্লেস্ত ॥

মান্ত্রান্তি গৃহে যাত্র দিবারাক্রং মৃতন্তিতিঃ।

তার যাক্ষ তবাবাসন্ত্রান্তেরাক্ষ রক্ষাম্।

আনল্ ভ্রাতে যে বৈ বহদ্যাং পি ৪ং তথোদকন্।

সপিন্তান্ নোদক্যাংশ্চৰ তৎকালে তান্

নরানুভজা যত্ৰ পদামহাপদ্যো যুবতী মেশ্বকাশিনী! বুষকৈরাবতো যত্ত্র কলাতে তদ্গৃহং তাজ ॥ ষ্প্ৰস্থা দেবতা যত্ৰ স্পন্তাশ্চাচৰং বিনা। কলাতে মহুলৈরচোতেৎ পরিতাল মনিরম্।। শূর্পবাতঘটাস্থে।ভিঃ স্নানং বস্তাস্বিপ্রাট্য:। नथा ध्रम लिटेल टेन्डव जान या हि इजनक्षान् ॥ দেশাচারান্ সময়ানু জ্ঞাতিধর্মং জপং হোমং মঙ্গলং দেবতে ষ্টিম্। ममाक् (भोहः विधिवत्ह्याकवानान् পুংসভয়। কুর্কতো মাজ সন্ধ:॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ। ইতাক । জঃসহং এক্ষা ভবৈৰবাস্তরধীয়ত। চকার শাসনং সেংহলি তথা পক্ষজন্মনঃ॥ ইতি মার্কভেয়ে মহাপুরাণে ধকার্শাদনং नाम পঞ্চাশেহধারি:।

একপঞ্চাশোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

মাক্ষের উবাচ।

ছ:সংক্রাভবন্ধান নিশ্বাধিনাম নামত:।

জ:তা কলেল ভার্যায়াম্তৌ চাণ্ডালনশ্নাং॥

তরোবশতাক্তবন্ জগ্রাপীনি বোড্শ।

অক্টৌ কুমাবা: কল্লান্ড তথান্তিভীষণা:॥

সন্তাক্ষিতগোকিশ্চ পরিবর্ততথাপর:।

অস্ধুক্ শত্নিশ্চিব গণ্ডপ্রাস্তরভিত্তথা॥

গর্ভধাশক্রানাত্তব্বাহাত্তরো:।

ক্রাশ্চানাগ্তব্বাহাত্তরো:।

ক্রাশ্চানাগ্তব্বাহাত্তরো:।

निर्धाक्रिका देव व्यथमा उटेलवानमा विस्काधिनो । স্বয়ংহারকরী চৈব ভ্রামণী ঋতুহারিকা।। च्चिकिहरत हात्मा खरशः कत्मार्रक्षमाञ्चल । বিদেষণাইমী নাম কন্যা লোকভয়াবছা ॥ এতাদাং কর্ম বক্ষ্যামি দোষপ্রশমনক যৎ। অষ্টানাঞ্চ কুমারানাং শ্রম্বভাং বিজ্ঞ বত্তম ॥ দস্তাকুটিঃ প্রস্তানাং বালানাং দশনস্থিত:। করোতি সংহর্ষতি চিকীষু ছ : সহাগম্॥ তজোপশমনং কার্য্য: স্থপ্ত সিত্র্যবৈধ:। শয়নভোপরি কিটেপ্তর্যান্ত্রৈদদশনোপরি॥ ञ्च वर्फ़ भोषधी साना १ ७४। मध्या श्रवीर्जना २। উ द्वेक ब्लेक थ फ़्ला क्रिटको य र श्विवी वेगा ९ ॥ (प्रयाज्या उन्नन् कीर्खनीया बनार्मनः। চর। চর গুরুক্মিরা য। যতা কুলদেবতা। चनानार्ज श्रान् नर्धान् मदेषव श्रिवर्खग्रन्। র তিমাপ্রোতি বাক্যঞ্জ বিবক্ষোরন্যদেব যথ ।। পরিবর্ত্তকসংজ্যোহয়ং তহাপি সিভসর্যপৈ:। রকোল্লমন্ত্রজাবৈশ্রন্ধ রক্ষাং কুবরীত তত্ত্ববিৎ 🛊 অন্য শ্চানিলবর পামঙ্গেরু ক্রণে। দিতম্। শুভাগুভং সমাচটে কুনৈস্ভাগতাড়নমু ॥ कोकोनिशिकिमः एष्ट्राश्चार्यम् जानगर छार्शिया । শুভাশুভঞ্ কুশবৈ: কুমারোহন্যে। ত্রবীতি বৈ । ভত্রাপি চুষ্টে ব্যাক্ষেণঃ প্রারম্ভভাগে এব চ। শুভে দ্রুততরং কার্য্যমিতি প্রা**হ প্রজা**পতি: ম গণ্ডান্তেষু স্থিতশ্চা ভা মৃত্রুজান্ধি দিকোত্তম। স্কাৰেভান্ কুমারোইভি শস্ত।ঞানস্যতাম্॥ বিশোক্তা। দেবতান্তত্যা তথৈব ধিজসভম। (जाम्बन्धरेणजारेनछम्कबद्धृक्रेनः॥ भक्षां शार प्रभटिनटेम्हत श्राम्यः याति शखतान् । গর্ভে দ্বীণাং তথাহন্তস্ত ফলনানী স্থদারূণ:। তস্ত রক্ষা সদা কার্য্যা নিত্যং শৌচনিষেবণাৎ ॥ व्यितिक्षमञ्जूणिथनाष्ट्रस्थानगानिधात्रगार । विश्वकत्त्रश्वावम्यावनायामः क्र देव विश्व॥ তবৈধৰ শহাহা চাহাঃ শহান্ধিমুপছন্তি যঃ। তন্তাপি রক্ষাং কুবরীত জার্ণোপান ছিধারণাৎ। তথাপদব্যগমনাচ্চ।গুলিন্ত প্রবেশনাৎ। বহির্মলিপ্রদানাচ্চ দোনামুপরিকীর্ত্তনাৎ। প্রদারপর্জবাহরণাদিষু মানবান্। निर्वाक्षप्र हिटा छोन् कछ। मा ह निर्वाक्षिकां। **७७ाः** পবিঅপঠনাৎ ক্রোধলোভাদিবর্জনাং।

नियासम्बद्धि मारमयू विद्राधीक विवर्कनम्॥ बाक्ट होश्टनान মনোত তাড়িতো বা নিযোজিক। নিষোজগতে যান্মিতি ন গচেছৎ তথ্পং বুধঃ॥ लवतावः निमः मर्ग हिन्दमाञ्चानस्य ह। নিবোজয়ত্যত্ত দা মামিতি প্রাজ্যে বিচিন্তয়েৎ ॥ বিরোধং কুকতে চান্তা দম্পত্যো: প্রীয়মাণ্যো:। বন্ধুনাং স্থলাং পিজোঃ পুলৈঃ সাবণিকৈ চ যা ॥ বিরোধিনী সা তন্ত্রকাং কুবরীত বলিকর্মণা। **ख्था डिवः प्रश्नाञ्चा द्वा ठा १ कि. एव १ क**ा ধান্যং থল।দ্গৃহাদেগাভ্যঃ প্রঃ স্পিন্তণাপরা। সমৃদ্ধিমৃদ্ধিদপুৰ্বাদপুৰুস্তিচ কৰাকা ॥ দা সরংহারিকেড়াকা দদান্তর্ধানতৎপরা। মহানসাদর্জনিদ্ধালাগারস্থিতং তথা n পরিবিভামানক সদা সারিং ভূছ্ভেক চ ভূঞ্তা। উচ্ছেষ্ণং মন্ত্রাণাং হরত্যন্ত্রঞ্চ ছুইরা ॥ (गाञ्चोख्यत्म्बाम्ब भन्नः क्षीत्रशती मदेवत मा। দলো স্বতং তিলাৎ তৈলং স্থ্রাগারাৎ তথা স্থ্রাম্ ৰাগং **কৃন্মন্তকাদীনাং কাৰ্পা**গাৎ স্ত্ৰমেৰ চ॥ সা স্বয়ংহারিকা নাম হরত্যবিরতং দ্বিজ। কুৰ্যাচিছ্থভিনো দ্বন্থং রক্ষার্থং কুলিমাং স্তিয়ম ॥ ংোমাগ্রিদেবতাধুপভত্মনা চ পরিজ্ঞিয়া। কাৰ্য্যা ক্ষীরাদিভাগুানামেব তদ্রকণং স্মৃত্য ॥ উদেগং জনমতানা। একস্থাননিবাসিনঃ। পুক্ষস্ত তুষা প্রোক্তা ভামণী সাতু কন্যকা।। ত্মাথ রক্ষাং কুবরীত বিক্ষিপ্তৈঃ দিত্দর্যলৈ:। স্থাসনে শয়নে চোর্ক্যাং যত্ত্রান্তে স তু মানব:॥ চিন্তবেচ্চ নর: পাপা মামেষা ছষ্টচেতনা। ভাৰমত্যসকুজ্জপ্যং ভূবঃ স্কং সমাধিনা॥ শীণাং পুষ্পং হরত্যন্যা প্রবৃত্তং সা তু কন্যকা। অথ প্রবৃত্তং সাজেয়া দৌঃস্থাঋতুগরিকা॥ কুৰ্ব্বীত তীৰ্থদেবৌকশৈচত্যপৰ্বতসাহযু। নদীসক্ষথাতেষু স্পনং তৎপ্রশান্তয়ে॥ স্তিঞাপহরতান্যা শ্লীণাং দা শ্বতিহারিকা। বিবিক্তদেশসেবিস্থাৎ ভক্তাম্চোপশ্যে। ভবেৎ ॥ বীম্বাপহারিণী চান্যা স্ত্রীপুংসোরভিভীষণা। মেধ্যানভোক্তনঃ লাটনভভান্চোপশ্মো ভবেৎ প <sup>অন্তমী</sup> বেষণী নাম কন্যা লোকভরাবহা। य। করোভি মর্ঘিষ্টং নরং নারীমথাপি বা॥ মধুক্ষীরন্বভাক্তাংশ্ব শাস্ত্যর্থং ছোময়েৎ তিলান্ ক্ষীত মিত্রবিন্দাক তথেষ্টিং তৎপ্রশান্তমে ॥

এতেষান্ত কুমারাণাং কন্যানাং বিজ্ঞসন্তম। ষষ্টতিংশদপত্যানি ভেষাং নামানি মে শৃণু॥ দস্তাকুটেরভূৎ কন্যা বিশ্বরা কলহা তথা। ব্দবজান্তহুটোকি বির্জন্ধ তৎ প্রশাস্তায়ে। তামেব চিস্তরেৎ প্রাক্ত: প্রয়তঞ্চ গৃহী ভবেৎ। কলহা কলহং গেছে করোভ্যবিরতং নৃণাম্।। কুটুম্বনাশহেতুঃ সা তৎপ্রশান্তিং নিশাময়। ত্ৰিক্ৰান্মধুন্তকীরা কান্বলিক স্থি॥ विकिर लब्जू हम्रोटेक वानमः भिक्षः को र्खरादः। ভূতানাং মাতৃভিঃ শক্ষিং বালকানাম্ভ শাস্তমে ॥ বিদ্যানাং তপদাঞ্চৈৰ সংযমক্ত ধমক্ত চ। ক্ষাং বাণিজ্যলাভে চ শাস্তিং কুর্বস্ত মে সদা।। পূজিতাশ্চ यथान। यिः जूष्टिः शब्द्ध मर्खनः। কুলাও। বাতৃধানাশ্চ যে চান্যে গণসংক্ষিতা:॥ गहारिषय धनारिषत मरहभावमर्कत ह। সক্ষ এতে নৃণাং নিভ্যং ছৃষ্টিমাণ্ড ব্ৰজন্ত তে॥ তুটা দর্কানিরভাত হেঙ্গতং প্রকৃষ্টিতম্। মহাপাতকজং সর্বং ঘচ্চান্যধিল্পরেণম্॥ তেষামেব প্রসাদেন বিল্লা নার্ছার সর্বাশঃ। উবাহেষু চ সর্কেষু বৃদ্ধিকর্মান্থ চৈব হি ॥ পুণ। छुके । न त्यार अबू खक रम वाक र न बू ह । জ্পমজ্বিধানের যাত্রাহে চ চতুর্দশ ॥ भवीवाद्यां शांखार्थां यु ख्थनान ध्रत्यू ह । বৃদ্ধবালাভূরেছেৰ শাস্তিং কুর্বস্ত মে সদা॥ त्नामाभूत्भो ७ थः र छात्रिः मविका हानिमानत्नी । তথোকে: কালজিহ্বোহভূৎ পুত্রস্তালনিকেতন:॥ म (ययार अन्तीमः ऋखानमाधून् विवाधटक। পরিবর্ত্তস্তো থে তু বিরূপবিক্বতো দিল। তৌ তু বৃক্ষাগ্রণবিধাপ্রাকারাস্টোধিসংশ্রমৌ। গুর্বিনাাঃ পরিবর্ত্তং তৌ কুকতঃ পাদপাদিযু॥ ক্রোষ্ট্রকে পরিবর্তন্তা গর্জাক্রামো মপোদরাৎ। न तृक्षरेक्षक टेनवां खिर न व्याकांत्रः मटहान्धिम्॥ পরিথাং বা সমাক্রামেদবলা গর্ভধারিণী। অঙ্গধুক্ তনয়ং লেভে পিণ্ডনং নাম নামহ:॥ সোহস্থিমজ্জাগতঃ পুংসাং বলমত্ত্যজিতাত্মনাম্। খেনকাকৰপোতাংশ্চ গৃঙ্ধোলুকৈশ্চ বৈ স্থভান্॥ অবাপ শক্নিঃ প**ঞ্জগৃহতান্ সূরাস্**রা:। খেনং ৰগ্ৰাহ মৃত্যুক্ত কাকং কালে। গৃহীতবান্॥ উল্ক' নিঋ তিকৈব অগ্রাহাতিভরাবহম্। গুঙং ব্যাধিকদীশেহিপ কপোতঞ্বয়ং যম: ॥

এতেষানের চৈবোক্তা ভূতাঃ পাপোপপাননে। ७ जारिकानो नरमा यद्य निनीरमुद्द भित्रभाष । তেনাম্বক্ষণামালং শাস্তিং কুর্যনদ্বিজ্ঞাত্তন। গেহে প্রস্তিরেতেষাং ভবরীড়বিবেশনম্। নরস্তং বর্জায়েদোহং কপোতাকান্তম্নতক্ষ্ ॥ শ্যেনঃ কপোতো গৃধশ্য কাকোল্কৌ গৃহে ছিজ। প্রবিষ্টঃ কথমেদস্তং বস গং তত্র বেশানি॥ ঈদৃক্ পরিতাজেদেশহং শাস্তিং কুর্যাচে পণ্ডিতঃ। স্বপ্ৰেহিপি হি কপোতিভা দৰ্শনং ন প্ৰেশভাতে॥ বঙ্পভাৰ্ণনি কথাস্তে গণ্ডক্ৰান্তবভেম্বৰ।। স্ত্রীণাং রজস্তবস্থানং তেষাং কালাশ্চ মে শুণু॥ চত্বাৰ্য্যহানি পূৰ্দাণি তথৈবাস্তুৎ অয়োদশ। একাদশ ভথৈবাতাদপত্যং তক্ত বৈ দিনে॥ ষ্মত্যদিনাভিগমনে শ্রাদ্ধনানে তথাপবে। পর্বস্থান্তৎ তত্মাৎ তু বর্জ্জ্যান্সেতানি পণ্ডিতৈ:॥ গর্ভহন্তঃ স্রতো নিম্নো মোহনী চাপি কন্মকা। প্রবিশু গর্ভমত্যেকো ভুজা মোহয়তে২পরা॥ জায়ত্তে মোহনাং তহ্যাঃ দর্কমণ্ডৃককচ্ছপা:। স্বীস্পাণি চান্তানি পুরীষমথবা পুনঃ॥ ষ্মানান্ ভ্ৰিণীমাংসমশ্ল বানাম্মংযভান্। বৃক্ষচহায়া প্রাং রাতাবথবা তিচতৃ পথে।। শাশানকটভূমিষ্ঠামুত্রীয়বিবর্জিভাস। রাদ্যমানাং নিশীথেইণ আবিশেৎ তামদৌ স্তিয়ন শশুদ্ধিং সাসদা হতি লক্ষুর্জং শৃণুষ তৎ ॥ অমঙ্গল্যাদিনারস্তেষভূপ্যো বপতে চ যঃ। ক্ষেত্ৰেম্পুপ্ৰৰেশং বৈ করোত্যভোগদঙ্গিয়ু॥ তত্থাং কল্প: **স্প্রণত্তে** দিনেইভার্চ্চা নিশাকরম্। কুর্ণাদারশুমুপ্রিঞ হাইস্কটঃ মহায়বান্।। নিযে।জিকেতি যা কন্তা হঃসহস্ত ময়োদিতা। জাতং প্রচোদিকাসংশ্বং তল্ডাঃ ক্রাচ্ডুইয়ম্ ॥ মতোমতপ্রমন্তান্ত নরা নার্যান্ত তাঃ সনা। সমাবিশস্তি নাশায় চোদন্তীহ দারণম্॥ তাধর্যাং ধর্মাকপেণ কামঞাকামরূপিণম্। তানর্থকার্থ ক্রপেণ মোক্ষঞামে।ক্ষরপিণম্॥ তুর্বিনীতা বিনা শৌচং দর্শয়ন্তি পুণঙ্নরান্। ভ্রমাতে তাভিরষ্টাভি: পুরুষার্থাৎ পৃথঙ্নরা:॥ তাদাং প্রবেশশ্চ গৃহে দদ্যকেষু উত্তররে। ধাত্রে বিধাত্রে চ বণির্যত্র কালে ন দীয়তে। ভুঞ্জতাং পিবতাং বাপি সঙ্গিভিৰ্জগবিপ্ৰাইষঃ।

নরনারীযু সংক্রান্তিস্তাস।মাপ্রভিজায়তে ॥ বিরোধিভারমঃ পুত্রাশ্চোদকো গ্রাহকন্তথা। তনঃ প্রচ্ছাদকশ্চান্ত স্তৎস্ক্রপং শৃণুষ মে । প্রদীপতৈলসংস্গৃদ্ধিতে লব্জিতে তথাশ মুধলোলুগলে হত্র পাছকে বাসনে প্রিয়ঃ॥ मूर्णनावानिकः यव अनाक्ष्या ज्थाननम्। যত্রোপলিপঞ্চানর্চ্চা বিহারঃ ক্রিয়তে গৃহে 🗈 দৰ্বীমুখেণ যতাগ্নিরামতে হস্তার নীয়তে। বিরোধিনী স্তাস্তর বিজ্ঞত্তে প্রচোদিতাঃ ॥ একো জিহ্নাগত: পুংসাং স্ত্রীণাঞ্চালীকসভ্যবান্। চোদকো নাম স প্রোক্তঃ পৈওলং কুক্তে গৃহে। অবধানকুতশ্চান্যঃ প্রবণস্থেহতিত্বতঃ। কৰোতি গ্ৰহণং তেষাং বচসাং গ্ৰাহকস্ত সঃ। আক্রম্যানো মনো দ্বাং তমসাচ্ছান্য হুর্মতিঃ। কোধং জনগতে যম্ব তমঃ প্রচ্ছাদকম্ব সঃ। স্বয়ংহার্যাস্ত চৌর্যোণ জনিতং তনস্ক্রয়স্। দক্ষহার্যার্দ্ধহারী চ বীর্যাহারী তথৈব চ ॥ অনাচান্তগৃহেখেতে মলাচারগৃহেষু চ। অপ্রকালিভগাদেযু প্রবিশংস্থ মহানদম্ ॥ थलियू (गार्ष्टियु ह देव (फार्ट्श (यवू गृर्ट्यू देव। তেরু সর্কো বর্পান্যায়ং বিহরস্থি রম্ভি চ। ভ্রামণ্যাস্তনয়ত্ত্বকঃ কাকজত্ব ইতি স্মৃতঃ। তেনাবিষ্টো রতিং সর্কো নৈব প্রাপ্রোতি বৈ পুরে ভুঞ্জন্ যো গায়তে মৈছে গায়তে হসতে চ যঃ। मकादेगथूनिमदैक्य नज्ञा विশতि विकः ॥ কন্যাত্ররং প্রস্তা সা যা কন্যা ঋতুহারিণী।। এका कुंচहवा कना। यना। वाञ्चनहातिका। তৃতীয়া তু সমাখ্যাত। কন্যকা জাতহারিণী 🛚 যন্তা ন ক্রিয়তে সর্কাঃ সমাধ্যৈবাহিকো বিধিঃ। কালাতীতোহধৰা তভা হরত্যেকা কুচৰয়ম্ চ সমাক শ্ৰাদ্ধনত্ত্ব। চ তথা শক্তি। চ মাত্ৰম্। বিবাহিতাগাঃ কন্যায়া হরতি ব্যঞ্জনং তথা। অগ্নামুণুন্যে চ তথা বিধুপে স্তিকাগৃহে। অদীপশস্ত্রস্বলে ভৃতিস্বপবর্জিতে 🛭 অহুপ্রবিভা সা কাত্মপক্ত্যাত্মসম্ভব্ম্। ক্ষণপ্রদ্বিনী বালং তত্ত্বৈবে**ংস্কৃতে বিজ্ঞ।** সাজাতহারিণী নাম স্থােরা পিশিভাশনা। তত্মাৎ সংব্রহ্মণং কার্য্যং বত্মতঃ স্থতিকাগৃহে॥ স্মৃতিকাপ্রস্থানাঞ্চ শ্ন্যাগারনিবেবণাৎ। অপহস্তি স্তস্তন্তা: প্রচেণ্ডো নাম নামতঃ॥

ুপৌত্রেভ্যন্তস্ত সন্তুহা লীকাঃ শতসহস্রশঃ। চণ্ডালযোনয়শ্চান্তৌ দণ্ডপাশাতিভীষণা:॥ ক্ষাবিষ্টান্ততো শীকান্ত। চ চণ্ডাশযোনয়:। অভাধাৰস্ত চানোানামস্কামাঃ পরস্পাবম্॥ প্রচণ্ডো বার্ধিত্বা তু তান্তান্চ গুলবোনয়:। সমরে ভাপরামান যাদৃশে তাদৃশং শুনু॥ অদ্যপ্রভৃতি শীকানামাবাদং যোহি দান্ততি। দণ্ডং তস্তা**হমতুলং** পাত্রিষ্যে ন সংশয়:॥ **ह** छानयां नाविषयं नीका या अमृतिवाछि । ত্যাশ্চ সন্ততিঃ সর্কা সাচ সদ্যো নশিষাতি॥ প্রস্তে কন্যকে স্বে তু জীপুংসোরী ছহ। রিণী। বাতরূপামরূপাঞ্চ ত্যাঃ প্রহরণস্ত তে॥ বাতকপা নিধেকান্তে সা যবৈ ক্ষিপতে স্কুত্ম। স পুমান্ বাতভক্ত প্রেয়াতি বনিভাপি বা॥ ত থৈব গচ্ছতঃ সদ্যোনিবীজ হৃমক পয়া। অস্নাতাশী নরো যোহসৌ তথা চাপি বিযোনিগঃ ॥ বিদেবিণী ভূমা কন্যা ভুকুটীকুটিলাননা। ত্যা। দ্বৌ তনরে পুংসামপকারপ্রকাশকে।। নিবর্বীজত্বং নরো যাতি নারী বা শৌচবর্জিতা। পৈওন্যাভিরতং লোলমসজ্জলনেনিষেধিণ্যু॥ পুরুষদেধিণকৈতে নরমাক্রমা তির্গ্নতঃ। মাত্রা ভারা তথা মিত্রৈবভীটেঃ পজুনৈঃ প্রে: ॥ বিৰিন্তো নাশমায়াতি পুক্ৰো ধৰ্মভোহৰ্যতঃ। একস্ত স্বন্ধণ।লোকে প্রকাশয়তি পাগকুৎ॥ ষ্ঠীয়স্ত গুণান মৈত্রীং লোকস্তামপকর্ষতি। ইত্যেতে দৌঃস্থাঃ সর্কো যক্ষণঃ সম্ভনাব্য । পাপাচারা: সমাখ্যাত। বৈক্যাপ্তম্থিলং জগং॥ है । कि भार्क एक महाभूबात त्रीः महाश्राहार ममापनः नार्टमकपकारणास्त्राम्यः।

### দ্বিপঞ্চাশাহধ্যায়ঃ।

--- 0 : 0 ---

মার্কণ্ডের উবাচ।
ইত্যেষ তামস: সর্গো ব্রহ্মণোহ্ব্যক্তজন্মন:।
কন্দর্গং প্রবক্ষামি তল্মে নিগদত: শৃণু ॥
কলাদাবাত্মনাস্তল্যং স্কৃতং প্রধ্যায়ত: প্রভো:॥
প্রাহরাসীদ্থাক্ষেহ্যা কুমারো নীললোহিত:।
করোদ স্করং সোহ্প দ্রবংশ্চ বিজ্ঞাত্ম॥

কিং বোদিষীভি,ভং ব্রন্ধা রুদন্তং প্রভ্যুবাচ হ। নাম দেহীতি তং সে:২থ প্রভুবেত জগৎপতিম্॥ ক্তব্ৰং দেব নামানি মা রোদীটের্ম্বামাবছ। এবমুক্তস্ততঃ সোহপ সপ্তক্তবে। ক্রোদ হ।। ততোহন্দানি দদে তথৈ সপ্ত নামানি বৈ প্রভু: স্থানানি চৈমামষ্ট:নাং পত্নী: পূজাশ্চ বৈ বিজ্ঞ। ভবং সর্বাং তথেশানং তথা পশুপতিং প্রভু:। ভীনমূগ্রং মহাদেবমূব্য সূপি শ্মহঃ॥ চক্রে নামান্যথৈতানি স্থানান্যোং চকাব হ॥ হুৰ্যো জলং মহী বহুৰ্কাযুগাকাশ্যেয় চ। দীক্ষিতো ব্রাহ্মণঃ সোম ইত্যেতাস্তনবং ক্রমাই। স্থবৰ্কলা ভবৈংবা**না** বিকেশী চাপ্ৰা স্বধা ॥ সাহাদিশস্তথা দীক্ষা রোহিণীচ যথাকু নম্। স্থ্যাশীনাং বিজ্ঞান্ত রুক্ত:দৈন্দামভিঃ সহ ॥ শনৈশ্চরত্তথা গুকো লোহিতাঙ্গে। মনোজব:। স্বনঃ সর্গোহ্য সন্তানো বুধশ্চামুক্রমাৎ স্বতঃ॥ একপ্রকারো কন্দ্রোহসৌ সতীং ভার্য্যামবিন্দত। দক্ষকোপাচ্চ ভত্যাজ সাস্তী স্বং কলেবয়ন্॥ হিমবদ, হিভা সাভূলেনায়াং বিজসতম। ভিস্যা ভ্ৰতো তু মৈনাকঃ স্থাস্থোধেরহু ও্নঃ। खेलत्यतम भूगतेम्हनामननाः। छशवान् छवः ॥ तिस्तो भागिविधालाद्यो ज्ञाशिक्षस्य । গ্রিরঞ্জে দেবদেবস্য পত্নী নারায়ণস্য বা ॥ অ।যতিনিয়তিকৈচৰ মেরোঃ কন্যে মহাত্মনঃ। ধা চাৰিধাতোত্তে ভাৰ্য্যে ত্যোৰ্জাতৌ সুতাবুটো প্রাণদৈব মৃক গুল্চ বিতা মম মহাযশাঃ। मनियन्।।मर् ७वा९ भूट्ला (द्रश्नित्। मम्॥ পূত্রবভাাং সমঙ্কৎ প্রাণস্যাপি নিবোধ মে। প্রাণস্য ছ্যতিষান্পুত্র উৎপরস্তস্য চাত্মছ:॥ অজরাশ্চ তয়োঃ পুল্রাঃ পৌত্রাশ্চ বহুবোহত্তবন। পত্নী মরীচেঃ সম্ভূতিঃ পৌর্ণমাসমস্যত ॥ বিরজাঃ পরতেশ্চৈব তন্য পুলৌ মহাম্মন:। তয়োঃ পুল্রাংভ বিক্ষাের বংশসংকীর্ন্তনে বিশ্ব ॥ স্মৃতিশ্চাঙ্গিরসঃ পত্নী প্রস্তা কন্যকান্তথা। দিনীবালী কুহুলৈচৰ রাকা চাত্মতী তথা।। अन्तर्या उदेथवाद्यक्तिस्त्र भूजानकन्यमान्। (गांभः प्रांगगरेकव मखां व्याप्य वांगिनम्॥ প্রীত্যাং প্রস্তাভার্য্যায়াং দত্তোলিভংফু-ভোহতবৎ।

পূৰ্বজননি দোগেন্তাঃ স্বহঃ স্বায়স্থ্ৰেইন্তরে॥

कर्षमण्डार्खवीवण्ड गरिकृष्ठ ञ्चळववम्। ক্ষমা তু স্বসুবে ভার্যা। পুলহ্মা প্রজাপতেঃ॥ ক্তে। স্বাহত ভার্য্যা বা লিখিল্যান স্মৃত। यष्टिर्गानि महत्वानि भशीनाम् ऋ दिव छ नाम्॥ উৰ্জায়ান্ত বশিষ্ঠতা সপ্তালায়ন্ত বৈ স্বতাঃ। রজোগাতোরি গত শবশান্ত। নঘন্তথা।। স্তপা: শুক্ত ইত্যোতে সর্বে সপ্র্যয়: স্মৃতা:। বে'হ্লাবগ্লিরভীমানী অধ্বাপত্তন গোহ্গ্রকঃ॥ তত্ম ৎ স্বাহা স্থভান লেভে তাহুলারৌজনো বিঙ্গ शांवकः প्रवासक एकिशानि जनामिनम्। তেলাম্ভ সন্তভাবনে। চতারিংশক পঞ্চ। কথ্যস্তে বহুশশৈচতে পিতা **পুদ্র**রয়ঞ্চ য**়**॥ এবমেকোনপঞ্চাশদুর্জন্নঃ পরিকীর্তিতাঃ। পিতরো বন্ধণ। স্টা যে বাখি।ত। ময়। তব ॥ অগ্রিছাতা বহিষদোহনগ্রঃ দাগ্রশ্চ যে। তেভাঃ স্বধা স্থতে জজে মেনাং বৈধারিণীং তথা তে উডে বন্ধবানিছো বোগিছো চাপুডে विका উত্তম জ্ঞানসম্পানে मदेखीः সমুদিতে গুলৈঃ॥ ইত্যেয়া দক্ষকভানোং ক্থিতাপতাসম্ভতিঃ। শ্রদাবান সংবারলেভানানপত্যোহভিকায়তে॥ इंडि गार्कर्खरम महाभूवारन क्रष्टमर्गाडिधारना नाम विश्वकारमः इपागः।

ত্রিপঞ্চাশোহধ্যায়ঃ।

---:0:---

ক্রোষ্ট্র কিকবাচ।

স। য়সুবং জয় (ধাণ্ডমেতনারস্তবঞ্চ যং।

তদহং ভগবন্ সমাক্ শ্রোভুমিজামি কথাতাম্ ॥
মনস্তরপ্রাণ্রু দেবা দেবর্ধয়ন্তবা।
বা চ কিতীশা ভগবন্ দেবেক্রশ্চের যন্তবা॥
মার্কপ্রের উবাচ।
মন্তরাণাং সংখ্যাতা সাধিকা হেকদগুতিঃ।
মান্তবেণ প্রমাণেন শৃণুমন্তররু মে॥
কিশাংকোটান্ত সংখ্যাতাঃ সহস্রাণি চ বিংশতিঃ
সপ্তর্মীস্তর্থানানি নিমুজানি চ সংখ্যা।
মন্তর প্রমাণ্রু ইত্যেতৎ সাধিকং বিনা॥
আঠৌ শতস্ক্রাণি দিবারা সংখ্যা শ্বতম্।

তিল্পেক কণ্যানি সহস্রাণিধিকানি চ ॥

चात्रज्ञा वसः भूकाः प्रशाहिषक्षा। ঔভমস্তামদকৈতৰ বৈৰতশ্চাক্ষত্বপা।। যড়েতে মনবোহতীতাম্বধা বৈৰম্বভোহধুনা। সাবৰ্ণিঃ পঞ্চ রোচ্যাশ্চ ভৌত্যাশ্চাথমিনস্থমী॥ এতেবাং বিস্তরং ভূমো মম্বস্তরপরিগ্রহে। वत्का (प्रवान्धीःदेन्त्रव यत्कलाः भिकतन्त्र (य॥ উৎপ্ৰিং সংগ্ৰহং ব্ৰহ্ম ক্ৰয়তামভা স্ত্ৰতিঃ। যচ্চ ভেষামভূৎ ক্ষেত্ৰং তৎপুত্ৰাণাং মহাত্মনাম্ 🗈 মনোঃ স্বায়ভুবস্যাসন্ দশ পুত্রাস্ত তৎসমাঃ। रेयत्रियः पृथियौ मर्का मश्रदोशा मलर्क्त जा ॥ সমুজাকরবতী প্রতিবর্ধং নিবেশিতা। সায়স্ত্বেহস্তরে পূর্বমাদ্যে তেতাযুগে তথা 🛭 প্ৰিন্ত্ৰত্যা পুত্ৰৈত্তৈঃ পৌজৈঃ স্বান্ত্ৰণা চ। প্ৰিয়ত্ৰতাৎ প্ৰজাবত্যাং বীরাৎ কন্যা ব্যজায়ত ॥ কন্যা সা তু মহাভাগা কৰ্দ্মস্য প্ৰজাপতে:। কনো দে দশ পুত্রাশ্চ সম্রাট্ কুফী চ তে উত্তে॥ **ज्यादे**र्क खांखदः मृदाः क्षेष्ठां शिवा मन्। অগ্নীরো মেধাতিথিক বপুমাংক তথাপর: 1 জ্যোতিমান্ ছাতিমান্ ছব্য: স্বনঃ স্প্ত এব তে প্রিয়ত্রতোহভাষিঞ্ৎ তান্ সপ্ত সপ্তস্থ পার্থিবান্ 🛚 দ্বীপেদেতেরু ধর্মেণ দ্বীপাংকৈচৰ নিবোধ মে। জষ্দীপে তথাগীএং রাজানং কৃতবান্ পিতা। প্লক্ষ্বীপেশ্বরশ্চঃপি তেন মেণাতিথিঃ কুতঃ। শালালে তু বপুমস্তং জ্যোতিমস্তং কুশাহ্বয়ে। ক্রৌঞ্দীপে ছাতিমন্তং ভবাং শাকাহ্বয়েশ্বরম্ পুষরাধিপতিঞাপি সবনং কুতবান্ স্তম্ ॥ মহাবীতো গাতকিশ্চ পুষরাধিপতেঃ স্থতৌ। धिया कृषा उत्प्रार्थ्य भूकतः मःनार्यमप्र ॥ ভবস্য পুজাঃ সপ্তাসন্ দামতন্তান্ নিবোধ মে জলদশ্চ কুমারশ্চ স্থকুমারো বনীয়ক:॥ কুশো ওরে:২থ মেধাবী সপ্তমস্ত মহাক্রম:। তন্নামকানি বর্ষাণি শাক্ষীণে চকার সঃ॥ তথা ছ্যাভিমতঃ সপ্ত পুত্ৰান্তাংশ্চ নিৰোধ মে কুশলো মন্থগশ্চোষ্ণঃ প্রাকাবশ্চার্থকারকঃ॥ मुनिन्ह पुन्नु ভिटेन्हर मश्रमः পরিকী র্ত্তিভঃ। टियाः अनामर्थमानि (कोशकीर्य ख्याज्यन्। জ্যোতিখভ: কুশ্**ৰীপে পু**জনাম।ক্বিতানি বৈ তত্র।পি সপ্ত বর্ষাণি ভেষাং নামানি মে শৃণু॥ উ हिनः देवक बटेक व स्टूबरः मधनः छवा। ধৃতিমৎপ্রভাকরকৈষ কাশিলকঃপি সপ্তমম্ 🗈

।পুরতঃ হতা সপ্ত শাবাবেশদা চাভবন্। ্পতশ্চ হরিউলৈচৰ জীম্তো রোহিতন্তগা॥ াৰছাতো মানসকৈব কেতৃমান্ সপ্সভাবা । চুটেথৰ শালালে ভেষাং সমনামানি সপ্ত হৈ ॥ াপ্ত মেধাভিপেঃ পুজাঃ প্রক্ষরীপেশ্বরুলা বৈ। (गर्याः नामाकिटेडक्टियः श्रक्तवी शक्ष मश्रवा ॥ পূর্বাং শাকভবং বর্ষং শিশিরত্ত সুখোদরুম্। আনন্দঞ্জ শিবকৈব ক্ষেম্ৰুঞ্চ ক্ৰবং তথা।। প্লক্ষীপানিভূতেষু শাক্ষীপান্তিমেষু বৈ। জেয়ঃ পঞ্চ ধর্মক বর্ণাশ্রমনিভাগজঃ॥ निकाः खाँडाविकटेक्टर खहिश्माविधिवर्জ्जिकः। পঞ্জেতেরু বর্ষেরু স্কং দাধাবণং স্বৃত্য ॥ অগ্নীপ্রার পিতা পূর্বং জন্ধ বীপং দদে। বিজঃ। ত্যা প্লাবভূবুহি প্রজাপতিসমানব॥ জ্যেঠো নাভিরিতি থ্যাতস্তদ্য কিম্পুক্ষোইমু**জ:**। হরিবর্ষ**স্তীয়ন্ত চতুর্থো**হভূদিলার্তঃ ॥ রম্যশ্চ পঞ্চমঃ পুতো হিরণ্যঃ ষষ্ঠ উচাতে। কুক্ত সন্তমত্তেদাং ভদ্রাখন্চাইম: স্ত:। নবমঃ কেতৃমালশ্চ তলামা বর্ষদংস্থিতিঃ। যানি কিম্পুক্ষাথাাণি বৰ্জিয়িতা হিমাহবয়ন্॥ তেযাং স্বভাবতঃ সিদ্ধিঃ সুৰপ্ৰায়া হ্যবুতঃ। বিপর্যায়ো ন তেম্বল্ডি জরামৃত্যুভয়ং ন চ॥ ধর্মাধ্যমানি তেখান্তাং নোত্তমাধ্যমধ্যমাঃ। न देव हरूयू शांवन्था नार्ख्या श्रह्मा न ह ॥ অগী ধক্ষোর্নাভেম্ব ঋষভোহভূৎ স্থতো দিল। ঋষভাত্তর**ভো জঞ্জে বীর: পু**ল্লশতাপ্র: ॥ নোহভিদিচার্বভ: পুলং মহাপ্রাবাজ্যমান্তিত:। তপ্তেপে মহাভাগঃ পুলহাশ্রমসংশ্রাঃ ॥ হিমাহবং দক্ষিণং বর্ষং ভরত র পিতা দদৌ। ত্যাৎ তু ভারতং বর্ষং ত্তা নামা মহায়ন:॥ ভরত্তাপাভূৎ পুত্র: স্থ্যতিনাম ধার্দ্মিক:। ত স্মিন্ বাজ;ং সমাবেশ্য ভবতোহপি বনং যথৌ॥ এতেষাং পুত্রপোত্রৈস্ত সগুরীপা বস্করা। প্রিরব্রত্ত পুরৈস্ত ভূকা স্বায়স্ত্বেহ্সরে॥ এন সায়স্ত্ব: দর্গ: কণিতত্তে বিজোৱন। পূর্বনম্বস্তারে সমাক্ কিম্মতাৎ কথ্যামি তে ॥ हेि भार्करखरत्र महाभूतारण मयुद्धत्रकथनः

नाम जिलकात्मारुशायः।

### চতুঃপঞ্চাশোহধ্যায়ঃ।

--:--

(कोष्ट्रे कि क्रवीह।

কতি দ্বীশা: সমুদ্রা বা পর্বতো বা কভি বিদ। किश्र छि देवव वर्षानि (उषाः नमान्क का मूरन ॥ মহাভূতপ্রমাণক লোকালোকং তথৈব চ। পর্যারং পরিমাণঞ গতিং চক্রার্কমোরপি॥ এতৎ প্রক্রহি মে সর্কাং বিস্তরেণ মহামুনে ॥ মার্কণ্ডেম উবাচ। শতাৰ্দ্ধকোটিবিস্তারা পৃথিবী ক্বৎল্পশো দিজ। ততা হি স্থানম**ধিলং কণরাম শৃ**ণুদ্ধ ত**ং** ॥ एय (क दी भा मझा (शांका कच्ची भागत्मा दिखा। পুকরান্তা মহাভাগ শৃলেধাং বিভারং পুন: ॥ ধীপাৎ ভূ দিগুণো শীপো অমৃ: প্লকোহণ শাব্দল: কুশ: ক্রোঞ্জথা শাক: পুরুর্দীপ এব চা লবণে কৃত্ৰ বাদৰ্পিদিধিছগ্ধ ললা কিভিঃ। षि छटेनषि छटेनत् का। সর্বতঃ পরিবেষ্টিত: ॥ জন্ধীপভা সংস্থানং প্রবক্ষোইছং নিবোধ মে। नकरमकः (याखनानाः त्रुखो विखात्रदेवर्गाणः ॥ हिमयोन् (हमक्षेण अवस्था (मक्राइत ह। নীলঃ খেতত্ত্ব। শৃঙ্কী সপ্তামিন্ বর্ষপর্কতাঃ ॥ (को नक्षरगं करायां कर তয়োর্দক্ষিণতো যৌ তু যৌ তথোতরতো গিরী। দশভিদ্শভিন্তিনঃ সহকৈতেঃ পরস্পরম্॥ ধিনাহত্রোচ্ছ য়াঃ দর্বে তাবদ্বিভারিণশ্চ তে। সম্দাতঃ প্রবিঠাক ষভিন্নি বর্গপদিতা: ॥ দিজিণোভবতো নিয়া মধ্যে তুলায়তা জিতিঃ 🟗 বিদ্যাবৈ দক্ষিণে ত্রীণি ত্রীণি বর্ষাণি চোত্তরে। ইলারতং তয়ে। মধ্যে চন্দ্রাকারবং স্থিতম্॥ ততঃ পূর্দেণ ভদ্রাথং কেতুমালক গশ্চিমে। ইলাবত ভাগে তুমের: কনকপর্বত:॥ চতুরশীতিসাহস্রস্তদে।। চতু । যোমহালিরেঃ। প্রবিষ্টঃ মোড়শাধস্তা দ্বিস্তীর্ণং সে:ড়ৌশব তু॥ শরাবদংস্থিতভাক বাতিংশন্দু দি বস্তঃ। ভুক: পীতোহসিতে। রক: আন্চানিষু যথাক্রমম্। বিশ্রো বৈশ্রন্তথা শূদ্র: ক্ষত্রিয়ণ্চ স্বর্ণত:। তদ্যোপরি তথৈবাঙীে পূর্বাদিয়ু যথাক্রমম্॥

ইন্দ্র: দিলোকপালানাং জন্মদ্যে ব্রহ্মণঃ সভা। যোজনানাং সহস্রাণি চতুর্দশ সমূচ্ছি তা॥ অমৃতোচ্ছ য়েস্তস্যাধন্তথা বিষয়পর্বত:। व्याकां नियु जन्मरे व मनरदा शक्यां ननः॥ বিপুল চ সুণার্মন্চ কেতুপাদপশোভিতাঃ। कन्दा गन्तरत दक्क्षंष्ट्रेर्व शक्त्रभागरन ॥ বিপুলে চ তথাৰখং স্থপাৰ্শে চ বটো মহানু। একাদশশতার।মা যোজনানামিমে নগাং॥ জঠরো দেবকৃটঞ্ পূর্ম্ম গাং দিশি পর্মতৌ। ष्यानौगनिषद्यो व्यात्थो शत्रश्रातनित्रस्तरो ॥ নিষ্ধঃ পারিপাত্রশ্চ মেরোঃ পার্শে তু পশ্চিমে। यथा शास्त्री ख्या देहजानानीयानियधायाजी ॥ देकलात्मा शिमवाः देश्वव मिक्स्तिन महाव्यती। নুর্বাপশ্চায়ভাবে ভাবর্ণনান্তর্ব।বস্থিতৌ ॥ भृष्णयोन् काक्सिरेक्टव उटेशटगां खत्र शर्माटकी। যথৈব দলিতে ত্ৰদস্ত্ৰ্তিষ্ঠ্যবৃহতে। মর্য্যাদাপর্কতা ছেতে কণ্যস্তেহন্তৌ বিজোত্তম। হিমবদ্ধেমকুটাদিপর্বতানাং পরস্পবম্॥ নব যোজনসাহত্রং প্রাওদক্ষিণোত্তম্। ফলানি যানি থৈ জন্না গন্ধমাদনপর্কতে। গজদেহপ্রমাণানি পতস্তি গিরিমুর্দ্ধনি॥ তেষাং রুমাৎ প্রভবতি খ্যাতা জম্নদীতি বৈ। ষত জাখুনদং নাম কনকং সম্প্রেষায়তে ॥ সা পরিক্রমা বৈ মেরং জ স্মৃশং পুনর্দী। বিশতি ৰিজশাৰ্দ পীয্মানা জনৈশচ তৈঃ ৷ ভদ্রাধে হশ্বশিরা বিষ্ণুর্ভারতে কৃশাদংখিতি:। ববাহ: কেতুমালে চ মৎস্যরূপস্তগোত্তবে॥ তেষু নক্ষত্রবিন্যাসাদ্বিষয়াঃ সমবস্থিতাঃ। চতুৰ পি দ্বিজশ্ৰেষ্ঠ প্ৰা≉াভিভবপাঠকাঃ॥

ঠিতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুখাণে ভ্রনকোষে অস্-দ্বীপ্রপ্নং নাম চতুপঞ্চাশোহধাযিঃ।

প্ৰস্পৃত্যাশেহধ্যায়ঃ।

-- 8\*

সাক্ষেত্র উবাচ।

শৈলেষু মলর। দোষু চতুষে বি বিজোওম।
বনানি ঘানি চছারি সরাংশি চ নিবোধ মে॥
পূর্বং চৈতারথং নাম দক্ষিণে নন্দনং বনম্।
বৈক্রাজং পশ্চিমে শৈলে সাবিজং চোত্তরাচলে॥

व्यक्रावानः मद्रः श्रृक्तः गानमः मक्तित् छथा। শীতোদং পশ্চিমে মেরোর্মছাভুদ্রং তথোত্তর ॥ শীতার্ভ্রিক্রক্রমুঞ্জন্ত কুলীরোহথ স্থকস্কবান্। মণিলৈখিথ বুধবান্ মহানীলো ভবাচল: ॥ गरिन्तुर्यानारता (वशुष्ठांभरमा निषधख्या। (एवटेम्बर पृर्द्धन मनवत्रा महाहबः ॥ ত্রিকৃটশিথরান্ত্রিশ্চ কলি**কো**হথ প**তন্সকঃ**। ক্রচকঃ সাম্মাংশ্রাজিন্ত।মকোহপ বিশাথবান্॥ খেতোদর: সমূলশ্চ বস্থারশ্চ রত্নবান্। এক শৃল্পো মহাশৈলো রাজ শৈলঃ পিপাঠকঃ॥ शक्करेभारताथ देकनारमा हिमवाः\*कांकरताखमः। ইত্যেতে দক্ষিণে পার্ষে মেরো: প্রোক্তা মহাচলঃ ত্মরক্ষঃ শিশিরাক্ষণ্ড বৈদুর্ঘ্যঃ পিঙ্গলস্তথা। পিঞ্রোহথ মহাভদ্র: স্থুরস: কপিলো মধুঃ ॥ অঞ্বঃ কুরুটঃ কুষ্ণঃ পাণুরশ্চাচলোত্তমঃ। সহস্রশিথরশ্চাদ্রিঃ পারিপাত্তঃ সশৃঙ্গবান্।। পশ্চিমেন তথা মেরোর্বিষ্ট্ ছাৎ পশ্চিমান্বহিঃ। এতেহচলা: সমাপ্যাতা: শৃণুষান্যাংস্তথোভরান্॥ শঙ্কাকুটোহথ বুষভো হংসনাভস্তথাচল:। किलिए कुछ था देशलः मारूमान् नौन धार है। স্বৰ্শৃঙ্গী শাতশৃঙ্গী পূজাকো মেঘপৰ্কত:। বিরজাক্ষো বরাহাডিম্যুরো জাক্ধিতথা।। ইত্যেতে কথিতা ব্রহ্মন্মেরোকতরতো নগা:। এতেষাং পর্বতানাম্ভ দ্রোণ্যোহতীব মনোহরঃ॥ वरेनव्रमन्गानीरेषः मरदाज्ञिन्। । তাত্ব পুণাকুতাং জন্ম মন্ত্ৰ্যাণাং দিজোতম ॥ এতে ভৌমা বিজ্ঞেষ্ঠ স্বৰ্গাঃ স্বৰ্গ গুণাধিকাঃ। न उाक पूणापानामपूर्वाणाभूपार्कनम्॥ পুণ্যোপভোগা এবোক্তা দেবানামপি তাম্বপি। শীত। স্তান্যেরু চৈতেরু শৈলেষু ধিজ্ঞসত্তম। दिलामियानाः यक्तानाः किन्नद्वात्रभन्नक्ताम्। দেবানাঞ্চ মহাবাদা গন্ধবানাঞ্চ শোভনাঃ।। মহাপুণ্য। মনোটজ্ঞ চ সদেবোগবটন মু তাঃ। সরাংসি চ মনোজ্ঞানি সর্বর্জুস্থদোহ**নিল: ।** ন চৈতেৰু মহুষ্যাণাং বৈমন্ত।নি ক্তচিং। তদেবং পার্থিং পদ্মং চতুষ্পত্রং ময়োদিতম্॥ ভদ্রাখভারতাদ্যানি পত্রাণাম্ম চতুদ্দিশন্। ভারতং নাম হঃধং দক্ষিণেন ময়োদিতম্॥ • তৎ কশ্বভূমিনানাত্ত সম্প্রাপ্তিঃ পুণাপাপরোঃ। এতং প্রধানং বিজেয়ং যত্র স্কাং প্রতিষ্ঠিতম্ ।

তত্মাথ স্বৰ্গাপৰগোঁচ মান্ত্ৰানাৰক। বঁপি। তিৰ্যাক্ত্ৰথবাল্যন্যং নরঃ প্রাপোতি বৈ দ্বিজ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ভ্ৰনকোষে পঞ্চপঞ্চাশোহ্ধায়েঃ॥

# ষট্পঞাশোহধাায়ঃ।

মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

দ্রবাধাবং জগদ্যোলেঃ পদং নারায়ণস্থ যৎ। ততঃ প্রবৃতা যা দেবী গঙ্গা ত্রিপণগামিনী। ভত: সমন্ধামানার্করশ্মিসম্পতিপাবনী ॥ প্রপাত মেরুপুঠে চ সা চত্র্ব। ততো যথী। মেককটভটান্তেভ্যো নিপ্তস্তী বিবর্ত্তিগ্র বিকীর্যামাণদলিলা নিরালমা পপাত মা। মন্দরাদোষু পাদেষু প্রবিভক্তোদকা সম্ম॥ চতু দিশি পপাতামু বিভিন্নান্তিশিলোচ্চয়া। পূৰ্বা শীতে হতি বিখা তা যযৌ চৈত্ৰ রথং বন্ম। **७**९ क्षाविश्विषा मा गरमी वक्ररनामः मरवावत्रम । শীতান্তঞ্চ গিরিংস্তস্মাত্তশ্চান্যান গিরীন ক্রমাৎ। গ্রা ভূবং সমাসাদ্য ভদ্রাশ্বাজ্ঞলধিং গ্রা। जरेशवालकननाथाः मिक्तित शक्तभामतन ॥ रगक्लानदनः शञ्चा नक्तः (मत्नक्तम। गानमक মহাবেগাৎ প্লাব্যিতা সরোবরম॥ আসাদ্য শৈলর।জ্ঞানং রম্যং হি শিথরং তথা। তত্মাচ্চ পর্বতান সর্বান দক্ষিণোপক্রমোদিতান॥ ান্ প্লাবয়িত। সম্প্রাপ্তা হিমবস্তং মহাগিরিম। দ্ধার তত্ত্ব তাং শস্তুর্মুমোচ রুম্ধ্বজঃ॥ ভগীরথেনোপবাদৈঃ স্তত্যা চারাধিতে। বিভুঃ। তত্র মৃক্তা চ শর্কেণ সপ্তধা দক্ষিণোদ্যিম। व्यविदयन जिथा व्याच्याः श्लावश्रन्थौ महानसी। ভগীরথরথস্যামু স্রোতদৈকেন দক্ষিণাম্॥ তথৈব পশ্চিমে পাদে বিপুলে সামহ নদী। <sup>প্র</sup>ক্ষিতি বিখ্যাতা বৈভাজং সাচলং যথৌ॥ শীতোদক সরস্তন্মাৎ প্লাবয়স্তী মহানদী। <sup>সরকু</sup>: পর্বতং প্রাপ্তা ততশ্চ ত্রিশিখা গতা॥ তত্মাৎ ক্রমেণ চাদ্রীণাং শিখরেষু নিপত্য সা। क्ष्यां न मानामा अविष्ठा नवत्नामिम ॥ স্থ<sup>পার্মন্ত</sup> তথৈগান্তিং মেরুগাদং হি সা গতা। ত্র সেংমেতি বিখ্যাত। সা যথৌ স্বিভূর্কন্মু॥

তং প্লাব্যস্থী সম্প্রাপ্রোমহাভদ্রং সরোবরম্। ততশ্চ শহাকৃটং সা প্রয়াতা বৈ মহানদী ॥ তক্ষাৰ ব্যভাদীন্সা জমাৎ প্ৰাপ্য শিলোচ্যান্ মহার্বমক্লারা মাব্য়িছোত্রান্কুরন্ ॥ এবনেষা ময়া গঙ্গা কথিতা তে ছিজ্মইড। জমুদীপনিবেশাচ্চ বর্ধাণি চ যথাতথম ॥ বসন্তি তেষু সর্কোষু প্রজাঃ কিম্পুরুষাদিষু। স্বথপ্রায়া নিরাতঙ্কা ন্যুনতোৎকর্ষবর্জিতা:॥ নবস্পি চ বর্ষেষু সপ্ত সপ্ত কুলাচলা:। **व्यटेकक शिः छन। मिट्न नमाम्हा जिति निः ऋडाः** ॥ यानि किम्भूक्षानानि वर्षानाही विख्नालम। তেষু ডিদানি তোয়ানি মেঘবার্য্যত্র ভারতে ॥ বাৰ্ফী স্বাভাবিকী দেখা তোয়োখা মানসী তথা। কর্মজা চ নৃণাং সিদ্ধির্ব্বেক্তেয় চাইছে॥ কামপ্রদেভ্যে বৃক্ষেভ্যে বাক্ষী দিদ্ধিঃ স্বভাবজা। সাভাবিকী সমাখ্যাতা তপ্তির্দেশ্যা চ দৈশিকী॥ অপাং দৌক্ষাচ্চ ভোয়োখা ধ্যানোপেডা চ মানদী উপাদনাদিকাৰ্যান্ত্ৰ কৰ্মজা দাপ্যুদাহ্নতা।। न देवटक्यू गूर्शिवष्टा नाधरमा वा। भरमा न ह। পুণ্যাপুণ্যসমারভো নৈব তেমু দ্বিজোভ্য ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে গঙ্গাবভারে। নাম ষ্ট্পঞ্লেশাহ্ধ্যায়ঃ।

### সপ্তপঞ্চাশোহধ্যায়ঃ।

--\*::--

কোঁই কিলবাচ।
ভগবন্ কথিকেওজক্ দ্বীপং সমাসত:।
বদেতদ্বতা প্রোক্তং কর্ম নাস্তা পুণানম্॥
গাপার বা নহাভাগ বর্জনিয়া তু ভারতন্।
ইতঃ স্বর্গন্ধ মোক্ষণ মধাঞ্চান্তক গম্যতে॥
ন প্রক্র মর্ত্যানাং ভূমৌ কর্ম বিধীয়তে।
তক্ষাবিত্তরপো ক্রমন্ মইনতদ্ধারতং বদ ॥
যে চাম্ম ভেদা যাবস্তো ম্বাব্ দ্বিত্রেব চ।
বর্ষোহ্মং দ্বিশার্দ্ধ বে চাম্মিন্ দেশপর্ক্তাঃ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।
ভারতসামা বর্ষস্য নব ভেলান্ নিবোধ মে।

ভারতদাদা বর্ষসা নব ভেলান্ নিবোধ মে। সমৃদ্র ভবিতা জেরাতে তুগম্যাঃ পরপ্রম্॥ ইক্রদীপঃ কশেকমাংত ফ্রেবর্ণো গভতিমান্। নাগৰীপত্তথা দৌম্যো গাদর্কো বাকণততথা॥

खास्य । व्यास्त्रवाः घौषः माधातम तृष्टः । (योजनानाः महत्यः देव घीटभाश्यः मिक्स्ताह्याः ॥ शर्स्य किवारी यमारिख शन्तिय यवनौख्या। বালগাঃ ক্রিয়া বৈশ্যাঃ শুদ্রাশ্রাস্থাইতা দিজ। ইজ্যাধ্যায়বণিক্যানৈয়ঃ কর্ম্মভিঃ কুত্রপাবনাঃ। তেবাং সম্ব্যবহাৰণ্ড এভিঃ কর্মভিবিষ্যতে॥ यर्शीलवर्श श्रीखिम्ड भूनाः शाशकः देव जना। गडिता भवायः मद्यः कुलिभान्क वर्ततः। বিদ্যাশ্চ পারিপাত্রশ্চ সব্তৈধাত্র কুলাচলাঃ॥ তেষাং সহস্রশস্তান্তে ভূধরা দে সমীপগাঃ॥ विखायाक शिला द्रभा विश्वाकाव मानवः। (कालांश्लः मदेवलारका मन्मरता पर्भ वाहनः॥ वाज्यता देवशुख्क देवनांकः प्रदेशख्या। তত্মপ্রস্থাে নাগগিরী বোচনঃ পাওবাচলঃ॥ भूरणा शिविद्धं र्क्कब्रास्था देववर्का ३ व्हें प व्यव है। খানামক: স্গোমন্তঃ কৃটলৈলঃ কুত্রাবঃ।। গ্রীপর্মতব্দ কোরণ্ড শতশোহতো চ পরতাং। टेडिकिमिधा जनलमा (मुद्धांकार्यान्ड जागमः॥ তৈঃ পীগ্ৰন্তে সরিচেছ ঠা ঘান্তাঃ সমাঙ্ নিবোধ মে গঙ্গা সবস্থ সিন্ধুশ্চক্র ভাগা তথাপরা। মুদ্ধা চু শৃতক্রণ বিতক্তেরাবতী কুছ:। গোনতী ধৃতথাপাচ বাহুদা সদৃশদ্ভী া বিপাশা দেবিকা রজ্জ নিশ্চীরা গণ্ডকী তথা। (कोमिको हानशा विका श्रियवरनामनिः ए छा: । বেদ মৃতিলেদৰতী বৃত্তন্নী সিন্ধুরেৰ চ। (तथा मानलनौ देहद मनानौत्रां मही उथा॥ পারা চর্মণ্ডী তাপী বিদিশা নেত্রবত্যপি। নিপ্রা হারণী চ তথা পারিপারাশ্রমাঃ স্বতাঃ । (भारता महानमरेन्डव नर्यमा खत्रण जिला। মন্দ কিন্য দশার্ণা চ চেত্রকুটা তথাপরা॥ চিত্রোৎপলা সত্মদা কর্মোনা পিশাচিকা। जगाला विश्ववित्यानिकियांना वञ्जा नहीं। স্থানকজা গুজিমতী শকুলী ত্রিদিগাক্রমু:। ঋকপাদপ্রসূতা বৈ তথান।। বেগবাহিনী।। শিপ্রা প্রোফ্টী নির্কিন্ধ। তাপী সনিষ্ধাবতী। (देश देन करकी देहत मिनी बा**ली कुम्ब**की ॥ ক্রতোমা মহাগোণী তুর্গা চান্তঃশিরা তথা। বিদ্যাপাদপ্রসূতান্ত। নদাঃ পুণাঞ্চলাঃ গুড়াঃ॥ গোদাববী ভীমর্থা কুফ্বেণা তথাপরা। তৃত্বভদ্ৰা স্থপ্ৰয়োগা বাহা। কাবেণ্যথাপগা॥

বিকাপাদবিনিক্রান্ত। ইতোতাঃ সরিত্তমাঃ। ক্তমালা ভাষ্মপ্ৰী পুষ্পদা স্ৎপলাৰতী॥ মল্ব। দ্রিসমুদ্ভূতাঃ নদ্য: শীতজলা স্থিমাঃ। িতৃদোন্যিকুল্যা চ ইক্ষুকা ত্রিদিবা চ যা॥ লাঙ্গলিনী বংশকরা মহেন্দ্রপ্রভবাঃ স্মৃতাঃ। श्विकृत्या कुर्याबी ह सम्मशा सम्मवादिनी ॥ কুণা পলাশিনী চৈত্ত গুক্তিমংপ্রভবা: স্মৃতাঃ मर्ताः पुनाः मवश्राः मर्ता गन्नाः ममुप्रगाः বিশ্বসা মাতবঃ সর্বাঃ স্বর্বাঃ পাণ্ডবাঃ স্মৃতা অন্যাঃ মহস্রশংক্তাকাঃ ক্ষম্রন্দ্যো বিজোভ্য প্রাবৃট্য লেবছাঃ সন্তি সদাকালবহাশ্চ যাঃ। মৎস্যাধকটাঃ কুল্যান্ড কুন্তনাঃ কালিকোশল অথর্নাশ্চ কলিস্বাশ্চ মশকাশ্চ'রুকৈঃ সহ। মধাদেশা জনপদা: প্রায়শোহমী প্রকীর্ভিতা: সহাস্তি কেরে যাতে যত গোলাবরী নদী। পুথিবামপি কুৎস্নায়াং দ প্রদেশে। মনোরমঃ (गावर्क्तनः भूतः बगुः छार्गदम्य मधाद्यनः। বাহলীকা বাটধানান্চ আভীবাঃ কালভোয়কাঃ অপরাস্তাশ্চ শাদ্রাশ্চ পল্লবাশ্চর্মাণ্ডিকা:। शासाता यनगरेन्छ व निसूत्मोतौत्रमसकाः ॥ শতজভাঃ কলিকাশ্চ পারদা হারভূষিকাঃ। मार्ज्या वल्ड्यान्ह केरकन्ना मन्ममानिकाः॥ फ जिर्पा पिनिर्यमाम्ह देव श्रम प्रकृषानि ह। कारबाका बत्रमारेन्टन वर्वत्रा इर्वविक्रनाः ॥ চীনালৈচৰ তু পাৰাল্চ বহুকা বাহুতো নরাঃ। আত্রেয়াশ্চ ভবদ্বারাঃ পুদ্ধলাশ্চ কর্শেককাঃ॥ बम्लाकः: मृनकानान्छ চুलिका का छरेजः मह। ঔপ্রাশ্চানি দদ শচ কিরাতানাঞ্জাত্য:॥ তামদা হংসমার্গান্ড কাশ্মীরাস্তম্পনান্তথা। न्निकाः क्रकारेन्डव जन्न एकाखरेथव ह ॥ এতে দেশা হাদীচ্যাস্ত প্রাচ্যান দেশান নিবোধ অপ্রাবকা মুদকরা অন্তর্গির্যা। বহির্গিবাঃ॥ यथा প্রবঙ্গা রঙ্গেরা মানদা মানবর্ত্তিকা:। বোলোবনা: প্রবিজয়া: ভার্গবা জ্ঞেয়মলকা: ॥ প্রাগ্ভ্যোতিষাক মদ্রাক বিদেহান্তাম্রলিপ্তকা মলা মগধগোমকাঃ প্রাচ্যা জনপদাঃ স্মতাঃ॥ অথাপবে জনপদা দক্ষিণাপথবাসিন:। পুণ্ডাশ্চ কেরলাশ্চৈব গোলাঙ্গুলান্তবৈব চ 🕨 শৈল্যা মৃষিকাশৈতৰ কুস্থমা নাম বাসকাং। মহারাষ্ট্রা মাহিষকা কলিঙ্গাল্ডেব সর্ব্বশ:॥

জাতীরাঃ সহবৈশিক্যা আঢ়ক্যা শ্বরাশ্চ যে। श्रीतका विकारभोरतया देवनका मखदेकः मह॥ পৌরিকা মৌলিকান্টেচব অশাকা ভোগবর্দ্ধনা:। নৈযিকাঃ কুস্তলা অন্ধা উদ্ভিদা বনদারকাঃ। माकिगाजास्मी रम्भा अवतास्नान् निरवाध रम । रुगातकाः कालिवना छुनानानीकटेछः मह ॥ পুলিলাশ্চ স্থমীনাশ্চ রূপপা: স্বাপদে: সহ। তথা কুরুমিনকৈব সর্ব্বে চৈব কঠাক্ষরা: ॥ नामिकाविक द्य हाटल द्य देहद्वा ब्युनर्या माः। ভীক্কচ্ছাঃ সমাহেয়াঃ সহ সারস্বতৈরপি n কাশীরাশ্চ স্থরাষ্ট্রাশ্চ আরস্থ্যাশ্চার্ক্রিণঃ সহ। ইত্যেতে **হৃপরাস্তাশ্চ শৃ**ণু বিন্ধানিবাগিনঃ॥ সবজাশ্চ করুষাশ্চ কেরলাশ্চোংকলৈ: সহ। উত্তমৰ্ণা দুশাৰ্ণাণ্ড ভোজাাঃ কিফিন্তকৈঃ সহ॥ তোশলাঃ কোশলাইশ্চব তৈপুরা বৈদিশস্তথা। ভুমুবাস্তমুলান্চৈব পটবো নৈষ্ট্রেঃ সহ।। অরজাস্তটিকারাশ্চ বীরহোতা ছবস্তয়:। এতে জনপদাঃ সর্কে বিদ্যাপৃষ্ঠনিবাসিনঃ ॥ মতো দেশান্ প্রবক্যামি পর্বতাশ্রমিণত যে। নীহাবা হংসমার্গাত কুরবো গুর্গণাঃ থদাঃ॥ মন্ত্রপাবরণালৈত্ব উর্ণা দার্কা সক্তরকাঃ। এগর্ভ। **মালবাকৈত্ব কিবাতান্তামনৈঃ সহ** ॥ Fত্ত্রেতাদিক**শ্চাত্র চতুর্গক্তা** বিধিঃ। এতং তু ভারতং বর্ষং চতুঃসংস্থানসংস্থিতম্॥ ক্ষিণাপ্ৰতো হৃত্ত পূৰ্দ্বেণ চ মহোন্ধিঃ। ইনবাত্তরেণাস্ত কাশ্ব কিন্ত যথা গুণঃ n ংদিত ছাবতং বর্ষং স্ব্রবীজং দিজোর্ম। াগাইমমরেশত্বং দেবত্বং মক্তন্তথা।। াগণখপরোগোনিস্তদ্ধৎ সর্ক্ষে সরীস্থপাং। হাববাণাক সর্কোষামিতো ব্রহ্মন্ ওভাততৈঃ॥ <sup>াষা</sup>তি কর্ম্মভূর্ত্সন্ নাতা ক্লেকেয় বিদ্যাতে। व्यानामित्र विश्वर्ष मरेनदेवस मरनात्रथः॥ ্পি মান্ত্ৰমাজ্যামো দেববাং প্রচ্যুতাঃ কিতে <sup>নুষ্যঃ</sup> কুরুতে তৎ তু য**র শ**ক্যং স্থবাস্থরৈঃ॥ ইতি মার্কভেবে মহাপুরাণে নদ্যাদিবর্ণনং নান সপ্তপঞ্চাশোংধ্যায়ঃ॥

#### অফপকাশোহধ্যায়ঃ।

------

কোই কিরবাচ।
ভগবন্ কথিতং সমাগ্ভবতা ভারতং মম।
সরিতঃ পর্বজা দেশা যে চ তত্র বসন্তি বৈ॥
কিন্ত কুর্মন্ত্রমা পূর্বং ভারতে ভগবান্ হরি:।
কথিতন্তন্ত সংস্থানং শ্রোত্মিচ্ছাম্যশেষতঃ॥
কগং স সংস্থিতো দেবঃ কুর্মন্ত্রপী জনার্দ্রন।
তভাতভং মন্থ্যাগাং ব্যন্ত্রতে চ ততঃ কথম্।
যথাম্থং যথাপাদং তত্ত তদ্রহ্মশেষতঃ॥
মার্ক্রেয়ে উর্যাচ।

যপামুথং যথাপাদং তম্ম তদুক্রহাশেষতঃ॥ মার্কভেগ উবাচ। প্রায়ুখো ভগবান দেবঃ কৃশ্মরূপী ব্যবস্থিত:। আক্রম্য ভারতং বর্ষং নবভেদমিদং বিজঃ॥ ८ নবধা সংস্থিতাগ্রস্থ নক্ষতাণি সমস্তত:। বিষয়াশ্চ দ্বিজশ্রেষ্ঠ যে সম্যক্ তান্ নিবোধ মে ॥ বেদমন্তা বিমাওবাাঃ শাৰনীপান্তথা শকাঃ। উজ্জিহানাস্তথা বৎস ঘোষসংখ্যান্তথা পশাঃ॥ মধ্যে সারস্বতা মৎস্তাঃ শূরদেনাঃ সমাপুরা:। ধর্মাবণ্যা জ্যোতিষিকা গৌরগ্রীবা •গুড়াশকা:। উদ্বেহকাঃ স্পাঞ্চালাঃ সম্বেতাঃ ক্ষমাক্তাঃ। কালকোটিসপাষ্ডাঃ পারিপাত্তনিবাসিনঃ॥ কাপিঙ্গলাঃ কুকর্কাছস্তথৈবোড়ম্বরা জনাঃ। গজাহবয়াশ্চ কৃশ্বিশু জলমধ্যনিবাদিনঃ॥ ক্তিকা বোহিণী সোম্যা এতেষাং মধ্যবাসিনাণ্ নক্ষত্র এত্যং বি**প্র গুভাগুভবিপাটক**ম্॥ त्यक्षरङारञ्जनदेश्वत क्षत्रार्था। भागवाहणः। मृशकर्व। व्याप्रमुथः थयकः कक्षेष्रामनः॥ তগা চল্রেশ্রাংশ্চব থশাশ্চ মগধাস্তগা। গিবয়ো নৈথিলাঃ পৌতাত্তথা বদনদস্তরাঃ॥ প্রাগ্জ্যোতিষা: সলৌহিত্যা: সামুদ্রা:পুরুষান্কা: পূর্ণোংকটো ভদ্রগৌরস্তর্থোদয়গিরিদিজ॥ কশায়া মেথলা মৃষ্টান্তামূলিপ্রৈকপাদপাঃ। বৰ্দ্দানাঃ কোশলাশ্চ মুথে কৃষ্ণত সংস্থিতাঃ॥ (वोदः शूनर्वञ्चः शूर्या। नक्षज्जि ज्यः भूरथ। পাদে তু দক্ষিণে দেশাঃ ক্রেষ্ট্রিকে বদতঃ শৃণু॥ কলিঙ্গবন্ধজঠরাঃ কোশলা মৃষিকান্তথা। ८ हन गरन्हों र्क्ष कर्शान्त संश्लानाः विकासिनः ॥ विष् छ। नातिरकला क धर्माबी शास्त्र रेथ लिकाः। ন্যালগ্রীনা মহাগ্রীবালৈপুরা: শাক্রপারিশ: ॥

কৈষ্কিদ্যা হৈমকুটাশ্চ নিষ্ধাঃ কটকস্থলাঃ। मुमानी शांतिका नथा वियानाः कांकूलालकाः ॥ **उरे**शव भर्गभवताः भारत रेव भूर्त्तनिकरण। অশ্লেষর্ক্য তথা পৈত্র্যং ফাল্কন্তঃ প্রথমান্তথা॥ নক্ষত্রতিতমং পাদমাশ্রিতং পূর্বদক্ষিণম। লঙ্কা কালাজিনাকৈব শৈলিকা নিকটান্তথা। মহে जनवादि । पर्मृत ह वमस्रि व। কর্কোটকবনে যে চ ভৃত্তকচ্ছাঃ সকোম্বণাঃ॥ সর্বাদৈচৰ তথা ভীর। বেণা তীরনিবাসিনঃ। অবস্তমো দাসপুবাস্তথৈবাকণিনো জনাঃ॥ মহারাষ্ট্রাঃ সকর্ণাটা গোনর্দাশ্চিত্রকৃটকাঃ। cotet: cकानगितारे \* ठव cक्लेक्ष्मी अक्रोभवाः ॥ कारवती श्रमम्बद्धां नामिक।रिन्हव त्य जनाः। শৃঙ্খ শুক্ত্যাদিবৈদূর্য্যনৈল প্রাপ্তচরাশ্চ যে ॥ তথা বারিচবাঃ কোলাশ্চর্মপট্টনিবাসিনঃ। গ্ৰবাহা। প্ৰাঃ কৃষ্ণা দীপ্ৰাদ্নিবাসিনঃ॥ স্গ্যাদ্রৌ কুমুদাদ্রৌ চ তে বসস্তি তণা জনাঃ। ঔথবনাঃ স্পিশিকান্তথা যে কর্মনায়কাঃ॥ দক্ষিণা কৌক্ষা যে চ ঋষিকান্তাপ্সাশ্ৰমাঃ। থাম্ভা: সিংহলাইশ্চৰ তুপা কাঞ্চীনিবাসিনঃ॥ তিলঙ্গাক প্রবদরীক চ্ছবাদাশ্চ যে জনাঃ। তামপূর্ণী তথা কুক্ষিরিতি কুর্ম্মস্ত দক্ষিণঃ॥ ফল্পতশ্চোত্তরা হস্তা চিত্রা চর্ক্রত্তরং দিজ। কুর্ম্ম দক্ষিণে কুক্ষৌ বাহাপাদস্তথাপরম্॥ কামোজা: গহলবালের তথৈর বড়বামুখা:। ज्यावनाः मानिनाः मृजाः कर्नशास्यवक्ताः। কিবাতাঃ পারদাঃ পাও্যান্তথা পারশবাঃ কলাঃ॥ ধুর্ত্তকা হৈমগিরিকাঃ দিক্ষকালকবৈৰতাঃ। দৌরাষ্ট্রা দরদাকৈত্ব দ্রাবিভাশ্ত মহার্ণবাঃ। এতে জনপদাঃ পাদে স্থিতা বৈ দক্ষিণেহপরে। স্বাত্যো বিশাথা মৈত্রঞ্চ নক্ষত্রত্রয়মেব চ। মণিমেঘঃ ক্ষুরাদ্রিশ্চ থঞ্জনোহস্তগিরিস্তগা। অপরান্তিকা হৈহয়াশ্চ শান্তিকা বিপ্রশস্তকাঃ॥ কোন্ধণাঃ পঞ্চনদকা বমনা হ্যবরাস্তথা। ভারকুরা হঙ্গতকাঃ শর্করাঃ শাল্মবেশকাঃ॥ গুরুস্বরা: ফল্পনকা বেণুমত্যাঞ্চ যে জনাঃ। তথা ফল্পুকা ঘোরা গুরুহান্চ কলাত্তথা। একেকণা বাজিকেশা দীর্ঘগ্রীবাঃ স্কুচলিকাঃ। অশ্বকেশাস্তথা পুচ্ছে জনাঃ ক্র্মস্ত সংস্থিতাঃ॥ ঐক্রং মূলং তথাধাঢ়া নক্ষত্রত্ত্বমেব চ।

মা গুৰ্যাশ্চ গুথাবাশ্চ অশ্মকা ললনাস্তথা। কুন্মতা লড়হাশৈচৰ স্ত্ৰীবাহ্যা বালিকাস্তথা। নুসিংহা বেণুমত্যাঞ্চ বলাবস্থাস্তথাপরে॥ ধর্মবদ্ধান্তথালক। উরুকর্মস্থিত। জনাঃ। বামপাদে জনীঃ পার্ষে স্থিতাঃ কৃষ্স ভাগুরে॥ আয়াঢাশ্রবণে চৈব ধনিষ্ঠা যত্ত্র সংস্থিতা। देकनारमा विभवाः देन्हव कृजवीनान त्य जनाः। রদালয়াঃ স্কৈকেয়া ভোগপ্রস্থাঃ দ্যামুনাঃ । অন্তৰ্দীপান্ত্ৰিগঠাণ্ড অগ্নীজ্যাঃ সাৰ্দ্দনা জনাঃ। তথৈবাশ্বমুখাঃ প্রাপ্তাশ্চিবিড়াঃ কেশধারিণঃ॥ দাদেরকাঃ বাটধানাঃ শবধানাস্তবৈত চ। পুদলাধমকৈবাতাত্তথা তক্ষশিলাশ্ৰয়াঃ॥ অম্বালা মলবা মদ্রা বেণুকাঃ সবদস্তিকাঃ। शिक्रना मानकनश हूगाः (काश्नकाख्या ॥ মাণ্ডব্যা ভূতিযুবকাঃ শাতকা হেমতারকাঃ। যশোমত্যাঃ সগান্ধারাঃ স্বর্মাগ্ররাশ্য়ঃ॥ যৌগেলা দাসমেয়াত রাজন্তাঃ শ্রামকাত্তলা। ক্ষেম্বর্তাশ্চ কুর্মাত বামকুক্ষিমুপাখিতাঃ॥ বাকণঞ্চাত্র নক্ষত্রং তত্ত্র প্রেষ্টিপদাদয়ম। যেন কিন্নবরাজ্যঞ্জ পশুপালং সকীচকম।। কাশীরকং তথা রাষ্ট্রমভিসাবজনস্তথা। দর্দাস্পনাথৈচব কুল্টা বনরাষ্ট্রকাঃ॥ সৈরিই। ব্রহ্মপুরকাস্তবৈধ বনবাছকাঃ। কিবাতকৌশিকাননা জনাঃ পহলবলোচনাঃ॥ मार्खामा मकदारेग्डव कूत्रहोग्डानमात्रकाः। একপাদাঃ থশা ঘোষাঃ স্বৰ্গভৌমানবদ্যকাঃ॥ তথা স্বৰ্মা হিঙ্গাশ্চীরপ্রাবর্ণাশ্চ যে। ত্রিনেত্রাঃ পৌরবাকৈব গর্হুরান্চ দ্বিজোত্তম। পূর্কোত্তর কুর্মস্ত পাদমেতে সমাগ্রিতাঃ। বেৰতাাশ্চাশ্বিদৈৰতাং যাম্যঞ্জমিতিত্ৰয়ম্॥ তত্র পাদে সমাখ্যাতং পাকায় মুনিসত্তম। দেশেখেতেষ চৈতানি নক্ষত্রাণ্যপি বৈ শ্বিজ। এতংপীড়া অমী দেশাঃ পীড়াস্তে যে ক্রমোদিতা যান্তি চাভাদয়ং বিপ্র গ্রহৈ: সমাগবস্থিতৈ: ॥ যন্তর্ক্ত পতিরো বৈ গ্রহস্তম্ভাবিতো ভয়ম। তদ্দেশস্ত মুনিশ্রেষ্ঠ তহুৎকর্ষ গুভাগুভঃ॥ প্রত্যেকং দেশসামান্তং নক্ষত্রগ্রহসম্ভবম্। ভয়ং লোকস্ত ভবতি শোভনং বা বিজোত্তম 🛚 স্বকৈরশোভনৈজজেঃ সামান্তমিতি ভীতিদম্ গ্রহৈভবতি পীড়োখমরাগাসমশোভনম্॥

দ্রব্যে গোর্ছেইথ ভৃত্যের স্থহংস্থ তনয়ের বা। ভার্যাযাঞ্চ প্রহে হঃ ছে ভয়ং পুণাবতাং নৃণাম্॥ আত্মন্তথারপুণ্যানাং সর্কত্তিবাতিপাপিনাম। নৈকত্রাপি ছপাপানাং ভয়মন্তি কদাচন॥ निश्रमञ्जनमायां स्थाना स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स নক্তগ্রহসামান্তং নরো ভুঙ্কে শুভাশুভম্॥ যদেত**ৎ কৃৰ্ম্মংস্থানং নক্ষতেষু ময়োদিতম্**। এতং তু দেশসামাক্তমগুভং গুভমেব চ॥ তত্মাধিজ্ঞায় দেশক্ষং গ্রহপীড়াং তথাত্মনঃ। কুৰ্ব্বতি শান্তিং মেধাবী লোকবাদাংশ্চ সন্তম। আকাশাদেবতানাঞ্চ দৈত্যাদীনাঞ্চ দোহদাঃ। পুখ্যাং প্তস্তি তে লোকে লোকবাদা ইতি শ্রুতা: তাং তথৈব বুধঃ কুর্য্যাল্লোকবাদান ন হাপয়েং। তেষাং তৎকরণারূণাং যুক্তো ত্রষ্টাগমক্ষয়ঃ॥ ভভোদয়ং প্রহানিফ পাপানাং বিজস্তম। প্রজাহানিং প্রকুর্তি দ্রব্যাদীনাঞ্চ কুর্বতে॥ তথ্যজ্ঞান্তিপবঃ প্রাক্ষো লোকবাদরতস্তথা। লোকবাদাংশ্চ শান্তীশ্চ গ্রহপীডাম্ম কার্যেৎ॥ অদ্রোহাত্বপবাসাংশ্চ শস্তং চৈত্যাদিবন্দনম। ल्यः रहामः ज्या नानः सानः क्वामानिवर्क्तनम्॥ অদ্রোহঃ সর্বভৃতেষু মৈত্রীং কুর্য্যাচ্চ পণ্ডিত:। বৰ্জ্নেদসতীং বাচমতিবাদাংস্তথৈব চ॥ গ্রহপূজাঞ্চ কুর্ন্ধীত দর্মপীড়াস্থ মানবঃ। এবং শামাস্তাশেষাণি ঘোৱাণি দ্বিজস্ত্রম॥ প্রথতানাং মনুষ্যাণাং গ্রহর্কোখান্তশেষতঃ। এব কুর্মো ময়া থ্যাতো ভারতে ভগবান্ বিভু:।। নাবায়ণো হাচিন্ত্যাত্মা যদ সর্বাং প্রতিষ্ঠিতম। তত্র দেবাঃ স্থিতাঃ সর্কে প্রতিনক্ষত্রসংশ্রয়াঃ॥ তথা মধ্যে হতবহঃ পৃথী সোমশ্চ বৈ দ্বিজ। त्यतानग्रस्ता मत्या मृत्य द्वी भिथुनानित्की ॥ প্রাগ্দক্ষিণে তথা পাদে কর্কিনি:হে ব্যবস্থিতো সিংহকন্তাতুলাকৈর কুক্ষৌ রাশি নয়ং স্থিতম্॥ তুলাথ বৃশ্চিকশ্চোভো পাদে দিফিণপশ্চিমে। পৃষ্ঠে চ বুশ্চিকেনৈব সহ ধন্বী ব্যবস্থিত:॥ বায়ব্যে চাস্ত বৈ পালে ধমুগ্রাহাদিকং ত্রয়ম্। কুন্তমীনো তথৈবাস্ত উত্তরং কুক্ষিমাশ্রিতৌ॥ भीनस्मरको विक्रदश्रेष्ठ পাদে পূর্ক্ষোত্তরে স্থিতৌ॥ কৃম্মে দেশাস্তথাক্ষাণি দেশেষেতেষু বৈ দ্বিজ ॥ রাশয়শ্চ তথক্ষেয়্ গ্রহা রাশিম্বস্থিতাঃ। তত্মাদ্গ্রহ**র্কপীড়াস্থ** দেশপীড়াং বিনির্দিশেৎ॥

তত্র স্নান্ধা প্রকুর্বনীত দানহোমাদিকং বিধিম্।
স এব বৈষ্ণবং পাদো ক্রন্ধা মধ্যে গ্রহন্ত থঃ।
নারায়ণাখ্যোহচিন্ত্যান্মা কারণং জগতঃ প্রভুঃ॥
ইতি মার্কণ্ডেযে মহাপুরাণে কুন্মনিবেশো
নামান্তপঞ্চাশোহধাায়ঃ॥

# ঊনষষ্ঠিতমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

এবস্ত ভারতং বর্ষং যথাবং কথিতং মুনে। কৃতং ত্রেতা দ্বাপরক তথাতিষ্যং চত্র্যু গ্রম। অবৈত্রবৈতদ্যুগানাম্ভ চাতুর্বর্ণো। হত্র বৈ দ্বিজ। চন্ধারি ত্রীণি দে চৈব তথৈকঞ্চ শরচ্ছতম। জীবুস্তাত্র নরা ব্রহ্মন্ ক্লতত্ত্বেতাদিকে ক্রমাৎ। দেবক্টভা পূৰ্বভা শৈক্ষেত্ৰভা মহাত্মন:॥ পুর্দেশ নং স্থিতং বর্ষং ভদ্রাশ্বং তল্লিবোধ মে। শেতপর্ণন নীলন্চ শৈবালন্চাচলোত্তমঃ॥ কৌরঞ্জঃ পর্ণশালাগ্রঃ পক্ষৈতে তু কুলাচলা:। তেষাং প্রস্থৃতিরতাে যে বছব: ক্ষুদ্রপর্বতা:॥ তৈর্বিশিষ্টা জনপদা নানারপা: সহস্রশ:। ইত্যেবমাদয়োহত্তেহপি শতশোহথ সহস্রশ:। শীতা শঙ্মাবতী ভদ্রা চক্রাবর্ত্তাদিকান্তথা॥ नामाश्य वास्त्रा विखीर्नाः नीजरजारप्रीयवारिवाः অত্র বর্ষে নরাঃ শত্মগুদ্ধহেমসমপ্রভা:॥ দিব্যসঙ্গমিনঃ পুণা। দশবর্ষশতাগুষঃ। यत्ना उरमो न राज्य छः मर्स्स राज ममन्त्रीः॥ তিতিকাদিভিরষ্টাভিঃ প্রকৃত্যা তে গুণৈযুঁতাঃ। তত্রাপ্যখশিরা দেবশ্চতুর্বাহুর্জনার্দ্দনঃ॥ শিবোহনয়মেঢ়া জ্বি হতৈ শাক্ষিত্যা বিতঃ। তস্থাপ্যথৈবং বিষয়া বিজ্ঞেয়া জগতঃ প্রভো:॥ কেতুমালমতো বর্ষং নিবোধ মম পশ্চিমম। विभानः कथनः कृत्या क्यात्या इति १ वर्षाः॥ বিশোকো বৰ্দ্ধমানশ্চ সপ্তৈতে কুলপৰ্বতাঃ। অন্তে সহস্রশঃ শৈলা যেবু লোকগণঃ স্থিতঃ॥ মৌলয়তে মহাকায়াঃ শাকপোতকরম্ভকাঃ। অঙ্গপ্ৰনুথান্চাপি বসস্তি শতশো জনা:॥ যে পিবস্তি মহানদ্যো রংকুং শ্রামাং সকম্বলাম্। অনোবাং কামিনীং শ্লামাং তবৈধান্তা: সহস্রশঃ

অত্রাপ্যায়ু: সমং পৃটর্করত্রাপি ভগবান্ হরি:। বরাহরূপী পাদাগুহুৎপৃষ্ঠপার্শ্বতন্তথা 🛭 ত্রিনক্ষরযুতে দেশে নক্ষরাণি গুভানি চ। ইত্যেতৎ কেতুমালং তে কথিতং মুনিসত্তম ॥ অতঃ পরং কুরূন বক্ষ্যে নিবোধেহ মমোতরান। তত্র বৃক্ষা মধুফলা নিত্যপুষ্পফলোপগা:॥ বস্থাণি চ প্রস্থান্তে ফলেঘাভরণানি চ। সর্বকাম প্রদাত্তে হি সর্বকামফলপ্রদা:॥ ভূমির্মণিময়ী বায়ুঃ স্থগন্ধঃ সর্বাদাস্থঃ। জায়ত্তে মানবান্তত্ত দেবলোকপরিচ্যতা:॥ মিথুনানি প্রস্থত্তে সমকাল্স্ভিলনি বৈ। অন্যোগ্যমমুরক্তানি চক্রবাকোপমানি চ ॥ চতুর্দশসহস্রাণি তেষাং সান্ধানি বৈ স্থিতিঃ। চক্রকান্তশ্চ শৈলেন্দ্র: স্থ্যকান্তন্তথাপরঃ॥ তিস্মিন কুলাচলৌ বর্ষে তন্মধ্যে চ মহানদী। ভদ্রদোমা প্রযাত্যর্ক্যাং পুণ্যামলজলৌ বিনী ॥ সহস্রশন্তথৈবাক্তা নদ্যো বর্ষেহপি চোত্তরে। তথান্তাঃ ক্ষীরবাহিণ্যো মৃতবাহিন্ত এব চ॥ দগ্গে ইদান্তদা তত্র তথাতো চামুপর্কতাঃ। অমৃতাপাদকলানি ফলানি বিবিধানি চ॥ বনেধু তেষু বর্ষেধু শতশোহথ সহস্রশঃ। তত্রাপি ভগবান বিষ্ণু: প্রাক্শিরা মৎস্তরপবান্। বিভক্তো নবধা বিপ্তা নক্ষতাণাং তায়ং তায়ম্। দিশন্তথাপি নবধা বিভক্তা মুনিসত্তম॥ চক্রবীপঃ সমুদ্রে চ ভক্রবীপস্তথাপরঃ। তত্রাপি পুণ্যো বিখ্যাতঃ সমুদ্রান্তর্মহামুনে॥ ইত্যেতৎ কথিতং ব্রহ্মন্ কুরুবর্ষং ময়োত্রম্। **मृ** कि म्लू क्या मीनि वर्षा नि शप्त ।

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে একোনষষ্টি-তমোহধ্যায়ঃ।

বস্তিতিমোহধ্যায়ঃ।
—:\*:—
মার্কণ্ডেয় উবাচ।

যৎ তু কিল্পুক্য: বর্ষ: তৎ প্রবক্ষান্যহং ধিজ।
যতার্দশ্রাহত্রং পুক্ষাণাং বপুশ্বতাম্॥
জনাময়া ছশোকাশ্চ নরা যত্ত্বা প্রিরঃ।
প্রকং যওশ্ তত্তাক্তঃ স্বস্থান্ নন্দনোপমঃ॥
তথ্য তে বৈ ফলরসং পিবস্তঃ পুক্ষাঃ সদা।

श्विद्रयोजनिक्नाः जिय्राकारभनगिकाः॥ অতঃ পরং কিম্পুরুষাদ্ধরিবর্ষং প্রচক্ষ্যতে। মহারজতসন্ধাশা জায়তে তত্ত্ব মানবাং॥ দেবলোকচ্যুতাঃ দর্কে দেবরূপা<del>ণ্চ সর্কাণঃ।</del> হরিবর্ষে নরাঃ সর্বে পিবন্তীকুরসং ওভম্॥ ন জরা বাধতে তত্ত্ব ন জীর্য্যক্ষে চ কর্ছিচিৎ। তাবন্তমেৰ তে কালং জীবস্তাথ নিরামগাঃ ॥ स्मक्तर्यः मग्ना (श्वीकः मधामः यनिनावृष्ठम् । ন তত্ৰ স্ব্যান্তপতি ন তে জীৰ্য্যন্তি মানবা:॥ লভত্তে নামুলাভঞ্চ রশায়<del>ণচন্দ্র</del>য্যুরো:। নক্ষতাণাং গ্রহাণাঞ্চ মেরোস্তক পরা ছ্যুক্তিঃ ॥ পদ্মপ্রভা পদ্মগন্ধা জন্মুফলরসাশিনঃ। পদ্মপত্রায়তাক্ষাস্ত জায়**স্তে তত্ত্র মানবাঃ** ॥ বর্ষাণান্ত সহস্রাণি তত্রাপ্যায়্জ্রয়োদশ। শরাবাকারসংস্তারো মেরুমধ্যে ইলাবতে 🖟 মেরুম্ভত্ত মহাশৈলগুদাধ্যাত্মিলাবৃত্তম্। রম্যকং বর্ষমক্ষাত কথয়িক্যে নিবোধ তম্॥ বৃক্ততাপি চোত্রকা স্তগ্রোধো হরিতছদঃ। তন্তাপি তে ফলরসং পিবস্তো বর্ত্তয়ন্তি বৈ 🛭 বর্ষাযুতাযুযস্তত্র নরাস্তৎকণভোগিনঃ। রতিপ্রধানবিমলা জরাদৌর্গন্ধ্যবজ্জিতাঃ। তথ্যাদণোত্তরং বর্ষং নামা খ্যাতং হির্ণায়ম্ 🕫 হিরণতী নদী তত্ত প্রভূতকমলোজ্জলা। মহাবলাঃ সতেজ্ঞা জায়ত্তে তত্ৰ মানবাঃ ৷ যক্ষরপা মহাসত্তা ধনিনঃ প্রিয়দর্শনাঃ 🎗

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ভ্বনকোষবর্ণনে নাম ষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

একষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

-:::-

ক্রোষ্টু কিরুবাচ।

কথিতং ভবতা সমাক্ বৎ পৃষ্টোংসি মহামুনে।
ভূসমুদ্রাদিসংস্থানং প্রমাণানি তথা গ্রহাঃ॥
তেষাকৈব প্রমাণঞ্চ নক্ষরাণাঞ্চ সংস্থিতিঃ।
ভূরাদমন্ত্রমা লোকাঃ পাতালাভ্যথিলাভাপি॥
স্বায়ন্ত্রমং তথা থ্যাতং মুনে মন্তরং মম।
তদন্তরাণাহং শ্রোভূমিচ্ছে মন্তরাণি বৈ।
মন্তরাধিপান্ দেবান্বীংস্তক্রনান্ নৃপান্॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ। শ্বস্তুরং ময়াপ্যাতং তব স্বায়স্তুবঞ্চ যং। चारताहियाथामछ ९ पृ गृं ७ जानब छतम् ॥ কশিদ্বাতিপ্রবর: প্রেহভূদরুণাম্পদে। বরুণারাস্তটে বিপ্রো রূপেণাত্যখিনাবপি ॥ মৃত্সভাব: সন্ধৃতা বেদবৈদাঙ্গপারগঃ। স্দাতিথিপ্রিয়ো রাজাবাগতানাং স্মাশ্রয়ঃ॥ তত্ত বৃদ্ধিরিয়ং ছাদীদহং পত্তে বস্করাম্। অতিরম্যবনোদ্যানাং নানানগরশোভিতাম্ ॥ অপাগতোহতিথি: কশ্চিৎ কদাচিৎ তম্ম বেশ্মনি नात्नीयधिक्षाचारका मञ्जविनाविनावनः॥ অভার্থিত**স্ত তেনাদৌ শ্রদ্ধাপুতেন** চেত্সা। ত্তাচধ্যৌ স দেশাংশ্চ রম্যাণি নগরাণি চ ॥ বনানি নদ্যঃ শৈলাংশ্চ পুণাান্তায়তনানি চ। স ততো বিশ্বয়াবিষ্টঃ প্রাহ তং দ্বিজ্বসন্তম্ম n অনেকদেশদশিত্বেনাতিশ্রমসম্বিতঃ। ছং নাতির্দ্ধো বয়সা নাতিবৃত্তক যৌবনাং। ক্থমল্লেন কালেন পৃথিবীমটসি দ্বিজ।

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।
মন্ত্ৰৌষ্ধিপ্ৰভাবেণ বিপ্ৰাপ্ৰতিহতা গতিঃ।
যোজনানাং সহস্ৰং হি দিনাৰ্দ্ধেন ব্ৰহ্মাম্যুহম্ ॥
মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

ততঃ স বিপ্রস্তং ভূমঃ প্রত্যুবাচেদমাদরাং। শ্রদ্ধানো বচস্তস্ত ব্রাহ্মণস্ত বিপশ্চিত:॥ মম প্রসাদং ভগবন্ কুরু মন্ত্রপ্রভাবজম্। দ্রষ্ট্রমেতাং মম মহীমতীবেচ্ছা প্রবর্ত্ততে॥ প্রাদাৎ স রাহ্মণশ্চাকৈ পাদলেপ্রদারধীঃ। অভিমন্বয়ামাদ দিশং তেনাথ্যাতাঞ্ যত্নতঃ॥ তেনামুলিপ্রপাদোহও স দ্বিজ্ঞা দ্বিজসত্তম। হিমবস্তমগান্দু ষ্টুং নানাপ্রস্রবণায়িতম্ ॥ गरुखः (याक्रमानाः हि मिनार्क्षम वक्रामि य९। আগ্রান্তামীতি সঞ্চিন্ত্য তদর্কেনাপরেণ হি॥ मुख्यात्था शिमवर्शृष्ठेः नाजिङ्यास्वरुष्टिकः। বিচচার **ততন্ত**ত্র তুহিনাচনভূতলে ॥ পাদাক্রান্তেন তভাথ তুহিনেন বিলীয়তা। প্রকালিতঃ পাদলেপঃ পরমৌষধিসম্ভবঃ ॥ ততো জড়গতি: সোহধ ইতকেতক পর্যাটন্। मन्नीि विभावास्त्रानि मान्नि विभावृक्षः ॥ সিদ্ধগন্ধর্মজুষ্টানি কিন্নরাভিরতানি চ। ক্রীড়াবিহাররম্যাণি দেবাদীনামিতস্ততঃ॥

**षिव्याभ्यत्वां गण्ये उत्राकी शीख वटना कश्रम् ।** নাতৃপ্যত বিজ্ঞেষ্ঠ: প্রোঙ্কুতপ্লকো মুনে॥ ক্চিৎ প্রস্রবণাদ্রপ্তজ্বপাত্রমনোরমম্। প্রবৃত্যচ্ছিথিকেকাভিরম্ভত ক নিনাদিতম্ ॥ माञ्राहरकायष्टिकारेमाः कित्रकालियरनाहरेतः। পুংসোকি শকলালাপৈ: শ্রুতিহারিভিরশ্বিতম। প্রফ্রতক্রগদ্ধেন বাসিতানিলবীজ্ঞিতম্। मूना युक्तः न नमृत्न हिमवन्तर महानित्रिम् ॥ দৃষ্ট্য চৈতং বিজয়তো হিমবন্তং মহাচলম্। খো জক্যামীতি সঞ্চিন্ত্য মতিং চক্রে গৃহং প্রতি॥ বিভ্রম্ভপাদলেপোহথ চিরেণ জড়িতক্রম:। চিম্বয়ামান কিমিদং ময়াজ্ঞানদিমুষ্টিতম্॥ যদি প্রলেপো নষ্টো মে বিলীনো হিমবারিণা। লৈলোহতিত্র্মশ্চায়ং দুরঞাহমিহাগভঃ ॥ প্রয়াভামি ক্রিয়াহানিম্মিও শ্রমণাদিক্ম। কথমত করিব্যামি সঙ্কটং মহদাগতম্॥ ইদং রম্যমিদং রম্যমিত্যন্মিন্ বরপর্বতে। সক্তদৃষ্টিরহং তৃপ্তিং ন যা**ন্ডে**হস্ব**শতৈ**রপি ॥ কিনরাণাং কলালাপা: সমস্তাচ্ছে তিহারিণ:। প্রফুরতরুগদাংশ্চ ছাণমত্যস্তমুচ্ছতি ॥ স্থম্পর্শস্তথা বায়ু: ফলানি রসবস্তি চ। হরন্তি প্রসভং চেতো মনোজ্ঞানি সন্নাংসি চ 🛭 এবং গতে তু পশ্যেরং যদি কঞ্চিৎ তপোনিধিম। স মমোপদিশৈশার্পং গমনার গৃহং প্রতি n মার্কণ্ডেয় উবাচ।

স এবং চিস্তমন্ বিশ্রো বজাম চ হিমাচলে।

অইপানে বিধিবলো বৈদ্ধবং পরমং গতঃ ॥
তং দদর্শ ভ্রমন্তক মুনিশ্রেষ্ঠং বর্রাথিনী।
বরাপারা মহাভাগা মৌলোয়া রূপশালিনী॥
তিমিন্ দৃষ্টে ততঃ সাভৃত্বিকর্বের বর্রাথিনী।
মদনারুইহাদয়া সাম্রাগা হি তৎক্ষণাং॥
চিন্তরামাস কো বেষ রম্পীয়তমারুতিঃ।
সফলং মে ভবেজ্বর যদি মাং নাব্যস্তত॥
আহোহস্ত রপমাধুর্যমহোহস্ত ললিতা গতিঃ।
অহো গন্তীরতা দৃষ্টেঃ কুতোহস্ত সদৃশো ভূবি॥
দৃষ্টা দেবাত্তবা দৈত্যাং সিদ্ধান্ধর্বস্বাং।
কথমেকোহপি নাত্যক্ত ভূল্যরূপো মহাম্মনাঃ॥
যথাহমম্মিন্ মধ্যেষ সাম্রাগন্তথা যদি।
ভবেদত্ত ম্যা জ্যেমং ত্তংক্তঃ পুণাসঞ্চয়ঃ॥
যবদ্য ময়ি স্থারিশ্বাং দৃষ্টিমদা নিপাতরেং।

ক্বতপুণ্যা ন ভর্টোংস্থা তৈলোক্যে বনিতা ততঃ মার্কণ্ডেয় উবাচ। এবং সঞ্চিত্তয়ন্তী সা দিব্যবোধিৎ শ্বরাতুরা। আত্মানং দর্শরামাস কমনীয়তরাকৃতিম্।। তান্ত দুষ্টা বিজন্মতশ্চাক্ষরপাং বর্মধিনীম্। সোপচারং সমাগম্য বাক্যমেতত্বচাচ হ।। কা দ্বং কমলগর্ভান্তে কন্ত কিং বাত্মতিগ্রসি। ব্রাহ্মণোইছমিছায়াতো নগরাদরুণাস্পদাৎ॥ পাদলেপোহত্র মে ধ্বস্তো বিলীনো হিমবারিণা।

বর্মথিম্যুবাচ। त्योत्मग्राहः मंदाकाशा नामा थााजा वक्रियती। विष्ठतामि मरेलवाक त्रमगीरत महाष्ट्रण ॥ সাহং ফদর্শনাদ্বিপ্র কামবক্তব্যতাং গতা। প্রশাধি যন্ময়া কার্য্যং স্বদধীনান্মি সাম্প্রতম্॥ ব্রাহ্মণ উবাচ।

যক্তাত্মভাবাদতাহমাগতো মদিরেক্ষণে॥

যেনোপায়েন গচ্ছেয়ং নিজগেহং শুচিমিতে। তন্মাচক কল্যাণি হানির্নোহখিলকর্মণাম্॥ নিত্যনৈমিত্তিকানাম্ব মহাহানিবিজন্মন:। ভবত্যতন্ত্বং হে ভদ্রে মামুদ্ধর হিমালয়াৎ ॥ প্রশক্ততে ন প্রথাসো ত্রাহ্মণানাং কদাচন। অপরাদ্ধং ন মে ভীরু দেশদর্শনকৌতুকম্॥ সতো গৃহে বিজ্ঞাগ্রান্ত নিষ্পত্তিঃ সর্বাকর্মণাম। নিতানৈমিভিকানাঞ্ছানিরেবং প্রবাসিনঃ॥ সা ছং কিং বছনোক্তেন তথা কুরু যশবিনি। যথ। নাঝং গতে কুর্য্যে পঞামি নিজমালয়ম্॥

#### বর্মথিম্যাবাচ।

বৈৰং ক্ৰহি মহাভাগ মাভূৎ স দিবসোমম। মাং পরিতাল্য বত তং নিজগেহমুপৈষাদি॥ আহোরমাতর: স্বর্গোন যভো দ্বিজনন্দন। অতো বরং পরিত্যকা তিষ্ঠামোঠ্ত স্থরালয়ম্॥ স ত্বং সহ ময়া কাস্ত কাস্তেহত তুহিনাচলে। রমমাণো ন মর্ক্তানাং বান্ধবানাং স্মরিষ্যদি॥ व्यक्तं वहां गानकातान् अकार खाळातूरन भनम्। দাসাম্মত্ত তথাহং তে আরেণ বশপা হতা।। वीनाटवनुष्यनः शिष्ठः क्रिक्रवागाः मत्नावसम्। काजाह्लानक स्ता वायुक्तका समूचकः एकि॥ মনোহভিলবিভা শ্যা স্থাক্ষম্প্লেপন্ম। ইহাদতো মহাভাগ গৃহে কিং তে নিৰেহধিকস্॥ ইহাসতো নৈৰ ক্ষরা কদাচিৎ তে ভৰিষাতি।

जिल्लानाभियः ভृभिरयो बत्नालहम्रव्यना ॥ हेकुछन्। मासूद्रांगा मा महमा क्यालकना। আগিলিঙ্গ প্রদীদেভি বদন্তী কলমুন্মনাঃ॥ ব্ৰাহ্মণ উবাচ। मा माः स्थाकीय कानाज इट्डे यः नमुन्द्धव । ময়ানাথা যাচিতা ত্যন্য হৈথবাপুটেপ্যি মান্॥ সায়ং প্রাতত্তিং হব্যং লোকান্ যচ্ছতি শাখতান বৈলোক্যমেতদখিলং মৃচ্ছে হব্যে প্ৰতিষ্ঠিতমু। লঘুপায়ং সমাচকু যেন যামি স্মালয়ম্॥ বক্ষথিস্থ্যব।চ। किং তে नाइः लिया विश्व त्रमगीयन किः गितिः। গন্ধবিদ্ কিল্লাদীংশ্চ তাজাভীটো হি কন্তব ॥ নিজমালয়মপাকাভবান্যাসাভাসংশয়ম্।

সলকালং ময়া সাদিং ভূজক ভোগান্ স্বত্র্লভ।ন্।। ব্রাহ্মণ উবাচ। অভীষ্ঠা গার্হপত্যাদ্যাঃ সততং মে ত্রেষ্থেরঃ।

রম্যাং মমাগ্রিশরণং দেবী বিস্তর্ণী প্রিয়া॥ বর্রথিম্বাবাচ।

অষ্টাবাত্মগুণা যে হি তেষামাদৌ দয়া দিজ। তাং करवाधि कथा न यः मग्नि मन्नर्भागानक॥ ত্ববিমুক্তান জীবামি তথা প্রীতিমতী ত্বয়ি। নৈতৰদাম্যহং মিথ্যা প্ৰদীদ ফুলনন্দন॥

ব্ৰাহ্মণ উবাচ। यनि खीि जिम्ही महाः त्नां नहा नाम वरौषिमाम्। তত্পায়ং]সমাচকু যেন যামি স্মালয়ম্॥ বরূথিম্যুবাচ।

নিজমালয়মপ্যস্থান্তান্তাসংশয়ম্। সলকালং ময়া সাহিং ভূজক ভোগান্ সূত্রভান্। ব্রাহ্মণ উবাচ।

ন ভোগার্থায় বিপ্রাণাং শস্যতে হি বরূথিনি। ইছ ক্লেশায় বিপ্ৰাণাং চেষ্টা প্ৰেত্যাফলপ্ৰদা। বর্মথিম্যুবাচ।

সন্ত্রাণং মিরমাণারা মম কুড়া পরত তে। পুণ্যবৈষ্ট ফলং ভাবি ভোগান্চান্যত্ত জন্মনি ॥ এবঞ্ধরমপ্যত্র তবেশিচয়করিণম্। প্রত্যাখ্যানাদহং মৃত্যুং ত্বঞ্চ পাপমবাব্দ্যুসি 🛭

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।

পরস্তিষ । नाज्जित्यनिकृष्ठार्ख त्रत्या मम । তেন খাং নাভিবাহামি কামং বিলপ ওবা বা। मार्क्टछत्र हेवाह।

ইত্যকা স মহাভাগং স্ট্রাণং প্রথত: ৩ চিঃ।
প্রাহেদং প্রাণিপত্যায়িং গাছিণত্যমুপাংভনা ॥
ভগবন্ গাছিপত্যায়ে যোনিছং সর্ককর্মণাম্।
তত্ত আহবনীয়োহয়িদিকিণায়িত নান্তঃ ॥
যুয়লাপ্যায়নাদেবা বৃষ্টিশ্স্যাদিহেতবঃ।
ভবিত্ত শ্ল্যাদিবিলং জগভবিত নান্তঃ ॥
এবং ঘডো ভবত্যেতদ্যেন সত্যেন বৈ জলং।
তথাহ মদ্য হং গেহং পশ্ভেমং সতি ভাষরে ॥
যথা বৈ বৈ দিকং কর্ম স্বকালে নোভ্ষিতং ময়া।
তেন সত্যেন পশ্ভেমং গৃহছোহদ্য দিবাকরম্॥
যথা চ ন পরভ্রে পরদারে চ মে মতিঃ।
কলাচিৎ সাভিলাবাভূৎ তথিতৎ সিদ্ধিমত্ মে॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে স্বারোচিষে
মন্বস্তরে ব্রহ্মিণবাক্যং নামৈকবৃষ্টিতনোহধ্যায়:।

# দ্বিষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

--:::--

#### মার্কণ্ডেয় উবাচ।

এবস্ত বদত শুদা ধিজপুরদ্য পাবক:। গার্হপত্যঃ শরীরে তু সলিধানম্থাকরে। ॥ তেন চাধিষ্ঠিত: সোহ্থ প্রভামগুলমধ্যগঃ। ব্যদীপয়ত তং দেশং দ্বিতীয় ইব হ্বাবাট্॥ ত্যান্ত স্তরাং তত্র তাদৃগ্রূপে বিজন্মনি। ষ্মুরাগোহভববিপ্রং পশুস্ত্যা দেবযোষিত:॥ ততঃ সোহধিষ্ঠিতক্তেন হব্যবাহেন তৎক্ষণাং। यथा পূर्तरः उथा शक्षः व्यव्यक्ता विकासन्तरः॥ জগান চ খরাযুক্ততমা দেব্যা নিরীক্ষিত:। আ দৃষ্টিপাতাৎ তম্বন্ধা নিখাদোৎকম্পিক্ষরম্॥ ততঃ ক্ৰেটনৰ ভদা নিজপেহমবাপ্য সঃ। ষ্পাক্ষোক্তং দ্বিজ্ঞেষ্ঠ করার সকলা: ক্রিয়া: ॥ অর্থ সা চ.রুসর্বাঙ্গী তত্তাসক্তাত্মমানসা। নিখাসপরমা নিনো দিনশেষং তথা নিশাম্॥ নিখনতানবদ্যান্ধী হাহেতি রুদতী মুহঃ। ৰন্ভাগ্যেতি চাত্মানং নিনিন্দ মদিরেক্ষণা।। न विरुद्धि न চাशांदि त्रभगोदि न वा वदन। । কলবেষুরমোষুপা ববর ভদা রভিম্॥

চকার রমমাণে চ চক্রবাকবৃপে স্থাম।
স্কা তেন বরারোহা নিনিক নিজ্যোবনস্ ॥
কাগতাহ মিমং শৈলং ছ্টদেববলাৎকুতা।
ক চ প্রাপ্তঃ দ মে দ্ষ্টের্গেচরং তাদুশো নরঃ ॥
যদ্যদ্য স মহাভাগো ন মে সক্ষম্পৈয়তি।
তৎকামাগ্রিরবখাং মাং ক্ষপরিষাতি হুংসহঃ ॥
রমণীরমভূদ্যৎ তৎ প্রেমাকিলনিনাদিতম্।
তেন হীনং তদেবৈতদহতীখালা মাম্লস্॥

মাৰ্কণ্ডের উবাচ।

ই খং সামদনাৰিষ্টাজগান মুনিসভ্যম। বর্ধে চ তদা রাগস্তস্যাস্তমিন্ প্রতিকাণম্য किनीमा जू गंक्सर्यः माख्यारागा निवाक्षणः। তরা পূর্ম্মভূৎ সোহধ তদবভাং দদশ ভাম্ ॥ স চিন্তরামাস তদা কিং বেষা গলগামিনী। নিখাদপ্ৰন্মানা গিরাবত বর্রধিনী। মুনিশাপক্ষতা কিং হু কেনচিৎ কিং বিমানিতা। বাপাবারিপরিক্লিমিয়ং ধতে হতো মুধম্॥ ভতঃ স দধে৷) স্থচিরং তমর্থং কৌতুকাং কলিঃ জ্ঞাতবাংশচ প্রভাবেণ সমাধেঃ সুষ্থাতথম্॥ পুনঃ স চিন্তয়ামাস তৰিজার মুনে: কলি:। মমোপণাদিতং সাধু ভাগৈারেভৎ পুরাকৃতৈ: ॥ মবৈষ্যা সাহ্যাপেন ৰছশঃ আংৰিতা সভী। নিরাকৃতবভী দেরমদ্য প্রাপ্যা ভবিষ্যতি ॥ মাফুষে সামুরাগেরং তত্ত্র ভজ্রপধারিণি। तः नाटक मयामिकाः किः कालन करतामि छए॥

#### মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

আত্ম প্রভাবেণ ততন্তন্ত রূপং বিজন্মন:।
ক্রতা চচার ঘরাতে নিষ্ধা সা বর্মধনী।
সা তং দৃই। বরারোহা কিঞ্ছিৎফুললোচনা।
সমেতা প্রাহ তবলী প্রসীদেতি পুন: পুন:।
তরা তাকা ন সন্দেহ: পরিডাক্যামি জীবিতম্।
তরাধর্ম: কইতর: ক্রিয়ালোপো ভবিষ্টি ॥
ময়া সমেতা রমাছিমন্ মহাক্লরক্লরে।
মংপরিঝাণক: ধর্মবেশ্র: প্রতিপংক্রেন।
আযুব: সাবশেবং মে ন্নম্ভি মহামতে।
নির্ভত্তেন ন্নং দং হ্বরাহলাক্রারক:॥

#### ক্লিক্বাচ।

কিং করোমি ক্রিয়ার্যনির্ভবত্যতা সভো মম। ত্বস্পোর্থিধং বাক্যাং ত্রবীবি ভছুমধ্যমে ৪ ভদহং সঙ্কটং প্রাণ্ডো যদ্ত্রবীমি করোধি তৎ। যদি ভাৎ সক্ষমো মেহদ্য ভবত্যা সহ নারপা॥ বর্জবিছ্যবাচ।

প্রসীদ যদ্ত্রবীবি ত্বং তৎ করেমি ন তে মূবা।
ব্রবীম্যেতদনাশক্ষ্য যৎ তে কার্য্যং ময়াধুনা ॥
কলিক্ষবাচ।

নাল্য সভোগসময়ে জটব্যোহিং ছবা বনে। নিমীলিতাক্যাঃ সংসর্গত্তব স্থক্ত ময়া সহ ॥ বন্ধবিক্যবাচ।

এবং ভবতু ভদ্রং তে যথেচ্ছসি তথীন্ত তৎ। ময়া সর্বপ্রকারং হি বশে স্থেয়ং তবাধুনা॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে আরোচিবে মন্তেরে বরুথিনীকথা নাম বিষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

## ত্রিষষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

---:•:---

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

ভত: সহ তয়। সোহধ ররাম গিরিসামুর্। ফুলকাননহাদ্যেরু মনোজেরু সরঃস্কু চ॥ कमारत्र ह बरमान् निम्नाश्रीनात्र ह। भरनारछ्यम् उथार अम् रमर्भिय म्मिरणा विक ॥ বছিনাধিষ্ঠিভস্থাদীদ্ধকাপং তম্ম তেজ্প। অচিত্তমন্তোগকালে নিমীলিতবিলোচনা ॥ ভতঃ কালেন সা গৰ্ভমবাপমুনিদত্তম। গন্ধৰীৰ্বাতো রূপং চিস্তনাচ্চ বিজ্ঞান: ॥ তাং গর্ভধারিণীং দোহথ দাত্তরিতা বরবিনীম। বিপ্রক্রপধরো বাতত্তবা প্রীত্যা বিসন্ধিত:॥ জজে স বালো হ্যভিমান্ অলরিব বিভাবস্থ:। चरताि किर्यक्षा स्टर्या कामत्रम् मकना निर्मः॥ স্বরোচির্ভির্যভো ভাতি ভাস্থানিব স বাগক:। ভত: আমেচিরিত্যেবং নামা খ্যাতো বভূব সং ববুৰে চ মহাভাগো বন্ধসাস্দিনং তথা। खानीरेचम्ह छथा बानः कनाजिः ममनाञ्चनः॥ न कथार धरूरक्षमः द्वारिक्तित वथाक्रमम्। विष्णादेन्त्रव सहाजाशका दशेवनदशाहवः॥ यनवाद्यो क्षांहिर न विवास्तानरहिष्टः। वन्देर्नकाः छत्। कछाः शिविद्धाद्य खत्राष्ट्रवाम् ॥

জান্বৰেভি নিৰীকৈলনং সা ভদা বাক্যমন্ত্ৰীৎ।
মা ভৈষীরিভি স প্রাহ ভর্বিপ্লুতলোচনাম্॥
কিমেতদিভি তেনোকে বীরবাকো মহাস্থা।
ভতঃ সা কথ্যমাস খাসাকেপপুতাকরম্॥
কভোবাচ।

অহমিন্দীবরাক্ষন্ত স্থতা বিদ্যাধরক্ত বৈ। নামা মনোরমা জাতা স্থতায়াং মরুধন্নঃ ॥ मन्ताद्रविकाधद्रका मधी मम विভावती। কলাবতী চাপ্যপরা স্থতা পারস্য বৈ মুনে:।। তাভাাং সহ ময়া যাতং কৈলসেত্টমুভ্ৰমম্। তত্র দৃষ্টো মুনিঃ কশ্চিৎ তপদাতিকুশাকৃতিঃ। কুৎকামকঠো নিস্তেজা দ্রপাত।কিতারকঃ ॥ ময়াবহসিত: কুদ্ধ: স তদা মাং শশাপ হ। ক্ষামক্ষামস্বরঃ কিঞ্চিৎ কম্পিতাধরপল্লবঃ॥ অয়াবহদিতে যশাদনাৰ্য্যে ছষ্টতাপদি ! তস্মাৎ স্বামচিরেইণব রাক্ষসোহভিভবিষ্যতি॥ मरख **मारल मदमबीखाः म कू निर्ज्दर्गि**रा मृि ধিক্ তে ব্ৰাহ্মণামক্ষাস্তা৷ কুতং তে নিখিলং ত অমর্ধণৈর্ধবিতোহসি তপস। নাতিকর্শিতঃ। কাস্ত্যাস্পদং বৈ আহ্মণ্যং জেধিসংঘমনং তপঃ এতচহুতা দদৌ শাপং তয়োরপ্যমিতছাতিঃ। একদ্যাঃ কুষ্ঠমকেষু ভাব্যস্তাব্যথা ক্ষঃ ॥ তয়োস্ত**ৈধৰ ভজ্জাতং ৰথোক্তং তেন তৎক্ষ**ণাং মমাণ্যেবং মহদ্ৰক: সমুবৈপতি পদানুগম্॥ ন শৃণোষি মহানাদং তদ্যাদ্রেহিপ গর্জতঃ। তৃতীয়মদ্য দিবসং যন্মে পৃষ্ঠং ন মুঞ্তি ॥ অস্ত্রগ্রামন্য সর্কান্য হাদয়গ্রাহমদ্য তে। তং প্রায়ছামি মাং রক্ষ রক্ষণোহস্মান্মহামতে ॥ ल्यानार त्रायञ्च्यमग्रात्नी त्रयः कलः निनाकध्रक् भाग्रज्जू (वा विश्वर्धां मिक्कवर्गाम पखरान् ॥ তেনাপি দত্তং মন্মাতৃঃ পিত্রে চিত্রায়ুধায় বৈ প্রাদাদৌদা হিকং গোহপি মৎপিত্রে শ্বশুরঃ প ময়াপি শিক্ষিতং বীর সকাশাদাল্যা পি্তু:। क्तरः नकनाञ्चानागरमयविश्रामनम्॥ তদিদং গৃহতাং শীঘ্রমশেষারপরারণম্। ততো অহি গ্রাত্মানমেনং রাক্ষসমাগতম্ ॥ মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

তথেতাত্তে ততন্তেন বাৰ্য্যস্থ ভদ্য তৎ।

অস্ত্রাণাং হৃদয়ং প্রাদাৎ স্বহ্<sup>স</sup>্তানিবর্ত্তন্ম্ ।

এত সিন্নস্তরে রক্ষত্তৎ তদা ভীষণাক্বতিঃ।

নর্দ্দনালো মহানাদমাজ্ঞগাম দুগাছিত: ॥
নরাভিতৃতা কিং আণমুলৈতি জতমেছি মে।
ভকাম কিং চিরেণেতি জ্বাণং তং দদর্শ সং ॥
স্বরোচিনিত স্বানাস দৃষ্টা তং সমুপাগতম্।
গৃহাদেব বচ: সত্যং ভসাদ্বিতি মহামুনে: ॥
জ্ঞাহ সমুলেতৈয়নাং দ্বরা সোহিলি রাক্ষ্য: ।
আহি আহীতি ককলং বিলপন্তীং স্থমধ্যমান্ ॥
ততঃ স্বরোচি: সংক্রক্ত গুলম্বতি রব্ম্।
দৃষ্টা নিবেশ্র তত্তকো দদর্শানিমিবেক্ষণ: ॥
তদাভিত্তঃ স তদা ভামুৎস্কা নিশাচব: ।
পানীদ শাম্ভামন্তং শ্রেম্বাকেতাভাষত ॥
মোকতোহহং দ্বা শাপাদ্ভিলোরাম্বাতাত।
প্রদ্তাদ্ভিতীব্রেণ ব্রক্ষমিত্রেণ ধীমতা ॥
উপকারী ন মে ঘণ্ডো মহাহাগাধিকোহপর: ।
বেনাহং স্থমহাকষ্টামহাশাপারিমোক্তঃ ॥

স্বরোচিক্রবাচ। একমিত্রেণ মুনিনা কিং নিমিন্তং মহাত্মনা। শপ্তবং কীদৃশদৈত্ব শাপো দ্ভোহভবৎ পুরা॥

রাক্ষণ উবাচ। ব্ৰন্দিকোই ইধা জিইন্নায়ুর্কেদ্মধী তবান্। व्यानमाधिकात्रक व्यन्श्वावर्त्ता विकः॥ অহঞ্জৌবরাকেতি খ্যাতোহ্সা জনকে:১ভবম। বিদ্যাধরপতেঃ পুজে। নলনাভস্য থজিান:॥ ময়া চ যাচিতঃ পূর্বাং ব্রহ্মমিত্রোহভবনুনি:। আয়ুর্কেদমশেষং মে ভগবন্ দাতুমইসি ॥ যদা ভূ বছশো বীর প্রশ্রয়াবনত্দ্য মে। न श्रामाम्यां हिटका विमामायूटर्समा श्रामा ॥ निर्वारका। एएउछमा भग्नाछक्तीनरशन हि। সায়ুর্বেদাস্মিকা বিদ্যা গৃহীতাভূৎ তদানঘ॥ গৃহীতায়াস্ক বিদ্যায়াং মাদৈরস্তাভিরস্তরাৎ। মমাতিহ্বীদভবদাদোহতীৰ পুনঃ শুনঃ॥ প্রত্যভিজ্ঞায় মাং হাসান্মনিঃ কোপদম্বিত:। বিকম্পিক্সরঃ প্রাহ মামিদং পর্যবাক্ষরম্॥ রাক্সেনেব যন্ত্রানের জন্মানুষ্টেন জুর্মতে। ষ্ঠা বিদ্যাবহাসশচ মামবজ্ঞার বৈ ক্বত:।। তত্মাৎ জং রাক্ষসঃ পাপ মচ্ছাপেন নিরাক্তঃ। <sup>ङ्</sup>वियानि न मत्निहः मश्चद्राद्विश मोक्निशः ॥ हेर् एक व्यनिभावादेनाक्रभठादेतः व्यमानिकः। <sup>ग ममाह भून विश्व अध्यक्षणामा</sup> स्मानमः॥ मिर्वाक्मवक्कर छहावि शक्त माछवा।

কিছ বং রাক্সো ভূষা পুনঃ বং প্রাক্সানে বপু: ।
নাইবৃতির্যনা কুকঃ অমপত্যং চিধানিষু:।
নিশাচরবং গভাগি তদলানগভাগিতঃ ॥
গুনঃ সংজ্ঞামপাপ্য আমবাক্সানি নিজং বপু: ।
তবৈব অমধিষ্ঠানং লোকে গক্কর্মণজ্ঞেতে ॥
গোহংং ঘ্যা মহাভাগ মোক্ষিতোহ্যামহাভ্যাৎ
নিশাচরঘান্দ্বীর ভেন মে প্রার্থনাং কুকু ॥
ইমাং তে তনয়াং ভার্যাং প্রযুদ্ধামি প্রতীক্ষ্তাম্
আয়ুর্কেদশ্চ সকলস্ক্রীক্ষো যো ময়া ততঃ ॥
ম্নে: সকাশাং সম্প্রাপ্তরং গুরুষ মহামতে ॥
মার্ক্ডের উবাচ।

ইড়াক্রা প্রদেশে বিদ্যাং স চ দিব্যাশবোজ্ঞল:।
প্রপ্রপথরো দিবাং প্রাণং বপ্রান্থিত: ॥
দ্বা বিদ্যাং ততঃ কল্লাং স দাজুম্পচক্রমে।
তমাহ সা তদা কল্লা জনিতারং ক্ষরিপিন্।
অহবাপো মরাপাত্র ভতাতীব মহাক্সনি।
দর্শনাদেব সঞ্লাতো বিশেবেণোপকারিনি ॥
কিন্তেবা মে স্থী সাচ মহকুতে হুঃপণীড়িতে।
অতো নাভিলবে ভোগান্ ভোকুমেতেন বৈ সমম্
প্রবিষদি নো শক্যা কর্ত্মিখং নৃশংসতা।
সভাবক্রচিরের্মান্ত্ কথং বোবিং করিয়াতি ॥
সাহং যথা তে তঃথার্কে মহকুতে কল্লকে পিত:।
তথা স্থান্যামি তদ্বুহেও তচ্ছোকানলভাপিতা।
স্বের্টিক্রনাচ।

আয়ুর্কেদপ্রসাদেন তে করিব্যে পুনর্নবে। সবেটী তব মহাশোকং সমুৎস্ক স্থমধ্যমে ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ততঃ পিত্রা প্রায়ং দত্তাং তাং কস্তাং স বিধানতঃ ।
উপবেমে গিরে তিন্দ্র স্বারোচিশ্চারুলোচনান্ ॥
দত্তান্ত তাং তদা কস্তামভিসান্থ্য চ ভাবিনীন্।
জগাম দিব্যম গত্যা গন্ধর্কঃ স্বপুরং ততঃ ॥
স চাপি সহিত্তস্থা তছ্দ্যানং তদা বযৌ।
ক্যকাযুগলং বত্র তজ্পোইৎ তু গদাতুরম্॥
ততত্তাঃ স তত্তভা রোগরৈরৌববৈধ রসৈঃ ।
চকার নীরুলে দেহে স্থারোচিরপরাজিতঃ ॥
তত্তেহিতিশোভনে ক্যে বিমুক্তে ব্যাধিতঃ তত্তে
স্কান্ড্যোচ্যোতিদিপ্তাগং চক্রাতে তন্ত্রহীধরম্ ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে আরোচিবে মবস্তরে আরোচিঃশরিণয়ো নাম বিষ্টেডিধোহধ্যারঃ ॥

## চতুঃষষ্টিতনোহধ্যারঃ।

-----

#### মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

এবং বিস্করোগা তুক ককা তং মুদাধিতা।
খনোচিষ্মুবাচেদং শৃবুদ্ধ বচনং প্রভা ॥
মনারবিদাধরকা নামা থাতো বিভাবরী।
উপকারিন্ খনাম্মানং প্রথক্তামি প্রতীক্ত নাম্॥
বিদ্যাক তুভাং দাখাভি স্কভ্তরতানি তে।
য্যাভিব্যক্তিমেয়াকি প্রদাদপুরগো ভব॥

### শাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

এবমস্থিতি তেনোকে ধর্মক্রেন স্বরোচিষা। ছিতীয়াত তদা ক**লা** ইদং বচনমত্রবীৎ দ কুমারত্রন্ধচার্য্যাদীৎ পারো নাম পিতা মম। ব্ৰুষ্থি: সুমহাভাগে বেদবেনাঙ্গপারগঃ ৷ তম্ম পুংস্কোকিলালাপরমণীয়ে মধৌ পুরা i আজগামাপ্সবাভাাসং প্রধ্যাতা পুঞ্জিকান্তনা॥ কামব জবাতাং নীতঃ স তদা মুনিপুশ্বः। তৎসংযোগেইহমুৎপরা তভাগত মহাচলে॥ विश्वास मार श्रु मा ह मार्जा यन निर्कात वरन। वागारमकाः महीशृष्टं व्यागमाश्रममञ्जूल ॥ ততঃ কলাভিঃ সোমশু বর্দ্ধরীভিরবক্ষয়ম্। জাপ্যায্যনানাহরহরু দ্বিং যাতাত্মি সভ্য ॥ ততঃ কলাবতীতোতন্ম নাম মহাম্মনা। গৃহীভায়া: কুভং পিতা গন্ধৰ্মেণ গুভাননা॥ ন দন্তাহং তদা তেন যাচিতেন মহাত্মনা। দেবারিণালিনা শপ্তস্ততো মে ঘাতিভঃ পিতা ॥ ততোহহমতিনির্কেদাদাস্বরাপাদনোদ্যতা। নিবারিতা শস্তুপত্ন্যা সত্যা সত্যপ্রতিশ্রবা ॥ মা শুচ: স্থক্র ভর্তা তে মহাভাগো ভবিষাতি। স্বরোচিনাম পুত্রক মহুস্তক্ত ভবিষাতি ॥ আজ্ঞাঞ নিধন্ত: সর্বেক করিষান্তি তবাদ্তাঃ। যথাভিদ্বিতং বিত্তং প্রদান্তত্তি চ তে শুভে॥ যন্তা বংসে প্রভাবেশ বিদ্যায়ান্তং গৃহাণ মে। পদানী নাম বিদ্যেয়ং সর্বাদেণভিপুজিতা ॥ ইত্যাহ মাং দক্ষত্তা সভী সভ্যপরায়ণা। श्वरताहिताः अवः स्वी नाम्नथा मा विवराति ॥ माहर लानकामामा जार विमार यर छथा वर्षः। व्ययद्धामि व्यजीव्ह यः व्यनानस्मृत्था मम ॥

মার্কণ্ডের উবার।
এবমন্ত্রিত তামাহ স তুকস্তাং কলাবতীম্।
বিভাবর্থাঃ কলাবভাাঃ ন্মির্দুটার্দ্মোদিতঃ ॥
ক্রপ্রাহ চ ততঃ পাণী স তরোরমরছাতিঃ।
নদৎস্থ দেবতুর্ধাের্দ্রান্তীব্দার্গর চ ॥

ই তি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে স্বারোচিষে মরস্তরে চতু:বিষ্টিতমোহধারি:।

# পঞ্ষষ্টিত্মোহধ্যায়ঃ।

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ। ততঃ স তাভি: স্হতঃ পদ্মীভিরম্বরু।তিঃ। বরাম তত্মিন শৈলেক্তে রম্যকানননির্বরে 🛊 দর্কোপভোগরত্বানি মধুনি মধুরাণি চ। নিধয়ঃ সমুপাজহুঃ পদ্মিস্তা বশবর্তিনঃ ॥ व्यक्षा व्यापालकातान् शकाषामञ्जलभनम्। আসনাক্তিভভাগি কাঞ্চনানি যথেচ্যা ॥ সৌবর্ণানি মহাভাগ করকান ভাঙ্গনানি চ। তথা শ্যাশ্চ বিবিধা দিবৈত্যরাম্ভরবৈর্যতাঃ॥ এবং স তাভিঃ সহিতো দিব্যুগন্ধাদিবাসিতে। ররাম স্ক্রচির্ভাতির্ভানিতে বর্লক্তে । তাশ্চাপি সহ তেনেতি লেভিরে মদম্ভ্রমাম। त्रममाना यथा चर्त उथा उक् भिरमाक्रतं ॥ कलहरती जगारेनकार ठळवाकीर खल मजीम्। তম্ম তাসাঞ্চ ললিতে সম্বন্ধে চ ম্পুহাবন্তী॥ धर्लाश्यमिकिपूर्वााश्यः (याश्यः द्योवनर्गाहतः। দ্যিভাভিঃ স্ইেহাভিভুঙ্কে ভোগানভীপিতান্ সন্তি যৌবনিন: খ্লাঘ্যান্তৎপড়ো নাতিশোভনা: জগতাামরকাঃ পড়াঃ প্তয়\*চাতিশোভনাঃ n অভীষ্টাঃ কন্সটিৎ কাস্তা কাস্তঃ কন্সান্চিদীপ্সিতঃ পরস্পরাকুরাগাঢ়াং দাম্পতামতিত্বভিম্॥ ধতোহয়ং দয়িতাভীষ্টো ছেতাশ্চাদ্যাতিবল্লভা:। পরস্পরাত্ররাগো হি ধ্যানামেব জায়তে ॥ এতরিশমা বচনং কলহংসীসমীরিভম্। উবাচ চক্ৰথাকী তাং নাতিবিস্মিতমানদা ম नायः धाना याका लब्जा नानासी महिकर्ष छः। অন্যাং ত্রিরমরং ভূঙ্কে ন সর্বাবস্থ মানসম্ ॥ চিন্তারুরাগ একস্মিন্নধিষ্ঠানে যতঃ সবি। ততো হি প্রীতিমানেষ ভার্য্যাস্থ ভবিতা কথ্য ! এত। ন দ্বিতা: পত্টেনতানাং দ্বিত: পতি:।
বিনোদমাত্রমেটবতা যথা পরিজনোহপর: ॥
পুতাদাঞ্চ যদীষ্টেহিয়ং তৎ কিং প্রাণাং ন মুঞ্চ ।
আলিক্ষতাপরাং কাস্তাং ধ্যাতো বৈ কাস্তরাক্সরা
বিদ্যাপ্রদানমূল্যেন বিক্রীতো ভেষ দাসবৎ।
প্রবর্ততে ন হি প্রেম্ সমং বহুবীষ্ তিইতি॥
কলহংসি পতির্দ্ধনাো মম ধনাছিমেব চ।
যাস্যক্স্যাশিচরং চিত্তং ধসাংশিক্ষক সংস্থিতম্॥

মার্কণ্ডের উবাচ। সর্ব্বসম্বত্ত ভোহসৌ স্বরোচিরপরাজিত:। নিশমা লজ্জিতে। দধ্যৌ সত্যমেব হি নানুতম ॥ ততো বর্ষশতে বাতে রমমাণো মহাগিরৌ। র্মমাণ: সমং তালিদদর্শ পুরতো মৃগ্ম ॥ স্থলিগ্নপীনাব্যবং মুগীযুথবিহারিণম্। বাসিতাভিঃ সরপাভিমুগীভিঃ পরিবারিতম ॥ আরুপ্ট্রাণপুটকা জিল্লম্ভীস্তান্ততো মুগী:। উবাচ স মূগো রামা লজ্জাত্যাগেন গম্যতাম ॥ नांकः श्रदां विश्वष्ठीता न देववांकः श्रद्धां वनाः। নিৰ্লজ্ঞ। বহৰঃ সন্তি ত্বাদৃশান্তৰ গচ্ছতঃ॥ একা ছনেকামুগতা তথা হাসাম্পদং জনে। অনেকাভিন্তবৈকো ভোগদৃষ্ট্যা নিরীক্ষিতঃ॥ ত্যা ধর্মক্রিয়াহানিরহন্তহনি জায়তে। সজোহন্তভার্যায়া চাক্তকামাসকঃ সলৈব সং ॥ ए তাদ্শোহন্ত ভালী नः পরলোক পরায়ুখঃ। তং কাময়ত ভদ্রং বো নাহং তুলাঃ স্বরোচিষা॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে স্বারোচিষে ময়স্তবে পঞ্চষষ্টিতমোহধ্যার:।

## ষট্ৰ**ন্তিতমোহধ্যায়ঃ।**

-:+:-

মার্কণ্ডেয় উবাচ

এবং নিরস্যমানান্তা হরিপেন মৃগাঙ্গনাঃ।

করা স্বরোচিরাত্মানং মেনে স পতিতং যথা ॥

গ্রাকার চ মনঃ স তাসাং ম্নিস্তম।

ক্রাকীমৃগপ্রোকো মৃগচর্যাজ্গুন্সিতঃ ॥

নেত্য তাভিত্ রশ্চ বর্জমানমনোভবঃ।

নাক্ষিপ্রনির্কেদকথো রেমে বর্জশুতানি বটু ॥

কন্ত ধর্মাবিরোধেন ক্র্কন্ ধর্মাপ্রিভাঃ ক্রিয়াঃ।

্ত্তে স্বরাচিকিবেরয়ান্ সহ তাভিক্লার্ধীঃ ॥

তভশ্চ জজিরে তসা ত্রবঃ পুরাঃ স্বরোচিষঃ। विषद्भा (सक्तनमण्ड श्रेष्ठावण्ड महावणः ॥ मत्नातमा ह विकाश श्रान्य छन्नी वता पाका। বিভাবরী মেকনন্দং প্রভাবঞ্চ কলাবতী ॥ गणिनो नाम या विना प्रकारकार्शामणानिका । স তেখাং তৎপ্রভাবেণ পিতা চক্রে পুরত্তমন্॥ व्याठा छ विकार नाम कामक्राण नाशानित । विजयाय स्वायाति न नत्ने भूतम्ख्यम्॥ উनीठार (सकनन्त्रता शूबीर नन्त्रवाधिक। थ । डाः हकात तथा छ नवध्याकात्र मानिनीम्।। কলাবতীস্থতস্যাপি প্রভাবদ্য নিবেশিতমু। পুরং ভালমিতি খ্যাতং দক্ষিণাপথমাশ্রিতম্॥ এবং নিবেশ প্তান স পুরেষ পুরুষর্ভঃ। রেমে তাভি: সমং বিপ্র মনোক্তেছতিভূমিরু ॥ একদা তু গভোহরণো বিহরন্স ধহুর্বঃ। ठकर्स श्रह्माटलाका वडा**हमिक्तृत्रशम्** ॥ অথাহ কাচিদভ্যেত্য তং তলা হরিণাঙ্গনা। ময্যেব পাত্যভাং বাণঃ প্রদীদেভি পুনঃ পুনঃ ॥ কিমনেন হভেনাণ্য মমাও বিনিপাত্র। ত্ব্যা নিপাতিতো বাণো তঃপান্মাং মোক্ষরিষ্যতি ষরোচিক্লবাচ।

ন তে শরীরং সরুজমন্মাভিরুপলক্ষাতে। কিং সু তৎকারণং যেন অং প্রাণান্ হাডুমিছেদি॥ মুঙ্যবাচ।

জ্ঞাসাগজহাদয়ে যদ্ধিংশেছে: কুভাম্পদম্।
মম তেন বিনা মৃত্যুরেবিধং কিমিহাপরম্॥
স্বোচিক্রবাচ।
ক্সাং নাভিলবেন্তীক সাহ্যাগাসি কুত্র বা।
যদপ্রাপ্রো নিজান্ প্রাণান্ প্রিভাজ্ঞুং ব্যবসাসি
মৃত্যুবাচ।

ছামেবেচ্ছামি ভজং তে ছয়া মেহণজ্জং মন:। বুণোম্যহমতো মৃত্যুং মরি বাণো নিপাত্যভাম্॥

त्रदाहिक्दोह।

ডং মৃগী চঞ্চলাপাঙ্গি নররূপধ্রা ব্রুম্। কথং স্বরা সমং বোগো মৰিধস্য ভবিষ্যভি॥

मुखावाह ।

যদি সাপেক্ষিতং চিত্তং মরি তে মাং পরিম্বল। যদি বা সাধু চিত্তং তে করিষ্যামি যথেক্ষিতম্। এতাবতাহং তবতা ভবিষ্যাম্যতিমানিতা॥ মার্কণ্ডের উবাচ।
ভালিলিক ততক্তাং স করোচিইবিণাক্ষনাম্।
তেন চালিকিতা সদ্যঃ সাভূদ্দিবাবপূর্ধরা ॥
ততঃ স বিস্মাবিষ্টঃ কা স্বমিত্যভাষত ।
সা চাম্মৈ কথরামাস প্রেমলজ্জাক্ষ্যম্ ॥
ভাহমভার্থিতা দেবৈঃ কাননস্থান্ত দেবতা।
উৎপাদনীয়োহি মহুন্ধরা মহি মহামতে ॥
শ্রীতিমতাাং মহি স্থতং ভূর্নোকপরিপাসকম্ ।
তম্ৎপাদর দেবানাং স্বামহং বচনাহৃদে ॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ। ভতঃ স ভক্তাং তন্মং স্ক্রিকণ্ক কিভুম্। তেজ স্বিনমিবাত্মানং জনয়।মাস তৎকণাৎ॥ জাতমাত্রতা উত্তাথ দেববাদ্যা নিসম্বস্থ:। জগু গন্ধবপতয়ো নন্তুশ্চাপ্সযোগণাঃ॥ निविष्टः भीकटेत्रर्नांशा श्रवयम् जल्लाधनाः। **८** त्वां क भूष्णवर्षक मूमू हुन्छ ममञ्जूष्ट ॥ ভক্ত ভেলঃ সমালোক্য নাম চক্রে পিতা স্বয়ম্। ছ।তিমানিতি যেনাভ তেজনা ভাসিতা দিশ:। স বালো হ্যাভিমান নাম মহাবলপরাক্রম:। স্বরোচিষ: স্থতো যন্ত্রাৎ ত্রাৎ স্বারোচিযোহভবৎ न চাপি বিচরন রম্যে কদাচি দিগরিনির্করে। অরোচির্দদশে হংসং নিজপত্নীসময়িতম্।। উবাচ স তদা হংসীং সাভিলাষাং পুনঃ পুনঃ। উপসংখ্রিয়তামাত্ম। চিরং তে ক্রীড়িতং ময়া॥ किः मर्खकानः (छाटेशस्य चाननः हत्रभः वत्रः। পরিত্যাগশু কালো মে তব চাপি জলেচরি। হংস্কাবাচ।

षकां का कि एकां भागि म स्वर्णा भाषिकः स्वर्थ यकाः कित्रत्य एकां भाषि वास्त्रते । भाषिकार प्रकाशिकः मृद्दोष्ट्रिये एकां भाग् वास्त्रामा विटविकनः । मामानि ठ श्रयक्षि भूर्गभाषा स्वर्वत्य ॥ म प्रश्नाकृषि किः एकां भाग् एकां भाष्टिकार

বৃণাৰ্শ বিবেকিনাং তিরশ্চাঞ কিং পুনঃ সংযতাত্মনাম্॥ হংস উবাচ। ভোগেষ্সক্তচিত্তানাং প্রমাত্মাবিতা মতিঃ। ভবিষ্যতি কদা সঙ্গমুপেতানাঞ্বৰুষু॥

পুত্রমিত্রকলতের সকাং সীমন্তি জন্তবং। সরঃপদার্পবে মধা জীবা বনগ্লা ইব ॥ কিং ন পশুসি বা ভক্তে জাতসকং খবোচিষম্। আবালাথে কামসংস্কং মগ্নং সেহাস্কর্দমে॥
বৌবনেহতীব ভার্যাস্থ সাম্প্রভারং পুত্রনপ্তৃরু।
স্বরোচিবো মনো মগ্নমুদ্ধারং প্রাণাতে কুতঃ॥
নাহং স্বরোচিবস্তলাঃ স্তীবাধাো বা জলেচার।
বিবেকবাংশ্চ ভোগানাং নির্ভৌহন্মি চ সাম্প্রভন্মার্কতের উবাচ।

সরোচিরেতদাকণ্য আতোদেগঃ থগেরিতম্। আনার ভার্যান্তপদে যথাবস্তৎ তপোবনম্ । তত্ত তথা তপো ঘোরং সহ তাভিরুদারধীঃ। অসাম লোকানমলান্ নিব্তাথিলকক্ষাঃ ।

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে স্বারোচিকে ময়স্তবে ষট্ষষ্টিতমোহধ্যার:।

## সপ্তবস্থিতমোহধ্যায়ঃ।

----

মার্কণ্ডেম্ব উবাচ।

ততঃ স্বারোচিনং নামা ছ।তিমন্তং প্রকাপতিম্।
মহুং চকার ভগবাংন্তভ্য মন্বন্তরং শৃণু ॥
ততান্তরে তু যে দেবা মুনয়তংশ্রতাশ্চ যে।
ভৌপালাঃ ক্রেট্রুকে যে তানু গদতত্বং নিশাময়
দেবাঃ পারাবতান্তরে তথৈব তুবিতা দিজ।
স্বারোচিষেহত্তরে চেল্রো বিপশ্চিদিভি-বিশ্রুতঃ।
উর্জ্ঞন্তরণা প্রাণো দত্তোলিপ্র্যভন্তথা।
নিশ্চরশ্চার্রবীরাংশ্চ তক্র সপ্রর্থমোহভবন্॥
চৈক্রকিম্পুরুষাদ্যাশ্চ স্থতান্তভ্য মহাত্মনঃ।
সপ্রান্ সুমহাবীর্যাঃ পৃথিবীপরিপালকাঃ॥
ভন্ত মন্বন্তরং যাবৎ তাবৎ তদ্বংশবিন্তরে।
ভূকের্মননিঃ স্র্বা বিভীমং বৈ তদত্তরম্॥
স্বরোচিন্ত্র চরিতং জন্ম স্বারোচন্ত্র চ।
নিশ্মঃ মুচাতে পাগে: শ্রুদ্ধানে। হি মানবঃ॥
ইতি মার্কভ্রের পুরাণে সপ্রান্তিয়ে যোধানাঃ।

## অফ্টবস্থিতমোহধ্যায়ঃ।

----

कों है कि क्वा ।

ভগবন্ কণিতং সর্কাং বিস্তরেণ স্বয়া মম। স্বরোচিষ্প্ত চরিতং জন্ম স্বারোচিষ্ঠ তু ॥ ষা তু সাঁ পদ্মিনী নাম বিদ্যা ভোগোপপাদিকা তৎসংশ্রমা যে নিধমন্তান্ মে বিন্তরতো বদ ॥ অট্টো যে নিধমন্তেবাং স্বরূপং দ্রব্যসংস্থিতিঃ। ভবতাভিহিতং সমাক্ শ্রোত্মিজামাহং গুরো॥
মার্ক্তের উনাচ।

মার্কণ্ডের উবাচ। প্রিনী নাম যা বিদ্যা লক্ষীন্তভাশ্চ দেবতা। **जमाधात्राम्म निधवखट्या निशमणः मृत् ॥** यत भवासहाभरको छथा मकत्रकष्ट्रभो। युक्तमा नमकरेण्डव नीलः भत्यार्हेरमा निधिः। সত্যামূদ্ধৌ ভৰস্থোতে সিদ্ধিস্থেধাং হি জায়তে। এতে হৃষ্টে সমাধ্যাত। নিধ্যন্তব ক্রেছিকে॥ (पवडानाः धानाः पन नाधुमः राज्यान ह। এভিরালোকিভং বিভং মামুষতা সদা মুনে ॥ যাদক বরূপং ভবতি তামে নিগদতঃ শুণু। পল্মো নাম নিধিঃ পূর্বং ময়স্ত ভবতি দিল ॥ স্বতন্ত তৎস্থতানাঞ্চ তৎপৌল্রাণাঞ্চ নিত্যশঃ। দান্দিণ্যদারং পুরুষজ্ঞেন চাধিষ্ঠিতো ভবেৎ ॥ স্বাধারো মহাভাগো যতোহসৌ সান্তিকো নিধিঃ স্বর্গরপ্তামাদিধাতুনাঞ্চ পরিগ্রহম্। করোত্যতিতরাং সোহথ তেয়াঞ্চ ক্রমবিক্রয়ম॥ করোতি চ তথা যজান দক্ষিণাঞ্চ প্রযুক্ত তি। সভাং দেবনিকেতাংশ্চ স কারম্বতি তমানাঃ॥ স্বাধারো নিধিশ্চাক্তো মহাপদা ইতি শ্রুত:। সবপ্রধানে। ভবতি তেন চাধিষ্ঠিতো নর:॥ করোতি পদারাগাদিরত্বানাঞ্চ পরিগ্রহম। মৌজিকানাং প্রবালানাং তেষাঞ্চ ক্রমবিক্রেরান ॥ দদাতি যোগণীলেভাতেষামাবস্থাংতথা। স কারয়তি ভচ্ছীলঃ স্বয়মেব চ জায়তে॥ তৎপ্রস্তান্তথাশীলাঃ পুত্রপৌত্রক্রমেণ চ। নিধিস্ত বিজ্ব সপ্তাসৌ পুরুষাংশ্চ ন মুঞ্জি। णेगला मकरता नाम निधित्छनावलाकिङः। পুক্ষেহিপ ভ্ৰাহঃ ভূশীলোইপি হি জায়তে । বাণপড়গার্ড ধহুষাং চর্ম্মণাঞ্চ পরিগ্রহম্। রসনানাঞ্চ কুরুতে যাতি মৈত্রীঞ্চ রাজভি:।। <sup>দদাতি</sup> শৌর্যার্ভীনাং ভূভুকাং যে চ তৎপ্রিয়া:। ক্ষবিক্রে চ শল্পাণাং নান্যত্র প্রীভিমেতি চ॥ একবৈত্ৰৰ ভৰতোৰ ন চ ততাসুজামুগ:। উৰ্যাৰ্থং দক্ষতো নাশং সংগ্ৰামে চাপি স ব্ৰদ্ধে कष्ट्रभक निविर्धाश्त्रो नद्रत्यनाणिवीक्षिणः। जमः अधारना खनिक नरकारतो कामरमा निधिः ॥

বাবহারানলেবাংশ্ব পুণান্ধাতৈঃ করে।ভি চ। কর্মস্থানথিলাংকৈত্ব ন বিশ্বসিতি ক্স্তুচিৎ। সমস্তানি যথাকানি সংহরত্যের ক্ষেপঃ। তথা বিষ্টভ্য চিত্তানি তিঠভ্যালভ্যান্দ: ॥ ন দদাতি ন বা ভূঙ্জে তৰিনাশভয়।কুলঃ। নিবানমূৰ্ব্যাং কুকতে নিধিঃ সোহপোকপুক্ষ। ॥ त्रकां खन्य मन्त्रात्मा मुक्तमा नाम (मा निविः। নরোহবলোকিতত্তেন ভদ্ওণে৷ ভব্তি বিজ্ঞ বীণ:বেণুমুদকানামাভোদ্যস্য পরিগ্রহম। করোতি গায়তাং বিভং নুভ্যতাঞ্চ প্রবচ্ছতি 🛊 বন্দিনামথ স্তানাং বিটানাং লাব্যপাঠিনাম। नुनाष्ट्रार्थितः ट्रांशान् कृष्ट्रकः टिक्क मभर विक ॥ কুলটাম্ববজিশ্চাস্য ভৰভাবন্যন্ত ভৰিবৈ:। প্রযাতি সঙ্গমেকঞ্ধং নিধিওজাতে নরম্॥ त्रक्र छ स्मामग्रम्हारना। नरमा नाम महानिधिः। উপৈতি ভাতমধিকং নরভেনাবলোকিত: ॥ সমন্তথাতুরত্বানাং পুণাধান্যাদিকস্য চ। পরিগ্রহং করোভ্যেষ ভটেথৰ ক্রেম্বরিক্রয়ম ॥ আধার: বজনানাঞ আগতাভ্যাগত্যা চ। বহতে নাপমানে। জিং স্বরামপি মহামুনে। স্ত্রমানশ্চ মহতীং প্রীতিং বগ্নতি বচ্ছতি। য<sup>े</sup> ৰমিচ্ছতি ৰৈ কামং মৃত্ৰুমুপৰাভি চ॥ বহ্ব্যো ভার্যা ভবস্তাস্য স্থতিমত্যোহতিশো জনাঃ রতয়ে সপ্ত চ নরান নিধিন**ন্দোহসুবর্ততে** ॥ व्यवक्रमात्नार्थ नत्रमहेखार्शन मक्रम। मीर्थः युष्टे क मर्ट्यवाः **भूकवानाः व्यवह्नजि**॥ বন্ধ্যামেৰ ভরণং যে চ দ্রাছ্পাগভাঃ। टियाः करवां ि देव नमः शत्रामादक न हाम्छः ॥ ভৰত্যদ্য ন চ **স্নেহঃ সহবাসিরু জায়তে।** পূর্বমিতেষু শৈপিলাং প্রীভিমনো: করোতি চ। তবৈধৰ সম্বৰ্জসী যো বিভৰ্তি মহানিধিঃ। न नीनमः छछ ९ मको नत्र छ छी नवान् छ दव ॥ বজকার্পাসধান্যাদিফলপুলাপরিপ্রহুম্। মুক্ত।বিজ্ঞমশ্বানাং গুক্তাদীনাং তথা মুনে। काञ्चामीनाः करत्रारकाय यक्ताना कानां खरम्। क्षितिक समरना वार नाना के समरू मनः॥ তড়াগান পুক্রিণ্যাহণ তথারামানুকরো তিচ বন্ধক সরিতাং বৃক্ষাংভথারোপ্যতে নর: ॥ অহুলেপনপুষ্পাদিভোগং ভুক্তাভিজায়তে। किरशोक्रवकाशि निधिनीरना नारेमव बाबर्ड ॥

রক্তকের্যমন্ত্রনার: শব্দেশকো হি যো নিধি:।
তেনাপি নীরতে বিপ্র তদ্গুণিছ: নিধীখব: ॥
এক নৈয়ব ভবতোর নরং নানামুদৈতি চ।
যস্য শব্দো নিধিছার স্বরূপং ক্রোই কে শূর্ ॥
এক এবাম্মনা স্টমরং ভূতকে তথাম্বর্ম।
কদরভূক্ পরিজনো ন চ শোভনবস্তুর্ম ॥
ন দদাতি স্বভাগ্রাভূপুত্রসুষানির্।
মণোবণপর: শন্ধী নরো ভবতি সর্বাদা ॥
ইত্যেতে নিধম: খ্যাতা নরাণামর্থদেবতা:।
মিশ্রাবেশকোনিশ্রা: মভাবক্লদামিন: ॥
যথা ধ্যাতমভাবস্ত ভবতোর বিলোকনাব।।
সর্বেষ্যামিণতো চ শ্রীরেষ। বিজ্ব প্রিনী ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে নিধিনির্ণয়ে।
নামাইষ্টিতমোহধাায়: ।

## একোনসপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:--

क्लिक क्षेत्रक क्षेत्र ।

विख्वाद क्षिणः खक्षन् सम चारता विषः प्रता ।

सवस्वतः उटेपेवार्ष्टी त्य शृष्टा निधरता मुत्रा ॥

चावस्त्र व्यक्तिस्य सवस्वत्रम् शक्ति ।

सवस्वतः पृजीयः तम क्षेत्रमण्डमनः क्षिलम् ॥

सवस्वतः पृजीयः तम

উত্তানপাদপুলোহভূত্তমো নাম নামত:। ञ्चकारिकातः शास्त्रा महावनशताक्रमः॥ ধর্মাত্মা চ মহাত্মা চ পরাক্রমধনো নূপ:। অতীত্য সর্বভূতানি বভৌ ভাতুপরাক্রম: ॥ সমঃ শত্রো চ মিত্রে চ পুরে পুল্রে চ ধর্মবিং। **ছट्डि ए यमवर नार्थी** त्रामवक महामूल ॥ বাভ্ৰবীং বছলাং নাম উপয়েমে স ধর্মবিৎ। উত্তানপাদতনয়: শচীমিন্দ্র ইবোত্তম: ॥ প্যাতামতীব তভাসীন্দিজবর্ষ্য মনঃ সদা। ক্ষেত্ৰজ্ঞিনো যৰজোহিণ্যাং নিহিতাম্পদম ॥ **অভপ্রোজনা শক্তিমু পৈতিন হিতল্মনঃ।** স্বপ্নে চৈব ভদাবস্থি মনোহভূৎ তক্ত ভূভূত:॥ म ह एकाः स्टार्ककाः प्रभूतात्मव शार्थिवः। দদাতি স্পর্শনং গাতে গাতেম্পর্শে চ তর্ময়ঃ ॥ শ্রোবেশকরং থাক্যং প্রিয়মপ্যবনীপতে:। ভঙ্গাপি ভূবি সন্মানং মেনে পরিভবং ভত:॥

ষ্পবমেনে অঙ্গং দত্তাং ওভাঞ্চাভরণানি চ। উত্তহাবন্দপীড়েব পিবতোহক বরাসবম। ज्ञका ह नद्यक्ति क्षामां कर्द्या है । বুভূজে সল্লকং ভক্ষাং দিল নাতিমুদাবতী। এবং তন্তামুকুলন্ত না**মুকুলা মহাত্ম**নঃ। প্রভূততরমতার্থং চক্রে রাগং মহীপতি:॥ অথ পানগতো ভূপ: কদাচিৎ তাং মনবিনীম্। স্থাপুতং পানপাতাং গ্রাহয়ামাস সাদর: ॥ পভাতাং ভূমিপালানাং বারমুখ্যেঃ সময়িতঃ। व्यनीयमानमधूरेवर्भयनायनखर्भरेतः ॥ সাতুনেচ্ছতি তৎপাত্রমাদাতুং তৎপরায়ুখী। সমক্ষৰনীশানাং ছত: কুদ্ধ: সুপার্থি:॥ উবাচ ছাত্মাছুয় নিশ্বসন্নগো যথা। নিরাকৃতস্তমা দেব্যা প্রিমমা পতিরপ্রিয়: ॥ षादेखनाः इष्टेशकामामाम विवादन वदन। পরিত্যজ্ঞাণ্ড নৈতৎ তে বিচার্য্যং বচনং মম ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
ততো নৃপক্ত বচনমবিচার্যামবেক্ষ্য সং।
বাংহতত্যাক তাং ক্ষজমারোপা জননে বনে॥
সা চ তং বিপিনে ত্যাগং নীতা তেন মহীভূত
অনুক্তমানা তং মেনে পরং ক্ষতমক্রপ্রহম্॥
সোহপি ততাহ্বাগার্তিন্ত্মানাজ্মানসং।
ঔভানপাদিভূপালো নাজাং ভার্যামবিক্ষত॥
সন্মার তাং ক্ষচার্কার্সীমহর্নিশমনির্ভ:।
চকার চ নিজং রাজাং প্রজা ধর্মেণ পাশমন্॥
প্রজাং পাল্যতক্ত্য পিতৃং প্রানিবৌরসান্।
আগত্য ব্যাহ্মণং কশ্চিদিদমাহার্তমানসং॥
বাক্ষণ উবাচ।

মহারাজ ভূপার্ত্তোহন্দি প্ররুতাং গদতো মন।
নূণামার্ত্তিপরিআগনক্সতো ন নরাধিপাৎ ॥
মম ভার্যা প্রস্থেস্ত কেনাপ্যপন্থতা নিশি।
গৃহদারমন্ত্র্যাত তাং সমানেভূমহ সি॥
রাজেশবাচ।

ন বেৎপি কেনাপজ্ঞতা ক বা নীতা তুসা বিজ যতামি বিশ্রহে কন্ত কুতো বাণ্যানয়ামি তাম্ ব্রাহ্মণ উবাচ।

তথৈব ছগিতে ধারি প্রস্থপ্ত মহীপতে।
হতা হি ভার্যা কিংকেনেত্যেভদ্কিলারতে ভবা
বং রক্ষিতা নো নূপতে বড্ভাগাদানবেতনঃ।
ধর্মস্থা তেন নিশিক্তাঃ অপস্থি মহুশা নিশি॥

ब्राट्यावाह।

ন তে দৃষ্টা ময়। ভাগাা ৰাদ্যপুণা চ দেহতঃ। ৰয়কৈব সমাৰ্যাহি কিংশীলা ব্ৰাহ্মণী চ তে ॥ ব্ৰাহ্মণ উবাচ।

কঠোরনেতা সাত্যকা হয়বাহঃ কুশাননা।
বিরপরপা ভূপাল ন নিলামি তথৈব তাম্ ॥
বাচি ভূপাতিপক্ষা ন সৌম্যা সা চ শীলতঃ।
ইত্যাধাকা ময়া ভার্য্যা সাকারা হর্নিরীক্ষণা ॥
মনাগভীতং ভূপাল তস্যাশ্চ প্রথমং বয়ঃ।
তাদ্গুপা হি মে ভার্যা সভ্যমেভন্নয়োদিতম্ ॥
বাজোবাচ।

অবং তে আকা তবা ভার্যামনাং দদমি তে।
ফুব্রে ভার্মা কল;ানী ছঃবহেতুহি তাদু<sup>মী</sup>॥
কল্যে ক্ষুক্তা বিশ্র কারণং শীলম্ভ্রম্।
রপশীলবিহানা যা ভ্যাক্ষ্যা দা তেন হেতুনা॥
আকণ উবাচ।

রক্ষ্যা ভার্য্যা মহীপাল ইতি ন শ্রুতিরুত্তমা।
ভার্য্যায়াং রক্ষ্যমাণারাং প্রজা ভবতি রক্ষিতা।
জাল্মা হি জারতে তদ্যাং দা রক্ষ্যাতো নরেশ্বর
প্রজায়াং রক্ষ্যমাণারামান্ত্রা ভবতি রক্ষিতঃ ।
তদ্যামরক্ষ্যমাণারামান্ত্রা ভবতি রক্ষিতঃ ।
দ পাত্রেমহীপাল পূর্বান্ শ্বর্গান্ধঃ পিতুন্।
ধর্মহানিশ্চাস্থানিন পূর্বান্ শ্বর্গান্ধঃ পিতুন্।
ধর্মহানিশ্চাস্থানিন ভবিত্রী মম সন্ততিঃ।
তব ষত্ভাগলাত্রী সা ভবিত্রী ধর্মহেত্রী ।
তবে ষত্ভাগলাত্রী সা ভবিত্রী ধর্মহেত্রী ।
তবে বত্ত ম্যাধ্যাতা পত্নী বা মে হতা প্রক্রো
তাং সমান্য রক্ষারাং ভবানহিক্তো বতঃ ।

মার্কণ্ডের উবাচ।

স তলৈবং বচঃ শ্রুছা বিমৃষ্য চ নরেখার:।

সংক্রাপকরবৈর্কুমারুরোহ মহারথম্॥

ইতদেতক তেনাসৌ পরিবল্ল ম মেদিনীম্।

দদর্শ চ মহারণ্যে তাপসাশ্রমমুজমম্॥

অবতীর্যা চ ত্রাসৌ প্রবিশ্ত দদৃশে মুনিম্।
কৌশাং রবনাং সমাসীনং অপস্তমিব তেজসা॥

স দৃষ্টা নুশতিং প্রাপ্তং সমুখার জ্বান্তিই।

সমান্য স্থাবতেনৈব শিষ্যমাহার্দ্যান্য ॥

তমাহ শিষ্যং শনকৈ দ্বিয়োহ্বেহিস্য কিং মুনে

তদাজ্ঞাপর সঞ্জ্যে তথাঞ্জাং হি করেমান্তম্॥

ততেহিবগতবুজান্তো ভুগভেন্তা স বিজ্ঞঃ।

गञ्चारामनगरनम ठटक गन्नानमान् । ঋষিক্ষৰাচ। কিংনিমিন্তমিহায়াতো ভবান কিং তে চিকীৰ্ষিভষ্ উত্তানপাদতনয়ং বেল্লি ছামুন্তমং নূপ 🛚 बाद्यावाह। ব্ৰাহ্মণ্যা গৃহান্তাৰ্য্যা কেনাপ্যপদ্ধতা মূনে। অবিজ্ঞাতস্কপেণ ছামৰেটুমিহাগ্ড:॥ পৃচ্ছামি যতে তল্মে ছং প্রণতস্যাত্তকম্পরা। অভ্যাগতস্যাথ গৃহং ভগবন্ বক্তুমুহলি ॥ श्विक्वा है। পৃচ্ছ মামবনীপাল তৎ প্রস্তিব্যমশন্ধিত:। বজবাঞ্চেৎ ভব ময়া কথ্যিয়ামি ভত্তঃ॥ द्रांद्रचां वाहा গৃহাপতার যো মহুং প্রথমে দুর্শনে মুনে। षया मम्राटका मांजूः कथः (माश्र्या निवर्षिक: । सविक्वां ।

ষদর্শনেন রভসাদাজপ্রেছিরং ময়া নৃপ।
বদা তদাহমেতেন শিবেয়ণ প্রতিবোধিত: ॥
এব বেতি জগতার মংপ্রসাদাদনাগতম্।
বর্ধাহং সমতীতঞ্ বর্ধানঞ্ সর্বত: ॥
আলোচ্যাঞ্চাপ্রেত্যকে ততো জাতং ময়াপি তং
ততো ন দত্তবান্ধমহং ভূতাং বিধানত: ॥
সত্যং রাজন্ অমর্ঘাহ্: ভূলে স্বায়স্কুব্ল চ।
তথাপি নার্ধবোগ্যং ছাং মস্তামো বয়মুত্মম্॥
রাকোবাচ।

কিং কৃতং হি ময়া ব্রহ্মন্ জ্ঞানাদজানতোহপি বা বেন অভোহর্থমহামি নাহমভাগত শিচরাৎ ॥ ঋবিক্রবাচ।

কিং বিশ্বতং তে যথ পত্নী জ্বা ভাজা চ কাননে পরিত্যক্তরা সার্ক্ষং জ্বা ধর্মো নৃপাধিলঃ ॥ পক্ষেণ কর্মণো হান্তা প্রারভ্যস্পর্শতাং নরঃ। বিশু কৈর্মবিকী যক্ত হানিতে নিত্যকর্মণা ॥ পর্যাকৃক্ররা ভাবাং যথাশীলেহপি ভর্তরি। ছংশীলাপি তথা ভাব্যা পোনীয়া নক্ষমর ॥ প্রতিক্লা হি সা পত্নী ভক্ত বিপ্রক্র যা হতা। তথাপি ধর্মকামেহেনী ভাষুদ্বাভিভরাং নৃপ ॥ চলতঃ স্থাপরভালান স্বধর্মের মহীপতে। ভাং মধর্মবিচনিতং কোহপরং ভাগির্যাতি ॥ মার্কপ্রের উবাচ।

विनकाः न महीलान रेजाकात्वन धीमणा।

তথেত্যক্র। চ পপ্রচহ হতাং পদ্বীং বিক্সনঃ। छगरन् दकन नीठा ना भन्नी विक्षच क्वा वा। ষ্মতীভানাগতং বেজি জগত্যবিত্থং ভবান॥

#### ৠবিরুবাচ।

ভাং অহারান্তিতনয়ো বলাকো নাম রাক্ষস:। দ্রক্যাসে চাদ্য তাং ভূপ উৎপলাবতকে বনে **॥** গচ্ছ সংযোজয়াও ছং ভার্যয়। হি ছিজোত্মম্। মা পাপাস্পদতাং যাতু ছমিবাসৌ দিনে দিনে ॥

> ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে একোন-স্প্রতিত্যোহধ্যায়:।

### সপ্রতিতমোহধ্যায়ঃ।

মাৰ্কভেন্ন উবাচ।

चार्थाकरताइ चत्रभः अगिन्छा महामूनिम्। তেনাথ্যাতং বনং ভচ্চ প্রয়েষাবৃৎপ্রাবভম্॥ যথাখ্যাতস্থারপাঞ্ভার্যাং ভর্তা বিষয় তাম্। फक्रमुखीर नपर्याथ श्रीकनामि नारत्यतः॥ পপ্ৰাছ চ কথং ভৱে অমেতৰ্নমাগতা। ক্ষুটং ত্রবীহি বৈশালেরপি ভার্য্যা স্থার্মণঃ॥ ব্ৰাক্ষণ্যবাচ ।

**স্তাহ্যতিরাত্ত বিজ্ঞা** বনবাসিন: । পত্নী বিশালপুত্রসা যস্য নাম অয়োদিতম্॥ সাহং হুতা বলাকেন মাক্ষ্পেন ছ্রাত্মনা। প্রস্থা ভবনস্যান্তে প্রাত্মাত্বিয়োজিতা। ভদ্মী ধবতু তদ্ৰক্ষো যেনান্মোবং বিয়োজিতা। মাত্রা ভাভভিরনৈস্চ তিঠাম্যত স্বহংধিতা।। অস্মিন্ বনেহতিগৃহনে তেনানীয়াহমুজ্ঝিতা।

### ন বেল্লি কারণং কিং ভরোপভূঙকে ন থাদতি॥ রাজোবাচ।

অপি ভজ্জারতে রক্তামুৎস্কাক বৈ গতম্। ष्यद्रः ভर्छ। 🗯 देवबाब ८०० विष्ठन निर्मान १ ব্ৰাহ্মণ্যবাচ।

অলৈয়ৰ কাননস্যান্তে স ভিষ্ঠতি নিশাচর:। প্রবিশ্ব পশ্রত্ব ভবান্ন বিভেতি ততে। যদি॥ মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

প্রবিবেশ ভঙঃ সোহধ তথা বর্মনি দর্শিতে। मृत्रम् পরিবারেণ্ সমবেতক রাক্ষসম্।

দৃটমাত্রে ভতন্তবিন্ সরমাণঃ স রাক্ষ্য:। एताराय मही: मृक्ा ल्लुमन् शामास्त्रिकः बरयो ॥ -রাক্ষণ উৰাচ।

মমাত্রাগচ্চতা গেহং প্রাদম্ভে মহান্ কুড:। প্রসাধি কিং করোম্যেষ বসামি বিষয়ে তব ॥ ञर्च एक यः अधिक इष्ट की प्रेट एक न मानन म्। বয়ং ভ্তা। ভবান্ খামী দৃঢ়মাঞাপয়ৰ মাম্॥ রাজোবচ।

কুতমেৰ তথা সৰ্বাং সৰ্বামেৰাভিথিকিয়াস্। কিমর্থং ত্রাহ্মণবধুষ্মানীতা নিশাচর॥ নেরং স্থারূপ। সন্তাক্তা ভার্য্যার্থকেৎ হতা ছবা। क्क्यार्थः ८६९ कथर नाष्ट्रा घटेग्रज्ड कथाजाः मम

রাক্ষদ উবাচ।

ন বয়ং মাত্যাহারা অত্যে তে নুপ রাক্ষ্যাঃ। হুকুত্র্য ফলং যৎ তু তদশ্লীমো বন্ধং নূপ। স্বভাবঞ্চ মন্ত্র্যাণাং যোষিতাঞ্চ বিমানিতা:। মানিতাশ্চ সমশ্লীমো ন বয়ং জন্তুথাদকাঃ ॥ তদমাভিনৃণাং কান্তিভুকা কুধান্তিতে তদা। ভুক্তে ছুটে স্বভাবে চ গুণবস্থো ভবস্থি চ॥ भिष्ठ नः व्यमना ज्ञा क्राप्तिनाकारमाः । রাক্ষদ্যন্তান্ত তিষ্ঠৎ আমুষীযু রতিঃ কথম্ ॥

त्रांद्यावाह। যদ্যেষা নোপভোগায় নাহারায় নিশাচর। গৃহং প্রবিশ্র বিপ্রস্য তৎ কিমেষা হতা ত্বয়া 🛚 রাক্ষস উবাচ।

মন্ত্রবিৎ স বিজ্ঞোষ্ঠো যজ্ঞে যজ্ঞে গতস্য সে। রক্ষোত্মস্ত্রপঠনাৎ করোতু।চচাটনং নৃপ ॥ বয়ং বৃভূকি তাজ দামজোচচাটনক মণা। ক যাম: দৰ্ক্যজেবুদ ঋতিগুভ্বতি বিজ্ঞা ততোহসাভিরিদং তস্য বৈক্ল্যমূপপাদিত্য পত্না বিনা পুমানিজ্যাকর্মযোগ্যো ন জায়তে মার্কণ্ডের উবাচ।

বৈকল্যোচ্চারণাৎ তদা ত্রাহ্মণদ্য মহামতে:। তভঃ স রাজ।তিভূশং বিষয়: সমজায়ত ॥ বৈকল্যমেব বিপ্রস্বদন্ মামেব নিন্সতি। অনহ্মৰ্ঘ্য চ মাং সোহপ্যাহ মুনিসভ্সঃ ॥ বৈকল্যং ত্যা বিপ্রস্য রাক্ষ্যোহপ্যাহ মে য' অপত্নীকতয়া দোহহং সম্বটং মহদান্তিতঃ ॥

মার্কণ্ডের উবাচ। এবং চিন্তরতন্ত্রদ্য পুনরপ্যাহ রাক্ষ্য:। व्यनामनत्त्रा त्रांशांनर वदाश्रामिशूटले मूरन ॥ त्राक्तम खेवाठ ।

নরেক্রাজ্ঞাপ্রদানেন প্রসাদঃ ক্রিয়তাং মন। ভৃত্যস্য প্রণভস্য স্থং যুম্মবিষ্বাসিনঃ॥ রাজোবাচ।

পভাবং বয়মন্ত্রীসন্থরোক্তং বন্ধিশাচর।
তদর্থিনো বয়ং বেন কার্য্যেগ শুরু তন্মন।
অস্যান্থয়ান্য আন্ধানা দৌঃশীল্যমূপভূজাতাম্।
বেন দ্বরাত্তদৌঃশীল্যা তদ্বিনীতা ভবেদিয়ম্।
নীয়তাং যদ্য ভার্যেয়ং তদ্য বেশা নিশাচর।
অন্মন্ কৃতে কৃতং দর্কং গৃহমভাগত্দ্য নে॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
ততঃ স রাক্ষসতস্যাঃ প্রবিপ্রান্তঃ অমারয়া।
তক্ষরামান দৌঃশীলাং নিজশক্ত্যা নূপাজ্ঞয়া॥
দৌঃশীলোনাতিরোদ্রেণ পদ্দী তদ্য বিজন্মনঃ।
তেন সা সম্পরিত্যকা তমাহ লগতীপতিমু॥
অক্রন্মকলপাকেন ভর্তুস্য মহাত্মনঃ।
বিয়োজিতাহং তদ্ধেত্রয়মাসীরিশাচরঃ॥
নাস্য লোবো ন বা তদ্য মম ভর্তু শহাত্মনঃ।
মন্মব লোবো নাক্সন্ত অক্রতং ছাপভ্জাতে॥
অক্সন্মনি ক্সাপি বিপ্রবেষ্যাঃ কৃতো ময়া।
সোহ্রং ময়াপুণেগতঃ কো লোবোহক্ত মহাত্মনঃ

রাক্ষস উবাচ। প্রাপন্নামি ভবাদেশাদিমাং ভর্তৃগৃহং প্রভো। বদস্তৎ করণীয়ং তে তদাঞ্চাপন্ন পার্থিব ॥

রাজোবাচ। অমিন্কতে কতং দর্কং ত্রা মে রজনীচর। আগস্তব্যঞ্চ তে বীর কার্য্যকালে স্থতেন মে॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

তণেত্যুক্ত তুক্ত ভালতানাদার বিজ্ঞালনামূ। নিজে ভূর্গৃহং শুদ্ধাং দৌঃশীল্যাপগমাৎ তদা ॥

> ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে ঔত্তম-মন্বস্তরে দ্বিজভার্য্যানরনং নাম স্পুতিত্বোহধ্যারঃ।

### **क्रमश्रिक्याश्यायः**।

-:+:--

মার্কণ্ডের উবাচ।

তাং প্রেষয়িশী রাজাণি স্বভর্তৃত্যজনাম্।
চিন্তরামান নিশ্যা কিমত্র স্বকৃতং ভবেৎ ॥
অনর্থবোগ্যতাক ইং স সামাত্ত মহামনাঃ।
বৈকল্যাং বিপ্রমৃদিশ্র তথাতারং মিশাচরঃ ॥
সোহহং কথং করিবামি ত্যকা পদ্ধী মরা হি সা
অথবা জ্ঞানদৃষ্টিং তং পৃজ্জামি মনিস্তমম্ ॥
স্থিত্যেখং স ভূপালঃ সমাক্ষ্ত চ তং রথম্।
যযৌ যতা স ধর্মান্ধা তিকালজ্ঞা মহামৃনিঃ ॥
অবকৃত্য রথাৎ সোহ্থ তং সমেত্য প্রণম্য চ।
যথারতং সমাচ্থো রাক্ষ্পেন সমাগ্রমম্ ॥
ব্যান্ধা দর্শনিকৈর দৌঃশীলা।পগ্রমং তথা।
প্রোন্ধাং ভর্গেহে চ কার্যমাগ্রমনে চ বং ॥

ঋৰিক্লবাচ।

জ্ঞাতমেতল্ময়া পূর্কং বৎ কৃতং তে নরাধিপ।
কার্য্যমাগমনে চৈব মৎসমীপে তবাধিলম্ ॥
পুচ্ছ মামিছ কিং কার্য্যং মরেত্যুদ্বিগ্রমানসং।
দ্ব্যাগতে মহীপাল শূলু কার্য্যঞ্চ বৎ দ্ব্যা॥
পদ্মী ধর্মার্থকাম্পনাং কারণং প্রবলং নৃণাম্।
বিশেবতক্ত ধর্মক্ত সন্তাক্তভাজতা হি তাম্॥
অপদ্মীকো নরো ভূপ ন বোগ্যো নিজকর্মণাম্।
বাহ্মগো ক্তিয়ো বাপি বৈশ্বঃ শ্লোহ্পি বা নূপ
তাজতা তবতা পদ্মীং ন শোভনমহৃষ্টিতম্।
অত্যাজ্যো হি যথা ভর্ষা স্ক্রীণাং ভার্যা তথা নূণাম্

রাজোবাচ।

ভগবন্ কিং করোন্যের বিপাকো মম কর্মণাম্।
নায়ক্লাছক্লজ বলাৎ তাকা ততে। মরা।
যদ্যৎ করোতি তৎ কাতং দহুমানেন চেত্সা।
ভগবংড বিরোগার্তিভিতিনোত্তরাকান।
সাম্প্রভত্ত বনে তাজান বেলি ক ছ সা গডা।
ভিক্তিতা বালি বিশিনে সিংহবার্যনিশাচরেঃ।

ঋষিক্ষৰাচ।

ন ভক্ষিতা সা ভূপাস সিংহ্ব্যান্তনিশাচরঃ। সা প্ৰিপুত্চারি**লা সাংগ্রন্থ র** রসাত্রে ॥ রাজোবাচ।

না নীভা,কেন পাডাৰমাতে সাংগ্ৰিতা কৰফু।

মত্যস্ত্রিদং ব্রহ্মন্ যথ।বছক্ত মহিসি ॥ অধিকবাচ।

গাতালে নাগরালোহতি প্রথাতশ্চ কপোতক:।
তেন দৃষ্টা ঘ্যা তাজা ভ্রমমাণা মহাবনে ॥
গা রূপশালিনী তেন সাম্রাগেন গ্রাথিব।
বিদিতার্থেন পাতালং নীতা সা যুবতী তদা ॥
তত্তক্ত স্থতা স্কুর্নদা নাম মহীপতে।
ভার্যা মনোরমা চাক্ত নাগরাক্ত ধীমত: ॥
চয়া মাতু: সপদ্ধীয়ং সা ভবিত্রীতি শোভনা।
দৃষ্টা স্থগেহং সা নীতা গুৱা চাক্তঃপুরে গুভা ॥
বদা তু যাচিতা নন্দা ন দদাতি নুপোত্রম্।
মুকা ভবিষ্যুদীত্যাহ তদা তাং তনরাং পিতা॥
এবং শপ্তা স্থতা তেন সা চাতে তক্ত ভূপতে।
নীতা তেনোরগেক্রেণ ধুতা তৎস্ত্রা সতী॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ততো রাজা পরং হর্ষমবাণ্য তমপৃচ্ছত। বিজবর্জ্জ্যং অদৌর্ভাগ্যকারণং দয়িতাং প্রতি॥ বাজোবাচ।

ভগবন্ সর্বলোকস্ত ময়ি প্রীতিরম্ত্রমা।
কিং স্থ তৎ কারণং বেন স্বপদ্ধী নাতিবৎসলা।
মম চাসাবতীবেটা প্রাণেভ্যোহণি মহামুনে।
সাচ মাং প্রতি হংশীলা ক্রহি যৎ কারণং বিজ।
অবিক্রবাচ।

পাণিগ্রহণকালে বং ত্র্যতে নশনৈক্টর:।
শুক্রবাচন্পতিভাগে তব ভার্যাবলাকিতা ॥
তল্পুত্তে ভ্রতক্তন্তন্তা: নোমস্থততথা।
পরস্পরবিশকো ভৌ তভঃ পার্থিব তে ভৃশম্॥
তলাক্ত বং ত্রধর্মেণ পরিপালর মেদিনীম্।
পত্মীসহার: সর্কাশ্চ কুক ধর্ম্মবতী: ক্রিরা:॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যুক্তে প্ৰণিণতৈয়নমাক্ত্ত জন্মনং তভঃ। উত্তযঃ পৃথিবীপাল আৰুগাম নিজং পুরুম্॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে ঔতমমন্বতরে একসপ্ততিতমোহধারি:।

### দ্বিদপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ।

-:::-

মাকণ্ডের উবাচ।
ততঃ খনগরং প্রাণ্য তং দদর্শ বিজ্ঞং নৃপ্ত।
সমেতং ভার্যারা চৈব শীলবত্যা মুদাবিতম্ ॥
বাহ্মণ উবাচ।
রাজবর্ষ্য কৃতাথেথি হিন্মি যতো ধর্মো হি রক্ষিতঃ।
ধর্মজেনেহ ভবতা ভার্যামানরতা মম ॥
রাজোবাচ।
কৃতার্থস্থ বিজ্ঞান্ত নিজ্ঞামান্ত ।

বন্ধং স্কটনো বিপ্ল বেষাং পত্নী ন বেশনি॥
বাহ্মণ উবাচ।
নবেক্স সাহি বিপিনে ভক্ষিতা খাপনৈৰ্যদি।

নরেক্ত সাহি বিপিনে ভক্ষিতা খাপদেবলৈ 
অলং তয়া কিমন্তভা ন পাণিগৃহতে তয়া।
কোধ্যত বশমাগম্য ধর্মোন রক্ষিতভ্য়া॥
রাজোবাচ।

ন ভক্তিতা মে দ্য়িতা খাপদৈঃ সা হি জীবতি। অবিদ্যিতচারিতা কথমেতৎ করোম্যহম্ ॥ বাহ্মণ উবাচ।

যদি জীবতি তে ভার্যান চৈব ব্যভিচারিণী। তদপত্নীকতাজন কিং পাপং ক্রিমতে স্বয়া॥

। বাজোবাচ।

আনীতাপি হি সা বিপ্র প্রতিক্লা সদৈব মে। ছঃধার ন স্থায়ালং ততা মৈত্রী ন বৈ ময়ি। তথা ছং ক্রু যত্নং মে যথা সা বশগামিনী ॥ আদ্ধণ উবাচ।

তব সম্প্রীতয়ে তস্তা বরেষ্টিরুপকারিণী।
ক্রিয়তে মিত্রকানৈর্যা মিত্রবিন্দাং করোমি তান্।
অপ্রীতয়োঃ প্রীতিকরী সা হি সঞ্জননী পরম্।
ভার্যাপতভার্যাকুষেক্র তাং তবেষ্টিং করোমাহম্।
থত্র তিষ্ঠতি সা স্ক্রেন্তব ভার্যা মহীপতে।
তক্মাদানীয়তাং সা তে পরাং প্রীতিমুপৈষ্যতি॥

মাৰ্কণ্ডের উবাচ।
ইত্যুক্তঃ স তু সম্ভারানশেবানবনীপতিঃ।
আনিনায় চকারেটিং স চ তাং বিজ্ঞসন্তমঃ॥
সপ্তক্তঃ স তু তদা চকারেটিং পুনঃ পুনঃ।
তক্ত রাজ্যে বিজ্ঞপ্রেটা ভার্যাসম্পাদনার বৈ॥
যদারোপিত্তমুত্তাং তামমক্ত মহামূনিঃ।
সক্তরি তদা বিপ্রস্থাত নরাধিপম্॥

আনীয় তাং নরক্রেষ্ঠ যা তবেষ্টাম্মনোহস্তিকন্।

তৃত্ত্ব ভোগাংস্তরা সার্জ্য যল যলাংগুথাদৃতঃ।

মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যুক্তবেন বিপ্রেপ ভূপালো বিশ্বিত্ত্তলা।

সন্মার তং মহাবীর্য্যং সত্যসন্ধং নিশাচরম্॥ 
ম্বত্তেন তদা সদাং সমুপেতা নরাধিপম্।

কিং করোমীতি সোহপ্যাহ প্রনিপত্তা মহামুনে॥

তত্তেন নরেক্রেণ বিস্তরেণ নিবেদিতে।

গহা পাতালমাদার রাজপত্তীমুপাযযৌ॥

আনীতা চাতিহার্দ্দেন সা দদর্শ তদা পতিম্।

উবাচ চ প্রসীদেতি ভূরো ভূরো মুদাবিতা॥

ততঃ স রাজা রভসা পরিস্ক্রাহ মানিনীম্।

প্রিয়ে প্রসন্ন এবাহং ভ্রোপ্যেবং ব্রীষি কিম্॥

পত্তুবাচ।

যদি প্রসাদকাবণং নরেক্ত নরি তে মন:। তদেতদভিযাতে খাং তৎ কুরুল মমার্থন্॥ রাজোবাচ।

নিঃশহং জহি মতো যন্তবত্যা কিঞ্চিদীপিতম্। তদলভ্যং ন তে ভীক তবায়তে হৈ সি নাভাধা॥ পিছু যোচ।

মদর্থং তেন নাগেন স্কৃতা শপ্তা সধী মম।
ম্কা ভবিষ্যসীভ্যাহ সা চ ম্কজ্মাগতা ॥
তফাঃ প্রতিক্রিয়াং প্রীভ্যা মম শক্ষোতি চেত্তবান্
বাধিঘাতপ্রশাস্ত্যর্থং ততঃ কিং ন কৃতং মম ॥
মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ততঃ স রাজা তং বিপ্রমাহাত্মিন্ কীলৃশী ক্রিয়া। তন্কতাপনোলায় স চ তং প্রাহ পার্থিবম্॥

ব্ৰাহ্মণ উবাচ।
ভূপ সারস্বতীমিষ্টিং করোমি বচনাৎ তব।
পত্নী তবেয়মানৃণ্যং যাতু তথাক্প্রবর্তনাং॥
মার্কণ্ডেম্ব উবাচ;

ইটিং সারবতীং চক্রে তদর্থং স গিলোন্তম:।
সারবতানি স্কানি জ্জাপ চ সমাহিত: ॥
ততঃ প্রবৃত্তবাক্যাং ভাং গর্গ: প্রাহ রসাতলে।
উপকার: সধীভর্তা কুডোহরমতিত্কর: ॥
ইথং জ্ঞানং সমাসাদ্য নন্দা শীলগতিঃ প্রম্।
ততো রাজ্ঞীং পরিষ্ক্য স্বধীমূরগাম্বলা ॥
তঞ্চ সংস্কৃর ভূপালং কল্যাণোক্ত্যা প্ন: প্ন:।
উবাচ মধুরং নাগী কুডাসনপরিগ্রহা ॥
উপকার: কুহো বীর ভবতা বো মুমাধুনা।

**তে**नाच्याक्रडेशनता यम्बरीति मृत्य ७० ॥ ত্ব পুত্রে। মহাবীর্য্যো ভবিষাত্তি নরাধিপ। তক্তাপ্ৰতিহতং চক্ৰমক্তাং ভূবি ভবিবাতি॥ नर्कार्थमाञ्चल्या वर्षाञ्चीनण्डलाः। मयखदत्रभदत्र। धीमान् खविवाकि न देव मञ्चः ॥ ইতি দ্বা বরং ভগ্নৈ নাগরা**ত্তর**াভিত:। সধীং তাং সম্পরিছকা পাতালমগ্রস্থনে **৷** তত্ত্ব তদ্য তন্ত্ৰা সাৰ্দ্ধং রমভঃ পৃথিবীপতে:। জগাম কালঃ স্থাহ।ন্ প্রজাঃ পালয়তত্ত্ব।।। ভড়ঃ স তস্যাং তনরো লভ্তে রাজ্যে মহামান:। পৌর্বমাস্যাং যথা কান্তশ্তক্তঃ সম্পূর্বমণ্ডলঃ ॥ তিমিন্ জাতে মুদং প্রাপু: প্রজা: দর্কা মহাত্মনি দেবজ্নু ভরো নেজঃ পুশার্**টিঃ** পপাত চ॥ **छमा मृष्ट्री वश्रः कांखः छविद्याः भीगामव ह ।** উত্তমশ্চেতি মুনয়ো নাম চক্তু: সমাগতা: ॥ জাতোহয়মুন্তমে বংশে তত্র কালে তথোতমে। উত্তমাব্যবত্তেন ঔভ্তমোহয়ং ভবিবাতি॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
উত্তমসা স্কতঃ সোহথ নারা খ্যাততথে ভিনঃ।
মহুরাসীৎ তৎপ্রভাবো ভাগুরে প্ররুতঃ মন ॥
উত্তমাধ্যানমধিলং জন্ম হৈবোত্তমস্য চ।
নিত্যং-শূণোতি বিবেষং স ক্লাচির গছতি॥
ইতির্কাবৈত্তথা প্রৈত্তর্জুভির্কা ক্লাচন।
বিয়োগো নাস্য ভবিভা শূণৃতঃ পঠতোহিদি বা॥
তস্য মহন্তরং প্রক্ষন্ বদতো মে নিশামর।
ক্রায়ভাং তত্ত্ব যুশ্তরো বে চ দেবাতথর্বরঃ॥

ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুৱাণে ঔত্তমমৰ্স্তরে দিসপ্ততিতমোহধ্যার: ॥

## ত্রিদপ্ততিতমোহধ্যায়:।

-:\*:--

মার্কণ্ডেম উবাচ।

সবস্তরে ত্তীয়েৎ সিরোজমস্য 'প্রজাপতে:।

দেবানি সুষীন্ তৃপান্নিবোধ গদতো মন॥
স্থামানতথা দেবা বথানামাসুকারিণ:।

সত্যাধ্যক বিতীয়েইনাজিদশানাং তথা গণ:॥

তৃতীয়ে তৃ গণে দেবাঃ শিবাধ্যা মুনিসন্তম।

শিবাং স্কপততে তু প্রতাঃ পাণপ্রণাশনাঃ॥
প্রতদিনাধ্যক গণো দেবানাং মুনিসন্তম।

**हर्ज्यक्रम कथिकः ऐतमगास्टरम मन्नाः ॥** वनवर्छिनः शक्ष्यम्भि (मवाञ्च शत्र विकः। ষ্ণাধ্যাত্ত্বরূপাল্ড স্ক্র এব মহামুনে॥ এতে দেবগণাঃ পঞ্চ স্থতা মজভুজন্তথা। মৰস্তবে মহুশ্ৰেষ্ঠ সৰ্ব্ব থাদশকা গণাঃ॥ তেষামিলো মহাভাগলৈলে।ক্যে স গুরুর্ভবেৎ। শতং কত্নামাত্তা স্পাতিন মে নামতঃ 🛭 যস্যোপসর্মনাশায় নামাকরবিভূষিতা। ব্দ্যাপি মানবৈৰ্বাথা গীয়তে তু মহীতবে ॥ ত্রশান্তির্দেবরাট্ কান্তঃ স্থান্তিং স প্রথছড়ে। महिष्ठः नियमकारिमाखरेषय् यस्यविनः ॥ ভালঃ পর ভটিদিবো মহাবলপরাক্রমা:। পুত্রাক্ষস্য মনোরাসন্বিথ্যাতাল্ডিদশোপমা:॥ তৎস্তিসক্ষবৈভূমি: পালিত।ভূলরেখর:। যাবনাম্ভরং তৃস্য মনোরুত্তমতেজ্ব:॥ স্বতেজ্যা হি তপ্রো ব্রিষ্ঠ্যা মহাম্মনঃ। তনয়াশ্চান্তরে তিমিন্ দপ্র দপ্রধ্যোহভবন্॥ ত্তীয়মেতৎ কথিতং তব মহস্তরং ময়া। ভামসদ্য চতুর্থস্ক মনোরস্করমূচ্যতে ॥ বিষোনিক্ষানো যস্য যশসা দেগতিতং জগৎ। জনা তদ্য মনোত্র জান শ্রেষতাং গদতো মম।। অতী ক্রিমদেবাণামম্নাং চরিতং তথা। তথা জনাপি বিজেয়ং প্রভাবক মহাত্মনাম্॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে ঔত্তমমন্বস্তরং নাম ত্রিসপ্ততিত্বোহধারঃ।

## চতুংসপ্ততিতমোহধ্যায়:।

মাৰ্কণ্ডের উবাচ।

त्रावाण्ड् वि विशाणः चत्रांद्रि नाम वीर्यावन्।
चानकर्वव्यक् विशाणः मर्शादम्बन्धां विज्ञः ॥
जमाग्रः स्मर्थ श्रांनाः महिनाशिष्ट्रा तिः।
भित्रीनांक भेजः जम्म स्तानां मिण्यः विकः ॥
जमा नीर्याग्यः भट्डा। नाजिनीर्याग्र्या मृत्न।
कार्तन व्या निर्मनः एजामहिकनाज्या ॥
म जर्मा जिल्डां स्तान् एजामहिकनाज्या ॥
ज जर्मा जिल्डां स्तान् एजामहिकनाज्या ॥
ज जर्मा जिल्डां मुद्दान प्रदेशान मरक्त्राज्यः।
जिल्लाह्म मुद्दान विज्ञानिमहिन्मम् ॥
जः वीर्याश्रीनः निष्ट्रेज् हेज्याज्यः स्वः थिजम्
सन्द्रा विम्हार्या नीष्ठां काष्ठां विज्ञां ।

वाक्याक्त्राच्यः त्रांश्री वनः शका निर्विक्षमानगः। ভণভেপে মহাভাগো বিভন্তাপুলিনে হিড:। গ্ৰীত্মে পঞ্তপা ভূষা বৰ্ষান্ত্ৰক্ষাশিক:। জনশায়ী চ শিশিরে নিরাহারো যতত্তঃ ॥ ততন্ত্রপশতন্ত্র প্রার্ট্কালে মহাপ্লব:। वक्षाः स्मिनः **८मटेचर्क्तर्यस्त्रस्मयः छम्**॥ ন দিখিজায়তে পূৰ্বা দক্ষিণা বান পশ্চিমা। নোভরা তমসা সর্কামস্থিতিমিবাভবৎ 🛭 ততে। २ जिञ्जवरम जूभः म महााः 🕰 त्रि ज्यु हेम्। প্রার্থয়ন্নপি নাবাপ ব্রিম্মাণোহভিবেগিনা। व्यथ मृत्त्र कलोष्यन द्विष्रभाषा भशी पि छि:। আদিসাদ জলে রৌহীং স পুচেছ জগৃহে চ তাম্ ॥ তেন প্লবেন স যগাবৃহ্নমানো মহীতলে। ইতশ্চেতশ্চান্ধকারে আসসাদ ভটং ততঃ 🕩 বিস্তারি প্রমত্যর্থং ছম্তরং স নৃপ্তরন্। তবৈথব কুৰ্যুমাণোহগুদ্রম্যং বনম্বাপ সঃ॥ তত্রাশ্ধকারে সা রৌহী চকর্ষ বস্থাধিপম্। পুচেছ লগ্নং মহাভাগ্ন কুলং ধমনিসম্ভত্ম ্বা তন্যা । তেলা । তেলা । त्मारुक्तकाद्य खमन् जृत्या मननाकुष्ठमानमः ॥ विकास मास्तागः उः পृष्ठेम्लाम् नज्दलदम् । নরেক্রং তম্বনসাস্তিঃ সাম্গী তম্বাচ হ 1 কিং পৃষ্ঠং বেপথুমতা করেণ ম্পৃশদে মম। অন্তব্যবাদ্য কাৰ্য্যদ্য সঞ্জাতা নূপতে গতিঃ ॥ নাস্থানে বো মনো যাতং নাগম্যাহং তবেশ্বর কিন্তু তৎসঙ্গমে বিশ্বমেষ লোল: করোতি মে মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ। ইতি শ্ৰুষা বচন্তম্যা মৃগ্যাশ্চ স্বগ্তীপতিঃ। জাতকৌতৃহলো রৌহীমিদং বচনমত্রবীৎ 🖟 রাজোবাচ। का दः अहि मृशी योकाः कथः मास्यव्या । करेम्हव लारला या विद्या प्रशास क्रां का মৃগু্যুব্চি। অহং তে দয়িতা ভূপ প্রাগাদম্ৎপলাবতী। ভাগ্যা শতাগ্ৰমহিষী ছহিতা দৃঢ়ধ্যন:॥ ब्रांटकां वां है। কিম্বরা তৎ ক্বতং কর্ম যেনেমাং ধোনিমাগতা পতিব্ৰতা ধৰ্মপরা সা চেখং কথদীদৃশী । মুঞাবাচ।

अरः **निक्**रृट्ह वाना नशीजिः नहिला दमम्।

ब्रह्मः श्रष्टा प्रपटेन कः मृशः मृशाः ममाश्रष्टम् ॥ তত: সমীপণ্ঠিকা মন্ত্রা সা তাড়িতা মুগী। মীরা এতা গতান্তর কুম: প্রাহ ডতে। মুগ: ॥ मा किरमवः मखानि धिक एक दलोः भीनामी हुनम् আধানকালে। বেনারং ছরা মে বিফলীকুতঃ ॥ ৰাচং শ্ৰুতা ততন্ত্ৰস্য মামুষ্পেৰ ভাষতঃ। ভীতা তমক্রবং কোৎসীত্যেতাং বের্যনিমুশাগত:॥ ততঃ স প্রাহ পুলোহ্হমুর্যেনির তিচকুষঃ। স্তুতপা নাম মুগ্যান্ত সাভিলাবো মুগোহভবম্॥ ইমাঞ্চামুগতঃ প্রেল্লা বান্ধিভশ্চানন্না বনে। ত্ব্যা বিযোজিতা হুষ্টে তক্ষাচ্ছাপং দ্বামি তে। ময়া চেকিং ভবাজানাদপরাধঃ ক্রতো মুনে। প্রসাদং কুরু শাপং মে ন ভবান্ দাতুমইতি ॥ ইত্যুক্ত: প্রাহ্ মাং সোহপি সুনিরিখং মহীপতে। ন প্রয়েচ্ছামি শাপংতে ষ্ট্যাত্মানং দ্টামি তে॥ ময়া চোক্তং মুগী নাহং মৃগরূপধরে। বনে। লগানেহলাং মুগীং ভাবন্ময়ি ভাষো নিবৰ্ত্যতাম্ ইত্যুক্ত: কোপরস্থাক্ষঃ স আহে ফ্রিভাধর:। নাহং মৃগী তথেত্যুক্তং মৃগী মৃঢ়ে ভবিষ্যাসি॥ ততো ভূশং প্রব্যথিতা প্রণম্য মুনিমক্রবম্। স্বরং স্থমতিকুদ্ধং প্রদীদেতি পুনঃ পুনঃ॥ বালানভিজ্ঞা বাক্যানাং ভতঃ প্রোক্তমিদং ময়া। পিত্র্যাস্তি নারীভিরিয়তে হি প্রতি: স্বয়ম্॥ পতি তাতে কথঞাহং বুণোমি মুনিসত্তম। মাপরাধাথবা পাদে প্রদীদেশ নমাম্যহম্॥ প্রদীদেতি প্রদীদেতি প্রণতায়া মহামতে। ইখং লালপ্যমানায়াঃ স প্রাত্মুনিপুলবঃ॥ ন ভবত্যগ্ৰথা প্ৰোকেং মম বাক্যং কদাচন। মৃগী ভবিষাসি মৃতা বনেহসিলেব জনানি॥ মৃগতে চ মহাবাহত্তৰ গৰ্ভমূপৈয়াতি। লোলো নাম মুনে: পুত্ৰ: সিদ্ধবীৰ্য্যস্য ভাবিনি ॥ ষাতিস্বাভবিত্তী স্থং তস্মিন্ গর্ভমুপাগতে। ষ্তিং অপাপ্য তথা বাচং মাতৃষীমীররিষাসি॥ তিমিন্ কাতে মুগীছাৎ স্বং বিমুক্তা পতিনাৰ্চিতা লোক।নবান্সাসি প্রাপা। যে ন হৃত্তুভকর্মডি:॥ সেহিপি লোলো মহাবীৰ্যঃ পিতৃশত্ৰ

নিপাত্য বৈ।

জ্বিং বহুদ্ধরাং ক্লংবাং ভবিব্যতি ততো মহু: ॥

এবং শাপমহং লক্ষ্ম মুতা তির্বাজ্মাগত।।

ইংসংম্পান্তি গ্রহাহিনৌ সম্ভূতো জ্ঠেরে মম ॥

অতো এবীমি নাস্থানে তব বাতং মনো ময়ি। ন চাপ্যগম্যো গর্ভস্থো লোলো বিদ্যং ক্ষোত্যসৌ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

এবম্কন্তত: সোহপি রাজা প্রাপ্য পরাং মৃন্ম্।
পুরো মনারীন্ জিড়েতি পৃথিবাাং ভবিতা মহুঃ
তততঃ স্থ্বে পূজং দা মৃগী লকণাবিতম।
তিমিন্ জাতে চ ভূতানি দর্জাণি প্রায় মূল্ম্॥
বিশেষতক্ষ রাজাদৌ পুরে জাতে মহাবল।
দা বিম্কা মৃগী শাপাৎ প্রাপ লোকানস্তমান্॥
ততত্ত্তর্ধরঃ দর্কে দমেত্য ম্নিসন্তম।
অবৈক্যা ভাবিনীমৃদ্ধিং নাম চক্র্পাহাস্থনঃ ॥
তামসীং ভক্ষমানারাং বোনিং মাত্যাঁ জায়ত।
তম্সা চারতে লোকে ভামসোহ্যং ভবিষ্যতি॥
ততঃ স তামসন্তেন পিতা সংবৃদ্ধিতা বনে।
জাতবৃদ্ধিক্বাচেদং পিতরং ম্নিসন্তম ॥
করং তাত কথং বাহং পুরো মাতা চ কা মম।
কিমর্থমাগতক্ষ স্থমেতং সত্যং ব্রীছি মে॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ততঃ পিতা যথাবৃত্তং শ্বরাজ্যচ্যাবনাদিক্ষা। তভাচটে মহাবাহ: পুত্ৰভ জগতীপতি:॥ শ্রুতা তৎ সকলং সোহনি সমারাধ্য চ ভাস্করম। অবাপ দিব্যাভাছাণি স্মংহারাশ্যশেষত: ॥ কৃতাপ্রভানরীন্ জিছা পিছুরানীর চাস্তিকম্। অহুজাতান মুমোচাথ ডেন সং ধর্মান্তিত: 🛭 পিতাপি তভ স্থান লোকাংজপোৰজসমৰ্জিতান विरुष्टेरमर: मच्चोरका मृ**डे। भूखमूबः सूर्यम्**॥ ভিতা সমস্তাং পৃথিবীং **তামসাথ্য: স পার্থিঃ।** তামসাথ্যো মহুরভূৎ ত**ভ মহন্তরং পৃণ্**॥ (य (मवा यद्शिक्यम्ड (मर्वाख्या (य ज्यवंतः। যে পুত্রাশ্চ মনোক্তস্ত পৃথিবীপরিপালকাঃ॥ সত্যান্তথান্তে স্থির: স্ক্রপা হরম্ভণা,। এতে দেবগণান্তক সপ্তবিংশভিকা মুনে। মহাবলো মহাবীৰ্যাঃ পুতৰ্তেশপলক্ষিতঃ । শিথিরিক্তরথা তেখাই দেবানামভব্ৰিভু: ॥ (क्रां कि क्षीमा पृथ्: काराटेम्ह खार त्रिर्वे न क खथा। পীবরশ্চ তথা ব্রহ্মন্ সপ্ত সপ্তর্ব হোহ্ ভবন্ ॥ नदः काखिः भाउताख्यात्यकान्यकामद्रस्था। পুত্ৰান্ত তামভাগন্ **রাজান: সুমহাবলা:** 🛭 ইতি মার্কভেরে মহাপুরাণে তামসমবস্তরে চতুঃসপ্ততিভ্ৰমোহধ্যারঃ 🛭

### পঞ্চপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ।

#### --- • : • ---

মাৰ্কণ্ডেম উৰাচ। भक्षत्मारु भि भूनिखं ऋन् देवराजा नाम विक्षां । ডজোৎপত্তিং বিশ্বরশঃ শৃণুষ কথয়ামি তে॥ ঋষিরাদী নাহাভাগ ঋতবাগিতি বিশ্রতঃ। তভাপুত্ৰভ পুত্ৰোহভূতেবতাত্তে মহাপান:॥ স ভশু বিধিবজ্ঞকৈ আভকৰ্মাদিকাঃ ক্ৰিয়া:। **उर्धापनवनानीः क न नानीत्नार्**ख्याद्या যতঃ প্রভৃতি লাভোহনৌ ততঃ প্রভৃতি দোহপারিঃ দীর্ঘরোপপর।মর্শমবাপ মুনিপুস্বঃ॥ মাতা তক্ত পরামার্ত্তিং কুঠরোগাদিপীড়িতা। অপান সাপিতা চাক্ত চিস্তরামাস হংথিত: ॥ কিমেত্ৰিতি সোহপ্যস্য পুলে।পাস্ত।স্তত্মতি:। মুনিপুত্রস।সলুধীম্ জঞাহ ভার্যামন্যস্য। ততো বিষয়মনসা ঋতবাগিদমুক্তবান্। অপুত্ৰতা মহব্যাণাং শ্ৰেম্বসে ন কুপুত্ৰতা ॥ কুপুরো হৃদয়ায়াদং সর্বদা কুরুতে পিতৃ:। মাতৃশ্চ স্বৰ্গসংখাংশ্চ স্বপিতৃন্ পাতয়ত্যধঃ ॥ স্থলাং নোপকারার পিতৃণাঞ্চ ন তৃপ্তয়ে। পিতোছে থাৰ ধিগ্ৰুম তসা ত্ৰুতকৰ্মণঃ॥ **धक्रात्ड उनमा (यवाः नर्कालाकां क्रिम्म**काः। পরোপকারি্ণ: শাস্তা: সাধুকর্মণান্ত্রতাঃ ॥ অনিবৃতিং তদা মদদং পরলোকপরাযুখন্। নরকার ন সকাতৈয় কুপুদ্রালম্বি জন্ম ন:॥ করোতি স্থালং দৈজমহিতানাং তথা মুদম্। অকালে চ জরাং পিজোঃ কুপ্তঃ কুকতে গ্রুবম্ ॥ মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

এবং সে| হৃত্যস্তৃত্তীসা পুজাসা চরিতৈমুলিঃ।
দক্ষানমনোর্ভিরুজিং গগমপুজ্ত।
শৃত্যাগুবাচ।

স্ত্রতেন পুরা বেদা গৃহীতা বিধিবয়য়া।
সমাপ্য বেদান্ বিধিবং কুটো দারপরিগ্রহঃ ॥
সদারেণ ক্রিয়াঃ কার্যাঃ শ্রোতাঃ মার্তা ব্রট্কিয়াঃ
ন মে ন্যনাঃ কৃতাঃ কৃতিদ্বার্থদ্য মহামুনে ॥
প্রাধ্য জনিভ্নারং প্রায়ে বিভাতা মুনে ॥
প্রাধ্য জনিভ্নারং প্রায়ে বিভাতা মুনে ॥
সোহরং কিমাল্লোবেণ মম দোবেণ বা মুনে ।
জল্প:ধাবহো জাতো বৌঃশীল্যাল্প্রশোকদঃ ॥

পর্ন উবাচ। রেবত্যতে মৃনিশ্রেষ্ঠ আডোহরং তনরস্তব। তেন হু:ধায় তে হুষ্টে কালে **য**ন্দাৰ্থায়ত ॥ ন তেহপঢ়ারো নৈবাস্য মাতুর্নায়ং কুল্স্য তে। তদ্য দৌ:শীল্যহেতুস্ত ব্লেবত্যন্তমুপাগতম্॥ থাতবাগুবাচ। যশামানৈকপুজন্ত রেবতান্তসমূত্তবন্। দৌ:শীল্যমেত্ত সা তক্ষাৎ পততামাণ্ড রেবতী। মার্কণ্ডেয় উবাচ। তেনৈবং ব্যাহ্রতে শাপে রেবড়াক্ষং পপাত হ। পশুত: সর্বলোকশু বিশ্বয়াবিষ্টচেত্তস:॥ ভাসয়ামাস সহসা বনকলরনির্বর্ম্॥ কুমুদান্ত্রিশ্চ তৎপাতাৎ খ্যাতো বৈরবতকোহভবৎ অতীবরম্যঃ সর্কাস্যাং পৃথিব্যাং পৃথিবীধরঃ॥ তস্যর্কস্য ভূবা কান্তির্জাতা পক্ষমী সর:। ততো লজে তদা কন্সা রূপেণাতীব শোভনা॥ রেবতীকান্তিসভূতাং তাং দৃষ্ট্রা প্রমূচো মুনি:। তগ্যা নাম চকারেখং রেবভী নাম ভাগুরে॥ পোষয়ামাস চৈটবভাং স্বাশ্রমাভ্যাসসম্ভবাম্। প্রমুচ: সুমহাভাগতঃ স্মিরেব মহাচলে ॥ তाञ्च वोवनिनौः पृष्ट्रा कनाकाः क्रमानिनौम्। স মুনিশ্চিন্তয়ামাস কোহস্যা ভর্তা ভবেদিতি॥ এবং চিন্তরতন্তস্য যথে। কালো মহান্ মুনে। ন চাসদাদ সদৃশং বরং তদ্যা মহামুনিঃ॥ ততত্তস্যা বরং প্রস্তুমগ্রিং স প্রেম্চো ম্নিঃ। বিবেশ বহিশালাং বৈ প্রেষ্টারং প্রাছ হব্যভুক্ ॥ মহাবলো মহাবীর্যাঃ প্রিয়বাগ্ধর্ম্বৎসলঃ। তুৰ্গমো নাম ভবিতা ভৰ্তা হৃদ্য। মহীপতি:॥ মাৰ্কণ্ডেম উবাচ। অনন্তর্ঞ মৃগয়াপ্রদঙ্গেনাগতো মুনে। প্রিয়ত্তবার্যভবো মহাবলপরাক্রম:। भूटा विक्रमणीनमा कानिलोखर्वदां ॥ স প্রবিশ্বাশ্রমণদং তাং তবীং জগতীপতিঃ। অপশ্রমানস্তম্বিং প্রিয়েত্যামন্ত্রা পৃষ্টবান্ ॥

রাজোবাচ।
ক গতো ভগবনিসাণাশ্রমামুনিপুলবঃ।
তং প্রণেতৃমিহেছামি তৎ বং প্রক্রাকি শোভনে।
মার্কণ্ডের উবাচ।
অগ্নিশালাং গতো বিপ্রতং শ্রমা ত্যা ভাবিত্য

প্রিরেড্যানপ্রণইক্ষর নিশ্চক্রাম স্বরাখিত: ॥

য় দদর্শ মহাস্থানং রাক্ষানং অর্থনং মূনি: ।

লব্রেক্রচিক্সহিতং প্রপ্রেষাবনতং প্র: ॥

তিমান দৃষ্টে ভতঃ শিব্যমুখাচ স ভূ গৌতমম্।

গৌতমানীয়তাং শীস্ত্রমর্গোহস্য কগতীপতে: ॥

একভাবদমং ভূপশ্চিরকালাছপাগত: ।

ভামাভা চ বিশেবেশ বোগ্যোহ্বস্য মতো মম ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

ততঃ ব চিত্তনামাৰ রাজা কামাত্কারণম্।
বিবেদ চ ন তলোনী জগুতেহর্ত্তক তং নুগঃ ॥
তমাদনগতং বিশ্রো গৃহীভার্দং মহামুনি:।
খাগতং প্রান্থ রাজেন্দ্রমণি তে কুশলং গুছে ॥
কোবে বলেহথ মিতের ভূত্যামাতেয় নরেখন্ন।
তথান্তনি মহাবাহো যত্ত সর্বাং প্রতিষ্ঠিত।
পৃক্ষামান্যান্ততো নাহং কুশলিন্যোহণর।ভব ॥
রালোবাচ।

ছংগ্ৰাদাদকুশনং ন কচিম্মম হ্বত । ফাতকোতৃহল-চাম্মিম ভাগ্যাতা কা মুনে ॥ ঋবিফাণাচ।

বেব গী স্থমহাভাগা তৈলোকাভাগি স্কারী। ভব ভাগ্যা বরাহোগা তাং স্বং রাজন্ন বেংসি কিম ॥

#### ब्राटकावां है।

सङ्घाः **मां इज**नशाः क तिन्नै इनशाः विद्याः। स्वाद्वेषाः स्वानां काल कालाकः वक्तथास्॥ विवाशिः निम्निनैदेकःव त्वित्ति खार्याः शृट्ह वित्रः। धिष्ठेष्ठि त्य न खगदन् त्ववजैः ति त्री का विश्वस्

#### ধ বিফ বাচ।

লগেতি সাম্প্রতং বেষং ছয়ে কোবর র্নিণী। কং বিস্মৃতং তে ভূপাল প্লাহোরং গৃহিণী তব॥

রাজাবাচ।

ত পুৰুং ময়া কিছ ভাবো হুটো ন মে মুনে। বি কোশং ভবান কৰ্জুমহত্যস্থে ঘাচিতঃ ॥ শ্বিক্ৰাচা

বং ববীৰ ভূপাল ন ভাৰত্বৰ দ্বিভঃ।

াজহার ভৰানেতৰ ছিলা নূপ চোনিভঃ ॥

রা পৃষ্টো ছতবহুঃ কোহতা ভর্তেতি পার্থিব।

বিতা তেন চাপু।কো ভবানেবাল্যা বৈ বরঃ॥

দুগুহতাং সন্তা দুভাঃ কুতাং করা নগ্ধিপ।

প্রিখেত্যামন্ত্রিতা চেরং বিচারং কুলবে কথম্ ।
মার্কণ্ডের উব'চ।
ততেই সাব ভবস্মোনী তেনোক্রং পৃথিবীপতিঃ।
ঋষিত্রপোন্যতঃ কর্ত্রুং তন্তঃ বৈবাহিকং বিধিম্ধ
তম্ন্যতং সা পিতরং বিবাহার মহামুদে।
উবাচ কলা বং কিঞিং প্রশ্রেষাবনতাননা ।
বিবি মে প্রীতিমাংতাত প্রসাবন কর্তুম্র্সি।
বেবত্যাক্ বিবাহং মে তৎ করোতু প্রসাদিতঃ।
ঋষিক্রাচ।

রেবত্যকংন বৈ ভদ্রে চক্রবোগি ব্যবস্থিতম্। অভ্যানি সন্তি থকাণি স্বক্র বৈবাহিকানি তে ॥ কভোবাচ।

ভাত তেন বিনা কালো বিফল: প্রক্তিভাতি মে। বিবাহো বিফলে কালে মহিধায়াঃ কথং ভবেৎ ॥ ঋষিফবাচ।

ধাত গণিতি বিধ্যাত স্থপনী রেবতীং প্রতি।
চকাব কোপং ক্রছেন ভেনকং বিনিপাতিও স্॥
ময়া চালে প্রতিজ্ঞাতা ভার্যোতি মনিরেকণা।
ন চেচ্ছণি বিবাহং সংসম্ভাইং নং স্মাগতম্॥
কভোবাচ।

খতবাক্স মূনিতাত কিমেবং তপ্তথা তেণঃ।
ন স্বয়া মন তাতেন ব্ৰহ্মবন্ধোঃ স্ত্তামি কিন্
ধ্বিক্ষবাচ।

ব্ৰহ্মবন্ধাঃ স্থান স্বং বালে নৈৰ ভগস্থিনঃ। স্থা সং মম বো দেবান্ কর্ম্ঞান্ সমুংসহে॥ কভোষাচ।

তপত্ৰী যদি নে ভাতত্তৎ কিমুক্ষমিদং দিবি। সমারোপ্য বিবাহো মে ভদ্কে ক্রিয়তে ন তু॥ ঋষিকবাচ।

এবং ভবসূ ভদ্রং তে ভদ্রে প্রীতিমতী ভব। আরে:পথানীন্দুনার্গে বেবসূক্ষণ ক্লতে তব॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

তততথঃপ্রভাবেণ রেক্ছাকং ব্যাস্নিঃ।
যথা পূর্বং তথা চক্রে নোমবেণী বিলোভম॥
বিবাহকৈব ছহিত্বিধিবস্ত্রহোগিন্য।
নিপাল প্রীতিমান্ ভূরো শ্লামাতারমথারবীং।
উবাহিকং তে ভূপান ক্ৰাফ্রাং কিং দদাম্ভম্।
ছর্লভামণি দাসামি মস্বেপ্রভিত্তং তথাঃ॥

রাজে(বচি। ননো: খারজুবভাহমুৎশয়: সম্ভটো মুনে। मवस्त्राधिनाः भूजः घरव्यनानः बृत्समारम् ॥ विक्रवातः।

ভিৰিষ্যভোগ তে কামো মমুপ্তৰণৰো মহীম্। সকলাং ভোক্ষাভে ভূপ ধৰ্মবিচ্চ ভবিষ্যৱি॥ মাৰ্কণ্ডেশ্ব উবাচ 1

ভামাণার ভভো ভূপঃ শ্রমেৰ নগরং বযৌ। ভন্মাদৰায়ত হুতো রেবত্যাং হৈরতো মহঃ॥ म्द्राप्त मक्टेनर्थ टेन्द्र श्वान देवत्र भवा कि छः । विकार्णि विनमाद्यार्थी विनिविद्यार्थमाञ्चवि ॥ जम् मध्यद्वद दश्यान मुनिद्यदक्त भार्थियान। क्षामानान् मन्ना बच्चन् विरवाध स्मारिकः ॥ স্থানধনন্তত্ত দেবান্তথা ভূপতয়ো দিজ। হৈবকুঠান্চামিতাভান্দ চতুর্দল চতুর্দল ॥ ভেষাং দেৰগণানাম্ভ চতুৰ্ণামপি চেশ্বর:। নামা বিভূরভূদিক্র: শতহক্ষোপলকক:।। हित्रगारतामा (बमञ्जित्रद्ववाहरूपानतः। বেদবাছ: সুধানা চ পর্জ্জাত মহামূলি: ॥ विश्विष्ठ महाञारणा (वहरवहां ख्यांत्रणः। এতে সপ্তর্বর-চাসন হৈবতভাস্তরে মনো: ! दणवकुर्षश्वीर्याः स्वर्षेश्यापानाः। সভ্যকাদ্যাগুটেধবাদন হৈবতক্স মনো: স্থতা: ॥ বৈৰতান্তান্ত মনবঃ ক্ৰিতা বে ময়া তব। সায়জুবাৰয়া হেতে মাবেচিষ্মতে মহুস্॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে বৈবতময়স্তরং নাম পঞ্চলপ্ততিতমোহধ্যার:।

ষ**ট্দগুতিতমো**হধ্যায়ঃ।

মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যেত্ৎ কথিতং ভূত্যং পঞ্চ মবস্তবং মরা।
চাকুবত মনোঃ ৰঠং প্ররতামিদমন্তরম্ ॥
অক্তমানি লাতোহসৌ চকুবং পরমেটিনঃ।
চাকুবত্যক্তক লয়ভালিরশি বিজ ॥
অনমিত্রত আবাহাকির তার্যা মহাদ্দনঃ।
লক্ষে ভ্রতং ভ্বিহাংসং গুচিং লাভিদ্দরং বিভূম্ ॥
লাজ্য মাতা নিলোৎসকে ভিত্যুলাপ্য তং পুনঃ
পরিষক্তি হার্কেন পুনক্ষাপ্যব্যব।
লাভিদ্দরং স লাভো বৈ মাভূক্ৎসক্ষাভিতঃ।
লহাস ডং ভ্রা মাডা সংকুরা বাক্যব্রবীৎ ॥

ভীতাত্মি কিমিনং বংস হালো ব্যক্তিন ভব ৷ অকালবোধঃ সঞ্চাতঃ কলিৎ পশুদি শোভনগ্ ৷ পুত্ৰ উবাচ ৷

মামর্ড মিছতি পুরো মার্জারী কিং ন পঞ্চ নি। অন্তর্জানগতা চেয়ং বিতীয়া জাতহারিণী ॥ পুত্রপ্রীত্যা চ ভবতী সহাদা মামবেক্ষতী। উল্লাপ্যোলাপ্য বছশ: পরিবজ্জি মাং বঙ্গী উদ্ভেপ্লকা স্বেহসম্ভবাস্ত্রাবিলেক্ষণা। ততো ম্মাণতো হাস: শৃণু চাপাত কারণম্॥ পার্থে প্রসক্ত। মার্জ্জারী প্রসক্তং মামবেকতে। তথাস্তদ্ধানগা চৈব দিতীয়া জাতহারিণী ॥ चार्थात्र जिद्रहमस्त्र यदेशदेवस्य मस्मानति । প্রবুত্তে স্বার্থমান্থার তথৈব প্রতিভাসি মে। কিন্তু মতুণভোগার মার্জারী আতহারিণী। ত্ত্ৰ ক্ৰমেণে পভোগ্যং মতঃ ফলমভীপালি ॥ न मार जानानि काश्राप्य न टिल्यानकुण मना সভতং নাতিকালীনং পঞ্চদপ্তদিনাত্মকম । ভথাপি ন্নিছসে সাম্রা পরিষ্ক্ষদি চাপ্যতি। ভাতেতি বৎদ ভদ্ৰেতি নিৰ্ব্যলীকং ব্ৰবীষি মান্। মাতেবাচ।

ন ড্ৰেম্পকার্থেং বৎস প্রীত্যা পরিছলে। ন চেদেতত্বংপ্রীতৈয় পরিত্যক্তাম্মহং স্বরা। স্বার্থো মন্বা পরিত্যক্তো যন্ত্তোমে তবিব্যক্তি। মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যুক্তা সা তমুৎস্কা নিক্রান্তা স্তিকাগৃহাৎ। জড়াসবাহ্করণং ওদ্ধান্তঃকরণাত্মকম্। জহার তং পরিতাতেং সাতদা জাতহারিণী। সা হল তং তদা বালং বিক্রাস্তস্য সহীভ্ত:। প্রস্তং পত্নীশরনে ক্লস্য ভদ্যাবদে স্থ্যু ! তমপালগতে নাখা গুৱীছা ত্ৰা চাৰ্ম্ম। তৃতীরং ভক্ষমান সাজনাজনাতহারিণী ॥ ত্রতা হতা তৃতীয়ন্ত ভক্ষতাভিনিম্বণা। করোভাত্মদিনং সা তু পরিবর্ত্তং তথান্তরোঃ গ বিক্রান্তোহশি¦ভতত্তস্য স্থতসৈতে মহীপতিঃ। কার্যামাস সংস্থারান্ রাজ্ঞস্য ভবস্তি বে ॥ चानत्मिकि ह नामामा निका हत्क विधानकः। सूना भवस्त्रा वृष्टका विकाखः म नवाधिभः॥ কুতোপন্ত্ৰং ভব্ত গুৰুত্বাহ ভূমারক্ষ্ জনস্তাঃ প্রাঞ্পন্থানং ক্রিরতাকাভিবাদনম্ ঃ म अरबाखकः अवा विक्टेम्यवम्यांवरीयाः

বল্যা বে ককমা মাক। জননী পাদিনী হু কিম্ ॥

ভরক্ষাত ।

নবিরং তে সভাভাগ জনিত্রী জারুধাত্মজা।
বিজ্ঞান্তপ্যান্তমহিনী হৈমিদী নাম নামভঃ ॥

জানন্দ উবাচ।
ইয়ং জনিত্রী হৈজিন্য বিশাল্ডামবাসিন্ম্।
বিঞ্জান্ত্রাহেবাধপুত্রন্য বোহন্যাং জাত্রোহ্ছতো ব্রম্
ভর্কবাচ।

কুতবং কথরানম্ম চৈত্রঃ কো বা প্রোচ্যতে।
সঙ্কটং মহদাভাতি ক মাতোহত ব্রীবি কিন্
আনন্দ উবাচ।

ভাতে হিম্মবনী ক্রমা ক্রিয়সা গৃহে বিজ ।
তৎপদ্ধাং গিরিভলার মাদদে ভাতহারিণী ॥
তরাত্র মৃকে। হৈমিস্তা গৃহীতা চ ক্রতক্ষ সা।
বোধসা বিজ্ঞাপ্ত নীতবতী পুন: ॥
ভক্ষমামান চ ক্তং তস্য বোধবিজন্মন: ।
স তত্র বিজ্ঞাপ্ত ইং সংস্কৃতো হৈমিনী ক্তঃ ॥
বয়মত্র মহাভাগ সংস্কৃতা শুকণা ত্বা ।
মরা তব বচঃ কার্যামুশৈমি ক্তমাং শুরো ॥
শুক্রকাচ।

অতীৰ গ্ৰহণ বংগ সভটং মহদাগতম্। ন বেল্লি কিঞ্জিলোহেন ভ্ৰমন্তীৰ হি বুদ্ধঃ॥ আনন্দ উৰাচ।

নোহল্যাবসর: কোহত জগতে বং বাবস্থিতে।
ক: কল্য প্রো বিপ্রার্থ কো বা কল্য ন বান্ধব:।
আরভ্য জন্মনো নৃণাং সম্বন্ধিমুদ্দৈতি য:।
তে চ সম্বন্ধিনো বিপ্র মৃত্যুনা সংনিবর্তিতাঃ ॥
আনালি জাতদ্য সত: সম্বন্ধে। কেংসা বান্ধবৈ:।
লোহণ্যক্তমন্তে কেহল্য প্রেরাভ্যেবাহধিলক্রমঃ॥
আতো ব্রবীমি সংসারে বসত: কো ন বান্ধবঃ।
কো বাপি সততং বন্ধুঃ কিং বো বিভ্রাম্যতে মতি:
শিত্রমং মন্ধা প্রাপ্রম্মান্ধের হি জন্মনি।
মাত্রমঞ্চ কিং ভিত্রং বদন্যক্রেস্তবে ॥
লোহহং তপ: ক্রিব্যামি জ্বা বো অ্ন্য ভূপতে:
বিশালপ্রান্ত: প্রতিক্র আনীর্তামিই ॥

মার্কজের উবাচ।

ততঃ স বিদ্যিতো রালা সভার্ব্যঃ সহ বন্ধ্রতিঃ।

ততারিবর্ত্তঃ মুক্তামন্ত্রেনে বনার তম্ ।

টৈত্রমানীর জনরং রাল্যবোগ্যং চকার সং।

সন্মান্য আন্ধাং বেন পুত্রবৃদ্যা স পালিতঃ ।

সোহপ্যানন্দজগতেপে বাল আৰু বহাবনে।
কর্মণাং কপণাধার বিমৃক্তেঃ পরিপছিনান্ ॥
তপস্যস্তং ততত্ত্বক প্রার্থ বেবঃ প্রজাপতিঃ।
কিমর্থং তপ্যসে বৎস তপত্তীব্রং বদস্থ তৎ ॥
ভানন্দ উবাচ।
ভাজনঃ ওিকামোহতং করোমি তগবংত্তপঃ।
বক্ষার মম কর্মাণি বানি তৎক্ষপণোর্থঃ॥
বক্ষার মম কর্মাণি বানি তৎক্ষপণোর্থঃ॥

ক্ষীণাধিকারে। ভবতি মুক্তিবোগ্যোন কর্মবান্।
সন্তাধিকারবান্ মুক্তিমবাপ্যাতি কথং ভবান্॥
ভবতা মহ্মনা ভাবাং ষঠেন ব্রহ্ম তৎ কুরু।
ভবং তে তপ্যা তক্মিন্ কুতে মুক্তিমবাপ্যাসি॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যুকো এক্ষণা দোহিপি ভবেত্যুক্তা মহাম্তিঃ তৎকৰ্মাভিমুধে। বাভজ্ঞপলো বিরুদান হ ॥ চাকুবেভ্যাহ ভং ব্ৰহ্মা ভণসো বিনি বর্ত্তরন্। পূর্বং নামা বভূবাথ প্রকাতভাস্থা মহ:॥ উপযেমে বিদর্জা দ হুভাদুগ্রন্য ভৃভ্তঃ। जगात्कारभागवामाम भूजान् क्षेत्रगाठविक्रमान् ॥ ত্যা মহস্তরেশস্য বেহস্তরজিল্পা বিজ্ঞ। বে চৰ্ব্যন্তবৈবেক্সে বে হুভাশ্চান্য তান্ শৃণু 🖫 শার্ঘা নাম স্থরান্তত্ত ভেষামেকোইটকো গণঃ। প্ৰথ্যাতকৰ্মণাং বিশ্ব যতে হ্ৰ্যভূপানগুন্॥ व्यथाण्यनवीर्यानाः व्यष्टाम्थनपूर्वमान्। विजीयक व्यक्षात्या त्यवांनामहेत्या भवः॥ **उटेबराष्ट्रक ध्वरात्मा खर्गात्मा (क्वडांगन: เ** চতুৰ্থ-চ গণস্তত্ত যুপগাৰ্যস্তৰাষ্টকঃ॥ त्वराख्याकरेथवात्मा छव मदखरत्र विज। শতং ক্রতুনামাজ্ঞা যজেবামধিপোহভবৎ। মনোজব্জবৈধ্বেলঃ সংখ্যাতো যজভাগভুক্ ॥ স্থামধা বিরম্বাটেশ্চব হবিশ্বাস্থ্যমধো মধুঃ। অতিনামা সহিকুশ্চ স্থাস্ত্রিভি চর্বরঃ # উরুপুরুশতছারপ্রারুখাঃ স্ক্রমহাবদাঃ। চাক্ষদা মনো: প্ৰা: পৃৰিধীপভয়েছভবন্ । এডৎ তে क्षिणः वर्डः महा मक्तरः विका চাকুবসা তথা জয় চরিতক মহামুদঃ। সাম্প্রতং বর্ততে বেছিয়ং নামা বৈৰণতেই সন্ধঃ 🛌 मश्राम (बर्क्स कमा स्वामाकिन् मृत्य वि क्र ইভি সাৰ্কতেরে স্থাপুরাণে চাল্যসম্ভারং নাম ধটুসপ্তভিভবোৎখ্যায় ।

## সপ্তদপ্ততিতমোহধ্যায়: ।

--:\*:---

• মার্কপ্রেম্ন উবাচ।
মার্কপ্রনা রবের্ভার্যা তনরা বিশ্বকর্মণ:।
সংজ্ঞা নাম মহাভাগ তস্যাং ভাষ্মরক্তীকার ॥
নহং প্রথাক্তমপ্রনার করান্ধারক্তা প্রার্থ করাই বিষয়তঃ স্থাতা যামার ত্তমাই বিষয়ত লাচনে।
মত্ততঃ সরোবাহক্তিং সংজ্ঞাং নিষ্ঠু বমত্রবীর ॥
ময়ি দৃষ্টে সদা ফ্লাং ক্রেবে নেত্রসংঘম্।
তত্মাজ্ঞনিষ্টেস মুচ্ছে প্রায়ংয্মনং য্মম্॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
ভতঃ সা চণলাং দৃষ্টিং দেবী চক্রে ভয় কুলা।
বিলোলিভদৃশং দৃষ্ট্যু পুনরাহ চ তাং রবিঃ ॥
বন্মাছিলোশিতা দৃষ্টির্মি দৃষ্টে হয়'ধুনা।
তন্মাছিলোলাং ভনরাং নদীং হং প্রস্বিব্যসি ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

তত্তস্যান্ত সংক্ষেত্র ভর্জ্পাপেন তেন বৈ।

যমশ্চ সম্না হৈব প্রবিধ্যান্তা স্থমহানদী ॥

সাপি সংজ্ঞা রবেক্তেজঃ সেহে তৃংথেন ভাবিনী।

অসহজী চ সা তেজ্পিচস্ত্যামাদ বৈ তদা ॥

কিং করোমি ক গছামি ক গভাগাশ্চ নির্তিঃ ,

ভবেন্দম কথং ভর্তা কোপমর্কশ্চ নেষ। তি ॥

ইতি সঞ্জিপ্তা বহুধা প্রজাপতিস্থা তদা ।

বছ মেনে মহাভাগা পিতৃসংশ্রমমেব সা ॥

তেঃ পিতৃগ্হে গন্তঃ কুত্ব্দির্যশ্বিনা ।

ভাষামনীমান্ত্রহুং নির্দ্ধেন দ্বিভাং রবেঃ ॥

তাঞ্চোবাচ ত্বা বেশান্ত্র ভানোর্যণা মরা।

তথা সম্যুগপতোর্ বর্তিবাং তথা রবো ॥

পৃষ্যাপি ন বাচ্যং তে তথৈতদামনং মম।

হৈবাদ্মি নাম সংজ্ঞেতি বাচ্যমেত্ব স্দা। বচঃ ॥

ছারাসংজ্ঞোবাচ।
আকেশগ্রহণাদেবি আশাপাচ বচন্তব।
করিবো কথরিবামি কৃত্ত শাপকর্ষণাং॥
ইত্যুকা সা তদা দেবী লগাম তবনং পিতৃ:।
দদর্শ তত্ত্ব ছটারং তপসা ধৃতক্ত্ববন্॥
বহুমানাচ্চ তেনাপি পুলিতা বিশ্বকর্মা।
তেহো পিতৃপ্তে সা তু কঞিং কাল্যনিন্দিতা॥
তততাং প্রাহ চার্কলীং পিতা নাতিচিরোবিতাম্

ত্তবা চ তৰরাং প্রেমবছমানপুরংসরন্ ।
বাত্ত মে পঞ্চতো বংসে দিনানি স্বর্ভপি।
মুহ্র্ডার্জসমানি স্থাঃ কিন্তু ধর্মো বিকুপ্যতে ॥
বান্ধবেব্ চিরং বানো নারীণাং ন বশকর: ।
মনোরথো বান্ধবানাং নার্যা ভর্তৃগৃহে ছিতি: ॥
সা বং তৈলোক্যনাথেন ভর্ত্তা স্বর্গেণ সম্বতা।
পিতৃগেহে চিরং কালং বন্তং নার্হাপ প্রিক্তে॥
সা বং ভর্তৃগৃহং গছে তৃষ্টোহহং পুজিতাসি মে।
পুনরাগমনং কার্যাং দর্শনায় ওতে সম।

মার্কণ্ডের উবাচ। ইত্যুকা দা তদা পিতা তথেত্যুক্তা চ দা মুনে। সম্পূজ্যিতা পিতরং জগামাণোত্তরান কুরুন 🕆 স্থ্যতাপমনিচ্নন্তী তেজসন্তক্ষ বিভাতী। তপশ্চচার তত্রাপি বড়বারূপধারিণী॥ সংজ্যেমিতি মন্বানো দ্বিতীয়ায়ামহপতিঃ। জনগামাদ তনয়ে ক্সাকেকাং মনোরমাম্ # ছারাসংজ্ঞা ত্বপত্যেরু যথা ক্ষেদ্তিবংসলা। তথা ন সংজ্ঞাকস্থায়াং পুত্ৰয়ো<del>শ্চাম্বর্ক্তত</del>॥ মহুস্তৎক্ষান্তবানস্তা যমস্তস্তা ন চক্ষমে॥ তাড়নায় চ বৈ কোপাৎ পাদক্তেন সমুদ্যতঃ। তখাঃ পুনঃ কান্তিমতা ন তু দেহে নিপাতিতঃ। ততঃ শশাপ তং কোপাচ্ছায়াসংজ্ঞা যমং হিল। কিঞ্চিৎ প্রক্রমাণোষ্ট্র বিচলৎপাণিপল্লবা ॥ পিজঃ পত্নীমমর্যাদং যক্ষাং তর্জ্জানে পদা। ভূবি তত্মাদয়ং পাদস্তবা**দ্যৈব পতিষ্যতি**॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ইত্যাকর্ণ্য যমঃ শাপং মাত্রা দক্তং ভরাতৃরঃ। অভ্যেত্য পিতরং প্রাহ প্রণিপাতপুরঃসরম্ ॥ যম উবাচ।

তাতৈতন্মহদাশ্চর্যাং ন দৃষ্টমিতি কেনচিং। মাতা বাৎসল্যম্ৎস্ক্স শাপং পুজে প্রযক্তি॥ যথা মন্ত্র্মানাচষ্টে নেয়ং মাতা তথা মম। বিগুণেদ্বি পুত্রেমুন মাতা বিগুণা ভবেৎ॥

মার্কণ্ডেম উবাচ।

যমস্ত তবঁচঃ প্রস্থা ভগংগত্তিমিরাপহঃ।

ছারাসংজ্ঞাং সমাহ্র পথ্যছ ক গতেতি সা॥

সা চাহ তনয়া ত্বই রহং সংজ্ঞা বিভাবসো।

পত্মী তব ত্রাপত্যাক্তেতানি জনিতানি মে॥

ইথং বিবস্তঃ সা ভূরহশঃ পৃদ্ধতো যদা।

নাচচক্ষে ততঃ কুনো ভাষাংতাং শপ্ত মুদ্যভঃ।

ততঃ না কর্থবানান ক্ষাকুজং বিৰক্ষ:।
বিদিতার্থন ভগবান্ ক্যাম দুই বালরম্॥
ততঃ স পুকরার্থান তলা তৈলোকাপুজিতম্।
ভাষতঃ পররা ভক্তা নিজগেহমুপাগতম্॥
সংজ্ঞাং পৃষ্টভালা তক্ষৈ কর্থবামাস বিশ্বরুং।
আগতৈবেহ মে নেশ ভবজঃ প্রেষিতেতি বৈ॥
দিবাক্ষরঃ সমাধিলো বড়বারপধারিণীম্।
তপশ্চরজীং দদৃশে উত্তরেষ্ ক্ষরণ ॥
সোমামুর্জিঃ ভভাকারো মম ভর্তা ভবেদিতি।
অভিদন্ধিক তপনো ব্রুবেহজা দিবাকরঃ ॥
শাতনং তেজ্গনো মেহদা ক্রিরতামিতি ভাষরঃ।
তক্ষাহ বিশ্বকর্মাণং সংজ্ঞারাঃ পিতরং বিজ্ঞ ॥
সংহসরভ্রেমন্তক্ত বিশ্বক্মা রবেন্ততঃ ।
তেজ্পঃ শাতনং চক্রে স্তুর্মানক দৈবতৈঃ ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে বৈবস্বতমন্বস্তরে সপ্তসপ্ততিতমোহধ্যায়:।

অফীদপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ।

मार्क्ट ७ व उ व व व

তততং ভূ**ঠু বুর্দেবান্তথা দেবর্ধ**রো রবিম্। বাগ্ভিরীডাম**শেষত তৈলোকাত স**মাগতা: ॥ দেবা **উচ্:**।

নমতে ঋক্ষরপায় সামরপায় তে নম:। । জু: স্বরূপরপায় সামাং ধামবতে নমঃ॥ টানৈকধামভূতায় নিধু তিতমদে নমঃ। উদ্ধ**েজ্যাতিঃস্বরূপার বিশুদ্ধা**রামলাত্মনে। ারিষ্ঠায় বরেণ্যায় পরকৈ পরমাত্মনে। ামোহ**থিলজগদ্যাপিস্বরূপারাত্মসূর্ত্ত**রে॥ ার্পকারণভূতার নিষ্ঠারে জ্ঞানচেত্রসাম্। ামঃ স্থ্যস্বরূপার প্রকাশাত্মস্বরূপিণে ॥ <sup>গ্রিরার</sup> নমস্বভ্যং তথা দিনক্বতে নম:। ক্রিবহৈতবে চৈব সন্ধাক্তোৎসাক্ততে নম:॥ ং সর্কমেতভগবান্ জগহদ্রমভা ত্বয়া। ाग**ातिकमिथनः उन्नाधः नहत्राहत्रम्**॥ <sup>দংশু</sup>ভিরিদং **শ্পৃষ্টং সর্কাং সঞ্জান্নতে শু**চি। <sup>ক্রুতে</sup> **ত্ৎকরে: স্পর্শাক্ষলাদীনাং** পরিব্রতা॥ शंगनांनांनिका धर्मा नांनकातात्र कांत्ररह । বিদ্যাবন্ধ সংবোগি জগদেতং স্বদংশুভি:॥

ৰচত্তে সকলা ছেতা বৃদ্ধবৈতেনি চাঠত:। नक्नानि ह नामामि सि<del>र्गङ्खि प्रकृ</del>ष्ठः ॥ अঙ्मत्रयः जनताथ परमय छ बकुर्णनः। वजः नायमद्रोक्तव जरुजा नाथ बदीमतः॥ ष्ट्रिय बक्तरण। क्रभः भव्नक्षाभव्रदम्य ह। মৃত্যিমৃত্তিখণা হক্ষঃ স্থলকপত্তথা স্থিত:।। नित्यवकां क्षांतियतः कानक्रभः कक्रांच्यकः। প্রসীদ স্বেচ্ছয়া রূপং স্বতেজঃশমনং কুরু॥ মাৰ্কণ্ডেয় উধাচ। এবং সংস্কৃ सभानन्त दमरेवर्ष्मवर्षि छिषा। মুমোচ স্বং তদা তেজতেজ্বদাং রাঞ্শিরবার:॥ যৎ তম্ম ঋঙ্ময়ং তেজো ভবিতা তেন মেদিনী। যজুর্ম্মরেণাপি দিবং স্বর্গ: সামমূরং রবে: ॥ পাতিতান্তেজ্বসো ভাগা যে ঘট্টা দশ থঞ্চ। ষ্ট্ৰেব তেন সৰ্বস্ত কৃতং শূলং মহাত্মনা ॥ ठकः विरक्षार्त्तस्रनाकः महत्रश्र स्नाकृशा। পাবকস্ত তথা শক্তিঃ শিবিকা ধনদক্ত চ।। অভেষাঞ্চ স্থরারীণামক্তাণ্যগ্রাণি যানি বৈ। যক্ষবিদ্যাধরাণাঞ্চ তানি চক্রে স বিশ্বরুৎ ॥ ততক্ষ যোড়শং ভাগং বি**ভৰ্ত্তি ভগবান্** বিভু:। তৎ তেজঃ পঞ্চদশধা শাতিতং বিশ্বকর্মণা।। ততোহখনপধ্গ্ভাছকঔরানগমং কুরন্। দদৃশে তত্র সংজ্ঞাঞ্চ বড়বারূপধারিণীম্॥ সা চ দৃষ্ট্য তমায়াছং পরপুংসো বিশঙ্কা। জগাম সন্মুখং তেন্ত পৃষ্ঠরক্ষণতৎপরা ॥ ততশ্চ নাসিকাযোগং তদ্মোক্তর সমেত্যো:। নাসভ্যদস্রো তনরাবন্ধীবক্ত বিনির্গতৌ ॥ রেতদোহত্তে চ রেবস্ক: থক্সী চন্দ্রী তত্ত্বধৃক্। অখারঢ়ঃ সম্ভুতো বাণভূপসম্বিতঃ॥ ততঃ স্বরূপমতুলং দর্শরামাস ভাতুমান্। ততৈখোচ সমালোক্য স্বরূপং মৃদ্যাদদে॥ यक्र भगविगीत्कमामानिनात निकालक्रम्। সংজ্ঞাং ভার্য্যাং প্রীতিমতীং তা্ত্বরো বারিভত্তর: ॥ ততঃ পূর্বস্থতো বোহস্তা: দোহভূগৈবৃস্বভো মহু: বিতীয়ণ্ড ৰম: শাপান্ধদৃষ্টিয়ভূৎ ভুত: 🖁 ক্রিময়ো মাংসমানার পাদতভাহত মহীতলে। পতিব্যক্তীতি শাপাস্থং ভক্ত চক্তে পিতা স্বরষ্ ॥ ধর্মদৃষ্টির্যতশ্চাসৌ সম<del>ো মিত্রে তথাহিতে।</del> ততো নিয়গঃ <del>তং দাব্যে চকার ডিমিরাগছঃ ॥</del> यम्ना ठ नती खटक कानिका छत्रवाहिसी।

অবিনৌ দেবভিষকৌ ক্তে পিআ মহান্দন। ॥
গুত্তকাধিপতিত্ব চ বেববোহপি নিযোজিত: ।
ছারাসংজ্ঞান্ততানাঞ্চ নিরোগ: ক্ররতাং মম ॥
পূর্বজন্ত মনোজন্তানালালারাসংজ্ঞান্ততাহগ্রজ: ।
তত: সাবর্ণিকীং সংজ্ঞানবাপ তনমেং রবে: ॥
ভবিষ্যতি মন্থ: সোহপি বলিরিক্রো বদা তদা ।
দৈশ্চরো গ্রহাণাঞ্চ মধ্যে পিতা নিয়োজিত: ॥
তয়েভৃতীয়া বা কল্লা তপতী নাম সা ক্রম্।
ত্যু বৈবস্বত্যাহং মনো: স্প্রমন্তর্ম্।
কথরামি স্তান্ত্পান্বীন্ দেবান্ স্রাধিপম্॥

ইতি মার্কণ্ডেমে মহাপুরাণে বৈবস্বতে মন্বস্তুরে বৈবস্বতোৎপত্তির্নামাষ্ট-সপ্ততিতমোহধ্যায়ঃ ॥

একোনাশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

মার্কণ্ডের উবাচ।

আদিত্যা বসবো কলা: সাধ্যা বিখে মকলাণা: ! ভূগবোহ**দিরসন্চাট্টো যত্র** দেবগণাঃ স্মৃতাঃ ।। আদিত্যা বসবো কলা বিজেরা কলপাযুলা:। সাধ্যাক বদবো বিশ্বে ধর্মপুত্রগণান্তর:॥ **উर्ज्जनी नाम रिटारिक्ता महाचा रक्क**छात्रज्ज । **অতীতানাগতা যে চ বর্ত্তরে সাম্প্রতঞ্চ** যে॥ সর্ব্বে তে ত্রিদশেক্রাম্ব বিজ্ঞেয়াম্বল্যলকণা:। সহস্রাক্ষাঃ কুলিশিনঃ সর্ব্ধ এব পুরন্দরাঃ॥ মধবজো বৃষা: সর্বে শৃঙ্গিণো গজগামিন:। তে শতক্রতবঃ সর্বে ভূতাভিভবতেজসঃ॥ ধর্মাল্যেঃ কার্ত্রেঃ শুক্রেরাধিপত্যগুণান্বিতাঃ। ভৃতভব্যভবরাথা: শৃণু চৈতদ্রন্থং দিজ ॥ ভূলোকোহয়ং স্বভা ভূমিরস্তরীকং দিবং স্বতম্। দিৰা**খ্যক্ষ তথা স্বৰ্গলৈকোক্য**মিতি গদ্যতে ॥ व्यक्तिदं दनिक्षंक काञ्चलक महान्यिः। গৌতমক ভরমানো বিশ্বীমিত্রোহথ কৌশিক:॥ ডব্ৰৈ পুৰো ভগবানুষ্ঠীকত মহামন:। **অবস্থিত সুঠিতে মুমরো**ইত তথাস্তরে॥ रेक्नकूर्माञ्चरक्ष रहे: भर्गाजित्वर हं। निविचारक विश्वादको नास्त्रको पिष्ठ এव ह ॥ কন্নবন্দ পুৰঞ্জ বহুৰান্ লোকবিপ্ৰতঃ।

মনোইৰ্বসতভৈতে সৰ প্ৰাঃ প্ৰকীপ্তিতা: ॥
বৈবস্বতনিদং ব্ৰহ্মন্ কৰিতং তে মরাজ্বন্ ।
জন্মিন্ প্ৰতে নক্ষ: দাৰ্মাঃ পঠিতে চৈব সভ্যা: ।
মুচ্যতে পাতকৈ: দৰ্মাঃ প্ৰাঞ্চ মহদশ্মুতে ॥
ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুঝাণে বৈবস্তমন্ত্ৰেরে
একোনাশীতিতমোহ্ধাগাঃ ।

## অশীতিত্তমোহধ্যায়ঃ ৷

--:0:--

ক্ৰোষ্ট্ৰকিক্ষবাচ।

স্বায়স্ক্রাদ্যা: কথিতা: সপ্তৈতে মনবো মম।
তদন্তরের যে দেবা রাজানো মুনয়ন্তথা॥
অন্মিন্ কল্পে সপ্ত যেহন্তে ভবিষ্যন্তি মহামুনে।
মনবস্তান্ সমাচক্ষ্যে চ দেবাদয়ল্চ যে॥
মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ক্ষিতন্ত্ব সাব্দিশ্বাসাসংজ্ঞাস্থতশ্চ মঃ।
পূর্বজন্ত মনোস্বল্যঃ স মন্থর্ভবিতাইমঃ॥
রামো ব্যাসো গালবশ্চ দীপ্তিমান্ কৃত এব চ।
ঝয়শৃন্বতথা দ্রোণিন্তত্ত্ব সপ্তর্মমেহত্তবন্॥
স্থতপাশ্চামিতাভাশ্চ মুখনালৈত্ব ত্রিধা স্থরাঃ।
বিংশকঃ ক্ষিতশৈষাং ত্রয়াণাং ত্রিপ্তণো গণঃ॥
তপত্তপশ্চ শক্রম্প ছাতির্জ্ঞোতিঃ প্রভাকরঃ।
বিভাসো দ্বিতো ধর্মস্তেরোরশ্লিশ্চ বক্রত্বঃ॥
ইত্যাদিকস্ত স্থতপা দেবানাং বিংশকো গণঃ।
প্রভ্রিভ্রিভাসাদ্যান্তথাল্যো বিংশকো গণঃ।
স্থরাণামমিতানাস্ত তৃতীয়মপি মে শৃর্॥
দমো দান্তো রিভঃ সোমো বিস্তাদ্যাশ্রেতঃ।
বিংশতিঃ।

ম্থ্যা হেতে সমাধ্যাত দেবা মুবুস্করাধিপাঃ।
মারীচন্তৈর তে প্রাঃ কাশ্রপত প্রকাপতেঃ দ
ভবিষ্যাক ভবিষ্যন্ত সাবর্থতান্তরে মনোঃ ॥
তেবামিক্রো ভবিষ্যন্ত বলিবর্ধরোচনির্দ্ধনে।
পাতাল আতে বোহদ্যাপি দৈত্যঃ সমর্বদ্ধনঃ॥
বিরক্তাক্রবিরক নির্দ্ধোহঃ সভ্যবাকু ক্বতিঃ।
বিষ্ণাদ্যাকৈর তনবাঃ সাবর্গত মনোন্পাঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে সাবর্ণিকে মঞ্চ স্তরেহশীতিতমোহধ্যারঃ।

## একাশীভিতযোহগায়:।

-:::-

बिजीदनरीमाशकाम्। उ नमक्षिकादेत्र।

মার্কত্তের উবাচ।

সাবর্ণি: কুর্যাতনরো যো মন্ত্র: কণ্যতেইউম:। নিশাময় তছৎপত্তিং বিস্তরাদাদতো মম। মহামারাত্রভাবেন যথা মরস্তরাধিপঃ। স বভূব মহ**ভাগ: সা**বর্ণিস্তনয়ো রবে: ॥ স্বারোচিষেহস্তরে পূর্কাং চৈত্রবংশসমূভব:। সুর্থো নাম রাজাহভূৎ সমতে কিতিমগুলে। তম্ম পালয়তঃ সম্যক্ প্রফা: প্রামিবৌরসান্। वज्रुः नजरवा ज्रुभाः कालाविध्वः निमछ्था ॥ তত্ত তৈরভবদ্বুদ্ধমতিপ্রবশদ্ভিন:। ন্যুনৈরপি স তৈযু দে কোলাবিধ্বংসিভিজিতঃ। **ত**ठः ऋश्वत्रमात्राट्ठा निकारमभाधिरशार्ख्य । আক্রান্ত: স মহাভাগতৈত্বদা প্রবলারিডি:॥ অমাত্যৈর্কলিভিদ্ টৈছ র্কণত হরামভিঃ। কোষো বলঞ্চাপছতং তত্রাপি স্বপুরে ততঃ॥ ততো মৃগয়াবা**াজেন হতস্বা**মাঃ স ভূপতিঃ। একাকী হয়মাকৃত জগাম গহনং বনম্॥ ন তত্রাপ্রমন্ত্রাক্ষী শ্বিজবর্য্যন্ত মেধসঃ। প্রশান্তখাপদাকীর্ণ: মুনিশিষ্যোপশোভিতম্॥ **ज्या किथ् न कानक म्निना (जन मरक्जः।** ইতক্তেজ বিচরংস্তবিন মুনিবরাশ্রমে। সোহচিত্তন্ত্র তলা তত্ত্ব মমস্বারুষ্টচেতনঃ। মংপৃর্টর্ক: পালিতং পূর্কং ময়া হীনং পূরং হি তং। মঙ্তৈটেক্তরসৰ্টেক্তর্মতঃ পাল্যতে ন বা ॥ न बादम न अशादना दम न्त्रक्की नमामनः। মম বৈরিবশং যাতঃ কান্ ভোগামুপলক্ষ্যতে ॥ र्य ममाञ्चनका मिकाः धानामधनस्याक्तः। অমুর্ডিং প্রবং তে২দা কুর্বস্তান্ত্রমহীভূতাম্॥ चनमाशासनीटेनटेखः कुर्वाहिः मञ्जर वासम्। সঞ্চিত্ত: সোহতিত্ব:ধেন ক্ষাং কোৰো গমিব্যতি। এতচান্তচ সভতং চিত্তরামান পার্থিব:। তত্র বিপ্রাপ্রমাজ্যালে বৈশ্বমেকং দদর্শ সং । স পৃষ্টজ্বেল কল্বং ভো হেডুকাগ্যনেহত কঃ। যশোক ইব ক্ষমাৎ ছং ছৰ্মনা ইব লক্ষ্যসে॥ ইত্যাকর্ণ বচন্তত্ত ভূপতে: প্রণয়েদিতম্।

বাজ্যবাচ ল তং বৈজ্ঞ আন্তর্গাবলতো লুপন্ন বৈশ্ব উবাচ।

সমাধিনাম বৈশ্বোহ্যুৎপ্রো ধনিনাং কুলে।
প্রদারেনিরন্তক ধনলোভালসাধুজিঃ ॥
বিহীনক ধনৈদারের প্রৈরাদার মে ধনন্।
বনমত্যাগতো হংশী নিরন্তকাধ্যবন্তিঃ ॥
সোহহং ন বেদ্মি প্রাণাং কুশলাকুশলাম্মিকাম্।
প্রন্তিং স্বজনানাক দারাণাঞ্চাত্র সংস্থিতঃ ॥
কিং স্ন তেবাং গৃহে কেমমক্রেমং কিং স্ন সাম্প্রতম্
কথংতে কিং স্ন সম্ব্রাঃ হর্ক্ ত্রাঃ কিং স্ন মে স্বতাঃ
রাজোবাচ।

বৈৰ্নিরত্তো ভ্ৰাষ্ট্ৰ: প্ৰদারাদিভিদ্ধনৈ:।
তেরু কিং ভ্ৰত: দেহমন্থ্ৰগতি মানসন্॥
বৈশ্ল উবাচ।

এবমেতদ্বর্থা প্রান্থ ভবানস্থানতং বচ: ।
কিং করোমি ন বগাতি মম নিঠুরতাং মন: ॥
বৈ: সন্তাজা পিতৃলেবং ধননুদ্ধৈনিরাক্ত:।
পতিস্বজনহার্দ্ধি হার্দ্দি তেবেব মে মন: ॥
কিমেত্রাতিজানামি জানরপি মহামতে।
যৎ প্রেমপ্রবর্ণং চিত্তং বিশুণেবাপি বন্ধুরু ॥
তেবাং ক্তে মে নিখাসা দৌর্দ্ধনশুক্ক জারতে।
করোমি কিং যর মনত্তেবপ্রীতিরু নিঠুরম্॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ততত্তী সহিতৌ বিপ্র তং মুনিং সমুপস্থিতে।।
সমাধিনাম বৈজ্ঞোহসৌ স চ পার্থিবসন্তম:॥
কৃষা তু তৌ যথাস্থায়ং ষথাইং তেন সংবিদম্।
উপবিষ্টো কথা: কান্চিচ্চক্রভূইর্বস্তাণার্থিবৌ॥
রাজোবাচ।

ভগবংখামহং প্রাষ্ট্র মিছামোকং বদস্ব তৎ।
হ:ধার যথে মনসং স্বচিত্তাবভতাং বিনা ॥
মনতং মন রাজত রাজ্যাদেবখিলেবপি।
ভানতোহপি যথাজত কিমেতব্নিসভন:॥
অর্ঞ নিরুতঃ পুরুদ্ধিরৈত্ তৈয়ভাগোল্বিভঃ।
স্বলনেন চ সন্তাকতের হালী তথাপাতি॥
এবমেব তথাহক বার্শাত্যভগ্নিতৌ।
দৃষ্টদোবেহপি বিষরে মন্ত্রান্তর্মানিনী॥
তৎ কেনেত্রহাতার ব্যোহো জানিনার্গি।
মনাত চ ভবতোবা বিবেক্তারত বৃচ্তা॥

ভারিস্থাত।

कानमिक नमक्क क्रिक्शियम्मित्रिय

বিষয়ক মহাভাগ যাতি চৈবং পৃথক্ পৃথক্ ॥ দিবাদ্ধা: প্রাণিন: কেচিদ্রাক্রাবদ্ধান্তথাপরে। কেচিদ্দিবা তথা রাত্রৌ প্রাণিনস্তল্যদৃষ্টর:॥ জ্ঞানিনো মহুঞ্জা: সত্যং কিন্তু তে ন হি কেবলম यटा हि आनिनः मर्स्स পঙ् প्रक्रिम्शानयः॥ ক্ষানঞ্চ তন্মস্ব্যাণাং যৎ তেষাং মুগপক্ষিণাম। মন্ত্ৰ্যাৰাঞ্চ বৎ তেষাং তুল্যমক্তৎ তথোভয়ো:॥ জ্ঞানেহপি সতি প**ঞ্চৈতান্** পতগাঞ্বিচঞ্যু। কণমোক্ষাদৃতান্ মোহাৎ পীডামানানপি কুধা॥ মাত্র্যা মতুজব্যাত্র সাভিলাষা: স্তান্ প্রতি। লোভাৎ প্রত্যুপকারায় নম্বেতে কিং ন পশুসি॥ তথাপি মমতাবর্ত্তে মোহগর্ত্তে নিপাতিতা:। মহামায়াপ্রভাবেণ সংসারস্থিতিকারিণ:॥ তন্নাত্র বিশ্বয়: কার্য্যো যোগনিদ্রা জগংপতে:। মহামায়া হরেটেশ্ততৎ তথা সংমোহতে জগৎ॥ জ্ঞানিনামপি চেতাংসি দেবী ভগবতী হি সা। বলাদাক্ষয় মেহায় মহামায়া প্রযক্তি। তরা বিস্কাতে বিশ্বং ক্রগদেতচ্চরাচরম। সৈষা প্রসন্না বরদা নুণাং ভবতি মুক্তরে॥ সা বিদ্যা প্রমা মুক্তেহেতৃভূতা দনাতনী। **সংসারবন্ধरেভুক্ত ভৈব সর্ধেশরেশরী** ॥ রাজোবাচ।

ভগবন্কা হি সা দেবী মহামা: মতি মাং ভবান্। ত্ৰবীতি কথমুৎপলা গা কৰ্মাফাশ্চ কিং দিজ। যৎস্বভাবা চ সা দেবী যৎস্কপা যহন্তবা। তৎ সৰ্বাং শ্ৰোত্মিচ্ছামি ঘতো ত্ৰহ্মবিদাং বর॥

শ্বিক্ষবাচ।
নিত্যৈব সা জগন্ম বিজ্ঞান সর্কমিদং ততম্।
তথাপি তৎসমুংপত্তিবছধা শ্রামতাং মন ॥
দেবানাং কার্য্যসিদ্যুর্থমানিভবিতি সা যদা।
উৎপরেতি তদা লোকে সা নিত্যাপ্যভিধীয়তে॥
যোগনিদ্রাং যদা বিফুর্জগত্যেকার্থবীকতে।
আতীর্য্য শেষমভন্তৎ করান্তে ভগবান্ প্রভুঃ॥
তদা বাবস্থরে বোরে বিধ্যাতৌ মধুকৈটতৌ।
বিফুর্কর্গনলোভুডৌ হন্তং ব্রহ্মাপুদ্যতৌ॥
স নাভিক্মলে বিফ্লোঃ বিতো ব্রহ্মা প্রভাগতিঃ।
দুর্গ জাব্স্থরে চোরো প্রস্থাঞ্চ জনার্দনম্॥
তুইার বোর্যনিদ্রাং তামেকাপ্রস্থক্ত জনার্দনম্॥
তুইার বোর্যনিদ্রাং তামেকাপ্রস্থক্ত লাদ্যাম্॥
বিবেশ্বরীং জ্পদ্ধারীং হিতিসংহারকারিশীম্।

निर्जार छश्रकीर विद्यातकुन्। एक्स्पर धेज्र ॥ बद्यावीर ।

यः त्रांश यः त्रश यः दि वयष्ट्रकातः त्रत्राचिका। স্থা স্বাক্ষরে নিত্যে ত্রিধামাত্রাক্সিকা স্থিতা। অৰ্দ্ধমাত্ৰা স্থিতা নিতাৰ যামুচ্চাৰ্য্যা বিশেষত:। স্বমেব সা স্থং সাবিত্রী স্থং দেবী জননী পরা॥ ত্বয়ৈব ধার্য্যতে সর্বাং ত্বয়ৈতৎ স্বস্তাতে জগৃৎ। অয়ৈতৎ পালাতে দেবি **ত্বমৎশুত্তে চ দৰ্মদা**॥ বিস্টো স্টিরপা হং হিভিরপা চ পালনে। তথা সংহতিরূপা**ন্তে জগতো**হন্ত **জগ**ন্মে। মহাবিদা মহামায়া মহামেধা মহাস্থৃতি:। মহামোহা চ ভবতী মহাদেবী মহাস্থরী॥ প্রকৃতিত্বঞ্চ সর্বস্ত গুণত্রয়বিভাবিনী। কালরাত্রিমহারাত্রিশ্মেহরাত্রিক দারুণা। यः श्रीष्मी यती यः श्रीषः वृक्षिटक्रीधनक्रण। লজ্জা পৃষ্টিন্তথা ভূষ্টিবং শাস্তি: ক্ষান্তিরেব চ॥ খড়িগনী শূলিনী ঘোরা গদিনী চক্রিণী তথা। শঙ্মিনী চাপিনী বাণভূষ্ণীপরিঘাযুধা॥ পৌমা। সৌমাতরাশেষসৌমোভাস্কতিস্থলরী। পরাপরাণাং প্রমা ভ্রমেব প্রমে**র্থ**রী II যচ্চ কিঞ্চিৎ কচিৰ্স্থ সদস্বাখিলাম্বিকে। তম্ম সর্বা শক্তিঃ সা বং কিং অুরসে তদা। যরা ত্বা জগংস্রা জগৎপাতাতি যৌ জগৎ। সোহপি নিদ্রাবশং নীতঃ কন্ধাং স্তোতুমিহেশর:। বিষ্ণুঃ শরীরগ্রহণমহমীশান এব চ। কারিতাত্তে যতোহতত্বাং কঃ স্তোতুংশক্তিমান্-

সা ঘমথং প্রভাবেঃ তৈরুদারৈর্দেবি সংস্থতা।
মোহরৈতৌ হ্রাধর্ষাবস্থরে মধুকৈটভৌ ॥
প্রবোধঞ্চ জগংসামী নীর্তামচ্যুতো লঘু।
বোধণ্চ ক্রিয়তামন্ত হস্তমেতৌ সহাস্থরে ॥
শ্বিক্রবাচ।
করং স্বতা ভদা দেবী ভামসী তক্র বেধসা।
বিফোঃ প্রবোধনার্ধার নিহন্তং মধুকৈটভৌ ॥
নেক্রান্তনাসিকাবাহ্ছদরেভাত্তথোরসঃ।
নির্গম্য দর্শনে তক্ষে বন্ধনাং ।
উত্তোই চ জগরাধন্তরা মুক্রো জনার্ধনঃ।

একার্ণবেষ্টিশরনাৎ ততঃ স দৃদৃশে চ তৌ ॥
মধুকৈটভৌ ছরাম্মানাবতিরীর্গসরাক্রমা।
ক্রোধরকেকণাবন্তুং ব্রহ্মাণং অনিভোদ্যমো॥

সুম্থার ততন্তাভ্যাং যুব্ধে ভগবান্ হরি:।
পঞ্চ বর্ষসহস্রাণি বাহপ্রহরণো বিভূ: ॥
তাবপ্যতিবলোদ্মতৌ মহামায়াবিমোহিতৌ।
উক্তবভৌ বরোহপ্রতো বিরতামিতি কেশবম্॥
ভগবাস্থবাচ।
ভবকাম্বাচ মে তঠো মম বধাবিভাবিশি।

ভবেতামদ্য মে তুটো মম বধ্যাবুভাবপি। কিমন্তেন বরেণাত্র এতাবদ্ধি বৃতং মম॥ ঋষিফ্রাচ।

ৰঞ্চিতাত্যামিতি তদা সর্কমাপোময়ং জগং।
বিলোক্য তাত্যাং গদিতো তগবান্ কমলেক্ষণঃ ॥
প্রীতৌ স্বত্তব যুদ্ধেন শ্লাঘাস্থং মৃত্যুরাব্যোঃ।
জাবাং জহি ন যজোকী সলিলেন পরিপ্রুতা॥
ঋষিক্রাচ।

তথেত্যুক্ত্ৰণ ভগৰতা শশ্বচক্ৰগদাভ্তা। কৃত্বা চক্ৰেৰ বৈ চ্ছিল্লে জঘনে শিৱদী তয়োঃ॥ এবমেষা দমুৎপন্না ব্ৰহ্মণা সংস্কৃতা স্বয়ন্। প্ৰভাবমস্তা দেব্যাস্ত ভূমঃ শৃণু বদামি তে॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে সাবর্ণিকে মন্ব-স্তরে প্রীশ্রীদেবীমাহান্ম্যে মধুকৈটভবদো নামৈকাশীতিতমোহধ্যার:॥

## দ্যশীতিতসোহধ্যায়ঃ।

---:--

### ঋষিক্ষবাচ।

দেবাস্থরমভূদ্যুদ্ধং পূর্ণমন্ত্রশা।
দহিবেহস্থরাণামধিপে দেবানাঞ্চ প্রন্দরে ॥
তত্রাস্থরৈর্মহাবীবৈন্দিবলৈক্যং পরাজিতম্।
জিঘা চ সকলান্ দেবানিক্রোহভূমহিষাস্থরঃ ॥
ততঃ পরাজিতা দেবাঃ পদ্মযোনিং প্রদাপতিম্।
প্রস্কৃত্য গতান্তক যত্ত্রেশগরুড়ধ্বকো ॥
ব্যার্ত্তঃ ত্রোন্তব্দাহিষাস্থরচেষ্টিতম্।
কিদশাঃ কথয়ামাস্থর্দেবাভির্তবিন্তরম্ ॥
প্র্যোক্রায়ানিলেন্দ্রনাং যমন্ত বরুণত্ত চ।
কল্ডেরাঞ্চানিলেন্দ্রাং ব্যাহ্রমবাধিতিঠিতি ॥
বর্গান্নিরাক্তা সর্বেতেন দেবগণা ভ্রি।
বিচরন্ধি বধা মর্ত্ত্যা মহিবেশ হ্রাদ্মনা ॥
এতহঃ ক্রিডং স্ক্রমমরারিবিচেষ্টিতম্।

শরণঞ্চ প্রপন্নাঃ মো বধস্তক্ত বিচিস্ত্যভাম্ ॥ रेथः निमेमा रमवीनाः वहारित समूर्यकाः। চকার কোপং শস্তুশ্চ ক্রকুটীকুটিলামনী ॥ ততোহতিকোপপূর্ণস্ত চক্রিণো বদনাং তড:। নিশ্চক্রাম মহৎ তেজো ব্রহ্মণ: শঙ্করক্স চ*া*। অত্যেষাকৈব দেবানাং শক্রাদীনাং শরীরভঃ। নিৰ্গতং স্থমহৎ তেজস্ত চৈক্যং সমগচ্ছত। অভীব তেজদঃ কৃটং অলম্ভমিব পর্কাতম্। पृष्ठ अत्रोख्य जानावारिश निभस्तम् ॥ অতুলং তত্র তৎ তেজঃ সর্বাদেবশরীরজম্। একস্থং তদভূয়ারী ব্যাপ্তলোকত্রমং থিষা ॥ যদভূচ্ছান্তবং তেজন্তেনাজায়ত তমুখন্। যাম্যেন চাভবন্ কেশা বাহবো বিষ্ণুতেজ্পা॥ সৌমোন खनरशाय् भः मधारेकरव्यन ठां छ दर। বারুণেন চ জ্ঞােক নিতশ্বস্তেজ্বসা ভূব:॥ ব্ৰহ্মণস্থেজ্যা পাদৌ তদ্মুল্যোহ্ৰতেজ্যা। বস্নাঞ্চ করাঙ্গুল্যঃ কৌবেরেণ চ নাসিকা॥ তস্থাস্ত দস্তাঃ প্রাঞ্জাপত্যেন তেজ্সা॥ ভূবৌ চ সন্ধ্যয়োক্তেজঃ শ্রবণাবনিদস্ত চ। অন্যেয়াঞ্চৈব দেবানাং সম্ভবস্তেজসাং শিবা॥ ততঃ সমস্তদেবানাং তেজোরাশিসমুদ্রবাম। তাং বিলোক্য মুদং প্রাপুরমরা মহিধার্দ্দিতাঃ॥ भूलः भूलांविनिक्ष्या मरमी उटेश शिनांकध्क। চক্ৰঞ্প দত্তবান্ কৃষ্ণঃ সমুৎপাদ্য স্বচক্ৰতঃ॥ শঙ্গঞ্চ বরুণঃ শক্তিং দদৌ ত**ন্তৈ হত।শনঃ।** মাকতো দত্তবাংশ্চাপং বাণপূর্বে তথেষুধী ॥ বজ্মিক্র: সমুৎপাদ্য কুলিশাদমরাধিপ:। দদৌ তত্তৈ সহস্রাক্ষো ঘণ্টামৈরাবতাদাজাৎ॥ कालम् अम्यत्मा मञ्जः भामकासूभ किर्मतनी । প্রজাপতিশ্চাক্ষমালাং দদৌ ব্রহ্মা ক্মওলুম্॥ সমস্তরোমক্পেষু নিজ্বশ্রীন্দিবাকর:। কালণ্ড দত্তবান্ ধড়গং ভত্তাণ্ডৰ্ম চ নিৰ্মালম্॥ কীরোনশ্চামণং হারমঞ্জে চ ভথাস্বরে। চুড়ামণিং তথা দিবাং কুগুলে কটকানি চ॥ অৰ্চক্ৰং তথা ভলং কেয়্বান্ স্**ৰ্ৰাহ্যু**। नृप्रतो विगत्नो जवदेनगुरवयक्षमण्डमम्॥ व्यक्तीत्रकरप्रांति नमखावन्तीयु छ। বিশ্বকর্মা দৰ্শে ভটেন্ত পরগুঞ্চাতিনির্মালম্ 🖟 **जञ्चान्।त्नकत्रभानि छथा**ट्छमाक मःभनम् । . . . অনানপ্ৰজাং মালাং শিৱস্থারি চাপ্রাম্ ॥

व्यवस्थ्यनविष्ठदेख शक्यकां किर्मास्त्रम् । হিমবান বাহনং সিংহং র্ছানি বিবিধানি, চ।। मनावम्छः छ्त्रम। शानशाबः धनाधिशः। **(** भवन्त नर्सनारशामा महामनिविज्विष्ठम् । নাগহারং দলে। ভক্তে ধতে যঃ পৃধিবীমিমাম্॥ ष्यदेखन्नि स्टेंबर्फवी ज्यदेनन्नास्टेशख्या। नचानिका नंनारमाटेकः नाग्नेहानः मूहचू इः। ভক্তা নাচদন খোরেণ কংলমাপুরিতং নভঃ। অমায়ভাভিষহতা প্রতিশব্দো মহানভূৎ ॥ চুকুভু: সকলা লোকা: সমুদ্রাশ্চ চকম্পিরে। চहान वद्धशा (हमू: अकलान्हे महीधताः॥ बराउ दिनवांक मूना छाम्ठूः तिः हवाहिनीम्। তুই বৃশু নর দৈনাং ভজিন আত্ম সূর্তরঃ। मृद्देश ममखः मः मृद्धः दिवाताकाममदाद्रियः। महद्वाशिनदेमछाटछ मम् उष्ट्रक्षाय्थाः॥ আ: কিমেভদিতি ক্রোধাদাভাষ্য মহিষাস্থঃ। অভ্যধাবত তং শক্ষশেবৈর ইবৈর্কৃতঃ ॥ म ममर्भ जटला ८म वीः वाशिरमाक्वयाः विद्यो। পাদাক্রাস্থা নতভূবং কিরীটোলিশিতাম্বাম্॥ কোভিতাশেষপাতালাং ধছজ্জ্যানিস্বনেন তান্। দিশো ভূজগহত্তেশ সমস্ভাষ্যাপ্য সংস্থিতাম্ ॥ ভতঃ প্রবর্তে বৃদ্ধং ভরা দেব্যা স্থরবিধান্। चवारेबक्ष्ध मूटेक्क्यांनी निचनिश्खतम् ॥ महिशाख्यात्रमानी किक्तारथा। महाख्यः। যুষ্ধে চামর চাজে চতুর কবলাবিত: ॥ রধানামষ্টেঃ বড়্ভিক্লগ্রাথ্যো মহাস্থরঃ। অধুদ্ধভাযুতানাঞ সহজেণ মহাহতঃ॥ পঞাশন্তিক নিষ্তৈরসিলোমা মহাত্রঃ। অবৃতান । শতৈঃ ষড় ভিকামলো যুযুধে রণে॥ গ্ৰহাঞ্চিস্চ্স্ৰৌইখরনেকৈঃ পরিবারিড:। বুজো রথানাং কোটাা চ যুদ্ধে ভিসিন্নযুধাত !৷ विज्ञातकार्युजानांक शकानं खिर्धाप्रेजः। य्यूट्ध मःयूट्ध जब तथानाः পরিবারিত: ॥ चरम ह छ्डायूष्टरमा त्रथनागरदेवर्क्षाः । যুযুধু: সংষ্ণে দেব্যা সহ তথা মহাজ্বা: ॥ क्वांहिटकांहिनहरेलाख ब्रथानाः क्षिनाः छथा। ৰ্বানাঞ্ বডো যুকে ভকাভূমহিবাহ্বঃ । ट्यां बरेब कि मिनारेन म कि कि मूं बरेन कथा। ब्द्धः त्रःब्रम स्वाः बरेकाः शत्रवेशव्दिनः ॥ क्रिक हिक्लिशः भकीः क्रिक शामारख्याशया

८ नवीर बज्जा अहारे बच्च ८७ छाः स्वरं अञ्चित्रः । সাপি দেবী ভড়ঞানি শলাণ্যল্লাণি চণ্ডিকা। नौनदेशव व्यक्तिरक्षम विक्रमञ्जाह्मवर्षियी॥ অনাযন্তাননা দেবী ভুষমানা স্থাবিভি:। मूरमाठाञ्चरपर्वय भजागाजानि ८० थेत्री ॥ त्मार्भि क्रिका ध्लमती (प्रवा वंश्निक्मती। চ্চারাস্রদৈভেষু বনেধিৰ ত্তাশনঃ 🖁 নিখাসামুম্চে যাংশ্চ যুধামানা রণেহ খিকা। ত এব সন্যঃ সম্ভূচা গণাঃ শতসহস্রশঃ॥ যুষ্ধুস্তে পরওভিজিনিপালাদিপাট্টলৈ:। নাশয়ত্তোহস্বরগণান্ দেবীশক্ত্যুপরংহিতাঃ ॥ व्यवनिषय भिष्टान् श्वाः मब्धाः ख्रथाभद्य । মৃদঙ্গাংশ্চ তথৈবাল্ডে তেমিন যুদ্ধমহোৎসবে॥ ততো দেবী ত্রিশ্লেন গদয়া শক্তিবৃষ্টিভি:। থড়াাদিভিশ্চ শতশো নিম্ঘান মহাস্থান্। পাত্যামাস চৈবাক্তান্ ঘটাম্বনবিমে। হিডান্। অহ্রান্ ভূবি পাশেন বন্ধা চাঞ্চানকর্ষর ॥ কেচিন্দ্ধাকৃতান্তীকৈ: ধজাপাতৈত্তথাপরে। বিপোথিতা নিপাতেন গদয়া ভূবি শেরতে। বেমুশ্চ কেচিজ্ঞধিরং মুবলেন ভূশং হতাঃ । কেচিল্লিপাতিতা ভূমৌ ভিলা: শুলেন বক্ষি । নিরস্তর্গঃ শরৌঘেণ কুতাঃ কেচিন্ত্রণাজিরে। সেনার্কারিণঃ প্রাণান্ মুমুচু জ্রিদশার্দনাঃ॥ কেষা কিৰাহৰ শিছ্না শিছ্ন গ্ৰীবান্তপাপরে। শিরাংসি পেতৃরভেষামভে মধ্যে বিদারিতা: ॥ विक्रिन्नज्ञाख्याद्वभाव (পত्कर्याः महास्त्राः। একবাহ্বক্ষিচরণাঃ কেচিদ্দেশ্যা দ্বিধাকুতাঃ॥ ছিলেছপি চাস্তে শিরসি পতিতাঃ পুনর খিতাঃ। কবন্ধা যুযুধুর্দেব্যা গৃহীতপরমাযুধাঃ ॥ নন্তু শচাপরে তর যুদ্ধে তুর্যালয়া প্রিতা:। কবন্ধাশ্ছিন্নশির্দ: খড়ানশক্ত্যুষ্টপাণর: ॥ তিঠ ডিঠেতি ভাষতো দেবীমভে মহাস্কাঃ। পাতিতৈ রথনাগালেরস্থরত বস্করা। অগ্ন্যা সাভবং ভতা ৰতাভূৎ সুমূহারণঃ॥ শোণিতৌষ। মহানদ্যঃ সদান্তত্ত বিশ্বকর্ঃ। मर्था हास्त्रदेशनाक वात्रवास्त्रवासिनाम् ॥ कर्णन जन्महारेमनामञ्चतानाः जनाविका। निर्ता ऋषः यथा विश्ख्निमाक्त्रम् ॥ म ह निश्दका महानासमूरस्यन् युक्टकमतः। শরীরেভ্যেংমরান্ত্রীণানস্থান বিচিষ্তি #

দেবা গগৈক তৈত্তত্ত্ব কৃতং বৃদ্ধং তথাক্তরৈ:।

যথৈবাং তৃত্যুর্দেবাঃ পৃশ্বইটিযুচো দিবি ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে গাবর্ণিকে মহাস্তরে দেবীমাহান্ম্যে মহিবাক্তরগৈন্যবংগ
নাম দ্বাশীতিতমোহধ্যার:।

## ত্রাশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

--•:•--

ঋষিক্ষবাচ।

निह्नामानः ७९ देन्नामयत्नाका महाञ्चतः। त्मनानी किन्द्रः दकां भाष्यत्ये त्यां कुमथा श्विकाम् म (मरी: भद्रवर्षन ववर्ष मभरवश्रूवः। যথা মেকুর্গিরে: শৃক্তং তোরবর্ষেণ তোরদঃ 🛚। ভক্ত ক্ছিত্ব। ভতে। দেবী লীলয়েব শরোৎকরান । জঘান ভুৱগান্ ৰাণৈৰ্যস্তারকৈব বাজিনাম্॥ চিচেছেদ চ ধহু: সদ্যোধবজঞাতিসমূচিছ্তম্। विवाधि देवव शांटक्यू किल्लभयानमा करें १६॥ স চ্ছিন্নধৰা বিশ্বখো হতাখো হতসার্থি:। অভ্যধাবত তাং দেবীং পঞ্চাচর্মধরেহিস্করঃ ॥ সিংহমাহতা থড়েগন তীক্ষধারেণ মৃদ্ধনি। आक्षान कृष्क नत्रा (क्वीमना किर्वित्रान् ॥ তন্তা: থড়েগা ভূজং প্রাপ্য পফাল ন্পনন্দন। ততো জগ্রাহ শূলং স কোপাদকণলোচন:॥ চিক্ষেপ চ ততন্ত্তৎ তু ভদ্রকাল্যাং মহাস্থরঃ। ষাজ্যমানং তেষোভী রবিবিস্বমিবাস্বরাৎ॥ দৃষ্টাতদাপভচহুলং দেবী শ্লমমুঞ্ত। তচ্ছুলং শতধা ভেন নীতং স চ মহাস্থর:॥ হতে তিমিন্ মহাবীৰ্ব্যে মহিবত চমুপতৌ। আজগাম গঞ্চারড়ণ্চামরভিদ্যানিনঃ।। গেহিপি শক্তিং মুমোচাথ দেব্যান্তামন্বিকা ক্রতম্ হ্বারাভিহতাং ভূমে পাত্রামাস নিপ্রভান্। ভগাং শক্তিং নিপতিভাং দৃষ্ট্য ক্রোধসম্বিত:। চিকেপ চামর: পুলং বালৈত্তদপি সাচিছনৎ॥ ততঃ সিংহ: সমূৎপত্য গঞ্জু ভাক্তঃ হিড:। विष्युष्कत वृष्यः (जन्ति देळि जिल्लो दिना । যুধামানৌ ভডভৌ ডু ভন্মানাগান্মহীং গভৌ। युर्धाटकश्किमः ब्रह्मे अहादिवविकास्तरेगः॥ <sup>ভতো</sup> বেগাৎ ধমুৎপত্য নিশত্য চ মুগারিণা। 🖣 विश्रात्व निव्यक्ताम्बद्ध प्रेषक् कुछम् ॥

উদগ্রন্ড রণে দেব্যা শিকারকানিভিইডঃ। **पञ्जपृष्टिकंटेनटेन्टर कत्रामम्ड निशांक्रिक: 🛚** ति क्वा भवाभारिङक् र्यमान काक्छम् । বাৰলং ভিন্দিপালেন বাবৈশ্বান্তং ভথান্ধকম্ ॥ উপ্রাক্তম্প্রবীধ্যক ভবেধন চ মহাহমুম্। विदनको চ कि भूरनन अवान नवरभवती ह বিড়ালভাসিনা কায়াৎ পাতরামাস"বৈ শিরঃ। र्फ्तरः क्ष्मृं **भटकाटको भटेतर्निटना यमक्रत्रम्**॥ এবং সংক্ষীরমাণে তু স্বলৈন্যে মহিবাস্থরঃ । মাহিষেণ স্বরূপেণ তাসরামাস তান্ গণান্ ॥ কাংশ্চিৎ তুগুপ্রহারেণ খুরক্ষেণৈগুপাপরান্। লাজুলতাড়িতাংশ্চান্যান্ শৃকাভ্যাঞ্ বিদারিতঃন্ বেগেন কাংশ্চিদপরান্নাদেন ভ্রমণেন চ। নিখাদপবনেনান্যান্ পাতরামাদ ভূতলে ॥ নিপাত্য প্রমধানীক্মভাধাবত **নোহত্বঃ**। সিংহং হস্ত: মহাদেব্যা: কোপং চল্লে ভডোহবিকা সোহপি কোপানহাবীর্যাঃ ধুরক্রমহীতল:। শৃকাভাাং পর্বভাহচাং ভিকেপ চ ননাদ চ। বেগভ্ৰমণবিক্ষা মহী ডক্ত ব্যশীৰ্য্যতঃ ॥ लाकृत्वनां रुज्ञाकाः भावनामानः नर्कजः ॥ ধৃতশৃক্বিভিনাশচ **খণ্ডথ ৪ং যযুর্ঘনাঃ**শ খাসানিলান্তাঃ শতশো নিপেজুর্নভসোহচলাঃ 🛭 ইতি ক্রোসমাগ্রাতমাপভস্তং মহাস্থ্রম্। पृष्टे। मा हिश्वका दकां पर जबशोब जनां करवार ॥ সাফিপ্তাভদ্যাবৈ পাশং ভং বৰক্ষ মহাহ্রম্। তত্যাজ মাহিষং রূপং সেহেপি ৰন্ধো মহামুধে॥ ততঃ সিংহোহভবৎ সদ্যো যাবৎ ত্ন্যাম্বিকা শিরঃ ছিনন্তি তাবৎ পুরুষঃ ধড়গণাণিরদৃশত ॥ তত এবাত পুরুষং দেবী চিচ্ছেদ শার্থক:। তং থড়াচর্মণা সার্দ্ধং ততঃ সোহভূমহাগলঃ 🖟 करत्व ह महाभिः हः ७ ६ हक्ये अर्थक ह । কর্মতন্ত্র করং দেবী থড়েগন নিরক্তত 🕾 ততো মহাস্করো ভূরো মাহিবং বপুরাস্থিত:। **क्टेबर क्लां ब्रामान देवरमा कार्र न** 5 बाठ बन्ह् ॥ ততঃ কুদ্ধা অগন্মতা চঞিকা পানমুভ্ৰমন্। भटभो भूनः भूनटेक्टव अवागांक्वरनाहमा ॥ ननक हा इस: (मार्शन वन वीर्याय नाक्ष : । বিবাণাভ্যাঞ চিকেপ চডিকাং অভি ভূগরান ॥ সাচ তান্ প্রহিতাংকেন চুর্বলী শরে। ক্রেঃ ১ উবাচ তং মদোদ্ভস্থর।পার্লাকরম্।

দেব্যবাচ। গৰ্জ্জ গৰ্জ কলং মৃত্মধু যাবৎ পিৰাম্যহম্। ময়া ত্য়ি হতেহতৈব গৰ্জিয়স্তাণ্ড দেবতাঃ ॥ ঋষিফ্ৰাচ।

থবস্কু । সম্ৎপত্য সাজ্য তং মহাস্কু ।
পাদেনাক্রম্য কঠে চ শ্লেনৈনমতাড় মৃৎ ॥
ততঃ সোহিশি পদাক্রাস্কু স্থা নিজমুথাৎ ততঃ ।
অর্জনিক্রাস্ক এবাতি দেবা বীর্য্যেণ সংস্তঃ ॥
অর্জনিক্রাস্ক এবাদে মুধ্যমানো মহাস্কুরঃ ।
তরা মহাসিনা দেব্যা শির্শিছ্ত্মা নিপাতিতঃ ॥
ততো হাহাকুতং সর্বং দৈত্যসৈন্যং ননাশ তৎ ।
গুহর্ম্তাং স্কা দেবীং সহ দিবৈয়ে মহিশিভঃ ।
জ্ঞার্দ্ধিতরো নন্তুশ্লাপ্রোগণাঃ ॥
তুঠুব্তাং স্কা দেবীং সহ দিবৈয়ে মহিশিভঃ ।
জ্ঞার্দ্ধিতরো নন্তুশ্লাপ্রোগণাঃ ॥
ইতি মার্ক্ডেরে মহাপ্রাণে সাব্ণিকে মহস্তরে
দেবীমাহাত্ম্যে মহিষাস্ক্রব্বেধা নাম
ক্যুশীতিত্বে সহাধ্যায়ঃ ।

## চতুরশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

—ঃ\*:— ঋষিক্ৰবাচ।

শক্রাদয়ঃ স্থরগণা নিহতেহতিবীর্য্যে তক্রিন্ জ্রাস্থানি স্কারিবলে চ দেবা।। তाः जूहे तुः अनिजनअनिदर्शास्त्राः म বাগুভিঃ প্রহর্ষপুলকোদগমচাকদেহাঃ॥ দেব্যা যয়া তত্মিদং জগদাঅশক্ত্যা निः (भवरमवर्गनमक्तिम्यूर्म् र्वा। ভামশ্বিকাম খিলদেবমহ্ষিপুজাাং ভক্তা নতা: স্ম বিদ্ধাতু ওভানি সা ন:॥ যক্তাঃ প্রভাবমতুলং ভগবাননত্তা ব্ৰহ্নাহর শচন হি বজুমলং বলঞা। সা চ্তিকাথিলজগৎপরিশালনায় নাশায় চাণ্ডভক্ষত মতিং করোডু॥ या औ: चन्नः ञ्रुक्तिनाः ज्वत्नचनम्नीः পাপাত্মনাং ক্বতধিয়াং হৃদয়েষু বৃদ্ধিঃ। প্ৰদা সহাং কুগজনপ্ৰভবস্থ লজা তাং ছাং নৃতাঃ অ পরিপালয় দেবি বিখিম ॥ কিং বৰ্ৱান তব ক্পন্চিস্তানেতৎ কিঞাতিবীর্যাস্ত্রক্ষকারি ভূরি।

কিঞাহবেষু চমিতানি তবাতি যানি मर्क्षम् (नवाञ्चत्रदग्वनवानिदक्ष् ॥ হেতুঃ সমস্তব্দগতাং ত্রিগুণাপি দে।টেষ র্ভায়সে হরিহরাদিভিরপ্যপারা। দর্কাশ্রয়।থিলমিদং জগদংশভূত-মব্যাক্তা হি পরমা প্রকৃতিস্বশাদ্যা 💵 যস্থা: সমস্তম্বতা সমূদীরণেন তৃशिः श्रमाडि नकरनत् मरथत् रमिति । স্বাহাসি বৈ পিতৃগণস্থ চ তৃপ্তিহেতু-কুচোর্যাদে অমত এব জানৈ: স্বধা চা ষা মুক্তিহেতুরবিচিন্তামহাব্রতা চ অভঃস্থাসে স্থানিয়তে ক্রিয়ত স্থারেঃ। মোক্ষার্থিভিন্ম নিভিন্নসমস্তদেটেষ-বিদাসি সাভগবতী পরমা হি দেবি ॥ শকাত্মিকা স্থবিমলগ্যজুষাং নিধান-মুক্গীতরমাপদপাঠবতাঞ সায়।ম্। দেবী ত্রগ্নী ভগবতী ভবভাবনায় বার্ত্ত। চ সর্বজগতাং পরমার্তিহন্ত্রী । মেধাসি দেবি বিদিতাখিলশাহ্রসারা ত্র্গাসি তুর্গভব্দাগরনৌরসঙ্গা। 🕮ঃ কৈটভারিহাদর্যেককুতাধিবাদা গৌরী অমেব শশিমৌলিক্বত প্রতিষ্ঠা। केष ९ महा मगग नः পরিপূর্ণ চক্ত বিশ্বাসুকারি কনকোত্তমকান্তি কান্তম্। অত্যন্তুতং প্রস্তমাপ্রক্ষা তথাপি বক্তুং বিলোকা সহসা মহিধাস্থরেণ। দৃষ্ট্য ভু দেবি কুপিতং ভ্রুক্টীকরান-মুদাচছ শাক্ষ দদৃশ চছবি যল সদাঃ। প্রাণান্ মুমোচ মহিষ্**স্তদ্তীব চিত্রং** কৈজীব্যতে হি কুপিতাম্বদর্শনেন। দেবি প্রদীদ পরমা ভবতী ভবায় সদ্যো বিনাশয়সি কোপবতী কুলানি। বিজ্ঞাতমেতদধুনৈব যদন্তমেত-রীতং বলং সুবিপুলং মহিষাস্থরত ৷ তে সম্মতা জনপদেষু ধনানি তেষাং ভেষাং ষশাংসি ন চ সীদভি ধর্মবর্গঃ। ধন্তান্ত এব নিভৃতাত্মজভৃত্যদারা যেষাং সদাভাদয়দা ভবতী প্রসন্ধা। धर्या। वि ति वि नक्तानि नदेशव कर्या-ণ্যত্যাদৃত: প্রতিদিনং স্কৃতী করেছি।

দর্গং প্রবাতি চ ততো ভবতীপ্রসাদা-्वाक्यायश्री क्वना नम्र (नवि एउन ॥ চুর্গে স্থতা হরসি ভীতিমশেষকভোঃ প্ৰতিঃ স্বভা মতিমতীৰ ওডাং দদাসি। नातिसार्ः थलप्रशातिनि का पन्छ। मर्का भका क्रुवां व मनार्कि हिन्दा ॥ এডিইটেডর্জগছুটপুতি অংখং ভবৈতে কুৰ্বস্ত নাম নরকার চিরার পাপম্। मः आत्रमृज्यस्थिगमा निवः श्रवाञ्च মত্তেতি নুনমছিতান্ বিনিহংসি দেবি ॥ দৃষ্টেব কিং ন ভবতী প্রকরোতি ভস্ম नर्काञ्चरानतियु यद श्रीहर्तायि भक्षम्। লোকান প্রয়াম্ভ রিপবোহপি হি শল্পতা ইখাং মত্তির্ভাবতি তেম্বলি তেহতিসাধনী॥ থজাপ্রভানিকরবিস্ফুরণৈস্তথে।বৈএঃ শূলাগ্রকান্তিনিবছেন দুশোহস্থরাণাম্। যরাগতা বিলয়মংশুমদিস্রথও-যোগ্যাননং তব বিলোক্যভাং তদেত্ ॥ হুর ত্তরত্তশমনং তব দেবি শীলং রূপং তথৈতদ্বিচিন্তামতুলামলৈঃ। বীৰ্যাঞ্হন্ত হতদেব পরাক্রমাণাং देवित्रचित खेकिंदिज्य मन्ना च्राम्थम् ॥ কেনোপমা ভবতু ভেহ্স পরাক্রমস্ত রূপক শত্রুভয়কার্য।তিহারি কুতা। টিতে রূপা সমরনিঠুরতাচ দৃষ্ট্র परवाव रमवि वत्ररम भूवन बरायश्री ॥ তৈলোক্যমেতদ্ধিলং রিপুনাশনেন আঁতং জয়া সমরমূর্দ্ধনি তেহপি হতা। নীতা দিবং রিপুগণা ভয়মপাপান্ত-मयोकम्मानस्वात्रिष्ठवः नमस्यः । भ्लान পाहि त्ना प्रिति পाहि थएकान हावित्क। भिष्मित्रत्व नः शाहि हाशकातिश्रत्व ह ॥ পোচ্যাং রক্ষ প্রতীচ্যাঞ্চ ডিওকে রক্ষ দক্ষিণে। লামণেনাত্মশূলক উক্তরক্তাং তথেশ্বরি॥ नोगानि यनि क्रभानि देवलाका विष्ठवेख एव <sup>যানি</sup> চাভার্থবোরাণি তৈ রক্ষাস্থাংতর্থা ভূবম্॥ প্জাশ্ৰগদাধীনি বানি চাশ্ৰাণি তেইখিকে। क्रम्बरमञ्जीति देखत्यान् तक मर्वाङः ॥

श्रीवक्रवाह । प्रवेश च्रष्ठा स्ट्रेडक्सिटेबाः क्रस्टेमब्ल्स्टनांडहेवः । चिक्तं विश्वाः थावी उथा महास्राम्यदेशः ॥
ज्ञाः गमदेखिस्रार्याम्देशस्र्रेशस्य प्रिजा ।
व्यार व्यागस्यम्भी ममजान् व्याजान् स्त्रान् ॥
तन्तुवातः ।

বিষ্ঠাং তিদশাঃ সংক্রিদশকে। হতিবা দিওস্। দদামাহমিতি শ্রীতাা স্তবৈরেভিঃ সুপুঞ্জিতা ॥

দেবা উচু: ।
ভগবত্যা ক্বডং সর্কং ন কিঞ্চিদ্বশিষ্যতে।
যদসং নিহতঃ শক্রমাকং মহিবাস্তরঃ ॥
যদি বাপি বরে দেমস্বামাকং মহেশ্রি।
সংস্থা সংস্থা সং বেনা হিংলেথাঃ প্রমাপদঃ ॥
যশ্চ মর্ত্তা স্থাবেভিদ্বাং স্থোব্যত্যমলাননে।
তক্ত বিভ্রম্থিতিইবর্জনদার্দিসপদাম্।
বৃদ্ধ্যেইস্থপ্রস্মা সংভ্রেথাঃ সর্কাদিক ॥
খবিষ্ণাচ।

ইতি প্রদাদিতা দেবৈজ্জগতোহর্থে তথাত্মন:।
তথেত্যুজ্য ভদ্রকালী বভূবা্ছহিতা নূপ ॥
ইতোতৎ কথিতং ভূপ সন্তুতা সা যথা পুরা।
দেবী দেবশরীরেভাো জগত্ররহিতৈ বিণী ॥
পুনশ্চ গৌবীদেহা সা সমৃত্তুতা বথাতবং।
বধায় তৃষ্টদৈত্যানাং তথা শুস্তনিত ক্রাঃ॥
রক্ষণায় চ লোকানাং দেবানামুপকারিণী।
তচ্চুণ্য ময়াথাতিং যথাবং কথয়ামি তে ॥
ইতি মার্কণ্ডেমে মহাপুরাশে সাবেণিকে মবস্তরে
দেবীমাহাত্যো মহিষাস্থরবধসমান্তিনাম

## পঞ্চাশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

চতুৰশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

----

ধ্বিক্রাচ।
পুরা গুড়নিগুড়াভায়স্থলভাগে শচীপড়েঃ।
কৈলোক্যং যক্সভাগাশ হতা মদ্বলাল্ডাং ॥
তাবেব প্রাতাং তহদবিকারং তথৈনবম্।
কৌবেরমর্থ বাম্যঞ্চ চক্রাতে বরুপছ্ট ॥
তাবেব প্রনর্দ্ধিক চক্রমুর্কাছিকর্ম্ম চ।
ততো দেরা বিনির্ফুড়া ব্রইরাজ্যাঃ প্রাক্তিয়া।
হতাধিকারাজিদশাল্ডাগুঃ সর্কে নিরাক্তাঃ।
মহাস্থলাকং বরো দঙ্গে ব্রাপথ্য স্থতাধিকাঃ।
ব্যান্তাকং বরো দঙ্গে ব্রাপথ্য স্থতাধিকাঃ।

ভবভাং নাশসিষ্যামি তৎক্ষণাৎ পরমাণদং ॥ ইভি কৃষা মতিং দেবা হিমবস্তং নগেশ্বরম্। জগ্মুম্ভত্ত ততে। দেবীং বিষ্ণুমারংং প্রত্তীবুং॥ দেবা উচুং।

নমো দেবৈর মহাদেবৈর শিবারৈ সভতং নম:। নম: প্রকৃতিত ভন্তারৈ নিরতা: প্রণতা: স্ম তাম্ রোজারের নমো নিত্যারে গৌর্ব্য ধবিত্রা

নমো নমঃ।

জোৎসাইর চেন্দুরপিটেশ স্থাইর সভতং নমঃ॥ कनारिण अन्छ। त्रेषा निरेका क्रमा नरमा नमः নৈশ তৈতা ভূভূতাং-লক্ষ্যে স্ক্রাইণ্য তে নমো নমঃ कुर्नादेव कुर्नेभावादेव मात्रादेव मर्ककात्रिदेगा । খ্যাতৈত্য ভটেগৰ ক্ষফাটের ধূমাটের সভতং নম:॥ অতিসৌশ্যাতিরৌদ্রারৈ নতান্তকৈ নমো নমঃ नरमा छ १९०४ जि छोटेब ८ मरेवा कुरे छा नरमा नमः যা দেবী সর্বভূতেরু বিষ্ণুমায়েতি শবিকাঃ। नम्छरेख नम्छरेख नम्छरेख नरम्। नमः॥ ষা দেবী সর্বভৃতেষু চেতনেতাভিধীয়তে। नमस्टेमा नमस्टेमा नमस्टेमा नरमा नमः॥ থা দেবী সর্বভৃতেষু বৃদ্ধিরপেণ সংস্থিতা। नमस्ति नमस्ति नमस्ति नमस्ति नमः॥ যা দেবী সর্বভৃতেষু নিজারপেণ সংখিতা। नमच्छेटच नमच्छेटच नमच्छेटच नम्भा नमः॥ যা দেবী সর্বভূতেষু ক্ষারূপেণ সংস্থিতা। नमखरेख नेमखरेख नमखरेख नरमा नमः॥ যা দেবী স্কভিতের ছায়ারপেণ সংস্থিতা। नगलतेल नगलतेल नगलदेल नरमा नमः॥ যা দেবী সর্বভূতেরু শক্তিরপেণ সংস্থিতা। नमस्त्रेस नमस्त्रेस नमस्त्रेस नमा नमः॥ যাদেবী সর্বভূতেযুত্ফারণেণ সংস্থিতা। नमछटेना नमछटेना नमछटेना नरमा नमः॥ যা দেবী সর্বভৃতেরু ক্ষান্তিরূপেণ সংস্থিতা। नम्छटेमा नम्छटेमा नम्छटेमा नटमा नमः॥ যা দেবী সর্বভূতের জাতিরপেণ সংস্থিতা। नम्छदेना नम्छदेना नम्छदेना नम्मा नमः॥ যা দেবী সর্বভূতের লজ্জারপেণ সংস্থিতা। नमखदेना समखदेना नमखदेना नरमा नमः॥ ষা দেবী সর্বভূতেরু শান্তিরপেণ সংস্থিতা। समछटेना समछटेना समछटेना सर्वा नगरः॥ या त्वरी नर्त् पृट्डेव् अकात्रत्वन मःविका

नगरुटेना नगरुटेना निगरुटेना नरमा नगः ॥ যা দেবী সর্বভৃতের কাল্কিরণেশ শংস্থিতা। नमछटेना नमछटेना नमछटेना नत्मा नमः ॥ या (मरी नर्ककृत्वयु नक्षीक्रत्थन मः विका। नम्खरेना नम्खरेना नम्खरेना नरमा नमः ॥ যা দেবী সর্বভিতের বৃত্তিরূপে**ণ সংক্ষিতা।** न्यस्टिम् न्यस्टिम् न्यस्टिम् न्या न्या । যা দেবী সর্মভূতের স্বভিন্নপেণ সংস্থিতা। नगरहरेना नगरहरेना नगरहरेना नरमा नमः॥ যা দেবী সর্বভৃতেরু দয়ারপেণ সংস্থিতা। नगरुदेगा नगरुदेगा नगरुदेगा नत्मा नमः ॥ যা দেবী সর্বভৃতেষু তৃষ্টিরূপেণ সংস্থিতা। नमल्टेना नमल्टेना नमल्टेना नत्मा नमः ॥ যা দেবী সর্বভৃতের মাতৃরপেণ সংস্থিতা। नमस्रोता नमस्रोता नमस्रोता नरमा नमः। या (परी मर्स्रज्रिक् लाखिकार्णण मःश्विणा। नमखरेगा नमखरेगा नमखरेगा नरमा नमः॥ ই ক্রিয়াণামধিষ্ঠাতী ভূতানাকাখিলেযু যা। ভূতেষু সভতং তভৈ ব্যাপ্তিদেবৈ নমে। নমঃ 🗈 চিতিরপেণ বা কুৎস্নমেত্রাংপ্য স্থিতা জগৎ। नगरुटेमा नगरुटेमा नगरुटेमा नटमा नमः॥

স্তুতা স্থাবৈঃ পূর্বমভীইনংশ্রমাৎ
তথা স্থাবেশ্রেণ দিনের নেবিতা।
করোত্ সানঃ শুভাহত্ত্রীশ্রী
শুভানি ভল্লাণ্ডিহন্ত চাপদঃ দ যা সাপ্তাতং চোদভাইনতাতাপিতৈস্মাভিরীশা চ স্থাবিরন্মসাতে।
যা চ শ্বতা তৎক্ষণমেব হস্তি নঃ
স্র্বাপনো ভক্তিবিন্দ্রম্বিভিঃ ॥
শ্বিক্ষবাচ।

এবং ন্তবাদিযুক্তানাং দেবানাং তত্র পার্বতী।
মাতৃমভ্যাববৌ তোরে আহ্বা নৃপনন্দন ॥
সাহববীৎ তান্ স্থবান্ স্থল্রবিজ্ঞান্ত কর্মতহত্ত্র ক
শরীরকোরতশ্চানাঃ সমৃত্ত্বাববীজ্ববা ॥
ন্তোত্রং মইমতৎ ক্রিরতে শুস্তদৈতানিরাক্রতৈঃ।
দেবৈঃ সমেতেঃ সমরে নিশুন্তেন পরাজিতঃ।
শরীরকোরাক্রথ ভন্তাঃ পার্বত্যা নিঃস্তাদিক্র্য কৌষিকীতি সমন্তের্ ততো লোকের্ গীরতে॥
তস্যাং বিনির্গতারান্ত ক্লাভূৎ সাপি পার্বতী।
কালিক্তি সমাধ্যাতা হিমাচসক্কতাশ্রহা।

**उट्डार्शिकार नहां क्रशर विद्यानार स्मारताह्यम।** ममर्म हत्था मूक्ष्म कृत्छो अञ्चलिक्षद्रशः ॥ -ভাভ্যাং কন্তাৰ চাৰ্যাভা অভীব স্থমনোহরা। कान्तराख जी महाबाब कानवरी हिमान्नम ॥ নৈৰ ভাতৃক্ কচিক্ষেপং দৃষ্টং কেনচি ছন্তম্ম। ळावठाः काणास्यो त्ववी गृष्ट्डाकाञ्चरत्रचतः । बीतप्रमिक्तिर्स्ति (म्हाक्रम्स) निमक्ति। সা তু তিট্ডি দৈতোক তাং ভবান্ ক্লষ্ট্মইতি # यानि बक्रानि मगरता शकाचानीनि देव व्यरका। বৈলোকো তু সমন্তানি সাম্প্রভং ভান্তি তে গৃহে র্ত্রবিতঃ সমানীতো গদরত্বং পুরন্দরাৎ। भाति**बाज्यकण्डावः उटेथ**रवाटेकः अव। इतः ॥ বিমানং হংলদংযুক্তমেতৎ ডিগ্রতি তেহঙ্গণে। त्रक्रक्तिशानी उर यमां नी त्यस्ता रुद्ध स्॥ নিধিরের মহাপক্ষঃ সমানীতো ধনেখরাৎ। क्षिकिनीः मरमो ठाकियांनाममानशक्काम्॥ ছবং তে বারুণং গেছে কাঞ্চনং প্রাবি ভিঠতি। তথা वः मान्यन वरता यः भूतामी । ध्वजा भरतः ॥ মৃত্যোকৎকাভিদা নাম শক্তিরীশ ত্রা হতা। পাশ: স্লিবরাজ্স্য ভাতৃস্তব পরিগ্রহে ॥ নি গুন্তস্যানি ছাতাশুচ সমস্তা রত্নজাতরঃ। বহ্নিরপি দদৌ ভুভ্যমগ্নিশৌচে চ বাস্সী॥ এবং দৈতে।জ্ৰ রত্নানি সমস্তান্তান্ত । ষীবন্ধনা কল্যাণী ত্মা কন্মান গৃহতে ॥

শ্বিক্ষবাচ।
নিশমেতি বচঃ শুস্তঃ স তদা চণ্ডস্প্রোঃ।
প্রেবর্গনাস স্থানীবং দৃতং দেব্যা মহাস্থ্রম্॥
ইতি চেতি চ বক্তব্যা সা গদা বচনাম্ম।
যথা চাভোতি সম্প্রীত্যা তথা কার্য্যং দ্বমা লঘু॥
স তত্র গদ্বা ব্যান্তে শৈলোদ্ধেশ্হতিশোভনে।
সা দেবী তাং ততঃ প্রাহ প্লক্ষং মধুরুরা গিরা॥
দৃত উবাচ।

দেবি দৈত্যেখরঃ ওস্কটেন্তলোক্যে পরমেখরঃ।
দ্ভোহহং ক্রেবিভজেন ছৎসক্যাপমিহাগতঃ ॥
অবাহতাজ্ঞঃ সর্ব্বাস্থ বং সদা দেববানিষু।
নির্ক্ষিতাবিজনৈত্যারিঃ স বদাহ শৃণ্ছ তৎ ॥
মন কৈলোক্যমবিলং মম দেবা বশামুগাঃ।
বজ্ঞভগানাহং সর্ব্বাস্থানীয় পৃথক্ পৃথক্।
কৈলোক্যে বন্ধন্দ্রানি মনবস্তান্যদেবতঃ॥
তিবৈব পদ্মন্তানি ক্রম্বা নেব্রাবাহনন্॥

কীরে। বনধনে ভ্রমখরত্ত্বং মমাম হৈঃ।
উচ্চৈ: শ্রবসংজ্ঞাং তৎ প্রশিপত্য সমর্পিভ্রম্ ॥
যানি চান্তানি দেবের গন্ধকের্বরেগরু চ ।
বরস্থানি ভ্রমিন ভানি মধাব শোভনে ॥
জীরত্বভাং তাং দেবি লোকে মন্তামহে বর্ম্।
মাং বা মমাহলং বাপি নিশুভ্রম্কবিক্রমম্।
ভল সংচ্ঞাণালি রত্নভূতাসি বৈ যতঃ ॥
পরমেখর্য্যমভূলং প্রাপ্যানে মৎপরিগ্রহাং।
এতবুদ্ধা সমাবোচ্য মৎপরিগ্রহতাং ব্রদ্ধ॥
ধ্যবিক্রবাচ।

ইত্যকা সা ভলা দেবী গন্তীরাস্তঃমিতা জগো। তুর্গা ভগবতী ভলা ব্যেলং ধার্যতে জগং॥ দেব্যবাচ।

শতামুক্তং তথা নাত্র মিথা। কিঞ্চিৎ দরোদিত মৃ।
কৈলোক্যাধিপতিঃ তত্তো নিত্ত কালি তালুশঃ।
কিন্তুত্ব বং প্রতিজ্ঞাতং মিথা। তং ক্রিরতে কথম্
শ্রুতামলবৃদ্ধিতাং প্রতিজ্ঞা যা কৃতা পুরা।
যো মাং লগতে সংগ্রামে যো মে দর্পং ব্যপোহতি
যো মে প্রতিবলা লোকে স মে ভর্তা ভবিহাতি
তদাগতত্ত্ তভোহত্র নিতত্তো বা মহাস্তরঃ।
মাং লিতা কিঞ্চিরেণাত্ব পালিং গ্রুত্ব মে লঘু।
দূত উবাচ।

অবলিপ্তানি নৈবং খং দেবি জৈছি মমাগ্রতঃ।
কৈলোকো কঃ পুমাংখিটেদগ্রে শুস্তনিওস্তরোঃ॥
অভ্যেমানি দৈওগানাং দর্পে দেবা ন নৈ বৃধি।
তিপ্তসি সমূপে দেবি কিং পুনঃ স্ত্রী ঘনেকিকা॥
ইন্দ্রানাং ককাা দেবাস্তমুর্থবাং ন সংমৃগে।
ভঙাদীনাং কথং তেষাং জী প্রমান্যানি সমুব্দ্ ॥
সা খং গচ্ছ মনিববাকা পার্বং ভঙানিওস্তরোঃ।
কেশাক্রপনির্দ্ভগোরবা মা গমিষানি॥
দেব্বাচ।

ইতি মার্কভেরে মহাপুরাণে সাব্ধিকে মহস্করে দেবীমাহাত্ম্যে দেবা। দুতসংবালে নাম



## ষড়শীতিতগোহধ্যায়ঃ।

--:+:---

### ঋষিক্ষবাচ।

ইত্যাকর্ণ বচে। দেবাা: স দ্তোহমর্থপ্রিত:।
সমাচত্ত সমাগমা দৈতারালার বিজ্ঞান ॥
তস্য দৃত্স্য ভ্রাকামাকর্ণাল্পররাট্ তত:।
সক্রোধ: প্রাহ দৈত্যানাম্বিপং ধ্রলোচনম্॥
তে ধ্রলোচনাত সং স্বদৈত্যপরিবারিত:।
তামানর বলাদ্ টাং কেশাকর্ষণবিহ্বলাম্॥
তৎপরিত্রাপদ: কন্চিদুবদি বে। তিউতেহপর:।
স হস্তব্যোহমরো বাপি যক্ষে। গর্কর্ম এব বা ॥
স্বিক্রবাচ।

তেনা অপ্ততে শীলং স দৈতো ধ্যুলোচন:।

হৃত: ষষ্টা সহস্রাণামস্কাণাং ক্রতং যথে ॥
স দৃষ্টা তাং তক্লো দেবীং তুহিনাচল সংস্থিত, ম্।
জগাদোটেচ: প্রমাহীতি মূলং ওভনিওভয়ো:॥
ন চেৎ প্রীত্যাদ্য ভবতী মন্তর্ভারমুপেষ।তি।
ততো বলারমান্যেষ কেশাকর্ষণবিহ্বলাম্॥
দেব্যুবাচ।

বৈতে খেক্সেথা ছিতে। বলবান্বলসংবৃতঃ। বলাল দ্বিসিমামেবং ততঃ কিং তে করোম্যহম্॥ ঋষিক্ষবাচ।

ইভ্যুক্ত: দোহভাধাৰৎ তামস্থরে। ধ্রলোচনঃ। ভ্ৰাৱেশৈৰ তং ভন্ম সা চকারান্বিকা ততঃ। অথ জুদ্ধং মহাদৈক্তমস্থ্রাণাং তথাধিকাম্। ववर्ष भावरिकछोटकुछ्पा मुक्तिश्रवादेशः ॥ **एटा ध्रुमिटः टकाभार कृषा नामः ऋटेख**व्रवम् । পপাতাञ्चतरमनामाः मिश्टहा (म्याः चवाहनः ॥ কাংশিতং কর প্রছারেণ দৈত্যানাল্যেন চাপরান্। ष्याकाखा। हाधरत्रवाकान् वयान स्मरास्त्रान् ॥ কেষাঞ্চিং পাটয়ামাস নথৈ: কোষ্ঠানি কেশরী। তথা তলপ্রহারেণ শিরাংসি ক্লতবান্ পৃথক্॥ বিচ্ছিন্নৰাছশিরদঃ ক্বতান্তেন তথাপরে। भटभो ह क्रिनिश दकाक्रीनटखराः ध्राटकमनः॥ करान खबनः नर्काः कवः नौजः महायाना । टिन दिम्बिना (प्रवा) वाहरननां किरकाशिनां॥ ঞ্ছা ভগস্থ দেব্যা নিহতং গুমলোচনম্। বলঞ্ ক্ষরিতঃ কুৎমং দেবীকেশরিণা ভতঃ ॥ চুকোপ দৈড্যা ধিপজিঃ গুদ্ধ: প্রফার্রিতাধরঃ।

আজাপ্যানাস চ ভৌ চওামুখ্যে মহাস্থারে ।
হৈ চও হে মুগু বলৈর্বাইলেঃ পরিবারিতো ।
তত্ত্ব গছত গড়া চ সা স্থানীয়ন্তাং বাবু॥
কেশেবাকুবা বছা বা বদি বং সংশ্রো বুধি।
তদাশেবাবুধিং সর্কৈরস্থারকিনিহন্তভাষ্॥
তদাং হতারাং ছ্টারাং সিংহে চ বিনিপাতিতে
শীন্তমাগম্যতাং বছা গৃহীতা তামধান্তিকাষ্॥
ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপ্রাণে সাবর্ণিকে মহন্তরে
দেবীমাহান্যে তভানিগভাসেনানীধ্রণোচনব্রোনাম বড়শীতিতমেহিধারঃ॥

## সপ্তাশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:--

### ঋষিক্বাচ।

আজপ্তান্ত ততো দৈত্যাশ্তমুগুপুরোগমা:। চতুরকবলোপেতা য্যুরভূগ্যভায়্ধাঃ॥ দদুভত্তে ভতে। দেবীমীষদ্ধাসাং ব্যবস্থিতাম্। সিংহস্যোপরি শৈলেজশৃলে মহতি কাঞ্চনে। তে দৃষ্টা তাং সমাদাতুম্পামং চক্রপাতাঃ ॥ আরুষ্টচাপাসিধরাস্তথাত্তে তৎসমীপগাঃ। ভতঃ কোণং চকারোকৈরশ্বিকা ভানরীন্ প্রতি। (कार्यन काम्या वननः म्योवर्गम्बृद छना ॥ ক্রকুটীকুটিলাং ভসা। ললাটফলকাদ্জেওম্। কালী করালবদনা বিনিজ্ঞাস্তাদিপাশিনী। বিচিত্রখট্রাঙ্গধরা নরমালাবিভূষণা। দ্বীপিচর্মপরীধানা শুক্ষমাংসাতি**ভৈরবা।** অভিবিন্তারবদনা জিহ্বাললনভীষণা। নিমগা রক্তনয়না নালাপুরিতদিঅপুথা ॥ সা বেগেনাভিপতিতা ঘাতমতী মহাত্মান্। দৈতো ততা কুরারীণামভক্ষত তছণম্। পাঞ্চিআহাত্মপ্রাহিংবাধ্যটাসম্বিতান্। नमाशिदेशकहरखन मूर्य किएक्य वाद्रशान्। **७टेशव त्यांशः कृत्रदेश त्रशः मात्रशिना मह।** निकिना वरक मनदेनक संयुक्त विदेख त्रवस् **এकः ख्रुवार क्लान् बीनाशाम्य ठाननान्।** शांदित तो क्रिया है कि वास में क्रिया के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्व रेड्यू कानि 5 नवानि महाज्ञानि छवाक्टेनः। মুখেন অগ্রাহ কবা দশনৈশ্বিতান্যণি ॥

विनार छवलर नर्वियञ्जानीर महाजानाम्। ममक्षा अक्षत्रका नामना रिका का क्र द ७ थ। ॥ অসিনা নিহতাঃ কেচিৎ কেচিৎ ধটাঙ্গতাড়িতাঃ লগুরিনাশমকুরা দস্তাগ্রাভিহতান্তবা। कर्णन उद्देश नर्समञ्ज्ञानाः निभाष्ठितम्। पृष्ठे। हरशाक्ष्विक्यां य खाः कानीमिष्ठिकीवनाम् ॥ **मत्रदर्शन हाजी देम की मान्त्रीः छाः महाञ्चतः।** इतिश्रोगीन् ठटेकम्ठ मूखः किटेखः नहस्रमः ॥ তানি চক্রাণ্যনেকানি বিশ্বানানানি তমুধস্। वर्ज्यशंकविश्वानि ऋष्ट्रनि घटनान्त्रम् ॥ ততো অহাসাতিক্ষ। ভীমং ভৈরবনাদিনী। कानी कत्रामयका अर्थ पर्मिम महाव्यक्ता॥ উত্থান চ মহাসিংহং দেবী চণ্ডমধাবত। গৃহীতা চাস্যকেশেষু শিরস্তেন।সিন।চ্ছিনৎ॥ অধ্মুভোহপাধাৰৎ তাং দৃষ্টা চভং নিপাতিতম্ তমপাণা**তয়ভূমৌ সা থড়গ**।ভিহতং ক্ৰা। **२०८मवः ७७: टेननाः मृहै। ५७: नि**र्भाष्टिय् । মৃওঞ্জ স্মহাবীর্যং-দিশো ভেজে ভয়াতুরম্॥ শির\*চণ্ডশা কালী চ গৃহীতা মুণ্ডমেব চ ॥ প্রাহ প্রচণ্ডাট্টহাসমিশ্রমভ্যেতা চণ্ডিক।ম্॥ ময়া তবাত্তোপজতৌ চণ্ডমুডৌ মহাণশু। যুদ্ধতে স্বয়ং শুদ্ধং নিশুদ্ধ হনিধাসি॥

শ্বিকৃৰাত।
তাবানীকৌ ততো দৃষ্ঠা চণ্ডমুণ্ডেম মহাস্থরে ।
উবাচ কালীং কলাণী ললিতং চণ্ডিকা বচঃ ॥
বন্দান্ত ওক মুণ্ডক গৃহী আ অমুপাগতা।
চামুণ্ডেতি ততো লোকে থ্যাতা দেবি ভবিষাদি
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুখাণে দাব্দিকে মন্বস্তারে দেবীমহাত্মো চণ্ডমুণ্ডবধো নাম
সপ্তাশীতিত্যাহধ্যারঃ ॥

অ্টাশীতিতমোহধ্যায়ঃ।

—•:• — ঋষিকবাচ।

हार्ष ह नि इत्छ देवत्वा मृत्य ह विनिशावित्व । वहत्ववृ ह देनत्वाम् कवित्वचन्नद्वयंतः ॥ उठः दक्षानभवाधीमदह्याः खद्यः द्यावानवान् । जित्नांशः नर्सदेनमाताः देवज्ञानामानित्वन इ ॥ अवा नर्सददेवदेक्ष्णाः वक्ष्मीजिक्तांम्थाः । कष्नाः हक्त्रनीष्टिनियां चवदेवव् जाः ॥ त्काणिवीयानि शकानवस्त्रानारं क्लानि देव। শতং কুণানি ধৌত্রাণাং নির্গচ্ছত্ব মখাক্ষরা॥ कानका त्मोर्ज जा त्मोर्याः कानत्कवाज्याञ्चाः युक्तात्र नज्जा निर्वाद्ध ज्याकादा चत्रिजा सभ ॥ ইত্যাজাপ্যান্তরপতিঃ ওল্ডো ভৈরবশাসনঃ। নিৰ্জ্ঞগাম মহাদৈশ্বসহকৈ কৈছিত্ব ভ: ॥ আগাতং চণ্ডিকা দৃষ্টা তৎ দৈক্সভিভীৰণম্। ब्यान्यदेनः शृतकामान धवत्वेशनमास्त्रम् ॥ **७७: निः ह। महानामम्बोर कुछ्दान् नूप्र।** ঘণ্টাস্বনেন ভান নাদানখিকা চোপরুংহরৎ ॥ यस्कााि शरदार्वे। नाः भकाश्विलि विश्वा। निनादेवजीयदेगः कानी किरभा विकासिजानना ॥ ७: निनानम् भक्षका देनकादेनदेव कड्किनम्। (नवी निःरुख्या कानी मटबादेयः श्रविवादिखा ॥ এতস্মিরস্তরে ভূপ বিনাশার স্কর্দিবাম্। ভবারামরসিংখানামভিবীর্য্যবলাবিভা: ॥ ব্ৰেশগুহৰিফ নাং ত্ৰেন্ত্ৰাচ শক্তৰ:। শরীরেভেগ বিনিক্রম্য ভক্রণৈচ্ঞিকাং ব্রু:॥ यना दनवन। यक्त भः यथी कृष्यवाहनम्। **ভবদেব হি ভচ্ছক্তিরস্থরান্ বে: कृমাধ্**ষৌ॥ হংস্যুক্তবিমানাত্রে **সাক্ত্রক্ম<b>উদু:**। আয়াতা ব্ৰহ্মণঃ শক্তিব্ৰন্ধাণী সাভিধীয়তে॥ मारक्षती व्याक्ता जिन्नवत्रधातिया। মহাহিবলয়া প্রাপ্তা চক্ররেখাবিভূষণা॥ (को मात्री मिकिश्छा ह सञ्ज्वतत्रनाहना । যোজুমভাাষয়ে দৈত্যান বিকা ওহরপিনী॥ তবৈধৰ ৰৈফ্ডৰী শক্তিগ্ৰুড়োপরি সংস্থিত।। मञ्चठकशनामाम अफ़्तरखाञ्चाभागत्यो ॥ যজ্ঞবারাহমতুলং রূপং যা বিভ্রতো হরে:। শক্তি: দাপ্যাৰ্যৌ তত্ৰ বারাহীং বিজ্ঞতী তত্ত্স্॥ नाविभःशै नृभिः**रमा विख्यो ममृभः वश्रः।** প্রাপ্তা ভত্ত সটাক্ষেপ্রক্ষিপ্তনক্ষত্তসংহতি: # বজহন্তা তথৈবৈক্রী গ্রহাকোপরিছিতা। व्योश महत्रनद्यना यथा भव्यक्ष देशव मा ॥ ততঃ পরিবৃতন্তাভিরীশানো দেনশক্তিভি:। হততামহ্বাঃ শীষং মম জীতাহে চভিক:মু॥ ততো দেবীশরীরাৎ ভূ বিনিজ্ঞান্তাভিভীবণা। চণ্ডিক।শক্তিরত্যুগ্রা শিবাশতনিনাদিনী॥ স। চাহ ধুর্জটিশমীশানমপর।জিভা। দৃওবং গচ্ছ ভগৰন্ পাৰ্থ ওম্ভ নিওম্বরো:॥

अहि ७४: नि७४क मानवाविशर्किरहो। যে চাজে দানৰ।ভত্ত যুকার সমুপন্থিতাঃ॥ देवारनाकाभिरत्या गण्डाः रपताः मद स्विज् जः ঘুরং প্রেয়াত পাভালং যদি জীবিতুমিচছণ 🕏 वनायरनभावपं ८ हम् ७ वस्या युक्तका विक्रमः। ভদাগচ্ছত তৃপান্ত মক্সিবাঃ পিশিতেন বং ॥ यरका नियूरका रमोरजान जन्ना रमवा। निवः चन्नम्। **নিবদুতীতি লোকেছিন্মিংস্ততঃ দা খ্যাতি**মাগতা। তেহপি শ্রুতা বচো দেব্যাঃ সর্বাধারতং মহাস্কর্যঃ অমর্ধাপুরিভা জগাুর্যতঃ কাত্যায়নী ছিতা।। ভতঃ প্রথমমেবাধ্যে শরশক্ত্যন্টিবৃটিভিঃ। ববর্কজভামর্বান্তাং দেবীমমরাররঃ ॥ সাচ ভান্ প্রহিতান্ বাণান্ শ্লচক্রপরখধান্। **हिटळ्ण लीलशाक्षाक्षण्यं टेक्ट**मंट हत् छि: ॥ ভভাৱভভথা কাৰী শ্ৰপাতবিদারিতান্। अहोत्रत्भाविकारकात्रीम् क्र्वडी वाहत्र छन। ॥ কমগুলুললাকেপছতবীৰ্যান্ হতৌলস:। ব্ৰহ্মাণী চাকবোচ্ছতুন্ যেন যেন ম ধাবতি॥ মাৰেশ্বী বিশ্লেন তথা চক্ৰেণ বৈক্ষবী। বৈত্যান্ অখা<u>ন</u> কৌমারী তথা শক্ত্যাতিকোপনা। ঞ্জী কুলিশ্পীতেন শতুশো দৈতাদানবা:। পেতৃর্বিদারিতাঃ পৃখ্যাং রুধিরৌখপ্রবর্ষিণঃ ॥ ভূ গুপ্রহারবিধ্বন্তা দং ট্রাগ্রহ্মতবক্ষসঃ। वज्ञाहमूर्व्या अभाष्टरकटळाव च विनाविषाः । नरेथिर्सिनाविजाः भाजान् खक्तवरी महास्वान्। নারসিংহী চচারাজৌ নাদাপূর্ণদিগম্বরা ॥ চণ্ডাট্টহাটসরস্করাঃ শিবদ্ত্যভিদ্বিতা:। পেতৃ: পৃথিব্যাং পজিভাংস্তাংশ্চর্থান।থ সা তদা । ইতি মাতৃগণং কুদ্ধং সন্দরন্তং মহাস্থান্। मृहे। ज्राभारे प्रविविधितम ७ एक्वा त्रिटेम निकाः ॥ भनावनभवान मृष्ट्री देवकान् माक्शनार्क्तिकान् । रयाक् प्रजायरयो क्रका त्रक्रवीरका महाद्रः ॥ রক্রবিশুর্থকা ভূমৌ পতভাত শরীরত:। সমূৎপত্তি মে**নিছাত্ত**্প্রমাণস্তদাস্ব: ॥ युक्रध न श्रमाभागितिकानका। यहास्त्रः। **७७८७को चर्राष्ट्रको करोक्**मणाङ्गर ॥ কুনিশেনাহতভাষ ডভ স্থাব শেণিভদ্। সমূত্রভুক্ততো বৈধিতিকাপাত্রপরাক্ষয়াঃ। যাবস্তঃ পতিভাক্তর শনী রাজকবিন্দবঃ। कारकः भूकवा जो डाखंबी रायनविक्रमाः ।

তে চাপি বৃষ্ধুস্ততা পুরুষা রক্তসম্ভবঃঃ ৷ সমং মাতৃভিরতুঃএশলপাডাতিভীষণম্॥ পুনশ্চ বন্ত্রপাতেন ক্ষতমক্ত শিরো ঘদা। ববাহ রক্তং **পুরুষান্ততো ভাতা: সহশ্রণ: 🛭** दिक्षेत्री समस्त्र देवनः व्यक्तमान्त्रियमान ह। পদর। তাড়য়ামাস ঐক্রী তমস্রেশরম্।। दिक्ष वैष्ठिक ভिन्न छ स्थितव्यादम् छदिः। गर्जामा जगदारिः उद्यमारेनमहास्रदेतः ॥ শক্ত্যা জ্বান কৌমারী বারাহী চ তথাসিনা। मार्ट्यदी जिन्दान तक्विरीकः मश्रास्त्रम् ॥ স চাপি গ্ৰয়া দৈতা: সৰ্বা এবাছন**ৎ পৃথক্।** মাতৃঃ কোপসমাবিষ্টো রক্তবীকো মহাত্রঃ। ততাহতত্ত বহুধা শক্তিশ্লাদিভিভূৰি। পপাত যো বৈ রক্তৌঘন্তেনাসঞ্তশোহস্থরা: ॥ रेज=हां ख्रां रुक्मखूरे ब्रद्भरेतः मकनः खनः। বাপ্যাদীৎ ততো দেবা ভ্রমাজগারুত্মম্ । छ।न् विवशान् ञ्रदान् पृष्टे । ठिखका व्यार मचदा । উবাচ কালীং চামুতে বিস্তরং বদনং কুরু॥ মছেলপাতসভ্তান্রকবি**ল**ূন্**মহাহ**রান্। র ক্রবিন্দোঃ প্রতীক্ষ স্থং বজেন্।নেন বেণিতা॥ ভক্ষতী চর রণে তত্ৎপল্লান্মহা**ত্**র!ন্। এবদেষ ক্ষয়ং দৈড্যঃ ক্ষীণরক্তো গমিষ।তি ॥ ভক্ষামাণাস্থয়া চোগ্রা ন চোৎপৎভাস্তি চাপরে॥ ইজুকো ডাং ততো দেবী শ্লেন।ভিজ্বান ডম্। মুখেন কালী জগৃহে রক্তবীজ্যা শোণিতম্॥ ততোহদাবাজবানাথ গ্ৰয়া তত্ত্ব চণ্ডিক।ম্। ন চাদ্যা বেদনাং চক্রে গদাপাতে ছাইল্লিকামপি ॥ তদ্যাহতদ্য দেহাৎ তুবহু স্ক্সাব শোণিতম্। যতন্তত্তৰন্তে ৭ চামুগু। সম্প্ৰতীক্ষতি ॥ মুখে সমুদাতা যেহভা রক্তপাতামহাস্থরা:। তাংশচধাৰাথ চাষ্তা পণৌ তক্ত চ শোণিতম্॥ एवरी मृत्नन वर्ष्यन वारेनद्रिमिष्टिश ष्टि डि: । জ্বান রজবীজং তং চামুগুাপীতশোণিতম্। স পপাত মহীপৃষ্ঠে শক্সক্তসমাহতঃ। নীরজক মহীপাল রক্তবীলো মহাত্র:। ততত্তে হর্মতুলমবাপুরিদশ। নৃণ। তেষাং মাতৃগণো খাতো নন্তাস্খাদোদভ: 🛊 ইভি মাৰ্কভেয়ে মহাপুরাণে সাব্দিকে মৰ-ত্তৰে দেখীমাহাত্মো রক্তবীক্ষবধো नामाडेन्त्रिष्ठिष्ठत्मारुगामः।

## একোননৰভিতমোহধ্যায়ঃ।

--:+:---

#### ब्राटकावाह ।

বিচিত্তমিদমাখ্যাতং ভগবন্ ভবতা মম।
নেবাাশ্চরিতমাহাস্থাং রক্তরীক্ষবধাশ্রেতম্ ॥
ভূরশ্চেচ্চামাহং শ্রোত্থ রক্তরীকে নিপ।তিতে ।
চকার গুল্ডো যৎ কর্ম নিশুস্তশ্চাতিকোপনঃ ॥
শ্বিক্বাচ।

চকার কোপমভূলং রক্তবীব্দে নিপাতিতে। গুস্তাহ্রের নিশুস্তশ্চ হতেম্বস্তের । হল্যানং মহাদৈলং বিলোক্যাম্ধ্যুবহন্। অভ্যধাবরি ৬ডে। হব মুব্যরাহন্তরসেনয়া ॥ তদ্যাগ্রতত্ত্বা পৃষ্ঠে পার্শ্বযোশ্চ মহাত্রা:। नन्द्रीष्ठेश्रुष्टाः खुका इद्धः (मरीम्शाययुः ॥ আৰুগাম মহাৰীৰ্য্য: গুল্ডোহপি স্ববলৈর্ত:। নিহন্তং চণ্ডিকাং কোপাৎ ক্লবা যুদ্ধন্ত মাতৃভি: 🛚 ততো যুদ্ধমতীবাসীদেবা। গুস্তনিগুস্তয়ো:। শরবর্ণমতীবোঝং মেঘমোরিব বর্গতোঃ। চিচ্ছেদাস্তাছরাংস্তাভ্যাং চণ্ডিকাণ্ড শরোৎকরৈ:। তাড়য়ামাস চাঙ্গেষু শস্ত্রৌট্ঘরস্থরেশ্বরৌ॥ নিশুভো নিশিতং থড়াগং চর্ম চারায় স্থপ্রভম্। অতাড়য়ন্ম র্কিনু সিংহং দেবা। বাহনমুত্তমম্॥ তাড়িতে বাহনে দেবী ক্রপ্রেণাসিমুত্তমম্। নিওভভাও চিচেছদ চর্ম চাপ্টেচজাকৃষ্॥ ছিলে চর্মাণি খড়েলা চ শক্তিং চিক্ষেণ সোহস্থরঃ। তামপাস্ত বিধা চকে চকেণাভিমুথাগতাম্॥ कार्याधारका निकल्छारथ मृतः कथार नानतः। আয়াতং মৃষ্টিপাতেন দেবী ভচ্চাপ্যচূর্বয়ৎ ॥ আবিধ্যাপ গদাং দোহপি চিক্ষেপ চণ্ডিকাং প্রতি। সাপি দেব্যা জিশুলেন ভিন্না ভত্মহুমাগতা # ডত: পরওহন্তং ভমারান্তং দৈত্যপুস্বম্। আহত্য দেবী বাণোটেম্বরপাতমত ভূতবে ॥ তিমিন নিপতিতে ভূমৌ নিওছে ভীমবিক্রমে। वां वर्षा जीवनः क्षः व्यवद्ये हस्त्र विकाम् ॥ म वर्षक्षभाष्ट्राटेक्ट वृश्चिम वर्षा बुटेशः। क्षेत्रहोसित्रकूरेनक्ताभारस्यः वरको नमः ॥ ज्यात्रांखः न्यांत्नाका (स्वी भव्यम्यानप्रः । আ।শৰকাপি ধহুৰক্তকারাতীৰ ছঃসহম্॥ প্ৰয়াশাস ককুভো নিজ্বতীবনেন চ।

नमञ्चेत्रजादेनकानाः एष्टब्यान्यविधातिना ॥ **७७: निংर्श महाना देवका किरुक्य का महामदेव:**। **পুররামাস গগনং গাং ভবোপদিলো দশ ॥** ততঃ কালী সমুৎপত্য গগনং স্থামভাত্রৎ। कत्राखाः उत्रिनादमन श्राक्त्रनाद्य विद्यादिखाः । অউট্রাসমশিবং শিবদূরী চকার হ। তৈঃ শব্দৈরস্থরাজেস্থঃ গুক্তঃ কোপং পরং ৰয়ৌ ॥ ত্রাত্মংতিষ্ঠ তিঠেতি ব্যাবহারাত্মকা যদা। তদা জয়েত্যভিহিতং দেবৈরাকাশসংস্থিতঃ॥ শুভেনাগত্য যা শক্তিৰ্দ্ধ জালাভিভীষণা। আয়ান্তী বহিক্টাতা সা নিরতা মহোকরা। निःहनारमन ७ छ छ या थः लाक वा सास्त्रम्। নির্ঘাতনিক্সনো ঘোরো বিভ্যান্যনীপতে ॥ ওস্কাহরান্দেবী ওছত্তৎপ্রবিভাহরান্। **हिट्छन चन्देत्रक्देशः मञ्ज्याश्य महत्रमः ॥** ততঃ সা চণ্ডিকা কুদ্ধা পুলেনাভিজ্ঞখান তখ্। স তদাভিহতো ভূমৌ মূর্চিহতো নিপপাত হ।। ততো নিওম্ভ: সম্প্রাপ্য চেতনামান্তকার্ম্ম ক:। काकवान मदेवर्षिवीः कानीः (कमन्निनः छथे। । পুনশ্চ কৃতা বাহ্নামযুত্ত দহুজেখন:। চক্রায়ুধেন দিভি**জশ্ছাদরামাস চীওকাম্**॥ ততো ভগবতী কুন্ধা হুৰ্গা হুৰ্গাৰ্ত্তিনাশিনী। চিচ্ছেদ তানি চক্রাণি স্বশবৈঃ শারকাংশ্চ তান # ততো নিভস্তো বেগেন গদাম।দায় চণ্ডিকাম্। অভ্যধাৰত বৈ হস্তঃ দৈত্যদেশাৰ্মাৰুত: ॥ তত্যাপতত এবাও গদাং চিচ্ছেদ চ্ভিকা। थएकान भिष्ठशास्त्रम म ह मृनः ममानटन ॥ শ্লহতং সমায়াতং নিওভ্রমমরাদিনম্। श्रुति विवाध मूरलन द्वशाविष्क्रन हिंखका ॥ ভিনন্ত তক্ত শ্লেন জদরারি:স্ডোহপর:। মহাৰলো মহাবীৰ্যান্তিঠেতি পুক্ৰো বদন্ ॥ তন্ত নিক্ষিতে। দেবী প্রহত স্মরৎ ভলা। শিরশ্চিচ্ছেদ থড়োন ডডো২্সাৰণভদ্ধবি 🛭 **७७: निःरुण्धात्माञ्चमः द्वेश्कृत्रनिद्यायत्रान् ।** ञञ्जाः छ। छवा कांगी निवष्टी छवानजान् 🛊 কৌমারীশক্তিনিভিন্না: কেচিন্নেগুর্মহাস্থরা:। अक्षानीमज**्रक्त्र**कारकारक नित्राकृष्ठाः # मार्ट्यती जिन्द्रश्य किनाः ८ १ कुछ था १८३ । বারাহীভুপ্রইজেন কেচিচ্চুলীকডা ভূবি॥ थ्यथ्य इंट्रिक देवकवा मानवाः कृषाः ।

বজেণ চৈত্রীহতাগনিম্তেন তথাপরে ॥
কেনিবিনেগুরস্থা: কেনিবর্তী মহাহংগি ।
তব্দিতাশনাধর কানীশিবদ্তীমুগানিশৈ: ॥
ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে সাবর্ণিকে মহস্তরে
দেবীমাহাজ্যে নিগুভবধো নামৈকোননব্ভিডরোহ্যারিঃ।

নবতিতমোহধ্যায়ঃ।

---:--

ঋষিক্ষবাচ।

নিত ভং নিহতং দৃষ্ট্বা ভ্রাত রং প্রাণসন্মিত ন্। হত্তমানং বলকৈ ব ত ভঃ কুলোহত্রবীষ্টা ॥ বলাবলেপত্তি অং মা ত্রে গর্কমাবহ। অক্তাসাং বলমাপ্রিত্য যুধাসে বাতিমানিনী॥ দেবাবাচ।

একৈবাহং অগত্যত্ত বিতীয়া কা মমাপর।। পঠেঞ্চতা সৃষ্ট মধ্যেব বিশব্যো মধিভূতয়ঃ। ঋষিক্রাচ।

ততঃ সমন্তাতা পেবেরা ব্রহ্মাণীপ্রস্থা লয়ন্। ভতা দেব্যাতনৌ জ্যা হেকেবাসীৎ তদাছিকা॥ দেব্যবাচ।

আহং বিভ্তা। বহুভিরিহ রু পৈর্যদা স্থিতা। তৎ সংস্কৃতং মহৈদকৈব তিঠামাজে ভিরোভব ॥ অধিকবাচ।

ততঃ প্রবর্তে বৃদ্ধং বেব্যাঃ শুস্ক চোডকোঃ।
পশ্রতাং সর্মাদের নাম সুরাণাঞ্চ দারুণম্ ॥
শর্ববৈঃ শিতৈঃ শত্রৈতথাকৈ শৈচব দারুণাঃ।
তরামুদ্ধিক্ত মুঃ সর্মাদোক ভর্মার ॥
দিব্যাক্তরাণি শতশো মুমুচে যাক্তথাবিকা।
বভন্প তানি দৈতে ক্রম্পে প্রতীয়া তকর্তিঃ ॥
মুকানি তেন চালানি দিব্যানি প্রমেশ্রী।
বভন্প নীলবৈবেবাক্তরানোচোরণানিতিঃ ॥
ততঃ শর্শতৈ দেবী মাক্রান্যত সোহস্কঃ।
সালি তৎ কুণিতা দেবী ধন্তুনিক্তেদ চেবৃতিঃ ॥
হিল্লে ধন্ত্যি দৈত্যেক্তথা শক্তিমধাদা।
চিচ্ছেদ দেবী চক্তেণ তামপাক্ত কর্মিতাম্ ॥
ততঃ ব্জামুপানার শতচক্রঞ্চ ভান্ত্রহ।
স্কার্থান্ত ত্বা দ্বিবাং নাম্বিশেশরঃ ॥

তভাগতত এবাও ধ্রুগং চিচ্ছেদ চণ্ডিকা। ধরুর্ব কৈঃ শিতৈবাবৈশ্চর্ম চার্ককরামলম্ । হতাখ: স সদা দৈত্যশিহরধয়া বিসার্থি:। कवार मुलाबः (चात्रमिकानिश्रत्नामु ७: १ চিচ্ছেদাপততত্ত্বস্থ মুদ্দারং নিশিতৈঃ শরেঃ। তথাপি সোহভাষাৰৎ তাং মৃষ্টিমুদাম্য বেগৰান্ # म मृष्टिः পাতशामाम क्षारत देव का भूकरः। দেব্যান্তঞাপি সা দেবী তলেনোরস্তভাত্মৎ ॥ তলপ্রহারাভিহতো নিপপাত **মহীত**লে। স দৈত্যরাজ্ঞ: সহসা পুনরেব তথোখিত: # উৎপত্য চ প্রগৃহেছাকৈদেবীং গগনমাস্থিত:। তহাপি সা নিরাধারা যুযুধে তেন চভিকা। নিবদং থে তদা দৈত্যশ্চ গুকা চ পরস্পরম। চক্রতঃ প্রথমং দিন্ধমুনিবিশ্বয়কারক্ম্ ॥ তভো নিযুদ্ধং স্থৃচিরং কৃষা তেনাধিকা সহ। উৎপাত্য ভ্রাময়।মাস চিক্ষেপ ধরণীতলে । স কিপো ধরণীং প্রাপ্য মৃষ্টিমুদ্যম্য বেগিতঃ। অভ্যধাৰত হুষ্টাত্মা চণ্ডিকানিধনেচ্ছয়। ॥ ত্যারান্তঃ ভতো দেবী সর্কদৈত্যজনেশ্বন। জগত্যাং পাত্যামাদ ভিত্তা শুলেন বক্ষদি॥ স গতাম: পণাতোর্কাং দেবীশূলাগ্রবিক্ষত:। চালয়ন সকলাং পৃথীং সান্ধিৰীপাং সপৰ্বতাম্॥ ততঃ প্রদর্মধিলং হতে তব্মিন্ ত্রায়নি। জগৎ স্বাভামতীবাপ নির্মাণ্ডাভবর্ভ: । উৎপাতমেঘাঃ দোঝা যে প্রাগাসংস্তে শমং যয়ঃ সরিতো মার্গবাহিন্ত স্থাসংস্তত্ত পাতিতে। ততো দেবগণাঃ দর্কে হর্যনির্ভরমানদাঃ। বভবর্নিহতে তুমিন গন্ধর্কা ললিতং জ্ঞ:॥ ष्यवानग्रः छ देशवास्त्र मन्जू काष्ट्रारागाः। वतुः भूगाख्या वाखाः स्रश्रटणार्ज्जिताकतः। জ্জলু শ্চাগ্নয়: শাস্তা:-শাস্ত্রনিগ্রানতখনা: ॥

ইতি মাৰ্কণ্ডেরে মহাপুরাণে সাবর্ণিকে মন্ত্র-স্তবে দেবীমাহান্ম্যে গুস্তবধো নাম নবতিত্যোহধ্যারঃ।

## একনবভিতমোহধ্যায়ঃ।

-:•:-

अविक्रवाह । দেখা হতে ভত্ত মহাস্থরেক্তে সেজাঃ স্থরা বহিংপুরোগমান্ত।ম্। কাত্যারনীং তুষ্ট বুরিষ্টলস্তা-ৰিকাশিবজ্ঞ বিকাশিতাশা:। (मर्वि व्यंभन्न। खिंहरत व्यंत्री म প্ৰদীৰ মাতৰ্জগতোহৰিলভা। श्रमीम विष्यपति शाहि विषः ত্মীশ্রী দেবি চরাচরতা। শাধারভূতা লগতম্বনেকা মহীস্ক্রপেণ যতঃ স্থিতাসি। অপাং স্বরুপস্থিতয়া ছবৈয়ত-मां भागारा कुरसमना वारी र्या॥ पः देवस्वती मक्तित्रनस्वतीर्यत বিশ্বভ বীজাং প্রমাসি মারা। সম্মেছিতং দেবি সমস্তমেতৎ षः বৈ প্রসন্না ভূবি মুক্তিহেড়: । বিদ্যাঃ সমস্তান্তব দেবি ভেদাঃ প্রিয়ঃ সমস্তাঃ সকলা জগৎস্থ। হবৈকয়া পুরিতমন্বরৈতৎ

কা তে স্বতিঃ স্তব্যপরা পরোক্তিঃ॥ र्त्र ज्ञायना (नदी चर्त्र कि अना विनी। ং স্বতা স্বতমে কা বা ভবস্ক পরমোক্তয়:॥ র্মত বৃদ্ধিরপেণ জনতা হানি সংস্থিতে। র্গাপবর্গদে দেবি নারায়ণি নমোহস্ত তে। लाकां छ। निकार भन भित्र भाग भाग शिनी। খিলোপরতৌ শত্তে নারায়ণি নমোহস্ত তে॥ र्समक्रममक्रमा भिरव गर्सः र्थमा धिरक। রংণ্য ভাষকে গৌরি নারারণি নমোইস্ত তে ॥ <sup>ষ্টি</sup>ষ্টিতিবিনাশানাং শক্তিভূতে স্নাত্নি। ণাশ্ররে শুণময়ে নারায়ণি নমোহস্ত তে ॥ विभागकनीनार्खभितिखांगभन्नां वर्गः। মিন্তার্তিহরে দেবি নারারণি নমোহস্ত তে॥ <sup>স্মৃ</sup>ক্তবিমানতে ত্রন্ধাণীরপধারিণি। । শান্ত:ক্ষরিকে দেবি নারায়ণি নমোহত তে। । म्गठला क्थितः महावृष्णवाहिनि । रिश्यतीयत्रराग्य नातावनि नरमारुख एछ ।

मयुक्कूषेत्रस महाभिक्तित्रश्मत्व। कीमात्रीज्ञ भनः कार मात्राष्ट्र मात्राष्ट्र विकास स्वाप्त कार विकास स्वाप्त कार्या । শঅচক্রগদাশাস্ গৃহীতপরমায়ুধে। व्यतीन देवकवीत्रार्थ नातात्रनि नामार्ख ८७ ॥ গৃহীতোগ্রমহাচক্রে দংষ্ট্রোক্তবস্থকরে। বরাহরণিণি খিবে নারায়ণি নমোহভ তে ॥ न्निः इक्र त्याला अव इक्षः देवकान् कृष्कानात्म। ত্রৈলোক্যত্রাণসহিতে নারারণি নমোহস্ত তে॥ कित्री हिन महावाज महस्र नत्र माज्य । वृज्थागरुद्ध टिक्त नाजावि नरमारुष्ट एछ ॥ শিবদূতীস্বরূপেণ হতদৈত্যমহাবলে। ফোররপে মহারাবে নারায়ণি নমোহত তে॥ नः द्वीक तां गवनदन भिटतामानावि वृष्टन। চামুতে মুগুমথনে নারারণি নমে: १ ख टल ॥ नित्त नाटक महाविदना अद्यक्त शृष्टि चटन अद्य । महात्राजि महाविद्या नात्रांत्रि नदमाश्च (छ ॥ মেধে সরস্বতি বরে ভৃতি বাশ্রবি ভামসি। নিয়তে তং প্রসীদেশে নারায়ণি নমোহত্ত তে ॥ সর্বস্বরূপে সর্বেশে সর্বশক্তিসমন্তিত। ভরেভাদ্রাহি নো দেবি ছুর্গে দেবি নমোহস্ত তে ॥ এতৎ তে বদনং দৌম্যং লোচনত্ত্রস্তৃ বিভন্। পাতু নঃ দৰ্কভূতেভ্যঃ কাত্যান্তনি নমোহত তে । জাগাকরালমভ্যুগ্রমশেষাস্থরস্দনম্। ত্রিশ্লং পাতু নো ভীতের্জক্রকালি নমোহত্ত তে॥ হিনন্তি দৈত্যতেজাংগি স্বনেনাপুর্য্য বা জগৎ। সা ঘণ্টা পাতু নো দেবি পাপেভ্যো নঃ স্থতানিব ॥ অস্থাস্থদাপকচচিত্ততে করোজ্ঞলঃ। শুভার পড়েগা ভবতু চ্প্তিকে স্বাং নতা বয়ম্॥

বোগানশেবানপ্যং দি ভূটা
কটা ভূ কানান্ সকলানভীটান্।
খানালিতানাং ন বিপল্পানাং
খানালিতা হাল্যবলাং প্রবাতি ॥
এতং কুজং বং কদনং খ্রাল্য
ধর্মবিবাং দেবি মহাস্কর্মানান্।
কপেরনেকৈর্মপ্রধান্মপৃত্তিং
কুষাবিকে তং প্রক্রোতি কার্যা ॥
বিদ্যান্ম লাজের বিবেক্সীংলখালের বাক্যের চ কা খ্রাল্য।
মন্ত্র্যক্তিভিন্তান্ধর্যানে
বিল্যান্ম বাক্যের চ কা খ্রাল্য।
মন্ত্র্যক্তিভিন্তান্ধর্যানে
বিল্যান্ম বাত্যের চ কা খ্রাল্য।
বিল্যান্ম বাত্যের চিন্তান্ধ্রীর বিশ্বন্

রক্ষাংসি বজোগ্রবিষ্যাশ্চ নাগা
বজারবো দক্ষ্যবলানি বজ ।
দাবানলো বজ তথাজ্ঞিমধ্যে
তজ ক্ষ্ডা ডং পরিপাসি বিশ্বম্ ॥
বিশেষরি ছং পরিপাসি বিশ্বম্ ।
বিশোজিকা ধাররসীতি বিশ্বম্ ।
বিশোজকা ধাররসীতি বিশ্বম্ ।
বিশোজকা বে ছরি ভক্তিনন্তাঃ ॥
বেশব প্রসীদ পরিপালর নোহরিভীতেনিত্যং বথাস্ক্রবধানধুনৈব সদাঃ ।
পাগামি সর্ক্ষাগতাঞ্চ শমং নরাও
উৎপারপাক্ষ্যান্তাংশ্চ মহোপস্গান্ ॥
প্রাপতানাং প্রসীদ ছং দেবি বিশার্জিহারিপি ।
কৈলোক্যবাসিনামীতো লোকানাং বরদা ভব ॥

তৈলোক)বাসিনামীজ্যে লোকানাং বরদা দেব্যুবাচ। ব'রদাহং স্কুরগুণা বরং যং মনসেক্ষুপ।

ৰ'রদাহং স্থরগণা বরং যং মনসেক্ষ্রণ।
তৃত্তুধ্বং প্রেয়ছোমি জগতামুপকারকম্॥
দেবা উচুঃ।

সর্কাবাধাপ্রশমনং তৈলে।ক্যক্তাথিলেখরি। এবংমব দ্বা কার্য্যমন্ত্রিবিনাশনম্। দেব্যবাচ।

বৈবস্বতেহন্তরে প্রাপ্তে অষ্টাবিংশতিমে মুগে। শ্ৰভো নিভন্ত ৈচৰাক্তাবুৎপণ্ডেত মহাস্থরে। । नन्तरगोशगृरह बाडा यर्भागार्थगञ्जा। ততত্তো নাশবিষ্যামি বিদ্যাচলনিবাসিনী ॥ পুনরপ্রতিরৌদ্রেণ রূপেণ পৃথিবীভলে। অবতীৰ্য্য হনিষ্যামি বৈপ্ৰচিন্ধাংস্ত দানবান্॥ **७कवराम्ड जास्यान् देवश्रीहलान् महास्र**वान् । রক্তা দস্তা ভবিষ্যন্তি দ।ড়িমীকুসুমোপমাঃ॥ **उटका माः (पवकाः यटर्ग मर्त्वाटनाटक ह मानवाः।** স্তবস্তো ব্যাহরিষ্যন্তি সততং রক্তদন্তিক।ম্॥ **ভূর**न्চ শতবার্ষিকাশনবৃষ্ট্যামনস্তসি। मूनि छि: तर्षका ज्दमी मछविवासारवानिका ॥ **७७: मट्डन मिद्धार्गाः निद्योक्तियामि यस्**नीन्। কীর্ত্তরিষ্যন্তি সমুজাঃ শভাকীমিতি মাং ততঃ॥ **७८७।३**हमथिनः त्नांक्माण्यान्त्रम्डवः। खित्रशामि ख्नाः भाटेकनाइटहेः खानशात्रदेकः । শাক্ষরীতি বিখ্যাতিং তদা বাস্তাম্যহং ভূবি। ভবৈত্ব চ ব্ধিষ্যামি ছুর্গাম্প্যং মহাত্রন্॥ হুৰ্না দেবীভিবিশ্যাতং ভবে নাম ভবিবাতি।

भूनकां हर वता जीयर क्रमः कृषा हियां हता।
क्रमः नि क्षत्रितां क्रियोक्त सुनीनार वां भकात्रवार ॥
कता मार सूनवः नटर्स खायाखानसम्बद्धः ।
जीमा त्वती कि विशाखर खत्या नाम खित्रा कि ॥
यताक्षा शादेखलां दका महावाधार कित्रवाकि ।
कताहर खामतः क्रमः कृषा नट्या प्रस्ते विशाखर क्रमः ॥
देकत्वा कृष्य हिला श्री विश्वामि महास्त्रम् ।
खामती कि ह मार तां क्षा खाया खिरा खि नर्स्छः ।
हेथः यता यता वांधा तांन्दवांथा खिरा कि ।
कता कतावां वांधा तांन्दवांथा खिरा कि ।

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে সাবর্ণিকে মন্থ-স্তরে দেবীমাহাস্থ্যে দেব্যাঃ স্ততি-নাটমকনবতিতমোহধ্যারঃ।

## দ্বিনবতিতমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:-

### (मन् रावां ।

এভিস্তবৈশ্চ মাং নিত্যং সোধ্যতে যঃ সমাহিত:। ख्याहर मकलाः वाधार भमतियागामः भम्म ॥ মধুকৈটভনাশঞ মহিষাস্থরঘাতনম্। কীর্ত্তরিষান্তি যে তব্দধং শুস্থনিশুস্তরো:॥ অন্তম্যাঞ্চ চতুর্দগুাং নবম্যা শৈকচেতস:। (अविश्विष्ठ देवत (व कक्या मम माहाक्याम्क्रम्। ন তেষাং হৃষ্কুতং কিঞ্চিদ্ৰুষ্কুতোত্থা ন চাপদঃ। ভবিষ্যতি न मात्रिष्टाः न टेह्रदिष्टेशिक्सम्मनम्॥ শক্তোন ভয়ং তক্ত দস্মতো বান রাজ্ত:। ন শস্ত্রানলভোয়েবি। ও কদাচিৎ সম্ভবিষ্যতি। তত্মান্মবৈত্মাহাত্মাং পঠিতব্যং সমাহিতৈ:। শ্রোতব্যঞ্সদা ভক্ত্যা পরং স্বস্ত।মূনং হি তৎ। উপদ্যানশেষাংজ মহামারীদমুদ্ভবান্। তথা তিবিধনুৎপাতং মাহাম্মাং শময়েম্মম ৷ यदेवज् भर्तार्ज नमाङ्गिकामात्रज्ञात सम । मन् न **ভবিমোক্যামি সারি**ধ্যং ভব মে বিতম্ विविश्वनारम शृक्षांयायतिकार्या यरहारमस्य । नर्तः गरेग उक्त ति उमूका ग्रां आ वारमव ह ॥ জানতাজানতা বাপি বলিপুলাং তথা কুতান্। প্রতীচ্ছিয়াম্যহং প্রীত্যা বহিংহামং ভথা কুর্ণ্ भन्न एकारम महाभूका कि बट्ट वा ह वार्विकी।

जाः मदेनजनाराचाः अदा छक्तिनमविष्ठः ॥ ব্লাবাধবিনিশ্লো ধনধা জন্ত ভাষিত:। দুয়ো মংপ্রসাদেন ভবিষ্ঠতি ন সংশয়ঃ ॥ তা মনৈত্যাহান্তং তথাচে। ৭৭ ভয়: । রাক্রমঞ্চ যুদ্ধেরু জারতে নির্ভয়ঃ পুমান ॥ १ भवः त्रश्कन्नः यास्त्रि कन्तांगरकाशशास्त्राह्य । লভে চ কুলং পুংসাং ম।হাস্কাং মম শৃণুতাম্॥ ান্তিকর্মণি সর্বতা তথা হঃস্বপ্নদর্শনে। হপীডান্ত চোগ্ৰাহ্য মাহাত্মাং শুনুদায়ম ॥ পদর্গা: শমং বাস্তি গ্রহণীড়াশ্চ দারুণা:। :স্প্রঞ্ নুভিদ্ ইং হংৰপ্নমুপজারতে॥ ালগ্রহাভিভূতানাং বালানাং শান্তিকারকম। আতভেদে চ নৃণাং মৈত্রীকরণমুভ্তমম্। রুভানামশেষাণাং বলহানিকরং পরম। ্ফাভূতপিশাচানাং পঠনাদেব ঘাশনম ॥ र्तः मदेगङ्माराखाः मम मित्रिकात्रकम्। उपूष्पार्याष्ट्रिक गन्नतीदेवस्य ।। প্রাণাং ভোজনৈহে। দৈঃ প্রোক্ষণী হৈরহর্নি শৃম্। रेजन्ड विविदेश्ट डिशः श्रीषादेन वंश्मद्रभ या॥ তির্মে ক্রিয়তে সান্দ্রিন্ সক্ত স্করিতে শ্রুতে তং হরতি পাপানি তথারোগ্যং প্রয়ছতি ॥ লাং করোতি ভূতেভো জন্মনাং কীর্ত্তনং মম। জেষু চরিতং য**েম ছেউলৈভ্যনিবর্হণ্ম।** মিন্ শ্রুতে বৈরিক্তং ভয়ং পুংসাং ন জায়তে মাভি: স্তত্যো যাশ্চ যাশ্চ ব্রহ্মবিভি: কুতা:। দণা চ কুডান্ডান্ত প্ৰায়ক্তি গুড়াং মতিম্॥ वर्ग श्रीष्ठरत वालि माराधिलविवातिकः। য়াভিবারত: শুভে গৃহীতো বাপি শঞ্জি:। <sup>ংহবাা</sup>প্রাহ্যাতো বা বনে বা বনহস্তিভি:। জা **কুদ্ধেন বাজপ্তো বধ্যো বন্ধগতো**হপি বা॥ াঘ্ণিতো বা ৰাজেন স্থিতঃ পোতে মহাৰ্ণৰে। তৎস্বাপি শল্পের সংগ্রামে ভূলদারুণে ॥ <sup>রাবাধা</sup>স্থ ঘোরাস্থ বেদনাভ্যদ্দিভোহপি বা। वन् मदेश का कि कि न ति मूर्ता के पक्ष हो । र खडावाद जिल्हामा मखरबा देवद्रिगछथा। াদৈৰ প্ৰায়ত্তে স্ময়ভশ্চরিভং ম্ম ॥ चैंकिक वाह ।

গজ্ব সা ভগৰতী চণ্ডিকা চণ্ডবিক্ষমা।

স চ বৈশ্রত্তপতেতে দেখীস্কং গরং জ্পা

তীত্র বিদ্যালিক তিবাজরধীয়ত ।

তিবি ক্রিডিকা: স্বাধিকারান্বধা প্রা

ভিবি দেখা নিরাভকাঃ স্বাধিকারান্বধা প্রা

यळकां प्रज्ञः नद्वं हक्विनिर्कात्रः ॥ देवजांक दाया निहत्व करक दवविद्या वृथि। जगविध्वः तिनि छचिन् मरहारश्रञ्जविकारम् ॥ নিশুন্তে চ মহাবীৰ্য্যে শেষাঃ পাভালমাৰযুঃ # এবং ভগবতী দেবী দা নিত্যাপি পুন: পুন:। সভূষ ক্কতে ভূপ জগত: পরিপালনম্॥ তবৈত্তনাহতে বিখংলৈৰ বিখং প্ৰস্কৃতে। দা যাচিতা চ বিজ্ঞানং ভুৱা ঋদিং প্ৰায়চ্ছতি॥ ব্যাপ্তং ভরৈতৎ সকলং ব্রহ্মাণ্ডং মহুদ্ধেশ্ব। মহাকাল্যা মহাকালে মহামারীস্বরূপরা ॥ সৈব কালে মহামারী দৈব স্টিভবভাঞা। হিতিং করেতি ভূতানাং সৈব কালে সনাতনী ख्यकारण जुनाः देशव नचीत्र किथाना शृद्ध। সৈবাভাবে তথাকক্ষীর্বিনাশারোপক্ষায়তে ॥ স্ততা সম্পৃত্তিতা পুলেধু পগন্ধাদিভিন্তথা। দদাতি বিভঃ পুত্রাংশ্চ মতিং ধর্মে তথা ওছাম্। ইতি মাৰ্কণ্ডেরে মহাপুরাণে সাবর্ণিকে মহস্তরে (एवीम।शाष्ट्रा ७ छनि ७ इवटशा नाम विनविज्ञात्मार्थामः।

ত্রিনবতিতমোহধ্যায়:।

--:\*:--

শ্বিক্লব চ।

এতৎ তে কথিতং ভূপ দেবীমাহাত্মাম্ভ্রমম্।

এবত্তাভাবা সা দেবী যমেলং ধার্তি জগং ॥

বিদ্যা তথৈব ক্রিয়তে ভগবছিক্ষালয়া।

তয়া ছমেষ বৈশুল্চ তথৈবাল্যে বিবেকিন:।

মোহত্তে মহিতালৈচব মোহমেব্যক্তি চাপরে॥।

তাম্বৈহি মহারাজ শরণং প্রমেশ্বনীম্।

আরাধিতা সৈব নূণাং ভোগত্বগাপ্বর্গলা॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

ইতি তন্ত বচঃ ক্রম্ম ক্রম্ম নাজাধিপঃ।
প্রনিপত্য মহালগাং তমু বিং লংগিতএতম্ ॥
নিবিবেরাহিতিমমন্থেন রাজ্যাশহরশেন চ।
জগাম সদ্যত্প্রেস চ বৈতলা মহামুনে ॥
সকলনার্থমনারা নদীপুলিনসংছিতঃ।
স চ বৈভাল্যভাগে দেখীক্তঃ গরং জগম্ ॥
তৌ ত্মিন্ পুলিনে দেখাঃ ক্রম্ম মুর্ভিং মহীমন্ত্রীম্
জর্গাং চক্রত্তভাঃ পুলাগ্ণায়িতপ্রিং ॥

নিরাছারে যতাধারে তথ্যনক্ষে সমাধিতে। দদত্তো বনিধ্যৈ নিজগাআস্থাকিতম্ ॥
এবং সমারাধরতোল্পিডিইইর্বজাল্পনো:।
পরিত্টা লগদাতী প্রত্যকং প্রাছ চণ্ডিক। ॥
দেব্যবাচ।

বং প্রার্থতে দ্বয়া ভূপ দ্বয়া চ কুলনন্দন। মততেং প্রাণ্য ভাং সর্বং পরিভূটা দ্বামি তং॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

ততো বত্তে নূপো রাজ্যমবিভ্রংখন্ত লম্মনি।

সক্র চৈব নিজং রাজ্যং হতপক্তবলং বলাং ॥

সোহপি বৈখান্ততো জ্ঞানং বত্ত্তে নির্কিশ্রমানসঃ।

মমেতাহমিতি প্রাক্তঃ সক্ষিচ্যতিকারকৃম্॥

দেব্যবাচ।

খনৈ বংশ ভিন্পতে খনা দাং প্রাপ্সতে ভবান্।
হয় রিপ্নথানিতং তব তকে ভবিষ্যতি ॥
মৃতশ্চ ভ্রঃ সম্প্রাণ্য জন্ম দেবাদিবস্বতঃ।
সাবর্ণিকো নাম মহুর্ভবান্ ভূবি ভবিষ্যতি ॥
বৈশ্ববর্য দ্বা বন্দ বংশাংশতোংভিবাঞ্তিঃ।
তং প্রয়ভামি সংসিকৈর ভব জ্ঞানং ভবিষ্যতি॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
ইতি দক্ষা তরোদ্ধেবী যথাভিলবিতং বরম্।
বভূবাস্তর্হিতা সদ্যো ভজ্ঞা তাজামভিই,তা ॥
এবং দেব্যা বরং লব্ধ্ স্থবথ: ক্ষত্রির্বভ:।
হর্ষাক্ষেম সমাসাদ্য সাব্ধিভিবিতা মহু:॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে সাধ্ধিকে মহন্তরে

দেবীমাহান্ত্যং সমাপ্তং ত্রিনবতি-ভমোহধ্যারণ্ট।

চতুর্বভিতমোহধ্যায়ঃ।

—:•: — মাৰ্কভেঁম উবাচ।

गांविनिकिषः गमाक् ८श्रोकः मवस्तः छव । ७८ेषव द्वायाशासाः महिवास्त्रवाणनम् ॥ ७८ भस्रकण् वा द्वायामाम् भाव्यास्य महोहद्व । ७८ेषव मस्त्रवा द्वायामाम् भावा व्याय । भिवपृष्ठाम् माहास्याः वदः ७% निक्तराः । ३% वीक्रवेष्ट्रक् मर्स्टरकृष् छत्वाविकम् ॥

শ্ররতাং মুনিশার্ছ্র সাবর্ণিকমথাপরম্। দক্ষপুত্রণ্ড সাবর্ণো,ভাবী বো নবমো মহুং॥

क्षशंति मन्तिष्ठ (व दिवा मृत्देश सुभाः । পারা মরীচিভর্গাশ্চ স্থধর্মাণস্তথা স্থবাঃ 🛭 এতে विधा ভবিবাস্তি সর্কে বাদশকা গণা:। তেষ।মিজো ভৰিষ্যশ্ব সহস্রাক্ষা মহাবল: ॥ সাম্প্রতং কার্ত্তিকেরো বো বহ্নিপুত্র: বড়ানন:। অত্তো নাম শক্তোহসৌ ভাষী ভজাতরে মনো মেধাতিথিৰ্বস্থ: সভ্যো জ্যোভিনান্ ছাতিমাংভ সপ্তৰ্যাহনঃ সবলতথাতো হ্বাবাহনঃ॥ পৃথু अवाखधार्विद्यान् ভূছ্য तिस्या वृद्ध मः ॥ এতে ন্পস্তা**ডফ দকপুত্রত বৈ** নৃপাঃ। মনোস্ত দশমভাভিচহৃ বুমস্তরং বিজ্ঞ মন্ত্রে চদশমে ব্দ্পপুত্রভাধীমত:। ञ्चामीना निक्रकांक जिल्लाकां च्याः पुषाः। শতসংখ্যা হি তে দেবা ভৰিষ্যা ভাৰিনো মনো भाष्टितिस्पर्यश कारी मदेशिक्षक्षरेगर्कः। সপ্তৰীংস্তঃনু নিৰোধ স্বং যে ভবিষ্যস্তি বৈ তদা আপোমূর্ত্তিইবিন্নাংশ্চ স্কুক্তো সত্য এব চ। নাভাগোহপ্রতিম শৈচব বাশিষ্ঠ শৈচব সপ্তম:। ञ्चलकारकाखरभोकाक ভृत्रितमक वौर्यापान्। भेडोनी काश्य द्वराला **श्रमिर्छ। अवस्य** ॥ ভূরিহ্যম: স্থপর্ক। চ ত ভৈতে তনরা মনো:। ভবিষ্যা ধর্মপুত্রকা সাবর্ণভাস্করং শৃণু ॥ বিহলমাঃ কামগাশ্চ নির্মাণপতরত্তথা। ত্রিপ্রকারা ভবিষ্যন্তি একৈক স্থিংশতে। গণাঃ। মাদর্জু দিবসা যে তু নির্মাণপতয়ম্ব তে। विष्यमा बाजरबार्थ (मोहूई।: कामना ननाः ! ইল্রো বুষাথ্যে। ভবিতা তেষাং প্রাথ্যাতবিক্রম: হবিত্মাংশ্চ বরিষ্ঠশ্চ ঋষ্টিরক্তত্তথাকৃণিঃ॥ নিশ্চরশ্চানঘশ্চৈব বিষ্টিশ্চান্তো মহামুনি:। স্থর্বয়ে। হস্তবে তিশির্গাদেবশ্চ স্থ্য: । সর্বত্রণঃ স্থাপানি দেবানীকঃ পুরুষ্টা। হেমধরা দৃঢ়াযুক্ত ভাবিন্তৎস্তা নুপা:॥ वापर्ण कख्रभूखक व्यारिक मवखरत मरनाः। भावनीयाच रव रवना मूनक्षण मृत्य कान्॥ স্থৰ্মাণ: স্মনদো ছব্বিতা ব্ৰোছিডান্তথা। স্বৰ্ণাশ্চ স্থ্ৰান্তত্ৰ প্ৰকৈতে দীশক। গ্ৰাঃ । তেবামিক্রন্ত বিজের ঝতধামা মহাবলঃ। गटेर्कातक खटेनयू कः मधरीनि तम मृन् ॥ ছাতিভগন্ধী স্তপান্তপোমূর্বিভগোনিধিঃ।

তলোর ভিত্ত থৈবাক্তঃ সংগ্রমন্ত তলোর ভিত্ত থৈবাক্ত পালে বিশ্ব থা ।
নিত্রবান্ন মিত্রবিন্দশন্ত ভাবিনন্ত থেকা নৃপাঃ ॥
ক্রেরাদশন্ত পর্যান্তে রোচ্যাধান্ত মনোঃ স্থতান্ ।
কর্রাদশন্ত পর্যান্তে রোচ্যাধান্ত মনোঃ স্থতান্ ।
ক্রেরাদশন্ত ক্রান্তের স্কর্মাণন্ত থাপরে ।
ক্রেরাণাঃ স্থ্যান্তের স্কর্মাণন্ত থাপরে ।
ক্রেরানে মহাবীর্যান্তের মিন্দো দিবস্পতিঃ ।
ভবিষ্যান্ত্র স্থান্ত্রামিন্দো দিবস্পতিঃ ।
ভবিষ্যান্ত্র স্থান্ত্রামিন্দো দিবস্পতিঃ ।
ভবিষ্যান্ত্র স্থান্ত্রামিন্দো দিবস্পতিঃ ।
ভবিষ্যান্ত্র স্থান্ত্রামিন্দো নিক্ত স্করঃ ।
নির্মোহঃ স্ত্রপাশ্চান্তো নিক্ত ক্রেরা দৃদঃ ।
ক্রেরাং ক্রের্দিন্ত স্ব্রত্তৈর তৎস্তাঃ ॥
ইতি মার্কত্রেম্বুরানে চতুর্ন বিভিত্ত যোহ্ধাায়ঃ ।

## পঞ্চনবতিতমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

## মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

কচি: প্রজাপতি: পূর্কং নির্মানে নিরহস্কত:।

কত্রতো মিতশারী চ চচার পৃথিবীমিমাম্॥

কনপ্রিমনিকেতং তমেকাহারমনাশ্রমম্।

বিমুক্তসঙ্গং ডং দৃষ্টা প্রোচ্তৎপিতরো মুনিম্॥

পিতর উচ্:।

वरन कलार खन्ना भूरणा न कृरज मानमः वरः ।

पर्गापवर्षर्रञ्जावक्षरस्य निमः विना ॥

गृही नमस्य निवास कृर्यन् ताकास्मान् रज्ञ ॥

पर्वी गमि जिथीनांक कृर्यन् ताकास्मान् रज्ञ ॥

म पर रेनवान् गावकः वक्षमञ्जन् गानि ।

प्रवासाय मस्य स्वार्यमा ज्यान् नित्न नित्न ॥

प्रवासाय मस्य स्वार्यमा स्वार्यम् स्वार्यमा स्वार्यम् स्वार्यमा स्वार्यम् स्वार्यमा स्वार्यम् स्वार्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यस्वयम्यस्यस्यम्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्वयस्यस्यस्यस्यस्य

ক্ষতিক্ৰাচ।

পরিব্রহেষ্ট্রজংখার পাণার্যোগভিত্তথা। ভবত্যতো মরা,পূর্কংগ্রন ক্রতো দারসংগ্রহ:॥ আর্ন: সংধ্যো বে।হয়ং ক্রিয়তে স্থনিষ্ক্রণাৎ। স্বাস্ত্রকৈ ভবত্যসাবপি পরিগ্রহাৎ॥

প্ৰকাণ্যতে হৰ্দ্বিসং ব্ৰাছা নিশ্বিমিটে:।
মনত্বৰ্দ্বিধাইণি চিতাছোভিৰ্কারং হি তৎ ॥
অনেকভবসভ্তকৰ্মণকাক্তিতো বুবৈ:।
আত্মা স্বাসনাতোৱে: প্ৰকাল্যো নিয়তোক্তির:॥
পিতর উচু:।

যুক্ত প্রকালনং কর্ত্ মান্তনা নিয়তে ক্লিটের:।
কিন্তু মোক্ষায় মার্গেহিরং যা বা ছং পুত্র বর্ত্তিদে ॥
পরন্ত দানৈরওডং ফুলাতেহনভিদদ্ধিত:।
ফলৈস্তথোপভোগৈত পূর্বকর্ম ওভাততৈ:॥
এবং ন বদ্ধো ভবতি কুর্বত: কর্মণাত্মকম্।
ন চ বদ্ধায় তৎ কর্ম ভবতানভিদদ্ধিতম্॥
পূর্বকর্ম কৃতং ভোগে: ক্ষীয়তেহহনিশং তথা।
স্থাত্থোত্মকর্মৎস প্রাপ্লাক্ষক নুশাম্॥
এবং প্রকাল্যতে প্রাইজ্ঞরাত্মা বইন্ধত রক্ষাতে।
ন ভ্রেমবিবেকেন পাপপক্ষেম গৃহতে॥
ফ্রিক্বাচ।

অবিদ্যা পঠ্যতে বেদে কর্মার্শর পিতামহা:। তৎ কথং কর্মণো মার্গে ভবস্কো যোজয়ি ফাম্॥ পিতর উচু:।

অবিদ্যা সত্যমেবৈতৎ কর্মবৈশ্বসম্বা বচঃ।
কিন্তু বিদ্যাপরিপ্রাপ্তিহেত্যু কর্ম ন সংশব্ধঃ ॥
বিহিতাক্ষণাৎ পুংভিরস্তিঃ ক্রিমতে তু বঃ।
সংঘনো মুক্তরে সোহতে প্রভুতাবোগতিপ্রালঃ ॥
প্রফালয়ামীতি ভবান বৎসাম্মানন্ত মন্ততে।
বিহিতাক্রণোভূতৈঃ পাবৈশ্বভ বিদ্যাস।
অবিদ্যাপ্যপ্রায় বিষবজ্জারতে নৃণাম্।
অনুষ্ঠিতাভূযুপারেন বন্ধারাক্তাপি নো হি সা॥
তথ্যাহৎস কুক্ত স্থং বিধিবদারসংগ্রহম্।
মা জন্ম বিফলং তেহন্ত অসম্প্রাণ্য তু শৌকিক্ম্
ফুচির্যাচ।

বৃদ্ধোহ্হং সাম্প্রজংকো দে পিতরঃ সম্প্রদান্ততি। ভার্যাং তথা দরিস্ত্রস্ত তৃহবো দায়সংগ্রহঃ॥ পিতর উচুঃ।

ল্পাকং পড়বং বংস ভবতকাপ্যধোগতিঃ।
নৃনং ভাবি ভবিত্তী চ নাজিনল্পি নো বচঃ॥
ইত্যুক্ত পিতর্থস্য প্রতা মুনিস্তম।
বভূব্ঃ সহসাদৃশ্রা দীপা বভোহতা ইব॥

ইভি মাৰ্কভেয়ে মহাপ্ৰাপে ফচ্যপাৰ্যানে পঞ্চনইভিতমোহধ্যারঃ॥

### ষধ্বতিত্বোহ্ধ্যায়:।

-- 010---

### মাৰ্কভেম্ন উবাচ।

স তেন পিতৃথাক্যেন তৃশমুৰিগ্নমানস:। কঞাভিলাষী বিপ্রধিঃ পরিবভাষ মেদিনীম্॥ কতামনভ্যানোহসে। পিতৃবাক্যাগ্রিদীপিত:। চিন্তামবাপ মহতীমতীবোৰিগ্নমানস:॥ কিং করোমি ক গচছামি কথং মে দারসংগ্রহ:। ক্ষিপ্রং ভবেৎ মৎপিতৃণাং স চাভ্যুদয়কারকঃ ॥ ইতি চিম্বয়ত্ত্বদ্য মতিৰ্জ্জাতা মহাত্মন:। **७१नावायबार्यानः बच्चानः कमला**ख्यम ॥ ততো বর্ষশতং দিব্যং তপত্তেপে স বেধসঃ। আরাধনার স তলা পরং নির্মান্তিতঃ ॥ ভত: স্বং দর্শরামাস ক্রন্ধা লোকপিডামহ:। উবাচ তং প্রাসন্নে৷হন্দীতু৷চ্যতামভিবা ভিত্র ॥ ততোহনৌ প্ৰশিক্যাহ বন্ধাণং জগতো গতিম্ পিতৃণাং ৰচনাৎ তেন যৎ কর্ত্তুমভিবাঞ্চিম। বন্ধা চা**হ কচিং বিপ্রং শ্রুতা** তস্যাভিবাঞ্ছিতম্॥ ব্ৰহ্মোগচ।

প্রকাপতিখং ভবিভা প্রইব্যা ভবতা প্রজা:।
স্ট্রা প্রকাং স্তান্ বিপ্র সম্ৎপাদ্য ক্রিয়ান্তথা।
কৃষা ক্তাধিকারখং ততঃ সিদ্ধিনবাপ্সাসি।
স খং তথোক্তং পিতৃভিঃ কৃষ্ণ দারপরিগ্রহম্।
কামপ্রেমমভিধ্যায় ক্রিয়তাং পিতৃপুলনম্।
ত এব ছুটাঃ পিতরঃ প্রদাদ্যন্তি ভবেন্দিতান্।
গদ্ধীং স্বতাংশ্চ সম্বন্ধাঃ কিংন দল্যঃ পিতামহাঃ॥

া মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ইত্যবৰ্ষচনং শ্ৰম্ম অন্ধণোহৰ্যক্ত লক্ষন:।
নদ্যা বিধিক্তে পুলিনে চকার পিতৃতর্পনম্॥
তুষাৰ চ পিতৃন্ বিপ্রা স্তবৈক্ষেত্তথাদ্ত:।
একাগ্রাঃ প্রায়তা ভূমা ভক্তিনন্তাম্মকন্ধর:॥

ক্লচিক্লবাচ।

নমস্যেহং পিতৃন্ আছে যে বসস্তাধিদেবতা:।
দেবৈরপি হি জর্গান্তে যে চ আছে স্বংধান্তরৈ:।
নমস্যেহং পিতৃন্ সর্গে বে তর্গান্তে মহর্ষিতি:।
আছমনোমবৈর্জক্যা ভূকিম্কিম্ভীপ্স্তি:।
নমস্যেহং পিতৃন্ সর্গে সিদ্ধাং সম্বর্পরতি যান্।
আছের্ দিবৈয়ং সকলৈকপ্রাবৈরয়্তেমে:॥
নমস্যেহং পিতৃন্ ভক্তা যেহচ্চান্তে গুছুকৈরপি

তন্ময়ত্বেন বাঞ্জিঞ দ্বিমাত্যান্তকাং পরাম্। নমস্যেহং পিতৃন্ মতৈগ্রিক্রান্তে ভূবি যে সদা। প্রাকেষু প্রক্ষাভীইলোকপ্রাপ্তিপ্রদায়িন: ॥ नगरमारशः भिजृन् विदेखातकारस ज्वि (य मना। বাঞ্চিতভেষ্টিলাভায় প্রাকাপত।প্রদায়িন:॥ নমদ্যেইহং পিতৃন্ যে বৈ তপ্যক্তেইরণাৰাসিভি: ব্যক্তঃ প্রাক্তির বিষ্ঠান বিষ্ঠান বিষ্ঠান বিষ্ঠান বিষ্ঠান বি নমস্যেহং পিতৃন্ বিলৈপ্তিকব্ৰতচারিভি:। যে সংযতাত্মভিনিত্যং সম্ভর্পাস্তে সমাধিভিঃ॥ নমদোহহং পিতৃন্ আ'দ্ধৈ: রাজ্ঞান্তর্পান্তি যান। कदेवात्रत्मदेविर्विधिवत्त्व।कज्ययम् अवान्। नभरगार्शः পिতृन् रेवटे अवकार ख जूवि रव मना। সকর্মাভিরতৈনিত্যং পুষ্পধ্পাল্লবারিভিঃ॥ নমস্যেহং পিতৃন্ প্রাক্রে শ্লেরপি ভক্তি:। সম্ভৰ্প্যস্তে জগত্যতা নামা খগতাঃ স্থকালিন:॥ নমদোহহং পিতৃন্ আহৈন্ন: পাভালে যে মহাস্থে সম্বর্গতে স্থাহাবান্ত্যক্রদ্ভমনে: সদা ॥ নমস্যেহং পিতৃন্ আ'দ্বৈর্চ্চান্তে যে রসাতলে। ভোগৈরশেধৈবিধিবরাগৈ: কামানভীপ্সুভি:॥ নমদোহহং পিতৃন্ প্রাকৈ: সংর্পে: সম্তর্পিতান্ সদা ভবৈৰ বিধিৰমন্ত্ৰভোগসম্পৎসমন্বিতৈ:॥

পিতৃন্নমভে নিবসভি সাকাদ-ষে দেবলোকে চ তথাস্থরীকে। মহীতলে যে চ স্থাদিপ্জ্যা-তে মে প্রতীক্ত ময়োপনীতম্॥ পিতৃন্নমতে পরমাতাভূতা (य देव विभारत निवमिष्ठ भूकीः। यक्ष वि यान खप्रदेन में त्ना छि-র্থোগীধরা: ক্লেশবিমৃতিংহতুন্।। পিতৃন্নমভো দিবি যে চ স্তাঃ স্বধাভুক্ষঃ কাম্যফলাভিসন্ধৌ। প্রদানশকাঃ সকলেপ্সিতানাং বিমৃজিদা যেহনভিসংহিতেষু ॥ তৃণ্যস্ত তেহ্সিন্পিতর: সমস্তা ইচ্ছাবভাং যে প্রেদিশস্তি কামান্। স্বৰ্মিজ্বেমতোহধিকং বা হু তান্ পশ্নু স্বানি কৰং গৃহ। ণি ॥ গোমক্ত যে রশিষু যেহ্কবিখে গুক্লে বিমানে চ সদা বসস্তি। তৃপ্যস্ত তেহল্মিন্ পিতরোহরতোরে- র্গন্ধাদিনা পৃষ্টিমিতে। ব্রত্তম্ভ ॥ যেষাং হুতেইগ্নৌ হবিষা চ ভৃপ্তি-র্যে ভুঞ্জতে বিপ্রশরীরসংস্থা:। र्य পिछमात्नन मूनः श्रमांखि তৃপ্যস্ত তেহস্মিন্ পিতরোহরভোগৈ: ॥ যে ধজিগমাংদেন স্থাররভীটেঃ कृटेकिस्टिनर्कियामरनाहरेत्रभः। কালেন শাকেন মহর্ষিবর্টগাঃ সম্প্রীণিতান্তে মুদমত্র যান্ত॥ কৰ্যাক্তশেষাণি চ যাক্সভীষ্টা-স্তীব তেষামমরার্চিতানাম। তেষান্ত সালিধামিহান্ত পূজা-গনারভোজ্যের ময়া ক্রতেষু। দিনে দিনে যে প্রতিগৃহতেহর্জাং गौगी छ পূজा। ভূবি य २ हे का छ। যে বৎসরাস্তে২ভাদয়ে চ পূজাা: প্রয়ান্ত তে মে পিতরোহত্র তৃপ্তিম্॥ পৃজ্য। विकानाः क्यूरमञ्चारमा যে ক্জিয়াণাঞ্চ নবার্কবর্ণাঃ। তথা বিশাং থৈ কনকাবদাতা নীলীনিভা: শুদুজনস্ত যে চ॥ তেহিমিন্সমন্তামম পুষ্পাল-धूषान्न छोत्रामिनि द्वरन्तन । তথাগ্নিহোমেন চ যাস্ক তৃপ্তিং সদা পিতৃভ্যঃ প্রণতোহস্মি তেভ্য: ॥ যে দেবপূর্বাণ্যতিতৃপ্তিহেতো-রশ্বস্থি কব্যানি শুভাহতানি। তৃপ্তাশ্চ যে ভূতিস্থলে৷ ভবস্তি তৃপাস্ত তেহ<sup>ি</sup>মন্ প্রণতোহ<sup>ি</sup>ম তেভ্যঃ॥ রকাংসি ভূতাক্সত্বাংত্তথাগ্রান্ নির্ণাশয়স্তস্থানিবং প্রজানাম্। व्यानाः ऋग्नान्यम्बान-

তৃপাস্ক তেৎ্মিন্ প্রণতোহ্মি তেভাঃ ॥
অগ্নিবান্তা বহিষদ আজ্ঞাপাঃ দোপমান্তথা।
বজন্ত তৃথিং শ্রাকেহ্মিন্ শিতরত্পিতা ময়া ॥
অগ্নিবান্তা: শিত্গণাঃ প্রণ্টীং রক্ষন্ত মে দিশম্।
তথা বহিষদঃ পাস্ত যাম্যাং যে শিতরঃ ম্বৃতাঃ ॥
প্রতীচীমাল্যপান্তৰ্গুদীচীমশি সোম্পাঃ।
বক্ষোভূতশিশাচেভ্যন্তবৈধান্ত্রদোবতঃ ॥
সর্বত্তাধিশন্তেষাং ব্যো ক্ষাং করে।তু মে ।

বিশো বিশ্বভূপারাধ্যা ধ্যো ধ্যা ওচা ওভানন:।
ভূতিদো ভূতিকুত্ত ভি: শিতৃণাং ধে গণা নব:।
কল্যাণঃ কল্যতাকর্তা কল্য: কল্যতরাপ্রয়:।
কল্যতাহেত্রবধং বড়িমে তে গণাঃ শ্বতাং ।
বিশ্বপাতা তথা ধাতা স্থৈট্বতে তথা গণাঃ॥
মহান্ মহাত্মা মহিতো মহিমাবান্ মহাবল:।
গণাং পঞ্চ তথৈবৈতে শিতৃণাং পাপনাশনাঃ॥
স্বান্ মহাত্মা ধ্যানেইজ্যুত ভূতিদং।
শিতৃণাং কথাতে চৈত্ত তথা গণচত্ত্যুম্॥
এক্রিংশং শিতৃগণা বৈর্ক্যাপ্তমবিশং জগণ ॥
তে মেহস্ত্পাস্তব্য ব্যক্ত চ সদা হিতম্॥
তি মাক্থেয়ে মহাপ্রাণে ক্চাপ্রয়ানে

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে রুচ্যুপাধ্যানে রুচিকুতপিতৃপুরুষজে।ত্রক্থনং নাম ধর্পতিতমোহণ্যার:।

সপ্তনবতিতমোহধ্যায়ঃ।
—:\*:—

মার্কণ্ডের উবাচ।

এবন্ধ স্বৰতস্থাত তেজনো বাশিক্ষান্ধ্ৰতঃ। প্ৰাহৰ্কভ্ৰ সহসা গগনব্যাপ্তিকাৰকঃ॥ তদ্ধুণ স্থাহৎ তেজঃ সমাসাদ্য স্থিতং জগৎ। জান্ধ্যামবনিং গদা কচিঃ কোত্ৰমিদং জগৌ॥ কচিক্ৰবাচ।

অচিতানাম্ভানাং পিতৃণাং দীপ্ততেজ্পাম্।
নমস্তামি দলা তেষাং ধাানিনাং দিবাচক্ষাম্॥
ইন্দ্রানাঞ্চ নেভাবো দক্ষমারীচয়োতথা।
দপ্তবীণাং তথাতেখাং তান্ নমস্তামি কামদান্॥
মহানীনাং ম্নীক্রাণাং স্বাচিক্রমদোতথা।
তান্ নমস্তাম্যহং দর্কান্ পিতৃনক্ষ্পথাবিপি॥
নক্ষাণাং গ্রহাণাঞ্চ বাযুর্গ্রার্ভিদত্তথা।
দ্যাবাপ্থিবোশ্চ তথা নমস্তামি কৃতাঞ্লিঃ॥
দেবর্ষীণাং ক্ষমিতৃংশ্চ সর্ক্রোক্রমস্কতান্।
অক্ষয়স্ত দলা দাতৃন্ নমস্তেহং কৃতাঞ্লিঃ॥
প্রভাপতেঃ ক্রপায় সোমায় বরুণায় চ।
ঘোগেখবেত্যশ্চ দলা নমস্যামি কৃতাঞ্লিঃ॥
নমো গণেডাঃ সপ্তভাতথা লোকেষ্ সপ্ত্।
ব্যক্তবে নমস্যামি ব্রক্রণে থা
সোমাধারান্ পিতৃগণান্ যোগস্তিধরাংভাথা।

নমস্যামি তথা সোমং পিতরং অগতামহন্।
অগ্নিরপাংতবৈবালান্ নমস্যামি পিতৃনহন্।
অগ্নিযোমস্থা বিধা যত এতদশেষতঃ ॥
যে তু তেজসি যে চৈতে সোমস্থ্যাগ্নিম্ভিয়ঃ।
অগৎসক্পিণশৈচৰ তথা ব্ৰহ্মস্কপিণঃ ॥
তেভোহিৰিলেভায় যোগিভাঃ পিতৃভায়

নমো নমো নমতে মে প্রসীদন্ত স্বধাভূজ: ॥
মার্কণ্ডেয় উবাচ।

এবং স্থতান্তত্তেন তেজ্পা মুনিসত্ম।
নিশ্চ মুক্তে পিতরো ভাসরত্তো দিশো দশ ॥
নিবেদিতঞ্চ যৎ তেন পুল্পান্থান্তলপনম্।
তন্ত বিতানথ স তান্ দদৃশে পুরতঃ স্থিতান্॥
প্রণিপত্য পুনর্জক্যা পুনরেব কুতাঞ্জাঃ।
নমস্ভভাং নমস্ভভামিত্যাহ পৃথগাদৃতঃ ॥
তেতঃ প্রসন্ধাং পিতর্ভস্চুশুনিসভ্মম্।
বরং ব্রীদ্থিতি স তাকুবাচানতক্ষরঃ॥
ক্ষিক্রবাচ।

সাম্প্রতং সর্পক্তৃত্বমাদিটং ব্রহ্মণা মম। সোহহং পদ্দীমভীক্ষামি ধঞ্জাং দিব্যাং প্রকাব ভীম্ পিতর উচু:।

অত্তৈব সদ্য: পত্নী তে ভবস্থভিমনোরমা।
তদাঞ্চি পুলো ভবিতা ভবতো মহুক্তম: ॥
ময়স্তমাধিশো ধীমাংখ্রাইমবোপলক্ষিত:।
ক্ষেচে রোচ্য ইতি খ্যাতিং যো যাপ্যাতি জগত্রয়ে
তদ্যাপি বহব: পুলা মহাবলপরাক্রমা:।
ভবিষ্যস্তি মহাস্থান: পৃথিবীপরিপালকা:॥
ঘফ প্রজাপতিভূজা প্রজা: ফ্ট্রা চতুর্ফিধা:।
ক্ষীণাধিকারো ধর্মজ তত: সিদ্ধিমবাদ্য দি ॥
স্থোত্রেণানেন চ নরো যোহ্মান্ স্থোষ্তি
ভক্তি:।

তস্য তুষ্টা বরং ভোগানার্ম্বানং তথোত্তমন্॥
শরীরারোগ্যমর্থক পুত্রপৌত্রাদিকং তথা।
বাঞ্ছিঃ সভতং তবাাঃ ভোত্রেগানেন বৈ যতঃ॥
প্রাক্তে ব ইনং ভজ্ঞা অন্যংপ্রীতিকরং তবন্।
পরিষাতি বিলাব্যাণাং ভূঞ্ডাং পুরতঃ বিতঃ॥
ভোত্রপ্রবাস্থাতা। সন্নিগানে পরে কতে।
অন্যাক্ষক্ষরং প্রাক্তং তত্তবিষ্যভাসংশ্রন্॥
যদ্যপাপ্রোত্রিরং প্রাক্তং বদ্যপ্রস্থতং ভবেং।
অন্তারোগাভবিজেন যদি বা কৃত্যমন্ত্রণ॥

অশ্র।হৈরপহতৈরপহারৈত্তপা কুত্তম্ । অকালেছপ্যথবাদেশে বিধিহীনমথাপি বা॥ অশ্রদ্ধাবাপুক্ষৈদিন্তমাশ্রিত্য বাকুতম। অস্মাকং ভৃপ্তারে প্রান্ধং তথাপ্যেতত্ত্তীরণাৎ॥ যত্রৈতৎ পঠাতে প্রান্ধে ভোত্তমস্মৎস্থাবহম। অসাকং জায়তে ভৃপ্তিন্তত্ৰ দাদশবাৰ্ষিকী। হেমস্তে দ্বাদশাকানি ভৃপ্তিমেতৎ প্রযক্তি। শিশিরে দ্বিগুণাব্দাংশ্চ তপ্তিং স্কোত্রমিদং গুড়ম ৷ বসন্তে ষোড়শ সমাস্তপ্তয়ে শ্রাদ্ধকর্মণি। ্রীল্মে চ ষোড় শৈবৈতৎ পঠিতং তৃপ্তিকারণম। বিকলেছপি ক্বতে প্রান্ধে স্তোক্তেণানেন সাধিতে বর্ষাস্থ তৃপ্তিরস্মাকমক্ষয়া জায়তে রুচে। শরৎকালেহপি পঠিতং শ্রাদ্ধকালে প্রযক্তি। অসাকমেতৎ পুরুষৈস্থ প্রিং পঞ্চ শাক্ষিকীম। যত্মিন গৃহে চ লিখিতমেতৎ তিষ্ঠতি নিত্যদা। সন্ধানং ক্তে প্রাদ্ধে তত্তাস্মাকং ভবিষ্যতি॥ তন্মাদেতৎ হয়। প্রাদ্ধে বিপ্রাণাং ভুঞ্জতাং পুর:। শ্রাবণীয়ং মহাভাগ অস্মাকং পুষ্টিহেতুকম্॥ যথ। গরাকৃতং শ্রাদ্ধং পুষ্করেতু তথৈব চ। কুরুকেতে নৈমিষে চ তথা স্তোতে প্রতে ধ্রে ইতি দত্তা বরং তল্মৈ পিতর: দিদ্দিমাগতাঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুবাণে কৌচ্যে ময়স্তরে পিতৃবরপ্রশানুং নাম সপ্তনবতি-তমোহধা।য়:।

অঊনবতিতমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

মার্কণ্ডেম উবাচ। মার্কন্ডেম উবাচ।

ত তথ্যানদীমধ্যাৎ সম্ভ্ৰে মনোরমা।
প্রান্তানাম তথ্যী তৎসমীপে বরাপ্সরা: ॥
সা জোবাচ মহাস্থানং কুচিং স্থমধুরাক্ষরম্।
প্রভাবনতা স্কুল: প্রান্তা বৈ বরাপ্সরা: ॥
অতীব রূপিনী কন্যা মৎস্থতা তপতাং বর।
জাতা বরুণপুত্রেণ পুক্রেণ মহাস্থানা ॥
তাং গৃহাণ ম্যা দত্তাং,ভার্য্যার্থে বরবর্ণিনীম্।
মন্ত্র্ব্যাধিতিস্ত্যাং সম্ৎপ্র্যান্ড তে স্তুতঃ ॥
মার্ক্রেয়ে উবাচ।

তথেতি তেন সাপ্যক্তা তথাৎ তোয়াৰপুন্নতী<sup>ম্।</sup> উজ্জহার ততঃ কন্যাং মালিনীং নাম নামতঃ <sup>‡</sup> নদ্যান্চ প্ৰিনে ভিমন্ স কচিম্নিসন্তম: ।

ক্ষাহ পানিং বিধিবৎ সমানায্য মহাম্নীন্ ॥
তদাং ভদ্য স্তো জজ্ঞে মহাবীর্থা। মহামন্তি: ।
কৌচোহভবৎ পিতৃনীয়া প্যাতোহত্ত বস্থাতলে
তদ্য মন্ত্রে দেবাস্তথা সপ্তর্মন্চ বে ।
তনয়ান্চ নৃপাশ্চেব ভে সম্যক্ ক্থিভান্তব ॥
ধর্মবৃদ্ধিস্তপারোগ্যং ধনধান্যস্তোভ্রে: ।
নৃগাং ভ্রতাসন্দিশ্বমন্তিন্ ম্যস্তরে ক্রতে ॥
পিতৃত্বং ভ্রথা ক্রমানি পিতৃণাঞ্চ ভ্রথা গ্রান্ ।
স্মান কামানবাপ্রোতি ভ্রপ্রাদামহামুনে ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে রৌচাময়স্তরে মালিনীপরিণরো নামাষ্টনবতি-

তমোহধ্যায়:।

### নবনবভিতমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:-

মার্কণ্ডেয় উবাচ। ততঃ পরস্ক ভৌত্যস্ত সমুৎপত্তিং নিশাময়। त्नवान्षीःखथा शृखाः छटेथव वस्र्धाधिशान्॥ বভুবাঙ্গিরসঃ শিষ্যো ভৃতিনীয়াতিকোপনঃ। চণ্ডশাপপ্রদোহরেহর্থে মুনিরাগশুসৌমাবাক ॥ ত্তাশ্রমে মাত্রিখা ন ব্বাব্তিনিষ্ঠ্রম্। নাতিতাপং রবিশ্চক্রে পর্জ্জন্তো নাতিকর্দমম্॥ নাতিশীতঞ শীতাংশুঃ পরিপূর্ণোহিপ রশিভি:। চকার ভীত্যা বৈ তস্ত কোপনস্যাতিতেজ্য:। ঋতবশ্চ ক্ৰমং ত্যক্তা বুক্ষেষাশ্ৰমজনাহ । <sup>७ मा</sup> पूज्यकनः ठक्ताख्या मार्चकानिकम् ॥ মুত্রাপশ্চ ছলেন ভদ্যাশ্রমদ্মীপগাঃ। ক্মওলুগতাশৈচৰ ভূতেভীতা মহাত্মন:॥ নাতিক্লেশসহো বিশ্র সোহভবং কোপনো ভূশম্ অপুল্র মহাভা**গ: স** তপ্স্যকরোমন: ॥ পুত্রকামো যতাহার: শীতবাতানলাহত:। ত্ৰপ্ৰামি বিচিন্ত্যেতি তপ্ৰস্যেৰ মনে। দুধে॥ তদ্যেদ্র্নাতি**শীতার নাতিতা**পার ভাস্কর:। অভবনাতরিখা চ ববৌ নাতি মহামূনে ॥ আপীডামানো ঘটেন্দক স ভৃতিমু নিগত্তম:। ষ্মনবাপ্যাভিলাষং তং তপ্দ: সংসূত্রিত ॥ ঙস। ভ্রান্তা স্থবর্চাভূদবজ্ঞে তেনাভিমব্রিত:। <sup>বিবা</sup>হঃ শান্তিনামানং শিব্যমাহ মহামতিম্ ॥

প্রশাত্তমক্রতিমং বিনীতং ভরক্রি। সদোদ্যুক্তং ওভাচারস্লারং মূ্নিসভ্নমৃ॥ ভৃতিরুবাচ।

অহং যক্তং গৰিষানি আতৃ: শাবে স্থক্তন:।
তেনাহৃতত্বা চেছ গৎ কর্ত্তবাং পৃণ্ছ তং ॥
প্রতি লাগরণং বহুত্বা কার্যাং সমাপ্রমে।
তথা তথা প্রযুদ্ধেন যথাগ্নি শমং ব্রন্ধেং॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যাজ্ঞাপ্য তথেত্যুক্তো গুরু: শিষ্যেণ শাস্তিনা জগাম যজ্ঞং তং ভাতুরা**হত: স যবী**য়সা ॥ म ह भारि र्त्तनाम्याव मिद्रभूत्राकनापिकम्। উপানয়তি ভৃতার্থং গুরোন্তদা মহাত্মনঃ ॥ অভাচ কুরুতে কর্ম গুরুভক্তিবশাহুগঃ। প্রশান্তভাবদনলে। যোহদৌ ভূতিপরিগ্রহ:॥ তং দৃষ্ট্য সোহনলং শাস্তং শাস্তিরত্যস্তত্থেতঃ। ভীতক ভূতের্বছধা চিস্তামাণ মহামতি:। किং करतामि कथः वाक खिवजांगमनः खरताः। ময়ান্য প্রতিপত্তব্যং কিং ক্লতে স্থকতং ভবেৎ॥ প্রশান্তাগ্রিমিমং ধিষ্টাং বদি পশুতি মে গুরু:। ততো মাং বিষমে হৃদ্য ব্যুদ্দে স্লিবোক্যতি॥ ব্দ্যন্যম্থিমতাহম্প্রিস্থানে করোমি তৎ। দর্বং প্রভাকদৃগ্ভত্ম সোহবর্তাং মাং করিষাতি॥ সেহিং পাপো গুরোন্তন্য নিমিলং কোপ-भागत्याः ।

তথাত্মানং ন শোচামি যথা পাপং কৃতং গুরো:
দৃষ্ট্বা প্রশাস্তমনলং নৃনং শব্দ্যাতি মাং গুরু:।
অথবা পাবক: জুছতথাবীর্ব্যো হি স বিজঃ॥
যদ্য প্রভাবাবিভাস্তো দেবান্তিচন্তি শাসনে।
কৃতাগদং স মাং যুক্তা করা নাধর্ববিব্যতি॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

নাক্তের ভ্রাচা
বহুইধবং বিচিন্তানৌ ভীতত্তস্য সদা প্ররো:।
যথৌ মতিমতাং শ্রেষ্ঠ: শরণং ভাতবেদসম্ ॥
স চকার তদা ভোত্তাং সপ্তার্কের্যতমানস:।
স চৈকচিত্তো মেদিকাং ভক্তালুল: 
শাত্তিক্রাচ।

ওঁ নসং সর্বভূতানাং সাধনার মহাম্বনে। একবিপঞ্ধিটার রাজসুত্রে বড়ামুনে। নমং সমস্তদেবানাং বুদ্ধিদার স্বর্চেদে। গুক্ররপার স্বর্গতামশেবাণাং বিভিন্তানঃ। বং মুধং সর্বদেবানাং বরাতং ভগবান্ হবিঃ। व्योगमञ्जाभनान् (मर्वान् षरव्योगाः मर्सरम्बजाः ॥ ততং হবিত্যামল<u>্মেধ্তমূপগঞ্</u>জ ি। ভত্ত ভ জনরপেণ পরিণামমুপৈতি যৎ। <u> (ज्ञानिकोषधीसम्बद्धाः क्रवक्तानिमाद्धः ।</u> **'** अवधीं जित्र स्थाणिः **ऋभः को** विश्व कञ्चवः ॥ বিতৰতে নরা যজান্ ছৎস্টাসোধধীযুচ। য**ৈ জ্বোন্তথা দৈত্যান্তৰ**ক্ৰকাংসি পাবক ॥ আপ্যাধ্যতে চ ভে ষজ্ঞাত্ত্বধারা ভ্তাশন। चाडः नर्कम्य (शामिषः वट्ट नर्कमग्ररूषा ॥ (एवडा मानवा यका रिम्डा शक्तर्ववाकर्ताः। মামুষা: পশবো বৃক্ষা মূগপক্ষিনরী স্পা:॥ আপ্যাৰ্যক্তে ত্বন্ধা সর্কে সংবধ্যক্তে চ পাবক। অন্ত এবোদ্ভবং যান্তি স্বয়ন্তে চ তথা লয়ন। ष्मभः स्वाम तस्य पः प्रम्पि भूनत्त्रय जाः। প্রামানাত্মা তাশ্চ প্রাণিনাং পুষ্টিকারণম্ ॥ দেবেৰু তেজোরপেণ কাস্তা। সিদ্ধেষ বভিতঃ। বিষরপেণ নাগেষু বায়ুরূপ: পভ জিষু॥ मञ्चल व वर्गन् तकार्या त्मारः शकिमृशानियु। অবইস্ভোহপি তক্ষু কাঠিন্তং দং মহীং প্রতি॥ ब्दल ज्वा कर्मान क्रा क्रिक्त क्षेत्र ব্যাপিত্বেন তথৈবাগ্নে নভন্তাত্মা ব্যবস্থিত:॥ অমরে সর্কভূতানাম ভালর সি পালয়ন্। ছামেকমান্তঃ কবয়ত্বামান্ত্রিবিধং পুনঃ॥ ভাষতথা করয়িভা যজ্ঞ মাণ্যমকলয়ন্। षद्रा ऋडेमिनः विश्वः वत्न खि अत्रमर्वत्रः ॥ ত্বামৃতে হি অংগৎ সর্কাং সদ্যোদি গ্রেছ তাশন। তুত্যং কৃষা দিলং পূজাং স্বক্ষবিহিতাং গতিম্। প্রমাতি হব্যকব্যাল্য: স্বধারাহাভ্যুদীরণাৎ। পরিণামাম্মবীর্যা হি প্রাণিনামমরার্চিত ॥ দহস্তি সর্কৃত্তানি ততো নিজ্ঞা হেতয়:। कां जरवन खरेवरवद्यः विश्व शृष्टिर्म शाहार जा **७८े १व देव क्रिक्ट कर्म्य मर्स्स्ट्र इंग्रिक्ट ख**रार । নমন্তেহনৰ পিকাক নমন্তেহন্ত হতাশন। পাবকালা নমত্তেহত নমতে হ্বাবাহন। ছমেব ভুক্তণীতানাং পাচনাৰিশ্বপাবক: ॥ শভানাং পাককর্তা দং পোষ্টা ছং জগততথা। ষমেৰ মেদত্বং বাযুত্বং বীলং শভাহেতৃকম্॥ পোষায় দৰ্কজুতানাং ভৃতত্বভাতবো হৃদি। ষং জ্যোতিঃ সর্বভূতেরু স্বমাদিত্যো বিভাবস্থ:॥ चमरुषः उथा त्राजिक्रण मह्या उथा उपान्।

হিরণারেত। ত্ং বহে হিরণাে ভবকারণম্ ।

হিরণাগর্ভাশ্চ ভবান্ হিরণাে দশঞ্জ: ।

তং মুহুর্ত্ত: ক্ষণশ্চ তং ত্বং অুটিত্বং তথা লবঃ ॥
কলাকাঠানিমেবাদির্বােণাসি জগৎপ্রভাে।

ত্বমেতদ্বিলং কালঃ পরিণামাত্বকো ভবানু ।

যা জিহ্বা ভবতঃ কালী কালনিঠাকরী প্রভাে।
ভ্রমার: পাহি পাপেভ্য প্রহিকাচ্চ মহাভ্রমাৎ ॥
করালা নাম যা জিহ্বা মহাপ্রলয়কারণম্।
ভ্রমা ন: পাহি পাপেভ্য প্রহিকাচ্চ মহাভ্রমাৎ ॥
মনোজবা চ যা জিহ্বা লঘিমাগুণলক্ষণা।
ভ্রমা ন: পাহি পাপেভ্য প্রহিকাচ্চ মহাভ্রমাৎ ॥
করোতি কামং ভ্রেভাাে যা তে জিহ্বা
স্বােহিতা।

তয়া ন: পাহি পাপেভা ঐহিকাচ্চ মহাভয়াৎ॥
সধ্যবর্ণা যা জিহ্বা প্রাণিনাং রে:গদাহিকা।
তয়া ন: পাহি পাপেভা ঐহিকাচ্চ মহাভয়াং॥
ফুলিঙ্গনী চ যা জিহ্বা যতঃ সকলমঙ্গলম্।
তয়া ন: পাহি পাপেভা ঐহিকাচ্চ মহাভয়াং॥
যা তে বিখা সদা জিহ্বা প্রাণিনাং শর্মদায়িনী
তথা ন: পাহি পাপেভা ঐহিকাচ্চ মহাভয়াং॥
পিঙ্গাক্ষ লোহিতথীব কৃষ্ণবর্গ হভাশন।
আহি মাং সর্কাদোহেভাঃ সংসারাহ্বরেই মাম্॥
প্রশীদ বহে সপ্তাচ্চিঃ কুশানো হ্ব্যবাহন।
অগ্রিণাবক ভ্রাদিনামাইভিক্লীরিতঃ॥
অর্থেহপ্রে সর্কভ্তানাং সমৃত্ত বিভাবসো।
প্রশীদ হ্ব্যবাহাণ্য অভিষ্কুতম্মাব্যয়॥

সমৃদ্ধিনান্ হ্পান্তহাজপঃ
সমৃদ্ধিনান্ হ্পান্তহাহতিতীবঃ।
সমৃদ্ধিনান্ হপান্তহাহতিতীবঃ।
সমৃদ্ধিনা হস্তাধ্বাতিবীর্যাঃ।
সমৃদ্ধিনা হস্তাধ্বাতিবীর্যাঃ।
সমৃদ্ধিনা হস্তাধ্বাতিবীর্যাঃ।
সমৃদ্ধিনা ক্রমান্তাম্।
তয়া ততং বিশ্বমিদং চরাচরং
হতাশনৈকো বহুধা স্বম্ব ॥
সমক্ষঃ সমিরিবনা বহুদ্ধরা
নতঃ সংসামার্কমহন্দিবাথিলম্।
মহোদধের্জ্বিরসাত ই বাড়বো
তবান্ বিভূত্যা প্রয়া করে ছিতঃ।
হতাশনস্ক্মিতি সদাভিপ্রাসে
মহাক্রেতী নিরম্পরের্জ্হির্ভিঃ।

অভিষ্ঠতঃ পিবসি চ সোমমধ্বরে ৰষ্টুকুতাক্তপি চ হবীংষি ভূতয়ে॥ पः विटेखः मङ्जिमिट्कारम क्लार्थः (वनारक्ष्यं नकरलयू शीयरन दम्। ত্বছেতোর্যজনপরায়ণা বিজেক্রা বেদাকাজধিগময়ন্তি সর্বাংল। ত্বং ব্ৰহ্মা যজনপরস্তবৈধৰ বিষ্ণু-ভূ তেশঃ স্থরপতির্ধামা জলেশঃ। সুর্যোন্দু সকলম্বামুরাশ্চ হবৈয়ঃ সস্তোষ।†ভিমতফলান্যথাপুবস্তি ॥ অর্চিডি: পরমমহোপঘাতত্ত্তং म्रस्थिः তব श्रुहि बाग्नट्य ममस्यम्। স্থানাবাং প্রমুমতীব ভস্মনা স্থ সন্ধ্যায়াং মুনিভিরতীব সেব্যসে তৎ॥ প্রসীদ বছে শুচিনামধের প্রসীদ বায়ো বিমলাতিদীপ্তে। প্রসীদ মে পাবক বৈছাতালা প্রসীদ হবলশন পাহি মাং হম্॥ যৎ তে বছে শিবং রূপং যে চ তে সপ্ত হেতয়ঃ। হৈ: পাহি ন: স্ততো দেব পিতা পুত্রমিবাত্মজন্। ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ভৌতাময়স্তবে অগ্নিস্তোত্তং নাম নবনবতি-তমোহধ্যায়:।

## শততমোহধ্যায়ঃ।

#### -0:0-

ং স্কৃতস্তত্তেন ভগবান্ হ্বাবাহন:।

শামাল।বৃত্তত্ত্ব তত্তাদীদগ্ৰতো মুনে ॥

বে৷ বিভাবস্থ: প্ৰীতস্তোত্ত্বেণানেন বৈ দিল।

শাস্তিমাহ প্ৰণতং মেদগন্তী ব্বাগণ ॥

অগ্নিফ্বাচ।

বৈত্তীহিম্মি তে বিপ্ৰেভক্ত্যা বা তে স্কৃতিঃ।

দিদামি ভবতে প্ৰাৰ্থাতাং যহ তবেপিতম্॥

শান্তিক্ষাচ।

গবন্কতক্তোহিদ্ধি বং ছাং পঞ্চামি জণিণম্।
গাণি ভক্তিনন্ত্ৰন্ত ভবতা প্ৰৱতাং মম॥

তিগ্জং পতো দেব মমাচাৰ্ব্যো নিজাপ্ৰমাই।
গিতশ্চাপ্ৰমং ধিষ্টাং ছুৎস্নাধ্য সু পশ্চতু॥

মমাপরাধাৎ সন্তাক্তং ধিষ্ট্যং বৎুতে বিভাবসো।
তৎ ছয়াবিষ্টিতং সোহদ্য পূর্ববং পশতাং দিজঃ ॥
তথানাদ্দি মে দেব প্রসাদং কুলবে বিদি।
পূলো বিদিষ্টো ভবতু তদপুত্রত মে শুরোঃ ॥
যথা চ মৈত্রীং তনরে স করিবাভি মে শুরুঃ।
তথা সমন্তসত্বেরু ভবত্ত মনো মৃত্ব ॥
গশুতাং তোষাতে বেন প্রীতিং যাতে।হিসি
মেহবার।

তোত্রেণ ততা বর্ণো ভবেণা মংপ্রসাধিত:॥
মার্কণ্ডের উবাচ।
এতচ্ছুখা বচন্ততা তমার বিজ্ঞসন্তম্ম।
তোত্রেণারাধিতো ভূরো গুরুতজ্যা চ পাবক:॥
অগ্রিক্বাচ।

গুরোরর্থে যতো ব্রহ্মন্ যাচিতং তে বর্হমু। নাত্মার্থং তেন মে প্রীতিত্বযাতীর মহামুনে ॥ ভবিষাভোতদথিলং গুরোর্যৎ প্রাথিতং **দরা।** মৈত্রী সমস্তভূতেষু পুদ্রশাক্ত ভবিষ্যাতি ॥ ময়স্তরাধিপ: পুলো ভৌড্যো নাম ভবিষাতি। মহাৰলো মহাৰীৰ্যো মহাপ্ৰাঞো গুৰুত্তৰ। অনেন যশ্চ স্তোত্তেণ কোষ্যতে মাং সমাহিত:। তক্ত।ভিল্যিতং সর্বং পুণ্যঞাক্ত ভবিষাতি ॥ যজেষু পর্কাবেষু তীর্থে**জ্যাহোমকর্দাস্থ**। ধর্মায় পঠতামেত্রাম পৃষ্টিকরং পরম্॥ অহোরাত্রকুতং পাপং শ্রু**তমেতৎ সকুদ্দিল।** নাশ্যিষাতাসন্দিগ্ধং মম তৃষ্টিকরং পরস্॥ ष्ट्रामकानत्नामानीन् नत्यादेगात्रात ७९कृदेखः । त्य दिनाशास्त्रकातिकः निष्यः (भोर्गमायायायाः भव्ययत्माय् व्यवः। মনৈষ সংশ্ৰেতো মতিট্যভবিতা পাপনাশনঃ ॥ মাৰ্কত্তেয় উবাচ।

ইত্যক্ষা ভগবানরিঃ প্যত্তস্য বৈ মুনে।
বভ্বদেশনঃ সদ্যো দীপছো নির্ভা তথা ॥
স চ শান্তির্গতে বহো পরিত্রেন চেতসা।
হর্ষরোমাঞ্চিতভাষ্ট প্রবিবেশাপ্রমং গুরোঃ ॥
কার্য্যমানং ভ্রাসো গুরুষিটো হতাশনম্।
দেশ পূর্বাবং প্রাপ ততঃ স প্রমাং মুন্য্ ॥
এতব্রিরভবে সোহশি গুরুষ্তে মহাস্থানঃ।
ভাত্রিরিসো ব্রাদানগাম স্বম্শম্॥
তভাগ্রভণ্চ শিব্যোহসৌ চক্রে পাদাভিক্ষমম্।
গৃহীতাসনপূজ্শ তমাহ স তথা গুরুঃ ॥

वरमाजिहार्भः पत्रि स्म छथानात् ह अवस्। न (विणि किमिनः चटक्ष्य ८ टेन छ ९ कथ्यां ७ ८म ॥ ভতঃ স শান্তিভং সর্কমাচার্য্যার মহামুনে। অগ্নিশাদিকং বিঞাঃ সমাচটে যথাতথমূ ॥ তৎ अचा न পরিষশ্য ক্ষেত্র্রেনয়নো গুরু:। नियाय अन्ति (वनान् मालाभाकान् महामूति । ভৌত্যো নাম মহুত্ত পুকো ভূতেরজায়ত। তভা মন্বরে দেবান্ধীন্ ভূপাংশ্চ মে শৃগু॥ ভবিষ্যক্ত ভবিষ্যাংস্ত গ্ৰুতো মম বিস্তরাৎ। দেবেক্সো যশ্চ ভবিতা তক্ত বিধ্যাতকৰ্মণঃ॥ চাকুষ। क कि की कि शरिका लांकिता खर्था। ধারাবৃক।শ্চ ইভ্যেতে পঞ্চ দেবগণাঃ স্থৃতাঃ॥ ভচিরিক্তন। তেবাং তিদশানাং ভবিষাতি। মহাবলো মহাবীষ্যঃ সইক্রিজ্ঞ গুলৈমুভিঃ॥ অগ্নীএশ্চারিবাহুশ্চ শুচিমু ক্রোহ্প মাধবং। শক্তো হজিত চ মথৈতে তদা সপ্তৰ্বয়: স্বৃতা:॥ গুরুর্গভীরো ব্রহণ্ট ভরতোহমুগ্রহন্তথা। দ্রীমাণী চ প্রতীরশ্চ বিষ্ণু: সংক্রেন্সনন্তথা॥ তেজ্বী স্থবলদৈৰ ভৌত্যক্তৈতে মনোঃ স্থতাঃ। চতুদিশ মরৈতৎ তে সবস্তরম্ণাজ্তম্॥ আৰো ময়তারাণীখং আকমেণ মুনিসভম। পুণামাপ্নোতি মহুদন্তথাকীণাঞ্চ সন্ততিম্॥ क्षण मय्यवः প्राः धर्ममात्त्राणि मानवः। चारवाहिरक अवन्यः नर्सकामानवाश्रुर्छ ॥ ঔত্তমে ধনমাপ্নোতি জ্ঞানঞ্চাপ্নোতি ভামদে। ∕রবতে চ শ্রুতে বৃদ্ধিং স্কুরপাং বিন্দতে লিয়ম্ ॥ আরোগ্যং চাকুষে পুংসাং শ্রুতে বৈবস্বতে বলম্ গুণবৎপুত্রপৌত্রস্ত স্র্বাদাবর্ণিকে শ্রুতে ॥ মাহাত্ম্যং ব্ৰহ্মসাবৰ্ণে ধৰ্মসাবৰ্ণিকে গুভম্। মতিমাপ্নে:তি মহুজো কল্পেগাবর্ণিকে জয়ম্॥ छा जिल्ला छो थेटेन प्रका मक्त नाविनित संदर। নিশাতরভারিবলং রৌচ্যং শ্রুতা নরোত্তম ॥ দেবপ্রসাদমাপ্নোতি ভৌত্যে মবস্তরে শ্রুতে। তথারিহোতাং পুতাংশচ গুণযুক্তানবাপুতে ॥ नर्सागरूकमाम्बन्ध भृत्गिकि म्निमलम । মৰ্ত্তরাণি ততাপি শ্ররতাং ফলম্ত্রম্॥ তब (क्वान्वीनिकान् मृनः उउनकान् नृशान्। বংশাংশ শ্রম্মা সংক্ষাঃ পাণেভ্যো বিপ্র মৃচ্যতে দেৰধী জনুপাকাজে যে তনাৰরাধিপাঃ। তে প্রীশ্বতে তথা প্রীতাঃ প্রবছতি ওভাং মতিম্ ॥ যৎস্বরূপং জগচেদং সদেবাস্থ্যমাত্রম্ ॥

ততঃ গুডাং মতিং প্রাপ্য কৃত্বা কর্ম্ম তথা গুডম্। শুভাং গতিমবাপ্লোতি যাবনিক্রাশ্চভূদিশ। गर्क्स ञ्राच जिवः क्यागः गर्क्स त्रोमा। खथा श्रहाः ভবস্তাসংশয়ং শ্রুত্বা ক্রমান্মরস্তরস্থিতিম্ ॥

> ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে চতুর্দশ-ময়স্তরকথনং নাম শত-তমেহাধ্যায়: 🛚

একাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

ক্রেষ্ট্রিকরবাচ।

ভগবন্ কথিতা সম্যক্ ত্যা মহস্তর ছিতি:। ক্রমাধিস্তরতম্বতো ময়া চৈবাবধারিতা। ব্ৰহ্মাদ্যমথিলং বংশং ভূভূজাং বিজ্ঞসভ্য। শ্রোভুং মনেচছতঃ সমাগ্ভগবন্ প্রেবীহি মে॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

मृत् तरम न्लानाः चमरमयानाः मम्छंतम्। চরিতঞ্জগন্লমাদৌ কৃতা শ্রজাপতিম্। অরং হি বংশো ভূপালৈরনেকক্রভুকর্ন্ডিঃ। সংগ্রামজিভিদ্বিতিজঃ শতসংবৈধ্যরলক্ষ্তঃ॥ শ্রুতা চৈষাং নরেন্দ্রাণাং চরিতানি মহাত্মনাম্। উৎপত্তমুশ্চ পুরুষ: দর্মপাপে: প্রমূচ্যতে ॥ মমুর্যক্র তথেক্ষাকুরনরণ্যো ভগীরথ:। অভ্যেচ শতশো ভূপা: সম্যক্ পালিতভূময়ঃ॥ धर्माञ्जा यञ्जिनः भूताः नमाक् शतमटविनिः। শ্ৰুতে তিমিন্ পুমান্ বংশে পাপৌঘাৰিপ্ৰ মুচা তদয়ং শ্রেষ্ডাং ৰংশো যডো বংশাঃ সহস্রশঃ। ভিদ্যত্তে মন্ত্রেক্সণোমবরোহা যথা বটাৎ॥ বন্ধা প্ৰজাপতিঃ পূৰ্বং দিস্ফুর্কিবিধাঃ প্রভাঃ व्यञ्गृष्ठीकिकामकामा क्षाप्तिकामा विकास বামালুষ্ঠাচ্চ তৎপত্নীং জগৎস্তিকরো বিভু: I সমর্জ ভগবান্ ব্রন্ধা অপতাং কারণং পর্ম্। অদিতিন্তস্ত দক্ষ্ঠ কন্যাজায়ত শোভনা। ভক্তাঞ্চ কশুপো দেবং মাৰ্ত্তগুং সম**জীজন** । वक्षप्रज्ञभः अग्रहामर्भगोगाः वत्रश्चनम् । আদিমধাাস্তভ্তঞ সর্গবিতান্তকর্মস্থ यरणाश्यिमामाः यित्रमान्यकः चितः विक।

র: সর্বাত্তঃ সর্বাত্মা পরমাত্মা সনাতনঃ। অদিভ্যামভবদ্বাত্মান পূর্বমার।ধিতত্ত্বা॥ ক্রোষ্ট্রিকবাচ।

ভগবন্ শ্রোত্মিজামি যং শক্ষণং বিবস্বতঃ।

যংকারণঞ্চাদিদেবঃ সোহ্ভবং কশুপাত্মজঃ॥

বধা চারাধিতো দেব্যা সোহদিত্যা কশুপেন চ।
আরাধিতেন চোকং ৰং তেন দেবেন ভাস্বতা॥
প্রভাবঞাবতীর্ণ যথাব্যুনিসভ্য।
ভবতা ক্থিতং সম্যক্ শ্রোত্মিছাম্যদেবতঃ॥

মার্কভেন্ন ট্রাচ।

বিম্পারী পরসা বিদ্যা জোটিভ লিখিতী ক্টা। रिक्वनाः कानमाविज्ः श्रीकामाः मःविरमय ह ॥ বোধশ্চাবগতিকৈত স্বৃতির্বিজ্ঞানমের চ। ইভোতানীহ রূপ।ণি তহ্ম রূপক্স ভাস্বত:॥ শ্রমতাঞ্চ মহাভাগ বিস্তরালাদতো ময়। यर्भुष्टेवानिम त्रायत्र।विकारिया यथा छवर ॥ নিপ্রভেহস্মিন্ নিরালোকে দক্তিত্তমদাবৃতে। बुर्ने ७ म ज्रान्य का कर्म तार भारत्य ॥ তৰিভেদ তদন্তঃছো ভগবান্ প্রপিতামহ:। প্ৰবোনিঃ সমং একা য়ং অন্তা জগতাং প্ৰভু: ॥ ত মুখানোমিতি মতান ভূচছ কো মহামুনে। ততো ভূ**ত্ব ভূবন্তত্মা**ৎ তত**ণ্চ স্ব**রন্তরেম্॥ এতা ব্যাহ্বতয়ন্তিত্র: স্বরূপং তদ্বিস্ত:। ওমিত্য কাৎ স্বরূপাৎ 'তুস্কার পংরবে: পরম্॥ ততো মহরিতি সুলং জনং সুলতরং তভঃ। ত্তত্ত্ত্ত স্তামিতি মূর্নি স্প্ধা ॥ স্থিতানি জম্ম রূপাণি ভবস্তিন ভবস্তিক। সভাবভাবলে।ভাবং যতো গছাতি সংশ্রম্। আ শিচ্ভং যৎ পরং স্ক্রমরূপং পরমং হিতম্। ওমিত্যকেং ময়। বিপ্র তৎ পরং একা ত্রপুঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে বংশ মুকীর্ত্তনং নামৈকাধিকশতত্তমোহধ্যার: ॥

ষ্যধিকশততমো২ধ্যায়ঃ।

--- 0: 0 ----

মাৰ্কণ্ডের উবাচ। ভদাদতাৰিভিনাৎ তু ত্রদ্ধণোহব্যক্তলমন:। <sup>মুহো</sup> বভুব্ঃ প্রথমং প্রথমাবদনামূনে॥

জবাপুপনিভাঃ সদ্যভেজােরপাস্তসংহভাঃ। পৃথক্ পৃথবিভিন্নাশ্চ রজোরপবহান্তভ: ॥ रखृः वि निक्रिनावक्नानिक्रकानि कांकनम्। यामृथर्गः उथा वर्गानामः इडिधवानि छ ॥ পশ্চিমং যদিভোর্ব ক্রং অক্ষণঃ প্রমেষ্টিনঃ। আবিভূতিানি সামানি তভশ্ছনাংদি তান্যথ ॥ व्यवर्कानगरमयकः ज्ञाञ्चनहत्रश्रेष्ठम्। যাবদেবার স্বরূপং তদাভিচারিকশান্তিকম্॥ উত্তরাং প্রকটীভূতং বদনাৎ ভস্য বেধসঃ। হ্রথসত্তম: প্রায়ং সৌম্যাসৌম্যম্বরূপবৎ ॥ খচোরজোগুণা: সবং यकुवाक গুণোমূনে। তমোগুণানি সামানি তম:সম্বম্পর্বস্থে॥ এতানি জলমানানি তেজ্বসাঞ্চিমেন বৈ। পৃথক্পৃথগবস্থানং ভাঞ্জিপূর্কমিবাভবন্। ততন্ত্রাদ্যং যৎ তেজ ওমিত্যুক্ত্রাভিশন্যতে। ত্যা সভাবাদ্যৎ তেজ্ঞতং সমার্ভ্য সংস্থিতম্॥ यथा यकुर्माग्रः ८७ व्यक्त वर नामार महामूटन । এক অমুপ্যাতানি পরে তেজাদি সংশ্রে ॥ भाखिकः পोष्टिकरेक्षत छथा देहता किहा त्रिकम्। ঋগাদিষুলয়ং ত্রহান্তিতয়ং তিম্বথাগমৎ ॥ ততো বিশ্বনিদং সদ্যস্তমোনাশাৎ স্থানির্মণ্ ॥ বিভাবনীয়ং বিপ্রধে ভির্যাপুর্দ্ধমধন্তথা ॥ ততস্ম ওণীভূতং ছালদং তেজ উত্তমন্। পরেণ তে**জ্প। ব্রন্ধরকত্বমূপ্যাতি তং** ॥ আদিত্যসংজ্ঞামগমদাদাবেৰ ৰভোহ্ছৰং। বিশ্বভাভ মহাভাগ কারণঞাব্যয়।তাকম্ ॥ প্রাতর্ম্মন্য নিদনে চৈব তথা চৈবাপরাঙ্গিকে। তীয় তপতি সাকালে ঋগ্যজু:সামদজিতা॥ **अ**ष्ठ अपूर्वाट्ट मधाट्ट ह यक्ष्वि देव। সামানি চাপবাহে বৈ তপস্তি মুনিস্তম ॥ भार्यकः अक् श्र्काटल यक्ष्मखन्तरशिष्ठिम्। বিত্যস্তং সামি সায়াকে আভিচারিকম্স্তত: ॥ नधान्तित्वभवार्ष्ट । यदम देववा चिवा विकास অপরাফে পিতৃণা**ন্ত সামা কার্য্যাণি তানি বৈ**॥ বিস্তৌ ঋষ্মরো ত্রন্ধা হিতৌ বিষ্ণুর্যজুর্মর:। কুড়: সাম্মরোইকে চ তকাৎ তঞা হচিথানি: ॥ 🖯 ज्यान काषान् दिशासा (विषयः चित्रः विषयः। বেদবিণ্যাত্মকশৈচৰ পরঃ পুরুষ উচ্যতে॥ বৰ্গস্থিত্যম্ভহেতুশ্চ রক্ষঃসম্বাদিকান্ গুণান্। আশ্রিত্য বন্ধবিষ্টাধিদংজ্ঞানভ্যেতি শাৰ্ষতঃ॥

দেবৈঃ সদেড্য: স ভূ বেদম্জিঃরম্তিরাল্যোহবিশমগ্রস্থিঃ।
বিখাশ্রমং ক্যোতিরবেদ্যধর্মা
বেদান্তগন্য: পরমঃ পরেভ্য: ॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে মার্কভ্যমাহাল্যে

শ্যাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

ত্যে ধিকশতত মোহধ্যায়ঃ।

--- 0:0 ---

নাক্তের উবাচ।
ভক্ত সন্তাপ্যমানে তু তেজনোর্জনখন্তপা।
পিতৃক্শিন্তর্মানাস পদ্মযোনিঃ পিতামহঃ ॥
স্প্টিঃ রুতাপি মে নাশং প্ররাক্তত্তিত্ত্ত্সঃ।
ভাস্কঃ স্টেসংহারন্থিতিহেতোর্দ্রহাত্তন ।
অপ্রাণাঃ প্রাণিনঃ সর্প্রে আণাঃ শুবান্তি তেজ্পা
ন চান্তসা বিনা স্টের্শিস্কান্ত শুবিষ্ঠি ॥
ইতি স্ঞিক্ত্য তগবান্ স্তোত্তং ভগবতো রবেঃ।
চকার তন্মরো ভূষা ত্রনা লোকপিতামহঃ ॥
ত্রুমোবাচ।

নৰছে যন্ময়ং সর্কমেতৎসর্কময়শ্চ য: ৷ বিখমুর্তি: পরং জ্যোতির্যতক্ষায়তির যোগিন: ॥

य श्रद्धारमा (या यक्ष्माः निधानः नामाक (या (यानित्रिक्षिण्यक्तिः। ·**অরীময়ঃ সুলভয়**ার্ক্নমাত্রা-भवस्करभा अनभावत्याभाः॥ তং দর্কহেতুং পরমেড্যবেদ্য-মাদৌ পরজ্যোতিরবহিরূপষ্। স্থূলঞ্চ দেবাত্মতয়া নমস্তে ভাশস্তমান্যং পরমং পরেভ্য:॥ স্থাইং করোমি যদহং তব শক্তিরাদ্যা ভৎপ্রেজি **ভলমহী**পবনাগ্রিরপাম্। फान्मवजामिविषयाः व्यववान्यस्याः नात्याक्ता किंजिनशांत्रि उद्यापत ॥ विरुष्टाय खनामायगठः भृषिवतः স্ষ্টিং করোমি জগতাঞ্চ তথাহ্যপাক্ম। ব্যাপী ঘমেব ভগবন্ গগনস্বরূপং कः शक्यां कशिवाः शतिशामि विधन। यक्किर्यक्षित्र भव्तम। व्यविद्याख्यः বিষ্ণুস্ত্রম্পিলেটি ময়ং বিবছৰ্ ।

ধ্যাৰতি চাপি যত্যে। নিষ্ঠান্থটিভা:
সংক্ৰিনং প্ৰমমাশ্মবিমুক্তিকাৰা: ॥
ননতে দেবুৰূপাৰ যজ্ঞৰূপাৰ তে নম:।
প্ৰত্ৰহ্মসক্ষপাৰ চিস্তামানাৰ যোগিভি: ॥
উপদংহৰ তেজো যৎ তেজ্ঞ্স: সংহতিত্তব।
স্টেক্বিতাতার বিভো স্টো চাহং সমুদ্যত: ॥
নাক্তের উবাচ।

ইত্যেবং স স্ততো ভাস্থান ব্রহ্মণা সর্গকর্ত্ণা।
উপসংস্তবাংতেজঃ পরং স্বর্মধাররৎ ॥
চকার চ ভতঃ সৃষ্টিং জগতঃ পদ্মস্তবঃ।
তথা তেরু মহাভাগঃ পূর্বকরান্তরের বৈ ॥
দেবাস্থরাদীন মর্ত্যাংশ্চ প্যাদীন বৃক্ষবীরুধঃ।
সমর্জ পূর্ববিদ্রামা নরকাংশ্চ মহামুনে ॥
ইতি মার্কতেরে মহাপুবাণে আদিতান্তবো
নাম অঃধিকশ্তত্বোহধ্যারঃ॥

চতুরধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ। স্ষ্ট্ৰ জগদিদং ব্ৰহ্মা প্ৰবিভাগমথাকরে। । वर्गाञ्चमम्प्राफिदीशानाः भूकवन्यथा ॥ দেবদৈত্যোরগাদীনাং ক্লপন্থানানি পূর্ব্বৎ। ব্রহ্মণস্তনয়ো যোহভূমরীচিরিভি বিশ্রন্তঃ। কগ্ৰপত্ত পুত্ৰে। ২ ভূৎ কাশ্ৰপো নাম নামত: ॥ দক্ষস্ত ভনয়া ব্ৰহ্মন্ তহ্স ভাৰ্য্যাল্সমোদশ। वहवञ्जरञ्चाभागम् (प्रवटेष्ट्या) प्रवापयः ॥ व्यक्तिकक्षंत्रयामान (प्रवाः खिज्यत्मधान्। रेन जान् नि जिक्त स्टाधान् मान वासूक विक्रमान গরুড়ারুণৌ চ বিনতা যক্ষরকাংসি বৈ থগা। কজঃ স্থাব নাগাংশ্চ গন্ধৰ্কান্ স্থুবে মুনিঃ॥ रक्रांशाया **क**ब्छिरत कुना। विष्ठायानाश्रासामा ঐরাবভাদীন্ মাতজানিরা চ স্বযুবে ছিজ।। তাত্রাচ স্বৃবে খেনীপ্রমুখাঃ কল্পকা বিজ। যাসাং প্রস্তাঃ থগমাঃ প্রেনভাসভকালরঃ ॥ ইলায়া: পাদপা জাতা: প্রধায়া: পততাং গণা: অদিত্যাং ধা সমুৎপন্না কশুপশুতি সম্ভতি:। ज्ञाम्ह भूखामोहिरे**षः भोजरमाहिषिकामि**ङिः ব্যাপ্তমেতজ্জগৎ স্ত্যা তেষাং তাদাঞ্চ ৰৈ মূৰ্টে ুতেষাং কল্পণপ্রাণাং প্রধানা দেবতাগণাঃ।
সাবিকা রাজসাক্ষেতে তামসাক্ষ মুনে গণাঃ॥
দেবান্ যক্সভুজক্ষকে তথা জিত্বনেখরান্।
ত্রনা ত্রন্ধবিদাং প্রেষ্ঠঃ পরমেঞ্জী প্রজাপতিঃ॥
ভানবাধন্ত সহিতাঃ সপত্তা দৈত্যদানবাঃ।
রাক্ষাক্ষ তথা যুদ্ধং তেষামানীং স্থাকণম্॥
দিবাং বর্ষসহস্রদ্ধ পরাজীয়ন্ত দেবতাঃ।
জ্বিনক্ষাভ্রন্ বিপ্র বলিনো দৈতাদানবাঃ॥
ভতো নিরাক্বতান্ পূজান্ দৈতেইয়ন্দানবৈন্তরা।
অত্তা নিরাক্বতান্ পূজান্ দৈতেইয়ন্দানবৈন্তরা।
আজির্যক্ষভাগাংক গুচা সম্পীজিতা ভ্রম্।
আরাধনায় সবিতুঃ পরং যত্তং প্রচক্রমে॥
ক্রাঞা নিরতাহারা পরং নির্ম্মান্ত্রা।
ভূটার তেজসাং রাশিং গগনত্তং দিবাকরম্॥

### অদিতিক্বাচ।

নমস্তভ্যং পরাং কৃক্ষাং সৌবণীং বিজতে ততুম্। ধাম ধামবত।মীশ ধায়।মাধার শাখত ॥ জগতামুপকারার তথাপস্তব গোপতে। আদিদানভা যজাপং তীত্রং তকৈর নমাম্যহম্॥ গ্রহীতুমটমাদেন কালেনেন্ময়ং রসম্। বিক্রন্তর যজ্ঞাপমতিভীবং নভাস্মি তং ॥ তনেব মুঞ্জ: সর্বাং রসং বৈ বর্ষণায় যৎ। রপমাপা**ায়কং ভাস্বংস্ত সৈ মেঘায় তে নমঃ**॥ वाय् १९वर्गविनिष्यन्नगर्भवरकोषधीशगम् । পাকায় তব যক্ৰপং ভাস্করং তং নমাম্যহম্ ॥ <sup>য</sup> চে রূপং ভবাতীব হিমোৎ দর্গাদিশীত লম্। তংকালশস্তপেশিয়ে তরণে তহ্ত তে নমঃ॥ নাতিভীব্ৰঞ্ঘজ্ৰপং নাতিশীতঞ্চ ষ্ৎ ভব। <sup>ব্ৰস্তু</sup> তেওঁ বিষয়ে কৈ কেব নুমোনমঃ॥ অপ্যেরনমশেষাণাং দেবানাঞ্তথাপরম্। পিতৃণ**ঞ্চনমন্তকৈ শন্তানাং** পাকহেতবে ॥ यक्त भर की वनादेशकर बो क्यां मम् टांचाकम्। <sup>পীয়</sup>তে দেবপিভৃভি**স্ত**ক্ষৈ সোমাশ্বনে নম:॥ আ ভাাং যদকরপাভাাং রূপং বিশ্বময়ং তব। <sup>স্মেত্ৰ</sup> গুটাৰা আছিল । বিষ্ণু কৰা বিষ্ণু লাভাৰ । <sup>ব্জ্রপম্গ্রকু: সামাটেমকোন তপতে ভব।</sup> বিখনেতৎ ত্রন্নীসংজ্ঞং নমন্ত**ৈ**ম বিভাবসো ॥ <sup>বং</sup> তু ভত্মাৎ পরং রূপমোমিক্যুক্তাভিশব্দিতম্। ष्यद्रगानस्यमनाः नयस्य नमापारन ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

এবং সা নিরতা দেবী চক্রে জ্যোক্রস্কনিশ্ম।
নিরাহারা বিবস্তুমারিরাধরিষুর্ন দ
ততঃ কালেন মহতা ভগবাংস্তপনোহস্বরে।
প্রত্যক্ষতামগাদক্তা দাক্ষারণা হিজোভ্রম॥
সা দদর্শ মহাকৃটং তেজসোম্বরদংশ্রিতম্।
ভূমৌ চ সংগ্রিতং ভাসজ্জালামালাভিত্র্দ্শম্॥
তং দৃট্টা সা কলা দেবী সাধ্বসং পরমং গতা।
স্বগাদ মে প্রসীদেতি ন ছাং পশ্রামি গোপতে!
যথা দৃষ্টবতী পূর্বমন্থরস্থং স্তর্ক্শম্।
নিরাহারা বিবস্তরং ভপত্তং ভদনন্তরম্॥
সভ্বতিং তেজসাং ভ্রদিহ পশ্রামি ভূতনে।
প্রাদং কৃক পশ্রেমং যক্রপং তে দিবাকর।
ভক্রাহ্বস্প্র বিভো ভক্তাহং পাহি মে স্থান।

**হং ধাতা বিস্ফাসি বিশ্বমেড**ৎ ৎং পাগি ছিতিকরণায় সম্প্রবৃত্ত:। षगारक नगमिथनः क्षेत्रां छ छत्तः অতোহন্তা ন হি গতিরতি সর্বলোকে॥ খং একা হরিরজসংক্রিডভুনিজে। বিত্তেশঃ পিড়পতিরমুপতিঃ সমীরঃ : সোমোহগির্গগনমহীধরোহ ধিবরেব কিং স্তব্যং তব সকলাত্মরূপ ধায়:॥ যজেশ থামসুদিনমাত্মকর্মসকাঃ खवरका विविभगदेनर्षिका यक्षेत्रि। ধ্যায়স্তো বিনিম্নতচেতদে৷ ভবস্তং যোগস্থাঃ পরমপদং প্রথান্তি বোগমূর্ত্য।।। ভপদি পচদি বিখং পাৰ্দি ভশীকয়োবি: व्धक हे यति भयुरे श्रेक्त (मयुष्ण पूर्ण देखें;। ক্জসি পুনরপি 🕏 ভাবনাস্চ্যতাস্থ প্রণমিতস্বমর্ত্য: পাপ**কৃত্তিত্রসম্য:** ॥ ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে দিবাকরভাতিনমি চতুরধিকশতভবেশইধ্যারঃ॥

## পঞ্চাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:---

মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

ততঃ খতেজসন্তন্মানাবিভূতো বিভাৰস্কঃ। অদৃখত তদাদিত্যস্তপ্ততাঝোপমঃ প্ৰাকু: ১ অণ তাং প্রণতাং দেবীং প্রক্ত সন্দর্শনাল্নে।
প্রোহ ভাগান্ বুগুজেইং বরং মত্তো যমিজ্ব নি ।
প্রণতা শিরসা সা চ জাইপীড়িতমেদিনী।
প্রভাবাচ বিবস্তং বরদং সমুপস্থিতম্ ॥
দেব প্রসীদ প্রাধাং স্তং জেভ্বনং মম।
যজভাগাশ্চ দৈতি গ্রশ্চ দানবৈশ্চ বলাধিকৈঃ॥
তর্মিজিপ্রসাদং অং ক্রম মম গোগতে।
অংশেন তেবাং ভাতৃতং গল্পা নাশ্য তিরিপ্র্॥
যথা মে তনরা ভূমো যজভাগভূলঃ প্রভো।
ভবেষুর্ধিপাশৈচ্ব হৈলোকাক্ত দিবাকর॥
তথাক্রম্পা প্রোণাং স্থ্পান্না রবে মম।
ক্র প্রণালান্তিহর স্থিতিক্তা অম্চাতে॥
মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ততন্তামাহ তগবান্ ভাস্করো বারিতস্বরঃ।
প্রণতামদিতিং বিপ্র প্রসাদস্ম্থে। বিভূ: ॥
সহপ্রাংশেন তে গর্ভে সন্ত্রাহমশেষতঃ।
সংপ্রশক্তনদিতে নাশ্রাম্যাণ্ড নির্কৃতাঃ ॥
ইত্যুক্তা ভগবান্ ভাস্বানন্তর্জানম্পাগমং।
নির্বা দাপি তপসং সম্প্রাথেশিববাঞ্ছিতা ॥
ততো রশ্মিসহস্তন্ত গৌষ্মাথো রবেং করঃ।
বিপ্রাবতারং সঞ্চক্তে দেবমাত্রথেদিরে ॥
কুচ্ছে চাল্লায়পাদীনি সাচ চক্রে সমাহিতা।
শুচিনী ধারমামান দিবাং গর্ভমিতি দিজঃ ॥
ততন্তাং কশুপঃ প্রাহ কিকিৎকোপপ্রতাক্ষরম্।
কিং মারম্বি গর্ভাগুমেতং পশুনি কোণন।
নাচ তং প্রাহ গর্ভাগুমেতং পশুনি কোণন।
ন মারিতং বিপক্ষাণাং মৃত্যবে তত্ত্বিষ্যতি॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।
ইত্যুক্ত্বা তং তদা গর্ভম্পসমর্জ স্থরাবনিঃ।
আআল্লামানং তেলোভিঃ পত্যুর্কচনকোপিতা॥
তং দৃষ্ট্বা কশুপো গর্জমুলাভাররবর্চসম্।
তুটাব প্রণতো ভূতা ঋগ্ভিরাল্যাভিরালবাৎ॥
সংত্রুমানঃ স তদা গর্ভাণে প্রকটোইভবৎ।
গল্পত্রস্বর্ণভিজ্ঞেলা ব্যাপ্তালিল্পুথঃ 
ভূত্যার্থভিজ্ঞেলা ব্যাপ্তালিল্পুথঃ 
ভূত্যার্থভিজ্ঞেলা ব্যাপ্তালিল্পুথঃ 
ভূত্যার্থভিজ্ঞালভাষ্য কশুপং মূনিসভ্মম্।
সতোর্যমেঘগন্তীরবাভবাচাশরীরিণী॥
মারিতঃ তে বতঃ প্রোজ্নেভদণ্ডং ত্রা মূনে।
তুল্মান্থন স্কত্তেহ্যং মার্ভাগ্যা ভবিব্যতি॥
তুর্যাধিকারঞ্জিভ্জ্গভ্যেষ করিবাভি।
ভ্নিষ্ভাস্থ্রাংশ্রারং ব্যুভ্গগভ্যান্নীন্॥

(एवा निन्धािक वटा श्राम्थ मंस्थाशस्त्र। প্রহর্মভূপং ষাতা দানবাশ্চ ছভৌজন: # ততো যুদ্ধার দৈতেয়। নাজুহাব শতক্রতুঃ। न इ ८ पटेवर्ष्या मा बूक्ता मानवः मह नम खाद्यः ॥ (७४।: युक्तमञ्हाल दः (नवामामञ्चेदः नइ। -भक्षाक्रमी शिवनमी श्रः ममख्यू वर्गा खब्म् । তিবিন্যুদ্ধে ভগবতামাইতেওন নিরীক্ষিতাঃ 🛊 তেজ্বা দহমানাজে ভশীভূতা মহাস্থাঃ ॥ **७७: श्रद्धभञ्जाः श्राधाः मर्व्य मिर्नोकमः।** তুষুবুত্তেজ দাং যোনিং মার্ত ওমদিতিং ভ**থ**। ॥ चापिकोताः खर्गा व्याखा यक्त छात्राः म्ह भूर्यदः । ভগবানপি মার্চণ্ড: স্বাধিকারমধাকমােৎ ॥ কদম্বপুষ্পবস্তাদানেধশ্চোর্দ্ধর রশ্মিভি:। বৃতাগিপিওসদৃশো দধ্যে নাতিক্ৰু বহুপু:॥ ইতি মার্কভেমে মহাপুরাণে মার্তভোংপত্তিনাম পঞ্চাধিকশতভমোহধাায়:।

## ষড়ধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

-- 010---

মার্কতেম উবাচ।

অপ তদৈ দদে কঞাং সংজ্ঞাং নাম বিবশতে।
প্রান্য প্রণতো ভূষা বিশ্বকর্মা প্রজাপতিঃ ॥
বৈবস্বতপ্ত সভ্তো মন্ত্তভাং বিবস্তঃ।
পূর্বমেব তথাপ্যাতং তৎক্ষরপং বিশেষতঃ ॥
আীণাপত্যান্তসৌ তভাং জনমামান গোপতিঃ।
ঘৌ পুলৌ স্মহাভাগে কহাক যম্নাং মুনে।
মহুকৈবিস্তো ভ্রেটঃ প্রাক্ষেবঃ প্রকাপতিঃ।
ততো যমো যমী চৈব যমনো সম্ভ্বতঃ ॥
যৎ তেজাহভাধিকং তভ মার্তপ্ত বিবস্তঃ।
তোগ তিতাপরামান জীন্ লোকান্সচরাচরান্।
গোলাকারস্ক তং দৃষ্ট্য সংজ্ঞা রূপং বিবস্তঃ।
অসহন্তী মহৎ তেজঃ সভ্রোঃ প্রেক্ষ্য সাত্রীৎ
সংজ্ঞাবাচ।

অহং ৰাজানি ভত্তং তে বনেব ভবনং পিজু:। নিৰ্ব্বিকারং ঘরাপাত্র ভেন্ধং মছোননাছুভে। ইমৌ চ বালকৌ মহুং কন্তা চ বরষ্ণিনী। সম্ভাবেট্য নৈব চাধ্যেম্মিদং ভগ্ৰতে দ্বা।

ছায়োবাচ। আ কেশগ্ৰহণাক্ষেবি আ শাণালৈৰ কৰ্ছিচিৎ । আধ্যান্তামি মতং ভূতাং গম্যতাং যত বাহ্ছিতম্ ॥ ইত্যক্ত। চহাররা সংক্রা জগাম পিত্যন্দিরম্। ভত্ৰাবদৎ পিতৃৰ্বেছে ৰঞ্চিৎ কালং ওভেক্ষণা ম ভর্: সমীপং বাহীতি পিরোক্তা সা পুন: পুন: : অগত্ৰড়বা ভূষা কুরন্ বিপ্রোভরাংভত:।। তত্ত তেপে তপঃ সাধ্বী নিরাহার। মহামুনে ॥ পিতৃ: সমীপং বাতারা: সংজ্ঞারা বাক্যতৎপরা। ত্ত্রপধারিণী চহায়া ভাকরং সমুপ হিতা। তভাঞ্ভগবান্ স্থাঃ সংজ্ঞায়ামিতি চিত্তয়ন্। তবৈধৰ জনমামান ছো হুতো কন্সকাং তথা।। পূর্বজন্ত মনোম্বল্যঃ সাব্যনিক্তেন সোহতবং। यस्ताः क्षथमः चातः भूक्ताविकन्दम ॥ विजीत्त्रा त्यार्डवकांचः म श्राद्यार्ड्डक्ट्रेनम्हतः। কক্সাভূৎ তপতী ষা তাং বত্রে সংবরণো নূপ:॥ সংজ্ঞা তু পার্থিবী তেষাম। আঞানাং যথাকরোং। স্বেহার পূর্বজাতানাং তথা ক্বতবতী সতী। মমুন্তৎ কান্তবাংক্তকা যমশ্চাকা ন চক্ষমে। বহুশো যাচ্যমানস্ত পিতৃঃ পদ্মা স্থহঃধিতঃ ॥ म रेव काशांक वानांगक ভावितार्थं छ देव वलाए পদা मञ्ज्ञक्त्रामान क्वांग्रानः ख्वाः यत्मा मूत्न । তত: শশাপ চ ষমং ছায়া সামৰ্ষিণী ভূশম্॥

ছায়ে।ৰাচ।

পদা তৰ্জ্বদে ষশ্বাং পিতৃভাৰ্য্যাং গ্ৰীষ্ণীম্। ভশ্বাং তবৈৰ চৰ্নণঃ পজিব্যক্তি ন সংশয়ঃ ॥ যমস্ত্ৰ তেন শাপেন ভূশং পীড়িতমানসঃ। মহ্না সহ ধৰ্মাত্মা সৰ্কং পিজে স্তবেদয়ৎ॥ ৰম্ম উব্যাচ।

বেহেন ত্ল্যুম্মান্ত্ৰ মাতা দেব ন বৰ্ততে।
বিস্তা জ্যারসোহপ্যমান্তনীয়াংসৌ বৃত্বতি।
ততাং ময়োলাতঃ পালো ন তু দেহে নিপাতিতঃ
বাল্যায়া যদি বা মোহাৎ ভত্তবান্ ক্তমইতি।
শংগ্রাহহং তাত কোপেন জন্তা তনয়ো যতঃ।
ততো ন মংতে জনমীমিমাং বৈ তপতাং বর।
বিশুণেষ্পি পুরেষ্ ন মাতা বিশুণা পিতঃ।
পাদত্তে পততাং পুর কথ্যেতৎ প্রক্ষাতি।
তব প্রসাদাচরপো ন পতেত্তগ্বান্যথা।
মাতৃশাপাদ্রং মেহ্ল্য তথা চিত্তর গোপতে।

রবিক্বাচ । অসংশর্মিদং পুদ্র ভবিষ্যভাত কারণম্। বেন ভাষাবিশ্ব জোধো ধর্মজ্ঞাং সভাবাদিনম্। সর্কেবামের শাপানাং প্রতিবাতো হি বিদ্যুতে।
ন তু মাঝাভিশতানাং কচিজ্ঞাপনিবর্ত্তনম্ ।
ন শকামেতরিখা তু কর্ত্তং মাতৃর্বচন্তব।
কিঞ্জিং তব বিধালামি প্রকেহানত্ত্বং ॥
কুমরে। মাংসমানার প্রয়াক্তব্বি মহীতলম্।
কুতং তলা বচঃ সত্যং বুক আতো ভবিবাসি॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
আদিতাত্ত্রীকারাং কিমর্থ তনরের বৈ।
তুলে, অপাধিক: স্নের একত্র ক্রিরতে ত্রা॥
ন্নং নৈবাং ত্বং আননী সংক্রা কাপি ত্নাগতা।
বিগুণেত্বপাণত্যের কর্থং মাতা শণেৎ স্তুত্ম্॥
সা তৎ পরিহরতী চ নাচচকে বিব্যতঃ।
স চাত্মানং সমাধার যুক্তত্বসপশ্রত॥
তং শপুমুদাতং দৃষ্ঠা ক্রাসংক্রা দিবস্পতিম্।
ভবেন কম্পতী ব্রহ্মন্ অথাবৃত্তং ক্রবেদয়ৎ॥
বিব্যাংস্ত ততঃ কুকঃ শ্রুতা শভরমভ্যগাৎ।
স চাপি তং বথাস্তায়মর্করিতা দিবংকরম্॥
নির্দ্ধুকামং বেশ্বেণ সাক্রামাস স্ক্রতঃ॥

বিশ্বকর্ষোবাচ।

তবাভিতেজনা বাধ্যমিদং রূপং স্কৃত্যুসহন্।
অসহস্কী ততঃ সংজ্ঞা বনে চরতি বৈ তপঃ॥
দ্রুক্ষ্যতে তাং ভবানদ্য শভার্য্যাং গুভচঃরিণীন্।
রূপার্থং ভবতোহরণ্যে চরস্কীং স্থুমহৎ তপঃ॥
শৃতং মে ব্রন্ধণো বাকাং যদি তে দেব রোচতে।
রূপং নিবর্ত্রাম্যেতৎ তব কাস্তং দিবস্পতে॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

যতো হি ভাষতো লগং প্রাগাসীৎ পরিমন্তগম্
ততন্তথেতি তং প্রাহ ছারারং ভগবান্ রবিঃ॥
বিখকর্মা অফুজাতঃ শাক্ষীণে বিবল্ডঃ।
ভ্রমিমারোপ্য তৎ তেজঃ শাক্ষাবোপচক্রমে॥
ভ্রমতাশেষলগভাং নাভিত্তেন ভাষতা।
সম্তাভিবনোপেভা সাক্রমাহ মহী নভঃ॥
গগনকাবিলং ক্রলন্ সচক্রপ্রহতারকম্।
ভবোগ গভং মহাভাগ বত্বাক্রিথমাক্লম্॥
বিক্রিসেলিলাঃ সর্কে বভূব্ত তথাকরঃ।
ব্যভিদ্যক মহাশৈলাঃ শীর্ণাছনিব্দনাঃ॥
ধ্রবাধারাণ্যশেষাবি থিঠ্যানি মুনিসভ্য।
ক্রিজানিব্দানি ভবো ভবা; সম্ভ্রশঃ ৪
বেগ্রমণস্ঞাভবার্কিবাঃ সমস্ভতঃ।
ব্যশির্ম মহামেষা ব্যেররাববিচারিণঃ॥

ভাষত মণবিভাস্তঃ ভূম্যাকাশরসাত্রম্। জগাদকুলমতার্থং তদাসীসুনিসন্তম ॥ ত্রৈলোক্যে সকলে বিপ্র ভ্রমমাণে সুরর্ষ ঃ:। দেবাশ্চ ব্ৰহ্মণা সাহিং ভ।স্থমভিতৃষ্ট্ৰু: **॥** আদিদেবোহদি দেবানাং জ্ঞাত্ত্যেত্ত স্তর্পত:। স্বৰ্গন্থিত্যস্তকালেৰু তিধা ভেদেন ভিঠসি॥ স্বত্তি তেহন্ত জগনাথ ক্লর্মবর্যাহিমাকর। ज्यम भाष्टिः (माकानाः (प्रवर्णत निराकत् ॥ ইন্দ্রশ্চাগত্য তং দেবং লিথ্যমানং যথাস্তবৎ। জর দেব জগদ। পিন্ জয় ংশেষজগৎপতে॥ ঋবৰণ্ট ভতঃ সপ্ত বশিষ্ঠাত্তিপ্রোগম:। जूहे वृद्धिरि**रेशः एकारेजः चिक्यक**ी किवामिनः ॥ বেদোকাভিরথাগ্রাভির। নিথিল্যাক্ত ভুষ্টু বৃ: । ভাসতং ঋগ্ভিরাদ্যাভিলিখ্যমানং মুদা মৃতা:॥ षः नाथ (माकिनाः (माक्ति (धाप्रवः धानिनाः शतः ছং গতিঃ দৰ্কভূতানাং কৰ্মকাণ্ডেহপি বৰ্ত্তাস্॥ শং প্রজিভাহিস্ত দেবেশ শং নোহস্ত জগতাং পতে শং নোহস্ত দ্বিপদে নিতাং শং নশ্চান্ত চতুষ্পাদে। ভতে। বিদ্যাধরগণা যক্ষরাক্ষস্পরগাঃ। কুতাঞ্চলিপুটা: দর্বে শিবোভি: প্রণতা রবিম্॥ উচুবেবংবিধা বাচো মনঃশ্রোজস্থাবহা:। **সহং ভবতু তে তেজো ভূত**ানাং তভূভাবন ॥ कट्टा ट्राइइट्रेम्टर नात्रमञ्जूकछथा। উপগায়িতুমার কা গান্ধ ক্র্শলার বিম্॥ বজ্জমধ্যমগান্ধারপ্রামতারবিশারদা:। মৃচ্ছনাভিশ্চ তালৈশ্চ সপ্রয়েটেগঃ স্থপ্রদম্॥ বিশাচী চ ঘুভাচী চ উর্কাশ্রথ তিলোত্তনা। टमनका महस्रका ह ब्रह्णांका व्यवस्थाः ॥ ননুতুর্জগতামীশে বিধ্যমানে বিভাবসৌ ! হাবভাৰবিলাদাচান্ কুৰ্কস্তোহভিনয়ান্বহুন্॥ व्यावामुख ७७खव (वन् वीनानिमर्भजाः । পণবা: शुक्रवाटेन्टव मृत्रश्चाः পটशानकाः। দেবছন্ত্র: শঙ্খা: শতশোহথ সহস্রশ:॥ গারন্তিলৈচৰ গন্ধবৈর্ণ ত্যন্তিশ্চাম্পরোগলৈ:। जूर्यावानिकारचारेवक गर्काः (कोगांश्लोकुछम् ॥ ততঃ কৃতাঞ্চলিপুটা ভক্তিনমাস্মৃৰ্ক্য:। निश्रमानः मह्ञाः अः व्यापमः मर्कापविषाः ॥ ততঃ কোলাছলে তশ্মিন সর্বাদেবসমাগমে। **टिक्नः माजनः हट्या विश्वक्या भटेनः भटेनः ॥** हेकि श्रियनगर्भकानरहरका-

হ্রকন্দাসন্থিকুণংশুভঞ্জ।
ভস্পরিলিধনং নিশম্য ভানোত্র জাতি দিবাক্রলোক্মায়ুবোহস্তে॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে ভাক্তকুলিধনে
বড্ধিকশতত্বোহধ্যারঃ॥

সপ্তাধিকশততমোহধ্যায়ঃ <sub>দ</sub>

--:\*:--

মাৰ্কণ্ডেম উবার।

লিগ্যমানে ততো ভানে) বি**খক্ষা প্রজাপতি:।** উদ্ভূতপুলক: স্তোত্রমিদং চক্রে বিবস্ত: ॥

> বিবন্ধতে প্রণতহিতামুকম্পিনে মহাত্রনে সমক্ষবসপ্তাসগ্রের। স্থতেজ্পে ক্মলকুলাব্বোধিনে নমস্তমঃপটলপটাবপাটিনে ॥ পাবনাতিশয়পুণাৰুৰ্মণে देनककामविषयः श्रमाब्रिटन । ভাররানলমগ্রশারিনে স্কলোকহিতকারিণে নমঃ ॥ অজায় লোক চয়কারণায়ে ভূতামনে গোপতমে বুধায়। নমো মহাকারুণিকোত্রমায় স্গ্যায় চকু:প্রভব।লয়ায় 🗈 বিৰসতে জ্ঞানভূতা**ত্তরাত্মনে অ**গৎপ্রতিষ্ঠায় জগিদ্ধ**ৈত্**যিণে। স্বয়ন্তুবে লোকসমস্তচকুষে সুবোভমারাতিমতেজ**দে নম:** k ক্ষণমূদয়াচলমোলিমালঃ স্থাগণসহিতো হিতো জগত:। ত্বমুক্তমযুধসহস্ৰবপু-ৰ্জগতি বিভাগি তমাংগি হুদন্॥ ভৰতিমিরাস্বপান্মদাৎ ভৰতি বিলোহিতবিগ্ৰহাথ। মিহির বিভাগি যতঃ স্কুতরাং ' ত্রিভূবনভাবনভানিকরৈঃ 🕴 🚬 রথম্ধিকৃত্ সমাব্যবং চাক বিকম্পিতমুক্কচিরম্! সভতম্থিনহু রৈভূপবন্ চর্সি লগজিভার বিভত্ত ।

অমৃভন্থধাংকরদেন সমং
বিব্ধ পিতৃনপি তপ্রদেন।
অবিগণস্বন ডেন তব
প্রাণিপত্য লিথামি লগজিভার॥
তকসনবর্ণহয় প্রথিতং
তব পদপাংকপবিত্তলম্।
নতজনবৎসল মাং প্রণতং
তিত্বনপাবন পাহি রবে॥
ইতি সকলজগৎপ্রস্তিভূতং
তিত্বনপাবনধামভূতম্।
রবিমধিশজগৎপ্রদীপভূতং
দেবং প্রণতোহ্মি বিধক্ষাণম্॥

ইতি মাৰ্কণ্ডে**লে মহাপু**রাণে সূর্য্যন্তবনং নাম সপ্তাধিকশতভমোহধ্যায়ঃ॥

অফাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:-

মার্কণ্ডেম উবাচ। এবং সূর্যান্তবং কুর্বন্ বিশ্বকর্ষ্য দিবস্পতে:। ভেল্স: যোড়শং ভাগং মঙলক্ষ্যাবর্**।**॥ गां चिरे चर उक्तरमा खाँरे गर्म मिडः भक्ष किरुव । দতীব কাস্তিমচ্চাক ভানোরাদীৎ তদা বপু:॥ গাতিত্ঞান্ত যথ তেজ্ঞেন চক্রং বিনিশ্বিতম্। े(रक्षाः भूनकः भक्तऋ निविका धनम्ऋ ह। ি: প্রেতপতে: শক্তির্দেবিদেনাপতেন্তথা ॥ मत्य्य वादेश्वय (प्रयानाभाष्ट्रधानि म विश्वकृ ९। <sup>iকার</sup> তে**জদা ভানোর্ভান্তর**াণ্যরিশান্তরে॥ ংতি শাতিততেজাঃ স ভতভে নাতিতেলসা। াপুর্দিধার মার্ক্তওঃ দ্ব্রোবয়বশোভনম্॥ া দদৰ্শ সনাধিস্থ: স্বাং ভার্যাং বড়বাকুতিম্। <sup>মধ্ব</sup>াং স্কভ্**ভানাং ভপ্সা নিয়মেন চ**॥ <sup>টতরাংশ</sup>চ কুরুন্ গন্ধ। ভূতাঝো ভাকুরাগমৎ। া চ দৃষ্টা তমায়াস্তং পরপুংদো বিশক্ষা॥ <sup>াগ।ম</sup> সন্মূ**ং ভক্ত পৃষ্ঠরক্ষণভ**ৎপরা। <sup>5 तक</sup> नामिकारबाबः खरबाख्य मरमखरवाः ॥ ড়বাধা**ক তৎ তেজো নাসিকাভ্যাং** বিবস্বতঃ। <sup>मृद्</sup>वो छख सम्रू**शन्नाविध्यतो क्थिकार वट**न्नो ॥ ोनजानत्वी छनमावसवकुर्विनर्गदले। ार्ठ ७७ **२ कारक्का**रबक्का १४३ म हि ॥

রেতসোহতে চ রেবতঃ থড়েনী ধরী ভত্তরধৃক। অখারঢ়: সমূত তো বাণতুণসম্বিত: ॥ ততঃ স্ক্রপম্মলং দশ্রামানং ভাতুমান্। ज्ञ गाँखः नमात्नाका ना क्रमः मूनमानतन ॥ चत्र शर्था तिनी (क्षेत्राः न निनात्र निकान प्रम्। সংজ্ঞাং ভার্য্যাং প্রীতিমতীং ভাস্করে। বারিতস্করঃ॥ ততঃ পূৰ্বস্থতো যোহস্তঃ: দোহভূবৈবসভো মসু: বিতীয় চ ষমঃ শাপাক্ষর্সৃষ্টির মুগ্রহাৎ॥ যমস্ত তেন শাপেন ভূশং পীজিভ্যানস:। ধর্মোইভিরোচতে য**শাদ্মরাজন্ততঃ শ্বতঃ**॥ ক্লময়ে। মাংসমান্যে পান্তত্তে মহীতলম্। পতিব্যস্তীতি শাপান্তং তম্ম চক্রে পিতা স্বয়ম্॥ ধর্মদৃষ্টির্যক্ত কানে। সমে। মিত্রে তথহছিতে। ততো নিয়োগে তং বাম্যে চকার তিমিরাপহ: ॥ ভবৈম দদে পিভা বিপ্র ভগবান গোকপালতাম্। পিত্ৰামাধিপত্যক পরিভুষ্টো দিবকের: ॥ यम्गोक नभीः ठटक किनिकां खंत्रवाहिनीम्। অখিনৌ দেবভিষকৌ কতৌ পিতা মহাত্মনা॥ গুহুকাবিপভিত্তে চ রেবস্তো বিনিযোক্তি:। এবমপ্যাহ চ ততো ভগবাঁলোকভাবিত:। ত্মপ্যশেষলোকভ পুজো বৎস ভবিষাসি ॥ अत्रगानिमशानावदेव**तिनद्या छ ।** খাং স্মরিষ্যন্তি যে মর্ত্যা মোক্যন্তে তে মহাপদঃ॥ क्या वृक्तिः स्थः बाकामात्वागाः की खिमून्निम्। নরাণাং পরিভৃষ্ট স্থং পৃদিত: সম্প্রদান্ত সি ॥ ছাগাসংজ্ঞান্ত ভাগি সাবর্ণ: স্থমহাষশা:। ভাব্যঃ সোহন।গতে কালে মহুঃ সাবৰ্ণকোহউমঃ ॥ মেরুপৃষ্ঠে তপে। যোরমন্যাপি চরতে প্রভু:। লাতা শরৈশ্চর**ন্তপ্ত গ্রহো**হ**ভূজাসনাদ্রে:**॥ যবীয়দী তু যা কন্তালিতাভাভৃ**দ্বিলাভন**। অভবং সা সরিচেছ ঠা यমুনা লোকপাবনী॥ যন্ত্র জে। ছো নহাভাগ: দর্গো হল্তেই সাম্প্রস্। বিস্তরং তম্ভ বক্ষামি মনো**র্কেশ্তম্ভ হ**। हेनः (य। स्वत्र (प्रवासाः मृत्रावा भट्ठेष्ठ वा। বিবস্বতন্ত্রানাং রবেমাহান্ত্রনেন চ ॥ আগদঃ প্রাপ্য মুচ্যেত প্রাপ্ত মহাধশঃ। অহোরা**ত্রকৃতং পাপমেডভ্মরতে শ্রুতম্**। মাহাব্যমাদিদেবত মার্ত্তত মহাত্মন: র ইতি মার্কতেমপুরাণে২টাধিকশতভ্যেশিহ্যার: ॥

### ্ নবাধিকশতভ্ৰেষ্ঠ্ধ্যায়ঃ।

----

क्तिहै किक्वाह।

ভগবন্ কণিতঃ সমাগ্ভানোঃ সস্তভিসম্ভবঃ। মাংবাস্থানিদিবেক অরপঞাভিবিত্তরাং॥ ভূরোহণি ভাকতঃ সমাঙ্গাহাক্যং মুনিসভ্য। শ্রোত্মিজ্যোহং তল্ম প্রসরো বকুম্হণি॥

মার্কণ্ডেম উবাচ।

শ্রমতামাদিদেবক্ত মাহাদ্মাং কথয়ামি তে। विवयट्डा यक्तकात शृक्षमोत्राधिट्डा करेनः ॥ দমক্ত<sup>°</sup>পুলো বিধ্যাতো রাজাভূজাকাবর্দ্ধ**ঃ**। স সম্যক্ প্ৰেনং চক্তে পৃথিব্যাঃ পৃথিবীপতিঃ। ধর্মতঃ পাল্যমানস্ক তেন রাষ্ট্রং মহাত্মনা। वर्द्धश्रू निनः विका स्टान ह श्रान ह ॥ হুটপুটমতীবাদীৎ তন্মিন্ রাজস্তশেষতঃ। त्राककः नकनदक्षास्त्राः (भोत्रकानभटना बनः॥ ताशमार्गा न ह नाशिनं ह नात्माखनः **छत्रम्**। ন চাবৃষ্টিভয়ং ভত দমপুতে ৰহীপতে। ॥ त्र ट्रांक ह महाबदेक र्माट मानानि हार्थिनाम्। স্থৰ্শক্ত।বিয়োধেন বুভূজে বিষয়ানপি ॥ তত্তেবং কুর্বভো রাজাং সমাক্ পালয়ত: প্রকা:। সপ্ত বর্ষ্ত্রাণি জগারেকমহর্ণা॥ বিদুর্থন্ত ভনয়া দাকিণাত্যক্ত ভূভ্ত:। ভক্ত পত্নী ৰভূবাৰ মানিনী নাম মানিনী। ক্লাচিৎ ভক্ত সা স্কুলঃ শিরসোহভাঞ্নোল্যতা। পঞ্চতোরাজলোকভ মুমোচাশ্রণি মানিনী ॥ তদশ্ৰিদরো গাতে বদা ভক্ত মহীপতে:। তদা বীক্ষাঞ্বখনাং ভয়েপুচ্ছত মানিনীম্। निः भक्ष मञ्जरभारकाव क्षण्डीः छाः विद्याका देव। किरमञ्जिषि शक्सक् मानिनीः ब्राक्यावर्षनः॥ পৃষ্টা সাভুভ ভজেবে ভজাি প্রাহ্যশবিনী। न किकिसिंजि जोर कृषः शक्यकः ग महीशिकः॥ বহুণ: পূঞ্জন্ত ভুজ্ত: সা সুমধ্যমা। দর্শরামাস প্রশিক্তং কেশভারাস্তরোভ্রবন্ধ এতৎ পঞ্চেতি ভুপাৰ কিমিদং মহ্যুকারণম্। মমাতিমকভাগ্যায়া জহাবাধ মৃণভড়ঃ ॥ न विश्वाह जारं भन्नीर मृगुकार नर्सकृष्ठाम्। (भोदायाक महीभागा (व ख्यागम् नमात्रकाः ॥ ट्रमारकशकः विभागाकि त्राविकवाः न एक ७एक

ক্যাদ্ধিপরিণামাণ্যা বিকারাঃ সর্বাক্ষর ।
অধীতাঃ সকলা বেদা ইটা বক্ষাঃ সহস্রদাঃ।
দতং বিকানাং পূজাশু সমুৎপরা বরাননে ।
ভূকা ভোগান্বরা পূধী সাদ্ধি বে মর্ক্যেরতিছর্লভাঃ।

সমাক্চ পালিতা সাধু যুংকাৰ্যন্তিতন্ম।
মিলৈ: সংক্তিইসিতং বিজ্বতক বনাজনে।
কিমন্তর কৃতঃ ভলে পলিতিভোগ বিভেবি বং।
ভবত কেশা: পলিতা বলয়ঃ সভ নৈ ওতে।
শৈথিল্যমেতু মে কারঃ কৃতকুত্যোক্ষি মানিনি
মুদ্ধি, বদ্দিতং ভলে ভবত্যা পলিতং কম।
চিকিৎসামেষ তভাহং করোমি বনসংশ্রহাং।
বাল্যে বালক্রিরা পূর্বাং তবং কৌমারকে চ্যা
যোবনে চাপি যা যোগ্যা বাদ্ধিকে বনসংশ্রহা।
এবং মৎপূর্ববৈভল্জে কৃতঃ তৎপূর্ববৈভল্চ যথ।
জলতো ন তেহ্শপতিভ কিঞ্ছিৎ পশ্রামি কারণম্
জলং তে মন্থানা ভল্জে নম্ভ্যাম্যকারি মে।
দর্শনং পলিতভাভ মারোদীনিপ্রায়োজনম্॥

মাৰ্কণ্ডেম উবাচ। ততঃ প্রণম্য তং ভূপাঃ পৌরাল্ডের সমীপগাঃ। नामा तथाहृर्यशैभाना महर्य ताकावर्तनम्॥ ন রোদিভব্যস্নয়া তব পত্ন্যা নরাধিপ। রোদিতবামিহাসাভিরথবা সর্বজন্তভি: ॥ षः बनौषि यथा नाथ वनवानाश्रिजः बहः। পত্তি তেন ন: প্রাণা লালিডানাং ছয়া নূপ। সৰ্কো যাক্তামহে ভূপ যদি যাতি ভবান বনম্। ততোহশেষ ক্রিয়াহানি: সর্বপৃথী নিবাসিনাম্। ভবিষ্যতি ন সন্দেহত্বরিনাপ বনাশ্ররে। সাচ ধর্মোপযাতার বলি ভৎ প্রবিষ্চ্যতাম্। সপ্তবর্ষসহস্রাণি ছরেমং পালিতা মহী। তৎসমুখং মহাপুণ্যমালোকর নরাধিপ 🛭 বনে বস্ন্মহারাজ ছং ক্রিষ্যব্ধি যৎ তপঃ। তন্মহীপালনভাভ কলাং নাছত্তি বোড়শীন্। ब्राटकांबाठ।

স্থেব্যাদি ।
স্থাব্যস্থাণি মহোহং পালিতা মহী ।
ইনানীং বনবাসন্য মন্দ্র কালোংরমাপতঃ ।
মনাপত্যানি আভানি লুই। মেহপত্যসন্তাঃ।
মহৈবেৰ মহাহোভিরন্তকো ন সহিব্যতি ।
বন্তেৎ পলিতং মুন্ধি তহিজানীত নাপরাঃ।
দূভভূতবনার্যাত কুল্ডোইজ্যাক্রম্পাণঃ এ

त्नार्शः ब्रांक्षे स्वेरं कृषा (खानाःखाखा) वर्गभनः

ভপত্তপো সমামান্তি ন বাবদ্বমটসনিকাঃ॥ মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

ভতো যিযাক্সং স বনং দৈবজ্ঞানবনীপতিঃ।
পুত্ৰরাজ্যাভিবেকার দিনলগান্তপুচ্ছত ॥
প্রাল্যাভিবেকার দিনলগান্তপুচ্ছত ॥
প্রাল্যাভিবেকার দিনলগান্তপুচ্ছত ॥
প্রাল্যাভিবেকার দিনলগান্তপুচ্ছত ॥
প্রাল্যাভিবেকার দিনলগান্ত দিনং লার্যাভিবেরা ॥
ভিচ্নত জং মহীপালং দৈবজ্ঞা বাষ্পাগলান্য ॥
জানানি ন: প্রান্তিনি প্রাক্তির তে বচো নূপ ॥
ভতোহক্রনগরেভ্যাক ভ্রারাষ্ট্রেভ্য এব চ।
ভতত্ত্বাভি নগরাৎ প্রাচ্যোগাভ্যাগান্য ॥
সম্পত্য মহীপালং জং বিষাক্ষং মুনে বনম্।
প্রকল্পিবিসো ভ্রা প্রোচ্রান্ত্রান্তনাঃ ॥
বাদীদ পাহি নো রাজন্ পালিভাং ত্রা মধা পুরা।
সাদিযাভ্যবিলো লোকস্থারি ভূপ বনাপ্রায়ে ॥
স ক্রম্ব তথা রাজন্য থা নো সীদতে জগং।
যাবজ্জীবামহে বীর সল্প্রকাল্যিমে বয়ম্।
নেচ্নান্ত ভ্রান্ত্রান্ত্রান্তি ॥
বাহ্নান্ত ভ্রান্ত্রান্ত্রান্তি ।
বাহান্তাভ্রান্তির স্বাল্যান্তির দিবলে।
বাহান্তাভ্রান্তির স্বাল্যান্তির বিভাগ ॥
বাহান্তাভ্রান্তির স্বাল্যান্তির বিভাগ ।
বাহান্তাভ্রান্তির বীর সল্প্রকাল্যান্তির বিভোগ ॥

মার্কভেয় উবাচ। हेराज्य देव खेषोरेकां का विदेख: ८ भो त्र भूत: महेत: । ভূপৈভৃত্তারমাতৈজাক প্রোক্ত: প্রোক্ত: পুন: পুন: वनवानविनिर्देशः (नां भनः इत्रष्ठ यना । ক্ষমিষ্যত্যস্তকো নেতি দদাতি চ ভথোত্তরম্॥ ততোহমাত্যাশ্চ ভূত্যাশ্চ পৌরবৃদ্ধান্তথা বিজাঃ সমেতা মন্ত্রগামান্তঃ কিমতা ক্রিয়তামিতি॥ टिवार मञ्जयकार विश्व निम्हद्याञ्चमकायक। অফুরাগবভাং ভত্ত মহীপালেহভিধার্মিকে॥ नमाधानिनदा ज्वा धार्यप्रांगः नमाहिजाः। তপ্দারাধ্য ভাষ্**স্থায়্রক্ত মহীপতে:** ॥ তবৈকনিশ্চরা: কার্য্যে কেচিৎ গেহেবু ভাঙ্গরম্ <sub>।</sub> সম।গর্বোপচার: দৈয়কপহারেরপুজ্যন্॥ ষ্পরে মৌনিনো ভূত্বা ঋগ্জাপেন তথাপরে। यञ्चामथ नामाक टिलोबग्राककिटत त्रविम् ॥ অপরে চ নিরাহারা নদীপুলিনশারিনঃ ৷ তপ্ৰা চকুৰাইভা ভাৰৱারাধনং বিজা: ॥ অগ্নিহোত্তপদ্ধান্দাক্তে স্বৰিস্কান্তহনিশন্। **শেপ্ততাপরে তমুর্ভাক্ষরে স্তন্ত্র**ঃ॥ ইভোবমভিনির্বান্ধং ভাঙ্করারাধনং প্রতি।

তথা তু বততাং তেবাং ভাকরারাধনং প্রতি।
অনামা নাম গদ্ধর্ম উপপ্রেমাদমত্রবী ৭ ॥
বদ্যারাধনমিটং বো ভাকরত হিলাভর:।
তদেতৎ ক্রিরতাং বেন ভালুং প্রীতিমুশৈব্যতি॥
তথাকা কুবিশালাখ্যং বনং সিদ্ধনিষেবিভম্।
কামরূপে মহাদৈলে গ্যাতাং তত্ত্ব বৈ লখু॥
ভিনিরারাধনং ভালোঃ ক্রিরভাং অস্প্রাহিতে:।
সিদ্ধক্রের হিতং তত্ত্ব স্প্রকামানবাশ্যাধ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ইতি তে তহাঃ শ্রুষা গণ্ধা তৎ কাননং হিলা:।

দদ্ভভাগতত্ত্ব পুণ্যমান্তনং শুভম্ ॥

তব্ৰ তে নিয়তাহারা বর্ণা বিপ্রাদমে হিলা।

পুপাপ্লোপহারাটাং পূজাং চকুরতক্তিতাঃ॥

পুপান্তলপনালৈঃশ ধুপগদাদিকৈত্বথা।

ক্রান্তলিই বুর্সন্ বিবস্তং হিলাভয়ঃ॥

বাক্ষণা উচুঃ।

দেবদানব্যক্ষাণাং প্রহাণাং জ্যোতিষামপি। তেজগাভ্যধিকং দেবং ব্ৰজাম শ্রণং রবিম্ ॥ দিবি স্থিতঞ্চ দেবেশং দ্যোত্যন্তং সমন্ততঃ। বস্থানস্থীকঞ্বাপুবস্থং মরীচিভিঃ॥ আ। দিকাং ভাশ্বরং ভাশুং সবিতারং দিবাকরম্। পূষাণমর্যামাণক অর্ডাকুং দীপ্তদীধিভিম্। চতুর্গান্তক।লাগিং ছভোক্সাং প্রলয়াপ্রগন্। যোগী ধরমনস্তঞ্জরক্তং পীতং বিতাষিতম্॥ स्वी गां श्री दिर्गा ति वृष्य करता दिष्य । অক্রং পর্মং গুঞ্ং মোক্ষার্মমূভ্যন্ # ছ टक्न खित्र च करें ते के निर्मा करें कि कार्य के विकास में উनदान्त्रप्रतः यूकः नना स्यत्ताः विनक्तित्।॥ व्यम् उक बाउटेकव পूगाडी दः भूगि विषम्। বিশ্হিতিম্চিত্তাঞ্প্রপ্রাঃ আ প্রভাকরম্ ॥ যো একা যো মহাদেবো বো বিষ্ণু গুলাপতিঃ ব্যুৱাকাশমাপ্ত পৃথিবীলিরিদাগ্রাঃ ॥ श्रहनक्रकेह**क्षां**गा वानव्यं छार खप्योवयम् । वाकावारकेषु ज्राक धर्माधर्मा वेव खर्कः ॥ बाक्षी मारदंबमी देवन दिवसवी देवेन दक छन्। ত্রিধা বদ্য পরপদ্ধ ভাবোর্জান্ প্রামীদত্ এ वता नर्वनस्तानमस्यूष्टः स्तेष श्राप्टाः। न नः अनीमजाः छात्रान् वंशकाः यक विन्तन् । रिताकजायतः त्रभरं अक्षेत्रं अग्रम्भिम्।

ব্ছপ্রকারং চলুবন্ত ভং ভং বিধিমুণালিভা: ॥

ৰিতীয়নৈদ্দৰং সৌম্যং স নো ভাষান্ প্রসীদত্ ॥ ভাভ্যাঞ্চ যস্য রূপাভ্যামিদং বিখং বিনির্বিতম্। জয়ীবোমমরং ভাষান্ স নো দেবঃ প্রসীদত্ ॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

ইথং তথা তলা তলা সমাক্ পুলমতাং তথা।
তুতোৰ ভগবান্ ভাষাংক্তিভিশ্বাটনৰ্বিশ্বাতম ॥
ততঃ স মণ্ডলাইলারকণেন রমপ্রভঃ।
অবতীয়া দদৌ তেভাো হুদ্দো দর্শনং রবি:॥
ততন্তে স্পটরূপং তং স্বিভারমজং জনাঃ।
পুলকোৎকম্পিনো বিপ্রা ভব্জিনমাঃ প্রদেশিরে

নমো নমন্তেহন্ত সহজরশ্মে সর্জন্য হেতৃত্বমশেষকেতৃ:। পাঁতাৎ স্বমীডোাহ্বিলয়জ্ঞধান ধ্যেরক্তথা যোগ্যবিলাং প্রসীদ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ভাসুন্তবে নবা-ধিক্শততমোহধ্যার:।

## দশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--:-

## মার্কণ্ডের উবাচ।

ততঃ প্রসদো ভগবান্ ভাছরাহাখিলং জনম্। বিরজাং ঘদভিপ্রেতং মতঃ প্রাপ্তং বিজ্ঞাদর:॥ তততে প্রাণিভোচ্ র্কিপ্রে বিপ্রাদমে। জনা:। স্বাধ্বম্মনীতাংক্রমবলোক্য পুরঃ স্থিতম্।

প্ৰকা উচু:।

ভগবন্ यनि নো ভক্তা। প্রসন্ধৃতিমিরাণত।
দশবর্ষণত্তা বিশ জীবতাং নৃপ:॥
নিরামরো জিতারাতিঃ অকোষঃ ভির্যোবন:।
দশবর্ষণত্তাণি জীবতাং রাজ্যবর্জন:॥

মাৰ্কভেম উবাচ।

তবেতা জ্বা জনান্ ভাষান্ স্কৰ্নেহিত্ন হাম্বে।
তেহপি লক্ষরা হুটাঃ সমাজগুর্জনেখন ম্
যথায়তক তে তলৈ নক্ষেরে জবেদরন্।
বরং লক্ষ্য সহস্রাংশাঃ সকাশাদ্ধিলং ছিল ॥
তক্ষ্য জল্বে তল্য লাঃপদ্মী মানিনী ছিল।
স চ রাজা চিরং দধ্যো নাহ কিঞ্চিত তং জনম্।
ততঃ বা মানিনী ভূপং হ্রাপ্রিতমানসা।
বিষ্টায়্যা মহীপাল ব্রুষ্থেত্যাহ তংপ্তিম্ন

তথা তরা বুলা ভর্জা মানিক্সাথ সভালিতঃ।
নাই কিঞ্চিন্মইীপালশ্চিন্তাল্পড়মনা বিলঃ 
রূপ পুনঃ প্রাহ ভর্জারং চিহুরানমধোমুখন্।
কুমার হর্ষমক্তোবি পরমাভ্যুল্ডে নুপ ॥
দশবর্ষসহস্রাণি নীক্লাং ভিরবোবনঃ।
ভাবী সমন্ত্রভূতি কিং তথাশি ন স্ত্রান্তর ।
কিন্তু ওৎকারণং ক্রন্থি যাক্তিন্তাক্তরমানসঃ।
পরমাভ্যুল্ডেশি সং সম্প্রাক্তর পৃথিবীপতে ॥

ब्राटकार्गाः ।

কথমভ্যদরো ভক্তে কিং সভাজরসে চ মান্।
প্রাপ্তো হংগসহস্রাপাং কিং সভাজনমিবাতে 

দশবর্ষসহস্রাপি জীবিবাাম্যহমেককঃ।
ন অং তব বিপজে মে কিং ন হংগং ভবিবাতি 
ভত্তের চাতিভক্তের মিলবর্ষে-তথা মৃতে।
ভক্তের হংগমপারং মে ভবিবাতি তু সক্তম্ 
বির্যাদর্গং তপস্তথং কুলৈর্দ্ধমনিসস্ততৈঃ।
তে মরিষ্যস্তহং ভোগী জীবামীতি ন ধিক কথম্॥
সেমমাপদ্রারোহে প্রাপ্তা মাভ্যদরে। মম।
কগং বা মন্তাসে ন অং যব সভাজরসেহদ্য মান্॥

মানিস্থাবাচ। মহারাজ ঘণাথ অং ভথৈবং নাজ সংশয়:। ময়া পৌরুষ্চ দোষোহয়ং শ্রীভাগ নালোকিভল্পব

এবং পতেহত কিং কাৰ্য্যং নরনাথ বিচিন্ত্য ভাষ্। নান্যথা ভাবি ষৎ প্রাহ প্রসলো ভগ্ৰান্রবিঃ॥

রাজোবাচ। ক্রেইন ক্রিন

উপকার: কুতঃ পৌরে: প্রীতা। ভৃতৈ। শ্ব মেন্
কথং ভোক্ষ্যান্যংং ভোগান্ গদ্ধা তেবামনিক্কৃতিম্
সোহমদ। প্রভৃত্যক্তিং গদ্ধা নিরভমানসং।
তপত্তপো নিরহারো ভানোরারাধনোদাভঃ ॥
দশবর্ষনহন্তানি সধাহং দ্বিরবৌননঃ।
তপ্য প্রসাদাদ্দেবস্য দ্বীবিষ্যানি নির্বাহয়ঃ ॥
তথা যদি প্রকাঃ সর্বাঃ ভ্তাত্তিক স্থভাক্ত মে।
প্রাঃ পৌরাঃ প্রগোলাক স্কর্ক বরাননে ॥
দীবস্তোবং প্রসাদং নর করোতি ভগবান্ রবিঃ।
তত্তেহিং ভবিভা রাজ্যে ভক্ষ্যে ভাগাংক্তথা মুদা
ন চেনেবং করোত্যক্তিসম্ভৌ ভজ্ম মানিনি।
তপত্তপ্যে নিরাহারো বাবজ্জীবিভসংক্রয়ঃ ॥

মাৰ্কণ্ডের উবাচ। ইত্যুকা সা ভদা ভেন ভংগভাগের নরাধিপন্। জগান ভেন চ সমং সালি ভংগর্দীধর্দ্॥

স তদারতনং পদা ভার্বারা সহ পার্থিবঃ। कारनात्रात्रायमः हरक कथारानिवरका विक ॥ तिवाहोतकनः मा **४ वधारमो भूषिबो**गिका তেপে ভণক্তবৈবোগ্ৰং শীভবাভাভপক্ষমা ॥ তস্য পুৰুষ্ঠো ভালুং তপ্যত্ত তপো মহৎ। সাঞ্জে সম্বংসক্তে যাতে ভতঃ প্রীতো দিবাকর: ॥ সমস্তত্ত্তাপৌরাদিপুত্তাণাঞ্চ ক্রতে দিল। मर्गो वर्षा डिनर्षिङ्क्यतः शैक्षवरताख्य ॥ লকা বরং স নৃপতিঃ সমভ্যেতগাত্মনঃ পুরম্। চকার সুদিতে। রাজাং প্রজা ধর্মেণ পাটারন ॥ म्नेटक बज्जान् न ठ वशून् मरमी मानानाइनिम्म्। মানিন্যা সহিতো ভোগান্বুভূজে চস ধর্মবিৎ দশবর্ষদহস্রাণি পুশ্রুপৌক্রাদিভি: দহ। कृरेजाः (भो**रेखः न भू**निकः (मारु छवर श्रिवराविनः তদে।তি চরিতং দৃষ্টা প্রমতিনাম ভার্গব:। বিসমাক্তইন্ত্রা গাঁথামেতামগায়ত। ভাত্ততেরহো শক্তির্যন্তাহা রাজ্যবর্দ্ধন:। আযুষো বৰ্দনো জাতঃ অজনস্য তথাজ্বনঃ॥ ইতি তে কথিতং বিপ্র যথ পুষ্টোহহং দ্বয়া বিভো वानित्वमा भारायाभानिकामा विदयकः॥ विटेशिखनविनः अपा चार्नाम्बाहाणाम्बम्म। পঠংশ্চ মুচ্যতে পাইপ: সপ্তরাজকুতৈলর:॥ অরোগী ধনবানাঢ্যঃ কুলে মহতি ধীমতাম। লাগতে চ মহাপ্রাজ্ঞো যদৈতকারবেৰুধঃ॥ মলাশ্চ যেহকাভিহতা ভাগতো মুনিসভম। দাপ: প্রত্যেকমেতেবাং ত্রিসন্ধাং পাতকাপহ:॥ শমস্তমেতকাহ। ছাং যত চার্তনে রবে:। পঠাতে তত্ত্ত ভগৰান্ সংগ্ৰিধ্যং ন বিমুঞ্তি॥ उत्राप्ति ७९ पत्रा बन्धान् जातानीश्रीयामुख्यम्। <sup>ধাৰ্যাং</sup> মনসি জাপ্যঞ্চ মহৎ পুণামভীপাতা ॥

स्वर्गमृत्रीयिक्षिणां कार्याः भवित्रीः भारं स्वत्तमां कि दश हि। मृत्यां कि टेडक् बार्याच्यान् नतः नयः करताः भूगक्षमः विषां ग्राः॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে ভাস্থাহাস্ক্রঃ
নাম দশাধিকশতত্যোহধাারঃ।

## **क्ष्रामाधिकगठउंटमाव्या**यः।

--:#:--

### मार्करखन्न खेराह।

**धवच्छाडारवा क्रगवाननामिनिधाना इति:।** यमा घर दकोट्टेटक ख्या। साहाचार मति शृद्धिम ॥ পরমাত্মা স যোগীনাং বুলভাং চেত্রাং লয়ম্। क्रिज्ञ नाः शार्यागानाः चरकाः विकासिन ॥ र्थाधिकातः वहरका विस्थातीभग त्यथमः। **मञ्**खना इवर भूळिन्द्रिनर्सार्थनः । মন্ত্রাধিপে। বিপ্রায়ণা স্থ্যমন্তরম্ ॥ ইক্রিভগো রিষ্টো মহাবলপরাক্রমা:। निविद्यारकार्थ नांडांगः भृष्याः शृष्ठे धव ह ॥ এতে পুলা মনোন্তন্য পৃথগুরাজান্য পালক:। বিধ্যাতকীর্ত্তয়: সর্বে সর্বে শালালপারগাং ॥ বিশিষ্টতরম্বিচ্ছন্ মৃত্যু: পুত্রুং তথা পুন:। মিত্রাবরুণয়োরিষ্টিং চকার ক্বভিনাং বর: 🛊 যত্ত চাপহৃতে হোজুরপ্টারামহামুনে। ইলা নাম সমুৎপলা মনোঃ কন্যা স্থেখ্যমা ॥ তাং দৃষ্টা কন্যকাং তত্ত্ব সমুৎপন্নাং ভভো মছু: ১ তৃষ্টাৰ মিতাৰকণৌ ৰাক্যকেমমুৰাচ হ ॥ ভবৎপ্রসাদাৎ **তনরো বিশিষ্টো মে ভবেদিভি**। কতে মথে সমুৎপন্না ভনরা মম ধীমত: 🜬 यमि अन्ता वद्रा जन्म जनमः जनमा मम। প্রসাদান্তবভো: পুজো ভবছভিগুণাবিত: ॥ ভবেতি চা গ্ৰামুক্তে ভূ দেবাজাং গৈৰ কন্যকা ৮ ইলা সমভবৎ সদ্যঃ জুহায় ইতি বিশ্রুতঃ 🗈 পুনশ্চেশ্বরেকাপেণ মুগ্ব্যামটতা বঁনে। ছীত্বাসাদিতং তেন ম**র**পুত্রেণ ধীমতা 🕸 পুরুরবসনামানং চক্র4র্জিনমূর্জিতম্। জনয়ামাস ভনরং যত সোমস্তে বুধঃ # জাতে হতে প্ন: কৃষা দেহিখনেবং মহাক্রসূ। পুরুষ্তমস্থারেঃ ক্ষ্যুদ্ধ পার্থিবোহতবং ॥ ञ्ज्रहात्रमा खन्नः भूका छे एका विमाना नेतः। **शृक्तवरच महारी द्या विकाः शृक्रमोस्नाः ॥** পুরুষ্বৰে ভূ ধে কাডাজস্পরাক্ষরর স্থতাঃ ৷ वृज्कुत्व बहीरबकार धटर्स निवक्टान्जनः ॥ ত্ৰীভূতনা ভূ বো ভাতত্তন্য ইচ্ছ: পুরুরবাং । ন স কেভে মহীতাপং মতো ব্ৰহ্মতো হি সঃ #

ততো বশিষ্ঠবচনাৎ প্রতিষ্ঠানং প্রোত্মম্।
তথ্য দত্তং স রাজাভূৎ তফাতীবমনোহরে ।
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে বংশান্ত্রমো নানেকাদশাধিকশততমোহধ্যায়:।

# দ্বাদশাধিকশততমোহধ্যায়।

--:::--

### মাৰ্কতের উবাচ।

शृवधार्था। मरनाः भूरला मृगवामगमवनम्। **छ ज हः क्रममार्गाश्टामी विभिर्म निर्फ्राम वरम** ॥ নাসসাদ মৃগং কঞ্চিত্তাসুদীধিতিতাপিত:। কুতৃট্ভাপপরীভাল ইভশেচতশচ চংক্রমন্॥ স দদর্শ তদা ততা হোমধেরং মনোহর।ম্। ন তাবতা ন সম্বন্ধাং আহ্মণসাগ্লিহোতিণঃ।। স মন্যমানো গ্ৰয়মিষুণা তামতাড়য়ৎ। পণাত সাপি ভয়াণি িভিন্নহাদ্যা ভূবি ॥ ততোহরিহোত্রিণ: পুজো ব্রহ্মচারী তপোরতি: শপ্তবান্স পিতুর্দট্ব হোমধেলং নিপাতিতাম্ ॥ গোপালঃ প্রেষিতঃ প্রভা বাদ্রব্যো নাম নামতঃ কোপামর্পরাধীনচিত্তবৃতিস্তভো মুনে। **চুকোপ বিগলৎবেদজললোলা**বিলেক্ষণ:॥ তং জুদং প্রেক্তা স নৃপঃ প্রধ্যে ম্নিদারকম্। **প্রেমি ডি জাগৌক মাজ**হু দ্বং কুরুষে রুষম্॥ न कलियः न वा देवश्रामयः दकां ४ डेटेनिंड देव। যথা ছং শৃদ্ৰবজ্জাতো বিশিষ্টে ব্ৰহ্মণঃ কুলে॥ মাৰ্কণ্ডের উবাচ।

ইতি নির্ভং সিতত্তেন স রাজ্ঞা মৌলিনঃ হুতঃ।

শশাপ তং গুরান্থানং শৃত্র এব ভবিষ্যতি ॥

প্রাক্তিতি ক্ষরং ব্রন্ধ বং তেহণীতং গুরোমু থাব।

হোমধেমুর্মম গুরোর্যদিয়ং হিংসিত। গুরা ॥

এবং শথো নৃপঃ কুছজ্ঞাপপেরিপীড়িতঃ।
প্রতিশাপপরো বিপ্রা তোয়ং লগাহ গাণিনা ॥

সোহণি রাজ্ঞো বিনাশার কোণং চক্রে বিলোভমঃ
তম্জ্যেতা স্বরায়কো বার্যামাস বৈ পিতা ॥

বংসাল্মলম্ত্র্যুর্কে বার্যামাস বৈ পিতা ॥

বংসাল্মলম্ত্রুর্কে বার্যামাস বৈ পিতা ॥

বংসাল্মলম্ত্রুর্কি হার্যামাস বৈ পিতা ॥

বংসাল্মলম্ত্রুর্কি হার্যামাস বৈ পিতা ॥

বংসাল্মলম্ত্রুর্কি হুল্কে।

কুষ্টে স্বান্তে জানং কুষ্টার্যান ভ্রিত্তে॥

ন ধর্মঃ জোধনীলন্ত নার্থকাপ্রাক্তি রোবণঃ।
নালং স্থার কামাপ্তিঃ কোপেনাবিইচেডসাম্ ।
যদি রাজ্ঞা হতা ধেছরিরং বিজ্ঞানিনা সতা।
যুক্তমত্র দরাং কর্ত্ মান্ধনো হিতবোধিনা ॥
অথবাহজানতা ধেছরিরং ব্যাপাদিভা মন।
তৎ কথং শাপযোগ্যোহরং ছুইং নাত মনো বতঃ
আত্মনা হিতমবিছেন্ বাধতে বেংহপরং নরঃ।
কর্তব্য মৃচবিজ্ঞানে দরা তক্ত দরালুভিঃ ॥
অজ্ঞানতঃ কতে দন্তং পাত্রন্তি বুধা যদি।
বুধেত্যভাবং মত্তে বরম্জ্ঞানিনো নরাঃ ॥
ব্যাভাবহং মত্তে বরম্জ্ঞানিনো নরাঃ ॥
ব্যাভাবহং মত্তে বরম্জ্ঞানিনো নরাঃ ॥
ব্যাভাবহং মত্তে বরম্জ্ঞানিনো গ্রাং ॥
ব্যাভাবহং পতিতা গৌরেষ। ছঃধম্ত্যুনা ॥
মার্কত্রের উবাচ।

মাকণ্ডেয় ভবাচ।
প্ৰধ্ৰোহপি মৃনে: পুলং প্ৰণমাগন্ত্ৰকল্পর:।
প্ৰসাদেতি লগাদোটেচরজ্ঞানাদ্বাতিতেতি চ ॥
ময়া গ্ৰয়বৃদ্ধা পৌরবধ্যা ঘাতিতা মৃনে।
অজ্ঞানাদ্ধোন্ধেহতে প্ৰসীদ বঞ্চ নো মৃনে॥

ধেস্থত্ত প্রসীদ অঞ্চলোম্নে। ঋষিপ্ত্র উবাচ।

আ জনানো মহীপাল ন মরা বাহিতং মুখা।
ক্রোধশচাত্য মহাভাগ নাস্তথা মে কদাচন ॥
তরাহমেনং শক্রোমি শাপং কর্তুং নৃপাস্তথা।
যতে সম্দ্যতঃ শাপো দিতীয়: স নিবর্তিঃ॥
ইত্যক্তবন্তং তং বালমাণায় স পিতা ততঃ।
জগান সাপ্রমং গোহিপি প্রধঃ শুদ্রতামগাং॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে পৃষ্ট্রোপাধ্যানে স্থানশাধিকশততমোহধারঃ #

ত্রমোদশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--- ; • ; ---

মার্কণ্ডেম উবাচ।

কারবাং ক্ষপ্রিয়াং শ্রাং কর্মস্থাভবন্ স্তাং।
তে তু সপ্তাশতা বীরাস্তেভ্যাদান্তে সহস্রশাং ॥
দিউপ্তাস্ত নাভাগং দ্বিতঃ প্রথমযৌবনে।
দদর্শ বৈশুতনরামতীব স্থমনোহরাম্ ॥
তক্ষাং স দৃইমাত্রায়াং মদনাক্ষিপ্রমানসাং।
বভ্ব ভূপতনয়ো নিশাসাক্ষেপতংপরং ॥
তত্যাং স গড়া জনকং বত্রে তাং বৈশ্রক্সকাম্।
ভতোহনকপরাধীনমনোর্ভিং ন্পাত্মক্ষ্ম্ ॥

ভগাই স পিডা ততা রাজপুলং কুতাঞ্জা:।
বিভাৎ তত্ত পিউ্র্কিপ্র প্রশ্রমাবনতং বচ:॥
ভবস্তো ভৃজ্জো ভূত্যা বরং বং করদায়কা:।
কথং সক্ষমসমৈর্মাভিরভিবাঞ্সি॥
রাজপুল্ল উবাচ।

সাম্যং মাছ্ৰদেহস্ত কামমোহাদিভি: কৃতম্।
তথাপি কালে তৈবেব বোজ্যতে মাছ্ৰং বপু: ॥
তথৈব চোপকারার জারত্তে তক্ত ভাক্তপি।
অন্তানি চান্তে জীবস্তি ভিন্নজাতিমভাং সভাম্॥
তথাক্তাস্প্যবোগ্যানি যোগ্যতাং যাস্তি কালভ:
যোগ্যাক্তবোগ্যভাং যাস্তি কালবন্তা হি যোগ্যভা
আপ্যায্যতে যজ্বীরমাহারাদিভিন্নী স্পিতৈ:।
কালং জ্ঞাত্বা ভ্ৰা ভ্ৰাং তদেব পরিশিব্যতে॥
ইথং মমেষাভিমতা তন্যা দীয়তাং ত্মা।
অন্তথা মজ্বীরস্য বিপত্তিক্পলক্ষ্যতে॥

বৈশ্ব উবাচ।

প্রতন্ত্রা বরং ত্বঞ্চ প্রতন্ত্রো মহীভূজ: । পিত্রা ডেনাভাসুজ্ঞাতত্বং গৃহাণ দদামাহম্॥ রাজপুত্র উবাচ।

প্রষ্ঠিবাঃ সর্কার্কার্য্যের গুরুবর্তিভিঃ।
ন ত্বীদৃশেষকার্য্যের গুরুবাং বাক্যকোচর:॥
ক মন্মথকথালাপো গুরুবাং শ্রবণং কথম্।
বিক্রমেতদক্তত্ত প্রষ্ঠবাা গুরুবো নৃতিঃ॥

বৈশ্ৰ উবাচ।

এবনেতৎ স্মরালাপত্তবারং পৃচ্চতো গুরুম্। অহং পৃচ্চমি নালাপো মুম কামক্ব{শ্রয়ঃ॥

মার্কণ্ডেয় উবাচ।
ইড্যকঃ সোহভবদোনী রাজপুত্রং স চাপি তং।
তংপিতে সর্কমাচন্ত রাজপুত্রস্য যক্ষতম্ ॥
ততন্ত্রস্য পিতা বিঞান্চীক।দীন্ দিলোভমান্।
প্রথেশ রাজপুত্রক যথাখা।তং প্রবেদরং ॥
নিবেদ্য চ ততঃ প্রাহ মুনীনেবং ব্যবস্থিতঃ।
যং কর্তবাং তদাদেই মুহ্ডি বিজস্তমাঃ॥

भागने छेटुः।

বাজপুত্রাস্থরাগতে বন্যস্থাই বৈশ্বস্থতে।
তদত্ত ধর্ম এবৈব কিন্তু স্থান্মক্রমেশ সহ॥
মুর্নাভিষিকভনরাপাণিগ্রাহো ডবেব পুরা।
ভব্তনস্তর্কেরং তব ভার্যা ভবিষাতি॥
এবং ন মোধো ভবতি তবেমামুপভূঞ্জতঃ।
অন্তর্গান্ডোতি তে জাতিক্রুক্টা বালিকাং হরন্

মার্কভের উবাচ। ইত্যুক্তদপাটিগ্যব বচতে যাং মহাত্মনাম্। বিনিক্ষমা গৃহীয়। ভামুদাভাসিরধাত্রবীৎ॥ রাক্ষণেন বিবাহেন ময়া বৈশ্রন্থভা হাতা। ষদ্য সাম্প্রমতান্তি স এতাং মোচরত্বিতি ॥ ততः म देवश्रखाः पृष्ठे। शृहीखाः खनग्नाः ऋखम । আহীতি পিতরং তদ্য প্রধানে শরণং विका ততস্ত্ৰস্য পিতা **কুন্ধ আদিদেশ বলং মহৎ।** . হক্ততাং হক্ততাং হুটো নাভাগো ধর্মদূৰক:॥ ততত্তদ্যুয়্ধে সৈহাং রাজপুক্রেণ ভূপতি:। স্বয়মেৰ যথৌ যোকুং স্থ**ৈস্তুপরিবারিতঃ**॥ ততো যুদ্দভূৎ ত**ত ভূভুল: সম্ভেন যৎ।** রাজপুজেণ শ**ন্তাকৈন্ততাতিশন্তিত:** পিতা ॥ ততোহস্তরীক্ষাদাগত্য পরিব্রাট্ সহসা মুনি:। প্রভাষা মহীপালং বিরম্পেতি সংযুগাৎ ॥ ত্ৎপুত্রভা মহাভাগ বিধর্মোহরং মহাত্মনঃ। ज्वाणि देवरश्चन गह न युक्तः धर्मवन्नु भ ॥ बाकारण बाकागिश्वाः क्रांन् मावशिवाशम्। ব্ৰাহ্মণ্যাৎ সৰ্কাৰণেৰু ন হানিমুপগচছতি॥ তবৈধৰ ক্ষত্ৰিয়স্তাং ক্ষত্ৰিয়ঃ পূৰ্বমুখ্ছন্। ইতরে চ তভো রাজংশ্চাবস্তেন স্থর্মত: 🛭 পূর্বাং বৈশস্তব। বৈশ্যাং পশ্চাৎ শূদ্রকুলোভবাম্। ন হীয়তে বৈশুকুলাদয়ং স্থায়ঃ ক্রেমাদিতঃ॥ ব্ৰাহ্মণ: ক্ষত্ৰিয়া বৈখা: স্বৰ্ণাপাণিসংগ্ৰহ্ম্। অকুস্বাস্ত্রাপাণে: প্ত**স্তি নৃপ সংগ্রহাৎ ॥** যন্তা বভা হি হীনায়া: কুরুতে পাণিদ:গ্রহম্। অকুছা বৰ্ণসংযোগং নাপি **তহন্তভাগ্ভবেৎ** ॥ (मारुशः देवश्यक्राशितख्य भूजः म मन्मधीः। নাভাধিকারো যুদ্ধায় ক্ষজ্রিরে**ণ ত্**য়া সহ ॥ বয়মেভর জানীমঃ কারণং নুপনন্দন। যথা ভবিষাতীদক নিবর্ত্ত রণকর্মত: p

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে নাভাগচরিতং নাম অয়োদশাধিকশতভয়েহিধারিঃ ॥

চতুর্দিশাধিকশৃততমোহধ্যারঃ।

-:+:--

মার্কভের উবাচ। নির্বোহসৌ ততো ভূপঃ সংগ্রামাৎ স্বস্থ্রেম হৈ উপবেমে চ ভাং হৈল্ডনরাং নোহলি তৎস্কৃতঃ॥ ভত: স বৈখতাং প্রাপ্ত: সম্পণত্যার পার্থিবম্। ভূপাল যমমা কার্যাং তৎ সমাদিখতাং মম ॥ মাজোবাচ। ধর্মাধিকরণে যুক্তা বাত্রবাদ্যাগুপন্থিন:।

ধর্মাধিকরণে যুক্তা বাস্ত্রবাদ্যাক্তপন্ধিনঃ। যদস্য কর্ম ধর্মায় তহদন্ত তথা চয়। মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ততত্তে মুনরস্তস্য পাঙপাল্যং তথা কৃষিম। বাণিজ্ঞাঞ পরং ধর্মমাচচকু: সভাগদ: ॥ তথাচ চকে স **স্তত্ত**স্য রাজ্ঞোযথোদিতম্। তৈর্দ্ধবাদিভিদ্ধর্মং চ্যুত্তস্য নিজধর্মতঃ॥ তস্য পুদ্রন্ততো জাতো নামা থাাতো ভনন্দনঃ। স মাত্রা প্রহিতোহগছেদেগাপালো ভব পুত্রক। মাত্রা তথা নিষুজেনাহথ প্রণিপত্য স্বমাতরম্। য়াজবিমগমলীপং হিমবৎপর্কতা প্রন্। তং সমেত্য স জগ্রাহ তস্য পাদৌ যথাবিধি। প্রাপিত াহ চৈবৈনং রাজ্যিং স ভনন্দন: ॥ আদিটো ভগবন্ মানা গোপালস্বং ভবেতি বৈ ময়াচ পালনীয়া হ্লাভস্যাঃ স্বীক্রণং ক্থন্ ॥ ময়া হি গো: পালনীয়া সা যদা স্বীকৃতা ভবেৎ। আক্রান্তা বলবন্তি: সাদায়ালৈ: পৃথিবী ম**ম**॥ काः यथा ब्याभूताः पृथीः परशानानवः विटका তথাদিশ করিষ্যামি ভবাজ্ঞাং প্রণতোহস্মি তে॥ মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

ভক্ত: স নীপো রাজবিত্তলৈ নিরবশেষত:।
ভনন্দার দদে ব্রহ্মপ্রপ্রামং মহার্নে ।
প্রাপ্তাজবিদা: স যথা পিতৃবাতনয়ান্ বিজ ।
বস্থাতাদিকান্ পূলানাদিউ: স মহাত্মনা ॥
ভ্যাতত স রাজার্ত্তিং পিতৃপৈতামহো তিতম্।
তে চোচ্ট্রেপ্তাজ্বং কণং ভোলাসি মেদিনীম্
তত্তৈর্জ্মভবত্তনন্দ্র ।
বস্থাতাদিভি: কুটেং: কুভাস্থাস্যবিভি: ॥
স জিল্পা ভানশের্থান্তে শন্ত্রবিক্তার ।
ভার পৃথিবীং তেবাং ধর্মব্রেন ধর্মবিং ॥
স নির্জ্কিলারি: সকলাং পূথীং রাজ্যং তথা পিতৃ:
নিবেদয়ামান তত্ত্বংপিতা জগতে ন চ।
প্রত্যবাচ চ তং পূল্যং ভার্যালাঃ প্রত্তলা ॥
নাভাগ উবাচ।

ভনন্দ রাজ্যমেতৎ তে ক্রিবতাং পুর্কলৈঃ রুডম্। অহং ন কুডবান্ রাজ্যং নাসামর্থ্যসূত্য পুরা॥ বৈশ্রতার পুরস্কৃত্য তবৈধাঞ্চাকরঃ পিতৃঃ। কথাপ্রীতিং পিতৃরহং বৈশ্বক্ষাণরিগ্রহাৎ ॥
ন প্ণ্যলোকভাগ্রাজা খাবদায়ুভসংপ্রবং ॥
উল্লভ্যাজ্ঞাং প্নজন্য পালগানি মহীং যদি।
নাজি মোক্ততো ন্নং মম ক্রশতৈরপি ॥
ন চাপি যুক্তং ঘ্রাছনির্জ্ঞিকং মম মানিনং।
রাজ্যং ভোজু মনীহন্য মুর্বান্যাই ক্যাচিৎ ॥
রাজ্যং কৃত্র স্বরং যাবকারাদেভো বিমুক্ত বা।
মনাজ্ঞাপালনং শক্ষং পিতৃর্ব ক্তিগালনম্ ॥

মার্কপ্রের উবাচ। ততঃ প্রহস্য তত্তার্য্যা স্থপ্রভা নাম ভাবিনী। প্রভাবার পতিং ভূপ গৃহতং রা**ল্যমূর্জিতম্**। न पः रेवरका न रेहवाहः खांटा रेवकक्ल नृषः ক্ষত্রিয়ন্ত্রং ভবৈথবাহং ক্ষত্রিয়াণাং কুলোদ্ভবা ॥ পূর্বমাসী নহীপালঃ স্থদেব ইতি বিশ্রুতঃ। তস্যাভূচ্চ স্থা রাজ্যে ধু<u>ষাখ্যা **হতো ন**লঃ।</u> স তেন স্থ্যা স্হিতো জ্বপামান্ত্রণং বন্ম্। পত্নীভিঃ সুসমং রস্তুং মাধবে মাসি পার্থিব॥ তভঃ পানাগ্যনেকানি ভক্ষ্যাণি বুভুজে তথা। ভার্য্যাভি: সহিত্তাভিত্তেন স্থ্যা সম্বিভ: 🛭 ততঃ পুক্ষরিণীতীরে দদর্শতিমনোরমাম্। পত্নীং চ্যবনপুত্ৰস্য প্ৰমতে: পাৰ্থিবাছ্মসাম্॥ স্থা তস্য নলো মতো অগৃহে তাঞ্চ মুর্মতি:। পশুতস্ত্রস্য রাজ্ঞ তাতে ভাতেভিবাদিনীম্॥ আক্রন্সিভং নিশমৈয়ৰ সূত্রসাঃ প্রমৃতিঃ প্রভি আজগাম স্বাযুক্ত: কিমেতদিভি বৈ বদন্॥ ততো দদর্শ রাজানং স্থেবং তত্ত সংখিতম্। গৃহীভাঞ্চ তথা পত্নীং নলেন স্বত্রাত্মনা॥ **७७: ऋत्वर ध्यमिक: धोर्ट्सर भागाजामिकि** इक्ष भाष्ठा ख्यान् बाबा इंडेम्टाबर नरमा नृप 🎚 মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

তদার্তিদা বচ: শ্রুদা স্থবেবো নলপোরবাং। প্রাহ বৈখ্যেহিরি গচ্ছান্য: ক্ষক্রির জাণকারণ ততঃ দ প্রমতি: জ্বত্তেজদা নির্কহরিব। প্রস্কৃত্তবাচাথ রাজানং বৈখ্যেহিনীত্যভিতাবিশ্য প্রমতিক্রাচা

এবমন্ত ভঝান বৈখা: কজির: কজরকণাৎ। কজিবৈদ্ধাব্যতে শল্প: নার্ত্তশলে ভবেনিটি। স বং ন কজিয়ো ভাবী বৈখা এব কুলাখনঃ। ইতি মার্কতেরে মহাপুরাণে নাভাগচরিতে চতুর্দশাধিকশতক্রমাধ্যামঃ।

## পঞ্চশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

. -:4:-

#### मार्करश्वत्र खेवाह।

তলৈ দল্ব। ভতঃ শাপং নলং ক্ৰেছোইএবী দ্বিদ। अम्किकीर्गदः (काशार देवलाकाः निष्कृतिव ॥ मानावात्वा वना कार्याः कवानक ममाधाय। বলাদগ্রাদি ভক্তং তকাব্জতু মা চিরম্॥ তেনোগালভুষাজে চ বাকো ভদ্মিন ভদা নল:। **(महस्मनाश्चिमा मरमा) अञ्चल्यका**खन्य ॥ मृहे। व्यक्तांवर ७९ जन्न स्रामरवा विमनख्यः। প্রণামনম্র: প্রাছেদং ক্ষমাভাং ক্ষমাতামিতি ॥ ষত্র বাংখং ভগবন্ সুরাপানমদাকুলম্। তৎ ক্ষমাতাং প্রদীদ স্বং শাপোহয়ং বিনিবর্ত্তাম্ व्यवः श्रमापि कास्त्रन श्रम्भिकः श्राह जार्गवः। গতকোপো নলে দথে ভাবহীনেন চেতসা॥ নান্তথা ভাবি তথাকাং যন্ত্রা সমূদীরিতম। তথাপি তে করিষ্যামি প্রসংগ্রহং পরম্॥ ভবিতা বৈশ্বজাতীয়ো ভবান নাস্ত্যক সংশয়:। ভবিতা ক্ষল্রিয়ো ভূরস্তব্যিলেবাত জনানি ॥ वशेषां जि वर्गाए कम्राः यता (ज क्या ब्राह्म खर : তদা বং ক্ষত্ৰিয়ো বৈশ্ৰ স্বগৃহীতো ভবিষ্যতি॥ এবং স বৈশ্রো ভূপাৰ স্থদেৰে।হল্মৎপিতাভবৎ। অহঞ্যা মহাভাগ তৎ সর্বাং শ্রেবতাং ত্রা॥ ष्ट्राणा नाम दाक्षविः व्यानामीकासमापता। তপদী নিম্তাহারস্তাক্তসঙ্গে। বনশ্রেয়:॥ ততঃ শ্রেনম্খন্রষ্ঠাং দৃষ্ট্রেকাং শ।রিকাং ভূবি। ক্পাভূজনিত। সৃদ্ধি তথা তক্ত মহাস্থন:॥ <sup>ভতো</sup> মৃহ্যবিসানে২হং ভসেয়াৎপরা শরীর**ভ**ে। ৰ মাং দৃষ্ট্ৰ চ জগ্ৰাহ স্নিক্ষানেন চেত্ৰা।। <sup>ব্যাৎ</sup> কুণাভিভূতন্য মূম আতেয়মাত্মজা। ামিৎ কুশাৰভী নাম। ভবিষ্যতাহি স প্ৰভো॥ ग्राज्यसम्बद्धः जगु वर्क्तमाना निवानिणम् । । বীভি: সহ ভূল্যাভি কিচিয়ামি বনানি চ ॥ <sup>্তো</sup> ম্নেরগন্তান্য ভাতাগন্তা ইব শ্রু:। <sup>া চিম্ন</sup>্ কানলে বস্তুং স্থীভিঃ কোপিতে।২শণং <sup>নাং</sup> বৈ**শ্ৰ**মিতি প্ৰাৰ <del>ছব</del>তী তেন তে দণে। <sup>্বিব্যাস **বৈখজা ভূ ই**ত্যুক্তে চ তমত্ৰবম্ ॥</sup> <sup>[[भ्रादर</sup> कुठवर्षी कराहर विव्यवस्य । <sup>रजा</sup>नाव गतारथम किन्धर मरावानिम ॥

खिकवाह ।

एहेजाः इटेमःमर्गावइटेमि गळ्छि ।

स्वाविस्तिनाट्य नक्षणवाची वथा ॥

श्रीनिष्ठा न इटेम्पि यर प्राटः श्रीमाविष्ठः ।

उपावद्यादन वर्षा स्वाचा पर भूकः वाधाविष्ठः ।

उपावद्यादन वर्षा स्वाचा पर भूकः वाधाविष्ठा ।

वाखाय साज्यवादा स्वाचा पर भूकः वाधाविष्ठा ।

वाखाय साज्यवाद्य स्वाचा पर भविष्ठा ।

विद्याति वर्षा साज्यवाद्य व्याचा पर भविष्ठा महं ।

विद्यात्यात्य व्याच्याव्य एक भूकः सहर्विण ।

विचा न व्याच्याव्य एक भूकः सहर्विण ।

विचा ह व्याच्याव्य एक स्वाच्याव्य ॥

व्याच्याव्य व्याच्याव्य व्याच्याव्य ।

ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুত্ৰাণে পঞ্চদশাধিক-শততমোহধায়িঃ।

ষোড়শাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

-:+:-

মার্কণ্ডের উবাচ। ইতি ভদ্যা বচঃ শ্ৰুছা পুত্ৰস্য স চ পাৰ্থিবঃ। পুনঃ প্রোবাচ ধর্মজন্তাং পত্নীং তনরং তথা ॥ যম্মরা পিডুরাদেশাৎ তাক্তং রাজ্যং ন তৎ পুন:। প্রহীয়ামি বুথোজেন কিমান্তা কুষ্যতে দ্বা॥ অহং তে সম্প্রদাস।।মি করং বৈশ্বত্ততে দ্বিডঃ। ভূতক্রাজ্যমশেষং অমিচছয়াবা পরিতাকাট हेकुाकः म उपा भिजा त्रांकभूत्वा फनमनः। ठकात ताकार धटम्बन उपमातनतिश्र**रम्**॥ क्यताहरू छमा ठक्कः भृषिताम् अविका ন চাধৰ্মে মনো ভূপান্তৰ্য স্কেহিভবন্ বশে ॥ Cकटनरहे। विधिवनवद्भः त्रभाक् भाषि वस्त्रक्षत्रम्। म এरेवरकार्डवस्टी भृषिवार वार्थमाममः ॥ অজ্যাত স্মৃতস্ত্রদা বৎসঞ্জীর্মাস নামত:। পিতাতিশয়িতো ধেন গুণৌখেন মহাম্মনা। ত্যাপি ভার্যা সৌননা বিদ্রপ**ত্তাভবং**। পতিত্রতা মহাভাগা সা প্রাপ্তা ভেন বীর্যাভঃ। इष। পूत्रसद्वतिशूः क्ष्मुखः विकित्सपत्रम्॥ **्कोडे क्रियोग।** 

जनवरत्वन मच्चाशी क्ष्मुक्तिवना क्ष्मृत्व। वजनवर्गनमानामाहि व्यवसमानमाना ॥

मार्कट ७ य छे वाह। विष्त्राया नाम मृतः था। छकी खिंत्र ভृद्ध वि । ত্যা পুত্ৰবন্ধ জাতং স্থীতিঃ স্মতিস্তপা ॥ একদা তু বনং বাতো মৃগরাং স বিদ্রথ:। দন্দ গর্তঃ স্থমহন্ত দেশ্র প্রিবোদগভম্ ॥ ডং দৃষ্টা চিম্বয়মান কিমেতদিতি ভৈরবম্। পাতালবিবরং মন্যে নৈতভুমেশ্চিরভনম্॥ **हिस्त्रक्रिकि कवारिनो ममर्भ विकास वरत।** ব্ৰাহ্মণং হ্ৰতং নাম তপদ্বিম্পাগতম্॥ স ডং পঞ্চ চ নৃপঃ কিমেডদিতি বিশ্বিতঃ। অভিগন্ধীরমবনে দিশিভান্তর্গতোদরম্॥

ঋষিকবাচ।

কিং ন বেৎনি মহীপাল বাগর্থস্বং হি মে মতঃ। জেরং সর্বং নরেজেণুবর্ততে যন্মহীতলে ॥ দানব: স্থমহাবীর্য্যে বিস্ত্যুগ্রো রসাতলে। স জ্ম্বাতি যৎ পৃথীং কুজ্ম্ব: প্রোচ্যতে ততঃ ॥ ক্রিয়তে তেন যৎ কিঞ্চিন্তুতং ভূতং মহীতলে। ত্রিদিবে বা নরপতে তং কথং বেতি নো ভবান্ জ্বলং নাম মুধলং ছট্টা যরিস্মিতং পুরা। ভজ্জ**হার স স্টাত্মা ভেন হতি** রণে রিপুন্॥ পাতালাস্তর্গতন্তেন ভিনত্তি বসুধামিমাম্। ভতোহস্থরাণাং সর্বেষাং দারাণি কুরুতেইস্থর:॥ তেন ভিন্নাত বহুধা হুনন্দম্বলাযুধা ॥ ভোক্ষাতে বহুধামেতাং তমজি**তা কথং ভবানু**॥ यक्कान् विश्वः नग्रजुर्धा (नगनाम् भरतां धकः। আপ্যাররতি দৈতেরান্স বলী মুধলাযুধ:॥ ষদ্যরিং বাভরস্যেনং পাতালাস্তরগােচরম্। ততঃ সমস্বস্থাপতিত্বং পরমেশ্বর ।। মুৰলং তৃষ্য বলিনঃ সৌনন্দং প্ৰোচ্যতে জনৈঃ। ख्या वनावनदेशव खः वन्ति विवन्नाः॥ তৎ তু নিকীৰ্য্যতাং যাতি সংস্পৃষ্ট ধোষিতা নূপ তিরিন দিনে দিতীয়েহহি বীর্যাবৎ তছনীর্যাতে ॥ ন স বেভি ছ্রাচার: প্রভাবং ম্বলস্য তৎ। যোষিৎকরাপ্রসংস্পর্দে দোবং বীর্য্যবিশাতনম্।। **এবং তদ্য बनः ভূপ शनिवनः ছ্রাত্মনः।** म्बनमा ह एक (क्षांकर सञ्चर ७९ ममाहत ॥ আসর্মেডভবতঃ প্রদ্য পৃথিবীপতে। कुंडर ८७न महीबकुर निन्धिः, किर छव:न् यथी ॥ ইত্যক্ত ভূ গতে তবিৰ্পুরং 🗱 সহীপতি:। मज्ञामान मजटेकः भूत्रमत्या प्रमित्रिः।

যথাশ্রতমশেষং তৎ কথরামাস মন্ত্রিণামূ। মুধলস্য প্রভাবঞ্চ বীর্য্যশাতনমেব চ ॥ তং মন্ত্রং ক্রিয়মাণস্ক মব্রিভিস্তেন ভূভূতা। তৎপাৰ্যবৰ্ত্তিনী কন্যা শুশ্ৰাবাথ মুদাবতী॥ ততঃ কভিপয়াহে তু তাং কন্যাং বয়সাৰি গ্ৰাম। खशास्त्राभवनादेवजाः कृष्णुष्ठः म मधीवृजाम् ॥ ভচ্ছা স মহীপালঃ কোধপর্যাকুলে**ক্ষণঃ**। श्वाव्वाठ प्रिजः शक्षः वनस्कावितनो ॥ নিবিবেদ্যায়াতটে গর্ভতেন গ**হার্নাভলম্।** স হন্যতাং যোহপহন্তা মুদাবভ্য**ঃ স্থত্**শ্বভি: ॥ মাৰ্কণ্ডেম উবাচ। ততন্তৌ তৎস্থতৌ প্রাপ্য তং গর্ত্তং তৎপদাসুং যুযুধাতে কুজ্ভেণ স্বলৈন্যেনাতিকোপিতে। ॥ ততঃ পরিঘনিস্তিংশশক্তিশ্লপরশ্বৈঃ। বাবৈণ চাবিরতং যুক্ষং তেষামাসী । হুদারণ মু॥ ততো মায়াবলবতা তেন দৈত্যেন তাবুভৌ। রাজপুত্রোরণে বন্ধৌনিহতাশেষটেসনিকৌ॥ তচ্ছাম মহীপালঃ ৫১ হেদং সর্কটেদনিকান্। বদ্ধপুতাঃ পরামার্তিমুপেতো মুনিসত্তম ॥ যন্তাং নিহত্য দৈতেরং মোচয়িষ্যতি মে স্থতৌ তস্যাহং সম্প্রদাস্যামি তামেবায়তলোচনাম্। ইত্যেবং ঘোষয়াঞ্জে স রা**লা স্বপুরে তদা।** নিরাশ: পুত্রতনয়াবন্ধমোক্ষায় বৈ মুনে॥ ততঃ শুশ্রাব বৎদপ্রীর্ভনন্দনস্থতো হি ভৎ। व्यारपायामानः वलवान् कृषाद्धः त्नोर्यामःयूष्ठः। न हानगां जिनादेनानः धाद नार्थितमख्यम्। বিনয়াবনতো ভূতা পিতুর্মিঅমহুত্তমম্॥ আজাপরাত্ত মামের তনয়ৌ মেনচরামি তে। তবৈব তেজদা হয়। তং দৈত্যং জনম্বাঞ্চ তে॥ মার্কণ্ডের উবাচ। স্থানে স্থান্যতি মে বংগো যদ্যেবং **ক্**কতে বিধি

न उर मूना शतिषका व्यित्रनथू। दशायकम्। গ্ন্যতামিতি সংসিকৈ বৎসেডাাই য পার্থিকঃ 🎚 বংগৈতং ক্রিয়তামাণ্ড যত্যুৎসাহি মন্**তব** 🛭 মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

ততঃ স্থড়গঃ স্ধন্ত্ৰিদ্বোধালু শিত্ৰবাৰ্। জগাম বীর: পাতাবং ছেন **গর্ভেন <u>স</u>ম্বর:** 🛚 **ততো जार्यनमञ्ज्ञा म हाक् भार्थिनाममः** रयन পाভাनमधिनमात्रीमाशूतिভाखनम् ॥ তভো জ্যাস্বনমাকর্ণ্য কুজ্ঞো शनবেশর:।

অভিগাৰ।ভিকেতেশন স্বলৈনাপরিবারিত:॥ ভতো যুদ্ধসভূৎ ভদ্য ভেন পার্থিবস্তুনা। म्रेमक्रमा मदेमरक्रन दिनात्ना वन्यानिना ॥ निर्मानि खौनि म यना (याधिकत्छन नानवः। তত: কোপপরীতাক্স। মুধলায়াভ্যধাবত ॥ बरेक्षर्यः रैनास्त्रशा भ्रेलः পূজ্যমানः স তিষ্ঠতি। অস্তঃপুৰে মহ'ভাগ প্ৰজাপতি নিৰ্মিত:॥ ততো বিজ্ঞাতমুধলপ্রভাবা দা মুদাবতী। পম্পর্শ মুধলভাষ্টমভিন্ত্র শিরোধর । ১ পুনর্যাবিৎ স গৃহ।তি মুধলং তং মৃহাস্তর:। তাবং সা বন্দনবাজে। পস্পশ্লিকশঃ গুড়া। ততঃ স গতা যুযুধে মুধলেনাস্থরেশরঃ। বার্থা মুষলপাতাত্তে সংজগ্মুতেষু শত্রুষু ॥ পরসাত্তে তু निक्वीर्र्या त्रीनत्न मूयत्न मूत्न। অক্সৈঃ শক্ত্রৈশ্চ দৈতেয়ঃ সোহয়ুধ্যত রণেহরিণা॥ শক্ষাক্রৈন সমস্তম্ভ রাজপুত্রম্ম সোহস্কর:। ম্বলেন বলং তক্ত তচ্চ বুদ্ধ্যা নিরাক্তম্॥

ততঃ পরাজিত্য স ভূপস্ত্বরন্ত্রাণি শল্পণি চ দানবস্থ।
চকার সদ্যো বিরথং ততঃশ্চ
সচর্মধর্জাঃ পুনরপ্যধাবং॥
তমাপতস্তঃ রভসাহভূদীর্ণং
বিস্পষ্টকোপং ত্রিদশেক্ত্রশাল্পন্
অল্পে বহেন্ত্র্বি রাজপুত্রো
জ্বান কালানলসপ্রভেণ॥
স পাবকাল্পে ছদি ক্ষতে। ভূশং
তত্যাক্ত দেহং ত্রিদশারিরাত্মনঃ।
বভূব সদ্যশ্চ মহোরগাণাং

রসাতলান্তের্ মহানপোংসবঃ ॥
ততোহপতৎ পুশ্বষ্টিশাহীপালস্তোপরি।
সংগ্রহ্মরপতরো দেববাদ্যানি সম্মুঃ ॥
দ চাপি রাজপুত্রস্তং হলা তৌ নৃপতেঃ স্মৃতৌ।
নাচরামাস ভয়ঙ্গী তাঞ্চ কস্তাং মুদাবতীম্ ॥
তথাপি মুষলং তম্মিন্ কুজুন্তে বিনিপাতিতে।
স্থাহ নাগাধিপতিরনস্তঃ শেষসংজ্ঞিতঃ ॥
তথাশ্চ পরিভূষ্টোহসৌ শেষঃ সর্কোরগেখরঃ ॥
হলাশ্চ পরিভূষ্টোহসৌ শেষঃ স্ক্রোরগেখরঃ ॥
হলাশ্বলম্পর্শং যচকার পুনঃ পুনঃ।
বাবিংক্রতলম্পর্শপ্রভাবজ্ঞাতিশোভনা ॥
দোবত্যান্তভো নাম নাগরাজন্তদাক্রোং।
নেলামিতি সানক্ষং সোনক্ষণ্ডারং বিজ্ঞা

স চাপি রাজপুদ্রন্তাং দ্রাতৃত্যাং সহিতাং পিতৃ:।
সমীপমানিনারাত প্রাণিপত্যাহ চৈব তম্॥
আনীতৌ তনরৌ তাত তথৈবেরং মুদাবতী।
তবাজ্ঞরা মরাক্রন্থং কর্ত্তব্য: তৎ সমাদিশ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ততঃ প্রহর্ষসম্পৃত্তিদয়ঃ স মহীপতিঃ।
সাধু সাধিবত্যথাহোকৈর্বংস বংসেতি শোভনম্
সভাজিতোংশ্মি ত্রিদশৈর্বংসাহং কারণৈল্লিভিঃ।
তং জামাতা চ যৎ প্রাপ্তো যচ্চারির্বিনিপাতিতঃ॥
আগতাভক্ষতাভত্ত যচ্চাপত্যানি মে পুনঃ।
তপ্গৃহাণাদ্য শন্তেংছি পাণিমভা ময়োদিতম্॥
তং রাজপুত্র চার্বজ্যাঃ কভারা ছহিতুর্মম।
ম্দাবত্যা মৃদা যুক্তঃ সত্যবাক্যং কুরুদ্ব মান্॥
রাজপুত্র ট্রবাচ।

তাতপ্ৰাক্তা ময়া কাৰ্য্যা यह বীষি করোমি তং।

ওমেৰ তাত স্থানীষে নৈৰাজাবিক্কতা বয়ম্॥

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

ততন্তমো: স রাজেক্রণতক্রে বৈবাহিকং ক্রেমম্।
ম্নাবত্যাশ্চ ছহিতুর্জনন্দনস্থতন্ত বৈ ॥
ততঃ সহ তয়া রেমে বৎসপ্রীনিবিয়েবন:।
রমণীয়েরর্ দেশের্ প্রাসাদশিশরের্ চ ॥
কালেন গচ্ছতা রক্ষঃ পিতা তম্ভ ভনন্দন:।
বনং জগাম বৎসপ্রী: স বভূব মহীপতি: ॥
ইয়াজ যজ্ঞান্ সততং প্রজা ধর্মোণ পালয়ন্।
প্রবং পাল্যমানাস্ত প্রজাতেন মহাক্সনা ॥
বর্ধুর্বিষয়ে তম্ভ ন চাভূর্ণসন্ধর:।
ন দম্যালছর্ বভয়য়াসীচ্চ কম্সচিং।
নোপস ভিষ্ঠেয় বত্মিন্ শাসতি ভূপতো ॥
ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ভন্দনবংসপ্রী-

চরিতং নাম যোড়শাধিকশত-তমোহধ্যারঃ।

সপ্তদশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

-;•;--

মার্কণ্ডের উবাচ।
তক্ত তক্তাং স্থনন্দারাং প্রা বারশ জব্জিরে।
প্রাংডঃ প্রবীরঃ প্রশু স্থান্তের বিক্রমঃ।
বলো ব্যাক্তওক প্রচণ্ডক স্থান্তির।
বর্গত মহাভাগাঃ সর্বে সংগ্রাম্ভিরবাঃ।

তেমাং জ্যেটো মহাবীর্য্য: প্রাংক্তরাসীন্নরাধিপ:। ইতরে ভৃত্যবৎ তক্ত বভূবুর্মপবর্ত্তিনঃ॥ তম্ম বজ্ঞে বিজ্ঞতাকৈরনেকৈর্দ্রবারাশিভি:। ন্যুনবৰ্ণবি**স্টেশ্চ সত্যনামা বহু**দ্ধরা। সম্যক্ পালয়তন্ত্রত প্রজা: পুল্রানিবৌরসান্। যোহভূদ্ধনচয়ঃ কোষে তেন নিষ্পাদিতাস্ত যে ॥ ক্রতবঃ শতসাহস্রান্তেষাং সংখ্যা ন বিদ্যতে । অযুতাদ্যেন কোটীভিন চ পদাদিভিম্নে॥ প্ৰজাতিন্তম্য প্ৰোংভূদাম যজে শতক্ৰতু:। অবাপ তৃপ্তিমতুলাং যজ্ঞভাগৈঃ স্থারেঃ সহ ॥ দানবানাং স্থবীয্যাণাং জহান ন্বতীন্ধ। বলঞ বলিনাং শ্রেছো জন্তকান্তরসত্রস্। **অকাংশ্চ স্থমহাবীর্য্যান্তাজ্বানাম**রবিষঃ ॥ প্রজাতেন্তনয়া: পঞ্চ <u>প্র</u>নিত্রপ্রমুখা মূনে। তেষাং থনিত্রো রাজাইং প্রখ্যাতো নিজবিক্রনৈঃ স শান্তঃ সত্যবাক্ শ্রঃ সর্বপ্রাণিহিতে রতঃ। স্বধর্মাভিরতো নিত্যং বৃদ্ধদেবী বহুশ্রতঃ॥ বাগ্মী বিনয়সম্পন্ন: কুড়াল্ডো২প্যবিকখনঃ। সর্বলোক প্রিন্ধে নিত্যমুবাটেত দহর্নিশম্॥ নন্দন্ত সর্বাভূতানি স্নিহন্ত বিজনেষপি। স্বস্তান্ত সর্পাভূতের নিরাতকানি সন্ত চ॥ মা বাধিরস্ত ভূতানামাধ্যো ন ভবস্ত চ। বৈমত্রীমশেষভূতানি পুষ্যস্ত সকলে জনে ॥ শিবমন্ত বিজাতীনাং প্রীতিরস্ত পরস্পরম্। সমৃদ্ধি: সর্কাবর্গানাং সিদ্ধিরত্ত চ কর্মগাম্॥ হে লোকা: সর্বভূতেরু শিষা বোহস্ব দদা মতিঃ। যথাম্মনি তথা পুজে হিতমিচ্ছথ সর্কদা॥ তথা সমস্তভূতেরু বর্ত্তধ্বং হিতবুদ্ধরঃ। এ**তকো হিতমত্যস্তং** কো বা কল্পাপরাধাতে॥ যৎ করোত্যহিতং কিঞিৎ কণ্ডচিনা চুমানস:। তং সমভ্যেতি তন্ত্ৰং কর্ত্পামি ফলং যত:॥ ইতি মতা সমত্তের্ ভো লোকা হিতব্জয়:। সন্ত মা লৌকিকং পাপং লোকান্ প্রাপ্যাথ বৈ

যক মাং বেষ্টি লোকেংশ্মিন্ সোংগি ভদাণি পঞ্চতু॥ এবংশ্বরূপঃ পূর্ব্দেইছিং ধনিত্রস্ত ভূপতে:। সমস্তগুণসম্পন্ন: শ্রীমানজগলেকণ:॥ তেন তে ভ্রাতর: শ্রীত্যা পুথগ্রাজ্যের বোজিতাঃ

যো মেংদ্য শ্বিহুতে তক্ত শিবমন্ত দদা ভূবি।

স্বয়<del>ক</del> পৃথিবীমেতাং বুভূজে সাগরা**হরান্**॥ প্রাচ্যাং তেন ক্বতঃ শৌরিদিক্ষিণায়ামুদাবস্থ:। দিশি প্রতীচ্যাং স্থনর উত্তরস্তাং মহারথ: ॥ তেষাং তক্ত চ ভূপক্ত পৃথগ্গোত্রা: প্রোহিতা:। বভূবুমুনিয়7ৈচৰ মন্তিবংশক্ৰমাগতাঃ॥ শৌরেরত্রিকুলোভূত: স্বহোত্যো নাম বৈ দ্বিল:। উদাবসোঃ কুশাবর্ত্তো গৌতমানমজোহ**ভবৎ** ॥ কাগুপঃ প্রমতিনাম স্থনয়ন্ত পুরোহিতঃ। মহারথস্থ বাশিষ্ঠ: পুরোধাহভূম**হীভূত:**॥ বুভুজুত্তে স্বরাজ্যানি চত্বারোহপি নরাধিপা:। থনিত্র-চাধিপত্তেষামশেবব**ন্থ**ধাধিপঃ॥ তের ভাত্রশেষের থনিতঃ স মহীপতিঃ। প্ৰজাস্থ চ সমস্তাস্থ পুত্ৰেষিব সদা হিতঃ।। একদা মন্ত্রিণা শৌরিঃ স প্রোক্তো বিশ্ববেদিনা। বিবিকে পৃথিবীপাল কিঞ্চিত্বক্তব্যমন্তি नः॥ যভেয়ং পৃথিবী কৃংসা যক্ত ভূপা শ্লামুগাং। স রাজা তম্ম পুত্র•চ তংপৌলা•চাম্বয়স্তত:॥ ইতরে ভ্রাতরস্তম্ভ প্রাক্ স্বল্পবিয়াধিপাঃ। তংপুত্রশ্চাল্লকস্তস্মাথ তংপৌত্রাশ্চাল্লকালকাঃ ॥ कारलन ज्ञानमानाना श्रुवेश श्रुवेश खड़म्। ক্ষেণপঞ্জীবিনো ভূপ ভবন্তীতি তদষ্যা:॥ নোদ্ধাবং কুরুতে ভাতা ভাতৃমেহবলার্পনঃ। ক্ষেহঃ কঃ পৃথিবীপাশ প্রয়োভ্র্যিত্বভ্রয়োঃ তংপুল্রয়ো: পরতরা মতি**র্ভবতি পার্থিব**। তৎপুল্ৰঃ কেন কাৰ্য্যেন **প্ৰীতিযুক্তো ভ**বিষ্যা অথবা গেন তেনৈব সম্ভোষং কুরুতে নৃপঃ। ক্রিয়তে তৎ কিমর্থন্ত ভূপৈর্মন্ত্রিপরিগ্রহঃ॥ ভুজ্যতে সকলং রাজ্যং মন্ধা তে মন্ত্রিণা সতা তং কিং মুধা ধারয়দে সম্ভোবং কুক্তে যদি কার্য্যনিষ্পাদকং রাজ্যং করণং কর্ত্ত্রিষ্যতে রাজ্যলব্ধি তে কার্য্যং তং কর্ত্তা করণং বয় সোহস্মাভি: করণৈ রাজ্যং পিভূপৈতামহং ব ফলপ্রদা ভবিষ্যাম্য পরলোকে ন তে বয়স্

রাজোবাচ।
জ্যেটো রাজা মহীপাল বয়ং তভাস্জা যতঃ
ততঃ ল ভূঙ্তে পৃথিবীং বয়ঞ্জারবস্করাম্।
বয়স্ক লাতরঃ পঞ্ পৃথী চৈকা মহামতে।
অতোহভাঃ পৃথগৈৰগ্য কথা জ্বং ভবিষা
বিশ্বেহাবাচ।

ি এবমেভত্তবাংস্তত্ত্বদ্যেকা বস্থা নূপ।

তাং ক্ষেবাজিপদ্যস জ্যেষ্ঠ: শাস্ত মহীং ভবাম্॥ সর্কাধিপতাঃ সর্কেভ্যো ভব ক্ষমিবলেখর:। যতস্তে চ বধাহং তে তেবামাহিতমন্ত্রিণঃ॥ রাজোবাচ।

জ্যেচো রাজা বধা প্রীত্যা ভজতেহস্মান্ স্থতানিব কথং ডক্ত করিব্যামি মমস্বং জগতীগতম্ । বিশ্ববেহ্যবাচ।

রাজ্যস্থিতঃ পূজ্জেপা জ্যেটো ভূপাইনৈর্ন । কনিঠজ্যেঠতা কেমং রাজ্যং প্রার্থম্যকাং নৃণাম্॥ মার্কণ্ডেম উবাচ।

তণেতি চ প্রতিজ্ঞাতে ভৃতুজা তেন সন্তম। বিধবেদী ততো মন্ত্ৰী তড়াতুননয়দশম্॥ তেষাং পুরোহিতাংকৈর আত্মনঃ শান্তিকাদিষু। নিবোজয়ামাস ততঃ **থনিত্রস্থাভিচারকে**॥ বিভেদ তম্ভ নিভ্তান সামদানাদিভিত্তপা। চক্রে চ পরমোদেযাগং নিজদগুপ্রসাধনে ॥ আভিচারিকমত্যপ্রমহন্তথনি কুর্কতাম। পুরোধসাং চতুর্ণাঞ্চ জ্ঞে কুত্যাচতুষ্ট্রম্॥ বিকরালং মহাবজুমতিভীষণদর্শনম্। সমুদ্যতমহাশূলং প্রভৃতমতিদারণম ॥ ততন্ত্রণাগতং তত্র খনিত্রো যত্র পার্থিবঃ। নিরস্তঞ্চাপ্য**ছষ্টশু তশু পুণ্য**চয়েন তং ॥ ক্ত্যাচতুষ্ট্রং তেষু নিপপাত ত্রাত্মস্থ। প্ৰোহিতেৰু ভূপানাং তথা বৈ বিশ্ববেদিনি॥ ততো নিহস্ত্যা নিৰ্দগ্ধাঃ কুত্যুগা তে পুরোহিতা: " বিশ্ববেদী তদা মন্ত্রী স শৌরেত্তিমন্ত্রদঃ ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে থনিঅচরিত্রে সপ্তদশাধিকশততমোহধ্যাযঃ।

অফীদশাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--:•:--

মার্কণ্ডের উবাচ।
ততঃ সমন্তলোকস্ত বিশ্বরঃ সোহতবন্মহান্।

বনেককালং নেগুল্ভ পৃথক্পুরনিবাসিনঃ ॥
ততঃ শুশ্রাব নিধানং যাতান্ ভাতৃপুরোহিতান্।

মঞ্জিপ্ক তথা ভাতৃর্প্ধং তং বিশ্ববেদিনম্ ॥
কিমেতদিতি সোহতাব বিশ্বিতো ম্নিসভম।
ধনিজোহতৃন্মহারাজো নাজানাং ভচ্চ কারণম্ ॥
ভিতো বশিষ্ঠং পঞ্জে সু রাজা গৃহ্যাগভন্।

যংকারণং বিনেশুন্তে ভ্রান্থ স্থিপুরে বিহ্নান্থ হৈ ।
তেন পৃষ্টন্ত পাহ বধারতং মহাস্নি: ।
যচ্ছেরিমন্ত্রিণা প্রোক্তং যচ্চ শৌরিক্রবাচ ভম্॥
বথা চাছ্টিতং তেন ভ্রান্ত্পাং ভেদকারি বৈ।
মন্ত্রিণা ভেন ছপ্টেন যচ্চকুন্চ পুরোহিতা: ॥
যন্ত্রিমিন্তং বিনেশুন্তে অপাপস্থাপকারিণ:।
পুরোহিতান্ত রাজ্ঞা শ্রাবিপি দয়পরা:॥
স ভচ্ছুত্বা ভতো রাজা হা হতোহ্নীতি বৈ বদন্
নিনিশান্থান মত্যুগং বশিষ্ঠ স্থাগ্রতো বিজ্ঞা।

রাজোনাচা विद्याप्रश्रुगाप्रः श्रामम्बर्**गाप्रत्माजनम्।** দৈবদোষকৃতং পাপং সর্বলোক্ষরিগ্রিতম। মলিমিতং বিনষ্টং যৎ তদু । ক্ষাণচভুষ্টয়ম। মত্র: কোহন্তঃ পা**পতরো ভবিষ্যতি পুমান ভ**বি ৷ নাভবিষ্যং যদি পুমানহন্ত মহীতলে। ততত্তে ন বিনভোযুর্গম ভ্রাতৃপুরোহিতা:॥ ধিগ্রাজ্যং ধিক্চ মে জন্ম ভূভুজাং মহতাং কুলে কারণতং গতো যোহহং বিনাশশু **ভিজন্মনাম্**॥ কুৰ্বন্তঃ স্বামিনাং তেহৰ্থং ভ্ৰাতৃণাং মম যাজকা:। नानः ययूर्न क्षेतिष्ठ क्रिक्टः नामकात्रत ॥ কিং করোমি ক গচ্ছানি নালো মন্তো হি পাপকুৎ পৃথিব্যামস্তি হেতুত্বং বিজনাশস্ত যো গতঃ॥ ইঅমুদ্ধি**হদয়: থনিত্র: পৃথিবীপতি:** r বনং ষিয়াত্ম পুত্ৰস্থা ক্বতবাদভিষেচনম ॥ অভিযিচ্য হৃতং রাজ্যে ক্পৃসংজ্ঞং মহীপতি:। ভার্য্যাভিত্তিসভিঃ সার্দ্ধং তপদে স বনং ম্যৌ 🗈 তত্র গন্ধা তপত্তেপে বানপ্রস্থবিধানবিৎ। শতানি ত্রীণি বর্ষাণাং সান্ধানি নুপসত্তম:॥ তপদা ক্ষীণদেহস্ত রাজবর্য্যো **ছিলোভম।** নিগৃহ সর্বস্রোতাং বি তত্যাঞ্চাত্র বনেচরঃ॥ ভতঃ পুণ্যান্ যথৌ লোকান্ স্বকামগুন্করান্ h অশ্বমেধাদিভির্যক্তৈরবাপ্যান্থে নরাথিপৈ: ur ভার্য্যাশ্চ তম্ম তান্তিম্র: সমং তেনের ভত্যজু: r প্রাণান বাপু: সমালোক্যং তেনৈব স্থম**হাত্ম**না ॥ এতং থনিত্রচরিতং **শ্রুতং কল্মবনাশন**ম। পঠতাঞ মহাভাগ ক্পভাতে নিশাময় ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ধনিত্র-চরিতং নামাষ্টাদশাধিক-

न ठ उद्यारशातः॥

## একোনবিংশত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--0:0 --

### মার্কণ্ডেয় উবাচ।

কুপ: ধনিত্রপুদ্রন্ত প্রোপ্য রাজ্যং যথা পিতা।
তবৈব পালয়ামাস প্রক্রা ধর্মেণ রঞ্জয়ন্॥
স দানশীলো যতা চ যজ্ঞানামবনীপতিঃ।
সমঃ শত্রে চি মিত্রে চ ব্যবহারাদিবস্থানি॥
একদা স মহীপালো নিজস্থানগতো মুনে।
স্তৈরেক্তেন যথা পূর্বং কুপো রাজা তথাভবং॥
বন্ধান্তনয়ঃ পূর্বং কুপোহভূৎ পৃথিবীপতিঃ।
যাদৃক্ চরিতমভাসীৎ তাদৃক্ তভেত্ব চেষ্টিতম্॥
রাজোবাচঃ

শ্রোত্মিচছামি চরিতং ক্ষুপশু স্থমহাত্মনঃ। যদি তাদৃশ্বয়া শক্যং ক্ষেত্ত্থ তৎ করোম্যহম্॥ স্থতা উচুঃ।

স চক)রাকারান্ ভূপ রাজা গোবাক্ষণান্ পুরা। ষষ্ঠাংশেন ক্বতা চোর্ক্যামিষ্টিন্তেন মহাত্মনা॥ রাজোবাচ।

তেষাং মহাত্মনাং রাজ্ঞাং কোহন্থ্যাস্থতি মধিওঃ
তক্ষাপুহক্ষটেটোনাং চেষ্টাস্দ্যমবান্ ভবেং ॥
তচ্চু য়তাং প্রতিজ্ঞা যা সাম্প্রতং ক্রিয়তে ময়া।
ক্পস্তাহুকরিয়ামি মহারাজস্ত চেষ্টিতম্ ॥
ত্রীংস্ত্রীন্ যজ্ঞান্ করিয়ামি শস্তাপাতে গতাগতে
পৃথিব্যাং চতুরণায়াং প্রতিজ্ঞেয়ং ক্বতা ময়া॥
যঞ্চ গোরান্ধণাঃ পূর্কমদদন্ ভূভতে করম্।
ভমেব প্রতিদাস্থামি রান্ধশানাং তথা গবাম্॥
মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ইতি প্রতিজ্ঞায় বচঃ ক্ষুপন্তৎ ক্বতবাংতথা।
শহাপাতে স যজাংগ্রীন্যজন্যজ্ঞাং বরঃ ॥
পোরান্ধণাঃ পুরা রাজ্ঞামদদন্ যঞ্চ বৈ করম্।
তাবৎস্ক্র্যমদাদ্বিজ্ঞান্ধলারান্ধণায় সং ॥
তহ্য পুরোহভবদীরঃ প্রমণায়ামনিন্দিতঃ।
যক্ত প্রতাহভবদীরঃ প্রমণায়ামনিন্দিতঃ।
যক্ত প্রতাহভবদীরঃ প্রমণায়ামনিন্দিতঃ।
যক্ত প্রতাহভবদীরাভাগে ক্বতা বল্লা মহীভ্তঃ॥
তহাপি নন্দিনী নাম বৈদ্বতী দ্বিতাভবং।
বিবিংশং তনরং তহ্যাং জনরামাস স প্রভুঃ॥
বিবিংশে শাস্তি মহীং মহীপালে মহৌজসি।
মহীতলমভ্ব্যাপ্তং নিরস্তর্বস্থা নবৈঃ॥
বর্ষ কালে পর্জ্জােমহী শক্তবতী তথা।
ক্ষিদ্বানি চ শক্তানি রসবন্ধি ফ্বানি চ॥

রসাঃ পৃষ্টিকরান্টাসন্ পৃষ্টির্নোক্সাদকারিবী।
ন বিত্তনিচরা নৃণাং প্রভৃতা মদহেতবঃ ॥
তৎপ্রতাপেন রিপবো ভরমাপুর্মহামূনে।
আত্যকৈব স্থল্ভর্গো মুদ্মিষ্টাং তথৈব চ ॥
ইষ্ট্রা স যজ্ঞান্ স্থবহুন্ সম্যক্ সম্পাল্য মেদিনীম্
সংগ্রামে নিধনং প্রাপ্য শক্রলোকমিতো গতঃ ॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে বিবিংশচরিতে
একোনবিংশত্যধিকশততমোহধ্যারঃ ॥

বিংশত্যধিকশত**তমোহধ্যা**য়ঃ।

-----

মার্কণ্ডেয় উবাচ।

তম্ম পুলঃ থনীনেত্রো মহাবলপরাক্রমঃ। যতা য**তেজ্বগায়ন্ত গন্ধর্কা বিন্ময়ান্বিভা:** ॥ থনীনেত্রসমো নাত্যো ভুবি যঙ্কা ভবিষ্যতি। তেন যজাযুতে পূর্ণে দতা পৃথী সসাগরা। দত্বা চ সকলাং পৃথীং আহ্মণানাং মহাত্মনাম্। তপসা দ্রব্যমাসান্য মোচয়েৎ সাধিতেন যঃ॥ যতক প্রাপ্য বিত্তবিষয়ত্বাং দাতৃসভ্তমাৎ। জগৃহত্রাহ্মণা বিপ্র নাম্রাজ্ঞ: প্রতিগ্রহ্ম ॥ সপ্তবষ্টিঞ দোযজান্যজ্জুরিদক্ষিণান্॥ অপুত্র: স মহীপালো মৃগয়ামুপচক্রমে। পুত্রার্থং পিতৃষজ্ঞার মাংস্কামে। মহামুনে 🖟 অশারঢ়ো বিনা দৈল্যমেক এব মহাবনে। বদ্ধবোধাঙ্গুলিতাণো বাণখড়গধহুর্দ্ধরঃ॥ তং বাহয়স্তং তুরগমন্ততো গ**হনাদ্বনা**ৎ। বিনিজ্ঞান্য মুগঃ প্রাহ মাং হ্ডাভিম্তং কুরু॥ রাজোবাচ।

অত্যে মৃগাঃ পলায়ত্তে মহাজীত্যা বিলোক্য মান্ কথমাত্মপ্রদানং বং মৃত্যবে কর্ত্মিচ্ছসি॥ মৃগ উবাচ।

जन्दलांश्टः महातां क तृशा अन्य अदाखनम्। विठातसन् न भणामि आनानाभित्र धातनम्॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
অপাত্যেত্য মৃগঃ প্রাহ তমজো বস্থাধিপম্।
মৃগস্ত তম্ম প্রত্যক্ষমলমেতেন পার্থিব ॥
ঘাতরস্থেতি মাং মাংসৈর্থাম কর্ম্ম সমাচর।
মুণা কুতার্থতা তে স্থান্ম চাপ্যুপকারি তং ॥
প্রার্থ ত্বং মহারাজ স্থপিতৃন্ মই মিচ্ছিলি।

অপ্ৰভাভ মাংবেন লক্ষ্যেরে বাঞ্জিং কথম্॥

যাদৃক্ কর্ম বিনিক্সাদ্যং তাদৃগ্ডব্যম্পাহরেং।

হুর্গকৈন স্থানানাং গন্ধজ্ঞানবিনিগয়ঃ॥

রাজোবাচ।

বৈরাগ্যকারণং প্রোক্তমনেনাপুত্রতা মম। কথ্যতাং প্রাণসস্ত্যাগে যৎ তে বৈরাগ্যকারণম্॥ মৃগ উবাচ।

বহবো মে স্থতা ভূপ বহেব্যা ছহিতরস্তথা। যচ্চিন্তাত্বংথদাবাগিজালামধ্যে বসাম্যহম। সর্ক্ষাধ্যা নরেক্তেরং মৃগজাতিঃ স্থকাতরা। তেম্বপত্যেষু মে চাতিমমত্বং তেন হুঃথিতঃ॥ মহুষ্যসিংহশাদ্ লবু কাদিভোগ বিভেম্যহম। হীনাদ্যৎ সর্বসত্ত্বেড্যঃ শ্বশৃগালাদপি প্রভো॥ সোহং নিমিতং বন্ধুনামিমাং শৃত্যাং বস্থারাম্। নৃসিংহাদিভয়াং সর্বামিচ্ছামি স্থভূশং সরুৎ॥ তৃণাগ্রন্থেহপি থাদন্তি গোহজাবিত্রগাদিকাঃ। তাংত্তেষাং পোষণায়াহমিচ্ছামি নিধনং গতান। নিক্রান্তেষু ততত্তেষু মমাপত্যেষু বৈ পৃথক্। ভব**স্তি চিস্তাঃ শতশো মম্বা**র্তচেত্সঃ॥ কিং কৃটপাশং কিং বজ্ঞং বাগুরাং কিং স্থতো মম প্রাপ্তকরন্ বনে কিং বা নৃসিংহাদিবশং গতঃ ॥ প্রাপ্তোহয়মেক: সম্প্রাপ্তাত্তেহবস্থাং কীদৃশীং মম সাম্প্রতং বিচর**ন্তো বৈ** যে গতাঃ স্থমহাবনম্॥ <sup>দৃষ্ট</sup>াপান মমাভ্যাসমহং তানামুজান্ নূপ। <sup>ঈষত্চহ</sup>, সিতঃ কেমমীমিচ্ছামি রজনীং পুনঃ॥ প্রভাতে দিবসং ক্ষেমমন্তগেহর্কে নিশামপি। বাস্থাম্যহং কদা ক্ষেমং সর্বাকালং ভবিষ্যতি॥ এতং তে কথিতং ভূপ মমোদেগতা কারণম। অতঃ প্রসাদং কুরু মে বাণো২য়. পাত্যতাং ময়ি <sup>ইতি</sup> হঃথ**শতাবিষ্টঃ প্রাণানপি** ত্যজামি যৎ। তংকারণং নিবোধ **ত্বং** ক্রবতো মম পার্থিব ॥ অপ্র্যা নাম তে লোকা যান্ গচ্চস্তাত্মথাতকা: <sup>যজোপযুক্তাঃ পশবঃ সম্প্রয়াস্ক্রাচ্চ্</sup>তীঃ প্রভো ॥ অগ্নি: পশুরভূৎ পূর্বাং পশুরাসীজ্জলাধিপ:। ভাষানথোচ্ছি তী: প্রাপ্তো বঁজে নিষ্ঠামুপাগত: ज्यारेमजाः क्रुणाः क्रुषां नम्र मामूब्हिः जिः नृशः। আত্মনশ্চেশিতং কামং পুত্রলাভাদবাপ্যাসি॥

পূর্বমূগ উবাচ। রাজেন্দ্র নৈব হস্তব্যো ধন্তোহরং স্কৃতী মৃগ:। <sup>বহবন্তনরা</sup> যক্ত হস্তব্যোহ্যমসন্ততি:॥ উত্তরমূগ উবাচ।

একদেহতবং যক্ত হংথং ধক্ত: স বৈ ভবান্।
বহুনি যক্ত দেহানি তক্ত হংথাক্তনেকধা॥
একো যদাহমাসন্ত প্রাক্ত তদা দেহজং মম।
হংথমাসীলমতে তু ভার্যাদাতদভূদ্ধা॥
যদা যাতাক্তপত্যানি তদা বাবন্তি তানি বৈ।
তাবচ্ছরীরভূমীণি মম হংথাক্তথাত্বন্॥
ন ক্তার্থো ভবান্ যক্ত নাতিহংথায় সন্তব:।
ইহ হংথায় মৎস্তিঃ পরত্র চ বিরোধিনী॥
যতো রক্ষণপোষার্থমপত্যানাং করোমি তৎ।
চিত্তমামি চ সভ্তিত্তন মে নরকে প্রবা॥

রাজোবাচ। ন বেশ্মি কিং সস্তুতিমান্ ধত্যোহপুত্রোহত্ত কিং মুগ।

পূত্রার্থকারমারজো মম দোলারতে মন:॥

হঃথার সস্ততিঃ দত্যমৈহিকামুম্মিকার তৎ।

তথাপ্যতনরান্ যান্তি ঋণানীতি শ্রুতং ময়।॥

সোহহং যভিষ্যে পূত্রার্থমৃতে প্রাণিবধং মৃগ।

তপদৈব প্রচণ্ডেন যথা পূর্বং মহীপতিঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে ধনীনেত্র-চরিতং নাম বিংশব্যধিকশত-তবোহধ্যার:।

একবিংশত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--:•:--

## ৰাৰ্কণ্ডের উবাচ'।

ততঃ স নৃপতির্গদা গোমতীং পাপনাশিনীম্।
তত্র তুটাব নিয়তো ভূদা দেবং প্রশরম্।
তপ্যমানতপদোত্রাং যতবাকারমানসঃ।
তৃষ্টাব প্রয়তঃ শক্রমপত্যার্থং মহীপতিঃ।
তত্ত ভোকেণ তপসা ভক্তা চাপি স্বরেশরঃ।
ত্তোষ ভগবানিক্রঃ প্রাহ চৈনং মহামূনে।
অনেন তপসা ভক্তা ভোকেশোক্রারিতেস চ।
পরিতৃটোহিমি তে ভূপ বিষ্কাং ভবতা বরঃ।
রাজোবাচ।

অপ্ত্ৰস্ত হতো মেহত্ত সৰ্কশল্পতাং বরঃ। সদা চাব্যাহতৈখবোঁঃ ধর্মকুম্প্রবিৎ কৃতী॥

মার্কণ্ডের উবাচ। তথেতি চোক্ত: শক্তেণ রাঞ্চা প্রাথমনোরধ:। প্রকাঃ পালমিতুং ভূপ আৰুগাম নিজং পুরম্॥ ত্তাভ কুর্মতো যক্তং সমাক পালয়তঃ প্রভাঃ। অঞ্যায়ত হুছো বিপ্ৰ তদা শত্ৰু প্ৰসাদত:॥ তক্ত নাম পিতা চক্তে বলাশ ইতি ভূপতি:। অপ্রতামমশেষঞ্চ গ্রাহ্যামাস তং স্থতম্॥ পিতর্যুপরতে বিপ্র সোহধিরাজ্যে স্থিতো নৃপঃ স বলাখো বশং নিন্যে ভুবি সর্ব্যতী ক্ষিত:॥ করঞ্চ দাপরামাস সার্প্রহণপ্রক্রম। স সর্বভূমিপান্ রা**জা পালয়ামা**দ চ প্রজাঃ॥ অথাথিলনরে<del>ক্রান্তে দায়াদান্ততা</del> হুর্ম্মদাঃ। ন চাভ্যুথায় সততং তে চাম্মৈ প্রদত্য করান্॥ ব্যথিতা: স্বেষ্ রাষ্ট্রেষ্ ন সম্ভোষপরাস্ততঃ। ভুবং তম্ম নরেক্রন্থ জগৃহত্তে নরাধিপাঃ॥ স গৃহীত্বা স্বকং রাজ্যং পৃথিবীশোহবলো মুনে। তত্থে স্বনগরে ভূপৈর্বিরোধো বহুভিঃ ক্বতঃ। সমেত্য স্থমহাবীর্যা: সসাধনধনান্ততঃ। ককপুন্তং মহীপালং পুরে তত্ত নরেখরাঃ॥ পুররোধেন তেনাথ কুপিতঃ স মহীপতিঃ। অলকোষোইলদওশ্চ বৈক্লব্যং প্রমং গতঃ ॥ অপশ্রমানঃ শরণং সবলো বিজসন্তম।

ধৃতরোঃ কররোর্জজে বততভারিদাহদম্।
বলং করন্ধনতথাৎ স বলাখোহভিধীয়তে॥
স ধর্মাত্মা মহাত্মা চ স মৈত্রঃ সর্কজন্তুরু।
করন্ধনাহতবত্তুপরিবু লোকের বিশ্রুতঃ॥
সম্প্রাপত প্রামার্তিং দ্লাবরিবিনাশনম্।
বলং ধর্মেশ চাকিগ্রম্ভাপেত্য স্বয়ং নৃপঃ॥

করৌ মুথাগ্রত: কৃতা নিশ্খাসার্ভ্যানস:॥

ততো হস্ত হস্ত বিবরা মুখানিল সমাহিতাঃ।

নিৰ্জ্জগ্যু: শতশো বোধা রথনাগতুরসমা: ॥

তত: কণেন তৎ মুর্বং নগরং তম্ম ভূপতেঃ।

वाशियातीवटनोटचन नाटत्रवाजिबनान्दन ॥

**জিড়া চ বর্ণমানীয় চকা**র ক্রদান পুনঃ।

যথা পূর্বং মহাভাগ মহাভাগ্যো নরেশ্বর:॥

অথ সোহতিবলোখেন মহত। তেন দংবৃতঃ।

নির্মা নগরাৎ তথাৎ তান্ বিজিগো নরাধিপঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রাণে করন্ধন-চরিডা নাম একবিংশত্যধিকশত-তমেহিধ্যায়:। ত্ৰদাবিংশত্য**ধিকশততমোহধ্যায়ঃ**।

--:0;--

নাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

বীর্য্যচন্দ্রস্থতা স্থলকীরা নাম গুভবতা। স্বয়ংবরে সা জগৃহে মহারাজং করন্ধম**ন্**॥ তভাং পুলং স রাজেলো জনয়ামাস বীর্যাবান। অবীঞ্চিত্রিতি থ্যাতিমুপেতং জগভীতলে 🗈 জাতে তন্মিন্ স্থতে রাজা স দৈবজ্ঞানপৃচ্ছত। কচিং প্রশস্তনক্ষতে শস্তলগাে স্বতো মম: 🛭 কচিচিচালোকিতং জন্ম সম পুত্রস্ত শোভনৈ:। াহৈঃ কচ্চিন্ন ছ্টানাং গ্রহাণাং দৃক্পথং গ্রু ইত্যুক্তান্তেন দৈবজ্ঞান্তমূচুনু পিতিং ততঃ। শত্তে মুহুর্ত্তে নিক্ষত্রে লগে চৈব স্থতন্তব া সমুৎপলো মহাবীর্ঘ্যো মহাভাগো মহাবল:। ভবিষ্যতি মহারাজ মহারাজস্তবাত্মজঃ॥ অবৈক্ষতেমং দেবানাং গুরুঃ শুক্রঞ্চ সপ্তমঃ।' সোমশ্চতুর্থস্তন্য়ং তবৈনং সমবেক্ষতে॥ উপাস্তদংস্থিতকৈব সোমপুত্রোহপ্যবেক্ষতে। নাবৈক্ষতেমং সবিতা ন ভৌমো ন শনৈশ্চর: ॥ তব পুলং মহারাজ ধ্যোহয়ং তনয়ন্তব। সর্বকল্যাণসম্পত্তিসমবেতো ভবিষ্যতি॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

মার্কণ্ডের উবাচ।
ইতি দৈবজ্ঞবচনং নিশম্য বৃষ্ণাধিপঃ।
হর্ষপূর্ণমনাঃ প্রাহ নিজস্থানগতন্ত্রদা ॥
অবৈক্ষতেমং দেবানাং গুরু: ।
নাবৈক্ষতেনমাদিত্যো নার্কস্থর্ন ভূমিজঃ॥
অবৈক্ষতেতি যৎ প্রোক্তং ভবস্তির্ক্হশো বচঃ।
অবীক্ষতেতি তেনাশু ধ্যাতং নাম ভবিষ্যতি।
মার্কণ্ডের উবাচ।

অবীক্ষিতঃ স্বতন্তত্ত্ব বেদবেদার্গপারগঃ।
অন্ত্র্যামমশেষং স কণুপুলাদণাগ্রহীৎ ॥
স রূপেণাতি ভিষজৌ দেবানাং পার্থিবায়ুজঃ।
বৃদ্ধা বাচস্পতিং কান্ত্যা শশাক্ষং তেজ্ঞসা রবিশৃ।
বৈর্যোণানিং তথোঁকর্নীঞ্চ সহিস্কৃত্বেন বীর্যাবান্।
শৌর্যোণ ন সমন্তত্ত্ব কন্চিদাসীম্মহাত্মমঃ॥
স্বাংবরে তং জগৃহে হেমধর্মাত্মজা বরা॥
স্বন্বতন্মা পৌরী স্তভ্রা বলিনঃ স্বতা॥
লীলাবতী বীরস্কৃতা বীরজ্ঞুস্তা নিজ্ঞা।

ভীমান্মজা মান্তবতী দম্ভপূতী কুমুৰতী 🛚

যাকৈবং নাভিনন্দন্তি স্বয়ন্বরক্লতক্ষণাঃ। তাশ্চাপি স বলাধীরো জগ্রাহ নুপতে: স্বত: ॥ নিরাক্ত্য দুপান সর্কাংস্তাসাং পিতৃকুলানি চ। স্বকং হি বীৰ্য্যমাশ্ৰিত্য বলবান্দ বলোদ্ধতঃ ॥ একদা তু বিশালস্ত বৈদিশাধিপতেঃ স্থতাম। বৈশালিনীং স স্থদতীং স্বয়ম্বরকৃতক্ষণাম ॥ প্রিভুয়াখিলান্ ভূপান্ স্কেছ্য়া ন বৃত্ত্যা। বলাজ্ঞগ্রাহ বিপ্রধে যথাতা বলগর্মিতঃ॥ ততত্তে ভৃভৃতঃ সর্কে বছশস্তেন মানিনা। নিবাক্তাঃ স্থানিবিধা প্রোচুরভোতামাকুলাঃ॥ ক্ষমতাং ললনামেতামেকস্মারলশালিনাম। বহুনামেকবর্ণানাং জন্ম ধিথো মহীভূতাম ॥ ক্তিয়ো যঃ ক্ষততাণং বধ্যমানস্ত হুর্দ্মদৈঃ। করোতি তম্ম **তরাম বৃথৈবান্তে হি বি**ভ্রতি॥ আয়নোহপি কত্ত্রাণং ছ্টাদমাদকুর্বতাম। ভবতাং ক্ষত্রিয়কুলে জাতানাং কীদৃণী মতিঃ ॥ উচ্চাৰ্য্যতে স্তুতিৰ্যা চ স্থতমাগধৰ নিভি:। সা সত্যা মা রুখা বীরা ভবত্ররিবিনাশনাং ॥ চরতাং মা রুথৈবৈষাং ভূপশব্দো দিগস্তরে। পৌরুষাশ্রমণঃ শ্রেষ্ঠাঃ বিশিপ্তকুলসম্ভবাৎ ॥ বিভেতি কো ন মরণাৎ কো যুদ্ধেন বিনামরঃ। বিচিক্ত্যৈতন হাতব্যং পৌক্ষং শস্ত্রবৃত্তিভিঃ 🖪 এতরিশম্য তে ভূপা বিস্পষ্টামর্যপূরিতাঃ। উচুঃ পরস্পর সর্কে সমুত্তস্কু সায়্ধাঃ॥ কেচিদ্রথানাকরুছঃ কেচিন্নাগাংস্তথা হয়ান। অন্তেইমর্ধপরাধীনাস্তমুপেতাঃ পদাত্যঃ ॥

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপ্রাণেথ্বীক্ষিত-চরিতে অন্বাবিংশত্যধিক-তমোংধ্যায়ঃ।

অয়োবিংশত্যধিকশতত্তমোহধ্যায়ঃ।
—-ঃ৽—

মার্কণ্ডেম উবাচ।
ইতি সংগ্রামসজ্জান্তে ভূপা ভূপস্থতান্তথা।
নিরাক্কতা স্ববহুশন্তংকালকাপ্যবীক্ষিতা॥
ততো বভূব মংগ্রামন্তক্ত তৈঃ সহ দাক্ষণঃ।
একত বহুজিভূ শৈভূ পপুত্রবরৈর্দ্ধনা।
তেইসিশক্তিসদাবাণপাণ্যতং স্ক্র্দাাঃ।
অভিম্বতো ব্র্ধিরে তৈঃ সমক্তির্দাবিণি॥

म जान् भत्रभरेकऋदेशिकिटकम नूशनकानः। কতালো বলবান বাণৈত্তে চ তং বিভিত্ন: নিতৈঃ কভ চিচ্চিচেছেদে বাছমগ্রন্থ চ শিরোধরম্। স্পি বিব্যাধ চৈবাগুমন্তং ব**ক্ষন্তভাড়রং।** করং চিচ্ছেদ করিণস্থরগত তথা শির:। তথাতে ষাং তথৈবাখান্ রথভাতত সার্থিম্ ॥ বাণানাপততশ্চক্ৰে দ্বিধা বাগৈক্তথা দিবাম। চিচ্ছেদাগুস্থ খড়াঞ ধহুরগুস্থ লাঘবাং॥ তন্ত্ৰেহপহতে তেন ননাশাক্সো নূপাক্ষঃ। ম্বীক্ষিতাহতশ্চাতঃ পদাতিঃ প্রজাহী রণ্মু॥ ইত্যাকুলীকতে তম্মিন্ সমগ্রে রাজমণ্ডলে। তস্থা প্রস্থাতা বীরা মরণে ক্রতনিশ্চরা:॥ আভিজাত্য বয়ঃ শৌর্যালক্ষা ভারসম্বিতা। নিৰ্জ্জিতে সকলে সৈত্তে পলায়নপরায়ণে॥ তৈঃ সমেত্য মহীপালৈ: म তু পুলো মহীভৃত:। যুযুধে ধর্মাযুদ্ধেন তেন তেনাতিকোপিত:॥ বিশিছিলযন্ত্ৰক বচানুস তানপি মহাবলঃ। কর্ত্তিব্যব্জিতজ্ঞেচ ততঃ কুশ্ধা মহামুনে॥ धर्मभूररुका यूयूधूर्य धर्मातनम धर्माछः। নরেন্দ্রপ্রা: প্রমেদজলক্রিয়াননা: সমষ্॥ विवाध कन्ठिषारभोटेचः कन्ठिकिटाइम कार्या कम् ধ্বজমস্তাপরো বাগৈ**শ্ছিরা ভূমাবপাতরং**॥ জঘুরতো তথৈবাখান্ বভঞ্চাপ্তরে রথম। গদাপাতেনাথ বাজে বাণৈ: পৃষ্ঠমভাড়য়ন ॥ ছিলে ধহুষি সক্রোধঃ স তদা নুপতে: স্বত:। জগ্রাহাদিং তথা চর্ম্ম তদপ্যস্তোহম্বপাতরং॥ किञ्जानिष्या अधार न गनाः गनिनाः वतः। তামপ্যক্তঃ ক্রপ্রেণ চিচ্ছেদ কুত**হস্তবৎ** ॥ অন্তে শরসহস্রেণ শতেনান্তে নরাধিপা:। বিভিত্ন: কোষ্ঠকীকৃত্য ধর্মযুদ্ধপরাৰুখা: ॥ স বিহৰণ: পপাতোর্ক্যামেকো বছভির্দ্দিত:॥ রাজপুলা মহাভাগা ববনুকোঁ চ তং ওত:।। তমধর্মেণ তে সর্বে গৃহীতা নূপতে: স্বভম্। विभारतन मभः तां का देविन विविधः भारम ॥ হাটা: প্রমূদিতা বন্ধং তমানার নৃপাত্ম**ল**। স্বয়ংবরা চ সা কস্তা লাড়া ভেন ভাত: পুর: ॥ পুন: পুনক পিতোকা ভবাবি চ পুরোধসা। আলহাতামিতি বরো বল্ডে রাজন্ম রোচতে 🖟 यका ना मानिमी किका अधार वहर मूटम । তদা পঞ্জছ দৈৰজ্ঞ বিবাহার্থং নরেশর: 🛭

বিশিষ্টতরমেত্তা বিবাহায় দিনং বদ। আলৈতদীদৃক্ সঞ্জাতং যুদ্ধং বিছোপপাদকম্॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

ইতি পৃটো নরেক্রেণ স দৈবজ্ঞা বিমৃষ্য তং।

দুর্ম্মনাঃ প্রাহ বিজ্ঞাতপরমার্থো মহীপতিষ্॥

ভবিষ্যস্ত্যপরাণীহ দিনানি পৃথিবীপতে।
প্রশন্তলগ্যুক্তানি শোভনান্সচিরেপ চ॥

করিষ্যতি বিবাহার্থং তেষু প্রাপ্তেষু মানদ।

অলমেতেন য্ত্রায়ং মহাবিদ্ধ উপস্থিতঃ॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণেহবীক্ষিত-চরিতে এরোবিংশত্যধিক্শত-ভমোহধ্যার:।

**চতুर्क्वः শ**ত্যধিক শতত সোহধ্যায়ঃ।

--:\*:---

মার্কণ্ডের উবাচ।

তত: শুশ্রাব তং বদ্ধং তনরং স কর্দ্ধম:। তশ্ব পদ্দী তথা বীরা অন্তে চাপি মহীভৃত:॥ তমধর্মেণ তনয়ং বন্ধং শ্রুত্বা মহীপতি:। সমক্তে: পৃথিবীপালৈশ্চিরং দধ্যে মহামুনে ॥ কেচিদ্চৃশহীপালা বধ্যা: সর্বে মহীভূতঃ। रियद्यकः मःयूरश रकः ममटेखटेखद्रधर्म्यजः॥ যুজ্যতাং বাহিনী শীষ্ত্রসূত্রতৈঃ কিমাক্সতে। বিশালো বধ্যতাং ছইস্তত্ত যেহত্তে সমাগতাঃ 🗈 অন্তে তথোচুর্ধর্মোইত ত্যক্তঃ পূর্কমবীকিতঃ। অস্তায়েন বলাদ্যেন গৃহীতা তমবাস্থতী। স্বয়ংবরে**ঘশেষেরু তেন রাজস্থ**তান্তদা। থ**লীত্বতান্তত: সর্কে সমেত্য স**্বশীস্কৃত: ॥ তেষামেতৰচঃ শ্রুষা বীরা বীরপ্রজাবতী। বীরগোত্রসমূত্তা বীরপদ্দী প্রহর্ষিতা। উবাচ ভর্তঃ প্রত্যক্ষত্তেষাঞ্চ মহীকিতান্॥ ভত্তং কৃতং ভত্তভুজা মম পুত্ৰেণ পাৰ্থিবা:। গৃহীতা **যঘলাৎ কন্তা জিতা সর্ক্ম**হীক্ষিত: 🛭 **उनर्थः यूधामात्नारुषः यूक्ष এका न धर्मा**जः। जनभाज्य १ ज्ञास्को मट्य ना भहत्र श्राम्। **এতদেব वि (शोक्क्याः वनधर्णवनावतः।** नीकिः म भनत्रकावः विचाः छतिव दक्षती है यगःवताम विमाता मन श्राता कष्टकाः। ৰহ্মো গৃহীতা ভূপানাং প্রতাম্তিমানিনাৰ্।। ক ক্জিয়কুলে জন্ম ক যাচ্ঞা হীনসেবিতা। বলাদেব সমাদত্তে ক্ষত্রিয়ো বলিনাং পুর:॥ লোহশৃত্যলবদ্ধা বা ন বশং যান্তি কাতরা:। প্রসহকারিণো যান্তি রাজানো ধর্মশালিন: ॥ তদলং দৌর্নভেন শ্লাঘ্যমেবান্ত বন্ধনম্। যুমাকমপ্যাব্ধানামক মৃদ্ধন্ত পাতনম্॥ ষ্ঠ ৈত্যব পৃথিবাশানাং পৃথী পুত্রাদিকং বস্থ। ভার্য্যা চার্য্যনিমিত্তানি ততো যাতানি গৌরবম॥ তৎ স্বৰ্যতোং রশায়াণ্ড স্থন্দনান্তধিরোহত। সজ্জীকুকত নাগাখমচিরেণ সসার্থিম। মন্তথ্যং কিং মহীপালৈর্বান্ডভিঃ সহ বিগ্রাহ্ম । প্রভূতা এব তোষায় শ্রন্থাল্লরণে ক্রিয়া:॥ কম্ম নাল্লেরু দামর্থং নরেক্রাদিষু জায়তে। যেভ্যোন বিদ্যতে ভীতিঃ কাতরশ্রাপি শত্রুষ্ব। ব্যাপ্রলোকান্ সমস্তান্ যো হুভিভূয় যতো নর:। ব্যরোচতেতি শ্রঃ স তমাংসীব দিবাকর:॥ মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ।

ইত্থমুদ্ধবিতে। রাজানয়া পত্না ক্রন্ধম:। চকার স বলোদ্যোগং হস্তং পু<u>লাহিতান্ মুনে ॥</u> তিতস্তে সমং ভূবৈপরিশালেনে চ সঙ্গরঃ। বভূব বন্ধপুল্লভা তৈরশেধৈশৃহামুনে॥ দিনত্রমভূদ্যুক্ষং তেন রাজা সমং তদা। করস্কমেন ভূপানাং বিশালস্তামুকুর্বতাম্॥ যদা পরাজয়প্রায়ং তং সর্বং ভূপম্ওলম্। -তদা বিশালোংঘ্যকর: করন্ধমমুপাস্থিত:॥ করন্ধমোহপি সম্প্রীত্যা তেন রাজ্ঞাভিপুঞ্জিত:। বিমুক্তে তনয়ে তত্ৰ নিশাং তাং স্থথমাবসং॥ তাঞ্চ কন্তামুপাদায় বিশালে সমুপস্থিতে। **অবীক্ষিৎ প্রাহ বিপ্রর্ধে বিবাহার্থং পিতৃঃ পুরঃ**।। নাহমেতাং গ্রহীষ্যামি ন চান্তাং যোষিতং নূপ। পরৈর্যসা নিরীক্ষন্ত্যাঃ সংগ্রাদে২হং পরাজিতঃ 🛚 অন্তব্যৈ সম্প্রহচ্চেমামিরঞান্তং বুণোডু তম্। অথণ্ডিতযশোবীর্য্যো যঃ পরৈর্নাপমানিতঃ। পরে: পরাজিতোহহং যৎ কাতরেয়ং যথাবলা। কিমত মানুষত্বং মে ন তন্তা মম চান্তর্ম ॥ স্বতন্ত্রতা মহুষ্যাণাং পর্তন্ত্রা সদাবলা। নরোহপি পরত**রো বন্তত কীলুমুত্**ব্যতা॥ সোহহমক্তা মুধং ভূলো দৃষ্টং দর্শব্বিতা কথস্। যোহ্যমন্তা: পুরো ভূমৌ পরেভূ পে: বিলীক্ত:। ইত্যুক্তে ডেন তনন্নাসুবাচ জগতীপতিঃ।

শ্রুতং তে বচনং বৎসে বদতোহক মহাত্মনঃ॥
বররাক্তং পতিং তত্র মনতে রমতে গুডে।
বৃদ্ধং বাসং প্রযাফানো যত্মিংক্তমিংক্তবাদৃতাঃ।
এত্রোফে কমাতিষ্ঠ মার্গরো ফচিরাননে॥
কলোবাচ।

পরাজিতোহরং বছভির্ন সমাক্ সমাগাচরন্।
সংগ্রামে যাল্বশোবীর্যাহানিকারিনি পার্থিব ॥
একো বছুনাং যুদ্ধার গতানামিব কেশরী।
যৎ সংস্থিতঃ পরং শৌর্যাং তেনান্ত প্রকটীরুতম্ ॥
ন কেবলমরং তত্থো যুদ্ধে তে২প্যথিলা জিতাঃ।
বচশোহনেন যৎ তেন বিক্রমোহিল প্রকাশিতঃ॥
শৌর্যাবিক্রমসংযুক্তমিমং সর্কমহীক্ষিতঃ।
ধর্ম্মন্ধর্মেণ জিতবস্তোহক কা ক্রপা॥
ন চাপি রূপমাক্রেহং লোভমন্ত গতা পিতঃ।
শৌর্যাবিক্রমধৈর্যানি হরস্তান্ত মনো নম॥
তৎ কিমুক্তেন বছনা বাচ্যতাঃ মৎক্তে নূপাঃ।
ঘ্যা মহাযুভাবোহয়ং নাল্যো মে ভবিতা পতিঃ॥

### বিশাল উবাচ।

রাজপুত্র স্থতা প্রাহ্ন মনৈতচ্ছোভনং বচং।
এবকৈব দ্বা ভূল্য: কুমারো ন মহীতলে॥
অবিস্থাদি তে শৌর্যামতীব চ পরাক্রমং।
পাবরাস্থক্লং বীর ছহিতুর্মে পরিগ্রহাৎ॥
রাজপুত্র উবাচ।

রাজবাদ্ধ ভবাচ। নাহমেতাং গ্রহীষ্যামি ন চাঞাং যোষিতং নূপ। আরফোব হি মে বৃদ্ধিঃ জীময়ী মন্তুদেশব॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ভিতঃ **ক্রন্মঃ প্রাহ প্**রেরং গৃহতাং স্থা। বিশালভনারা হাজাস্থ হিচাদিবতী দৃঢ়ম্॥

রাজপুত্র উণাচ । নাবাভঙ্গঃ কদাচিং তে কুতপুর্বেল। মৰা প্রতাে। তথাজাপর মাং ভাত যথাজাং করবানি তে ॥ মার্কণ্ডের উথাচ।

মত। স্তনিশ্চিত্তমতো তি সান্বাজস্তে স্তাম্। তাম্বাচ বিশালোহণি বাাক্লীকৃতমানসঃ ॥ নিবঠাতাং মনঃ পুল্লি এতসাচ্চ প্রোলনাং। অভংবরঃ ভঠারং সস্তানেকে নৃণাত্মলাঃ॥

#### কক্ষোৰাচ।

<sup>বরং</sup> র্ণোমাহং ভাত মামেষ যদি নেছতি। <sup>তপ্ৰো</sup>হ**ভো ন নে ভর্ত। অলুক্ত**িলন্ ভবিয়তি॥

भार्क एक के बाह **७०: क्वक्राया बाका विभारतम मुमः भूता ।**. श्रिषा पिनवार उव निवासका। यस भी অবীক্ষিতে।হপি তেনৈৰ পিজাক্তৈশচ নরাধিলৈ: নিদর্শ দৈ: পুরারুটেত্ত: সাজিতে। ছভাগেমৎ পুরস্॥ गांशि कचा वनः शवा निष्ठ है। निस्त्राक्षदेवः। তপজ্যেপ নিরাহার। বৈরাগ্যং পরমান্থিতা। নিরাহাবা যদা সা তুমাসত্ত্রম্বস্থিতা। সম্প্রাণ প্রমামার্তিং কুশা ধ্মনিস্ততা॥ মন্দে। হাতিত হলী মুমুর্রণি বালিকা। দেহত গায় সা চক্তে তদা বৃদ্ধিং নুপাত্মপা। অ। মতা। গায় তাং জাখা কুতবৃদ্ধিং সুরাস্ততঃ। সমেতা প্রেষয়ামাস্থর্দেবদূতং তদন্তিকম। সমুপেত্য স তাং প্রাহ দূতোহহং পার্থিবার্জে। প্রেষিত জ্বিদশৈস্কভাং যৎ কার্যাং ভল্লিশাময়॥ ন ভবত।। পরিত্যাজ্যং শরীরম তিতুল ভিম্। यः ভবিষ্যাদি कनाानि कननी ठक्तवर्किनः ॥ পুত্রণ চ মহাভাগে ভোকবা। নিহতারিশা। অব্যাহত জেন চিরং সপ্তবীপৰতী মনী ধ হস্তবাস্থেন তরুজিদ্বোনাং পুরতে। রিপু:। অয়: শহুত্তথ। কুরো ধর্মে তাপ্যান্তত: প্রজা: ॥ পরিপালনীয়মথিশং চাতুর্বর্ণ্য: স্বধর্মত:। হস্তব্যা দহুবো মেচ্ছা যে চাছো ছইচেটিকা: ॥ गर्छवाः विविदेश्यदेखः ममाश्चवत्रमकिरेनः । বাজিমেধাদিভিউদ্রে ষট্ সহজৈশ্চ সংখ্যর।॥

### মার্কতের উবাচ।

তং দৃষ্ঠা সাম্বরীক্ষণং দিখা অগ্রহণেশনন্।
দেবদ্ গুম্বাচেদং রাজপুরী ততো মৃত্ন ॥
সতাং অগাগতঃ অর্গাদেবদূতে। ন সংশরঃ।
কিন্তু ৬ লা বিনা পুলঃ স কথং মে ভবিষাতি ॥
অবীকি ১মৃতে ভার্তা মম নাজোংক জন্মনি।
ভবিতেতি প্রতিজ্ঞাতং মনৈতং স্বিদেশী পিতৃঃ ॥
স চ নেজ্বি মাং প্রোজ্যো মৎপিতা জনকেন চ
করন্ধমেনাধ স্মাগ্রাচিঙ্ক মন্না তথা ॥

## (परपूछ छेराछ।

কিমনেন মহাভাগে বহুনোজেন তে স্বতঃ।
সমুৎ গৎক্ততি মা ত্যাকীস্থমান্ত্ৰান্ত ।
অতৈব কাননে তিওঁ ভক্ত ক্ৰীণক পেছিন।
তগংপ্ৰতাবাদেত্ৰ কে স্কাণ কামু ভ্ৰিকাতি ।

মার্কণ্ডের উবাচ।
 ইত্যুক্ত্বা দেবল্ডেহেসৌ বর্ণাপ্তমপক্তে।
 চকারাস্থিনং হুল্লঃ সাপ্যাপ্তস্থপোবণন্ ॥
 ইতি মার্কতেরে মহাপ্রাণেহবীকিতচরিতে
চত্রিংশতাধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

পঞ্চবিংশত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

---:--

মাৰ্কণ্ডেম্ব উবাচ।
অব সাবীক্ষিতো মাতা বীরা বীরপ্রজাবতী।
পূলোহ্ছনি সমান্ত্র প্রাহ পূল্রমবীক্ষিতম্য
পূলাহ্যভাস্কাতা তই পিলা মহাজনা।
উপবাসং করিবায় কিছকাহারং কিনিচ্ছকঃ ।
স চারভ্রের পিতৃত্বা সাধ্যো মহাপি চ।
প্রভিজাতে ত্বয় পূল ততন্ত্র বতাম্যহম্য।
স্বাত্রার্জ্য মহাকোবাং তব দাতাম্যহং পিতৃ:।
ধনং তে পিতৃবার্জ্যমুজ্ঞাতান্মি তেন চ ॥
ক্রেশসাধ্যো মদায়তঃ স হি প্রেয়ো ভবিব্যতি।
সাধ্যো ভবেষ্য যদি তে কন্চির্লপ্রাক্রমে ॥
স তেলাধ্যো ক্রপ্রা বা স্থানাধ্যো ভবিব্যতি।
তৎ ত্বং প্রভিজাং ক্রবে যদি পূলাল চৈব তে॥
ভবেন্ত্রার্থানাক্য কথা ভাং ব্যাতং তব ॥
ভবিন্ত্রাক্য উবাচ।

বিশ্বং মে পিডুরায়ন্তং মৎস্বামিত্বং ন তত্ত্ব । বন্ধান্ত্রীরনিস্পাদ্যং তৎ করিবো অন্মোদিতম্॥ কিমিক্তকং ব্রতং মাতর্নিশ্চিত্তা বব নির্ব্বাণা। রাক্তা পিত্রাভাস্কাতং যদি বিত্তেখনে মে ॥ মার্কভেয় উবাচ।

ভতঃ সা রাজমহিষী ওদ্রতং সমূপোষিতা। যথোজাং সাকরেছে পূজাং রাজহাজত সংযতা॥ নিধীনামপ্যশেষাণাং নিধিপালগণত চ। লক্ষ্যান্ত পরবা ভক্ত্যা যতবাকার মানসা॥ বিবিক্তে ভূ গৃহস্থেছিরমধ রাজা করন্ধনঃ। আসীন উজঃ স্টিট্রেনীতিশারবিশাবদৈং॥

স্চিব। উচ্:।
রাজন্বর: পরিপতং তবৈতচ্ছাসতো মহীন্।
একজে ভনরোহধীকিৎ তাজদারপরিগ্রহা ॥
অপ্তাল চ তৈ নিঠাং বলা ভূপ গমিবাতি।
ভগামিপকং পৃথিবী নিশ্চিতং তব বাস্ততি।

বংশকরতে ভবিতা পিতৃপিণ্ডোদককরঃ।
এতমহৎ তেইবিষয়ং ক্রিরাহালা ভবিবাতি ।
তমাং কুক তথা তৃপ যথা চে তনরঃ পুনঃ।
করোতি সভতং বৃদ্ধিং পিতৃশামুপকারিশীশ্ ।
মার্কণ্ডের উবাচ।

এত দিরস্তরে শব্দ ক্রাব ব্যবতীপতিঃ।
পুরোহিত ত বীরায়া গদতো হার্থিনং প্রতি ॥
কঃ কিমিছতি হুংসাধ্যং কত কিং সাধাতামিতি
করন্ধনত মহিবী কিমিছক মুণোহিতা ॥
রাজপুরোহণাবীকিং তু ক্রা পোহারিভিং বচঃ
প্রত্বোচার্থিনঃ সর্বান্ রাজ্বারস্পাগতান্॥
ময়া সাধাং শরীরেশ যত কিঞ্চিদ্রেণীত্ সঃ।
মম মাতা মহাভাগা কিমিছক মুণোহিতা ॥
শৃণ্ত মেহর্থিনঃ সর্ব্বে প্রতিজ্ঞাতং ময়া তদা।
কিমিছেপ দনামোহ ক্রিয়মাণে কিমিছেকে॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

শাপতের ভ্রাচ।
ভতো রাজা নিশমৈ:ভ্রাকাং প্রস্থাচ্চ্ডেম্।
সম্ৎপত্যারবীৎ প্রসংম্থী প্রমুহ্ম মে॥
• অবীক্ষিত্বাচ।

দাতবাং বন্নরা তাত ভবতে তদ্রবীহি মাস্। কর্ত্তবাং গুড়বং বাতি সাধ্যং গুঃসাধ্যমেব বা । রাজোবাচ ।

যদি সভাপ্রতিজ্ঞতং দশাসি চ কিমিচ্ছকম্। পৌত্রস্ত দর্শর মুধং মনোৎসঙ্গগতন্ত তৎ ॥ অবীক্ষিত্রাচ।

ভাহং তবৈকত্তনয়ো ব্রহ্মচর্যাঞ্চ মে নৃপ।
ন মে প্রোহতি পৌক্রত দর্শয়ামি কথং মুধ্ম্
রাজোবাচ।

পাণার ব্রহ্মচর্গ্যং তে যদিদং ধার্যাতে ত্রা। তক্ষাৎ তং মোচয়াত্মানং মম পৌত্রফ দর্শর । অবীকিছবাচ।

বিষমং শুনোহারাজ যদক্ত তথ সংশিশ।
বৈবাগে প মন্ত্রা ড্যক্তঃ জীসভোগত্তপাস্থ সঃ।
রাজোগত।

বছভিম্ধ্যমানানাং দৃটো বৈ বৈরিশাং জরঃ।
তত্ত্বাপি বদি বৈরগোম্বৈপরি তদপণ্ডিতঃ॥
কিং বা নো বহুনোজেন জন্মচর্বাং পরিত্যব।
মাতৃত্বমিছরা বজুংপৌজস মন দর্শর ॥

মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

यना म यहिंडिएकन (ब्लाकः भूटकन नार्थितः।

নাত্রৎ প্রার্থরতে কিঞ্চিৎ তদা পুরোহরবীৎ পুন:

দৈলা কিমিছকং ছুভ্যং প্রাপ্তোহং ভাত সৃক্টম্।
তৎ করিব্যামি নির্দক্ষো ভূদ্রো দারপরিগ্রহম্ ॥
ব্রির: সমক্ষং বিজ্ঞিতঃ পাতিতো ধরণীতলে।
ত্রী পতিউবিতা ভূমন্তাতৈতদতিছকরম্ ॥
তথাপি কিং করে:মোদ সভ্যপাশবশং গতঃ।
করিব্যামি যথাথং ছং ভূজাতাং নিজ্ঞাসনম্ ॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণেহবীক্ষিতচরিতে
পঞ্চবিংশত্যধিকশততমেহিধ্যার:।

ষড়্বিংশত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ।
—:\*:—

মাৰ্ভেষ উবাচ।

কণাচিন্তা ৰপুজোহসৌ মুগবামচরগনে।
মুগান্ বিধান্ বরাহাংশ্চ শার্ক্ত লাদীংশ্চ দং ছিলঃ ॥
শুপ্রাব্ সহসা শব্দ জাহি জাহীতি যোষিতঃ।
বিকোশস্তাং স্থবহুলো ভ্রগণাদম্চটকঃ ॥
মা তৈর্মা ভৈরিতি বদন্ রাজপুজঃ স বেগিতঃ
চোলয়ামাস ভূরগং ষতঃ শব্দ সমাগতঃ ॥
ভতক সাপি চুকোশ কল্পকা বিজনে বনে।
গৃহীতা দক্পুজেল দ্চুকেশেন মানিনী ॥
ক্রক্মস্তভাহং ভার্যা চাহমবীক্ষিতঃ।
হরতানার্যাে বিপিনে পৃথিবীশক্ত ধীমতঃ ॥
যত মুভ্যোবিৰ জোধঃ শক্ষকের পরাক্রমঃ।
করক্মস্তভারাৰ জোধঃ শক্ষকের পরাক্রমঃ।
করক্মস্তভারা তক্ত ভার্যা হুভাপ্যহম্॥

মার্কণ্ডের উবাচ। ইত্যাকর্ণ্য মহীপালতনর: স শরাসনী। চিত্তরামাল কিমিলং মম ভার্য্যক্ত কাননে॥ মারেরং রক্ষসাং নুনং ছুষ্টানাং কাননৌকসাম্। অথবাগ্ত এবাহং স্কাং বেংফামি কারণম্॥

মার্কণ্ডের উবাচ।

পরিত: স কতো গলা দদর্শাতিমনোরমান্।
কাননে কন্যকামেকাং দর্মালকারভূবিতাম্॥
গৃহীতাং দম্পুরেণ দৃদ্ধেশন দন্তিনা।
আহি আহীভিকরণং বিক্রোশন্তীং পুন: পুন: ॥
মা ভৈরিতি স ভাষাহ হতোহসীতি চ তং বদন্।
শাসতীযাং মহীং হুটা কো ভূপেহত্র করন্তমে।
বস্ত প্রতাশাবনতা ভূবি সর্কে মহীক্ষিত:॥
তত্তভ্যাগতং দৃষ্ট্য গৃহীত্রকাম্মুকম্।

মাং অ'হীত্যাৰ ভয়নী ক্ষান্মেবেভি চাসকুৎ। রাজঃ করন্ধস্থাহং লুবা ভার্ব্যাপ্যবীক্ষিতঃ। বতাস্মেতেন চ্টেন সনাধানাধ্যন্থে ॥ মার্কভেয় উবাচ।

ততো বিষমূৰে বাকামবীকিৎ স **ডখোলিও**ম্। কথমেবাহি মে ভার্যালুষা ভাতসাবাক্থম্ ॥ অথ বা মোচয়ামেডিং ভনীং বেৎসামি ভৎ পুনঃ কজিবৈদ্ধাৰ্য্যতে শত্ৰমাৰ্ত্তানাই আণকারণাৎ ॥ ততঃ কুদোৎত্রবীধীরে। দানবং তং স্তুর্মজিম । জীবন্গচহ বিষ্টেচানামন্যথান ভবিষ্টো॥ **७**डः न डाः विराद्याटेक्टफ् ध्रमूर्शकेशा मानवः। তমপ্যধাবৎ সোহপোনং শরবর্টেরবাকিরৎ ॥ त वार्यामाटना बाटनोटेचर्कानटबांश्किमनाविकः। রাজপুত্রায় চিক্ষেপ দঙ্ং শব্দতার্তম্। তমাপভস্তং চিচ্ছে**দ শরৈভূ পিত্রতঞ্জঃ।** সোহপ্যাসরং গৃহীছোটেচর্জ, মমাজৌ ব্যবহিতঃ ॥ স্ফত: শরবর্ষাণি তং চিক্ষেপ ততে। ক্রমম্। সূচ বং তিশশচকে ভটোঃ কান্ত্রিমাচিটতঃ 🕸 ততশ্চিক্ষেপ চ শিলাং রাজপুত্রার দানবঃ। गानि साथा नर्गारकार्य्याभूकविका एकन नाथवाद त्राखभूजाम कूशिएक। यम्योक्तरक्रभ मानदः। ७९ ७क्टिटब्हन वारभोरेयकु खुरुश्य: म मोमश्रा u- ट्वा विव्यवस्थित्यो विव्यवस्थाः। মৃষ্টিমূণ্যম্য সক্তোধো রাজপুত্রমধাবত ॥ তদ্যাপতত এবানে) করন্ধমন্থতঃ শির:। ছিত্বা বেভদপত্ৰেৰ পাতন্বামাদ ৰৈ ভূৰি 🛭 তিমিন্ বিনিহতে দেবৈদ্ধানৰে হুইচেটিজে। করন্ধমন্ত্রতঃ সুকৈ: সাধু সাধিবতি ভাবিতঃ 🖟 वतः वृतीरचिक जना (पटेनकरका नृशासकः। বত্তে পুত্ৰং মহাবীৰ্ঘ্য পিছুঃ ঞিয়চিকীৰ্বন্না 🛚

দেবা উচ্:। ভবিষাতি হি তে পুত্ৰশুক্ৰবৰ্তী মহাবদঃ। অস্যানেব হি কনাবাং মোকিতাহাং দহানহ ॥ রাজপুত্ৰ উবচে।

পিতাহং সভাপাশেন বছ ইচ্ছামাহং পুতম্।
রাজনিবিজিতেনাকো ভাজো দে দারসংগ্রহঃ ৯
সা চ মে বাবভা ভাজা বিশালন্পতেঃ ক্তঃ।
ভয়া চ মৎকৃতে ভাজো মানুতে নরসলমঃ ॥
ভৎ কথং ভামপাস্যাগ্য বিশাশভনরামহম্।
নৃশংসালা করিব্যামি জন্যনারীপরিগ্রহম্॥

দেবা উচু:।
ইয়নেব হি ভে ভাগ্য। শ্লাঘাতে যা তথা সদা।
বিশালন্য স্থতা স্কেডংকুতে বাপ্রিতা তপ:॥
ভন্যামুৎপৎসাতে বীর: দগুদীপপ্রসাধক:।
বঙ্গা বঞ্জসহস্রাণাং চক্রবর্তী স্থত্তব ॥

মাক্রেয় উবাচ। ইতৃ:চ্চার্য বেযুর্দেবা করন্ধমন্ত হ দ্বিজ । সেহিপাহ তাং তদা পিত্নীং কথ্যতাং ভীক কিং ত্বিদম সা চাজৈ কথয়ামাস ত্যক্তাহং ভবতা যদা। ত্যক্তবন্ধুজনারণ্যং নির্বেদাৎ সমুপাগতা ॥ ভতাহং তপদা বার ক্ষীণপ্রায়ং কলেবরম। ভাতুকামা সমভেচ্তা দেবদুভেন বারিভা॥ ভবিষ্যতি চ পুত্রস্তে চক্রবর্তী মহাবল:। প্রীণরিষ্যতি যো দেখানস্থরাংশ্চ হনিষ।তি॥ ইতি দেবাজয়া তেন দেবদূতেন বারিতা। ন সন্তাজৰতী দেহং তংসক্ষমননোৰণা।। পরশ্বত মহাভাগ স্বাডুং গলাছদং গতা। অবতীর্ণা বিক্নন্তান্মি বুদ্ধনাগেন কেনচিৎ॥ ততো রদাতলং নীতা তেন তত্ত চ মে পুবঃ। নাগাঃ সহস্রশস্তপুর্নগেপত্নাঃ কুমারকাঃ ॥ তুষ্ট্রুর্মাং সমভোতা মানভোহপূজয়ংতথা। ৰ্যাটিরে স্বিন্যং নাগা মাম্প্রান্তথা । প্রাসাদং ক্রু সর্কোষাং ত্মস্মাকং স্তত্যা। অপরাধমুথেতানাং সন্ধিবার্য্যে বধোলুথঃ ॥ অপরাধং করিষ্যন্তি ত্বৎপুত্রস্তানিলাশনাঃ।; তরিমিন্তং নিবার্য্যোহনো প্রদাদ: ক্রিয়ভামিতি **তথেতি চ ময়া প্রোক্তে** দিবৈয়ঃ পাতালভূষৰে:। ভূষিতাহং তথা পুলৈপণিটৈরক্রাদোভিক্তমৈ:॥ সমানীতা তথালোকমিমং তেলানিল। শিন। । পুরা যথা কাস্তিমতী পূর্কবিজ্ঞাপশ।লিনী॥ ইতি রূপবতীং দৃট্য স্বাসন্ধারভূষিতাম্। ৰুগ্ৰাহ দৃঢ়কেশোহয়ং হর্জুকাম: স্ক্র্ডি: ॥ যুম্মাছবলেনাহং রাজপুজ বিমোকিতা। তৎ প্রদীয় মহাবাহো মাং প্রতীক্ষ বয়া সম:। ভূলে।কে রাজপুজোইজো নান্তি সভ্যং ত্রবীম্যহম্

> ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণেহ্বীক্ষিত-চ্রিতং নাম বড়বিংশতাধিক-শতভ্যোহ্ধারঃ॥

ইতি তক্সা বচঃ প্রস্থা স্বাধা পিতৃৰচঃ গুড় ।
কিমিছকে প্রতিজ্ঞাতে যত্ত কেতে ভূড় ।
প্রত্যবাচ স তাং কন্তামবী কিন্পতেঃ স্বতঃ।
সাহ্যবাসনাঃ কন্তাং ত্যক্তভোগাঞ্চ তৎকতে ॥
বদাহং তাক্বাংস্ত্রীং স্বামরাতিপরাজিতঃ।
বিজিত্য শত্ত্ব স্প্রাপ্রো শং মন্বাত্র করে।মি কিন্
কল্যোবাচ।

মম পাণিং গৃহাণ খং রমণীয়েছত কাননে। স্কামাগাং স্কানেন সঙ্গমো গুণবান্ভবেৎ ॥

র!জপুজোবাচ। এবং ভবতু ভদ্রং তে বিধিরেবাতা কারণম্। অন্যথা কথমন্যতা অমহঞ্চমগেতঃ ॥

দার্কণ্ডের উবাচ। এত্রিরস্থরে প্রাপ্যের্ক্স্থনরে। মূনে। বরাপ্সরোভিঃ সহিতো গল্পক্রেপ্রৈর্ভিঃ । গল্পক্তিবাচ।

বাজপুল হতেরং মে ভাষিনী নাম মানিনী।
অভিশাপাদগস্তাস্থ বিশালতনরাভবং ॥
বালভাবেন বোহগস্তাঃ কোপিতঃ ক্রীড়মানমা।
তভস্তেন তদা শপ্তা মান্ত্রী জং ভবিষ্যাদি ॥
প্রদাদিতঃ ম চামাভির্মাদেরম্বিবেকিনী।
ভবাপবাধাদ্পির্বে প্রসালঃ ক্রিয়তামিতি ॥
প্রসাদামানঃ সোহস্মাভিরিদ্যাহ মহামুনিঃ।
বালেতি মত্বা শাপোহরো। দত্তেহিস্থা
নাস্তবৈব তৎ ॥

ইতি শাপাদগভাভা বিশ লভবনে হাড'। জাতেরং মৎস্তা স্কার্ভামিনী নাম নামডঃ। তিদসাহেং ক্তে প্রাপ্তো গৃহাণেমাং নৃগাত্রাম্ মম আরাং স্তভেষ্ত চক্রেক্টা ভ্রিষাতি ॥ মাক্তিয়ে উবাচ।

তবেতৃত্তি তভাশ্চ স পাণিং পার্থিবাছাল:।
জ্ঞাহ বিধিবদোনং চক্তে ততা চ তৃষ্ক:॥
প্রজন্তদেবগদ্ধা নিতৃশ্চাপ্রােগাাা:।
পুশাণি সম্ভূর্দেঘা দেববাদ্যানি সম্মুং।
বিবাহে রাজপুত্রভা তথা ততা সমেয়ুম্ম:।
সমন্তব্যধাতাণ কর্ত্কারণভূত্যা॥
ততো গদ্ধর্মলোকং তে সহ তেন মহাম্মনা।
নিংশেষেণ য্যুং সা চ স চ রাজস্তাে মুনে॥
ভামিভা মুম্দে সার্ধ্মবীকিল্পনন্দনঃ।
সা চ তেন সমং ততা ভোগসম্পৎসম্মিতা।॥

# ুস**প্ত**বিংশত্য**ধিক'শততমো**২ধ্যায়ঃ।

মার্কণ্ডের উবাচ। কলাচিদভিরমোহদৌ নগরোপবনে ভ্রা। বিক্রীড়তি সমং তয়া৷ কদাচিত্রপণর্কতে ॥ কদাচিৎ পুলিনে নদ্যা হংস্বারসংখাভিতে। কদাচিত্তবনভাতে প্রাসাদে চাতিশোভনে ॥ विश्वतिपर्भष्टनायु तम्पीरस्पर्श्तिभम । স রেমে সহিতস্তরা গাঁচ তেন মহালুনা ॥ ভক্ষাত্ৰেপনং বস্ত্ৰক্পানাদিকমূত্মম্। উপজ্ঞ ভাষোত্ত মুনিগন্ধর্ককিলবাঃ 🖪 তথা চরমতস্তদা ভামিকা দহ হল্ভে। গদর্বলোকে ধীরতা পুত্রং দা স্বয়বে শুভা। তিমিন্জাতে মহাবীর্যোগর্কাণং মহেশংসবঃ। বভুৰ মহুজৰ্যাছ তেন ক। য্যুমৰেক ভাম্॥ ख्यः क्रिष्ट उरेथवारना मुक्क्र अवेहानकान। **ष्यानग्रह रे**हकारना (वनुवीनानिकः श्रथा ॥ ননৃতৃশ্চ তথা তত্র বহবোহপ্সরসাং গণাঃ। পুষ্পর্ষ্টিমূচো মেঘা জগজ্জুমূ ত্নিস া: ॥ তথা কোশাহলে তিমান বর্ত্যানেইথ ভুমুক:। তুনরেন স্থাতাহাত্য জাতকর্মাকবোনানে 1 (पर्वाः मर्गायसुः मटक्त उथा (पर्वाद्यांश्मलाः। পাতালাং পন্তাক্তাশ্চ শেষবাস্থ কিতক্ষকা: ॥ ७ थो (नवाञ्चतानाक त्य श्रामा विष्का तम । यक्तांगाः अञ्चलागांक वागव मह তথা थिलाः ॥ जमागदेखक**्भवर्षिटमयमान**्यशाहेशः। ম্নিভি\*চাকুলমভূদগরকোণাং নহাপুরম্ ॥ ততঃ স তুমুকঃ কৃতা জাতকর্মাদিকাং ক্রিয়াম। <sup>চি</sup>জে স্ভায়েনং ভহা বাদস্য স্কৃতিপূৰ্বকিম্॥ চক্রবর্তী মহাবীর্যোগ মহাবাল্পাহারল:। মহাত্তং কালমীশিত্মশেষায় : ক্ষিতে: কুরু ॥ हेरम **म**कानमः मर्स्स (लाकशानाखणर्मः। সভি কুৰ্বস্ত তে বীর বীর্যাঞাবিবিনাশনম্॥ <sup>মকং</sup> তব শি**ৰাগ্নন্ত ব**াতি পূৰ্ম্পোন যো রজঃ। मक्र (छ विभटनांश्कीरनांश्रेववमाःवाञ्च मक्रिनः॥ <sup>পশ্চিমত্তে</sup> মরুদ্বীর্যামুক্তমং তে প্রায়ক্তত্যু। <sup>বলং য</sup>চ্ছতু চোৎকুটং মকৎ তে চ তথোত্তর:॥ ইতি স্ভারনভাত্তে বাঞ্চালারীরীণী।

मक्र छति वहामा यिनमः अक्रवादी ।

মকত ইতি তেনারং ভূবি খ্যাতো ভবিষাতি ।
ভূবি চাক্ত মহীপালা যাদান্তাজাবশা ৰত:।
এষ দর্ককিতীশানাং বীব: ছাক্ত সুদ্ধি ॥
চক্রবর্তী মহাবীর্যা: দপ্তবীপ্রতীং মহীম্।
আক্রমা পৃথিবীশানাং ভবিষান্তেষ যজিনাম্।
আধিকাং শৌর্যাবীর্যােণ ভবিষ্যভাক্ত রাজস্থ ॥
মার্কণ্ডের উনাচ।
ইত্যাকণ্ বচ: দর্কে কেনাপ্যকং দিবৌক্সাম্।
ভূত্ব্বিপ্রেগকর্লাশ্ভে মাতা তথা শিতা ॥
ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপ্রণণে অবীক্ষতচরতে
মক্তজন্মকথনং নাম সপ্তবিশ্ভাধিকশত্তমেহধ্যার:॥

# অফীবিংশত্যধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

मार्क्ट छम हिवाह।

তত: স বাজপুল্ভমাদায় দ্বিতং স্তুতম। পদ্যাঞ্চাত্ত্বতা বিপ্র গদকৈরাখ্যে পুরুষ্ স পিতুর্তবনং প্রাণ্য ববলে পিতুরাদরাং। চরণো সাচ তৰ্দী হীমতী নৃপতে: স্তা॥ তথাহ রাজপুত্রে হংসী গৃহীত। বালকং স্কুত্র । ধর্মাসনগতং ভূপং রাজ্ঞাং মধ্যে কর্দ্রমন্। মুখং পৌত্রতা পরৈগ্রত্ত্বলহতা যম্ম। কিমিচ্চকে প্ৰতিজ্ঞাতং তুভাং <mark>মাতু: কুতে প্রা।</mark> ইত্যুক্তা পিতৃক্ৎসঙ্গে তং কৃ**ছা তনমং ততঃ।** যথাবৃত্তমশেষং স কথয়ামাস তস্য তৎ ॥ म शतिषका उर (शोखगानकां आदितकका:। সভাগ্যোহস্মীতাথাত্মানং প্রশশংস পুনঃ পুনঃ ॥ ততঃ দোহব্যাদিনা সমাগ্গদ্ধান্ সম্পাগতান্। স্মান্যামাস মুদা বিশ্বতান্য প্রয়েজনঃ 🖟 ততঃ পুরে মহানাসীদানলঃ পৌরবেশাস্থ। অসাকং সম্ভতি**ৰ্জাতা নাৰভেতি সহামুনে 🛊** স্তপুত্তে পুরে তিমিন্ গীতবালৈ ক্রাম্পে : विनामित्न। १ कि हार्स स्था नन्जू नी अ मुख्यन ॥ রাজাচ বিজমুখ্যেভোগ র্ছানি চ বস্নি চ। शांद्या वज्ञाना नका बान म मंक् हेमाननः ॥ **७७: म वाला वर्द्ध ७,≋,शत्म यथा मनी।** . পিতৃণাং প্রীতিজনকো জনভেউচ্চ সোহভবৎ।

कौठार्यमानाः नकाभार न व्यायमान् कर्ग्ट मूरन ত হঃ শালাণ শেষাণি ধকুর্বেদং ততঃ পরম্॥ ক্লভোনেবাৰো বদা সোহভূৎ ধড়গকামু ককৰ্মণি। খন্যৰুচ ভণা বীর: শক্ষেষ্ বিজিতপ্ৰম: । ততোহলাণি স লগ্ৰাহ ভাৰ্মবাদভ্ভসম্ভবাৎ! विमदावनट्डा विथ करताः श्री जिलतायनः ॥ গুরীভাল: কুডী বেলে ধ্যুর্কেল্স্য পারগং। নিষ্ণাতঃ স্ক্ৰিল্যাস্থ ন বভূব ততঃ পরঃ ॥ विभारनार्श के डावार्खाक्ष्म न डाविका मिमाम्। হর্ষনির্ভন্নচিত্তোহতুদৌহিত্রস্য চ যোগ্যভাম্ ॥ অথ রাজা স্তস্তং দৃষ্টা প্রাপ্তমনোরথ:। यक्तानत्वकान् निष्णामा मचा मानानि ठार्थिवान् ॥ कुछात्मविकत्त्रा युक्तः मवदेर्वक्षर्याणां मशीम् । পরিশাল্যারিবিজয়ী বলবৃদ্ধিসম্বিতঃ ॥ স বিবাস্থ বনং পুত্রমবীক্ষিতমভাষত। পুত্র বুদ্ধোহ সি গছামি বনং রাজ্যং গৃহাণ মে।। কুতকুত্যোহস্মি নাস্তানাৎ কিঞ্চিৎ ছদভিষেচনাৎ স্থানিপারমতো রাজাং ছং গৃহাণ ময়ার্পিতম্॥ हेजू। छः निजदः खाद मार्वी कित्र भनकतः। প্রশ্রাবনতো ভূষা যিবাস্থপ্রে বনম্॥ নাহং তাত করিষামি পৃথিব্যাঃ পরিপালনম্। नारे अचि शीर्भ मनत्मा ब्रांकाश्यः पः निर्याजव ভাতেন মোকিতো বদ্ধো ন স্ববীর্য্যাদহং যতঃ। ভতঃ কিন্তৰ পৌক্ষং মেপুক্টেয়ঃ পাল্যতে মহী। বোহতং ন পালনারালমাত্মনাহিপি বস্তর্রাম্। স কথং পালবিব্যামি রাজামক্তরে বিকিপ॥ মন্ত্ৰী সধৰ্ম: পুৰুষো যক্ষান্তেনাবক্তহতে। चाच सोहात छवट्डा वक्षमारित्वन स्माक्तिङः। লোহত্তং কৰং ভবিষানি জীসধৰ্মা মহীপতিঃ। পিভোৰাচ।

ন ভিন্ন এব প্রভ পিতা প্রভংগ পিতৃ:। নান্যেন মোক্ষিতো বীর বন্ধং পিতা বিমোক্ষিতঃ পুত্র উবাচ।

ह्यम्यः नानाचा त्यक्र मना मकार नत्यम्यः । ह्यस्य द्वीर्षमाञीन व्यक्तः (मान्किष्यः) ॥ भिष्ट्याभाषार सिन्नः कृक्ष्कः भिष्या कृष्णुं । प्रमुक्त छः ।

বিজ্ঞারতে চ বং পিত্রা মানবঃ সোহত্ত নো কুলে ইতরে চ যথা বর্ণাঃ যে যে কর্মণাতজ্রিতা তর্পাভধনাশ্চকুরিষ্টাপ্রাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। তর্পাভধনাশ্চকুরিষ্টাপ্রাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। তর্পাভধনাশ্চকুরিষ্টাপ্রাদিকাঃ ক্রিয়াঃ। তর্পাভধনাশ্চকুরিষ্টাপ্রাদিকাঃ ক্রিয়াঃ।

মাৰ্কণ্ডের উবাচ ।
ইত্যাহ বহুণ: পিকা যদাপ্যক্তোহপ্যসৌ মুনে।
তদা তন্ত স্থতং রাজ্যে মাজ্যকরের পুন্॥ সুল পিকা সমস্থাতং রাজ্যং প্রাণ্য পিডামহাং
চকার সম্যক্ স্থলামানন্দম্পপাদয়ন্॥
রাজা করন্ধমাণে বীর্মাদার ভাং ভবা।
বনং জগাম ভপসে যভবাজার্মানসং॥
ভক্র বর্ষস্থাই স্পতিঃ শক্তাপ সন্দেক্তাম্॥
সাস্ত পত্নী ভাগ বীরা বর্ষাণাঞ্চ ভবা শভ্ম।
তত্তভচ্চার বিপ্রর্থে জটিলা মলপ্রিনী॥
সালোক্যমিজ্তী ভক্তঃ স্বর্গভ্সা মহাত্মনং॥
ফল্যুক্তাহারা ভাগবাশ্রমগংশ্রা।
বিজ্ঞাভিপত্নীমধ্যস্থা বিশ্বশুশ্রমণারতা॥

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণেহ্বীক্ষিক্ত চরিতং নামান্ত্রীবিংশতাধিক-শতভ্যমাহধ্যার: ।

ঊনত্রিংশদধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

--:\*:--

কোই কিক বাচ।
ভগবন্ বিভাৱাৎ সকং মনৈতং কথিতং দ্বা।
করন্ধনা চরিতমবী কিচেরিতঞ্চ বং ॥
আবীকিতভা নৃপভেশ্নভাভ মহাম্মনঃ।
শ্রোত্মিছামি চরিতং শ্রমতে সোহতিচেটিতঃ
চক্রবর্তী মহাভাগঃ শ্বঃ কান্তো মহামতিঃ।
ধর্মবিদ্ধার্কচৈত্ব সমাক্ পাল্যিতা ভূবঃ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
স পিতা সমস্কাতং রাজ্যং প্রাণ্য পিতামহাৎ
ধর্মতঃ পালরামাস পিতা প্রানিবৌরসান্॥
ইয়াল স্বহুন্ যজান্ বথাবৎ স্থাপ্তিলান্।
ঋতিক্পুরোহিতাদেশরমাচিত্তো মহীপতিঃ॥
ভক্তা প্রতিহতং চক্রমাসী দ্বীপের স্পক্ত।
গতিশ্চাপানবছিরা খপাতাল ললাদিরু॥
ততঃ প্রাণ্য ধনং বিপ্র যথাবৎ স্করিষাণরঃ।
ম্যলৎ স মহাযকৈর্দেবানিক্রপুরোগমান্॥
ইতরে চ যথা বর্ণাঃ খে স্কের্দাত ক্রিতাঃ।
তত্পাত্তধনাশ্চকুরিষ্টাপ্রাদিকাঃ ক্রিয়াঃ॥
পাল্যমানা মহী তেন মক্তেন মহান্যা।

্পত্ৰ ত্ৰিদশাবাসবাসিভিবিজ্ঞসভ্য । ৈত্ৰ।তিশাবিতাঃ দৰ্কে কেবলং ন মহীক্ষিতঃ। बिबना दावबादबार्शन भाउयकाडिमिक्छिः॥ ধ্ৰত্বিক ওক্ত ভূ'দংৰৰ্জো বভূবালিরদ: স্বভ:। ভাতা বৃহ**স্পতিকিঞা মহাত্ম।** তপ্সাং নিধিঃ ॥ त्त्रीवर्ता बुधवान् गांम शर्वाङः स्वरत्रविष्ठः। পাতিতং তেন তচ্চুবং হতং ওছ মহীপতে:। তেন যক্তাথিলং যজে ভূমিভাগাদিকং বিজ। প্রাসাদান্দ কুতাঃ গুলারপ্সা সর্ক্রাঞ্নাঃ। গাথাশ্চাপ্যত্র গান্ধন্তি মকতচরিভাশ্রয়াঃ। সাতভোনধরঃ সর্বে কুর্বস্থোহধায়নং যথা॥ मक्रा विकास मिल्ला क्या मिल्ला क्या कि कार्या । नमः नमखः याखाः व्यानामाटेम्हत काकानाः ॥ অমাণিক্তঃ সোমেন দক্ষিণাভিদ্বি কাতয়:। বিপ্রাণাং পরিবেষ্টারঃ শক্তাদ। স্থিদশেতমা:॥ যথা যজে মকতভে তথা কভা মহীপতে:। সুবর্ণমথিলং তাক্ষং রত্মপূর্ণগৃতে বিজ:॥ প্রাসাদাদি সমস্তঞ্চ সৌবর্ণং তক্ত ঘৎ ক্রতৌ। ত্রোবর্ণা হালভাস্ত তক্ষাৎ কেচিৎ তথা দছঃ॥ তেন তাব্দেন শিষ্টা যে জনাঃ পূর্ণমনোর্থা:। তে চ ষজ্ঞান্যজ্ঞ জ্ঞোব দেশে দেশে পৃথক্ পৃথক্ তকৈবং কুকাছে বিকাং সমাক্ পালয়তঃ প্ৰেজাঃ তপধী কশ্চিদভোত্য তমাহ মুনিসত্ম। পিতৃর্মাতা ভবাছেদং দৃষ্ট্র তাপসমণ্ডলম্। বিষাভিভৃতমুর্তপর্মদে। রাট্ডর্নরেশর। পিতামহত্তে স্বর্যাতঃ সম্যক্ সম্পাল্য মেদিনীম্। তপশ্চরণশক্তাহমিহ চৌকাশ্রমে স্থিতা। সাহং পশু।মি বৈকলাং তব রাজ্যং প্রশাসত:। পিতামহক্ত তে মাভূদ্যৎ পূর্কেষাঞ্চ তে নৃপ ॥ न् नः व्यमरहा (ভাগেষু সকো বাবিজিতে জিयः চারান্ধতা যতন্তেষাং হুষ্ট'তুইং ল বেংসি যৎ । भाजानामञ्जाद**ेउन्छ ভ्**करेशम्स्थमानिज्ञिः । দ্ধী মুনিস্তাঃ সপ্ত দ্বিতাশ্চ জলাশরাঃ॥ স্বেদ্যুত্রীবেণ দ্বিতঞ্চ ভঙং হবি:। অপরাধং সমুদ্ধিত দভো নাগব ল ভিরেৎে॥ पटि नमशी मृतस्या छन्द्रीकर्छः ज्ञाकमान्। क्षियाः नाधिकाद्योश्य चरमवावाधिकात्रवान्॥ ভাবং স্থং ভূপ**ডিলৈভেগিলং** প্রাপ্তত নূপ। <sup>অভিবেকজলং যাবল মুর্জি</sup>ু বিনিপাতাতে ॥ कानि मिकाणि कः भक्तन्त्रम् भरकार्सनः कियर ।

কোহৎং কে মন্ত্ৰিণঃ পক্ষে কে বা ভূপতত্ত্বাসম বিরজো পরৈভিন্ন: পরেবামণি কীলুণাঃ কঃ সমাগত্ত্ব নগরে বিষয়ে বা অনোমন ॥ ধর্মকর্মাশ্রমী মৃঢ়ঃ কঃ সমাগণিবর্ততে। কো দঙ্যঃ পরিপাল্যঃ কঃ কে বা ক্ষেক্য নরা। মরাঃ

निक्षिण्डम् अर्गनेका (मन्कान्यत्वका। চারাংশ্চ চারয়েষটেপ্তরজ্ঞাতান্ ভূপভিশ্চরৈঃ a সচিবাদিরু সর্কেষু চরান্ দল্যাশ্বহীপতিঃ ॥ रेकारिन जु॰ डिनिंकाः कर्षन्यात्रक्रमानतः। নরেন্দিনং তথা রাত্রিং ন তু ভোগপরায়ণঃ 🛭 রাজাং শরীরগ্রহণং ন ভোগায় মহীপডে। ক্লেশার মহতে পৃথীস্বধর্মপরিপালনে 🛚 সমাক্ পালয়ত: পৃথীং অধর্মঞ্ মহীপডে:। ইহ ক্লেশোমহান্ স্বৰ্গে প্রমং **স্থমক্র**ম্ তদেভদববুধ্য স্থং হিছা ভোগান্ নরেশ্র। পালনায় ক্ষিতে: ক্লেশম্ভীকর্ত্মিংছিসি ॥ ইতি বৃত্যুষীণাং যথাসনং **দলি শাসভি**। ভুজন্মহেডুকং ভূপ চারা**ন্ধো নাপি বেংদি ডৎ 🛭** বছনাত্র কিমুজেন হুষ্টে দঙ্গে নিপাভাঙাম। শিষ্টানু পালর রাজভোগ ধর্মবিজ্ভাগমাকা সি ॥ ুজরক্ষন পাপমধিলং ছুটেরবিনরাৎ কুতম্। সমবাপ্স্যভাসনিদগ্ধং যদিজ্পি কুরুছ তৎ ॥ এতরারোক্তং সকলং যথ তবাহং পিতামহী। কুরুবৈধবং স্থিতে যথ তে রোচতে বহুধাধিপ ॥

ইতি মাৰ্কণ্ডেরে মহাপুরাণে মক্সন্তচরিতে উনজিংশদ্ধিকশততমোহধ্যারঃ।

ত্রিংশদধিকশভভষোহ্ধ্যায়ঃ।

-:+:-

মার্কভের উবাচ।

ইতি ভাগসবাক্যং স প্রমাণ কার্যাপনো নৃপং।
বিভ্নাং চারান্ধনিতৃত্ত । নিম্মত অগ্রে ধরুঃ ॥
ততঃ স ম্বরিতং গন্ধা তরোর্বভাশবং প্রতি।
ববলে শিরসা বীরাং মাতরং পিতৃরান্ধনঃ ॥
ভাগসাংশ্চ বথাজাং তৈশ্চাশীভিরভিট্নতঃ ।
দৃষ্ট্ । চ তাপসান্ সপ্ত নাগৈর্মভান স্করান্দ্রি ॥
নিনিলাম্বান্মসকুৎ প্রতেষাং মহীপ্তিঃ ।
উবাচ চৈত্রদাধিং মনীর্মবন্ধভান্ ॥

বং করে।মি ভ্রজ।নাং হুটানাং ব্র ক্লছিব।ম্। তং পশুভূ লগং সর্কাং সদেবাস্থ্যসাহ্যস্থ মার্কণ্ডের উবাচ।

ইত্যক । ফগৃহহঁ কোপানস্কং সংবর্জকং নৃপ:।
নাশাগাশেষনাগানাং পাতালোকীবিচারিণান্॥
ততো কজাল সহসা নাগলোকং সমস্ততঃ।
মহাস্ততেজসা বিপ্র দহমানোহনিবারিতঃ॥
হা হা তাতেতি হা মাতেই। হা বংসেতি সম্রমে।
তিমিনস্করতে বাচং প্রগানামণা ভবন্॥
কেচিৎ জনস্তিঃ পুজাগৈঃ ফলৈরতাভূজক্ষমাঃ।
গৃহীস্প্রদারাশ্চ ত্যকাভর্শ্বাসসঃ॥

মকত্মতিরং পূর্বং যরা দত্তং তদাভ্যম্॥
তামুপেতে।বিগাঃ সর্কে সপ্রাণমং ভ্যাত্বাঃ।
সগদগদমিদং প্রৌচুঃ স্মর্যাতাং নঃ প্রোদিতম্॥
প্রেণমা ভাচিতং পূর্বং বদসাভী রসাতলে।
ভক্ত কালোহ্যমায়াভন্তাহি বীরপ্রকায়িনি ॥
পুরো নিবর্ধাভাং রাজি প্রানৈঃ সাবে জ্যামন্ত নং

পাতালমুৎক্লা যযুঃ শরণং ভামিনীং তদা।

দহুতে সকলো লোকো নাগানামন্ত্ৰহিলা ॥ এবং সন্ত্ৰ্মানানামন্ত্ৰাকং তনয়েন তে। ছামুতে শরণং নান্তং কুপাং কুরু যশস্থিনি ॥

ইতি এপৰা বচ:তেবাং সংস্বৃত্য দৌচ ভাষিতমু। ভতীরনাক সা সাধবী সমত্তমনিদং বচঃ॥ ভামিকু⊲চি।

মার্কণ্ডের উবাচ।

পূর্বনেব তবাখ্যাতং পাতালে যকুলকনৈ:।
প্রোক্তনভার্থনাপুরং মমাসীৎ তনয়ং প্রতি॥
ত ইমেহজ্যাগত। ভীতা দহুত্তে তভ তেজনা।
মামেতে শরণং প্রং দত্তমেভ্যোনয়াভয়ম্॥
বে মাং শরণমাপরাতে ছাং শরণমাগতা:।
অপৃথয়ুর্মচরণা যাতাহং শরণ তব ॥
তির্মিবারয় পুজং ছং মরুত্তং বচনাৎ তব ।
মরা চাজারিতাহবল্তং শনমভ্যুপ্য, ভাতি ॥
অবীক্ষিত্রাচ।

মহাপরাধে নিরতং মরুতঃ ক্রোধমাগতঃ। ছুন্ধির্ব্যমহং মতে ভেষ্ঠ কোধং স্তত্ত তে॥

मागा छेट्रः ।

শরণাগভাত্তৰ বন্ধং প্রসাদঃ ক্রিয়তাং নূপ। ক্রভাত্তপরিজাণনিমিতং শল্পারণম্ মাক্ণের উবাচ।
নাগানাং তরচঃ শ্রুমা ভূতানাং শর্পৈধিণাম্।
তথা চা ভার্থিতঃ পদ্ধা প্রাহাবীক্ষির্বাধশাঃ ॥
গন্ধা ব্রবীমি ভং ভব্রে তনরং ত্র্যা তব।
পরিব্রাণায় নাগানাং ন ত্যাক্ষ্যাঃ শর্ণাগতাঃ ॥
নোশসংহরতে শস্তং যদি মন্তনার্গঃ।
তিবলৈ নার্থিবামি ত্যান্তং তনর্য্য তে ॥
মার্ক্ডের উবাচ।

নাকতের ভবাচা ততে। গৃহীক্ষ স ধন্ধরবীক্ষিং ক্ষত্রিয়াত্তমঃ। ভার্যায়া স্থিকঃ প্রায়াং ক্ষাবান্ ভার্যশ্রম্।

ইতি মাৰ্কণ্ডেয়ে মহাপুৰাণে মক্তন্তিতে তি:শদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

একত্রিংশদধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

-0:0-

মাৰ্কণ্ডেয় উৰাচ।

ষ ডু তহাঃ হৃতং দৃষ্টাগৃহীতবরকার্মিন্। ধমু:শব্রঞ্ তত্যোগ্র: জানাব্যাপ্তদিগন্তরম্ ॥ উদিগরতং মহাবহিং দীপিতা খিলভূতলম্। পাতাশাস্তর্গতং প্রাপ্রন্সং হোরভীষ্ণম্॥ স তং দৃষ্টা মহীপালং জাকুটীকুটিলাননম্। মা কুণ ভং মক ভালে মুণ সংহ্রিয় ভামি ভি ॥ প্রহাদকুৎ ছরালুপ্রণক্রমমুদারধীঃ। স নিশম্য গুরোর্ব(কাং দৃষ্ট্রা তঞ্চ পুন: পুন:॥ গৃহীতকার্দ্র: পিতোঃ প্রণিপত্য সংগারবম্। প্রকুরোচাপরাদ্ধা মে স্কৃশং পর্নগাঃ পিতঃ। শাস্তীমাং ময়ি মহীং পরিভূয় বলং মম। সপ্তাশ্রমমুপাগমা দ্রা মুনিকুমারকাঃ॥ ঋষীণামাশ্রমস্থানমনীষামবনীপতে। ময়ি শাণতি হুর্তৈত্বিতানি হবীংষি চ॥ জল:শয়ান্তথ্বে)তৈঃ সর্ব্ব এব হি দৃষিভা:। তদেতৎ কারণং কিঞ্চিন্ন বক্তব্যং ত্বয়া পিতঃ ৷ ন নিবার্য়িতবোহং ব্রহ্মন্নান প্রতি প্রগান্ ! অব কিছবাচ।

यरना डिर्निश्ठा विश्वा याञ्चल्डि नवकः मृठाः। मटेनज् किवार वाकाः विव्यमञ्जलकाण्यः। स्रक्ष छेवार।

অহমেৰ গনিবামি নুরকং যদি পাপিনাম্। ন নিশ্রহে যভানোষাং মাং নিবারয় মা পিতঃ।

#### **अवीकिश्**राहः।

মানেতে শ্বণং প্র'গ্ডাঃ পদ্নগা মম পৌরবাং। উপসংক্রিয়তামজনলং কোপেন তে নৃপ॥ মক্স্যু উবাচ।

নাহমেবাং ক্ষিব্যামি ইটানামণরাধিনাম্।
তথ্যমূল্লবা কথং করিব্যামি বচন্তব ॥
দতো নিপাত্রন্দ তং ভূপ: শিষ্টাংশ্চ পাল্যন্।
পুণ্যলোকানবাপ্লোভি নরকাংশ্চাপ্যপেককঃ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

এবং দ বছশ: শিকা বার্যামাণো যদা স্কৃতঃ। নোপসংহরতে সোহস্তং ততে। হুদৌ পুনরব্রবীৎ ॥ অবীক্ষিত্বাচ।

হিংসদে পলগান্ ভীতান্ ম থৈতান্ শবণং গতান্। বাৰ্ণ্যমাণোহপি তল্পাৎ তে কৰিবাানি প্ৰতিক্ৰিয় ম্ ময়াণ্যস্ত্ৰাগ্যবাস্তানি ন স্বনেকোইস্থবিভূবি। মমাগ্ৰত: সুত্ৰু তি পৌক্ষক কিলং তব ॥

মার্কণ্ডের উবাচ।
ততঃ কার্ম্কমারোপ্য কোগতাত্রবিলোচনঃ।
ততঃ কার্ম্কমারোপ্য কোগতাত্রবিলোচনঃ।
তবীক্ষিরং জগ্রাহ কালস্য মুনিপুঙ্গব॥
ততাে জ্লাপরীবারমরিসভ্যন্ন্যম্।
কালারন্ত মহাবীর্বাং যােজ্যামাস কার্মুকে॥
তত্তচুক্লোভ জগভী সম্বলিপ্রপ্রতাণিতা।
সারিশৈলাখিলা বিপ্র কালস্যান্তে সম্বাতে॥
কালারমুন্যতং পিলা মকতঃ সােহপি বীক্ষা তং
প্রাহৌতেবন্ত্রমেতনা ত্রশাভিসম্বাতম্॥
ন স্বধার কালান্তং মরি মুঞ্তি কিং ভবান্।
সম্মাকার্যাং মহাভাগ প্রজানাং প্রিপালনম্।
হবৈবং ক্রিয়তে ক্যান্যধারান্ত্র্ম্॥

অৰীকিত্ব:চ।

শরণাগতসন্ত্রণং কর্তুং ব্যবসিতা বরম্।
তস্য ব্যাঘাতকর্ত্তী জং ন মে জীবন্ বিমোক্ষাদে
মাং বা হজাস্থবীর্যোণ জহি চন্তানিহোরগান্।
জংবা হজাহসজেণ রক্ষিয়ানি মহোরগান্॥
ধিক্ তদ্য জীবিতং পুংসঃ শরণাথিনিমাগতম্।
বো নার্তমন্ত্রণতি বৈরিপক্ষমণি ধ্রুবম্॥
ক্রিয়োহ্হমিমে ভীতাঃ শরণং মামুপাগতাঃ।
অপকর্তা জমেবৈষাং কৃথ্য ব্যোগান মে ভবান্॥

মকত উবাচ। বীনাশি কড়া অ্মহৎ ডপো ধর্মভূতাং বরা।

নিজং বা বান্ধবো বাপি শিতা বা ধদি বা শুক্তা। ভর্তুঃ সলোকতাং প্রাপ্তা মহাভাগা পতিব্রতা ॥

প্ৰজ্ঞাপালনবিদ্বায় যো হস্তবাঃ স ভূতৃতা॥ সোহহং তে প্ৰহরিষ্যামি ন ক্লোক্ষ্যং ছয়া পিতঃ স্থৰ্ম্ম: পরিপাল্যো মে ন মে ক্লোধ্ন্যযোগরি॥

মাৰ্কণ্ডেশ্ব উবাচ।

তততৌ নিশ্চিতৌ দৃষ্টা পরস্পরবধং গুজি। সমৃংপত্যাস্তরে ভঙ্গুমুনিরে। ভার্গবালয়: ॥ উচ্চশ্চনং ন মোকব্যং গুলালং পিতরং প্রতি। গুলাচ নামং হস্তবাঃ পুলা প্রধাকচেটিতঃ॥

মক্ত উবাচ।

মরা হুটা নিহস্তব্যা: সন্তোরক্ষ্যা মহীকিতা। ইমে চ হুটা ভূজ্গাঃ কোহণরাধেহিত্র মে থিজাঃ অনীক্ষিত্র চু

স্থানীক্ষিত্যাচ। শ্রণাগভদস্তাণং ময়া কার্য্যময়ঞ্জ মে।

শ্রণাগ তপত্রাণং শরা ক্রে। মর্থ ধেন। অপরাধা: হতে ৰিপ্রা যো হস্তি শ্রণাগতান্ ॥ ঋষর উচুঃ।

ইমে বদ জি ভূজগাত্রাসলোল বিলোচনা:।
সঞ্জীবগামস্তঃন্বিপ্রান্থে দটা ছইপল গৈ:॥
তদলং বিপ্রহেণোভৌ রাজবর্ষো প্রসীদভাম্।
উ ভাবণি বিনিম্ভিষতিজৌ ধর্মকোবিদৌ ॥
মার্কণ্ডেম উবাচ।

স। তু বীরা সমভোত্য পুল্রমেতদভাবত। মধাক্যাদেশ তে পুল্রো হন্তং নাগান্ কুতোদ্যম: ॥ তলিপানং যদা বিপ্রাত্তে জীবস্তি তথা মৃতা:। সঞ্জীবস্তুম্ভ মৃচ্যুত্তে যদ্যুক্ত রশং গতা:॥ ভামিসুবোচ।

অহমভাবিতা পৃক্মেডিঃ পাতালসংশ্রটরঃ।
তরিমিত্তময়ং তর্তা ময়াত্র বিনিবোলিতঃ॥
তদেভদাব্যনির্ভিম্ভযোরশি শোভনম্।
মম ভর্তৃশ্চ পুত্রভ হৎপোলাভাত্মলভ চ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ততঃ সঞ্জীবয়ামা স্থান্ বিধাংতে ভ্ৰদ্মা:।
দিবৈ বে বে বিধাংত ভ্ৰদ্মা:।
দিবৈ বে বে বিধাংত ভ্ৰদ্মা:।
শিত্ননাম চনণৌ স ততো জগতীপতি:।
মক্তঞ্চ স তং প্ৰীতা পরিছলে দমতবীৎ ॥
মানহা ভব শক্লাং চিনং পালন্ন নেদিনীম্।
প্রপৌত শুক্ত নোদম্মা চ তে সন্ধ বিধিব:॥
ততো হিকৈর ফ্জাতৌ বীরমা চ নরেশবেন।
সমান টো বংং শা চ ভানিমী শপুরং গতা ॥
বীরাণি কৃষা স্বন্ধ ভণো ধর্মভ্তাং বরা।
ভর্তঃ স্বোক্তাং প্রাপ্তা মহাভাগ্য পতিব্রতা

মক্তোছপি চকারোক্যা ধর্মতঃ পরিপালনম্। বিনিজ্জিতারিবড্বর্গে। ভোগাংশ্চ বৃভ্লে নৃপ:॥ তভা পত্নী মহাভাগা বিদর্ভতনয়া তথা। প্রভাবতী সুধীরস্ত সৌবীরো চাভবৎ স্থতা ॥ স্থকেশী কেতুবীর্যাস্ত মাগধস্তাত্মজাভবৎ। হুত। চ সিন্ধুবীর্যাভা মদ্ররাজভা কেক্যী ॥ কেকয়ক্ত চ সৌরিন্ধী দিন্ধুভর্ত্বপুমতী। চেদিরাজম্বতা চাভূম্ভার্য্যা তম্ম স্থাভেনা ॥ ভাদাং পুত্রান্তক্ত চাদন্ ভৃভৃতোহস্টাদশ বিজ। তেষাং প্রধানো জ্যেষ্ঠশ্চ নরিষাস্তঃ স্কতোহভবৎ এবংবীর্য্যো মুক্তোহভূমহারাজো মহাবল:! তক্ষাপ্রতিহতং চক্রমাদীদ্বীপেষু সপ্তস্থ ॥ মশু তুল্যোহপরো রাজান ভূতোন ভবিষ্টি। সত্বিক্রমযুক্ত রাজর্বেরমিতৌজসঃ॥ তক্তৈতচ্চবিতং শ্রমা মকত্রস্থ মহাত্মনঃ। জন্ম চাগ্রাং ধিজশ্রেষ্ঠ মুচাতে সর্কাকি বিবৈঃ ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে মক্তচরিতং নাম একজিংশদ্ধিকশততমোহধারঃ॥

### দ্বাত্রিংশদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

-:\*:---

#### **८को**हे किश्चाह

মক্ত চরিতং কুৎসং ভগবন্ কণিতং দ্বা।
তৎসন্ত তিমশেষেণ শ্রোত্মিছা প্রবর্ততে ॥
তৎসন্ত তি কিতীশা যে রাজ্যাই। বীর্যাশালিনঃ।
তানহং শ্রোত্মিছামি দ্বাথ্যাতান্ মহানুনে ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

নিবাস্ত ইতি খ্যাতো মক্তুন্তাভবং কুতঃ।
অপ্তাননাং প্লানাং স জ্যেষ্ঠ এব চ ॥
বর্ষানাঞ্চ সহস্রানি সপ্ততিং দশ পঞ্চ চ।
বৃত্ত্বে পৃথিবীং কংলাং মক্তঃ ক্ষলিয়র্যভঃ।
কুতা নাজাং অধন্দে ইঙা বজ্ঞানত্ত্যান্।
নির্যান্তঃ কুতঃ জ্যেষ্ঠমভিবিচা যযৌ বনম্॥
একাগ্রচিতঃ স নুপতিপ্তা তক্র তপো মহং।
আক্রেছি দিবং বিপ্র যশসাবৃত্তা রোদসী॥
নির্যান্তঃ কুতঃ সোহস্য চিন্ত্রামাস বৃদ্ধিনান্।
শিত্রুতং সমালোক্য তথান্তেবাঞ্চ ভূভ্তাম্॥
আত্র বংশে মহান্থানো রাজানো মম পূর্ব্বলঃ।
বিজ্নো ধর্মতঃ পৃথীং পাল্যানাক্রজ্জিতাঃ॥

দাতারশ্চাপি বিভানাং সংগ্রামেমনিবর্ত্তিনঃ। তেষাং কশ্চরিতং শব্জব্দুয়াতুং মহাত্মনাম্॥ কিন্তু তৈন ক্বতং কৰ্ম্ম ধৰ্ম্যমাহবনাদি ভি:। তদহং কর্ত্মিচ্ছামি তচ্চ নাস্তি করোমি কিম্ ধর্মতঃ পাল্যতে পৃথী কো গুণোহত মহীপতে: । অসম্যক্পালনাৎ পাপী নরেকো নরকং ত্রেছেং। সতি বিত্তে মহাযজাঃ কর্তব্যা এব ভূভ্তা। দাতব্যঞ্চাত্র কিং চিট্রং সীদতামীশ্বরো গতি:॥ আভিজাত্যং তথা লজ্জা কোপশ্চারিজনাশ্রয়:। ক।রয়ন্তি সধর্মাশ্চ সংগ্রামাদপলায়নম্॥ এতৎ দর্কাং যথা সম্যূধ্মৎপূর্কিঃ পুক্টবঃ কুত্র। পিত্ৰা চ মে মক্লতেন যথা তৎ কেন শক্যতে॥ তদহং কিং করিষামি যন্ন তৈঃ পূর্ব্বটজঃ কুতুম্। त्य यिक्टिना वता मास्त्राः मध्यामाळानिवर्छिनः ॥ মহৎসংগ্রামসংস্থাবিসংবাদিতপৌরুষা:। কর্মণাহং করিষ্যামি কর্ম চানভিদন্ধিতম্॥ অথবা তৈঃ স্বয়ং যজ্ঞাঃ কৃতাঃ পূর্ব্বজনেশবৈঃ। অবিশ্রমন্তির্নারৈগ্রস্ত কারিতাস্তৎ করোমাহম্ 🛭 মার্কণ্ডেয় উবাচ।

ইতি সঞ্জি স্তা যক্তং স চকারৈকং নরেশবঃ।

যাদৃশং ন চকারাত্যো বিভোগে সর্গে প্রেশাভিত্ম।

বিজ্ঞানাং জীবনামালং দ্বা তু স্মহাধনম্।
ততঃ শতগুণং তেষাং যজেহরমদদম্পঃ॥
গাবো বশ্বান্যকারং ধাতাগারাদিকং তথা।
তথা প্রত্যেকমনদং তেষাং পৃথীনিবাসিনাম্॥
ততক্তেন যদা বক্তঃ প্রারেকা ভূভ্জা পূনঃ।
প্রাবক্ষে স মথে যইঃ ততো নাশভত দ্বিজ্ঞান্॥
যান্ যান্ বুণোতি স নুপো বিপ্রানাতিজাকর্মণি।
তে তে তম্চ্রজার বয়মন্ত্র দীক্ষিতাঃ॥
আতাং ববয় যদিওং ত্রান্থাকং বিব্র্তিত্ম।
অসাত্যো নাস্তি সজেষু দ্বাাক্ত নুপতে ধনম্॥
মার্কভেষ উবাচ।

ন চাপ ঋজিজো বিপ্রাংস্তদাশেষক্ষিতীশ্বঃ।
বহির্বেল্যাং তদা দানং স দাতৃমুপচক্রমে ॥
তথাপি জগৃহনৈর ধনসম্পূর্বান্দিরাঃ।
বিজায় দাতুং ভ্রোংসৌ নির্নিপ্প ইদমত্রবীং ॥
অহোহতিশোভনং পৃথাং দবিপ্রো নাধনঃ ক্রিঃ
অশোভনঞ্চ যং কোষো বিফলোহ্মমযজিনঃ ॥
নার্তিল্যং কুকতে কশ্চিক্ষক্ষানোহবিলো জনঃ।
বিজানাং ন চ নো দানং দদতাং স্প্রতীছতে।

মাৰ্কণ্ডেম উবাচ।

ইতি মার্কণ্ডেরে মহাপুরাণে নরিবাস্ত-চবিতং নাম দাত্রিংশদধিকশত-তমো২ধ্যায়ঃ॥

ত্রয়স্ত্রিংশদধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

<del>-</del>:\*:--

মার্কভেয় উবাচ।

নবিষ্যস্তস্য তনমো তুষ্টারিদ্মনো দমঃ। শক্রসোব বলং তস্য দয়। শীলং মুনেরিব॥ বাভবাগমিক্সদেনায়াং স জজ্ঞে ত্যা ভৃভূত:। নব বর্ষাণি জঠরে স্থিতা মাতুর্মহাযশা:॥ যদ্গ্রাহয়ামাল দমং নাতরং জঠরে স্থিত:। দমণীল 🕫 ভবিতা যত 🍅। য়ং নৃপাত্মজঃ ॥ ততন্ত্রিকালবিজ্ঞানঃ স হি তদ্য পুরোহিতঃ। দম ইতাকরোরাম নরিষাস্তস্ত্রা তু॥ স দমোর।জপুত্রস্ত ধকুর্বেদমশেষতঃ। জগতে নররাজস্য সকাশাদৃষপর্কণঃ॥ श्लू (७ देक् छ। वर्शमा छ त्नावन निवामिनः। সকাশাজ্জগৃহে কুংলমন্ত্রপ্রামঞ্চ তত্তঃ॥ <sup>म</sup>र्जः नकाभारतमाः क दिनाकाश्यवानि छ। ण्योक्षित्वनास्त्राक्रत्रक्तनृत्ह त्यानमाञ्चनान् । তং স্বরূপমহাত্মানং গৃহীতাল্রং মহাবলম্। <sup>স্বরংবনে</sup> কুতা পিত্রা জগতে সুমনা পতিম্॥

স্থা দশাণাধিপতেকলিন-চাক্তক্পি:।
পশুতাং স্ক্তৃত্তানাং যে তদ্ধ্পুপাগতাঃ ॥
তদ্যাক সাম্রাগোহভূন্ম কাজসা বৈ স্কে:।
স্থানারাং মহাননাে মহাবলপরাক্রম: ॥
তথা বিদ্রাধিপতেঃ পুলঃ সংক্রেন্সার চা
বপুনান্রাজপ্রশ্চ মহাধ্মুক্লারধী: ॥
তেহপ তথা বৃতং দৃট্য ছ্ঠারিদমনং দমম্।
মন্ত্রমান্ররেভাভং তলানকবিমাহিতাঃ ॥
এতামস্য বলাং কভাং গৃহীত্বা ক্রপশালিনীম্।
গৃহং প্রামন্তবােলং কভাং গৃহীত্বা ক্রপশালিনীম্।
গৃহং প্রামন্তবােলং স্থাবাবাহা ব্যংবরবিধানতঃ।
তদ্যেভ্যানো ভবিতী ভাগ্যা ধর্মোপপাদিতা ॥
অথ নেভ্তি সা ক্রিক্লাকং মদিরেক্লাং।
তত্তস্য ভবিতী সা বােল দমং পাত্রিবাতি ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ইতি তে নিশ্চমং কৃষা অয়ঃ পার্থিবনন্দনা:।
জগত্তাং স্থাক্সিং দমপার্থায়বর্তিনীম্॥
ততঃ কেচিন্দুপাত্তেযাং যে তৎপক্ষা বিচুকুঙঃ।
চুকু শুলাপরে ভূপাঃ কেচিন্মধ্যস্থতাং গতাঃ॥
ততো দমস্তান্ ভূপালানবলোকা সমস্ততঃ।
জনাকুলমনা বাক্যমিদমাহ মহাম্বে॥
দম উবাচ।

ভো ভূপা ধর্মকতোর ্যবদন্তি স্বয়ংবরম্।
অধর্মো বাথবা ধর্মো যদেভির্গৃহতে বলাং ॥
যদাপর্মো ন মে কার্য্যমক্তর্মা ভবিষাতি।
ধর্মো বা তদলং প্রোগৈটের রক্ষান্তেহরিলজ্মনে ॥
ভতো দশার্গাদিপতিশ্চারুধর্মা নরাধিপঃ।
নিঃশক্ং কার্মিছা তৎ সদং প্রাহম্মনে ॥
দমেন যদিদং প্রোকং ধর্মাধর্মাপ্রিতং নৃশাং।
তদ্দধ্বং যথা ধর্মো মমান্ত চ ন লুপ্যতে ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ততঃ কেচিন্নহী পালা অমৃচ্ র্ক স্থাধিপম্।
পরকারা সুরাগেণ গালকো বিহিতো বিধিঃ ॥
কলি রাগাং পরময়ং ন বিট্শু সিজনানাম্।
দমনাশ্রিত্য নিকারঃ স চাতা ছহিত্তব ॥
ইতি ধর্মান্দন সৈয়বা ছহিতা তব পার্থিব।
যোহত্যথা বর্ততে মোহাৎ কামান্দা সম্প্রবর্ততে ॥
তথাপরে তদা প্রোচ্শুহান্মানো হি ভূভ্তাম্।
পক্ষে যে ভূভ্তো বিপ্র দশার্গিধিপতের্কচঃ ॥
মোহাৎ কিমাহর্দ্ধেন্রং গান্ধর্শং ক্ষেত্রনান্।

न ছেষ শতো নাজে। হি রাক্ষঃ শত্রীবিনাম্ । তেইপি তৎপ্রহিতান্ বাণাংভেরাঞানৌ বলাদিমাং যো হরতি হতা তু পরিপদ্ধিনঃ। ভবৈদ্যবাস্থ্যে রাক্ষদেন বিবাহেনাবনীশ্বরা:॥ প্রধানতর এষে।২জ বিবাহদ্বিতমে মত:। কলিয়াণামতে। ধর্মো মহানলাদিভি: কুত: ॥ মার্কণ্ডের উবাচ।

অবং প্রোচঃ পুনভূপ। যৈ: পূর্বামুদিতা নৃ শা:। পরস্পরামুরাগে**ণ মাতিধর্মা**শ্রিতং বচ: ॥ সত্যং শত্তে। রাক্ষ্টেশ্ছিপি ক্রিয়াণাং পরে। বিধিঃ কিন্দ্রবাদী **জনকন্বাম্যে কুমার্যান্ত্রমতো বরঃ**॥ হতাতুপিতৃসম্ম বেলন হ্রিয়তে হি যা। স রাক্ষদো বিধিঃ প্রোজেশ নাক্ত ভর্ত্করে হিতা ॥ পশুতাং সর্বভূপাণামনয়া ষৰুতো দমঃ। গান্ধর্বসোহ নিষ্পতৌ বিবাধো রাক্ষসেহিত ক:।। বিবাহিতায়া: কন্তায়া: কন্তাত্বং নৈব বিদাতে। কন্যায়াশ্চ বিবাহেন সম্বন্ধ: পৃথিবীখরা: ৪ ত ইমে যে বলাদেনাং দমাদাদাভুমুদ্যতা:। বলনিস্তে যদি তিতঃ কুর্বস্তি ন তুসাধু তৎ॥ ম।কণ্ডের উবাচ।

তৎ জ্বাদৌ দমঃ কোপকধারীকুতলে!চনঃ। আবোপয়ামাদ ধয়ুর্বচনঞ্চেম্ব্রবীৎ।। মম'পি ভার্যা। বলিভিঃ পশুতো হ্রিয়তে যদি। তৎকুলেন ভুজাভাাং বা কো গুণ: ক্রীবজন্মন:॥ विद्याता । नि धिक् भौर्याः धिक् भन्नान् धिक्। শ্রাস্নম ॥

ধিগার্থ: সে কুলে জানা মক্তদ্য মহাতান:॥ यति ভाषाधिय मृहाः नमानात्र दलाविकाः। ধংরান্তি জীবভো বিকৃ ভাং মম ব্যর্থধরুম্মতাম্॥ ইত্যুক্তা তান্মহীপালান্মহানক্মুখান্বলী। অথাত্রবীৎ তদা পর্কান মহারিদমনো দম:॥ ত্বম উবাচ।

এষাতিশোভনা বালা চার্ককী মদিরেক্ষণা। কিং তৃদ্য জন্মনা ভার্য্যান যদ্যেরং কুলোডবা।। ইতি নঞ্চিত্তা ভূপালান্তথা যতত সংযুগে। যথা নিৰ্জিত্য মামেডাং পত্নীং কুক্কত মানিনঃ॥ মার্কভেম উবাচ।

ইতাভাষা ততভালে শরবর্ষমমুঞ্জ। ছাদ্যন্ পৃথিবীপালাংভমসেব মহীকহান্॥ ८७२लि वीका मशैभानाः भक्तभक्त्राष्ट्रम्नाकान्। - मुम्ह ७ ९ अ तुरू ११ भ हम भिरुष्ट व नी नवा॥

শরোৎকরান্।

চিচ্ছেদ পৃথিবীশানাং নরিষাভাত্মজো মুনে 🛭 বর্ত্তমানে তদা যুদ্ধে দমস্য ক্ষিতিপাত্মজৈ:। প্রবিবেশ মহানন্দঃ গজাপানির্যভে। দমঃ ॥ তমারান্তং দমো দৃষ্টা পড়কাপাণিং মহামূধে। मूरमां मत्रवर्षाणि वर्षाणीय भूतक्ततः॥ তদল্রাণি ততন্তানি শরকালানি তৎকণাৎ। महोननः व्यक्तिहरून थएकानाकानवकाष्ट्र ॥ ততো রোধাৎ সমাকহা তং দমস্য তদা রথম্। महानत्ना महावी. र्या। नत्मन यूयूर्थ नह ॥ বছৰা যুধ্যমানদ্য মহানন্দ্ৰ লাখবাং। দনো মুমোচ হৃদয়ে শরং কালানলপ্রভম্। তং লগ্নাম্মনোৎকৃষ্য বিভিন্নে ততো হৃদি। দমং প্রতি বিচিকেশ মহানন্দোহসিমুজ্জলম্ 🛭 পতস্তকৈনমুকাভং শক্তা চিচ্ছেদ তং দম:। শিরে। বেত্রপত্তেণ মহানন্দ্যা চাক্ষিনৎ॥ তিমিন্হতে মহানদে প্রাচুর্যোণ পরাধুখাঃ। বভূবুঃ পার্থিবা**স্তম্থে বপুলান্ কৃণ্ডিনাধিপঃ ॥** मरमन यूयूर्य छोट्नो वन्तर्गर्यमनाविज्ञः। দা কিণাত্যমহীপালত নয়ে। রণগোচরঃ 🛊 युभागानमा जरमाधिः कत्रवानः म देव नयु । हिंदछ्क्त मात्रदथदे⁴हत भिद्रः मश्दश्च <mark>ज्था ध्दश्नम्</mark>॥ ভিন্নথড়েলা গ্ৰাং সোহণ জ্ঞা**হ বহুক্টকাম্।** তামপাসা স চিচেছদ করস্থামেব স্ত্রঃ 🛚 যাবদভাৎ সমাদতে স বপুমান বরায়ুধম্। তাবচ্ছরেণ তং বিদ্ধাদমো ভূমাবপাতরৎ ॥ স পাতিতস্ততো ভূমৌ বিহ্বলাকং স্বেপথুঃ। বিনির্তমভিযুদাবভূব কিভিপা**ত্মজ:** ॥ তমালোক্য তথাভূতমযুদ্ধমতিমাত্মবান্। উৎস্জ্যানার স্থমনাং স্থমনাঃ প্রথযৌ দমঃ। ততো দশাণীধিপতি: স্বীতিমানকরোৎ ভয়ো:। দম্য্য স্থ্যনামাণ্ড বিবাহং বিধিপূর্বকম্ ॥ কুতদারো দমন্তত্র দশার্ণাধিপতে: পুরে। श्रिदां वर्गानः व्यवस्यो मञार्या। निक्रमानिकम् ॥ ननार्नाविপতिकाटनी पदा नाजाः खबक्यान्। त्रवरशाश्चिवरताष्ट्रीशक मानीमानाःखवा बहुन् । বস্তালকারচাপাদি ব্রোপক্ষরমান্মনঃ। करेक्वरेखक ख्या खारेखः পत्रिभूनंश बामक्कार ॥ रे ७ व्यविक्षः भगिषक भञ्जा मार्थापः ॥

# চতুব্ৰিংশদধিকশততমোহধ্যায়।

----

মাৰ্কণ্ডেয় উবাচ। म छाः नका छथा भन्नीः स्थमनाः स्थमहासूतन । প্রণম্য স পিতৃঃ প্রদী মাতৃশ্চ কিভিপায়জঃ॥ দাচ তৌ খণ্ডরৌ হুজর্ননাম হুমনা ভদা। তাভাং তৌচ তদা বিপ্র আশীভিরভিনন্দিতৌ॥ मरहारमयक मञ्चरक निवासमा देव भूरत । কুতদারে চ সম্প্রাপ্তে দশার্ণাধিপতে: পুরাৎ ॥ সম্বিদ্ধিনং দশার্শেং জিতাংশ্চ পৃথিবীখরান্। শ্রা প্রেণ মুমুদে নরিষ্যস্তো মহীপতিঃ। সোহপি রেমে স্থমনয়া মহারাজস্থতো দমঃ। वरतामानवरनारकम् शामानितित्रमासूयु ॥ व्यथं कार्तन मह्छ। त्रभाना मरमन मा। অবাপ গর্ভং স্ক্রমনা দশার্ণাধিপতে: সূতা॥ গোহপি রাজা নরিষ্যস্তো ভুক্তভোগো মহীপতি: বয়ংপরিণতিং প্রাপ্য দমং রাজ্যেহ ভিষিচ্য চ ॥ वनः अज्ञारमञ्चरमना পত्नी চामा यमत्रिनी। বানপ্রস্থবিধাদেন স তত্ত্ব সম্ভিষ্ঠত ॥ দান্দিণাত্য: স্থছর্ভ: সংক্রন্দনস্থতে। বনে। वश्यान् म मृशान् इद्धः ययावज्ञ शास्त्रः॥ স তং দৃষ্ট্ৰ নরিষ্যস্তং তাপসং মলপক্ষিলম্। ইক্রনোঞ্ তৎপত্নীং তপদাতিস্বর্দ্দলাম্। প্রচছ কন্তং ভো বিপ্র: ক্লিয়োবাবনেচর:। ানপ্রস্থাপ্তো বৈখ্যো বা মম কথ্যতাম্ ॥ ততো মৌনব্রতী ভূপোন হি তদ্যোত্তরং দদৌ। हैल्लामना ह उद नक्त्रभाहहोटेच यथा उथम्॥

मार्क एख से उना ।

खांचा उक निर्वाचार विश्वान ि उद्या हिरा ।

थारित । श्री जि वन न् का भार के जि स्व भित्र श्री हुए ।

शे (कि उक्त मिना सार क्रम खार वाल भार में मिन्य ।

निर्द्धि उन्मा त्रा त्यन त्यन त्य स्मानां क्रम ।

निर्द्धि उन्मा ति विश्व हिना विश्व क्रम क्रम ।

प्राधिन मही भान भूखाः क्रमार्थमां भार ।

प्राधिन मही सित्र । हिना क्रमा क्रमा हिना ।

प्राधिन स्व स्व स्व क्रमा दिना क्रमा क्रमा ।

प्राधिन विश्व स्व स्व क्रमा दिना क्रमा क्रमा ।

प्राधिन विश्व स्व स्व क्रमा दिना क्रमा ॥

মার্কণ্ডের উবাচ। <del>য়াকু। স হ্রাচা</del>রে। বপুমানবনীপতিঃ।

জনস্ব্যামিজ্ঞসেনায়াং শির**ন্চিভের সভ্য** চ 🛊 ততো विश्विद्यमिनना ज्यान ह वनवानिनः। তম্চু: স চ তং দৃষ্টা জগাম স্বপুরং বনাং ॥ গতে ভিল্বিনিখিদ্য সেজ্ঞদেন। বপুষ্তি। প্রেষ্যামান পুত্রন্য সমীপং শুক্তাপসম্॥ গভেছণা কাণ্ড মে পুত্রং দমং জ্রহি বটো মম। অভিজোহদিচ মন্তর্জুর্ ভাস্তং প্রোচ্যতেহত্ত কিম্ ज्यानि वाहाः भूत्वा तम सन्वीमाजिकः थिछ।। नज्यनामीनृनीः आश्वाः विटनाटेकाजाः महीनटजः স ভর্তাধিকতে। রাজা চতুর্ণাং পরিপালকঃ। জমাশ্রমাণাং কিং যুক্তং ভাপদান यह রক্ষদি॥ ভর্ত্ত। মম নরিষ্যস্ক স্থাপদস্তপদি হিতঃ। विमश्रकाख्यानात्या यथा नां उर उथा वृत्रि॥ আক্রয়া কেশেষু বলাদপরাধং বিনা ভত:। হতে। বপুমত। খ্যাতিমিতি তে ভূপতির্গত:॥ এবং স্থিতে তথ ক্রিয়তাং যথা ধর্মোন লুপ্যতে। তথাচ নৈৰ ৰজন্যমতোহকাৎ ভাপদী ছহম্॥ পিতা বৃদ্ধত্তপন্মী চ নাপরাধেন দ্বিত:। নিহতে। যেন যৎ ক্ষা কর্ত্তবাং ত্রিচিস্তাভাম ॥ मिख एक मिखाला वीताः मर्खनाखार्थरकाविनाः। তৈঃ সহালোচ্য যৎ কার্যামেবস্থুতে কুরুম্ব তৎ ট নাম্মাকমধিকারোছর ভাগদানাং নরাধিপ। কুক সৈতি শিতীখং সংমৰং ভূপতিভাষিত্ৰম্॥ विन्त्रथमा अनत्का यगत्नम यथा इड:। তথায়ং তব প্তাস্য কুলং তেন বিনাশিতম্য कछमाञ्चरताकमा भिष्ठा मर्ह्या जूककरेमः। তেনাপ্যখিলপাতাশ্ৰাদিনঃ প্রগা হভা:॥ পরাশরেণ পিতরং শক্তিক রক্ষরা হতম। শ্রুতাগ্রে পাতিতং কুৎসং রক্ষ্যামভব**ৎ কুল্**য্। অভাস্যাপি স্বংশস্য লঙ্খনা ক্রিয়তে হি যা। তাং নালং কলিয়ঃ সোঢ়ুং কিং পুনঃ পিতৃমারণম্ নায়ং পিতা তে নিহতো নারিন্ শত্তং নিপাতিভম্।

নশাভিত্ম।

থামত্র নিহতং মত্তে ছরি শল্পং নিপাতিভ্রম।
বিভেত্যসা হি কঃ শল্পং ভাতং যেন বনৌকসাম্।
তব ভূপস্য পূজ্সা মারিতে ছু বিভেতু বা ॥
তবেরং লজ্মনা যুকা বদ্যিংতং সমাচয়।
বপুমতি মহারাল সভ্তাজাতিবাদ্ধবে ॥
মার্কণ্ডের উবাচ।

ইতি गःकांढगरम्भनिखनागः विश्वा छम्।

পজিদেহমুপাশ্লিষা বিবেশাগ্লিং মনস্বিনা ॥
ইতি সাক্তেণ্ডেমে মহাপুরাণে দমচরিতে
চতুদ্ধিংশদ্বিকশতত্বোহধ্যায়ঃ।

পঞ্চত্রিংশদধিকশততকোঁ হধ্যায়ঃ।

—:\*:— মাৰ্কণ্ডেয় উ্বাচ।

ইশ্রমেনাসমাঞ্চরঃ স গছা শুদ্রতাপসঃ।
সমানত বৈথা প্রোক্তং দমায় নিধনং পিতৃঃ॥
তাপদেন সমাধ্যাতে দমন্তেন পিতৃর্পাধে।
কোদেনাতীৰ জ্ঞাল হবিবৈবাগ্লিককতঃ॥
স তৃ কোধাগিনা ধীরো দহামানো মহামুনে।
করং করেন নিশিষা বাক্যমেত্র বাচ হ॥
অনাথ ইব মে তাতো মগ্নি পুত্রে তৃ জীবতি।
ঘাতিত: অনুশংদেন পরিভ্রা কুলং মম॥
ভ্রাম্বাণো জনে তস্যাপ্যের কুলোং ক্ষমাসাহ্ম্
ত্র্ম্পান্তে। শিষ্টানাং পালনেহধিকতা বরম্।
পিতরক্ষাপি নিহতং দৃষ্ট্য জীবন্তি শত্রবঃ॥
তৎ কিমেতেন বহুনা হা তাতেতি চ কিং পুনঃ।
বিলাপেনাত্র যং কুতাং তদেখে। হত্র করেন্যেহম্॥
যাদ্যহং তস্য রক্তেন দেহোথেন বপুত্রতঃ।
ন ক্রোমি গুরোজ্নিং তং প্রেক্সেত্তঃশন্ম্॥

ভ্ৰেছাণিতেনোৰককৰ্ম ত্ৰা তাত্য্য সংখ্যে বিনিপাতি হস।। মাংদেন সন্যগ্রিজভোজনঞ ন চেৎ প্রেক্টামি ত্তাশনং তৎ॥ সাহায্যম্প্রদেব্যক্ত-शक्तर्वितिमाधितिमक्तमञ्चाः। कुर्वश्वि एवं जानि वाज्यभूरेश-র্ভন্মী করোমোষ রুধা সমেতঃ ॥ নিঃশ্রমাধর্মিকমপ্রশস্তং তং দাক্ষিণাত্যং সমরে নিহতা। ভোক্ষ্যে ভতোহহং পৃথিবীঞ্চ কুৎশং বৃহিং প্রবেক্যাম্যনিহত্য তং বা॥ ञ्चकृषं जिः जानमञ्कत्मोनिनः বনস্থিতং শাস্তবচোবিবিগ্নম্। इस्डाइमम्।थिनवस्थित-भाषिक्छ। चरते । गाषिक्छ। এবোহহুমালার ধহু: সথজ্গো त्रशी उदेशवातिवनः भरमणा

করেমি বৈ যৎ কদনং সমস্তাঃ পশস্ত্রেম দেবগণাঃ সমেতাঃ ॥ যো য: সহায়ে। ভবিভান্য তৃদ্য ময়া সমেতন্য রণায় ভূয়:। ত্যা ও নিঃশেষকুলক্ষায় সমূলঃতোহহং নিজবা€ৈদিয়াঃ ॥ यि कू लि न करवा श्यान् मः यूरा पावता खः পিতৃপতিরথ চোগ্রং দগুমুদ্যম্য কোপাৎ। ধনপতিবরণার্ক। রক্ষিতৃং তং যততে নিশিতশর ববৌ ছৈর্ঘাত য়িষ্টো তথাপি॥ নিয়ত্মতিরদোষঃ কাননাথওলোকো-নিপ্তিত্দণভক্ষ: স্ক্ভূতেষু মৈতা:। প্রভবতি ময়ি পুজে হিংসিতো যেন তাতঃ নিশিতক্ধিরত্পাস্তদ্য স্ত্রাঃ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে দমচরিতে পঞ্চ ক্রিংশদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

ষট্ত্ৰিংশদ্ধিকশততমোহধ্যায়ঃ।

---:\*:--

মাৰ্কণ্ডের উবাচ।
ইতি প্ৰতিজ্ঞায় তদা নবিব্যস্তস্থতো দম:।
কোপামৰ্থবিবৃত্তাক্ষ: শাশ্ৰমাবৃত্য পাণিনা॥
হা হতোহখাঁতি শিতবং ধাাখা দৈবং বিনিলা চ প্ৰোবাচ মন্ত্ৰিণ: সংবানানিনায় পুৰোহিতম্॥
দম উবাচ।

যদদা যুক্তং তদুত তাতে প্রাপ্তে সুরালয়ন্।
ক্রেতং ভবন্তির্য্ৎ প্রোক্তং তেন শৃদ্ধতপিদানা।
বৃদ্ধতপদা দ নৃপো বানপ্রান্থে ব্রতে স্থিতঃ ॥
মৌনব্রতধরঃ শস্তা মন্মাত্রা চেক্রদেনয়া ॥
প্রোক্তং সংপৃষ্টরা দর্বং তথা তথং বপুমতে।
দ চ থক্তাং সমাকৃষ্য যথাদবেয়ন পাণিনা ॥
করা জ্বান হুঠাস্থা লোকনাথ্যনাথ্বং।
মাতা চ মাং সমৃদ্ধিশু ধিক্শন্ধং কুর্বতী সতী।
মন্দভাগং গতন্ত্রীকং প্রবিষ্টা হ্বাবাহনম্।
সমালিক্য নরিষ্যন্তং প্রবিষ্টা বিদ্পালয়ম্॥
সোহহমদ্য করিষ্যামি যমে মাতৃক্লীরিত্র্য়া
হস্তাখ্রথপাদাতং দৈক্তন্ত্র পরিকল্পতাম্॥
অনিবাধ্য পিতৃক্রেরমহত্যা পিত্রাতক্ষ্।
অকৃত্যা চ বচো মাতৃক্লীবিতৃং কিমিহোৎস্থে।

মার্কতের উবাচ।

নিদ্রিণস্তদ্ধ**ে শেখা হা হেত্যুক**া তথা চ ত**ং**। কুত্ৰস্থে। বিমনসঃ সভ্ত্যবলবাহনাঃ ॥ নির্যয়ঃ সপরীবারাঃ থড়াশক্ত্রাষ্ট্রপাণরঃ। গ্ৰীয়া চাশিযো বিপ্ৰাৎ ত্ৰিকালজ্ঞাৎ পুরোধন: অহিরাড়িব নিশ্বা দমঃ প্রায়াদ্পুত্মতম। नीमां लालि मामछान् निचन् यामः निनि खवन ॥ সংক্রন্দনস্থতেনাপি দমো জ্ঞাতো বপুথাতা। আয়াত: স্প্রীবার: সামাত্য: স্প্রিচ্ছদ:॥ অকম্পিতেন মনসা স্বলৈ ভারা বিদেশ হ। দৃত্ঞ প্রেষয়ামাস নির্গমা নগরাবহি:॥ ত্বং শীঘ্রতরমাগচ্ছ নরিষাস্তঃ প্রতীক্ষতে। সভাগ্য: ক্ষত্ৰৰ কোতং সমায়াহি ম্মান্তিকম্ ॥ এতে মধাত্নিৰ্মুকাঃ পীতা বাণাঃ শিলাশিত। । ভিত্বা শরীরং সংগ্রামে পাস্যন্তি ক্ষিরং তব ॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

শ্রাদমস্ত তৎ সর্বং দৃতপ্রোক্তং যথে। বরন্। স্থ্যা প্রতিজ্ঞাং পূর্ব্বোক্তাং নিশ্বসন্ত্রগো যথা॥ **আ**হুয় সমরে **টেনং পুমান্স ন** বিকখতে। ততো যুদ্ধমতীবাসীদ্দ্মস্চ বপুথ্যতঃ॥ বণীচ রথিনা নাগো হস্তিনা হয়িনা হয়ী। অযুষ্ধাত বিপ্ৰাৰ্থে স যুদ্ধস্তামূলোহভবৎ ॥ শভাভাং সর্বদেবানাং সিদ্ধগদ্ধবিজিনাম। ठकरूल व**ञ्**धा बन्नन युधार्भारन नरम कुधा ॥ न গজে। न इथी नांचछमा दांगमङ्ख यः। ততো দমেন যুযুধে দেনাধাকো বপুমতঃ॥ ফদি বিব্যাধ চ দম ইযুণা গাড়মস্তিকে। তিমিন্ নিপভিতে সৈন্যং পল।য়নপরং যথৌ। সম্বামিকং ততঃ প্রাহ দমঃ শত্রুদমন্তথা॥

দম উবাচ। <sup>ক যা</sup>হি ছ্ট পিতরং ঘাতয়িছা তপসিনম্।

<sup>অশস্ত্রঞ্চ</sup> তপস্যস্তং ক্ষত্রিয়োহসি নিবর্ত্তাম্॥ মার্কণ্ডেয় উবাচ।

<sup>ততো</sup> নিবর্ত্তা দদস্ভো যোধয়ামাস সামুদ্র:। मेथूबः मह मचिक्किताक्षरेत्यू यूर्ध तथी ॥ ততঃ শরাসনামুট্ডেরে: বৈর্ব্যাপ্তং নভো দিশঃ। मगक मत्र पर माधः वानकारेन त्रपूत्र यः ॥ <sup>छ</sup> । भि वृत्रक्षार्ट्यन ८कार्यन म ममस्रया। চিচ্ছেদ তান্ শরাংক্তেষাং বিবলধাকেষু তানপি ॥ परकटेनटकन वाद्यान मश्च श्रृङ्याः ख्यान् ।

সম্বন্ধিনস্তথ।মিত্রাণানয়দ্ধমসাদনম্ঞ বপুমান্ স রথী ক্রোধঃ গ্রিহ তামুজ বাহর । य्यूर्य छ नरमनारको भटेनतानीविष्याभटेमः ॥ চিচ্ছেদ তস্য ভান্ বাণান্স চাস্য চ মহামুনে। যুযুধাতে হতিদংরজৌ পরস্পরবধৈষিণৌ॥ পরস্পরশবাঘাতবিচ্ছিন্নধন্ত্রী তথা। গৃহীত্থজ্গাবুদ্ধীৰ্য। চিক্ৰীড়াতে মহাবলী ॥ দমঃ ক্ষণং নূপং ধ্যাত্বা নিহতং পিতরং বনে। কেশেঘাকুষা চাক্রমা নিপাতা ধর্ণীভবে। শিবোধবায়াং পাদেন ভুজমুদামা চাত্ৰবীৎ॥ দম উবাচ।

পশুন্ত দেবতাঃ সকা মাফুষাঃ সিদ্ধপর্গাঃ। পাট্যমানং হি হানয়ং কত্তবদ্ধোর্বপুষ্মতঃ॥ মার্কভেয় উবাচ।

এবমুক্ত্বাচ স দমো হাদরং পাট্য চাসিনা। লাভুকাম<sup>\*</sup>চ স **স্**রৈ: **কভজেন নিবারিত:**॥ তত্ত ক। রিত্তসার কেনেবোদক ক্রিয়াম। বপুঅতশ্চ মাংসেন পিওদানং চকার হ।। ব।কাণ।ন্ভোজয়ামাস রক্ষ:কুলসমূভবান্। আন্ণ্যং প্রাপ্য স পিডু: পুন: প্রায়াৎ স্বকং

পুরম্ ॥

এবস্থিধা হি রাজানো বভূবু: স্থ্যবংশজা:। অন্যেহপি স্থায়ঃ স্থা যন্ত্রা ধর্মকোবিদাঃ ॥ বেদান্তপাবগাংস্তাংশ্চ ন সংখ্যাতুমিহেশৎসহে। এতেবাং চরিতং শ্রুছা নরঃ পাপাবিমুচাতে # टेजि मार्करखरा महाश्रुतारन बहु जिश्मनशिक-শততমোহধ্যায়:।

সপ্তব্ৰিংশদ্ধিকশততমোহ্ধ্যায়ঃ।

--:0:--

পক্ষিণ উচু:। ইত্যেবস্জাু স মুনিশাকিওেরো মহাতপা:। विश्वा कोहे, विश्वालि हरक माधा हिनीः

ক্রিয়া:॥

ভাষাভিশ্চ শ্রুতং তমাদ্ব**েতে প্রোক্তং মহামুনে** অনাধিসিদ্ধমেত**ৈ পুরা প্রোজং স্বয়স্ত্রা ॥** মাৰ্কভেয়ায় মুনবে যত্কং কৰিছং ভব। भूगुः পविज्ञभायुष्यः मर्सकामार्थमिकाम् ॥. পঠकाः भृगुडाक्शांति मर्साशादेतः खाम्हारण।

আনাবেব কুতাবে চ প্রস্নাহি চতুরস্বরা। পিত।পুজ্রন। সংবাদন্তথা স্বষ্টিঃ সন্ধুবঃ। তথা মন্নাম্ৎপতীঃ রাজ্ঞাঞ্চরিতং মুনে ॥ অস্মাভিরেতৎ তে প্রোক্তং কিমন্তৎ শ্রোতুমিচ্ছনি এতান্ স্কান্ন রঃ শৃণুন্পঠরপি সভাস্ত। বিধ্যু সর্বপাপানি ব্রহ্মণ্যের লয়ং ব্রচ্ছেৎ॥ অষ্টাদশ পুরাণ:নি যানি প্রাহ পিতামহ:। তেৰাত্ত সপ্তমং জেয়ং মার্কভেয়ং সুবিঞ্তম্। ব্ৰাহ্মাং পাত্মং বৈষ্ণবঞ্চ শৈবং ভাগবতং তথা। তথাক্তমারদীয়ঞ মার্কণ্ডেয়ঞ সপ্তমম॥ জাগেরমষ্টমং ত্থোকং ভবিষ্যং ন্বমং স্মৃতম্। দশমং ব্ৰহ্মবৈৰৰ্জ্য নৃসিংহৈকাদশং তথা ॥ বারাহং ভাদশং কোত্রং স্কান্দমত্র ত্রেরাদশম। চ্ছুদিশং বামনকং কৌৰ্মং পঞ্চদশং তথা ॥ মাৎকৃঞ্চ গারিড় কৈব ব্রহ্মা ওঞ্চ তত: পরম্। **ष्यष्टोतमপু**রাণানাং নামধেয়ানি যঃ পঠেৎ॥ ত্রিসন্ধাং জপতে নিতাং সোহখমেধফলং লভেৎ। চতুঃ প্রশ্বমাযুক্তং প্রাণং মার্ক ওদংজ্ঞকম্॥ শ্রুতেন নশুতে পাপং কল্পকোটিশতৈঃ কুত্ম্। ব্হ্মহত্যাদিপাপানি তথাস্থায়গুডানি চ॥ ভানি সর্বাণি নশুস্তি তৃলং বাতাহতং যথা। পুষরদানত: পুণ্য: প্রণাদ্স্য জায়তে॥ বন্ধ্যা বা মৃতবৎসা বা শূণোতি যদি ভত্ত:। সাণি ৰৈ লভতে পুত্ৰং সৰ্বলক্ষণসংযুত্তম্। ধনধান্যমবাপ্লোতি স্বৰ্গলোকং তথাক্ষয়ম্॥ স্থাপশ্চোগ্রকর্মা চ শ্রুত্তিতৎ সকলং নরঃ। সর্বপাপবিনির্মৃতঃ স্বর্গলোকে মহীয়তে॥ আযুরারোগ্যমেখর্যাং ধনধান্যস্তাদিকম্। বংশকৈৰ বাৰছেদী প্ৰাপোতি বিজ্পত্ম॥ শ্রুইম্বছৎ সকলং বিপ্রে যথ কুর্য্যাৎ তল্পি।ময়। অগ্নিং সমাধায় ততো হোমং কুর্য্যাদিচক্ষণঃ ॥ था**फो প्**রाশং গোবি<del>ল</del>ং ছৎপল্লে মুনিসত্তম। **পृकाः वभूक्रदेखर्क्यदे**मार्गक्षमाना।श्रदेबस्यथा ॥ বাচকত্ত সপত্নীকং পূজবেশুনিসভূম। বাচকার ভভো দেয়া পৌ: সংংসা প্রস্থিনী॥ कृतिः भगावजी विद्य वित्रगार प्रक्षकः छथ।। যথাশ জ্ঞাচ দাভবাং নৃবৈপ্তাম্য দিবাহনম্॥ বাচকং ভোষরিমা ভূ স্বন্তীতি সমুদীরয়েৎ। অপুজ্য বাচকং যম্ভ শ্লোকমেকং শূণোতি হি 🛚 নাদৌ পুণ্যম্বাপ্নোভি শান্তচৌর: স্বতো বুটে:।

न छॅमा (मवा: व्यौनिक निकत्न देनव भूँखकान। पखः आकः न ८० छ्खि श्रान्डीर्थक्तः न ह। लভতে भाजरहोरबार्टनो निन्तरका रवनशांकरेकः भार्क एख ममारक्षी कू छा ९ मवः का बरम् मूधः। (पञ् शक्र विनौ : नगां ९ मर्स्र भा भविभूक रेव ॥ বসনানি চ রত্নানি স্পত্নীক্ষিজাতেয়ে। কুওলে কঞ্কোফীবং শ্যাণং সোপন্ধরামপি # সোপানৎ করকং স্বৰ্দুদ্রিকাং সপ্তধান্যকৃষ্ ॥ কাংস্যপাত্তং ভোজনার্থং স্বতপাত্রসমধিতম্॥ . এবং ক্বতে হিজ্ঞেষ্ঠ কুতকুত্যো ভবেররঃ। তাখনেধসহস্সা রাজস্মশভসা চ॥ कनः देव সমবাপ্লোতি अपा সম্যাধিধানতঃ। ন চৈব বমভীতিঃ স্যায় তস্য নরকান্তর্ম্ ॥ সর্বপাপবিনির্মুক্তঃ পুনাভ্যেকেতিরং কুলম্। অবিচিছ্র: সদা বংশো ভবিষ্যতি ন সংশয়:॥ স গচেত্দিদ্রলোকঞ্ ব্রহ্মলোকং স্নাত্নম্। চ্যুতন্তত: পুননৈব স ভবিষ্যতি মানব:॥ পুরাণশ্রবাদের পরং যোগমবাপুরাৎ। भाष्टिकांत्र न मांख्याः वृष्टा द्वमनिमटक ॥ গুরুবিদেষকে চৈব তথা ভগ্নতেষু চ। পিতৃমাতৃপরিত্যাগে স্বর্ণন্তেরিনে তথা॥ ভিন্নমর্যাদকে চৈব ভবৈথব জ্ঞাভিদ্যকে। এতেষাং নৈব দাতব্যং প্রাট্নঃ কণ্ঠগতেরপি। লোভাগা যদি বা মোহান্তয়াদ্বাপি বিশেষতঃ। পঠেদা পাঠয়েদাপি স গচ্ছেররকং জ্বম্॥ জৈমিনিরুবাচ।

ভারতে নাভবদ্যন্ম সন্দেহক্ষেটিনং দিলা:।
তত্ত্বন্তি: ক্বতং মৈত্রাৎ কশিদন্য: করিষাতি ॥
যুবং দীর্ঘারুব: ছোটেচেনীরোগা বৃত্তিসংযুতা:।
সাংখ্যোগে তথা চাস্ত বৃদ্ধিরবাভিচারিশী ॥
পিতৃশাপকতাদোষাদোশ্যনস্ং বাটপত্ ব:।
এতাবহুকা বচনং স দ্বগাম স্মাশ্রমম্॥
চিন্তমন্ প্রমোদারং পশ্লিণাং বাক্যমীরিতম্।
কৈমিনি: স্মহাভাগঃ প্রস্থিছ দিলোভ্যান্

ইতি মার্কণ্ডেয়ে মহাপুরাণে সপ্তত্তিংশদ্ধিক-শততমোহধ্যারঃ।

> नमारथिमितः भूत्रांगम्। अत्रे भः नटंकिकाः।

#### নম: ভগবতে বাস্তদেবার ॥

# মার্কভেয়পুরাণ।

# প্রথম অধ্যায়।

বোগিগণ ভক্তিপৰিত্ৰ হৃদয়ে যাহাৰ বন্দনা করেন, যাহা আবিভূতি হইরাই বিক্লেপ সহকারে ভূবোক, ভূববোকি ও অর্বোক অভিক্রম করিয়াছিল এবং যাহা নিশ্চরই ভবভয়ার্তি বিনাশ করে, সেই হবিপদক্ষণযুগ্য তোমাদের পৰিত্রতা বিধান কঞ্ন।

যিনি ক্ষীরসাগরগর্জে অনস্তের ফণ্মগুলে শয়ন করিয়া থাকেন, যিনি নিধিল পাপ তাপ একবাবেই বিনাশ কবিতে পারেন এবং যাঁহার নিখাসে সলিলরাশি প্রাক্তরেগ আন্দোশিত ও তংপ্রভাবে জলবিন্দুসকল উর্প্ধে উৎক্ষিপ্থ হও্যাতে, স্বিৎপতি ভয়ক্ষর মৃঠি ধারণ করিয়া, যেম স্বেগে নুছা করে, সেই ভগবান্ মধুসদন ভোমাদেব সকলকে পালন ক্রান।

নারায়ণ, নর, নরোত্তম ও দেবী সরস্বতীকে নমস্কার করিয়া, পরে জয় উচ্চারণ করিবে।

বাদের শিষা পরমতেজনী লৈগিনি তপংস্বাধ্যান্ত্রিক মহামূনি মার্কভেরকে জিজ্ঞানা করিলেন, ভগবন্! মহাত্মা বাদে যে ভারতকথা কীর্ত্তন করিয়াছেন, উহা বেমন জাতিও জিসম্পন্ন ও সাধ্শক্ষম্হে অসক্ষত, দেইরূপ বিবিধ অমল শাস্ত্রসমূচ্যে পরিপূর্ণ। উহাতে পূর্বপক্ষ ও উররপক্ষ উভন্নই আছে। বিষ্ণু যেমন দেবগণের ও ব্রাহ্মণ যেমন নিপদসমূহের প্রধান এবং হুমণেব মধ্যে চূড়ামণি, আর্ধের মধ্যে বজ ও ইন্ত্রিয়ের মধ্যে মন বেমন ক্রেষ্ঠ, মহাভারত ও তেমনি সমুদ্য শাস্ত্রের মধ্যে উৎকৃষ্ট। উহাতে ধর্মা, অর্থ, কাম ও মোক্ষ এবং তাহাদের পরপ্রের অব্যাথাতে যথাযথ প্রযোগবিধিও বর্ণিত আছে। এইলক্ত এই মহাভারতই উৎকৃষ্ট ধর্মণার, অফ্রম অর্থায়ত যথাযথ প্রযোগবিধিও বর্ণিত আছে। এইলক্ত এই মহাভারতই উৎকৃষ্ট ধর্মণার, অফ্রম অর্থায়ত যথায় করার ও হিতির সাধনরূপে প্রণান করিয়াছেন। এই মহাশাস্ত্র ভারত বহুল বিস্তৃত হইলেও, উলারবৃদ্ধি বেদব্যাস ইহাকে এরূপে রচনা করিয়াছেন যে, কোনক্ষণ বিরোধ ইহাকে অভিভূত করিতে পারে না। বেদব্যাসের বাক্যরূপ সলিলরাশি বেদরূপ অত্যুক্ত পর্মিত হইতে অবতরণ করিয়া, কুতর্করপ পাদপপরম্পরা নির্মান করিয়াছে। ক্রমণের পবিত্রতা বিধান করিয়াছে। ক্রম্বেল্পান প্রতিত্ব পর এবং কথা সকল উহার বিপূল সলিলসংগ্রহ।

ভগবন্! আমি এই ভারতাখ্যান যথাযথ বিদিত হইবার মানসে আপনার শরণাপর হইয়াছি। ভগবান্ ফনার্দন নিগুণ হইলেও, কিজল মানুষরপে অবতীর্ণ ইইয়াছিলেন ? সেই একা দ্রোগদীই বা কিজল পঞ্চ পাগুবের মহিষী ইইয়াছলেন ? এ বিষয়ে আমার অতিমাত সন্দেহ জায়য়াছে। বলাদেব স্বঃ পাপের প্রশমন কর্ত্তা হইলেও, কিজ্বল তার্থযাত্তাপ্রসংক ব্রন্ধহত্যাপাতকের পরিহার করিয়াছিলেন ? পাগুবেগণ যাহাদের নাথ, সেই মহারথ দ্রোপদীর প্রগেশই বা ক্লিক্স আনাথের ভার অবিবাহিত দুশায় নিহত হইলেন ? আপনারা মাদৃশমূত্র্ত্তি ক্লেনগার সর্বাই জান বি্জ্ঞান বিধান করেন। অত্তাব উল্লিখিত ঘটনা সকল বিস্তারপূর্বক কার্তন কর্মন।

অষ্টাদশদোষবিরহিত মহামুনি মার্কণ্ডের জৈমিনির এই কথা শুনিরা বলিতে লাগিলেঞ্চ, সম্প্রতি আমাদের ক্রিরাকাল উপস্থিত। বিভারপুর্বক বলিবার এ সমর নহে। বাহারা বিভার পূর্বাক বলিরা, ভোমার সন্দেহ দ্ব করিবে, সেই পকীপণের বৃত্তান্ত বলিতেছি, শ্রবণ কর। পিলাকা, বিবোধ, স্পূত্র ও স্থাধ, দোণের এই চারি পুত্রই শান্ত্রচিস্তক ও তম্মঙা। তুমি বিদ্ধাণ পর্বতের কন্দরমধ্যে তাহাদের নিকট গমন করিয়া, উক্ত বিষয় জিজ্ঞানা কর। মার্কণ্ডের এইরূপ কহিলে, দৈমিনি বিশ্বরোৎক্ল লোচনে প্রভাৱের করিলেন, ব্রহ্মন্! পক্ষী মাহাবের ভাষ কথা বলিতে পারে, ইহা নিরতিশয় বিশ্বয়ের বিষয়। তাহারা প্রিধানিতে জন্ম গ্রহণ করিয়াও, কিরপে ঐরপ জ্ঞান সম্পন্ন হইল ? তাহাদিগকে জ্যোপ্তাই বা কিজ্ঞা কহিয়া থাকে ? জ্যোপই বা কে, বাহার চারি পুত্রেরই ঐরপ ধর্মপ্রান সমুৎপন্ন হইয়াছে ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, পূর্বে নন্দনকাননে বাহা ঘটিয়াছিল, অবহিত হইয়া প্রবণ কর।

দেবৰ্ষি নাৰদ নশানে গমন ক্ৰিয়া, অবুলোকন ক্ৰিলেন, দেবৰাজ ইন্দ্ৰ প্ৰংশচলীগণের মধ্য ৰাজী হইনা, তাহাদের মুখের প্ৰতি একদৃষ্টে চাহিয়া আছেন। ঋষির দশনমাত্র শচীপতি তং-শশাং গাত্রোখান ক্ৰিয়া, স্বকীয় আসন তাহাকে প্রদান ক্রিলেন। ইন্দ্রকে উঠিতে দেখিয়া, সেই দেবালনাগণ্ড বিনয়াব্যক হেইরা, দেব্ধিকে প্রণাম ক্রিলেন। তদেব্য যথাযথ অভ্যতিত ইইরা, দেব্যাল উপ্রেশন ক্ষিলে, মনোহারিণী কথা সকল বলিতে আরম্ভ ক্রিলেন।

দেবরাজ কথান্তরে নেই মহামুনিকে লিজ্ঞাসা করিলেন, এখানে রস্তা, মিশ্রকেশী, উর্নশী, জিলোন্তমা, স্বতাচী, মেনকা প্রভৃতি সকলেই উপস্থিত আছে। ইহাদের মধ্যে বাহাকে আপনার পাছন্দ হর, নৃত্য করিতে আজ্ঞা করন।

দেবরাজের কথা শুনিয়া, দেবর্ধি সবিশেষ চিস্তা করত, অপ্যাদিগের সকলকেই কহিলেন, ভোয়াদের মধ্যে আপনাকে সর্বাপেজা সমধিক রূপ, গুণ ও ঔদার্যাশালিনী বলিয়া যাহার জ্ঞান আছে, সেই আমার সমকে নৃত্য করক। কেননা, গুণরপ্রিহীনা রম্পীর কোন বিষয়েই সিজিলাই স্থাব নহে। অক্ষর অহুষ্ঠান সম্পান নৃত্যই নৃত্য বলিয়া পরিগণিত, তদিতর নৃত্য বিভ্রমা মাত্র।

মার্কণ্ডের কহিলেন, দেবর্ধির বাক্যসন্কালেই তাহারা সকলে পরস্পার বলিতে লাগিল, আনিই গুণাধিকা, তুনি নহ, তুনি নহ। তাহাদের এইপ্রকার সন্ত্রম সন্দর্শন করিয়া, ভগবান্ পাকশাস্ন বলিতে লাগিলেন, তোমরা এই দেবর্ধিকে জিজ্ঞাসা কর। ইনিই তোমাদের মধ্যে গুণাধিকার নির্বাচন করিবেন। অপ্রারা ইল্রের ছলোফুবর্তিনী হইয়া, নারদকে জিজ্ঞাসা করিলে, তিনি তাহান্দিসকে কহিলেন, মহর্ষি হ্রাসা হিমাচলে তপ্ত। করিতেছেন। তোমাদের মধ্যে সেউছাহাকে বলপুর্বক ক্তিত করিতে পারিবে, দেই অন্যার মতে সকল অপেক্ষায় সমধিক গুণশালিনী

তাঁহার এই কথা গুনিয়া, সকলেরই কলেবর কম্পিত হইয়া উঠিল। তথন সকলেই পরশাং বিশেত লাগিল, আমাদের ইহা সাধ্য হইবে না। তাহাদের মধ্যে বপুনায়ী অপারা পূর্ব্ধে বছবাঃ মুনিগণের বিক্ষোভ সম্পাদন করিয়াছিল। তজ্জ্ঞ গর্কিত। ইইয়া কহিল, আমি অন্য সেই হিনাচাল সমন করিয়া, দেহরথের যন্তা ছর্কালাকে অররপ শল্পের আঘাতে হিরুরশ্মি করিয়া, তদীয় বৃদ্ধির সারথিকে বিপপে আনয়ন করিব। তিনি ব্রহ্মা, বিয়ু বা অয়ং মহাদেবই হউন আলা কামবাণে তাহার অন্তর কতাকুলিত করিব। এই বিলয়াই সে হিমাচলে প্রস্থান করিল। মহর্ষির তপংপ্রভাগে সিংহ ব্যাআদি হিংল্ল জন্ত লাগ্রন্থভাব অবলম্বনপূর্বক তত্রতা আশ্রমে অবস্থিতি করিতেছে। বিশ্বার আশ্রম হইতে ক্রোশমার ব্যবধানে অবস্থিতি করিয়া, প্থেমাকিলের ভায়ের, সম্মুণ্ট্ অরলহরী বিস্তার সহকারে গান করিতে লাগিল। তাহা গুনিয়া মহর্ষির অন্তরে বিশ্বয়রসের সকার হবলে, তিনি ভাহার সমীপে গমন করিলেন। অনস্তর তাহাকে দর্শন করিয়াই, তাহার ছর্জিগর্ষি বৃশ্বিতে পাদিরা, আআনকে সুক্র্যুত করত, রোষামর্থের বনীভ্ত হইয়া, কহিতে লাগিলেন, আলি আকাশবিহারিনি। ভূমি মলোয়ারা হইয়াছ, সেইজন্তই আমার অতিকণ্টে অর্জ্জিত তপভার বিশ্বসাধনপুরংসর আমাকে ছংখ দিতে আনিয়াহ। বৃন্ধিলাম, তোমার মতিচ্ছের ঘটিয়াছে। অতঞ্জি আমার ব্রোধে কল্পীয়ভা হইয়া, তোমাকে পশ্বিধানিতে জন্মপ্রহণক বোল বংসর অভি

বাহন করিতে হইবে। পশিণীরপধারিণী ভোমার গর্ভে পুত্রচতুইবের জন্ম হইবে। কিছ ভাহাদের নাননপাননাথিজনিত কোনরপ প্রীতি ভোগ না করিয়াই, শত্রপুতা হইরা, পুনরার স্বর্গে স্মাগতা হইবে। বাহা বলিনাম, ইহাতে আর হিফ্জি করিও না।

মহর্বি হর্ত্তাসা ক্রোধলোহিত লোচনে সেই মানিনীকে এই প্রকার অসম বাক্য ধাবণ করা।
ইয়াই, সেইস্থল ত্যাগ করত মলাকিনীতে গমন করিলেন।

है जि वर्गार नाम श्रथम व्यक्षाता

#### ৰিতীয় অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ক্ষরিষ্টনেমির পুত্র পুক্ষিরাজ গরুড়। গরুড়ের পুত্র নশ্যাতি। নশ্যাতিদ্ব পুত্র স্থার্থ। স্থার্থনি স্থার ক্ষিত্ত। কুজিব পুত্র প্রলোল্প। প্রলোল্পের ছুই পুত্র, কল্প ও করব। তর্মধ্যে কল্প কৈলাসশিথরে গমন করিয়া, অবলোকন করিল, কুবেরের অন্তর নিশাচর বিছাজপ ভার্য্যাসহায় হইয়া, স্থানির্পান মান্যাস্থর পরিধান করিয়া, মদ্যুপানপুরঃসর অমলশোভন শিলাপট্টে আসীন রহিয়াছে। দর্শনমাত্র নিশাচর ক্রোধভারে কহিল, রে বিহগাধ্ম! তুমি কিজ্জ্য এখনে আসিলে ? দেথ, আমি স্ত্রীসালিধ্যে অবস্থিতি করিতেছি। স্থ্যুদ্ধি ব্যক্তিরা এইরূপ মৈথুন-সম্যে কথনই কাহার নিকট আগ্যন করে না।

কৃষ্ণ কৃষ্

আবার, তুমি আমি ভিন্ন অভাত প্রাণিগণেরও ইহার উপর সমান প্রভৃতা আছে। অতএব ডোমার ইহাতে আমার বণিয়া অভিমান করিবার বিষয় কি ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, করু এইপ্রকাব কহিবামাত্র, রাক্ষ্য তৎক্ষণাৎ তাহাকে ধ্রুণাবাতে ছিন্ন করিয়া ফেলিল। করুর প্রাতার নিধনবার্ত্ত। প্রবণ কবিরা, ফ্রোধে মৃচ্ছিত হইয়া, বিহ্যুজ্পের নিধনবাধন মান্য করিল। তথন কৈলাদশিখনে গমন করিয়া, প্রথমে ক্রেষ্ঠ প্রাতার অস্ত্যেষ্টি স্মাধান করিল। অনন্তর কোধে ও অমর্থে বিরুত্তলোচন হইয়া, ভ্রুক্রাক্সের স্তার, নিখাস্তাব পরিহার-পুরংসর প্রবণ পক্ষণবনে পর্বত্তর প্রচালিত ও বেগবলে বারিদপ্রততী বিপর্যাত্ত কবিয়া, ক্ষণমধ্যেই পক্ষর্মহারে হিমাচল লহ্মন ও রাক্ষ্যের অধিষ্ঠিত প্রদেশে গমন করিয়া, অবলোকন করিল, সে পানাসক্ত চিত্তে স্বর্ণমর পর্যাক্ত অবন্থিতি করিতেছে। তদীর আয়ত্তলোচনা ভার্যা তাহার বাম উরু আশ্রুষ করিয়া রহিয়াছে। তাহার নাম মদনিকা। তাহার কঠিবলি পুংরোকিলের স্তার, অতীব মাধুর্য্য-বিশিষ্ট। তদ্পনি করুর রোষপরীত চিত্তে সেই ক্ষম্বেক্তি রাক্ষ্যকে কহিতে লাগিল, রে স্কুইাম্বন্। আইস, আমার সহিত্ বৃদ্ধ করে। বেহেছু, জুমি আমার শ্রাতাকে বিশ্রুর অবস্থার বিনাশ করিয়াত, সেই হেছু আমি মদনংগক্ত তোমাকে ব্যানর প্রেরণ করিব। বিখাস্ঘাতকতা করিলে অথবা স্ত্রী ও বালক বিনাশ করিলে, বে বে লোক বা যে বে বরুর করি, অন্য মংকর্ত্তক নিহত হই রা তুমি তথার গ্রমন করিবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, পতগপতি করুর স্ত্রীর সারিধ্যে এই প্রকার বাক্য ঐবৈধাণ করিলে, নিশাচর রোষাবিষ্ট হইরা, প্রাকৃত্তর করিল, আমি তোমার প্রতাকে সংহার করিরা, পুক্ষকার
প্রদর্শন করিরাছি। অদ্য তোমাকেও এই ধর্জার ছারা নিহত ক্রিব। রে বিহ্গাধ্য। কণকাল
অবস্থিতি কর, প্রাণ থাকিতে আমার নিকট হইতে যাইতে পারিবে না। এই বলিরাই সে
অন্তর্শন্ত কর্মবিষ্ট প্রকাশ থর্জা গ্রহণ করিল। তথন উভরের, গরুড় ও ইক্রের ফ্রার, অভ্ন রুদ্ধ
উপস্থিত হইল। অনন্তর নিশাচর ক্রোধ্ভরে স্বেণে থর্জা উত্তোগন করিরা, পতগেশ্বের উদ্ধেশ

নিক্ষেপ করিল। পতপেক্স ভ্তল হইতে কিঞ্ছিৎ উৎপুত হইবা, তৃগু বারা গকড় যেমন সর্পকে, তবং সেই থড়াকে গ্রহণ করিবা, বক্তু ও পাদতল বারা তাহা ভালিয়া কেলিল। থড়া ভয় হইলে, উভয়ে বাছ্যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল। তথন পক্ষিরাল রাক্ষ্যের বক্ষস্থল আক্রমণ করিবা, তাহার পক্ষ, পদ, অন্ত ও যতক তৎকণাৎ ছিন্ন করিয়া ফেলিল। রাক্ষ্য বিনষ্ট হইলে, তদীয় পত্নী পক্ষিবালের শরণাপন্ন হইবা, কিন্তংপরিমাণে আস্প্রকাশপুরঃসর কহিতে লাগিল, আমি তোমার ভার্য্যা হইব। তথন থগপ্রেষ্ঠ কল্পর তাহাকে গ্রহণ করিবা, স্বনীয় গৃহে প্রত্যাগত হইল। রাক্ষ্যকে বিনাশ করিবা, তাহার ভাতৃথণ পরিশোধ ইইল।

মেনকার পুত্রী সেই মদনিকা ইচ্ছানাতে বিবিধ রূপ ধারণ করিতে পারিত। ক্রমের গুহে স্মাগতা হইমা, পক্ষিরপ ধারণ করিল। তদবস্থায় তাহার গর্ভে ক্রমেরর ঔর্গে ডার্ফী নামে ক্যার জন্ম হইল। ্ছ্র্রাসার শাপানলে দ্র্দেহা সেই অপ্সরা বপু এই ক্যার্গে জন্ম গ্রহণ করিল।

মন্দপালের চারি পুতা। তাছাদের নাম জরিতারি, দ্রোণ ইত্যাদি। তাহাদের মধ্যে সর্ক্রিকি বেদবেদালপারগ ও ধর্মাত্মা। সে কন্ধরের অন্মত্যন্ত্রসারে তার্কীকে পরিগ্রহ করিল। কিয়ৎকাল পর্যবসানে তার্কীর গর্ভ হইল। তদবস্থায় সথ্য পক্ষ অতীত চইলে, তার্কী কুরুক্তে গ্রমন করিল। তৎকালে কুরু পাগুবগণ দারুণ যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইরাছিলেন। ভবিতব্যতাবশতঃ তার্কী সেই রণমধ্যে প্রবেশ করিয়া, অবলোকন করিল, ভগদত্ত ও অর্জ্বন গদাযুদ্ধে প্রবৃত্ত ইয়াছেন। তাহাঁদের শর্পরস্পরা, শলভপংকির হাগে, একবারেই আকাশ আচ্ছের করিয়া ফেলিয়াছে।

ঐ সময়ে অর্জুনের কার্মুক হইতে অতীব্বেগবিশিপ্ট ভ্রুক্সভামল এক ভল্ল বিমৃক্ত হইগাই, তার্ম্মীর জঠরত্বক্ ছিল্ল করিয়া ফেলিল। তাহাতে গর্ভাশর বিদীর্ণ হইলে, শশাক্ষসন্ধিত অওচত্ত্বীর, পরমায়ুর তথনও ক্ষয় না হওয়াতে, যেন ত্লরাশির ভাগে, ভ্রিতে পতিত হইল। সেই অওচত্ত্বীরের পতনসমকালেই ভগদত্তের স্প্রতীকনামক গলরাজের কঠবিল্ছিনী স্থবিশাল ঘণ্টা অর্জুনের শরপ্রহারে ছিল্লবন্ধনা হইয়া, ধরাতল আশ্রয় এবং তাহা সমস্তাৎ সমভাবে বিদারণ করিয়া, পিশিতের উপরি অধিষ্ঠিত সেই অওচত্ত্বীয়কে আছেলেন পূর্বক অবস্থিতি করিল।

এদিকে, ভগদত নিহত হইলেও, বছদিন ক্র পাণ্ডব উভয়পক্ষীয় দৈভের যুদ্ধ হইন। অনম্ভর যুদ্ধ শেষ হইলে, যুধষ্ঠির মহাত্মা ভীত্মের নিকট অলেষধর্মপ্রকার্থ গমন করিলে, শমীক নামে প্রাসিদ্ধ সংযমী আহ্মণ সেই ঘণ্টামধ্যগত অওচতুইয়েব অধিষ্টিত প্রদেশে পদা প্ন করিলেন। বাল্যকালবশতঃ দেই অওচতুষ্ট্যের তৎকালপ্র্যান্ত বাক্ষ্ উ হয় নাই। স্মৃতরাং বিশিষ্টরূপ বিজ্ঞান সমুৎপদ্ন হইলেও, তাহারা চিচীকুটী শব্দ করিতেচিল। সশিষ্ শমীক দৈই শাস শুনিতে পাইলেন। শুনিতে পাইয়া, বিস্থাপর হইয়া, ঘণ্টা সমুৎপাটিত করিয়া, মাতা পিতাও পক্ষবিহীন উল্লিখিত শিশু চতু ইয়কে দর্শন করিলেন। তদর্শনে তিনি বিশ্বগা বিষ্ট হইয়া, অমুগত বিজ্ঞাদিগকে কহিতে লাগিলেন, বিজ্ঞেষ্ঠ উপনা অমুরবাহিনীকে স্থুরগণের নিপীড়নযন্ত্রণান্ন প্রায়মান অবলোকন করিয়া, যথার্থ ই বলিয়াছিলেন, তোমরা পলাইও না, নির্ব ত্ও। কি**জন্ত কাতর হই**য়া, শৌর্যা ও বশ ত্যাগ করিয়া, গমন করিতেছ? কোথায় গেলেই বা মরিবে না ? বিধাতা যাবৎ কৃষ্টি করিয়াছেন, মনে মনে মৃত্যু কল্পনা করেন নাই, তাবং, প্লার্নই করুক, আর যুদ্ধই করুক, অবশ্রত বাঁচিয়া থাকিবে। দেখ, কেহ স্বনীয় গৃহে থাকি গাই, মুকুসুৰ নিপাতিত হয়; কেহ্ 👪 প্ৰায়ন ক্রিয়াও মরিয়া থাকে; কেহ কেহ আবার অন্ন প্র ভোগ করিতে করিতেও মরিয়া যায়; কেহ কেহ বা বিলাদীপরায়ণ হইয়াও, মৃত্যুর ক্রোড়শারী হর; কেহ কেহ আৰার কামভোগসম্পন্ন ও সর্বপ্রকার রোগশোকশৃত্ব এবং শস্তাঘাতে অবি-্ফডাঙ্গ হইয়াও, প্রেতরাজের বস্তুতা খীকার করিয়া থাকে; কেহ কেহ বা তপস্তা করিতে করি<sup>তে</sup>

ৰারখা থার: কেই কেই বা যোগাজ্যাসে নিরত থাকিরাও, মৃত্যুর হত অভিজেল করিতে পারে না। পূর্বে দেবরাজ ইন্দ্র, শমর অন্থরের উদ্দেশে বন্ধ প্রয়োগ করিয়াছিলেন। তাহাতে অন্থরের হুদরে আঘাত লাগিলেও, তাহার মৃত্যু হয় নাই। কিন্তু কাল পূর্ণ হওয়াতে, সেই ইক্সই আবার সেই বজ্ঞের আঘাতে দৈত্যদিগকে নিহত করেন। এই সকল অবধারণ করিয়া, তোমরা নিবৃত্ত হওঁ; কোনমতেই ভরের বশীভূত হইও না। তথন দৈত্যের। মৃত্যুভয় ত্যাগ করিয়া বিনিবৃত্ত হইল।

এই পক্ষিশ্রেষ্টেরাও গুক্রের সেই কথা সতা করিয়াছে। নেথ, ইহারা তাদৃশ অভিমায়ুৰ মুদ্ধেও পঞ্চ প্রাপ্ত হয় নাই। অয়ি ছিলাতিবর্গ! এই অগুচতুইরের পতনই বা কোথা; আর সমকালেই ঘণ্টারও বা পতন কোথার এবং মাংস, বসা ও রক্তরাশি ছারা ভূমিরই বা আত্তরণ-ক্রিয়া কোথা ? ইহারা সর্বাথা কোন অসাধারণ প্রাণী হইবে, কথনই সামান্ত পক্ষী নহে। সংসারে নৈবের অন্তক্শতা মহাভাগ্যের পরিচয় প্রদর্শন করিয়া থাকে।

এই বলিয়া তিনি অওচত্ইয়ের প্রতি দৃষ্টি সঞ্চালন করিয়া, পুনরার বলিতে লাগিলেন, সকলে নিবৃত্ত হও; এই পক্ষিশাবক দিগকে লইয়া আশ্রমে যাও। বেথানে ইন্দুর, বিড়াল, গ্রেন বা নকুলের তর নাই, এরপ স্থানে ইহাদিগকে স্থাপন করিবে। অথবা, যত্নাতিশরপ্রদর্শনে প্রায়াজন কি প জীবগণ অকীর কর্ম্মবশেই মরিয়া থাকে, আবার বাঁচিয়া রছে। এই পক্ষিগণই এ বিষয়ের নিদর্শন। তথাপি, লোকমাত্রেই সকল বিষয়ে যত্নপর হওয়া বিধেয়। কেননা, পুক্ষকার প্রয়োগ করিলে, সাধুগণের নিন্দনীয় হইতে হয় না।

মহর্ষি শমীকের এই প্রকার আদেশাত্সারে সেই মুনিতনয়গণ উল্লিখিত পক্ষিশাবক্দিগকে বৃদ্ধক প্রহণ করিয়া, আপনাদের রমণীর তাপদ আশ্রমে দমাগত হইলেন। তথন মহর্ষি শমীকেও আপনার মনোমত বহু ফল, মৃল, কুশ ও কুসুমদমূহ সংগ্রহ করিয়া, বথাক্রমে এক্ষা, বিষু, মানেখর, ইক্র, যম, অগ্নি, কুবের, বরুণ, বৃহস্পতি, বায়ু, ধাতা, বিধাতা ও বিশ্বদেবগণের বেদবিধি অমুদারে বিবিধ সংক্রিয়া দ্মাহিত করিলেন।

#### ইতি চটকোৎপত্তি নাম বিভীর অধ্যার।

## তৃ গ্রীয় অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিপ্রেক্স! মুনিসন্তম শমীক প্রতিদিন আহার, পানীর ও বর্ধায়ধ রক্ষা-বিধি বিধানপূর্বক সেই পক্ষিবালকগণের পোষণ করিতে লাগিলেন। তাহারা একমাসমধ্যেই বর্ণোর জ্ঞানবদ্ধে গমন কবিতে আরম্ভ করিল। মুনিকুমারগণ তৎকালে কৌত্হলবশে বিলোলদৃষ্টি গইয়া, তাহালিগকে দর্শন কবিয়া গাকেন। তাহারা সিৎ, সাগর ও. নগরসমূহে বেইত, রণচকাক্তি পৃথিবী পরিদর্শনপূর্বক পুনরায় আশ্রম সমাগত হয়। তৎকালে তাহাদের আজ্বায়া শ্রমবশে রাজ্য গ্রহা উঠে।

এই নপে তথায় থাকিতে থাকিতে, অভাবদির প্রভাববশে তাহাদের আনে প্রকটিভূত হইল।
তথন তাহারা, মহর্ষি শমীক শিষ্যগণের প্রতি অমুকল্পাপ্রদর্শনার্থ ধর্মের যথার্থ তথা নির্বাচনে
প্রত্বত ইলে, তদীয় চরণমুগল প্রদক্ষণ পুরংসর সকবেই অভিবাদন করিষা, বলিতে লাগিল,
আপনি ভয়ত্বর মৃত্যু ইইতে আমাদের রক্ষা করিয়াছেন। আপেইনই আমাদের পিতাও ওকা।
দেখুন, আপনি আমাদিগকে আবাদ, ভক্ষাও পানীয় প্রদান করিয়া থাকেন। মাতা আমাদের
গভিত্ব অবহায় মরিয়া ধান। পিতাও আমাদের পালন করেন নাই। কেবল আপনিই আমাদের
ভীবনদান করিয়াছেন। কেননা, শৈশবে আগনিই আমাদের রক্ষা করিয়াছেন। আয়ায় ভূবি-

গর্ভে ক্ষিকুলের ন্থার, শুক্ক হইতে ছিলার। আপনার তেক অক্ত। আপনি তংপ্রতাবেই বাটা-সর্ংপাটন প্রংসর আমাদের চুংখ মোচল করিয়াছেন। আবার, কবে কিরপে এই অবল পদি-বালকসমূহ বর্দ্ধিত হইরা, আকাশে আমার সমক্ষে বিচরণ করিবে; ক্লবেই বা আমি ইহাদিগকে ভূমি হইতে বৃক্ষে আরোহণ স্ক্রিরা, তথা হইতে অপর বৃক্ষে উখান করিতে দেখিব; কবেই বা আমার এই স্বাভাবিকী কান্তি ইহাদের পক্ষপবনে সম্থাপিত পাংশু বারা প্রজালিত হইবে; ইত্যাকার নানাপ্রকার চিন্তা প্রসঙ্গে আপনি আমাদের প্রতিপালন করিয়াছেন। সেই আমরা সম্প্রতি প্রাপ্তবয়ন্ত ও তংসহকারে বিশিষ্টরপ্তর্জানবোগবিশিষ্ট হইয়া উঠিয়াছি। অত এব আপনার কি করিব, আঞ্জা কন্ধন।

মহর্ষি শমীক তাহাদের এবস্থিধ সংস্থারসম্পদ্ধ ক্রুট বাক্য প্রবণ করিয়া, পুত্র শৃঙ্গী ও শিবাগণে পরিবৃত হইয়া, কুতৃহলিত হৃদরে রোমাঞ্চিত কলেবরে বলিতে লাগিলেন, তোমাদের বাক্ক্রির প্রতি কারণ কি ? কাহার শাপে তোমাদের এইপ্রকার বিক্রিয়ার সঞ্চার হইয়াছে ? সমুদার ব্ধাবলিতে হইবে।

পক্ষিরা কছিল, পূর্ব্বে বিপুলখান নামে বিখ্যাত মুনিসত্তম ছিলেন। স্কুষ ও তুষ্ক্ষনামে তাঁহার ছই পুরে জয়েন। আমরা চারি জনে সেই সংযতাথা স্কুষ্বের আথজ। আমরা বিনর, আচার ও ভিত্তিবশে সর্ব্বাদটি পিতার নিকট নম্র হইয়াছিলাম। তিনি ইন্দ্রিরামসংয্মনপূর্ব্বক তপশ্চরণে সংসক্ত হইলে, আমরা তৎকালে তাঁহার অভিলাষামূরপ সমিৎ, পূলা ও অভ্যান্ত যাবতীয় অভ্যব্যাদির আহরণ করিতাম। এইরপে আমরা অরণাবাদে নিরত হইলে, দেবরাজ ইক্ত জরাজীর্থ-পরিগ্রহ-পুরংসর তথার আগগমন করিলেন। তাঁহার পক্ষম্ব তথা হইয়া গিয়াছে, আকার অতি প্রকাশ্ত, নয়ন্ত্র্বাদ ক্ষিৎভাম্বর্থ এবং তাঁহার আত্মা শিথিলভাবাপর। তিনি এরপ পক্ষিব্রোক্ত করাত্র স্বাদ্রির সত্ত্র দেবর স্বাদ্রাক্ষা ও আগান্ত্র আগ্রান্ত্র অভীব উদারচিত্ত পিতৃদেবের পরীক্ষা ও আমাদের শাণ সক্ষ্টন মানসে তথার আগগমন করিলেন।

তিনি আসিরাই পিতৃদেবকে কহিলেন, বিজেলা! আমি কুণার্ত হইরাছি; আমাকে পরিজাণ করিতে ছইবে। মহাভাগ! আমি ভক্ষণার্থী, তুমি আমার একমাত্র আশারস্বরূপ হও। বিদ্যাগিরির কন্দরদেশে অবস্থিতি করিতেছিলাম। তথা হইতে পক্ষি-পক্ষসমূথিত প্রবণ প্রনে ভূমিতে পতিত ও মোহাবিষ্ট হইরা, দপ্তাহ শ্বুতিশক্তিশ্লু হইরাছিলাম। অপ্তম দিবসে চেত্না প্রাপ্ত হইলে, মক্ষারবশতঃ কুধাবিষ্ট ও আপনাব শরণাপন্ন হইরাছি। থালা প্রার্থনা করিতেছি। মন অতিমাত্র ক্লিপ্ট হওরাতে, আনন্দের লেশমাত্র নাই। অত্তব অমলমতে। আমার পরিত্রাণ জল্ল অবিচলিত মতি নিয়োগ কর। বিপ্রের্থ। বাহাতে আমার জীবনবাত্রানির্কাহ হইতে পারে, তদমুরূপ খাদ্য প্রদান কর।

পিতা এইপ্রকার উক্ত হইরা, সেই পক্ষিরূপধর বজ্রধরকে কহিলেন, আমি আপনার প্রাণধারণ জন্ত অভিলবিত থান্য প্রদান করিব। এই বলিয়া পুনরায় তাঁহাকে জিল্পাসা করিলেন, আপনার জন্ত আমাকে কিরূপ আহারের আয়োজন করিতে হইবে ? তিনি কহিলেন, মহ্যান্থাংসেই আমার পরম তৃথ্যি ক্রিয়া থাকে।

পিতৃদেব কছিলেন, তোমার কুমারকাল অতিক্রাস্ত ও যৌহনও বিগত হইয়ছে। অরি
অওজ। তুমি নিশ্চয়ই এখন বার্কিন্যদশায় পদার্পণ করিয়ছে। দেখ, এই বৃরদশায় লোকমাত্রেরই
সম্দায় বাসনাজাল বিগলিত হইয় থাকে। তবে তুমি ঈন্শ অবস্থাতেও কিজ্ঞ নিরতিশর নৃশংসাল্লা হইয়ছে ? মন্ত্রামাংস ক্রোখা, আর তোমার এই চয়ম বয়সই বা কোথায় ? ব্রিলান,
সর্বাগ হইয়ছার ব্যক্তিস্পের শান্তিলাভ কোন মতেই সম্ভব নছে। অথবা, আমার এ কথা বলিয়াই বা প্রেরোজন কি ? অসীকার করিয়া, প্রাদান করা সর্বাদাই কর্ত্রা। ইহাই আমাদের একমাত্র ধারণা।

- পিতৃদেব পক্ষিত্রপী ইক্সকে এইপ্রকার কহিয়া, নরমাংসপ্রদানে ক্বতসভল হইয়া, শীল আমাদিগকে আহ্বান ও গুণাহরণে অহপ্রশাসন করিয়া, ক্ষুক্ষ হদরে অতিনিষ্ঠুর বাক্যে বলিতে আরম্ভ
করিলেন। আমরা ভক্তিযুক্ত ও বিনয়াবনত হইয়া, অঞ্জলিবজ্বন ক্ষীত অব্যিত রহিলাম। তিনি
কহিলেন, অয়ি বিজ্ঞান্ডগণ! তোমরা সকলেই আমার সহিত আপ্রকাম ও ঝণমুক্ত হইয়াছ।
বেহেতৃ তোমরা বেমন আমার পুত্র, সেইরূপ তোমাদের সন্তানরত্ব সম্প্রস্থ হইয়াছে। পিতা বদি
পরম গুরু বলিয়া তোমাদের পৃজনীয় বোধ হয়, তাহাহইলে অক্পট হদয়ে মদীয় আদেশ প্রতিপালন কর।

তাঁহার বাক্যসমকালেই আমরা আদরসহকারে কহিলাম, আপনি যাহা আজা করিখেন, তাহা প্রতিপালিত হইরাছে, বলিয়াই, অবধারণ করুন।

তথন পিতৃদেব কহিলেন, এই বিহগ ক্ষ্পিপাদার অভিভূত হইনা, আমার শরণ গ্রহণ করি-যাছে। তোমাদের মাংদে ইহার ক্ষণকাল তৃতি সমুদ্ধুত হউক এবং ভোমরা স্বকীয়-ক্ষির-প্রনান-প্রঃসর ইহার পিপাদা শান্তি কর।

আমরা এই কথার অতিমাতা ব্যথিত ও সাতিশর কম্পিত হইরা উঠিলাম। আমাদের মনে নিরতিশর আহেরও সঞ্চার হইল।তথন আমরা, হার কি কট ! হার কি কট ! এইপ্রকার বাক্যোচারণ সহকারে বলিতে লাগিলাম, এ কার্য্য কথনই হইবে না। বৃদ্ধিনান্ ব্যক্তি প্রদেহের জন্ম নিজদেহ কি রূপে বিনষ্ট বা নিহত করিতে পারে ভাবিরা দেখুন, আহ্মা ও পুত্র উভরে কোনরূপ পার্থকা নাই। পিতৃগণ, দেবগণ ও মনুষ্যগণ ইহাদের যে ঋণ কথিত হইরাছে, পুত্র সেই ঋণেরই অপাকরণ করে; কথন দেহদান করে না। অভএব আমরা দেহদান করিব না। পুর্বেও কেই কথন এইরূপ দেহদান করে নাই। জীবিত থাকিলে, বিবিধ ভদ্র লাভ হর ও পুণা সঞ্চিত ইইরা থাকে। মরিয়া গেলে, দেহনাশের সঙ্গে সংক্ষা ধর্মাদিরও উপশম হর। ধর্মবিং ব্যক্তিগণ বলিয়া থাকেন, আপনাকে সর্বতোভাবে রক্ষা করিবে।

আমাদের এই কথা শুনিয়া, পিতৃদেব কোধে বেন জ্লিরা উঠিলেন এবং দৃষ্টিপাতে আমাদিগকে বেন নিঃশেষে দ্য় করিয়া, পুনরায় বলিতে লাগিলেন, আমার প্রতিশ্রুত বাক্য তোমরা শুজন করিলে, সেইজন্ম মদীয় শাপে নির্দ্ধি হইয়া, তির্য্যগ্যোনিতে পতিত হইবে।

িনি আমাদিগকে এইপ্রকার কহিয়াই, শাস্ত্রাস্থারে আপনার অস্ত্রেষ্টি ও ঔদ্ধানহিক বিধি সম্ধানানস্তর সেই বিশ্বগর্মী ইক্তকে বলিলেন, অয়ি বিজ্ঞানতম ! তুমি বিশ্বত হইয়া, আমাকে ভক্ষণ কর। আমি এই আপন দেহ ডোমার ভক্ষ্যত্র হইলাম। অয়ি পতগুলেও ! একমাত্র সত্যুপরিপালনই রাহ্মণের ব্রাহ্মণত্ব বলিয়া থাকে। সত্যুপরিপালন করিলে, বে ফললাভ হয়, দক্ষিণাসহ ভূরি
স্থিকী যজাস্থান বা অস্থান্ত অপেষবিধ কর্মাগ্রিধান করিলেও, তদসুরূপ কল্প্রাপ্তি সংঘটিত হয় না।

পশ্চিরপধর বজ্ঞধর তদীন এই বাক্য শ্রবণ করিরা, অন্তর্কিন্নরে নির্ভর হইয়া প্রভূত্তর করিলেন, বিপ্রেক্ত আমি জীবিত জন্ধ কথন ভক্ষণ করি না। অতথ্ব যোগাবল্মনপূর্কক স্কীয় এই কলেবর পরিহার কর।

পিত্দেব পক্ষীর এই কণা কর্ণগোচর করিয়া, তৎক্ষণাৎ যোগ আশ্রের করিলেন। ইক্স ভাঁহার তাদৃশ নিশ্চয় অবগত হইয়া, নিজমূর্ত্তি ধারণ করিয়া, বিদতে লাগিলেন, অরি বিপ্রেক্স ! বিশাস, তুমি জানময়বিগ্রহ হইয়াছ। অধুনা, বৃদ্ধি ধারা বোধ্য বিষয় বোধ করে। অনম গামি তোমার পরীক্ষামানসে ঈদৃশ অপরাধ করিয়াছি। তোমার মতি সক্ষণা পরমপদে প্রতিটিত হইয়াছে। অতএক আমাকে এ বিষয়ে ক্ষমা কয়। এক্ষণে তোমার অভিলাব কি, বল, আমি তাহা পূর্ণ করিব। সত্য বাক্যের পরিপালন করাতে, তোমার প্রতি আমার পরম প্রতিত সক্ষার হইয়াছে। অলগ হইতে তোমার ঐক্সান প্রাছত্তি হইবে। তপতা অধ্বাধ্র, কিছুতেই কথন তোমার বিল্ল ঘটিকে না

ইল এই বলিয়া, প্রস্থান করিলে, আমরা রোষাবিট পিড়দেবকে মত্তক ঘারা প্রাণাম করিয়া ক্টিলাম, তাত । আমরা জীবিতপ্রের; এইজন্ত মরণভরে ভীত হইরাছিলাম। আপনি মংন-মতি। অতএব আনাদিগকে কমা করুন। এই দেহ ছক্, অছি ও মাংদের সমষ্টি এবং পূষ্ভ শোণিতে পরিপূর্ণ। ইহাতে আগসক হওরা বিধেয় নহে। কিন্তু আমরা এইরূপে আসক হট্যা-ছিলাম। মহাভাগ ! পোকে প্রবল শতক্ষরণ কাম কোধালি দোবের বল হইরা, যেরপে মোছা চ্ছর হর, শ্রবণ করুন। এই পুর (দেহ) অভিৰিশাল। প্রভা ইংার প্রাকার, অস্থিসমূহ ইহার ছুণা, অর্থাৎ অবলম্বন কাঠ । ধর্ম ইংার ভিতি। মাংস ও শোণিত ইংার লেপন। ইংার নর দার। ইং। সর্বভোভাবে সায়ুমণ্ডলে বেষ্টিত। চৈত্তাবিশিষ্ট পুরুষরপী রাহ্মা ইহাতে অবস্থিতি করেন। তাঁহার ছই মন্ত্রী। উহাদের নাম বৃদ্ধি ও মন। ইহাদের প্রস্পপ্রের মিলন নাই। ইহারা প্রস্প্র বৈর-নির্যাতন জন্ম সর্কানাই যদ্ধ করিয়া থাকে। রাজার চারিজন শত্রু। ইংারা সর্কানাঠ তাঁহার বিনাশ কামনা করে। ইহাদের নাম কাম, কোধ, লোভ ও মোহ। রাজা যথন উল্লিখিত নব্দার রোধ করিয়া অবস্থিতি করেন, তথন সুত্বল ও নিগাতক হইয়া থাকেন এবং তথন শত্রুপক্ষও তাঁহাকে অভিভৃত করিতে পারে না। কিন্তু যথন সম্দায় হার বিবৃত করিয়া, পরিত্যাগ করেন, তথন রাগনামক শত্রু নেত্রাদিখারে প্রবেশ করিয়া থাকে। এই রাগ দর্মব্যাপী, বিপুলবিস্তৃত এবং পঞ্ছারে প্রবেশ করিতে সমর্থ। ইহা এইরপে নেত্রাদিবারে প্রবেশ করিলে, অভাভ ভরন্বর শক্ত তাহার অনুমার্গে প্রবিষ্ট হয়। রাগ ইন্দ্রিয়নামক দার সকলে প্রবেশ করিয়া, মনঃ ধ অভাভা সকলের সহিত সংক্ষিও হৈইরা থাকে। অনস্তর মন ও ই ক্রিয়দিগকে বশীকৃত করিয়া, ছ্রাক্রম্ হুইরা হার সকল আয়েত্ত করত প্রাকার বিনাশ করে। মন তাহার আশ্রে লইয়াছে, দেখিয়া বৃদ্ধি তংকণাং পলায়মান হয়। তথন অমাত্যবিরহিত, পৌরবর্গ কর্তৃক পরিবর্জিত ও শত্রুগণ কর্ত্ত লক্ষডিত হওরাতে, রাজার বিনাশ হইরা থাকে। এইরূপে রাগ, লোভ, মোহ ও ক্রোগ এই সকল ছুরাঝা স্বাস্থ কার্যো প্রায়ুত্ত হট্রা, মহুষ্যের স্মৃতি বিনাশ করে। রাগ হইতে ক্রোধের উৎপত্তি হয়, ক্রোধ হইতে লোভের জন্ম হয়, লোভ হইতে সন্মোহের উদ্ভব হয়, সন্মোহ ২ইতে শ্বতির বিলোপ হয়; শ্বতির বিলোপ হইতে বুদ্ধির নাশ হয়, বুদ্ধির নাশ হইতে একবারেই লোকে নষ্ট হইয়া থাকে। এইরূপে আমাদের বৃদ্ধি বিনষ্ট ও তৎসহকারে আমরা রাগ লোভের অনুবর্তী হ্ইয়া, জীবিত শিপার বশীভূত হইয়ছিলাম। ইহাই ভাবিয়া আমাদের প্রতি প্রদর হউন। দেখুন, আগেনি সংপুরুষগণের অগ্রগণ্য। অতএব আমাদিগকে ইণ শাপ দিয়াছেন, ভাহা যেন সংঘটিত নু। হয়; আমরা যেন নিরবচ্ছিন্ন ক্লেশময় তামদী গতি প্রাপ্ত না হই।

পিতৃদেব কহিলেন, আনমি যাহা বলিয়াছি, তাহা কদাচ মিথা। ইইবে না। বলিতে কি, আল পর্যাস্ত কথন আমি মিধ্যা বলি নাই। দৈবই এবিষয়ে প্রধান, বোধ হইতেছে। পৌরুষে ধিক্! উহাতে কোন ইট্টাপত্তিই সাধিত হয় না। দেখ, এই দৈবই বলপূৰ্কক আমাকে ঈদৃশ অবিতৰ্কিত পূর্ব্ব অকার্য্যের অমুষ্ঠান করটিল। বাহা হউক, তোমরা আমাকে প্রণিপাতপূর্ব্বক প্রদন্ন করিলে; সেইহেতু তির্যাক্ যোনি লাভ করিলেও, প্রমজ্ঞানী হইবে এবং সেই জ্ঞানবলে প্রকৃত পছা প্রি দর্শনপুঞ্জক ক্লেশ ও কক্মবরাশি নিংশেষিত করিয়া, আমার প্রসাদে বিগতসন্দেহ হইয়া, চর্ম-সিদ্ধি লাভ করিবে। তোমরা আমার প্রমঙ্গেহমর পুত্র। দৈমিনির প্রশ্নসন্দেহ বলিবামাত্র তোমরা আমার এই শাপ হইতে মুক্ত হইবে। আমি তোমাদের প্রতি এই অনুগ্রহ করিলাম।

ভগবন্! পুর্বে পিতৃদেব দৈবৰশতঃ এইরণে আমাদিগকে অভিশপ্ত করেন। অনস্তর দী<sup>র্ক</sup> কালাবসানে আমারা, বোজতার, প্রাপ্ত ও রণমধ্যে সমুৎপল্ল হইলে, আপনি আমাদের পরিপালন করেন। এইরণে আমরা এই পক্ষিবোনি প্রাপ্ত হইয়াছি। সংসারে এমন কেহ নাই, যাহার্কে বৈৰের আরত্ত হইতে না হর। অভ্নোতেই বৈবের পর্তত্ত হইয়া, সংস্থারপণে প্রার্ত হইয়া থাকে।

মাৰ্কণ্ডের কহিলেন, মহাভাগ ভগৰান্ শমীক তাহাদের এই কথা ওনিয়া, সমীপস্থিত ঘিলাতি

গিকে বলিতে লাগিলেন, আমি পূর্বেই নির্দেশ করিয়াছি, ইহারা সামাস্ত পকী নহে, কোম গোধারণ প্রাণী হইবে। কেননা, অভিমান্ত্র মুদ্ধেও ইহাদের পঞ্চ হয় নাই।

অনস্তর মহাত্মা শ্রীক প্রীতিমান হইরা, অনুজ্ঞা কবিলে, ভাহারা চারি জনে লভাপাধপাদিনুম্পার পর্বভাগ্রগণ্য বিদ্যান্ত্ধরে গমন করিল। সেই ধর্মপক্ষিরা আজিও তথার অবস্থিতি কবিভতে। তপকা, স্বাধ্যার ও সমাধি এই সকলে তাহাদের আসক্তির সীমা নাই।

ইতি বিদ্ধাপ্রাপ্তি নাম ভূতীর অঁধারে।

# চতুর্থ অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, দ্রোণের পুত্র সেই সকল পক্ষী এইরপে জ্ঞানী হইয়াছে। তাহার।
বিশ্লাচলে বাস করিতেছে। তাহাদের উপাসনা ও জিজ্ঞাসা কর।

জৈমিনি মার্কণ্ডেয়ের এট কথা শুনিয়া, বিদ্ধাপর্বতে সেই ধর্মপক্ষীগণের সালিখ্যে গমন করি-লেন। পর্কতের নিকটস্থ হইয়া, তাহাদের পঠনধ্বনি শুনিতে পাইলেন। শ্রবণ করিয়া বিশ্বয়া-বিষ্ট হইয়া, চিন্তা করিতে 'লাগিলেন, এই পক্ষীমত্তমগণ খাসজয়পুর:সর ভানসৌষ্ঠবসহকারে অবিশ্রামে অতিস্পষ্টরূপে পাঠ করিতেছে; কোনরূপ দোষের সম্পর্ক নাই। আমার ইহাই আন্তর্গ্য বোধ হইতেছে, যে, ইহারা তির্গ্যক ঘোনিতে সমুৎপন্ন হইলেও, সরশ্বতী ইহাদিগকে পরিত্যাগ করেন নাই। বন্ধুবর্গ, মিত্র এবং অন্তান্ত যাবতীয় অভীষ্ট বিষয় সকলেই অনায়াদে ভাাগ করিয়া প্রস্থান করে; সরস্বতী কেবল তাাগ করেন না। এই প্রকার চিস্তা করিতে করিতে তিনি গিরিকল্বে প্রবিষ্ট হইলেন। প্রবিষ্ট হইয়া দেখিলেন, পক্ষীরা শিলাপটে আসীন হইয়া, মুধদোষ-বিদর্জনপুরঃসর পাঠ করিতেছে। তদ্ধর্শনে তিনি যুগণৎ শোক ও হর্ষের মধ্যগত হইয়া, তাহাদের দকলকেই অভিবাদন করিয়া কহিলেন, আপনাদের অন্তিসংঘটন হউক; আমি ব্যাদের শিষ্য লৈমিনি আপনাদের দর্শনবাদনাবশম্বদ হইবা, আদিয়াভি, জানিবেন। পিতৃদেব অভিমাত কুদ্ধ ্ইয়া, শাপ দেওয়াতে, আপনাদের যে প্ঞিযোনিলাভ হইয়াছে, ইহাতে ছঃথ করিবেন না। ্কন না, উহা দৰ্ক্থা দৈবেরই ঘটনা। দেখুন, কেহ স্থৃসমূজ বংশে সমুৎপন্ন ও মনশ্বী হইয়া, সমৃদ্ধি বনষ্ট হইলে, শ্বর কর্তৃক প্রবোধিত হইয়া থাকে। যে দাতা, সে ভিকু হইয়া খাকে; যে হস্তা সে নিহত হয়; যে পাত্যিতা, দে পাতিত হইয়া থাকে; তপঞ্চার ক্ষয় হইলেই, এইরূপ ঘটনা যে। আনমি এইরূপ বিপরীত কাও সকল ভূরি ভূরি দশন করিয়াছি। এই জগতে নিয়তই ভাব, অভাব ও কল বিনাশ সংঘটিত হইতেছে। কণমাত্রও উহার বিরাম নাই । এই সকল স্বিশেষ ট্টাকরিরা, আবাপনারা কোন অংশেই শোক করিবেন না। শোকও হর্বের আগভাষা হওয়াই জানের সাক্ষাৎ ফল।

অনন্তর তাঁহারা সকলে জৈমিনিকে পান্য ও অর্ঘ দ্বারা অভিবাদন করিয়া, প্রণিপাতপুরঃসর অনামর জিজ্ঞানা করিলেন। পরে ব্যাসশিহা তপোনিধি লৈমিনি তাহাদের পক্ষপবনে বিগতক্ষম হইয়া, প্রান্তি দুর করিয়া, স্থেও উপবিষ্ট হইলে, তাহারা বলিতে লাগিল, অদ্য আমাদের জ্বন্দত ক্ষম ন্যান্ত আনু আমাদের জীবনও সার্থক হইল। বেহেতু, অন্য আমবা আপনার অমরব্দিত চরণারবিন্দ্র্ল দেখিতে পাইলাম। পিতৃকোপ রূপ বে অনল উঙ্ত হইয়া, আমাদের নেহে বর্ষনার রিহেছাছে, অন্য আপনার দর্শনবারিসেচনে তাহারও শান্তি হইল। ব্রহ্মন্ আপনার হর্লণ ? আপনার আশ্রমন্থ মূল পক্ষিণণেরও কুশন ? আপনার সেই আশ্রমে বে সকল তাল, গুলা, গুলা, তুক্বার ও তৃণজাতীয় বৃক্ষ আছে, তাহারাও সকলে কুশলে আছে? অথবা, বিয়া আদের সহকারে এই যে কথা বিল্লাম, ইহা সর্কান স্বত নহে। কেন না, আপনার

সহিত বাহাদের একত বাস, তাহাদের আবার অকুশল কোণার ? অধুনা, প্রাসাবিতরণপুরঃ দু অকীয় আগ্রনকারণ নির্কাচন করন। দেবগণের ভাগে আপনার সকলাভ সাক্ষাৎ মহান্ অভাগর। জানি না, আমাদের কোন্ ভাগ্যগুরু আপনাকে আমাদের দৃষ্টিগোচরে আনগ্রক করিলেন।

জৈমিনি কহিলেন, অন্নি বিহগপ্রেষ্ঠগণ! শ্রবণ করুন, যেজন্ম এই কন্দরে আদিনাছি। ভারত শাল্পে আমার বিবিধ সন্দেহ সমুপস্থিত হইয়াছে। তাহাই জিজ্ঞানিবার কন্ম আমি আনিমাছি। আমি পুর্বে তৃত্তকুলোহাই মহাত্মা মার্কণ্ডেরকে এবিষয় জিজ্ঞানা করিয়াছিলাম। তিনিই আমাকে আপনাদের কথা ব্লিয়া দিলেন। অধুনা, ত্নীয় আদেশ বশ্বদ হইয়া, এই মহাগিরিতে সমাগত হইয়াছি। আমার সন্দেহ স্কল্ একে একে শ্রবণ করুন। শ্রবণ করিয়া, তাহাদের স্যাধ্যা করুন।

পক্ষীরা কহিল, আমাদের জ্ঞানের বিষয়ীভূত হইলে, তৎসমস্ত নির্বাচন করিব। আপনি নির্বিশ্ব হুইয়া, শ্রবণ করুন। যাহা আমাদের বুজিগোচর, কিজ্ঞ তাহা বলিব না ? অরি রাশ্বণসত্তা! ভারি বেদ, সমুদায় ধর্মশান্তা, যাবতীয় বেদাক, এবং অভান্ত বেদদন্মিত বিষয় সমস্ত, কিছুই আমাদের বৃদ্ধির বহিভূতি নহে। এই রূপে যদিও আমরা সকল বৃদ্ধিয়া থাকি; তথাপি প্রতিজ্ঞা করিতে আমাদের শক্তি নাই। অভএব ভারতশাল্পেযে সন্দেহ উপস্থিত হইয়াছে, তাহা বিশ্বত্তিতে বৃদ্ধ। ধর্মজ্ঞা আমরা তাহার নির্বাচন করিব। যদি না করি, তাহা হইলে, আমাদের মোহ উপস্থিত হইবে।

জৈমিনি কহিলেন, আপনাদের আয়গুদ্ধি সম্ভাবিত ইইয়াছে। অতএব ভারতশাস্ত্রলংক্রান্ত মদীয় সন্ধিয় বিষয় সমন্ত শ্রবণ করন। শ্রবণ করিয়া, অনুগ্রহপূর্বাক তাহার মীমাংনা
করিয়া দিন। আমার্য সন্দেহ সকল এই ; য্নি সকল কারণের কারণ ও যিনি সকলের আধার,
সেই ভগবান বাস্থানের নিশুলি ইইলেও, কিজন্ত মানুর্বিগ্রাহ পরিগ্রহ করিয়া ছিলেন ?

একা দৌপদন দিনীই বা কিজ্ঞ পঞ্পাওবের মহিষী হইয়াছিলেন ? এবিবরে আমার অতি

মাত্র সন্দেহ উপস্থিত হইয়াছে।

মহাবল বলদেবই বা কিজায় তীর্থাতা করিয়া, ব্রহ্মহত্যার পাতক নিরাক্ত করিলেন?
শাগুবদাণ যাহাদের নাথ, দৌপদীর সেই পুত্রণাই বা কিজায় অকৃতদার অনুস্থায় অনাথের সায় নিধন প্রাপ্ত হইলেন?

ভারতের প্রতি আমার এই সকল সন্দেহ সমাগত হইয়াছে। আপনাদিগকে ইংার নিবা করণ করিতে হইবে। তাহা হইলেই, আমি রুতার্থ হইয়া, স্বকীয় আশ্রমে গমন করিতে পারি।

পক্ষিরা কহিল, যিনি যাবতীয় অমরগণের একমাত্র নিয়ন্তা, যাঁহার কোনপ্রকার ইয়ন্তা বা অবধারণ দাই, যিনি সদাকাল বিরাজমান, যাঁহার কোনরূপ ক্ষরোদয় নাই, যিনি সকল দেইই আয়ারূপে, অন্থানীরূপে, চেতনা বা চৈত্ত্সরূপে শয়ন করিয়া আছেন, যিনি অনিরুদ্ধাদি চতুর্গ্রে পরিজ্বে, যিনি অপ্রামার কোন ওপেরই বিষয়ীভূত নহেন, যিনি সকলের বরিষ্ঠ, গরিষ্ঠ ও বরণীয় বিনি সাক্ষাং অমৃত্ত্বরূপ, যাঁহা হইতে অপ্তর কেহই নাই, আবার যাঁহা হইতে বৃহত্তরও বিতীয় নাই, যিনি কগতের আদি ও জ্য়রহিত, মিনি সমুদায় বিশ্ব ব্যাপ্ত করিয়া আছেন, যিনি আবি জাবি, তিরোভাব, দৃষ্ঠ, অদৃষ্ঠ সমুদায় হইতেই সম্পূর্ণ বিভিন্ন, এই জগং যাহাঁর স্পৃষ্ট এবং অস্থে বাহাতে সংস্কৃত হয় বিলিয়া থাকে, সেই প্রভবিষ্ণু বিষ্ণুকে নমস্কার করিয়া এবং যিনি বদনচত্ত্রী সহায়ে কৃত্ত প্রমাম সমস্ত উলিসরণ করিয়া, জগত্রবের পবিত্রতা বিধান করেন, সেই আদিবে ক্রাক্তেও সমাধি সহকারে নমস্কার করিয়া এবং অস্থ্রগণ যাহাঁর একমাত্র বাণে বিনির্জ্জিত হইয়া যাগশীল ব্যক্তিগণের মহন্তিত যক্ষ সমস্ত আর বিলুপ্ত করিতে পারে নাই, সেই মহাদেবকেও প্রশিপাত করিয়া, অভ্তক্ষা ব্যাসের মত সমস্ত নির্বাচন করিব; সেই ব্যাসদেব ভারত উপন্ধ করিয়া, ধর্মান্য বিষর সকল প্রকটিয়ত করিয়াছেন।

ভর্দশী শ্বিগণ জনকে নার নামে নির্দেশ করিয়া থাকেন। পূর্বে সেই নার বিক্র করন, অর্থাং আত্রর হইয়াছিল, সেইজন্ত তাঁহার নাম নারায়ণ হইয়াছে। সেই সর্কালিজ শুগবাল নারায়ণ আপনাকে স্থাণ ও নির্পুণ ভেদে চারি অংশে বিভক্ত করিয়া, তৎসহায়ে সম্পায় ব্যাপ্ত করত বিরাজমান হইতেছেন। তরাধ্যে তাঁহার একতর মুর্ত্তির কোনপ্রকার নির্দেশ হল্প না। ব্রগণ সেই মুর্ত্তিকে নিরবচ্ছিল গুরুবণা দেখিয়া থাকেন। এ মুর্ত্তির সর্বাল সর্বভ্রাতিগের লার পরিবাত্তি। উহাই যোগিগণের চরম বা একমাত্র নির্চ্চা করুল। এ মুর্ত্তি ত্রিগুণের অতীত এবং দ্রস্থ, আবার অন্তিকক্ত, জানিবে, উহার নাম বাস্তদেব। মমঘহীন না হইলে, উহার দশনলাত কোনমতে সম্ভব হয় না। এ মুর্ত্তির রূপ ও প্রবণাদি কোনপ্রকার করনাময় অরপ বা সংস্থান নাই। এ গুরুবি সর্ব্বাভাবে প্রতিষ্ঠিতা হইয়া, বিরাজ করিতেছেন। বিত্তায় মুর্ত্তি শেষ নামে বিখ্যাতা হইয়া, মন্তক বারা এই ধরা ধারণ করিয়া আছেন। ওয়া তাঁমিনী বলিয়া পরিগণিতা হইয়া থাকেন। যেহেতু, উহা তির্যাগ্রোনি আপ্রক বিয়াছেন। তার মুর্ত্তি প্রকাশাননতৎপরা হইয়া, ক্ষান্তিলনে ব্যাপ্তা আছেন। এ মুর্ত্তি সম্বন্ত প্রকাশাননতৎপরা হইয়া, ক্ষান্তিলেন ব্যাপ্তা আছেন। এ মুর্ত্তি সম্বন্ত প্রকাশাননতৎপরা হইয়া, ক্ষান্তিলনে ব্যাপ্তা আছেন। এ মুর্ত্তি সম্বন্ত প্রকাশাননে।

চতুৰী মুৰ্জি জলমধ্যে অবহান ও পন্নগশ্যা আশ্রম করিয়া, শয়ন করিয়া আছেন। রঞ্জ: উছার গ্রা । ঐ মৃত্তি সর্বানা গাকেন। হরির যে তৃতীয় মৃত্তি প্রস্থাপাননে তৎপরা ছইয়া আছেন, তাছাই পৃথিবীতে নিয়ত ধর্মের ব্যবহাপন করেন; তাছাই ধর্মবিচ্ছেরে হেতৃতৃত, অত্যুক্তিত অস্তর্যদিপকে সংহার করেন; তাছাই দেবগণ, সাধুগণ ও অঞ্চান্ত ধর্মের অভ্যুক্তিত অস্তর্যদিপকে সংহার করেন; তাছাই দেবগণ, সাধুগণ ও অঞ্চান্ত ধর্মের অভ্যুক্তিত সংঘটিত হয়, সেই সেই সময়েই ঐ মৃত্তি আপনাকৈ কজন করিয়া থাকেন। ঐ মৃত্তিই পুর্বের বরাহ হয়া তৃত্ত সহায়ে সম্লায় সলিল নিরাক্ত করিয়া, একমাত্র দংখ্রী লারা পৃথিবীকে, পদ্মিনীর ভাষ, উৎথাত করিয়াছিলেন। ঐ মৃত্তিই আবার নৃদিংহরপে আবিভূতা ছইয়া হিরণাকিপ্রকেনহত ও বিপ্রচিতিপ্রম্থ অভান্ত দানবাদগকে নিপাতিত করিয়াছিলেন। ঐ মৃত্তির আবার বাননাদি অভান্ত অবতারপদানাল দংখ্যা করিতে নাইন বা সাম্থ্যি হয়্ম নী। সম্প্রির আবার বাননাদি অভান্ত অবতারপদানাল কর্মা করিতে নাইন বা সাম্থ্যি হয়্ম নী। সম্প্রির মাণ্যনামক অবতার প্রাত্ত ছইয়াছে।

এইরপে ঐ সাথিকী মৃত্তিই বিবিধ অবতারবিগ্রহ পরিগ্রহ করিয়া থাকেন। **উহা প্রচায় নামে** বিখ্যাতা হইয়া, রক্ষাকার্য্যে ব্যাপ্তা আছেন। দেবজ, মনুষ্য অগরা তির্যাক্ত, বাহাতেই খাকুন, ঐ মৃত্তি বাহ্যেকেবের ইচ্ছাক্রমে সর্বাদাই তত্তৎ অভাব পরিগ্রহ করেন। **এই আপনার** নিকট বিশেষরপে ব্যাখ্যা করিলাম। অধুনা, সকলের প্রভু বিষ্ণু কৃতক্ত্য হইলেও বে, মাহৰ বিগ্রহ পরিগ্রহ করিয়াট্রেন, তাহার উত্তর পুনরায় শ্রবণ করুন।

ইতি চতুর্হাবতার নাম চতুর্থ অধ্যায়।

#### প্ৰথম অধ্যায়।

পিকিরা কহিল, পূর্ব্বে প্রভাপতি অষ্টার ত্রিশিরা নামে বে পুত্র ছিলেন, তিনি **অধাের্থ হইরা** তপশ্চরণে প্রবৃত্ত হইলে, দেবরাঞ্জ ইন্ত্র শকাপ্রযুক্ত তাঁহাকে নিহত করেন। তরিবন্ধন ব্রহ্মহতাার পা তকে অভিত্ত হওয়াতে, ইল্রের তেজের অতিমাত্র হানি হইল। তাদৃশ অতিবিগর্হিত অষ্ঠান বশতঃ ইল্রের ভেজঃ ধর্মে প্রবেশ করিল। তজ্জাত দেবরাঞ্জ নিত্তেক হইয়া পড়িলেন।

এ দিকে পুত্র নিহত হইয়াছেন, শ্রবণ করিয়া, প্রস্তাপতি ছষ্টা ক্রোধারিত হইয়া, একগাছ জটা অবল্ফিত করত বলিতে লাগিলেন, অদ্য দেবগণ সন্থিত তিন লোক আনার বীর্গ অবলোকন করন। সেই ব্লহত্যাকারী ছর্কুদ্ধি ইক্রও সঙ্গে সঙ্গে আমার বীর্য্য দেপুক। আমার পুত্র স্থকীয় কার্য্যসাধনে প্রস্থা হইলে, ইক্র তাহাকে নিপাতিত ক্রিয়াছে। এই বলিয়া রোবাকণ লোচনে সেই জটা অগ্নিতে আহত করিলেন। তৎক্ষণাৎ তাহা হইতে আলামালী মহাস্থর বৃত্র প্রাছ্তি হইল। উহার শরীর অতি প্রকাণ্ড; দংখ্রা অতি বিশাল এবং উহার প্রভিতা দলিত অঞ্নন প্রাস্থানী। ইক্রের শক্রে, মহাবল, অনেয়াঝা বৃত্র স্থার তেজে উপরংহিত হইয়া, একটা শর নিক্ষেপ করিলে বত্র বায়, সেই পরিমাণে প্রতিদিন বৃদ্ধিত হইতে লাগিল।

ইক্ত মহাত্মর ব্রকে আপনার সংহার জন্ধ প্রাছ্ড্ ত দেখিয়া, ভয়াত্মর হইয়া, সন্ধিকামনায় সপ্তর্ধিমণ্ডলকে প্রেরণ করিলেন। সর্বভৃতহিত্রত ঋষিগণ প্রীতিমান্ চিতে ব্রের সহিত ইক্তের করিপর নিয়মবন্ধনসহকারে সথা সংঘটিত করিলেন। ইক্ত সেই নিয়মবন্ধন ছেদন পূর্বক, ব্রুকে সংহার করিয়া, তৎপ্রভাবে অভিভৃত হইলে, তাঁহার বল বিভ্রপ্ত ইইয়া গেল। তদীর দেহবিত্রপ্ত সেই বল বলের অধিষ্ঠাতী দেবতা, সর্বব্যাপী, অব্যক্তত্মরূপ বায়ুতে প্রবেশ করিল। ইক্ত যে সময়ে গৌতমের মূর্ত্তি ধারণ করিয়া, অহল্যাকে ধর্ষিত করেন, তৎকালে তাঁহার রূপের বৈলক্ষণা হইয়াছিল। তাঁহার যে অঙ্গপ্রত্যঙ্গলাবণা অতীব মনোরম ছিল, তাহা দোষাপ্রিত হওয়াতে, তাঁহাকে পরিহার করিয়া অখিনীকুমারে আবিষ্ঠ হয়। দেবরাল ঐক্রপে ধর্মইন, তেজোহীন, বলহীন ও রূপবিহীন হইয়াছেন, জানিতে পারিয়া, দৈত্যগণ তলীয় কয়ে ক্রেণাম হইল। তাহারা ইক্রের পরাজয়লাধনবাসনাবশস্বদ হইয়া, উদ্রিক্তবীর্যাশালী নরপতিগণের বংশে জন্ম গ্রহণ করিতে লাগিল।

কিন্নৎকালপর্যবদানে পৃথিবী তাহাদের ভারে অবদলা হইলা, বেখানে দেবগণের সভা বিরাজনান, দেই মেকশেধরে সমাগতা হইলোন। তিনি গুরুভারে একান্ত পীড়িতা হইলাছিলোন। দৈতা ও দানবগণ যে তাঁহারে এই হংথের হেতু সমৃত্তাবিত করিলাছে, তাহা তাঁহাদের গোচর করিলা কহিলেন, এই সকল বিপুলতেজা অন্তর আপনাদের হত্তে নিহত হইলা, মূর্ভলোকে নরপতিগণের গৃহে জন্মগ্রহণ ক্লিয়াছে। তাহাদের বহল অক্ষোহিণীভারে অবদলা হইলা, আমি পাতালতলে নীজনান হইতেছি। দেবগণ। যাহাতে আমার শান্তি বিহিত হয, তদক্ষণ অনুষ্ঠান কর্মন।

তথন দেবগণ প্রজালোকের উপকার ও ভূমির ভার হরণ মানসে অস্থ তেজের অংশে পর্ব ইতে মর্ত্তাপ্রদেশে অবতরণ করিতে লাগিলেন। সুরং ধর্ম ইলের দেহসমূদ্ধ তেজের কৃষ্টীর গর্জে মাচন করিলেন। ভাছাতে ধর্মার আ মুর্দ্তিরের জন্ম ইছল। অনন্তর পবন বল মোচন করিলে, মি জন্মিলেন। পরে ইলের বীর্ঘার্দ্ধ ইইতে ধনজ্ঞার এবং মাদ্রীর গর্জে ইলের রূপাংশে যমজ্ঞালের উত্তর ইইল। ইইলার উভয়েই মহাত্তাতিসম্পন্ন। এইরুপে ভগবান্ ইল্ল পঞ্চপাত্তররপ মবতরণ করিলেন। তাঁহার পত্নী শচী অগ্নি হইতে দ্রোপদীরপে আবিভূতা ইইলেন। এই জাপদী একমাত্র ইলের পত্নী, আর কাহারই নহে। বোগীধরণণ বছল দেহ ধারণ করেন। করিশে শাচিজানের এক পত্নী হল, তাহা বিলিলমি। এজগে বলদেবের বৃত্তান্ত এবণ করে।

ইতি ইক্রবিক্রিয়া নাম পঞ্চম অধ্যার।

#### षर्छ व्यशाग्र।

পক্ষীরা কহিলেন, ৰাজ্বদেব অর্জ্নকে অতিমাত্র প্রীতি ক্রেন, জানিয়া, কি করিলে, সক্ল দিক্ রক্ষা হইতে পারে, বলরাম বারঘার ইহাই ভাবিতে লাগিলেন। রুফ্চকে ছাড়িয়া আমি হর্ব্যোধনের নিকট ঘাইতে পারিব না। আর, হুর্যোধন শিষ্য, রাজা ও জামাতা। কির্পেই বা পাওৰপক্ষ হইয়া, তাহাকে সংহার ক্রিব; স্থতরাং কোন পক্ষই অবলম্বন ক্রিব না। ব্ত-দিন না কুরুপাগুৰ্যুদ্ধের শেষ হয়, তাবৎ আল্লা ঘারা আল্লাকে তীর্থস্লিলে প্লাবিত ক্রিব।

এইপ্রথার চিন্তানন্তর তিনি রুঞ, অর্জুন ও চ্ব্যোধন সকলকে আমন্ত্রণ করিয়া, স্বকীয় দৈল্পে বেষ্টিত হইরা, ছারকার গমন করিলেন। তথার সমাগত হইয়া, তীর্থগমন করিবার পূর্ম্ম দিবস মধুপান ও অব্দরাসদৃশী রেবতীর হস্ত ধারণ করিয়া, বৈবতোদ্যানে প্রস্থান করিলেন। তৎ-কালে মধুপানে মত্ত হওয়াতে, তাঁহার পদখলন হইতে লাগিল। ক্রমে রমণীল বৈবতকানন তাহার দৃষ্টিবিবরে পতিত হইল। উহাতে সকল ঋতুর ফল কুস্ম সমূদ্ভত হ**ই**রা থাকে এবং প**ৰল** সহিত মহাবন ও পল্পানন বিরাজ করিতেছে। বিবিধলাতীয় বিহলম মদমত হইলা, আপতি-মনোহর মধুর বারে শব্দ করত সঞ্জমাণ হইতেছে। তিনি তাহা গুনিতে লাগিলেন। ঐ কানন দকল ঋতুতেই ফলভারে অবনত, কুন্থমদমূহে বিদ্যোতিত ও বিহলমগণে প্রতিনাদিত। ভিনি তুণার আত্র, আমাতক, বীজপুরক, দাড়িম, আবিষক, ভব্য, তিলক, নারিকেল, পারাবত, পুনস, কজোল, নলিন, অমুবেতস, নীপ, মোচ, লকুচ, ভলাতক, তিন্দুক, ইকুদ, করমর্দ, আমলক, হরিতক, বিভীতক ও অভাভ পাদপ সকল দর্শন করিলেন। তদ্তির, **অশোক, কেতকী, বকুল,** পুরাগ, সপ্তপর্ণ, চম্পক, কর্ণিকার, মালতী, পারিজাত, কোবিদার, মন্দার, বদর, পাটল, দেবদাক, শাল, তাল, তমাল, কিংগুক প্রভৃতি বুক্ষ সকলও তাঁহার নয়নবিবয়ে পতিত হইল। চকোর, ভ্লরাল, ভক, কলবিল, হারীত, জীবঞ্জীবক, প্রিয়পুত্র চাতক ও অঞ্চাল পদী সকল শ্রতিমনোহর মধুর নিনাদ পুর:সর তথায় বিচরণ করিতেছে। তথায় স্থনির্মল-সলিলসম্পন্ন সরো-বর সকলও তাঁহার দৃষ্টিবিষয়ে পতিত হইল। তত্তৎ সরোবরের চতুর্দিকেই কুমুদ, পুগুরীক, কারওব, প্লব, হংস, কৃষ্, মলগুও অভাত জলচর জন্তুদমূহ বিচরণ করিতেছে।

মহাবল বলদেব, জীগণে পরিষ্ঠ হইয়া, মনোহর কানন দর্শন করিতে করিতে অত্যংক্ষষ্ট লতাগৃহে সমাগত হইলেন। তথায় কৌশিক, ভার্গব ও ভারহাল প্রভৃতি বিবিধ বংশীয় বালগ্র<del>গ্</del> কথাশ্রবণসম্ৎস্ক হইয়া, কুশ, বৃধী প্রভৃতি আসনসমূহে আসীন রহিয়াছেন। ত্ত তাঁহাদের মধাস্থল আশ্রয় করিরা, আদ্য স্করমিণণের চরিতবিষ্মিণী পৌরাণিকী কথা কীর্ত্তন করিতে-(इन। मधुलात्म चक्रन्ताहान वलत्त्रवरक नर्गन कतिया, मख मत्न कतिया, ममुनाय विकाछि छ९-কণাৎ গাত্তোখানপূর্বক তাঁহাকে পূজা করিতে লাগিলেন। স্তই কেবল উঠিলেন না এবং পূজাও করিলেন না। তদ্দর্শনে বলদেব রোষাধিত হইয়া, ঘূর্ণিত লোচনে স্তকে সংহার করি-<sup>এন।</sup> বাহ্মপদে প্রতিষ্ঠিত স্তকে নিপাতিত করাতে, বাহ্মণগণ সকলেই কানন হইতে বিনি-জান্ত হইলেন। তথন বলদেব আয়োকে পাপণকিল ও তলিবন্ধন অপদ্ভত মনে করিলা, চিস্তা <sup>ক্রিতে</sup> লাগিলেন, **আমি অ**তি গুরুতর পাতক অনুষ্ঠিত ক্রিয়াছি। যেহেতু বাহ্মপদে প্রতি**রি**ত एउटक रुजा कतिनाम विदेश वर्षे प्रकृत बाक्ष्य आमारक अवत्नाकन कतिया, विश्वित हरे-লন। স্জে সজেই আমার দেহের গন্ধ, লোহগন্ধের ভায়, অন্তথাৰহ হইয়া উঠিতেছে। আজ্বা-कें आयात उत्तरप्रत्न छात्र, निजां कन्यिक त्वार हरें एक । विक् मग्नार्गान ! विक् स्मार्ग ! विक् মভিমানে ! ধিক্ অভীকতাতে ৷ আমি এই সকলে আবিট হুইয়াই এই প্রত্তর প্রাক্ত অনুষ্ঠ <sup>চ্রিনাম।</sup> এই পাতক পরিহারার্থ ঘাদশবাধিক ব্রতচ্য্যায় প্রবৃত্ত হইব এবং বে মহাপাতক করি-ছি, তাহা সকলের নিক্ট বলিয়া বেড়াইব। তাহা হইলে, প্রকৃত প্রায়ভিত্ত হইবে। আমি এই <sup>য</sup>, তীর্থাত্তার পূর্বাহনা করিয়াছি, এই উপ্লক্ষেই প্রতিলোমবাহিনী সরস্থতীতে গ্রমন করিব। এই কারণেই বলরাম প্রতিলোমা সরস্বতীতে প্ররাণ করেন। অতঃপর দ্রোপদীর পুরুগণের রিতাশ্রম কথা শ্রবণ করুন।

है जि वनात्त्व बन्नाहका नाम वर्ष अधाम।

#### সপ্তম অধ্যায়।

ধর্মপক্ষীরা কহিলেন, পুর্ব্ধ তেতাযুগে ছরিশ্চন্ত্র নামে রাজর্ধি ছিলেন। তিনি সকলের শ্রেষ্ঠ, ধর্মিষ্ঠ ও সমুজ্জন-কীর্তিনিলিষ্ঠ। তাঁহার অধিকারে ছর্তিক, ব্যাধি, অকালমৃত্যু ও পৌরবর্গের অধর্মে অভিফটি ছিল না। কেহই বল, বীর্যা, ধন ও তপোমদে মন্ত ছিল না। জীলোকেরা যৌবন না হইলে প্রস্ব ক্রিত না।

মহাবাহ হরিশচন্ত্র কোন সমরে অরণ্যে মৃগের অহুসরণপ্রসঙ্গে ভনিতে পাইলেন, ক্তিপর নী বারম্বার বলিতেছে, আনাদিগকে পরিত্রাণ কর। তথন তিনি মৃগকে ত্যাগ করিয়া, বলিয়া উঠিলেন, তোমাদের ভর নাই। আমি শাসনকর্তা থাকিতে, কোন্ হুর্মতি ঈদৃশ অন্তার অহুষ্ঠানে প্রের্ম্ভ হইয়াছে।

কৈ সময়ে সকল কার্য্যের বিদ্বিধাতা অতীব প্রচণ্ডপ্রকৃতি বিদ্বরাজ বামাগণের সেই রোদনধনির অন্সরণপূর্বাক চিন্তা করিকে লাগিলেন, বীর্যানান বিশ্বামিত্র অতুল তপোন্ধান সহকারে, পূ:ব্র্বাহাদের সাধন করিতে পারেন নাই, সেই ভবাদি বিদ্যার সাধনা করিতেছেন। তজ্জন্ত ইনি নির্মী হইয়া, বাক্য, মন ও ক্রোধ সংঘম ক্রিয়াছেন। সেই বিদ্যা সকলই ভয়ার্স্তা হইয়া ক্রেলন করিতেছে। আমি এখন কি করিব ? বিশামিত্র অভাবত: সাতিশয় তেজীয়ান্। আমরা ইইার নিকট একান্ত বলহীন। বিদ্যা সকলও ভয়ার্তা হইয়া চীৎকার করিতেছে। কোনরূপে কিছু করা আমার অ্বস্থা বোধ হইতেছে না। অথবা, এই রাজ্যি হরিশ্চক্র বারস্থার অভয়দান-প্রঃসর এই দিকেই উপস্থিত হইরাছেন। ইইারই শরীরে প্রবেশ করিয়া, যথাভিল্যিত সাধন করিব।

প্রচণ্ডপ্রকৃতি বিশ্বরাজ এইপ্রকার চিন্তা করিয়া, রাজদেহে অনুপ্রবেশ করিলেন। তথন
নরপতি স্কোপে বলিতে লাগিলেন, কোন্ পাপাত্মা বস্তাঞ্চলে পাবকবন্ধন করিতেছে। দে
জানে না, আমি বল, প্রভাপ ও তেজ: প্রভাবে প্রদীপ্ত হইয়া, সকলের পালনকর্তারিপে এখানে
উপস্থিত রহিয়াছি। অদ্য আমার শর সকল শরাসনের আক্রেপবশে সমন্ত দিগন্তর প্রজ্নিত
প্রায় করিয়া, সর্বা শরীর ছিল ভিন্ন করিলে, সেই পাপাত্মার দীর্ঘ নিদ্রা উপস্থিত হইবে।

রাজার এই কণা শুনিয়া, বিশামিত জাততোধ হইলেন। তোধের উদয়মাত্র তৎকণাং বিদ্যাসকল অন্তর্জান করিলেন। রাজাও ঐ সময়ে মহাতপা বিশামিত্রকে সহসা দর্শন করিয়া, ভীত ও অর্থপতের ক্রায় অভিমাত্র কম্পিত হইয়া উঠিলেন। বিশামিত্র কহিলেন, রে ছরায়ন্থাক। রাজা তৎক্ষণাৎ প্রণিণাতপূর্বক স্বিনয়ে কহিলেন, ভগবন্! আর্ত্তের রক্ষা করাই আমাদের ধর্ম্ম; স্ভ্রাং আমি অপরাধ করি নাই, স্বধর্ম পালন করিয়াছি। অতএব জ্বোধ পরি হার কয়ন। ধর্মজ্ঞ নরপতি শ্রাসন সম্লাত করিয়া, ধর্মাহসারে যুদ্ধ করিবেন, সান করিবেন ও রক্ষা করিবেন।

বিশ্বামিত্র কহিলেন, বলি তোমার অধর্মে ভয় থাকে, তাহা হইলে, শীল্প বিশেষ করিগ বল, কাহাকে দান, কাহাকে রকা ও কাহার সহিতই বা যুদ্ধ করী কর্ত্তব্য।

রাঞ্জা কহিলেন, মাধারা আদ্দণগণের মধ্যে প্রধানস্থানীয় এবং যাহারা ক্ষীণর্তি, তাহা নিগকেই দান করিবে। স্পার যাহারা ভীত, তাহাদিগকে রক্ষা এবং যাহারা প্রতিষ্কী বা বিপ্র তাহাদিগেরই সহিত যুদ্ধ করিবে।

পাৰি কহিলেন, ভূমি রাজা; রাজধর্মে তোমার যদি সমাগ্রূপ শ্রহা থাকে, তাই হইলে, রাজাণ আমি ৰজ্ঞ ক্রিয়া, ঐখব্যভোগে উৎস্ক হইয়াছি, আমাকে মনোমত দিশি প্রাদান কর। ু পক্ষীরা কহিল, এই কথা শুনিয়া, রাজা অভিমাত্র আব্লোদিত অন্তঃকরণে আপনাকে পুনৰ্জ্ঞাত বোধ করিয়া বলিতে লাগিলেন, ভগবন্! যাহা আপনাকে ছিতে হইবে, শ্বাত্যাপৃৰ্ধক বলুন। নিভান্ত হুৰ্গত হইলেও, ভাহা দেওয়া হইয়াছে, ফানিবেন। স্বৰ্ণ বাহির্ণা; পুত্র বা ক্লত্ত, দেহ বা প্রাণ ; রাজ্য বা পুর অপবা লক্ষ্যী, বাহা আপনার অভিপ্রেত, তাহাই দিব।

বিশ্বামিত্র কহিলেন, রাজন্। আমি তোমার প্রাণত বস্ত প্রতিগ্রহ করিলাম। প্রথমে আমার বাজুসুযুয্তের দক্ষিণা দাও।

রাজা কহিলেন, একন্! আমি আপনাকে তাহাই দিব। অধুনা আপনার অভীষ্ট প্রতিপ্রহ বরণ করন।

ঋষি কহিলেন, বীর! আমি তোমার পুত্র. কলতা, দেহ ও মরিলে যাহা সঙ্গে যায়, সেই ধর্মাও চাহিনা। অথবা অধিক কথায় আবৃশুকতা নাই, আমাকে সাগর, পর্কত, প্রাম ও পত্তন সমেত পূলিবী; অম, গজ ও রথপূর্ণ সমগ্র রাজ্য; কোঠাগার, কোষ ও অফ্টাফু বাবতীয় বস্তু প্রদান কর।

পৃক্ষিরা কহিলেন, ঋষির এই কথার রাজা কৃতাঞ্জলি হইয়া, প্রস্তুষ্ট অন্তঃকরণে ও অল্লান বদনে তাহাই হইবে, বলিলেন। তথন ঋষি কহিলেন, যদি তুমি রাজ্য, বল, পৃথিবী ও ধন সর্কাষ্ট্ আমাকে দিলে, তাহা হইলে, তপস্বী আমি রাজা হইলাম; অত এব কোন্ ব্যক্তি এখন প্রভু 🕈

রাজা কহিলেন, ব্রহ্মন্! আমি যে কালে আপনাকে সমগ্র পৃথিবী দান করিয়াছি, সেই কাল হইতেই আপনি প্রভূ হইরাছেন। এখন রাজা হইরাছেন; তাহাতে আর কথা কি ?

ঋষি কহিলেন, রাজন্! যদি তুমি আমাকে সমগ্র বস্থা দান করিয়া থাক, তাহা হইলে, যে স্থান আমার প্রভৃতা আছে, সেথান হইতে পদ্ধী ও প্রের সহিত বহির্গত হও এবং এই খ্রোনিস্থাদি ভ্ষণসংগ্রহ পরিতাগি ও বক্ষল পরিধান কর।

রাজা, বে আজা বলিয়া, ভূষণত্যাগপূর্ব্বক ভার্য্যা ও পুত্রের সহিত প্রস্থান করিলে, বিশানিত্র পথবোধ করিয়া,বলিলেন, আমাকে রাজস্ম্যত্ত্তের দক্ষিণা না দিয়া কোথায় যাইতেছ ?

বাজা কহিলেন, আমি আপনাকে এই অকণ্টক রাজ্য দিয়াছি, আমার আর কি আছে ? অদ্য কেবল এই দেহত্তম অবশিষ্ট আছে।

খবি কহিলেন, আমাকে যজ্ঞদক্ষিণা দিতেই হইবে। বিশেষতঃ, ব্রাহ্মণকৈ অলীকৃত বস্তু দান না করিলে, বিনষ্ট হইতে হয়। যাহাতে ব্রাহ্মণবর্গ পরিতৃষ্ট হইতে পারেন, তদ্মহ্মণে রাজ্ঞ-স্থ্যজ্ঞক্ষিণা প্রদান কর। তৃমিই নিজে প্রথমে প্রতিশ্রত হইগাছ থে, অলীকার ক্রিরা দান করিবে, শক্রর সহিত যুদ্ধ করিবে ও আর্ফোর রক্ষা করিবে।

রাজা কহিলেন, ভগবন্। সম্প্রতি আমার কিছুই নাই। কালজনে দান করিব, আমি অক-পটেই ইহা বলিতেছি; ইহা ভাবিয়া প্রসূত্র হউন।

ঋষি কহিলেন, আমাকে কত দিন অপেকা করিতে হইবে, শীঘ বল। নতুবা কোপানলে দক্ষ ইইতে হইবে।

রাজা কহিলেন, বিপ্রর্ধে ! এক মাস মধ্যে আপনার দক্ষিণাধন প্রদান করিব । সম্প্রতি আমি ধনহীন হইয়াছি। অতএব গমনে অনুজ্ঞা প্রদান করন।

ব্যবিক হিলেন, নৃপশ্রেষ্ঠ। বাও যাও; অধর্ম রক্ষা করিও। তোমার পথে বেন কোন বিপদ নাবটে এবং ভোমার বিপক্ষপশ্লৈরও যেন কয় হয়।

পকিরা কহিলেন, ঋষির অনুজ্ঞা পাইয়া রাজা গমন করিলেন। ্ষিনি পদপ্রশাসনের কোনমতেই উপযুক্তা নত্নেন, সেই শৈব্যা তাঁহার অনুগমন করিলেন। পৌরবর্গ পদ্ধী ও পুত্র সমন্তিবাবহারে উাহারে পুরের বাহির হইতে দেখিয়া, তাঁহার অনুগমন ও এই বিদিরা চীৎকার করিতে
লাগিল, হা নাথ। আমাদিগকে কিজ্ঞ ত্যাগ করিতেছেন। দেখুন, আসরা নিতাই আর্ভভাবাপর। রাজন্। আপনি যেমন ধর্মতৎপর, সেইরূপ পৌরদিগকে অনুগ্রহ করিয়া থাকেন। ধর্মে

বিলি শ্রদ্ধা থাকে, তাহা হইলে আমাদিগকেও সলে গউন। রাজেল ! মুহুর্তমাত্র অপেকা করন।
আমরা ভবদীর মুখারবিন্দ নেত্রভ্ররসহারে পান করিরা গইব। পুনরার কত দিনে আর উহা
দেখিতে পাইব ! যিনি প্রস্থান করিলে, রাজা সকল অগ্রে ও পশ্চাতে গমন করেন, এখন এই ভারা।
বালক পুল্রের সহিত তাঁহার অহুগামিনী হইয়াছেন ! যিনি প্রস্থান করিলে, ভূতা সকল হস্তীতে
আরোহণ করিয়া অপ্রে অগ্রে ধাবমান হয়, নেই রাজেল হরিশুল আজি পদচারে গমন করিছেছেন ! হা রাজন্! তোমার এই স্থানর জা, স্থাভান মৃক্ ও সমুন্নত নাসিকা সম্পান মুক্
পথিমধ্যে পাংশুভারে মলিন হইলে, নিতান্ত শোচনীয় মুর্জি ধারণ করিবে। অতএব নৃপশ্রেষ্ঠ।
থাকুন, থাকুন, আপানার ধর্মপোলন করুন। সকল বর্ণের, বিশেষতঃ ক্ষাত্রিরগণের অনুশংস্তাই
পরম ধর্ম। নাথ! আমাদের এই স্তী, পুল, ধন, ধান্ত কিছুতেই আর প্রয়োজন নাই। আমরা
সমস্তই ত্যাগ করিরা ছায়ার লায়, আপনার অমুগামী হইব। হা নাথ! হা মহারাজ! হা আমিন্!
কিজ্প আমাদিগকে ত্যাগ করিতেছেন! আপনি যেথানে, নেইথানেই আমরা। অধিক কি,
যেথানে আপনি, দেইথানেই স্থে, দেইথানেই স্বর্গ ও সেইথানেই নগর।

পৌর্বর্গের এই কথা শুনিয়া, রাজা শোকসমাদ্দর হইয়া, তৎক্ষণাৎ তাহাদের প্রতি অফুক্ষপা-বশতঃ পথিমধ্যে অবস্থিতি করিলেন। রাজাকে পৌরগণের বাক্যে আকুলীকৃত অবলোকন করিয়া, বিশানিত রোধ ও অমর্থনেশ বিবৃত্তলোচন হইয়া, তৎক্ষণাৎ তথায় আগমনপূর্বক বলিছে লাগিলেন, তুমি মিধ্যাবাদী, হর্ষ্ত ও জিলাভাষী, তোমাকে ধিক্! দেধ, তুমি স্থামাকে রাজাদান করিয়া, প্রত্যাহরণে প্রবৃত্ত হইয়াছ।

ঋষির এইরূপ পরুষ বাকো কম্পাষিত হইয়া, রাজা, যাইতেছি, বলিয়া, প্রিয়ার হন্ত আকর্ষণ করিয়া, ত্তরিত পদে প্রস্থান করিলেন। তদীয় ভার্য্যা অতিমাত্র কোমলাদী; স্থতরাং পরিশ্রমে অতিমাত্র কাতরা হইয়া উঠিয়াছিলেন। রাজা দেইরূপে তাহার উপর আবার আকর্ষণ করিলে, বিশামিত্র সহসা দওকাঠ হারা তাঁহাকে প্রহার করিলেন। মহীপতি হরিশ্চক্র ভার্যাকে প্রহার করিতে দেখিয়া, বিরুক্তি করিলেননা, তুঃখার্ত্ত হিয়া, যাইতেছি, এইমাত্র বাক্য প্রয়োগ করিলেন।

ঐ সময়ে পাঁচজন বিখাদেবতা রাজা হরিশ্চল্রকে তদবস্থ দর্শন করিয়া, ক্পারসবশংবদ হইয়া, পরস্পর বলিতে লাগিলেন, এই অতীব পাণিও বিখামিত্র কোন্ লোকে গমন করিবে, জানি না। দেখ, এই পাণাত্মা যাজ্ঞিকগণের শ্রেষ্ঠ মহারাজ হরিশ্চল্রকে স্বকীয় রাজ্য হইতে অবরোপিত করিল। আমরা আর কাহারই বা মহাযজে শ্রজাসহকারে অভিযুত পরমণবিত্র মন্ত্রপূত সোমর পান করিয়া, আহলাদ অহতব করিব ?

পক্ষিরা কহিল, তাঁহাদের এই কথার বিখামিত্র অভিমাত্র জাতক্রোধ হইরা, তাঁহাদের সকলকেই শাপ দিলেন, তোমাদিগকে মন্থ্য হইরা জন্মিতে হইবে। অনস্তর তাঁহারা প্রান্ত করিলে,
মহামুনি বিখামিত্র প্ররায় বিলিলেন, মন্থ্যযোনিতে পতিত হইলেও, তোমাদের সন্তান সমূৎপর
হইবে না। তোমাদের দারপরিপ্রহ ও মৎসরেরও উদ্রেক হইবে না। তোমরা পুনরায় কামকোধবিহীন দেবতা হইবে। অনস্তর বিখদেবগণ স্থ স্থ অংশে কুরুভবনে অবতরণ করিয়া, ত্রৌপদীর
গত্তে সন্তুত ও পাত্তবগণের পুত্র হইলেন। এই কারণ প্রযুক্তই দ্রৌপদীর সেই পঞ্চ মহার্থ পুত্র
মহামুনি বিখামিত্রের শাপে দারসংগ্রহ প্রাপ্ত হন নাই। এই আমি তোমার নিকট দ্রৌপদীর
পুত্রগণের কথাণ্টিত সমস্ত বৃত্তাস্তই বর্ণন করিলাম। আর কি শুনিক্ট ইচ্ছা হয়, বলুন।

ইতি দ্রৌপদীর পুরোৎপত্তি নাম সপ্তম অধ্যায়।

# {

মংসরেরও উত্তেক হইবে না। তোমরা পুনবার কামক্রোধবিচীন বিশ্বদেব হইবে। অনস্তর বিশ্বদেবগণ স্বস্থ অংশে কুরুভবনে অবতরণ করিয়া, ডৌপদীর গর্ভে সস্তৃত ও পাওবগণের পুত্র হইলেন। এই কারণ প্রযুক্তই ডৌপদীব সেই পঞ্চ মহারণ পুত্র মহামৃনি বিশামিত্রেদ্ধণাপে দারদ:গ্রহ প্রাপ্ত হন নাই। এই আমি তোমার নিকট ডৌগদীর পুত্রগণের কণাঘটিত সমস্ত বৃত্তান্ত বর্ণন
করিলাম। তুমি যে চারিটী প্রশ্ন করিয়াছিলে, তাহা বলিলাম। আর কি শুনিতে ইচ্ছা হয়, বনুন।

ইতি দ্রৌপদীর পুরোৎপত্তি নাম দপ্তম অধ্যায়।

## অন্টম অধ্যায়।

জৈনিনি কহিলেন. আপনারা মদীয় প্রশ্নের অন্তর্নে জ্যানুসাবে সমস্তই বলিলেন। একণে বাজা হরিশ্চন্তের কথা শুনিবার জন্ম আমার অভিমাত্ত কৌতৃহল উদ্দুদ্দ হইবাছে। আহা, তিনি মহাঝা হইবাও, অভিমাত্ত কট প্রাপ্ত ইইয়াছিলেন। দিজোত্তমগণ। তিনি কি পরিণামে তাদৃশ্ অভিমাত সুখও ভোগ করিয়াছিলেন ?

পিলিরা কহিল, রাজা হবিশ্বের বিধামিত্রের কণা গুনিয়া, তৃঃথিত হইয়া, ধীরে ধীরে প্রশ্বান কবিলেন। বালপুত্রা সহধর্মিণী শৈবা। তাঁহাব অনুগামিনী হইলেন। তিনি ক্রমে ক্রমে দিবা বারাণনীপুবীতে গমন কবিলেন। কিন্তু এই পুবী ক্রাং মহাদেবের পরিগ্রহ; ইহাতে মহুবার অধিকার নাই, ভাবিয়া তৃঃথার্ত্ত হইয়া, অনুক্লা পরীর সহিত তথা হইতে প্রস্থান করিলেন। পুরীতে প্রবেশ করিবার সময়ে বিধামিত্রকে উপস্থিত দেখিলেন। তাঁহাকে সমাগত দর্শন করিয়া বিন্যাবনত হইয়া, অঞ্জলি বন্ধনপুর্কিক বলিতে লাগিলেন, মুনে! আমার এই পুল, ভার্যাও প্রাণাত্র অবশিষ্ঠ আছে। ইহার মধ্যে যাহাতে আপনার প্রক্তরিশে কার্যাদিনিছি হইতে পারে, প্রহণ করন। অথবা, অন্ধ কোনরূপ কার্য্য আমাদের দ্বারা সম্পন্ন হইবার সম্ভাবনা থাকিলে, ত্রিষয়েও অনুজ্ঞা করুন।

ঋষি কহিলেন, রাজর্বেঁ! সেই প্রতিশ্রত এক মাদ পূর্ণ হইয়াছে। অভত্র নিজের অঙ্গী-কার যদি ভূলিয়ানা যাইয়া থাক, তাহা হইলে, আমাকে রাজস্মযুক্তের দ্ফিণা দাও।

বাজা কহিলেন, ভগবন্! অদ্য মাস পূর্ণ হইয়াছে বটে, কিন্তু এখন ও দিনের অংশ্কেক আছে। অভতঃ, এই সময় অপেক্ষা ক্রন। আর আপেনাকে প্রতীক্ষা করিতে হইবে না।

খৰি কহিলেন, মহারাজ ! আচ্ছা, তু:হাই হইবে, আমি পুনরায় আদিব। যদি আজি না দাও, তাহা হইলে শাপ দিব।

প কিরা কহিল, বিশ্বামিত এই কথা কহিরা, প্রস্থান করিলে, রাজা চিস্তা করিতে লাগিলেন, মামি কিরপে ইইাকে প্রতিশ্রুত দক্ষিণা প্রদান করিব ? আমার সমৃদ্ধিনান্ মিত্রই বা কোথায় ? এবং আমার নিজের অর্থই বা সম্প্রতি কোথায় ? কি করিলেই বা প্রতিগ্রহ দ্বিত হইতে না পারে এবং তজ্জ্জ্জ্ আন্মার অবংপাত ও সংঘটিত না হর ? আমার ত কিছুই নাই। অতএব প্রাণ্টাগ করিব, কি, কোনদিকে শলাইয়া যাইব ? অথবা প্রতিশ্রুত পূরণ না করিয়া যদি বিনষ্ট ইই, তাহা হইলে, অক্ষম্ম হরণ করিয়া, পাণে লিপ্তা হইয়া, আমাকে অধ্যের ও অধ্য কমি হইতে ইইবে। অথবা কাহারও দাসত্ব শ্বীকার করিব, না হয়, আম্বিক্রেম করিব।

পশির। কহিল, রাজাকে ব্যাকুল হইয়া, অধোন্থে কাতর হাদরে চিন্তা করিতে দেখিয়া, <sup>5নীর</sup> পরী তৎক্ষণাথ বাষ্পার্গদ বচনে বলিতে লাগিলেন, মহারা**ল! চিন্তাত্যাগ করিয়া, স্বকীর** ভিয় পালন করুন। মান্ত্র সত্তবহিঙ্কৃত হইলে, খাশানের ভার ব**র্জানীর হইয়া থাকে। অবি** ব্রুব্বাছা! স্বস্ত্রপরিপালন প্রধ্বে যাদৃশ প্রমধ্ব। এমন আর কিছুই নাই, বলিয়া থাকে।

₹

ষাহার বাক্য মিথা হয়, অধিহোত্র, অধায়ন বা দানাদ্য নিথিল ক্রিয়া সমস্ত তাহার বিক্ল ছইরা থাকে। ধর্মণাজ্রে সত্যকেই ধীমান্ প্রুষগণের উদ্ধারের একমাত্র উপায় ও নিথাকেই অকুতাল্লগণের পতনের হেতু বলিরা নির্দেশ করা হইরাছে। রাজা ক্রতি সপ্ত অধ্যেধ ও রাজ্প্র
যক্ত করিয়াও, একবার মাত্র মিথা বাক্য প্রায়োগ করাতে, অর্গবিচ্তে হইয়াছিলেন। রাজন্।
আমার প্ত্র হইরাছে। এই বলিয়াই তিনি উচ্চৈ: মরে রোদন করিতে লাগিলেন। বাজ্পনিলে তদীয় নেত্রান্ত পরিপ্ল হইরা গেল।

মহীপতি তদবস্থা তাঁহাকে সন্তাষণ করিয়া কহিলেন, ভজে ! এই বালক কাছে রহিয়াছে। অত এব সন্তাপ ত্যাগ করে। অয়ি গজগামিনি ! যাহা বলিতে উৎস্কা হইয়াছিলে, তাহা বল ।

পদ্মী কহিলেন, রাজন্! আমার পুত জনিয়াছে। সাধুগণ পুত্রের জন্তই দার পরিপ্রহ করেন। অত এব আপনি আমাকে বিক্রেয় করিয়া, তল্লর ধন হারা আক্লণকে দ্ফিণা প্রদান কফন।

পক্ষি কহিল, এই কথা শ্রবণ করিয়াই, রাজার মোহ উপস্থিত হইল। অনস্তর সংজ্ঞালাভ করিয়া, অতিমাত্র হং থিত হইয়া, বিলাপ করিতে লাগিলেন, ভতে ! ইহাই আমার মহাছঃখ, ভূমি আমাকে ঐরপ বলিভেছ। আমি পাপাত্মা হইলেও, তোমার সেই স্মিতপূর্ব বাক্য স্কল কি ভূনিতে পারিব ! হায়, হায়, অয়ি গুচিসিতে ! ভূমিই বা কিরপে এইরপ বলিতে সমর্থ হইলে। এ কপা বখন বনিতেও কট হয়, তখন আমি কিরপে করিতে পারিব ! এই বলিয়া সেই নরশ্রেষ্ঠ আত্মাকে বারংবার ধিকার প্রদানপূবঃসর মৃদ্ধি বিবেগে অভিভূত হইয়া, মহীপৃষ্ঠে নিপতিত হইলেন।

মহীপতি হরিশ্চক্রকে তদবস্থ দর্শন করিয়া, রাজপত্নী নিতান্ত ছংখিতা হইয়া, কর্মণ বালো বলিতে লাগিলেন, হা মহারাজ! কাহার শাপে এইপ্রকার ঘটিল যে, আপনি রান্ধব আন্তরণের উপযুক্ত হইরা, ভূপুঠে নিপতিত হইলেন! যিনি ব্রাহ্মণদিগকে কোটি কোটি গো ও বিত্ত দান করিয়াছেন, আমার পতি দেই পৃথীনাথ ভূমিতে শয়ন করিয়া রহিয়াছেন। হায়! কি কই! হা দেব! এই রাজা তোমার কি করিয়াছেন যে,. ইনি ইক্স ও উপেক্রের সমান হইয়াও, ঈদ্শী প্রস্থাপনী দুশা প্রাপ্ত হইলেন।

এই বলিয়া সেই সংশ্রেণীও অসহনীয় ভর্তৃংগমহাভাবে নিপী জিতা ও মৃদ্ধিত। হইয়া, নিপতিতা হইলেন। পিতা মাতা উভয়কেই অনাথ হইয়া, ভূমিতে পতিত হইতে দেখিয়া, শিও
অত্যন্ত কুধাবিষ্ট ও নিতান্ত তৃংখিত হইয়া, বলিতে লাগিলেন, তাত ! তাত ! আমাকে খাইতে
দাও; মাতঃ! মাতঃ! আমাকে ভোজন প্রদান কর। আমার বলবতী কুধা হইয়াছে; জিহবাত্র
শুক্ষ হইতেছে।

পক্ষিরা ক**হিল, এই অ**বসরে মহাতপা বিখামিত্র উপক্রিত, হুইলেন। তিনি রাজাকে মুর্চ্ছিত ও ভূপতিত অবলোকন করিয়া, সলিল-সমভ্যকণপূর্বক বলিতে লাগিলেন, রাজেন্ত্র! উঠ উঠঃ আমাকে মডীষ্ট দক্ষিণা দাও। ঋণ শোধ না করিলে, দিন দিন ছঃখ বর্ত্তিত ইয়া থাকে।

হিমের ভাষ, স্থাতিল সলিলে তজপে আপ্যায়িত হওয়তে, তৎক্ষণাং সংজ্ঞালাভ ও ঋষিকে অবনোকন করিয়া, রাজা পুনরার মোহাছের ও সেই ঋষিও ক্রোধসমাপর হইলেন। তথন তিনি রাজাকে সবিশেষ আখাসিত করিয়া বলিতে লাগিলেন, যদি ধর্মে অবেকা থাকে, তাহা হইলে, আমার সেই দক্ষিণা দাও। দেখ, স্থাসতাবলেই তাপ দান করেন; মেদিনী সত্যেই প্রতিষ্ঠিত আছেন; সভাই পরম ধর্ম বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে এবং একমাত্র সভাই অর্গর অধিষ্ঠান। সহস্র কর্মমেশ ও সত্য এই উভয় তুলায় ধারণ করিলে, অখ্যমেশসহস্র অপেকা সভাের তার অধিক হইয়া থাকে। অথবা তুমি যেরপ অনার্যা, পাপাশয়, ক্রের, মিগ্যাবাদী প্রভাবশালী রাজা, ভাহাতে আমার আর এইরপ সামবাদপ্রযোগে প্রেম্বালন কি । ভাল কথায় সহমানে বলিভেছি, প্রবণ কর, রাজন্। বিদ মদ্য আমায় দক্ষিণা না দাও, তাহাহইলে, স্থ্যাত্তর প্রই ভোমাকে শাণ দিব।

এই ৰলিয়া ঋষি প্ৰস্থান করিলে, রাজা ভয়াত্র হইয়া, ভাবিতে লাগিলেন, আমি নিঃম হইয়া পড়িয়াছি; ধনীও নিৰ্দয় হইয়া, নিতাস্ত পীড়ন করিতেছেন। এরপ অবস্থায় অধ্য আমি কোন্ দিকে পলায়ন করিব ?

তথন তদীর ভার্য্য প্নরার বলিতে লাগিলেন, আমি বাহা বলিলাম, তাহাই করুন; শাণা-নলে নিঃশেষে দক্ষ হইয়া, পঞ্জু লাভ ক্রিবেন না।

পত্নী বারম্বার এইরূপে প্রণোদিত করিলে, রাজা কহিলেন, ভদ্রে! আমার আর মুণা নাই। অতএব তোমাকেই বিক্রের করিব। অতিনির্দ্ধর পুরুষণণও যাহা করিতে পারে না, আমি তাহা করিব। যদি আমার রদনা এইরূপ নিতান্ত হুর্জাক্য বলিতে সমর্থ হয়, তাহাহইলে, করিছে পারিব।

ভার্য্যাকে এইরপ বলিরা, পরে তিনি নগরে গমন করিয়া, নিতান্ত ব্যাকুল অন্ত:করণে বাল্পা-কুল লোচনে ও বচনে কহিতে লাগিলেন, নগরবাদী সকলে আমার কথা প্রবণ কর। তোমরা কি জিঞ্জাসা করিতেছ, তুমি কে? আমি অতি নির্দয় ও অমাত্র্য। অথবা আমি অতিকঠিনস্থাব রাক্ষ্য, কিছা তাহা অপেক্ষাও সমধিক পাপাত্মা। সেইজ্লুই পরমপ্রিয়তমা ভার্য্যাকে বিক্রম করিতে আসিয়াছি; নিজের প্রাণত্যাগ করিতে পারিলাম না। আমার এই প্রাণ অপেক্ষাও পরম অভিলাবের পাত্রীকে দাসী করিতে যদি তোমাদের মধ্যে কাহারও প্রয়োজন হয়, সে আমার প্রাণ থাকিতে থাকিতে শীত্র বলুক।

পিকিরা কহিল, অনস্কর কোন বৃদ্ধ ত্রাহ্মণ আগমন করিয়া, রাদ্ধাকে বলিলেন, আমাকে দাসী প্রদান কর। আমি ধন দিয়া ক্রয় করিব, আমার প্রচ্ব অর্থ আছে। আমার প্রিয়া অতীব কোমল-প্রাণা। গৃহকর্ম করিতে পারেন না। এই কারণে আমাকে প্রদান কর। তোমার স্ত্রীর কার্য্য-দক্ষতা, বয়স, রূপ ও সংস্কৃতাবের অনুক্রপ এই অর্থ গ্রহণ করিয়া, উহাকে আমার দাও।

বান্ধাণ এইপ্রকার বাক্য প্রয়োগ করিলে, রাজার হৃদয় বিদীণ হইল। তিনি ছ্ংথের উদ্রেক বশতঃ কিছুই আরে বলিতে পারিলেন না। তথন সেই ব্রাহ্মণ রাজার বহুলাস্তে দৃঢ়রূপে ধনবৰ্ধন-পূর্বাক তদীয় পদ্ধীর কেশপাশ আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। জননীকে আকর্ষণ করিতে দেখিলা, কাকপক্ষর বালক রোহিতাশ্বও হস্ত হারা তদীয় বস্ত্র আকর্ষণ করেতে রোদন করিতে প্রস্তুইলেন।

তথন রাজপত্নী রাহ্মণকে কহিলেন, আর্যা ! আমাকে ছাড়িয়া দিন, ছাড়িয়া দিন। আমি রোহিতাখকে দেখিয়া লই। তাত ! আর ইহাকে দেখিতে পাইব, কি না, সন্দেহ। বৎস ! এস, দেখ, আমি তোমার জননী হইয়া, দাদীত প্রাপ্ত ইইলাম। তুমি রাজপুত্র। আমি এখন তোমার অস্পাতা ইইয়াছি। অত্তব আমাকে আর স্পর্শ করিও না।

অনস্তর সেই বালক জননীকে আকৃষ্টা হইতে দেখিয়া, মা মা বলিয়া, রোদন করিতে করিতে অঞ্পূর্ণ লোচনে তৎক্ষণাৎ সমভিধাবনে প্রবৃত্ত হইলেন। ব্রাহ্মণ তদবস্থ তাহাঁকে ক্রোধভরে পাদপ্রহার করিলেন। তথাপি তিনি মা মা বলিতে লাগিলেন, কোন মতেই জননীকে ত্যাগ করিলেন।

তথন রাজপত্মী ব্রাহ্মণকে কহিলেন, আপনি অধুনা আমার রক্ষাকর্তা। অতথব এই বাল-ককেও জন্ম করন। কেন না, আমাকে জন্ম করিন্নছেন, সত্য; কিন্তু এই বালকরাতিরেকে আমি কথন আপনার কার্য্যাধনে সম্থা হইব না। মন্দ্রতাগিনী আমার প্রতি এই অনুপ্রধ্বিতর্গে উদ্যত হউন। ব্বসের সহিত পর্যাধিনী ধেমুকে বেমন, এই বালকের সহিত আমাকেও তেমন সংযোজিত করন।

বিশিণ কহিলেন, এই ধন গ্ৰহণ কর, বালক আমায় দাও। ধর্মণাল্লক ব্যক্তিগণ শ্রীপৃক্ষেরই কেবল শত্সহ্স, লক্ষ্ণ কোটিমূল্য বেতন নিরূপিত করিয়াছেন, বালকের নহে।

পক্ষীরা কহিল, অনস্তর আমন সেইরূপে বালকেরও সেই বিত্ত রাজার উত্তরপটে বন্ধন ও মাতার সহিত সেই বালককে গ্রহণ করিয়া, একত্রে বন্ধ করিলেন। তথন নরপতি স্ত্রী পুত্র উভরকেই লইয়া যাইতে দেখিয়া, অতিমাত্র ছংখিত হইয়া, বারংবার নিখাস পরিহার পুরংসর বিলাপ করিতে লাগিলেন, যাহাঁকে পুর্ব্ধে বায়ু, তপন, চন্দ্র ও আমি ভিন্ন অপর ব্যক্তি কথন দেখিতে পায় নাই, সেই এই মদীয় পত্নী দাসীত্ব প্রাপ্ত হইলেন। এই বালকও স্থাবংশে জন্মগ্রহণ করিয়া, অপরের নিকট বিক্রীত হইলেন। আমার নিতান্তই মতিচ্ছেল ঘটিয়াছে। সর্ব্ধণা আমাকে ধিক্। হা প্রিয় ! হা বংস। অনার্য্য আমার ছ্রাতি বশতঃ তোমরা দৈবাধীন দশা প্রাপ্ত ইলে। তথাপি আমার মৃত্যু হইল না। আমাকে ধিক্।

পক্ষিরা কহিল, রাজা এইরূপ বিলাপ করিতে লাগিলে, সেই বিপ্র তাঁহার পত্নী পুত্র উভয়-কেই গ্রহণ করিমা, ত্রাঘিত হইয়া, অত্যুক্ত গেহ ও বৃক্ষাদি অতিক্রম করত একবারেই অদৃষ্ঠ হইয়া পড়িলেন। ঐ সময়ে বিশ্বামিত্রও উপস্থিত হইয়া, ধন যাজ্ঞা করিলেন। রাজাও তাহাঁকে পত্নীপুত্রের বিক্রমলব্ধ সেই ধন দান করিলেন এবং শোকে আচ্চন্ন হইয়া উঠিলেন। বিশ্বামিত্র সেই ধন অল্ল দেখিয়া, কুপিত হইয়া, রাজাকে কহিলেন, ক্ষত্রিয়াধম! তৃমি কি ইহাকেই আমার সদৃশী যজ্ঞদক্ষিণা মনে করিতেছ ? যদি তাহাই হয়, তাহা হইলে, এখনই আমার স্তথাতপভার, অমান ত্রাক্ষণাের, বিশুদ্ধ অধ্যানের ও উগ্র প্রভাবের অতিমাত্র বল অবলােকন কর।

রাজা কহিলেন, ভগবন্! আর কিয়ৎকাল অপেকা কক্ন; অবশিষ্ট ধন দান করিব। সম্প্রতি আর কিছুই নাই; পত্নী ও পুত্র পর্যান্তও বিক্রয় করিয়াছি।

ঋষি কহিলেন, রাজন্ ! দিবদের আর চতু ছাগ অবশিষ্ঠ আছে । আমি এতাবৎকাল প্রতীকা করিতে পারিব। এ বিষয়ে আর কোন উত্তব করিতে পারিবে না।

পিক্ষরা কহিলেন, রাজাকে এইরূপ নিঘূর্ণ ও নিছুর বাক্য কহিয়া, কৌশিক কোপভরে সেই ধন গ্রহণ করিয়া, প্রস্থান করিলেন। বিশামিত্র গমন করিলে, রাজা জয়শো ম্পাগরের মধাগামী হইয়া, সর্বাকারবিনিশ্চয়পূর্বক অধামুথে উচ্চঃস্থরে বলিতে লাগিলেন যাহার আমাকে ধন দিয়া ক্রীতদাস করিবার প্রয়োজন আছে, সে স্থ্যান্তের পূর্বেই শীঘ্র বলুক। তথন ধর্ম চঙালবেশ ধারণ করিয়া, ত্রিত পদে আগমন করিলেন। তাঁহার শরীর হুর্গরে পূর্ণ, রুক্ষ ও বিক্ত ভাবাপরা; শাশ্র ও দশনপংক্তি অতিমাত্র দীর্ঘ ও বিপুলায়ত; মনে ঘুণার লেশ নাই; বর্ণ রুষ, উদর লম্বিত, অকিযুগল পিঙ্গলবর্ণ ও রুক্ষ, বাক্য আতি কর্কশ, গলদেশে শ্বমাল্য শোভ্যান, হস্তে কপাল, বদনমঙল বিস্তৃত, হস্তে যৃষ্টি ও পিকিপ্রস্থ, দেহ অতি রুশ, চতুর্দ্ধিক ক্রুরগণে বেষ্টিত এবং তাহাঁর আকার প্রকার সমুদাষ্ট অতীব ভয়ন্ধর ও প্রচঙা। তবস্থার তিনি বারম্বার অভিবাদপ্রয়োগে প্রস্তৃত্ত ইইয়াছেন। তিনি আসিয়া রাজাকে কহিলেন, তোমাকে আমার প্রয়োজন আছে। অল্প বা অধিক যাহা দিলে, তোমাকে পাওয়া ঘাইতে পারে, আপনার সেই মূল্য শী্র্য নির্দেশ কর।

পক্ষিরা কহিল, তাদৃশ অতিনির্চুব, অতিহ:শীল ও অতিবাদপ্রবৃত জ্রদৃষ্টি পুরুষকে লকা করিয়া রাজা বলিলেন, তুমি কে ?

চণ্ডাল কহিল, আমি এই প্রোত্তমে প্রবীবনামে বিখ্যাত চণ্ডাল। সকলেই জানে, আমি বধ্যের বধ্ ও শবের কম্বল সংগ্রহ করিয়া, জীবিকা নির্কাহ করি।

রাজা কহিলেন, চণ্ডালের দাসত্ব নিতান্ত জুগুপিত। তাংগতে আমার ইচ্ছা নাই। <sup>বরং</sup> বিশ্বমিত্রের শাপানলে দগ্ধ হইব, তথাপি, চণ্ডালের বখাতা স্বীকার করিব না।

পক্ষিরা কহিল, তিনি এইরপ বলিতেছেন, এমন সময়ে বিধামিত্র তথার স্মাপত হ<sup>ই রা</sup>, রোষ ও অমর্ষ বশে লোচনত্বর পুর্বিত করিয়া, কহিতে লাগিলেন, এই চণ্ডাল তোমাকে ভ্রিগ্<sup>রাবি</sup>ধন দান করিতে উপস্থিত হইরাছে। তবে ভূমি কিজ্ঞ আমার যজনকিণা শোধ করিতেছ না ?

রাজা কহিলেন, ভগবন্! আমি আত্মাকে স্থ্যবংশসমূত্ত জানি। কিরপে সামায় ধনের লোভে চণ্ডালের দাস হইতে পারি ?

শ্বি কহিলেন, যদি তুমি এই চণ্ডালের নিকট আপনাকে বিক্রেয় করিয়া, সেই ধন বথাকালে আমাকে নাদাও, তাহা হইলে, নিশ্চয়ই তোমাকে অভিশপ্ত করিব।

এই কথার হরিশ্চন্দ্রের প্রাণ চিন্তামাত্রে প্রতিষ্ঠিত হইল। তথন তিনি, ভগবন্! প্রসের হউন, বুলিয়া বিহলে হৃদয়ে ঋষির পদযুগল ধারণ করিলেন। এবং বলিতে লাগিলেন, আমি আপনার দাস, তাহার উপর একান্ত ব্যাকুল ও ভরপ্রাপ্ত হইয়ছি; বিশেষত: আমি আপনার একমাত্র ভল্ত। অতএব প্রসের হউন; চণ্ডালসম্পর্ক যাহার পর নাই ক্রেশজনক।

ঋষি কহিলেন, যদি তুমি আমার দান, তাহা হইলে, আমি আমার দাসভাবপ্রাপ্ত তোমাকে অর্ম দ্বিতে চণ্ডালহন্তে সম্প্রদান করিলাম।

পিক্ষিরা কছিল, তিনি এইপ্রকার বলিলে, চণ্ডাল হাইচিত হইয়া, তৎক্ষণাৎ তাঁহাকে আর্কু দিব প্রদান ও রাজাকে বন্ধন করিয়া, নিজ পত্তনে লইয়া গেল। একে ইইবন্ধবিয়োগজভ রাজার ক্রেশের সীমা ছিল না; তাহার উপর চণ্ডাল দণ্ডের আবাত করাতে, অত্যন্ত সম্ভান্ত হইয়া উঠিলেন এবং তাঁহার মনও ব্যাকুলভাবাপর হইল। তিনি চণ্ডালপত্তনে অবস্থিতি করত প্রাতঃ, মধ্যাহ্ম, সায়ং, এই তিন সময়েই এইরূপ গান করিয়া থাকেন, দেই বালা, দীনমুথ বালককে আপনার প্রোভাগে অবলোকন করিয়া, দীনমুথীও অন্থাবিষ্ঠা হইয়া, আমাকে এই ভাবিয়া, অরণ করিয়া থাকেন যে, রাজা ধন সংগ্রহ করিয়া, ঋষিকে তাঁহার প্রার্থনাধিক বিত্ত প্রদানপূর্বক আমাদের উভয়কেই উদ্ধার করিবেন। কিন্তু সেই মৃগশাবাক্ষী জানিতেছেন না যে, আমি আরও পাপতর হইয়া উঠিয়াছি। রাজ্যনাশ, স্বস্থত্তাগ, ক্রাপ্ত্রবিক্রয়, অবশেষে এই চণ্ডালতা প্রাপ্তি, আহা, আমার তুংথের উপরি তুংথ সমুভাবিত হইয়াছে!

এই রূপে তিনি হৃতস্বস্থিত ও আত্রভাবপির ইইয়া, চণ্ডালপন্তনে অবস্থিতি করত নিতা প্রম প্রিয়তম পুল্র ও তালাত প্রাণা সহধর্মিণীকে স্মরণ করিয়া থাকেন। কিরৎকালাবসামে, তাঁহাকে চণ্ডালের বশাস্থাত হওয়াতে, শ্মশানে শ্ববস্ত্রের আহরণকার্য্যে নিমৃক্ত হইতে হইন। শ্ববস্ত্রের আহরণবার্বসায়ী তদীয় প্রভূ সেই চণ্ডাল তাঁহাকে অমুশাসন করিলেন, তৃমি শবের আগমন অমুসন্ধান করত এই শ্মশানে দিবানিশ অবস্থিতি কর। প্রভ্যেক শবে রাজাকে বড়ভাগ দিতে হইবে। অবশিষ্ঠ তিন ভাগ আমার এবং অপর হুই ভাগ তোমার বেতনস্করণ নির্দাধিক বছিল।

চণ্ডাল এইপ্রকার অনুশাদন করিলে, রাজা তদন্দারে দক্ষিণদিকে বারাণদীপ্রান্তে প্রতিষ্ঠিত
শবমন্দিরে তৎক্ষণে আগমন করিলেন। ঐ শাশানে নিয়ত ভয়য়র উচ্চেধনি সম্থিত হইতেছে।
শত শত শিবা উহাকে আজ্ম করিয়া আছে। শব দকলের মৌলিপরম্পরায় উহা একবারেই
পরিপূর্ব। উহাতে রাশি রাশি ধ্ম ও ছর্গন্ধ উথিত হইতেছে। পিশাচ, ভূত, বেতাল, ভাকিনী ও
ফকগণে উহা পরিব্যাপ্ত, গুয় ও রামানুনমূতে আজ্ম, কুসুর্নিকরে পরিবেটিত, স্বাস্থেশতে আকীর্ণ
ও মহাহর্গন্ধে পরিপূর্ব। মৃত্রণণের বন্ধুরা উহাতে নানাপ্রকার আর্তনাদ করিতেছে। তথাতীত
অন্ত অযুত ভয়য়র কোলাহল সমুখ্য হইতেছে। হা পুত্র! হা মিত্র! হা বন্ধো! হ' আতঃ! হা
বৎস! হা প্রিয়ে! হা পিতঃ! হা মাতঃ! হা পতে! হা ভগিনি! হা মাতুল! হা পিতামছ! হা
মাতামহ! হা পৌত্র! হা বান্ধব! অন্য তুমি কোথায় গেলে! আইস! এইপ্রকার বাক্য প্রয়েগে
প্রত্ব লোক সকলের তুমুল ধ্বনি তথায় শ্রু নাণ হইতেছে। জলমান মাংদ, মেদ ও বনারাশির
ইমছ্মিত শক্ষে উহার চতুন্ধিক প্রতিধ্বনিত। অর্জন্ম শাম্বর্ণ শব্দকল চিতারির মধ্যস্থল আশ্রম্ব
করিয়া, দশনপংক্তি বিক্সিত করত, এই বিলয়াই যেন হাস্ত ক্রিভেছে, শ্রীরের এই দশা! অয়ির্ব

হর্বজনিত শব্দ এবং লীয়মান ভূত, বেতাল, পিশাচ ও রাক্ষসগণের শব্দ একতা মিলিত হইয়া প্রবিষ্ঠমর্পমূত্ত সর্বলোক ভ্রাবহ সুমহান্ শব্দের ভাষ, তথায় শ্রেমাণ হইতেছে। মহিষ্ গোগণের রাশি রাশি কারীষে উহার সকল হুল পরিপূর্ণ রহিয়াছে। তত্তৎ-কারীষরাশি দং করিয়া সমুদ্রাবিত রাশি রাশি ভক্ম ও সমুদ্রত অস্থিতাপ একতা মিলিত হইয়া, উহাকে আরু ক্রিয়াছে। রাশি রাশি উপহারমাল্য ও প্রদীপ উহার ইতন্ততঃ বিক্ষিপ্ত রহিয়াছে। কাকপংত্তি অনব্য়ত তত্ত্বত্য কৃষ্ণচন্দ্ৰন বুক্ষ সকল বিক্ষিপ্ত করিতেছে। উহাতে নানাপ্রকার শব্দ প্রায়ই সমুখিত হইতেছে। এই সকলের সালিধ্যে ঐ শাশান সাক্ষাৎ নরক হইয়া উঠিয়াছে। রাজ ভাদৃশ ভয়ত্কর শ্মশানে পদার্পণমাত্র ছঃধিত হইয়া, এই বলিয়া শোক করিতে লাগিলেন হা বিধে ! আমার ভ্তাগণ, মন্ত্রির্গ ও বাহ্মণসমূহ এবং সেই স্থবিপুল রাজ্যই বা কোণা গেল ! হা শৈব্যে ! হা পুতা। তোমরাই বা বিশ্বামিত্রের দোষে হতভাগ্য আমাকে ত্যাগ করি। কোৰার গেলে ! এইপ্রকার পরিদেবন প্রাসর তিনি চণ্ডালের আদেশবাক্য প্নাঃ প্নাঃ চিত্ত করিয়া, ইতন্তত: ধাবমান হইতে লাগিলেন। তাঁহার দেহ মলভারে আচ্ছন্ন, দর্বাঙ্গ রক্ষভাবাপর শরীরে অতিমাত্র তুর্গন্ধ, হত্তে ধ্বজ, পরিধান লকুট্নাত্র এবং মন্তক ও চিবুক ইত্যাদিতে রাণি রাশি কেশ। এই সকলে তিনি সাক্ষাৎ কালের ভায় ও তরিবন্ধন জীবিত সত্তেও যোভস্তর গ্রাং হইয়াছেন। তদবস্থায়, এই শবে এই মূল্য পাওয়া গিয়াছে, আমি এই মূল্য প্রাপ্ত হইব, ইয় আমার, ইহা রাজার, ইহা প্রভু চণ্ডালকে দিতে হইবে, এই প্রকার বলিতে বলিতে চতুদিবে ধাবমান হইতে লাগিলেন। জীণবজে গ্রন্থি দিয়া, তাহারই কাঁথা করিয়া গায়ে ধারণ করিয়া ছেন। তাঁহার মুণ, বাছ, উদর ও পদ সমুদায়ই চিতাভক্ষে ও শাশানধূলিতে, পরিপূর্ণ। তাঁহা **হত্তের অফুলি সকলও রাশি রাশি** মেদ, বসা ও মজ্জাতে লিপ্ত হইবাছে। বিবিধ শবার আহা করিয়া, তাহাতেই উদরতৃপ্তি করিয়। থাকেন। শ্বমাল্য সংগ্রহ করিয়া, তাহাতেই মন্তক মিঙি করেন। তাঁহার দীর্ঘ নিখাদের একবারও বিরাম নাই। কি দিবা, কি রাত্তি, নিজার সম্প্র নাই। বারম্বার কেবল উচ্চে:ম্বরে হাহাকার করিতেছেন।

এইরপ অবস্থায় ঘাদশনাস, শত শত বৎসরের আয়, অতিবাহিত হইলে, সেই বন্ধ্বিয়োগবিধু রক্ষান্ধ নরপতি কোন সময়ে প্রান্ত ও তরিবন্ধন নিদ্রায় অভিভূত ও নিশ্চেই হইয়া, শর্ম করি লেন। শর্ম করিয়াই, অত্যাশ্চর্য্য স্থা দেখিলেন; তিনি যেন দৈবের বলবতা বলে ও শ্মশানাভ্যান্ধ যোগের সাহায্যে অভ্য দেহ ধারণ করিয়া, গুরুকে গুরুক্দিণা প্রদান করিয়াছেন। তাহার্দ্ধেশ বর্ষ হংখদান হইতে তাঁহার নিস্কৃতি হইয়াছে। তিনি আরও দেখিলেন, যেন পুরুসীগরে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। তিনি সেই গর্প্তে থাকিয়া যেন চিন্তা করিলেন, এই গর্ভ হইতে নিজ্ঞাই হুয়াই, দানধর্মের অফুটান করিব। অনস্তর তিনি যেন তৎক্ষণাৎ পুরুসবালক রূপে জন্মগ্রহ করিয়া, শ্মশানে মৃতসংস্কারকরণে সর্কাণ ব্যাপৃত রহিলেন। তদবস্থায় সপ্তম বর্ষ সমাগত হইকে কোন গুণী ব্রাহ্মণ বন্ধু কর্তৃক মৃত অবস্থায় শ্মশানে আনীত হইলেন। তাহার ধন নাই। তহ্ন তিনি যেন মুলার্থী হইমা, ব্রাহ্মণদিগকে পরিভূত করিলেন। তথন ব্রাহ্মণেরা বিশ্বামিত্তের আচি রিত উল্লেখ করিয়া, তাহাকে বলিতে লাগিলেন, ভূমি পাপকারী। তোমাকে নিতান্ত পাপম্ভেশ্ভ কর্মই করিতে হইবে। পূর্দ্ধে রাজা হরিশচন্দ্র ব্রহ্ম হরণ করিয়া, পুণ্য বিনাশ বশ্ব বিশ্বামিত্ত কর্মণানিতে নিপাতিত হইয়াছেন। ইহাতেও যথন তিনি তাহাদিগকে ক্ষ ক্রিলেন না, তথন তাহারা তাহাকে রোবভরের এই শাপ দিলেন, নরাধম। তুমি এখনই গোনরকে গমন কর।

এইপ্রকার বাক্য প্রবোজিত হইবামাত্র, তিনি সেই স্বপ্নস্থ অবস্থায় তৎক্ষণাৎ অতীব ভার্গ ষমদ্তদিগকে পাশহতে সমাগত দর্শন করিবেন। পরক্ষণেই দেখিলেন, তাহারা তাঁহাকে বর্গ পূর্বাক দৃঢ় করে গ্রহণ করিয়া লইয়া যাইতে লাগিল। তথন তিনি থিয় হইয়া, হা মাতঃ! ই

1

পিতঃ ! তোমরা এখন কোপায় ! এইপ্রকার বাক্য প্রায়োগে প্রবৃত্ত হইলে, তাহারা তাহাঁকে তৈলদোণিতে নিপাতিত করিল । অনপ্রর ক্রকচ ও ক্রধার দারা অধোভাগে পাটিত করিয়া, অক্তমনে
নিক্ষেপ করিলে, তিনি হংখার্ত হইয়া পৃষ ও শোণিত ভোজন করিতে লাগিলেন। অনস্তর সংধবর্ষ মৃতাঝাকে প্রক্রমধানিতে দর্শন করিলেন। প্রতিদিন নরকের পর নরকে দক্ষ ও পচিত,
ধেদিত ও ক্লোভিত, মারিত ও পাটিত, ক্লারিত ও দীপিত এবং শীত ও বাতে আহত হইতে
গাগিলেন। তাঁহার নরকে এক এক দিন এক শত বর্ষের সমান হইল। যমদ্তেরা তাঁহাকে ঐরপে
শতবর্ষ নরকে মগ্য করিয়া রাখিল।

অনন্তর নরক হইতে পৃথিবীতে নিপতিত হইরা, তিনি বিঠাভোজী কুরুর হইরা, জন্মগ্রহণ করিলেন। তদবস্থার বমি ভক্ষণ করত জীবিকা নির্বাহ করিয়া, অবশেষে শীতে দগ্ধ হইয়া, একমাদ মধ্যেই মরিষা গেলেন। পরে আপনাকে গো, গর্মভ, হন্তী, বানর, ছাগ, বিড়াল, কল্প, মেষ, পক্ষী, কমি, মৎস্ত, কৃর্ম, বরাহ, খাবিধ, কুরুট, শুক, সারিকা ও সর্প এবং অন্তবিধ দেহ ও স্থাবর যোনি দকল ভোগ করিতে দেখিলেন। অনন্তর দিন দিন বিবিধ প্রাণিরপ্রে জনিতে লাগিলেন।

এইরপে বর্ষণত তত্তৎ কুষোনিতে গমন করিয়া, পূর্ণ হইলে, রাজা একদা আপনাকে স্বকীয় বংশে সমৃত্ত অবলোকন করিলেন। সেই বংশে থাকিয়া, তাঁহার রাজ্য দৃত্তে অপহারিত হইল। এবং ভার্যা ও পুত্রও তৎসঙ্গে হৃত হওয়াতে, তিনি একাকী বনগমন করিলেন। সেই বনে গিয়া দেখিলেন, ভয়াবহ সিংহ বদনব্যাদান করিয়া শরভের সহিত মিলিত হইয়া, তাঁহাকে ভক্ষণ করি-বাব জন্ম উপস্থিত হইয়াছে। অনস্তর দিংহ ভক্ষণ করিলে, তিনি পুনরার পত্নীর উদ্দেশে শোক করিতে করিতে বলিতে লাগিলেন, হা শৈব্যে ! আমি ত্রুপে অভিভূত হইয়াছি, তুমি আলাকে এথানে ত্যাগ করিয়া কোথায় গেলে! অনন্তর পুনরায় পুত্রের সহিত স্বকীয় ভার্যাকে অবলোকন করিলেন। তিনি যেন বলিতে লাগিলেন, মহারাজ! দ্যুতক্রীড়ায় প্রয়োজন কি ? আনাদিকে পরিত্রাণ কর্মন ; ত্দীব পুত্র ভার্য্যা শৈব্যার সহিত শোচনীয় অবস্থায় উপস্থিত হই-গাছে। তথন তিনি বারম্বার ধাবমান হইয়াও, তাঁহাদিগকে যেন আর দেথিতে পাইলেন না। জন-खत जिनि राम चर्का थाकिया, व्यवताकन कतिरामन, जिनीय जायारिक वन्नुर्सक नहेशा याहेरजरह । তিনি তদবস্থায় মুক্তকেশে দীনবেশে হীনবাদে হাহাকার পরিহার পুরঃসর বারন্বার বলিতেছেন, মানাকে ত্রাণ করুন, ত্রাণ করুন। অনন্তর তিনি অবলোকন করিলেন, তদীয় মহিষী যেন মন্ত্রীক্ষে পাকিরা, ধর্মরাজের আদেশবশবর্ত্তিনী হইয়া, জন্দন করিতে করিতে বলিতেছেন, <sup>নহারাজ</sup> ! বিশ্বামিত্র তোমার জক্ত যমকে জানাইয়াছেন। আপনি এখানে আহ্নন। এই বলি-াই তাঁহাকে বেন দর্পপাশে বন্ধ করিয়া, বলপূর্বক লইয়া যাইতে লাগিলেন। স্বয়ং যম তাঁহার <sup>নিক্ট</sup> বিখামিত্রের অনুষ্ঠিত কার্য্য কীর্ত্তন করিলেন। তথাপি তাঁথার অধর্ম**জনিত কোনরূপ বিকৃতি** ৰ্কিত হইল না।

এইকপে স্বপ্নে যে যে দশা অবলোকন করিলেন, ছাদশ বর্ষ যাবৎ তত্তৎ দশা তাঁহার বিশেষক্রপে তাগ করিতে হইল। ছাদশ-বর্ষ পর্য্যবদানে যমদ্তের। বলপূর্বক লইয়া গেলে, তিনি সাক্ষাং নিকে দর্শন করিলেন। তথন যম তাঁহাকে কহিলেন, মহারাজ! বিখামিত্রের কোপ নিরাজত করা সহজ নছে। এমন কি, কেই ঋষি তোমার পুত্রেরও মৃত্যু সংঘটিত করিবেন। অতথিব তুমি মানুষলোকে গমন করিয়া ত্ংখশেষ ভোগ কর। সেখানে গেলে, ছাদশ বর্ষের অবসানে গংবের শেষ ও শ্রেয় লাভ করিবে।

অনস্তর তিনি যমদ্তগণ কর্ত্ব প্রণোদিত হইয়া, অন্তরীক হইতে পতিত হইলেন। যমণোক <sup>হৈতে</sup> পতিত হইলে, ভার ও সন্ত্রমবশত: তাঁহার নিজা তালিয়া গেল। **তথন তিনি সম্পার চিতা** <sup>চিরো</sup>, বলিতে লাগিলেন, হার, কি কট। ক্তে কারসেচন হইল। অপ্রেও মহাত্র**থ দর্শন** <sup>ইরিলাম, বাহার অন্তনাই। অনস্তর তিনি প্রস্থিপাকে সন্ত্রমসহকারে জিল্ঞাসা ক্রিলেন, আমি</sup> স্থাপ্ন যে হাদশ বর্ষ দেখিলাম, বাস্তবিকই তাহা অতীত হইয়াছে কি ? তাহাদের মধ্যে কেহ বলিল, না; অস্তান্তেরা কহিল, তাহাই বটে।

রাজা তানিয়া ছংখিত হইয়া, দেবগণেব শবণ গ্রহণ করিলেন এবং কহিলেন, তাঁহারা আমার, শৈব্যার ও বালকের কল্যাণ বিধান কর্মন। যিনি সকলের শ্রেষ্ঠ, সেই ধর্মকে নমস্কার; যিনি সকলের বিধাতা, সেই ক্ষকে নমস্কার; ব্হস্পতি! তোনাকে নমস্কার; ইন্দ্র! তোনাকেও নমস্কার। এই বলিয়া তিনি শব সকলের মৃল্যকরণরূপ চণ্ডালের কার্য্যে নিযুক্ত হইলেন। তৎসহকারে তাঁহার স্বৃত্তিরও বিলোপ হইল। তাঁহার কলেবর মলভারে পরিপুরিত, মন্তকে জটা, শরীর ক্ষক্রণ, পরিধান লকুট এবং জ্ঞানের লেশমাত্র নাই। তদবস্থায় ভার্যা পুত্র সকলকেই ভূলিয়া গেলেন। রাজ্যনাশ্বশতঃ তাঁহার উৎসাহেরও লেশমাত্র নাই; শ্মশানেই অনবরত অবস্থিতি করেন।

ঐ সময়ে তদীর বালক পুত্রকে সর্প দংশন করাতে, তাঁহার মৃত্যু হয়। তাঁহার ভাষা। সেই মৃত্যু পুত্রকে প্রহণ করিয়া, বিলাপ করিতে করিতে তথায় গমন করিলেন। তিনি বারম্বার, হা পুত্র ! হা বংস ! হা শিশো ! এইপ্রকার বিগতেছেন। তাঁহার মনে আর মন নাই; তাঁহার কেশ-পাশ ধূলিভারে আছের হইয়াছে; শরীর ক্লশ ও বিবর্ণ। তদবস্থায় তিনি বলিতে লাগিলেন, হা রাজন্ ! তুমি পুর্বের যাহাকে রম্মাণ দেখিয়াছিলে, আজি তাহাকে ছই সর্পদংশনে প্রাণত্যাগ করিয়া, মহীপুঠে শয়ন করিতে দেখিতেছ !

তাঁহার সেই বিলাপ বাক্য প্রবণ করিয়া, মৃতকম্বল লাভ হইবে, ভানিয়া, রাজা ছরিত পদে তথায় আগমন করিলেন। স্থৃতিশক্তির লোপ হওয়াতে, ভার্য্যাকে তিনি চিনিতেই পারিলেন না। বছ দিন বিপ্রবোগবশত: তিনি সতত সস্তাপ ভোগ করিতেছেন এবং যেন তাঁহার পুনর্জন হইয়াছে। এই কারণেও তাঁহাকে রাজা চিনিতে পারিলেন না। তিনিও পূর্বের রাজাকে চাক-কেশাস্ত দেখিয়াছিলেন। অধুনা, জটাচছন ও তলিবদ্ধন শুক্ষ বৃক্ষের তায় হইয়াছেন, দেখিয়া, কোনমতেই চিনিতে পারিলেন না। অনস্তর রাজা আশীবিষপী। ড়ত ও ক্ষণটে সমাচ্ছন দেই বালককে রাজেন্দ্রকণদম্পন্ন দর্শন করিয়া, চিন্তা করিতে লাগিলেন, হায় কি কট! কোন রাজার গৃহে এই শিশুর জন্ম হইয়াছিল ; হ্রাত্মা কুতান্ত ইহাকে কোন্দিকে লইয়া গিয়াছে। এই-রূপে মাতার উৎসঙ্গামী এই বালককে দর্শন করিয়া, আমার সেই পদ্মপলাশলোচন বালক রোহি-্**তাখকে আঞ্জি মনে পড়িয়া** গেল। যদি কূর কুতাস্ত আপনার বশে আনিয়া না থাকে, তাহাহইলে আমারও দেই বৎদ এতাবতী বয়োবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছেন। ঐ দময়ে রাজপত্নী বিলাপ করিতে লাগিলেন, হা বংদ! কোন্ পাপের অপধ্যানবশতঃ আমার ঈদৃশ অতীব ভয়য়য় মহৎ ছঃধ উপ-স্থিত হইল, যাহার অস্ত দেখিতেছি না ! হা নাথ ! হা রাজন্! আমি দাকণ চ্ঃথে পতিত হইরাছি। ভূমিও আমাকে আখাদ না দিয়া, কোন্ স্থানে অবস্থিতি করিতেছ! কিরপেই বা তথায় বিশ্বত চিত্তে আছে ! রে বিধে ! তুমি হরি শচক্রের কি না করিলে ৷ তাঁহার রাজ্য বিনষ্ট হইল, বন্ধু বারুবের সহিত বিপ্রয়োগ ঘটল, অবশেষে ভার্যা ও পুত্রও বিক্রীত হইল !

তাহাঁর এই কথা ভনিয়া, রাজা সন্থান হইতে তৎক্ষণাৎ চ্যুত হইলেন। তথন দ্বিতা ও মৃত পুত্র উভরকেই চিনিতে পারিয়া, ছঃথে অতিমাত্র সন্তপ্ত হইয়া, এই বলিয়া রোদন কবিতে লাগি নেন, হার কি কট্ট আমার সেই শৈব্যা এবং আমার সেই এই বালক ! বলিতে বলিতে তাঁহায় মৃত্রে ইইল। তথন শৈব্যা তদবন্ধ রাজাকে চিনিতে পারিয়া, সবিশেষ অভিভূতা ও মৃত্রিতা হইয়, ধরাতল আশ্রম করিলেন। তাঁহার স্পন্দনশক্তি রহিত হইল। অনন্তর রাজা ও রাজপদ্ধী উভয়েই সমকালে চেতনা লাভ করিয়া নিরতিশয় সন্তাপগ্রস্ত ও শোকভারে অবপীড়িত হইয়া, বিলাপ করিতে লাগিলেন।

রাঝা কহিলেন, হাবৎস ! তোমার সেই স্থলর লোচন, স্থলর জ্ঞা, স্থলর নাসিকা ও স্থ<sup>র্কা</sup> জলকারাজি বিরাজিত সর্কস্থলর মুথ একবারেই মানভাবাপর হইরাছে, দেখিরাও আমার হৃদ্য (<sup>ক</sup> বিদীব হইতেছে না ! হায় ! কে আর মধুর অবে, তাত ! তাত ! বিলিয়া অবং সমাগত হইবে ! আমিও সৌল্লগভরে গাঢ় করে আর কাহারে আলিজন করিয়া, বৎস ! বৎস ! বলিয়া সম্বোধন করিব ! হায় আর কাহার জাহপ্রেরিত পিল্ললবর্ণ কিতিরেণু বারা আমার উৎসঙ্গ, অঙ্গ, উত্তরীয় ন্ম্বাবই মলিন হইয়া উঠিবে ! হা বৎস ! ত্মি আমার অঙ্গপ্রতাল হইতে স্ভুত হইয়াহ এবং মনও হালয় উভয়েরই আনন্দ বিধান করিয়া পাক; কিন্তু আমি তোমার এমনি কুপিতা বে, তোমাকে সামাল্ল বস্তর ন্তায়, বিক্রয় করিলাম ! দৈবরূপ সর্প নির্দ্ধ হইয়া, ধন ও সাধন সহিত আমার স্থবিপুল রাজ্য নিংশেষে হরণ করিয়া, অবশেষে আমার প্রেরছকে দংশন করিল ! অধুনা আমি দৈবাহিদন্ত পুত্রের বদনপত্ম নিরীকণ করিষা, ভয়জর বিষে আনীকৃত হইলাম ! এই বলিয়া, বাপগদ্বদ হইয়া, পুত্রক বেমন আলিজন করিলেন, তৎক্ষণাং স্পান্ধীন ও মুর্ভিত হইয়া পড়িলেন।

जन्मर्गत ताजभूत्री कहिए जाशिएमन, हैनिहे एमहे विषक्षानत सनम्बस भूक्विमिश्ह हित्रमुख. স্বর দারা চিনিতে পারা যাইতেছে। ইহাঁরও এই নাসিকা সেইরূপ উন্নত ও অগ্রভাগে অধে'-মুখীন এবং দন্ত সকলও মুকুলবদৃশ। এই নরেখা অদ্য কিক্ষত শাশানে আদিলেন ? এই বলিয়া তিনি পুত্রশোক ত্যাগ করিয়া, ভূপতিত পতির প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন। তিনি যেমন পতিপুরশোকে নিতান্ত নিপীড়িতা, দীনভাবাপনা ও একান্ত কর্শিতা হইয়াছিলেন, দেইরূপ সমুদায় দেখিরা শুনিয়া, বিস্মারদের বশবর্জিনী হইলেন। স্থনস্তর তিনি দেখিতে দেখিতে সামীর সেই জু গুপিত দণ্ড দর্শন করিলেন। তৎক্ষণাৎ তাঁহার মোহ উপস্থিত হইল। ধীরে ধীরে চেতন লাভ করিয়া, গদ্পদ বাকের বলিতে লাগিলেন, রে দৈব ! তোমাকে ধিক ! তুমি অতি নির্দিয়, মধ্যাদাহীন ও জুগুপ্সিত। সেইজন্তই এই দেবসদৃশ রাজাকে চণ্ডাল্যোনিতে নিপাতিত ক্রিগাছ ! রাজ্যনাশ, সুহৃত্যাগ ও স্ত্রীপুত্রবিক্রর করাইরাও তুমি ইহাঁকে ছাড় নাই; অবশেষে চণ্ডাৰ করিবাছ ৷ হা রাজন্ ৷ আমি সম্তথা ২ইয়া ধরাতণ আশ্রম করিয়াছি ৷ কিজ্ঞ আমাকে উথা-পিতা করিয়া, পর্যাঙ্কে আরোহণ কর, বলিতেছ না! হায়! বিধাতার এ কি বিড়ম্বনা! আজি মার আপেনার দেই ছত্র, ভৃষ্কার, চামর ও বীজন কিছুই দেথিতেছি না! যিনি পুর্বের গমন ্বিলে; শত শত রাজ। ভৃত্যত্ব স্থাকার করিয়া, আপনাদের উত্তরীয় দারা অত্যে অত্যে পৃথিনীর ্লি অপসারিত করিয়া যাইতেন, তিনি মাজি জুঃখপীড়িত হইয়া, মৃতক্পালসংলগ্ন ঘটা ও ঘটসমূহে হানশৃত্যপ্রায়, এই অতীব অপবিত্র ও নিতান্ত দাকণ ভাবাপন্ন শাশানে বিচরণ করিতেছেন! া্ধ ও গোমায়ুগণের চীৎকারে কুজ বিহঙ্গন সকল এথান হইতে পলায়ন করিতেছে। মৃতগণের যাংসাদি আহার করিবা, নিশাচরগণ সানন্দে এখানে সঞ্জণ করিতেছে। রাশিরাশি ভক্ষ, মদার, অর্দ্ধন অস্থি ও মজ্জ। এই সকলের সংঘট বশতঃ ইহা সকলেরই ভরাবহ মূর্তি ধারণ করি-য়াছে। রাশি রাশি চিতাধুম উথিত হইয়া, সমুদায় দিগকার নীণীক্বত করিয়াছে। নৃপনন্দিনী শৈব্য। এই রলিয়াই স্বামীর কঠনমালেষপুরঃনর ক্রেশ ও শোকভারের মধ্যবর্তিনী হইয়া, স্বার্তবচনে বিলাপ করিতে লাগিলেন, রাজন্! ইংা অপ্ন অথবা স্ত্যু ঘটনা; শাহা আপনার মনে হয়, বলুন। মহাভাপ ! আনার মন মোহে একাত আছের হইয়া উঠিয়াছে। আবর ধর্মজ্ঞা ! যদি ইং। প্রকৃত ঘটনাই হয়, ভাগা হইলে, ধর্মে সহায়তা নাই এবং আহ্মণ ও দেবাদির পূজাতেও কোন ফণ নাই এবং পৃথিবী পালন করিবাও, কোনরূপ ইষ্টাপত্তির সম্ভাবনা নাই। ব্রিশাস, শংশারে আর ধর্ম নাই। ধর্ম যথন নাই, তথন সত্য, সরলতা ও অনৃশংসতাও কিরপে থাকিবে ? <sup>ব্</sup>ৰি বাকিত, তাহা হইলে, দেই ধৰ্মের নিতান্ত অনুগত বা একমাত্র **আঞ্চিত হই**রাও, ভোমাকৈ বৰীৰ রাজ্য হইতে জনরোপিত হইতে হইত না!

রাজ্ঞীর এই কৃপা শুনিয়া, রাজা উষ্ণ নিখাস ত্যাগ করিয়া, গদ্গদ বাব্যে, বেরপে চতাগত্ব প্রাপ্ত হইয়াছেন, তাঁহার নিক্ট তাহা বলিলেন। তিনিও হৃঃখিতা হইয়া, উষ্ণ নিখাস ত্যাগ ও বাদন করিয়া, স্বান্ধীয় পুরের মরণর ভাস্ত সাদ্যোপাস্ত কীর্ত্তন করিলেন।

বাজা শুনিয়া কহিলেন, প্রিয়ে। আর দীর্ঘকাল কেবল ক্লেশেরই উপাসনা করিতে ভাল লাগি: প্রচেনা। এদিকে আমার আত্মান্ত আয়ত্ত নহে। আমার এই হতভাগাতা প্রত্যক্ষ কর। চ গ্রালকর্ত্তক অনমুদ্ধীত হইরা, অগ্নিতে ধনি প্রবেশ করি, তাহা হইলে, পুনরায় পর জন্মে চণ্ডা-লেরই লাস হইতে হইবে। অনস্তর মৃত্যুর অবসানে কুল্রকীট ও ক্রমিভোলী হইরা, রাশি রাণি পুষ, বদা, শোণিত ও স্নায়ু পিচ্ছিল বৈভরণীনরকে পতিত হইব। পরে অদিপত্রবনে দারণ ছেদ প্রাপ্ত হইয়া, তথা হইতে বৌরব ও মহাবৌরব, এই ছই নরকে যথা ক্রমে গমন করিরা, সন্তাপ ভোগ করিব। ছঃখরূপ দাগরে মগ্র হট্যাছি; প্রাণপরিহারই ইহার সাক্ষাৎ পার প্রাপ্তি। এক-মাত বংশধর এই যে বালক ছিল, আমার দৈবরূপ অমুবেগ বলবান হইমা, ইহাকেও ম্যুক্তরিল। আমি পরের অধীন হ্টয়া, নিতান্ত কেশ ভোগ করিতেছি; কিরপে প্রাণ পরিহার করিব। অধবা, আর্তিক্লিষ্ট লোকে পাপ অবেক্ষা করে না। পুত্রের বিয়োগে থেকপ হঃখ, তির্যাগ্যোন তেও সেরুপ ছঃখ নাই; রৌরবনরকেও সেরুপ ক্লেশ হয় না; বৈতরণীতেও তাদৃশ ছঃথের সন্তা-বনা কোণায় ? অতএব অগ্নি প্রজ্ঞালিত হইলেই, আমি এই পুত্রদেহ সহিত তাহাতে পতিত হইব। অষি তমুঞ্জ। মৃদি কোন অপরাধ করিয়া থাকি, ক্ষমা করিবে। অষি শুচিস্মিতে ! আমি অনুজ্ঞা করিতেছি, তুমি বিপ্রভবনে গমন কর। আমি যাহা বলিতেছি, আদর সহকারে তাহা ख्यवं कत्र। यति आभि मान कतित्रा शांकि: अथवा यति हाम कतित्रा शांकि; किया यति खक्तिगरंक সম্ভুষ্ট করিয়া থাকি: তাহা হইলে, প্রলোকে পুনরায় পুল্রের ও তোমার সহিত সংমিলিত হইব। তোমার সহিত প্রত্রের অফুদ্রানে গমন করা যদিও আমার প্রেক প্রশস্ত কল ; কিন্তু ইহলোকে আমার এই অবভিপ্রেতিদিন্ধির সম্ভাবনা কোধায় ? অগি শুচিম্মিতে ৷ আমি হাস্ত বা রহস্ত করিতে করিতেও, যদি কিছু সশিষ্ট কথা বলিয়া থাকি, ক্ষমা করিবে; ইহাই আমার একমাত্র প্রার্থনা। তুমি আপনাকে রাজপত্নী ভাবিয়া, গর্কবশতঃ সেই ত্রাহ্মণকে অবজ্ঞা করিও না। শুভে। তমি তাঁহাকে সর্বপ্রেয় স্থামী ও দেবতার ভাষ, সম্ভই রাখিবে।

রাজপত্নী কহিলেন, আমিও আর হঃথভার বহন করিতে পারি না। অতএব আংনার সহিত অদাই প্রজবিত পাবকে প্রবেশ করিব।

পকিরা কহিল, তথন রাজা চিতা প্রস্তুত ও তাহাতে পুল্রকে আরোণিত করিয়া, ভার্যার সহিত বৃদ্ধাঞ্চলিপ্টে, যিনি প্রমাজা ও সকলের ঈশব; যিনি নারায়ণ ও হরি; যিনি সকলেব স্থংকাটরগুহাল্ল শরন করিয়া আছেন; যিনি স্বর্গণেরও ঈশব; যিনি অনাদিনিধন ব্রহ্মস্বরূপ; যিনি ক্রহণ ও প্রীতাশ্বর, সেই স্ত্সরূপ বাস্থানেবের চিন্তা করিতে লাগিলেন। তদর্শনে ইলালি যাবতীয় অসরবর্গ ধর্মাকে প্রোবর্তী করিয়া, সজ্বে তথার সমাগত হইলেন। সমাগত হইয়া, সকলেই বিলতে লাগিলেন, রাজন্। শ্রবণ কর, এই সাক্ষাৎ পিতামহ, এই স্বয়ং ভগবান্ধর্ম, এই সাধ্য ও বিশ্বদ্বর্গণ, মরুৎ ও লোকপালগণ; নাগ ও সিদ্ধাণ, গদ্ধর্ম ও ক্রত্মণ, অথিনীক্ষান মুগ্ল ও অভ্যান্ত আনকে দেবতা, সকলেই উপস্থিত হইয়াছেন। অধিক কি, এই বিশামির; বিশ্বর্ম বাহাকে প্রেমি করিতে পারে নাই; তিনিও তোমার সহিত মৈত্রীকরণে ও তোমার অনীষ্টপ্রণে উৎস্ক ইইয়াছেন।

অনস্তর ধর্ম, ইক্স ও বিখামিত্র তৎক্ষণাৎ তথার অবতরণ করিলেন। তন্মধ্য ধর্ম কহিলেন, রাজন্। তুংসাহসে প্রার্থত হইও না; আমি ধর্ম; তোমার স্কাশে সমাগত, হইরাছি। তুনি তিতিকা, দম ও স্ত্যাদি স্বকীয় গুণপ্রস্পরায় আমারে স্বিশেষ তুই ক্রিয়াছ।

ইক্স কহিলেন, অন্ধি মহাভাগ হরিশ্চক্র । আমি ইক্স, তোমার অন্তিকে আসিয়াছি। তুরি আপনার ভার্যা ও পুত্রের সহিত সনাতন লোক সক্স জয় করিয়াছ। অধুনা, জীও পু<sup>ত্রের</sup> সহিত অর্থে আরোহণ কর। সেই স্বর্গ অন্ত লোকের আতীব ছ্প্রাপ্য হইলেও, তুমি আতী<sup>র কর্ম</sup>ণরম্পরায় তাহা আরু করিয়াছ।

পশিরা কবিল, অনস্তর প্রাভূ ইক্স চিতাছানগত হুইয়া, আকাশ হুইতে অপমৃত্যুবিনাশন অনুত্রমর বর্ষ এবং তৎসহকারে পুস্বরৃষ্টি ও দেবতুল্ভিনিখন প্রণয়ন করিলেন। ঐ সমর্দ্ধে দেবগণে পরিপূর্ণ সভা সমস্ত বেথানে সেধানে বিরাজমান হুইল। তথন মহাত্মা হ্রিশ্চক্রের মৃত্ত পূর্বের ক্রার কলেবরে, অ্সুদেহে, প্রসম্মিতিও ও প্রসম ইক্রিয়ে তৎক্ষণাথ উথান করিলেন। রাজা হরিশ্চক্রও ভাগার সহিত ক্ষণমধ্যেই দিব্যবন্ত্র ও দিব্যমাল্য ধারণ করিয়া, দিব্যক্রি। রাজা হরিশ্চক্রও ভাগার সহিত ক্ষণমধ্যেই দিব্যবন্ত্র ও দিব্যমাল্য ধারণ করিয়া, দিব্যক্রিক হুইল, প্রকে আলিঙ্গনপূর্বাক হুই, সম্পূর্ণচিত্র ও অভিমাত্র আনোদম্বক হুইলে, ইক্র প্নরায় তাঁহারে কহিলেন, তুমি পত্নী ওপ্ত্রের সহিত পরম স্বণ্ডিলাভ করিবে। অধুনা, খ্রীর কর্মকল সহায়ে স্বর্গে স্মার্চ্ছও।

হরিশ্চন্ত কহিলেন, স্বীয় প্রভু চণ্ডাল আমাকে নিঙ্গতি ও অমুমতি না দিলে, আমি স্বর্গে যাইতে পারিব না।

ধর্ম কছিলেন, তোমার এই প্রকার ক্লেশ অবশু ঘটিবে, আত্মমায়াবলে অবগত হইয়া, আমিই নিজে চণ্ডাল হইরা, তাদৃশ চপলতা প্রদর্শন করিয়াছি।

ইন্দ্র কহিলেন, পৃথিবীর সমুদয় লোক যে স্থানের প্রার্থনা করে, তুমি সেই পুণানীল সাধুগণের স্থানে অধিরোহণ কর।

রাজা কহিলেন, দেবরাজ! আপনাকে নমস্কার। আপনি প্রেমার ইরাছেন। সেইজন্তই আমি প্রশ্ন প্রাপ্ত হইরা বলিতেছি, অম্প্রহপূর্বক শ্রবণ করন। কোশলানগরের অধিবাদীরা মণীয় শোকে মগ্রমানস হইয়া আছে। তাহাদিগকে ত্যাগ করিয়া, আজি আমি কির্মণে বাইব ? ব্রহ্মহত্যা, গুরুত্যাগ, গোবধ ও প্রীবধ করিলে, যে মহাপাপ সঞ্চিত হয়, ভক্ততাগেও সেই পাপ, কথিত হইয়াছে। ভলনশীল ও অর্ই ভক্তকে ত্যাগ করিতে নাই। ত্যাগ করিলে, ইছলোক বা. প্রলোক কুরাপি স্থ উপলব্ধ হয় না; স্ত্রাং আমি অর্গে গমন করিব না। স্ব্রেম্বর! যদি ভাহাদের সহিত অর্গে ধাইতে পারি, ভাহা ইইলেই যাইব। অধিক কি, তাহাদের সহিত আমি নরকেও গমন করিতে পারি।

ইল্র কহিলেন, তাহাদের বছতব পুথক্ পৃথক্ পাপ পুণ্য আছে; স্থতরাং ভাহাদের সহিত্য একত্রে তুমি কিন্নপে স্থৰ্গভোগ করিবে ?

রাজা কহিলেন, দেবরাঞ্চ রাজা কুটুদিগণের প্রভাবেই রাজ্যভোগ করিয়া, বিবিধ মহাযজ্ঞ দারা যজন ও পৌর্ত্তকার্য্যের অনুষ্ঠান করেন। আমিও তাহানের প্রভাবে তত্ত্ব কার্য্য সকল সপাদন করিয়াছি; স্কুতরাং তাহারা আমার উপকারী। তাহাদিগকে স্বর্গকামনায় ভ্যাগ করিতে পারিব না। অত এব দেবরাজ ! আমার যে কিছু স্কুতি বা পুণা আছে, অথবা আমি যে দান করিয়াছি, যজ্ঞ করিয়াছি ও জপ করিযাছি, তৎসমত্ত আমার সহিত তাহারা সমানে ভোগ করক। আমার যে কর্ম্মের ফল বত্তকালে ভোগ হইবে, আপনার প্রসাদে এক্দিনেই তাহাদের সহিত আমার তাহা ভোগ হউক। আমি জরূপ বহুকাল ভোগ করিতে চাই না।

পক্ষীরা কহিল, আছো, তাহাই হইবে, বলিয়া ত্রিভ্বনেশর ইন্দ্র, ধর্ম ও স্বয়ং বিশামিত প্রশন্ন বন্ধর স্বর্গলোক হইতে মহীতলে অবরোহণ করিলেন। তৎকণাৎ কোটি কোটি দিঠাবিমানে তাহা পূর্ব হইয়া গেল। অনন্তর তাঁহারা সকলে অযোধ্যার গমন করিয়া, তত্রতা অধিবাদীদিগকে কহিতে লাগিলেন, তোমরা সকলে স্বর্গে আরোহণ কর। অনন্তর মহাতপা বিশামিত ইন্দ্রের সেই কথা শ্রবণ করিয়া, রাজার প্রতি প্রীতিমান হইয়া, রোহিতাখকে আনয়নপূর্বক অযেধারার সিংহান্দন অধিরোহিত করিলেন। তথন অযোধ্যার লোক সকল দেবগণ, মুনিগণ ও সিদ্ধগণের সহিত একযোগে রোহিতাখকে রাজা করিয়া, হরিশ্চন্দ্রের সহিত মিলিত ও হাই প্রই স্কুজনে বেইডেইরা, ত্রী, পূত্র ও ভ্তাবর্গের সমভিব্যাবহারে স্বর্গে সমারা হইশ। তাহারা প্রভিপদেই তৎকালে বিমান হইতে বিমানান্তরে গ্যান করিতে আরম্ভ করিলে, হরিশ্চন্দ্রের হর্পের সীমা রহিল

না। অনন্তর নরপতি বিমানপরম্পারার সহায়তার অর্গে সমারত হইয়া, প্রাকারপরিবেটিত প্রাকারে অবস্থিতি করিলেন। দর্মণান্তার্থতত্বিৎ দৈত্যগুকু মহাভাগ শুকু তাঁহার তাদৃশী সমৃদ্ধি সন্দর্শন করিরা, তত্বপলক্ষে বক্ষ্যমান গাথা গান করিলেন, হরিশুক্রের সমান রাজা হর নাই, হই বেও না। যে ব্যক্তি ইহার চরিতকথা প্রবণ করে, সে নিতান্ত হংথার্ড হইলেও, অতীব ক্ষ্প্রাপ্ত হয়; এমনকি, অর্গার্থীর অর্গাভ হয়, প্রাথী প্রপ্রাপ্ত হয়, ভার্যার্থীর ভার্যালাভ হয়, রাজ্যার্থীর রাজ্যপ্রাপ্তি হয়। অহো! দানের কি মাহান্তা! তিতিক্ষার কি মহিমা! এই উভয়ের সহায়েই ছরিশ্চক্রের অর্গ ও ইক্রণদ প্রাপ্তি হইল!

পক্ষিরা কহিল, হরিশক্তের চরিতকথা আপনার নিকট আদ্যোপান্ত কীর্ত্তন করিলাম। অভঃ-পর রাজস্মমজ্ঞবিপাকবশতঃ পৃথিবীর ক্ষয় ও সেই বিপাক নিমিত্ত যে তুমুল আড়িবকমূছ হইয়া-ছিল, সেই কথা শেষ করুন।

ইতি হরিকজোপাখ্যান নাম অন্তম অধ্যায়।

## নবম অধ্যায়।

পশ্রির কিছল, রাজা হবিশ্চন্ত রাজ্যচাত ও স্বর্গে সমাগত হইলে, তদীয় পুরোছিত মহাতেজা বিশ্বামিত জলবাস হইতে বহির্গত হইলেন। তিনি দাদশবর্ষ ঐরপে গঙ্গাবাস করিয়াছিলেন। সর্বনাই জলের ভিতরেই থাকিভেন। জল হইতে বাহিরে আসিয়া বিশ্বামিত্রের আচরিত ও উদায়কর্মা রাজা হরিশ্চন্তের বিনাশঘটনা এবং তৎসহকারে তাঁহার চাণ্ডালসংক্রমন ও ভার্যাত্তনারবিক্রম সমস্তই শুনিলেন। শুনিয়া, তিনি রাজার প্রতি যেরপ প্রীতিমান হইলেন, বিশানিত্রের উপরি সেইরপ জাতক্রোধ হইয়া বলিতে লাগিলেন, সেই বিশ্বামিত্র আমার শতপুত্রের প্রাণ সংহরণ করিয়াছে। তাহাতেও তাহার উপর আমার তাদৃশ ক্রোধ উছ্ত হয় নাই, অদা রাজাকে স্বরাজ্য হইতে অবরোশিত করিতে শুনিয়া যাদৃশ ক্রোধের সঞ্চার হইতেছে। দেখ, এই রাজা মহায়া, মহাভাগ এবং দেব ও বিজগণের পূজক, সত্যবাদী, শাস্তম্বভাব, শক্রর প্রতিও মৎস্ববিহীন, সর্বাধা নিম্পাণ, ধর্ম্মাত্রপরায়ণ, অপ্রমন্ত ও আমারই আগ্রিত। ঘেহেতু, সেই বিশ্বামিত্র স্বিশ্বাস্ত প্রাণ্ড হিলে বিশ্বাস্ত প্রাণ্ড হিলে বিশ্বাস্ত এবং অস্তান্ত বহুপ্রকারে নিযন্ত্রিত করিয়াছে, দেইহেতু সেই ব্রহ্মাণ্ড প্রান্ত্রা ও প্রাক্রাত্ত ও বক্ষেদিয় নিপাতিত ও রাজ্য হইতে পরিত্রাত্ত এবং অস্তান্ত বহুপ্রকারে নিষ্ট্রিত করিয়াছে, দেইহেতু সেই ব্রহ্মাণ্ড প্রান্ত্রাণ প্রাক্রাত্ত প্রান্ত্রা করেছে। বিশ্বামিত্র আমার শাণে কল্বীক্রত ও বক্ষেনি প্রাপ্ত হইবে।

পদিরা কহিল, এই শাপ শ্রবণ করিয়া, মহাতেল। বিধামিত্রও প্রতিশাপ প্রদান করিয়া কহিলেন, তুমিও আড়ে হইয়া জানিবে। তাঁহারা অন্যতেজসম্পন হইলেও, পরম্পরের শাগে তির্যাগ্রোনিতে পতিত হইলেন। উভয়েই পরমতেজীয়ান্। যোল্লয়ন লাভ করিলেও, তাঁহা দের সেই তেজের বৃদ্ধি ভিন্ন কয় হইল না। উভয়েই মহাবল-পরাক্রম হইয়া, অতীব রোবসহ কারে তুমুল য়ুদ্ধে প্রেস্থ হইলেন। আড়ি পরিমাণে ছই সহস্র যোজন এবং বক ষয়বতাধিক তিন সহস্র যোজন সমুদ্ধিত। উভয়েই শুরুতরবিক্রমপ্রকাশপুরংসর পক্ষপ্রহার সহায়ে পরম্পারবে আহত করিয়া, প্রজাবর্ণ মৃথিতি লোচনে আড়িকে আঘাত করিলেন। আড়িও গ্রীবা উনমিত করিয়া, পদ্ধি সহারে বক্তে প্রতিঘাত করিছেল। তাহাদের পজ্পবনে প্রজিগ ইয়া, পর্মার সহারে বক্তে প্রতিঘাত করিতে আরম্ভ করিলেন। তাহাদের পক্ষপবনে প্রক্রিয়া, পর্মার সহায়ে বক্তে প্রতিঘাত করিতে আরম্ভ করিলেন। তাহাদের পক্ষপবনে প্রক্রিয়া, বস্ক্রেরা কম্পিতা হইয়া প্রিবীন তাহার কম্পবশতঃ জ্লাধি সক্ষের জলবাশি উদ্ধান হইয়া, বস্ক্রেরা কম্পিতা হইয়া

পাতালগমনোলুখী হইরা, একপার্খে নত হইরা পড়িলেন। ঐ সময়ে কেছ গিরিনিপাতে, কেহ সাগ্রস্লিলে, কেহ বা মহীসঞ্লনে প্রাণ্ড্যাগ ক্রিল।

ু এই রূপে সমন্ত ধ্বপং অভিমাত্ত অন্ত, হাহাকারে পূর্ব, অচেতদ ও নির্ভি সম্ভ্রমপ্রস্ত এবং সমুদার মেদিনীমগুল পর্যান্ত ইইরা উঠিলে এবং লোক সকল আকুলীকৃত ও সন্তাসবিমূপ ইইরা, হা বংল! হা কান্ত! হা শিশো! প্রস্থান কর, আগমন কর, এই আমি এথানে রহিরাছি; হা প্রিয়ে! হা কান্ত! ঐ পর্যান্ত পতিত ইইতেছে, শীল্প পলায়ন কর, ইত্যাকার বাক্য প্রয়োগে প্রবৃত্ত ইইলে, পিতামহ যাবতীয় বৃন্দারকর্নে পরিবৃত হইরা, তথার আগমনপূর্বক অভিমাত্ত রোহ-প্রারণ তাঁহাদের উভয়কেই কহিলেন, তোমরা যুদ্ধ হইতে ক্ষান্ত হও, লোক সকল সুস্থ হউক।

তাঁহারা উভরে অব্যক্তবানি পিতামহের বাক্য শ্রবণ করিয়াও, রোষামর্থে স্মানিই হুইয়া, যুদ্ধ করিতে লাগিলেন; নিবৃত্ত হুইলেন না। তথন পিতামহ লোক সকলের ক্ষমদা। দর্শন করিয়া, তাঁহাদের উভরের হিতাবেষণতৎপর হুইয়া, তির্যাগ্ভাব অপাক্ষত করিলেন। অনস্তর উভরে পূর্বে স্বরূপ প্রাপ্ত হুইলে, তাঁহাদিগকে কহিলেন, বংদ বিশিষ্ট। তুমি যুদ্ধ ত্যাগ কর; বংদ বিশামিত। তুমিও যুদ্ধ করিও না। তাম্সভাবের স্মাবেশ হওরাতেই, তোমরা এইরূপ যুদ্ধ করিতে ক্রতসংক্ল হুইয়াছিলে।

রাজা হরিশ্চন্তের এই রাজস্মযজ্ঞবিপাক এবং তোমাদের উভয়ের যুদ্ধ পৃথিবীর ক্ষমদশা উপস্থিত করিয়াছে। দেখ, এই কৌশিকশ্রেষ্ঠ, রাজা হরিশ্চন্তের কেবল অপকারই করেন নাই। ববং উপকারপদেই প্রতিষ্ঠিত হইয়া, তাঁহার স্বর্গপ্রাপ্তি সমাহিত করিয়াছেন। তোমরা তপস্থার মূর্ত্তিমান্ বিদ্ধ কামকোধের বশীভূত হইয়াছ। এক্ষণে উহা ত্যাগ কর। তোমাদের কল্যাণ হউক। ব্রহ্মই প্রত্যুব বল।

পিতামহ এই প্রকার কহিলে, উভয়েই লজ্জিত হইয়া, প্রীতিভরে পরস্পর আালিঙ্গন করিয়া, ক্ষা করিলেন। অনস্তর পিতামহ দেবগণ কর্ত্ক বন্দিত হইয়া, স্বকীয় লোকে গমন করিলে, বিশিষ্টও আত্মস্থানে প্রস্থান এবং কৌশিকও স্বীয় আশ্রমপদে গমন করিলেন।

যে সকল মহুষ্য এই আড়িবক্যুদ্ধ ও এই হরিশ্চন্দ্রের উপাধ্যান সম্যক্ বিধানে কীর্ন্তন ও শ্রবণ ক্রিবে,শ্রুতসাত্তই তাহাদের পাপাপনোদন হইবে এবং ক্সিন কালে কোনকুপ বিম্নকাৰ্য্যও ঘটিবে না।

ইতি আড়িবকযুদ্ধ নাম নবম অধ্যায়।

#### দশম অধায়।

জৈমিনি কহিলেন, অমি বিজ্ঞেষ্ঠগণ। আমি জিজ্ঞানা করিতেছি, আমার সংশ্র নিরাকরণ করন, কিরপে জন্তুর আবিজ্ঞান ও তিরোভাব হইয়া থাকে ? কিরপে সে জন্মগ্রহণ ও বৃদ্ধিনাত করে ? কিরপে রা উদরমধান্ত ও অঙ্গনিশী ডিত হইয়া, অবস্থিতি করে ? উদর হইতে নিজ্ঞান্ত ইয়াই বা কিরপে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হর ? মৃত্যুসময়েই বা কিরপে তাহার চেতনার পরিহার হইরা খাকে ? দকল জন্তুই মৃত্যুর পর পাপপুণাফল ভোগ করে। কিরপেই বা তাহাদের তত্তৎ ফল-ভাগ সম্পান হইয়া থাকে ? দেখ, যে স্ত্রীকোঠে অতিমাত্র গুক্তর্য সমস্তত ভ্রুমাত্র জীর্ণ হর, সেই ভিশিরে পিঞ্জীক্তের তার অব্স্থিতি করিয়াই বা কিরপে সে জীর্ণ হর না ? রাশি রাশি ভক্ষ্যও ই বীর কোঠে জীর্ণ হয়। সে নিতান্ত ক্রভাবাপর হইলেও, কিজ্লাই বা জীর্ণ হয় না ? আপনারা মানকে এই সকল বলুন। এরপ ভাবে বলিবেন, যেন আর কোনরপ সন্দেহবাদ না থাকে ? ব্রুমাতেই এই পরম গুল্ল বিষয়ে মোহিত হয়।

পিকিরা কহিলেন, আপনি জন্মত্যুষ্টিত এই যে প্রশ্নতার নিবেশিত করিলেন, ইহার খেমন তুসনাই হর না, সেইকাপ ইহা সহজে নির্ণয় করাও ছুর্ঘটি। পূর্কে স্থাতিনামে প্রম ধর্মাত্মা পূঞ্জি পিতার নিকট বাহা বলিলাছিলেন, তাহা প্রবণ করুন। ভৃগুবংশীর কোন মহামতি ত্রাক্ষণ আপনার ক্রতোপনরন, শাস্তবভাব, পরমবৃদ্ধিমান, জড়রূপী পূত্রকে সংহাধন করিয়া কহিলেন, অন্ধি স্থাতে। তুমি আদি হইতে ষ্থাম্থক্তমে যাবতীয় বেদ অধায়ন কর এবং গুরুগুঞ্জাবার বার্ত্তা হইরা, ভিক্ষালন্ধ মারে উদর পূরণ ও পরে গার্হত্য আশ্রম অবলম্বন, উৎকৃষ্ট যক্ত সকলের সম্পাদন এবং অভীষ্ট পুত্র সমুৎপাদন পূর্কাক অরণ্যবাসী হও। অনন্তর বৎস। বনবাসী হইয়া, পরিব্রাক্ষকৃত্তি অবলম্বন ও পরিগ্রহত্যাগ করিলে, পরবন্ধ প্রাপ্ত হইবে; ফাহাকে লাভ করিলে, আর তোমাকে ক্রিতে ছইবেন।।

পক্ষিরা কহিলেন, পিতা বারম্বার এইপ্রকার কহিলে, পুত্র জড়ত্বশত: হাঁ, কি, না, কিছুই বলিলেন না। পিতাও কিন্তু নিবৃত্ত না হইয়া, পুনঃ পুনঃ অনেক বার ঐপ্রকার কহিতে লাগি-লেন। পিতা পুত্রপ্রীতির পরতন্ত্রতাপ্রযুক্ত মধুরাক্ষরদশের পরমমনো**হারী বাক্যে এ**রণে বারম্বার প্রাণোদিত করিলে, পুত্র উচ্চয়রে হাত করিয়া, উত্তর করিলেন, তাত ! আপনি অদ্য যাহা উপদেশ করিতেছেন, তাহা অনেকবার অভ্যাস করা গিয়াছে। এত ভিন্ন, অভাত বছবিং শাস্ত্র ও নানাপ্রকার শিল্পও অনেক বার শিক্ষা করিণাছি। আমি যে ইতিপুর্বের অযুত অযুত বার জ্বারাছি, তাহাও অদ্য মনে পড়িয়া গেল। তত্তৎ অন্যে ক্ষয় ও বৃদ্ধি বশতঃ কড্ই নির্বেদ ও কতই পরিতোষ ভোগ করিয়াছি: শক্র. মিত্র ও কলত্ত্বের কতই বিয়োগ ও কতই সঙ্গম অফুভব করিয়াভি: কত মাতা ও কত পিতাই দর্শন করিয়াছি; কত সুথ ও কত হু:খই বা অনুভব করিয়াছি! কতই বান্ধব ও কতই বা পিতা প্রাপ্ত হইয়াছি। কতবারই কত স্ত্রীর বিষ্ঠা মূত্রে পিচিত্রভাবাপন গর্ভাশয়ে বাদ করিয়াছি; কতবার কত রোগই ভোগ ও কত পীড়াই স্থু করিয়াছি; কতবারই গর্ভযন্ত্রণা ভোগ এবং বাল্যে, যৌবনে ও বার্দ্ধক্যেই বা কতবার কত ক্লেশ সহা করিয়াছি। একে একে তৎসমস্তই মনে পড়িতেছে। আমার এই এক জন্ম নহে, শত শত বার ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শৃত্রবোনিতে জন্মগ্রহণ করিয়াছি; পশু, পক্ষী, কীট ও মৃগ বোনিতে উত্ত হইয়াছি; সহত্র সহত্র বার আহবশালী রাজা, আবার তাহাদের ভৃত্য হইয়া জনিষাছি। আবার, কত শত বার আপনার এই গৃহে আমার এইরপে জন্ম হইরা গিয়াছে কত সহস্রবার কত লোকের ভৃত্য হইয়াছি, দাস হইয়াছি, স্বামী হইয়াছি ও দওমুণ্ডের কর্ত হইয়াছি। আবার, কত শত বার দরিদ্র হইতে হইয়াছে। কত শত বার হত্যা করিয়াছি, আবার স্বয়ং হত হইয়াছি এবং স্বস্ত দারা স্বস্তুকে নিপাতিত করিয়াছি। আবার কত শত বার *লোক* দিগকে দান করিয়াছি এবং তাহাদের দান লইয়াছি। আবার, কত শত বার পিতা, মাতা, স্বহৎ ভাতা ও কলতাদিজনিত সন্তোষ ভোগ করিয়াছি, আবার, অসন্তোষও ভোগ করিয়া. অঞ সলিলে আমার বদনমণ্ডল প্রকালিত হইয়া গিয়াছে।

তাত। এই রূপে এই সাকাৎ সফটবরূপ, সংসারচক্রে অমণ ক্রিতে করিতে আমার সিল্শ মুক্তিজনক জ্ঞানগান্ত হইয়াছে। ইহা লাভ হওয়াতে, ঋক্, যজুও সামনামক ক্রিরাক্রাণ সর্বাধা বিফল ও অসমস্ক্ বলিয়া, আমার প্রতীত হইতেছে। আমার যথন জ্ঞান উৎপন্ন হইয়াছে তৎসহকারে বিশ্বগুরু প্রমাআকে অবগত হইয়া, যখন কামনাশান্তিরূপ তৃপ্তিরও সঞ্চার হই যাছে এবং মারা মোহ তিরোহিত হওয়াতে, যখন আআ সর্বতোভাবে শুদ্ধিলাভ করিয়াছেন ও তৎপ্রভাবে যখন আর কোন বিষয়ে কোনরূপ চেটা নাই, তখন বেদে প্রয়োজন কি ? যট্প্রাক্তিরা, তৃংখ, অ্ব, হর্ব, রস্ ও গুণপরক্ষরা এই সকলের যাহাতে সম্পর্ক নাই, আমি এখন সেই এই রপ পরম্পন্ন প্রাথহ ইব। আমি বিশেষরূপে জানিয়াছি, এই সংসার তৃংখের পরস্পায়াত এই হর্ব, রস্, ভয়, উব্বেগ, অমর্য ও জার। ইত্যাদি দোষে আত্রভাবাপন্ন। যাহাতে আজ্বারূপ মূর্গ ব্র

ছইরা থাকে, তাদৃশ আসজিরণ শত শত পাশে ইহা পরিব্যাপ্ত। এই কারণে আমি ইং। ত্যাগ করিরা, পরত্রকোর আশ্রের গ্রহণ করিব। বৈদিক ধর্ম অধর্মে পরিপূর্ণ এবং অতীবভূপ্তিক্তি পাণক্স সরিভ; সঙ্গে সঙ্গে উহাও ত্যাগ করিব।

পদ্দিরা কহিলেন পিতা পুজের এইপ্রকার কথা কর্ণগোচর করিয়া, হর্ষ ও বিশ্বরে গলাল হইরা, প্রবৃষ্ট চিন্তে বলিতে লাগিলেন, বৎস! তুমি এ কি বলিতেছ? কোথা হইতে তোমার জ্ঞান জামান? পূর্বে তুমি কেনই বা জড় ছিলে? এখনই বা কিরপে প্রবেধ লাভ করিলে? তোমার কি কোন মুনির বা দেবতার লাপে এইপ্রকার বিক্তনশার সঞ্চার হইরাছিল? কেন না, এত দিন তোমার জ্ঞান প্রচহ্ম ছিল; সম্প্রতি প্রকটভাব প্রাপ্ত ইইল। পূল্ল কহিলেন, তাত! আমি অভ জন্মে যে ছিলাম এবং ইহার পর আবার যাহা হইব, সেই মুখ্রঃখজনক বৃত্তান্ত যথাবৃত্ত প্রবেশ করুন। আমি পূর্বজন্মে রাজন ছিলাম। পরমাত্মাতেই জ্ঞামার আয়া সমিরিইছিল। আমার জাম্মবিলাবিচারে পরম নিষ্ঠা সমূৎপদ্ম হয়। সত্রত অভ্যাসসঙ্গম, সৎসঙ্গ, বিচারবিধির লোধন ও সম্বভাব এই সকল উপারে সত্রত যোগ্যুক্ত থাকিয়া, পরমাত্মাতে মন সমিবিই ক্রাতে, তাহাতেই জ্ঞামার পরম প্রীতির সঞ্চার হইরাছিল। ঐ সময়ে জ্ঞামি আচার্য্যতা প্রাপ্ত হই। শিব্যগণের সন্দেহনিরাকরণবিষ্বের জ্ঞামার সর্বাপেকা প্রাধাত্ম জনিয়াছিল।

অনস্তর দীর্ঘকালাবসানে, আমি ঐকাত্তিক হইরা উঠিলে, আমার গুণে দোষের উৎপত্তি হইল। তরিবন্ধন, অজ্ঞানের আবির্ভাবে আমার সংপ্রবৃত্তি সমুদার বিগণিত ও প্রমাদবশতঃ অপমৃত্যু উপস্থিত হইল। প্রথম অবস্থাব ব্রক্ষজানের আলোচনা করাতে, মৃত্যুকাল হইতেই আমি জাতিত্মর হইলাম। সেইজন্ত এ পর্যান্ত বার্ম্বার কন্মগ্রহণ করিরা, যত বংশর অভীত হইরাছে, সমস্ত মনে পড়িতেছে। অধিক কি, পূর্ব্বাভ্যাসবশেই আমি এইরপ জিতেজিয় হইয়াছি। প্ররায় আর যাহাতে জন্মিতে না হয়, এইরপ যত্র করিব। আমি যে জাতিত্মর হইয়াছি, তাহা জানদানের সাক্ষাহ কলা তাত! বৈদিক ধর্মের আশ্রম করিলে, কথনই এইরপ জাতিত্মর হওয়া যাইতে পারে না। আমি সেই পূর্বাশ্রমবশতই ঈদ্শ নির্চাধর্ম লাভ করিয়াছি। অধুনা, এই অবস্থায় ঐকান্তিকতা সহকারে আত্মার উদ্ধারদাধনে যত্ন করিব। অতএব মহাভাগ! আগেনি বলুন, আপনার হৃদ্যে যে সন্দেহবিষয় উপস্থিত হইয়াছে। আমি আপনার সন্দেহ নিরাকরণ করিয়া, প্রীতি উৎপাদনপুর্বক আপনার ঋণ শোধ করিব।

প্রক্রির। কহিলেন, পিতা তথন তদীয় বাক্যে বিশ্বাদ করিয়া, আপনি আমাদিগকে সংসার-গ্রহণগংক্রাস্ত যে বিষয় জিজ্ঞাসা করিয়াছেন, তাঁহাকৈ তাহাই বলিলেন।

পুত্র উত্তর করিলেন, তাত ! আমি বারবার যাহা অনুভব করিয়াছি, যথায়প বলিতেছি, শ্রবণ ককন। এই সংগারচক্র জীর্ণ হয় না। ইহার স্থিতিও নাই। পিতঃ ! আমি আপনার অন্ধ্যাক্রমে স্নায় সবিশেষ কহিতেছি। কেন না, মৃত্যুকাণ হইতে আর কেহই বলিতে পারে না। বলবান বায়ুবলে উন্না সঞ্জারিত ও বিনা ইন্ধনেই শরীরে প্রদীপিত ও প্রকুপিত হইয়া, মর্ম্বান কল ভেদ করে। তথন উদান নামক পবন উর্দ্ধে প্রবিভিত হয়। তাহাতে ভুক্ত জলীয় ভক্ষ্য সকলের মধোগতিরোধ হইয়া যায়। যাহারা জলদান, অন্নান ও রসদান করিয়াছে, তাহারা সেই মৃত্যুক্ষরে আহলাদ অনুভব করিয়া থাকে। যে ব্যক্তি শ্রাপ্ত চিত্তে অনুদান করে, সে তৎকালে আন্নানিও তৃথি অনুভব করিয়া থাকে।

বে ব্যক্তি মিথ্যাবাকা প্রয়োগ বা কাহারও প্রাতিভেদ করে নাই এবং বে ব্যক্তি আতিক ও ন্দাবান, সে স্থমৃত্য প্রাপ্ত হয়।

যাহারা দেববিজপুজার একান্ত সংসক্ত ও অসমারহিত এবং বাহারা ওছবদর, বদান্ত ও এমান, ভাহারাও স্থম্ত্যুপ্রাপ্ত হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি কামবশতঃ, ক্রোধবশতঃ, অধবা বেষবশতঃ ধর্ম পরিত্যাগ করে না, বে ব্যক্তি যথোক্তকারী ও সৌম্যপ্রকৃতি, তাহারও স্থম্ত্যু লাভ হয়।

জনদান না করিলে, তৎকালে দগ্ধ হইতে হয় ও অন্নদান না করিলে, কুধা আক্রমণ করে। ইন্ধনদাতারা শীতদ্বী হইরা থাকে, চন্দনদায়ীরা তাপ হয়ে ক্তরে এবং কাহারও উবেগ সম্ৎপাদন না করিলে, প্রাণান্তিক কট্ট বেদনা সহু করিতে হয় না।

যাহারা লোকের মোহ ও অজ্ঞান সমুদ্রাবন করে, তাহারা মহৎ ভর প্রাপ্ত হর এবং দেই সকল নরাধম অভ্যুগ্র বেদনার নিয়ন্ত্রিত হইরা থাকে। কুট সাক্ষ্য প্রদান, মিথাা কথা প্ররোগ, অসৎ অফুশাসন ও বেদের নিলা করিলে, মোহমূত্যু লাভ ইয়। তৎকালে অতীবভীবন, পুতিগদ্ধবিনিই, ত্রীত্মী মনপুক্ষরণ কৃটমূলার হস্তে সমাগত হইরা থাকে। তাহারা দৃষ্টিপথে পতিত হইবামান তাহার কম্প উপস্থিত হয়। তথন সে লাভা, মাতা ও পুল্ল প্রভৃতিকে উদ্দেশ করিয়া, অবিরত ক্রন্দন করে। তাত ! তৎকালে তাহার বাক্য একমান বর্ণবিশিপ্ত ও তারিবন্ধন অফুট্ হইরা যায়। তাহার দৃষ্টিও ভয়বশতঃ ঘূর্ণিত এবং বদনমগুণও উচ্ছাস্বশতঃ শুদ্ধ ভাবে পরিণত হয়। অনস্তর তাহার উর্দ্ধাস উপস্থিত হয়; দৃষ্টি ভাঙ্গিয়া পড়ে এবং তীত্র বেদনার সঞ্চার হয়। তদবস্থায় তাহার কলেব্রপরিহার হইয়া থাকে। দেহাত্তে আবার বায়ুর অগ্রসারী হইয়া, তত্ত্বপ অন্ত দেহ পরিগ্রহ করে। ঐ দেহ কর্মজনিত; কেবল যাতনা ভোগ করিবার জন্তই সমুভূত, পিতা মাতা হইতে উদ্ভূত নহে।

অনস্তর যমের দৃত বালি তাহাকে দারণ পাশে বন্ধ ও দণ্ডপ্রহারে সবিশেষ উদ্ধান্ত করিরা, দক্ষিণদিকে আকর্ষণ করে। যে পথ দিয়া লইয়া যায়, তাহা কুশ, কণ্টক, বল্মীক, শঙ্কু ও পাষাণ সংসর্গে কর্কশভাবাপন্ন। উহাতে নিরন্তর অগ্নি জনিতেছে। কোষাও শত শত গভীর গর্চ রহিয়াছে। আদিত্য প্রদীপ্ত হইয়া, সতত উহাতে তাপদান করিতেছেন। তাঁহার প্রথব কিরণে উহা দহামান হইতেছে। যমন্ত অমসল ধ্বনি করত ভয়াবহ মৃর্ত্তি পরিগ্রহ করিয়া, তাহাকে আকর্ষণ করিয়া থাকে। তদবস্থায় শত শত শিবা তাহাকে আকর্ষণ ও বিকর্ষণপূর্বক ভঙ্কণ করে। পাপকর্ম করিলে, ঈদুশ দারুল পথে যমলোকে গমন করিতে হয়।

যাহারা ছত্র ও উপান্ত প্রদান, বস্ত্রদান ও অন প্রদান করে, তাহারা স্থ্যার্গে গ্র্মন করিল।

এইরপে পাপণীড়িত ও তরিবন্ধন দারণ ক্রেশ অন্থব করত অবশ হইরা ঘাদশদিনে যমরাজ-ভবনে উপস্থিত হইরা থাকে। কলেবর দহানান হওয়াতে, মহাদাহ যেমন ভোগ করিতে হয়, যমদ্তেরা তাড়ন ও ছেদন করাতে দেইরপ দারণ বেদনা অমূভ্ত হইয়া থাকে। আবার, রিদ্যমান হওয়াতে, চিরতর হঃথ ভোগ করিতে হয়। স্বকীয় কর্মবিপাক বশে দেহাস্তর গমন করিলেও, ঐরেপ যন্ত্রণা সকল অমূভ্ত হইয়া থাকে।

তন্মধ্যে, যাহার বান্ধবর্গ তিস সহিত জলদান করে, অথবা যে পিওদান করিমা থাকে, তাহাই তদবস্থার ভোগ করিতে পারা যায়। আবার, বান্ধবেরা অশৌচান্তে যে তৈলাভ্যম, অক্সংবাহন ও একত্রে ভোজন করে, তাহাতেই সে আপ্যায়িত হইয়া থাকে। বান্ধবেরা অশৌচসময়ে ভূমিতে শয়ন করিলেও, তাহার আত্যন্তিক ক্রেশ উপস্থিত হয় না। বান্ধবেরা দান করিলেও, মুক্তব্যক্তি আপ্যায়িত হইয়া থাকে।

মৃতব্যক্তি বমদুত কর্ত্ক নীরমান হইয়া, আপনার সেই যাতনাগৃহ বাদশাহে দর্শন ও তথার বাদ্ধবগণের প্রদন্ত কর্ত্ক নীরমান হইয়া, আপনার সেই যাতনাগৃহ বাদশাহে দর্শন ও তথার বাদ্ধবগণের প্রদন্ত জাল ও পিণ্ডাদ্রি ভক্ষণ করে। বাদশদিনপর্য্যবদানে সে ক্রয়মাণ হইরা, যথের সেই ভরম্বর ভীষণাকৃতি লোহময় পুর অবলোকন করিয়া থাকে। তথায় গতমাত্র মৃত্যু ও কালার কাদির মধ্যগত, অতীব-লোহত-লোচন-সম্পন্ন ও ভিনাঞ্জন-চয়-সন্নিম্ভ যমকে দেখিতে পার। তাহার বদন দংখ্রাক্রাল, আক্রতি ক্রক্তিসংসর্গে দাকণভাবাপয় এবং বিদ্ধপ, ভীষণ ও বক্ষভাব শত বাধি তাহার চারিদিক বেইন করিয়া আছে। তাহার হত্তে পাশ ও দৃত্য, বাহ্যুগন বিশাল, দৃশ্য অতি ভীষণ।

অনন্তর মৃত বাজি তাঁহারই নির্দিষ্ট গুড়াওছ গতি লাভ করে। কৃট সাক্ষা প্রানা ও মিণা বাক্য প্ররোগ করিলে, রৌরবের গমন করিতে হয়। রৌরবের গরুপ বলিতেছি, প্রবণ করুল। রৌরবির প্রমাণ হই বাজন। তাহাতে জাছুমাত্র-প্রমাণ হত্তর গর্জ আছে। সেই প্রতক্ত আলারাণিতে পূর্ব করিলা, ধরণীর সহিত সমান করা হইরাছে। সেই তীত্র তাপিত অক্সারভূমি লারা জাজল্যমান হইতে হয়। মনকিকরেরা পাপীকে তল্মধ্যে ছাড়িলা দেয়। সে সেই তীত্র আনলে দহুমান হইরা, তথার ধাবমান হয়। পদে পদেই তাহার পাদহর শীর্ণ ও পুনরার জীর্ণ হইরা বাহে। একবার পাদ বিক্রেপ করিরা, তাহা উত্তোলন করিতে এক অহোরাত্র অতীত হইরা বার। এই-রূপে সহত্র বোজন উত্তীর্ণ ইইলে, বিমুক্ত হইয়া, তথা হইতে পাপগুজির জল্প তাদৃশ অন্তবিধ নরকে গরুন করিতে হয়। অনন্তর সকল নরক ভোগ হইলে, পাপী তির্ঘাপ্রোনিতে গমন করে। তল্বব্যার কৃমি, কীট, পতঙ্গ, খাপদ, মশকাদি, গজ ও ক্রমাদি, গো, অখ এবং অলাল হুংধজনক পাপরোনিতে সমুহ্পর হইয়া থাকে। মহুবাবোনি প্রাপ্ত হইয়া, কৃজ, কুৎসিত ও বামন এবং চ্যাল ও পুরুনাদিবোনিতে জন্মগ্রহণ করে। পাপ বা পুণোর অবশেষ থাকিলে, তংগ্রভাবে হথাক্রমে শ্রু, বৈশ্ব ও ক্রমিণি উচ্চ জাতি লাভ করিয়া থাকে এবং বাজন ও দেবতা ইইয়াও জ্বো। আবার, কথন বা নীচ জাতিতে সমুদ্ধত হয়। এইরপে পাপক্ষিরা নরকে পমন ও অধংপিতিত অবহা অনুভ্ব করে।

অধুনা, পূণাম্ঠান করিলে, বেরূপে যনলোকে গমন করিল থাকে, বলিতেছি, প্রবণ ককন।
পূণাঝারা ধর্মরাজের বিনির্দিষ্ট ওডগতি লাভ করে। তাহাদের মঞে গর্ম্বরণ গান ও অপরোগণ নৃত্য করিয়া থাকে। তাহারা তদবস্থার বিবিধ দিবা মাল্যে সম্জ্রণ কইয়া, হার ও নৃপ্র
মাধ্র্যা স্থাভিত অক্তম বিমানসমূহে আরোহণপূর্বক গমন করে। সেই বিমান হইতে প্রচ্ছত ইইয়া, নরপতিগণের ও অঞ্জি মহাপুক্ষসমূহের বংশে জন্মগ্রহণপূর্বক সতত সদ্বৃতিসেবায় বাপন
করিয়া থাকে। অনস্তর বিবিধ উৎকৃষ্ট ভোগ সকল সভোগ করিয়া, পূণ্যের বোপ থাকিলে, তাহা
অপেক্ষাও আৰোর উর্জে গ্রমন, নতুবা, পূর্বোক্ত বিধানে নীচদশার আরোহণ করে।

এই আহি আপনার নিকট প্রাণিগণের মৃত্যুবটিত বাবতীয় বৃত্তাস্ত কীর্ত্তন করিবাম। অধুনা, গাহার গাহালাভক্থা প্রবণ করন।

ইতি জীববিপত্তিবর্ণন নাম দশম অধ্যার।

#### একাদশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, মহুষা জীর রজে যে বীজ নিকিপ্ত করে, সুর্গ বা নরক হইতে বিমুক্তমান্ত্র । বির তাহাতে প্রবেশ ইয়া থাকে। পিতঃ। জীবের অহুপ্রশেষকতঃ নি রীজ্বর ছির্ভার রাত্ত হইলা, ধ্রক্তিমে বিশু, বৃধু দ ও পেষির আকার ধারণ করে। পেষিতে বে আব্বীজের থাবিচার হয়, তাহাকেই অমুর বিলয়া থাকে। কেন না, এই অব্বীজ হইতেই পঞ্চ আক্রর থাকিটার হয়। পরে তাহা হইতে আব্রী, নেত্র, নানা, প্রবণ ও মুধ এই সকল উপান্তর করে ইয়া পাকে। তাহা হইতে আবার নথাদির জ্বা হইয় থাকে। উৎপারে বকে রোম ও কশ সকল উপান্তর হয়। উত্তরকোর অকপ্রতালাদির সমানে স্বাহ্তি হইয়া থাকে। নায়িকেলাল বিমন কেবি সমেত বহিত হয়, তাহ ঐ কোরে আবার করার বাথাক। তংকালে অক্ররত বহিত হয় থাকে। নায়িকেলাল বেমন কেবি সমেত বহিত হয়, তাহ ঐ কোর অধায়ণে অব্রতি করিয়া, রহি প্রাপ্ত ইয়া থাকে। তৎকালে তাহার করবর আমু ও পার্শের তলদেশে, অক্রইছয় তাহার উপরি, বৃদ্বী সকল তাহার সম্ব্রে, নেত্রবর আমুর প্রের, নামিকা আমুর মধ্যে, কিচ্বর পশ্চারালে

আবং বহির্ভাগে বাছ ও জ্বলা সংস্থাপিত হয়। তদবস্থায় সে ক্রমশঃ বর্দ্ধিত ইইবা খাকে। এই রূপ অস্তান্ত জন্তুর উদরেও, তাহাদের বেমন আফুতি, তদমুরূপে অবস্থিতি করে।

কঠর অধি বারা তাহার কাঠিত সম্পন্ন হব এবং জননীয় ভূকণীত অন্নর বারা জীবন বারা নির্বাহ হইরা থাকে। বে বেমন পাপ পুণ্য করে, তদমুসারেই তাহার গর্ভবাসসক্ষটিত হয়। তাহার নাভিতে জাপ্যারনী নামে নাড়ী নিবদ্ধ থাকে। গ্রীদিগের অন্তাহরে সংবদ্ধ থাকিয়া এনাড়ীর উৎপত্তি হয়। তাহারে তাহার দেহ আপ্যায়িত ও ক্রমশং পরিপৃষ্ট হয়। ঐ সমরে তাহার প্রাক্তন জন্মপর ম্পারা স্থতিপথে সমৃদিত হইরা থাকে। তথন ইতন্ততঃ পীডামান হওয়াতে, তত্তৎ জন্মবন্ধণা শ্বরণ করিয়া, নির্বেদগ্রন্থ ইইরা, মনে মনে এইপ্রকার বলিয়া থাকে, আর কথন এরপ করিব না। প্রত্যুত, গর্ভ হইতে বিনিক্রান্তমাত্র এরপ যত্ন করিব, যাহাতে আর প্নরায় গর্ভযুত্রণা ভোগ করিতে হইবে না।

্অনন্তর জীব কালক্রনে অবধোমুথে পরিবর্তিত হইয়া, নবম বা দশম মাদে ভূমিষ্ঠ হয়। তৎকালে খ্রাব্রবায়ুর সংঘর্ষণশতঃ অতিমাত্র পীডামান হইয়া, বহির্গত হইয়া থাকে। আরেরিক ছ:এভারে অভিভূত হইলা, গর্ভ হইতে বিনির্গমন করে। উদর হইতে নিক্রান্ত হইলা, অস্থ মুর্ছে। প্রাপ্ত ছর। অনস্তর বাহ্যবায়ুর সংস্পার্শে পুনরায় চেতনা লাভ করে। তথন স্র্রলোক-মোহিনী বৈক্ষরী মারা বলপুর্বক তাহাকে আক্রমণ করিয়াথাকে। তাহাতেই সে সমুদার ভূলিয়া যায় এবং जाशास्त्रहे जाशांत्र जानाकान लहे रहेवा थारक। धरेकरल कान लहे रहेरन, वानाजाव ध्वाश रव। পরে ঘণাক্রমে কোমার, যৌবন ও বার্দ্ধকো উপনীত এবং পুনরায় মৃত্যুম্থে পতিত ও জনান্তর লাভ করিয়া থাকে। অনন্তর এই সংসারচক্রে খটিবপ্রবং পরিভ্রামিত হইয়া, কদাচিৎ স্বর্গ ও কখন বা নরক লাভ করে; কখন বা পুনরায় জন্মগ্রহণ করিয়া, স্বকীয় কর্ম ভোগ করিয়া থাকে; কথন বা কর্মভোগের অবসানে মৃত্যুমুখে নিপতিত হয় এবং কথন বা স্বরমাত্র শুভাশুভ ধারা ইহলোকে পুনরায় জন্মগ্রহণ করে। অয়ি ছিজোত্ম ! স্বর্গে ও নরকে তাহার কর্মাফলের প্রাঃ ভোগ হইরা থাকে। নরকে ইহাই মহাত্রংথ যে, অর্গবাদিরা তথার যে আনোদ অফুভব করে, নরকপতন্দ্রমধ্যে পাপীরা তাহা দেখিতে পায়। স্বর্গেও আবার অতুল হুংথ ভোগ করিতে হয়। কেন না, স্বর্গে আবোহণ করিয়া অবধি সদাই এই মনে হয়, আমাকে অবশুই একদিন স্বৰ্গ ইইটেড পতিত হইতে হইবে। তৎকালে নারকীদিগকে অবলোকন করিয়াও, মহাছঃথ ভোগ ক্রিতে হয়। "কেন না," কেবলই মনে হয়, আমাকেও এক দিন এইরূপ দশা ভোগ ক্রিছে इहेर्द। हेराहे जीविया, मरन व्यमीखित जैनय रहेया थारक।

গর্জবাদে যেমন দারুণ তুংথ, যোনি চইতে ভূমিষ্ঠ ইইবার সময়েও সেইরূপ মহাক্রেশ উপস্থিত হয়। আবার জন্মিবার পর বাল্য ও বার্দ্ধকাদশাতেও অস্ত্র্থের একশেষ ঘটিয়া থাকে। তিয়ি, যৌবনেও অতীব হংসহ কাম, ক্রোধ ও ঈর্ধ্যাজনিত দারুণ কষ্ট ভোগ করিতে হয়। বার্দ্ধকাণ হয়েথ পরিপূর্ব এবং মরণেও ক্লেশের শেষ থাকে না। আবার, যমদ্তেরা যথন আকর্ষণ করিয়া, নরকে কেলিয়া দেয়, তৎকালীন কষ্ট অনির্ক্ষায়। নরকাবসানে প্নরায় যথাক্রমে গর্ভযন্ত্রণা, জন্ম যন্ত্রণা ও মরণ্যন্ত্রণা ভোগ হইয়া থাকে। এইরূপে প্রাণিমাত্রেই এই সংসারচক্রে প্রাক্তবর্দ্ধন হইয়া, প্ন: খান গ্রিযন্ত্রের ভায়, ভ্রামিত ও বন্ধনের পর বন্ধনগ্রস্ত হয়। তাত । এই হংগ সন্ত্রণ সংগার-সন্তর্টে কিছুমাত্র স্থাব নাই। সেইজাভাই আমি মোককামনাম যত্ন করিতেছি। কিরণে আর বৈদিক ধর্মের মন্থ্রণ করিতে পারি ?

ইতি গর্ভোৎপত্তিক্রম নাম একাদশ অধ্যায়।

## षामभ व्यथाय।

পিত। কহিলেন, সাধু বৎস ! তুমি জ্ঞানবিতরণ করিয়া, তৎ প্রভাবে যে দিব্যজ্ঞান লাভ করিয়াছ সেই জ্ঞানবলে সংসারগহন স্থলবরপে কীর্ত্তন করিলে। অধুনা, তৎপ্রসঙ্গে যে সম্দায় নরকের কথা উল্লেখ করিয়াছ, রৌরবের ভায়, তাহাদেরও বৃত্তান্ত সবিস্তার বর্ণনা কর।

পুত্র কহিলেন, আমি আপনার নিকট প্রথমে রৌরবনরক বর্ণন করিরাছি। অধুনা, মহাবৌরবনামক নরকের কথা প্রবণ ককন। ঐ নরক চতুর্দিকে সপ্তপঞ্চসহস্র-যোজন। উহার
ভূমি তাশ্রমন্ধী। তাহার অধােভাগে অগ্নি। উহার তাপে সকল দিক্ দগ্ধ হইতেছে। এইজন্ত ঐ
ভূমির প্রভা উদীয়মান ইন্দুব সমান এবং এইজন্ত উহাকে দর্শন ও স্পর্শনাদি করিতেও অতীব ভদ্ম
হইয়া থাকে। ধমদ্তেরা পাপীকে হস্তপদে বন্ধন করিয়া, তাহার মধ্যে ছাড়িয়া দেয়। সে
বিল্লি হ হইয়া, গমন করে। পথিমধ্যে তাহাকে কাক, বক, বৃক, উলুক, বৃশ্চিক ও মশক সকল
ভন্ধণ ও গ্রাক্তন সবেগে আকর্ষণ করিয়া থাকে। সে দহামান ও ব্যাকুল হইয়া, হা মাতঃ!
হা পিতঃ! হা ল্রাতঃ! বলিয়া বারহার বিলাপ করে। উদ্বেগবশতঃ তাহার শাস্তি দ্র হইয়া
যাব। যাহারা ছাইবৃদ্ধির পরতন্ত্র হইয়া, পাপ করে, তাহারা অযুতাযুত-বর্ষ-পর্য্যবদ্ধনে নরক
হইতে মুক্ত হয়।

ইহার পর তমোনামক নরক অভাবতঃ অতিশায় শীতে পরিপূর্ণ ও মহারোরবের স্থায় দীর্ঘভাবাপর এবং অন্ধকারে আছের। পাপায়ারা দেই অতি শীতে অভি ভূত হইয়া, অন্ধকার মধ্যে ধাবমান হয়। তংকালে পরস্পর সমাগর হইয়া আলিঙ্গন ও আশ্রয় করিয়া থাকে। তাহাদের দশনপংক্তি শীতার্জি প্রযুক্ত অতিমাত্র কম্পিত ও ভগ্ন হইয়া যায়। তথার ক্ষা, ত্রুগাঁ ও অক্সাস্থা উপদ্রব সকল সতত প্রবল হইয়া পাপীকে আক্রমণ করে। এবং রায়ু হিমথও বহন করিয়া, অতীব ভয়ন্তর হইয়া, অভিসকল ভেদ করিয়া থাকে। পাপীরা ক্ষান্তি হইয়া, তাহা হইতে গলিত মজ্জা ও শোণিত ভক্ষণ করে। পরস্পর সংমিলিত হইলে, পরস্পরকে লেহন করিয়া, ইতন্ততঃ ভ্রমণ করিয়া থাকে। অন্নি বিপ্রস্তমণ দেখানে যাবৎ ভ্রুতির ক্ষ্ম না হয়, তাবৎ অন্ধকারে থাকিয়া, অতীব ক্রেশ সহ্য করিতে হয়।

তাহার পর নিক্সন নামে আর এক অতি বিশাল ও অতীব ভয়ন্তর নরক প্রতিষ্ঠিত আছে।
পিত:! তাহাতে শত শত কুলালচক্র অবিরত পরিলামিত হইডেছে। পাপাত্মাদিগকে তাহাতে
আরোহণ করাইরা, যমকিকরগণের অসুলিস্থিত কালস্ত হারা আপাদমন্তক কর্ত্তিকরা হয়।
তাহাতেও তাহাদের প্রাণ বিনষ্ট হয় না। তাহাদের ছিন্ন থণ্ড সকল তৎকণে একীভাব প্রাপ্ত হইরা
থাকে। এইরপে বর্ষদহল্র পাপাত্মাদিগকে ছেদন করা হয়। যাবৎ সমন্ত পাপের ক্ষম না হয়,
তাবৎ একপ করা হইরা থাকে। পাপীরা যাহাতে আরোহণ করিয়া অস্থ ক্লেশ অমুভব করে,
তাদ্শ চক্র ও ঘটীযন্ত্র সকল তথায় প্রতিষ্ঠিত আছে। তৎসমন্ত পাপকর্মী প্রাণিগণের ত্রথের
কারণ। কোন কোন পাপীকে তৎসমন্ত চক্রে আরোপিত করিয়া লামিত করা হয়। বর্ষসহল্রেও
তাহাদের এইরপ ঘূর্ণনের অন্ত হয় না। কাহাকেও, জলমধ্যে ঘটীর ভার, ঘটীযারে বছ করিয়া,
ভ্রমণ করান হয়। তাহারা লুমণবেগে বারহার রক্ত বমন করত অশ্রপ্রিত লোচনে অসহ ত্রংধ
ভাগ করে।

অনস্তর অসিপত্রবননামক অপর নরকের কথা প্রবণ করুন। উহা বোজনসহস্থ বিভূত। তাহার <sup>শুন্বর</sup> অংশই প্রজ্ঞানত আনহো আছের। তাহার উপর আবার অতীব স্থারক প্রচণ্ড স্ব্যক্তিরণে <sup>টুহা</sup> সন্তপ্ত ক্ইরা উঠিয়াছে। নরকনিবাসী প্রাণীরা তাহাতে সর্বদাই **দাদণ দাহ্জানা অনুত্**র করিরা থাকে। তথাগ্রে পিশ্বশার্ত্রপার রমণীয় বদ দেখিতে পাওরা বার। খালাগম্ভের ফলকসমূহ 
ট বনের প্রা। তথার অযুত অযুত অন্তর কুলুর অনবরত চীৎকার করিতেছে। উহারা সবল এবং
ব্যান্তর গ্রায় ভরানক এবং বৃহৎ বদন ও বিশাল দশনসম্পর। অএভাগে স্থানীতল ছারাশালী
উল্লিখিত অরণ্য অবলোক্ষন করিরা, তীর তৃষ্ণার নিপীড়িত নারকীরা তদভিমুধে ধাবমান হয়।
তৎকালে হা মাতঃ! হা পিতঃ! বলিরা, অতীব ছংখে ক্রন্দন করিরা থাকে। ভূমিতলন্থিত সেই
বহি বারা ভাহালের পদযুগল দহামান হয়। তথার গমন করিলে, সমীরণ অসিপত্র সকল পাতির
করিরা, প্রবাহিত হয়। এবং তৎসহকারে তৎসমন্ত থড়া তাহাদের উপরি নিপাতিত করে।
তথন তাহারা ভূমির উপরে সেই প্রজনিত পাবককুণ্ডে পতিত হইমা থাকে। প্রপাবক সমন্ত
প্রিবীতল ব্যাপ্ত করিয়া, লক লক করিতেছে। উক্ত কুলুর সকল তৎকালে সম্ভর হইমা,
ভাহাদের শরীরের সমুদার অলপ্রভাক কর্তন করিয়া থাকে। তাহাতে তাহারা রোদন করে।
তাত। এই অসিপত্র নরকের কথা বিলাম। অতঃপর অতীব ভরত্বর তপ্তকুন্তনামক নরকের
কথা আমার নিকট শ্রবণ কর্ম।

ত চতুর্দিকে ৰ্ছিনিথাপরিবৃত তপ্তকুত্ব সকল সমিবিষ্ট আছে। তৎসমন্ত প্রজ্ঞানিক পাবৰ প্রভাবে সম্বর্ধিত তৈল ও লোগচূর্ণে পরিপূর্ণ। যমপুরুষেরা পাপকর্মাদিগকে অধামুখে তাহাতে নিক্ষেপ করে। ভাহারা ভদবন্থার কাথিত হইয়া থাকে। তৎকালে ভাহাদের গাত্র বিক্টিঙ হয়াতে, রাশি রাশি মজ্জাদলিল বিনির্গলিত হইয়া, ভাহাদিগকে প্লাবিত করে। ভাহাদের কপাল, নেত্র ও অস্থি সমন্তও ক্টিত হয়। তথন অতীবভয়ন্তর যমদ্তর্গণ ভাহাদিগকে ছেদন করিতে আরম্ভ করিলে, প্রচঙায়তি গ্র সকল ভাহাদিগকে উভোলিত করিয়া, পুনরায় সবেগে ভংগমন্ত কুস্তে মোচন করে। প্নরায় ভাহাদিগকে তৈলের সহিত একত্রে পাক করা হয়। ভাহাতে ভাহাদের শির, গাত্র মায়ু, মাংদ, ত্বক ও অস্থি সমন্তই দ্বীভূত হইয়া থাকে। তথন যমদ্ভেরা শীত্র দ্বর্ধী হারা ঘট্টনপূর্বক ভাহাদিগকে ঘটিত ও অস্থিবের মাবর্ভপূর্ব জলন্ত ভৈলন্মাশিতে মথিত করে। পিতঃ! এই আমি আপনার নিকট তপ্তকৃত্ব নরকের কথা সবিস্তার বর্ণনা করিলাম।

ইতি নরকাখ্যান নাম হাদশ অধ্যায়।

### ত্রোদশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, ডাত ! আমি এই অন্মের পূর্বের সপুম জন্ম অতীত হইলে, বৈশ্রবংশে জনিমা, পানকুমিতে গোগণের রোধ করিয়ছিলাম। তাহাদিগকে জল থাইতে দি নাই। সেই কর্দের বিপাক্ষণতঃ আমার অতীব দারণ নরক সংঘটিত হয়। ঐ নরক অনলিধার সংযোগপ্রস্ক নিতান্ত ভরাবছ এবং লোহমুখ বিহগগণে পরিপূর্ণ। অনবরত বস্ত্রপীড়ন প্রস্কুত গাপীগণের গার হইতে রক্ত বিগলিত হওয়াতে, উহাতে কর্দ্দন উভূত হইয়াছে এবং ছিয়দেহ হৃদ্দিগণের নিপাতন বশতঃ তথার অনবরত শক্ষ সমুথিত হইয়াছে। এই নরকে নিপাতিত হইয়া, আমি মহাতাপাধি ও তৃথাদাহ অন্তব্ধ করত কিঞ্চিদ্ধিক একশত বংসর অতিবাহিত করিলে, একদা উত্তপ্ত-বাল্কা ক্রেমান্ত ক্রেডা নারকীগণের সকলেরই বাতনা দ্র হইয়া গেল; আমিও স্থান্ত্রের ভাগ, পরম্পাতি জহুত্ব করিলাম। পরে, ইহা কি, এই প্রকার চিন্তা করিয়া, আমরা সকলে আহাো

বিন্দারিত ও ভিনিত লোচন হইরা, সমীপদেশে এক সর্ব্বাপ্তর পুরুব প্রবর্ত্ত দর্শন করিলাম। অতীবভরত্বর, এক বমপুরুব বস্তুসদৃশ-দণ্ডহত্তে অগ্রে অগ্রে পথ দেখাইরা, ভাঁহাকে বলি-তৈছে, এদিকে আহ্নন। আমরা ভাহার এ কথাও ভনিতে পাইলাম। তৎকালে দেই পুরুব বাত্তমাশত-সভ্গ নরক দর্শন করিয়া, রুপাবিষ্ট হইয়া, দেই বমদ্তকে কহিলেন অনি বমগুরুব ! আমি এমন কি ইকর্ম করিয়াছি, বল, যাহার প্রভাবে ঈদৃশ যাত্তনাভীষণ নরক প্রাপ্ত ইইলাম ! আমি জনকবংশে বিপশ্চিৎ নামে বিখ্যাত রাজা হইয়া জয়িয়াছিলাম। আনেক বজামুদ্ধান ও ধর্মায়ুসারে পৃথিবী পালন করিয়াছিলাম। কথন সংগ্রামে বিমুথ হই নাই। অভিথিকে বিমুধ করি নাই। পিতৃগণ, দেবগণ, ঋষিগণ ও ভৃত্যুগণ ইহাদের প্রতিত্ত অত্যাচার করি নাই। পর্ব্বাতি প্রথনেও কথন লোভ করি নাই। পর্ব্বানে পিতৃগণ ও তিথিলালে দেবগণ প্রঃ, পানভূমিতে ধেমুর ভায়, লোকের নিকট আগমন করেন। তৎকালে তাহারা যদি নিখাস ভ্যাগ করিয়া, বিমুথ হইরা বান, তাহাহইলে সেই গৃহত্তের ইষ্টাপুর্ত একবারেই অন্ত হইয়া থাকে। পিতৃগণের নিখাসে সাতজ্বের পুণ্য বিধ্বন্ত ও দেবগণের নিখাদে তিন জ্বেরর স্কৃত নষ্ট হইয়া বার, ইহাতে সন্দেহ নাই। সেইজস্ত দৈব ও পিত্র উত্তর বিষয়েই আমি নিত্য যথাবিহিত ব্যবহার করিয়াছি। তবে আমার কেন এইপ্রকার অভিদারণ নরক লাভ হইল ?

ইতি বৈদেহবাক্য নাম ত্রোদশ অধ্যায়।

# **ठ कुर्मिश व्य**शांग्र ।

পূত্র কহিলেন, আমাদের সকলের সমকে তিনি এই প্রকার জিজ্ঞাসা করিলে, বমপুরুব জন্ধরপ্রকৃতি হইলেও, বিনীত বাব্যে কহিল, মহারাজ! আপনি যাহা বলিতেছেন, তাহা ডাঁহাই, সন্দেহমার নাই। কিন্তু আপনি অরমাত্র পাপ করিয়াছেন, তাহা মনে করিয়া বিতেছি। আপনার পত্নী বিদর্ভরাজ্ঞতনয়া পীবরী নামে বিখ্যাতা। তিনি ঋতুমতী হইলে, আপনি তাঁহার ঋতুকলা করেন নাই। আপনি দিতীর পত্নী পরমন্ত্রনাই কৈকেরীতে তৎকালে অভিমাত্র আসক ছিলেন। ঋতুর ব্যতিক্রম করাতেই ঈদৃশ ঘোর নরকগ্রন্ত হইরাছেন। হোমকালে অগ্নি বেমন মুত্রিকেপের অপেক্ষা করে, ঋতুকালেও প্রজাপতি তহৎ ক্রুকণাতের অপেক্ষা করিয়া থাকেন। বে ধর্মা তাহা অভিক্রম করিয়া কামে আসক্রিকান্ হয়, সে পিতৃঋণে বদ্ধ ও ত্রুক্ত পাতকগ্রন্ত হইয়া, নরকে গ্রন করে। আপনার এইমাত্রই পাপ, অন্ত আর কিছুই নাই। অভএব আফ্রন, প্রাফল ভোগ করিবনে, চলুন।

রাজা কহিবেন, আরি দেবাস্তর ! তুমি বেখানে লইরা যাইবে, দেখানেই আমি বাইব ।

কিছু জিজাদা আছে, অনুগ্রহপূর্বক যথায়থ বলিতে হইবে। এই বক্তুপ্ত কাক সকল পাশীদের

নয়ন সকল যেমন উৎপাটন করিতেছে, অমনি তৎসমস্ত বারস্বার আবার উজুত হইতেছে। ইহারা

কিরপ জুগুপিত অনুগান করিয়াছে, বলুন। ইহাদের ঐরপে পুন: পুন: উজুত জিলাও হরণ

করিছেছে।

কিজন্তই বা ইছাদিপুৰে করপত্তে বিদীর্ণ ও তথ্য বাসুকা মধ্যে তৈলে মগ্ন করিরা, জাতীব ক্রেশ দান পূর্বাক পাক করা হইতেছে ? এই লোহমুথ পক্ষী সকল ইহাদিগকে আকর্ষণ করিতৈছে। ইহারাই বা কি করিরাছে, বল ? ইহাদের দেহবদ্ধন শিথিল হইরাছে, তজ্জন্ত নির্ভিশহ
বাতনাবশে উলৈঃশক্ষে চীৎকার করিভেছে। লোহবৎ চঞ্র আবাতে ক্তবিক্তাল হওরাতে, ইহাদের হংবের আভিশয় উপস্থিত হইরাছে। ইহারা এমন কি অনিট করিরাছে, বাহার প্রভাবে

দিবা নিশ এইরূপ ও অন্তরূপ বিবিধ যাতনা ভোগ করিতেছে ? ইহাদের সেই কর্মবিপাক ব্যাব্ধ কীর্ত্তন করুন।

যমপুরুষ কহিল, মহারাজ। আপনি আমাকে যে পাণকর্মের ফলোদর জিজাসা করিভেছেন্
তাহা আমি সংক্ষেপে সমাক্ রূপে যথাতথ বলিব।

পুরুষমাত্রেরই পর্যায়ক্রমে পাপ পুণা ভোগ হইয়া থাকে। এইপ্রকার ভোগ স্থারই পাপ বা পুণোর ক্ষয় হইয়া থাকে। ভোগ ব্যতিরেকে পাপ বা পুণা কোন কর্মাই পুরুষের ভিদ্ধি সাধন ক্রিতে পারে না। ভোগবশেই কর্মের ক্ষয় হইয়া থাকে এবং তাহার পরিহারও হয়, জানিবেন।

পাপকর্মির। ক্লেশের পর ক্লেশ, ছর্ভিক্ষের পর ছর্ভিক্ষ, মৃত্যুর পর মৃত্যু ও ও ওয়ের পর জন লাভ করে এবং দরিদ্র ইইয়া থাকে। এইরপে কর্মবন্ধনবশতঃ প্রাণীর নানাবিধ গতি লাভ হয়। পুনাকর্মিরা উৎসবের পর উৎসব, ম্বর্গের পর ম্বর্গের পর মুধ লাভ করিয়া থাকে।

ধনদান করিলে এবং শান্তখভাব ও শ্রহ্মবান হইলেও, এরপ সাক্ষতি লাভ হয়। পাপকর্মির পাপবশে হত হইরা, হিংশ্র-হন্তীতে চুর্গম ও সুপ্টেট্রভয়বিশিষ্ট হান সকল অধিকার করে। ইং ভিন্ন তাহাদের আব কি হইতে পারে ? পুণ্যান্তান করিলে, তৎপ্রভাবে স্থান্দি মাল্য, স্থান ব্রু, স্থান ব্যু, স্থান ব্রু, স্থান ব্যু, স্থান ব্যু, স্থান ব্যু, স্থান ব্যুন্ন ব্যুন্ন ব্যুক্ত স্থান ব্যুন্ন ব্যুক্ত স্থান ব্

মনুষ্য অনেক শত সহত্র জন্মপরম্পরা পবিগ্রহ করিয়া, যে পাপ পুণ্য সঞ্চয় করে, তাহাই তাহার ত্রথ ছু:থের অঙ্কর উদ্ভাবন করিয়া থাকে। রাজন্! বীজ বেমন জলের অপেকা করে পাপ পুণ্য তেমনি দেশ, কাল ও পাত্রের অপেকা করিয়া থাকে। লোকে ঐয়প দেশ-কাল সঙ্গত ত্বর পাপ করিলে, তাহাকে নরকে গমন করিয়া, প্রত্যেক পদবিক্ষেপে কণ্টকবিছে। স্থায়, অলমাত্র যাতনা ভোগ করিতে হয়। আবার, সেই পাপ প্রভৃতত্তর হইলে, তুল শূল ধ্বীলকবিদ্ধাব অতি দার্ফণ ছু:থ ও অসহ্থ শিরোরোগাদি ক্লেশ ভোগ করিতে হয়। পাপ সকল ফলকালৈ প্রস্পার প্রতীক্ষা করিয়া থাকে। তাহাতে অপথ্য থাদ্য, শীত, গ্রীয়া, শ্রম ও তাপাদি জনক ছু:থ ভোগ করিতে হয়। এইয়পে মহাপাতক সমস্ত দীর্ঘ রোগাদিবিক্রিয়া সমুদ্ধাবন দ্বারু, আমি, অতিক্রই, অতিব্যামাহ ও বন্ধন প্রভৃতি ফল সজ্যটন করে।

অস্ত্রমাত্র পুণান্দেষ্ঠান করিলে, স্থান্ধ, স্থান্ধ স্পার্শ, শ্রুতিমধ্র শব্দ, স্থান্ধ সাও স্পোডন রণ আনারাদেই লাভ করা যায়। দেইরপ, গুরুতর পুণাাম্ষ্ঠান করিলে, কালক্রমে ঐ সকলে আধিকালাভ হইরা থাকে। এইরপে লোকের স্থা হংথ একমাত্র পুণা পাপ হইতেই সমৃত্ত হয়। লোকে অনেক্বার সংসারে জন্মগ্রহণ করিয়া, জ্ঞান ও অজ্ঞানের ফল অরপ, জাতিদেশা সারে ভত্তৎ স্থা হংথ ভোগ করিয়া থাকে। এমন কি, তত্তৎ স্থাত্ংথসকল আত্মাতে স্ক্রভাগে সংযুক্ত হইয়া থাকে। ভোগ না হইলে, কোনমতেই তাহোদের বিয়োগ সংঘটিত হয় না।

বে কোন ব্যক্তি বাক্য, মন, বা কর্ম দারা কথন কোনরূপ পাপ বা পূণ্য কর্ম করিয়া, বে দে হংথ বা স্থথ প্রাপ্ত হর, তাহা প্রভৃত হউক, আর স্বল্লই বা হউক, মনের বিকার অবশ্র সম্পাদন করিয়া থাকে। ভক্ষণ করিলে অর যেমন নিঃশেষ হয়, সেইরপ ভোগ করিলে, ততং স্থপ হং<sup>ব্রে</sup> ক্ষর হইরা থাকে। এইরপে এই সকল মহাপাপী নরকমধ্যে অহনিশ বন্ধ থাকিয়া, যাতনাপরস্পর ভৌগ করিয়া, আপনাদের সেই ঘোর মহাপাপের ক্ষয় করিতেছে। রাজন্! সেইরপ পূণাাআর স্বর্গে থাকিয়া, দেবগণের সহিভ মিনিত হইয়া, গরুর্ক সিদ্ধ ও অপ্যরোগণের গীতাদিসহকারে ব্রগ্রগা ভোগ করেন। দেবদ, মহুবাদ্ধ অথবা তিষ্যগ্রোনিত্ব এই সকলে যে স্থহংথাপলক্ষিত ভঙা উপ্রক্ষর হয়, একমাত্র পূণ্য পাপই তাহার উদ্ভবক্ষেত্র। রাজন্! আপনি যে আমাকে জিলাক্ষ্য করিবেন, পাপক্ষীরা কোন্ কোন্ পাপে এই সকল যাতনা ভোগ করিয়া থাকে, তাহা সম্বির্প বিভিত্তি, প্রবণ করন।

বে নরাধ্যেরা ছাই চক্ষুত্রে বিত্তিক দর্শন ও ছাইন্সান্সে প্রথনে লোভ করিরাছে, বন্ধুত্বও বিহগ-গণ ঐ তাহাদের নরনপ্রল<sup>া হরণ</sup> করিতেছে। তৎসমত্ত আবার পুনংপ্ন: উত্ত হইতেছে। এই "সকল লোক বাবৎ চক্ষুণান্মেৰ পাপ করিবাছে, তত্ত বর্বসহত্ত ইহারা নেত্রপীড়া ভোগ করিবে।

বাহারা শত্রগণে নিস্পৃতি বিনাশ জন্ত অসৎ শালের উপদেশ, বা অসৎ মন্ত্রণা দান অগবা বাহারা শাল্পের বি০ ত ব্যাখ্যা বা বাহারা অসৎ বাক্য প্রয়োগ করিয়াছে, অথবা বাহারা দেব, বিদ্ধু, গুরু ও কে ও কে বিনালা করিয়াছে, ঐ দেখ, তাহাদেরই পুন: পুন: আয়মান জিহ্বা হরণ করি-তেছে। তাহাদ্বতবার ঐকপ পাপ করিয়াছে, তত হাজার বৎসর এইরপ হরণ করিবে।

রাজন্। ঐ দেখুন, যে সকল নরাধম হৃদ্ভেদ, পিতাপুত্তেদ, অলনভেদ, ৰাজ্যৰাজকভেদ, মাতাপুত্রপদ, সহচারিভেদ ও পতিপত্নীভেদ অথবা অভাবিধ ভেদ সাধন করিয়াছিল, তাহাদিগকে ঐ করাত্ত বারা বিদীন করা হইতেছে।

াহারা পরের সন্তাপসংঘটন করে, যাহারা আহলাদ নষ্ট করিয়া থাকে, যাহারা ভালবৃস্ত, ভানলস্থান, চন্দন ও উধীর হরণ করে, যাহারা সাধুগণের প্রাণান্তিক তৃঃথ সমুদ্ধবিত করে, ভাহা-দিগকে ঐ তপ্তবানুকাগর্ভে প্রোথিত করিয়া রাথিয়াছে।

যে ব্যক্তি অন্তক্ত্ক নিমন্ত্রিত হইয়া, আর এক জনের শ্রাদ্ধে ভোজন করে, ঐ বস্তুত্ত পক্ষী সক্ল তাহাকে হই থও করিয়া থাকে।

স্বাংবাক্যপ্রয়োগপূর্বক সাধুগণের মর্মচ্ছেদ করিলে, এই স্কল বিহঙ্গম নিরবচ্ছির যাতনা প্রদান করে। কোনরূপেই তাহার প্রতিষেধ নাই।

যে ব্যক্তি মুখে এক, মনে মার এক করিয়া, শঠতা প্রদর্শন করে, তাহার জিহবা ঐ রূপে নিশিত শল্পমূহ হারা হিখা ছেদন করা হয়।

যাহার। উচ্ছিষ্ট অবস্থার ইচ্ছা করিয়া স্থ্য, চক্র ও তারা দর্শন করিয়াছিল, যমদ্তেরা ঐ তাহা-দের চকুতে অমি হাত করিয়া, প্রজলিত করিতেছে।

যাহারা গো, অধি, জননী, ত্রাহ্মণ, জ্যেষ্ঠ ল্রাচা, পিতা, মাতা, ভগিনী, গুরু ও বৃদ্ধ-দিগকে পদ দ্বারা স্পর্শ করিয়াছিল, তাহাদিগের পদ্বয় ঐ অধিতে প্রতাপিত লোহনিগড়ে বৃদ্ধ করিয়া, অঙ্গাররাশি মধ্যে নিক্ষেপ করিতেছে। তাহাদের জামুপর্যান্ত দক্ষ হুইয়া গিরাছে।

যাহার। অনেংস্কৃত পাষদ, কুশর, ছাগ ও দেবার ভক্ষণ করিয়াছিল, তাহাদিগকে এ ভূমিতে নিপাতিত করিয়া, সন্দংশ বারা বদন হইতে নয়ন্বয় আকর্ষণ করিতেছে। তাহারা উৰ্ভদোচনে পড়িয়া রহিয়াছে।

যাহারা পাপাঝাদের প্ররোচনার গুরু, দেব, বিজাতি ও বেদের নিন্দা করিয়াছিল, ঐ দেখ, এই যমপুরুষগণ তাহাদের কর্ণে লোহ্মর অগ্নিবর্ণ কীলক সকল পুন: পুন: প্রেরিত ও তাহারা বিলাপ করিতেছে।

যাহার। ক্রোধ ও লোভের বশবর্তী হইয়া জনপানস্থান, দেবস্থান, ব্দাবার ও সভা দক্ল ভয় ও ধ্বংস ক্রিয়াছে, ঐ দেখ, অতিদারণ যমপুরুষেরা স্থাণিত শক্ষে তাহাদের শরীরের ইক্ ধও ধও ও তাহারাও বিলাপ ক্রিতেছে।

<sup>ৰাহা</sup>রা গো, ত্রাহ্মণ ও স্থ্যমার্গে মলম্ত বিসর্জন করে, বায়সগণ **ঐ রূপে তাহাদের ওছয়ার** <sup>বিয়া</sup> অন্ত্র সকল বহির্গত করিরা থাকে।

দতা ক্সাকে পুনরার অস্তু পাত্রে হাস্ত করিলে, ঐ রূপে তাহাকে থও থও করিরা, এই ক্ষার-নদীতে ভাদাইরা দের।

<sup>হা</sup>হারা আত্মন্তরি হইরা, অনভাশ্রর পুত্র, কলত্র, ভৃত্য ও বন্ধুদিগকে **হতিক বা অভবিধ বিশৎ** <sup>সময়ে</sup> বর্জন করে, বমদ্তেরা ঐরপে তাহাদের মাংস কাটিরা, তাহাদিগকে **ধাইতে** দের। তাহা-বাও ক্ধাবশত: তাহাই ভক্ষণ করে। লোভের ৰশীসূত হইয়া, শরণাগত বা বৃত্যুগনীবীকে ভ্যাপ<sub>ৰ বিশে</sub>, ভাষাকে একপে বন্ধ-পীড়ায় নিপীড়িত করিয়া থাকে।

যাৰক্ষরা জিছ পুণ্য প্রদান করিলে, ঐ সকল পাপাছার ভার দি বারা নিশিষ্ট হইতে হয়।
গচ্ছিত জব্য হরণ করিলে, যনদ্তের। সর্বাঙ্গ পাশে বন্ধ ও তদার ক্রমি, বৃশ্চিক ও
কাকোলগণ তাহা জ্বনণ করিয়া থাকে ৯ দিবলে মৈথুন ও পরত্রী হরণ রিলে, কুধার ক্রশ,
তৃষ্ণার গুক্জার গুক্জজিহ্ব এবং বেদনায় আকৃল হইতে হয়। ঐ দেশ, তাহাদিগকে ঐ
গৌহমর-দীর্থ-কন্টকপরিবৃত শালালীতে আরোপিত করিয়াছে। তাহাদের সর্বাধ্বিকত
ও শোণিতে পরিপ্রত হইরাছে। ঐ দেখুন, আবার যমদ্তেরা ঐ সকল পরদারম্বীদ মুবার সন্ধি,
বিষ্ট করিয়া বিনাশ করিতেছে।

মোহাচ্ছন্ন হইরা, উপাধ্যায়ের অবমাননা করিয়া, অধ্যয়ন বা শিলপ্রাহণ করিলে, <sub>বইরপে</sub> শিরোদেশে শিলাবহন করিয়া, জনমার্গে অতিমাত্র পীড়া অমুভব করত, দিবানিশ ক্লেশ<sub>ফাগ</sub> করিতে হর। তৎকালে ক্ধাবশে শরীর অতিমাত্র রূপ ও মত্তকও ভারপীড়ার ব্যথিত হইরা উঠে

জলমধ্যে মূর, বিষ্ঠা ও শ্লেমা ত্যাগ করিয়া, ঐ দেখুন, ঐ সকল পাপাত্মা তত্তৎসম্পর্কে হুর্গান্ধ- পূর্ণ নরকে পতিত রহিয়াছে।

ঐ দেগুন, ইহারা পূর্ব্বে পরস্পর আতিগ্য বিধানে ভোজন করে নাই, এইজঞ্চ কুধান্বিত হইয়া, পরস্পরের মাংস ভক্ষণ করিতেছে।

যাহারা অগ্নিহোত্রী হইয়াও বেদের ও বঙ্গির অবমাননা করিয়াছে, ঐ দেখুন, তাহাদিগকে শৈলশৃক হইতে বারম্বার অধঃপাতিত করিতেছে।

ইহারা পুনভূরি পতি ও তদবস্থায় জরাজীণ হইয়া, জীবন বাপন করিয়াছে, দেইজন্ত ক্ষি-কীটত প্রাপ্ত হইয়া, ঐ সকল পিপীলিকা কর্তৃক ভক্ষিত হইতেছে।

পতিতের প্রতিগ্রহ গ্রহণ এবং তাহার যাজন ও নিত্য দেবা করিলে, পারাণমধ্যস্থ কীট হইয়া, সর্বাদা ক্লোভোগ করিতে হয়।

ভ্তাগণ, মিত্রবর্গ ও অতিথির সাক্ষাতে একাকী মিষ্টার ভোজন করিলে, ঐরপ প্রজণিত অকাররাশি ভোজন করিতে হয়।

রাজন্! ঐ ব্যক্তি লোকের পৃষ্ঠমাংস নিয়ত ভক্ষণ করিরাছে। তজ্জ্ঞ ভঞ্জের বৃক সকল ইহারও পৃষ্ঠমাংস ভক্ষণ করিতেছে।

ঐ দেখুন, উপকারীর উপকার স্বীকার না করাতে, ঐ নরাধম অন্ধ, বধির, মৃক ও ক্ষুধারুর ছইরা, আমিত হইতেছে।

ক ব্যক্তি নি ৰাস্ত চুৰ্যতি ও কৃত্য এবং নিজগণের অপকার করিয়াছে। সেই পাপে তণ্ড কুন্তে নিপতিত হইরাছে। ইহার পর আবার পেষিত হইরা, তপ্তবালুকার দহুমান হইবে। তথা হইতে আবার বথাক্রমে ব্যাবপীড়ন, অসিপত্রবন, করপত্রবিপাটন, কালস্ত্রে ছেদন ইত্যাদি অনেক্বিধ যাত্রনা ভোগ করিয়া, জানি না, কিরপে ইহা হইতে নিছতি লাভ করিবে।

ঐ সকল ব্রাহ্মণ পরস্পার সংমিলিত হইয়া, প্রাহ্মে ভোজন করিয়াছিল। এইজস্ত সর্বার্থ হইজে বিনিঃস্ত কেন পান করিতেছে।

ঐ দেখুন, ইহারা অর্ণচ্রি, অন্নহত্যা, স্থরাপান ও গুরুপদ্বীগমন করিছাছিল। সেইন্ড জব ও উর্দ্ধ সকল দিকেই প্রজনিত দহনে দহমান হইতেছে। ইহারা এইরূপে বছ বছ অব্নহ্ল নরকে থাকিরা, পরে প্নরার কুঠ ও ক্ষরেরাগাদি চিহ্নিত হইরা, জন্মগ্রহণ করিবে। জন ক্রপ্রাহ মরিরা জাবার নরকে বাইবে। পরে আবার ক্ষিরা, ঐরপ আধিব্যাধি ভোগ ক্রিবে। ক্রাক্সিরিয়াণ এইরূপ হইবে।

গোহত্যা করিলে, ভিনৰত্ম ন্যুনতর নরক লাভ হইয়া থাকে। সম**ত উ**পপাতকেও <sup>এই</sup>

প্রকার নরক সংঘটন হর। নরক হইতে মুক্ত হইরা, বে বে পাপ করিলে, বে বে বোনি লাভ হর, বলিতেছি, প্রবণ করুন।

है जि विविध नत्रकृष्टः थवर्गम नाम हर्जूमण व्यथाति ।

### পঞ্চদশ অধ্যায়।

যমকিকার কহিল, প্তিত্তের প্রতিগ্রহ গ্রহণ করিলে, বিজাতির গর্মন্তবোনি লাভ হয়। প্রি-তের যাজন করিলে, নরকম্ক্তির পর কমি ছইয়া থাকে।

উপাধ্যানের প্রতি কৃপ্টব্যবহার ক্রিলে, দিজাতি কুরুর হইয়া থাকে। উপাধ্যানের পদ্মীকে মনে মনে কামনা ক্রিলে, অথবা উঁছোর জব্যে মনে মনেও বাঞা ক্রিলে এবং পিতামাতার অব্যাননা ক্রিলে, গদ্ভযোনি প্রাপ্ত হইতে হর।

মাতাপিতার প্রতি আফোশ প্রকাশ করিলে, শারিকাষোনি লাভ হয়।

ভ্ৰাতার পত্নীকে অৰমাননা করিলে, কপোত হইয়া থাকে। তাইাকে পীড়ন করিলে, কচ্চুপ হইতে হয়।

প্রভুর পিতেও পুষ্ট হইরা, যে বাক্তি তাহার অভীষ্টসাধনে বিমূপ হর, সে মরণাত্তে মোহাচ্ছর ও বানর হইরা থাকে।

পচিছৎ দ্রবাহরণ করিলে, নরকবিম্ক্তির পর ক্ষিজন্ম লাভ হয়। অবস্থাপর হ**ইলে,** নরক ভোগের পর রাক্ষন হইলাথাকে।

বিধাস্থাতকতা করিলে, মীন্যোনি লাভ হয়। ধাস্ত, যব, তিল, মাধ, কুল্খ, সর্ধপ, চণক, কলায়, কলম, মূলগ, গোধ্ম, অত্সী ও অতাত শস্ত হয়ণ করিলে, মোহের আবিভাবিপ্রযুক্ত চেত্না-শৃত্ত ও বুহ্হদনবিশিষ্ট মূবিক হইয়া জ্মিতে হয়।

প্রদার হবণ করিলে, ভয়ত্বর বৃক হইরা থাকে। অনন্তর মথাক্রমে খা, শৃগাল, বক, গুএ,
ন্যাড় ও কল হইরা জন্মগ্রহণ করে।

যে পাপাতা চর্ক জিবশতঃ ভাতভার্যাকে অবমানিত করে, সে নরকচ্যতির পর প্ংছোকিল হইয়া থাকে।

বন্ধ্রী, গুরুপত্নী ও রাজপত্নীকে কামাত্মা হইরা ধর্ষণা করিলে, পরজন্মে শুকর হইতে হয়।
যজ্ঞ, দান ও বিবাহের বিদ্ন করিলেও, ক্রমিজন্ম লাভ হয়।

েদেব, বিজ ও পিতৃপণকে নিবেদন না করিয়া, ভোজন করিলে, নরকভোগের পর বায়স ইইতে হয়।

জ্যেষ্ঠ প্রতি। পিতার সমান। তাঁহার অবমাননা করিলে, নরকাবসানে ফ্রোঞ্ঘোনিতে পতন <sup>হর।</sup> শুল বান্ধনী গমন করিলে, কমি হটয়া থাকে। তাহার গর্ডে অপত্য উৎপাদন করিলে, <sup>কাঠনধাব</sup>র্ত্তী কীট হইলা জন্মে। পরে শুকর, কমি, মদ্গু ও চণ্ডাল হইলা থাকে।

অক্ততা ও কৃতত্ব হইলে, দেই নরাধমকে নরকবিম্ক্তির পর**ই ক্লমি, কীট, পতত্ব, বু**শ্চিক, <sup>মৎস্ত</sup>, বাষ্ম, কৃষ্ম ও পুক্ষম তইয়া জ্মিতে তয়।

শত্রহীন পুরুষকে বধ করিলে, গদভ ; স্ত্রীহতা। ও শিশুহতা। করিলে ক্রমি ও খাদ্য হরণ করিলে মিকিল। হইরা থাকে। তন্মধ্যে খাদ্যের বিশেষ আছে, প্রবণ করেন। আর হরণ করিলে, মার্কার ইতিত হয়।

তিল্পিণ্যাক্ষিপ্রত অল হরণ ক্রিলে, মৃষিক্ষোনি প্রাপ্তি হয়। মৃতহ্রণে নকুল ও ছাগ-

माः नहत्त मन् अत्यानिना छ हरेश थारक। मएछ इतन कतिरन कांक छ मृगमाः न हत्त एछन -বোনিতে পতন হর। লবণ হরিলে জলকাক ও দ্বি-হরিলে কৃষি হইয়া থাকে। ছথ্যহয়ৰে वकरवानि आखि हत । देखन हत्रण कतिरल, देखनशांत्री की है, मधु हत्रण कतिरल मः म, शृश হুরণ ক্রিলে পিপ্রীলিকা, নিস্পাব হুরণ ক্রিলে জোষ্ঠা ও আসন হুরণ ক্রিলে ডিভির যোনি গমন করে। লৌহহর্তা কাক হয়, কাংসহর্তা হারীত হয়, রৌপাহর্তা কণোত হয়, স্মবর্ণ-ভাগুছর্তা कृमि हम, (शोज-(को(भम्न-इर्ज) क्रकत हम, (को(भग्नहर्ज) (कांयकांत की हे हम, व्यांत रुच्च वस्न, মুগুলোমজ বস্ত্র, বা অঙ্গুরোমজাত বস্তু অথবা পটুবস্তু হরণ করিলে ভক হইতে হয়। কার্পাস বস্ত হরিলে ক্রেক্সি ছর, বছলৈ হরিলে বক ছয়, বর্ণক ও শোভাঞ্জন হরিলে মযুর হয়। স্থান্ধ এব্য इतिल कुळुन्नती इस, शतिछ्ल इतिल मनक इस। आत्र फलइकी यन इरेमा बोरक, कार्ट्टर्स पून इहेबा थारक, भूष्णहर्छ। पविज हरेबा थारक, यानहर्छ। भन्नू हहेबा थारक। भाकहत्रण हाबीछ ও জলহরণে চাতক হইতে হয়। ভূমি হরণ করিলে রৌরবাদি যাবতীয় নরক ভোগের পর ষ্ণা-ক্রমে তৃণ, গুলা, লতা, বলী ও অক্ষার বৃক্ষ হইতে হয়। এই রূপে পাপের অনেক পরিহার হইলে, সমুখাবোনিলাভ হইয়া থাকে। অনস্তর আবার ক্রমে ক্রমে, কীট, পতঙ্গ, জলবিংক, মৃগ, গো, ফণাল ও পুরুদাদি বিবিধ যোনি লাভ হয়। তত্তৎ যোনিতেও আবার বধির বা পঙ্গু হইয়া জনিতে হয়। কিছা, কুষ্ঠ, যক্ষা, মুধবোগ, চকুবোগ, বায়ুবোগ ও অপস্মারাদি অভাভ বিবিধ রোগ ও শুদ্রবোনিতে আবার জন্মগ্রহণ করিতে হয়। রাজন ! গোও সুবর্ণ হরণ করিলেও, উল্লিখিত ক্রমে জন্ম হইয়াথাকে।

পরকীয়<sub>ু</sub>ভায়িাকে উপভোগার্থ অপরের হত্তে অর্পণ করিলে, নরকম্ক্তির পর যত ইইয়া খাকে।

অপ্রক্ষিত হতাশনে হোম করিলে, অজীর্ণরোগপ্রস্ত হইয়া, মন্দায়ি জন্ম হংসহ যাতনা ভোগ ক্রিতে হয়।

পরের নিন্দা ও মর্ম্ম পীড়ন করিলে, কৃত্র হইলে, পরদার ও পরস্থ হরণ করিলে, নিঠুর ও নির্দ্ধি ছইলে, আচার পরিহার ও দেবগণের নিন্দা করিলে, বঞ্চক ও কুপণ হইলে, নরহত্যা ও অন্তান্ত নিষিদ্ধ কার্য্য করিলে এবং তত্তৎ কার্য্যে প্রবৃত্তি দেখিলে, বৃদ্ধিতে হইবে, নর্কভোগের পরই তাহাদের পৃথিবীতে জন্ম হইয়াছে। আর যেথানে সর্কভ্তে দয়া, সৎকথন, পরলোকে ভঙ্জিদেশে কার্যান্ম্ঠান, সত্য, ভ্তগণের হিতার্থ বাক্যপ্রয়োগ, বেদের প্রামাণ্যস্থীকরণ, গুরু দেব ঋষি ও সিদ্ধানের পৃষ্ধা, সাধুসঙ্গ, সংকার্য্যংদেবন, মৈত্রী এবং অন্তান্ত সাধু ধর্ম ও সাধু অফ্ঠান, দেই থানেই বৃত্তিতে হইবে বে, স্বর্গভোগান্তে জন্ম হইয়াছে।

রাজন্! আমি সংক্ষেপে আপনার নিকট পাপোত্মা ও পুণ্যাত্মাগণের স্থায় কলভোগের বৃত্তার কীর্ত্তন করিলাম। আপনিও সমস্ত দেখিলেন। একংশ আম্ন, অভাত্র যাই। আপনার নরকদর্শন হুইল। অত্তর সাহান, অভাত্র গমন করিবেন।

পুর কহিলেন, অনস্তর সেই মহাপুরুব বমদ্তকে অগ্রে করিয়া গমনে উদ্যত ছইলে, তৎকণাৎ
তরৎ নরকনিবাসী ব্যক্তিগণ সকলেই একবারে আর্তনাদ করিয়া কহিতে লাগিল, মহারাজ!
প্রেল্ম হইরা, আর মুহুর্তমাত্র অপেকা করন। আপনার অলসলী বায়ুস্পর্লে আমাদের মন প্রাচ্ছ ও সর্বাঙ্গ হইতে পরিতাপ ও পীড়াবাধাও স্বতোভাবে অপহাত হইয়াছে। অতএব মহীপতে!
আমাদের প্রতি অহ্তাহ করন।

রালা তাহাদের এই কথা ভনিয়া, যমদ্তকে কহিলেন, আমি থাকাতে, কিওছা ইহাদের আহলাদ উপস্থিত হইতেছে ? আমি মর্ত্তালোকে এমন কি মহৎ পুণা করিয়াছিলাম, <sup>য়াহার</sup> প্রভাবে আমাকে দেখিয়া ইহাদের এইপ্রকার আহলাদ অমূভূত হইছেছে ?

ষমনৃত কহিল, আপনি অত্রে পিতৃগণ, দেবগণ, অতিথিগণ ও পোষ্যগণকে প্রানা করিয়,

ভাষার অবশিষ্ট আরে অকীয় শরীর পোষণ করিয়াছেন এবং সর্বাদ্টি তদ্গত্তিক হইরা ছিলেন।
এইজন্ত আপনার গাত্রসংস্গাঁ পবন আংলাদজনক হইরাছে এবং এইজন্ত পাণাম্মাদের যাতনাও
দ্র হইরা গিয়াছে। আপনি বিহিত বিধানে অখনেধাদি যক্ত সকলের অফুটান করিয়াছেন। সেইজন্তই আপনাকে দেখিয়া যমের অধিকৃত এই সকল যন্ত্র, শন্ত ও বায়স্গণ অভাবতঃ পীড়ন, ভেদন ও
দহন প্রস্তৃতি মহাছে:থের হেতুত্ত হইলেও, আপনার তেজে পরাহত ও মৃত্তপ্রাপ্ত হইয়াছে।

বাজা ছহিলেন, আমার ধারণাই এইরূপ যে, আর্ত্তগণের যাতনা দ্র করিলে, যে স্থ হর, স্থাবা ব্রহ্মানেকও সে স্থ লাভ হয় না। অয়ি ভলুমুথ! থদি আমার সায়িধ্যে থাকিলে, ইছালের যাতনা দ্র হয়, তাহা হইলে, আমি এই স্থানেই স্থাণুর ফ্লার অবিচলিত অবস্থান করিব।

যমদ্ত কহিল, রাজন্। আহ্নন, গমন করিব; নিজ পুণাবলে অর্জিত ভোগ দকল ভোগ করিবেন। এই নরকে থাকিয়া আর প্রয়োজন নাই।

রাঙ্গা কহিলেন, এই নরকবানীরা অতিমাত্র ছঃখিত হইয়াছে। ইহারা আমার সায়িধ্যে পাকিয়া, যতক্ষণ এইরূপ স্থা ভোগ করে, তাবৎ আমি যাইতেছি না। সেই পুক্ষের জীবনে ধিক্, যে ব্যক্তি শরণার্থী, আতুর ও আর্ক্তভাবাপর শত্রুকেও অনুগ্রপ্রানে পরাত্মুথ হইয়া গাকে। আর্ক্তর পরিত্রাণে যাহার প্রস্তুতি হয় না, যজ্ঞ, দান ও তপস্থাও তাহার কোন লোকেই স্থানান করে না। বালক, র্জ ও আত্রাদির প্রতি কঠিনচিত পুরুষ আমার মতে মাম্যুব নহে, রাক্ষ্য। এই পাপীগণের সিয়কটে থাকিয়া, যদি অগ্নিপরিতাপ, উৎকট গদ্ধ, বা অক্তবিধ নরক জনিত ছাথ ভোগ করিতে হয়, কিয়া স্থাপিগাসাসস্ভূত অতিমাত্র ক্লেশে মৃদ্ধ্বি সংঘটিত হয়, তাহাও আমার স্বীকার। কেন না, ইহাদের পরিত্রাণ করিলে, যে স্থাপ হইবে, তাহা স্থাপ্রথ অপেক্ষাও প্রেঠ, বোধ করি। অধিক কি, একমাত্র আমি ছঃথ ভোগ করিলে, যদি শত্র শত্রের স্থাণ্ডিন হয়, তাহা হইলে, আমার কি না প্রাপ্তি হইল ? অতএব তুমি অবিশ্বেই এখান হইতে চিলারা যাও।

ব্যাদ্ত কহিল, এই ধর্ম ও ইক্র আপনাকে লইতে আসিয়াছেন। অবশ্র আপনাকে এছাক হইতে যাইতে হইবে। সেইজন্মই বলিতেছি, গ্যান কর্মন।

তথন ধর্ম কহিলেন, তুমি সমাগ্রূপে আমার উপাসনা করিয়াছ। সেইজান্ত তোমাকৈ স্বর্গে লইয়া যাইব। এই বিমানে আরোহণ করিয়া, গমন কর, আর বিলম্ব করিওনা।

রাম্বা কহিলেন, ধর্ম ! নরকে এই সকল লোক সহস্র সহস্র যাতনা সহ্য করিতেছে এবং তজ্জ্ঞ নিতান্ত কাতর হইরা. আমাকে ত্রাণ কর, বলিতেছে। এইজগ্র আমি যাইব নাঃ

ইল্র কহিলেন, ইহার। পাপ করিয়াই, তৎপ্রভাবে নরক লাভ করিয়াছে। সেইরপ, তুমি পুণাকর্মবলে অর্গে গমন করিবে।

রাজা কহিলেন, ধর্ম ! আপনি যদি জানেন; ইক্ত ! আপনিও যদি জানেন, তাহাছইলে, বলুন, আমি কিপ্রমাণ পুণ্য সঞ্য করিয়াছি।

ধর্ম কছিলেন, রাজন্! সাগরের জলবিন্দু, আকাশের তারকা, বর্ধার ধারা, গঙ্গার সিকত। শেন অসংখ্যের, তোমার পুণ্যেরও সেইরূপ সংখ্যা করা বার না। অদ্য আবার এই নারকিদিগকে অফ্কম্পা করাতে, সেই পুণ্য শত সহস্র সংখ্যা প্রাপ্ত ইইল। অত্ঞাব ভূমি এখন অর্গভোগের জ্ঞা গমন কর। ইহারা নরকে থাকিয়া, অকর্মজ পাপের কয় করক।

বাজা কহিলেন, যদি আমার সংসর্গে ইহাদের উৎকর্ষণাভ না হর, তাহাহইলে, লোকে আর কিরপে আমার সহবাসে উৎস্ক হইবে ? অতএব ত্রিদশাধিপ ! আমার যে কিছু পুণ্য আছে, তাহার প্রভাবে এই যাভনাগ্রন্ত পাপিগণ নরক হইতে মৃক্তিলাভ করক।

ইক্স ক হিলেন, রাজন্। এই কার্য্য করাতে তোমার অর্গ অপেকাও উচ্চতর লোকণাত হইন। এই স্কৃণ পাপীও নরক হটতে মুক্তিনাত করিল, অবলোকন কর।

পুত্র কহিলেন, তথন রাজার উপরি পুল্বৃষ্টি হইতে লাগিল। এবং ইস্ত তাহাঁকে বিমানে করিয়া, অর্গে লইয়া গেলেন। ঐ সময়ে আমি অস্তাস্থ নারকীর সহিত নরক্ষাতনা হইতে মুক্ত হইয়া, অঅ কর্মের ফলাফুলারে ভিন্ন ভিন্ন যোনিতে সমুৎপন হইলাম।

দিজসত্তম ! এইরপে এই আমি আপনার নিকট সম্দার নরক বর্ণনা করিলাম। যে যে পাপে যে যে যোনিপ্রান্থি হর, যাহা পূর্বে আমি স্বরং দেখিয়াছি, তাহাও আপনাকে বলিলাম। আমার এই জ্ঞান দিব্য-প্রভাব-সম্ভাবিত ; স্থতরাং কোন মতেই মিথ্যা নহে। অভঃপর আপনার নিক্ষ আর কি বলিব, আদেশ করুন।

है जि नवक वर्गन नाम शक्षम म स्थाप ।

# ষোড়শ অধ্যায়।

পিতা কহিলেন, বৎস! তুমি আমার নিকট সংসারের প্রকৃত অবহা কীর্ত্তন করিলে। এই সংসার ঘটায়ন্ত্রের ছার এবং অতীব হেয়।ইহা যে এইরূপ, তাহা বিলক্ষণ জানিলাম। এখন জিজ্ঞাসা করি, সংসারের যখন এইরূপ ব্যবহা, আমার কিরপ অফুষ্ঠান করা বিধের ? পুত্র কহিলেন, যদি কোনরূপ সন্দেহ না করিয়া, আমার কথায় শ্রন্তা করেন, তাহাহইলে, গার্হহ্য ত্যাগ করিয়া বানপ্রস্থারাণ হউন। বানপ্রস্থ অবলম্বন করিয়া, অমিহোত্র পরিত্যাগ ও আত্মাতে আত্মাকে সন্নিহিত করত ছন্থানি, পরিপ্রহহীন জিতাত্ম ভিকুও অতন্ত্রিত হইয়া, একদিন অন্তর ভৌজন করুন। তদবহায় যোগপরায়ণ হইয়া, বাহ্জানবিবর্জিত হইলে, যাহা ছঃখরূপ মহারোগের মহৌষধ, বাহা মুক্তির হেতু, যাহার উপমা ও নির্দেশ হয় না এবং যাহা সর্ক্রক্ষবিবর্জিত, সেই ব্রহ্মযোগ লাভ করিবেন। যাহার সংযোগ হইলে, পুনরায় ভূতের সহিত আর আপনার যোগ হইবে না।

পিতা কহিলেন, বংস ! অতঃপর, বাহা মৃক্তির হেতু, যেই যোগ বর্ণনা কর। উহা প্রাপ্ত হৈলে, পুনরায় ভূতের সহিত সংযোগ বশতঃ ঈদৃশ ক্লেশ আমাকে ভোগ করিতে হইবে না। দেখ, আমি ঐ বোগে যুক্তিত হইলে, আমার আত্মা আর সংসারবন্ধনে বন্ধ হইবে না। অধুনা ভূমি দেই যোগ কীর্ত্তন কর। বংস ! বলিতে কি, সংসাররূপ স্থোর প্রথর কিরণদাহে আমার দেহ মন উভয়ই দথ হেইরাছে। ব্রহ্মজ্ঞানরূপ সলিনসংযোগে স্থাভল বাকাবারি হারা আমারে অভিবিক্ত কর। অবিদ্যারূপ ক্ষক্ষপর্প দংশন করিয়া, বিষবেগে আমাকে অভিভূত ও আমার মৃত্যু সংঘটিত করিয়াছে। তুমি এখন স্বাক্যরূপ অমৃত পান করাইয়া, আমারে পুনর্জীবিত কর। আমি পুত্র, কলত্র, গৃহ, ক্লেত্র ও মমত্বরূপ নিগড়ে সাভিশ্য ক্লিই হইয়াছি। ত্রা করিয়া, সকল লোকের প্রাথনীয় সন্তাববিজ্ঞান সম্ক্রিটন হারা আমাকে মৃক্ত কর।

পুত্র ফছিলেন, পুর্বে অলক জিজাদা করিলে, ধীমান্ দ্বাত্ত্রের তাঁহাকে সমাগ্রপে বে যোগ উপদেশ করেন, বিস্তারপূর্বক বলিতেতি, প্রবণ করুন।

শিতা কছিলেন, দ্বাত্তায় কাহার পুত্র ? কিরুপেই বা যোগ উপদেশ করেন ? আর অনর্কই বা কে, বিনি তাঁহাকে যোগ ভিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন ?

পুত্র কহিলেন, কুলিকবংশীর কোন ব্রাহ্মণ পূর্বে প্রতিষ্ঠাননামকপুরে বাস করিতেন। তিনি
অক্ত অব্যাহত পাপে কুর্মরোগে আক্রান্ত ও অভিত্ত হন। তদীর পত্নী তাদুপ অস্পুত্র রোগাত্র
বানীকে পাদাভ্যক, অক্সংবাহন, স্নান, আচ্ছাদন ও ভোজন, প্রোম্তারিকরণ, পুরীবপ্রকাশন
ও শোণিতপ্রবাহসংশোধন, নিজ্জনে উপচরণ, প্রিয়স্ত্রাবণ, ইত্যাদি বিবিধ উপায়ে সর্বপ্রকারে
দেববং অক্তনা করিতেন। তিনি মতীব বিনীতভাবে সর্বাদ প্রকাপ সেবা করিণেও, প্রাহ্মণ নির্দ্

রতা ও অতীবপ্রতিও কোপনস্বভাব বশতঃ তাঁহাকে নিরন্তর অনুযোগ করিতেন। পত্নী তাহাতে কোনরূপে বীতরাগা না ইইরা, প্রেণতিবিধানপুরংসর সাক্ষাৎ দেবতা জ্ঞান করিতেন। এমন কি, কুটরোগসংসর্গে অতীব বীভৎসাক্ষতি হইলেও, তাঁহাকে সর্বাপেকা শ্রেষ্ঠ ভাবিতেন।

চলংশাক্ত না আক্রণেড, একদা সেই ব্রহ্মিণ স্থাকে কহিলেন, আমি রাজ্মার্নে দেই গৃহস্থিত।
বে বেস্তাকে নে দিন দেখিরাছিলাম, তুমি আমাকে তাহার নিবানে লইয়া চল। অধি ধর্মকে !
তাহার রূপ আমার হৃদরে অগিতেছে। অতএব তাহার সহিত আমার সংযোগসাধন কর।
আমি স্র্যোদরসমরে সেই বালাকে দেখিয়াছিলাম। এখন রাজি উপস্থিত। দর্শন করিয়া
অবধি সে আমার হৃদর হইতে কোন মতেই অপক্তা হইতেছে না। আহা, তাহার নিতত্ব কি
পীবর! প্রোধরমূগল কি পীনভাবাপর! সর্বাল কি সৌলর্য্যসম্পর! শরীর কি কুশভাববিশিষ্ট!
যদি সে আমাকে আলিঙ্গন না করে, তাহাহইলে, তুমি আমাকে মৃত দেখিবে। কেননা, কাম
বভাবতঃ অতি প্রতিক্ল; সেই বেঞাও বছলোকের প্রাথনীয় সামগ্রী; আমারও চলিবার শক্তি
নাই। এই কারণে আমার বিষম সঙ্কট বোধ হইতেছে।

স্থামী বিষম-শরের শর্মন্ধানের পথবর্ত্তী হইয়া, এবিষধ বচনরচনায় প্রার্ত্ত হইলে, তদীর পদ্দী তাহা কর্ণগোচর করিলেন। তিনি মহাভাগা ও পতিব্রতা ছিলেন এবং সৎকুলে জ্ঞান্থাছিলেন। মৃত্রাং স্থামীর মনজ্ঞাইবিধান করাই একমাত্র কর্ত্তবা, ভাবিয়া, তৎক্ষণাৎ বন্ধপরিকরা হইলেন এবং বহুপরিমাণে শুল্ক প্রহণ ও স্থামীকে স্করে আরোপণ করিয়া, মৃত্রগমনে প্রস্থান করিলেন। তথন রাত্রি, আকাশ মেঘে আছের। এক একবার বিহাৎ প্রকাশ হওয়াতেই রাজ্পথ দেখা ঘাইতেছে। তিনি স্থামীর প্রিয়কামনাবশবর্ত্তিনী হইয়া, তাদৃশ সময়ে প্রস্থান করিলেন। চুরি না করিলেও, চৌরসল্পেহে মহর্ষি মাওবাকে শ্লে বিদ্ধ করিয়া, দেই পথে স্থাপন করা হইয়াছিল। তাহাতে তিনি অতিমাত্র হংখার্ত্ত হালেন। ত্রাহ্মণ পত্নীস্বন্ধে আরোহণ করিয়া, আহ্বলবাকের দেখিতে না পাইয়া, যাইতে যাইতে পাদ ঘারা ঋবিকে পরিচালিত করিলেন। পাদাবমর্বণবশতঃ মহর্ষি মাওবা কৃত্ত হইয়া, তাহাকে কহিলেন, আমি আজন্ম হংখ ভোগ করিতেছি। যে ব্যক্তি আমাকে এ সময়ে পাদপ্রহারপ্রংসর পরিচালিত করিয়া, আরও কই প্রদান করিল, সেই পাপান্ধা নরাধম স্থ্যোদিল্যমাত্র অবশ হইয়া, প্রাণপরিহার করিবে, সন্দেহ নাই। ভাস্করের দর্শনমাত্র সেবিনই হইবে।

ত্নীয় পদ্মী দেই অতিদাক্ষণ শাপ প্রবণ করিরা, ব্যণিতা হইয়া, কহিলেন, সুর্ব্যের আর উদর হইবে না। তথন সুর্ব্যের উদয় না হওয়াতে, বহুদিন কেবল রাজিই বহুল। তদ্দনিনে দেবতারা ভীত হইয়া, ভাবিতে লাগিলেন, স্বাহা, তথা, ববট্কার ও বেদাধ্যয়ন স্কলই লোপ পাইল; স্তরাং সমস্ত জগৎ আর ক্ষয় না পাইয়া, কিরপে থাকিতে পারে? অহোরাজির ব্যবস্থা না থাকিদে, মাস ও ঝতুর ক্ষয় হইবে। মাস ও ঝতুর ক্ষয় হইলে, দক্ষিণ ও উত্তরভেদে অয়নবয়্ধও আর বিদিত হইবে না। অয়ন-বিজ্ঞান-ব্যতিরেকে সংবৎসর কিরপে জানা ঘাইবে? স্বহসর না জানিশেই বা অফ্রবিধ কলি জ্ঞাত হইবে কিরপে। পাতিব্রতা বখন বলিয়াছেন, তখন দিবাক্ষর কথনই উঠিবেন না। স্ব্যা না উঠিলে, সানদানাদি ক্রিয়ার ব্যাঘাত ও হোমাদিও লোশ প্রাপ্ত হইবে। হোমাদির অভাবে যজ্ঞাভাব সংঘটিত হইবে। হোম ব্যতিরেকে কথন আমাদেরও পরিকৃত্তি হয় না। মহুয়োরা বথাবিহিত যজ্ঞাগ হারা আপ্যায়িত করিলে, আমরা শস্তাদিকির জন্ম বৃষ্টি হয় না। মহুয়োরা বথাবিহিত যজ্ঞাগ হারা আপ্যায়িত করিলে, আমরা শস্তাদিকির জন্ম বৃষ্টি হয় না। আম্বারা করে। আমরা তাহাদিগকে অনুস্থীত করি। শস্ত সকল নিম্পাদিত হইলেই, মনুয়োরা বৃষ্ক করিয়া, আমাদের উপাসনা করে। আমরা তাহাদের যজ্ঞাদিতে পৃত্তিত হইরা, তত্তংকামনা পরিপ্রণ করিয়া থাকি। আমরা অধোদিকে ও মহুয়োরা উর্কদিকে বর্ষণ করে । আমরা বেমন ক্ষর্বণ করি ত্রায়া তেমন হবি বর্ষণ করিয়া থাকে। বাহারা আমাদিগকে নিত্য নৈমিতিকী কিয়া উৎসর্গ না করে এবং যে সকল ভ্রায়া যজ্ঞভাগ বয়ং ভোগ করিয়া থাকে, আমরা

ভাহাদের বিনাশ জন্ত স্থা, জন, ক্ষিতি ও বায়ু বিশেষরূপে দূষিত করিয়া থাকি। সেই মুদ্ধ কর্মীরা উলিখিত দ্বিত জনাদি সেবন করিলে, অতীব ভীষণ উপদর্গ সকল প্রাতৃত্ত হইঃ ভাহাদের মৃত্যু সমাহিত করে। বাহারা আমাদিগকে সম্ভই করিয়া, ভাহার অবশেষ স্বয়ং ভোকরে, আমরা সেই সকল পুণ্যাত্মার বাসের জন্ত পবিত্ত লোক সকল স্টে করিয়া থাকি। যা হউক, ক্রিয়াকণাপাদি লোপ পাইলে, স্টেরক্ষার সন্তাবনা কোথায় ? কির্পেই বা আবা স্থায়ের প্রকাশ সাধন করা বাইবে। ভাহারা প্রস্পর এইরূপ বলিতে লাগিলেন।

তাঁহারা সকলে একত মিলিত হইনা, যজলোপসন্তাবনায় পঞ্চলর এইরূপ বলিতেছেন, তা শ্রবণ করিনা, প্রজাপতি কহিলেন, দেবগণ! তেজের হারা তেজের ও তপ্সা হারাই তপ্তা উপশম হইনা থাকে। অতএব তোমরা আমার কথা শ্রবণ করে। পতিব্রতার মাহাম্মুপ্রভাগ স্থ্য উদিত হইতেছেন না। তাঁহার উদ্য় না হইলে, ভোমাদের ও মন্থাগণের ক্ষতি হইবে অতএব তোমরা অত্রির সহধর্মিণী তপন্থিনী ও পাতিব্রত্যশালিনী অনস্থাকে স্থ্যের উদ্যাধ ক্ষত প্রসাদিত করে।

পুত্র কহিলেন, তথন দেবতারা গমন করিয়া, তাঁহারে প্রসন্না করিলে, তিনি তাঁহাদিগা বের লইতে কহিলেন। দেবতারা এই বর চাহিলেন, পূর্বের ছায়, আবার দিন হউক। আনহা কহিলেন, পতিব্রতার মাহান্মেরের যেন কোন প্রকারেই হানি না হয়। এইজভ তাঁহার সন্মারকা করিয়া, আমি দিন স্টে করিব। যাহাতে পুনরায় অহোরাত্রের ব্যবস্থা হয় এবং যাহাত দেই সাধ্বীর আমীও না মরেন, আমি তাহাই করিব।

অনস্থা দেবতাদিগকে এইপ্রকার কহিয়া, সেই পতিত্রতা ত্রাহ্মণীর আলয়ে গমন করিলেন এবং তাঁহার নিজের ও স্থানীর মঙ্গল ও ধর্ম জিজ্ঞানা করিয়া কহিলেন, অয়ি কল্যাণি। স্থানী বদনসন্দর্শনে তোমার আনন্দের স্থার হয় ৪ সমুদ্য দেবতা অপেকাও স্বামীকেই তোমার অধি বলিলা মনে হল ? আমি স্থামিদেবা দহায়েই মহাফল প্রাপ্ত হইলাছি এবং তৎপ্রভাবেই সম্বা কামনা-সিদ্ধিসহকারে আমার অমঙ্গল সকলও দুরীভূত হইয়াছে। অয়ি সাধিব । মানুষের পাঁচটী খ সর্বত্যেভাবে শোধ করাই কর্ত্ব্য এবং আপনার বর্ণধর্মানুলারে ধন সঞ্চয় করা বিধেয়। এ র ৰে ধন উপাৰ্জ্জন হটবে, তাহা বিধানামুদারে সংপাতে ক্সন্ত করিবে; সর্বন্দা সত্যশীল হটবে, খ্য হইকে; তপস্তা, দান ও ধ্যান করিবে: রাগছেষবিবজ্জিত হইয়া, শান্তনির্দিষ্ট ক্রিয়াকলাপের অছ ষ্ঠানে প্রবন্ত হইবে। ঐ সকল ক্রিয়া স্বীয় শক্তি অনুসারে প্রদাসহকারে প্রতিদিন সম্পন্ন করিবে লোকে মহাক্লেশের অমুষ্ঠান করিলে. ক্রমে ক্রমে প্রাকাপত্যপ্রমুথ স্বজাতিবিহিত লোক সকা লাভ করে। কিন্তু স্ত্রীজাতিকে এরপ ক্লেশ স্বীকার করিতে হর না। সে একমাত্র স্বামিনেই সহারেই পুরুষের অতিকটে অর্জিত পুণ্যের অর্দ্ধাংশভাগিনী হইয়া থাকে। স্ত্রীদিগের পুথগ্রি युक्त वा आह वा जिलवामानिक अध्यान कतिए हम ना। छारात्रा चामिरमवा चातारे छछ । লোক সকলে গমন করিয়া পাকে। অতএব সাধিব! স্বামীই বধন এরপে একমাত গতি, তথ केशित देशामनाइ मर्सथा मत्नानित्यां कतित्व। चामी मर्द्धियास्मात्त्र त्ववंशावत्र, शिक्शावत्र অতিধিগণের যে অর্চনা করেন, নারী কেবল অন্য চিতে স্বামীর সেবা করিলেই. তাহার অর্চন প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

অনস্বার এই কথা শুনিয়া, আদরসহকারে তাঁহার প্রতিপূকা করিয়া, রাহ্মণপত্নী প্রহার করিলেন, আমি অদ্য ধঞা ইইলাম, অমৃগৃহীতা ইইলাম এবং দেবগণেরও সাক্ষাৎকারে সমাগতা হইলাম। বেহেত্, অভাবত:-কল্যাণগুণশালিনী আপনি আমার প্রদাধর্ম বর্দ্ধিত করিয় দিতেছেন। আমিও ইহা আনি, যে, পতিসেবার সমান নারীগণের ছিতীয় গতি নাই। আর তাঁহার প্রীতিসাধন করিলে, উভয় লোকেই উপকারলাভ ইইয় থাকে। অয় য়শবিনি! নারীয় বামীই দেবতা; স্মৃতরাং আমী প্রস্কু হইলে, তাহার উভয় লোকেই স্থাসজ্টন হয়। মহাভাগে

অর্ন। আপনি বলুন, আমাদের গৃহে কিজন্ত আদিয়াছেন ? আমি বা আমার স্থামীকে আপনার কি করিতে ইইবে ?

অনস্থা কহিলেন, তোমার বাক্যে দিন রাত্রির লোপ ও সমন্ত ক্রিয়াকলাপ রহিত হওয়াতে, এই দেবতারা দকলে তুঃধিত হইয়া, আমার সকালে আদিয়া, যাদ্রা করিতেছেন, আবার পুর্বের আর, সথপ্তিত বিধানে দিন রাত্রির ব্যবহা হউক। আমি দেইজগুই এথানে আদিয়াছি। আমার কথা গুন; দিনের অভাবে সমুদায় যাগ যজ্ঞের অভাব হইয়াছে। বাগ যজ্ঞের অভাবে দেবগণের পুটর ব্যাঘাত ঘটিয়াছে। দিনের উচ্ছেদ হওয়াতে, সমুদায় কর্ণেরই সমুছেদ হইয়াছে। কর্ণের সমৃছেদ হইলে, আনার্টিতে জগতের উছেদ হইবে। অতএব ভোমার যদি জগংকে এই আপদ হইতে উদ্ধার করিবার অভিলাম থাকে, তাহাহইলে, লোক সকলের প্রতি প্রসরা হও; পূর্ববং দিবাকরের উদয় ইউক।

্রান্দণী কহিলেন, মহাভাগে! মহর্ষি মাগুব্য অতিকোধের পরতন্ত্র হইবা, মদীয় ঈশ্বর্ত্তরপ্রামিক শাপ দিয়াছেন, স্থ্যের উদয় হইলেই, তুমি প্রাণত্যাগ করিবে।

অনস্রা কহিলেন, বদি তোমার সমতি হয়, তাহাহইলে, জামি তোমার স্বামীকে পূর্ববং দেহযুক্ত ও নবকলেবর করিব। অমি বরবর্ণিনি ! আমি সর্বতোভাবে পতিত্রতা রমণীগণের মাহা-ব্যোর পূলা করিয়া থাকি। এইজন্তই তোমার সম্মাননায় প্রবৃত্ত হইয়াছি।

প্ত কহিলেন, তথন সেই আহ্মণপত্নী সমতা হইলে, তপস্থিনী অনস্মা আর্চ্য উদ্যুক্ত করিরা, স্থাকে আবাহন করিলেন। দশদিন কেবল রাত্রিই ছিল। অনস্মার আহ্বানরাত্র দিবাকর প্রকৃত্ত-পদজ্পতিম অরণকলেবরে পূর্ণমণ্ডলে উদয়াচলশিথরে আরোহণ করিলেন। তাহার অব্যবহিত প্রকণেই সেই আহ্মণীর স্থামী যেমন প্রাণশ্ভ হইয়া, প্থিবীপৃষ্ঠে পতিত হইলেন, তিনিও তেমনি ধরিয়া কেলিলেন।

তথন অনহার কহিলেন, ডাজে! শোক করিও না। তুমি এখনই আমার আমিদেবার ও তপভার বল দেখিবে। রূপ, চরিত্র, বৃদ্ধি ও মিইবাক্যানি অভাত্ত স্পূণ্ণ কোন বিষয়েই কথন যদি আমি আমী অপেকা অভা পুক্ষকে শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিয়া না থাকি, তাহাহইলে, সেই সভাবলে, এই রাহ্মণ ব্যাধিমুক্ত ও পুনুর্বা হইয়া, ভার্যার সহিত শত বংসর জীবিত থাকুন। যদি আমি আমীকেই পরমদেবতা জ্ঞান করিয়া থাকি, তাহাহইলে, সেই সভাবলে, এই রাহ্মণ ব্যাধিমুক্ত ও পুনুর্বীবিত হউক। আমি যদি নিয়ত কায়মনোবাক্যে আমীরই সেবা করিয়া থাকি, সেই সভাবলে, এই রাহ্মণ পুনুর্বীবিত হউক।

পুত্র কহিলেন, এইরূপ বিশিষাত্র, ব্রাহ্মণ ব্যাধিমুক্ত ও পুন্যুবা হইয়া, অজর অমরের ভার, শুম্বার গৃহ দৌন্দর্য-আলোকে উদ্ভাগিত করিয়া, উথান করিলেন। আকাশ হইতে পুশ্বর্ষণ ও বিবিধ দিগ্রীদিত্রখ্বনি ইইতে লাগিল। দেবতারা নিরতি আহ্লোদসহকারে অনস্থারে কহিলেন, ক্ল্যাণি!বর লও। তুনি দেবগণের পরম উপকার করিয়াছ, এইজন্ত দেবতারা বর দিতেছেন।

অনস্যা কহিলেন, যদি পিতামহপ্রমুখ অমরবর্গ প্রদন্ন ইইরা, বরদানে উৎস্থক হইরা থাকেন এবং আমাকে যদি বরদানের যোগাপাত্রী বোধ করেন, তাহাহইলে, এই বর দিন, ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মংখের আমার পুত্র হউন। আর আমি যেন স্থামিরই সহিত মুক্ত হইরা, স্কল ক্লেশ পরিহার করি।

তথন একা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর প্রম্থ অমরবর্গ, তাহাই হইবে, বলিরা, তাঁহার সংর্থনা করিয়া, ব্যু স্থানে প্রতিপ্রস্থান করিলেন।

ইতি অনস্থার বরপ্রাপ্তি নাম বোড়শ অধ্যায়।

### मक्षमणं व्यथाप्र।

পুত্র কহিলেন, অনন্তর বহুকালাবসানে ব্রহ্মার দিনীয় পুত্র অতি আপনার লোভনীয়াইছি আনিক্ষিতা ভার্যা অনস্থাকে অভ্নাতা দেখিয়া, সকাম হইয়া, মনে মনে জলনা করিলেন। প্রক্র অভিধানসমন্ত্র তাঁহার বিকার সন্তৃত হইল। বেগবান বায় তাহাকে উর্জ ও তির্বাগ্দিকে বহু করিলে, সেই ব্রহ্মার প্রাথম জালার ক্র জিলার কালার ক্র জিলার ক্র ক্র প্রাথম করিলেন। তাহাকে গ্রহণ করিল। তাহাতে সকল প্রাণীর আয়ুর আধারস্বর্জ চক্র অত্রির মানস পুত্র রূপে উৎপন্ন হইলেন। প্র সমন্ত্র মহাত্মা বিষ্ণুও তৃত্ত হইয়া, অকীর দারী হইতে সমুপোদনপূর্বাক সন্ত্রহার দিবলৈও দ্বাত্রেয়কে জন্মদান করিলেন। ফলতঃ বিষ্ণু এই দ্বাত্রেয় নামে বিখ্যাত হইয়া, অত্রির দিবলৈই জননীর গর্ভ হইতে বিনির্মত হইলেন। যেহেতৃ ক্রেন। দ্বাত্রেয় কৃপিত হইয়া, সপ্তম দিবলেই জননীর গর্ভ হইতে বিনির্মত হইলেন। যেহেতৃ হৈছ্বপতি উল্লত ও উৎপথ প্রস্ত হইয়া, অত্রির অবমাননায় উদ্যত হইয়াছিল। তদ্দেনে তির্দ্ধিত ও গর্ভবাসজনিত নিরতিশন্ধ আয়াস-হংথে সমর্বসমন্বিত হইনা, তৎক্ষণাৎ হৈহয়পতিবে করে করিতে ক্রতস্ক্র হইলেন।

অনম্বর তমোগুণোজিক হ্র্কাসা কর্জের অংশে অতির ঔরসে জন্মগ্রহণ করিলেন। এইরণে জনস্থার গৈর্ভে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও কর্জের জংশে তিন পুত্র জনিলেন। তন্মধ্যে ক্রন্ধা সোম রণে বিষ্ণু করাত্রের রূপে ও মহাদেব হর্কাসা রপে দেবগণের বরদান প্রযুক্ত অতিপত্নীর গর্ভে অবতর করিলেন। প্রজাপতি সোম শ্বনীয় স্থীতণ রশ্মি হারা বীরুধ, ঔষধি ও মানবদিগকে সর্বলা আগ্যারিত করিরা, শর্গে বিরাজমান হইলেন। দতাত্রের হুই দৈত্যদণ দলন ও শিইগণে অন্থগ্রহ বিতর প্রংসর প্রজালোকের পালন করিছে লাগিলেন। ইনি বিষ্ণুর অংশ জানিবেন। আর উছ্ব চিক্ত, উদ্ধৃতদর্শন ও উদ্ধৃত্রবাক্য ভগবান্ অল হ্র্বাসা রোজম্বর্তি ধারণ করিরা, লোকের অবমান কর্ত্তা হুরাশ্মাদিগকে নির্দ্ধি করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। এইরপে প্রজাণতি চক্র সোমন্দ্র, দতাত্রে বোগস্থ হইরা, বিষর ভোগ ও হ্র্বাসা পিতা মাতাকে ত্যাগ করিয়া উন্মন্তনামক অন্থ্যম ব্রেড অনুসরণপ্রসক্ষে পৃথিবী পর্যান করিতে আরম্ভ করিলেন।

ভাত ! দন্তাত্ত্রের দর্বদাই ঋষিকুমারগণে বেষ্টিত হইমা, যোগসাধন করিতেন। সংসারগদ পরিহারকামনার বছকাল সরোবরসলিলে মগ্ন ইইয়া রহিলেন। তথাপি ঋষিকুমারেরা অতী প্রির্দর্শন মহাত্মা দন্তাত্ত্রেরকে ভ্যাগ করিলেন না। সরোবরতীর আত্রর করিয়া রহিলেন। দে মানের শত্রবর্ধ অতীত হইলেও, যথন ঋষিকুমারেরা সকলেই তংপ্রতি প্রীতিবশতঃ উাহাকে ভ্যান করিয়া, দেই সরজীরেই বাস করিতে লাগিলেন, তথন দন্তাত্ত্রের দিব্যাত্বরধারিণী, চার্মপীনিত্থিনী, কল্যাণী রমণী সমভিব্যবহারে জল হইতে উত্তরণ করিলেন। তাহার অভিপ্রার এট প্রীসঙ্গী দেখিলে, ইহারা আমাকে ভ্যাগ করিতে পারেন। তাহা হইলে, আমি সর্বর্ধা সঙ্গা হইয়া থাকিব। কিন্তু ভাঁহার দে করনা র্থা হইল। ম্নিপুত্রেরা ভাহাঁরে ব্রীসঙ্গী দেখিয়াল ভ্যাগ করিলেন না। তথন তিনি দেই ত্রীর সহিত মদ্যপানে প্রবৃত্ত হইলেন। তিনি সত্রী স্বাপানে রত; গীত, বাদ্যাদি ও বনিতা ভোগ সংসর্গে দ্যিত এবং সেই বনিতার সহিত বীতং ব্যাপারে সংসক্ত হইলেও, ঋষিকুমারেরা ভাঁহাকে ভ্যাগ করিলেন না। তাহারা ভাবিলেন, দন্তাত্রে মহাপুক্রব; যোগীগণেরও নিয়ন্তা এবং কোন ক্রিয়ারই ব্যব্দির বা বাধ্য নহেন; স্থতরাং মদ্যপা বা ত্রীর সহিত অবস্থান করিলেও, তাহার দোকস্পর্শের কোনই সম্ভাবনা নাই। চণ্ডালের গ্রাম প্রবৃত্তি বায়ু যেমন দ্যিত হয় না, তিনিও তেমন স্ব্রাপান ও ত্রীর বহিত অবস্থান করিলেও বায়ু যেমন দ্যিত হয় না, তিনিও তেমন স্ব্রাপান ও ত্রীর বহিত অবস্থান জ্যার ব্যহ্ন করিলেও অবস্থান ল

কোনকপে দ্যিত না হইরা, তপভা করিতে লাগিলেন। তিনি যোগবিৎ ও যোগীখর এবং ুবোগীরাও মুক্তিকামনায় তাঁহার চিন্তা করিয়া থাকেন।

ইতি দত্তাতেয়ের জন্মনাম সপ্তদশ অধ্যায়।

# অফীদশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, অনন্তর কিল্লংকালপর্যাবদানে রাজা কতবীর্য্যের পরলোক ইইলে, মন্ত্রিগণ, পুরেছিতবর্গ ও পৌরগণ সমবেত ইইলা, তদীয় আত্মজ অর্জ্জ্নকে অভিষেকার্থ আইবান কবিলেন। অর্জ্জুনকে বিলেন, মন্ত্রিগণ রাজত্বের পরিণাম নরক। আমি উহা গ্রহণ করিব না। দেখ, রাজা যেজ্জুকর লন, তাহা নিস্পাদন না করিয়া, দকলই পণ্ড করেন। বণিকেরা রাজাকে স্বস্থ পণ্ডের নাদশ ভাগ দান করিয়া, পথিমধ্যে রাজার নিযুক্ত অর্থরিকী পুরুষগণ কর্ত্ত্ক দহাইত্তে রক্ষিত ইইলা গাতারাত কবে। গোপগণ ও ক্ষিগণ স্থত, তক্র ও শস্তাদির ষষ্ঠভাগ প্রদান করে। তাহারা ফি তাহা অপেক্ষাও অধিক দান করে এবং রাজাও যদি তাহা গ্রহণ করেন, ভাহাইলৈ তাহার চুরি করা হয় এবং ইষ্টাপুর্ব্ত বিনষ্ঠ ইইলা থাকে। পুনশ্চ, প্রজারা যদি রাজাকে বৃত্তি দিলা অন্ত কর্ত্ত্ব পরিপালিত হয়, ভাহা ইইলে, গ্রহণে ষষ্ঠ অংশ গ্রহণ হল্প রাজার অবস্থা নরক লাভ ইইলা থাকে। প্রাচীন পণ্ডিতেরা ঐরপ ষষ্ঠভাগকে রাজার রক্ষণবেতন স্থাকা নির্মণিত করিয়াছেন; স্বত্তরাং প্রজাকে চৌর হস্তে রক্ষা করিতে না পারিলে, রাজাকে সেই চৌর্যাজনিক পাণে পতিত ইইতে হয়। অত এব আমি যদি তপ্যা করিয়া, দকল লোকের অভিলয়ণীর ঘোগির প্রাপ্ত ইইতে পারি, তাহাইইলে, পৃথিবীতে আমিই অন্বিতীয় শন্ত্রধর রাজা ইইল। আমার বিশিষ্ট্রপ পৃথিবীপালন-সামর্থ জন্মেরে। সমৃদ্ধিরও একশেষ ইইবে। অতএব রাজা ইইয়া পাপভাণী ইইব না।

গর্গনামে মহাবৃদ্ধি বয়োবৃদ্ধ ম্নিশ্রেষ্ঠ তাঁহার এইরূপ দৃচ্দস্কল্ল অবগত হইয়া, মন্ত্রিমধ্যে বলিতে লাগিলেন, যদি তুমি সমাক্রপে রাজ্য শাসন করিবার জন্ত, ঐরূপ রুতস্কল্ল হইয়া থাক, তাহাহইলে, আমার কুথা শুনিয়া, তদম্পারে অনুষ্ঠান কর। মহাভাগ দতাত্রেয় গিরিগুহা আশ্রম করিয়া আছেন। তিনি পৃথিবীর পরিপালক। তুমি কোনরূপ বিচার না করিয়া, তাঁহারই আরাধনা করে। সেই যোগী মহাভাগ দতাত্রেয় সর্বাত্র সমদর্শী ও সাক্ষাৎ বিষ্ণুর অংশ। জগতের পালনজন্ত পৃথিবীতে অবতীর্ণ হইয়াছেন। ইক্র ইহারই আরাধনা করিয়া, স্বনীয় পদ প্নর্বার অধিকার করিয়াছেন। ছরায়া দৈত্যেরা উহা হরণ করিয়া লইয়াছিল। তাঁহাদিগকেও ইক্র তদীয় অম্প্রহে বধ করিয়াছেন।

ষ্ট্র কহিলেন, দেবগণ প্রতাপবান্ দতাত্তেয়ের কিজন্ত স্থারাধনা করেন ? দৈতােরাই বাকিজন্ত ইন্তত্ত্বন করিয়া লয় ? ইন্তেই বাকিরণে পুনরায় তাহা প্রাপ্ত হন ?

গর্গ কহিলেন, দেব ও দানবগণের তুমুল যুদ্ধ উপস্থিত হইলে, জন্ত দৈত্যগণের ও দেবরাজ স্থরসকলের অধিনায়ক ইইগাছিলেন। তাঁহাদের যুদ্ধ করিতে করিতে দেবমানের এক বংসর গত
ইইল। তথন দেবগণ পরাভব ও দৈত্যগণ বিজয় লাভ করিল। বিপ্রচিত্তিপ্রমুধ দানবগণ
কর্ত্বক পরাজিত হওয়াতে, দেবগণ পলাগনে কতোৎসাহ ও শক্তক্ষে নিরুৎসাহ হইয়া, দৈত্য
নৈত্তের নিধন-দাধন-কামনার বালিথিল্য ঋষিগণের সহিত বৃহস্পতির শরণগ্রহণপুরংসর মন্ত্রণা
করিতে লাগিলেন।

র্হম্পতি কহিলেন, তোমাধিগকে ভক্তিসহকারে অত্তির পুত্র বিক্ততাচার, তপোধন, মহাত্ম।

লতাতেবের সভোষসাধন করিতে ইইবে। সেই বরদাতা তোমাদিগকে দৈতাবিনাশ অস্ত বর্ দিবেন। তথন তোমরা মিলিত হইরা, তাহাদিগকে বধ করিবে।

গর্গ কহিলেন, তাঁহারা এইপ্রকার কহিয়া সকলেই দন্তাত্ত্যের আশ্রমে গমন করিলেন। দেখি লেন, দেই মহাত্মা সাক্ষাৎ লক্ষ্মীর সহিত বিরাজমান ও অ্রাপানে সুংসক্ত রহিয়াছেন। গদ্ধব্যের তাঁহার উদ্দেশে গান করিতেছে। দেবগণ তাঁহার সকাশে সমাগত হটয়া, প্রথমে প্রণতি নিবেদন করিলেন। আনস্তর ভোক্ষ্য, ভোজ্য ও মাল্যাদি উপহার প্রদানপুরঃসর কার্যাসিদ্ধির জ্ঞা তাব করিতে লাগিলেন। তিনি অব্স্থিতি করিলে, তাঁহারা অব্স্থিতি করেন; তিনি গমন করিলে, তাঁহারাও গমন করিয়া থাকেন্; তিনি আসনে উপবেশন করিলে, তাঁহারাও স্মন করিয়া থাকেন্।

অনস্তর দতাত্ত্বের প্রণতিপরায়ণ দেবগণকে কংশিলন, তোমাদের অভিলাষ কি; যেজস্ত এই-রূপে আমার দেব। করিতেছ ?

দেবগণ কহিলেন, মুনিশার্দ্দৃল ! জন্তাদি দানবগণ ভৃভ্বাদি তৈলোক্য আক্রমণ পূর্ব্বক তাহা হরণ ও যজ্ঞভাগও সর্বতোভাবে অপহরণ করিয়াছে। অনঘ ! আমাদের পরিত্রাণ জন্ত ভাহাদের বধসাধনে আপনাকে মনোধোগী হইতে হইবে। আপনার প্রসাদ সহায়ে আমরা পুনরায় অর্গনাতের কামনা করি।

দত্তাত্রের কহিলেন, দেবগণ! আমি সর্ব্বদাই উচ্ছিষ্ট ও মদ্যপানে আসক্ত এবং আমার ইক্রিয়-গ্রামও বণীভূত নহে। অতএব আমার সাহাধ্যে কিরুপে তোমরা শত্রুলয়ের আশা করিতেছ ?

দেবগণ কহিলেন, আপনি জগতের নাথ ও সর্কাণা নিম্পাপ। কিছুতেই আপনার লিপ্তভাব নাই। বিদ্যার উদয়যোগবশে আপনার অন্তরাত্ম। প্রকালিত ও বিশোধিত এবং তৎসহকারে তাহাতে জ্ঞানরূপ দীধিতি সম্লিবিষ্ট হইয়াছে।

দত্তাত্রের কহিলেন, দেবগণ! সত্য বটে, আমি জ্ঞানযোগ প্রাপ্ত ও সমদর্শী হইয়াছি। কিন্তু এই স্ত্রীর সংস্পপ্রযুক্ত আমার পবিএতা ভ্রষ্ট হইয়াছে। সর্বাদা স্ত্রীসঙ্গ করিলে, দোনের উৎপত্তি হইয়া থাকে।

দেবপণ এইরপ অভিহিত হইয়া, পুনরায় কহিলেন, দ্বিজ্ঞেষ্ঠ ! আপনার এই স্ত্রী জগতের জননী ও পাপলেশ-পরিশ্রা। ফ্রেয়র কিরণ যেমন চঙালম্পর্শেও দ্বিত হয় না, ইইায়ও তেমনি কিছুতেই দোবোত্তব হইবার সভাবনা নাই।

গর্গ কহিলেন, দত্তাতের দেবগণের এই কথার হাস্ত করিয়া কহিলেন, যদি তোমাদের এই প্রকার ধারণা, তাহাইইলে, তোমরা অন্তর্গনিকে যুদ্ধন্ত আহ্বান করিয়া, আমার দৃষ্টিগোচরে এখানে আনমন করে। আমার বিলম্ব করিও না। আমার দৃষ্টিপাভরূপ ত্তাশনে তাহাদের বল ও তেজঃ একবারেই করে প্রাপ্ত ইইবে। তথন তাহারা সকলেই সংহারদশা লাভ করিবে।

দেবগণ তাঁহার এই কথা শুনিয়া, মহাবল দৈতাদিগকে যুদ্ধ করিবার জন্ত আহ্বান করিলে, তাহারা রোবভরে দেবগণের গোচরে সমাগত হইয়া, তাঁহাদিগকে আক্রমণ করিল। তথন দেবগণ ভয়াত্র হইয়া, শীঘ্রই সকলে একত্রে শরণপ্রার্থনায় দন্তাত্তেয়ের আশ্রমপদে উপনীত হইলেন। দৈতোরাও তাঁহাদিগকে প্রহার করিতে করিতে তথার প্রবেশ করিল। দেশিল, মহাবল মহাত্রা দ্বাত্রেয় এবং তাঁহার বামপার্খ আশ্রম করিয়া, সম্দায় জগতের বরণীয়া তনীয় ভার্যা লক্ষী বিরাজ করিতেছেন। তিনি সম্দায় ঘোষদ্পুণে আল্ড হা। তাহারা সেই পীন-শোণিরোধরা, ইন্দ্নিভাননা, নীলোৎপললোচনা, স্বাজনাভনা, স্মধুরবচনা লন্ধীকে দর্শন করিয়া, কাননার বন্ধীভূত ও অভিমাত্র অভিভূত হইয়া, উদ্ধুত মদনবেগ সম্বরণ সমর্থ হইল না। একবারেই অধার হইয়া পড়িল। জনস্ত্র সেই পাপে হততেজাও মোহাছেয় হইয়া, তাহারা দেবগণকে ত্যাগ করিয়া, তাহাকে হরণ করিবার অভিগাবে পরস্পর সংসক্ত মান্ধি

ৰলিতে লালিল, এই ত্রিভ্বন-দার স্ত্রীরত্ব বলি আমাদের ভাগ্যে ঘটে, তাহাহইলে, আমরা সকলেই কুতকুত্য হইব ; ইহাই আমাদের ধারণা। অতএব হে দৈত্যগণ । সকলে ইহাকে শিবিকান্ধ "সমুংকিপ্ত ও আরোপিত করিরা, নিজনিলয়ে লইয়া যাই চল। ইহাই আমরা স্থির করিরাছি।

তাহারা কামবশে নিতান্ত অভিভূত হইয়াছিল। এইজন্ত অমুরাগভরে পরস্পরে এইপ্রাকার কিছিয়া, তদীয় সেই সাধ্বী ভাষীাকে উথাপিত ও শিবিকায় আরোপিত করিয়া, সকলে মিলিয়া, সন্তকে বহনপূর্বক স্বস্থানাভিম্থে প্রস্থান করিল। তথন দত্তাত্তের হাত করিয়া, দেবগণকে কছিলেন, সৌভাগ্যবলে তোমরা বিজয়ী হইলে। কেননা, এই লক্ষী যথন দৈত্যগণের শরীরের অন্তান্ত সপ্ত স্থান অতিক্রমপূর্বক মন্তকে আরোহণ করিয়াছেন, তথন নিশ্চয়ই ইহাদিগকে ত্যাগ করিয়া, অপরের অক্তগামিনী হইবেন।

দেবগণ কহিলেন, আপনি জগতের নাথ। অতএব বলুন, লক্ষী পুরুষের কোন্ স্থানে অবস্থান করিলে, কি ফল প্রদান করেন, বা বিনাশ করিয়া থাকেন १

দত্তাত্ত্বের কহিলেন, লোকের পদস্থিতা হইলে, লক্ষ্মী নিশ্চরই নিলয় দান করেন; সক্থিতে গাকিলে বিবিধ ধন ও বন্ধ, গুছে থাকিলে বন্ধ, ক্রোড়ে থাকিলে অপত্যা, হ্লয়ে থাকিলে সর্ক্রির অভীষ্ট বিষয়, কঠে থাকিলে কঠভূষণ প্রবাসন্থিত অভীষ্ট বন্ধবাধর গণের সহিত সন্মিলন, শিষ্টোচিত বাক্য লাবণা ও অথণ্ডিত আজ্ঞা এবং মুথে থাকিলে কবিত্ব, দান করেন। আর শিরে থাকিলে, তৎক্রণাৎ ত্যাগ করিয়া, অভ পুরুষের আশ্রম ভঙ্গনা করিয়া থাকেন। অতএব লক্ষ্মী যথন দানব-গণের শিরস্থিতা হই রাছেন, তথন ইহাদিগকে ত্যাগ করিবেন। তোমরা অন্ধ্র লইয়া, এই অবস্বের ইহাদিগকে আঘাত কর; ভয় করিও না, আমেও ইহাদিগকে নিজেজ করিয়াছি। ইহারাও স্বাং পরদারমর্থন-পাপে ক্ষীণপুণ্য ও হীন-তেজ্য হইয়াছে।

গর্গ কহিলেন, শুনিয়াছি, তথন ঐরপে লক্ষীকে মন্তকে করাতে, দেবগণের বিবিধ অন্ধ্রপ্রহারে দৈতাগণের প্রাণ ত্যাগ সভ্যটিত হইল। লক্ষীও তাহাদের মন্তক হইতে উৎপতনপূর্ব্বক পুনরায় দন্তাত্রেমের পার্শ্বনিরী হইলেন। স্বরগণ অস্বরগণের বিনাশ জন্ম হর্ষাবিষ্ট হইয়া, লক্ষীর তাব করিতে লাগিলেন। আনন্তর তাঁহারা মনীহী দন্তাত্রেমকে প্রাণিশান্তপুরঃসর বিগতসন্তাপ হইয়া, নাকপুঠে প্রত্যাগত হইলেন। রাজেক্ত! আপনিও যদি মনোমত অতুল ঐশ্ব্য লাভের অভিলামী হইয়া পাকেন, সন্বরে দন্তাত্রেমের আরাধনা করুন।

ইতি গুৰ্থবাকা নাম অষ্টাদশ অধ্যায়।

# ঊনবিংশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, গর্গের কথা শুনিয়া, রাজা অর্জ্বন দতাতোরাশ্রমে গমন করিয়া, জক্তিসহকারে তাঁহার পূজা করিলেন এবং পাদসংবাহন, মধু প্রভৃতির আহরণ, প্রকৃচলনাদি গদ্ধসন্থলন, জল ও ফলাদির আনম্বন, অন্ধাংশোজন ও উচ্ছিট্টের অপোহন করিয়া, পরিচ্গা করিতে লাগিলেন। খবি পরিত্টুর ইয়া, পূর্বে যেমন মদাভোগাদির সংসর্গে আত্মনিলা করিয়া, দেবগণকে বলিয়াছিলেন, তাঁহাকেও তেমনি কহিলেন, এই জী সর্বদাই আমার পার্খনিরিণী রহিয়াছেন। ইহাঁর সংসর্গে আমি অপবিত্র ও তেজাহীন হইয়াছি। অতএব আমাকে এইরূপে উপরোধ করা তোমার উপযুক্ত হয় না। আমি উপকার করিতে বাস্তবিক আশক্ত। অতএব শক্তিসলগ্র শীল কোন ব্যক্তির শ্রণাপন্ন হও।

পুত্র কহিলেন, মুনি এইরূপ কহিলে, রাজা কার্ত্তবীর্ঘ্য পর্বের কথা অরণ করিয়া, প্রশাম-

প্রঃসর প্রত্যুত্তর করিলেন, আপনি কিজন্ত মায়া আশ্রয় করিয়া, আমাকে ভুলাইতেছেন ? আপনি যেমন সর্বাথা নিস্পাপ, সেইরূপ এই দেবীও সকল লোকের জননী।

রাজার এই কথার দন্তাতের প্রীতিমান্ হইয়া কহিলেন, যেহেতু তুমি আমার প্রকৃতস্করণপরিচয়ে সমর্থ হইয়াছ, সেইহেতু তোমার প্রতি আজি আমার পরম প্রীতির সঞার হইয়ছে।
অতএব বর গ্রহণ কর। যাহারা গন্ধমাল্যাদি দ্রব্য, মদ্যমাংসাদি উপহার ও আজ্যসংযুক্ত
মিষ্ট অয় প্রদানপুর:সর বিবিধ বিধানে ব্রাহ্মণগণের অর্চনা, নানাপ্রকার সঙ্গীত এবং বীণা বেণ্
ও শন্ধাদি স্বমধুর বাদ্যধ্বনিসহকারে লক্ষীর সহিত আমার পূজা করে, আমি অভীপিত
ন্ত্রী, পূল্র ও বিত্তাদি প্রদানপূর্বক তাহাদের পরিতোব সাধন এবং যাহারা আমাকে অশ্রদ্ধা করে, তাহাদিগকে অপবাতপুর্বক বিনাশ করি। তোমার কল্যাণ হউক; মনোমত বর গ্রহণ
কর। তুমি আমার গুহু নাম কীর্তুন করাতে, আমি প্রসাদ্বিতরণে একান্ত অভিমুথ হইয়াছি।

অর্জুন কহিলেন, আপনি যদি প্রসন্ন হইয়া থাকেন, তাহাইইলে, যৎপ্রভাবে আমি সর্বতোভাবে প্রজালোকের পালন করিতে পারি এবং কথনও যেন অধ্যে লিপ্তানা হই, এরপ উৎকৃষ্ট ঋদ্ধি আমাকে দান করন। তবাতীত, আমার যেন পরের অভিপ্রায়াদি ব্রিবার বিশেষ জ্ঞান জ্যো; যুদ্ধে যেন কেহ আমার প্রতিঘ্লী ইইতে না পারে; আমি যেন সহস্রবাহ ও লঘুহত্ত হই; শৈল, সলিল, ভূমি, আকাশ, পাতাল, কুআপি যেন আমার গতি প্রতিহত না হয়; আমা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ ব্যক্তির হত্তেই যেন আমার মৃত্যু হয়; আমি যেন উৎপথপ্রাবৃত্ত লোকের সৎপথপ্রদর্শক হইতে পারি; অতিথিদিগকে যেন অক্ষয় ধন দান করিয়া, সর্ব্ধা সন্তুষ্ট করি; আমার আরণ করিলেই, আমার রাজ্যে যেন কাহারও কোনরপে দ্রুব্য বিনষ্ট না হয় এবং আপনাতেই যেন আমার নিত্য অব্যভিচাবিণী ভক্তি থাকে।

ঋষি কহিলেন, ভোমার কথিত বাবতীয় বরই সম্যক্ রূপে প্রাপ্ত হইবে। অধিক কি, আমার প্রসাদে তুমি চক্রবর্ত্তী সম্রাট্ হইবে।

পুল্ল কহিলেন, তথন রাজা ঋষিকে প্রণাম করিয়া, প্রকৃতিবর্গকে আনমনপূর্ণক সমাগ্রিধানে অভিষেক গ্রহণ করিলেন এবং রাজপদে প্রতিষ্ঠিত ও দন্তাত্ত্রেয়ের বরপ্রভাবে পরম ঋদি লাভ-সহকারে অতিমাত্র বলাহিত হইয়া, সর্প্রতিষোধা করিয়া দিলেন, আজি হইতে আমা ভিন্ন অন্ত যে ব্যক্তিক শস্ত্র গ্রহণ করিবে, আমি তাহাকে এবং যে ব্যক্তি দন্ত্যুর্ভি ও পরের হিংসা করিবে, তাহাকেও সংহার করিব।

এইপ্রকার আজা প্রচারিত হইলে, একমাত্র সেই প্রবলপরাক্রান্ত পুরুষদিংহ অর্জন বাতি-রেকে রাজ্যমধ্যে আর কেহই শস্ত্রধর রহিল না। তিনিই গ্রাম্যপাল ও পশুপাল হইলেন। তিনিই অর্থপাল ও ক্ষেত্রপাল হইলেন; তিনিই ব্রাহ্মণ, বর্ণিক ও তপস্থিগণের পরিপালক হইলেন। লোকে দ্যু, ব্যাল, অগ্নি ও শস্ত্র ভয়ে অভিপন্ন, সাগ্রসলিলে মগ্ন, অথবা অন্তান্ত বিপদে আক্রান্ত হইলে, তাঁহাকে স্বরণ করিলেই, তিনি তৎক্ষণাৎ তাহাদের তব্তৎ বিপদ উদ্ধার করেন। তাঁহার অধি-কারে কাহারও কোন দ্রব্য আর কোন রূপেই নষ্ট হয় না। তিনি দক্ষিণাদানসহকারে বহ্বিধ মুক্ত করিতে লাগিলেন; মুদ্ধের পর যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিলেন; তপস্তা সঞ্চয় করিবেন।

মহর্ষি অনিরা তাঁহার এই অত্ন ঐখর্য্য ও অভিমান দর্শন করিয়া, বলিয়াছিলেন, কি যুজ, কি দান, কি তপস্থা, কি যুজাতিচেপ্তা কিছুতেই কোন রাজা কার্ত্তনীর্গ্যের সমকক্ষতা লাভ করিছে পারিবেন না। কার্ত্তনীর্য্য যে দিনে দত্তাত্তেয়ের প্রসাদে অগৌকিক প্রভুশক্তি লাভ করিয়াছিলেন, সেই দিন তাঁহার উদ্দেশে যজ্ঞ করিতেন। তাঁহার সম্পাম প্রজাও তাঁহার ঐরপ ঋদ্ধি দর্শন করিয়া, সেই দিন সমাধি সহকারে দত্তাত্তেয়ের উদ্দেশে যজ্ঞ করিত।

ধীমান্ দ্তাত্ত্রের মাহাত্মা এই কীর্ত্তন করিলাম। সেই শার্দ্ধবা, চরাচরগুরু, অনন্ত, অঞ্জ মেয়, শঙ্খচক্রধর, মহাত্মা বিষ্ণুর অবতারপরম্পরা এইরূপে সম্দল্প প্রাণেই বর্ণিত হইরাছে। তাহার পরম রূপ চিন্তা করিলে, স্থলাতসহকারে সংগার হইতে চিরদিনের অন্ত মুক্তিলাভ হইরা থাকে। যিনি বলিরা থাকেন, আমি সর্কাদাই বৈঞ্চবগণের স্থলভ, তাঁহাকে লোকে কিন্তুন্ত আধ্য না করিবে ? তাঁহার আদি নাই, অন্ত নাই। তিনি অধর্মের বিনাশ ও ধর্মের রক্ষা জন্ত ছিতিপালনে ও অবতারপ্রহণে প্রায়ত্ত হন। অধুনা, আমি অলর্কের বৃত্তান্ত কীর্ত্তন করিভেছি, প্রবণ করন। দ্তাত্তের সেই পিত্তক্ত মহাত্মা রাজ্যিকে যোগোপদেশ প্রদান করিরাছেন।

ইতি দন্তাত্রেয়ী সমাপ্তি নাম উনবিংশ অধ্যায়।

# বিংশ অধ্যায়।

পুদ্র কহিলেন, পুর্ব্বে শক্রজিৎ নামে মহাবীর্যাশালী রাজা ছিলেন। বাঁহার যজ্ঞ সমূহে সোমরদ পান করিয়া, ইক্স তুই হইয়াছিলেন। তাঁহার পুত্রও মহাবীর্যানম্পন্ন, অরাতিনিপাতদমর্থ, বৃদ্ধি বিক্রম ও লাবণাে ওক ওক্র এবং অখিনীর সমান। তিনি সর্বাদাই সমব্যুক্ত, সমব্দি, সমস্ত্ব, সমবিক্রম ও সমানচেষ্টাসম্পন্ন রাজপুত্রগণে পরিবৃত হইয়া, কথন শাস্ত্রসকলের বিচারমীমাংসায় রুতনিশ্বর হইতেন; কথন কাব্য, নাটক ও গীতের সমালোচন, কথন অক্ষবিনোদন, কথন অক্স শাস্ত্রও বৃদ্ধ শিক্ষা করিতেন এবং কথন বা নাগ, অহা ও অন্দনচালন অভ্যাসে তৎপর হইতেন। এইরপে তিনি রাজপুত্রগণে পরিবৃত হইয়া, দিন রাত্রি সমানে আমাদে করিতেন। তাঁহারা উক্ত বিধানে ক্রাড়ার প্রবৃত্ত হইলে, অনেকানেক সমবয়্ব রাহ্মণ, ক্ষত্র ও বৈশ্বতনর্যাণ ক্রিভেন।

তাত! কিমৎকালাবসানে অখতরনামক নাগরাজের ছই প্রিরদর্শন পুত্র বান্ধণবেশধারণ-পুর্কি পাতাল হইতে পৃথিবীতে সমাগত হইয়া, সেই ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশুকুমারগণের সহিত প্রমানন্দে আমোদ প্রমোদ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা সকলেই একতে স্নান, সংবাহন, পরি-ছিদ পরিধান, গদ্ধাছ্লেপন এবং ভোজনাদি করিতেন।

নাগরাজকুমারের। রাজকুমারের প্রতি গ্রীতিবশতঃ আফলাদিত হইয়া, প্রতিদিনই পাতাল হইতে আসিতে লাগিলেন। রাজকুমারও তাঁহাদের সহিত বিবিধ বিনোদ ও হাক্ত সংলাপাদি করিয়া, তৃপ্তির শেষলাভে প্রবৃত্ত হইলেন। তাঁহাদের হই জন সঙ্গে না থাকিলে, স্নান, ভোজন, বিহরণ, মধুসেবন বা আত্মোৎকর্ষ বিধানার্থ শাস্ত্রাদির আলোচন করেন না। তাঁহারাও হই জনে রজনীতে পাতালে থাকিয়া, সেই মহাত্মা রাজকুমারের বিরহে ঘন ঘন দীর্ঘনিখাস ত্যাপ করিয়া থাকেন। রাত্রি প্রভাত হইলেই, তাঁহার নিকট গমন করেন।

অনস্তর সেই নাগদারকন্বয়কে তাঁহাদের পিতা এক দিন জিজ্ঞাসা করিলেন, তোমরা কিজ্ঞ মত্তা লোকের প্রতি এরপ নিরতি আসক্ত হইয়াছ ? আমি অনেক দিন দিবাভাগে এই পাভালে তোনানিগকে দুর্শন করি নাই : কেবুল রাত্রিতেই তোমাদিগকে দেখিতে পাই।

পিতা স্বয়ং এইরপ জিজ্ঞানা করিলে, তাঁহারা ক্বতাঞ্জনিপ্টে প্রণিপাতপুরংসর প্রত্তের করিলেন, তাত! রাজা শক্রজিতের ঋতধ্বজনামে বিখাতে পুল্র সাতিশর সৌন্দর্যাশালী, সরলভাবলেশর, শৌর্যবিশিষ্ট, মানী ও প্রিয়ভাষী এবং বিদ্বান্, বাগ্মী, মিত্রপ্রিয় ও সকল গুণের আকর।
কেহ জিজ্ঞানা না করিলে, তিনি কথার উত্তর করেন না। মানী লোকের মান রাখিয়া থাকেন।
তিনি যেমন বৃদ্ধিমান্, দেইরূপ লজ্জাশীল ও বিনমগুণে ভ্বিত। তাঁহার সন্থাবহার ও প্রীতি সন্তোগ
করিয়া, আমাদের মন অপস্তুত হইয়াছে। সেইজ্ল গো-লোক বা ভ্বর্ণেক, কুমাণি আমাদের
কোন বিষয়েই আর আসক্তি করেন। তাঁহার বিরহে পাতালতলও শীতল বোধ হয় না; পরিভাপ সম্জ্ঞাবিত করে। কিন্তু তাঁহার সহবাসে থাকিলে, স্থাের কিরণ ও শীতল বোধ হয়।

পিতা কহিলেন, সেই পুণাবানের পুত্রই ধন্ম! বেহেডু, তোমাদের ন্থার, গুণিশুণ পরোক্ষের তাঁহার গুণ কার্ত্তন করিতেছে। শাস্ত্রজ্ঞ ব্যক্তিও অশীন হইয়া থাকে, আবার মূর্য্য স্থালতাগুণ ভ্ষত হয়। বাহাতে শাস্ত্র ও শীল উভয়ই আছে, তাদৃশ বাক্তিই আমার মতে অভিশয় ধন্ত মিত্রেরা বাহার মিত্রোচিত সদ্গুণ ও শক্ররা যাহার পরাক্রম কীর্ত্তন করে, ভাহার পিতাই প্রকৃত্ত পুত্রান্। একণে জিজ্ঞাসা করি, ভোমরা সেই উপকারী রাজপুত্রের প্রীতির জন্ম কোনরগ অভীষ্ট সাধন করিয়াছ ? যিনি অর্থীকে বিমুধ করেন না এবং যিনি মিত্রগণের উপকারাদি করিতে সবিশেষ পারক, তিনিই ধন্ম, তিনিই স্বন্ধা, তিনিই সার্থকজন্মা এবং তিনিই ব্যাহিরা আছেল! আমার গৃহে স্থান্ধ, রয়, বাহন ও আসন এবং অন্তান্ত বাহাতে তাঁহার প্রীতি জন্মে, ভোমরা অবিশক্ষিত চিত্তে তাঁহাকে তাহা দিতে পার। যে বান্তি উপকারী মিত্রবর্গর প্রত্যুপকার করিতে না পারিয়া, আমি জীবিত রহিয়াছি, এইপ্রকার হৃদয় করে, তাহার জীবনে ধিক্। যে ব্যক্তি নেঘের ন্থায় স্ক্রের্গে উপকার ও শক্রপক্ষে অপকায় বর্ষণ করে, লোকে নিয়্ত তাহারই উরতি কামনা করিয়া থাকে।

পুরেরা কহিলেন, তাত ! তিনি কতক্তা হইয়াছেন। তাঁহার গৃহে যে যাহা প্রার্থনা করে, তাহারই তাহা সম্পন্ন হইয়া থাকে; ত্বতরাং তাঁহার কোনক্রপে কিছু করা কাহারই বা সাধা হইয়া থাকে ? তাঁহার গেহে যে সকল রক্ব, আসন, যান, ভ্ষণ, বাহন ও পরিচ্ছদ আছে, আমা দের পাতালপুরে সে সকল কোথার ? আবার, তিনি যেরূপ বিজ্ঞ ও বিচক্ষণ, তাদৃশ বিতীয় লক্ষিত হয় না। তিনি প্রজ্ঞাশালী পুরুষগণেরও সর্ববিধ সংশন্ধ ছেদন করিতে পারেন। এবিষয়ে তাঁহার সর্বাপেকা প্রাধ:ন্তও আছে। তবে, তাঁহার একমাত্র ভ্রের আবশ্রুকতা আছে। কিই তাহা পুরণ করা আমাদের অসাধ্য। ত্রক্ষা, বিষ্ণু, মহেশ্বর প্রভৃতিরাই তাহা সাধন করিতে পারেন

পিতা কহিলেন, অসাধাই হউক, আর সাধাই হউক; তথাপি আমি তাঁহার সেই আবখ্যকতা শ্রবণ করিতে ইচ্ছা করি। যাহাদের দৃঢ় অধ্যবসায় আছে, তাহারা দেবজ, অথবা দেবগণেরও আধি পত্য অথবা তাঁহাদের পূলনীয়ত্ব কিছা তৎসদৃশ অভাভ অভিলয়িত বিষয় লাভ করিয়া থাকে। যাহাদের আত্মা, ইঞ্রিয় ও অন্তঃকরণ সংযত এবং যাহারা উদ্যানীল, অর্গে বা মর্ত্তে তাহাদের অবিদিত, অগম্য বা অপ্রাপ্য কিছুই নাই। পিপীলিকাও গমন করিলে, সহস্র যোজন যাইয়া থাকে। আবার, গমন না করিলে, অয়ং গরুড়ও একপদ যাইতে পারে না। দেখ, ভৃতলই বা কোপ্রা, আর প্রবলোকই বা কোথা; কিন্তু উত্তানপাদপ্ত শ্রুব পৃথিবীচর হইয়াও তাহা প্রাপ্ত হয়াছেন। অত্রব যাহা করিলে, সেই মহাত্মা ঋতধ্বজের উপকার ও তৎপ্রযুক্ত তোমাদের ঋণশোধ হইতে পারে, বল।

পুত্রমন্ত্র বলিলেন, সেই সচ্চরিত্র রাজকুমারের কুমারাবস্থার যাহা ঘটিগছিল, তিনি তাহা আমাদিগকে যেরপ বলিয়াছেন, শুহুন। পূর্ব্বে ছিলোত্তম গালব উৎকৃষ্ট আখে আরোহণ করিয়া, শক্রজিতের সকাশে আগমনপূর্ব্বক কহিলেন, কোন এক পাপকর্মা দৈত্যাধম মদীর আশ্রম সহলা সমাগত হইয়া, উহার বিনাশে উদ্যুত হইয়াছে। সৈ সিংহ, হন্তী ও অস্থান্ত ক্রপ্রাক্তি বন্তুপশুর মূর্ব্বি ধারণ করিয়া, দিবানিশ সমাধি-ধান-নিরত মৌনত্রত আমার অকারণে এরপ বিম করে যে, আমার মন নিতান্ত চঞ্চল ইইয়া থাকে। আমি স্বয়ং কোপানলে তাহাকে তথ্নই দগ্ধ করিতে পারি। কিন্তু বহুক্টে সঞ্চিত তপ্যার ক্ষম করিতে আমার ইচ্ছা নাই।

রাজন্ ! একদা তংকর্ত্ক ক্লেণিত হইয়া, তাহাকে দর্শনপূর্বক নির্বিপ্ত হদরে দীর্ঘনিখাদ ত্যাগ করিলে, তৎক্ষণে অম্বতল হইতে এই অম ভূমিতে পতিত হইল এবং দক্ষে সঙ্গে এইরপ দৈববাণীও হইল, এই তুরক্ষ কোনরূপে প্রান্ত না হইয়া, ত্র্যের দক্ষে সমগ্র মেদিনীমঙ্গ অতিক্রম করিতে পারে। তোমাকে ইহা দেওয়া গৈল। পাতালে, অম্বরতলে বা সলিদেও ইহার গতি প্রতিহত হয় না। সমন্ত দিকে অথবা সম্পার পর্বতেও ইহা অব্যাঘাতে গমন করিতে

পারে। থেছেকু, এই অংশ ঐ রূপে শ্রাক্ত না হইরা, সমগ্র তৃতল বিচরণ করিবে, সেইহেজ্ কুবলর নামে বিখ্যাত হইবে। আর, যে পাপ দানবাধম তোমাকে অহর্নিশ ক্লেশ প্রদান করি-তেছে, শত্রুজিরামক রাজার পুত্র খতধ্বর এই অংশ আরোহণ করিয়া, তাহাকেও বিনাশ করি-বেন এবং এই অ্থরত্ব প্রাপ্ত হইরা, তাহার নাম কুবলরাখ বলিয়া বিখ্যাত হইবে।

মহারাজ ! এইজন্মই আমি আপনার নিকট আদিয়াছি। আপরি দেই তপোবিশ্বকারী ানবের দমন করন। যেহেতু, রাজাও তপস্তার যথাযথ অংশ পাইরা থাকেন। আমি দেই াই অখ্রত্ব আপনাকে নিবেদন করিলাম। পুত্তকে এবিষ্যে এরপে আ্ঞাক্সন, যাহাতে ধ্রের ব্যাঘাত নাহয়।

ঋষির এই কথায় রাজা শত্রজিৎ পুত্র শতধ্বজকে যথাবিধি মাদল্য-বিধি-সমাধান পুরঃসর দেই অখরত্বে আরোপিত করিয়া, গালবেরই সমভিব্যবহারে প্রেরণ করিলেন। মহর্ষি গালবও গাঁহাকে লইয়া তৎক্ষণাৎ স্বকীয় আশ্রমে সমাগত হইলেন।

ইতি কুবলয়াখোপাথ্যান নাম বিংশ অধ্যায়।

## একবিংশ অধ্যায়।

পিতা কহিলেন, পুত্ৰয় ! তোমাদের কথা অতি অভূত। ঋতধ্যক গালবের সহিত গমন করিয়া, যাহা করিয়াছিলেন, তাহা বল।

পুত্রম কহিল, ঋতধ্যক রমণীয় গালবাশ্রমে অবভিতি করিয়া, ত্রন্ধবাদী ঋবিগণের সম্দায় বিদ্ন নিরাকরণে প্রাবৃত্ত হইলেন। দানবাধ্য মদগর্কের আবির্ভাবরশে একান্ত মোহাছের হইরাছিল; স্থতরাং বীর ক্বলয়াখ যে গালবাশ্রমে আছেন, তাহা তাহার জ্ঞানপথেই আদিল না। এক দিন গালব সন্ধ্যা-বন্দনায় তৎপর হইয়াছেন, এমন সময়ে ঐ দানব শৃকররপ ধারণ করিয়া, উাহার ধর্ষণা জ্ঞা স্মাগত হইল। তদ্দনে মুনির শিষ্যেরা উঠিচে: স্বরে চীংকার করিয়া উঠিলে, রাজকুমার ঋতধ্যক তৎক্ষণাৎ শ্রাসন-গ্রহণ-পুর: সর সম্বরে অখারোহণে শৃকরের অমুসরণে প্রত্ত হইলেন এবং স্কর-তিত্ত-শোভিত স্থান্ত দ্বাসন আকর্ষণ করিয়া, অর্কচন্দ্রারুতি নারাচ ধারা তাহাকে বিদ্ধ করিলেন। শৃকর নারাচে বিদ্ধ ও আত্মরক্ষায় সবিশেষ যত্মপর হইয়া, গিরিপাদপস্ত্র স্থানিতি মহারণ্যে প্রথম করিল। তথন সেই মনের আয় বেগবিশিষ্ট ত্রক্ষম পিতার আজ্ঞাপালন-প্রত্ত ঋতধ্যক কর্ত্ক প্রেরিত হইয়া, মহাবেণে উহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ চলিল। স্বরেগ সংস্থা ঘোজন অতিক্রম করিয়া, সেই শৃকর অবশেষে ভূপ্ঠে সহসা আবিভূতি এক গর্জমধ্যে ক্রণণে প্রবেশ করিল। বাজকুমারও অখারোহণে তাহার সঙ্গে সক্ষে আন্ধ্রাহিল সেই মহাগর্জে নিপতিত হইলেন। কিন্ত তাহাকে আর দেখিতে পাইলেন না। অনন্তর তিনি আলোক ও পাতাণ দর্শন করিলেন। কিন্ত তাহাকে আর দেখিতে পাইলেন না। অনন্তর তিনি আলোক ও পাতাণ দর্শন করিলেন। কিন্ত তাহাকে আর দেখিতে পাইলেন না।

্পনস্তর তিনি পাতাগতলে ইন্দ্রপ্নীর আয়, শত শত শ্বনিয়-প্রাসাদ-পরিবেটিত প্রাকার-শোভিত পুর দর্শন করিলেন। সেথানেও প্রবেশ করিয়া, তাহাকে দেখিতে পাইলেন না। অনস্তর ইতত্তঃ ভ্রনণ করিতে করিতে এক ক্ষীণাঙ্গী ললনাকে দর্শন করিলেন। তিনি ছরিত পদে গ্রন করিতেছেন। তাহাকে দেখিয়া, রাজকুমার জিজ্ঞাসা করিলেন, তুমি কিজ্ঞ কাহার নিকট যাইতেছ ? কিন্তু দেই ভাবিনী কোন কথা না বলিয়াই, প্রাসাদে আরোহণ করিল। ইনারও এক স্থানে আশ্ব বন্ধন করিয়া, সেই ভাবিনীর অফ্লারী হইলেন। তাঁহার মনে কোনয়প ভরেরই উদ্রেক হইল না। লোচনমুগ্ল বিশ্বরবণে উৎফুল হইয়া উঠিল।

भनखब क्यांत आतान मत्मा अत्वन कवित्रा त्मिलनन, श्वमस्क्यांत्री धक क्यांत्री, नाकार

কামসহচারিণী রতির ভায়, নিরব ছিল্ল-কাঞ্চনময় স্বিস্তীপ পর্যান্ধ আদীনা রহিয়াছেন। তাঁহার বদনমগুল প্ণাচন্ত্রের ভায়, অমৃগল অতীবস্থলর, নিতম্ব ও প্রোধর স্থলবর্ত্ত লভাবাপল, অধর ও ওঠা বিষের ভায়, অক রুল, লোচনযুগল নীলোৎপল-সন্ধিভ, নথরান্ধি রক্তবর্প ও তুক্তাববিশিষ্ট, শরীর কোমল ও ভামল, কর ও পদ তামবর্গ, উক্ত করভ-সদৃশ, দশনপংক্তি পরমস্থলর, অলকারান্ধি নীল, ক্ত্রে ও ছিরভাববিশিষ্ট। অনঙ্গের অক্লনতার ভায়, সর্বাক্ত লার বিশ্ব লালাকে দর্শন করিয়া, পাতালের দেবতা বলিয়া রাজকুমারের প্রতীতি হইল। সেই বালাও নীলবর্ণ আকৃঞ্চিত কেশগুদ্ধে, পীন বাছ, পীন ক্তর ও পীন উক্ত এই সকলে অলক্ত ঋতধ্বলকে দর্শন করিয়া, মনে করিলেন, ইনি অরং মদন। এইপ্রকার মনে হওয়াতে, ক্তৃভিতিতা হইয়া, তিনি তৎক্ষণাৎ গাজোখান করিলেন এবং লজ্জা, বিশ্বর ও ব্যাকুলতার বশবর্ত্তিনী হইয়া, ভাবিতে লাগিলেন, ইনি কেণ্ড দেবতা কি যক্ষণ গল্পকর্ত্ত কি ত্রগণ্ড বিদ্যাধর কি কোন পুণ্যমাত্রপরায়ণ মন্ত্র্য এখানে পদাপ্র ক্রিলেন ? মদিরলোচনা সেই ললনা এইপ্রকার ভাবনা করিয়া, নিখাসভার-পরিহার প্রঃসর ভ্তলে বেমন উপবিষ্টা হইলেন, তেমনি মুচ্ছিতা হইয়া পড়িলেন।

রাজনন্দন ঋতধ্বজও কামবাণে আহত হইয়া, ভয় নাই, বলিয়া তাঁহাকে আখাস দিতে লাগিলেন। তিনি ইতিপূর্বে যে রমণীকে দর্শন করেন, তৎকালে সেই ভাবিনীও ব্যক্তন গ্রহণ করিয়া, ব্যাকুলচিত্তে সেই ফুলরীকে বাতাস করিতে প্রবৃত্ত হইলেন। অনস্তর রাজকুমার তাঁহার চেতনা সম্পাদনপুরঃসর মৃদ্ধ্রি কারণ জিজাসিলে, তিনি কিঞ্চিৎ লজ্জান্তিতা হইয়া, স্বকীয় স্থীমুখে তাহা নিবেদন করিলেন। স্থী বিস্তারপূর্বক রাজনন্দনকে বলিল, আপনাকে দেখিয়াই ইনি মৃদ্ধিতা হইয়াছেন।

অনস্তর কুমারকে স্থীর পরিচয় দিয়া কহিল, দেবলোকে বিখাবস্থ নামে বিথাত যে গদ্ধর্করাজ আছেন, ইনি তাঁহারই আত্মজা। এই স্থক্রর নাম মদালসা। বক্তকেতৃর পুত্র উগ্রপ্রকৃতি অরাতিনিস্দন পাতালকেতৃ নামে দানব পাতালাস্তর আশ্রয় করিয়া আছে। আমাদের এই স্থী উদ্যানে গিয়াছিলেন। তথন আমি ইহাঁর সঙ্গে ছিলাম না। ঐ সময়ে ছরাত্মা পাতালকেতৃ তমেন ময়ী মায়ার আবিদ্ধরণপূর্বক ইহাঁকে হরণ করিয়া আনিয়াছে এবং আগামী এয়োদশীতে বিবাহ করিব, বলিয়াও স্থির করিয়াছে। কিন্তু শুদ্দের যেমন বেদশুতিতে অধিকার নাই, ছরাত্মাও তেমনি ইহার যোগ্যপাত্র নহে। দিন অতীত হইলে, এই বালা আত্মছত্যা করিতে উদ্যতা হয়েন। স্থরভি প্রতিষেধ করিয়া কহিয়াছেন, ছরাত্মা কথনই তোমাকে লাভ করিতে পারিবে না। আমি মহাভাবে। দানব মর্ত্তালোকে গমন করিলে, যিনি শরপ্রহারপুরঃসর তাঁহাকে বিদ্ধ করিবেন, তিনিই অচিয়াং তোমার স্থামী হইবেন। আমি ইহার সথী, আমার নাম কুওলা। আমি বিদ্ধানির কন্তা এবং পুদ্ধরমালীর পত্মী। শুন্ত আমার স্থামীকে সংহার করিয়াছে। তদর্বধ আমি বত্তামুসরণপূর্বক পরলোকসাধনে সমুদ্যতা হইয়া, দিব্যগতি সহামে তীর্থে বিচরণ করিয়া থাকি। হুরাত্মা পাতালকেতৃ শুক্রম্রতি পরিগ্রহ করিয়া, ঋষিগণের পরিত্রাণ জন্ত কেনি ব্যক্তি কর্ত্বিক হাণ্যিছে। এই ঘটনার প্রকৃত তথ্য অসুসন্ধান করত জ্বিত পদে এখানে আদিরাছি।

অধুনা, ইনি বে কারণে মৃচ্ছিতা হইয়াছেন, শ্রবণ করুন। মানদ! ইনি দর্শনমাত্রেই পাণনার প্রতি প্রীতিমতী ইইয়াছেন। দেখুন, আপনি সাক্ষাৎ দেবকুমার সদৃশ, স্থমিষ্ট বাক্যাদি গুণবিশিষ্ট। সেই দানবকে যিনি বিদ্ধ করিয়াছেন, বিধাতা আমার এই স্থীকে তাঁহারই পত্নী করিয়ায়ের বিধাতা আমার এই স্থীকে তাঁহারই পত্নী করিয়ায়ায়ির বিধাছেন। এই কারণেই ইনি মহামোহে যেন আছেয়া হইয়াছিলেন। এই কুশালী কি যাবজ্ঞাবনই হ:খ ভোগ করিবেন ? কেন না, আপনাতেই ইহার হৃদয় অনুরাগী হইয়া উঠিয়াছে। কিই অন্ত ব্যক্তিই ইহার হৃদয় অনুরাগী হইয়া উঠিয়াছে। কিই অন্ত ব্যক্তিই ইহার ভ্রার ভর্তা হইবে। তাহাহইলে, যাবজ্জীবন হ:খ ভোগ করিতে হইবে। স্বভিন্দ বাক্য মিথা হয় না। আমি ইহার প্রতি প্রীতিবশত: হ:খিতা হইয়া, এখানে আসিয়াছি। বেহর্ম শ্রকীয় স্বী ও নিল্প দেহ, এই উভরে কোনরূপ বিশেষ নাই। যদি এই শোভনা অভিমত বীর

পতি লাভ করেন: ত'হাহইলে, আমি নির্মাণীক চিত্তে তপভা করিতে পারি। একণে জিজাসা কুরি, আপনি কে এবং কিজ্ফুই বা এখানে আসিরাছেন ? আপনি দেব না দৈত্য ? গৃহুর্ম না প্রগ ? অথবা কিরর ? কেন না, মছুবোর দেহ বেমন কখন ঈদৃক্ হইতে পারে না, সেইরূপ পাতালে আগমন করাও মনুবোর সাধ্য নহে। অতএব আমি বেমন সমুদায় সভ্য বনিলাম, আপনিও তেমনি সভ্য বলুন।

কুবলয়াশ কহিলেন, ধর্মজ্ঞে ! তুমিইবা কে ? কিজ্ঞাই বা আনিয়াছ ? এই যে তুমি জিজ্ঞাসা করি-তেছ, আমি আদি হইতে তাহা তোমাকে বলিব। শ্রবণ কর, আমি রাজা শক্রজিতের পুত্র। তাঁহার প্রেবণবশংবদ ইইয়া, মুনিগণের রক্ষানাধন উদ্দেশে গাগবের আশ্রমে আগমন করিয়াছিলাম। তথার আসিয়া মহাত্মা ঋষিগণের রক্ষাকার্য্যে প্রেব্ত হইলে, কোন ব্যক্তি শ্বররূপ ধারণ করিয়া, বিয়সাধনার্থ সমাগত হইল। তথন আমি তাহাকে অর্জ্রজ্ঞারতি শর প্রহারে বিদ্ধু করিলাম। এবং সে বেমন অতিবেগে তথা হইতে অপসরণ করিল; তাহার অহধাবনে অখারোহণে প্রবৃত্ত হইলায়। তথন আমার সেই অর্থ ও শ্বর উভরেই সমকালে গর্তমধা পতিত ইইল। অনস্তর আমি মধ্যে আরোহণ করিয়া, একাকী অন্ধকারে পরিভ্রমণ করিজে লাগিলাম। পরে আলোক প্রাপ্ত হইয়া, আপনাকে অবলোকন করিলাম। কিন্ত জিল্ঞাসা করিলে, আপনি আমার কথার কোনরূপ উত্তর করিলেন না। তথন আমি আগনার পদামুসরণক্রমে এই স্থব্নিয় দিব্য প্রাসাদে প্রবেশ করিলাম। এই আমি আপনার নিক্ট সমস্ত সত্য বলিলাম। আমি দেব নহি, দানব নহি, গন্ধ নহি, গন্ধর্ম নহি এবং কিন্নরও নহি। অয় ভাচিত্মতে। সেই দেবাদি সকলেই আমার প্রাপ্ত নহি। আমি মন্ত্র। এবিয়ে তেংমার কোনরূপ শক্ষা করা কর্ত্ত্ব্য নহে।

পুএষর কহিলেন, তথন সেই ভাবিনা অতিমাত হর্ষাবিষ্টা ছইয়া, কোনরূপ বাঙ্নিপ্তি করিতে পারিলেন না। জড়ীভূতা হইয়া, কেবল অকীয় স্থীর বদনমণ্ডল নিরীক্ষণ করিতে লাগিলেন। তদ্দলনে তদীয় স্থীকুণ্ডলা নিরতিশয় হর্ষরসের বশবর্তিনী হইয়া বলিতে লাগিলেন, বীয়! আগনি সত্য বলিলেন; ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। আপনাকে যথন দেখিয়াছে, তথন এই মদালসার হাদয় অক্ত পুরুষে সংসক্ত হইবে না। দেখুন, কান্তি চন্দ্রের, প্রভা ত্রেয়, লন্দ্রী ভাগাবানের, মৃতি বীরের ও ক্ষমা উত্তমের আশ্রয় গ্রহণ করিয়া থাকে। আপনিই নিঃসন্দেহ সেই দানবাধমকে বিদ্ধ করিয়াছেন। গোগণের জননী হ্রভি কিরপে মিথ্যা বলিতে পারেন ? অধুনা আমাদের স্থী আপনার সালিধ্যান্তে ধন্তা ও সেইভাগাশালিনী হইলেন। অত এব বীর! একণে বাহা কর্ত্বা, বিধিপুর্ষক তাহার সমাধান কর্জন।

রাজকুমার কহিলেন, আমি পরাধীন। পিতার আদেশব্যতিরেকে কিরপে ইহাঁকে বিবাহ করিতে পারি ? কুগুলা কহিল, আপনি এরপ কহিবেন না। কেন না, ইনি দেবকন্তা, ইহাঁকে বিবাহ করেতে গদ্ধত হইলেন। তথন কুগুলা তাঁহাদের ক্ষণ্ডক তৃত্বক্তে শ্বরণ করিলেন। তিনিও তৎক্ষণাৎ সমিৎ কুশ গ্রহণ করিয়া, মদালসার প্রতি থীতি ও কুগুলার প্রতি বহুমান বশত: তথায় উপনীত হইলেন। অনস্তর মন্ত্রবিৎ তৃত্বক পাৰক প্রতিত ও মদালসার উদ্দেশে মঙ্গলক্ত্রা সমাধানানন্তর তাঁহার বৈবাহিক বিধি যপাবিধি সম্পাদন করিয়া, পুনরায় তৃপ্দর্শমানসে অকীয় আশ্রমে গমন করিলেন।

তথন কুণ্ডলা মদালসাকে কহিলেন, অমি বরাননে। আমি কুতার্থ হইলাম। বেচেতু, তুমি বেনন অকোকসামান্ত-সৌন্দর্গলালিনী সেইজপ সংপাত্তের হতে পড়িলে, দেখিলাম। একৰে আমি নির্মালীকচিত্তে অতুল তপশ্চরণে প্রবৃত্তা হইব। এবং তীর্থদলিলে সম্দার পাপ প্রকালিত করিব। তাহাহইলে, আরে আমাকে এরপ হইতে হইবে না।

খনতার কুওলা প্রস্থান করিতে অভিগাবিণী ও বিনরবদে অবনতা হইরা, নিজ স্থীর প্রতি <sup>বিহ</sup> বশতঃ গদ্পদ বাক্যে রাজকুষারকে বলিতে লাগিপেন, খাপনার প্রজ্ঞার ইয়তা নাই। প্র-

বেরাও যথন আপনার ভার মহাত্মাদিগকে উপদেশ দিতে পারে না, তথন জীগণের কথা আ কি বলিব ? এইজন্ত আমি আপনাকে উপদেশ দিতেছি না। তবে এই তমুমধামা মনাল্যা: ক্রেছে আমার অন্তঃকরণ আক্রষ্ট হইয়াছে এবং আপনিও আমাকে বিশ্বাস করিয়া থাকেন। সেই জতাই মারণ করাইয়া দিতেছি, স্বামী সর্বাদা সহধর্মিণীরে ভর। ও রক্ষণ করিবেন। ইহাই তাঁহা কর্ত্তব্য। দেখুন, স্ত্রীই ধর্ম, অর্থ ও কাম এই ত্রিবর্গ সাধন বিষয়ে স্থামীর সহায়িনী হইয়া পাকে স্বামী ও স্ত্রী পরম্পর বশবর্তী থাকিলেই, ধর্ম, অর্থ, কাম এই তিনের একীভাব সমাহিত হটঃ খাকে। ধর্ম, অর্থ, কাম এই ত্রিবর্গ জ্রীতেই প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এই কারণে স্বামী কোঃ রূপেই জ্রী বিনা ঐ তিন সাধন করিতে পারেন না। আবার, স্ত্রীও স্বামী ব্যতিরেকে ধর্মানি সাধনে সমর্থা হয় না। কেন না, এই ত্রিবর্গ পতি পত্নী উভয়কেই আশ্রয় করিয়া আছে। পুরুষ ল্লী বাতিরেকে দেবগণ, পিতৃগণ, ভৃতাগণ ও অতিথিগণের পূচা করিতে পারেন না। দেখুন ভার্য্য यनि ना थाকে এবং यनि কুভার্য্যার সংসর্গ ঘটে, তাহাহইলে, পুরুষ যে অর্থ উপার্জন করিঃ গৃহে আনমন করেন, তাহা কয় পাইয়া থাকে। আবার, প্রত্যক্ষ দেখিতে পাওয়া য়য়, স্ত্রী ব্যতিরেকে পুরুষের কামফলও প্রাপ্তি হয় না। স্ত্রীপুরুষের সাংচর্য্যেই অদ্বীধর্ম সিদ্ধ হইয়া থাকে। লোকে যেমন পুত্র হারা পিতৃগণের, অল্লসাধন হারা অতিথিগণের ও পূজা হারা অমরগণের পোষ্ ও আপ্যায়ন করিয়া থাকে. দেইরূপ পুত্রোৎপাদন, অন্নদংযোজন ও অভ্যর্থনসহকারে সাধ্বী স্ত্রীরুও রকণাবেক্ষণ করিবে। স্ত্রীও আবার স্থামী ব্যতিরেকে ত্রিবর্গদাধনে দমর্থা হয় না। কেন না দাম্পত্যই ত্রিবর্গের আশ্রম্ভল। আমি এই আপনাদের উভয়ের নিকট দাম্পত্যধর্ম কীর্তুন করিলাম। একণে অভিল্মিত প্রদেশে গমন করিব। আপনি এই মদাল্যার সহিত্ধনে, পুরে, ত্বথে ও প্রমায়তে বর্দ্ধিত হউন।

এই বলিয়া কুণ্ডলা মদালসাকে আলিঙ্গন ও রাজকুমারকে নমস্বার করিয়া, দিব্য গতিতে স্বকীয় ইচ্ছাফুলারে গমন করিলেন। তথন ঋতধ্বজ্ঞ মদালসাকে অস্থে আরোপিত করিয়া, পাতাল হইতে বহির্গননে অভিলাধী হইলেন। দৈত্যেরা তৎক্ষণাৎ জানিতে পারিয়া, সকলে এই বলিয় চীৎকার করিয়া উঠিল, পাতালকেতু স্বর্গ হইতে যে কন্তারত্বকে আনয়ন করিয়াছিলেন, তাহাকে ঐ হরিয়া লইয়া যাইতেছে। বার্ঘার এইপ্রকার কহিয়া, দেই দৈত্যবল পাতালকেতুর সহিত সমবেত হইয়া, পরিঘ, নিফ্রিংশ, গদা, শূল, শর ও আয়ুধ গ্রহণ করত তথায় আগমন ও তিঠিতিঠ বাক্য প্রেয়াগ করিয়া, রাজকুমারের উপরি শর ও শূল সকল বর্ষণ করিতে লাগিল। তিনি লাভিশার বীর্যা,শালী। শরপরক্ষারা প্রেয়াগ করিয়া, হাস্ত করিতে করিতে আবলীলাক্রমেই তৎসমস্ত অল্প ছেলন করিলেন। তদীয় শরনিকরে ছিল হইয়া, দৈত্যগণের দেই রাশি রাশি অসি, শক্তি, ঋষ্টি ও সায়ক সমস্ত ক্ষণমধ্যেই সম্লায় পাতাল সমাচ্ছের করিল। অনস্তর তিনি তাই অন্ধ গ্রহণ করিয়া, দৈত্যগণের উদ্দেশে প্রেয়াগ করিলেন। শিথাপরক্ষার সংসর্গে অতীব উঞ্জাবাণর সেই অল্প পাতালকেতুর সহিত দানবদিগের সকলকেই, কপিলতেক্সে সগ্রতনয়গণের ভারে, এক কালেই দগ্ধ ও তাহাদের অন্থি সকলও ফুটিত করিয়া ফেলিল।

আনস্তর ঋতধ্যক প্রধান প্রধান অস্ত্রদিগকে সংহার করিয়া, অখারোহণে সেই স্ত্রীরত্ন সাক্রিবার ব্যাহারে পিতৃপুরে পদার্পন ও পিতৃদেবকে প্রনিপাতপূর্বক সমুদায় ঘটনা আমুপূর্বিক কীটন করিলেন। যেরূপে পাতাবে গমন ও কুওলাকে দর্শন, মদালসাকে লাভ, দানবদিগকে সংহার ও পুনরায় তথায় আগমন করিয়াছেন, সমন্তই বলিলেন।

সেই চাক্ষচরিতের ঈদৃশ চরিত প্রবণ করিয়া, তদীর পিতা তাঁহাকে আলিদন করিয়া, প্রীতি ভবে কহিতে লাগিলেন, তুমি সংপুতা ও মহাত্মা। সদ্ধাচারী ঋষিদিগের ভর মোচন করিয়া, অদ্য আমাকে উদার করিলে। আমার পূর্বপূর্ণবেরা প্রথমে খ্যাতির উদ্ভাবনা করেন। পরে আধি ভাহার বিস্তাহ স্পাদন করি। বীর ! অদা তুমি পরাক্রমপ্রদর্শনপুরংসর তাহার বছলতা স্পাদন করিলে। পিতা যে বশ, ধন অথবা বীর্যা উপার্জ্জন করেন, যে ব্যক্তি ভাছার অপচর না করে, ওাহাকে মধ্যমপুক্র বলিরা থাকে। এবং যে ব্যক্তি স্বকীর শক্তির সাহায্যে পিড়সঞ্চিত বীর্য্যাদি অপেকা আরও কিছু নিপ্পাদন করে, প্রাক্তেরা তাহাকে প্রথান্তম বলিরা থাকেন। আর বে বাক্তি পিড়সঞ্চিত যপ, বীর্য্য ও বিভের নানতা সাধন করে, প্রাক্তগণের মতে সেই প্রকাধম। তোমার ভার আমিও পূর্বে রাহ্মণগণের পরিত্রাণ করিয়াছিলাম। কিন্তু পাতালে গমন ও অক্তরণগের সংহরণ করি নাই। এই হুইটাতে তুমি আমাকে অভিক্রম করিয়াছ। সেইজভ তুমি প্রক্ষোভ্রম। অভএব তুমিই ধন্ত। আর. আমিও তোমার ভ্যায়, ঈদৃশ গুণাধিক পূত্র লাভ করিয়া, প্র্যান্গণেরও শ্লামনীয় হইলাম। আমার মতে, পূত্র যাহাকে প্রজ্ঞা, দান ও বিক্রম হারা অভিক্রম করিতে না পারে, সে ব্যক্তি পুত্রজনিত প্রতি প্রপ্তেই যান। পিতার খ্যাতিতেই যাহার প্রতিপত্তি হইয়া থাকে, সেই পুত্রর জন্মে ধিক্! সেই পুত্রই ক্রন্মা এবং ভাহারই জন্ম সার্থক, যাহার খ্যাভিতে পিতার প্রতিপত্তি সমৃত্ত্ তুইয়া থাকে। যে ব্যক্তি আপনাআপনিই লোকের নিক্ট পরিচিত বা প্রতিপন্ন হয়, সেই ধন্ত। পিতৃপিতামহের নামে যে পরিজ্ঞাত হয়, সে মধ্যম। আর মাত্রক বা মাতার সহায়তায় যাহাকে লোকে জানিয়া থাকে, সেই নরগধম। অভএব বংস! তুমি ধন, বীর্য্য, স্বাধ্য, সকল অংশেই বিশেষক্রপে বর্দ্ধিত হও। এই গঙ্কর্মতন্মার যেন কোনকালেই তোমার সৃহিত বিরহযোগের সংযোগ না হয়।

পিতা বারষার এইপ্রকার বছবিধ প্রিয়সভাষণ প্র:সর আলিজন করিয়া, ভার্যার সহিত স্থকীয় গৃহে যাইতে বিদায় দিলে, তিনি সেই পত্নীর সমভিব্যাহারে কথন পিতার নগরীতে ও কথন বা উদ্যান, বন ও পর্বতসাহ্মস্হে, বিহার কারতে লাগিলেন। মদাল্সা প্রতিদিন প্রাত:কালে স্থানির সমভিব্যাহারে শৃক্তা, শৃক্তারের পাদ্যুগলে প্রণিপাত করিয়া, চিত্তবিনোদনে প্রবৃত্তা হইলেন।

ইতি মদালসার পরিণয় নাম একবিংশ অধ্যায়।

## चाविः भ व्यथायः।

পুত্ৰষ কহিলেন, অনন্তর বহুকালপ্য্রসানে রাজা পুনরায় পুত্রকে কহিলেন, শীঘ্র ব্রাহ্মণগণের রক্ষণার্থ গমন ও পৃথিনী পর্যাটন কর। এই অস্থে আরোহণ করিয়া, ভূমি প্রতিদিন প্রান্ত:
কালে দ্বিজমুথ্যগণের যাহাতে বিদ্ন না হর, ত্রিষয়ের তত্ত্বধান করিবে। হর্ক্ ত্রিপরায়ন পাপ্যোনি
শত শত অস্থর আছে। তাহারা যাহাতে মুনিগণের বাধা সমুৎপাদন না করে, ভূমি তদমুরূপ
অস্টানে প্রবৃত্ত হন্ত। পিতা যেরূপ বলিলেন, রাজনন্দন সেইরূপই করিতে প্রবৃত্ত হইলেন।
তিনি প্রতিদিন পূর্বাহ্লে সমগ্র মেদিনী পরিক্রম করিয়া, পিতার পদ্যুগল বন্দনা করেন। পরে
সেই স্থায়াম দদাল্যার সহিত বিহার করিয়া থাকেন।

একদা বিচরণ করিতে করিতে, যমুনাতটে অবলোকন করিলেন, পাতালকেতুর অযুক্ত তাল-কেতু তথার আশ্রম বন্ধন করিরাছে। সে অতি মারাবী, মুনিরপ ধারণ করিবাছে। সে পূর্ববৈর অমুমরণ করিবা, রাজপুল্রকে কহিল, রাজপুল্র। আমি যাহা বলিতেছি, যদি ইচ্ছা হয়, তাহা কর। ছমি সত্তপ্রতিজ্ঞ। প্রার্থনা ভঙ্গ করা তোমার বিধেয় হয় না। আমি ধর্মের জন্ম যজ্ঞ ও ইষ্টি সকলের অমুষ্ঠান করিব। ঐ বজ্ঞে চিতি সকল নির্মাণ করিতে হইবে। কিন্তু আমার দক্ষিণানির ক্ষমতা নাই। অতএব তুমি হিরণ্যের জন্ম আপনার এই কঠসংলগ্ধ ভূষণ প্রদানপূর্বক আমার এই আশ্রম রক্ষা কর। আমি জলমধ্যে প্রবেশপূর্বক প্রজাগনের প্রষ্টিহেতু বেদবিহিত্ত বালণ্যতে বালংপ্তি বক্ষণের ক্ষম্ব করিয়া, শীল্পই তোমার নিক্ট আগ্রমন করিতেছি।

ে এই কথা বলিংগে, রাজনন্দন তাহাকে প্রণামপূর্কক কঠভূষণ প্রদান করিয়া কছিলেন, আপনি নিশ্চিন্ত চিন্তে প্রস্থান কর্মন। আমি আপনার প্রত্যোগমন পর্যন্ত আপনার আদেশে এই আশ্রমস্মীপে অবস্থিতি করিব। আমি থাকিতে, আপনার এখানে কেছ কোন রূপে বিশ্ব করিছে পারিবে না। আপনি বিশ্বন্ত হইয়া, ধীরে ধীরে আপনার অভীপ্রিত সাধন কর্মন।

রাজপুত্র এই কণা কহিলে, সে নদীঞ্ললে মগ্ন হইল। তথন রাজকুমারও তাহার সেই মাগ্রম্য আশ্রম রক্ষা করিছে প্রবৃত্ত হইলেন। অনস্তর তালকেতৃ সেই জলাশর হইতে নদালসা ও অন্তান্ত সকলের প্রত্যক্ষে গমন করিয়া, বলিতে লাগিল, বীর কুবলয়াম্ব আশ্রমক আশ্রমকাশে তপ্রিগণের রক্ষাকার্গো বাাপৃত ছিলেন। যথাশক্তি যুদ্ধ করিয়া, সংগ্রামে রাহ্মণম্বেষিদিগেরও সংহার করিতেছিলেন! এমন সময়ে কোন গুট্ট দৈত্য মায়া আশ্রম ও বক্ষম্পলে শ্লের আঘাত করিয়া, তাঁহার সংহার করিয়াছে। শ্রিমাণ অবস্থায় তিনি আমাকে এই কণ্ঠভূবণ দান করিয়া গিয়াছেন। শৃদ্ধ তাপদিগণ বনমধ্যে তাঁহারে দহন করিয়াছে। তাঁহার মৃত্যুতে তদীর অম্ব ভীত হইয়া, অশ্রপুরিত লোচনে আর্ত্তিরে হেয়াধ্বনি করিয়াছিল। ঐ দানব তাহাকেও লইয়া গিয়াছে। আমি অতীব নির্দিয় ও গুরুতিকারী। সেইজন্তই এই ঘটনা দর্শন করিয়াছি! অতংপর মাহা কর্তব্য, তাহা তোমরা কর। আর বিলম্ব করিও না। এক্ষণে এই কণ্ঠভূবণ লইয়া মনকে কথ্ঞিৎ প্রবেধ দাও। আমরা তপন্থী, আমাদের স্বর্ণে প্রয়োজন নাই। এই বলিয়া সেই কণ্ঠভূবণ ভূমিতে রাথিয়াই যথাগত প্রস্থান করিল।

তথন প্রিজন সমস্ত শোকার্ত্ত মৃদ্ধাত্র হইয়া, তৎক্ষণাৎ ভূমিতে পতিত হইল। অনস্তর রাজা ও রাজপত্মী সমস্ত এবং নৃপ্ধবোষিদ্বর্গ সকলেই চেতনা লাভ হরিয়া, অভিমাত্র ছংখিত হইয়া, বিলাপ করিতে লাগিলেন। তল্মধ্যে মদাল্যা সেই কণ্ঠভূষণ দর্শন ও স্বামীর নিধন শ্রবণ করিয়া. আ ত প্রিয় প্রাণ পরিহার করিলেন। ঐ সময়ে রাজার নিজ গৃহে যেমন আর্তিধননি উখিত হইরা-ছিল, পৌরদিগের ভবনেও তেমনি তুমুল রোদনধ্বনি প্রাতভৃতি হইল। অনন্তর রাজা স্বামি-বিয়োগবশত: মদালসাকে প্রাণত্যাগ করিতে দেখিয়া, সবিশেষ বিচারসহকারে মুস্থচিত হইয়া, সমুদার গোকদিগকে কহিলেন, °তোমরা আর রোদন করিও না। আমি ভোমাদের, নিজের ও অনুযান্ত সকলের সম্বন্ধের অনিত্যতা বিলক্ষণ বিচার করিয়া দেখিয়াছি। আমি কি জাগ্রে পত্রের জন্ত শোক করিব ? অথবা, কি বণুর জন্ত শোক করিব ? সবিশেষ বিচার করিয়া, আমার ইহাই ধারণা হইয়াছে, ইহাঁরা উভয়েট স্বস্ব কর্ত্তব্য সাধন ক্রিয়াছেন। স্বত্তব সর্ব্বথা ইহাঁ দের কাহারই জন্ম শোক করা কর্ত্তব্য নহে। দেখ, আমার যে পুত্র আমার শুক্রমানশ্যদ ও আমার আদেশে হিজরকায় তৎপর হইয়া, মৃত্যু লাভ করিয়াছেন, তিনি কিরূপে ধীমানগণের শোচনীয় হইতে পারেন ? যে দেহ অবশুই যাইবে, আমার পুত্ত যদি বাদাণরকার জন্ম তাহা উদর্গৎ করিয়া থাকেন, তাহা কি অভাদয়ের পরিচায়ক নহে ? আর, এই মদাল্দা বেমন সংকুলে জ্মিগাছেন, দেইরূপ স্থামীর সহমূতা হইলেন। দেখ, স্থামী ব্যতিরেকে জ্রীলোকের অন্ত দেবতা নাই। অতএব ইহার জন্মও বা কিরুপে শোক করা যাইতে পারে ? আরু, ইনি যদি ভর্তবিরোগ সহু ক্রিতেন, তাহাহইলে, আমাদের, বান্ধবগণের ও অভাভ দয়াশীল ব্যক্তিগণের শোচনীয়া হইতেন। কিন্তু ইনি যথন ভর্ত্তার মৃত্যু শ্রবণ করিয়াই, তৎক্ষণে তাঁহার অফুমৃতা হইখাছেন, তথন কিরূপে বিধান্গণের শোচনীয়া হইতে পারেন ? যে সকল রমণী স্বামি-বিরহ সহ করে, ভাহারাই শোচনীয়া; যাহারা সহমৃতা হয়, তাহারা শোচনীয়া নহে। এই কৃতজ্ঞাকে ভঠার বিঃহ অনুভব্ট করিতে হইল না। স্বামী স্ত্রীর উভয় লোকেই সর্কবিধ সুধ সম্পাদন করেন; মুত্রাং কোন রমণী তাঁহাকে মামুহ বোধ করিতে পারে ? ফলতঃ, ঋতধ্বল, মদাল্যা, অণ্বা আমি বা ঋতধ্বশ্বের জননী আমরা কেছই শোচনীয় নহি। কেন না, <u>ঋতধ্বজ বান্ধণার্থে প্রাণ উ</u>ৎপূর্ণ, করিয়া, আমাদের সকলকেই শোকবহিষ্কৃত করিয়াছেন। সেই মহামতি ঋতধ্বল অভিজ্ক বেং

ত্যাগ করিয়া, রাজ্মণগণের, আমার ও ধর্মের নিকট জন্মী হইরাছেন। তিনি বে বিজ্ঞাণের রক্ষা-গাধন করিয়া, সংগ্রামে প্রাণত্যাগ করিষাছেন, ইহাতে তাঁহার মাতার সতীত, মদীর বংশের পবি-ত্রভা ও তাঁহার শৌর্যের স্বিশেষ পরিচয় হইরাছে।

অনতার ক্বলরাখের জননী ভর্তার তানিবার পরেই পুরের তাদৃশ মৃত্যুবটনা শ্রবণ করিয়া, সামিকে দশনপূর্বক কহিতে লাগিলেন, রাজন্। আমার পুরু মুনিগণের পরিত্রাণ করিছে গিয়া, প্রাণিতাগি করিয়াছেন, তানিরা আমার বেথকার প্রীতিযোগভোগ হইতেছে, আমার মাতা বা ভগিনীও কথন তাদৃশী প্রীতি প্রাপ্ত হন নাই। যাহারা ব্যাধিরিষ্ট হইয়া, শোকপরায়ণ বাদ্ধব-গণের সমক্ষে অভিছঃথে নিখাস ফেলিভে ফেলিভে প্রাণ্ডাগি করে, তাহাদের জননী বুধা প্রান্ব বার্রাছে। যাহারা গো ও ব্রাহ্মণের রক্ষার প্রবৃত্ত হইয়া, নিভ্রে যুদ্ধ করিয়া, শত্রের আঘতে প্রাণ্ডাগি করে, তাহারাই পৃথিবীতে মাহায়। যে ব্যক্তি অর্থী বা মিত্রবর্গ অথবা শক্রগণ কোন পক্ষেই কথন বিমুধ হয় না, তাহার পিতাই প্রকৃত পুর্বান এবং তাহার জননীই বীরপ্রস্থ। পূর্ সংগ্রামে শক্রমার বা প্রাণ্ডাগি করে, তাহার স্থাবির কেই, স্ত্রীলোকের গর্ভধারণক্রেশ তৎক্ষণাৎ আমার মতে স্কল হইয়া থাকে।

অনস্তর রাজা পুত্রবধ্র সংস্কারবিধিসমাধানান্তর বহির্গত হইয়া, সান করত পুত্রের উদ্দেশে ললদান করিলেন। এদিকে তালকেতৃও যমুনাজল হইতে বিনির্গত হইয়া, প্রণয়প্রকাশপুরঃসর মধ্র বচনে রাজপুত্রকে কহিলেন, অয়ি রাজনন্দন! তুমি আমায় কৃতার্থ করিলে। তুমি এখানে অবিচলিত ভাবে অবস্থিতি করাতে, আমি চিরাভিল্যিত কার্য্যাধনে সমর্থ হইয়াছি। আমি বহুদিন যাবৎ ইচ্ছা করিয়াছিলাম, মহাআ জলেখর বক্লের যুক্ত করিব। অধুনা তাহা সমাক্ রূপে সম্পাদন করিয়াছি। অভএব তুমি এখন যাইতে পার।

তথন রাজনন্দন তাহাকে প্রণাম করিয়া, গরুড় ও বায়ুর স্থায় বেগবান্ সেই আখে আরুছ হইয়া, পিতৃপুরোদ্দেশে প্রস্থান করিলেন।

मनानगात्र विद्याश नाम चाविः म ज्यशात्र।

### ज्राविः भ व्यथाय ।

প্তাৰ্য কহিলেন, ঋতধ্বজ পিতা মাতার পাদবন্দন ও মদালসার দর্শন বাসনা-বশ্বদ হইরা, গবেগে অন্ত:পুরে গমন করিয়া, দেখিলেন, সমন্ত নগরীই উবেগে আছের ও তজ্জন্ত সকলেরই মৃথ অপ্রজ্নভাবাপর হইরাছে। আবার, পরক্ষণেই দেখিলেন, প্রবাসী মাত্রেরই আকারে বিষয় ও বদনমগুলে হর্ষের আবেশ হইয়া উঠিল। তাহারাসকলেই উৎফুল লোচনে, কি সৌভাগ্য! কি সৌভাগ্য! বলিতে লাগিল এবং অতীব কৌতৃহল্যহকারে পরস্পরকে আলিদন করিয়া, রাজ্মারকে কহিল, অনি স্বিপুল-কল্যাণশালিন্! আপনি চিরজীবী হউন। আপনার শক্ষ্ম সকল ইত হউক। অধুনা, নির্বিধ্ন জনক জননীর ও আমাদের সকলের মন আহ্লাদিত কর্মন।

এইপ্রকার বলিতে বলিতে তাহারা সমুথে ও পৃষ্ঠে তাঁহাকে পরির্ভ করিল। তিনি সেই আন্মানে আফলাদিত হইয়া, পিতার গৃহে প্রবেশ করিলেন। দিতা, মাতা ও অভাত বাদ্ধবগণ সকলেই তাঁহাকে আলিকন করিয়া, চিরনীবী হও, বলিয়া, ওভ আলীর্কাদ প্ররোগ করিতে লাগিলেন।

অনস্তর তিনি পিতাকে প্রণিপাত করিয়া, বিশ্বিত হইয়া, জিজ্ঞাসা করিলেন, এ কি ? পিতাও তাঁহাকে সমস্ত কহিলেন। তিনি মদালসাকে হৃদয়ের সহিত ভাল বাসিতেন; স্থতরাং <sup>তাঁহার</sup> মৃত্যবার্ত্তা শুনিয়া ও পিতা মাতাকে সন্মুখে দেখিয়া, একবারে শক্ষা ও শোকসাগরেয়/ গর্ভগত হইলেন। তদবস্থার চিস্তা করিলেন, সেই সাধবী বালা আমার মৃত্যুখটনা ওনিরাই, প্রাণ্ ত্যাগ করিয়াছেন। ইহা ওনিরাও আমি স্থির রহিরাছি। সর্বাথা আমি নিঠুরস্থার, আমাকে ধিক্ সেই মৃগলোচনা মণীর বিরহে প্রাণত্যাগ করিয়াছেন। আমি কিন্ত তাঁহার বিরহে এখনং জীবিত রহিরাছি! অত এব আমি বারপর নাই নির্দ্ধ, অনাঠ্য ও স্বণাশুত।

অনস্তর তিনি মনকে বিশেষরূপে সংঘত ও মোহোদ্রেক অপাত্তত করিয়া, নিশাস ও উদ্ধান্ত সহকারে নিতান্ত ব্যাকুলচিত্তে পুনরায় চিন্তা করিলেন, তিনি আমার জন্ত প্রাণত্যাগ করিয়াছেন। অতএব আমি যদি প্রাণত্যাগ করি, তাহাতে তাঁহার কি উপকার হইতে পারে গু ঐরপে প্রাণত্যাগ করাই স্ত্রীলোকের শ্লাঘার বিষয়। যদি আমি কাতর হইরা, বারস্থার হা প্রিয়ে বিলয়া, রোদন করি; তাহাতেও আমার শ্লাঘার বিষয় কিছুই নাই। কেন না, আমরা পুরুষ ! আবার, যদি শোকে জড়ভাবাপর ও নিতান্ত ব্যাকুল হইরা, মাল্যাদি ভ্যাগে ও অঙ্গসংস্করণানি পরিহার করি; তাহাহইলে, বিপক্ষণণের পরিভবাম্পদ হইব। এদিকে, শক্রগণের সংহরণ ও পিতার পরিচরণ করাই আমার একমাত্র কর্মা। আবার, ঐ কারণে আমার জীবনও পিতার আয়ন্ত। এরূপ অবহার কিরপে প্রাণত্যাগ করিতে পারি ? উপস্থিত ক্ষেত্রে কর্ম্বতা কি গ্রীসজ্যোগ একবারেই ত্যাগ করিব ? তাহাতেও কিন্তু সেই তন্মসীর সর্ক্ষণা উপকার করা হইবেনা। অথবা তাহার উপকার বা অপকার যা হউক, তাহার জন্ত কোনরূপ সত্য বন্ধন করা আমার কর্ম্বতা। তিনি যথন আমার জন্ত প্রাণ দিয়াছেন, তথন ঐরপ করা ত আমার পক্ষেত্র সামান্ত কথা।

এইরপে মতি স্থির করিয়া, তিনি পত্নীর উদ্দেশে জলদান ও অক্তান্ত কর্ত্তব্য সাধনানস্থ বলতে লাগিলেন, সেই কুশালী মদালসা যথন আমার ভার্য্যা হইলেন না, তথন এই জন্ম অন্ত কোন রমণীই আমার সহচারিণী হইতে পারিবে না। আমি সেই মৃগণাবলোচনা গন্ধর্মতন্যা ব্যতিরেকে অন্ত কোন ললনাকেই পরিগ্রহ করিব না; আমি এই সত্য করিলাম। আমি পুনরায় এই সত্য করিতেছি, সেই গলগামিনী সন্ধ্যানিণী পত্নী ব্যতিরেকে অন্ত কোন রমণীকেই উপভোগ করিব না।

পুত্রম কহিলেন, তাত! তিনি মদালদার বিরহ্যোগবশতঃ সম্দাম স্ত্রীভোগ ত্যাগ করিন। সর্বাদাই সমচ্রিত্র ও সমব্য়স্ক বয়স্তবর্গের সহিত আমোদপ্রমোদে কাল যাপন করেন। মদালদাকে বদি দেওয়া যাইতে পারে, তাহাহইলেই, তাঁহার প্রাকৃত উপকার করা হয়। কিন্তু তাহা কাংগ্র সাধ্য ? স্বয়ং ঈশ্বর ও পারেন কি না সন্দেহ; অন্তের কথা আর কি বলিব ?

পুত্র কহিলেন, পুত্রবন্ধের এই কথা কর্ণগোচর করিয়া, তাহাদের পিতা বিমর্ব প্রাপ্ত ইইলেন।
আনস্তর বিশেষরূপে বিবেচনা করিয়া, সহাস্ত বচনে কহিলেন, লোকে যদি অসাধ্য জানিয়া, কোন
কার্য্যে উদ্যম না করে, ডাহাইইলে, উদ্যমহানিবশতঃ বিপুল অনিষ্টমংযোগ ইইয়া থাকে। অত
এব স্বকীয় পুরস্কার পরিহার না করিয়া, কর্মে প্রবৃত্ত হইবে। একমাত্র দৈব ও পুরস্কার এই
উভয়েই কর্ম নির্ভির ক্রিয়া থাকে। অতএব আমি তপশ্চরণস্হকারে এই রূপে যত্ন করিব,
য়াহাতে এই অসাধ্য অচিরাং সাধন হয়। এই বলিয়া নাগরাজ হিমানয়ের অন্তনিবিষ্ট প্রকাবিতর
তীর্থে গমন করিয়া, সহশ্চর তপশ্চর্যায় প্রবৃত্ত হইলেন। এবং তদ্গত হাদয়ে আহারসংবদ
সহকারে ত্রিসন্ধা লান করিয়া, দেবী সরস্বতীর এই বলিয়া তাব করিতে লাগিলেন, যিন এক্সমোন
ও জগতের ধাত্রী, সেই দেবী সরস্বতীর আরাধনামানসে আমি মন্তক হারা প্রণাম করিয়া, তব
করিতেছি। দেবি! কার্য্য, কারণ, ধর্মা, কর্ম্ব, কাম, মোক্ষ, যে কিছু পদ আছে, তৎসমন্ত আন
নাতে, সংসর্গ না থাকিলেও, সংযুক্তের স্থায়, সন্নিবদ্ধ রহিয়াছে। দেবি! তুমিই পরম অক্ষর,
যাহাতে সমন্তই প্রতিষ্ঠিত আছে। দেবি! সেই পরম অক্ষর পরমাণুব্য সমন্ত বিশ্ব আপ্রস্ক করিয়া
আছে। কার্যে জন্ম ও ভূমিতে পরমাণুর স্থায়, সেই পরম অক্ষরস্বরপ বন্ধ ও এই ক্রমাত্রক বিষ্
আছে। কার্যে জন্ম ও ভূমিতে পরমাণুর স্থায়, সেই পরম অক্ষরস্বরপ বন্ধ ও এই ক্রমাত্রক

ভোমাতেই প্রতিষ্ঠিত রহিষাছে। দেবি ! ওক্কারাক্ষরগংস্থান, স্থির, অস্থির, মাত্রাত্রের, সং অসৎ, সুমন্তই ভোমাকে আশ্রের করিয়া আছে। তিন লোক, তিন বেদ, তিন বিদ্যা, তিন আশ্র, তিন জ্যোতি, তিন বর্ণ, তিন ধর্ম, তিন আগম, তিন গুণ, তিন দেব, তিন দেব, তিন আশ্রম, তিন কাল, তিন অবস্থা এবং পিতৃগণ ও দিন রাত্রি প্রভৃতি যাবতীয় পদার্থ উলিখিত তিন মাত্রাস্থান। দেবি ! ঐ মাত্রাত্রয়ই তোমার রূপ। বিভিন্ন-সম্প্রদায়িক ব্যক্তিগণের উপাসনা জ্লম্ব বেদে যে সোম, ইবিং ও পাকবিষয়ক সনাতন আদ্য একবিংশতি বাহ্যতি আছে, ত্রহ্মবাদিগণ তোমার উচ্চারণবশেই তৎসমস্ত সমাহিত করেন। উল্লিখিত মাত্রাত্রয় বাত্রিরেকে তোমার আর একটী অর্ক্মাত্রাহ্রিত রূপ আছে, তাহা যেমন অনির্কাচনীয়, সেইরূপ তাহার বিকার নাই, পরিণাম নাই ও ক্ষরভাব নাই। তোমার এই পর্য রূপ নির্দেশ করিতে আমার সাধ্য নাই। মুধ, জিহ্বা, তালু বা ওটাদি হারা উহা উচ্চারণ করা যায় না। ইন্দ্র ও ব্যুগণ, ত্রহ্মা ও জ্যোতিক্ষ সম্দায় এবং চক্র ও স্থাসকলেই তোমার স্বরূপ।

যাহা বিশের আবাস, যাহা বিশেব স্থানপ, যাহা বিশেব ঈশার এবং যাহা ঈশারেরও ঈশার; যাহা সাংখ্য ও বেদান্তে বর্ণিত ও বহু শাখাসহারে স্থিরীকৃত হইরাছে; যাহার আদি নাই ও নিধন নাই; যাহা সং ও অসং; আবার যাহা কেবলই সংস্থারপ; যাহা এক ও অনেক; আবার যাহা এক নহে; যাহা স্টিভেদের আশার; যাহার কোনরূপ আখ্যা নাই; আবার বড়- গুণ ও চতুর্বর্গিই যাহার আখ্যা; যাহা ত্তিগুণের আশার; যাহা বিবিধ শক্তিমান্ পদার্থসমূহের মধ্যে একমাত্র শক্তির চূড়ান্ত ককাস্থারপ; যাহা স্থে অহ্প, আবার মহাসৌধ্যস্থারপ, তাহা তোমাতেই প্রতিভাত হইরা থাকে। এইরুপে দেবি! তুমিই সকল ও নিক্রল সমস্তই ব্যাপিয়া আছে।

অবৈত ও বৈত উভর রূপে ব্যবচ্ছিন বন্ধ তোমাতেই প্রতিষ্ঠিত রহিন্নাছেন। যে সকল পদার্থ নিতা, যাহাদের ধ্বংশ হইনা থাকে, যাহারা ফুল, স্কা ও অভিস্কা; যাহারা ভূমিতে ও যাহারা অন্তরীক্ষে অথবা যাহারা অন্তর অবস্থিতি করিতেছে; তাহাদের সকলেরই একমাত্র তোমা হইতেই উপশব্ধি হইনা থাকে। যাহা মূর্ত্ত থাহা অমূর্ত্ত, যাহা সমন্ত ও যাহা এক, যাহা স্থের, যাহা পৃথিবীতে, যাহা অন্তরীক্ষে অথবা অন্তর যাহা কিছু আছে, তৎসমন্তই তোমাতে সম্বন্ধ ও একমাত্র স্বনীয় স্বর ও ব্যঞ্জন সহায়েই পরিজ্ঞাত হইনা থাকে।

বিষ্ণুব জিহবারপিণী সরস্বতী এইরপে তৃষ্মানা হইয়া, মহাত্মা অখতরকে কহিলেন, অনি ক্ষণনাতা উরগরাজ অখতর! আমি তোমায় বর দিব। তোমার মনে যাহা আছে, বল, তাহাই তোমাকে প্রদান করিব।

অখতর কছিলেন, দেবি ! অত্যে কম্বলকে আমার সহায়রূপে সংযোজিত করুন। পরে আমা-দের উভয় ভাতাকেই সমস্ত শ্রস্তান প্রদান করুন।

সর্বতী কহিলেন, পর্গণতম ! তোমরা উভর আতাই সপ্ত ব্রুর, সপ্ত গ্রাম, সপ্ত বর্গ, সপ্ত গতি ও দ্রুর মৃদ্ধনা, একোনপঞ্চাশৎ তাল, তিন গ্রাম, এই সমস্ত গান করিতে পারিবে। তথাতীত, আমার প্রসাদে অক্যান্ত বিষয়ও তোমাদের বিদিত হইবে। চতুর্ব্বিধ পদ, <u>তিবিধ তাল, তিন প্রকার লয়, তিবিধ যতি এবং চারিপ্রকার তোদ্যও তোমাদিগকে প্রদান করিলাম। আমার প্রসাদে এই সমস্ত ও ইহাদের অন্তরিত বা আয়িত স্বর-ব্যান-সম্বদ্ধ অপর মাহা কিছু আছে, তাহাও তোমার উভরে আমার প্রসাদে অবগত হইবে। আমি সমস্তই তোমাদিগকে দিলাম। আমি আর কাহাকেই এই সকল দিই নাই। তোমরাই উভরে কেবল পাতালে ও পৃথিবীতে, কলতঃ সর্ব্বা এই সকলের প্রধ্যেতা চইবে।</u>

সকলের জিহ্বাস্থরপ। কমললোচনা সরস্বতী এই বনিয়াই তৎক্ষণে অস্তর্হিতা হইলেন। নাগ-বাল আর তাঁহাকে দেখিতে পাইলেন না। তাঁহার বরপ্রভাবে তাঁহারা উত্তর ভ্রাতার উরিখিত শুনুত্ব বিষয় অবপ্ত হুইলেন। পুনু, তাল ও স্বরাদি বিষয়ে তাঁহাদের অধিতীর বিজ্ঞতা উপপ্র ছইল। তখন উভরে তত্মীগরসহকারে সপ্তস্বরে গান এবং বাক্য ও ইন্সিরগ্রাম সংবত করিরা, শৈদ্ধরাজ কৈলাদের শিথরদেশে সমাসীন শঙ্করের আরাধনামানসে প্রাত্তে, মধ্যাকে, সন্ধার ও রাজিতে তৎপরতাপূর্বক যক্ষ করিতে লাগিলেন। ভূতভাবন ভবদেব বহুকাল পরে গীত হারা সম্বন্ধ হইরা, তাঁহাদের উভরকে কহিলেন, বর গ্রহণ কর।

তথন অখতর কখলের সহিত প্রণাম করিয়া, সেই শিতিক ঠ উমাপতি মহাদেবকে আনাহ-লেন, আপনি দেবদেব, ত্রিলোচন ও সর্বাশক্তিবিশিষ্ট। যদি আমাদের প্রতি প্রীত ইইয়া থাকেন, ভাহাহইলে, আমাদের অভিলয়িত এই বর দিন, ক্বলয়াখের পত্নী মদালদা প্রাণত্যাগ করিয়। ছেন। তিনি বে বয়সে মরিয়াছেন, সেই বয়দেই আমার ছহিতা হইয়া, অন্প্রহণ কর্মন। পূর্বে বেমন তাঁহার কান্তি ছিল, যেন তাঁহার সেইরূপ কান্তি হয়। তিনি যেন জাতিমরা এবং পূর্বের ভার যোগিনী ও যোগমাতা হইয়া, আমার গেহে জন্ম হল করেন।

মহাদেব কহিলেন, আছো, যাহা বলিলে, আমার প্রদাদে তাহাই হইবে; তাহাতে কোন সন্দেহই নাই। অধুনা, শ্রবণ কর। শ্রাদ্ধ উপস্থিত হইলে, শুচি ও প্রবত্তিও হইয়া, নিজেই মধ্যম পিও ভক্ষণ করিবে। মধ্যম পিও ভক্ষণ করিলে, তোমার মধ্যম কর্ণ হইতে কল্যাণী মদা লগা, বে অবস্থার মরিয়াছে, দেই অবস্থাতেট সম্ভূতা হইবে। তুমি এইরপ কামনা করিয়া, পিড় প্রের ভর্ষণ কর। তৎক্ষণাৎ খাস্ত্যাগ্রমন্ত্র তোমার মধ্যম কর্ণ হইতে সেই কল্যাণী, যেরপে মরিয়াছিলেন, সেইরপেই উথিতা হইবেন।

তাঁহার। তুই লাত। এই কথা শ্রণ করিয়া, মহাদেবকে প্রণাম করিয়া, পরিতোষপ্রান্তি পূর্ঃসর পূনরায় রসাতলে সমাগত হইলেন। অনস্তর অখতর ঐরপে শ্রাদ্ধ ও তহৎ যথায়থ বিধানে মধ্যম পিও ভক্ষণ করিলেন। তদনন্তর আপনার অভিলয়িত ধ্যান করিতে করিতে নিখাস তাগি করিবামাত্র তাঁহার মধ্যম কর্ণ হইতে ক্ষীণাঙ্গী মদালসা সেইরপে সম্ভূতা হইগেন। অখতঃ এই ঘটনা কাহারও নিকট প্রকাশ করিলেন না। আপনার গৃহ্মধ্যে সেই স্বদ্ধীকে স্ত্রীগণসহায়ে অভি গোপনে রাখিয়া দিলেন।

এ দিকে তাঁহার প্রদ্র সাকাৎ দেবকুমারদ্রের ছার প্রতিদিন স্থাপ আগমন করিয়া, এক ধবলের সহিত বিহার করিতে লাগিলেন। একদা নাগরাজ হর্ষায়িও হইয়া, তাঁহাদের ছইজনকে কহিলেন, আমি পূর্বে তোমাদিগকে যাহা বলিয়াছিলাম, তোমরা কিজ্ঞ তাহা করিতেছ না! সেই রাজপুত্র তোমাদের উপকারী। কিজ্ঞ তোমরা সেই মানদকে প্রভূপেকারসাধনার্থ আমার নিটক আনিতেছ না ?

বেহমর পিতা এইরূপ কহিলে, প্রথম ধীমান ঋতধ্বজের প্রেগমন করিরা, তাঁহার সহিব বিহার করিতে লাগিলেন। অনস্তর কথাপ্রসঙ্গে প্রণয়প্রকাশপুরঃসর কুবলয়াখকে আপনালে গৃহে গমনার্থ অফ্রোধ জানাইলেন। তিনি তাঁহাদিগকে কহিলেন, আমার এই গৃহ তোমাদেরই। আমার ধন, বাহন ও বস্তাদি যাহা কিছু আছে, তাহাও তোমাদের। তবে আমার প্রতি যদি তোমাদের প্রণম্ব থাকে, তাহাইলে, আমাকে ধন বা রম্ম যাহা দান করিতে জাল লাব করিয়াছ, প্রদান কর। আমি হরাত্মা দৈব কর্ত্ক এতাবং বঞ্চিত হইমাছি, যে আমার গৃহবে তোমাদের নিজের বলিয়া বোধ নাই! যাদ আমার প্রিয় সাধন করা তোমাদের কর্ত্ববাহা এবং যদি আমি তোমাদের অমুগ্রহের পাত্র হই, তাহাইলৈ, আমার ধনে ও আমার গৃহহে মুগণ কর। দেপ, যাহা তোমাদের, তাহা আমার এবং আমার হে কিছু, তৎসমন্তও তোমাদের আমি যাহা বলিলাম, তাহাই প্রকৃত বলিয়া জানিবে। ফলতঃ, তোমরা আমার বহিশ্বর প্রাণ স্করপ। অত্রব পুনরায় এরূপ বিভিন্নার্থ বাক্য প্রাণ করিও না। আমি হৃদ্যের সহিত ভোমাদিগকে দিগকে দিবা দিতেছি। তোমরা প্রীতিপ্রকাশপুরঃসর আমার প্রতি প্রসাদপ্রায়ণ হও।

उथन नागनमनवद दश्हार्जनमन इहेता, किकिं अनवत्कान अकामन्त्रः प्रजनमन्त्

কহিলেন, তুমি বাহা বলিলে, আমরাও তাহাই সর্বালা মনে করিরা থাকি; এবিবরে কোন সন্দেহ নাই; স্বতরাং কোনরূপ অন্তথা ভাবিও লা। কিন্তু আমাদের পিতৃদেব অরংই ইহা বারবার ধনিয়াছেন, বে, কুবলয়াখকে দেখিতে আমার ইচ্ছা হয়।

তথন ক্বলয়াশ বরাসন হইতে গাত্রোখান করিয়া, শ্বয়ং পিতা এই কথা বলিয়াছেন, বলিয়া, ভ্মিষ্ঠ হইয়া, প্রণাম করিলেন এবং কহিলেন, আমিই ধয় এবং আমিই অতি প্ণাবান্। আমার সমকক্ষও কেহই নাই। কেন না, আমাকে দেখিবার জন্ম স্বয়ং পিতা নিতান্ত উৎম্ক-চিত্ত হইয়াছেন। সতএব উঠ, এখনই ঘাইব; ক্ষণমাত্রও তাঁহার আজ্ঞা লব্দন করিতে আমার ইছো নাই। তাঁহার পাদম্পর্শক্ষক এ বিষয়ে আমি শৃণ্ণ করিতেছি।

অনস্তর তাঁহারা উভয়ে দেবগণেরও মাননীয়, শাস্তপভাব, পিতৃদেব অখতেরের গোচরে রাজ-ানারের আগমনবার্তা নিবেদন করিলেন। তথন ঋতধ্বজ দেখিলেন, সেই পাতালভুবন অভীব ানোরম ; কুমার, তরুণ, বুদ্ধ, সকলজাতীয় উরগগণে উপশোভিত ; নাগক্সারা উহার ইতন্ততঃ দীড়া করিতেছে। তাহাদের হার ও কুণ্ডল পরমস্থন্দর এবং তাহাদের সান্নিধ্যযোগে তারকা**ত্তবক** ামলক্ষত গগনতলের স্থান্ন, পাতালতলের শোভা হইষাছে। উহার কোণাও গীতধ্বনি হইতেছে: शंशांत मरक परक त्वपू अ वीला मकल निर्मातिक श्रेरक्ट । मृतक, अनव अ आर्कान्यस्तिरक ট্যা প্রতিধানিত। উহাতে শত শত মনোহর গৃহ শোভা পাইতেছে। তিনি পাতাল দেখিতে দ্ধিতে, সেই প্রিয়তম বন্ধস্থারে সহিত যাইতে লাগিলেন। অনস্তর সকলে নাগ্রাজনিবেশনে াবেশ করিয়া, অবলোকন করিলেন. সেই মহাত্মা তথায় অবস্থিতি করিতেছেন। তাঁহার পরি-ান বিষয় বস্ত্র ; পলদেশে দিব্য মাল্য ; কর্ণে মণিকুগুল শোভমান ; স্থানির্পাল-মৃক্রাফল-লতা-<sup>ইনির্মিত</sup> মনোহর হার সহায়তায় তাঁহার শোভার সীমা নাই। তাঁহার হত্তে কেয়ুর। তিনি নির-চ্ছিন-কাঞ্চনময় আসনে উপবেশন করিয়া আছেন। রাশীকৃত মণি, বিজ্ঞম ও বৈতুর্য্যে **থ**চিত <sup>ওয়াতে</sup>, উহার প্রকৃত রূপ অন্তরিত হইয়াছে। অনস্তর তাঁচারা রাজকুমারকে দেখাইয়া দিলেন, <sup>নিই</sup> আমাদের পিতা। তৎপরে পিতার নিকটেও রাজকুমারের পরিচয় প্রদান করিয়া **কহিলেন,** নিই সেই বীর কুবলয়াখ। তথন ঋতধ্বজ নাগেল্রের চরণে প্রণাম করিলেন। নাগেল্রও তাঁহাকে <sup>লপুর্</sup>ষক উত্থাপিত করিয়া, আলিঙ্গন ও মন্তকে আত্রাণ করিয়া, কহিলেন, বৎস! তুমি চির-াঁবী হও এবং শত্রুকুল নির্দাল করিয়া, পিতা মাতার দেবা কর। তৃমিই ধ্যা! বেহেতু আনমার জিরা পরোক্ষেও তোমার অসামান্ত গুণের কথা বলিয়া থাকেন। ইহাতেও তুমি মন, বাক্য, <sup>ায় ও</sup> চেষ্টিত সর্বাংশেই বর্দ্ধিত হইবে। যাহার গুণ আছে, তাহার জীবনধারণই শাঘার বিষয়। <sup>হার</sup> গুণ নাই, দে জীবনসত্ত্বে মৃত। গুণবানু ব্যক্তি পিতা মাতার পরম শান্তি বিধান, শক্ত-<sup>গৈর</sup> হন্ধে তাপ সমুদ্রাবন ও মহাজনে বিখাস সভ্যটন করিয়া, আপনার কল্যাণ সম্পাদন করেন। <sup>ৰ্বগ্ৰ</sup>, পিডুগ্ৰ, ৰান্ধৰগ্ৰ, ব্ৰাহ্মণগ্ৰ এবং মিত্ৰ, অৰ্থী ও বিকলাদি ব্যক্তিগ্ৰ সকলেই গুৰ-<sup>ানের চির</sup> জীবন কামনা করিয়া থাকেন। গুণীরা কাহারও পরিবাদ করেন না; ছ:ণীর প্রতি <sup>র। ক্রিরা পাকেন এবং বিপরকে আশ্রর দেন। এই সকল কারণে তাঁহাদেরই জন্ম দার্থক।</sup>

রাজকুমারকে এইরপ কহিয়া, তিনি তাঁহার পূজা করিতে উৎস্থক হইয়া, পুত্রবন্ধক কহিলেন্ন আমরা সকলে মিলিত হইয়া, সানাদি বাবতীয় কার্য্য যথাক্রমে সম্পাদন ও ইচ্ছাস্থসারে মঙ্ পানাদি সন্তোগ ও আহার করিয়া, ক্বলয়াখের সহিত হাদরের সাক্ষাৎ উৎসবস্বরূপ কথোপকথনে স্টচিতে স্বর্কাল অবস্থিতি করিব। ঋতধ্যক কোনরূপ বাঙ্নিস্পত্তি না করিয়া, তাহাতেই স্বীকার করিলেন। তথন উদারবৃদ্ধি প্রগণতি তদ্মুর্প অনুষ্ঠান করিলেন।

সেই ভোগশীল, আত্মবান্, সত্যবাদী মহোরগপতি অখতর আত্মজ ও নৃপনন্দনের সহিত স্ম বেত ও হ্রাবিষ্ট হইয়া, অন্ধ ও মধু যথাঘোগ্য বিধানে ভোগ করিলেন।

ইতি কুবলয়াখের পাতালপ্রবেশ নাম অয়োবিংশ অধ্যায়।

# চতুর্কিংশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, অনন্তর উরগপতি মহাত্মা অখতর আহার করিলে, তদীয় পুত্রহয় ও রাঞ্জুমার সকলে তাঁহার উপাসনায় প্রবৃত্ত হইলেন। তথন মহাত্মা অখতর অফুরপ-বাক্যপ্রাগ্য পুরংসর রাজপুত্রের প্রীতিসম্পাদনপূর্ধক বলিতে লাগিলেন, ভদ্র ! তুমি আমার গেহে অভ্যাগত হইরাছ। অতএব তোমার কি করিব, পুত্র যেমন শকা ত্যাগ করিয়া, পিতাকে বলিয়া থাকে, তদ্ধপ তুমিও সদ্ধন্দে আমাকে বল। অর্ণ, রোপ্য, বল্প, বাহন অথবা অন্ত যাহা কিছু অভিমত, অভ্যন্ত তুর্বভ হইলেও, আমার নিকট তাহা প্রাথিনা কর।

अठश्वक किटलन, छन्रवन । जाननात लानात लामात निज्ञात्वतं ताह स्वर्गानि मकनरे আন্তে। অন্যাপি আনার ঈদৃশ বস্তর কোনরূপই আবশুক্তা উপস্থিত হয় নাই। মদীয় পিডা ষ্থন সহস্রবর্ষ বস্তুদ্ধরা শাসন ক্রিতেছেন এবং আপনিও যথন পাতালে রহিয়াছেন, তথন আমার অন্ত:করণ প্রার্থনোমূথ হইতে পারে না। কেন না, আমি না চাহিবার পূর্বেই তংসমন্ত পাইতে পারি। ষাহাদের পিতা জীবিত আছে, তজ্জয় যৌবনসময়েও যাহারা কোটি কোটি মুদ্রাতেও সামাক্ত তৃণের ক্লার জ্ঞান করিরা থাকে, তাহারাই পরম পুণ্যশীল এবং তাহারাই স্বর্গীয় মহা-পুরুষ। দেখুন, আমার মিত্রগণ সকলেই আমার অমুরূপ-শিষ্টাচারদম্পন, আমার দেহও নীরোগ; জাগার পিতারও বিশিষ্টরূপ ধনসম্পত্তি আছে এবং আমিও তরুণবয়স্ক। অতএব আমার কিনা আছে ? যাহার অর্থের অভাব, তাহারই মন যাক্রাপ্রবণ হইয়া থাকে। কিন্তু আমার কিছুরই অভাব নাই। অত এব আমার জিহবা কিজ্ঞ যাক্রা করিবে ? যাহাদিগকে আমার গেহে ধন আছে, কি, নাই, এইরূপ চিস্তা করিতে হয় না এবং যাহারা পিতার বাল-তরুচ্ছায়া আরু করিয়া আছে, তাছারাই সুখী। কিন্তু যাহারা বাল্যকাল হইতেই পিতৃথীন হইয়া, পরিবার পোষণে প্রায়ত্ত হয়, আমার মতে বিধাতা তাহাদিগকে সুখাস্বাদ-বিভ্রন্থ করিয়া, বঞ্চিত করিয়া ছেন। আমি আপনার প্রসাদে পিতার প্রদন্ত রাশি বাশি ধন রত্নাদি ইচ্ছারুসারে নিত্য অর্থী-দিগকে দিয়া থাকি। আবার, চূড়ামণি সহায়ে যথন আপনার পাদপদাযুগল ম্পর্শ ও আপনার আল সঙ্গ লাভ করিয়াছি, তথন আমি এথানে তৎসমত প্রাপ্ত হইয়াছি। আমার আর কিছু<sup>রই</sup> অভাব নাই। তিনি এইপ্রকার সবিনয় বাক্য প্রয়োগ করিলে, পন্নগরাজ প্রীতিসহকারে আপ্রা পুত্রম্বরের উপকারী সেই ঋতধ্যজকে, কহিলেন, যদি আমার নিকট স্বর্ণ রত্নাদি গ্রহণ করিছে তোমার প্রবৃত্তি না হন, তাহাহইলে, অন্ত বাহাতে তোমার মনের প্রীতি জলিতে পারে, তার্হ বল; জামি ভোমাকে প্রদান করিব।

কুবলরাম কহিলেন, ভগবন্! আপনার প্রদাদে আমার গেছে প্রার্থনীয় কোন বস্তুরই <sup>কোন</sup> রূপ অভাব নাই। অন্য আবার আপনাকে দর্শন করিয়া, বিশেষরূপে তৎসমন্ত প্রাপ্ত হই<sup>নাই।</sup> ামি মাত্রৰ হইয়াও, দেবতা আপনার যে অঙ্গদঙ্গ লাভ করিলাম, ইহাতেই আমি ফুডফুডা ইরাছি এবং আমার জীবনও সার্থক হইরাছে। প্রগেশর ! আমার মন্তকে আপনার পদধূলি ব স্থান প্রহণ করিরাছে, তাহাতে আমার কি না প্রাপ্তি হইরাছে ? তবে, বদি অবশু আমার অতী-দত্ত বর দান করাই কর্ত্তব্য বোধ করেন, তাহাইইলে, এই বর দিন, আমার হৃদয় ইইতে যেন দখনই পুণাকর্ম্ম-সংস্কার ব্যপোহিত না হয়। আমার মতে বাহন, গৃহ, আসন, স্থব্ধ, মিনিও ারাদি এবং জী, অন্ধ, পান, পুত্র, স্কর মাল্য ও অন্থলেপন এবং গীত ও বাদাদি অভান্থ অভি-বিত যাবতীর বস্তু, সমস্তই পুণারূপ বনম্পতির ফল। অতএব ব্যক্তিমাত্রেই কৃত্তির হইয়া, ত্রমূলক মুর করিবে। দেখুন, পুণাসিক্ত ব্যক্তিগণের পৃথিবীতে কোন বিষয়েই কোনরূপ অভাব হয়না।

অখতর কহিলেন, প্রাক্ত ! তাহাই হইবে তিতামার মতি সর্বনাই ধর্ম আশ্রহ করিয়া রহিবে।

তুমি যেরপ বলিলে, তদম্পারে এই সমস্ত, সতাই ধর্মের সাক্ষাৎ ফল। তথাপি, তুমি আমার
প্রেহ ধ্বন আসিয়াছ, তথুন মুস্ব্যলোকে তোমার মতে যাহা হুর্লভ, তাহা অবশ্র তোমাকে
প্রহণ করিতে ইইবে।

তাহার এই কথা শুনিয়া, রাজপুত্র তাঁহার পুত্রব্যের মুখের দিকে দৃষ্টিসঞ্চালন করিলেন।
তথন তাঁহারা উভরে প্রণিপাতপুরঃসর রাজপুত্রের যাহা কিছু অভিলাম, তৎসমন্তই প্রতাভিধানে
পিতার গোচরে নিবেদন করিয়া কহিলেন, ইহাঁর পত্নী কোন হরায়া দৈত্যকর্তৃক প্রতারিত হইয়া,
ইহাঁর মৃত্যুবার্ত্ত। প্রবণ করিয়া, পরমপ্রিয়তম প্রাণ পরিহার করিয়াছেন। কুবৃদ্ধি দানব রুত্বৈর
হইয়া, এরপ করিয়াছিল। ইহাঁর পত্নীর নাম মদালসা। তিনি গদ্ধর্করাজের ছহিতা। তাত!
ইনি মদালসার প্রতি কৃতজ্ঞতাপ্রকাশ মানসে তাঁহার মৃত্যু অবধি এই প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন,
মদালসা বাতিবেকে অন্ত কাহাকেও ভার্যাত্বে পরিগ্রহ করিবেন না। এই বীর ঋতধ্যশ
বিধুনা সেই চারুসর্কাঙ্গীকে দেখিবার জন্ত নিতান্ত উৎস্ক হইয়াছেন। তাত! যদি তাহা
হিরতে পারেন, তাহাহইলেই ইহাঁব প্রকৃত উপকার করা হয়।

অখতর কহিলেন, পঞ্ভূতের দহিত একবার বিষোগ হইলে, পুনরায় তাহাদের দহিত দেই মণে সংবোগ হওয়া অপু বা আফুরী মায়া ভিন্ন অন্ত কোন উপায়েই সম্ভাবিত নহে।

তথন খতধ্বজ প্রণিপাত করিয়া, প্রেম ও লজ্জাসহকারে তাঁহাকে কহিলেন, তাত ! আপনি মধুনা সেই মদালদাকে যদি মায়া করিয়াও দেখাইতে পারেন, তাহাহইলে, পরম অন্তাহ করি-লেন, বোধ করিব ।

অখতর কহিলেন, বৎস ! যদি মায়াদর্শনে ইচ্ছা হইয়া থাকে, তবে তাহা দর্শন কর । দেও, তুমি বালক ব্লিয়া বেমন অন্থাহের পাত্র, তেমনি আমার গেহে অভ্যাগত বলিয়া, গুরুত্বরূপ মাননীর। এই বলিয়া তিনি গৃহগুপ্তা মদালসাকে তথায় আনয়ন করাইলেন এবং তাহাঁদের সকলকে ভূলাইবার জন্ত মিছ মিছি কতিপয় আফুট মন্ত্র প্রেয়াপপুর্কক, রাজপুত্রকে মদালসা সকশন করাইয়া কহিলেন, বৎস ! দেখ দেখি, এই সেই তোমার ভার্যা মদালসা কি না ?

তিনি মদালসাকে দর্শন করিয়া, তৎক্ষণাৎ লজ্জাত্যাগপুরঃসর, প্রিরে এই কথা বলিতে বলিতে তাহাঁরে অভিমুখীন হইলেন। তদ্দনি অখতর সহথে তাহাঁরে প্রতিষেধ করিয়া কহিবলৈন, বংস ! ইহা মারা। ইহাকে স্পর্শ করিও না। আমি পূর্বেই বলিয়াছি, সংস্পর্শনাদি করিশীল মারা আন্তর্গ করিব বাবে ব

নই, মারা আণ্ড অদ্শ হইরা থাকে।
এই কথার অতথকল, হা প্রিয়ে ! বলিয়া, মুর্চিত হইরা, ভূপৃঠে পতিত হইলেন। তদর্শনে
এই কথার অতথকল, হা প্রিয়ে ! বলিয়া, মুর্চিত হইরা, ভূপৃঠে পতিত হইলেন। তদর্শনের কি কেই!
গবিনী মদালদা চিন্তা করিতে লাগিলেন, অহো! আমার প্রতি এই রাজনন্দনের কি কেই!
এবং আমার উপরি ইইার অন্তঃকরণও কি অচল-ভাবাপর! দেখ, ইনি অরাতিদিগকে নিপাতিত
হইলেন। এক্দণে বিনাত্রে নিপাতিত হইলেন। আমাকে মারা বলিয়া প্রদর্শন করা হইরাছে।

বান্তবিক, আমি মিথাা; স্বতরাং স্পষ্টই মায়াস্থরপ। বায়ু, আকাশ, তেজ, জল ও মৃতিকার সমবায়ে যাহার জন্ম, তাহা মায়া ভিন্ন আরে কি হইতে পারে ?

অনস্তর অখতর রাজপুত্রকে আখাসিত করিয়া, বেরপে মৃত মদালসাকে পুনর্জীবিত করিয়া, ছেন, তৎসমস্ত বর্ণন করিলেন। তথন ঝতধ্বজ ভার্য্যাকে লাভ করিয়া, অতিমাত্র আহলাদিত হইয়া, আপনার সেই অখরত্বকে অরণ করিলেন। স্থতমাত্র অখ তথায় সমাগত হইল। তথন তিনি নাগরাজকে প্রণাম করিয়া, সপত্নীক সেই অখে আরোহণ করিয়া, আপনার স্থাপাভন পূরে প্রতিগমন করিলেন।

ইতি गमानमाञ्चाञ्चिनामक हजूर्सिः अथाम।



#### পঞ্বিংশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, তিনি অপুরে সমাগত হইনা, প্রলোকপ্রাপ্তা মদালসাকে পুনরার বেরপে লাভ করিবাছেন, তংসমন্ত পিতার নিকট আদ্যোপান্ত কীর্ত্রন করিলেন। প্রিত্রন্থতার মদালসা মাজ ও মাতরের চরণে প্রণাম করিরা, অনুনদিগকে ব্যস্ত গুরুক্তার্থসারে যথা নিয়মে বন্দন ও আলিঙ্গনাদি করিয়া, পূজা করিলেন। অনস্তর পৌরগণ মহোৎস্বে প্রবৃত্ত হইল। এদিকে ঝতধ্বের স্থাধ্যমা মদালসার সহিত শৈলনির্বরে, নদীপুলিনে, রমনীয় বন ও উপ্রনসমূহে বছকাল বিহার করিলেন। মদালসাও বিষয় ভোগ করিয়া, পুণ্যুক্ষয়বাসনায় অতীব প্রিয়দর্শন ঋতধ্বের সহিত বিবিধ রমনীয় স্থান সকলে বিহার করিতে লাগিলেন। এই রূপে বছ কাল অতীত হইলে, রাজা শক্রজিৎ সম্যক্ রূপে পৃথিবী শাসন করিয়া, কালধর্ম্বের বশবর্তী হইলেন। তথন পৌরগণ তদীর পুত্র উদারাচার-চেন্টিত মহাআ ঋতধ্বজকে রাজপদে অভিবিক্ত করিল। তিনি ঔরস পুত্রের ভ্রায় সম্যক রূপে প্রজালোকের পালন করিতে লাগিলেন। ঐ সম্যে মদালসার প্রথম প্রস্তান ভূমিষ্ঠ হইল। পিতা সেই ধীমান্ পুত্রের নাম বিক্রান্ত রাখিলেন। ভৃত্যুগণ সেই পুত্রের উংশিন্তিতে পরম প্রীতি প্রাপ্ত ইইল। মদালসা হাস্ত করিতে লাগিলেন।

ঐ পুত্র উত্তানশালী হইলা, অব্যক্ত অবে বোদন করিতে আরম্ভ করিলে, মদালসা তাহাকে সাজনা করিবার ছলে বলিতে লাগিলেন, রে তাত । তুমি সর্বোগাধি বিনিম্কি, তোমার কোনরণ নাম নাই। একণে কেবল করনা সহায়ে তোমার নামকরণ হইলাছে। তোমার এই দেহ পঞ্ছতের বিনির্দ্ধিত; স্কতরাং ইহা যেমন তোমার নহে, তুমিও তেমনি ইহারও নহে। তবে তুমি কিহেতু রোদন করিতেছ ? অথবা তুমি রোদন করিতেছ না। এই রাজপুত্রকেই আশ্রম করিলা, ঐরপ শক্ষ অলং প্রাহত্ত হইলাছে। তোমার ইজিল সকলেও বিবিধ ভৌতিক গুল ও অগুল সমস্ত বিকল্পিত ইহাছে। নিতান্ত হর্পল ভূত সকল যেরপ ভূত সহায়ে অল্প ও অগুল দানাদি বালা পরিবর্দ্ধিত হয়, তোমার সেরপ রুদ্ধিও নাই, ক্ষয়ও নাই। তোমার এই দেহ আবরণমাত্র। ইহা শীর্ণ ইইবে। ইহাতে তুমি মোহে আছেয় হইও না। গুলাগুভ কর্দ্মবলেই তোমার দেহে এই আবরণ সন্ধিন্ধ ইইলাছে। পিতা, মাতা ও ল্লী এবং আল্পীয় অনাল্পীয়, কেহই কিছু নহে। তুমি তাহাদিগকে বছমাননা ক্রিও না। যাহারা মোহাচ্ছন্নিতিত, তাহারাই হঃথকে হঃথের উপশমের কারণ ও ভোগ সকলকে স্থলাভের হুত্ব বিল্লা জানে, যাহারা অবিদ্যাহ্ন এবং তজ্জন্ত নিভার্ক মৃত্তিত, তাহারা তহও হুংথকেই স্থ্য বাল্যা অবণ্ত আছে। দেশ, ল্লী হাদিলে, আহিনন্দান হয়, তাহার অত্ব আহ্বাল ক্রিভিল, আহিনন্দান হয়, তাহার অত্ব হুংথকের স্বেলিভিল, আর্বালিভিল, আহেনন্দান হয়, তাহার স্ক্রিভিল, বাহার বিলিভিল, আহিনন্দান হল। বাহার স্বাহার বিলাগ অবণ্ড আছে। তেন ব্লী কি সাক্ষ্য নাক্ষণ নাক্ষা শিন্তা। তাহার ব্রতিহ্নিও ঐরণ ধর্ম্বিশিট। অতএব ল্লী কি সাক্ষ্য নাক্ষণ নাক্ষণ

কিভিতে যান, যানে দেহ, দেহে আবার অন্ত পুরুষ বিনিবিট আছেন। আপনার দেহে বেমন ুআমার বলিয়া জ্ঞান আছে, দেই পুরুষে দেরপ নাই। আহা, কি মৃঢ্ভা!

ইতি মদাল্যার পুত্রাফুশাসন নাম পঞ্বিংশ অধ্যার।

## षष् विश्म व्यक्षांत्र।

পুত্র কহিলেন, স্বীয় পুত্র দিন দিন যেমন বর্দ্ধিত হইতে লাগিলেন, রাজপত্নী মদালসাও তেমনি ঐরপ উল্লাপাদিছলে তাহাঁকে আত্মবোধ প্রদান করিতে আরম্ভ করিলেন। কুমার থেমন ক্রমে পিতার নিকট বল ও বৃদ্ধি লাভ ক্রমেন, জননীর উপদেশবাক্যেও তেমনি আত্মজান প্রাপ্ত হইলেন। জননীর নিকট জন্মিয়া অবৃদ্ধি আয়্মজান শিক্ষা করিয়া, প্রজানের সঞ্চার ও মমতা দুর হওয়াতে, কুমার গার্হস্ব ধর্মে একবারেই প্রবৃত্তিশৃত হইলেন।

অনন্তর মদালসার বিতীয় পুত্র ভূমিষ্ঠ হইলে, পিতা তাহার নাম স্থবাহ রাখিলেন। ইহাতে মদালসা হাত করিলেন। যাহাহউক, তিনি সেই কুমারকেও বাল্যকাল হইতে উল্লিখিত বিধানে উল্লাপনাদি বারা আত্মবোধ প্রদান করিতে লাগিলেন। তাঁহার মতিও উল্লিখিত ক্সান লাভ করিয়া, অতিশয় মাৰ্জিত ও বিক্সিত হইয়া উঠিল।

অনস্তর তৃতীয় পুত্র জ্মিলে, রাজা তাঁহার নাম শক্রমর্দন রাখিলেন। স্থ্র মদাল্সা নাম ভনিয়া, পুনরায় বহুক্দ হাস্ত করিলেন। অনস্তর তাহাঁকেও তিনি আত্মবোধ প্রদান করিলে, দেই কুমার কামনাহীন ও ক্রিয়াহীন হইলেন।

অনস্তর চতুর্থ পুত্র ভূমিষ্ঠ হইলে, রাজা তাঁহার নামকরণে উৎস্কক হইয়া, মদালদার প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে, তিনি ঈষৎ হাস্ত করিলেন। ডাইাকে হাসিতে দেখিয়া, রাজা কিঞ্চিৎ কোতৃহলাঘিত হইয়া, কহিলেন, আমি নামকরণে প্রবৃত্ত হইলেই, তুমি হাস্ত করিয়া থাক। বারম্বারই
এইরপ করিয়াছ। ইহার কারণ কি ? আমার মতে আমি যে বিক্রাস্ত, স্ববাহ ও শক্রমর্পন
এই কয়টী নাম রাখিয়াছি, সর্বাধা স্থাসক্ষত হইয়াছে। কেন না, ক্ষ বিয়য়িদ্বার শৌর্য ও দর্প
সংযুক্ত নামই উপযুক্ত হইয়া থাকে। তথাপি, ভজে! তোমার যদি এই তিনটা নাম ভাল বলিয়া
বোধ না হয়, তাহা হইলে, এবার তুমিই নিজে চতুর্থ পুত্রের নামকরণ কর।

মদালসা কহিলেন, মহারাজ ! আপনার আজা পালন করা আমার অবশ্য কর্তব্য। অভএব বেরপ বলিতেছেন, তদমুসারে আমিই এই চতুর্থ পুতের নাম রাথিব। এই ধর্মাঝা অলক ( অর্থাৎ বেপা কুক্র) নামে লোকমধ্যে বিখ্যাত হইবেন। রাজন্! তোমার এই কনীয়ান্পুত্র মতিমান্ ইইবেন।

জননী পুত্রের নাম অলক রাথিলেন। ইহার কোনরূপ অর্থই হয় না। স্তরাং রাজা এই নাম শ্রণ করিয়া, হাস্ত করত কহিতে লাগিলেন, শুতে। তুমি আমার পুত্রের যে নাম রাথিলে, ইহা নিতান্ত কুৎসিত ও অসম্ভঃ। ইহার অর্থ কি ?

বদালদা কহিলেন, মহারাজ। লোকাচারে একটা নাম রাথিতে হয়, বলিয়াই রাথিরা দিলাম। আপনার ক্বত নাম সকলেরও কোনরূপ অর্থই নাই; প্রবণ করুন। প্রাজ্ঞ পুরুষণ আত্মাকে দর্মবাপী বলিয়া থাকেন। ক্রান্তি শব্দে, এক দেশ হইতে অভ্যদেশগতি ব্যাইয়া থাকে। আত্মা দর্মগণ ও সর্মব্যাপী। এবং দেহের ঈশ্বর। তাঁহার আবার গতি কোথায়? সেইজভ আমার মতে বিক্রান্ত নোমের কোনরূপ অর্থই হয় না।

মহারাজ ! আত্মার কোনরূপ মৃষ্টি নাই ; হতরাং, অপর পুত্রের নাম যে হ্ববাহ রাধিরাছেন, তাহাও সর্বাথ অর্থশন্ত। ভূতীয় পুত্রের যে অরিমর্কন নাম রাধিয়াছেন, ভাহাও আমার মতে অসহত্ব। ইহার কারণ শ্রাবণ ককন। একাকী আত্মা সকল শরীরেই বিরাজমান হইতেছেন। তথন আর ওাঁহার শক্তই বাকে, আর মিত্রই বাকে হইতে পারে ? ভূতের হারা ভূতেরই লর সাধিত হর। বাহার মূর্ত্তি নাই, ভাহার আবার লর কিরপে হইতে পারে ? কোধাদির পূথণভাব বশতঃ এইরূপ করনাও অর্থ হীন হইরা থাকে। অর্থাৎ আত্মা কোধাদি সর্ক্রিবধ দোব বিবর্জিত। তিনি আবার শক্ত মর্ক্রকরিবন কিরপে ? বদি কেবল ব্যবহারে অস্তই ঐরপ নিরর্থক নাম করনা করা ঘাইতে পারে, ভাহাইতলে, আমি যে অল্ক নাম রাধিয়াছি, কিজ্প তাহাকেও নির্থক বলিতে পারেন ?

ৰহিষী এইক্সপ সাধুবাক্য প্রয়োগ করিলে. মহামতি মহীপতি সেই সত্যবাদিনী মদালসাকে কহিলেন, যাহা বলিতেছ, তাহা তাহাই। বাস্তবিক, কোন নামেরই অর্থ নাই।

বাহা হউক, স্থক্র মদালসা সেই পুত্রকেও পুত্রক্র পুত্রগণের ভার আয়বোধঞাদানে প্রবৃত্তা হইলে, রাজা কহিলেন, অয় মৃঢ়ে! তুমি এ কি করিতেছ ? ঈদৃশ দ্বিত আছাবোধ প্রদান করিয়া, আমার পূর্ব পূর্ব পূর্বগণের বেরূপ অকল্যাণ করিয়াছ, ইহারও সেইরূপ করিবে। বাদ আমার প্রিরাছ্ঠান তোমার কর্ত্তব্য এবং আমার কথা রক্ষা করাও বিধেয় হয়, তাহাহইলে, এই পুত্রকে প্রবৃত্তিমার্গে নিয়োজিত কর। দেবি! কর্মান্রের গমুচ্ছেদ হওয়া মৃত্তিমুক্ত নহে। পিড়্ শিশুরের লোপাপত্তি হওয়াও উচিত হয় না। পিতৃপণ ভঙাভত কর্মান্ত্রারে দেবলাকে অবহান, তির্বাশ্বানি ভোগ, মহুয়ার লাভ ও অভাভ যোনিসংক্রমণপূর্বক ক্রপেপাদায় নিভাস্ত কাতর ও ক্ষীক্তাবাপর হইলে, মনুষ্য কর্মনার্গ অবিহিত্তি করিয়া, পিণ্ডোদকপ্রদানপূর্বক সর্বাদ তাহাঁদের এবং তদস্করপে দেবগণ ও অতিথিগণের সবিশেষ তৃথি বিধান করে। ফলতঃ, দেবগণ, মনুষ্যগণ, পিতৃগণ, প্রত্গণ, ভূতগণ, গুহুকগণ, পক্ষিগণ, ক্মিগণ, কীটগণ, সকলেই মনুষ্যকে আশ্রয় করিয়া জীবিকানির্বাহ করে। অতএব ক্লাজি! ক্তিরদির্গের যাহা কর্ত্তব্য এবং উভয় লোকে ফললাভ জন্ত যাহা বিধেয়, আমার এই পুত্রকে তদস্করপ উপদেশ প্রদান করে।

বরনারী মদালসা স্থামীর এই কথা শুনিয়া, অলর্কনামক সেই পুত্রকে উল্লাপচ্ছলে বলিতে লাগিলেন, বংস! বর্দ্ধিত হও ; কর্মান্ত ঠান সহকারে আমার স্থামীর মনঃ আনন্দিত এবং তৎসহকারে মিত্রগণের উপকার ও অনিত্রগণের সংহার কর। রে পুত্র! ত্মিই ধন্ত! কেন না, তুমি নিঃসপর হুইয়া, চিরকাল পৃথিবী পালন করিবে। তোমার পালনগুণে সকলেরই যেন স্থওভাগ হয়। তাহাহইলে, তুমি পরম ধর্ম সঞ্চয় করিয়া, অমর হইতে পারিবে। তুমি সমাহিত হইয়া, প্রতিপর্কেই আন্ধণগণের তৃপ্তি বিধান, বান্ধবগণের বাসনা পূরণ, পরের হিত সংবিধান ও পরদার-প্রস্থিতি পরিহার করিবে। বিবিধ যজাহার্চানসহকারে দেবগণের ও অক্তম অর্থনান সাহাত্ম আন্ধাও মাশ্রিতবর্ণের প্রীতি সম্পাদন করিবে; বিবিধ অমুপম ভোগ্য বস্তু প্রদানপূর্কক স্ত্রীগণের ও যুদ্ধ হারা অরাতিগণের পরিতোষ সমাধান করিবে। তুমি বাল্যকালে বান্ধবগণের, কুমারকালে আক্রাপালন হারা পিতা মাতার, যুবাকালে সংকুলভূষণা রমনীগণের ও বৃদ্ধকালে বনে থাকিয় বন্দরগণের আনন্দ সম্পাদন করিবে। এবং রাজপদে থাকিয়া, স্বন্ধবৃণ্ণর প্রীতি বহন ও সাধু গণের রক্ষা করিয়া, যুদ্ধ সকলের অমুঠান এবং গো ও আন্ধণগণের রক্ষার্থ যুদ্ধ তুইগণের ও অরাতিসমূহের সংহরণ পূর্কক পরলোকে সমাগত হইবে।

ইতি পুত্রামূশাসন নাম ষড়বিংশ অধ্যায়।



### मश्रविश्म व्यशास ।

পুদ্র কহিলেন, জননী এই রূপে উল্লাপনছলে প্রতিদিন উপদেশদানে প্রবৃদ্ধা হইলে, বালক জপর বৃদ্ধি ও বয়সের সহিত বৃদ্ধিত হইতে লাগিলেন। তিনি কুমারকালে উপনীত ও ক্রজোপন্নরন হইরা, বিশিষ্টরূপ-জ্ঞান-লাভপুরঃসর প্রণিপাত করিয়া, মাতাকে কহিলেন, আমি বিন্যাবনত হইরা, জিজ্ঞানা করিতেছি, উভয়লৌকিক স্থাধের জন্ম আমার বেরপ জন্মান করা কর্তবা, তাহা সবিতার কীর্তুন ক্রন।

মদালসা কহিলেন, বৎস! রাজ্যে অভিক্রিট্র ইইয়া, অধর্মের অবিরোধে প্রজারঞ্জন করা রালার প্রথম কুর্ত্তব্য। স্বামী, অমাত্য, ত্ত্ব, কোব, দুও, রাষ্ট্র ও পুর এই কয়েকটা রাজার বল বা প্রকৃতি। আর, মৃগরা, দাত, দিবাসপ্র, পরনিন্দা, বেখাসঙ্গ, নৃত্য, গীত, ক্রীড়া, রুণা ভ্রমণ ও পান এবং দৌরাত্মা, ক্ষতি, দেষ, ঈর্ষা, প্রতারণা, কটুক্তি ও নিষ্ঠু রাচরণ ইহাদের নাম বাসন। এই ব্যাসন সমন্ত উল্লিখিত মূল বিনাশ করিয়া থাকে। রাজা তজ্জা ব্যাসন ত্যাগ করিবেন এবং যাহাতে কৃত মন্ত্রণার বহির্গমন প্রযুক্ত শত্রুরা অপকার করিতে না পারে, তদ্মুরাপ অনুষ্ঠানে প্রযুক্ত हरेरान। ऋष्ठक्यूक शक्तान পणित हरेरान, त्यमन आहेबात आधाल भारेबा, विमष्टे हरेरा इब ; দেই রূপ মন্ত্র বাহির হইয়া পড়িলে, রাজা নি:মন্দেহই বিনাশ লাভ করিয়া থাকে। বিপক্ষ পক্ত উংকোচাদি ঘারা অমাত্যদিগকে দুষিত করিয়াছে, কি না, তাহা যত্নপুর্ব্বক অবগত হওয়া রাজার অবশু কর্ত্তবা। তিনি চর ছারা শত্রুচরগণের গতিবিধিও যুদ্ধাতিশয়সহকারে আছেষণ করিবেন। মিত, আপ্ত ও বন্ধু, কহি।কেও বিশ্বাস ক্রিবেন না। আবার, কার্য্যবশত: শক্রকেও বিশ্বাস করি-বেন। কামের বশীভত না হইয়া, স্থান বুদ্ধি ও ক্ষয় অবগত ও সন্ধি বিগ্রহ যানাদি ছয়গুণে গুণী श्रेरवन । <u>श्रेष्ट्रम चार्चार</u>क, পরে মন্ত্রিদিগকে, অনন্তর ভূতাবর্গকে, তদনন্তর পৌরদিগকে ভারত করিয়া, পরে শক্রর সহিত বিরোধ করিবেন। যিনি আত্মা প্রভৃতিকে জয় না করিয়া, বৈরিগণের জয় করিতে অভিনাষ করেন, সেই অজিতাত্ম নরপতি অমাত্য কর্তৃক বিজিত হইরা, শত্রুবর্ণের वाग्र इन । এই कांत्र व वर्म। প्रथरम कांमानि तिश्वित्र क्य कतित्व । जाहारमत क्य कतिरन অবশু জয় লাভ হইয়া থাকে। কিন্তু তাহারা জয় করিলে, রাজাকে বিনষ্ট হইতে হয়। কামু ক্রোধ, লেভি, মদ, মান ও হুর্য ইহারাই শক্র, রাজার বিনাশ করিয়া থাকে। রাজা পাণ্ডু কামাসক্তিবশতঃ নিপাতিত হইয়াছেন, অমুদ্রাদ ক্রোধ্বশতঃ পুত্ররত্নে বঞ্চিত হইয়াছেন, ঐলোভবশতঃ বিনষ্ট হইয়া-<sup>ছেন</sup> ; বেণু মদবশত: দ্বিজ্ঞগণ কর্ত্তক'নিহত চইয়াছেন, বলি অভিমানবশত: অনায় কর্ত্তক বিনাশিত হইয়াছেন এবং পুরঞ্জয় হর্ষবলে নিধন প্রাপ্ত হইয়াছেন, চিন্তা করিয়া, মনকে কাম কোধাদি তত্তৎ <sup>নোষ</sup> হইতে বিনিবর্ত্তিত করিবে। আর, রাজা মরুত ঐ সকল শত্রুকে জয় করিয়াঁ, সমুদায় সংগার <sup>জয়</sup> করিয়া গিয়াছেন। ইহা স্মরণ করিয়া, মহীপতি স্বকীয় ঐ সকল দোস বর্জন করিবেন। কাক <sup>বেম্ন</sup> অনলস ও সাবধান, তিনি তেমনি আল্ফুহীন ও সাবধান হইবেন। কোকিলের স্থায় ব্রা কালে নিজ্ঞা প্রকাশ করিবেন। মধকরের আয় সংগ্রহণীল হইবেন। মুগের ভার সংশ্বে শক্র भावछ हहेरवन ना। वान रामन यह विव वाता । वृहर की वरक विनाम करत, छवर यत वन महारब মহাবল রিপু দমনে চেষ্টা করিবেন। ময়ুরের ভার, নিজসম্পত্তি বিন্তার করিবেন। হংসের ভার <sup>खन</sup>धारी हहेरवन । कुकुरिंद्र भांत्र यथाकारण खेथान ७ जी मिनरक मःकरिंद्र दक्षा कविरवन । स्नोरहद <sup>ভায় কঠিন ও বছকার্য্যের সাধক হইবেন। কীট যেমন বিনা আড়ম্বরে ব**ত্ত সকল কাটি**রা **অর্জ**-</sup> <sup>রিত করে</sup>; তিনিও শত্রুর প্রতি তত্ত্ৎ ব্যবহার করিবেন। পিপীলিকার স্থায় সঞ্গরী ও অমুসন্ধানী <sup>रहेरव</sup>न। अधिक निक ७ भागनीवीरकत छात्र वानिनशीन रहेरवन। ठख ७ एवं। तयन नर्सवार

কিরণ বিকিরণ করেন, তবৎ নিয়ত রাজনীতি প্রারোগ করিয়া, উদয়শীল হইবেন। বন্ধলী বেমন পরপুরুবের মনোরঞ্জন করে, রাজাও তেমনি প্রজাগণের চিত্তবিনোলন করিবেন। পদ্ধের ভায় সকলের মনোহারী হইবেন। শরভের ভায়, বিক্রম প্রকাশ করিবেন। শৃলিকার ভায় একবারেই বিনাশ করিবেন। শুর্কিণীর ভান বেমন ভাবী পুত্রের জভা ত্রা সঞ্চয় করে, রাজাও তেমনি ভবিষ্যতের জভা সঞ্চয়শীল হইবেন। গোপালনা বেমন একমাত্র ত্রে নানাবিধ ভাষ্য প্রণয়ন করে, রাজাও তেমনি করনাকুশল হইবেন।

মহীপালনকার্য্যে ইক্স. সুর্য্য, চক্স, যম ও বায় এই পাঁচ দেবতার অনুরূপ বাবহার করিবেন। অর্থাৎ ইক্স বেমন চারি মাস বৃষ্টিপাত বারা মর্ত্তাবাদীদিগকে আপ্যায়িত করেন, সেইরূপ রাজা ধনাদিদান ছারা সকলের সন্তোষ বিধান করিবেন। যেমন তথ্য আটমাদ রশািসহকারে জল আহরণ করিয়া থাকেন, রাজাও তেমনি ক্ষুত্রীক জবদি সংগ্রহ করিবেন। ধম বেষন শক্ত মিত্র সকলকেই কালপ্রাপ্ত হইলে, নিগৃহীত করেন, রাজাও তেমনি প্রিয় অপ্রিয় ও ছুই অহুষ্ট সর্বাত্ত সমদর্শী হইবেন। যেমন লোকে পূর্ণচক্রকে অবলোকন করিয়া, প্রীতি প্রাপ্ত হয় প্রজারাও সকলে তেমনি ঘাহাঁর শাসনে পরম ক্রথ অমুভব করে, সেই রাজারই শশধরের অফুরপ ব্যবহার করা হয়। মারুত যেমন অতীব গোপনভাবে সর্বভূতে বিচরণ করে, রাজাও তেমনি চর হারা পৌর, অমাত্য ও বান্ধবাদির চরিতাদি অমুসন্ধান করিবেন। যে রাজার মন কামবশতঃ, অথবা শোভবশতঃ, অথবা অর্থবশতঃ, অথবা অন্ত কোন কারণ বশতঃ আরু না হয়, তিনিই অর্গে গমন করেন। যে রাজা উৎপথপ্রবৃত্ত, অধর্মার জিতে, মৃঢ ব্যক্তিদিগ্রে নিজ্বধর্মে ব্যবস্থাপিত করেন, তিনিই অর্গে গমন করেন। থাহার রাজ্যে বর্ণধর্ম বা আত্রম-ধর্মের কোনরূপে অবসাদ উপস্থিত না হয়, বংস। তিনি উভয় লোকেই অবিনাশী স্থথ ভোগ করিয়া থাকেন। রাজা সর্বাদা সুবৃদ্ধি ব্যক্তিগণের পরামর্শে চলিবেন এবং লোকদিগকে অংধর্ষে স্থাপন করিবেন। ইহাই তাঁহার একমাত্র কার্য্য এবং ইহাই তাঁহার দিদ্ধিলাভের হেড়। রালা প্রজাগণের সম্যাগ বিধানে পালন করিলে, যেমন কৃতকৃত্য হন, তেমনি তাঁহাদের ধর্মভাগ প্রাপ্ত হইরা থাকেন।

ইতি রাজধর্ম নাম সপ্তবিংশ অধ্যায়।

## অষ্টাবিংশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, জননীর এই কথা শুনিয়া, অলক তাহাঁকে পুনরায় বর্ণধর্ম ও আশ্রমধর্ম জিজ্ঞানা করিয়া কহিলেন, অয়ি মহাভাগে! আপান রাজধর্ম কীর্ত্তন করিলেন; অধুনা আমি বর্ণধর্ম ও আশ্রমধর্ম শ্রেবণ করিতে ইচ্ছা করি।

মদাণদা কহিলেন, দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ এই তিনটা ব্রাহ্মণের ধর্ম। জীবিকার্থ ব্যবগার ব্যতিরেকে তাঁহার আর চতুর্থ ধর্ম নাই। পবিত্র ভাবে বাজন, অধ্যাপন ও পরিগ্রহ এই তিনটা ব্রাহ্মণের জীবিকার্থ ব্যবগার। দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ তিই তিনটা ক্ষান্তিয়ের ধর্ম এবং পৃথিবীর রক্ষা ও শক্ষপরিচালনা এই ছইটা তাঁহার জীবিকা। বৈশ্রেরও তিনপ্রকার ধর্ম দান, অধ্যয়ন ও যজ্ঞ। আর পাশুপাশ্য, বাণিজ্য ও ক্রবি তাহার জীবিকার্থ ধর্ম। শৃল্যের ধর্ম দান, ব্যক্ষ ও ক্র তিক বংশর শুল্যা। ক্ষার কাক্ষকার্যা, বিজ্ঞাতির পরিচর্যাা, পশুগণের পোষণ ও ক্রম্ন বিক্রেম এই ক্যটী তাহার জীবিকার্থ ধর্ম।

সকল বর্ণের ধর্ম বলিলাম; এক্ষণে আশ্রমধর্ম শ্রবণ কর। ফকীয় বর্ণধর্মের পালন ক<sup>রি-</sup> লেই, লোকে সর্বাদীন সিদ্ধি সংগ্রহ করিয়া থাকে। সেইরূপ, বর্ণধর্মের বিরুদ্ধে প্রবৃদ্ধ হট্<sup>লেই,</sup> প্রলোকে তাহার করকভোগ হয়। বংদ! আফাণাদি বর্ণঅস্ত্রের যাবং উপনয়নসংখার না হয়, তাবং ইচ্ছাস্থপারে ব্যবহার, সংশাপ ও জক্ষণাদি করিতে পারে। উপনয়নসংকার স্পার হইলে, ব্রদ্ধারী হইয়া গুরুগৃহে বাস করিবে। তৎকালীন তাঁহার ধর্ম বলিতেছি, প্রবণ কর। বেদাধ্যমন, অগ্রিদেবা, স্নান, ভিক্ষার্থে পর্যাটন, গুরুকে অত্যে নিবেদন করিয়া পরে তাহার কায়্জাত্সারে সর্বদা অর ভক্ষণ, গুরুর কার্য্যে উদ্যোগ, তাহার প্রীতি সমুদ্রাবন, গুরুকর্ত্বক আছুত হইয়া পঠি এবং গুরুর প্রতি তৎপরতা ও অনভটিওতা সহকারে অবস্থান করিবে। গুরুর মুধ হইতে এক. ছই বা স্কল বেদ অধ্যয়ন করিয়া, তাহাঁর চরণবন্দনাপূর্বক অর্জ্ঞাগ্রহণসহকারে क्तिना थानान कतिरव। अनुक्रत शार्रक्ष धर्म अखिनावी रहेरल, शृश्क्रां साम थरवन कतिरव। অংধবাআপেনার ইচ্ছায়ুসারে চতুর্থআ শ্রম বানপ্রত অবলম্বন করিতে পারেন। অন্থবা ৩৪ কর গুছেই নৈটিকে ব্ৰহ্মচারী হইয়া বাস করিবে ক্ষুত্রক না পাকিলে, তাঁহার পুত্রের নিকট, পুত্র না গাকিলে, জাঁহার শিষ্যের নিকট, ভুঞাষাপ্রায়ণ ও অভিমানশৃত্য হইয়া, এক্ষচ্য্যাশ্রমে বাস করিবে। অনস্তর গৃহস্থাশ্রমকামনায় শুরুগৃহ হইতে উপার্ত্ত হইয়া, গৃহস্থাশ্রম হেডু আপনার অন্তর্রপ কন্তা উবহন করিবে। ঐ কন্তা যেন রোগশূলাও অসমান-কুলগোত্র-সম্পন্না হয় এবং উহার যেন কোন অঙ্গ বিকৃত না হয়। স্থকীয় কর্মহারা ভাষাকুলারে ধন উপাজ্জন করিয়া পিতৃগণ, দেবগণ ও অভিধিগণের ভক্তিমহকারে বিশিষ্ট বিধানে পরিতৃপ্তি মাধন ও আশ্রিতগণের পোষণ করিবে। ভৃত্য, আত্মন্ধ, দীন, অন্ধ, পতিত, পশু ও পক্ষীদিগকে ষ্ণাশক্তি অন্ধান দারা পরিপালন ক্রিবে। ঋতৃকালে ভার্যাভিগমন ও যথাশক্তি পঞ্চ যজ্ঞ বিধান করিবে। আপেনার (सक्त वि छन, जनस्मादिक आनितमहकादिक निज्ञन, त्मन्त्रन, अजिथिशन व खालिशन हेहानिशदक প্রদান করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, ভূত্যগণের সহিত স্বলং ভোজন করিবে। এই আমি সংক্ষেপে গৃহাশ্রম বর্ণনা করিলাম। একণে বানপ্রস্থ ধর্ম বলিভেছি, অবধারণ কর।

প্রাক্ত ব্যক্তি সন্তান সন্তাতি ও আপনার দেহের অবনতি অবলোকন করিয়া, আত্মার ভদ্ধিজ্ঞ বানপ্রস্থাশ্রমে প্রস্থান করিবে। তথার আরণ্য ফলাদি উপভোগ, তপভা ধারা আত্মার উৎকর্ষ সাধন, ভূমিতে শয়ন, ব্রহ্মচর্যাবলম্বন, পিতৃগণ, দেবগণ ও অতিথিগণের পরিচরণ, হোম, বিসন্ধা মান, জটাবন্ধল ধারণ, সর্বাদা যোগাচরণ ও বভামেই নিষেণ করিবে। এই ক্লপে পাপপ্রশান ও আত্মার উপকার জভা বানপ্রভাশ্রম অবলম্বন করিবে।

বানপ্রছের পর ভিক্নামক চরম আশ্রম। এই চতুর্থ আশ্রমের স্বরূপ মহাস্থা ধর্মজ্ঞ বাক্তিগণ বেরপ বলিয়াছেন, তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর। সর্ব্বিঙ্গপরিত্যাগ, ব্রদ্ধান্ত্র, কোপবিস্
ভান, ইক্রিয়দংঘম, একবিধ আবাদে চিরকাল বাদ না করা, কর্মত্যাগ, ভিকালর করে একবার
মাত্র আহারকরণ, আত্মজ্ঞানাববোধেছা এবং আত্মদর্শন এই সকল ভিক্কোশ্রমের কর্ত্তর কার্য্য।
এই আমি ডোমার নিকট চতুর্থ আশ্রম বর্ণনা করিলাম। একণে অস্থান্ত বর্ণ ও আশ্রম সকলের
মাধারণতঃ কর্ত্তরা শ্রবণ কর। সত্য, শৌচ, অহিংসা, অনস্থা, ক্ষমা, আনুশংস্য অকার্পণ্য,
মন্তোষ, এই আটিটী সম্পায় বর্ণাশ্রমের সাধারণ ধর্ম। এই আমি তোহার নিকট সম্পায় বর্ণাশ্রমধর্ম সংক্ষেপে কীর্ত্তন করিলাম। স্বন্ধ বর্ণাশ্রমধর্ম গালন করা ব্যক্তিমাত্রেরই কর্ত্ব্য।
ে ব্যক্তি স্বর্ণাশ্রমদংক্তিত স্বধর্ম লজ্জন করিয়া, অস্ত ধর্মে প্রবৃত্ত হয়, নরপতি ভাহার উপযুক্ত
শান্তি করিবেন। যাহারা স্বধর্ম ত্যাগ করিয়া, পাপ করে, রাজা ভাহাদের দক্ষ না করিলে,
ভাইার ইষ্টাপুর্ত্ত বিনষ্ট হইয়া থাকে। এইজস্ত রাজা বিশিষ্টরূপ যন্ত্রসংক্ষারে সকল বর্ণকেই স্বন্ধ
ধর্মে রাণন ও ভাহার অন্তথাচরণে প্রবৃত্ত হইলে, দগুরিধান করিবেন।

इंভि वर्गाञ्चमधर्षकथन नाम अहाविश्म अधावि ।

#### छेनकिः म व्यथाय ।

আলক কহিলেন, গৃহস্থাশ্রমী ব্যক্তিগণের যাহা করা কর্ত্তব্য, যাহা না করিলে, বন্ধন ও করিনে মুক্তিলাভ হর, যাহা উপকারের নিমিত্ত কলিত হুইয়াছে এবং যাহা বর্জন করা উচিত ও বাহা করণীর, আমি জিজ্ঞাসা করিতেছি, স্বিশেষ কীর্ত্তন করন।

মদাল্যা কহিলেন, বংস। গৃহস্বাশ্রমী ব্যক্তিগণই এই নিধিল জীবগণের পোষণ করে এবং মেট পুণাবলৈ অভিলয়িত লোক সকল লাভ করিয়া থাকে। পিতৃগণ, দেবগণ, মুনিগণ, ভৃতগণ, মমুষ্যগণ, কুমি কীট ও পতক্ষগণ পশু ও প্কিগ্ৰুম্বং অস্তুরগণ সকলেই গৃহস্থকৈ আশ্রয় ক্রিয়া জীবিকা নির্মাহ করিয়া থাকে এবং তৎসহকারে তৃপ্তিভোগ করে। গৃহস্থ আমাদিগকে অন্নান করিবে না কি, ইহা ভাবিয়া, সকলেই উহার মুখপানে চাহিয়া থাকে। বংস। বলিতে কি, এই গৃহত্ব বেদময়ী ধেরু রূপে সকলের আধার স্বরূপ হইয়া আছে। ঐ ধেরুতেই নিধিল বিশ্ব প্রতিষ্ঠিত हरेबाएक अपर के (प्रसूरे विषयंत्र कात्न। अगुरवत छेहात शर्छ, यकुरलान छेहात मधा अवर नामान्त উহার यक ও প্রীবা, इष्टोপুত উহার বিষাণ, সাধুস্ক উহার লোম, শাস্তি ও পুষ্টিকার্য্য উহার মন ও মৃত্র এবং বর্ণ ও আত্রম উহার প্রতিষ্ঠা। উহার ক্ষয় নাই। এইজন্ত সমন্ত জ্বগৎ উহাকে আশ্রম করিয়া জীবনধারণ করিলেও, উহার অপচয় হয় না। বৎস! স্বাহাকার, স্বধাকার, বষ্টকার, হস্তকার, উহার স্তনচত্তিয়। তন্মধ্যে দেবগণ স্বাহাকার স্তন পান করেন, পিতৃগণ স্বা কার, মুনিগণ ব্রটকার এবং মহুষ্যগণ হস্তকার স্তন সর্বক্ষণ পান করিয়া থাকেন। বৎস । এই রূপে এই অগ্রীমগ্রী ধেমুই সকলের আপ্যায়ন বিধান করিতেছেন। যে ব্যক্তি সেই অগ্রীর উচ্ছেদ করে, দে অত্যন্ত পাপ করিয়া থাকে এবং অন্ধতামিত্র ও তামিত্র উভয় নরকে নিমগ্ন হয়। অময়া-দিরা এই দেছর বংস। যে ব্যক্তি যথাসময়ে সেই বংসদিগকে উল্লিখিত তান পান করায়, সে স্থর্গে গমন করিয়া পাকে। অতএব বৎস। প্রতিদিন নিজ্ঞানেছের স্তায়, দেবগণ, ঋষিগণ, পিতৃগণ, মানবগণ ও ভূতগণের পোষণ করা মনুষ্যমাত্রেরই কর্তব্য।

এই কারণে স্থান করিয়। তিচি হইয়া, সমাহিত চিত্তে দেবগণ, পিতৃগণ, ঋষিণণ ইহাঁদের জনদান সহকারে তর্পণ করিবে। চন্দন ও গদ্ধপুষ্পাদি হারা দেবগণের অভ্যর্জনা করিয়া, পরে অগ্রির তর্পণাস্তে বলিপ্রদান করিবে। প্রস্থাকে গৃহমধ্যে পুরু ও উত্তরদিকে উদ্দেশ করিয়া, বলি নিক্ষেপ করিবে। ইক্তকে প্রচী দিকে, যমকে দক্ষিণ দিকে, বলিপ্রদান করিবে। অনব্যব্দশের জন্ত প্রতীচীদিকে ও গোমের জন্ত উত্তর দিকে বলি আহরণ করিবে। গৃহহারে ধাতা ও বিধাতার উদ্দেশে বলি প্রদান করিবে। অর্থানকে গৃহের বাহিরে সমস্তাৎ বলি বিভরণ করিবে। পরে রাজিচর ভূতগণের উদ্দেশে আকাশে বলি আহরণ করিবে। দক্ষিণাভিম্থে অব্স্থিতি করিয়া পিতৃগণের বলি নির্কাণন করিবে। অনস্তর গৃহস্থ তৎপর ও স্থানাহিত হইয়া, আচমনের জন্ত অব্

এই রূপে গৃহপতি গৃহবলি প্রদানপূর্বাক শুচি হইয়া, ভূতগণের আপ্যায়ন অস্ত আদরসহকারে উৎস্কিবিধি সমাহিত করিবেন। কুকুরগন, খপচগন ও পক্ষিগণের জন্ত ভূতনে বলি নির্বাপন করিবে। ইহার নাম বৈখাদেব বলি। সায়ং প্রাত: ইহা প্রদান করা কর্ত্তর। এই বলি প্রদানাতে প্রাজ্ঞ গৃথী আচন করিয়া, ঘারাবলোকন করিবেন। মুহুর্ত্তর অষ্টম ভাগ পর্যান্ত দেবিছে হইবে, বলি কেহ অতিথি হয়। অতিথি উপস্থিত হইলে, যথাশক্তি জল ও অয়াদি এবং গর্কপুশানি ঘারা বিশিষ্ট বিধানে পূজা করিবে। মিত্রকে অথবা একগ্রামবাসী ব্যক্তিকে অতিথি করিবেন। বে ব্যক্তির কুল ও নাম অজ্ঞাত, যে ব্যক্তিক তৎকালসমুপস্থিত, বে ব্যক্তি বাস্ত্রবিক্ট ভোজনাচি

লাবে আগত অন্য দে ব্যাক্ত পরিশ্রান্ত ও যাহার কিছুই নাই এবং যে ব্যক্তি যাচমান, তাদৃশ ব্রাহ্মণকেই অভিথিব বলিবা থাকে। শক্তি অনুদারে তাহার আভিথ্যসংকার বিধান করিবে। পণ্ডিত গৃহী অভিথির গোত্র বা পদ এবং স্বাধ্যার বিজ্ঞানা করিবেন না। অভিথি কুংসিত বা সুখ্রী যেরপেই হউক, সাক্ষাৎ প্রস্তাপতি জ্ঞান করিবে। নিত্য অবস্থিতি করে না, এইজ্ঞ উহার নাম অভিথি হইয়াছে।

অতিথি তৃপ্ত হইলে, নৃষত্তের ঋণ হইতে গৃহাশ্রমী মুক্ত হইরা থাকে। তাহাকে না দিয়া, স্বরং ভাষন করিলে, কিবিবভাগী ও পাপভাগী হইরা, পরজন্ম বিষ্ঠাভোগী হইতে হয়। অভিথি হতাশ হইরা, মাহার গৃহ হইতে প্রতিনিবৃত্ত হয়, তাহার পুণাগ্রহণ করিরা, নিজের পাপ দিয়া যায়। অভিথিকে জাল ও শাকদান অথবা যাহা স্বয়ং ভাজন করা যায়, তাহা প্রদান করিয়া, সাধ্যাম্সারে আদর সহকারে পূজা করিবে।

উদক ও আমাদি বারা অহরহ শ্রাদ্ধ ও পিতৃগণের উদ্দেশে এক বা আনেক ব্রাদ্ধণ ভোজন কর্টিব। অলের অপ্রভাগ উদ্ভ করিয়া, ব্রাদ্ধণকে সম্প্রদান করিবে। পরিব্রাহ্মক ও ব্রদ্ধারিগণ বাচ্ঞা করিলে, তাহাদিগকে ভিকা দিবে। এক গ্রাদের নাম ভিকা, চারি গ্রাদের নাম অগ্র এবং চারি অগ্রের নাম হস্তকার। আপনার বিভবান্দারে হস্তকার অথবা অগ্র কিয়া ভিকা প্রদান না করিয়া, অয়ং ভোজন করিবে না।

অতিথির দৎকারান্তে অভীষ্ঠ জ্ঞাতি বন্ধু, অর্থী, অসমর্থ, বালক, বৃদ্ধ ও আতুর ইহাদিগকে এবং যাহার কিছুই নাই এরূপ ব্যক্তিবর্গ কুধার্ত হইয়া যাচ্ঞা করিলে, তাহাদিগকে ভোলন করাইবে। বিভব থাকিলে, সমর্থ ব্যক্তিকেও ভোলন করাইবে। যে জ্ঞাতি শ্রীমান্ জ্ঞাতি থাকিতেও, অবসন্ন হয়, সে অবসন্ন দশাল যে পাপ করে, শ্রীমান্ জ্ঞাতিকে তাহা অর্শিয়া থাকে।

দ্দ্ধ্যাসময়েও এইরূপ বিধির অনুসারী হইবে। স্ব্যান্তসময়ে সমাগত অভিথিকে যথাশক্তি শ্রন, আসন ও ভোজন হারাপুজা করিবে।

স্বকীয় স্বন্ধে সন্ধিবেশিত গার্ছস্থাভার এইরূপে বহন করিলে, স্বয়ং বিধাতা, দেবগণ, পিতৃ-গণ, মহর্ষিগণ, অতিণি ও বান্ধবগণ এবং গশু, পক্ষী ও স্ক্ষ কীটগণ সকলেই স্বিশেষ তুই হইয়া, শ্রেষ বিধান করে।

বরং মহাভাগ অতি এতগুপলকে যে গাথা গান করিরাছেন, মহাভাগ ! তুমি সেই গৃহস্থাশ্রম সংজ্ঞিত গাথা শ্রবণ কর । বিভব থাকিলে, গৃহী পুরুষ দেবগণ, পিতৃগণ, অতিণিগণ ও তথং বন্ধু-গণ, ভগিনী ও গুরুগণ, ইহাদের সবিশেষ পূজা করিরা, পক্ষিগণ, খপচগণ ও খগণ ইহাদিগকেও ভ্যতি অল্লগন করিবে। বৈশ্রদেবনামক উল্লিখিত বলিকার্য্য পূর্বাহেত ও সায়াহেত্ব সম্পাদন করিবে। মাংস, আর ও শাক এবং অন্ধ্রাহা গৃহে উপস্থিত থাকিবে, তাহা বর্থাবিধানে নির্বাপন না করিরা, স্বাং ভক্ষণ করিবেনা।

ইতি গাইস্থাধর্ম নাম উনত্তিংশ অধ্যায়।

#### ত্রিংশ অধ্যায়।

মদালদা কহিলেন, বৎদ : অধুনা নিত্য, নৈমিত্তিক ও নিত্য-নৈমিত্তিক ভেদে গৃহত্বের বাহা কর্ত্তন্য, তাহা বলিতেছি, প্রবণ কর। আমি বে পঞ্যক্তাশ্রিত অমুষ্ঠানবিধি কীর্তান করিলাম. তাহার নাম নিত্য। আর প্রজন্ম-ক্রিয়াদির নাম নৈমিত্তিক এবং পর্বপ্রাদ্ধাদিকে নিত্য নৈমিত্তিক বলিয়া থাকে। প্রজন্মদমরে বেরপ জাতকর্ম করিতে হর, বিবাহাদিতেও বথাক্রনে শ্রানরূপে সেইরপ করা কর্ত্তব্য বিবাহাদিতে নান্দীমুধ নামে বিধ্যাত পিতৃপশের বিশেষক্রকে

পূজা করিবে। তৎকাবে যজ্ঞান উত্তর মুখে বা পূর্ব্বমুখে আসীন ও সমাহিত হইরা, হব ও দধি সংমিশ্রিত পিণ্ড সক্ল পিতৃগণের উদ্দেশে দান করিবে। কৈছ কেই বলেন, ইহাতে বৈশুদেবনামক বলি প্রদান করিতে হর না। ছইটী ব্রাহ্মণ করনা করিরা, প্রদ্দিণপূর্বক পূজা করিবে। ইহার নাম বৃদ্ধিশ্রাদ্ধে নৈমিন্তিক বলিরা থাকে। তদ্ব্যতীত, মৃত্ত দিবসে ধে একান্দিষ্টনামক উর্দ্ধাহিক নৈমিন্তিক সম্পাদন করিতে হয়, তাহা শ্রবণ কর। ইহাতে কোনরূপ দৈবকার্য্য, আবাহন বা অগ্নিতে আহতি দানাদি করিতে হয় না। একমান কুম্পপ্রয়োগই বিধিবাধিত। উচ্ছিষ্ট্রারিখ্যে প্রেতের উদ্দেশে একমান্ত পিণ্ড প্রদান ও তাহার নামম্মরণসহকারে অপস্বেয় তিলোদক প্রেক্রেণ করিবে। বেথানে কুম্নির্শ্বিত ব্রাহ্মণ বিস্ক্রেও হয় বিধিতে ইইবে, অমুক্রেও উদ্দেশে এই যে তিলোদক দিতেছি, তাহা অক্ষাহউক এবং তিনি ইহা দারা পরম প্রীতি অমুভব ও প্রদর্শন কর্মন। তাহারা, বলিবে, প্রীতি অমুভব করিলাম।

সংবৎর ব্যাপিরা প্রত্যেক মাদে এইরপ কার্য্য ফরিবে। অনস্তর সংবৎসর পূর্ণ ইইলে, অথবা লোকে যথন করিতে পারে, তথন সপিঙীকরণে প্রবৃত্ত ইইবে। তাহারও বিধি বলিতেছি, শ্রন্থ কর। এই সপিঙীকরণেও কোনরপ দৈবকার্যা, অগ্নিকার্য্য বা আবাহন করিতে হয় না। এক মাত্র অর্থ ও কুশ প্রদান করাই বিধিবিহিত। দক্ষিণ দিকে বা প্রতিকৃশ দিকে পিণ্ডোদ্কাদি পূর্বোক্ত রূপে প্রদান করিয়া, অযুত ব্রাহ্মণ ভোজন করাইবে।

পশুতেরা পর্বশ্রাদ্ধাদিকেই নিত্য-নৈমিত্তিক বলিয়া জানিবেন। তাহাতে বিশেষ এই, প্রতিমানে অতিরিক্ত ক্রিয়া করিতে হয়। আমি তাহা বলিতেছি, একাগ্রচিত্তে শ্রবণ কর। পিতৃগণের উদ্দেশে তিনটা ও প্রেতের উদ্দেশে একটা, এইরূপে চারিটা পাত্র তিল ও গদ্ধাদক সংযুক্ত করিয়া, স্থাপন করিতে হইবে। তন্মধ্যে পিতৃপাত্রত্রেয় প্রেতপাত্র ও অর্থ্য প্রদেষ করিবে। অনস্তর, যে সমানা ইত্যাদি মন্ত্রল সহকারে পূর্ব্বেক্তি রূপে শেষ কার্য্য সাধন করিবে। স্ত্রাগণেরও উদ্দেশে এইরূপ একোদিন্ত বিহিত হইয়াছে। তবে পুত্র না থাকিলে, তাহাদের স্পিওকরণ হয় না। প্রতিসংবৎদর স্ত্রীগণের ঐরূপ বিধানে একোদিন্ত করিবে। পুরুষের বেলা যেরূপ কথিত হইয়াছে, স্ত্রীদিগেরও সেইরূপ মৃতাহে যথাসাধ্য একোদিন্ত করিবে। পুত্র না থাকিলে গণিগুগণ, তদভাবে সংগোদকগণ এবং যাহারা মাতার স্পিপ্ত বা সংহাদক এবং যাহারা উাহার দৌহিত্র, তাহারা এইরূপ কার্য্য করিবে।

কন্তাও তনমগণ মাতামহেরও উদ্দেশে ঐরপ কার্যা করিবে। এই বিধির নাম দ্বাম্মারণ। শ্রাদ্ধ ও নৈমিত্তিক দারা মাতামহ ও পিতামহগণের যথাবিধি পূজা করিবে। সকলের অভাবে স্ত্রীগণ স্ব স্বামীর এই কার্য্য করিবে। তাহাতে কোনরূপ মন্ত্র প্রয়োগ করিবে না। স্ত্রীর অভাবে রাজা তাহার আত্মীয়গণ দারা এবং স্বজাতীয় নরগণ সহকারে তত্তং দাহাদি সকল কার্য্য সম্পাদিত করিবেন। যেহেতু রাজা সকল বর্ণেরই দাদ্ধব।

বংদ! এই আমি তোমার নিকট নিত্য ও নৈমিত্তিক কীর্ত্তন করিলায়। অধুনা, শ্রান্ধারিত অন্তবিধ নিত্য-নৈমিত্তিকী ক্রিয়া শ্রবণ কর। চল্লের ক্ষয়াত্মক কালকে দর্শ অর্থাৎ অমাব্রা বলে। এই অমাবস্থা এ বিষয়ের নিমিত্ত স্বরূপ এবং নিয়ত তাহার নিত্যতা স্চনা করিয়া থাকে। এইপ্রস্থা ইহার নাম নিত্য-নৈমিত্তিকী।

ইতি নৈমিত্তিকাদি প্রাক্তরনা নাম ত্রিংশ অধ্যায়।

### একত্রিংশ অধ্যায়।

মদালসা কহিলেন, পিতার যিনি প্রপিতামহ, ভাষার দপিতীকরণ ও পিতৃপিতে অধিকার নাই। তিনি লেপভোঞ্জিদিগের শ্রেণীতে নিবিষ্ট হয়েন। যিনি তাঁহাদের মধ্যে চতুর্বস্থানীর এবং পুত্রের লেপ ও অর ভোজন করেন; তিনি সম্বর্হীন; উপভোগ মাত্র প্রাপ্ত হন। পিডা, পিতামহ ও প্রপিতামহ এই পুরুষতার পিওস্থনী জানিবে। পিতামহের পিতামহ হইতে তিন পুরুষ শেষসম্বন্ধী; তাহাঁদের মধ্যে যজমান সপ্তম। ঋষিগণ এই রূপে সপ্তপুরুষ পর্যান্ত সম্বন্ধ নির্দেশ করিয়াছেন। যজমান প্রভৃতি হইতে উর্জ্তন পুরুষগণ অনুলেপস্থ্যী। তাঁহাদের প্রপুক্ষণাণ ও নরকবাসী অভাভ পুরুষ সকল এবং বাহার৷ তির্যাগ্যোনিপ্রাপ্ত ভূতাদিতে ব্যবস্থিত হইরাছে, যজমান যে যে রূপে যথাবিধানে প্রাত্ধ করিয়া, তাহাদের সকলকে আণ্যারিত করিবেন, বলিতেছি, <u>শ্রবণ কর।</u> মহুধ্যেরা ভৃতলে যে অরু নিক্ষেপ করে, যাহারা পিশাচ্যোনি প্রাপ্ত হইয়াছে, তাহারা তদ্বারা তৃপ্তিলাভ করিয়া থাকে। যাহারা বৃক্ষযোনি প্রাপ্ত হইরাছে, তাহারা স্নানবস্ত্রসমূখিত ভূপতিত জল ধারা তৃতি সভোগ করে। গাত্র হইতে যে সকল জলবিন্দ্ ভূতলে পতিত হয়, যাহারা দেবযোনি লাভ করিয়াছে, তাহাদের তদ্বারা তৃপ্তিভোগ হয়। যাহার। তিযাগ্ৰোনি লাভ কৰিয়াছে, তাহারা পিঙোভোলনকালে ভূতলে পতিত অন্ন হারা ভৃতিভোগ করিয়া থাকে। যাহারা ক্রিয়াযোগ্য হইলেও, অনংস্কৃত অবস্থায় বাল্যকালে দগ্ধ হইয়া। প্রাণ-ভাগে করিয়াছে, ভাহারা বিকীর্ণ সন্ন ও সম্মার্জন ভক্ষণ করিয়া পরিতৃপ্ত হইয়া থাকে। বান্ধণেরা ভোজন করিয়া আচমনসময়ে যে জল নিক্ষেপ করেন এবং তাঁহাদের পদপ্রকালনসময়ে যে জল পতিত হয়, তাহা পান করিয়া, অভাভেরা তৃপ্তি ভোগ করে। এইরূপে যাহারা সমাগ্রিধানে প্রাদ্ধ ক্রিয়ার প্রবৃত্ত হয়, তাহাদের যোগুন্তরগত পিতৃপুরুষণণ যজমানের বা ত্রাহ্মণগণের কোন রূপে নিক্ষিপ্ত শুচি বা উচ্ছিষ্ট জল ও অন্ন দারা তৃপ্তিলাভ করিয়া থাকেন।

লোকে অন্তামোপাৰ্জিত অৰ্থ দারা যে শ্রাদ্ধ করে, চণ্ডাল ও পুক্ষদাদি যোনিতে পতিত পিতৃ-গণ তদ্বারা তৃপ্তিলাভ করিরা থাকেন। বংদ! এই রূপে বাদ্ধবগণ শ্রাদ্ধ করিরা, যে অন্ন ও জ্বল-বিন্দ্নিক্ষেপ করে, তাহা দ্বারা তাহার বহু পিতৃপুরুষের তৃপ্তি জ্বিয়া থাকে। এই রক্ত লোকে শাক দ্বারাও ভক্তিমান্ হইয়া, শ্রাদ্ধ করিবে। শ্রাদ্ধ করিলে, কুলোংপদ্ধ কোন ব্যক্তিরই অবসাদ উপস্থিত হয় না।

আমি অধুনা প্রাক্তর নিত্য-নৈমিত্তিক কাল বলিব এবং দেরপ বিধির অমুসারে প্রাক্ত হয়, তাহাও কীর্জন করিব। প্রতিমাদে যে সময়ে চল্লের ক্ষয় হয়, দেই অমাবজ্ঞার যথাবিধি প্রাক্ত করিবে। প্রতিমাদাদির ক্ষয়াষ্ট্রমীতে অবশ্ব প্রাক্ত করিবে। এক্ষণে প্রাক্তের ইছাকাল বলিতেছি, প্রবণ কর। বিশিষ্ট রাক্ষণ প্রাপ্ত হইলে, স্থ্য ও চল্লের গ্রহণ সময়ে, মরনে, বিষুবকালে, স্থ্যসংক্রমণে, ব্যতিপাতে এবং প্রাক্তরেগায় ক্রবা লাভ হইলে, তুংম্বর্গ দেখিলে এবং জ্বমনক্ষত্রে ও গ্রহণীড়া উপস্থিত হইলে, ইচ্ছাপূর্ত্ত্বক প্রাক্ত করিবে। যিনি বিশিষ্ট ভাবাশার, বিনি প্রোত্তির ও বোগনীল; যিনি বেদবিহ ও জ্যেষ্ঠ্রসামগ; যিনি নাচিকেতার প্রনীত ত্রিবিধ উপনিষ্ত্রের উপাসক; যিনি ত্রিমধু, ত্রিস্থপর্ণ ও বড়ঙ্গবিহ; যিনি লাভিকেতার প্রেক্তি, জামাতা, চাগিনের ও খণ্ডর; যিনি পঞ্চান্তি-কর্ম্মনিষ্ঠ ও তপোনিষ্ঠ; যিনি মাতৃল, যিনি পিভ্যাতৃপরারণ; বিনি লিব্য, সম্বন্ধী ও বান্ধব, এই সকল হিজোব্রমই প্রান্ধের যোগ্যপাত্র। অবক্রীণী অর্বাহ ক্ষেচ্ব্যাদিবিহীন, রোগী, অধিকাঙ্গ, ন্যানাঙ্গ, হিবিবাহিতার গর্ভস্ত্ত, একচক্ষ্তীন, জীবৎপতিকার জারজ প্রে, মৃত্তপ্তিকার জারজ প্রে, মিত্রঘোহী, ক্র্মণী, ক্লীব, ক্র্মণিশ্বন স্ক্রিপিট,

হীনাক্তি, পিতাকর্ত্ক অভিশপ্ত, ক্রুর বা ধন, সোমবিক্রেরী, ক্প্রাদ্বরিতা, চিকিৎসাব্যবসারী, গুরুপিতৃত্যানী, বেতন নইরা অধ্যাপনকারী, মিত্র, যে ত্রী পূর্ব্বে অক্তের পরিগ্রন্থ ছিল, তাহার পতি, বেদত্যানী, অলিভানী, বানশবর্ধদেশীর অবিবাহিতা গুতুনতী ত্রীর পতি, দোষগ্রন্থ ও অন্তান্ত বিপ্রিত-কর্ম-প্রবৃত্ত ত্রাহ্মণগণকে পিতৃকার্য্যে বর্জন করিবে। প্রাদ্ধের পূর্ব্বাক্তি ত্রাহ্মণস্তুম্বিনিকে নিমন্ত্রণ করিবে। দৈবকার্য্য ও পিতৃকার্য্য উভর কার্ব্যেই তাহাদিগকে ত্রাহ্মণ করিবে। বে ব্যক্তি শ্রাহ্ম করিবে, তাহাকে সংখ্য করিতে হইবে। প্রাহ্মণান ও ভোজন করিরা, ত্রীসঙ্গ করিলে, পিতৃগণ একমান নেই ওজে শরন করিরা থাকেন। ত্রীগমন করিরা, প্রাহ্মে ভোজন বা গমন করিলে, তাহাদের উভরের পিতৃগণ একমান রেত ও মৃত্র আহার করিরা থাকেন। সেইজন্ত প্রাক্তর প্রথমে নিমন্ত্রণ করিরা রাধিবেন। যদি সেই দিনে ব্যহ্মণ না পাওরা যার, তাহা হইলেও, ত্রীসঙ্গীকে কথনই ব্যহ্মণ করিবেন।।

ষণাকালে ভিক্ষার জঞ্চ সমাগত সংষমশীল যতিদিগকে প্রণিণাতাদি দ্বারা প্রসাদিত করিরা, যত মানসে ভোজন কর্মাইবে। শুক্রপক্ অপেক্ষা ক্ষণ্ডক বেমন পিতৃগণের প্রিয়, সেইরূপ পূর্বাহ্ন অপেক্ষা অপরাহ্ন পিতৃগণের পরন্ধ প্রীতির আম্পান। গৃহে অভ্যাগত দ্বিজ্ঞাতিদিগকে স্বাগত সহারে সবিশেষ পূর্বা করিরা, কুশহতে তাঁহাদিগকে আসনে উপবেশন করাইবে। পিতৃকার্য্যে অম্পা ও দৈব কার্য্যে গুলোভম বরণ করিবে। অথবা স্বকীয় শক্তি অম্পারে প্রত্যেক কার্য্যে এক একটা রাহ্মণ গ্রহণ করিবে। মাতামহপক্ষেও ঐরপ বিধি। কেছ কেছ স্বতন্ত্ররূপ ব্যবহা ইচ্ছা করিয়া থাকেন। পূর্ব্যম্ব হইয়া দেবকার্য্য, উত্তরম্ব হইয়া পিতৃকার্য্য ও মাতামহকার্য্য সম্পাদন করিবে। মনীধিগণ এইরূপ নির্দেশ করিয়াছেন। তৎকালে আসনজন্ত কুশপ্রদান ও অর্থ্যাদি দ্বারা পূজা করিতে হইবে।

অনস্তর পবিত্রকাদি প্রদান করিয়া, সমাগত ব্রাহ্মণগণের অনুজ্ঞাগ্রহণানস্তর মন্ত্রোচ্চারণসহকারে দেবগণের আবাহন করিবে। যবমিশ্রিত সলিল হারা বিখনেবগণের উদ্দেশে অর্থনান করিয়া গন্ধমাল্য, ধূপ, দীপ ও জলপ্রদানপূর্বক দক্ষিণদিকে পিতৃগণের যাবতীর কার্য্য সমাহিত করিবে। অনস্তর হিপ্তণ দর্ভদানসহকারে তাঁহাদের অনুজ্ঞা গ্রহণ করিয়া, মন্ত্রপাঠপূর্বক পিতৃগণের আবাহন করিবে। অয়ি মহাভাগ! তৎকালে পিতৃগণের প্রীতিসাধনে সম্লিবিষ্ট হইয়া, দক্ষিণ দিকে তিলের সহিত যবার্থ অর্থা প্রদান করিবে।

অনস্তর ছিজগণ কর্তৃক, অগ্নিকার্য্য কর, এইরূপ অন্তজাত হইয়া, অগ্নিতে যথাবিধানে ব্যালন ও কার্বার্জ্জত অর আছতি দিবে। যিনি কব্য বহন করেন, সেই অগ্নির তৃপ্তির জস্তু আমি এই আর দিতেছি, এইরূপ বাক্যোচারণসহকারে প্রথম আছতি প্রদান করিতে হইবে। অনস্তর পিতৃমান সোমের উদ্দেশে এরূপ স্বাহাশন্ধ প্রয়োগ করিয়া, ছিতীয় আছতি প্রদান করিবে। গরে প্রেতপতি যমের উদ্দেশে আরা প্রয়োগ করিয়া, তৃতীয় আছতি প্রদান করিবে। হোম করিয়া যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহা আল্পণগর পাত্রে দান করিতে হইবে। তৎকালে, আপনারা যথাক্ষণে এই অর উপযোগ করুন, মধুর বাক্যে এইরূপ বলিবে। তথন আল্পণগর মৌনী হইয়া, তদগতিত্ব যথাক্ষণে তাহা ভোজন করিবেন। যে অর তাঁহাদের ইপ্ততম, ক্রোধত্যাগপ্রাস্ব যীরে ধীরে তাহাদিগতে যথাক্সন্তর প্রবাভিত করিয়া, প্রদান করিবে। রক্ষোম মন্ত্র জপ সহকারে ভিলসকল পৃথিবীতে বিকিরণ করিতে হইবে। রক্ষার্থ সিদ্ধার্থসমূহও বিকীর্ণ করিবে। কেন না, শ্রাদ্ধ অভাবতঃ বছল ছিল্ময়।

অনন্তর, আপনারা পৃষ্টিকর ও তৃথিকর অর ভক্ষণ করিয়া তৃথ হইলেন, এইরূপ বাক্যপ্ররোগ করিলে, ব্রাক্ষণেরা কহিবেন, আমরা তৃথ হইলাম। তথন তাঁহাদের অনুমতি লইয়া, ভূমিটে সর্পত্র অরবিকিরণ ও বংগবিধানে আঁচমনের জন্ত এক এক বার জল দান করিবে। জনত্তর অনুজ্ঞানাত ও কার্মন বাক্য সংযত করিয়া, সতিল আয়ে পিণ্ড প্রস্তুত করিয়া, দক্ষিণদিকে পিন্ত

গণের উদ্বেশে দর্জোপরি উচ্ছিইসায়িধ্যে নিক্ষেপ করিবে। ঐ সময়ে সমাহিত হইরা, পিতৃতীর্থ হারা তাঁহাদিগকে অস দান করিতে হইবে। মাতামহগণেরও উদ্বেশ ঐরপে বধাবিধি
পিশু প্রদান করিরা, গদ্ধমান্যাদি সংযুক্ত আচমন দান করিবে। পরে স্বীয় শক্তি অনুসারে
দর্শনাদানপুরঃসর তাঁহাদিগকে, স্থেষাস্ত ইত্যাদি মন্ত্রপাঠ করাইবে। তাঁহারা তুই হইয়া, তাহা
পাঠ করিলে, তাঁহাদের হারা, হে বিখদেবগণ! আপনারা প্রীত হউন, আপনাদের মৃদ্রুর হউক,
ইত্যাদি বৈশ্বদেবিক মন্ত্র নির্কাচিত করিবে। তাঁহারা তাহা পাঠ করিলে, তাঁহাদের নিষ্ঠি আশীর্কাদ প্রার্থনা করিবে। পরে প্রিয়বাক্যপ্রয়েগপুরঃসর সকলকে ভক্তিসহকারে প্রণিপাত করিরা,
বিদায় দিবে। তৎকালে হারদেশ পর্যান্ত তাঁহাদের অনুগমন করিবে। পরে তাঁহারা অন্তপ্রমাদিত
রিলে, আগমন করিবে। তৎপরে নিত্যক্রিয়া স্বরিতে অভিলাধী হয়েন। কেহ কেহ তাহার বিরুদ্ধে মত
দ্যান করেন। যাহাহউক, অবশিষ্ট কার্য্য পূর্ববৎ অনুঠান করিবে। কাহার করিতে ইবব।

ভির্মান পিত্রণণের কার্য্য করিতে হয় না। কেহ কেহ বলেন, তাহা করিতে ইবব।

আনস্তর সেই আর ভ্ত্যাদির সহিত ভোজন করিবে। অয়ি ধর্মজ্ঞ । এইরপে অথবা বাহা-বারা বিলগণের পরিতোব জায়িতে পারে, তদহুসারে সমাহিত হইরা, পিতৃগণের শ্রাদ্ধ করিবে। শ্রাদ্ধে নীহিত্র, কুতপ অর্থাৎ দিবসের পনের ভাগের অষ্টম ভাগ এবং তিল এই তিনটা পবিত্র। আরু, কাপ, প্রপর্যাটন ও জ্বা, এই তিনটা বর্জনীর। বিপ্রেক্সবর্গ এইরপ নির্দেশ করিরাছেন। ২ন ! বেরীপ্যপারই শ্রাদ্ধে প্রশস্ত। রজত দান বা রজত দর্শন করা কর্ত্বা। এইরপ ভাবিতে বিলাধির বার্ম্ব, পিতৃগণ রজতপাত্রে পৃথিবীকে স্থা দোহন করিয়াছিলেন। সেইজন্ত রক্তই পিতৃাণের অন্তীই ও প্রীতিপ্রদ।

ইতি পার্মণশ্রাদ্ধকর নাম একতিংশ অগায়।

### দ্বাতিংশ অধ্যায়।

মদালদা কহিলেন, পুত্র! অতঃপর ভক্তিদহকারে যাহা পিতৃগণের প্রীতির নিমিত্ত আহরণ ও ধাহা বর্জন করিতে হয় এবং ধাহা তাঁহাদের প্রীতিসমুদ্তাবন করে, তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর। ংবিংগাল বার। এক মাদ তাঁহাদের তৃত্তিভোগ হয়। পিতামহগণ মৎভামাংস বারা ছই মাস তৃত্তি ণভোগ করেন। ছরিণমাংস তিন মাস তাঁহাদের তৃগুবিধান করে, জানিবে। শশমাংস চারি মাদ তাঁহাদের পোষণ করিয়া থাকে। পক্ষিমাংদ পাঁচ মাদ, শুকরমাংদ ছয় মাদ, ছাগমাংদ গাত মাস, অণমুগের মাংস আটে মাস এবং ক্রক্মুগের মাংস নয় মাস নিঃসন্দেহ তৃথি স্মাধান করে। গ্রন্থমাংস দশমাসিকী তৃথি বিতরণ করিয়া থাকে। ওরভ্রমাংস একাদশ মাস পিতৃগণের ত্তি দান করে। গ্রাত্ক বা পা্যদে হাদশ মাদ এবং গণ্ডারের মাংদ, কালশাক. মধু, ছহিতার অদত আমিব বা স্বকীয় কুলোদ্ভব অন্ত যে কোন ব্যক্তির প্রদত মাংস এবং গৌরীস্থত ও গয়া-আছ এই সকল আনস্ত তৃত্তি বিধান করিয়া থাকে। স্থামাক, রাজস্থামাক এবং ধাস্তের মধ্যে অণাতিক, নীবার ও পৌকল পিতৃগণের তৃত্তিজনক। তথাতীত, বব, বীহি, গোধ্ম, তিল, মুক্দ, বৰ্ষণ, প্ৰিয়কু, কোৰিদার ও নিজাব এই সকলও নিরতি ত্থি বিধান করিবা থাকে। মাক্টক, वीवयारन, अन्, विध्यानिक, मल्द এই नकन आदकार्या अधनष, एका वर्कनीय। नवन, গ্ৰন, পৰাপু, পিশুসুৰক, দ্ধিমি শ্ৰিত শক্তু, বৰ্ণ ও বৃদ্ধীন অভান্ত জবা, গ্ৰাবিকা, অনাবু, गैरेन, कांत्र, कांत्रक निर्याप्त धरे मकन स्वां उर्कन कतित्व। छेश्टकांति बाता गर्क, शिंडरखन নিষ্ট হইতে উপাৰ্জিত এবং বিগহিত কস্থাপণ দায়া সঞ্চিত দ্ৰব্য সকলও প্ৰাচ্ছে নিতান্ত জ্ঞা শত। হর্ণর ও ফেণসংযুক্ত জল, অরতর উদক এবং বাহা গোগণের অভৃপ্তিজনক, বাহা রাতিত चानील, गहा (कानक्रभ शांककारगृष्टे প্रযোজिত हम्र ना धवर गहा निशानक ও गहा भान कः কোনমতেই বিধেয় নহে, ঈদৃশ অব্যও পিতৃকার্য্যে সর্ব্রদাই বর্জন করিবে। মৃগত্থ, ছাগত্য উষ্ট্ৰহন্দ, বাৰতীয় অবিভক্ত পুৰযুক্ত পশুর হন্ধ, মহিষহন্ধ, চমক্ষহন্ধ, বস্ত্ৰ ৰারা ছাঁকা নয় এরূপ ধেষু হয়, আদ্রার পিতৃকার্য্যের অস্ত প্রদান কর, এই বলিয়া আনীত হইয়াছে, এরপ সর্বপ্রকার ह। माध्रां बाह्नकार्या नर्समाहे वर्कन कतित्वन। (य कृषि कीठामिनश्युक, क्रक ও अधिमध्य धर ছৰ্গন্ধবিশিষ্ট, তাহার মৃত্তিকা আছে ব্যবহার করিবে না। যাহারা কুলের অপমান করে, যাহাঃ উদেবাগ করিয়া, কুলের হিংসা করিয়া থাকে; যাহারা নগ্ন ও পাতকী, তাদৃশ ছুইগণ পিড় কার্য্যের হানি করিরা থাকে। যে ব্যক্তি অপুরুষ ও পিতা মাতা কর্ভ্ক পরিত্যক্ত এবং কুরুট গ্রামাশুকর, কুরুর ও যাতুধান ইহারা দর্শনমাত্রেই প্রাদ্ধ এই করে। সেইকল সুরক্ষিত হইঃ পৃথিবীতে তিল বিকিরণ করিবে। তাত ! এইরপ করিলে, উভয়েরই রক্ষা হইবে। জননাশোচ সংস্পৃত্ত, চিররোগী, পতিত ও পাপগ্রস্ত ব্যক্তিগণ ঘারা পিতামহগণের পৃষ্টি লাভ হয় না। তাহ দিগকে বৰ্জন ও রজঃমলার দর্শন পরিহার করিবে। যজমান মুখ্তিতমুখ্ত ও মদিরামন্ত ব্যক্তি সংস্পর্শ করিবে না। কেশ ও কীটসংস্পর্শে দূষিত, কুরুর কর্তৃক নিরীক্ষিত, পুতিগদ্ধিযুক্ত, পর্যা ষিত এবং বস্তানিলাহত অল, প্রাদ্ধে বর্জন করিবে। পরম্প্রদাবিষ্ট হইলা, পিতৃগণের নাম । গোত্রামুদারে বাহা কিছু দান করা যায়, তাংাই তাঁহাদের আহারীয় হইরা পাকে। সেইজঃ প্রাকে পিতৃগণের ভৃপ্তিদাধনমানদে প্রদাসহকারে প্রশন্ত দ্রব্য সকল যথাবিধি দান করিবে বিধান ব্যক্তি আছে স্ক্রি। যোগীদিগকে ভোজন করাইবেন। কেনুনা, পিত্যুণ একমা যোগেই প্রতিষ্ঠিত আছেন। সেইজন্ত যোগিদিগকে সর্ব্বদাই ভোক্তন করাইতে হইবে। সহস্র সহত বান্ধণ অপেকা একমাত যোগীকে যদি অগ্রে ভোজন করান যায়, তাহাহইলে, তিনি জলমাং नोकांत्र छात्र, यज्ञमान ও ভোক্তা नकनरक উদ্ধার করিয়া থাকেন।

ত্রন্ধবাদিরা এখনে পিতৃগাথা করিয়া থাকেন। পিতৃগণ পূর্ব্বে ঐকলের উদ্দেশে ঐ গাথা গানকরিয়াছিলেন। তাঁহারা বলিয়াছিলেন, কবে আমাদের সন্ততিগণের মধ্যে এরূপ সর্বশ্রেষ্ঠ পূর অনিবে, যে, যোগিগণের ভুক্তশেষ অনে আমাদিগকে ভূমিতে পিও প্রদান করিবে। অথবা গায়ায় উৎক্রপ্ট হবি: মরুপ গওারমাংস, কালশাক, তিলাঢা কুশর, এই সকল দ্বারা একমাস তৃতি সাধন জন্ত পিও দিবে। বৈশ্বদেব ও সৌম্যবলি বিষয়ে উৎক্রপ্ট গণ্ডার মাংসই উৎক্রপ্ট হবি। বিষাণহীন গণ্ডারমাংস প্রাপ্ত হইলে, আমহা যাবৎ ক্রেয়ের অবন্থিতি, তাবৎ তাহা ভক্ষণ করিয়া থাকি। অয়োদশী ও ম্যানকত্র এই উভয়ে যথাবিধি প্রান্ধ ও দক্ষিণায়নে পায়স প্রদান করিবে। ঐ পায়সে মধুও মৃত সংযুক্ত করিতে হইবে। বৎস। ঐরপে পূজা করিলে, সমুদায় কামনা সিদ্ধ ও সমুদায় গাপ পরিষত হয়। পিতৃগণ প্রান্ধে তৃপ্তিলাভ করিলে, বস্থ, রুদ্রে, আদিতা, গ্রহ, নক্ষত্র ও তারকা, সকলেরই প্রাতি সম্পাদন করেন। অধিক কি, তাঁহাদিগকে প্রান্ধ দার তৃথ করিলে, তাঁহারা আয়ু, প্রজ্ঞা, ধন, বিদ্যা, স্বর্গ, মোক্ষ, স্থও ও রাজ্য প্রদান করেন।

বংস! আমি তোমার নিকট এই শাজোক্ত আছবিধি কীর্ত্তন করিলাম। অধুনা, কার্য-আছের তিথি বর্ণন করিতেছি, শ্রবণ কর।

ইতি তিথিকল নাম খাত্রিংশ অধ্যার।

## ত্রয়স্তিংশ অধ্যায়।

মদালসা কহিলেন, প্রতিপৎ তিথিতে শ্রাদ্ধ করিলে ধনলাভ, বিভীয়ায় সম্পদপ্রাপ্তি, তৃতীনার বরলাভ এবং চতৃথীতে শ্রাদ্ধ করিলে শক্রনাশ হইরা থাকে। পঞ্চমীতে শ্রী, বঞ্জীতে সকলের নিকট পূজা, সপ্রমীতে পরি বতা ও জাইনীতে শ্রাদ্ধ করিলে, উৎকৃষ্ট বৃদ্ধি লাভ হয়। নর্মীতে জ্রী, দশমীতে সকল কামনা পরিপূর্ণ এবং একাদশীতে শ্রাদ্ধ করিলে সমৃদ্য বেদে অভিজ্ঞতা লাভ হইরা থাকে। ঘাদশীতে পিতৃপূলা করিলে জয়লাভ, প্রলাভ, বৃদ্ধাভাত ইয়া থাকে। ঘাদশীতে পাতৃপূলা করিলে জয়লাভ, প্রলাভ, বেগালাভ, বৃদ্ধিলাভ, বাধীনতালাভ ও পৃষ্টিলাভ হয়। এরোদশীতে শ্রাদ্ধাপর স্থান থাসভাবিত জ্ব দ্বারা করিলে, নিঃসন্দেহ দীর্ঘ আযু ও ঐশ্ব্যালাভ হইরা থাকে। যাহার পিতৃগণ যুবাবছার মৃত্র বা শক্র দ্বারা নিহত হইরাছেন, সে ব্যক্তি উহাদের প্রীতিলাভকামনার চতুদ্দীতে শ্রাদ্ধিরে অক্রের শুক্তি হইরা, ব্রুলহ্কারে অমাবভাতে শ্রাদ্ধ করিলে, সমুদার কামনাসিদ্ধি সংকারে অক্রের আক্রের প্রতিলাভ করিয়া থাকে।

কৃত্তিকাতে পিতৃগণের অচনা করিলে, স্বর্গভোগ হইয়া থাকে। রোহিণীতে অপত্যকামনার প্রান্ধ করিবে। মৃগশিরার প্রান্ধ করিলে, ওজন্মিতা, আর্দ্রার শৌর্যার প্রক্রিয়তে ক্লেআদি, প্রাান্ধ পৃষ্ট, অপ্রেষার পুত্ররত্ব, মবার স্বজনমধ্যে প্রেষ্ঠতা ও ফ্রুণীতে প্রান্ধ প্রান্ধ প্রান্ধ পৃষ্ট, অপ্রেষার পুত্ররত্ব, মবার স্বজনমধ্যে প্রেষ্ঠতা ও ফ্রেণীতে প্রান্ধ প্রান্ধ করিলে, সত্যই প্রেষ্ঠতাসংঘটন হয়। চিত্রার রূপে ও অপত্য লাভ হইয়া থাকে। স্বাতিনক্ষত্রে প্রান্ধ করিলে, বাণিজা, বিশাথায় পুত্র ও কামনাসিদ্ধি, অম্রাধায় চক্রবর্তিতা, ক্লোষ্ঠায় আধিপত্য, মূলির আরোগ্য, আবাঢ়ায় স্বশ্ল; উত্তরাষাঢ়ায় শোকশ্সতা, প্রাবণায় শুভ গোক সকল লাভ এবং ধনিষ্ঠায় বিপুণ ধন প্রাপ্তি হইয়া থাকে। অভিজ্ঞাই নাম্ধন, ব্যতীপাতে কুপ্য অর্থাই স্বর্ধ রোপ্য ভির অন্যান্ত সম্প্রায় ধাতু, অন্ধনীতে তুরঙ্গন এবং ভরণীতে উইল্লই আয়ু প্রাপ্তি হইয়া থাকে। এইজন্তই তত্ত্ববিং পুরুষ এই সকল নক্ষত্রে কাম্যপ্রাক্ষের অম্রুটান করিবেন।

ইতি কাম্যশ্ৰাদ্ধকলকথন নাম অয়ন্ত্ৰিংশ অধ্যায়।

### চতুব্রিংশ অধ্যায়।

মদানদা কহিলেন, বৎদ। এই রূপে গাধু গৃহস্থ দদাচারনিরত হইয়া, হবা, কবা ও অন্ধ্রেদান বিংদর পিতৃগণ, দেবগণ, ভৃতগণ, বান্ধবগণ, অভিধিগণ, ভৃত্যগণ, পশু গক্ষী ও পিণীনিকাগণ ও ভিক্তগণ এবং অস্ত্রান্ত যে কেহ যাজ্ঞা করিবে, তাহাদেব সকলেরই বিশিষ্ট বিধানে পূজা করিবে। নতা নৈমিত্তিকী ক্রিয়া শুভ্যন করিলে, গৃহস্থকে পাণভাগী হইতে হয়।

অনর্ক কহিলেন, মাতঃ! আপনি আমার নিকট নিত্য ও নৈমিত্তিক এবং নিত্য-নৈমিত্তিক ভদে অবিধ কর্ম কার্ত্তন করিলেন। উহা প্রকৃত-পুরুষোচিত। অরি কুলনন্দিনি! অধুনা আমি নিচারপ্রবনে অভিলাবী হইরাছি। যাহার অহুষ্ঠান করিলে, লোকে উক্তর লোকেই স্থাভাগী ইরাখাকে।

<sup>মদাল</sup>দা কহিলেন, আচার পরিপালন করা গৃহস্থের নিত্য কর্ত্তব্য মধ্যে পরিগণিত। আচার-<sup>বহীনের</sup> কোন লোকেই স্থণজ্জটন হয় না। বে ব্যক্তি সদাচারসমূলজ্মনপুরঃসর সংগারপথে পদিচালনা করে, তাহার যক্ক, দান, তপভা সম্দরই অকল্যাণের হেতৃ হইরা থাকে। ছরাচার প্রুষ কথনই দীর্ঘ আয়ু প্রাপ্ত হয় না। এইজন্ত সদাচারে যত্নবান্হওরা বিধের। সদাচার বারা অলক্ষণ দ্বীকৃত হয়। বংসা সেই সদাচারের অরপ কীর্ত্তন করিব। তুমি তল্যতচিত্তে অবণ করিয়া, তদ্মুর্গ অফুঠানে প্রেরুত হও।

গৃহস্থমাত্রেরই ত্রিবর্গদাধনে বন্ধ করা কর্ত্তব্য। ত্রিবর্গের দিদ্ধি হইলে, তাহার উত্তর শোকে দিদ্ধিস্ত্রতন হইয়াথাকে।

আত্মবান্ ইইয়া, উপার্জ্জিত অর্থের চতুর্থ অংশ পরলোকসাধন ধর্মের ক্বস্তু সঞ্চয় করিবে।
আর্র্নাল বারা আত্মপোরণ ও নিত্যনৈ মন্তিকাদি কাষ্য সম্পাদন এবং অবশিষ্ঠ এক ভাগ ন্দ্
ধন স্বরূপে বৃদ্ধিত করিবে। এইরূপ ব্যবহার করিলেই, অর্থের সফলতা হয়। অর্থ্যবহারের স্তার,
পাপপরিহার ক্ষন্ত ধর্ম সঞ্চয় করিবে। কাম্য ও নিকাম ভেদে ধর্ম বিবিধ। তন্মধ্যে মিকাম ধর্ম
পরলোকে ও কাম্য ধর্ম ইহলোকে ফল প্রেদান করিয়া থাকে। প্রাহারায়তম্বশতঃ কাম্য ও
নিকাম উভয় ধর্মের অবিরোধে অফ্রগান করিয়। থাকে। প্রাহারায়তম্বশতঃ কাম্য ও
হিয়াছে। এই ধর্মা, অর্থ ও কাম ইহারা সকলেই পরস্পার বেমন অম্বন্ধ, সেইরূপ আবার
পরস্পার অনম্বন্ধ ও চিন্তা করিবে। আমি তাহাদের অম্বন্ধাদি বিষয় বলিভেছি, শ্রবণ কর।
ধর্ম এবং ধর্মান্ত্র্রার্থ ধর্ম আত্মার্থের বাধক নহে। এই উভয়ের সহবোণে কাম বেমন বিধি
হইয়া থাকে, অর্থাৎ ধর্মান্ত্রন্ধ কাম ও অর্থান্ত্রন্ধ কাম এই দিবিধ স্বরূপে ব্যবচ্ছিল হর, কাম বারা
ধর্ম ও অর্থ্ তেমনি ছই ছই ভাগে বিভক্ত হয়।

ব্রাহ্ম মৃহুর্ত্তে গাজোখান করিয়া, ধর্ম ও অর্থ, তন্ত্রক কার্য্যক্রেশ সমস্ত এবং বেদার্থতদ চিন্তা করিবে। অনস্তর শ্যা হইতে উঠিয়া, নক্ষত্র থাকিতে, থাকিতে প্রথম সন্ধ্যা ও দিবাকর থাকিতে থাকিতে, সায়ং সন্ধ্যা বন্দনা করিবে। অনাপৎসময়ে উক্ত নিয়মে উপাসনা করিবে, কখনই ইহার ব্যক্তিচার করিবে না। বন্দনাসময়ে শুচি ও সংয্ত হইয়া, প্রান্থ্যে উপবেশন করিবে।

অসং বাক্য, মিথ্যা কথা ও পরুষ বচন ত্যাগ করিবে। বৎস! অসং শাস্ত্র, অসং বাদ ও অসং সেবাও কথন করিবে না। নিয়তচিত্ত হইয়া, সন্ধা। ও প্রাতঃকালে হোম করিবে। উদয় ও অ্তয়ন উভয় সময়েই স্থ্যবিদ্ধ দর্শন করিতে নাই। কেশসংস্করণ, আদর্শন্দন, দস্তধাবন এবং দেব-গণের তর্পণ, এই সকল কার্য্য পূর্ব্বাক্তে করিতে হইবে। গ্রাম, আবস্থ, তীর্থ ও ক্ষেত্র এই সকল ছালে যে পথ দিয়া যাইতে হয়, তাহাতে এবং ক্রইভ্মি ও গোষ্ঠ এই উভয় স্থলেও বিষ্ঠামূত্র তাগি করিবে না। নগা পরস্ত্রী ও আপনার বিষ্ঠা দর্শন করা কর্ত্তব্য নহে। রজস্বলা স্ত্রীর দর্শন, স্পর্শন ও সম্ভাবণ একবারেই ত্যাগ করিবে। জলে মলম্ত্রত্যাগ বা স্ত্রীসঙ্গে প্রস্তুত হইবে না। প্রাক্ত বিষ্ঠা, মৃত্র, কেশ, ভত্ম, ঘটাদির থাপরা, তুষ, অঙ্গার, অন্থি, রজ্জু ও বস্ত্রাদি এবং পথ ও ভূমি এই সকলের উপর কথন বিদিবেন না।

গৃহস্থ প্রথমে বিভবাহ্নসারে পিতৃগণ, দেবগণ, মহুষাগণ ও তৃতগণের অর্চনা করিয়া, পরে বয়ং ভোজন করিবেন। আচমন করিয়া, বাক্যসংযমপুরংসর শুচি হইয়া, প্রাত্মেরে বা উত্তর্মধ্বিসা, তদগতচিত্তে অন্ন ভক্ষণ করিবে। কোনরপ অপকার বা উত্তেজনা বাতিরেকে কাহারও কথন দেবোদ্যোবণ করিবে না। প্রত্যক্ষ লবণ ও অত্যক্ষ অন্ন, ত্যাগ করিবে। আত্মবান হইবে, গমন ও অবস্থান করিতে করিতে বিষ্ঠা মূত্র ত্যাগ করিবে না। আচমন করিয়াও, আর কিছুমাত্র খাইবে না। উচ্ছিত্ত অবস্থায় আগাণ বা বেদাধ্যয়নে প্রবৃত্ত হইবে না এবং গো, রাহ্মণ, লিষি আপনার মন্তক্ত অপলি করিবে না। তৎকালে ক্র্যা, চন্ত্র, নক্ষত্র এই সকলও ইচ্ছাত্রসারে দ্বন করা নিষিদ্ধ। তথ্য আসন, ভগ্ন শ্রা। ও ভগ্ন পাত্র পরিত্রাগ করিবে। অভ্যুথানাদি-সংকার প্রদর্শন করারে বিষদ্ধ। তথ্য আসন, ভগ্ন শ্রা। ও ভগ্ন পাত্র পরিত্রাগ করিবে। অভ্যুথানাদি-সংকার প্রদর্শন সহকারে প্রকারে অক্সানন প্রাণান ও অভিবাদনপুরংসর অনুক্ল সন্তাহণ এবং অনুগ্রমন করিবে; ক্রমন বাক্য প্রবিশ্য প্রতিকৃশ বাক্য প্রধাগ করিবে না।

এক বল্পে ভোজন বা দেবগণের অর্চন করিবে না; আক্ষণদিগকে বাহন করিবে না; অধিতে बालावां जि जात्र कतित्व ना ; नश हरेत्रां कथन त्रान वा भन्नन कतित्व ना । इहे हरख कतां प्रस्क क्छ बन कहिरव नी, निकांत्रण जीन वी गर्रीण मितःशान कतिरव नी, नितःशान कतिश दिनान अर्टकरें তেল মন্দন করিবে না । অনধ্যার মাত্রেই বেদাধারন করিবে না; ত্রাহ্মণ, অরি, গো ও পরেট্র चित्र्रथ कथन मन मुकानि जाति कित्रित नी, निविधित, उउत्पूर्व ७ ब्राखिरक मनिनमूब हहेता, বেখানে কোনরপ বিশ্ববাধার সম্পর্ক নাই, তাদুশ স্থলে ব্রেড্ছ মূত্র পুরীষ ত্যাগ করিবে। পিতা মাতা কোনরপ হছত করিলে, ভাহা কাহাকেও বলিবে না; জুদ্ধ হইলে তাঁহাদিগকৈ প্রসন্ধ করিবে। অন্ত কোন ব্যক্তি তাঁহাদের পরিবাদ করিলে, ভাহা শ্রবণ করিবে না। আহ্মণ, রাজা, ছ: थार्ड, जाशन मार्थका जिसक विदान, शुक्तिनी, किनिष्ठ इटेरनेड छात्रार्छ, मुक, जन्न, विदेत्र. মত্ত, উন্মত্ত, পুংশ্চলী, ক্লতবৈর, বালক ও পতিত এই সকলকে পথ দিবে। দেবালয়, চৈত্যতঞ্চ, চতৃপ্র, বিদ্যাধিক, গুরু ও দেবতা ইহাদিগকে প্রদক্ষিণ করিবে। অফুর পরিহিত উপানং, বন্ধ ও মাল্যাদি এবং উপবীত, অলঙ্কার ও কমগুলুধারণ ও পরিধান করিবে না। চতুর্দশী, অট্মী পঞ্দশী ও পর্কাসময়ে তৈলাভাল ও জীনল তাাগ করিবে। প্রাক্ত পুরুষ পাদ ও ফুড্বা প্রক্রিপ্ত করিয়া, অবস্থান করিবেন না। পাদে দারা পাদ আক্রমণ এবং পাদবিক্ষেপ্ত করিবে না। কাহারও মর্মাভিঘাত করিবে না। কাহারও প্রতি আফোশ প্রকাশ ও পিশুন ব্যবহারও করিকে না। বিচক্ষণ ব্যক্তি দস্ত, অভিমান ও তীক্ষ ব্যবহার পরিত্যাগ করিবেন। মূর্থ, উন্মন্ত, বিশদ্প্রক্ত, বিরূপ, মায়াবী, ন্যুনাঙ্গ, অধিকাঙ্গ, ইহাদিগকে উপহাস বারা বিদ্যিত করিবেন না। পরের প্রতি এবং শিক্ষার্থ পুত্র ও শিব্যের প্রভি দও প্রয়োগ করিবে না। পাদ দারা আসন আক্রমণ করিয়া. উপবেশন করিবে না। সংযাব, কুশর ও মাংস কেবল আপেনারই জ্লন্ত প্রস্তুত ক্রিবে না। সারং ও প্রাতে অতিথি সেবা করিয়া, পরে ভোজন করিবে।

বাগ্যত হইয়া, পূর্ব্ধ বা উত্তর মুথে বিসিয়া, দস্তধাবন করিবে। বর্জনীয় দক্তকাঠাদি দক্তধাবনার্থ বাবহার করিবে না। উত্তরশিরা বা পশ্চিমশিরা হইয়া, কথন শুয়ন করা কর্ত্তব্য নহে। পূর্ব্ধ-শিরা ও দক্ষিণশিরা হইয়া, শয়ন করিবে। <u>হুগর্জক কলে বা নিশাকালে কদাচ মান করিবে না।</u> গ্রহণাদির সময়েই কেবল রাত্রিতে মান করিবে। মান করিয়া, বস্ত্র বা পাণি ধারা গাত্র মার্জন করিবে না। আর্ফ্রিকেশ বা আর্ফ্রিক করেবে না। আর্ফ্রিকেশ বা আর্ফ্রিক করেব না। রক্তবর্ণ, অথবা ক্রফ্রবর্ণ কিমা চিত্রিত বস্ত্র পরিধান করিবে না। উত্তরীয় ও পরিধেয় এবং অলম্বার এই সকল উন্টা করিয়া পরিকে নাই। শশাহীন ও অত্যক্ত জাণিবা ছিন্ন বসন ত্যাগ করিবে। কেশ ও কীট্যুক্ত, কুন্ধ, কুকুর কর্ত্ক নির্মান্ধত ও অবলেহিত, সারোদ্ধরণ প্রযুক্ত দ্বিত এরপ অল্ল, পৃষ্টমাংস, র্থামাংস, বর্জনীয় মাংস ভক্ষণ করা অবিধি। বৎস। পর্যাহিত ও চিরোধিত অর্থাৎ অনেক দিনের বাসী ভক্ত অর্থাৎ ভাত ভক্ষণ করিতে নাই। প্রত্যক্ষণবণ সর্ব্বে ভাতাবে বর্জন করিবে।

পিটক, শাক, ইক্, গ্রা এই সকলের অথবা মাংসের বিকার চিরোবিত হইলে, ভক্ষণ করিবে না। স্ব্রের উদর ও অন্তমন সমরে শায়ন করিতে নাই। সান করিয়া শায়ন করিবে না; বিষা বিষাও নিজা বাইবে না; অন্তমনা হইয়াও শায়ন করিতে নাই। শায়ার বা ভূতলে শিক করিয়া উপবেশন করা করিয়া নহে। উত্তরীয় না পরিয়া অথবা কণা কহিতে কহিতে অথবা বাহারা দেখিতেছে ত'হাদিগকে না দিয়া, ভোজন করিবে না। সায়ংকালে ও প্রাতঃকালে, বুধাবিধি সান করিয়া ভোজন করিবে। বিষান্ ব্যক্তি পরদারগমন পরিহার করিবেন। বেহৈ ভূ, শারদার গমন করিলে, লোকমাত্রেরই ইটাপুর্ত ও আয়ু কয় হইয়া থাকে। পুরুবের পরে গয়াভিমর্থন ব্যান আয়ুক্র করে, উদুশ আর কিছুই নাই।

দেবপুণের মর্চনা ও গুরুগণের অভিবাদনা সর্বতোভাবে কর্ত্তব্য। সেইরূপ, সর্বভোভাবে

আচমন করিয়া, অন্তক্ষণ ক্রিয়া সম্পাদন করিবে। বৎস। কেনহীন, গন্ধীন, মলহীন, পবিত্র সদিল আদরপূর্বক গ্রহণ করিরা, পূর্বমুধ বা উত্তরমুধ হইরা, আচমন করিবে। জলমধ্য হইতে, বানগৃহ হইতে, বলীক হইতে, মৃধিকের গর্ত্ত হইতে এবং শৌচক্রিয়া করিয়া, ফেলিয়া গিয়াছে, একপ মৃত্তিকা হইতে মৃত্তিকা গ্রহণ করিবেনা। সমাহিত চিত্তে হত্ত পদ প্রকাশন ও সম্যক্ রূপে অভ্যুক্ষণ অর্থাৎ বারিবিন্দু বর্ষণ করিয়া, উভয় জায়ু মোটনপূর্বক আসীন হইয়া, তিন বা চারিবার জলপান করত আচমন করিবে। মুথের প্রান্ত ও গহরর এবং মন্তক তুইবার মার্জন করিয়া ভাচ হইয়া, সম্যক্ রূপে আচমনপূর্বক ক্রিয়া করিবে। দেবগণ, ঋবিগণ ও পিতৃগণ ইইাদের কার্য্য স্বান্ধা ধত্রসহ সাবে সমাহিত চিত্তে সাধন করা করিবে। ক্ষোতন অর্থাৎ ইাচি হইলে, নিজীবন অর্থাৎ থুবু কেলিলে এবং বস্ত্র পরিধান করিয়া, আচমন করিতে হইবে। ক্ষোতন, অবলেহন, নিজীবন ও বমন ইত্যাদি ঘটলে আচমন, গোপ্রত্ত্বান্ধি ও স্ব্যু দর্শন এবং দক্ষিণ কর্ণ অবলম্বন করিবে। পূর্বর প্রত্বা বহুলৈ, পর পরক্রমে যথাসন্তব এই সকল সমাহিত করিবে। পূর্বেশিক্রের অভাবে হইলে, পর পরক্রমে যথাসন্তব এই সকল সমাহিত করিবে।

দন্ত ঘারা দন্ত ঘট্টন অথবা আপনার দেহ তাড়ন করিবেনা। উভর সন্ধার শন্নন, অধ্যয়ন, ভোজন এবং সন্ধার সময়ে মৈথুন ও প্রস্থান এই সকল ত্যাগ করিবে। তাত ! পুর্বান্তে দেবগণের ও মধ্যান্তে মন্ত্র্যুগণের এবং পরান্তে পিতৃগণের ভক্তিসহকারে পূজা করিবে। শির্মানপুর্বক পিতৃগণের ও দেবগণের কার্য্যে প্রবৃত্ত হইবে। প্রান্ত্রুগ বা উদল্প হইরা শাক্রাকার্য্য করিবে। সংক্লিসভ্তা হইলেও রোগিনী, অসহীনা বিক্লতা, পিঙ্গলবর্ধা, বাচালা বা সর্বাদ্যকার্যে করিবে। সর্বাদ্যকালা, অন্তরনাদিকাবিশিন্তা, সর্বলক্ষণশালিনী কন্তাকে উদ্বহন করিবে। পিতামাতার সপ্তমী বা পঞ্চমী কন্তাকেই বিবাহ করা কর্ব্য। ত্রীর রক্ষা করিবে, দর্যা ত্যাগ করিবে, দিবলে শয়ন ও নৈথুন পরিহার করিবে, যাহাতে পরের সন্তাপ জন্মে এবং প্রাদিগণের পীড়া সন্তাবিত হয়, এরূপ কর্মাও বর্জন করিবে। চারি রাত্রি রক্ষমলা স্ত্রীর সহবাস ত্যাগকরা সকল বর্ণেরই কর্ত্ব্য। আবার কন্তা না জন্মে, এরূপ ইচ্ছা থাকিলে, পঞ্চম রাত্রিতেও তাহার সহবাস করিবে না। বৎস ! ষষ্ঠ রাত্রিতেই গমন করিবে। কেন না, যুগারাত্রিই প্রশন্ত। যুগারাত্রিতে গমন করিলে, পুত্র ও অযুগারাত্রিতে কন্তা জনিয়া থাকে; অত্রব পুত্রলাতে অভিনায় থাকিলে, যুগারাত্রিতেই সর্বাদা সংবেশন করিবে। পুর্বাহে স্ত্রীসঙ্গ করিলে, বিধ্র্মী পুত্রের জন্ম হয় এব সন্ধ্যাকালৈ ন পুংসক হইয়া থাকে।

বংশ। কুরকর্ম, বমন, স্ত্রীসংস্থাগ এবং শ্মশানভূমিতে গমন করিলে, সবস্ত্র সান করিবে। দেব, বেদ, দ্বিজাতি, সাধু, সত্যশীল, মহাত্মা, পিতামাতা, পতিব্রতা রমণী, যজনীল, তপস্বী, ইহাদের পরিবাদ বা পরিহাদ করিবে না। কোন মবিনীত ব্যক্তি ইহাদের নিন্দা করিলে, ভাহা ভনিবে না। উৎকৃষ্ট ও নিকৃষ্ট এই উভয়ের শ্যাও আসনন উপবেশন করিবে না। অমঙ্গল্য-বেশ্ধরিণ ও অমঙ্গল্য ব্যক্তি পরিহার করিবে। স্বেভবস্ত্র প্রিন্ত্র অমঙ্গল্য ব্যক্তার করিবে।

উদ্ধৃত, উদ্ধৃত, শৃত্, শ্বিনীত, শুনীল, চৌর্যাদিন্যত, শতিব্যথনীল, ল্বা, বৈরী, বদ্ধনী, বদ্ধনীর পতি, বলবান, নীচ, নিদিত, হীনভাবাপদ্ধ, সর্প্রমন্ত্রী ও দৈবপর এই সকলের সহিত্যিত্রতা বা ইহাদের সহবাদে বাস করা পণ্ডিতের কর্ত্তবা নহে। সদাচারাবলধী সাধুগণেরই সহিত্যেত্রী করিবে। প্রাক্ত, শথল, শক্তিসম্পন্ধ ও কার্য্যে উদ্যোগশালী ব্যক্তিদিগেরই সহিত স্থিতাক্ত্রে বদ্ধ হইবে। স্কৃত্ত, দীক্তিত, রাহ্মা, মাতক ও খণ্ডর এবং ঋত্বিক এই ছয় পূল্য ব্যক্তি গৃহে
সমাগত হইলে, পূলা করিবে। শুর্ৎস্বেরাধিত দিলাতিদিগকে অভ্যত্তিত ইইয়া, বিভবামুসারে
মধুপর্ক হারা যথাকালে অর্চনা করা কর্ত্বব্য এবং শ্রেরোলাভে অভিলাষ থাকিলে, তাহাদের
আজ্ঞান্থবর্তী ইইবে। তাঁহারা তিরস্কার করিলেও, ধীমান্ ব্যক্তি তাহাদের সহিত কথন বিশিদ্ধবিবেনা।

সম্যুগ্রণে গৃহার্চনা করিরা, বথাছানে যথাক্রমে অধির বিশেষরূপে পূজা ও ক্রমানুসারিকী নাহতি প্রদান করিবে। ব্রন্ধের উদ্দেশে প্রথম আছতি, প্রজাপতির উদ্দেশে দ্বিতীরা, গুরুপণের াদেশে তৃতীয়া, কপ্তাপের উদ্দেশে চতুর্থী ও অনুমতির উদ্দেশে পঞ্মী আছতি প্রদান করিয়া. ারে গৃহবলি দান করিবে। আমাম পূর্বেতোমার নিকট নিতাকর্মক্রিয়াবিধি উপলক্ষে যাহা निशंकि, जनस्मादत देवचरनव वनि अनान कतिएक इटेरव। त्मरे वनिक्षकत्व अवन कता ানবিভাগামুদারে দেবগণের উদ্দেশে পৃথক পৃথক ক্রেমে বলি প্রদান করিতে হইবে। তজ্জুসু ারিত্রীর ধারক অনস্ত ও বায়ু ইহাদের উদ্দেশে তিনটা বলি প্রদান করিয়া, প্রাচ্যাদিক্রমে খুতিদিকে দিক্ সকলকে এবং উত্তর্দিকে ব্রহ্মা, অন্তরীক্ষ, সূর্য্য, বিখদেবগণ, বিশ্বভূতগণ, উধা, उछ्निक, हेशामिशत्क यथाक्तरम विण नित्व। शत्त्र, यथा नम, এই श्रकांत्र कहिशा, निज्नात्त्र हेत्नर्भ मक्किनेनिएक विविधानीन कतिए इहेर्टर। श्रात अमार्ग्य कामना कतिया, अश्रमताकत-ানস্তর বায়ুকোনে, যদ্মৈততা, ইত্যাদি মন্ত্রে যথাবিধি জলদান করিবে। পরে অন্নাগ্র উথিত ও স্তকার কলনা করিয়া, বিধি ও ভায়ামূদারে আক্ষণকে প্রদান করিতে হইবে। তৎপরে, স্বন্ধ চীর্ধ সহায়ে বথাবিধি কর্ম নিম্পাদনে প্রবৃত্ত হইবে। ব্রাক্ষ্যতীর্থ দারা দেবাদির উদ্দেশে আচমন চরিবে। দক্ষিণ হল্ডের অকুষ্ঠের উত্তর দিকে যে রেখা আছে, তাহাই আচমনের অফু ব্রাক্তাতীর্থ বলিয়া বিখ্যাত। তৰ্জনী ও অফুষ্ঠ এই উভয়ের অন্তর বিভাগ পিতৃতীর্থ। নান্দীমুধ ব্যতিরেকে মার সকল সময়েই উহার বারা পিতৃগণের উদ্দেশে তোয়াদি দান করিবে। অসুনীর অগ্রভাগে দেবতীথ বিরাজমান আছে। তাহা ঘারাই দেবগণের ক্রিয়াবিধি ন্মাধা করিবে। কনিষ্টাঙ্গুলির गृत कांत्रनामक शिर्व। देश बात्रा প्रजापितत कार्या निष्णामन कतिरव। वह करण जैनिथिक তীর্থ সকল মারা দেবগণের ও পিতৃগণের কার্য্য করা কর্ত্তব্য। অগু তীর্থ মারা সর্বাদা কথন করিবে নী। ব্রাক্যতীর্থ ছারা অচমন করা প্রশন্ত। পৈত্রতীর্থ ছারা পিতৃগণের, দেবতীর্থ ছারা দেবগণের ও काइँजीर्थ बात्री श्रीकार्गिजित कार्या वर्षः नान्नीमृत्यत शित्धानकक्तिया मन्नामन कतित्व। विष्क्रण ৰাক্তি জ্বল ও অগ্নি যুৱাৰ্থ ধারণ করিবেন না। গুরু ও দেবগণের অভিমূথে কথন পাদ প্রসারণ কর্ত্তব্য নহে। অঞ্জলি শ্বারা জলপান ও বংদকে তুনদান প্রবৃত্ত গাভীকে আহ্বান করিতে নাই। গুরুই হউক, আর লঘুই হউক, সর্ববিধ শৌচ কার্য্যই গুরাপর হইয়া সম্পন্ন করিবে। মুথ ধারা धनल क्र्कात धानान कता कर्छवा नटह। यथन ! (यथान धननाजा, देवना, धांजित अ प्रक्रन ननी এই চারিটী নাই, সেখানে বাস করিবে না। যেখানে বলবান, জিতশক্ত, ধর্মতৎপর রাজার বাস, গেই স্থানে নিত্য বাদ করিবে। কুরাজার রাজ্যে সুথ কোথায় ? যেথানে হৰ্জম রাজার বাদ, যেধানকার ভূমি শশুবতী, যেথানকার পৌরগণ স্থান্যত ও সতত ভারপথে প্রবৃত্ত এবং লোক দকলও মৎসরশৃক্ত, দেখানে বাদ করিলে, স্থোদর হয়। যে রাষ্ট্রে ক্ষকেরা প্রায়ই অভিজোগী नग ; এवर स्थारन नानाञ्चकात अर्थाय जत्म, विहक्षन वाक्ति महेशातहे वान कतिरान। वरन! ঘেখানে জিগীবাবান, পৃক্ধবৈর ও সভত উৎসবমত্ত। এই ত্রিবিধ লোকের বাস, সেখানে বাস করিবে না। পণ্ডিত ব্যক্তি সর্বাদা স্থশীল সহবাদির মধ্যে বাদ করিবেন। পুত্র ! এই স্থামি তোমার হিতকামনায় সমস্তই বলিলাম।

ইতি সদাচার নাম চতু স্ত্রিংশ অধ্যায়।

#### পঞ্চত্রিংশ অধ্যায় i

মদালদা কহিলেন, এক্ষণে বৰ্জ্য ও অবৰ্জ্য দ্ৰেয়ের প্রতিক্রিয়া বর্ণন করি, প্রবণ করে। পর্যু-বিত অর, চিরদংগৃহীত মেহাক্ত দ্রব্য এবং স্নেহহীন ঘব গোধ্ম ও গোরদের বিকার ভক্ষণ করিবে না। শশক, কচ্ছপ, গোধা, সলারু, গুঙার ইহাদের মাংস ভক্ষ্য, আরে গ্রাম্য শৃক্র ও গ্রাম্য কুক্ট অভক্ষণীর। আক্ষণগণের জন্ম প্রাদ্ধে পিত্দেবাদির যে শেব থাকে এবং দেবৰ্জ্যাদিতে প্রেদ্ত ও ঔষধার্থ সংগৃহীত মাংস ভক্ষণে দোষ নাই।

मध्य, श्रान्तव, वर्ग, त्राप्त, त्रान्त, वर्ष, नाक, मृत, कत, वितन, हर्षा, मनि, त्रान, श्रानन, मूकाकन ও মহুষ্যগাত্র এ সকল সলিল দ্বারা ধৌত করিলেই শুদ্ধ হইয়া থাকে। জলদ্বারা লৌহনিশ্বিত দ্রব্য জাতের সংঘর্ষণ দারাও প্রস্তরের উঞ্চ সলিল দারা সম্বেহভাগু সকলের গুদ্ধি সম্পাদিত হয়। ক্পি, ধারু, অবজিন, মুবল, উল্থল ও সংহত বস্তা জালে মগ্ন করিয়া, প্রকালন করিলে, ভদ হয়। স্ক্ৰিধ বন্ধল মৃত্তিকা ও জল সংযোগে গুদ্ধ হইয়া থাকে। তুণ, কাঠ ও ঔষ্ধি স্কলের প্রোক্ষণ দ্বারা শুদ্ধি করিতে হয়। মেষ্লোমজ বস্ত্র এবং কেশ কোনদ্ধপে উপহত হুইলে, জলমিশ্রিত সর্বপ বা তিলের কল্ক দার। পবিত্র হইয়া থাকে। জল ও ভন্ম দারা কার্পাসনির্মিত দ্রবাজাত শুদ্ধ করিয়া শইতে হয়। দারু, দন্ত, অন্থি, শৃঙ্গ, এই সকল ভক্ষণ দ্বারা শুদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া থাকে। মৃত্তিকানিশ্রিত ভাণ্ডাদি পুন:পাকে শুদ্ধ হয়। ভিক্ষাদ্রব্য, শিল্পকারের হস্ত, পণ্য ও রমণীমুখ শ্বভাবতই শুদ্ধ। রথ্যাগত, অবিজ্ঞাত, দাসবর্গাদি কর্তৃক আনীত দ্রব্য বাক্যমাত্রেই শুদ্ধ হইয়া থাকে। অতিপ্রভৃত, বালক এবং বৃদ্ধ ও আত্রগণের কার্য্য অভাবতই ভদ্ধ। কর্মান্তে অলার শালা, যাহার শিশু আজিও তান ছাড়ে নাই এরপ স্ত্রী এবং গন্ধহীন-বুদুবুদ্ধীন ও স্ত্রোভোজল অভ্য নহে। লেপন, উল্লেখন, অর্থাৎ চচিয়া ফেলা, জলদেক, সংমার্জন ও অর্চ্চন দারা অগৃহ ৬% ছইয়া থাকে। মৃত্তিকা, জল ও ভম দারা ধৌত করিলে, কেশ-কীট-সংস্পৃষ্ট, গোগণ কর্তৃক আঘাত এবং মক্ষিক। যিত স্থান বা দ্ৰব্য শুদ্ধি লাভ করে। অমুম্বারা উত্থর-নির্মিত দ্রব্য সকলের কার বারা রঙ্গ ও দীদকের, ঠতুম ও অন্ধু বারা কাংদের এবং মৃত্তিকা ওজন বারা অনেধ্যাক্ত দ্রোর পদ্ধ হরণ করিলে এবং অক্তান্ত দ্রব্যের বর্ণ ও গদ্ধ অপনোদন করিলে, শুদ্ধি সংসাধিত হয়।

পৃথিবীত্ব, অবিকৃত ও গোগণের তৃথিকর জল শুদ্ধ। চণ্ডাল ও ক্রব্যাদাদি কর্ত্ক নিপাতিত জ্ব্যু জীবের মাংসও অভাবতঃ শুদ্ধ। তাত! পথিমধ্যে পতিত চেলাদি বাতাস ঘারাই শুদ্ধ হইরা থাকে। ধৃনি, আমি, অখ, গো, ছাবা, স্থাচক্রাদির রশ্মি, বায়ু, মহী, বিন্দুও মিক্কাদি ছাই সংসর্বেও দ্বিত হয় না। অজ ও অখ ইংদের মুথ শুদ্ধ। গোবৎসের আনন শুদ্ধন বেছা গোমাতার মূত্র ও প্রীষ শুদ্ধ। যে সে পদ্দী কর্ত্ক পাতিত ফলও শুদ্ধ। আসন, শমন, যান, নৌকা, পথের তৃণ, এই সকল জবা চক্র ও স্বর্গার কিরণে এবং বায়ু সহায়ে পণাজবাের আয় শুদ্ধ হইরা থাকে। পথসমন, মান, কোতন, পান ও মৃত্র প্রীষাদি বিসর্জন ইত্যাদি ঘটনায় বস্ত্র পরিব্রক্তিক করিয়া, যথাভায়ে আচমন করিবে। পথ, কর্দ্ম, জল, ইইকর্চিত ও কর্দ্মনির্দ্ধিত অধ্য কোনরূপে দ্বিত প্রাথকা বিলয়ে কান্তিক আমা আইমন প্রিত্র প্রাথকা উদ্ধিত হইলে, পবনসংসর্বেই শুদ্ধ ইইয়া থাকে। রাশীকৃত আমা আইমন প্রত্ব প্রাক্তি করিয়া, তাাগ করিবে। অবশিষ্ট আংশের কল ও মৃত্বিশ ঘারা আচমন প্রকি প্রাক্তণ করিলে, শুদ্ধি সমাহিত হইবে।

ছ্ট ভক্ত অজ্ঞানপূর্ব্বক ভক্ষণ করিলে, ত্রিরাত্র উপবাস করিবে; জ্ঞানপূর্ব্বক ভক্ষণ করিলে, দেই দোবের যথাবিধি প্রারশ্চিভ করিতে হইবে। রক্ষণা স্ত্রী, ভূষ ও শৃগালাদি, স্ভিক, চণ্ডাল, শববহিক ইহানিগকে স্পর্শ করিলে, শৌচার্থ মান করিবে। সম্প্রাম্থি স্পর্শ করিবা, মান করিবে। সম্প্রাম্থি স্পর্শ করিবা, মান করিবে, আচমনপূর্বক গো স্পর্শ ও স্থা দর্শন করিবে। তাহা হইলেই শুদ্ধ হইবে। প্রাপ্ত ব্যক্তি শৌণিত, নিষ্ঠীবন ও উদ্বর্গন লজ্বন এবং বিকালে উদ্যানাদিতে অবস্থিতি করিবেন না। লোকবিগর্থিতা ও অবীরা স্ত্রীয় সহিত্ত আলাপ করা কর্ত্তবা নহে। উচ্ছিট, বিঠা, মৃত্র ও পাদসলিল গৃহের বাহিরে নিক্ষেপ করিবে।

পঞ্চ পিশু উদ্ধার না করিরা, পরজলে সান করিবে না। গঙ্গা, ত্রদ ও সরিৎ এবং দেবধাত ক্ষলনেই সান করিবে। দেবতা, পিতৃগণ, সৎশাস্ত্র, যজ্ঞ, মন্ত্র ইত্যাদির যাহারা নিলা করে, তাহাদের স্পর্শন বা সন্থামণ করিলে, স্থ্যদর্শন করিয়া, শুদ্ধিলাভ হয়। রজস্বলা, চণ্ডাল, পতিত, শব, বিধর্মী, নবপ্রস্তা, ক্লীন, বিবস্ত্র ও অন্তাবসায়ী, প্রস্বসংক্রান্ত দ্রবা সকলের বহিনি:সারক, পরদাররত ইহাদিগকে দর্শন করিলে, প্রাপ্ত ব্যক্তি এরপে স্থ্যদর্শন করিয়াই শুদ্ধিলাভ করিবন। অভ্যেল দ্রব্য, নবপ্রস্তা স্ত্রী, ক্লীব, মার্জার, ইল্ব, কুকুর, কুকুট, পতিত, পরিত্যক্ত দ্যিত দ্রাদি, চণ্ডাল, মৃতহারক, ঋতুমতী ও গ্রাম্যশ্বর এবং স্তিকাপোচদ্যিত পুক্র এই সকলকে স্পর্শ করিলে, স্লান করিয়াই, শুদ্ধলাভ হয়।

যাহার গৃহে অফুদিন নিত্যকর্মের হানি হয়, যে ব্যক্তি ত্রাহ্মণগণের পরিত্যক্ত সেই নরাধ্য এবং সেই পাপী। অভএব নিত্যকর্মের কখন হানি করিবে না। নিত্যকর্ম না করিলে, বন্ধ সংঘটিত হর। কেবল মরণ ও জানন সময়ে তাহার অকরণে দোষ হয় না। মরণ ও জাননাশোচে আকাৰ দশ দিন দান ছোমাদি নিত্যকর্ম ত্যাগ করিবেন। ক্ষত্রিয় বাদশ দিন, বৈশ্র পনর দিন এবং শুদ্র একমাস নিত্যকর্ম বিবর্জিত হইবে। অতঃপর সকল বর্ণই যথাশাস্ত নিজ কার্য্য করিবে। স্থামাত্রীর ব্যক্তিগণ মৃতদেহ বাহিরে দগ্ধ করিবে। প্রথম, চতুর্থ, সপ্তম ও নবম দিনে প্রেতের উদেশে জনদান এবং চতুর্থ দিনে ভত্ম ও অস্থি চয়ন করিবে। সঞ্চয়নের পর তাহাদের অক্সপর্শ বিধেয়। সমানোদক ব্যক্তিগণ সঞ্যনের পর সমস্ত ক্রিয়া নিপ্পাদন করিবেন। মৃতাহে স্পিত-গণের এবং সমানোদক ও গোত্তিকগণের স্পর্শ করা বিধেয়। শস্ত্র, সলিল, উত্তন্ধন, অবি, বিষ, প্রপাত ইত্যাদি বারা মৃত হইলে, গোত্রজ ও সমানোদকগণের একনকল মাত অশৌচ। বালক, দেশাস্তরত্ব ও প্রবজ্যাপ্রমে প্রবিষ্ট ব্যক্তির মরণে সদ্যাপেটি। কেহ কেহ তিন দিনও আপৌচ বলিয়া থাকেন। এক ব্যক্তির মৃত্যুর পর যদি তাহার অশোচের মধ্যেই আর এক স্পিত্তের মৃত্যু হন, তাহা হইলে, প্রথম ব্যক্তির মৃত্যুদিন ধরিরাই, পর ব্যক্তির অপৌচাস্ত প্রভৃতি কার্য্য সকল সমাধা করিতে হইবে। জন্ম বা স্তিকাশৌচেও স্পিও ও স্মানোদকগণের এইরূপ বিধির অনুসরণ বিহিত হইয়াছে। পুত্র জন্মিলে, পিতা সবস্ত লান করিবেন। এক অস্নের জন্মের পর আমার একজন জান্মিলে, প্রথম জাতের দিনেই শুদ্ধি সাধিত হইয়া থাকে। সকল वर्ग हे यशाविधि लग. चानग, मानार्फ ও এकमान मः शत्रक निन व्यवनयन कतिया, यय वर्ग विहिज किया निष्पापन कदिट्य।

তৎপরে প্রেতের উদ্দেশে একোদিই বিধান করিবে। তৎকালে মনীধী আদ্ধাগণকে প্রেতের উদ্দেশে দান করা কর্ত্তব্য। লোকে যাহা কিছু অভীইতন এবং গৃহে যাহা কিছু প্রিয় দ্রব্য থাকে, তৎসমন্ত পুণাবান আদ্ধানক দান করিবে। দান করিলে, তাহার অনস্ত ফল লাভ হয়। দিবস পূর্ণ ইইলে, সকল বর্ণ ই স্লিল, বাহন, আয়ুধ, প্রতোদ ও দও স্পর্শ করিরা, সমান্ রূপে ক্রিয়া স্মাধানাস্তর শুভি ইইয়া, স্থ-বর্ণধর্ম-নিদিই উপাদান ও ক্রিয়া সম্পাদন করিবেশ। তাহাহইলে উভর লোকে মঙ্গলাভ করিতে পারিবে।

নিত্য বেদ অধ্যরন করিবে; বিশেষরপে হিতাহিত বিবেচনা সম্পন্ন ছইবে, ধর্দাসুসারে ধন শর্জন করিবে এবং যত্নসহকারে যাগজিরার প্রার্ভ হইবে। বৎস ! বাহা করিলে, আত্মা জুভশিত্ত না হন, ভালুল কার্যোর অনুষ্ঠান করিবে। ভাহাতে শহা করিবে না। বাহা মহাজনে গোপ-

নীর নহে, তাহারও সংবিধানে নিঃশক্ষে প্রবৃত্ত হইবে। গৃহবাসী পুরুষ এইরূপ **আচরণে** নির্ত্ত হইলে, ধর্ম, অর্থ ও কাম সিদ্ধি সহকারে উভয়লৌকিক মকলসমৃদ্ধি লাভ করেন।

ইতি বৰ্জ্জাবৰ্জ্জা নাম পঞ্চত্ৰিংশ অধ্যায়।

## ষট্তিংশ অধ্যায় ৷

পুত্র কহিলেন, জননী এইরপে অফুশাসন করিলে, যৌবনে পদার্পণপুর্কক শুভংবজনন্দন
সমাগ্বিধানে দারপরিগ্রহ করিয়া, পুত্র সকল সম্পোদন ও যজ্ঞ সকলের অফুঠান সহকারে সর্ক্রনাল পিতার আজাফুপালনে প্রবৃত্ত হইলেন। অনস্তর বহুকালপর্যবসানে চরম বয়সে উপনীত হইয়া, ঋতধ্বল ভাগ্যার সহিত বনগমন কামনা করিয়া, তাঁহাকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন। তথন মদালসা পুত্রের কামোপভোগনির্ত্তিবাসনায় তাঁহাকে এই শেষবাক্যে কহিলেন,
ৰৎস! গৃহী অভাবতই মমতামাত্রপরায়ণ। সেইজ্ল ছঃথের আম্পদীভূত হইয়া থাকে। অভএব
গৃহ ধর্মের অফুসরণপূর্কক রাজ্য করিতে করিতে, মধন তোমার প্রেম্বন্ধর বিরহ জনিত, অথবা শক্রক্ত ব্যাঘাতজনিত কিছা বিত্তবিনাশজনিত অসহ হঃথ উপস্থিত হইবে, তথন আমার প্রদন্ত এই
অসুরীয় হইতে নিছর্ষণ পূর্কক পত্রমধ্যে ক্লাক্রের সনিবেশিত শাসন পাঠ করিবে। এই বিলয়া
তিনি মণিময় অসুরীয় প্রদান ও গৃহস্থ ব্যক্তির উপযুক্ত আশীর্কাদ প্রেয়াগ করিলেন। অনস্তর কুবলয়ায় ও দেবী মদালসা পুত্রকে সেই রাজ্যদানপূর্কক তপশ্বরণ নিমিত্ত কাননে সমাগত হইলেন।

ইতি মদালসোপাথ্যান নাম ষট্তিংশ অধ্যায়।

### সপ্তত্তিংশ অধ্যায়।

ধর্দ্ধাত্মা অলর্ক স্থায়নার্গান্ত্র্সারী হইয়া, পুত্রনির্বিশেষে প্রজাগণের অন্তর্মান সহকারে পালন করিতে লাগিলেন। তাহারা স্ব স্ব কার্য্যান্ত্র্যানে প্রবৃত্ত হইল। তিনি হুইগণের দণ্ড ও শিইগণের পালন করত পরম প্রীতি লাভ এবং প্রধান প্রধান মক্ত সকল সম্পাদন করিলেন। তাঁহার ঔরদে পুত্র সকল সমুৎপন্ন হইল। তাঁহারা সকলেই মহাবল পরাক্রান্ত, ধর্ম্মাত্মা, মহান্ত্রা ও অসৎ পূথের একান্ত বিদ্বেষ্টা। তিনি আত্ম-জন-সহকারে ধর্ম্মের সহিত অর্থের ও অর্থের সহিত ধর্ম্মের পরিপালন এবং এই উভয়ের অবিরোধে বিষয়সন্ত্যোগে প্রবৃত্ত হইলেন। এই রূপে ধর্ম্ম্, অর্থান্ত কামের ঐকান্তিক চিত্তে অন্ত্যরণ পূর্ব্বক পৃথিবী পালন করিতে করিতে তাঁহার বহুবর্ষ একদিনের স্থায়, অতিবাহিত হইল। পরম প্রীতির আম্পাদ বিবিধ বিষয় সন্ত্রোগ করিয়াণ, তাঁহার বৈরাগ্য উপস্থিত এবং ধর্ম্ম ও অর্থ উপার্জ্জন করিয়াণ্ড, অলম্বৃদ্ধি সমাগত হইল না।

তাঁহার স্থবাছনামক যে প্রাতা বনবাসী হইয়াছিলেন, তিনি শ্রবণ করিলেন, অলক বিষয়স্থদভোগে মন্ত ও ইন্সিয়ের পর তন্ত্র হইয়া পড়িয়াছেন। এই কারণে তিনি তাঁহার তবজ্ঞানসম্ৎপাদনকামনায় বছকণ চিন্তা করিয়া, অবশেষে তাঁহার বিপক্ষের আশ্রয় লওয়াই শ্রেম্বর্ মনে করিলেন। তথন তিনি নিজে রাজ্যপ্রাথি জন্ত মহাবল-বলবাহন-সম্পন্ন কাশিরাজের বছবার শরণাপন্ন হইলেন। তদম্পারে কাশিপতি অলক্রের প্রতিকৃলে সৈক্তোদ্যোগ ক্রিয়া, এই বলিয়া তাঁহার নিকট দুত পাঠাইলেন, যে, তুমি স্থাছকে রাজ্য লাও।

चधर्चविर मनर्क डोहाट मच व ना हरेबा. कानिशवित मृत्रक श्रेत्रावस कितिलम, मनीत ্ৰপ্ৰজ আমার নিকট আদিরা, সোহার্দিসহকাবে রাজ্য বাজ্ঞা করন। নতবা আমি আক্রেমণ-ভরে অরমাত ভূমিও সম্প্রদান করিব না। গ্রীমান স্থবাত ব্যক্তা করিলেন না। কেন না ব্যক্তা ক্ষল্রিয়ের ধর্ম নছে। একমাত্র বীর্যাই তাহার ধর্ম বা অবলম্বন। অনস্তর কালিপতি সমস্ত সৈল্পে পরিবেটিত হইয়া. মহীপতি অলর্কের রাজ্য আক্রমণ করিবার জন্ম অভ্যাগত চইলেন এবং তাঁহার অন্তরদ্বপণের সহিত সম্যক রূপে মিলিত হইয়া, পরে তাহাদের অভতম ভৃত্যগণ সহালে স্মাক-রূপে আক্রমণ করিয়া, তাঁহাকে বশে আনয়ন এবং তদীয় রাষ্ট্রোধপুরঃসর সামস্ত সকলকে রিপীড়িত, হুর্গপাল ও আটবিকদিগকে ২শীক্ত এবং কাহাকে ধনদান দারা, কাহাকে ভেদ দারা, কারাকে সাম ঘারা আয়ত্ত করিলেন। এইরূপে প্রচাক্ত নিপীড়িত হওয়াতে, অনুর্ক চুর্কন ও ক্লীণকোষ হটয়া পড়িলেন এবং তদীয় পুরও বৈরিকর্ত্তক অবরুদ্ধ হটল। দিন দিন কোষক্ষর ও বৈবিক্ত সম্পীত্ন, এই উভয় কারণে তিনি অতিমাত্র বিষয় ও ব্যাকুলচিত্ত এবং যার পর নাই আর্ত্তভাবাপর হইলেন। ঐ সময়ে জননী মদালদা পূর্ব্বে যাহার কথা বলিরাছিলেন, সেই অনুবীয় তাঁহার মনে পড়িয়া গেল। তথনি তিনি স্নান করিয়া, গুচি হইয়া, স্বস্তিবাচন করিলের। পরে দেই পট্রপল্লিবদ্ধ শাসন নিক্ষ্বাপুর্বক অবলোকন এবং তাহাতে জননী অতি ম্পটাক্ষরে ধাচা লিখিয়াছিলেন, তাচা নির্বাচিত করিলেন। তাহাতে তাঁচার শরীর পুলক্তিও লোচনযুগল হর্বশে প্রফুল হইয়া উঠিল। উহাতে এইরূপ লিখিত ছিল, সর্বান্ত:করণে সঞ্চত্যাগ করিবে। যদি ত্যাগ করিতে না পার, তাহাহইলে, সাধুব সহিত তাহা করিবে। কেন না, পাধুসঙ্গই মহোরধ। পুনশ্চ, সর্বাস্ত:করণে কামও ভাগে করিবে। যদি ভাগে করিতে না পার, ভাগ इहेल, মোক্ষকামনার প্রতি তাহা করিবে। তাহাই তাহার ঔষধ।

সেই পট্টলিখিত মাতৃশাসন এইরপে বারম্বার বাচন করিয়া, কি করিলে, লোকের শ্রেমেন লাভ হইতে পারে, একমাত্র মুম্কাই সেই শ্রেম:প্রাপ্তির উপায় এবং সাধুসঙ্গ করিলেই সেই মুম্কা সাধিত হইতে পারে, ইহাই স্থির করত সাধুসঙ্গংঘটনচিস্তায় প্রবৃত্ত হইলেন এবং নির্ভিশ্ব আর্ত্তিভাবাপদ্দ হইয়া, সেই চিন্তাপ্রসঙ্গে মহাভাগ দ্বাত্রেয়ের সমীপে গমন করিলেন। অনভ্র তিনি পাপহীন, সঙ্গহীন, মহাস্ভাব দ্বাত্রেয়কে প্রণিপাত পূর্বক বিশেষরূপে পূলা করিয়া, ব্যাত্তারে বলিতে লাগিলেন, এফান্। আপনি শরণাগিগণের একমাত্র আশ্রেম বা রক্ষাকর্তা। আমার প্রতি প্রসন্ধ হউন। আমি বিষয়বাসনার বশবর্তী হওয়াতে, ত্থে একাত্ত অভিতৃত হইয়া উঠিয়াছ। আমার তথাপহরণ করন।

দত্তাতের কহিলেন, রাজন্! আমি অদাই তোমার ছংগাপহরণ করিব। একণে সভা বল, তোমার কিজ্ঞ ছংথ উপস্থিত হইয়াছে ?

ধীমান্ দত্তাতের এইপ্রকার কহিলে, রাজা ত্রিবিধ ছংগের স্থান এবং আজা, এই উত্র বিবরে চিস্তা করিতে লাগিলেন। বহুক্লণ বারস্থার বিশেষরূপে আজা বারা আজাবিচার করিরা, দেই উদারবৃদ্ধি ধীরস্থভাব নরপতি হাস্ত করিয়া কহিলেন, আমি ক্ষিত্ত নহি, জ্বলও নহি, জাকাশও নহি, জারিও নহি এবং তেজও নহি। কিন্তু আমি শারীর আজার করিরা, মুখকামনা করি। এই পঞ্চতাত্মক শরীরে রুখ ও অরুথ উভয়ের ন্নাতিরিক্ততা উপস্থিত হইরা থাকে। বিদি তাহাই হর; তাহাতে আমার ক্ষতিই বা কি? কেন না, আমি শরীর নহি; ভাহা হইতে মৃত্র অবস্থিত আছি। আমার ন্নাধিকা নাই। আমার নিয়তই প্রভূত সদ্ভাব সংঘটিত ইতৈছে। সুখ ও ছংখ একমাত্র মনেরই ধর্ম। আমি বধন সেই মন নহি, তথন আমার স্থাক নাই, ছংগও নাই। আমি অহন্ধার নহি, মন নহি এবং বৃদ্ধিও নহি; স্মৃতরাং আমার অন্তঃক্রণ-জনিত ছংগের সম্ভাবনাই বা কোণার? যেহেত্, আমি মন নহি, শরীরও সহি, সেই শরীর ও সন্ধিত হাইতেই আমি ভিন্ন প্রার্থ; সেইহেত্, সুখ বা ছংখ বনেই পাকুক, আরু দেহেই থাকুক,

ভারতে আমার ক্ষতি বৃদ্ধি কি ? এই দেহের অগজই রাজ্য কামনা করিতেছেন। এই দেহ ফদি পঞ্চত্তেরই সমষ্টি হয়, তাহা হইলে, পুণা প্রবৃত্তিতে আমার প্ররোজনই বা কি ? আমি ও আমার দেই অগ্রজ উভয়েই পরীর হইতে ভিন্ন। যাহার হন্তাদি কোন অঙ্গই নাই; মাংস বা অস্থি বা শিরাবিভাগও নাই, তাহার আবার হন্তী, অখ ও র্থাদিকোবে প্রয়োজন কি ? পুরুষর এই শবীরে বা ঐ সকলে কোনজপই সম্মানাই। এই কারণে আমার অরিও নাই, তঃখও নাই, স্থেও নাই, পুরও নাই, কোষও নাই, হন্তী ও অখাদি সৈত্যও নাই। আমার বেমন ঐ সকল মাই, আমার অগ্রজের অথবা অভ্য কাহারও তেমন ঐ সকল নাই। আকাশ যেমন একমাত্র হইলেও, ঘট, কুন্ত ও কমগুলু প্রভৃতি পাত্রভেদে বহুমাত্র বিলিয়া বোধ হয়, সেইরপ আত্মা এক হইলেও, ফ্বান্ত, কাশিপতি ও আমি ইত্যাদি শরীরভেদে বিবিধ দেহে অবস্থিত বিলিয়া আমান্ত মনে ছইনা থাকে।

ইতি আত্মবিবেক নাম সপ্তত্তিংশ অধ্যার।

### অফ ত্রিংশ অধ্যায়।

পুত্র কহিলেন, অনন্তর রাজা বি প্র দতাত্ত্রেরকে প্রণিপাত করিয়া, বিনয়াবনত বাক্যে নিবেদন করিলেন, ব্রহ্মন্ । স্মাগ্দৃষ্টির উদর হওয়াতে, আমার আর ছংখ কিছুই নাই। অসমদর্শিরাই সর্বাদা অফ্থসাগরে মগ্ন হইয়া থাকে। পুক্ষের বৃদ্ধি যে যে বিষয়ে সমাসক্ত হয়, সেই সেই বিষয় হইতেও ছংখরাশি সংগ্রহ করিয়া, তাহাকে প্রদান করে। গৃহকুকুট মার্জ্জার কর্ত্ক জক্ষিত হইলে, লোকের যাদৃশ ছংখ হয়, মমতাহীন মৃষিক বা কলবিক জক্ষিত হইলে, তাদৃশ ছংখ সমুভূত হয় না। যেহেতু আমি প্রকৃতির অতীত, সেইহেতু আমি সুখীও নহি, ছংখীও নহি। ভূতগণের ছারা যে ভূতাভিত্তব, তাহাই সুধ ছ থের আম্পদ হইয়া থাকে।

দ্বাতের কহিলেন, নরব্যাত্র! তুমি এই যাহা বলিলে, তাহাই ঠিক। মমতাই ছঃথের মূল, আনার মমতাশৃক্ত হওয়াই সুথের হেতু। আনার প্রশ্লমাতেই তোমার ঈদৃশ উৎকৃষ্ট জ্ঞান জিল-য়াছে, যাছার প্রভাবে তোমার মমত্ব্দি, শাল্লিত্বার ভায় প্রক্রিপ্ত হইরা গেল। হৃদ্যস্থ অজ্ঞান মহাপাদপ অংকপ । অহকাররপ অকুর হইতে উচার উদ্ভব হইরাছে; মমতা উহার হর, গৃহ ও ক্ষেত্র উচ্চ শাখা, পুত্র ও কল্তাদি পল্লব, ধন ও ধাস্ত মহাপত্র, পাপ ও পুণা প্রধান পুজা, সুথ ও ছঃপ মহাকল এবং লোকে মোহাচ্ছন হইয়া, যে বিবিধ সম্বন্ধ বন্ধন করে, ভাহাই উহার জলদেক। ঐ তরু বত্কালে বর্দ্ধিত হইয়াছে এবং মুক্তিমার্গ রোধ করিরাছে। বিবিধ করণেছা-রূপ ভৃত্তমালা উহাতে বিচরণ করিতেছে। যাহারা ভ্রান্তিজ্ঞান-স্থের পরতন্ত্র এবং সংদাররপ-পথশ্রাম্ভ হইরা, সেই তরুর ছারা আশ্রে করে, তাহাদের মুক্তিলাভের সম্ভাবনা নাই। বাহারা বিদ্যারণ কুঠারকে সাধুসকরণ পাষাণ ছারা স্থাণিত করিয়া, তদ্ধারা মমতাতরু ছেদন করে, ভাহারাই সেই পথে গমন করিয়া, অক্ষরণ কাননে উপনীত হয়। ঐ কানন অতীব শীতন; সর্কাধারজোহীন ও কণ্টকবিহীন। উহাতে উপনীত হইলে, বৃত্তিবর্জ্জিত হইয়া, প্রম**ঞ্জাও** নিবুতি, উভয়ই প্রাপ্ত হওয়া বায়। রাজন্। তুমি বা আমি, আমরা কেহই ভূতে জিরময় অথবা স্থুল ভাবাপল নহি। আবার, আমরা তলাতেও নহি এবং মনোমরও নহি। রাজেন্দ্র আমাদের উভবের মধ্যে কাহাকেট বা প্রকৃতিময় দেখিতেছি ? বেহেতু, ক্লেএজ প্রকৃতির অতীত এবং পঞ্জুতের সমবায়ে নির্মিত পদার্থনাতেই ঋণময় অর্থাৎ প্রেকৃতির বিষয়ীভূত। মশক ও উত্ধর; ইবিকাও মূল এবং মংস্ত ও জল, ইংারা এক হইবেও বেমন পৃথগ্ভৃত, কেত্র ও আয়ারও তর্জ-প্তা লক্ষিত হইয়া থাকে।

জ্বাক কহিলেন, ভগবন্! আপনার প্রাণাদে আমার ঈদৃশ উৎক্ষ জ্ঞান আবিভূতি ইইল।
ইহার দারা আমার প্রধান ও চিছ্জি বিবেক সমুগ্রবিত হইরাছে। কিন্তু মন বিবরে আক্রান্ত
হওরাতে, হৈর্যালাভে সমর্থ ইইতেছে না এবং প্রকৃতির বন্ধন ইইতে কিরুপে মুক্ত হইব, তাহাও
জানিতে পারিতেছি না। কি করিলে, আর পুনর্জন্ম ইইতে পারে না; কি উপায়েই বা নিগ্রণ্ডা লাভ ইইরা থাকে; কিরুপ অফুঠান করিলেই বা শাখতত্বরূপ ব্রহ্মে একবারেই মিলিত
হইতে পারা যায়, তাদৃশ যোগ সম্যগ্রূপে আমাকে উপদেশ করুন। আপনি পরম্ঞানী।
আমিও প্রণতি সহকারে আপনার নিকট স্বিনরে এ বিষয়ে প্রার্থনা করিতেছি। দেখুন, আপনার ভার সাধুর সংস্ক্ ত্বভাবতই মুক্র্যাল্রের উপকারী।

ইতি প্রশ্ন নাম অইত্রিংশ অধ্যায়।

### উনচত্বারিংশ অধ্যায়।

দ্বাত্রের কহিলেন, যোগমার্গে প্রবৃত্ত হইরা, জ্ঞানগান্ত স্বকারে অজ্ঞানের সহিত যে বিরোগ সংঘটিত হর, তাহারই নাম মুক্তি। আর, প্রাকৃতিক গুণ সকলের সহিত কোনরূপে ঐক্যুস্থানন না, করাই সাক্ষাৎ ব্রহ্মের সহিত একতা, বলিয়া থাকে। রাজন্ যোগ হইতে মুক্তিলাভ হয়, সম্যুক্জান হইতে যোগ সমুদ্রবিত হয়, ছংথ হইতে সম্যুক্জানের আবির্ভাব হর এবং চিত্ত মনতায় আসক্ত হইলেই, ছংথের উৎপত্তি হইয়া থাকে। এই কারণে মুক্তিকাম পুরুষ সর্কপ্রযুদ্ধে বিষয়াসক্তির পরিহার হইলেই, আমার, এই জ্ঞানেরও পরিহার হইয়া থাকে। মমতাহীন হইলেই, স্বসংঘটন হয় এবং বৈরাগ্যের উলম হইলেই, সংসারের ক্ষণভস্বতা ও অসারতা প্রভৃতি দোষ সকল স্ক্রেই বৃদ্ধিতে পারা যায়। জ্ঞান হইতে যেমন বৈরাগ্যের জন্ম হয়, জ্ঞানও তেমনি বৈরাগ্যুন্ক।

তাহারই নাম গৃহ, যেথানে বাদ করা যায়; তাহারই নাম ভোজা, যাহা বারা প্রাণধারণ হয়; শেইরূপ, তাহারই নাম জ্ঞান, যাহা বারা মৃতিলাভ হয়; ইহার অন্তথা ইলেই, অজ্ঞান, বিলিয়া থাকে। রাজন্ ! পাপ ও পুণ্যের উপভোগ ইলে, নিতা কর্ত্ব্য সকলের নিকাম অষ্ঠানা করিলে এবং প্র্রাজ্জিত কর্মের ক্ষয় ইলে ও অপ্র্র্ব কর্মের সঞ্চয় করিলে, বার্বার শরীরের আরু বন্ধন সংঘটিত হয় না। রাজন্ ! এই বে তোমাকে বলিলাম, ইহারই নাম যোগু। এই বোগ প্রাপ্ত ইলে, যোগী ব্যক্তিন নিত্যক্ষণ এক ভিন্ন অন্ত কাহাকে আপ্রয় করেন না।

প্রথমে <u>আ্রা</u>ছার। আ<u>্রাকে</u> জয় করিবে। কেন না, এই আ্রা যোগিগণের **ছক্ষের**। ইহার জয়ে যতু করিবে। ভাহার উপায় বলিতেছি, শ্রবণ কর।

প্রাণায়াম দ্বারা দোষ সকল, ধারণা দ্বারা পাপ সকল, প্রত্যাহার দ্বারা বিষয় সকল ও ধ্যান

থেমন দগ্ধ করিলে, পর্বতজ্ঞাত ধাতু সকলের দোষ নির।ক্ত হয়, সেইরূপ প্রাণবায়ু আর করিলে, ইন্দ্রিজনত দোষ সকল দগ্ধ হইয়া থাকে।

বোগবিৎ ব্যক্তি প্রথমে প্রাণায়ামসাধনে প্রবৃত্ত হইবেন। প্রাণ ও অপান এই উভয় বায়ুর নিরোধকেই প্রাণায়ায় বলিয়া থাকে। প্রাণায়ায় তিবিধ; লঘু, মধ্য ও উত্তরীয়। অলক ! ইহার প্রমাণ বলিভেছি, প্রবণ কর। লঘু প্রাণায়ায় ঘাদশয়াত্রাবিশিষ্ট; মধ্যম প্রাণায়ায় ভাহার বিশুণ এবং উত্তরীয় প্রাণায়ায় ভাহার তিগুণ, এইরূপ ক্থিত হইরাছে।

নিমেৰ ও উল্লেখ এই উভবের বে সময়, তাহাই মাতার কান। প্রথম প্রাণারাম যারা বেদ

জন করিবে; বিতীয় বারা বেপণ্, তৃতীয় প্রাণানাম বারা বিবাদ ইত্যাদি দোব স্কল বথাক্রমে জন করিতে হইবে। সিংহ, শার্দ্দ ও হত্তী সকল যেরপ সেবা বারা মৃহ্ভাব অবলম্বন করে, প্রাণ্ড সেইরূপ পরিচ্য্যাসহকারে যোগির বনীভূত হইরা থাকে।

হতিপক বেমন বণীভূত মন্ত গজকেও ইচ্ছাফুদারে চালনা করে; সেইরূপ প্রাণ সাধিত হইলে, যোগী অচ্চন্দে তাহা ঘারা আপনার মনোমত কার্য্য করাইয়া লইতে পারেম। দিংহ সাধিত হইলে, যেমন মৃগদিগকে বিনাশ করে, মহ্যাকে নহে; তর্ব বায়ু দিল হইলে, কিছিষেরই ক্ষয় হয়, শ্রীরের নহে। সেইজন্ত যোগী পুরুষ দ্বিশেষ উদ্যম সহকারে প্রাণায়ামপ্রায়ণ হইবেন।

অধুনা, প্রাণান্থানের অরন্থাচতুইর বর্ণন করিতেছি, শ্রবণ কর। উহার সাধনা করিতে পারিলে, মুক্তিকলণান্ত হইরা থাকে। রাজন্। ধৃতি, প্রাপ্তি, সন্থিৎ ও প্রসাদ, এই চারিটি প্রাণান্ধানের অবস্থা। একণে ইহাদের প্রত্যেকের স্বর্নি অমুক্রনে বলিতেছি, শ্রবণ কর।

যে অবস্থায় ছাই ও অনুষ্ঠ কর্ম সকলের ফল সংক্ষেপে স্কাটিত হয় এবং তৎসহকারে **অস্তঃক**য়-ণের মলিনতাপরিহার হইয়া থাকে, তাহার নাম ধ্বস্তি।

যে অবস্থার যোগী পুরুষ লোভ ও মোহ হইতে সমূখিত ঐহিক ও পারত্রিক কামসমূহকে সর্বাদা শ্বং নিক্ষ করিয়া থাকেন, তাহার নাম প্রাপ্তি।

রে অবস্থার যোগী জ্ঞানের আধিকাবশত: চক্র, ত্র্যা, গ্রহ ও নক্ষত্রগণের সমান প্রভাব লাভ ক্রিরা, ভূত ও ভবিষাৎ এবং অদৃশ্র ও অতিদ্রস্থ বিষয় অবগত হইরা থাকেন, তাহার নাম সন্থিৎ। আমার বাহা ছারা যোগীর মন, পঞ্চ বায়ু, ইন্দ্রির ও ইন্দ্রিরের বিষয় সমুদ্য প্রসাদ অর্থাৎ শুদ্ধি লাভ ক্রিয়া থাকে, তাহার নাম প্রসাদ।

রাজন্! প্রাণায়ামের লক্ষণ এবং যোগচর্যাতে প্রবৃত্ত হইলে, তাহার বেরপ আসন বিহিত, তৎসমন্ত বিশিতেছি, প্রবণ কর। প্রাসেন, অর্জাসন, স্বন্তিকাসন, ইত্যাদি আসন আগ্রায় করিরা, মনে মনে প্রণবজ্ঞপসহকারে যোগচর্যায় প্রবৃত্ত হইলে। সমভাবে সমাসনে আসীন হইরা, চরণছয় সংস্কৃত, বদন সংবৃত্ত ও উর্লয় সম্যুগ্রূপে অগ্রভাগে বিষ্টিন করিয়া, প্রয়ত্তিতে এরপে অবছিতি করিবে, পাঁণিযুগল বারা যেন লিস্ব্রণ স্পৃষ্ট না হয়। তৎকালে মন্তক কিঞ্জিৎ উরামিত করিতে হইবে। দক্ত বারা দন্তদকলেরও যেন সংস্পর্শ না ঘটে। একমাত্র স্বনীয় নাসিকার স্বশ্রভাগ অব্লোকন করিবে। তন্যতীত, কোন দিকেই যেন দৃষ্টিপাত না হয়। তদবস্থায় রজোঞ্জ বারা তামসিক বৃত্তির ও সত্ত্বণ বারা রাজস বৃত্তির সম্বরণপূর্ব্বক, একমাত্র নির্মাণ তত্ত্বে স্ববৃত্তি করিয়া, বোগবিৎ প্রক্র যোগাভাগেস স্ক্রিতিই হইবেন।

সমবর ক্রমে ইন্সিমনিগকে ইন্সিরের বিষয় হইতে মন ও প্রাণাদির সহিত নিগৃহীত করিয়া, প্রত্যাহারে প্রবৃত্ত হইবে। কচ্ছপ যেমন আপনার সম্দয় অঙ্গ প্রত্যাহাত করে, সেইরূপে কাম সকল প্রত্যাহরণ করিয়া, একমাত্র আত্মাতেই সর্বদা আসক্ত ও একাগ্র হইয়া, অবস্থিতি করিলে, আত্মাকে আত্মা হারা দেখিতে পাওয়া যায়। জ্ঞানবান যোগী কণ্ঠ হইতে নাভি পর্যন্ত বাহু ও আভ্যন্তর শৌচ নিশাদ্নপুর্বক দেহ পূর্ণ করিয়া, প্রত্যাহার অভ্যাস করিবেন।

আজা সংশত করিরা, বোগসাধনে সংসক হইলে, যোগির সমূদয় দোষ বিনষ্ট হয়; নিরতি-শর শাস্তি উপস্থিত হয়; প্রাকৃত গুণ সমূদায় ও পরব্রু ইহাদের পরস্পর পৃথক্রপে দুর্শন হর এবং ব্যোমাদি প্রমাণুও সর্ক্পাপবিমৃক্ত শুদ্ধস্বরূপ আজাকেও তিনি প্রত্যক্ষ অবলোকন করেন।

এইরূপে বোগী পুরুষ আহারসংব্যস্কলারে প্রাণ রামপ্রায়ণ ইইরা, ধীরে ধীরে বোগভূমি জর করিয়া, অকীর গৃহের ফ্রার ভাষাতে আরোহণ করিবেন। এইরূপে ভূমি জয় করিতে না পারিলে, তল্বারা কাম কোধালি লোষ সম্লয়, ব্যাধি সমস্ত ও মোই বন্ধিত হইয়া থাকে। সেইলফ্ট ভূমি জয় না করিয়া, তাহাতে আরোহণ করিবেন না। বাহা হারা পঞ্চ প্রাণ আয়ত বা সংবত হয়, ভাহার নাম প্রাণায়াম। বাহা হারা মনকে ধারণ অর্থাং অপদে প্রতিষ্ঠিত করিয়া, আল্বাদর্শন

করা বার, তাহার নাম ধারণা। যতাত্মা পুরুষণণ ইন্তির্দিগকে বে অবস্থার বন্ধ বিষয় ছইতে প্রত্যাহ্বত করিছা থাকেন, তাহার নাম প্রত্যাহ্বার। যোগপরারণ পরম্বিগণ ও বিষয়ে বে উপায় নির্দেশ করিয়াছেন, তাহার অহুসরণ করিলে, বোগির দেহে ব্যাধি প্রভৃতি দোর সমুদ্র প্রাকৃতি হইতে পারে না। জলার্থী ব্যক্তিরা যেমন যন্ত্র-নালাদির সাহায্যে বীরে ধীরে জল পান করে, বোগী দেইরপ প্রমন্তর্কারে বায়ুপান করিবেন।

প্রথম নাজিতে, পরে জ্বারে, অনস্তর বক্ষন্থলে, তংপরে বথাক্রমে কঠে, মুখে, নাসিকার অগ্রভাবের, নেত্রে, ক্রমধ্যে, মন্তকে এবং সর্বশোষে সেই পরাৎপর ব্রহ্মে, এইরপ দশবিধ ধারণা উলিধিত ইইরাছে। এই দশবিধ ধারণা প্রাপ্ত ইইলে, সাক্ষাং ব্রহ্মস্বরূপতা লাভ করিতে পারা বার। তাহার আর মৃত্যু হয় না, জ্বরা হয় না, শ্রম, রুম ও অবসাদও দ্র হইরা বার। তথন সে ত্রীর পদে অবস্থিতি করে; ইহারই নাম যোগভূমি। এই যোগভূমি সপ্তবিধ; ইহাতে আলোহণ করিলে. ব্রহ্মপদ প্রাপ্তি হয়, সন্দেহ নাই। ক্ষ্মা, শ্রান্তি ও ব্যাক্লচিত্ততা এই সকল উপত্রব্ব সংযে যোগী কথন আদরসহকারে যোগচর্য্যায় প্রবৃত্ত ইইবেন না। অতিশীত বা গ্রীম্নকালেও ধ্যানতংপর ইইরা, যোগ সাধন করিবেন না।

অধি ও অল সমীপে, কোলাহলপূর্ণ প্রদেশে, জীর্ণ গোঠে, চতুপাথে, ভছপত্রনিচনে, নদীতীরে, সরীস্পপূর্ণ শাশানে, যেথানে ভয়ের সন্তাবনা আছে, তাদৃশ স্থানে, কুপতীরে, অথবা
চৈত্য ও বল্মীক নিচয়েও যোগাভ্যাস করিবেন না। সার্বিক ভাবের সম্যক্ রূপ সিদ্ধি বা প্রাক্ত্রন না হইলে, দেশ কাল বর্জন করিবে। কেন না, অসভের কথন যোগ সাধন হর না। সেইলক্ত ভাহা পরিবর্জন করিবে। স্থানগুণে ও কালগুণে মনের ভাবান্তর ও তৎসহকারে বিভঙ্কি ও দৃঢ়তা সম্পন্ন হইয়া থাকে। আবার, মন যথন সম্বগুণের উদ্রেক্তবশতঃ ব্রহ্মমর হইরা থাকে, তথল আর দেশকালবিচারণার প্রয়োজন কি ? যে বাজি মৃঢ়তাবশতঃ উনিধিত দেশকাল-দৃষ্টিশরিহার-প্রকি যোগাভ্যানে প্রবৃত্ত হয়, তাহার যে সকল দোব উৎপন্ন হইয়া, যোগসাধনের ব্যাঘাত করে, বলিতেছি, প্রবণ করন। সে বাজি বধির হয়, জড় হয়, বোবা হয়, শ্বরণশ্রিশ্যু হয়, আদ্ধ হয় এবং তাহার সদ্য জর হইয়া থাকে।

যদি প্রমাদবশত: এই সকল দোষের উৎপত্তি হর, তাহাছইলে, ইহাদের শান্তি জন্ত যেক্সপে চিকিৎসা করিতে হইবে, তাহাও বলিতেছি, শ্রবণ করন। যবাগুকে অভিমাত্র উষ্ণ করিরা, রিশ্ধ ইইলে, ভোজন করিয়া, বাতগুলা প্রশান্তির জন্ত উদরে ধারণ করিবে। এইরূপে যে যে দেহে রোগ হইবে, সেই সেই দেহেই তাহার উপকারিণী ধারণা ধাবণ করিবে। উষ্ণ ইইলে শীতধারণা ও শীতল হইলে উষ্ণধারণার অন্পরণ করিবে। মৃতিশক্তির লোপ হইলে, মন্তকে কীলক রাখিয়া, কার্চ ঘারা সেই কার্চ তাড়িত করিবে। তাহাহইলে, তৎক্ষণাৎ মৃতিশক্তির আবির্ভাব হইবে। বাক্শক্তির লোপ হইলে, বাক্যধারণা করিবে। শ্রবণশক্তির লোপ হইলে, শ্রবণিব্রিষারণা করিবে এবং মন চঞ্চল হইলে, তাহাতে সেই প্রলয়কালীন দ্বির মহাশেল ধারণা করিবে। মৃতিশক্তির লোপ হইলে, আকাশ, পৃথিবী, বায়ু ও অগ্রির ধারণা করিবে। আমান্তব সন্থ হইতে সমৃদ্ধত এই সকল বিল্লের এইরূপ চিকিৎসাই বিধিবিহিত। অমান্তব সন্ধ ঘদি ঘোগির অন্তরে প্রহেশ করে, তাহাহকৈ, বায়ু ও অগ্রি ধারণা ঘারাই তাহাকে দম্ম করিতে হইবে। রাজন্! বোগবিৎ ব্যক্তির এইরূপে সর্বান্তংকরণে শরীর রক্ষা করা কর্বব্য। যেহেত্ব, এই শরীরই ধর্মা, স্বর্ধ, কাম ও মোক্ষ সাধনের মল।

বিশ্বর ও প্রবৃত্তিত্বরূপপরিকীর্তান, এই দ্বিধি ঘটনার যোগীর বিজ্ঞান বিশুপ্ত হইরা থাকে। এইলভ প্রবৃত্তি সকল গোপন করিবে। যোগপ্রবৃত্তির এই কয়টা প্রথম চিল্। মধা,—রোগশৃস্কতা, শচকলভা, আনিষ্ঠুরতা, শরীরে স্থান্ধিসঞ্চার, মলম্ত্রের অরতা, কান্তি, প্রসন্মতা, ব্রের মাধুর্য্য বামিইভা। লোকে অনুসাগসহকারে প্রোক্ষে গুণকীর্ত্তন করে এবং কোন প্রাণীই ভীত হব,না; এরপ অবস্থাই দিছির উৎক্ট লক্ষণ। অতি প্রচণ্ড শীত ও গ্রীমাদি দারাও বাহার বাধা জন্মে না এবং বে ব্যক্তি অক্তান্ত হইতে ভয় পার না, তাহারই দিছি উপস্থিত হইরা থাকে।

ইতি যোগাধ্যাত্ব নাম একোনচম্বারিংশ অধ্যাত্ব।

#### চত্বারিংশ অধ্যায়।

দ্তাত্রের কহিলেন, আয়া দৃষ্ট হইলে, ষোণির বে সকল উপদর্গ প্রাত্ত্ত হর, তৎসমন্ত্রণকেশে কীর্ত্তন করিছের্ত হর, তৎসমন্ত্রণ করিব করিছের করিছের। করিব কাম্যক্রিরা ও মন্ত্রোচিত বিবিং ভোগ্য বিষয় ভোগে বোণীর অভিনাষ ধাবিত হয়। স্ত্রী, দানকল, বিদ্যা, মায়া, ধন, অর্গ্রেক্স, বিবিধ রদায়ন, যজা, জল ও অফিতে প্রবেশ করণ, সম্দায় প্রাক্ত ও সমুদ্র দালকল, সমুদায় নির্ম, ইত্যাদিতেও তাহাঁর কামনার সঞ্গর হইরা থাকে।

মন এইরপে অভিলাবপরবশ বা কামনার আয়ত্ত হইলে, যোগী যত্নপূর্বক ভাহাকে তত্তং বিষয় হইতে নিব্তি করিবেন। যে যোগী মনকে ঐরপে নিবৃত্ত করিয়া, এক্ষদলী করিতে পারেন, ভাহাঁর উপদর্গ দকল পরাহত হইয়া থাকে।

এই সকল উপদর্গের জয় হইলে, পুনরার সাত্তিক, রাজসিক ও তামসিক ভেদে অভাত উপদর্গ সকল প্রাত্ত্ত হইলা, বোগীকে আয়ত করিবার চেষ্টা করিয়া থাকে। তল্মধ্যে প্রাতিদ, প্রাবণ, দৈব, ভ্রম, আবর্ত্ত, এই পাঁচটা উপদর্গ যোগবিদ্রের জক্ত নিতান্ত উৎকটরণে প্রাত্ত্ত হয়। যাহা মারা সম্পার বেদার্থ, যাবতীয় কাব্যশালার্থ এবং সম্পার বিদ্যা ও শিল্প যোগীর হৃদরে প্রভিভাত হয়, তাহার নাম প্রাতিভ। যাহার দারা অথিল শন্ধার্থ পরিজ্ঞাত এবং সহল্র মধ্য বোলন হইতেও শন্ধ প্রভাত হয়। থাকে, তাহার নাম প্রাবণ। যাহার প্রভাবে যোগী সাক্ষাং দেবতার ভাগ হইয়া, সম্পার বিশ্ব দর্শন করিতে সমর্থ হন, পণ্ডিতেরা তাহাকে দৈব বিলয়া নির্দেশ করিয়াছেন। যাহার প্রভাবে যোগীর মন সমন্ত-আচার-ভ্রষ্ট ও দোবযুক্ত হইয়া, শৃর্ম্ব প্রথমণ করে, তাহার নাম ভ্রম। আর, যে অবস্থায় জ্ঞানাবর্ত্ত, জ্লাবর্ত্তের ভ্রায়, আরুল হইয়া, মন্কে বিনষ্ট করে, তাহার নাম ভ্রম। আর, যে অবস্থায় জ্ঞানাবর্ত্ত, জ্লাবর্তের ভ্রায়, আরুল হইয়া, মন্কে বিনষ্ট করে, তাহার নাম ভাবর্তনামক উপদর্গ।

সমুদায় দেববোনি অর্থাৎ যোগী সম্প্রদায় এই সকল মহাঘোর উপসর্গবলে যোগন্তই হইয়, পুন: পুন: এই সংসারচক্রে আবর্ত্তন করিয়া থাকেন। সেইজন্ত যোগী পুরুষ মনোময় শুরু কর্ষে সর্প্রভোভাবে আবৃত হইয়া, চিত্তকে পরব্রজেই একমাত্র নির্ভর করিয়া, তাহাঁরই চিস্তা করিবেন।

যোগী সর্কাশা যোগযুক্ত হইয়া, ইন্দ্রিজয় ও লঘু আহার সহকারে, ভ্রাদি সপ্তবিধ ক্ষা ধারণা মন্তকে ধারণ করিবেন। তিনি ধরিত্রী ধারণ করিলে, তদীয় মুখ লাভে সমর্থ হইবেন। তিনি আয়াকে ধরিত্রী ভাবিবেন। তাহাহইলে, সেই ধরিত্রীর বন্ধনচ্যত হইবেন। সেইরূপে, সলিকে ক্ষা রস, তেজে রূপ, বাযুতে স্পর্শ ও আকাশে শব্দ, ধারণা করিয়া, ত্যাগ করিবেন। মন বারা সর্ব্রন্থতর মনে আবিষ্ট হইলে, মানসী ধারণা ধারণ করিয়া, ক্ষা মন রূপে সমুৎপল্ল হন। যোগবিৎ পূরুষ এইরূপে সমুদায় ভ্তের বৃদ্ধিতে আবিষ্ট হইয়া, স্ক্ষাবৃদ্ধি করেপ প্রহণ করিয়া তাহা ত্যাগ করেন। অলক। বে যোগবিৎ পূরুষ উল্লিখিত স্থাবিধ ক্ষা হার সমাগ্রূপে পরিজ্ঞাত হইয়া, পরিজ্ঞাগ করেন, তাহার আর পুনর্জন্ম হয় না। আয়বান পুরুষ উল্লিখিত সপ্তবিধ ধারণার ক্ষা বারষার অবলোকন করিয়া, বারষার সিদ্ধিত্যাগ করিয়া যাইবেন। কেন না, রাজন্। তিনি যে বে ভ্তে অন্ব্রাগবদ্ধ হন, সেই সেই ভ্তেই সমাসক্ত হইয়া, বিনষ্ট হইয়া থাকেন। সেইবার্গ, পরস্পর সংস্ক্ত ক্ষা ভ্ত সক্লকে বিদিত হইয়া, যে দেহী ত্যাগ করিতে পারে, তাহার পর্য প্র

প্রাপ্তি হইর। থাকে। রাজন্ । এই সপ্ত স্ক্র স্কানপূর্বক ভ্রাদিতে আসক্তি ভাগি করিছে, পারিলেই, সন্তাৰজ্ঞ পুরুবের মুক্তিসংঘটন হর। গ্রাদিতে ভাষার সমাসক্তি হইলেই, বিনাশ হর্রা থাকে। তাহাকে নিশ্চরই পুনরার জন্মগ্রহণ করিতে হয়।

্ যোগী এই স্পুৰিধ ধারণা অতিক্রম করিলে, ইচ্ছাসুসারে তত্তৎ হল্ম ভূতে দর প্রাপ্ত হন এবং দেব, অমুর, গন্ধর্ম, উরগ ও রাক্ষসগণের দেহে লীন চইরা থাকেন। কিন্তু কুত্রাপি সংস্কু হন না। অবধিক কি, অণিমা, লঘিমা, মহিমা, প্রাপ্তি, প্রাকাম্যত্ত, ঈশিত্ব, বশিত্ব, কামাবসায়িত্ত এই অষ্টবিধ নির্বাণস্চক এখরিক গুণও তিনি অধিকার কবেন। বে অবস্থায় স্কল ছইতেও অতিমাত্র হল্প হওয়া যাইতে পারে, তাহার নাম অণিমা। যাহা দারা ক্ষিপ্রকারিতা বা শীঘকারি-তার আবিভাব হয়, তাহার নাম শ্লিমা। ধাহা দারা অথিল সংসারের পূজনীয় হওয়া যাইতে পারে, তাহার নাম মহিমা। যাহা ছারা কিছুই অপ্রাপ্য হয় না বা থাকে না, তাহার নাম প্রাধি। যাহা দারা সর্ববাাপী হওয়া যাইতে পারে, তাহার নাম প্রাকাম্য । যাহা দারা সকলের ঈশ্বর হওয়া যাইতে পারে, তাহার নাম ঈশিত। যাহা বারা সকলকেই বশে রাথা যাইতে পারে, তাহার নাম বশিত। ইহাই যোগির সপ্তম গুণ। আর যাহা দারা যেখানে বা যেরূপ ইচ্ছা. সেইখানেই ধাকা বা দেইরপই করা যাইতে পারে, তাহার নাম কামাবদায়িতা। ফলত: যোগী পুক্র এই অইবিধ গুণের সাহায্যে সাকাৎ ঈশ্বরের ভাষ, কার্য্য করিতে পারেন। এই সক্ষা গুণের আবি-র্ভাব ছইলেই, বুঝিতে ছইবে, যোগির মুক্তির আর বিলম্ব নাই। তাঁহার নির্বাণ শান্তিও উপ্তিত हरेंबाएह । ठार्टांत आत समाय हरेंदर ना, मृजाय हरेंदर ना, क्षाय हरेंदर ना, त्रिक हरेंदर ना; अन्न কোনরপ পরিণাম বা বিক্লতিও হইবে না; তিনি আর ভুরাদি ভূতবর্গ হইতেও ছেদ. ভেদ, ক্লেদ, দাহ বা ওছতা প্রাপ্ত হইবেন না। রূপ, রুদ ও গদ্ধাদিও আর তাহাঁকে আয়ত বা বশীরত করিতে পারিবে না। তাহাঁর আবার শব্দাদি বিষয়সম্পর্কের লেখমাত্র থাকিবে না। তিনি আর তাহার ভোগও ক্রিবেন না। তাহাদের সহিত আর তাঁহার কোনপ্রকার সংস্তবও থাকিবে না। তিনি এইরপে জন্ম, জরা, মৃত্যু, ভাব, অভাব, স্থুখ, গু:খ, সকলেরই অধিকারবহিভুতি হইবেন। রাজন। বেমন কনক-বওকে, অপদ্রব্যের ভাষা, অগ্নিতে দগ্ধ করিবা, দোষশূত করিলে, বিতীয় কনক-ধণ্ডের সহিত তাহার যোগ হইরা যায়, কোনজপে আর পার্থক্য থাকে না, সেইজপ যোগজপ আয়ি ছারা রাগ দ্বোদি দোষ সমস্ত দগ্ধ হইলে. যোগীও এক্ষের সহিত একবারেই মি**লিত হন। আর ভাইাকে** পুণক ভাবে থাকিতে হয় না। যেমন অগ্নিতে অগ্নি নিকেপ করিলে, তাহার সমানত প্রাপ্তি হয় এবং তৎসহকারে তদাখা ও তন্ময় হওয়াতে, আন তাহাকে সেই অগ্নি হইতে পূথক ৰলিয়া ব্নিতে পারা যায় না, সেইরপ দোষসমূহ দগ্ধ হইলে, অন্দের সহিত যখন সংমিলিত হন, তথন যোগীকে আহার কথন পুথক ভাব ভোগ করিতে হয় না। রাজন । জল যেমন জলে নিকিপ্ত হইলে, একতা প্রাপ্ত হয়, দেইরূপ যোগীর মাঝা পরমাঝায় সাম্যলাভ করিয়া থাকে।

ইজি যোগসিদ্ধি নাম চতারিংশ অধ্যায়।

#### একচতারিংশ অধ্যায়।

আনুর্ক কহিলেন, ভগবন্! যোগীরা কিরূপ আচারপদ্ধতির অন্থ্যরণ করিবেন এবং বেরূপে ব্রুমবর্থের অন্থ্যরী হইলে, অব্যুদ্ধ হইতে না পারেন, তাহা যথায়থ প্রুণ করিতে অভিগায় অন্নিয়হিছ।

ৰভাত্ৰের কহিলেন, মহারাজ ! মান ও জপমান এই হুইটা লোকমাত্রেরই প্রাপ্তি ও উদ্বেশ্ব হেতৃ। ইহার। উভরে যোগিগণের নিকট বিপরীতার্থ হইলেই, তাঁহাদের সিদ্ধিনাধন করিছ থাকে। জুর্থাৎ মান ও অশুমান ইহাদিগকে বিষ ও অমৃত বলিয়া থাকে। ভুলুখো অপমান জুমুত ও মান বিষ। যোগী এইরূপ ব্রিভে পারিলেই, সিদ্ধিলাভে সমর্থ হন।

বোদী ভালরণ না দেখিয়া, পদক্ষেপ করিবেন না; বস্ত্র দারা পবিত্র না করিয়া, জলপান করিবেন না; সর্বাদা সভ্যপৃত বাক্য প্রয়োগ ও বৃদ্ধি সহারে ভালরপে বিচার করির চিত্রা করিবেন। সহসা কোন কার্যা করিবেন না। আতিথ্য, প্রাদ্ধ, যজ্ঞ, যাত্রা ও মহোৎস্বে কথন কোথাও ঘাইবেন না। সিদ্ধির জ্ঞু মহাজনেরও আপ্রয় লইবেন না। সৃহিদিগের গৃহ যথন ধ্মশৃত্র ও অগ্নিশৃত্য হইবে এবং যথন গৃহস্তিত ব্যক্তিগণ সকলেই ভোজন করিয়া, নিশ্চিত্ত হইয়াছেন, দেখিবেন, তথনই যোগবিৎ ব্যক্তি ভিকা করিতে ঘাইবেন। লোকে যাহাতে অবমাননা বা পরিচব করে, সেইরাপ বিধানে প্রবৃত্ত হইয়া, সাধ্গণের সেবিত পদবী কোনরপে দ্যিত না করিয়া,
বিচরণ করিবেন।

গৃহত্বগণের ও যাযাবরদিগের গৃহেই ভিক্ষা করিবে। তন্মধ্যে প্রথমা বৃত্তিই শ্রেষ্ঠ ৰিনিরা, উপদিষ্ট হইরাছে। লজ্জালীল, শ্রুজাসপার, দমগুণবিশিষ্ট, শ্রোতির ও মহাত্মা, বিশেষতঃ, কোন কণ দোবাপ্রিত বা পতিত নহে, এরপ গৃহত্বগণের গৃহেই ভিক্ষা করিবেন। বিবর্ণগণের নিকট উক্ষা করা ক্ষর্য বৃত্তি বলিরা থাকে। যবাগু, তক্র, গ্রাবক, ফল, মূল, প্রেয়কু, কর্ণ, পিণ্যাক করু, এই সকলই যোগির পবিত্র থালা ও সিদ্ধি বিধান করিবা থাকে। অত্তব এই সকল দ্রুজা করিবে এবং পরম সমাহিত ও ভক্তিমান হইরা, তাহাই উপযোগ করিবে। ভোজন করিবার প্রেমিনী ও সমাহিত হইরা, প্রাণায়, এইপ্রকার বাক্য প্রযোগ করিয়া, প্রথমে একবার ক্লানান করিবে। ইহার নাম যোগির প্রথম আহতি, বলিয়া থাকে। পরে যথাক্রমে অপানার, মানায়, উদানার ও ব্যানার বলিয়া বিত্তীর, তৃতীর, চতুর্থ ও পঞ্চম আহতি প্রদান করিবেন। অনহর প্রাণারাম হারা পৃথক্ করিয়া ইচ্ছামুলাবে শেষ ভোজন করিবেন। পুনরায় আর একবার ক্লপান প্রকিক আচমন করিয়া, হাদ্য স্পর্শ করিবেন। অনহার্য, ত্যাণ, অণোভ ও বহুংগা এই পাঁচটা ভিক্নগণের ব্রত; আর অক্রোধ, গুরুসেরা, শৌচ, আহারলাহ্ব এবং নিতা বদ্পাঠ এই পাঁচটা ভাইাদের নিরম বলিয়া পরিকীর্ত্তিত হইয়াছে।

বাহা সকলের সারস্থরণ এবং যাহা দারা কার্যাসিদ্ধি হইরা থাকে, ভাদৃশ জ্ঞানেরই চর্চা বা মালোচনা স্থানের বিষ্ণা কর্মা থাকে। ইইলে, বোগের বিষ্ণা হইরা থাকে।

খিনি, ইহা জের, ইহা জের, করিয়া, তজ্জন্ত উৎস্কে হইরা বেড়ান ; তিনি করসহ্স্তেও একড জ্ঞাপদার্থ লাভ করিডে পারেন না।

সৃত্ত্যাগ, ক্রোধজন, ইজিনসংখন ও আহারলাঘ্ব করিলা, বৃদ্ধি দারা দারবিধানপুরংসর নেকে ধ্যানে মিবিট করিবেন। গুলা, বন ও জনশ্ত প্রদেশ সকল আত্রন করিলা, নিত্য উদ্যুক্ত বা সমাহিত হইনা, সর্কানা সম্যুক্তবে ধ্যানধারণার প্রবৃত্ত হইবেন। বাগৃদ্ও, সনোদ্ও ও কর্ম দ্ও এই তিবিণ দণ্ড বাহার আয়ত, তিনিই তিদণ্ডী এবং তিনিই মহামতি। এই দুখানাল লাবরঅলমারক শুণাগুণমাল স্নার জগং বিনি আত্মার ভাবেন; রাজন। কেইবা তাঁহার প্রিয়,
আর কেইবা তাঁহার অপ্রিয় ? বাহার বৃদ্ধি বিশুদ্ধ হইয়াত, বাহার লোই কাফনে সম্বান লার্যাছে এবং বিনি স্বভূতি স্মাহিত হইয়া, সকলের আধারস্থানীয়, নিতা অবাস অক্ষকেই বিরজিমান অবণোকন করেন, তাঁহার আর পুনরায় জন্ম হয় না। স্মুদায় বেদ ও স্ববিধ ব্রুজ স্বাণেক শ্রেট। সেই ব্রুজ অপেকা আবার জুপ শ্রেষ্ঠ, জুপ অপেকা জ্ঞানমার্গ শ্রেষ্ঠ এবং সেই জ্ঞানমার্গ অপেকাও আবার বাহাতে সঙ্গ ও রাগ এই উভবের স্পর্ক নাই, তাদুণ ধানাই শ্রেষ্ঠ। এই ব্যান আবিস্ত হইলে, নিতাস্বর্জ ব্রেজর উপপত্তি হইয়া থাকে। স্মাহিত, ব্রজ-নিই, অপ্রমন্ত, তাঁচ, একাত্মিক অমুরাগ সম্পন্ন, জিতেন্ত্রিয় ও আত্মবান্ হইয়া, এই যোগ গাভ ক্রিলে, আত্মার আত্মার ব্যাগ হইয়া, মোকপ্রাপ্তি হয়।

है जि (वांतिष्ठग्री नाम এक प्रांतिः म अधान ।

# দ্বিচন্থারিংশ অধ্যায়।

দ্তাতের কহিলেন, যে যেগী উল্লিখিত বিধানে সমাগ্রণে যোগযুক্ত হইরা, অবস্থিতি করেন, শত শত এলান্তরে তাঁহাকে আর অপদ হইতে প্রতিনিবৃত্ত করাইতে পারে না। যিনি বিশ্বব্য, বিশ্বের ঈশ্বর, বিশ্বের কারণ, বিশের অধিষ্ঠান ও বিশ্বের শিরংশ্বরণ এবং বিশ্বের বহনকর্তা, জগবা বাহার সহস্র মন্তক, পদে ও প্রীবা, দেই প্রতাক্ষররণ পরমাআকে দর্শন করিয়া, তাঁহার প্রাপ্তির জন্ত, পরম্পবিত্র ও বিরাট্সরপ ও এই একাক্ষর অপ করিবে। অকার, উকার মকার, এই অক্ষরত্রর স্বরূপ এবং ইহারাই তাঁহার তিন মাত্রা। এই তিন মাত্রা বর্ণাক্রমে সন্থ, বন্ধ ও তাঁমান্ত্রণরের স্বরূপ এবং ইহারাই তাঁহার তিন মাত্রা। এই তিন মাত্রা বর্ণাক্রমে সন্থ, বন্ধ ও তাঁমান্ত্রণরের অবর পর অর্থারের স্বরূপ প্রবণ ও লপ করিবেন। তাঁহাই তাঁহার অধ্যান হইবে। এতন্তির, ওক্ষারের অপর অর্থ্যান্ত্রা আছে। তাহা উল্লিখত গুণুর্ভারের অতীত এবং উর্থ্যে গাড়িছে। গান্ধারনামক স্বরের সংস্থারশাছে। তাহা উল্লিখত গুণুর্ভার জতীত এবং উর্থে সংস্থিত। গান্ধারনামক স্বরের সংস্থারশাছে। তাহা উল্লেখত গুণুর্ভার তাহার পাতি ও পার্শ পিশীলিকার স্তার। উহা মন্তকে লক্ষিত হইয়া থাকে। প্রভার প্রবেশ প্রতিবাদন করে, তেমনি যোগী অক্ষরে অক্ষরে ওল্পারমন্ন হইয়া থাকেন। প্রান্থ বিদ্ধ ক্রিলে, তন্মর হওয়া বান্ধ। ওম্ এই অক্ষরই তিন বেদ, তিন লোক, তিন ক্রার, সেই বন্ধকে বিদ্ধ করিলে, তন্মর হওয়া বান্ধ। ওম্ এই অক্ষরই তিন বেদ, তিন লোক, তিন ক্রার্থ হেইয়া থাকেন। জ্বিন মাত্রা, জানিবে। যে যোগী তাহাতে সংসক্ত হন, তিনি তাহাতে বন্ধপ্রাপ্ত হট্যা থাকেন।

অকার ভূর্তোক, উকার ভ্রর্তাকে এবং মুকার অর্গলোক বলিরা, পরিস্থিত হর। ব্রশা প্রথম মাত্রা; বিতীয় মাত্রার নাম অবাক্ত; তৃতীয় মাত্রা সাক্ষাৎ চিৎশক্তি ও অর্থমাত্রা পরম পদ অর্থাৎ বন্ধন। এই প্রকার ক্রমাস্থসারেই ইহাদিগকে যোগভূমি বলিরা, অবগত হইবেন। ওম এই অকর উচ্চারণ করিলেই, যাবতীয় সৎ অসং পরিস্থীত হইরা থাকে। প্রথম মাত্রা হ্রমার্থন বির্বাহ করিছার সং আর ভ্রতার মাত্রা দীর্থারক ও ভৃতীয় মাত্রা প্রবর্গ ; আর অর্থমাত্রির বরণাদি নির্বাচন করা শায়ারত নহে। এই রূপে যিনি ওম্বারাভিধের অক্তরম্বরূপ পর্যুগ্রে স্থাক ব্রপ্রে অবগত ও তাহার খ্যানে সংস্কৃত হন, তিনি সংসারচক্র অতিক্রম ও ত্রিবিধ বন্ধন পরিহার করিছা সেই শির্মায়বর্গ পরম ব্রক্ষই লয় গাইরা থাকেন। তাহার ক্র্যবিধ্ব ক্ষম বা হইবেন, তিনি অর্থি

ঘারা মৃত্যু অবগত ও মৃত্যুর পর আতিমর হইয়া, পুনরার বোগী হইয়া থাকেন। <u>অতএব</u> যোগদির হউক বা না <u>হউক, আর্ট সকল অবগ্র ই এয়া করিবা।</u> আহাহটবে, মৃত্যুর্মার স্বর্ম হইতে হর <u>না।</u>

ইতি ওঙ্কারম্বরূপকথন নাম দ্বিচ্ছারিংশ অধ্যার।

#### ত্রিচত্বারিংশ অধ্যায়।

দত্তাত্ত্রের কহিলেন, মহারাজ। আমি আপমার নিকট অরিষ্ট সমুদর বর্ণন করিতেছি, ্রুবণ ক্ষুকুন। যোগবিৎ তৎসমস্ত স্কুর্শনমাত্ত নিজের মৃত্যু অবগত হয়েন।

ষে ব্যক্তি দেবমার্গ, ধ্রুব, শুক্র, চন্দ্র, নিজের ছায়া, অক্ষতী, এই সকলকে দেখিতে পায় না, তাহার সম্বংসর পরেই মৃত্যু হইমা থাকে। স্থ্যবিদ্ধকে রশ্মিশৃত্য ও অগ্নিকে অংশুমালী দর্শন করিলে, একাদশ মাসের অধিক আর জীবিত থাকিতে হয় না। যে ব্যক্তি স্বপ্নে বিনি, মল ও মৃত্র এই সকলে স্বর্ণ বা রক্ত প্রত্যক্ষ করে, সে দশমাস জীবিত থাকে। প্রেত ও পিশাচাদি, গদ্ধর্কনগর এবং স্বর্ণবর্ণ বৃক্ষ সকল দর্শন করিলে, নয় মাস বাঁচিয়া থাকে। যে ব্যক্তি অক্সাৎ স্থূল থাকিয়া ক্ষশ হয়; আবার ক্ষশ থাকিয়া স্থূল হয়; তাহার আয়ু আটমাস পরেই প্রকৃতিভ্রন্ত ইইয়া থাকে। পাংশু ও কর্দ্ধমে পদক্ষেপ করিলে, যাহার পান্ধি বা পায়ের সম্মুখভাগের চিহ্ন থগুকারে তাহাতে লক্ষিত হয়, সে সাত মাস বাঁচিয়া থাকে। যাহার মন্তকে গৃধ, কপোত, কাকোল, বায়স অথবা অহ্য কোন মাংসাশী পক্ষী উড়িয়া বসে, সে ছয় মাস বাঁচিয়া থাকে। কাকপঙ্জি ও পাংশুইটি স্বারা আহত হইলে এবং নিজের ছায়া বিপরীত দেখিলে, চারি পাঁচ মাস বাঁচিয়া থাকে। যে ব্যক্তি বিনামেনে দ্কিণ দিকে বিহাৎ ও রাত্রিতে ইন্দ্রধন্থ অবলোকন করে, সে ছই তিন মাস জীবিত থাকে। যে ব্যক্তি মুতে, তৈলে, আদর্শে বা জলে আপনার মূর্ত্তি দেখিতে পায় না অথবা যদি দেখে, মন্তক্ষীন দেখিয়া থাকে, তাহাকে আর মাসের উর্জ বাঁচিতে হয় না। দ্বু

রাজন! যাহার গাত্রে শবসম গন্ধ বাহির হয়, দেই যোগী অর্জনাস বাঁচেল, জানিবেন। স্থান করিবামাত্র বাহার জনয় ও পদ শুক হইয়া যায় এবং জল পান করিলেও, কঠশোষ উপ স্থিত হয়, সে দশদিন বাঁচিয়া থাকে। বায়ু ছিল্ল ভিল্ল অথবা সভবৰ্ষে প্ৰবৃত্ত হইলা, বাহার মর্ম্মনা সকল ভেদ করে এবং জল স্পর্শ করিলেও, যাগার লোমাঞ্চনা হয়, তাহার মৃত্যু উপত্তিত, জানিবে। বে ব্যক্তি অপ্পেঞ্চ ও বানর্যানে আব্রোহণ করিয়া, গান করিতে করিতে দকিণ দিকে প্রস্থান করে, তাহার মৃত্যুর আর কালাকাল নাই। রক্ত-রুফ্চবসনধারিণী রমণী স্বপ্নে যাগকে গান ও হাস্ত করিতে করিতে দক্ষিণ দিকে লইয়া যায়, তাহাকেও আর বাঁচিতে হয় না। বে ব্যক্তি স্থান্নে মহাবল নগ্ন ক্ষপণককে একাকী সহাস্ত আন্তে গমন করিতে দেখে, তাহারও মৃত্যু উপস্থিত, জানিবে। যে ব্যক্তি স্বপ্নে আপনার দেহকে মন্তক্তল পর্যান্ত পদ্দাগরে নিমগ্ন অবলোকন করে, ভাহার সদ্য মৃত্যু হয়। স্বপ্নে কেশ, অঙ্গার, ভত্ম, ভূজক ও জনশৃত্য নদী দর্শন করিকে, দশদিনের পর একাদশ দিনে মৃত্যু হইয়া থাকে। স্বপ্নে অতীব ভীষণ ও বিকটপ্রকৃতি, রুঞ্চবর্ণ পুরুষণণ আয়ুর উদ্যুত করিয়া, পাষাণের আঘাত করিলে, সদ্য মৃত্যু হইয়া থাকে। সুর্যোর উদরসম্ব শিবা মাহার সম্মুথ, পশ্চাৎ অথবা চতুর্দিক দিয়া গমন করে, তাহারও সদ্য মৃত্যু হয়। ভোলন করিয়া উঠিয়াই, যাহার হৃদর আবার কুধার পীড়িত হয় এবং দন্তবর্ষ উপস্থিত হইয়া থাকে, তাহার আবায়ুশেষ হইয়াছে, সন্দেহ নাই। যে ব্যক্তি প্রদীপের গন্ধ পায় না; দিবসে বা রাজিতে ভী<sup>3</sup> হইয়া থাকে এবং পরের নেত্রে আনাপনার প্রতিবিদ্ধ দেখিতে পায় না, তাহাকেও আরু বাঁচিতে ছয় না। আঅবিৎ ব্যক্তি অধ্বাতে ইন্দ্ৰণয় এবং দিবাভাগে গ্ৰহদিগকে নিরীকণ করিলে, আপনার

আযুর নিশ্চয়ই ক্ষয় ইইয়াছে, বৃঝিবেন। যাথার নাক বাঁকিয়া বার, কর্ণয়য় নতোলত হয় এবং ু বামনেত্রে জল পজিলা থাকে, তাহার আয়ু শেষ হট্রাছে। যথন মুধ রক্তবর্ণ ও জিহবা ভাষবর্ণ হয়, তথন প্রাক্ত ব্যক্তি বিশেষকপে জানিবেন, নিজের মৃত্যু আসল হইয়াছে। বে বাজি সংপ্র উট্ট ও গর্ম ভবানে আবোহণ করিয়া, দক্ষিণ দিকে গমন করে, তাহার সদ্য মৃত্যু জানিবে, তাহাতে সংশয় নাই। যে ব্যক্তি কৰ্ণৰয় পিহিত ক্রিয়া, আপনার শব্দ শুনিতে পায় না এবং যাহার চকুর জোতি নই হইয়া যায়, তাহাকেও আরে বাঁচিতে হয় না। অপে গর্তমধ্যে পতিত হইলে, যে ৰাজি আর বাহির হইবার বার পায় না, তজ্জত গর্ত হইতে উঠিতে পারে না, তাহার জীবনের সেই শেষ, আগানিবে। যাহার দৃষ্টি উর্জে উত্থিত হইয়াছে এবং রক্তবর্ণ ধারণপূর্বক পুন: পুন: ঘর্ণমানা হয়; কোনরপে দ্বির থাকিতে পারে না; যাহার মুখ উন্নাপূর্ণ ও নাভির গর্ত বিস্তীর্ণ হইয়া থাকে; তাহাকেও অপর দেহ ধারণ করিতে হয়। যে ব্যক্তি স্বপ্লে অগ্নিমধ্যে প্রবেশ করিবা, আর বাহির হইতে পারে না; অথবা জলমণ্যে প্রবিষ্ট হইয়াও, পুনরায় বহির্গমনে অসমর্থ হয়: ভাহাই তাহার জীবনের শেষ। যে ব্যক্তি দিবদে অথবা রাত্তিতে ছুই ভূতগণ কর্তৃক অভিহত হ্যু; দে নিঃদক্ষেই সাত রাত্রি মধ্যে মৃত্যুমুথে নিপতিত হইয়া থাকে। যে ব্যক্তি আপনার খেতবর্ণ নির্মাণ বস্ত্রকে রক্তবর্ণ অথবা ফুফ্বর্ণ অবলোকন করে. তাহারও আদল মৃত্যু নির্দিষ্ট হইয়া থাকে। যাঁহাদের স্বভাবের বৈপরীত্য বা প্রকৃতির বিপর্যায় হইয়া থাকে, যম ও অন্তক ভারাদের আদর হইয়াছে, এই রূপ নির্দিষ্ট হয়।

বাঁহাদের নিকট সর্বদা বিনীত হওয়া উচিত ও যাহাঁরা পূজাতম ৰলিয়া পরিগণিত হয়েন, তাঁহাদিগকে যে ব্যক্তি অবজ্ঞা করে বা নিন্দা করে; এবং যে ব্যক্তি দেবগণের পূজায় পরামুধ ও ওফ, বৃদ্ধ ও বিপ্রবর্গের নিন্দাবাদে প্রবৃত্ত হয় এবং যে ব্যক্তি পিতা মাতার সংকার ও জামাতৃ-গণের সমাদর করে না এবং যে ব্যক্তি যোগিগণের, জ্ঞানবিৎ ব্যক্তিগণের ও অভ্যান্ত মহাম্মাগণের অসংকারে প্রবৃত্ত হয়, বিচক্ষণ ব্যক্তিরা জানিবেন, তাহার কাল প্রাপ্ত হয়, বিচক্ষণ ব্যক্তিরা জানিবেন, তাহার কাল প্রাপ্ত হয়, বিচক্ষণ ব্যক্তিরা জানিবেন, তাহার কাল প্রাপ্ত হয়,

যোগিরা যত্বপূর্বক সতত অবগত হইবেন, অরিপ্ত সকল সন্থংসরাস্তে ও দিবানিশ ফল দাক করিয়া থাকে। তাঁহারা বিশেষরূপে তত্তং কালের প্রতি লক্ষ্য রাখিবেন। ঐ সকল ফল যেমনা অতীব ভয়কর, তেমনি সকলেরই অনায়ানে বোধগম্য হইয়া থাকে। তত্তং ফল, হিশিষ্ট বিধানে স্বিদিত হইয়া, তাহাদের উপস্থিতির সময় সর্বাদাই মনে করিয়া রাখিবেন। এইরূপে সমস্ত বিদিত হইয়া, সম্যক্ রূপে ভয়শৃত্ত ভান আশ্রম করিয়া, যোগী যোগে স্কৃতিত হইবেন। তিনি অরিপ্ত দর্শন করিলেই, মরণজনিত ভয় ত্যাগ করিয়া, সেই অরিপ্তের অভাবপর্য্যালোচনাপুর্বক ষে সময়ে তাহা উপস্থিত হইবে, দিবসের সেই ভাগে যোগযুক্ত হইবেন। সেই দিনের পূর্ব্বাহেন, প্রকাশেক অথবা মধ্যাকে, কিছা রক্তনীযোগে অথবা যে সময়ে সেই অরিপ্ত দর্শন করিয়াছেন, ঠিক সেই সময়েই যোগযুক্ত হইবেন; যাবৎ সেই দিন উপস্থিত না হয়, ভাবৎ ঐর্মণে যোগহর্য্যা করিবেন। তিনি আত্মসংঘ্যমপূর্ণক সম্পায় ভয় ত্যাগ ও সেই কাল জয় করিয়া, সেই গৃহেই অথবা জন্ত যোগানে গাকিলে, মন স্থির হইতে পারে, সেই স্থলে অবস্থিত হইয়া, গুণজের জয় করত যোগে যুক্তিত ও পরমান্থায় একতান অন্ত:করণে সম্বিবিপ্ত ইইবেন এবং আত্মাকে তয়য় করিয়া, অব-শেষে চিবৃত্তিও সর্ব্বাভাবে ত্যাগ করিবেন। ভাহাইবেন, ইক্তিম্বের অতীত, বুদ্ধির অতীত ও বাক্যের অতীত পরমানির্ধাণ ভোগ করিতে সমর্থ ইইবেন।

অন্নি অলক ! আমি আপনার নিকট এই সম্পান্ন যথার্থবং কীর্ত্তন করিলাম। অধুনা যে উপারে আপনি ব্রহ্ম লাভ করিবেন, তাহা সংক্ষেপে ৰলিতেছি, শ্রন্থ করন। চন্দ্রকাত্তমণি চন্দ্রকানংঘোগেই জগ নিঃসারণ করে; কিরণের সহিত সংযুক্ত না হইলে, কথনই সনিল্লাবে সমর্থ হয় না; ইংগই যোগির যোগদিছির উপমা অর্থাং যোগী যোগে যুক্তচিত্ত হইলেই, তাঁহার সম্ভার আনক্ষরদ সঞ্চারিত হয় : যুক্তচিত্ত না হইলে, হয় না।

পুনশ্চ, স্ব্যকান্তমণি স্ব্যক্তিরণসংযোগেই ত্তাশন আবিদ্ধৃত করে; একাকী, কথন পারে না। ইহাও বোগীর অন্তত্তর উপমা অর্থাং যোগের সহিত সংযোগ না হইলে, যোগীর কথন এক্ষ্-সাকাৎকার সমুদ্রাবিত হয় না।

প্নশ্চ, পিপীলিকা, ইন্দ্ৰ, নকুল, গৃহগোধা ও কপিঞ্জল ইহারা, যে গৃহে গৃহস্বামী আছে, সেই গৃহেই সচরাচর বাস করিয়া থাকে। গৃহস্বামী বিনষ্ট হইলে, অন্তত্ত্ব গমন করে। গৃহস্বামীর বিনাশে ইহাদের কিছুমাত্র ছংথ উপস্থিত হয় না। ইহাও যোগীর যোগসিদ্ধির অন্তত্তর উপমা। অর্থাৎ, দেহের পর দেহের আবির্ভাব ও ভিরোভাব হইয়া থাকে। ইহা স্বভাবসিদ্ধ নিয়ম; স্তরাং তাহাতে আর মমতা কি ? ছংথ কি ? যোগী ইহাই জানিয়া, কোনরূপে মমতার বশ না হইয়া, দেহের কোনরূপ ক্য়বিনাশ বশতঃ কোনরূপে কুয় বা অবসয় না হইয়া, একান্ত চিত্তে যোগসাধন করিবেন।

পুনশ্চ, মৃদ্দেহিকা অর্থাৎ উইপোকা ক্ষুদ্রদেহ হইলেও, অভীব-ক্ষুদ্র মূথের সাহায্যে রাশি রাশি মৃত্তিকা সঞ্জিত করিয়া থাকে; যোগী ইহা দারাও যোগসাধন শিক্ষা করিবেন। অর্থাৎ ব্রদ্ধ-সাধন অতীব হুরুহ বা শুরুতর ব্যাপার হইলেও, যোগচেচারেপ সামান্ত উপারেই তাহা আয়ও করা যাইতে পারে। এই যোগচচ্চাও আবার যতই কেন শুরুতর হউক; অরে অরে অভ্যাস করিলে, অনারাদেই কুতকার্যা হওয়া যাইতে পারে।

পুনশ্চ, পশু, পশ্চী ও মহুষ্যাদি জীবগণ ফল, পুশা ও পত্রশালী বৃক্ষকে বিনষ্ট করিয়া থাকে। ইহা দেখিয়াও যোগিরা দিছিলাভ করিয়া থাকেন। অর্থাৎ বেথানে সমৃদ্ধি, দেইথানেই বিনাশ। তৃমি যত বড় ধনী, মানী ও গুণী জ্ঞানী হও না কেন; কান তোমাকে নিশ্চয় বিনাশ করিবে। এই সকল চিন্তা করিয়া, বৈরাগ্যের উদয় ও তৎসহকারে আত্মাকে আত্মাতে মিলিত করিয়া, যোগসাধনে প্রবৃত্ত হুইলে, নির্বাণপ্রাপ্তিরূপ চরমদিদ্ধি স্ঞাতত হুইয়া থাকে।

পুনশ্চ, রুকুনামক মৃগশাবকের শৃঙ্গের অগ্রভাগ তিলকার্কতি হইলেও, তাহার সঙ্গে সঙ্গে বৃদ্ধিত হইয়া থাকে; ইহা বিশেষকপে লক্ষ্য রাখিলে, যোগী সিদ্ধি লাভ করেন।

পুন-চ, দ্রবপূর্ব-পাত্র-হত্তে ভূপৃষ্ঠ হইতে অত্যুচ্চ প্রদেশে আরোহণদময়ে লোকের অঙ্গের প্রতি বিশেষরূপে লক্ষ্য রাখিলে, যোগী কি না জানিতে পারেন ? লোকে জীবনের জন্ত সর্বাধ নিধাত করিতে যে চেষ্টা করে, তাহা যপায়থ বিদিত হইলে, যোগী কৃতকৃত্য হইরা থাকেন।

যেথানে বাদ করা যায়, তাহাই গৃহ; যাহা দারা জীবনধারণ হয়, তাহাই ভোচ্চা; দেইরণ যাহা দারা অর্থ বিনিপার হয়, তাহাই স্থ্য স্ত্রাং এ বিষয়ে আর মমতা কি ?

পুত্র কহিলেন, তথন মহীপতি অলর্ক ভগবান্ দন্তাতেরকে প্রণাম করিয়া, বিনয়াবনত হইয়া, সহর্ষ বচনে বলিতে লাপিলেন, ব্রহ্মন্থা, বিনয়াবনত উল্প প্রাণসংশরকর অত্যুগ্র ভয় উপস্থিত হইয়াছিল! সৌভাগ্যক্রমেই আমার শক্তর পরিভবন্ধনিত জিল্প প্রাণসংশরকর অত্যুগ্র ভয় উপস্থিত হইয়াছিল! সৌভাগ্যক্রমেই কাশিপতি প্রবলপরাক্রান্ত ও সমৃদ্ধিসম্পন্ন হইয়াছিলেন! বাহার উচ্ছেদ বশতঃ আমি এথানে আন্মান্ত এবং বাহার প্রভাবে আপনার সঙ্গলাভে সমর্থ হইয়াছি! সৌভাগ্যক্রমেই আমার বল থর্কিত ও ভৃত্য সকল নিহত হইয়াছে! সৌভাগ্যক্রমেই আমার কোষও ক্ষয় প্রাপ্ত ও তৎপ্রযুক্ত ভয় উপস্থিত হইয়াছিল! সৌভাগ্যক্রমেই ভবদীয় পদ্যুগল মদীয় স্মৃতিপথে সমাগত ও সৌভাগ্যক্রমেই আপনার উক্তি সকল আমার অন্তরে সংস্থিত হইয়াছে! পুনশ্চ, সৌভাগ্যক্রমেই ভবদীয় সমাগম লাভ করিয়া, আমার জ্ঞানও সমুৎপন্ন হইল! ব্রহ্মন্! সৌভাগ্যক্রমেই আপনি আমার প্রতি কারণা বিতরণ করিলেন!

পুরুষের যথন শুভোদয় হয়, তথন অনর্থ অর্থরণে পরিণত হইয়া থাকে। দেখুন, এই ভয়াবহ বিপদও ভবদীয় সমাগম সংঘটন করিয়া, আমার উপকার সম্পাদন করিল। বলিতে কি. স্বাহ ও কালিপতি উভয়ে শত্রু হইলেও, আমার উপকারী। দেখুন, ইইাদেরই করু আমি আপ

নার অন্তিকে আগমন করিলাম। আপনি বোগিগণেরও ঈশর। আপনার প্রানাদ রূপ অনল
শংঘোগে আমার অজ্ঞান-কিবিব নিংশেষে দগ্ধ হইয়াছে। একণে এরূপে যৃদ্ধ করিব, বাহাতে আর প্ররায় ঈদৃশ হংগজাজন হইতে হইবে না। যাহা বিবিধ বিষম হংগরপ বৃক্ষের বন স্বরূপ, সেই গাইত্ব আশ্রম ত্যাগ করিব। একবে এ বিষয়ে আগনার অনুমতি পাইতে ইছে। করি। কেননা, আগনি অতি মহাপুক্ষ ও জ্ঞানদাতা।

দতাত্তের কহিলেন, রাজেন্দ্র গমন কর। তোমার কল্যাণ হউক। আমি তোমাকে বেরুপ উপদেশ করিলাম, তুমি নির্মাণ ও নিরহকার হইয়া, তদফ্রপ অনুষ্ঠানে প্রায়ত হও, নির্মাণমুক্তি লাভ করিবে।

ধাবি এইপ্রকার কহিলে, মহীপতি অলর্ক তাঁহাকে প্রণাম করিয়া, ত্রান্তি ছুইয়া, বেধানে কাশিপতি ও অগ্রন্ধ আতা স্থাহ, তথায় সমাগত হইলেন এবং কাশিপতির স্মীণে ও স্থাহর অগ্রে উপনীত হইয়া, সহাস্ত বাক্যে বলিতে লাগিলেন, কাশিপতি। তুমি রাজ্যকামুক হইয়াছ। অতএব এই পর্মসমূদ্মিনান্ রাজ্য স্থাং ভোগ কর অথবা স্থাহকেই সম্প্রদান কর। অধ্যা তোমার অভিকৃতি যেরপ, তাহাই কর।

কাশিপতি কছিলেন, অলর্ক ! তুমি যুদ্ধ না করিয়াই, রাজ্য পরিতাগি করিলে। ইহার কারণ কি ? ইহা কিন্তু ক্রিরের ধর্ম লিলে। তুমিও ক্রিরের ধর্ম ভালরূপ জান। রাজা অমাতাদিগকে লম ও মৃত্যুভর তাগি করিয়া, শত্রুকে লক্ষ্যরূপে নির্দেশ করিয়া, শর সন্ধান করিবেন এবং বৈরীকে লয় করিয়া, সিদ্ধির অভ্যুথভিল্যিত অত্যুৎকৃষ্ট ভোগ সকল সভোগ ও প্রধান প্রধান বজ্ঞ সকলের যাজন করিবেন।

অনর্ক কহিলেন, বাঁর ! আমারও পুর্বের এইরপে অভিপ্রার বা ধারণা ছিল। সম্প্রতি তাধার বিপরীত ভাব উপস্থিত হইরাছে। কারণ শ্রবণ কর। যাবতীয় জীবের সঙ্গ যেমন ভৌতিক, তাধাদের অন্তঃকরণ ও গুণ সকলও তেমনি ভূতের সমবায় মাত্র। একমাত্র চিছ্নু কির্দ্ধের স্থান্ত পারিরাছি, তথন রাজন্। শত্তু, মির, প্রকৃত ভূত্য করনা কিরপে সঙ্গত হইতে পারে ? অতএব আমি যথন তোমার ভয়জনিত নিরতিশয় হংথ প্রাপ্ত হইয়া, ভগবান্ দন্তাত্রেয়ের প্রসাদে জান লাভ করিয়াছি, তথন ই শ্রিমাদিগকে লয় ও সম্পায় সঙ্গ ত্যাগ করিয়া, পরত্রকে সনিবিষ্ট করিব। পরত্রক্ষকে লয় করিলেই, সম্পায় অব করা হইল। যাঁহা ভিন্ন আর কিছুই নাই, তাহাঁর সাধন জন্ম অন্ত সাধনা করা কর্ত্ব্য। ই শ্রিমাদিগকে সংযত করিলেই, সিদ্ধিলাভ হইরা গাকে। দেখ, আমি তোমার শত্তু নহি, তুমিও আমার বৈরী নহ; এই স্থাছও আমার অপকারী নহেন। আমি ইহা যথাযথ অবগত হইয়াছি। আপনি এখন অন্তু শত্তু অধ্যাবণ করন।

রা**জা স্থ্যান্ত ত**ৎকর্ত্ত্ক এইরূপ অভিহিত হইয়া, হাইচিত্তে তংকণাৎ গাজোধ্বান করিবেন এবং প্রম সৌভাগ্য, এইরূপ ক্রিয়া, ভাতাকে অভিনন্দন ক্রিয়া, কাশিপ্তিকে ব্লিতে **লাগিবেন।** 

ইতি অবিষ্টকথন নাম ত্রিচছারিংশ অধ্যায়।

### **চতু** भ्ठञ्जातिः भ व्यथाग्रा ।

স্থাত কহিলেন, নৃপশ্রেষ্ঠ ! আমি যেজন্ত আপনার শরণাপর হইরাছিলাম, ভাহা আমার সাকলোই লাভ হইয়াছে। একণে গমন করিব, আপনি স্থী হউন।

কাশিরাত কহিলেন, কিজ্ঞ আপুনি আমার শরণাপন্ন হইনাছিলেন ? কি প্রায়েজনই বা আপুনার বিনিপান হইল ? জানিবার জ্ঞ আমি পরমকৌত্হলসম্পন্ন হইনাছি। অত এব আপুনি আমার নিকট তাহা কীর্ত্তন করন। অলুক আপুনার পিতৃপৈতামহিক স্থপমৃদ্ধ রাজ্য বলপুক্ষক ভোগ করিতেছিলেন। আপুনি আমাকে সেই শক্র জন্ম করিনা দিবার জ্ঞা বিশেষক্ষপে প্রেরণা করেন। সেই কারণেই আমি আপুনার অমুজের ঐ রাজ্য আক্রমণ করিনা, আপুনার বশে আনন্ত্রন করিনাছি। আপুনিও স্বকীন কুলোচিত ঐ রাজ্য ভোগ কর্মন।

অবাত কহিলেন, কাশিবাজ! যেজন্ত আমি ঈদৃশ উদ্যুদে প্রবৃত্ত হইয়াছিলাম এবং আপ-নাকেও অত্যন্ত উদ্যাদে প্রবর্ত্তিক করিয়াছিলাম, তাহা প্রবণ করুন। আমার এই ল্রাতা তত্ত্ব-বিৎ হইলেও, গ্রাম্য ভোগে আসক হইরাছিলেন। আমার অগ্রক হই লাতা বিমৃঢ় হইলেও, তত্ত্তজানসম্পন্ন হইয়াছেন। কেন না, আমাদের জননী বাল্যকালে তাঁহাদের হুই জনের ও আমার মুথে ধেমন তাল দিয়াছিলেন, আমাদের তিন জনেরই কর্ণে তেমন তত্ত্জান বিভাগ করিয়া-हित्तन। त्रांजन्! त्य त्य विषय मञ्चामात्वत्रहे व्यवश्च (छात्र विषया, পরিগণিত हहेशा धात्क. জননী আমাদের তিন জনেরই হাদরে তৎসমস্ত প্রতিভাত করেন; কেবল ইহারই করেন নাই। বেমন এক সার্থগত ব্যক্তিগণের মধ্যে একজন অবদর হইলে, দাধুমাত্রেরই ত্রংপ হইলা থাকে. রাজন্। আমাদেরও সেইরূপ হইয়াছে। কেন না, রাজন্! আমাদের সহিত এই অলকের সম্বন্ধ আছে। ইনি এই দেহে আমাদের ভাতৃক্রনা ধারণ করেন। ইনি গার্হক মোহে আছের হইয়া, অবদর হইয়া পড়িয়াছিলেন। তাহাতেই আমাদের ছঃথ উপস্থিত ছয়। দেই-জন্ত আমি বিশেষরূপে বিবেচনা করিয়া ন্তির করিলাম, ছ:থ হইতেই ইহাঁর বৈরাগ্যভাবনা উপস্থিত ইইবে। এই প্রকার অবধারণ করিয়াই, আমি উদেষাগের জন্ত আপনার আশ্রয়ে উপ-স্বিত হইয়াছিলাম। তাহাতেই ইহার ছ:খ হইতে তত্তজানের উদর হইয়া, বৈরাগ্য সম্ভাবিত করে। ইহাতে আমি ক্লতকার্য্য হইয়াছি। আপনার মঙ্গল হউক। আমি চলিলাম। রাজন। ইনি মদালসার গর্ভে বাস ও সেইরূপে তাহাঁর তান পান করিয়াছেন। অনতএব অফুরুমণীর পুত্রেরা বে পথের পথিক হইতে পারে না, ইনি সেই পথের পথিক হউন। আমি এই স্কল বিচার করিয়া, আপনারে আশ্রমপূর্বক ঐরপ অনুষ্ঠান করি। আমার কার্যাও দিল হইয়াছে। এক্লে পুনরায় সিদ্ধিলাভের জন্ম প্রাণ করিব। রাজন্ । স্বলন, বাদ্ধব ও সুত্ত অবসন্ন হইলে, यारात्रा जारामिशतक উপেका करत, रा मकल वाक्तिक जामात रेखियविभिष्टे निवारे मता रव ना; বিকল বলিয়া প্রতীতি হইয়া থাকে। স্কুল্, স্বজন ও বন্ধু ইহারা সমর্থ হইলেও, যে ব্যক্তি অব-সম হয়, তাহার সেই স্থত্ৎ প্রভৃতিই নিলাভাজন হইয়া থাকে। তাহাকে কথন নিলা করা যাইতে পারে না। রাজন্! আমি আপনার সংসর্গে ঈদুশ মহৎ কার্য্য দাধন করিয়াছি। অভএব আপনি হথে থাকুন। আমি গমন করিব। আপনি দাধুগণের অগ্রগণ্ট; জ্ঞানভাগী হউন।

কাশিরাজ কহিলেন, আপনি সংস্কাব অনর্কের মহান্ উপকার করিলেন। আমার উপকার জন্ত কিনিমিন্ত মনোযোগ করিতেছেন না ? সাধুর সহিত সাধুর সমাগম অবশুই ফলদারী হইরা থাকে, ক্ধনই নিক্ষণ হর না। এই কারণে আপনার সংসর্গে আমার উন্নতিপ্রাপ্তি সর্কাণা যুক্তিযুক্ত।

ञ्चार कहित्तन, धर्म, वर्थ, काम ७ त्माक हेशानिशत्कहे शूक्रवार्थहजूहेन बिनना बादक।

ত্রাধ্যে আপনার ধর্ম, অর্থ ও কাম দির ইইরাছে। মোকের কেবল অভাব আছে। আমি সেই\* ক্সু আপনার নিকট সংক্ষেপে বলিব। আপনি এক মনে শ্রবণ করন। রাজন্। শ্রবণ করিরা,
সমাক্রপে আলোচনাপুর্বক মুক্তির জ্ঞু যক্ত করিবেন। মহারাজ। আপনি কথন মমতা ও
অংকারের বশীভূত হইবেন না। সমাগ্রূপে ধর্ম আলোচনা করিবেন। কেন না, লোকে ধর্মাভাবেই নিরাশ্রর হইয়া পড়ে। আপনা আপনি আলোচনা করিরাই, বিশেষরূপে কানিবেন,
আমি কাহার ? রাত্রির অবসানে আলোচনা করিয়া, বাহাস্তর্গত আলোচনায় প্রবৃত্ত হইবেন।
অব্যক্ত হইতে প্রেক্তি প্রান্তর বিকারহীন, চেতনাহীন, ব্যক্ত বা অব্যক্ত স্মৃদায় বিষয় অবস্ত হইবেন এবং সঙ্গে সঙ্গে জানিবেন, সংসারে জ্ঞের কি, জ্ঞাতা কে ? এবং আমিই বা কে ?
ইহা বিশেষরূপে কানিতে পারিলেই, আপনি সমন্ত বিদিত হইবেন। দেহ প্রভৃতি জনাজ্পদার্থে
আয়েফান এবং অবকে স্ব বিসরা অবগত হওয়াই মৃঢ়তা। রাজন্! লৌকিক ব্যবহার জন্সারে
আমিই সর্বগত।

আপনি বাহা জিল্পাসা করিলেন, এই তাহা সমন্ত বিশেষ করিয়া বলিলাম। অধুনা গমন করিব। ধীমান্ অবাহ কালিণতিকে এইপ্রকার কহিয়া প্রহান করিলেন। তথন কালেণিতিও অনককে সর্বভোলাবে পূলা করিয়া, স্বকীয় পূরে প্রত্যাগত হইলেন। অলকও আপনার জ্যেষ্ঠ পূরকে রাজপদে অভিষিক্ত করিয়া, সর্বতোভাবে সর্বস্ববিহীন হইয়া, আত্মসিদ্ধির জল্প অরণো গমন করিলেন। অনকর বহুকালাবসানে নিম্মূল ও নিপ্রিপ্রাহ হইরা, অনুপম যোগসমৃদ্ধি লাভ করিয়া, পরম নির্বাণ প্রাপ্ত হইলেন। দেব, অহুর ও মহুষ্য সহিত সমৃদায় দৃশ্রমান জগং গুণময় পাশসমূহে বন্ধ হইরাছে এবং নিত্য বন্ধ হইতেছে। পূরাদি ও লাভ্পুরাদি স্বকীয় ও পরকীয়গণ কর্তৃক ঐ পাশ সমস্ত উদ্ভাবিত হইয়াছে। এই ভিম্নদা জ্বং তোহাতে আক্র্যমাণ হওয়তে, হুংখে অভিভূত হইয়া উঠিয়াছে। তাহার উপর অল্ঞানরূপ পদ্ধগতে প্রোধিও হওয়াতে, ইহার উন্ধারেরও আশা গিয়াছে। মহামতি অলক ইহা দর্শন ও আপনি যে উদ্ধার পাইয়াছেন, তাহা পর্যবোক্তন করিরা, এই গাখা গান করিলেন, হায়, কি কণ্ঠ! আমরা পূর্বে রাজ্য করিয়াছিলাম। পরে জানিতে পারিলাম, যোগ অপেকা চরম স্থ দিতীয় নাই।

পূত্র কহিলেন, তাত ! আপনি মৃক্তির জন্ম ঐরপ উৎরপ্ত যোগের অফ্সারী হউন। তাহা হইলে, বাহাকে লাভ করিয়া, আর কথন শোকের বিষয়ী ভূত হইবেন না। তাহাহইলে, আমিও গমন করিব। যজ্ঞ বা জপে আমার প্রয়োজন কি ? রু হকুতা ব্যক্তি যাহা করেন, বাহাহ করে লাভের জন্ম তাহা করিয়া থাকেন। অভএব আমি আপনার অফ্জাগ্রহণপূর্বক নির্শি ও নিশ্বিগ্রহ হইয়া, মৃক্তির জন্ম বিশেষরূপে যত্ন করিব, যাহাতে আমার নির্বাণপ্রাপ্ত হইবে।

পক্ষিরা কৃছিলেন, প্রক্ষন্ ! তিনি পিতাকে এইরূপ কৃছিয়া, তাঁহাব অন্জ্ঞা লইয়া, নিশারিগ্রহ হইয়া, প্রেছান ক্রিলেন। তাঁহার পিতাও ক্রমে ক্রমে স্ব্দির সকারবশতঃ বানপ্রস্থারণ হইয়া, চতুর্থ আশ্রমে প্রবিষ্ট হইলেন। তথার আজ্যেরের সহিত সংমিলিত হ**ইয়া, গুণাদি বন্ধ পরি**-হার ক্রিয়া, তৎকাল-সমুপস্থিত সদ্বৃদ্ধির উদয়-যোগ-বশে প্রম সিদ্ধিলাভ ক্রিলেন।

বৃদ্ধান আমাদিগকে যাহা জিজাসা করিয়াছিলেন, ভাহা এই আপনার নিকট বিস্তারপূর্কক ষ্ণাষ্থ কৃছিলাম। একণে আর কি শুনিতে ইচ্ছা করেন, বলুন।

ইতি জড়োপাখান নাম চতুশ্চথারিংশ অধ্যায়।

### পঞ্চত্বারিংশ অধ্যায়।

কৈমিনি কহিলেন, দ্বিজ্বত্মগণ। প্রবৃত্তি ও নিবৃত্তিভেদে বৈদিক কর্ম দ্বিধ। স্থাপনার। আমার নিকট তাহা সমাগ্রপে কীর্ত্তন করিলেন। কি আশ্চর্যা! পিতার প্রসাদে স্মাপনাদের রাদৃশ জ্ঞান উৎপন্ন হইয়াছে ! যাহার প্রভাবে, এইপ্রকার তির্যাগ্রোনি লাভ করিলেও, আপনা-দের মোহ তিরক্ষত হইরাছে ! আপনারাই ধন্ত ! যেহেতু, আপনাদের মন সেই পূর্বের অবস্থাতেই আছে। সেই কারণে বিষয়জনিত মোহেও উহা বিচলিত হইতেছে ন।। ইহাতে সমাগ্রণে দিদ্ধিনাভই করিবেন। সৌভাগাক্রমেই দেই ধীমান্ ভগবান্ মার্কণ্ডের আপনাদের কথা বলিয়া-ছিলেন। ञालनात्रा मर्कारलका विल्यस्तरल मकरणत्रहे मत्त्वर दत्रण कत्रिया थारकन। धरे मश्मात অতীব বিপ্ৎসন্থুল; সুতরাং এথানে ভ্রমণ করিতে করিতে মহুষোরা ভ্রাদৃশ তপস্থিগণের স্ক্লাভ করিতে সমর্থ হয় না। অতএব জ্ঞানদর্শী আপেনাদের স্ক্লাভ করিয়াও, আমি যদি त्रिक्षमत्नात्रथ इहेटल ना शांति, लाहा इहेटल, निक्त प्रदेश आत दकाशां अ इहेटल ना। आश्रनाता প্রবৃত্ত ও নিবৃত্ত এই বিবিধ জ্ঞানকর্মেই বেরূপ বিশদবৃদ্ধিদম্পন হইয়াছেন, আমার মতে এরূপ স্বার দিতীয় নাই। বিজোত্তমগণ ! থদি আমার প্রতি অনুগ্রহবিতরণে মন থাকে, তাহা হইলে, আমাকে সম্যগ্রাপে ৰক্ষামাণ বিষয় সকল বলিতে হইবে। এই স্থাবর-অঙ্গমাত্ম হু জগৎ কিরপে সমৃত্ত হইল ? প্রলয়কালেই বা কিরুপে ইহার পুনরায় লয় হইয়া থাকে ? কিরুপেই বা বংশ হইতে দেব, ঋষি ও পিতৃগণ এবং ভূতাদি সকলের জনাহয় ? মহস্তর সকলই বা কিরুপে প্রাত্ ভূতি হইয়া থাকে ? এ চণ্ভিল, বংশ সকলের আত্পূর্বিক ব্তান্ত, যাবতীয় স্পষ্টি ও যাবতীয় প্রাম, কর সকলের বিভাগ ও মহন্তর সকলের অবতা, পৃথিবীর সংস্থিতি ও পরিমাণ, সমুত্র, পর্বত, নদী ও কানন সকলের ব্রাস্ত, ভূলোক, অর্গলোক ও পাতাল সকলের বিবরণ, ত্র্যা চজ্রাদি গ্রহ, নক্ষত্র ও জ্যোতিক্ষগণের গতি, এই সমুদায় প্রশায়পর্যান্ত প্রবণ করিতে আমার ইচ্ছা হইগাছে। সমুদায় জগৎ প্রশয়কবণে নিপতিত হইদে, যাহা অবশিষ্ট থাকিবে, তাহাও জানিবার জন্ম আমি উৎস্ক হইয়াছি।

পিলরা কহিলেন, মুনিসত্তম! আপনি আমাদিগকে যে সবল প্রশ্ন করিলেন, ইহাদের তুলনাই হয় না। আমরা বিশেষরূপে কার্তন করিব, শ্রবণ করন। সমুদার প্রতের পারন্ধী, পরমবৃদ্ধিমান্ ও শাস্তবভাব দ্বিপুত্র ক্রোষ্ট্র কিকে ভগবান্ মার্কণ্ডের বেরপ বলিয়াছিলেন, আমরা তাহাই বলিব। প্রতো! ক্রোষ্ট্রকি দ্বিজ্ঞান্তমগণ কর্তৃক উপাসীন মহাত্মা মার্কণ্ডেরফেই হাই জিজ্ঞানা করিয়াছিলেন। ভ্রুনন্দন প্রতিমান্ হইয়া, তাহাকে যাহা বলিয়াছিলেন, আমরা বিশেষরূপে তাহাই বলিব, আপনি শ্রবণ করন। যিনি লগুতের নাথ ও উত্তবক্ষেত্র; যিনি বিষ্ণুরূপে ইহার স্থিতি বিধান করেন এবং রৌজ্যরূপ রুজরেপ প্রলয়ে সংহার করিয়া থাকেন, বেই প্রথোনি পিতামহকে প্রণিণাত করিয়া, ভগবান মার্কণ্ডের বলিতে লাগিলেন, স্ক্রে অবাজ্যানি জিতামহকে প্রণিণাত করিয়া, ভগবান মার্কণ্ডের বলিতে লাগিলেন, স্ক্রে অবাজ্যানি জিতামহকে প্রণিণাত করিয়া, ভগবান মার্কণ্ডের বলিতে লাগিলেন, স্ক্রে অবাজ্যানি রুজা উপেল হইবামাত্র, তৎক্ষণাৎ তাহার বদনচত্ত্রর হইতে বেদ ও প্রাণ বিনামত ইইল। পর্মবিগণ সেই প্রাণসংহিতাকে বছল আংশে বিভক্ত ও বেদেরও সহস্ত সহল বিভাগ প্রণন্দ করিলেন। সেই মহাত্মার উপদেশ ব্যতিরেকে ধর্ম্ম, জ্ঞান, বৈরাগা ও লম্মার্জাব, এই চারিটা সিদ্ধ হয় না। সপ্রবিগণ তাহার মন হইতে উত্ত ভ হইয়া, তাহার নিক্ট বেদ সকল গ্রহণ ও তদীয় মুন হইতে মন্ত্র অঞান্ত আদ্যা ঋষিগণ প্রাণ পরিগ্রহ করিলেন। চারন ভ্রুন্ত বিল্লন। চারন ভ্রুন্ত স্বরাণ গ্রহণ করিলেন। তাহাতেই আমার

ইহা শধিক্বত হইরাছে। আদ্য আমি তাহাই তোমাকে ঘলিব। উহা গুনিলে বা আলোচনা

করিলে, কলিকলুম্বিনাশ হয়। মহাভাগ ! তুমি দ্বিশেষ মনোনিবেশ সহকারে সম্লায়
আল্যোপান্ত প্রবণ কর। আমি দক্ষের নিকট পূর্বেইহা যেরপ প্রবণ করিয়াছি, ভোমার নিকট
দেইরূপে বলিব।

বিধাতা এবং আছি। কারণ, বাহাঁর জন্ম নাই, কয় নাই; যিনি চরাচর জগতের আশ্রের ও বিধাতা এবং অধিতীয় আধার, বাঁহা হইতে এই বিখের স্টে, হিতি ও প্রলর হইয়া পাকে, সেই আদিপুরুব ব্রহ্মাকে প্রণাম করিয়া এবং যিনি সকলের কারণ, বাঁহার কারণ কেছই নাই, বাঁহাতে সমুদর প্রতিষ্ঠিত আছে, যিনি সকল লোকের নেতা ও বৃদ্ধির আধার ভূমি, সেই হিরণাগভকে প্রণিণাত করিয়া, অতাংক্ট ভৃতপ্রপঞ্চ সমাগ্রপে কীর্ত্তন করিব। মহৎ হইতে বিশেষ পর্যায় সমুনায় ভৌতিক স্টে বিকার ও লক্ষণ এবং পঞ্চবিধ প্রমাণ সম্বেত আমুপুর্বিক বিগানে বলিব। যেরপে এই ভৃত্তস্তি পুরুষ কর্তৃক অধিষ্ঠিত ও ত্ত্তপ্ত নিতা হইলেও, অনিভার ক্লায়, অবস্থিতি করে, তাহাও কীর্ত্তন করিব। মহাভাগ। তুমি নিরতিশয় মনোনিবেশ সহকারে তাহা শ্রবণ কর।

বাহা অথকে নামে পরিগণিত, মহমিরা যাহাকে সুদুস্থ বরণা নিত্য স্থা প্রকৃতি বিদ্যা থাকেন, যাহা কোনকণে কোনকালে বিচলিত হয় না, করু পায় না, জীব হয় না, যাহার কোনকার ইয় ব্রা বা অব্যারণ হয় না, যাহা কাহারও আপ্রিত নহে; যাহা গন্ধহীন, নপহীন, রসহীন, শক্ষীন ও স্পর্শবিহীন, যাহার আদি নাই ও অস্ত নাই, যাহা অগতের উদ্ভবহান, যাহা হইতে সহ, রজ ও তম এই তিন ওণ উদ্ভূত হইয়াছে, যাহার বিনাশ নাই, যাহা চির্কাশ আছে এবং যাহার স্বরূপ পরিজ্ঞাত হওয়া সম্ভব নহে এবং যাহা হইতে, সকলের জন্ম হইয়া থাকে, সেই প্রধানবর্গ ব্রহ্ম সকলের অগ্রে বিরাজমান থাকিয়া, প্রলয়ের পুর্ব্ধে সমুদার জাগং ওতপ্রোতভাবে ব্যাপ্ত করিয়া বিবাজ করেন। সত্ব রজ ও তম এই তিন ওণ তাঁহাতে পরস্পরের অফুক্লে ও অব্যাঘাতে অধিষ্ঠিত আছে। স্প্রিকলে ক্ষেত্রকে অধিষ্ঠানবশতঃ, তিনি তর্ভং গুণের সাহায়ের স্কৃতিক্রায় প্রবৃত্ত হইলে, প্রথমে প্রধানতত্ব প্রাভূত হইয়া, মহুত্রকে আয়ৃত করে। বীজ বেমন অকু কর্তৃক আরৃত হয়, প্রধানত্ব তেমন মহুত্রকে আবরণ করিয়া থাকে। এই মহুত্র সারিক, রাজস ও তামস ভেনে তিনপ্রকার।

অনস্তর মহত্তব হুইতে তিবিধ অহুকার প্রাহ্ত হয়। ইহাদের নাম বৈকারিক, তৈলস ও তামদ। এই অহুকারকে ভূচাদি বিনিরা গাকে। মহত্তব বেমন প্রধানতব কর্তৃক আরুত হয়, এই অহুকারও তেমন মহত্তব কর্তৃক আরুত ও তৎপ্রচাবে বিরুত হয়রা, শক্ষরাত্রের কৃত্তিক আরুত ও তৎপ্রচাবে বিরুত হয়রা, শক্ষরাত্রের কৃত্তিক আরুত ও তৎপ্রচাবে বিরুত হয়রা, শক্ষরাত্রের কৃত্তিক আরুত ও তৎপ্রচাবের বিরুত হয়রা, লক্ষরাত্রের ক্রির হয়রা থাকে। তথন অহুকার শক্ষরাত্র বানু বায়ু প্রাহৃত্ত হয়। পান কি বায়র গুল। শক্ষরাত্র আবাণ পর্শনাত্রকে আরুত করে। আবাতের বায়ু বিরুত হয়রা, রুপমাত্রের স্পষ্টি করিয়া থাকে। বায়ু হইতে জ্যোতির উত্তব হয়। কি ক্র হয়রা, রুপমাত্রের স্পষ্টি করিয়া থাকে। বায়ু হইতে জ্যোতির উত্তব হয়। কি হয়রা থাকে। আহুতে করে। অনস্তর বসমাত্র জাব তর্তা বিরুত হয়রা, রুপমাত্রের স্পষ্টি করিয়া থাকে। তাহাতে বৃশ্বির বায়ু রুপমাত্রের স্বাহার গুল। এইরপে ভত্তৎ প্রার্থিকে। তাহাতে পৃথিব বিরুত্ত হয়ার গুল। এইরপে অবিশেষ নির্মাচন করা যায় না। সেই ক্রম্ম ইহালিগকে বিশেষ নির্মাচন করা যায় না। সেই ক্রম ইহালিগকে বিশেষ নির্মাচন করা যায় না। সেই ক্রম ইহালিগকে বিরুত্ত হয়া হয়র হাতে ব্রুত্তির হয়। প্রায় করে ব্রুত্তির হয়। বায়র সর্মাত্রির তর্তারির অহুকার হুতে ব্রুত্তির হয়। পঞ্চ জ্যাবের ও পঞ্চ করে। বিরুত্ত বরারিক স্পষ্ট প্রবিতিত হয়। পঞ্চ জ্যাবের ও পঞ্চ করে।

ক্রির এই দশ বৈকারিক দেবতা। তর্মধ্যে মন একাদশ। ইত্রা বৈকারিক দেবতা বলিয়া পরি-গণিত হইরা থাকে।

কর্ণ, তক্, চকু, জিহ্বা, নাসিকা, ইহাদের বারা শব্দ ও স্পর্শাদির জ্ঞান হয়। এইজন্ম ইহা-দিগকে ব্রিযুক্ত বলে। আরে পাদ, পায়ু, উপস্থ, হস্ত ও বাক্ ইহারা কর্ণেক্রিয়। কেন না, ইহা-দের বারা গমন, মলমুহবিসর্জন, আনেনদ, শিল্প ও বাক্য এই কয়টী কার্য্য সমাহিত হয়।

শক্ষমাত্র আকাশ স্পর্শমাত্রে আবিষ্ট হইলে, ত্রিগুণ বায়ুর উত্তব হয়। স্পর্শ ইহার গুণ। শক্ষ ও স্পর্শ এই ছইটা গুণরূপে আবিষ্ট হয়। অনস্তর গুণত্রয়ন্ত্র আয়ির উত্তব হয়। ইহাতে শক্ষ, স্পর্শ ও রূপ এই তিন গুণের আবেশ হইয়া থাকে। গরে শক্ষ, স্পর্শ ও রূপ রুদমাত্রে সমাবিষ্ট হইলে, গুণচ্চুইরবিশিট রুদাত্মক জলের উত্তব হয়। জনস্তর শক্ষ, স্পর্শ, রূপ ও রুদ গদ্ধাত্রে সমাবিষ্ট ও তৎসহারে দংহাত হইয়া, এই পৃথিবীকে আবৃত্ত করে। তাহাতেই পঞ্জুণবিশিষ্ট স্থুলাক্তি ভূমি ভূতগণমধ্যে দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই করেণেই তাহারা শাস্ত, বোর ও মৃঢ় বলিয়া, বিশেষ নামে পরিগণিত হইয়া থাকে। ইহারা পরস্পরে অন্থ প্রিষ্ট হইয়া, পরস্পরকে ধারণ করে। এই খনাবুত সমুদ্র লোকালোক ভূমির অন্ধানিষ্টি হইয়া আছে। প্রথম প্রথমের গুণ উত্তরোত্তর অন্থ বিষ্ট ইইয়া থাকে। যেমন আকাশের গুণ বায়ুতে ইত্যাদি। ইহারা পরস্পর মিলিত না হইয়া, থবন পৃথক্ থাকে, তথন প্রজা স্থি করিতে গারে না। ইহারা যথন প্রস্পর সংযুক্ত হইয়া, পরস্পরকে আশ্রের করিয়া, সম্পূর্ণরূপে ঐক্য অবলম্বন করে এবং যথন প্রস্থের অধিষ্ঠান ও প্রকৃতির অন্থ প্রাপ্ত হয়া, তথন মহৎ হইতে বিশেষ পর্যান্ত ঐ সমন্ত পদার্থ অন্ত উৎণাদন করিয়া ধাকে। ঐ অন্ত জ্মবৃদ্ধ্বের আয় স্বিল আশ্রের করিয়া, ক্রমাগত বুদ্ধি প্রাপ্ত ইয়।

তথন ব্দাণজোত কেবাজাও সেই প্রাক্ত অতে বর্দ্ধিত হইয়া থাকেন। তিনিই প্রথম শরীরী এবং তিনিই পুরুষ বলিখা কথিত হন। তিনিই ভূতগণের আদিকর্তা ব্রহ্মা সকলের অতে বিরাজনান হন। তাহাতেই এই স্থাবর-জ্লমাত্মক সম্দায় বৈলোক্য ব্যাপ্ত হইয়া আছে। সাগর সকল সেই বিরাটরূপী অতের গর্ভগণিল। দেব, অস্ত্র ও মানুষ দমেত সম্দায় জগৎ সেই অতেই প্রতিষ্ঠিত অতে।

খীপ, অধি, সমুদ্র ও জ্যোতিক সমেত সম্পায় লোক তাহাতেই অবস্থিতি করিতেছে। রূপ, অনিল, অনপ ও আকাশ এবং পৃথিবী ইহারা উত্তরেত্তর দশগুণ বিধানে বহিন্দিকে ঐ মগুকে আবৃত করিবাছে। আবার, তৎপ্রমাণ মহন্তত্ব ইহাদের সহিত উহাকে বেইন করিবাছে। মব্যক্ত অর্থিত এই মহানের সহিত তাহাকে আবৃত করিবা বিরাজ করিতেছে। এইন্দেপ ঐ অগ্রু উল্লিখিত সপ্ত প্রাকৃত আবিরণে আবৃত হইরাছে। এইরূপে অই প্রকৃত পরপারকে, আবৃত করিবা অবস্থিতি করিতেছে। এই প্রকৃতি নিত্যক্রপা। যে ব্রহ্মাথ পুরুষের দ্বা তোমার নিকট বলিশাম, তিনি এই প্রকৃতির অন্তর্নিবিই হইরা আছেন। সংক্ষেপে এ বিষয় গিতেছি, প্রবণ করেন। জলমগ্র ব্যক্তি যেরূপে জল হইতে উঠিবার সমরে জল ও জলসম্ভূত বন্ধ বিশিশ্র করিবা থাকে, ব্রহ্মাণ্ড তজ্ঞপ প্রকৃতির বিভূ। এই প্রকৃতিকে ক্ষেত্রে ও ব্যক্ষাণ বাক্তি করিবা থাকে। ইহাই ক্ষেত্রে ও ক্ষেত্রের বিজ্ঞা এই প্রকৃতিকে ক্ষেত্রের বন্ধ করিবা থাকে। ইহাই ক্ষেত্রেও ক্ষেত্রের লক্ষণ, আনিবে। এইরূপে ক্ষেত্রের বন্ধ করিবা থাকে। ইহাই ক্ষেত্রেও ক্ষেত্রের লক্ষণ, আনিবে। এইরূপে ক্ষেত্রের বন্ধ করিবা থাকে।

ইতি ত্রন্ধোৎপত্তি নাম পঞ্চতারিংশ অগ্রাষ্ট্রীক্র

# यऍ ठेका तिः भ व्यथाता ।

ক্রেট্রিক কহিলেন, তগবন্। আপনি অওের রাম ও ব্রহ্মাণ্ডে মহাপ্রভাব ব্রহ্মার উংপত্তি যথাবং কার্ত্তন করিলেন। অবি ভৃগুকুলোয়ব । আপনার নিকট অধুনা ওনিতে ইছা করি, প্রবায়তে সমুদায় সংহার প্রাপ্ত হইলে, পুনরায় ভূতগণের কিরুপে উংপত্তি হইলাছিল ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই বিশ্ব জগৎ প্রকৃতিতে যথন লয়প্রাপ্ত হয়, বিঘান্গণ তাহাকে প্রাকৃত প্রলর বলিয়া থাকেন। প্রকৃতি আ্থারাতে অব্স্থিতি করিলে, সম্পুর স্টু পদার্থ লয়প্রাপ্ত হয়। প্রকৃতি ও পুরুষ উভরে যথন সাধর্মো অবস্থিতি করেন, তথন সত্ব ও তম এই ছই গুণ সমজে অধিষ্ঠিত হট্যা থাকে। তথন উভয়ের মধ্যে কাহারও কোন রূপে বৃদ্ধি বা ন্নতা থাকে না। উভয়ে পরস্পর সমভাবে সংস্কৃত হট্যা অবস্থিতি করে। যেমন ভিতে তৈল ও ছুর্মে স্বত্, সত্ব ও তমোগুণেও তেমন রজোগুণ অকুস্ত হট্যা, অবস্থিতি করে।

ব্দার আযুর পরিমাণ বিপরার্দ্ধ কাল। তাঁহার দিনের পরিমাণ যেমন, রাত্তিরও পরিমাণ দেই কণ। তাঁহার আদি নাই; তিনি জগতের আদি ও পতি এবং সকলের উৎপত্তি-দান এবং সর্বাপেক্ষা প্রধান। তাঁহার স্বরূপ চিস্তা করিয়া, নির্ণির করা যায় না। তিনি ক্রিয়ার অতীত ও পরমেশ্ব। তিনি দিনমূথে জাগরিত হইয়া, প্রকৃতি ও পুক্র উভয়ে অমুপ্রবেশপূর্বক পরম বোগ সহকারে তাঁহাদিগকে কোভিত করেম। প্রকৃতি কৃভিত হইলে, পেই ব্দ্ধানামধারী দেবতঃ অওকোষ আশ্রম করিয়া, উৎপন্ন হন।ইহা আমি তোমাকে বলিয়াছি।

তিনি প্রথমে ক্ষৃতিত করেন, পরে প্রকৃতিব পতি হইয়া, স্বয়্র ক্ষৃতিত হইয়া পাকেন। এই-রপ সকোচ ও বিকাস বিবিধ গুণ সাহায়ে তিনি প্রকৃতিরপে বিরাজ করেন। সেই জগদ্যোনি নিগুণ ইইলেও, উৎপন্ন হইয়া, রজোগুণ আশ্রুণপূর্পক অলারপে প্রায়ভূতি হইয়া, স্টে করিতে প্রত্ত হন। অলারপে প্রজা স্টে করিয়া, সম্বার্থ করি বিরাজ করেন। জনস্তর তমোগুণের উদ্রেক্ত পরিগ্রহপূর্বি পরিগ্রহপূর্বিক শর্মন করিয়া থাকেন। এইরপে তিনি নিগুণ ইইলেও, উক্ত কাল্রেরে গুণ্রুর জলা করেন। সকলের উদ্রেক্ত সেই পরমেশ্বর এইরপে স্কলন, পালন ও লাল্রেরে গুণ্রুর করিয়া থাকেন। সকলের উদ্রেক্ত সেই পরমেশ্বর এইরপে স্কলন, পালন ও লাল্রেরে গুণ্রুর করিয়া থাকেন। সকলের উদ্রেক্ত নি লোক সকলের স্টেকিবরেন, কল্লের সহার্র করিয়া থাকেন এবং বিষ্ণুরে সকলের পালন করেন। এইরপে পেই সম্বার্থ করিয়া থাকেন। তন্মধ্যে রজোগুণ সাকাৎ ব্রহ্মা, তমোগুণ রক্ত এবং সম্বার্থ করিয়া থাকেন। তন্মধ্যে রজোগুণ সাকাৎ ব্রহ্মা, তমোগুণ রক্ত এবং সম্বার্থ করিয়া আছেন। কণ্কালও ইইলের বিয়োগ হয় না এবং পরলার কণ্কালও কাহাকে ক্রিরা আছেন। কণ্কালও ইইলের বিয়োগ হয় না এবং পরলার কণ্কালও কাহাকে কেহ পরিভাগি করেন না।

এইরপে দেবদেব চতুমুখি একা জগৎস্টির পুর্বেরজাঞ্গ আপ্রার ক্রিয়া, সকলের স্টিকার্যে, প্রবৃত্ত হন। তিনি হিরণাগর্জ: তিনি দেবদি; তিনি প্রকারায়রে অনাদি। তিনি ভূপদা কর্নিকা আপ্রাক্রিয়া, সকলের অপ্রে প্রাছত্ত হন। সেই মহায়ার পরমায়র পরিমাণ আক্ষামানের একশত বংসর। তাহার সংখ্যা বা গণনা বলিতেছি, প্রবণ কর। পঞ্চদশ নিমিষে এক কাঠা হয়। তিংশং কুটাকে কলা বলে। তিংশং কলায় এক মুহুর্জ হয়। প্রক্রপ তিংশং মুহুর্জে মহ্বাদিগের এক অইছায়াত্র বলিয়া থাকে। তিংশং অহোয়াত্র বা ছই পক্ষকে এক মাস্বলে। ছয় মানে এক অহন, ছই অমনে এক বংসর। দক্ষিণ ও উত্তরভেদে আয়ন ছিবিধ। প্রক্রণ মহ্বামানের এক বংসর দ্বিগণের এক অংহারাত্র। তর্মধ্যে উত্তরাহণ দেবগণের দিন।

ঐরপ দেবমানের বাদশ সহস্র বংসরে সত্যত্তেতাদিসংক্ষক চত্যুগ বিনিপার হইরা থাকে। তাহাদের বিভাগ প্রবণ কর। চারি সহস্র দিব্য বংসরে সত্যযুগ হইরা থাকে। তাহার সন্ধ্যা ও সন্ধ্যাংশ উত্তরে চারি শত বংসর। দেবমানের ভিন সহস্র বংসরকে ত্রেতাযুগ বিলয়া থাকে। তাহার সন্ধ্যা ও সন্ধাংশ উত্তরে দেবমানের ভিন শত বংসর। হুই সহস্র দিব্য বংসরে বাপর যুগ হইয়া থাকে। উহার সন্ধ্যা ও সন্ধ্যাংশ উত্তরে হুই শত দিব্য বংসর। কলিয়ুগের পরিমাণ দেবমানের এক সহস্র বংসর। উহার সন্ধ্যা ও সন্ধ্যাংশ উত্তরে এক শত দিব্য বংসর। ক্রিয়া এই-রূপে সমুদার যুগের পরিমাণ বাদশ সহস্র দিব্য বংসরে বিভক্ত করিয়াছেন।

ইইাকে সহল্প গুণ করিলে, যাহা হয়, তাহাই অন্ধার এক দিন, বলিয়া থাকে। আনন্য একার সেই এক দিনে চতুর্দশ মন্থ বিভাগ ক্রমে প্রাহ্তুত হইয়া থাকেন। তাঁহাদের জাবার সহল্র বিভাগ পরিকরিত হয়। দেবগণ, সপ্তবিগণ, ইল্ল, মন্থ, মন্থর প্রগণ, নরপতিগণ ইহারা সকলে মন্থর সহিত যেমন স্প্রতিহন, সেইরূপ আবার পূর্ববিৎ সংহার লাভ করেন।

এক সপ্ততিরও অধিক চত্ত্রি এক মখন্তর হন। মহাযানের বংসর অনুসারে তাহার সংখ্যা বলিতেছি, <u>অবদুজরা সম্পূর্ণ</u> বিংশৎ কোটি সপ্ত্রষ্টিনিযুত্ত, বিংশতি সহস্র মনুষাবৎসরে এক মন্ধ্র তর হয়। অধুনা দিবামানের বর্ষ অনুসারে প্রবণ কর।

ৰিপ্ৰাশ্য সহস্ৰাধিক অষ্টশতসহস্ৰ দিব্য বংগরে এক মন্বন্ধর হয়। এই কালকে চতুর্দশ গুণ করিলে, ব্ৰহ্মার এক দিন হইয়া থাকে। ব্ৰহ্মন্ ! এই ব্ৰাহ্মাদিনের অবদানে যে প্রশন্ন হয়, ভাহাকে পণ্ডিতেরা নৈমিত্তিক প্রশন্ম ব্লিয়া থাকেন।

ভূলোক, ভ্রলোক ও প্রলোক দকলেই বিনাশশীল। তৎপ্রযুক্ত সকলেরই বিনাশ হর। কেবল মহলোক অবশিষ্ট থাকে। মহলোকনিবাদীরাও প্রলয়সমন্মন্ত্ত তাপে জনলোকে গমন করে। বিভ্রন একাবি হইরা উঠে। ব্রহ্মা রাত্রিতে শ্যন করেন। ব্রহ্মার রাত্রিও, তাহার দিনের সমান পরিমাণবিশিষ্ট। এই রাত্রির অবসানেই পুনবায় স্থিকিয়ার আরম্ভ হয়।

এইরূপ কাহোরাত্রগণনার একার যে এক বংসর হয়, তাহাকে শতগুণিত করিয়া, পুনরার শতগুণিত করিলে, যে সংখ্যা হয়, তাহার নাম পুর। ঐরূপ পঞ্চাশং বর্ষে পরার্দ্ধ হইয়া থাকে। বিজ্ঞান এইরূপে একার এক প্রার্দ্ধ অতীত হইয়াতে। বাহার অবসানে পাদ্ধনাক মুহাকর সক্তাতিত ইইয়াতিল। একণে দ্বিতীয় প্রান্ধ চলিতেতে। ইহার নাম বারাহ কয়। ইহাই প্রাপ্ম কয় ব্লিয়া প্রিগণিত হইয়া থাকে।

ইতি ব্রহার স্থায়ুর পরিমাণ নাম ষট্চতারিংশ অধ্যার।

### সপ্তচতারিংশ অধ্যায়।

কোষ্টুকি কহিলেন, প্রজাপতিপতি আদিকর্তা ভগবান্ একা যেরপে প্রজাস্টি করেন, বিভারপুর্কক আলাকে বলুন।

মার্কিণ্ডের কহিলেন, একন্। সেই লোক্সটা নিতাম্বরণ ভগবান্বেরপে প্রজাসকলের ক্টিক্রেন. তাহা তোমার নিক্ট বলিব।

পদাবসান প্রণাদে তিনি নিজা হইতে সম্থিত ও সত্তণে সমাবিষ্ট হইয়া, অবলোকন করিলেন, লোক শৃষ্ট রহিয়াছে। সেই ব্রহ্মস্থরপধারী জগতেব স্টিনাশকর্তা নারায়ণের উদ্দেশে এইরপ শ্লোক উদাহত হইয়াছে, জলকে নাব বলে। তিনি তাহাতে শয়ন করেন, বলিয়া, নারায়ণ নামে পরিগণিত হয়েল। তিনি সেই সলিল মধ্যে জাগরিত হইয়া, অনুমানবলে অবগত হইলেন, নদিনী তাহাতে মগা হইরা আছে। তথন তাহার উদ্ধানে উৎস্ক হইরা, ক্লাদিতে বেমন থত ও ক্র্মাদি শরীর আশ্রম করিরাছিলেন, তহুৎ শুকরম্বি পরিগ্রহ করিবেন। এইরূপে দেই ব্রগ, সর্কপ্রেভ, সর্ক্রারণ, বেদযজ্ঞময় ব্রহ্মা বেদযজ্ঞময় দিবা দেহ ধারণ করিরা, জলমধ্যে প্রবেশ। বং পৃথিবীকে পাতাল হইতে উদ্ধার করিয়া, জলোপরি স্থাপন করিলেন। তৎকালে জনলোকহত সিদ্ধাণ তাহার ধ্যানধারণায়-প্রবৃত্ত হইলেন। পৃথিবীর দেহ অতীব বিস্তৃত বলিয়া, জলের
পরি স্থাপন করিবামাত্র, নৌকার ভাষা, অবৃহত্তি করিল; মধা বা প্লাবিত হুইল না।

অনস্তঃ তিনি পৃথিবীকে সমান করিয়া, তাহাতে পর্বত সকল কৃষ্টি করিলেন। সৃহর্ভক অনলে বিক্রিটি দহমান হওরাতে, তদ্বারা পর্বত সকল বিশীর্ণ হইয়াছিল। শৈল সকল একার্ণবে ময় ইয়াছিল। বায়ু বারা জল সংহত হইয়া, বে যে স্থলে নিবদ্ধ হইয়াছিল, সেই সেই স্থলেই পর্বত কল প্রাছ্ত্তি হয়।

অনস্তর তিনি সপ্তবীপশোভিত ভ্বিভাগ করিয়া, পৃর্বের তায়, ভ্রাদি চারি লোক কলনা বিলেন। তিনি পৃর্বাকলাদির তায়, স্ষ্টিবিষয়ক চিন্তায় প্রবৃত্ত হইলে, তমোমর স্ষ্টি প্রান্ত্ত ভ্রান এই স্ষ্টি বৃদ্ধিক নহে। তম, মোহ, মহামোহ, তামিল্ল, অন্ধ্রামিল্ল, অবিদ্যা এই বিটেটী তমোমর স্ষ্টির অন্তর্গত। ইহারা মহাপ্রভাব ব্রন্ধা হইতে প্রান্ত্রভূতি হইল। ধ্যান করিতে বিতে তাহাঁ হইতে এই যে পঞ্চবিধ স্প্তি হইল, ইহাতে কোনরূপ জ্ঞানের বা বৃদ্ধির লেশমাত্র । কি বাহা, কি অন্তর কুত্রাপি প্রতিভারও সম্পর্ক নাই। আত্মা ইহাতে আছের ভাবে বরাল করেন। ইহা কেবল পর্বতিপরম্পরার স্টিমাত্র। ইহাতে মুধ্য অর্থাৎ প্রধান প্রধান পর্বত ক্র প্রান্ত প্রত্তার নাম মুধ্যসর্গ।

এই সৃষ্টি ধারা কোনকাপ ফল হইল না দেখিয়া, তিনি পুনরায় অস্থাবিধ স্টেকরনায় প্রবৃত্ত । কৈনেন। তাহাতে তির্ঘাক্সোতঃ প্রাছ্ত হইল। তির্ঘাক্ প্রবৃত্ত বলিয়া তাহার নাম চর্ঘাক্সোতঃ। পঞ্ প্রভৃতি তির্ঘাক্ অর্থাং নীচজাতীয় জীবসমূহ এই তির্ঘাক্ স্রোত নামে বিখাত। ইহারা তমোঞ্চাল আছেয়, অবিদারে বশতাপয়, উৎপথগ্রাইা, অজ্ঞানে জানমানী, মহংরুত ও অহমভিমান বিশিষ্ট। ইহারা অষ্টাবিংশং ভাগে বিভক্ত এবং পরক্ষর আবৃত্ত অর্থাং কছুই জানে নাও ব্যে না এবং ইহাদের অস্তরে প্রকাশ অর্থাং জানের ক্রি মাত্র হুইয়া থাকে; স্তরাং ইহাদেরও সৃষ্টি করিয়া, কোনকাপ ফল হইল না, দেখিয়া তিনি পুনরায় ধানে প্রবৃত্ত হইলে, উর্জ্বোতোনামক অন্থাবিধ সৃষ্টি প্রাছভূতি হইল। এই সৃষ্টি স্বঞ্গপ্রধান। তজ্জ ইহার আবৈতি ও স্থের প্রচ্রতা দক্ষিত হইয়া থাকে। এই ভৃতীয় সৃষ্টির নাম দেবস্টি। ভগবান্ বন্ধা সৃষ্টে চিত্তে ইহার কয়না করেন। এই সৃষ্টি প্রাছভূতি হইলে, বন্ধা প্রতিমাত্র প্রতি হইলেন।

অনন্তর তিনি অন্তবিধ উৎকট সাধক স্টির ক্ষা ধ্যান করিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি বাছা ধ্যান বা চিন্তা করেন, ডাহা কথন নিজ্প হয় না। এইজন্ত ধ্যানে প্রবৃত্ত হইলে, অর্কাক্ আনোনাক সাধক স্টি প্রাচ্তৃত হইল। অর্কাক্ অর্থাৎ রজ ও ডম এই তুই গুণের অনুসারেই প্রধানত: প্রবৃত্ত হইয়া থাকে, এইজন্ত ইহার নাম অর্কাক্স্রোত:। অথবা, অধ্যাদিকেই বিস্চ্চান বাসাধার বিনির্কাহিত হয়, এইজন্ত ইহাকে অর্কাক্স্রোত বলে। অথবা, দেবতা অপেকা সম্পূর্ণ অংশে নীচ এবং অনেক অংশে তির্যাক্স্রোতের সমান, সেইজন্ত অর্ধাক্স্রোত নাম হইন্যাছে। মনুষ্যাদিগকে অর্কাক্স্রোত বলে। ইহারা তম ও রজোগুণ প্রধান; সেইজন্ত ইহাকের হুংথের ভাগই অধিক এবং সেইজন্ত ইহারা ভূরোভ্য: কার্যাম্টানে প্রবৃত্ত হয়। ইহারা প্রধানত: প্রতিভাবিশিষ্ট এবং সেইজন্ত অন্তরে ও বাহিরে প্রকাশসম্পর। এবং ইহারা স্থাইর উদ্দেশ্ত সাধ্যন সম্প্র

পঞ্চম স্টির নাম অমুগ্রহস্টি। ইহা চারিভাগে বিভক্ত। যথা, বিপর্যায়, সিদ্ধি, শান্তি ও

তৃষ্টি। অতীত ও বর্তনান উভয় বিষয়ই এই অনুগ্রহক্তির জানগোচর ক্ইরা থাকে। ইংাই ভ্তাদি ভ্তগ্ণের বঠ ক্তি। ইংারা সকলেই পরিগ্রহনীল, সংবিভাগনিরত ও সকলের প্রেরক। বন্ধার প্রথম ক্তি মহন্তব। বিতীয় ক্তি অন্যাত্রপরশান, সংবিভাগনিরত ও সকলের প্রেরক। বন্ধার প্রথম ক্তি মহন্তব। বিতীয় ক্তি অন্যাত্রপরশার। ইংারই নাম ভ্তক্তি। ভূতীর ক্তি বৈকারিক। ইংাকে ই ক্রিয়ক্তি বিলয়া থাকে। এই রূপে ব্রুল্প্রক এই সকল প্রারুত্ত ক্তি ক্রেন। তাঁহার চতুর্থ ক্তি ম্থাসর্গ। ম্থা ভ্রের সকল এই ক্তির অন্তর্গত। উলিবিত তির্ঘাক্রোত, যাহা তির্ঘাগ্যানি বলিলা পরিগণিত, তাহা পঞ্চম ক্তি। বঠ ক্তি উর্জ্বোত:। ইংার নাম দেবক্তি। সপ্রম ক্তি অর্থাক্রোত:। ইংার নাম দানষক্তি। অন্তর্গত ক্তি অনুত্রহ। ইংা সন্থ ও তম উভয় গুণ বিলিই। ইংার মধ্যে পাঁচেটা বৈরুত ক্তি ও তিনটা প্রারুত ক্তি। নম ক্তি প্রারুত ক্তি। বারুত ক্তি। এই নবিষ ক্তির নাম কোমার। তোনার নিকট প্রজাগতিবিহিত প্রারুত, বৈরুত ও কৌমার এই নবিষ ক্তি কীর্তন করিলাম।

ইতি প্রাক্তত ও বৈক্বত সৃষ্টি নাম সপ্তচন্বারিংশ অধ্যার।

### অফটতত্বারিংশ অধ্যায়।

ক্রেষ্ট্রিক কহিলেন, ব্রহ্মন্! আপনি সংক্ষেপে সমুদায় স্টিবর্ণন করিলেন। কিন্তু দেবাদির স্টিবিস্তারপূর্বক আমার নিকট কীর্তন করুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ত্রহ্নাণ্ প্রহ্নাণ্টি করিতে প্রবৃত্ত হইলে, দেব হইতে স্থাবর পর্যাত চতুর্বিধি প্রালা তাঁহার মন হইতে সমুৎপন্ন হইল। তাহারা সকলেই শুভাশুভ প্রাক্তন কর্মাবনে সমুদ্ধ ত ও এইজন মুক্তিলাভে অসমর্থ হইয়া, প্রালয়কালে সংহার প্রাপ্ত হয়।

ত্রন্ধা দেব, অস্ত্র ও পিতৃগণ এবং মন্ত্র্যস্থ এই চতুর্বিধ প্রজার স্ষ্টিকামনাবশস্থল হইয়,
শীয় স্বাত্মাকে সেই স্নিলের সহিত সংবোজিত করিলেন। তাহাতে সেই প্রজাপতির তমোমাত্রাব অতিমাত্র প্রাত্ত্র্বাব সংঘটিত হইল। তিনি স্ষ্টি করিতে সমুৎস্থক হইলে, তাহাঁর জ্বন হইতে প্রথমে অস্ত্র স্কল প্রাত্ত্র্বি হইলু। তথন তিনি ত্যোমাত্রম্বী সেই তমু পরিত্যাগ করিলেন। ত্যোগ করিবামাত্র ঐ দেহ তৎক্ষণাৎ রাত্রিরপে সমুৎপন্ন হইল।

অনস্তর তিনি অন্তবিধ দেহ ধাবণ করিয়া, স্থান করিতে উৎস্ক হইয়া, প্রীতি অন্তব করিলে, সজ্পুণের উদ্রেকবশতঃ ভাহাঁর মুথ হইতে দেবগণের উদ্ভব হইল। তিনি সেই দেহও তাগা করিলেন। ত্যাগ করিবামাত্র উহা সজ্প্রধান দিবসরূপে পরিণত হইল।

অনস্তর তিনি সন্ত্মাত্ররূপিনী অপর তমু পরিগ্রহ করিয়া, পিতৃবং মুনুনে প্রবৃত্ত হইলে, পিতৃগণ প্রাতৃত্ত হইলেন। পিতৃদিগকে দর্শন করিয়া, তিনি সেই দেহও তার্টিক ছিরিলেন। ত্যাগ করিবান্ মাত্র উঠা দিন ও রাত্তি উভয়ের অস্তরবর্তিনী সন্ধ্যারণে সমুৎপল্ল হইল।

তখন তিনি রজোমাত্রমর অভ শরীর পরিগ্রহ করিলে, রজোমাত্র হইতে সমৃত্ত মহ্যা-গণের আবিভাব হইল। তিনি মহ্যাদিগকে সৃষ্টি করিরা, সেই দেহও ত্যাগ করিলেন। ত<sup>থন</sup> ঐ দেহ জ্যোৎসামূর্ত্তি পরিগ্রহ করিল।

ছিল। এই রূপে ধীমান্ দেবদেব ব্রহ্মার ঐ সকল দেহই রাজি, দিন, সন্ধা ও জ্যোৎমা নামে বিধ্যাত হইরা থাকে। তথ্যধ্যে জ্যোৎমা, সন্ধ্যা, দিন এই তিনটী সন্ধ্যাত্রময়। আর রাজি তমোনাআম্বর্নপিনী। এই কারণেই দেবগণ দিবাভাগে ও অস্ত্রগণ রাজিযোগে বলসম্পন্ন হইরা থাকেন এবং এই কারণে মহুযোরা জ্যোৎমাগমে ও পিতৃপুরুষেরা সন্ধ্যাসময়ে বলশালী ও শক্তগণের

জ্ঞের হন, সক্ষেত্র নাই। ইহাদের বিপর্যার প্রাপ্ত হইলেই, বিপর্যারপ্রত হইরা থাকেন। জ্যোৎলা, রাত্রি, দিন, সন্ধ্যা, এই চারিটী প্রভ্ বন্ধার সম্ব রক্ত তম এই গুণতার বিশিষ্ট শরীর প্রকণ।

প্রজাপতি ব্রহ্মা এই চতুর্বিধ শরীর সমুৎপাদনপূর্বক ক্ষা ও তৃষ্ণার সমাজান্ত হইরা, রন্ধনী বোগে রক্ত ও তামোগুণ মন্ত্রী অভবিধ তহু পরিগ্রহ করিলেন। অনস্তর ভগবান্ অক্ত রাজির আন্ধনারে বিরূপ ও শাশ্রসম্পন্ন ক্ষাভ্রগণের স্পষ্ট করিলে, ভাহারা ভাইার সেই দেহকে ভক্ষণ করিতে উদ্যত হইল। তন্মধো বাহারা, রক্ষা করিব, এইপ্রকার বাফ্য প্রয়োগ করিল, ভাহারা রাক্ষস হইল। আর যাহারা, বক্ষণ অর্থাৎ ভক্ষণ করিব, বলিল, ভাহারা যক্ষ হইল। ভাহাদিগকে দর্শন করিয়া, জোধ ব্লক্ষে: বক্ষার মন্তক হইতে কেশ সকল বিশীন হইল। ঐ সকল সর্পণ, অর্থাৎ গমন বশতঃ স্প এবং হীনত্ব প্রয়ুক্ত অহি হইল। স্পদিগকে দর্শন করিয়া, তিনি ক্রোধ্বশতঃ ক্রোধাত্মা-গণের স্পষ্ট করিলে, কপিলবর্ণ, উগ্রপ্রকৃতি, মাংগাদ ভূতগণের আবির্ভাব হইল।

অনস্তর গো অর্থাৎ বাকোর ধানি করিতে করিতে, তাহাঁর পুত্ররপে গন্ধবগণের এনা হইল।
এইরপে উল্লিখিত অষ্টবিধ দেবযোনির স্টে হইলে, সেই বিভূ স্বকীয় দেহ হইতে পশু ও পদী গণের, মুথ হইতে ছাগগণের, বক্ষ হইতে মেঘগণের, উদর হইতে গোগণের, পার্যার ও পদ্যুগ্রা হইতে অস্থ, মাতঙ্গ, গর্দ্ধ, শশক, মুগ, উষ্ট্র, অস্থতর ও অভ্যাভ্য বিবিধ রূপবিশিষ্ট জ্বাতি স্কলের স্টে করিলেন। তাহাঁরে রোম হইতে ফলম্শশালিনী ওধ্ধি স্কল স্মৃত্ত হইল।

এইরপে বিভূ ব্রহা পশু ও ওষ্ধি সকল স্টে করিয়া, যজ করিলেন। ঐ যজা করের আদিতে বেতাযুগের মূপে অহ্টিত হইয়াছিল। গো, অজ, মহিব, মেষ, অখ, অখতর ও গদভ ইহাদিগকে গ্রাম্পশু বলে।

আরণ্য পশুর বৃত্তাস্ত বলিতেছি, শ্রবণ কর। খাপদ, বিখ্ব, হন্তী, বানর ও পক্ষী এবং জলচর পশু, ও সরীস্প, গায়ত্রী, আচ্, ত্রিবৃৎ, সাম, রণস্তর, অগ্রিটোম বজ্ঞ এই সকলকে তিনি প্রথমম্ব ংইতে রচনা করিলেন। দক্ষিণ মুথ ংইতে বছু, তৈর্পু ভছ্না, পঞ্চদশ ন্থাম, বৃহৎসাম ও উক্ধ
এই সকলের স্টি হইল। সাম, জগতী ছন্দ, পঞ্চদশ ন্ডোভ, বৈরূপ, অতিরাত্ত, ইহারা পশ্চিমম্ব ংইতে প্রাহ্ত্ত হইল। একবিংশ অথর্জাণ; আপ্রোধ্যমাণ, অমুষ্ঠুভ, বৈরাজ, এই সকল
উঠর মুথ হইতে জন্ম গ্রহণ করিল।

সেই ভগবান্ বিফু কল্লের আদিতে বিহাৎ, অশনি, মেদ, ইক্লংছ ও পকী সকলের সৃষ্টি করেন। উচাবচ ভূত সকল তাঁহার গাত্র হইতে সমৃত্তু হইরা থাকে। তিনি প্রথমে দেব, অহর ও পিতৃ প্রভৃতি চতুর্বিধ প্রজা সৃষ্টি করিয়া, পরে হাবর ও লক্ষম সকলের স্টি করেন। তাহাতে যক্ষ, পিশাচ, গদ্ধর্ব, অপারা, নর, কিয়র, রাক্ষস, পণ্ড, পকী, মৃগ ও উরগ এই সকলের উদ্ভব ইয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে হাবর, জঙ্গম, নখর, অবিনখর, যাহার যেরপ কার্যা, তিনি স্টি করিবার পূর্বের তালের করেন। ভাহারা জ্মায়াই তত্তৎ কার্য্যের অনুসারী হয়। বিশ্বে অহিংল্র, মৃত্ ক্রিরারণ করেন। ভাহারা জ্মায়াই তত্তৎ কার্য্যের অনুসারী হয়। বিশ্বে অহিংল্র, মৃত্ ক্রিরারণ করেন। তাহার তাহাই ঘটরা থাকে। সকলের নিমন্তা ও বিধাছা সেই ক্রন্তাই ক্রেরা থাকে। সকলের নিমন্তা ও বিধাছা সেই ক্রন্তাই প্রস্তা করেন। এই ক্রেরা বিশ্বর সকলের ভিন্ন ভিন্ন করেন। ও বিনিরোগ বিধান করিয়া থাকেন। তিনি আদিতে বেদশন্দ সকল হইতেই দেবাদি ভূতগণের নাম, রূপ ও কর্ম্ম প্রপঞ্চ ক্রেরন করেন। এই রূপে ঋষিগণ, দেবগণ ও রাত্তির অবসানে অস্তান্ত বাহারা ক্রিরাহণ করে, তিনিই তাহাদের সকলের নামধেয় করনা করিয়া থাকেন। অভুর পর্যান্য সমরে বেমন নানারপে ঋতুচিক্ত সকলের আবির্ভাব হয়, যুগাদি সকলেই সেইরপে স্টে সকলের সমূহাব হইরা থাকে। অব্যক্ত করে আবির্ভাব হয়, যুগাদি সকলেই সেইরপে স্টে সকল করে আছ্রুত ত্র।

ইতি সৃষ্টি প্রকরণ নাম অইচডারিংশ অধারে।

### উনপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

ক্রোই কি কহিশেন, একান্! আগনি যে অর্কাকপ্রোতোনামক মামুব স্টির কথা যদিদেন, ভগবান্ একা যেরপে তাহা স্টি করেন, বিস্তারপূর্বক বলুন। মহামতে ! তিনি যেরপে বর্ণ ও গুণ এবং এাক্ষণাদি তত্তৎ বর্ণের বিহিত কর্ম স্টি করেন, তাহাও কীর্ত্তন কর্মন।

মাক্তিজোৰ কহিলেন, পূৰ্বে বেলা স্ট কৈরিতে প্রেজ হেইরা, মূখ হইতে প্রাথমে একসংঘ্র মিপুন স্ট কৈরিলেন। তাহারা সকলেই সভ্তাণবিশিষ্ট ও মনস্বী। অনভার তিনি প্নরার বিক-স্থান হইতে অপর মিপুনসহত্র স্ট কিরিলেন। তাহারা রলোভাণবিশিষ্ট ও অমর্ধসম্পর।

অনস্তর তিনি পুনরার উক হইতে অপের মিথুসসহত্র স্টি করিলেন। তাহারা সকলেই রজকেমোগুণবিশিষ্ট ও চেটাসম্পন্ধ।

অনস্তর তিনি পদ্যুগণ হইতে আর এক সহস্র মিথুন সৃষ্টি করিলেন। তাহারা সকলেই তামোগুণবিশিষ্ট, প্রীহীন ও ক্ষুস্মনা। দেই বন্দোৎপল্ল প্রাণিগণ সকলেই বিশিষ্টরূপ হর্ষাবিষ্ট ও পরম্পর কামাতুর হইরা, মৈথুনার্থ সম্পাত হইল। দেই অবধি এই কলে ঐরপে মিথুন সকলে হে উদ্ভব হইরা থাকে। তংকালে ঘোবিদ্গণের মাদে মাদে ঋতু হইত না। সেইজন্ত মৈথুন সকল সেবিত হইরাও, প্রেণন করিতে না। তাহারা আয়ুর অবসানে প্রদেব করিত। তাহাও আবার একবার। মনে মনে ধান করিলেই, একবার ঐরপে প্রস্বক্রিরা সমাহিত হইত। প্রত্যেক মিথুনই সমাগ্রেণে লোবম্পর্শবিহীন শঙ্গানি বিষয় অধিকার করিত। এইরপে প্রজাপতির প্রথমে যে মানসী সৃষ্টি প্রাত্ত ত হর, তাহার বংশপরম্পরা হইতেই সম্মৃত প্রজাগণে এই জগৎ পরিপূর্ণ হইরা উঠিয়াছে। সেই যুগে শীত, গ্রীয় উভয়ই অল ছিল। প্রজার। ইছোন্সারে অনায়ানে স্বিৎ, সাগর, সরোবর ও পর্বাত সকলে বাস ও বিচরণ করিত। অবি মহানতে। তাহারা বিষয়মাত্রেই স্বাভাবিক তৃপ্তিভোগ করিত। কোন মতেই তাহাদের কোন রূপে প্রতিঘাত উপস্থিত হইতনা। তাহারা হেব জানিত না, মাৎস্থ্য জানিত না; তাহাদের নিন্দিষ্ট গৃহও ছিল না, সাগর, পর্বাত বেথানে ইছ্যা বাস করিত। নিক্ষাম হইয়া, যেথানে সেথানে বিচরণ করিত। মনে নিত্য আমোদ অন্তত্ব করিত।

পিশাচ, উরগ, রাক্ষন, মাৎস্থাবিশিষ্ট মহুষা, পণ্ড, পক্ষী, নক্ৰ, মংভ, স্মীহুপ, ইহার সকলেই অধর্ম হইতে প্রান্ত্রভূত হইরাছে। তৎকালে ফল, ম্ল বা পুল্প ছিল না, ঋতু সকলের বা বৎসর সকলেরও নামগন্ধ ছিল না; অতিমাক্র শীত বা অতিমাক্র গ্রীমণ্ড ছিল না; সকল কালই অথের কাল ছিল। কাল সহকারে তাহাদের অন্তুত সিদ্ধি স্পান্ধ ইইত। তাহাদের পূর্বাহে বা মধ্যাক্রে অবিত্তিও উপস্থিত হইলে, পুনরায় ইচ্ছামাক্র ক্ষান্ধানেই তৃতি সংঘটিত হইল। আবার, ইচ্ছা করিলেই, তাহাদের মানসিক আয়াসও উপ্তত্তিক ইইড। জলের হল্পতা বশতঃ তৎকালে তাহাদের নামাবিধ রুসোলাসশালিনী সিদ্ধি সংঘটিত হইরা, তাহাদের সকল কামনাই পুরণ করিত। তাহাদের শরীরের কোনরূপ সংখারই করিতে হইত না। তাহার সকলেই হির্যোবন ছিল। বিনা সকলেই তাহাদের মিপুন প্রকা ক্ষান্তহণ করিত। তাহাদের ইচ্ছ ছিল না, বেব ছিল না। এই ভাবেই তাহার। পরম্পর কাল্যাপন করিত। তাহাদের ইচ্ছ ছিল না, বেব ছিল না। এই ভাবেই তাহার। পরম্পর কাল্যাপন করিত। তাহাদের মধ্যে উৎকৃষ্ট নিক্রই ভাব ছিল না, সকলেই সমান ছিল। সকলেই তুল্যরূপ আরু ভোগ করিত। কাহারণ মুসু অত্যে হইত না। যথন মরিত, এক সঙ্গেই মরিত। অথেরও কোনরূপ ভারতম্য ছিল নাভারা হারা সকলেই মানুৰ মানের চারিহালার বৎসর জীবিত থাকিত। ইহার মধ্যে কাহারই কোন ভারাহার বিলাহ সমান হিল। ইহার মধ্যে কাহারই কোন

দ্লপ ক্লেশ ও তজ্জন্ত কোনজণে অপমৃত্যুও ছইত না। নিরবৃদ্ধির স্থেই কাল্যাপন করিত এবং সমর উপস্থিত ছইলেই, স্থেধ মরিত। সর্বঅই তাহারা দিদিলাত করিত। তাহাদের কিছুরই সভাব ছইত না বা ছিল না। তাহারা ক্রমে ক্রমে বিনাশ প্রাপ্ত ছইত, একবারেই হঠাৎ মরিত না; আবার ভুগিরাই প্রাণত্যাগ করিত না।

তাহারা সকলে বিনষ্ট হইলে, আকলি হইতে মহ্যা সকল আবার পরিচাত হইত। ভাহারা প্রারই পৃহসংক্ষিত করবৃক্ষ হইরা জন্মিত। সেই সকল করবৃক্ষ হইতে তাহাদের যাবতীয় ভোগ বিনিপার হইত। তৎকালে ত্রেতাব্দের মুখে তাহারা তৎসমস্ত করবৃক্ষ আশ্রু ক্রিয়াই জীবন-ধারণ করিত।

জনস্বর কালসহকারে সহসা তাহাদের রাগ সমুস্ত হইল। তরিবন্ধন, মানে মাসে ঋতু হওয়াতে, প্ন: প্ন: গর্ভোৎপত্তি হইতে লাগিল। ব্রহ্মন্ রাগোৎপত্তি হওয়াতে, তাহাদের সেই গৃহ-সংজ্ঞিত রুক্ষ সকলের শাখা সকল পতিত হইনা, বন্ধ সকল প্রস্ব করিতে লাগিল; কল সকলে আভ্রণ সকল জানিতে লাগিল এবং তাহা হইতেই তাহাদের হ্রস, হালরবর্ণ, মহা-বলকারক, অমাক্ষিক মধু প্টক পরিমাণে উৎপন্ন হইতে লাগিল। সেই মধু পান করিয়া, তাহারা ত্রেতাব্যান্থি প্রাণধারণে প্রেস্ত হইল।

অন্তরে কাণাত্তর ক্রমে তাহার। পুনরায় লোভযুক্ত হউলে, মমতাবিষ্ট হাদয়ে সেই স্কল গৃহবুক্তকে পরিপ্রহ করিল। সেই অপচার্বশতঃ তাহাদের ঐ গৃহবুক্ত স্কল বিনষ্ট হইয়া গেল।

অনস্তর শীতোফাদি ঘদ্দ দকল প্রাগৃত্তি ছইলে, তাহারা তত্তৎ ঘদ্দের নিরাকরণার্থ প্রথমে প্র দকলের নির্মাণ করিল। তাহাতে মক্ত্রল, চুর্গ, পর্বতে ও দুরী দকলে পুর দকল প্রতিষ্ঠিত হইল। তাহারা আপনাদের অসুলি সহকারে বারঘার পরিমাণ করিয়া, অলচ্র্গ, পার্বতা চুর্গ, রক্ষ্রণ ও ক্রত্রিম চুর্গ দকল নির্মাণপূর্ণ ক তাহাতেই বাদ করিতে লাগিল। পূর্ব্ধ ছইভেই তাহারা মানার্থ অর্থাৎ মাপিবার জন্ত প্রমাণ দকল প্রস্তুত্ত করিয়া লইয়াছিল। যথা, পরমাণ, ক্রদরেগ্ন, মহীরজ্ঞঃ, কেশাগ্র, নিকা, যুকা ও যবোদর। তর্মধ্যে একাদশ মবোদরে এক অঙ্গুলি হর। অর্থাৎ ১১টী যব রাশিক্ষমে একটীর পর একটী রাখিলে, তাহাদের সম্বাবের মধ্যভাবের যে পরিমাণ হয়, তাহাই অঙ্গুলি শব্দে নির্দিত্ত হইয়া থাকে। ঐরপ ছয় অঙ্গুলিতে একপদ, চুই পদে এক বিতন্তি, চুই বিতন্তিতে এক যোজন। প্রাক্রণ দংখ্যানার্থ এইরণ নির্দেশ করিয়াছেন।

চতুর্থিধ ত্রের মধ্যে প্রথম তিনটা খাচা বক অর্থাৎ মহ্বাক্ত নহে। চতুর্থ টা ক্কৃত্রিম অর্থাৎ মহ্বাক্ত। এত দ্বির, তাহারা তাহাতে পুব, থেটক, দ্রোণীমুব, শাধানগর, কর্মটক, প্রাম, ঘোষ, পৃথক পৃথক গৃহ, উচ্চ উচ্চ প্রাচীর ও পরিধা নির্দাণ করিল। তর্মধ্য এক যোজনের চতুর্থাংশকে বিক্ষন্ত বলে। বিক্তের আটভাগে এক পুব হয়। পূর্ম ও উত্তর্গিকে প্রবণ করিয়া, প্র নির্দাণ করিতে হইবে। ঐরপ পুরই প্রশন্ত। পুরের অর্কেককে থেটক বলে। থেটের চতুর্থাংশ কর্মট। তাহা অপেকা অন্তভাগ নান দ্রোণীমুখ। মন্ত্রী ও সামস্তগণের ভোগালপাণীভূত স্থানকে শাথানগর বলে। ক্লেন্ত্রোপভোগ্য ভূমধো বস্তির নাম গ্রাম। গ্রামে শৃদ্রের ভাগাই অধিক থাকে এবং স্বস্ক্র ক্ষীবল বাদ করিয়া থাকে। লোকে নগরাদির কার্যা উক্ষেশ করিয়া, যে বস্তি করে, তাহারই নাম বস্তি। যে গ্রামে হুটের ভাগাই অধিক, যাহার নিজের ক্ষেত্র নাই, পরের ভূমিতেই স্থাবনাত্রানির্মাহ হয়, তাদুশ বলশালী গ্রামকে অক্রিমী বলিয়া থাকে। তাহারা এইক্রপে স্ব বানের জন্ম নগরাদি নির্দাণ করিয়া, হন্দ্র সকলের জাবস্থ জন্ম নিক্তেন সকল স্থাপন করিছে গাগিল। পুর্ক্ষে বেমন ভাহাদের গৃহাকার বৃক্ষ সকল ছিল, তাহা স্থাবন করিয়া, সেইরূপে গৃহসকল নির্মাণ করিতে আরম্ভ করিল। বৃক্ষের শাধা সকল বেমন একটার পর একটি নত ও উন্নত হইরা, স্বেছিতি করে, তত্বৎ বিধানে ভাহারা শাধাসকল রচনা করিল। বিজ্ঞান্ম। পূর্মের করক্ষ সক্ষ

বেলর যে সকল শাথা ছিল, তাহারাই পুহ সকলের শাথা হইল। তাহাতেই তৎসমক্ত শাথার শালাত সম্পলহইস।

তাহার। এই রূপে শীতে। ফাদির উপদাত করিয়া, খার্ডোপায়চিন্তায় প্রের্থ হইল। মধুর সহিত করবৃক্ষ সকল নিঃশেষে বিনষ্ট হইয়াছিল। তিরবন্ধন তাহারা তৃষ্ণাও কুধায় অতিমাত্ত নিগীডি়ত ও তজ্জ্ঞ বিষাদবশে ব্যাকুল হইয়া উঠিল। অনস্তর সেই ত্রেতামুথে তাহাদের ক্ষিবিষয়ক
সিদ্ধি সমাগত হইল। তাহাদের ইচ্ছোম্পারে রৃষ্টিপাত হইতে লাগিল। সেই বৃষ্টির জল
নিম্গামী হওয়াতে, নিম্গা সকল উদ্ভ হইল। পূর্বে যে জলরাশি পৃথীতলে পতিত হইয়াছিল,
মৃত্তিকার সংযোগবশতঃ তাহাদের সম্দায় দোষ বিনষ্ট হইয়া যায়। ঐ সময়েই বৃক্ষ ও গুলা সকল
সম্বপন্ন হইল। তাহারা ফাল-রুষ্ট নহে, কাহারও কর্ত্ক রোপিতও নহে। তাহারা সকল ঋতুতেই
ফলপুত্প প্রেস্ব করিয়া থাকে। তাহারা গ্রাম্ ও আরণ্য তুই ভাগে বিভক্ত।

বেতাযুগেই প্রথম এইরপে ওষধের প্রাত্তাব হয়। মুনে ! সেই ঔষধেই তদ্যুগছ প্রকাগণ জীবনধারণ করিবাছিল। তৎকালে রাগ ও লোভের সহসা আবির্ভাব হওয়াতে, প্রজা সকল তৎপ্রভাবে আত্মহায়ে যথাশক্তি নদী, ক্ষেত্র, প্রবাত, বুক, গুলা ও ওষধি সকলকে পরিপ্রাহ করিল। বিজ্ঞা । সেই দোষেই ওষধি সকল তাহাদের সমক্ষেই অন্তর্থিত হইল। মহামতে ! পৃথিবী এক কালেই তৎসমন্ত ওষধি প্রাাম করিয়া ফোলিলেন।

তাহারা পুনরার প্রণষ্ট হইলে, প্রজাদকলও পুনরার বিলান্ত হইয়া উঠিল এবং দকলেই কুধার্ত হইয়া, পরমেটা রেক্ষার শরণাগয় হইল। পৃথিবী বে ওমধি প্রাদ করিয়াছেন, তিনি তাহা প্রকৃত প্রভাবে পরিজ্ঞাত হইয়া, স্বেদককে বংদ করিয়া, দেই বস্থকরাকে দোহন করিলেন। এইরপে তিনি শস্ত দকল দোহন করিলে, তাহাদের বীজদকল আবিভূতি হইল। তাহাতে প্রামান্ত আনরণ্ডেদে বিবিধ ওমধি জন্মগ্রহণ করিল। উহাদের সপ্তদশ গণ পরিগণিত হইয়া থাকে। ফল পক্ষ হইলেই, উহারা বিনাশ পাইতে লাগিল। ত্রীহি, যব, গোধুম, অণু, তিল, প্রিয়স্থু, উদার, নিজ্পাব, কুলখ, আঢ়ক, চণক, এই সপ্তদশ গণ। ইহারা দকলেই গ্রামাজাতি। এতদ্ভিন্ন, গ্রামারণ্য ওমধি আছে। তাহাদের যজ্ঞার্থে বাবহার হইয়া থাকে। তাহারা চতুর্দশ গণে বিভক্ত। যণা,—ত্রীহি, যব, গোধুম, অণু, তিল, প্রিয়স্থু, কুলখ, শুমাক, নীবার, যতিল, গবেধু, কুক্বিল, মর্কটক, এই চতুর্দশবিধ প্রাম্যারণ্য ওমধি পরিগণিত হইয়াছে।

ওষ্ধি দকল প্ৰেস্ট হইলেও, যথন তাখাদের পুনরাগ অফুরোৎপাদন হইল না, তথন পিতামহ ব্দা তাহাদের বৃদ্ধির জভা কৃষি এবং কর্মাজনিত হস্তাসিদ্ধিও বিধান করিলেন। সেই অব্ধি এবং নিকল কুষ্টপেচ্য হইয়া, জনাতিতে লাগিলি।

এইরপে রুষিকার্য্যে সিদ্ধিলাভ হইলে, ভগবান্ স্বস্তু স্থ প্রজাদকলের গুণামুদারে যথাবিধি মর্যাদাস্থাপন এবং সমুদ্য বর্ণের ও আশ্রমের এবং সম্যুগ্রপে ধর্মার্থ-পালনশীল সকল বর্ণস্থ লোক সকলের ধর্ম্মও নির্দেশ করিয়া দিলেন। তদম্পারে ক্রিয়াশীল আক্ষণণের প্রাজাপতা স্থান পরি-গণিত হইমাছে। সংগ্রামে অপরাঘুথ ক্ষ্রিয়গণের উক্ত স্থান, স্থাম্পালনশীল শৈশুগণের মাকত স্থান এবং পরিচ্গ্যার অঞ্বর্তী শুজগণের গান্ধর্ম স্থান বিনিদ্ধি ইইয়া থাকে। অষ্টাশীতি সংস্থাজিরতা গৃধি বৈস্থানে অবস্থিতি করেন, গুরুবাদীগণের সেই স্থান নির্দিষ্ঠ ইইয়াছে। আর সপ্রধিগণের যে স্থান, বনবাদীগণেরও সেই স্থান এবং গৃহস্থো প্রজাপতির স্থান, সন্যুদীরা স্থান স্থান থবং যোগিরা অমৃতস্থান প্রাপ্ত ইইয়া থাকেন। ইহাই স্থানকরনা।

ইতি স্থানকল্পনা নাম উনপ্রাশৎ অধ্যায়।

#### পঞ্চাশৎ অধ্যায় ৷

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর ভগবান্ একা ধানিপরায়ণ হইলে, তাঁহার মন হইতে প্রজা সকল তাহাঁর পরীরসম্পার কার্যা ও কাবণপরস্পারার সহিত প্রাত্ত্তি হইল। সেই ধীমান্ একার গাত্র হইতে ক্ষেত্রজ্ঞ সকল আবিভূতি হইলেন। আমি পূর্ব্বে বাহাদের কথা বলিয়াছি, তাঁহারাও সকলে জন্মগ্রংল করিলেন। দেবাদি হইতে স্থাবর পর্য্যন্ত যাবতীয় প্রজাই ত্রৈগুণাবিষয় বলিয়া পরিগণিত হইয়া থাকে। স্থাবর ও জন্ম সকল এইরূপেই স্পৃষ্ট হইল।

ধীমান্ ব্ৰহ্মার সেই প্রজা সকল যথন বিদ্ধিত হইল না, তথন তিনি আপনার অফুরূপ অভবিধ মানস পূব্র সকলের স্টে করিলেন। ইহাদের নাম ভৃগু, পুলন্তা, পুলহু, ক্রতু, অঙ্গিরা, মরীচি, দক্ষ, অবি, বলিষ্ঠা এই নয় জন ব্রহ্মার মানস পূব্র বলিয়া, পুরাণে বিনিশ্তিত ইইয়াছেন। অনস্তর ব্রহ্মা পুনরার ক্রোধাত্মসন্তর করের, সংকল্লের ও ধর্মের স্টে করিলেন। এই ধর্ম পূর্ব্বগণেরও পূর্বজ। সেই স্বয়্মন্ত, পূর্বজ। সেই স্বয়ন্ত, প্রক্রা সন্দাদি যে প্রজা সকল স্টে করেন, তাঁহারা সন্দাদিপরায়ণ ও নির্বশক্ষ হওয়াতে, সংসারে আসক্ত বা লিপ্ত হয়েন নাই। তাঁহারা সকলেই ভবিষ্যক্রানসম্পার, বাগশ্য ও মংসারবিহীন হইয়াছিলেন। প্রকাশেষ হিনিবয়ে তাঁহাদের ওলাসীয়া দেখিয়া, মহাপ্রভাব ব্রহ্মা অতীব জাতক্রোধ হইলেন। তাহাতে স্গ্রেমারত, স্বিশালশারীরসম্পার, অর্কনারী-নরদেহ পূক্ষ জন্মগ্রহণ করিলেন। তদর্শনে ব্রহ্মা তাহাকে কহিলেন, তৃমি আত্মাকে বিভক্ত কর। এই বনিয়াই তিনি অন্তর্হিত হইলে, সেই পূক্ষ তদীয় কথাহুসারে স্ত্রীম্ব ও পূক্ষম্ব পুণক্ করিয়া, পূক্ষম্বকে আবার একাদশ ভাগে বিভক্ত করিলেন। তাহাতে সৌমা, অসেমিয়, শান্ত, অশান্ত, খেত ও ক্রও ভেদে বছবিধ স্থভাব ও বর্ণ বিশিষ্ট পুক্ষ ও প্রীর জন্ম হইল।

অনস্তর ব্রহ্মা আত্মসভূত সেই পুক্ষকে আপনার সদৃশ প্রথম স্বায়ন্ত্ব মন্থ ও সেই নারীকে শতকপা রূপে নির্দাণ করিলে, সেই স্বায়ন্ত্ব মন্থ তপঃপ্রভাবে সর্বধা নিজ্পাপা শতরূপাকে পত্নীরূপে গ্রহণ করিলেন। শতরূপা সেই পুরুষ ইইতে ত্ই পুত্র প্রস্ব করিলেন। তাঁহালের নাম প্রিয়ত্ত ও উত্তানপাদ। তাঁহারা স্বকীয় কর্মবলে বিখাতি লাভ করেন। শতরূপার গর্ভে তুই ক্ষার্থ জন্ম ইইল। তাহালের নাম ঋদ্ধি ও প্রস্তি। তন্মধ্যে পিতা দক্ষকে প্রস্তি ও ক্ষাতিকে ঋদ্ধি দান করিলেন। দক্ষিণা সহিত যজ্ঞ তাহাঁদের পুত্ররূপে সম্প্ররূপের ইইলেন। ইহারই নাম দক্ষণীনিধ্ন। অনস্তর দক্ষিণার গর্ভে বজের ঘাদশ পুত্র জন্মিলেন। তাহাঁরাই স্বায়ন্ত্ব মন্বন্ধর দাননামক দেবভারপে বিখাতি লাভ করেন।

প্রস্তির গর্ডে দক্ষ চতুর্বিংশতি কলা সমুংণাদন করিলেন। তাহাদের নাম সমত্ত সমাগ্রূপে বিলিতেছি, শ্রবণ কর। যথা, শ্রদ্ধা, লক্ষ্মী, ধৃতি, তুটি, পুটি, ক্রিয়া, দেধা, বৃদ্ধি, লজ্জা, বপু, শান্তি, দিদ্ধি, কীর্তি, এই অয়োদশ দক্ষকলাকে ধর্ম পত্নীর জল্ল পরিগ্রহ করিলেন। অবশিষ্ট একাদশ যবীয়সী কলার নাম ঘথাক্রমে ধ্যাতি, সতী, সভ্তি, স্থাতি, প্রতি, ক্ষমা, সরতি, অনস্থা, উর্জ্ঞা, স্বাহা, স্থা। ভৃগু, ভব, মরীচি, অন্ধিরা, প্রস্তা, প্রহ, ক্রতু, বশিষ্ঠ, আত্র, বহুত পিতৃগণ ইহারা ধ্যাতি প্রভৃতি ঐ ত্রেয়াদশ কলাকে পত্নীরূপে গ্রহণ করিলেন। শ্রদ্ধা কামকে, তী দপকে, ধৃতি নিয়মকে, তৃটি সন্তোবকে ও পুটি লোভকে সম্পোদন করিলেন। আরা মেধার গর্ভে শ্রুত, কিমার গর্ভে দণ্ড, বিনয় ও নয়, বৃদ্ধির গর্ভে বোধ, লজ্জার গর্ভে বিনয় ও বপু সম্পেল হইল। শান্তি ইটতে ক্ষেম, সিদ্ধি হইতে স্থা কীর্তি হইতে যশা, জন্মগ্রহণ করিল। ইহারা সকলেই ধর্ম্মের পুত্র। কাম হইতে অতিমুল ও হর্ষ সমুপেল হইল। ইহারা ধর্মের পৌত্র।

অধর্মের ভার্য্যা হিংসা। তাহার গর্ভে অন্তের জন্ম হইল। তাহার কলার নাম নিশ্বতি। নরক

ও ভর এই ত্ইজন নিশ্বতির পুত্র। মায়া ও বেদনা, ঐ ছই জনের স্ত্রী। তন্মধ্যে মারা স্বাভ্ত-সংহর মৃত্যুকে প্রাপ্ন করিল। আর রৌরব হইতে বেদনার গর্ভে হৃংধের উদ্ধব হইল। মৃত্যুর ঔর্গে ব্যাধি, জরা, শোক, তৃষ্ণা, ক্রোধ ইহারা জন্মগ্রহণ করিল। অথবা ইহারা সকলেই হৃংধ হইতে উৎপন্ন হইরাছে, বলিয়া, পরিগণিত হইয়া থাকে। ইহারা সকলেই অধর্মকৃক্ষণ এবং সক্ত্রেই উদ্বিতা। সেইজন্ম ইহাদের ভার্যা।ও নাই, পুত্রও নাই।

মুনে ! মৃত্যুর অপর পত্নীর নাম নিশ্ব ি। ইহার আর এক পত্নীর নাম অবন্ধী। তাহার গর্জে মৃত্যুর চতুর্দশ পুত্রের জন্ম হয়। এই অবন্ধার পুত্রেরাই মৃত্যুর আদেশপালন করিরাছিল। বিনাশ-কাল উপস্থিত হইলেই, ইহারা লোকদিগকে ভল্পনা করিয়। থাকে। ইহাদের বৃত্তান্ত প্রথম করে। ইহারা মন্থ্রের দশ ইন্দ্রিয়ে ও মনে অবস্থিতি করে এবং ল্রী বা পুরুষকে স্থা বিষয়ে নিয়োগ করিয়া থাকে। অনন্তর ইহারা রাগ ও ক্রোধাদির সহায়তার ইন্ধ্রিদিগকৈ আক্রমণ করিয়। এরূপে যোজনা করে, বাহাতে তাহারা অধর্মাদির লারা হানি লাভ করিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে কেই অহন্ধারে ও কেহ বা বৃদ্ধিতে বাস করে। তৎপ্রাযুক্ত লোকেরা মোহ আপ্রয় পূর্মক ল্রাদিগের বিনাশার্থ যুর্বান্ হয়। ইহাদের মধ্যে কেই কেই মন্থ্যাদিগের গৃহে অবস্থিতি করে।

ইংাদের মধো ত্ংসহ নামে বিখ্যাত মৃত্যপুত্র কাকের সমান স্থর বিশিষ্ট, নগা ও চীরধারী এবং অধাম্থ ও ক্ষ্ণায় অতিমাত্র কশা : ত্রুমা সেই তপোনিধিকে সকলের ভক্ষণার্থ স্থাই করেন। তাহাতে, সেই অতীব ভয়করে, দংখ্রাকরাল ত্রংসহ অতিমাত্র ব্যাদিত বদনে পাইবার জাভ উদাত হইলে, জাগতের কারণ, নিত্য ও শুদ্ধরুরপ, সর্প্রক্ষময়, লোকপিতামহ ত্রুমা কহিলেন, এই জাগও ভক্ষণ করিও না, কোপ ত্যাগ ও শাস্তি অবলম্বন কর এবং রঞ্জ অংশ পরিহার ও এই তামসী বৃত্তিও বিস্ক্রন কর।

ত্ব:সহ কহিল, জগলাণ ! আমি ক্ষাত্ত ও পিণাসাত্ত এবং তল্লিবন্ধন ত্র্মণ কইয়া পড়িলাছি। নাণ ! কিলপে আমার তৃপ্তিলাভ হইতে পাবে, কিলপেইবা আমি বলবান্ হইব এবং আমার আশ্রয়ই বা কি, যাহাতে আমি শান্তিসহকারে জীবন্ধারা নির্মাহ করিতে পারি, নির্দেশ করুন।

একা কহিলেন, বৎদ ! লোকেব গৃহ ভোমার আশ্রু, অধার্মিকেরা ভোমার বল এবং নিত্য-ঞিনাহানি দ্বারা তোমার পুষ্টি সঞ্চিত হইবে। আব, বুগা স্ফোট সকল তোমার বস্ত্র ইইবে। আমি তোনাকে আহারও প্রদান করিতেছি। ক্ষত, কীটন্বিত, কুকুবকর্ত্ক দৃষ্ট, ভগ্নভাওস্থিত, মুখ-বাযু-ৰারা উপশমিত, উচ্ছিষ্ট, অপক, অস্তিন, অবণীড়, অসংস্কৃত, ভগাসনে পাকিষা ও উভন্ন সন্ধার বিদিক মুখে বসিয়া ভক্ষিত, রজস্বলাকর্ত্ক উপহত ভুক্ত অথবা দৃষ্ট এবং এতন্তিয় অভাভারণে উপ্লাত্যুক্ত যে কিছু ভক্ষাবাজল, তৎসমন্ত তোমাৰ পৃষ্টির জন্ত প্রদান করিলাম। আমি ্তানাকে অন্তবিধ আহারও দিতেছি। যাহা অশ্রূপর্বক অনলে হোম করা হইবে, অবজ্ঞাপুর্বক मान करा बाहेटन, खन ना मित्र। निटक्षण करा हहेटच उ तूरा मुल्ल'मन करा हहेटन, अथना बाहा छान করিবার জন্মই আনবিদ্ধত হইবে, ও অতিমাতা বিস্ময়বশে দান করা হইবে এবং ধাহা কুদ্ধ ও আবতুর ক ঠুক প্রদত্ত হটবে, ঈদৃশ দ্ধিত দ্রবা তুমি ভক্ষণ করিও। অথবা পুনর্ভবার পুত্র ও কভা পরলোকের জন্ম যে কিছু অমুষ্ঠান করিবে, তুমি তাহাই ভক্ষণ করিও। আমি তোমার তৃপ্তির জন্ম তাহা দান কারলাম। অথবা, কন্তাণ্ডত্কের সংগ্রহ জন্ত লোকে যে ধন ক্রিয়ার অনুসারী হয় এবং অসং শাস্তানুসারে যে ক্রিয়া সকল বিহিত হইয়া পাকে, পুষ্টির জন্ম তাহাই ভক্ষণ করিও ৷ অথবা. সভ্যবহিষ্কৃত হই<sup>য়া</sup>, যে অর্থ উপার্জন বা যে কিছু অধায়ন করা হয়, তোমার দিদ্ধির জন্ম তৎসমন্তও প্রদান করিবাম। এত দ্বির, তোমাকে কাল সকলও প্রদান করিতেছি। অমি হঃসহ ! যাহারা গর্ভবতী স্ত্রীর অভি-গমন করিবে, অধবা সন্ধ্যা প্রভৃতি নিতাকার্য্যের ব্যক্তিক্রম করিবে, কিম্বা যে সকল ব্যক্তি অসং শাস্ত্রাত্রারে ক্রিরাফুর্চান ও আলাপ করিয়া দ্বিত হইবে, তাংহাদের উপরি সর্বাদাই তোমার অভিভ্ৰসাম্থ্য সংঘটিত হইবে। পংক্তিবিচ্ছেদ, পাকভেদ, বুথাপাক এবং নিত্য গৃহক্ৰছ, এই সকলে তুমি বাস করিবে। গোবাহনাদিকে বন্ধ করিয়া রাধিয়া পোবণ না করিলে এবং সন্ধ্যাসময়ে গৃহে জল না দিলে, তোমা হইতে লোকের ভয় জ্মিবে। নক্ষত্ত গুহুপীড়া এবং ত্তিবিধ-উৎপাতদর্শন, এই সকল হুর্ঘটনায় বাহারা কোনরূপ শান্তিকার্য্যের অমুঠানে পরাযুধ হইবে, তাহাদিগকে তুমি ভক্ষণ ৪ অভিডব করিবে।

যাহারা বৃথা উপবাস করিবে, স্ত্রী, দাত ও মদ্যপানে সর্বাদা আদক্ত হইবে, বিড়ালব্রত অবলম্বন করিবে, তাহাদিগকে তুমি ভকণ ও অভিভবে প্রবৃত্ত হইবে। অবলচারী হইরা বে অধ্যয়ন করিবে; না জানিয়া যে যক্ত করিবে, তপোবনে থাকিয়া অজিতানা হইরা, গ্রাম্যভোগ করিবার জন্ত যে চেষ্টা করিবে, সেই অধ্যয়ন, সেই যজ্ঞ, সেই চেষ্টা এবং সেই চেষ্টার যে ফল হইবে, তাহাই তুমি আহার করিবে। অথবা, ব্রাহ্মণ, ক্লন্ত, বৈশ্র ও শৃত্ত ইহারা স্বন্ধ বিহিত্ত কার্য হইবে। পরলোকার্থকামনার যে চেষ্টা করিবে, সেই চেষ্টা ও তাহার ফল সমস্তাই তোমার থাদ্য হইবে।

এতভিন্ন, তোমার পৃষ্টির জন্ত অন্যবিধ যাহা প্রদান করিতেছি, ভাহাও তৃমি শ্রবণ কর। বৈশুদেব বলির অভ্যে তোমার নামোচ্চারণপৃর্ধক, এই ভোমাকে দিলাম, বলিয়া, ভোমাকে যে বলি প্রদান করিবে, তাহাই ভোমার ভক্ষ্য হইবে।

যে ব্যক্তি জ্বা সকল যথাবিধি সংস্কার করিয়া ভক্ষণ করে, যে ব্যক্তির অন্তর বাহির উভয়ই পবিত্র, যে ব্যক্তির লোভ নাই এবং যে ব্যক্তি স্ত্রীর বশীভূত নহে, ভূমি ভাহার গৃহ পরিভাগে করিও। যাহারা আ আ কার্য্য হারা পিতৃগণ ও দেবগণ এবং অতিণিগণের পূজা করে, ভাহাদের গৃহও বর্জন করিও। যে গৃহে বালক, র্ন্ধ, স্ত্রী, পুরুষ এবং আজন বা সৌহর্দি বিরাজ করে, সে গৃহও ত্যাগ করিও। যে গৃহের স্ত্রীরা কায়মনে ভাহাতেই আসক্তা, বিহির্গাননে উৎস্ক হর কা এবং নাতিশয় লজ্জাশীল, ভাদৃশ গৃহও ভ্যাগ করিও। যে গৃহে বয়স ও সম্বন্ধ ব্রিয়া, শয়ন ও আসন সকলের ব্যবস্থা বিহিত হয়, ভূমি আমার বচনাম্পারে সেই গৃহও ভ্যাগ করিও। যে গৃহের শোকেরা করুণাসম্পর, সর্কানাই সাধুকার্য্যে প্রবৃত্ত এবং সামাল্যরূপ উপকরণেই যুক্তচিত্ত, ভাদৃশ গৃহও ভ্যাগ করিও। যে গৃহহ গুরু ও বিলাভিবর্গ অবন্থিতি করিলে, আসনস্থ ব্যক্তিরা দাঁড়ায়, সেই গৃহও ভ্যাগ করিও। যে গৃহের হার তয় ও গুল্মাদি হারা বিদ্ধ নহে এবং যে পুহে পুক্ষের মর্ম্মভেদ নাই, সে গৃহও ভামার পক্ষে প্রশস্ত নহে। যে ব্যক্তি দেবগণ, পিতৃণ্ণ, মহুষাগণ ও অভিধিগণ, ইহাদিগকে প্রদান করিয়া, যে অয় অবশিষ্ট থাকে, ভাহাতেই ছাবিকানির্কাহ করে, ভূমি ভাহার গৃহও ভাগে করিও। যাহারা সভ্যবাদী, ক্মাশীল, অহিংশ্র ও অন্যন্থাপী এবং অস্থাহীন, ভাহাদিগকে ভূমি ভ্যাগ করিও।

<sup>বে</sup> জী স্বামিদেৰায় তৎপরচিত্তা, অসৎ জীর সঙ্গবর্জিতা এবং কুট্র ও ভর্তার ভক্ষণের পর ভক্ষণ করিয়া, শরীর পোষণ করে, তাহাকে তুমি ত্যাগ করিও।

<sup>বে</sup> ব্রাহ্মণ যজন, অধ্যয়ন, দান এই সকলে আসক্তনিত এবং দর্মদা যালন, অধ্যাপন ও <sup>প্রতি</sup>গ্রহ দারা ভীবিকা নির্মাহ করেন, তাহাকেও তুমি ত্যাগ করিও।

জ্বি ছ:সছ! দান, অধায়ন ও যজ্ঞ এই সকলে যে ক্ষল্লিয় স্কাদাই উদ্যুক্ত এবং সৎপণে উক্থাংগপূর্কক শক্ষ্রচালনা করিয়া, জীবন্যাত্রা নির্কাগ ও বেতন গ্রহণ করিয়া থাকে, ভাহাকে ত্নি ত্যাগ করিও।

েব বৈশ্য পূর্ব্বোক্ত গুণত্রয়যুক্ত এবং পাশুপাল্য, বাণিজ্য ও ক্ববিকার্য্য করিয়া শীবিকানিকাছে <sup>তৎপর</sup>, তাহাকেও তুমি ত্যাগ করিও।

<sup>যে শুদ্ৰ দান, ইন্ধ্যা ও দ্বিল্লেবায় তংপর এবং ব্রাহ্মণাদি বর্ণছয়ের শুক্ষমা করিয়া, আত্মণোৰণ <sup>করে</sup>, তাহাকেও তুমি ত্যাগ করিও।</sup>

বে গৃহে গৃহী শ্রুভিন্নভির অবিরোধে জীবনবাপন করে এবং তাহার পদ্ধীও তাহার অনুগত/-

আ্বিকা এবং বেখানে পুত্র গুরুপুরা, দেবপুরা ও পিতৃপুরার তৎপর এবং পদীও স্থামীর সেবা করিয়া থাকে, দে গৃহে অলন্ধীর ভয় কোথায় ? যে গৃহ অনুলিপ্তা ও সন্ধ্যাসময়ে সমাগ্রপে অভ্যাক্তিত হইয়া থাকে এবং পুপা দারা সর্কথা অসজ্জিত হয়, তুমি সে গৃহের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে সমর্থ হইবে না।

বেখানে স্থাংকৰন শ্যা দেখিতে পান না, নিতা অগ্নিও সলিল বর্তমান এবং স্থাকে প্রতিদিন দীপ প্রদর্শন করা হইঃা থাকে, দেই গৃহই লক্ষীর অবস্থিতিস্থান। বেখানে চন্দন, বীণা, আদর্শ, মধু, ঘৃত, বিপ্রাপ্ত অকলা বরাজ করে, দে গৃহও তোমার আশ্রাম কহে। বেখানে কণ্টক্যুক্ত বৃক্ষ সকল ও নিজ্পাবলতা এবং প্নভ্ভার্যাও বল্মীক বিদ্যমান, সেই গৃহই তোমার মন্দির। যে গৃহে পাঁচজন প্রুষ, তিনজন স্ত্রীও তিনটী গোক এবং অন্ধকারেই আগি প্রজ্পিত হইয়া থাকে, সেই গৃহেই তোমার বসতি।

বেখানে একটা ছাগ, ছইটা চমরী, তিনটা গো, পাচটা মহিষ, ছয়টা আছা এবং সপ্ত মাতল, ভূমি সেই গৃহকে আভে শোষণ করিও। কুদ্দাল, দাত্র, পিঠক ও স্থাল্যাদি ভাজন সমন্ত বেখানে সেধানে পড়িয়া থাকিলে, তোমাকে আশ্রম দিয়া থাকে। স্ত্রীগণ ম্যল, উল্থল, ও উছ্ছার এই সকলে উপবেশন করিলে, তোমার পক্ষে ভালই হইয়া থাকে।

বেখানে পক্ত অপক ধান্ত সকল লক্ষিত হয় এবং তহৎ শাস্ত্র সকলও দেখিতে পাওয়া যায়, তুমি সে গৃহে ইচ্ছাফুদারে বিচরণ করিও।

ৈ বে গৃহে দিবারাত্র মড়া থাকে বা মান্থবের অন্তি আছে, দেই গৃহেই তোমার ও অন্তান্ত রাক্ষণ-গণের বাদ। ্যাহারা দপিও ও দোদকদিগকে এবং বন্ধুবর্গকে না দিয়া ভক্ষণ করে, তৎক্ষণাৎ ভাহাদিগকে তুমি আশ্রম্ব করিও।

বে গৃহে পদ্ম, মহাপদ্ম, মোদকাশিনী যুবতী, বুষভ ও ঐরাবত কলিত থাকে, তুমি সেই গৃহ ভাগে করিও। যে গৃহে জ্বাপ্ত ও বিনাযুদ্ধেও শত্রধর দেবমূর্ত্তি দকল কলিত হয়, তুমি সেই গৃহও ভাগে করিও। স্প্রাত, ঘটদলিল, বস্তাম্বিলুও নথাগ্রদলিল, এই দকলে যাহারা স্নান করে, দেই দকল জ্বলক্ষণ ব্যক্তিদিগকে তুমি আশ্রেষ করিও।

যে ব্যক্তি দেশাচারনিয়ম, জাতিধর্ম, জপ, হোম, মঙ্গল, দেবগণের উপাসনা, সমাগ্রপ শৌচ ও যথাবিধি লোকবাদ সকলের অনুষ্ঠান ও অনুসরণ করে, তোমার সহিত যেন তাহার সংসর্গ না ঘটে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ত্রন্ধা তঃসহকে এইপ্রকার কহিয়া, সেই স্থানেই অস্তর্হিত হইলেন। তঃসহও তাঁহার আদেশপালন করিতে লাগিল।

ইতি যক্ষাত্শাসন নাম পঞ্চাশৎ অধ্যায়।

### একপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ছঃসহের ভার্যার নাম নির্মাষ্টি। ঋতৃসময়ে চণ্ডালদর্শন হওরাতে, কলির ভার্যাতে উহার জন্ম হয়। ইহাদের অপত্য সকল জগদ্ব্যাপী। তাহাদের সংখ্যা ষোড্শ। তন্মধ্যে আটি পুত্র ও আটি ক্সা। ইহারা সকলেই অতীব ভয়ক্ষর। ইহাদের নাম দস্তাক্ষি, উক্তি, পরিবর্ত্ত, অঙ্গধুক, শক্নি, গণ্ড পান্তরতি, গর্ভহা ও শস্তহা। এই অই কুমার তাহাদের তন্ম।

অধুনা, অন্ত কন্তার নাম সকল শ্রবণ কর। যথা, নিষোজিকা, বিরোধিনী, স্বয়ংহারী, লামণী, ঋত্হারিকা, স্মৃতিহরা, বীজহরা ও বিদেষণী। তন্মধ্যে স্মৃতিহরা ও বীজহরা তাঁহাদের এই চুইন্ধন কন্তা অতীব দারণ প্রকৃতি এবং বিদেষণী সকল লোকেরই তন্ত সমুদ্রাবন করিয়া পাকে।

এই কন্তা সকলের কর্ম ও দোষশান্তির উপায় বলিতেছি। বিজ্সন্তম। অষ্ট কুমাহের কার্য্য ও দোষশান্তিবিধিও প্রবণ কর। দন্তাকৃষ্টি প্রস্ত বালকগণের দশনে অব স্থৃতি করিয়া, ছঃসহের সাহায়া করিবার জন্ত অতীব সংহর্ষ সংঘটিত করে। খেতসর্ষপ শ্যার উপরি নিক্ষেপ করিয়া, তাহার শান্তি বিধান করিবে। তৎকালে ও্যধিসলিলে স্নান, সৎ শান্তের কীর্ত্তন এবং উট্টুকটক, গণ্ডারের অন্থি ও ক্ষোমনত্ত ধারণ, জগবান্ জনাদ্নের নাম সংকীর্ত্তন, চরাচরগুরু বন্ধা অথবা যাহার যে কুলদেবতা, তাহার নামও শ্রন করিতে হইবে।

অন্ত স্ত্রীর গর্ত্তে অপর স্ত্রীর গর্ভ পরিবর্ত্তিত ও বক্তার বাকাকেও বিপরীত রূপে প্রতিপাদিত করিয়া, আহলাদ অহতেব করে, এইজন্ত ইহার নাম পরিবর্ত্ত। ইহারও খেত সর্বপ ও রক্ষোত্ম মৃত্রু জপ দারা রক্ষা বিধান করিবে।

অন্ধুক্, অনিলের ভায়, লোকের অঙ্গে প্রেফ্রণোক্ত ভভাতত ত্তনা করে। কুশ ধারা তাহার অন্ধ তাড়না করিবে। এই কুমার কাকাদি পিক্তিত আরোহণ অথবা কুরুর ও শৃগালে অবস্থান করিয়া, ভভাতত বিনিদ্দেশ করিয়া থাকে। এইজ্ভাই প্রজাপতি স্বয়ং ব্লিয়াছেন, অভত ঘটনায় বিলম্ব ও একবারেই উদাম ত্যাগ করিবে। আর ওভ ঘটনায় সম্বর হুইবে।

গণ্ড-প্রান্তরতি গণ্ডান্তে অবস্থিতি করিয়া, মৃহুর্তার্দ্ধ মধ্যেই লোকের সর্ব্ধ কার্য্য বিনাশ এবং সমুন্দায় থাাতি প্রতিপত্তি ও অনন্থরতা হরণ করে। বিপ্রোক্তি, দেবতান্ততি, ম্লোৎখাত, গোমুত্র ও সর্বপ মিশ্রিত সন্দিলে সান, সেই ব্যক্তির জন্ম নক্ষত্র ও গ্রহপূজা, শত্রদর্শন, ইত্যাদি উপায়ে তাহার প্রশান্তি হইয়া থাকে।

গর্ভহা স্ত্রীদিগের গর্ভে থাকিয়া, তাহাদের ফল নাশ করে। তাহার প্রকৃতি অতি দারুণ। নিতাভটি হইয়া স্বস্থান, প্রনিদ্ধ মন্ত্র লিখন, প্রশস্ত মাল্যাদি ধারণ, বিভন্ধ গেহে অবস্থান ও আরাদশ্রতা এই দকল উপায়ে দর্শ্বদা তাহার রক্ষা করিবে।

শস্ত্রসমৃদ্ধি বিনাশ করে বলিয়া, ইহার নাম শস্তহা। জীর্ণপাত্কা ধারণ, অপসব্য গমন, চাণ্ডাল প্রবেশন, বাহিরে বলিপ্রদান, এই সকল উপায়ে তাহারও রক্ষা করিবে।

প্রদার ও প্রস্তব্য হ্রণাদি গহিত কার্য্য সকলে নিয়োজিত করে, এইজস্ত ঐ কস্তার নাম নিয়োজিকা। সং শাস্ত্রাদি পঠন, ক্রোধ লোভাদি বর্জন ও বিরোধ বিসর্জ্জন করিলে, শাস্তি হইয়া থাকে। যথন কেহ কাহার প্রতি আক্রোশ প্রকাশ করে, সেই আকুষ্ঠের বিবেচনা করা উচিত, এই নিযোজিকাই এইরূপ করাইতেছে।

এই কারণে জ্ঞানী লোকে তাহার বশীভূত হইবেন না। এই নিযোজিকাই পরদারাদিসংসর্গে পানার চিত্ত ও আত্মাকে নিযোজিত করিতেছে, প্রাক্ত ব্যক্তি এইপ্রকার চিত্তা করিবেন।

পরস্পর-প্রীতিসম্পন্ন দল্পতী, বন্ধু, স্থত্বৎ, পিতা, মাতা, পুত্র, সবর্ণ ইহাদের মধ্যে বিরোধ

ঘটাইরা থাকে, এইজন্ম ইহার নাম বিরোধিনী বলিপ্রাদান, অতিবাদসহন, অর্থাৎ অভ্যন্ত কটু কটিব্যাদি বলিলেও তাহা সম্থ করিয়া থাকা, শাস্ত্রবিহিত আচার পরিপালন, ইত্যাদি উপাদে বিরোধিনীর শান্তি করিবে।

ধল অর্থাৎ গোলা প্রভৃতি ও গৃহ হইতে ধান্ত, গো হইতে হার ও স্থাত এবং ঋদিসম্পন্ন দ্রা হইতে সমৃদ্ধি বিনষ্ট করে, এইজন্ত এই কল্পার নাম স্বাংহারিকা। এই স্বাংহারিকা সর্বাদাই অন্তর্ধানতৎপরা হইয়া অবস্থিতি করে। রন্ধনশালা হইতে অর্ধসিদ্ধ আর, অরাগারে স্থিত আর এবং পরিবিশ্রমান অর ভোকোর সহিত ভোজন করাই ইহার স্থাব। তান্তির, লোকের উচ্ছিষ্ট আর এবং গো ও ব্রীর ভান হইতে পয় ও ক্ষীরও সর্বাদাই হরণ করিয়া থাকে। প্রশক্ত, দধি হইতে মৃত, তিল হইতে তৈল, স্বরাগার হইতে স্বরা, কার্পাস হইতে স্ব্র এবং ক্স্ভাদি হইতে বর্ণ অবিরত্ত হরণ করাও এই স্বাংহারিকার অন্তরে স্থাব। ইহার রক্ষার্থ রুবিম স্বীমৃর্ত্তি ও মর্রযুগল নির্দাণ এবং হোমায়ি ও দেবোদেশে প্রদত্ত ধৃপ, এই উভয়ের ভঙ্ম দারা ক্ষীরাদি ভাও সকলের পরিদ্বন করিবে। তাহা হইলেই তাহার রক্ষা হইবে।

একস্থান-নিবাদী পুরুষের উদ্বেগ সম্পোদন করে; এইজন্ত সেট কন্তার নাম ভাষণী ছইরাছে। ঐ পুরুষের আসনে, শ্যায় ও অধিষ্ঠিত ভূতাগে দিত সর্থপ বিক্ষিপ্ত করিলেই, তাহার রক্ষা হইয়া গাকে। সে ব্যক্তি সর্বলাই এই প্রকার চিন্তা করিবে, এই চ্টুচেডনা পাপীয়দী কুমারী আমারে বার্যার ঘুরাইয়া লইয়া বেড়াইতেছে। এইপ্রকার চিন্তা করিয়া, সমাধি সহকারে ভূস্ক জপ করিবে।

ঋতুহারিকা অর্থাৎ স্ত্রীদিগের পূস্প হউলেই, তৎক্ষণাৎ তাহা হরণ করে, এইবস্থ ইহার নাম ঋতহারিকা। ইহার প্রশান্তির জন্ম ভীর্থ, দেবক্ষেত্র, চৈত্য, পর্বতিসান্ত, নদীসক্ষ ও ধাতসমূহে স্থান করাইতে হইবে।

স্ত্রীদিগের স্থৃতি হরণ করে, এইজন্ম ইহার নাম স্থৃতিহারিকা। বিবিক্ত দেংশ বাস করিলেই, তাহার শাক্তি হইয়া থাকে।

ন্ত্রী পুরুষ উভয়েরই বীজহুরণ ও নিরতিশয় ভয় সমুৎপাদন করে, এইজ্বন্ত তাহার বীজহারিণী নাম হইয়াছে। পবিত্র অল্ল ভোজন ও লান করিলেই, তাহার শাস্তি হইয়া থাকে।

অষ্ঠম কন্তার নাম বেষণী। এই কন্তা সকল লোকেরই ভয়াবহা। যেহেতু, স্ত্রী পুরুষ সকলকেই লোকের বেষভান্ধন করিয়া থাকে। ইহার শান্তির জন্ত মধু, ক্ষীর ও দ্বভাক্ত ভিল হোম করিবে। তহাতীত, মিত্রবিন্দানামক ইষ্টিক্রিয়া করিলেও, ইহার সমাক্ রূপে শান্তি হইয়া থাকে।

বিজসন্তম! এই সকল কুমার ও কুমারীগণের যে অষ্টতিংশং অপত্য জন্মে, তাহাদের নাম শ্রবণ কর।

দস্তাকৃষ্টির যে কলা উৎপন্ন হয়, তাহার নাম কলহা। এই কলহা যাহা ইচ্ছা, তাহাই বলে এবং অবজ্ঞা, অনৃত ও হুইবাকা প্রয়োগ করিয়া থাকে। প্রাক্ত ব্যক্তি প্রয়ত হইরা, তাহাকে চিন্তা করিবেন। তাহাহইলে, গৃহী হইতে পারিবেন। লোকের গৃহে অবিরত কলহ সজ্জটন করে; এইজল্প ইচার নাম কলহা। এই কলহাই কুট্মনাশের হেতৃ। ইহার প্রশামনবিধি শ্রবণ কর। বিলিকার্য্যে মধু, স্বক্ত ও ক্ষীরাক্ত হর্মাক্তর বিক্ষেপ ও অনলে আছতি প্রদান করিবে। তৎকালে এইরাপ বনিতে হইবে, আমি কুমাণ্ড, যাতৃধান ও অলাক্ত গণ সকলের যথাবিধি পূজা করিতেছি, তাহারা সকলে সর্মতোজাবে সন্তুই হউন এবং আমার বিদ্যা, তপন্তা, সংযম, যম, কৃষি ও বাণিলা সকল কার্য্যেই শান্তিবিধান কর্মন। ইহারা সকলে মহাদেবের প্রসাদে ও মহেশ্বরের মতালুসারে মন্ত্র্যাণ্ডার প্রতি নিত্য সন্তুই থাকুন এবং ভূই হইরা, সকলের সমুদায় হৃত্ত, ছরম্ভতি এবং অলাক্ত যাহা কিছু মহাপাতকজনিত ও বিমের হেতৃভূত, তৎসমন্ত নিরাকৃত কন্ধন। তাহাদের প্রসাদে স্মত্ত্রভাবে বিম্ন স্কল বিনই হউক। উবাহ, যাবতীর বৃদ্ধিকর্দ্ধ, প্র্যান্থ্রান্যোগ, ওপ্র

ও দেবপুজা, জপ্যজ্ঞবিধান, যাত্রা, শরীরের আরোগ্য, ভোগ্য, মুধ, দান, ধন, বৃদ্ধ, বালক, আতুর, এই সকলের এবং আমারও সর্বলা তাহারা শান্তিবিধান করুন। চক্র, স্বা, আয়ি, বায়ু ও জলনিধি ইহারাও আমার শান্তি সম্পাদন করুন।

উক্তির পুত্র কালজিহব। তালবৃক্ষ উহার নিকেতন। সে যাহাদের জননীকে আক্রমণ করে, সেই অসাধুদিগকে ব্যাহত করিয়া থাকে।

পরিবর্ত্তের ছই পুত্র, বিরূপ ও বিরুত। তাহারা বৃক্ষাগ্র, প্রাচীর, পরিথা ও সমুদ্র আশ্রর করিয়া থাকে এবং পাদপাদিতে গুর্বিণীর পরিবর্ত্তন করে। ঐরূপ পরিবর্ত্তন করিতে করিতে গর্তকাব হইরা থাকে। এইজন্ম গর্ভাবস্থায় স্ত্রীলোক বৃক্ষ, পর্বত, প্রাচীর, সাগর ও পরিথা আশ্রয় করিয়া, ত্রমণ করিবে না।

অস্থ্কের পুত্র পিশুন। সে অজি ভাষা ব্যক্তিগণের অন্থিমজ্জাগত হইরা, ভাহাদের বল গ্রাস করে।
শকুনির পাঁচ পুত্র, শ্রেন, কাক, কপোত, গৃধ্র ও উল্ক। স্থর ও অস্থরগণ ভাহাদিগকে
গ্রহণ করিয়াছিলেন। তন্মধ্যে মৃত্যু শ্রেনকে, কাল কাককে, নিশ্বিভি উল্ককে, ব্যাধি গৃধকে,
ভাহার ঈষার স্বাং যম কপোতকে গ্রহণ করেন। ইহাদের মধ্যে উল্ক অভীব ভ্যাবহ। ইহারা
গ্রিসকলের পাপ উপপন্ন করিয়া থাকে।

অতএব শুনোদি যাহার মস্তকে নিলীন হয়, সে ব্যক্তি আছারকণার্থ বিশিষ্টরপে শাস্তি করিবে। যে গৃহে ইহারা সন্তান প্রদান করে এবং যে গৃহের মস্তকে কপোত আক্রমণ করিয়া থাকে, সে গৃহ ত্যাগ করিবে। দ্বিজ! শ্রেন, কপোত, গৃধ, কাক, উলুক গৃহে প্রবিষ্ট হইলে, সেই গৃহবাসীগণের মৃত্যু নির্দেশ করিয়া থাকে। পণ্ডিত ব্যক্তি ঈদৃশ গৃহ ত্যাগ ও শাস্তিকার্য্য করিবেন। স্বপ্রেও যদি কপোত দর্শন করা যায়, তাহা প্রশন্ত নহে।

গণ্ডপ্রাস্তরতির চয় পূত্র, কথিত হইণাছে। তাহাবা স্ত্রীদিগের রজে অবস্থিতি করে। তাহা-দের কাশণ্ড বলিতেছি, প্রবণ কর। প্রথম চারি দিন, অয়োদশ ও একাদশ দিন, অস্তু দিনে অভি-গমন, শ্রাদ্দান এবং পুর্ণিমাদি পর্কালে. এই সকল বর্জন করা পণ্ডিতগণের অবশ্য কর্ত্তা।

গর্ভহার পুত্র নিঘ্ন ও কন্তা মোহনী। ইহাদের মধ্যে নিঘ্ন গর্ভে প্রবেশ করিয়া, ভক্ষণ করে এবং মোহনী ভক্ষণ করিয়া, মোহ সমুদ্ধাবিত করিয়া থাকে। সেই মোহ সমুদ্ধাবনপ্রযুক্ত তাহার সর্প, মণ্ডুক, কচ্ছপ ও অন্তান্ত সরীক্প অগবা পুরীষ সমুংপন্ন হইয়া থাকে। সে এইরূপে অসংব্যু হইয়া, ছন্ন মাদ গর্ভবতীর মাংদ ভোজন করে। যে স্ত্রী রাজিতে অথবা জিপথ বা চতুস্পথে বৃক্ষছোয়াই আশ্রম, শাশান-ভূমিতে অবস্থান, উত্তবীয় বর্জন এবং নিশীথ স্মন্থে রোদন করে, এই মোহনী তাহাকেই আশ্রম করিয়া থাকে।

শক্তহার এক পুত্র, তাহার নাম কুদ। এই কুদ্র রন্ধু পাইলেই, সর্কাদা শক্ত নাশ করিয়া থাকে।রন্ধুসকল শ্রবণ করে।

অতৃপ্ত ইইরা, অমঙ্গল্য । গনে শক্ত রোপণ করিলেই, ঐরপ ঘটিরা থাকে। সেইজন্ত স্থাশত দিনে নিশাকরকে অভ্যর্কনা করিরা, ক্ট, তুট ও সহাধ্বান্ হইরা, বপনকার্য্যে প্রবৃত্ত হইবে।

হঃসহের যে নিযোজিকানামী কন্তার কথা বলিরাছি, তাহার গর্জে প্রচোদিকানামী কন্তার ক্ষম হয়। ঐ প্রচোদিকার চারি কন্তা, মতা, উন্মত্তা, প্রমতা ও নবা। তাহারা সর্কানট বিনা-শের জন্ত লোকের দারীরে আবিষ্টা হইরা থাকে এবং তাহাদিগকে দারুল কার্য্যে প্রেরিত করে এবং ধর্মকে অধর্মক্রপে, কামকে অকামক্রপে, অর্থকে অনর্থক্রপে ও মোক্ষকে অমোক্ষরূপে প্রদর্শন করিরা থাকে। যাহারা শৌচবর্জ্জিত, ভাহাদিগকেই এই হুর্মিনীতা ঐক্রপে বিড্বিত করে।

লোকে এই আই কুমারী কর্ক পুরুষার্থপরিত্রই হইরা, ত্রমণ করিরা থাকে। বে সমরে ধাতা ও বিধাতার উদ্দেশে পূজা দেওরা না যায়, সেই সময়েই ইহারা গৃহমধ্যে প্রবেশ করে। যে সকল নর নারী এক সঙ্গে পান ভোজন করে, তাহাদের শরীরেই ইহাদের আবেশ হইরা থাকে। বিরোধিনীর তিন প্র, চোদক, গ্রাহক ও তম:প্রচ্ছাদক। ইহাদের অরপ প্রবণ কর। বে গৃহে মুখল ও উদ্ধল, পাছকা ও আসন প্রদীপতৈলসংসর্গে দূখিত ও লজিত হয়, বে গৃহে শুর্প ও দার্রাদিকে পাদ বারা আকর্ষণ করিয়া, তাহাতে লোকে উপবেশন করে; যে গৃহে উপলেপন না করিয়া. বিহার করা যার, বে গৃহে দবর্বীমুখ বারা অয়ি আহরণ করিয়া, অঞ্চল লইয়া বাহয়া হয়, বিরোধিনীর পুল লকল জননীর আদেশামুসারে সেই গৃহেই প্রভুত্ব বিভার করিয়া থাকে। ইহাদের মধ্যে এক জন গৃহত্বিভারী ও পুক্ষগণের জিহ্বাগত হইয়া, মিধ্যাকে সভ্য বলিয়া, প্রতিপাদনপূর্বক পরস্পরের মধ্যে পৈণ্ড বিভার করে। এইজন্ত ইহার নাম চোদক।

ইংাদের মধ্যে প্রাহক অতি গুমতি। সে অবধানসহকারে লোকের প্রবণগত হইয়া, তাহা-দের বচন সকল গ্রহণ করে। এইজন্ম ইহার নাম গ্রাহক। আর, গুমতি তমঃ প্রভাদক লোকের মন আক্রমণ ও তমঃ ধারা তাহার প্রভাদনপূর্কক ক্রোধ সমুভাবিত করে। এইজন্ম ইহার নাম তমঃ প্রভাদক।

চৌর্য্যের ঔরবেশ স্বরংহারিকার তিন পূত্র জন্মগ্রহণ করে। ইহাদের নাম সর্মহারী, অর্দ্ধারী ও বীর্যাহারী। যে গৃহের লোকে আচমন করে না, যে গৃহের লোকে মন্দাচারী ও অপ্রকালিত পদে মহাসনে উপবেশন করে; যে গৃহে বা গোঠে সর্কালাই বিবাদ বিসম্বাদ উপস্থিত হয়; ইহারা দেই স্থাই যথাবিধানে বিহার ও রমণ করিয়া থাকে।

ভামণীর একমাত্র পুত্র। তাহার নাম কাঞ্জ্জতা। কাক্জ্জত যাহার শরীরে আবিষ্ট হয়, সে আবার কোনমতেই লোকের অন্ত্রাগভাজন হইতে পারে না। দ্বিজ ় যে ব্যক্তি ভোজন করিবার সময় গান ও হাস্তা করে এবং সৃদ্ধার সময়ে স্ত্রীসঙ্গে প্রবৃত্ত হয়, তাহারই শরীরে ইহার আবেশ হইয়া থাকে।

ঋতৃংবিণী তিন কথা প্রবদ করে। ইহার মধ্যে একের নাম কুচহরা, অভের নাম বাঞ্জন-হারিকা, তৃতীয়ার নাম জাতহারিণী। যে স্ত্রীর সম্প্রণে স্ক্রিধ বৈবাহিক বিধি সমাহিত হর না, অথবা কাল অতীত হইলে, বিবাহ হইয়া থাকে, তাহার কুচ্যুগল হরণ করে, এইজন্ত ইহার নাম কুচহরা।

সম্প্ৰিধানে আদ্দান ও মাতার অর্চনা না করিয়া, যে স্ত্রীর বিবাহ দেওয়া হয়, তাহার বাঞ্জন হরণ করিয়া পাকে । এইজন্ত ইহার নাম ব্যঞ্জনহারিকা।

যাহাতে জল নাই, অগ্নি নাই, ধূপ নাই, প্রদীপ নাই, শস্ত্র নাই. মুখল নাই, সর্থপ নাই, সেই প্রকিগ্রে অন্থ্রবেশপূর্বক ভূমিষ্ঠ সন্তানকে অপহরণ করিয়া, সেই গ্রেই ফেলিয়া যায়। এইজন্ম ইহার নাম জাতহারিণী। ইহার অভাব অতি প্রচণ্ড ও আহার জাত বালকের মাংসুলা সেইজন্ম প্রকিগগৈরে যারপূর্বক রক্ষাকার্য্য বিধান করিবে। অপবিত্র ব্যক্তিগণের সারন ও শৃত্য গৃরে অবস্থান করিলেই, এই জাতহারিণীর পুত্র প্রচণ্ড বিষম অনিষ্ট করিয়া পাকে। প্রচণ্ডের পৌত্র-সমূহ শতসহত্র লীকা এবং অষ্টবিধ চণ্ডালযোনির সমূৎপাদন করে। দণ্ড ও পাশ এই উভ্রেষ ষারণপ্রস্কু ইহারা অতীব ভীষণ-ভাববিশিষ্ট। সেই চণ্ডালবোনি-সমূত্র লীক সকল ক্ষাবিষ্ট হইয়া, পরস্পরকে গুক্ষণ করিবার অন্ত পরস্পরের প্রতি ধাবমান হইলে, প্রচণ্ড সকলকে প্রতিষ্কি করিয়া, তাহাদের মধ্যে বেল্পপ নিয়ম স্থাপন করিয়া দিল, বলিতেছি, শ্রবণ কর। যে ব্যক্তি আজি হইতে লীকদিগকে আবাস প্রদান করিবে, আমি তাহার অতুল দণ্ড প্রয়োগ করিব, এ বিবরে সন্দেহ নাই। যে গীকা চণ্ডালযোনির গৃহে প্রসব করিবে, তাহার সন্ততি সমন্তও সদ্যাবিনষ্ট হইবে।

ন্ত্ৰী ও পুক্ষের বীজগারিণী চুই কলা প্রস্ব করে। ইহাদের নাম বাতরূপা ও অরূপা। ইহার ভাহার মারণ অন্তবরূপ। তর্মধ্য বাতরূপা বীর্যানিষেকাল্ডে যাহাকে সন্তান নিক্ষেপ <sup>ক্ষে</sup>, দেই পুরুষ ও ল্লী উভরেরই বাতশুক্র ও রোগ হইয়া থাকে। জরপাও উত্তরকে সদ্য বীজশ্ত করে। যে পুরুষ স্থান না করিরা ডক্ষণ এবং ইতরবোনিছে গ্রান করিরা থাকে, তাহারও সদ্য বীজ নট করে।

বিধেষণীনায়ী অকুটি-কুটিনমুখী কল্পা যে হুই পূজ প্রেদৰ করে, তাহারা পুরুষের অপকার ও প্রকাশ সাধন করিয়া থাকে। যে পুরুষ ও ল্লী শৌচৰজ্জিত, তাহারা তাহাদের বীজ্ঞানিষ্ট করে। যে ব্যক্তি কুরতামাত্রপরাগণ, সর্কাদাই চঞ্চল এবং অবিশুদ্ধ জল সেবন ও লোকের বেষ করিয়া থাকে, ইহারা তাহাকেও আক্রমণপুরুক অবস্থিতি করে। মাতা, লাতা, পিতা, অতীষ্ট বন্ধু, বান্ধব, আত্মীয় ও পর ইহারা সকলেই যাহার বিষেষ করে, সে ধর্মতঃ ও অর্থতঃ বিনষ্ট হইরা থাকে; যাহাহউক, ঐ হুই পুজের মধ্যে এক জন স্বকীয় গুণ সমন্ত লোকে প্রকাশত করে; এই কক্ত ইহার নাম প্রকাশক এবং অপর জন গুণসমূহের অপকর্ষণ ও লোক দিগের মৈত্রীও হরণ করিয়া থাকে। এইজন্ত ইহার নাম অপকার। এইজপে হু:সহের বংশোন্তব সকলেই পাপাচার নামে বিধ্যাত এবং সমন্ত জগৎ ব্যাপ্ত করিয়া আছে।

ইতি দৌ:দহেগংপত্তি সমাপ্তি নাম একপঞ্চাশং অধ্যায়ঃ

### বিপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অবাক্র্যোনি ব্রহ্মার ইহাই তামস্পৃষ্টি। এক্ষণে তাঁহার রক্তরপৃষ্টি কীর্ত্রন করিব. শ্রবণ কর। কলের আদিতে সকলের প্রভু ব্রহ্মা আর্ম্যুল্শ পূত্র লাভের চিন্তার প্রবৃত্ত হইলেন। ছিল্পন্তম ! তিনি ইতন্ততঃ ধাবন পুরঃসর স্ক্রম্যের রোদন করিতে লাগিলেন। তদর্শনে ব্রহ্মা তাঁহাকে কহিলেন, কিল্পন্ত রোদন করিতেছ ? তিনি তাঁহাকে প্রভুত্তর করিলেন, আমার নামকরণ করন। লগংপতি ব্রহ্মা কহিলেন, দেব ! তোমার নাম কল্র হইল। আর রোদন করিও না ; ধৈর্যা অবলম্মন কর। ব্রহ্মা এইপ্রকার কহিলে, তিনি সাত বার রোদন করিলেন। তথন ব্রহ্মা তাঁহাকে অন্তান্ত সাত নাম প্রদান করিরা, ঐ আট কল্রের থাকিবার হান, চেষ্টা, পত্নী ও পুল্ল সকল্প সম্প্রদান করিলেন। পিতামহ ঐ সাত জনের থথাক্রমে ভব, সর্ব্বে, ঈশান, পশুণতি, ভীম, উগ্র ও মহাদেব এই সাত নাম রাধিলেন এবং ইহাদের স্থানও স্থি করিলেন। যথা—স্ব্যা, লগ, মহী, বহি, বারু, আঁকাশ, দীক্ষিত ব্রাহ্মাও চক্রম এই আট্টা যথাক্রমে ক্রাদ্যানামের সহিত স্ব্যাদির পত্নী। ইহাদের প্রের নাম যথাক্রমে শনৈন্তর, শুক্র, লোহিতাক, মনোল্ব, ক্রম, সর্ব্য, সন্তান ও বুধ।

এবহুপ্রকার ঐ রুদ্র সতীকে পত্নীরূপে লাভ করেন। সেই সতী দক্ষের প্রতি রোধ বশতঃ প্রকীয় কলেবর পরিহার করিয়াছিলেন। দিজসত্তম।তিনি হিমালবের ছহিতা হইরা, মেনকার গর্ভেস্মুৎপদ্ধা হন। তাঁহার লাভার নাম মৈনকে। তিনি সাগরের অহত্তম স্থা। ভগবান্তব প্ররায় অনভাচিত্রা সতীকে বিহাহ করেন।

ভূগুর প্রবদে খ্যাতি ধাতা ও বিধাতা এই ছই দেবতাকে প্রস্ব করেন। যিনি দেবদেব নারায়ণের পত্নী, দেই শ্রীও খ্যাতির গর্ভসম্ভূতা।

মহাত্মা মেরুর তুই কন্তা, আয়তি ও নিয়তি। তাঁহারা ধাতা ও বিধাতার পত্নী। তাঁহাদের তুই পুত্র জন্ম গ্রহণ করেন। একের নাম প্রাণ, অপরের নাম মৃক্তু। এই মহাবশা মৃক্তু আমার পিতা। জামি তাঁহার ঔরদে মনস্বিনীর গর্ভে সমুৎপন্ন হইরাছি। আমার পুত্রের নাম বেদশিরা:। স্মামার পত্নী ধুমবতীর গর্ভে তাহার জন্ম হয়।

প্রাণের বংশ বলিতেছি, শ্রবণ কর। প্রাণের পুত্র হ্যতিমান্। তাঁহার পুত্র উৎপন্ন ও অজরা। তাঁহাদের অনেক পুত্র ও পৌত্র জনিয়াছিলেন।

মরীচির পত্নী সন্তুতি পৌর্ণমাদের জননী। পর্বতের জী বিরজাত্ই পুত্ত প্রস্ব করেন।
বিজ ! বংশসংকীর্তনসময়ে তাই।দের পুত্রগণের নামাবলী কীর্তন করিব।

অঙ্গিরার পত্নী স্থৃতি। তাহাঁরে গর্ভে অনেক কন্তার জন্ম হয়। ইহাদের নাম সিনীবালী, কুহু, রাকা, অনুমতী।

অতির পদ্মী অনহমা বিশুদ্ধভাব পুত্রগণের জননী। তাঁহাদের নাম, চক্র, ছ্র্রাসা ও যোগী দত্তাতের।

পুশন্তোর ভার্যা। প্রীতির গর্ভে দত্তোলির জন্ম হয়। ইনিই পূর্বজন্মে অগন্তানামে বিখ্যাত হন। স্বায়ংভূবমন্বতরে ইহাঁর আবিভাব হইয়াছিল।

প্রজাপতি পুলত্বের ভার্য্যা ক্ষমা তিন পুত্র প্রাপ্ত করেন। ইহাদের নাম কর্দম, চার্ক্বীর ও বহিষ্ণু।

ক্রত্র ভার্যা সরতি বালিধিলা ঋষ্ণিণের জননী। ইহারা সকলেই উর্দ্ধরেতা এবং সংখ্যায় ষষ্টিসহস্র।

বশিষ্ঠের ভার্য্যা উৰ্জ্জা সপ্ত পুত্র প্রদাব করেন। ইহাঁদের নাম রজোগাত্র, উদ্ধিবাহ, স্বল, অন্য, স্বত্রপা ও শুক্ত। ইহারাই সপ্তর্ষি নামে বিখ্যাত।

ব্দার অগ্রন্থ অভিমানী অগ্নি সাহার গর্ভে তিন পুত্রের উৎপাদন করেন। তাহাঁরা সকলেই উদারতেজা:। ইহাদের নাম পাবক, প্রমান ও শুচি। এই শুচি জল ভক্ষণ করিয়া পাকেন। তাহাদের সম্ভাতির সংখ্যা প্রুচিখাংশং। পিতা ও তিন পুত্র লইয়া, ইহাঁদের সমুদায় সংখ্যা একোন-প্রশোশং। ইহাঁরা হুর্জন্ম ব্লিয়া প্রিকীপ্তিত হইয়া গাকেন।

আমি তোমার নিকট বাঁহাদের কথা বলিয়াছিলাম. সেই পিতৃগণ ব্রহ্মা কর্তৃক স্পষ্ট হইয়া-ছেন। স্বধা তাহাঁদের হইতে ছই কন্তা প্রদব করেন। তাহাঁদের নাম মেনা ও বৈধারিণী। দ্বিজ! তাহাঁরা উভয়েই ব্রহ্মবাদিনী ও উভয়েই বোগিনী এবং উভয়েই উৎক্লটঃজ্ঞানশালিনী ও উভয়েই সর্ক্ষবিধ-সদ্গুণশোভিনী।

দক্ষকন্তাগণের এই অপত্যসন্ততি কথিত হইল। শ্রদ্ধাসহকারে বিশেষরূপে ইছা শ্বরণ করিলে, লোকের বংশপরম্পরা বিস্তৃত হইয়া থাকে।

ইতি ক্তুত্তি নাম দ্বিপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

### ত্রিপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

ক্রোষ্ট্রকি কহিলেন, আপনি স্বায়জুব মন্ত্র কথা বলিলেন। তগবন্! বর্ত্তমান মহস্তর বৃত্তান্ত প্রবণ করিতে ইচ্ছা করি, কীর্ত্তন করণন। এই মহস্তরের পরিমাণ, দেব ও দেবর্ষিগণ এবং নরপতিবর্গ ও যিনি ইহার ইক্রপদে অধিষ্ঠিত, সমুদায়ই বলুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ময়ন্তরের সংখ্যা কিঞ্চিদ্ধিক এক সপ্ততি। মাত্রমানের যত বৎসরে ময়ন্তর হয়, তাহা বলিতেছি, শ্রবণ কর। ত্রিংশং কোটি, সাতসহস্র সাত্রমন্তি নিযুত ময়ন্তরের পরিমাণ। ইহাতে আর আধিকা নাই। দেবমানে ইহার পরিমাণ অপ্তশত বিপঞ্চাশং সহস্র এখনে স্বায়স্ক্র ময়ু, পরে স্বারোচিয়, উত্তম, তামস, বৈবত, চাকুর, এই ছয় য়য়ু অতীত হইয়াছেন। অধুনা বৈবস্থত ময়ুর অধিকার। ইহার পর যথাক্রমে পঞ্চ সাবর্ণি, রৌচ্য, ভৌত্য ও আগমী এই চারি ময়ুর আবির্ভাব হইয়া থাকে। পুনরায় ময়ন্তরপরিপ্রতেই ইহাদের সবিত্তার বর্ণন এবং তৎকালীন দেবগণ, ঋষিগণ, পিতৃগণ, রাজগণ ও ইল্লের কথাও বলিব। অধুনা, ইহাদের উৎপত্তি, সংগ্রহ, সন্ততি এবং যেরূপে তাহাদের ও তাহাদের পুত্রগণের জন্ম হইয়াছে, তাহা বলিতিছি, শ্রবণ কর।

স্বায়স্থ্য মন্ত্র দশ পুত্র জন্মগ্রহণ করেন। ইহাঁরা সকলেই পিতার সমান। ইহাঁদের দারা পর্মত ও সপ্তদীপ সমেত সমগ্র মেদিনী পরিবাপ্ত হইরাছে। ইহাঁরা এই সমুজ ও আকরশানিনী অর্মনির প্রতিবর্ধেই সন্নিবিষ্ট হইরা আছেন। প্রিয়ন্তরের পুত্র স্বায়স্থ্য মন্ত্র পৌত্র। উন্থোর করিবাছিলেন। বীর প্রিয়ন্তর প্রাণ্ট করিবাছিলেন। বীর প্রিয়ন্তর প্রাণ্ট করিবাছিলেন। বীর প্রিয়ন্তর প্রকাশতার গর্ভে ক্টা সমুৎপাদন কবেন। এ কলা প্রজাপতি কর্দমের তাহার গর্ভে ক্ট কলা ও দশ পুত্রের জন্ম হয়। তাহাঁরা সকলেই শোর্যাশালী এবং সকলেই প্রজাপতির সমান। ইহাদের নাম স্বায়ীর, মেধাতিথি, বপুনান্, জ্যোতিয়ান্, ভ্যতিমান্, ভ্যা, স্বন। প্রিয়ন্ত্রত এই সপ্ত জনকে সাত্রী দ্বীপের ধর্মান্ত্রাক্র বাজপদে প্রতিষ্ঠিত করেন।

ঐ দকল দ্বীপের নাম প্রবণ কর। পিতা অগ্নীধকে জমৃদ্বীপের রাজা করিলেন। মেধাতিথিকে প্রক্ষীপের রাজপদ দিলেন। বপুগ্নান্ শালালের অধীশ্বর হইলেন। ভােতিয়ান্ কৃশাপের রাজপদ পাইলেন। ক্রোঞ্ছীপে ছাতিমান্কে রাজা করা হইল। ভবা শাক্ষীপের ঈশ্বর
ইলেন ⊶্রানকে পুক্রধীপের রাজত দেওয়া হইল।

মহাবীত ও ধাতকি ইহাঁর। তুইজনে স্বনের পুত্র। পুক্রকে তুই ভাগ করিয়া, ভাহাদিগকে । । বিষয় বাজপদে বরণ করা হইল।

ভব্যের সাত পুত্র। তাহাঁদের নাম শ্রণ কর। জলদ, কুমার, স্কুমার, বনীয়ক, কুশোন্তর, মধানী, মহাজ্রন। ভব্য তাহাঁদের প্রত্যেকের নামে শাক্ষীপে বর্ধ দকল রচনা করিলেন।

ছাতিমানেরও সাত পুত্র। তাঁহাদেরও নাম বলিতেছি, শ্রবণ কর। কুশল, মহুগ, উষ্ণ, গাঁকার, অর্থকারক, মুনি ও চুলুভি। তাঁহাদেরও প্রত্যেকের নামে ক্রোঞ্ধীপেব বর্ষ সকল গতিষ্ঠা করা হইল।

জ্যোতি মানেরও সাত পুত্রের নামে সাতটী বর্ষ কুশ্বীপে সন্নিবেশিত হইল। তাহাঁদের নাম বিণ কর। উদ্ভিদ, বৈষ্ণব, স্করণ, লম্বক, গুতিমান, প্রভাকর ও কাপিল।

শাল্যবদীপের জীশ্বর বপুরানের সাত পুত্র। তাঁহাদের নাম খেত, হরিত, ধীমৃত, রোহিত, ব্রাত, মানস ও কেত্মান্। ইহাঁদেরও সাত নামে সাতটা বর্ষ শাল্যবদীপে প্রতিষ্ঠা করা ইল।

প্লক্ষীপের অধী বর মেধাতি থির সাত পুতা। যাহাঁদের নামাছিত বর্ষসন্ত হারা প্লক্ষীপ সপ্তধা বিভক্ত হইরাছে। ইহাঁদের মধ্যে প্রথম শাকভব বর্ষ, পরে বর্থাক্রমে শিশির, স্থানার কিন্তু, শিব, ক্ষেমক ও প্রথম বর্ষ।

প্লক, শাৰাৰ, কুশ, ক্ৰোঞ্চ ও শাক এই পাঁচ দ্বীপে বৰ্ণাশ্ৰমবিভাগ হইতে সমুখিত বে ধর্ম প্ৰাচলিত, তাহা নিতা ও স্বাভাবিক, জানিবে। এতপ্তিল, এই পাঁচ বৰ্ষে সমুদায়ই সাধারণ।

দিল। পিতা প্রথমে অমীধ্রকে অব্দুখিণ দান করেন। তাইরে নার পুত্র। তাইরা সকলেই প্রজাণতির সমান। ইহাদের জ্যেতির নাম নাভি। তাইরে অমুক্ত কিম্পুক্র নামে বিখ্যাত। তৃতীয়ের নাম ছরিবর্ষ, চৃত্র্থের নাম ইলাব্ত, পঞ্চম রম্য, ষ্ঠ হিরণা, কুরু সপ্তম, ভত্রাখ অটম ও কেতৃমান নবম। তাইদের নাম বর্ষ সকলের কল্পনা হইয়াছে। হিমনামক বর্ষ বৃত্তীত, কিম্পুক্রাদি অক্সান্ত সমস্ত বর্ষেই অভাবতঃ সিজিলাভ হইয়া থাকে। তৃজ্জন্ত কোনরূপ যতুই করিতে হয় না। স্থেরও একলের ঘটিয়া থাকে। কোনরূপে কোন বিষ্তেরই বিপ্র্যার নাই। জরা, মৃত্যু, ভয় একবারেই অমুহিত হইয়াছে। ধর্ম বা অধ্যাও নাই; উত্তম, মধ্যম ও অধ্যাবিদার প্রতেদ নাই। তথার চতৃমুল্যের অবস্থার কোনপ্রকার আবিভাবিই হয় না। ঋতু সকলেরও নাম গল্প নাই। তথার চত্মুল্যের অবস্থার কোনপ্রকার আবিভাবিই হয় না। ঋতু সকলেরও নাম গল্প নাই। তাহাদের ক্ষত কোনরূপ স্থা ছংখাদি বিকারবিশেষ নাই! ছিল! অম্যাপ্ত্র নাভির শ্বভনামে পুত্র জন্মহাছিলেন। শ্বত ছার্ডিরে সভিষেক করিয়া, মহাপ্রজ্ঞা অবলম্বন করিয়াছিলেন। এবং পুল্রের মধ্যে প্রধান। শ্বত তাহাঁকে অভিষেক করিয়া, মহাপ্রজ্ঞা অবলম্বন করিয়াছিলেন। এবং পুল্রের আশ্রম আশ্রেষ করিয়া, তপশ্চরণে প্রত্ত হন।

পিতা ভরতকে হিমনামক দক্ষিণ বর্ধ প্রদান করিয়া যান। সেইহেত্, সেই মহাদ্মার নামেই ভারতবর্ধ হইয়াছে। ভরতের পুত্র ধর্মনিঠ সুমতি। ভরতও তাঁহার হতে রাজ্যভার জন্ত করিয়া বনবানী হইয়াছিলেন। ইহাঁদের পুত্র পৌত্র এবং প্রিয়ত্তরে পুত্রপরম্পরা স্বায়স্ত্ব মহন্তবে সপ্তবীপা বস্ত্বরা তোগ করিয়াছেন। হিজোত্ব ৷ তোমার নিকট এই স্বায়স্ত্ব মহন্তর সমাক্ কার্ত্তন করিলাম। ইহাই আদি মহন্তর। অধুনা, আর কি কহিব ?

ইতি মন্বন্তরকর্থন নাম ত্রিপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

# ্চতুঃপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

ক্রোষ্ট্রিক কহিলেন, কত দ্বীপ, কত সমুদ্র, কত পর্বাত, কত বর্ষ এবং সেই সকল বাংৰী কিত বা নদী আছে ? তদ্বাতীত, মহাভূত সকলের প্রমাণ, লোকালোক, চক্ত স্বর্গের গতি ও পরিমাণ, এই সমস্ত বিস্তারক্রমে আমার নিকট বর্ণন করুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিজ্ঞা পৃথিবী সম্পারে শতার্ক কোটি বিস্তৃত। তাহাঁর অন্তর্গত সম্পার হানই আমি বলিতেছি, শ্রবণ কর। বিজ্ঞা আমি যে জন্মু দীপ হইতে পুদরপর্যান্ত দীপ নকলের কথা বলিরাছি, তাহাদেরও বিশেষ বিধানে বর্ণনা করিতেছি, শুন। জন্মু, প্লক্ষ, শাক্ষণ, কুশ, কৌঞ্চ, শাক্ত ও পুদর এই সাত দ্বীপ পরস্পার যথাক্রমে বিশুণায়ত। লবণ, ইক্ষু, স্থরা, সর্পি, দ্বি, হ্র ও জলসাগর, এই সপ্ত সাগরও যথাক্রমে বিশুণ মানে পরস্পার ব্র্ত্তিত। ইহারা বি সপ্তদীপকে স্ক্তোভাবে পরিবেটিত করিরা আছে।

জমুদ্বীপের সংস্থান বিশেষরূপে বলিব, প্রবণ কর। ইহা বিস্তারে ও দৈর্ঘ্যে এক লক্ষ বোলন। হেমবান্, হেমক্ট, ঝবভ, মেরু, নীল, খেত ও শৃঙ্গী এই সাতটা পর্বত ইহার বর্ষ-পর্বত। মধ্য ভাগত্ব মহাপর্বত হুইটা ছুই লক্ষ বোজন বিস্তৃত। ইহাদের দক্ষিণে ও উত্তরে যথাক্রমে ছুই ছুইটা করিয়া বে পর্বত আছে, তাছারা পরস্পর বিভারে দশ দশ সহস্র বোজন করিয়া, নান ভাষাপায়। তাহাদের উচ্ছায় বিসহস্র বোজন এবং বিভারও তবং সংখ্যাবিশিষ্ট। ইহার ছবটী বর্ষপর্বত সমৃত্রমধ্যে প্রবিশে করিয়াছে। এখানকার ভূমি দক্ষিণ ও উত্তর দিকে নিয় এবং মধ্যভাগে ভূষারত। ইহার দক্ষিণে তিনটা ও উত্তর তিনটা বর্ষ জানিবে। ইহাদের মধ্যে ইলাবৃত বর্ষ চক্রাছাকারে অবস্থিতি করিতেছে। ইহার প্রের্ড ভ্রাখ, পশ্চিমে কেত্মাল। ইলাবৃতবর্ষের মধ্যভাগে কনকপর্বত মেক। এই মহাগিরির উচ্ছায় চত্রশীতি সহস্র বোজন, বিত্তার বোড়শ সহস্র বোজন এবং ইহা পৃথিবীর ভিতর বোড়শ সহস্র বোজন প্রবেশ করিয়াছে। শরাব আকারে অবস্থিত আছে বলিয়া, ইহার মন্তর্ক ছাত্রংশং সহস্র বোজন বিস্তৃত। ইহার প্রাচাদি বিভাগন্ম্বে ঘ্রাক্রমে গুরু, পীত, ক্লফ ও রক্তবর্ণ ভেদে বাজন, বৈশ্ব, শুলু ও ক্লত্রিগণ বাস করিয়া আছে।

ইহার উপরে পূর্বাদি অষ্ট দিকে ইন্দ্রাদি লোকপালগণের সভাও তাহার মধ্যে একার সভাবিরাজমান হইতেছে। ঐ সভা চতুর্দশ সহত্র যোজন সম্ভিত্ত। তাহার অধোভাগে বিকস্ত পর্বত। উহার উচ্ছায় অযুত যোজন।

প্রাচাাদি দিগ্বিভাগসম্ছে যথাক্রমে মন্দর, গন্ধনাদন, বিপুল ও স্থপার্শ পর্কত প্রতিষ্ঠিত আছে। ইহারো সকলেই কেতৃ-পাদপশোভিত। ইহাদের মধ্যে মন্দরের কেতৃ-পাদপ কদম্ব, গন্ধ মাদনের ক্রম্বুক, বিপুলের অখ্য এবং স্থপার্শের কেতৃপাদপ প্রকাণ্ড বটতক্র। এই সকল পর্কাতের আ্যাম-পরিমাণ সমুদারে একাদশ শত যোজন।

পূর্কাদিকের পর্বত সকলের নাম জঠর, দেবক্ট এবং পরস্পর একতা সন্নিবদ্ধ আনীল ও নিষ্ধ।
নিষ্ধ ও পারিপার্য এই উভয় পর্বত মেকর পশ্চিম পার্যে প্রতিষ্ঠিত। কৈলাস ও হিম্বান্ এই
ছুইটা মহাচল, মেকুর দক্ষিণদিকত্ব পর্বত। ইহারা পূর্বপশ্চিমে আরত এবং সাগর মধ্যে প্রবিষ্ট হুইয়াছে।

শৃঙ্গবান্ ও জাক্ষি, ইহারা মেকর উত্তরদিকত্ব পর্কত। বিজোত্তম ! এই আই পর্কত্তকে মর্যাদাণর্কত বলিরা থাকে। হিমালয় ও হেমকুটাদি পর্কত সকল পরস্পর নর সহত্র বোজন বিস্তৃত। ইহারা পৃর্কোত্তর ও দক্ষিণোত্তর ব্বস্থিতিক্রমে মেকর চতুর্দিক বেটন করিয়া আছে। অত্বর্লের গরদেহপ্রমাণ যে সকল ফল গন্ধাদন পর্কতের শিথরদেশে পত্তিত হইয়া থাকে, তাহাদের রক্ষরতে জত্বনদী নামে বিথাত নদী প্রাহুর্ত হইয়াছে। এই নদীতে আত্মনদ নামে স্কুর্ব সমুছুত হইয়া থাকে। বিজ্ঞান্দ্ল! এই নদী মেককে পরিভ্রমণ করিয়া, পুনরায় জত্ম্বল প্রবেশ 
নিরিমাছে। তত্তিতা লোকেরা ইহার জলপান করে।

ভগবানু বিষ্ণু ভদ্রাখে হয়শিরারূপে বিরাজ কবিতেছেন। আর ভারতে কুর্মরূপে, কেতুমালে বাহবিপ্রতিষ্ঠ উত্তরে মৎস্তরূপে অধিষ্ঠিত আছেন। তত্তৎ বর্ষে নক্ষত্রবিস্থান অস্থারে দেশ সকল

ইতি खब्बीপदर्गन नाम ह्यू: शकांगर अधांत्र।

#### পঞ্চপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মলারাদ্য পর্বতিচতৃষ্টরে যে চারিটী বন ও চারিটী সরোবর আছে, তাহা বলিতেছি, প্রবণ কর। পূর্বদিকে চৈত্রবন, দক্ষিণে নলন, পশ্চিমে বৈভাজ ও উত্তরাচলে সাবিত্র নামক বন প্রতিষ্ঠিত আছে। আর, পূর্বদিকে অরুণোদ, দক্ষিণে মানন, পশ্চিমে শীতোদ ও উত্তরে মহাত্ত নামক সরোবর।

শীতার্ত্ত, চক্রমুঞ্জ, কুলীর, স্থককবান্, মণিশৈল, ব্যবান্, মহানীল, ভববিল্প, মন্দর, বেণু, তামস নিষধ, মন্দরের পুর্বে মহাচল দেবশৈল, ত্রিকুট, শিথরাজি, কলিঙ্গ, পতঙ্গ, কচক, সান্থমান, তাম, বিশাথবান্, খেতোদর, মূল, বস্থধার, রন্ধবান্, একশৃন্ত, মহাশৈল, রাজশৈল, পিপাঠক, কৈলাস, হিমবান্, এই সকল মহাচল মেরুর দক্ষিণ পার্থে প্রতিষ্ঠিত আছে। স্থরক্ষ, শিশিরাক্ষ, বৈদ্বা, পিঙ্গল, পিঞ্জর, মহাভজ, স্থরস, কপিল, মধু, অঞ্জন, কুকুট, কৃষ্ণ, পাঞ্র, সহশ্রশিথর, পারিপাত্র, শুঙ্গবান ইহারা মেরুর পশ্চিমে ও বিক্ত পর্বেত বহিদ্বিকে, সন্ধিবদ্ধ হইয়াছে।

উত্তরদিক্ত অক্সান্ত পর্কত সকলের বৃত্তান্ত শ্রবণ কর। শক্কৃট, বুষভ, হংসনাভ, কণিলেন্দ্র, मास्यान नील, चर्गकी, माजभकी, भूलक, त्मचनर्खठ, विवजाक, ववाशंकि, भव्रव, आकृषि, ব্রহ্মন ! ইহাদিগকে মেরুর উত্তরত্ব পর্বত বলিয়া থাকে। এই সকলের দ্রোণীপ্রদেশ স্বতীব মনোহর। তত্ততা বন সকলও স্থনির্মণ-জলসম্পন স্বোবর সকলে স্থাভিত। ছিজোত্ম। সেখানে পুণাশীল মহুষ্যগণের জানা হইয়া থাকে। বিজ্ঞোষ্ঠ ! ইহারা সকলেই ভূমিত্ব স্বর্গস্ত্রপ ও স্বর্গ অপেক্ষাও সমধিক গুণশালী। সেখানে অপূর্ব্ব পুণ্য পাপের উপার্জ্জন হয় না। এইরপ ক্থিত আছে, সেধানে দেবগণেরও পুণ্যোপভোগ হইয়া থাকে। দ্বিজসভ্ম। এই সকল শৈলে বিদ্যাধর, বক্ষ, কিম্নর, উরগ, রাক্ষস, দেব ও গন্ধর্কাগণের শোভাময় প্রশস্ত আবাদ দকল আছে। 💩 সকল আবাদ প্রম প্রিত্র এবং উপ্রন্তিশিষ্ট। তত্ত উপ্রন্তে দেবগণ বিরাজ করিয়া থাকেন। ভৰাতীত, ঐ স্কলে মনোজ্ঞ সরোবর সকল প্রতিষ্ঠিত আছে এবং সকল ঋতুতেই স্থেদ বায় প্রবাহিত হইতেছে। এখানে মহুষ্যগণের কুত্রাপি বৈমনস্ত দেখিতে পাভয়া যায় না। আমি হে পত্রচতুষ্টমবিশিষ্ট পার্থিব পল্লের কথা বলিয়াছি, ভদ্রাখ ও ভারতাদি বর্ষ দকল ইছার সেই চতু र्क्तिक वे भेख। ভারতনামে দক্ষিণদিক ছ যে বর্ষ বর্ণন করিয়াছি, তাহাই কর্মভূমি। ভারতবর্ষ ভিন্ন অভ্য কুত্রাপি আর পাপ পুণোর ফলভোগ হয় না। ইহাই প্রধান বর্ষ, জানিবে, যাহাতে সমস্ত প্রতিষ্ঠিত আছে। এইজন্ম ইহার অধিবাদী মছুবোরা যথাক্রমে স্বর্গ, অপবর্গ, মাছুষা, নারকা, তিহ্যক্ত অথবা অন্তবিধ যোনি প্রাপ্ত হইয়া থাকে।

ইতি ভারতক্থন নাম পঞ্পঞ্চাশৎ অধ্যায়।

# ষট্পঞ্চাশৎ অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ভগবান্ নারারণের যে পদ জগদ্যোনি ব্রন্ধার অবিচলিত আশ্রহন্থান, ত্রিপর্ণ গামিনী দেবী গঙ্গা তাহা হইতেই প্রাহ্ড্ডা হইরা, প্রথমে সলিলের জাধার ও স্থার জাকর চটে প্রবেশ করেন। তাহাতে স্থাকিরণের সহিত যে সম্পর্ক ও সংযোগ সংঘটিত হর, তৎপ্রভাগে সর্কলোকপাবনী-শক্তিশালিনী হইরা, সেই চক্র হইতে মেফপ্রেঠ পতিতা ও চারিভাগে বিভক্ত হইরা, প্রায়ান করিলেন। অনন্তর মেকর শৃঙ্গপরম্পরার প্রান্ত হইতে নিপতিতা ও বেগভরে ঘ্রনপূর্বক ধাবমানা হইলে, তাহার সলিলরাশি কিনীর্গ্রমাণ হইয়া উঠিল। ভদবস্থায় তিনি মন্দরাদি পাদশৈলসমূহে নিরালয়া পতিতা হইলে, তাহার অললাশি এক বারেই বিভক্ত হইয়া গেল। তিনি পর্বতের শিলারাশি ভেদ করিয়া, চারি ধারায় পতিতা হইলেন। তল্মধ্যে প্রথম ধারা শীতানামে বিখ্যাতা হইয়া, চৈত্ররথকাননাভিম্থে প্রস্থান করিল। াছতীয় ধারা বহুলোদ সরোবর প্রাবিত করিয়া, ধাবমান হইল। তথা হইতে শীতাস্তপর্বতে গমন করিয়া, পরে মুধাত্রমে অভাত্ত ভূধর সকল লজ্মন ও পৃথিবীতে অবতরণপূর্বক ভ্রাম হইতে অলথিতে প্রবেশ করিল। অপাকনন্দানায়ী তৃতীয় ধারা দক্ষিণাভিম্থে গন্ধমাদনে স্মাগত্ ইইয়া, দেবগণের আননন্দসম্পাদন নন্দনকানন অতিক্রমণ ও মহাবেগে মানস্বরোবর প্রাবিত করিয়া, পর্বতরাজ হিম্গারিতে উপনীত হইল। তথার বৃষ্থবাজ শাস্ত্ তাহাকে ধারণ করিলেন; আর ছাড়িলেন মা।

স্থানস্তর ভণীরথ উপবাস ও ভবগানসহকারে তাঁহার আরাধনা করিলে, সেই বিভূ মহাদেব ভাগীরথীকে ছাড়িয়া দিলেন। তথন তিনি সপ্ত ধারায় বিভক্তা হইয়া, তিন ধারায় মহানদীর্নপে প্রাচ্য দিক্ প্রাবিত করিয়া, দক্ষিণ সাগরে প্রবেশ করিলেন। তৎকালে ভণীরথ রথারোহণে পথ দেখাইয়া চলিলে, তিনি এক ধারায় দক্ষিণ দিক্ প্লাবিত করিয়া, তাঁহার অন্থ্যামিনী হইলেন।

এই লগে, চতুর্থ ধারা মেকর স্থিশাল পশ্চিম পাদে মহানদীরপে প্রবাহিত হইয়া, স্বরক্ষু নাম ধারণপূর্বাক বৈভাজ পর্বতে গমন করিল। তথা হইতে শীতোদ-সবোবর প্লাবিত করিয়া, ত্রিকৃট-পর্বতে উপনীত হইল। তথা হইতে ক্রমাল্লাবে পর্বত সকলের শিথরসমূহে পতিতা হইয়া, কেতৃমালে গমন করিয়া, লবণ্যাগরে প্রবেশ করিল। অনন্তর স্থার্থনামক মেকর স্থাসিদ্ধানিকে সমাগতা ও সোমানামে বিখ্যাতা হইয়া, সবিতৃকাননে অবতরণ করিল। তাহা পবিত্র করিয়া, মহাভদ্রনামক সবোবরে প্রবেশপূর্বাক তথা হইতে শহাক্টে প্রয়াণ করিল। তথা হইতে ধ্যাক্রমে বৃহভাদি পর্বতিশরশারা প্রাপ্ত হইয়া, উত্তরকুক্ষমতাল প্লাবিত করিয়া, মহাসাগরে সংমিলিত হইল।

বিজর্মভ! এই আনি আপনার নিকট গঙ্গার বিষয় কীর্ত্তন এবং জ্বষ্দ্বীপ বর্ণন প্রসংশ তত্তাতা বর্ষ সকলও যথায়থ বিবৃত করিলাম। কিম্পুক্ষাদি সমস্ত বর্ষেই প্রজা সকল নির্বিছিন্ন স্থা ভোগ ও নিরাভক্ষে বাস করে। তথায় অধম উত্তন ভাব নাই। এই নয় বর্ষের প্রত্যেকেই সাভীট করিয়া কুলপর্কতি আছে এবং প্রত্যেকেই পার্স্ক গ্রানী সকল প্রবাহিত হইতেছে। বিজোৱন! তথায়ে কিম্পুক্ষাদি যে আটটী বর্ষ আছে, তাহাদের সকলেই উদ্ভিদ অর্থাৎ উৎস-সলিল। এক মাত্র ভারতেই কেবল মেল হইতে সলিল পতিত হইয়া থাকে। উল্লিখিত আটটী বর্ষে লোকের সিদ্ধি বার্মী, স্বাভাবিকী, দেখা, তোয়োখা, মানসী ও কর্মাজা এই হয় প্রাকারে সম্পন্ন হইয়া থাকে। ত্রুপ্রে কামপ্রদার ক্রম হইতে যে সিদ্ধি সম্পন্ন হয়, তাহার নাম বার্মী। আরু আপনাআপনি সম্বিত সিদ্ধির নাম স্বাভাবিকী, দৈশিকীর নাম দেখা, সলিলের হ্মাতা ইইতে প্রাহৃত্তি সিদ্ধির নাম তোয়োখা, ধ্যান হইতে প্রাহৃত্তি সিদ্ধির নাম মানসী এবং উপাসনাদি কার্য্য হইতে সম্পন্ন সিদ্ধির নাম কর্মাজা। তদ্ভিন্ন, তত্তৎ বর্ষে আধি নাই, ব্যাধি নাই, যুগাবস্থা নাই এবং পাণপ্রারও কোনপ্রকার সমারস্ত নাই।

इं ि वर्षवर्गन नाम संट्रेलकां नर व्यसाह।

#### সপ্তপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

কোঁই কি কহিলেন, ভগবন্! আপনি সংক্ষেপে জন্মীপ বর্ণন করিলেন। সহাভাগ! এতৎঅপ্রাক্ত আপনি বে বলিলেন, ভারতবর্ষ ব্যতিরেকে আর কোথাও পাপ বা পুণ্যের ফলভোগ
করিতে হয় না। এইথানেই অর্গ, এইথানেই অপবর্গ, এইথানেই মধ্য, এই থানেই অন্ত লাভ
হইয়া থাকে। আর মন্য্যদিগকে কোনরূপ কর্মান্তানিও করিতে হয় না। অতএব ব্লান্!
বিস্তারপূর্মক এই ভারতবর্ষের বৃত্তান্ত কীর্ত্তন করন। ইহাতে বে সকল বিভাগ আছে, ইহা
যেকপে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং ইহাতে যে সমন্ত প্রত আছে, তাহা বলুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই ভারতবর্ষে সম্পারে নয়টা বিভাগ। বলিতেছি, শ্রবণ কর। এই সমস্ত বিভাগ পরস্পর অগম্য। বেছেত্, সম্প কর্তৃক বিচ্ছিন্ন। ইহাদের নাম ইন্দ্রণীপ, কশেকমান, তামবর্ণ, গভন্তিমান, নাগদ্বীপ, সৌম্য, গান্ধর্ব ও বারণ। ইহা চতুর্দ্ধিক সাগরে বেষ্টিত। ইহা দক্ষিণোত্তরে সহস্র বোজন। ইহার পূর্বে কিরাত, অস্তে ও পশ্চিমে যবন এবং মধাভাগে ব্রাহ্মণ, ক্রির, বৈশ্র ও শৃদ্রণণের বাস। ইহারা সকলেই যজ্ঞ, অধ্যয়ন ও বাণিজ্যাদি ছারা ধৌতপাপ হইরাছেন। ঐ সকল কর্মাই তাঁহাদের স্বাভাবিক ধর্ম এবং তদ্বাহাই তাঁহাদের স্বর্গ ও অপবর্গপ্রোপ্তি হইরাথাকে এবং পাপপুণ্যেরও সঞ্চয় হয়।

নহেন্দ্র, মলমা, সহা, শুক্তিমান্ ঋকপর্কাত, বিদ্ধা, পারিপাত্র, এই সাতটী ইহার কুলপর্কাত। তাহাদের সমীপে অভাভ সহত্র সহত্র পর্কাত আছে। তাহাদের সামুসকল বিস্তৃত, উচ্ছিত, বিপুলায়ত ও মনোজ্ঞ ভাব সমন্থিত।

কোলাহল, বৈত্রাজ, মন্দর, দর্দুর, বাতখন, বৈত্যত, মৈনাক, স্বরদ, তৃষ্পপ্রস্থ, নাগগিরি, বোচন, পাণ্ডর, পুষ্পা, হর্জরস্ত, রৈবত অর্কুদ, ঋষামৃক, গোমস্ত, কৃটশৈল, কৃতস্বর, শ্রীপর্রত, কোর এবং অভাত্ত শত শত ধে পর্বত সাতে, তাহাদের হারা জনপদ সকল মেচছ ও আর্য্য এই ছই ভাগে বিমিশ্রিত হইয়াছে।

এই মেচ্ছ ও আর্য্যাণ যে দকল দরিষবার জলপান করে, তাহাদের নাম বলিতেছি, শ্রবণ কর। গঙ্গা, সরস্বতী, সিন্ধু, চক্রভাগা, যমুনা, শত্জা, বিতন্তা, ঐরাবতী, কুছু, গোমতী, ধৃতপাপা, বাহলা, দৃশস্বতী, বিপাশা, দেবিকা, রংকু, নিশ্চীরা, গগুকী ও কৌশিকী। এই সকল নদী হিমালারের পাদদেশ হইতে সমৃদ্ধৃত হইয়াছে।

বেদস্থতি, বেদবতী, র্ত্রমা, দিল্ল, বেণা, আনন্দিনী, সদানীরা, মহী, পারা, চর্মণ্তী, তাপী, বিদিশা, বেত্রবতী, শিপ্রা, অবনী, এই সকল নদী পারিপাত্র পর্বতকে আশ্রয় করিয়া আছে।

শোণ, নর্মণা, স্বর্থা, স্বজিজা, মন্দাকিনী, দশাণা, চিত্রক্টা, চিত্রোৎপলা, তমদা, করমোদা, পিশাচিকা, পিপ্রনিজোণি বিপাশা, বঞ্লা, স্থমেরুজা, ভুক্তিমতী, শক্লী, জিদিবাক্রমু এবং বেগ-বাহিনী, ইহারা ঋকপর্কতের পাদদেশ হইতে প্রস্তা হইয়াছে।

শিপ্রা, পলোঞী, নির্বিদ্ধা, তাপী, নিষধাবতী, বেণা, বৈতরণী, দিনীবালী, কুমুন্বতী, করতোয়া, মগাগৌরী, তুর্গা, অন্তঃশিরা, ইহারা বিদ্ধাপাদপ্রত্ত। এবং সকলেই প্রাতোয়া ও সকলেই পর্ম পবিত্র সভাবা।

গোদাবরী, ভীমরধা, কৃষ্ণবেণা, তুলভদ্রা, স্থপ্রোগা, বাহা, কাবেরী, এই দকল সরিধ্রা বিদ্যাপাদ হইতে বিনিজ্ঞান্তা হইয়াছে।

কুতমালা, ত এপর্ণী, পুশেকা, উৎপ্নাবতী, ইহারা মল্যাজিসমূভূতা। ইহাদের সকলেরই <sup>জ্ল</sup> সুশীতল। পিতৃক্ল্যা, সোমক্ল্যা, ঋষিক্ল্যা, ইক্লা, ত্রিদিবা, লাক্লিনী, বংশকরা, ইহারা মহেজ্রপর্বজ ইহতে প্রাতৃত্তি হইরাছে।

ঋষিকুল্যা, কুমারী, মলগা, মলবাহিনী, কুপা, পলাশিনী, ইহারা শুক্তিমান্ পর্মত প্রস্তা। ইহারা সকলেই পরমপবিঅস্ক্রপা সরস্বতী এবং সকলেই সাগ্রসন্ধিনী গলা; সকলেই বিশ্বেস্ক্রনী ও সকলেই পাণহারিণী বলিয়া পরিগণিতা চইয়া থাকেন। ছিজোত্তম! এই সকল মতানদী ভিন্ন অভাভ্য সহস্র সম্প্র নদী আছে। ইহাদের মধ্যে কেহ কেহ বর্ষানালেই প্রবাহিত হয়, অবশিষ্টেরা সদাকালপ্রবাহিনী।

মংস্তা, অম্বক্টা, কুল্যা, কুন্তল, কাশি, কোশল অথবর্ধ, কলিস, মলক, বুক, এই সকল জনপদ মধ্যদেশীয় বলিয়া পরিকীর্তিত চইয়া থাকে।

যেথানে গোদাবরী নদী প্রবাহিত, সহু পর্বতের সেই উত্তর বিভাগে যে দেশ আছে, সমস্ত পৃথিবীর মধ্যে সেই দেশই মনোরম।

মহাত্মা ভাগবের বমণীর গোলজনপুব, বাহলীক, বাটদান, আভীব, কালতোর, অপৰাস্ত শুদ্র, পলব, চর্মথিওক, গান্ধার, যবন, দিল্ল, কৌবীর, মন্ত্রক, শতজ্ঞ, কলিঞ্চ, পারদ, হারভ্যিত, মাঠন, বহুভদ্র, কৈকেয়, দেশমালিক,ক্ষত্রি:রাপনিবেশ, বৈগ্র ও শুদ্রক্ল, কাছোজ, দরদ, বর্মর, হর্ষবর্জন, চীন, খাব, বাহুতী, আত্রেয়, ভরহাত্ম, পুকল, কশেকক, লম্পাকা, শ্লকার, চুলিকা, আগুড়, ওপক, আনিভদ্র, কিরতে, তামদ, হংসমার্গ, কাম্মীর, তুসন, শ্লিকা, কুহক, অর্ণ, দর্ম্ম, এই দকল জনপদ উত্তর দিকে ব্যবস্থিত।

প্রাচীদিক্স দেশ সকল শ্রবণ কর। অগ্রাবক, মূদকর, অন্তর্গিগ্য, বহির্গির, প্রবেদ্ধ, রচ্চের, মানদ, মানবর্ত্তিক, ব্রাহ্মোত্তর, প্রবিজয়, ভার্গব, জ্ঞেয়মল্লক, প্রাগ্জোতিষ, মল্লক, বিদেহ, তাম্র-বিপ্তা, মলা, মগধ, গোমস্ত ইহারা প্রাচ্য জনপদ।

অভাভা যে সকল জনপদ দক্ষিণাপথস্থিত, তাহাদের নাম পুঙ. কেবল, গোলাঙ্গুল, শৈলুষ. মৃষিক, কুসুম, বাদক, মহাবাষ্ট্ৰ. মহিষক, কলিঙ্গ, আভীর, বৈভিঙ্গ, আঢ়াক, শবর, পুলিন্দ, বিজ্ঞানের, বৈদৰ্ভ, দেঙক, পৌরিক, মৌলিক, অঋক, ভোগবৰ্জন, নৈষিক, কুস্তুল, অঙ্গু, উদ্ভিদ, বলদারক, এই সকল দেশ দাক্ষিণাতা।

অপরাস্ত দেশ সকল শ্রন কর। স্থ্যাবক, কালিবল, ছর্গ, আনীকট, প্লিন্দ, স্থানি, রূপপ, স্থাপদ, কুরুমী, কটাক্ষব, নাসিক্যাব, উত্তরনত্মদ, ভীক্তচ্ছ, সমাহের, সারস্বত, কাশ্মীর, স্বাষ্ট্র, আবস্তা, আর্থ্যদুর্বিদ, ইহাবা অপরাস্ত দেশ।

বিদ্ধানিবাদী দেশ দকল শ্রণ কর। সরজ, কফদ, কেরল, উৎকল, উত্তমার্ণ, দশার্ণ. ভোজা, কিছিল্ল, ভোশল, কোশল, তৈরপুর, বৈদিশ, তুলুর, তুলুল, পাটু, নৈষধ, আয়ড়, তৃষ্টিকার, বীরহোত্র, অবস্তি, এই দমস্ত জনপদ বিদ্ধাপৃষ্ঠনিবাদী। অতংপব পার্সত্র দেশ দকল বর্ণন করিব। নীহার হংদমার্গ, কুল্ল, গুর্ণণ, থদ, কুল্ল, প্রাবরণ, উর্ণ, দার্ম্ব, করক, ত্রিগর্ত, মালব, কিরাট ও তামদ। এইরপে এই ভারতবর্ষ চতুংসংস্থান-সংস্থিত। ইহাতেই ক্রতত্রেতাদি মুগও চতুমুর্গক্ত বিধি প্রবর্ত্তিও প্রচলিত হইয়া থাকে। ইহার দক্ষিণ পশ্চিম ও পূর্বে মহাদাগর। হিমালর ইহার উররে ধ্যুপ্রণিকারে অবস্থিতি করিতেছে। বিজ্ঞান্তম। এই সেই ভারতবর্ষই দকলের বীল। এই থানেই গুভাগুভ কর্মাম্পারে ব্রন্থ, ইল্রন্থ, দেবজ, মরুল্ব, মুগন্ধ, পশুন্ধ, প্রস্তম্বাহানিত্ব, সরীক্ষার ও গ্রের্বির সংগ্রিত হইয়া থাকে। ব্রন্ধন্ ইহাই একমাত্র কর্মাভূমি। সংগারে ইহাভিশ্ব দিতীয় কর্মাভূমি নাই। বিপ্রবর্ধ। দেবগণ্ড দেবজ হইতে এই হইয়া, এথানে মান্য্য পাইবার জন্ম সর্ম্বাইবার ভালাই করিতে পারে নাঃ

ইতি ভারতবর্ষবর্ণন নাম সপ্তপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

#### অন্তপকাশৎ অধ্যায়।

ক্রেন্ট্র কহিলেন, ভগবন্! আপনি আমার নিকট সম্যক রূপে ভারতবর্ধের বর্ণন করিলেন। এথানে যে সকল স্বিৎ, পর্বাত ও দেশ আছে, তাহাও বলিলেন। কিন্তু আপনি যে পূর্বের বলিগছেন, ভগবান্ হরি ক্র্রেরণে অবস্থিতি করিতেছেন। তাঁহার সংস্থান সবিশেষ শুনিবার জন্ম আমার ইচ্ছা ইইতেছে। সেই ক্র্রেরণী জনার্জন কিরপে এথানে অবস্থিতি করিতেছেন, তংপ্রভাবে লোকের গুভাগুভই বা কিরপে ব্যক্তীভূত হইয়া থাকে, আপনি আদ্যোপান্ত অবিকল তাহা কীর্ত্তন করুকন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ছিল! ভগবান্দেব জনার্দিন পূর্কমুথে ক্র্রারণে এই নববিধ-বিভাগ-সম্পর ভারত আপ্র করিয়া বিরাজমান আছেন। তদর্গারে নক্ষত্র সকল ইহার চতুর্দিকে নবধা ব্যবস্থিত হ্ইয়াছে। তয়্যতীত, ইহাতে যে সকল দেশ আছে, সম্যক্রপে তাহাদের বৃত্তান্ত বলিতেছি, প্রবণ কর।

বেদমন্ত্র, বিমাপ্তব্য, শাল্নীপ, শক, উজ্জিহান, ঘোষসংখ্যা, থশ, সারস্বত, মৎস্ত, শ্রসেন, মাথুর, ধর্মারণ্য, জ্যোতিষিক, গৌরগ্রীব, গুড়াশাক, উদ্বেহত, পাঞ্চাল, সক্কে, ক্রমারুত, কালকোটী, পাষ্ড, কাপিলল, কুরুর্বহা, উড়ুম্বন, গজাহব, এই সকল দেশ কুর্মের মধ্যস্থল আশ্রেম করিয়া আছে। ক্রতিকা, রোহিণী ও সৌম্যা এই নক্ষত্ততিত্ব উল্লিখিত মধ্যবাসী দেশ স্কলের শুভাভ্ড স্থানা করিয়া থাকে।

ব্যধ্বজ, অঞ্জন, জস্বাথ্য, মানবাল, শৃপকর্ণ, ব্যাঘুমুথ, থর্মক, কর্মটাশন, চক্তেম্বর, থশ, মগধ, গিরি, মৈথিল, পৌগু, বদনদন্তর, প্রাগ্জ্যোতিষ, লৌহিতা, সামুদ্র, পুরসাদক, পূর্ণোৎকট, ভদুগোর, উল্লাগিরি, কশার, মেথল, মুই, তাম্রলিপ্ত, একপাদপ, বর্দ্ধমান, কোশল, এই সকল দেশ কুর্মের মুথভাগে বাবস্থিত। রৌজ, পুনর্মস্থ ও পুষ্যা এই তিন নক্ষত্র মুথে অবস্থিতি করিতেছে।

কোই কে! প্রবণ কর; কুর্মের দিলিগালে নিম্নিগিত দেশ সকল প্রতিষ্ঠিত আছে। কলিঙ্গ, রঙ্গ, জঠর, কোণল, মৃষিক, চেদি, উর্জকর্ণ, বিদ্ধাগিরিস্থ মৎস্থাদি দেশসমূহ, বিদর্ভ, নারিকেল, ধর্মদ্বীপ, ঐলিক, বাাঘ্রথীব, মহাগ্রীব, তৈপুব, শাশধারী, কৈছিল্লা. হেমক্ট, নিষধ, কটকস্থল, দশার্ণ, হারিক, লগ্প, বিষাদ, কাকুলি, অলকা। আগ্রেষা, পিত্নক্ত ও পূর্বক্ত্বণী এই ভিন নক্তর পূর্ববিদ্ধাপাদ আগ্রেষ করিয়া, অবস্থিতি করিতেছে।

লঙ্কা, কালাজিন, শৈলিক, নিকট, মহেন্দ্র মণার ও বছ রিপর্বত হ জনপদ দকল, কর্কোটকবনহিত দেশসমূহ, ভৃগুকছে, কোছণ, আভীর, বেণানদীর ভীরস্থ দেশ দকল, অবস্তি, দাসপুর,
আকনী, মহারাষ্ট্র, কর্ণাট, গোনদ্দ, চিত্রকূট, চোল, কোলগিরি, ক্রোঞ্চনীপ, জ্ঞাটার, কাবেরি,
ঝায়মূক হিত দেশসমূহ, শঙ্গাশুক্তাদি বৈদ্যা শৈলপ্রাস্তচর সমস্ত, বারিচর সকল, কোল, চর্মাণ্ট,
গাণবাহ্য, দ্বীপনিবাসী লোক দকল, স্থ্যাদ্রি ও কুম্দাদ্রি এই উভয় গিরিছিত জনসমূহ, ঔথাবন,
পিশিক, কর্মনাম্বক, দক্ষিণ কৌরুষ, ঋষিকত, তাপসাশ্রম, ঋষভ, সিংহল, কাঞ্চী, ভিলল, কুলার,
দরীকছে ভাম্পণী, ও কুক্ষি এই সকল কুর্মের দক্ষিণে অবস্থিত আছে। উত্তর্জন্ধনী, হতা ও
চিত্রা এই ভিন নক্ষর কুর্মের দক্ষিণ কুক্ষিতে বিরাজ্যান হইতেছে।

বাহ্ণপাদ, কাম্বোজ, পহ্নব, বড়বামুথ, সিন্ধু, গোবীর, আনর্ত্ত, বনিতামুথ, জাবণ, আর্থি, শূদ, কর্ণ, প্রাধের, বর্মবর, কিরাত, পারদ, পাণ্ডা, পারশব, কল, ধৃর্ত্তক, হেমগিরিক, সিন্ধু, কালক, রবত, গৌরাষ্ট্র, দরদ, জাবিড়, নহার্ণব, এই দকল জনপদ কুর্মের অপর দক্ষিণ পাদে ব্যবস্থিত

আছে। স্বাতী, বিশাধা ও মৈত্র এই তিন নক্ষত্র ঐ সকল দেশের গুভাওভ স্চনা করিয়া

মণিমেব, ক্রান্তি, ধঞ্চন, অন্তগিরি, অপরাত্তিক হৈছর, শান্তিক, বিপ্রাণন্ত, কোহণ, পঞ্চনদ, বমন, অবর, তারকুর, অঙ্গতক, শর্কর, শান্তানে, গুরুত্বর, ফস্কুন্ক, গুরুত্ব, কলহ, একেকণ, বাজিকেশ, দীর্ঘগ্রীব, সুচ্লিক, অধ্বেদ এই সকল জনপদ কুর্মের পুছে সংস্থিত আছে। ঐক্র, মৃন ও সাবাঢ় এই তিন নক্ষত্র কুর্মের পুছে আগ্র করিয়া বিরাজ করিতেছে।

মাওব্য, চওথার, অশাক, ললন, কুশাত্ত, লড্হ, ত্রীবাহ্য, বালিক, নৃসিংহ, বেণুমতী, বলাবস্থ, ধর্মবন্ধ, অলুক, উরুকর্ম, এই দকল কুর্মের বামপাদে অবস্থিতি ক্রিতেছে। তথাকার নক্ষত্র আবাঢ়া, প্রাবণা ও ধনিষ্ঠা।

কৈলাস, হিমবান, ধহুখান, বস্থান, ক্রেক, কুরুবক, কুত্রীন, বসালয়, কৈকয়, ভোগপ্রস্থ, যামুন, অন্তর্গীপ, ত্রিগর্জ, অগ্নীজ, অর্কন, অধ্যুথ, প্রাপ্ত, চিবিড়, কেশধারী, দাসেরক, বাটধান, শরধান, পুরুল, অধম, কৈরাত, তক্ষশীল, অধান, মালব, মড়, বেণুক, বদস্কিক, পিল্লল, মানকলহ, হ্ল, কোহল, মাওবা, ভৃতিযুবক, শাতক, হৈমতায়ক, যশোমতা, গান্ধার, স্বরস, গর, রাশির, বৌধের, দাসমে, রাজনী, খ্যামক, ক্ষেমধ্র্ত এই সকল জনপদ কুর্মের বামকুক্ষি আশ্রেষ করিয়া আছে। বারুল ও প্রেটপদ্বয় এই তিন নক্ষেত্র তথাকার শুভাশুভ স্থানন করিয়া থাকে।

কিন্নবাজ, পশুপাল, কীচক, কাশীর, অভিসারজন, দরদ, ত্বসন, কুগট, বনরাষ্ট্রক, দৈরিষ্ঠ, ব্রহ্মপুক্ষ, বনবাহাক, কিরাত, কৌশিক, আনন্দ, গছল, লোলন, দার্কাদ, মরক, কুরট, অল্লদারক, একপাদ, থাশ, ঘোষ, যবন, হিঙ্গ, চীরপ্রাবরণ, তিনেত্র, পৌরব, গল্পর ইহারা কুর্মের পূর্বোত্তর পদ আশ্র করিয়া আছে। বেবতী, অখিনী ও যান্য এই নক্ষত্রতার উল্লিখিত পাদে অবস্থিতি করিতেছে। ইহাদের লাবাই তাহাদের শুভাশুভ বিজ্ঞাপিত হইয়া থাকে।

বিজ ! আমি যথাক্রমে যে সকল দেশের বর্ণনা করিলাম, সেই ঐ সকল দেশ উল্লিখিত ক্রগণ কর্ত্ব পীড়িত হইয়া থাকে।

গ্রহণণ সমানরপে অবস্থিতি করিলেই, ইংাদের অভাদের লাভ হয়। যে গ্রহ যে নক্ষত্রের পতি হা হারাই সেই দেশের ভয় বা উৎকর্ষ ও শুভদংঘটন হইরা থাকে। প্রত্যেক দেশেই তত্তৎ হও নক্ষত্র হইতে সমান ভাবে ভয় বা অভয় সম্দ্রাবিত হয়। প্রাণিগণের নিজা নক্ষত্র আশোন হইলে, সামাভারপ ভয় উৎপাদন করে। সেইরপ, গ্রহণ ইইতেও পীড়াজনিত অয় আগোদ গা করিতে হয়। দ্রার, গোঠ, ভৃতা, স্থহৎ, তনয়, স্ত্রী, এই সকলে হংস্থ গ্রহের দৃষ্টি হইলে, গাবান্ লোকের ভয় সংঘটিত হয়। আত্মাতে হংস্থ গ্রহের দৃষ্টি হইলে, অরপ্ণা ও অতি শীগণের স্কৃত্তিই ভয় সভাবিত হইয়া থাকে। কিন্তু কোন স্কৃত্তিই কথন পাপহীন প্রস্থগার ভয় সঞ্গারিত হয় না। মনুষ্যমাত্রেই দিক্, দেশ, রাজ্য, নক্ষত্র ও গ্রহ ইতাদি সকল স্বেই ভাবে আপনার কর্মাঞ্জনিত শুভ অভভ ভোগ করিয়া থাকে।

আমি যে নক্ষর সকলে কৃর্মের সংস্থিতি বর্ণন করিলাম, তাহাতে শুভ অশুভ সকল দেশেই ভাবে সংস্কৃতিত হয়। অতএব দেশ, নক্ষর ও আগনার গ্রহণীড়া বিশেবরূপে বিদিত হইয়া, ধারী ব্যক্তি শান্তিক্রিয়া ও লোকবাদ সকলের অনুষ্ঠান করিবে। আবোশ হইতে দেবতা ও ত্যাদিদিগের যে সকল দেছিদ পৃথিবীতে পতিত হয়, তাহাদিগকেই লোকবাদ বিদয়া থাকে। ইলভ শান্তিক্রিয়ার সমকালেই লোকবাদে প্রবৃত্ত হইবে। তাহা হইলে, শুভসকার ও পাণের য়হয়। আর ঐরপে প্রবৃত্ত না হইলে, প্রভাহানি ও জ্বানাশ সংঘটিত হইয়া থাকে। সেইলভ আবান প্রকৃষ শান্তি ও লোকবাদ উভয়বিধ কার্যেই প্রবৃত্ত হইবে। পণ্ডিত ব্যক্তি তৎকালে ধিপ্রকৃক অন্তোহ, উপবাস, চৈত্যাদিবন্দন, ক্ষপ, হোম, দান, সান, ক্রোধাণিবিদর্জন, সর্বভ্তে মতা ও অন্বক্রের এই সকলের অনুষ্ঠান ক্রিবেন এবং অসদ্বাক্যত্যার ও অতিবাদ পরিহার

করিতে হইবে। সর্ক্রিণ পীড়াতেই মানবগণ ঐক্প অন্ধর্গন ও গ্রহপূজা করিবে। এইরপে প্রেরত হইবে, সম্পার গ্রহনক্ত্রপীড়ার শাস্তি হইরা থাকে। ব্রাহ্মন্ । ভগবান্ নারারণ বেরপে ক্র্রিপ ভারতে অবস্থিতি করিতেছেন, যাহাতে সমস্ত প্রতিষ্ঠিত আছে, তাহা আমি স্বিশেষ ক্রিন করিবাম।

দেবগণ প্রত্যেক নক্ষত্র আশ্রেষ করিয়া, এই ক্র্মেতে অবস্থিতি করিতেছেন। অমি, পৃথী, চন্দ্র ও মেষাদি নক্ষত্রতার ক্রের মধ্যভাগে, মিথুনাদি ছই নক্ষত্র মুথে, কর্কি ও সিংহ পূর্ব্ব-দক্ষিণ পাদে, সিংহ কল্পা তুলা এই রাশিত্রর কুক্ষিতে, তুলা ও বৃশ্চিক উভয়ে দক্ষিণ পশ্চিম পাদে, ধরী ও বৃশ্চিক উভয়ে পৃষ্ঠভাগে, ধন্থ ও গ্রাহাদি বায়ব্য পদে, কৃত্ত ও মীন উত্তর কুক্ষিতে, মীন ও মেষ প্রেমাতর পাদে, অবস্থিত আছে। এইরপে ক্রে ততং দেশ সকল, দেশ সকলে নক্ষত্র সকল, নক্ষত্র সকলে রাশি সকল এবং রাশি সকলে গ্রহ সকল অবস্থিতি করিতেছে। সেইস্বল্পই গ্রহ ও নক্ষত্র পীড়াফে দেশপীড়া ব্লিয়া থাকে। দেশপীড়া ঘটলে, স্নান করিয়া, দান হোমাদি বিধির অনুসর্ব করিবে। গ্রহমধ্যে বিরাজ্যান সেই এই বৈষ্ণ্য পাদই সাক্ষাৎ নারায়ণাথ্য ব্রহ্মা। এই অচিস্তায়ো ব্রন্থাই লগতের কারণ ও প্রভূ!

ইতি কুর্মনিবেশ নাম অষ্টপঞ্চাশৎ অধ্যায়।

## উনষষ্টি তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, মুনে! আমি এই ভারতবর্ধের বৃত্তান্ত যথাষথ কীর্ত্তন করিলাম। সত্য, বেত্তা, ছাপর ও কলি এই চারি যুগ। এই ভারতেই তাহাদের প্রচার বা প্রকটভাব হইয়া থাকে। এই ভারতেই চাতুর্বর্ণ্য বিধি ব্যবস্থিত আছে। দ্বিজ ! এখানে সত্যাদি চারি যুগে লোকে যথাক্রমে চারি, তিন, ছই ও এক শত বংসর বাঁচিয়া থাকে। ব্রহ্মন্! দেবকুটের পূর্বান্তী শৈলরাজের পূর্বস্থি যে বর্ধ, তাহাকেই ভদ্রাখ বর্ধ বিলিয়া থাকে। খেতপণ, নীল, শৈবাল, কৌরঞ্জ, পর্ণশাণাগ্র এই পাঁচটা পর্বত এখানকাব কুলপর্বত। তাহাদের প্রস্তুত অভাভ অনেক কুদ্র পর্বতও আছে। দেই দকল পর্বতে নানাবিধ সহস্র সক্র লনপদ প্রতিষ্ঠিত আছে। শীত্র, শভ্রবতী, ভ্রা ও চ্টাবের্তা ইত্যাদি নদী সকল তত্তৎ জনপদে প্রবাহিত্ব হইয়া থাকে। উহারা সকলেই বিভারশালিনী এবং সকলেই স্থীতল-সলিলোঘ-প্রবাহিনী। এথানকার অধিবাসীরা বিশুদ্ধ অপ ও শভ্রবিশিষ্ট, প্রমপ্রিক্রশ্রতাব, দিব্যসঙ্গমী ও সহস্রবর্ষ্কীরী। তাহাদের মধ্যে উৎরষ্ট নাই। তাহারা সকলেই সমদ্শী এবং সকলেই স্থভাবতঃ তিতিকাদি অষ্টবিধ গুণবিশিষ্ট। এথানে ভগবান্ জনার্দন অফি-ক্র্য-সম্বিত অর্থশিরা রূপে বিরাজ্মান হইতেছেন। এই সকল জনপদ প্রতিষ্ঠ জানিবে।

ইহার পর পশ্চিমে কেতুমালবর্ষ, শ্রবণ কর, বলিতেছি। বিশাল, কম্বল, ক্ষ্ণ, জ্বন্ধ, বিশোল, বর্জনান এই সাতটী পর্বত এখানকার কুলগিরি। তদ্বাতীত, অন্তান্ত সহত্র পর্বত আছে। সেই সকল পর্বতে মৌল, মহাকার, শাকপোত করন্ধ, অসুল প্রমুথ নানাবিধ জনপদ সকল প্রতিষ্ঠিত আছে। তাহাদের অধিবাসীরা রংক্ষু, শ্রামা, কম্বলা, আমোঘা, কামিনীও অন্তান্ত সহত্র মহানদীর জলপান করিয়া থাকে। এথানকার লোকেও দশবর্ষ শত বাচিয়া থাকে। জগবান জনার্দিন এথানে বরাহক্সপে বিরাজমান হইতেছেন। এই দেশ নক্ষত্র ব্যায়ুক্ত। তৎসমন্ত নক্ষরই অন্তর্কুণ ভাবাপত্র। ম্নিসত্তম! এই আমি আপনার নিকট কেতু মালবর্ষ কীর্ত্তন ক্রিলাম।

1.1

অতংশর উত্তর কৃষ্ণ বর্ণন করিব, শ্রবণ করন। তথাকার বৃদ্ধাতেই মধুকাবিশিষ্ট, নিতাপুশাকনসম্পান। তাহাদের ফলে বস্তুও আভরণ দকল প্রস্তুত্ত হইরা থাকে। তাহারা দর্মকামপ্রদ এবং সর্বপ্রকার কামকল সম্প্রদান করিয়া থাকে। তথাকার ভূমি মণিমন্ত্রী; বায়ু স্থান্ধ ও সর্বকাল স্থপ্রদ। দেবলোক প্রথ মন্যোরাই তথায় জনিয়া থাকে। তথায় মিথুন সকলেরই উত্তর হয়। তাহারা পরস্পর সমকাল বাঁচিয়া থাকে এবং চক্রবাকমিথুনের আয় তাহাদের পরস্পরের প্রতি অন্বরাগেরও সীমা নাই। তাহাদের জীবিত কালের পরিমাণ সার্দ্ধ চতুর্দশ সহস্পরের প্রতি অন্বরাগেরও সীমা নাই। তাহাদের জীবিত কালের পরিমাণ সার্দ্ধ চতুর্দশ সহস্পর্বের প্রতি বাহিতা হইতেছে। তাহার জল পরমণবিত্র ও নির্মাণ। তদ্বাতীত, উত্তরবর্ষে অলাল সহস্পর দ্বিত্র হল হল হল হল বিলা, কেহ বা ক্ষীরবাহিনী। তথায় বহুসংগ্য দ্বিত্র স্থাপ্রপতি আছে। তথায় নানাবিধ ফল জনিয়া থাকে। তৎ সমস্ত ক্লেই অস্তর্গ, স্থান্থ। তথায় নানাবিধ ফল জনিয়া থাকে। তৎ সমস্ত ক্লেই অস্ত্রের প্রায়, স্থান্থ। তথায় বানাবিধ ফল জনিয়া থাকে। তৎ সমস্ত ক্লেই অস্তর্গ, স্থান্থ। তথায় বংশ বিরাজমান হইতেছেন। এখানে তিন তিনটা ক্রমে বিভক্ত নয়নী নক্ষত্র আছে। মুনিসত্তম। এখানকার দিক্ত নবধাবিছিল। এখানকার সম্ব্রমধ্য চক্ত্রীণ ওই ভাইনী বীপ পরম পবিত্র বলিয়া পরিগণিত। ব্রহ্মন্। এই আমি উত্তর কুক্ বর্ণন করিলাম। অধুনা, কিংপুর্যাদি বর্ষ সকল বর্ণন করিতেছি, শ্রবণ কর।

ইতি উত্তরকুকবর্ণন নাম উনষ্টিতম অধ্যায়।

## যষ্ঠিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিজ ! যাহাকে কিম্পুর্ষ বর্ষ বলে, তাহার বর্ণন করিতেছি, প্রবণ কর। এবানকার পুরুষমাত্রেই হুষ্ট-পুষ্ট দেহবিশিষ্ট। তাহাদের আয়ুংপরিমাণ দশসহন্স। তাহাদের রোগ নাই, শোক নাই। এথানকার স্ত্রীলোকেরা পুরুষের ভাষে, ঐরপ শোকহীন, রোগহীন ও দশ সহত্র বৎসর দাঁচিয়া থাকে। এথানে নন্দনের ভাষ যে স্কুর্হৎ প্লক্তৃক আছে, অধিবাসিরা সর্কাদা তাহার ফলরস্পান করিয়া থাকে।

এথানকার স্ত্রীলোকেরা স্থিরযৌবনশালিনী। তাহাদের শরীরে উৎপলগন্ধ বহির্গত হইয়া থাকে। কিংপুরুষের পর হরিবর্ষ। তথায় যাহারা জল্মে, তাহারা দকলেই মহারজতসন্ধাশ, দকলেই দেবলোকভ্রত ও দকলেই দেবরূপী এবং দকলেই পবিত্র ইক্লুরদ পান করিয়া থাকে। দেবানে জরা ব্যাধির সম্পর্ক নাই, কেহই কথন কোনরূপে জীর্ণ হয় না। সকলেই দশসহত্র বংসর বাঁচিয়া থাকে। কোনরূপ রোগ ভোগ করিতে হয় না।

আমি যে মেক্বর্ষ ইহাবৃতের কথা বলিয়।ছি, সেখানে স্থা তাপ দেন না, সেখানে কেহ
জরাযুক্ত হয় না, সেখানে চক্র স্থা, গ্রহ ও নক্তরগণেরও জ্যোতি ক্রিড হয় না, সেখানে
মক্র হাতিই একমাত্র আলোকের কার্য্য করিয়া থাকে। সেখানে যে সকল লোক জ্বেল, ডাইারা
কলেই পল্ল-প্রতিম-প্রভাসম্পন্ন, সকলেই পল্ল্লাগ্রনিশিই, সকলেই জ্লুক্লরন ভক্ষণ করে,
ববং সকলেই পল্ল-প্লাশলোচন। সেখানে আর্র পরিমাণ ক্রেন্দশসহস্র বংসর। মেকু মধ্য
রাবাকারে অবস্থিত আছে। এখানে মেকুই মহাশৈল। ইলাবৃত্বর্ধ বর্ণন করিলাম।

অতঃপর রম্যকবর্ষ বর্ণন করিব, প্রবণ করে। তথার হরিতবর্ণ-পত্রবিশিষ্ট, অতুচ্চ স্তর্গোধ-কি বাছে। অধিবাদী লোকেরা তাহারই ফলরদ পান করিয়া, বর্দ্ধিত হইয়া থাকে। দেখানে আয়ুর পরিমাণ অযুত বৎদর। অধিবাদীরা দকলেই রতিপ্রধান ও বিমলচরিত্র। তাহাদের জরা দৌর্গদ্যের সম্পর্ক মাত্র নাই।

তাহার উত্তরস্থিত বর্ধের নাম হিরশ্যম বর্ধ। তথাম হিরণুতী নদী প্রবাহিত হইতেছে। ঐ নদী প্রভৃত কমলকুর্মনৈর প্রভায় উদ্ভাসিতা। তথায় মহাবল তেজস্বী মানবগণেরই জন্ম ইইয়া থাকে। তাহারা সকলেই ব্লের ক্রায় রূপসম্পন্ন, সকলেই মহাসম্ভ, সকলেই ধনী ও প্রিয়দর্শন।

#### ইতি বৰ্ষবৰ্ণন নাম ষ্টিত্ৰ অধ্যায়।

#### একষপ্তিতম অধ্যায়।

ক্রেট কৈ কহিলেন, মহামুনে ! যাহা জিজ্ঞাসা করিখাছিলাম, তদস্থপারে আপনি সম্যাগ্রূপে ভূসমুন্তাদির সংস্থান, প্রামাণ, গ্রহ ও নক্ষতাণের সংস্থিতি ও পরিমাণ এবং ভূরাদি লোক ও অধিল পাতাল বর্ণন করিলেন। মুনে ! আপনি আমার নিকট স্বায়ন্ত্র মন্তর্গ কটিন করিরাছেন। আমি তদস্তর মন্তর সকল এবং তত্তৎ মন্তরের অধিপতি, দেব, ঋষি ও তাছাদের তনর এবং নর-পতিগণের বিবরণ প্রাণ করিতে অভিলাষী হইয়াছি।

মার্কণ্ডের কহিলেন, আমি যে তোমাকে স্বায়ন্ত্ব ময়ন্তবের কথা বলিরাছি, তাহার পর স্বায়োচিদনামক অন্তবিধ ময়ন্তবের কথা প্রবণ কর। অকণাপদনগরে বরুণানদীর ভটদেশে কোন বিজাভিপ্রবর বাদ করিতেন। তিনি রূপে অধিনীকুমারকেও অতিক্রম করিয়াছিলেন। তিনি মৃত্স্ভাব, সচ্চরিত্র, বেদবেদান্তপারগ, দর্মদা অতিথিপ্রিয় এবং রাত্রিতে যে দকল লোক আদিত, তাহাদের বিশেষরূপে আশ্রের দিতেন। তিনি সংকল করিলেন, আমি এই অতীব রমনীয় বন ও উদ্যানশালিনী এবং বিবিধ-নগর-শোভিনী মেদিনী দর্শন করিব।

কোন সময়ে তাঁহার ভবনে একজন আত্থি সমাগত হইলেন। তিনি বিবিধ ওষধির প্রভাব বিশেষজ্ঞপে জানিতেন এবং মন্ত্রবিদ্যাতে স্বিশেষ নিপুণ ছিলেন। ব্রাহ্মণ শ্রহ্মাপুত্চিত্তে তাহাঁর অভ্যন্থনা করিলেন। তিনি তাহাঁর নিকট বিবিধ রমণীয় দেশ, নগর, বন, নদী, শৈল ও পবিত্র আয়তন সমস্ত বর্ণন করিলেন। ব্রাহ্মণ বিস্মাবিষ্ট হইয়া, তাহাঁকে কহিলেন, অনেক দেশ দর্শন করিয়া, আপনি অতি শ্রমসমন্ত্রিত হইয়াছেন। তথাপি, আপনি ব্যুদে অতি বৃদ্ধ হন নাই এবং যৌবন হই-তেও অধিকদ্বে গমন করেন নাই। আপনি অল্লাকা মধ্যেই কিরুপে পৃথিণী প্র্যুটন করিলেন ?

অতিথি ব্রাহ্মণ কহিলেন, বিপ্র! মন্ত্রোষ্ধিবলেই আমার গতি অপ্রতিহত হইয়াছে। এমন কি, আমি দিনার্দ্ধ মধ্যেই এক সহস্র যোজন গমন করিয়া থাকি।

মার্কণ্ডেম কহিলেন, আদ্ধান তাহাঁর কথায় বিশাসবদ্ধ হইয়া, পুনরায় আদরসহকারে তাঁহারে কহিলেন, ভগবন্! আমার প্রতি ময়ৌষধিপ্রভাবজনিত অস্ত্রহ বিতরণ কর্মন। সমগ্র পৃথিবী প্রিদর্শন ক্রিতে আমার অভিশয় অভিশাষ হইয়াছে।

তথন উদারবৃদ্ধি অতিথি প্রাহ্মণ তাঁহাকে পাদলেপ প্রদান এবং তাঁহার আখ্যাত দিক্ও অভিমন্ত্রিত করিলেন। বিজ্ঞান্তর হিন্তু আতিমন্ত্রিত করিলেন। বিজ্ঞান্তর হিন্তু আতিমন্ত্রিত করিলেন। তৎকালে তিনি মনেন মনে চিন্তা করিতে লাগিলেন, আমি দিনার্দ্ধ মধ্যে সহস্র যোজন গমন করিয়া, অপর দিনার্দ্ধ মধ্যে প্রত্যাগমন করিয়া, অপর দিনার্দ্ধ মধ্যে প্রত্যাগমন করিয়া, আনস্তর তিনি হিমালয়পুঠে সমাগত হইলেন। কিন্তু তাদৃশ দূরপথ গমন করিয়াও, তাঁহার অতিশ্রান্তি বোধ হইল না। তিনি তথায় উপনীত হইয়া, ইতন্তত: বিচরণ করিতে লাগিলেন। তাহাতে তাঁহার পদে তুহিন সংলগ্ধ হইল। উহা বিলীন হইবার সম্ব্যে তাঁহার সেই প্রযৌষ্ধি

দ্রপ্ত সাদলেপ প্রকালিত করিল। তথন তিনি জড়গতি ছইয়া, ইতস্ততঃ প্রাটন করত ভিমালয়ের সামুসকল দর্শন করিতে লাগিলেন। সমত্ত সামুই অতীব মনোজ্ঞ, সিদ্ধ ও সদ্ধর্ম-গণে অধিবিষ্ট এবং কিন্নরগণে নিষেবিত; দেবাদিরা ইতন্ততঃ ক্রীড়াবিহার করাতে, আনরও রমণীর हरेबा উঠিয়াছে। শত শত দিবা অপারোগণ উহাদিগকে আকীর্ণ করিয়া আছে। তৎসমস্ত দর্শন করিয়া, তিনি পুলকিত হইলেন। কিন্তু তৃথির শেব লাভ কবিতে পারিলেন না। মূনে। কোগাও প্রস্ত্রবন হইতে জলরাশি এই ও পতিত হও্যাতে হিমাল্য দক্ল লোকের মনোহারী হইয়াছে। কোথাও শিথী সকল নৃত্য করিতে করিতে কেকাধ্বনি করিয়া, উহাকে প্রতিধ্বনিত করিতেছে। কোণাও অতি মনোহারী দাতৃত্ত ও কোবটিক প্রস্তৃতি পশ্চিগণ বিচরণ করিতেছে। কোণাও শ্তিহারী পুংস্কোকিলগণের কলালাপ উত্থিত হইতেছে। প্রফুলতরুগন্ধে আমোদিত সমীয়ন উহাকে বীজন করিতেছে। জদর্শনে তদীয় অন্তঃকরণে অতিমাত্র আহলাদ অন্তুত হইল। তিনি মনে মনে ভাবিতে লাগিলেন, আগামী কলা দর্শন করা যাইবে। এই প্রকার চিন্তা করিয়া, গ্রুগমনে ক্লাত্র ইইলেন। কিন্তু পাদলেণ বিভ্রন্ত ছত্ত্মাতে, চল্প্রাক্তি-রহিত্তপ্রায় হইয়া উঠি-লেন। তথন চিন্তা করিতে লাগিলেন, আমি অজ্ঞানবশতঃ এ কি অফুটান করিলাম ৭ আমার পাদলেপ বিনষ্ট ও হিমদলিলে বিলীন হইয়াছে। এই পর্বতও অতি হুর্গম; আমিও দুরে পড়ি-য়াছি। অতএব অবশ্র আমার সন্ধানি ক্রিয়াহানি হইবে। এথানেই বা কিরুপে আমি অধি-ক্ষরাদি কার্যোর অনুষ্ঠান করিব ? বিষম সঙ্কটেই পডিলাম। এই হিমালয় সকল পর্বতের প্রধান। ইহার সকলই রমণীয়। যাহা দেখিব, তাহাতেই দৃষ্টি আকর্ষণ করিবে। শত শত বর্ষ দেখিলেও, তৃপ্তির শেষ হইবে না। কিন্নরগণ ইহার চতুর্দিকে সর্মলোক-মনোহর স্থমধুর আবাপ সহকারে সকলেরই শ্রোত হরণ করিতেছে। প্রফুল তরুগন্ধ আঘাণ করিয়াও, ঘাণেজ্রিয় অতি-মাত্র আরুষ্ট হইয়াছে। এথানকার বাযুও স্থাপার্শ, ফলস্কলও অতিযাত্র সর্ব। এরূপ অবস্থার কোন তপস্বীকে যদি দেখিতে পাই, তিনি অবশ্য আমারে গৃহগমনার্থ পথ বলিয়া দিতে পারেন।

মার্কণ্ডেম্ন কহিলেন, প্রাহ্মণ এই প্রকার চিন্তাক্রমে হিমাচলে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। পাদস্থ ওয়ধিবল ভ্রম্ভ হওয়াতে, নিরতিশয় তর্মল হইয়া উঠিলেন।

বর্রথিনী নায়ী রূপশালিনী মহাভাগা বরাপ্সরা তদবস্থায় সেই মুনিশ্রেষ্ঠকে দর্শন করিল। দর্শন কবিবামাত্র তৎক্ষণাৎ তাঁহার প্রতি অমুরাগের উজেক হওয়াতে, তলীয় হৃদয় কামবেগে আরুষ্ট হইয়া উঠিল। তথন সে চিন্তা করিতে লাগিল, এই রমণীয়তম-মাকার-মম্পন্ন পুরধ কে ? यদি ইনি আমাকে অবমাননা না করেন, তাহাহইলে, আমার জন্ম সফল হইতে পারে। আহা, ইহার কি রূপমাধুরি! আহা, কি পরমন্থনার গতি! আহা, ইহার কি দৃষ্টির গছীরতা! পৃণিবীতে ইহার সমকক্ষ কোপায়? আমি দেব, দৈতা, সিদ্ধ, গদ্ধতি ও প্রগ, সকলকেই দেখিয়াছি। কিছ তাহাদের মধ্যে এই মহাস্থার তুলা রূপবিশিষ্ট একজনও নাই। অতএব, আমি যেমন ইহার প্রতি অমুরাগবতী হইয়াছি, ইনিও যদি আমাতে সেইরূপ অমুরাগবদ্ধ হন, তাহাহইলে, আমার বহু প্রাস্থিত হইয়াছে, জানিব। অধিক কি, যদি ইনি অদ্য আমার প্রতি স্বনিয় দৃষ্টি নিক্ষেপ করেন, তাহাহইলে, এই ত্রিভ্বন মধ্যে কোন বমণীই আমার সদৃশী পুণ্যকারিণী নহে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, াদ্ব্যরমণী বক্ষণিনী এইপ্রকার চিন্তার অনুসারিণী ও শ্বাতুরা হইমা, ক্মনীয়তর আকারে দ্বিজ্নুমারের দর্শনগোচরে সমাগতা হইল। বিদপুত্র সেই চারকাণিণী বক্ষণীর নম্মনগোচর ক্রিয়া, উপচারসংকারে নিক্টস্থ হইগা, বলিতে লাগিলেন, অরি ক্মল-গর্ভাতে। তুমি কে ? কাহার পরিগ্রহ? এখানেই বা কি ব রিতেছ ? আমি আহ্বল; অরুণাম্পদনগর ইতিত এখানে আসিয়াছি। আমার পাদলেপ হিমসলিলসংখোগে নষ্ট ও গীন হইয়াছে। অরি মনিরেক্ষণে। ঘ্রার প্রভাবে আমি এখানে আসিয়াছি।

বর্ষিনী কহিল, আমি অপ্সরা, আমার নাম বর্ষিনী। আমি সর্বাদাই এই মহাচলে বিচরণ

জারিরা থাকি। বিপ্র! আমি আপনাকে দর্শন করিয়া, কামের বশবর্তিনী হইরাছি। আমি এখা আপনারই অধীনা। অত এব আপনার কি করিব, আজ্ঞা করন। আরূল কহিলেন, অরি ভিচি সিতে! যে উপানে আমি নিজ গৃহে যাইতে পারি, তাহা আনাকে বল। কলাালি! দেখ, আমার সম্প্র কর্মাই এই হইতেছে। আজ্পের কর্ত্তবা নিতানৈমিত্তিক কর্ম সকলের সম্পূর্ণ ক্ষতি হইতেছে। আজ্পের কর্ত্তবা নিতানৈমিত্তিক কর্ম সকলের সম্পূর্ণ ক্ষতি হইতেছে। আজ্পের কর্ত্তবা কর্মার কর। আক্ষণের প্রবাস কথন প্রশন্ত নহে। ভীরু! আনার কোন অপরাধ নাই। কেবল দেশদর্শনে কৌত্হল জ্মিয়াছিল। আক্ষণ গ্রাকিলে, তাঁহার সকল কার্যের নিজ্পতি হইরা থাকে। কিন্তু এই রূপে প্রবাসী হইলে, নিত্ত নৈমিত্তিক সকল কর্মাই এই হইরা যায়। অধিক বলিয়া আর কি হইবে ? অরি যশস্থিনি! যাহাতে আমি স্থ্য অন্ত যাইবার পূর্বেই নিজ গৃহে যাইতে পাবি, তদ্মুরপ বিধান কর।

বর্ষথিনী কহিল, মহাভাগ! এরপ বলিবেন না। সে দিন যেন আমার না হয়, যে দিন আপনি আমায় পরিত্যাগ করিয়া, নিজ গেছে গমন করিবেন। দ্বিজনন্দন! এই হিমালয় অপেকা প্রগ্র রম্যতর নহে। সেই হেতু আমরা তাহা পরিত্যাগ করিয়া, এখানে অবস্থিতি করি। অয়ি কাজ! আপনি আমার সহিত এই কমনীয় হিমাচলে বিহার করন। তাহাহইলে, আর আপনার পৃথিবীয় বাদ্ধবিদিকে মনে থাকিবে না। আপনি কামের সাহায়ে আমাকে বশীয়তা ও ক্রতিতা করিয়াছেন। আমি আপনাকে মালা, বস্ত্র, অল্জার, ভক্ষ্য, ভোজ্য ও অয়ুলেপন প্রদান করিব। মহাতাগ! এখানে থাকিলে, আপনার বীণা-বেণ্শল, কিয়রগণের মনোরম গীত, অসাহলাদকর বায়্, উষ্ণ অয়, নির্দ্ধল জল, মনোভিল্বিত শ্যা, স্থান্ধ অমুলেপন, সমন্তই সংযোজিত হইবে। নিজের গৃহে থাকিলে, ইহার অধিক আরে কি পাইবেন 
রহা নেবগণের ভূমি। এখানে যৌবনরই নিত্য উপচয় হইয়া থাকে। কমলেকণা বর্মথিনী এই বলিয়াই, অয়ুরাগের আবেশবশে একবারে উয়ানা হইয়া উঠিল। তথন, গদগদ মধ্ব প্রের, প্রান্ধ হউন, বলিয়া, তাহারে সহসা আনিক্ষন করিল।

ব্রাহ্মণ কহিলেন, অমি গুরুত্ত ! আমাকে স্পর্শ করিও না, স্পর্শ করিও না। যেখানে তোমার সদৃশ ব্যক্তি আছে, সেইথানে তাহারই নিকট যাও। আমি তোমায় একভাবে যাদ্ধা করিয়ছি। তুমি কিন্তু আর একভাবে আমায় কামনা করিতেছ। তুমি এই সামাত্ত হিমালয়ের কথা কি বলিতেছে ? সায়ং প্রাতঃ অনলে হোম ক্রিলে, শাশ্বত লোক সকল অনায়াসেই প্রাপ্ত হণ্ডা যায়। অমি মৃঢ়ে! সমৃদ্য তৈলোক্য হবোই প্রতিষ্ঠিত আছে। মতএব যাহাতে শীঘ্র স্বপৃহে যাইতে পারি. তোহার উপায় বল।

বর্থিনী কহিল, বিপ্রা! আমি কি আপনার প্রিয়া হইলাম না ? এই হিমাচলও কি আপনার রমণীর নহে ? গদ্ধবি ও কিল্লর প্রভৃতি অপেক্ষাও সংসাবে আর কেইবা আপনার প্রার্থনার সামগ্রী হুইতে পারে ? আপনি এখান হুইতে নি:সন্দেহই আপনার গৃহে যাইবেন। স্থলকাল আমার সহিত হুহুর্জভ ভোগ সকল ভোগ করন।

ব্রাহ্মণ কহিলেন, গার্কপত্যাদি অগ্নিত্রয়ই সভত আমার প্রার্থনার সামগ্রী; অগ্নিগৃহই আ<sup>মার</sup> স্বনীয় এবং দেবী বিস্তরণীই আমার প্রিয়া।

বর্ষানী কহিল, ছিলা! যে জাটটী আত্মগুণ আছে, তাহার মধ্যে দরা প্রধান। জাপনি দর্মপালক। তবে কেনে আমার প্রতি দেই দয়া-প্রকাশ করিতেছেন না ? আমি জাপনার প্রতি একাপ প্রীতিম্তী হইরাছি, যে, আপনি ত্যাগ করিলেই, প্রাণ্ড্যাগ করিব। অগ্নি কুলন্লন!
আমি ইহা মিগ্যা ৰলিভেছি না। অত এব প্রদন্ন ইউন।

ব্ৰাহ্মণ কহিলেন, যদি সভাই প্ৰীতিমতী হইয়া থাক; যদি মিধ্যা বলিয়ানা থাক; তাহা ছইলে, যাহাতে নিজগৃহে যাইতে পারি, তাহার উপায় নিৰ্দেশ কর। ৰক্ষথিনী কৃছিল, আবাপনি এখান হইতে নিঃসম্পেহই নিজ নিকেতনে ধাইবেন। স্বল্লকাল আমার মহিত ভোগ সকল সভোগ ককন।

আহ্মণ কহিলেন, বৃজ্পিনি! আহ্মণের পক্ষে ভোপার্থ চেষ্টা করা প্রাশন্ত নহে। কেননা, উহাতে ইহকালে ষেমন ক্লেশ সভ্যটিত হয়, প্রকালেও সেইজ্প সমস্ত প্ত হইয়া গাকে।

বর্রথিনী কহিল, আমি মিরমাণা হইয়াছি। অতএব আমারে পরিত্রাণ করিলে, আশনার পরকালে যেমন পুণ্যের ফললাভ হইবে, সেইরূপ জন্মান্তরেও ভোগ-সুথ-সংঘটন হইবে। এইরূপে ছইটীই আপনার উপচয়ের হেতু। কিন্তু প্রত্যাধ্যান করিলেই, আমি মৃত্যু লাভ করিব। তজ্জভ্যু আপনাকেও পাপভাগী হইতে হইবে।

ব্ৰাহ্মণ কহিলেন, আমার গুরুগণ বলিয়াছেন, প্রস্ত্রীকে কামনা করিবে না। দেইজান্তই তোমাতে আমার অভিলাষ নাই। অতএব তুমি বিলাপই কর, আর শুকিয়াই বা যাও, সে ভোমার ইচ্ছা।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, সেই মহাভাগ প্রাক্ষণ এইপ্রকাব কহিয়া, প্রায়ত ও শুদ্রি হইয়া, স্বিল লপ্ন করিয়া, বিশুক্ষচিতে গার্হপত্য অ্লারকে প্রণামপূর্ব্ধক কহিতে লাগিলেন, ভগবন্ গার্হপত্য অ্লে ! আপনি স্ক্রিবিধ কংশ্রের উত্তবক্ষেত্র । আপনা হইতেই আহবনীয় অ্লি ও দক্ষিণায়ি উভ্যের প্রাহ্রভাব হইয়াছে; অন্ত হইতে হয় নাই। আপনার ভৃপ্তি হইতেই দেবভারা বৃষ্টি ও শতাদির উৎপাদন করিয়া থাকেন। তাহাতেই সমস্ত জগৎ বাঁচিয়া রহে। অন্ত কোন উপায়েই নহে। এই ক্রপে আপনা হইতে যে সভ্যবলে এই নিধিল জগৎ অপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়া থাকে, আমি সেই সত্যবলেই যেন অন্য দিবাকর থাকিতে থাকিতে, স্বগৃহ দর্শন করি। আমি কথন স্বকালে বৈদিক ক্যেতাগ করি নাই। সেই সভ্যবলে অন্য বেন গৃহে থাকিয়া, দিবাকরকে দর্শন করি। আমার যেমন কথন প্রদারে বা প্রদ্রেয়ে মতি হয় নাই, ভেমনি সেই পূণ্যবলে আমার এই অভিলয়িক কামনা সিদ্ধ হউক।

ইতি ব্ৰাহ্মণবাক্য নাম একষ্টিভন অধ্যায়।

#### ् विषष्टि जग व्यक्षाग्र।

মাকণ্ডের কহিলেন, দ্বিজপুত্র এইপ্রকার বাক্যপ্রয়োগে প্রবৃত্ত হইলে, তদীর শরীরে গার্ছ-পত্য অগ্নি সন্ধিতি হইলেন। উাহার অধিষ্ঠানবশতঃ, আহ্নন প্রভা-বল্যের মধ্যবর্ত্তী হইলা, থিতীর অগ্নির স্থার, সেই দেশ বিদ্যোতিত করিলেন; স্মৃত্যাং তদ্দলনে দিব্য-যোধিৎ বর্গধিনী তাঁহার প্রতি আর্প্ত অস্ত্রাগ্বতী হইয়া উঠিল।

অনস্তর, অনলের অধিপ্তান হওয়াতে, বিজনদন তৎক্ষণাং পূর্বের স্থায় গমনে প্রান্ত হই-লেন এবং দ্বরাপূর্বেক যাইতে লাগিলেন। বর্ষিনা, যতক্ষণ দেখিতে পাওয়াধায়, ততক্ষণ তাঁহাকে দেখিতে লাগিল। তৎকালে তদীয় বিরহ্যোগ্যশতঃ বর্ষিনীর ক্ষরা নিধাস্বশে উৎকিপত্ত ইয়া উঠিল।

অনস্তর ব্রাক্ষণ কণমধ্যেই নিজ গৃহ প্রাপ্ত হইরা, ষ্থাবিহিত ষাবতীয় ক্রিয়া সম্পাদন করিলেন। এদিকে, চারুদর্বলৌ বর্রাধিনী তাঁহার প্রতি আদ ক্রিডিয়া হইয়া, অনবরত দীর্ঘনিখাদ ত্যাগ করত দিনশেষ ও বামিনীযাপন করিল। দেই অনবদ্যাক্ষী হাহাকারসহকারে বারস্থার রোদন করিল। নিখাসভার পরিহার করিতে লাগিল এবং আপনাকে মন্ত্রাগনী বদিয়া, নিলা করিতে আরম্ভ করিল। আহারে বা বিহারে বা রমণীয় বনে অপবা সুর্গ্য কন্দরে কিছুতেই তাঁহার রতি বহিশ না। কেবল রম্মাণ চক্রবাক্যুগণেই তাহার স্পৃহা ধাবিত হইল। ব্রাহ্মণের বিয়োগ্রোগ্রশতঃ

সেই বরারোছা আপনার বৌবনের নিন্দা করিতে লাগিল এবং এই প্রকার বাদ্য প্ররোগে প্রবৃত্তা হইল. ছরাত্মা দৈব বল-প্রযোগ করাতে, আমি বাধ্য হইরা, কোথার এই শৈলে আদিলাম। আর কোথা হইতে তাদৃশ মন্ত্র্যা আমার দৃষ্টিগোচরে উপনীত হইল। সকলই অসন্তব ঘটনা। অদ্য যদি সেই মহাভাগ আমারে সঙ্গী না হন, তাহাহইলে, তদীয় ছঃসহ কামানল আমাকে বিনষ্ট করিবে। এই যে হিমাচল পুংস্থাকিলের নিনাদবশতঃ রম্ণীয় হইয়াছিল; ইহাই অদ্য তদীয় বিরহে আমারে অতীব যর্গ্য প্রদান করিতেছে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইরূপে সেই বর্জানী মদনাবিষ্টা হইরা, সেই বাক্ষণেই আত্মসমর্পণ করিল। তাঁহার প্রতি তাঁহার অন্তরাগ প্রতিক্ষণেই বর্জিত হইতে লাগিল।

কলিনামে কোন গন্ধর্ম ইতিপূর্ণে তাহার প্রতি অনুবাগবদ্ধ হইয়াছিল। কিন্তু বন্ধথিনী তাহারে প্রত্যাথ্যান করে। সেই গন্ধর্ম তদবস্থা তাহাকে দর্শন করিয়া, তৎকালে চিন্তা করিতে লাগিল, এই গন্ধ্যানী বন্ধথিনী কিন্তু নিশাসপ্রনে মানা হইয়া, এই পর্বতে অবস্থিতি করিতেছে ? কোন ঋষির শাপে কি ইহার হৃদয় কুন্ন হইয়াছে ? অথবা কোন ব্যক্তি কি ইহার অবমান্না করিয়াছে ? কেননা, ইহার বদন্যগুল বাপ্সদিনলে পরিক্রিল্ল হইয়াছে।

অনস্তর কৌতৃহণ ইওয়াতে, দে এবিষয় বহুকণ ধরিয়া ভাবিতে লাগিল এবং সমাধিপ্রভাবে সম্পায় সবিশেষ অবগত হইল। অবগত হইয়া, পুনরায় চিস্তা করিতে লাগিল, আমার পূর্ব্বকৃত পুঞ্জীভূত ভাগাবলেই এইয়প শুভ ঘটনা সংঘটিত হইয়াছে। আমি অনুরাগের বলবর্ত্তী হইয়া, ইহাকে বিশুর প্রার্থনা করিয়াছিলাম। তথাপি, আমাকে প্রত্যাথ্যান করে। অদ্য ইতারে হস্তগত করিব। মানুষের প্রতি ইহার অনুবাগের আবেশ হইয়াছে। অতএব দেই মানুষের রূপ ধরিলেই, আমাতে অনুরাগবদ্ধা হইবে, সন্দেহ নাই। আর বিলম্পে প্রয়োজন নাই। মানুষেরই রূপ ধারণ করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর কলি আত্ম প্রভাবে দেই ব্রাহ্মণের রূপ ধারণ করিয়া, যেখানে বর্র-পিনী অবস্থিতি করিতেছিল, তথার বিচরণ করিতে লাগিল। বরারোহা বরুথিনী তাহাকে দর্শন করিয়া, কিঞ্চিৎ উৎজুললোচনা হইয়া, তথার আগমনপূর্বক বারস্থার বলিতে লাগিল, প্রাম্ম হউন। আপনি ত্যাগ করিলে, আমি নিঃসন্দেইই প্রাণপরিহার করিব। তাহাতে আপনার কষ্টতর অধর্ম ও ক্রিয়ালোপও হইবে। আপনি এই রম্পীর মহাকন্দর-কন্দরে আমার সহিত সংমিলিত হইলে, আমাকে পরিত্রাণ করিয়া, তজ্জ্য অবশ্যই পুণা সক্ষয় করিবেন। মহামতে! অবশ্যই আমার আয়ুর অবশেষ আছে। নিশ্চয়ই সেইজ্লু আপনি গমনে ক্ষাম্ম হইয়াছেন। আপনিই আমার হাদ্রের আইলাদকারক।

কণি কহিল, অমি তমুমধ্যমে ! এখানে থাকিলে, আমার ক্রিয়াহানি হইবে। আর, তুমিও এবম্বিধ বাকা প্রয়োগ করিতেছ। অতএব কি করিব ? যাহা হউক, আমি এখন সন্ধটে পড়ি মাছি। যাহা বলিতেছি, যদি তাহা করিতে পার, তাংাংইলে, তোমার সহিত আদ্য মিলিতে পারি;নজুবা পারিব না।

বর্মিণনী কহিল, প্রাণর হউন। যাহা বলিবেন, তাহাই করিব। আপনার নিকট মিণা। বলিতেছিনা। এবিষয়ে কোন সন্দেহই করিবেন না।

কলি কহিল, আমি অদ্য অরণ্যে তোমার সহিত সম্ভোগে প্রবৃত্ত হইলে, তুমি আমায় দেখিছে পাইবে না। নয়ন মুদিয়া থাকিতে হইবে। স্কলা তাহাহইলেই, আমার সহিত তোমার সংস্পৃথিত।

বর্থিনী কহিল, আছে।, এইরূপই হইবে। যাহা°বলিতেছেন, তাহাই করিব। আপনার মঙ্গল হউক। আমি অধুনা সর্বপ্রেকারেই আপনার বশে থাকিব।

ইতি বর্মথিনীকথা নাম ছিষ্টিত্য অধ্যায়।

## ত্রিষষ্টিতম অধ্যায়।

ž

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর কলি বর্রাথিনীর সহিত গিরিসাত্মসমূহে, প্রকৃল-কানন-সংসর্গে অতীব অ্লরহারী মনোজ্ঞ সংবাবের সকলে, রম্ণীয় কলর ও নদীপুলিননিচয়ে এবং তৎসদৃশ অনুযান্ত মনোহর দেশ সকলে আহলাদসহকারে বিহার করিতে লাগিল।

গার্হপত্য অগ্নির আবেশবশে দেই ত্রাহ্মণের যেপ্রকার তেজ ও রূপ প্রাত্ত্তি হইয়াছিল, ব্রুথিনী স্ত্রোগ্সময়ে নিনীলিত লোচনে তাহাই চিন্তা করিতে লাগিল। মুনিস্তুম। অনন্তর গদ্ধর্কের বীর্যা ও ত্রাহ্মণের রূপচিন্তন, এই উভয় সংযোগে কালসহকারে তাহার গর্ভ হইল। তথন কলি, গর্ভধারিণী বর্জুথনীরে সান্তনা করিয়া, বিপ্ররূপধারণপূর্বক প্রস্থান করিল। বর্জুথিনীও প্রীতিসহকারে তাহারে বিদায় দিল। এদিকে তাহার গর্ভস্থ বালক প্রস্তানত-পাবক-প্রতিম প্রভাপরস্পরার বিস্তার সহকারে সূর্য্যের ফার, স্বরোচিঃ অর্থাৎ স্বকীয় দীপ্তি ও কান্তি ধারা সকল দিক সমুভাসিত করিলা, ভূমিষ্ঠ হইলেন। যেহেতু, সেই বালক, স্থাের ভাগ, স্বরোচিঃ বারা প্রতিষ্ঠাত হইরাছিলেন, দেইহেতু করোচি: নামে বিখ্যাত হইলেন। সেই মহাভাগ বয়স ও গুণ্গ্রামের সৃহিত, ক্লাসমূহের সম্ভিব্যাহারে চল্লের ভাগ, দিন দিন বৃদ্ধিত হইতে লাগিলেন। তিনি योवरन পদার্পণপূর্বক যথাক্রমে সমুদায় বেদ, ধরুর্বেদ ও বিদ্যা সকল শিক্ষা করিলেন। দেই চারুচরিত স্বরোচি: কোন সময়ে মন্দরাচলে বিচরণ করিতে করিতে প্রস্থদেশে ভরাতুরা এক ক্সাকে অব্লোকন ক্রিলেন। ক্সা তাইাকে দর্শন ক্রিয়া, তংক্ষণাৎ কহিল, আমাকে পরিত্রাণ করুন। তথন তিনি ভয়-বিপ্লুত-লোচনা দেই অঙ্গনাকে কহিলেন, তোমার ভয় নাই। অনস্তর মহাত্মা স্বরোচিঃ, বীরোচিত বাক্যে ভয়ের কারণ জিজ্ঞাদা করিলে, দেই কল্লা খাদাক্ষেপ-গুতাক্ষরে কহিতে লাগিল, আমি ইন্দীবরাক্ষনামক বিদ্যাধরের কল্পা। আমার নাম মনো-রমা এবং মরুধলার পুতী আমাব জননী। আমার স্থীর নাম বিভাবরী। তিনি মক্দারনামক ৰিদাধেরের আংগ্রজা। আনারে আরে এক স্থীর নাম কণাবতী। তিনি মহর্ষি পারের কলা। আনামি উাহাদের সহিত কৈলাস পর্কতের উৎক্ট তটভূমিতে গমন করিয়াছিল।ম। তণায় কোন মহর্বিকে দর্শন করিলাম৷ তপঃপ্রভাবে তাঁহাব শরীর অতি রুশ, কুণায় কঠদেশ কামভাবাপন্ন, তেজ বিগলিত এবং অকিতারকা দূরে পতিত হইয়াছে। তদর্শনে আমি হাস্ত করিলে, তিনি কুদ্ধ হইয়া, অধ্রপল্লব কিঞ্জিৎ কম্পিত করিয়া, অতীব ক্ষাম ব্বে আমারে এই শাপ দিলেন, আর অনার্য্যে ছৃষ্টতাপদি! যেহেতু, তুমি আমাকে উপহাদ করিলে, দেইছেতু, অচিরাৎ ভোমাকে রাক্ষ্য কর্ত্তক অভিভৃতা হইতে হইবে।

শাপ দিলে, আমার স্থীরা তাহাঁকে এই বলিয়া, অহ্যোগ করিলেন, ভোমার রাজণাে ধিক্।
তৃমি এই রূপে ক্ষমাত্যাগ করিয়াই, নিথিল তপ: সঞ্জয় করিয়াছ। বুরিলাম, ভোমার দেহ তপােবলে এইরূপ অতিমাত্র কর্শিত হয় নাই; অমর্যপ্রভাবেই ঐরপ সংঘটিত হইয়াছে। বাজণাের
ধর্ষ একমাত্র ক্ষমাশীল হওয়া এবং তাহাঁর তপভা একমাত্র ক্রোধসংবরণ।

অমিত-ত্যতি মহর্ষি এই প্রকার অনুযোগ শ্রবণ করিয়া, তাইাদিগকেও শাপ দিয়া কহিলেন, একের অক্ষেক্ট ও অক্টের ক্ষারোগ হইবে। তিনি যাহা বলিলেন, তৎক্ষণাৎ তাহাদের তাহাই ইবে। আমারও ঐ রাক্ষ্য পদান্ত্রনক্রমে আগমন করিতেছে। সে ঐ নিকটেই ঘোরগভীর ইবল। আমারও ঐ রাক্ষ্য পদান্ত্রনক্রমে আগমন করিতেছে। সে ঐ নিকটেই ঘোরগভীর বিনাদে গর্জনে করিতেছে। আপনে কি ভানিতে পাইতেছেন না ? অন্য তৃতীর দিন হইল, দেনিনাদে গর্জিন করিতেছে। আপনি কি ভানিতে পাইতেছেন না ? অন্য তৃতীর দিন হইল, সে নামার পৃষ্ঠত্যাগ করে নাই। অমি মহামতে ! তৃষি আমাকে রাক্ষ্যের হতে রক্ষা করে। তাহাহবলে, আমি অন্য তোমাকে যাবতীয় অন্ত্রাম-ভ্রমরিদ্যা প্রশান করিব। স্বরং পিনাক্ষারী ক্ষ্য

প্রথমে স্বায়স্থ্য মন্থকে উহা প্রাণান করেন। মন্থ আবার বশিষ্ঠকে, বশিষ্ঠ সিদ্ধর্বাকে দান করিয়াছিলেন। তিনি আবার আমার মাতাবহ চিত্রায়ুধকে সম্প্রদান করেন। চিত্রায়ুধ আমার পিতাকে
বৌতুক্ত্ররপ উহা দান করিয়াছিলেন। বীর ! আমি বালাকালে পিতার নিকট উহা শিক্ষা
করি। এই অন্তর্বর ঘারা সমুদ্য শক্র বিনাশ করা যাইতে পারে। অতএব আপনি এই অশেষাত্রপরায়ণ ক্রেরিদ্যা শী্ষ গ্রহণ ক্রন এবং ক্র ছ্রাত্মা রাক্ষ্য এখানে আদিশেই, তদ্ধারা তাহাকে
মারিয়া ফেলুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, স্বরোচি: বলিলেন, আছো তাহাই হইবে। তথন ঐ ক্সা সলিলম্পর্করিরা, তাঁহাকে আগম ও নিগম সহিত সেই অন্তর্গন-বিদ্যা প্রদান করিল। এই অবসরে ভীবণাক্কতি সেই রাক্ষস মহানাদে গর্জন করিতে করিতে, অ্রাপ্রকাশপ্বংসর তৎক্ষণাৎ তথার সমাগত হইল। স্বরোচি: দেখিলেন, রাক্ষস এইপ্রকার কহিতেছে, আমি যখন তোমার পৃষ্ঠ লইয়াছি, তথন কি তুমি বাঁচিতে পারিবে ? মত্এব, শীঘ্র আইস, ভক্ষণ করি। কিজ্যু বিশ্ব ক্রিতেছ ?

রাক্ষণকে সমুশাগত অবলোকন করিয়া, স্বরোচি: চিন্তা করিতে লাগিলেন, মহর্ষির বাক্য সতা হউক, রাক্ষণ এই মনোরমাকে গ্রহণ করক। বলিতে বলিতেই, রাক্ষণ সমুশাগত হইয়া, দ্বাপুর্বক দেই কভাকে গ্রহণ করিল। তথন দেই ক্ষমধ্যা করণ স্বরে বিলাপ করিয়া, বলিতে লাগিলেন, আমারে আগে করুন, আগে করুন। স্বরোচি: অতিমাত্র কুরু হইয়া, অতীব ভয়কর চণ্ডান্ত দর্শন ও রাক্ষণের উদ্দেশে সন্থিবিশিত করিয়া, অনিমিষ লোচনে দেখিতে লাগিলেন। নিশাচর তৎপ্রভাবে অভিতৃত হইয়া, তৎক্ষণাৎ দেই কভাকে ত্যাগ করিয়া, বলিতে লাগিল, প্রদার হউন, অত্র প্রতিসংহার করুন এবং শুমুন। অরি মহাহাতে ! অতীব তীক্ষ্মভাব ধীমান্ রক্ষমিত্র আমারে বে নির্তিভীষণ শাপ প্রদান করেন, আগনি তাহার নিরাকরণ করিলেন। মহাভাগ ! আপনা অপেক্ষা আর কেহই আমার অধিক উপকারী নহে। যেহেতু, আপনি আমাকে বিপুল-ক্ষেশজনক মহাশাপ হইতে মুক্ত করিলেন।

স্বরোচি: কহিলেন, মহাত্মা ব্রহ্মমিত্র কিনিমিত্ত পূর্ব্বে আপনাকে কীদৃশ শাপ প্রদান করিয়া ছিলেন ?

রাক্ষণ কহিল, এক্ষমিত্র অথর্ধবেদ হইতে সংগ্রহপূর্বক ত্রয়োদশ অধিকার সমেত অষ্টাক্ষরের আয়ুর্বেদ অধ্যয়ন করেন। আমি এই কন্তার জনক, ইন্দীবরাক্ষ নামে বিথাতে। খড়া-বোধী বিদ্যাধরপতি নলনাভ আমার পিতা। আমি পূর্বে মহর্ষি ব্রহ্মমিত্রের নিকট বাক্রা করিয়া, ছিলাম, ভগবন্। আমারে সমুদায় আয়ুর্বেদ অনুগ্রহপূর্বক প্রদান করন। আমি বারম্বার বিনয়াবনত হইয়া, এইপ্রকার প্রার্থনা করিলের, তিনি যথন আমাকে আয়ুর্বেদবিদ্যা প্রদান করিলেন না, তথন শিষ্যদিগকে দান করিবার সময়ে, আমি অন্তর্হিত হইয়া, আয়ুর্বেদবিদ্যা গ্রহণ করিলাম। বিদ্যাগ্রহণ করিবার আটমাদ পরে, অতিমাত্র হর্ষের উল্লেক হওয়াতে, আমি বার্ম্বার অতীব হাস্ত করিতে লাগিলাম। তাহাতে তিনি আমাকে চিনিতে পারিয়া, জাতজ্রোধ হেইয়া, কম্পিত কল্বরে পঞ্চাক্ষরে বলিতে লাগিলেন, হৃদ্ধতে। যেহেতু, তুমি রাক্ষ্বের আয়, অদ্ভা হইয়া, বিদ্যাগ্রহণ ও আমারে অবজ্ঞা করিয়া, হান্ত করিলে, সেইহেতু, রে পাপ। তুমি মদীয় শাপে কল্বীকৃত হয়া, সপ্তরাত্তি মধ্যে দায়ণপ্রকৃতি রাক্ষ্য হইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই।

ভিনি এই প্রকার কহিলে, আমি প্রণিপাতাদি উপচার সহকারে তাঁহারে প্রায় করিলাম। তথন পুনরার তৎক্ষণে মৃহ্চিত্ত হইরা, আমারে কহিলেন, গন্ধর্ক! আমি বাহা বলিলাম, তাহা অবখ্য হইবে; তাহার আর বাভিচার নাই। কিন্ত তুমি রাক্ষ্য হইরা, পুনরার পূর্বস্বরূপ প্রাপ্ত হইবে। তুমি বধন নইস্থতি হইরা, ক্রোধভরে আপনার অপত্যকে ভক্ষণ করিতে অভিনারী হইবে, তথনই এইরূপ ঘটিবে, তুমি রাক্ষ্যবোনি লাভ করিবে। কিন্ত তাহার অল্লানি

গস্তাপিত হইলেই, প্নরায় সংজ্ঞালাভ করিয়া, নিজ দেহ প্রাপ্ত হইবে এবং তৎসহকারে পুনরার গ্রহর্বলোকে স্থান লাভ করিবে। মহাভাগ! আপনি সেই আমাকে ঈদৃশ বিপুল ভয়ের আধার রাক্ষদযোনি হইতে উদ্ধার করিলেন। অতএব, আমার প্রার্থনাপুরণ করিতে হইবে। আমার এই পুলীকে ভার্যাারপে প্রদান করিতেছি, প্রতিগ্রহ করুন। অয়ি মহামতে। আমি মুনির স্কাশে ্য সকল অঠাক আয়ুর্বেদ সংগ্রহ করিয়াছি, তাহাও গ্রহণ করুন।

মাকভেয় কহিলেন, এই বলিয়া তিনি আপনার পূর্ক্তর্ল-পরিএছ-প্র:সর অংগ্ছ্যণে ভৃষিত ও দিব্যামর পরিধানপূর্মক সমুদ্ভাসিত হইরা, তাঁহাকে বিদ্যাদান করিলেন। বিদ্যাদান করিয়া, তিনি ক্যাদান করিতে উদ্যত হইলে, সেই ক্যা স্থকপধারী স্থকীয় জনককে ক্হিলেন, তাত! ইনি বেমন মহাত্মা, দেইরূপ বিশিষ্টরূপ উপকারী। দেখিবামাত্র ইহার প্রতি আমার অতীব অনুরাগ দঞ্রিত হইয়াছে। কিন্তু আমার দেই দ্বীদ্যু আমার জন্ত ছঃথপীড়িত। হইয়াছে। সেইজকা ইহার সহিত ভোগস্থথে প্রবৃত। হইতে আমি ইচ্ছাকরি না। স্বভাবত: যণেচ্ছাচার পুরুষেরাও যথন এইপ্রকার অতি নিষ্ঠুরের কার্য্য করিতে সমর্থ হয় মা, তখন আমার ভাগ কোমলপ্রকৃতি রমণী কিরপে তাহা করিবে ? অবতএব পিত: ! আমার জভ দেই ক্ভাদ্য যেমন ছঃখার্স্তা হইয়াছে, আমিও তেমনি তাহাদের শোকানলে সম্ভাপিতা হইয়া, ছঃখডোগ করিব। অরোচি: কহিলেন, আয়ুর্কেদের প্রসাদে তোমার ছই স্বীকেই পুনরায় নব-কলেবরা করিব।

অতএব স্থমধামে ! তুমি এই মহাশোক ত্যাগ কর।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, অনন্তর পিতা স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া, সেই চারুলোচনা কলাকে বিধা-নাফুদারে সম্প্রদান করিলে, স্বরোচি: তাঁহাকে পরিগত করিলেন। তথন গন্ধর্ক আপনার সেই ভাবিনী কভাকে সম্প্রদানানন্তর সাত্তন। করিয়া, দিব্য গতিতে স্বকীয় পুরে গমন করিল। অনস্তর चरतां ि: त्मरे उचीत मरिज त्मरे উদ্যানে সমাগত रहेलन, त्यथान कञाचत्र श्विमाल ব্যাধিবশে আতুর হইয়া, অবস্থিতি করিতেছিল। তর্বিৎ মরোচি: তথায় পদার্পণ্পর্বক রোগনাশক ঔষধ ও রদ প্রয়োগ করিয়া, তাহাদের উভয়ের দেহ নীরোগ করিলেন। তথন উভয়ে ব্যাধিমুক্ত হওয়াতে, অতিমাত্র শোভা ও সৌম্যভাব ধারণপুর্মক স্বকাস্তি দারা হিমালয়ের সমুদায় দিগ্বিভাগ বিদ্যোতিত করিল।

ইতি স্বরোচির পরিণয় নাম ত্রিষষ্টিতম অধ্যায়।

## চতুঃষষ্টিতম অধ্যায়।

भार्क एखन कहित्तन, धरे काल बाधिविमुका हरेता, अध्य कछा हवी विहा हरेना चरता हित्क কহিল, প্রভো । শ্রবণ করুন। আপনি আমার উপকার করিয়াছেন। এই জয় আপনাকে আমি খায়দান করিতেতি, গ্রহণ করুন। আমি মন্দারনামক বিদ্যাধরের আত্মলা, নাম বিভাবরী। আমি আপনাকে বিদ্যাও প্রদান করিব, যাহার প্রভাবে সমুদায় প্রাণির ভাষা আপনার অনারাদেই জ্ঞানগম্য হইবে। অতএব আপনি প্রসাদাভিমুথ হউন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ধর্মাঞ্জ অরোচিঃ তাহাতে সমাত হইলে, দ্বিতীয়া করাও তাঁহাকে কহিল, আমার পিতা ত্রন্ধর্ষি পার কুমারত্রন্ধচারী ছিলেন। সমুদায় বেদও বেদাঙ্গেও পারদর্শিতালাভ করিয়া-ছিলেন। পুরের পুংস্কোকিলগণের মনোহর শব্দংঘোগে পরম মনোহর বদস্তকাল সমাগত হইলে, প্রিকান্তনা নামে বিধাতি অপারা সেই পরম মহাত্মা পারের সকালে সমাগতা হইল এবং ঋষিকে বিষম-শবের বিষমশবের পথবার্ত্তী করিল। তাঁহারই সংযোগে সেই অপ্সরার শর্ক্তে এই মহাচলে আমার জন্ম হইল। জননী আমাকে প্রাস্থ করিয়াই, নির্জ্জন অরণ্যে বিস্ক্র্জন করিয়া, গমন করিলেন। বালা আমি হিংস্ত-শ্বপদ-সংকূল মহীপৃষ্ঠে পতিতা রহিলাম। সত্তম! তদবস্থায় চল্লের বর্জমান কলা পান করিয়া, আমি অহরহ র্জি প্রাপ্ত হইতে লাগিলাম। তাহাতেই, মহাত্মা পিতা আমার প্রহণ করিয়া, আমার এই কলাবতী নাম রাখিলেন।

অলিনামক মহাপ্রভাব অন্তর আমার প্রার্থনা করিয়াছিল। পিতা না দেওয়াতে, সে তাঁহাকে শাপ দিয়া বিনিপাতিত করে। তজ্জ্জ্জ্ আমি অতিমাত্ত নির্কিয়া হইয়া, আত্মহত্যাকরণে উল্যতা হইলে, ভগবান্ শস্তুর সহধর্মিণী সত্যপ্রতিজ্ঞাশালিনী সতী আমাকে প্রতিষেধ করিয়া, কহিলেন, স্কুল তুমি শোক করিও না। মহাভাগ স্বরোচিঃ তোমার স্বামী হইবেন। ময়্ তাঁহার পুজ্রপে জন্মগ্রহণ করিবেন। নিধি সকল আদর সহকারে তোমার আজ্ঞা পালন করিবে এবং তোমাকে তোমার ইচ্ছামত বিত্তও দান করিবে। যে বিদ্যাবলে ঐপ্রকার ঘটিবে, বংসে। তাহা দিতেছি, গ্রহণ কর। এই বিদ্যার নাম পদ্মিনী। সকল দেবতাই ইহার সবিশেষ পুলা করেন। সত্যপরায়ণা দক্ষছিতো সতী আমারে এইপ্রকার কহিয়াছেন। আপনি নিশ্বই সেই স্বরোচিঃ। কেন না, আপনি আমার প্রাণাদান করিয়াছেন। এইজ্লু অদ্য আমি আপনাকে সেই বিদ্যাও স্বকীয়্বপুপ্রদান করিব; প্রতিগ্রহপূর্কক প্রসাদবিতরণে অভিমুথ হউন।

মার্ক: গুর বলিলেন, স্বরোচি: কণাবতীকে কহিলেন, আছো, তাহাই হইবেক। অনস্তর দেই অমরত্নতি স্বরোচি: বিভাবরী ও কণাবতী উভয়ের মিগ্ধ দৃষ্টিপাতে অমুমোদিত হইয়া, তাহাদের উভয়েরই পাণিগ্রহণ করিলেন। তৎকালে দেববাদিত্র সকল নিনাদিত ও অপ্সরোগণ নৃত্য-প্রায়ণ হইল।

ইতি স্বরোচির বিবাহ নাম চতুঃষ্টিতম অধ্যার।

## পঞ্ষষ্ঠিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর অমরছাতি অবোচিঃ সেই পত্নীগণ সহিত রমণীর কানন ও নিবৰ শোভিত উল্লিখিত শৈলেক্ত্রে বিহার করিতে লাগিলেন। নিধি সকল পদ্মিনীর বশবভিতাক্রমে রাশি রাশি মধুর মধু ও বাবতীর উপভোগ-রত্ন আহরণ করিতে প্রেরত্ত ইল। মহাভাগ ! তদ্ভির তাহারা বিবিধ বস্ত্র, মাল্য, অলক্ষার, হৃগদ্ধি অহলেপন, অতিগুত্র কাঞ্চনমন্ত্র আচনত এবং হ্রবর্ণমন্ত্র ভালন ও দিব্য আভরণ মণ্ডিত বিবিধ শ্যা তাঁহাদের ইচ্ছামতে আনিতে আরম্ভ করিল। অবেরচিঃ এই ক্রপে সেই সকল পত্নীর সহিত সংমিলিত হইয়া, দিব্য গদ্ধাদিতে হ্রভিত সেই পর্কত অকীর প্রভার উদ্ভাসিত করিয়া, বিহার করিতে লাগিলেন। তাঁহারাও তাঁহার সহবাদে অর্থের রম্মাণা দেবাসনার ন্যার সেই শৈলোপরি বিহারপুরঃসর অতিশয় আহ্লাদ অন্ত্রত করিলেন।

ঐ সময়ে কোন কলহংসী অরোচি: ও তদীয় পত্নীগণের তাদৃশ পরম প্রার্থনীয় দাম্পত্য-প্রণয়ে ম্পৃহাবতী হইয়া, সলিলচারিণী কোন চক্রবাকীকে কহিল, এই অরোচিই ধন্য ও অতিমার প্রাণানী। বেছেত্, যৌবনে পদার্পণ প্রক ঈদৃশী পরমপ্রণয়িনী সহধ্মিণীগণের সহিত অভিলবিত ভোগ সকল সন্তোগ করিতেছেন। এমন অনেক শ্লাঘনীয় যুবা আছেন, যাঁহাদের পত্নীরা দেরূপ শোভনীয়া নহে। সংসারে অলই পতিপত্নী অতিমাত্র শোভা সম্পন্ন হইয়া থাকে। কোন পত্নি প্রীকে ভাল বাসেন, আবার কোন ল্লী আনীকে ভাল বাসিয়া থাকে। কিউ পরস্পরের গাড়তর অন্বরাগ আছে, এরপ দাম্পত্য অতীব ত্র্লভ। এই অরোচিই ধন্য। বেছত্, ইনি যেমন পত্নীগণের মনোমত, পত্নীরাও তেমনি ইহার অভিমাত্র প্রণয়ভাগিনী। যাহারা ধন্য, তাহাদেরই পরস্পর অন্ধ্রাগ জ্বিয়া থাকে।

ক্লহংসীর ক্ষিত দিল্ল বাক্য প্রবণ করিয়া, চক্রবাকী নাতিবিশ্বিত মানসে তাহারে কহিল, এ বাজি ধনা নহে। কেন না, অনা জীর সন্ধিক্টেও ইহার লজ্জা হয় না। দেখ, এ বাজি অনা জীকেই ভোগ করিয়া থাকে; সকলের প্রতি ইহার মন নাই। সিধি! বেহেত্, একমাত্র অধিনেই ভিন্তের অহুরাগ সন্ধির হইয়া থাকে, সেই১০০০, এ বাজি সকল ভার্যাতেই কিরণে অনুবাগী হইতে পারে? বলিতে কি, এই সকল পত্নী যেমন ইহার বন্ধভা নহে; সেইরপ এ বাজিও ঐ সকল পত্নীর প্রাতভাজন নহে। তবে, এই সকল রা, অভাভা পারজন যেমন, তেমনি বিনোদমাত্র। এ বাজি বলি ইহাদের সকলেরই প্রণরের পাত্র হয়, তাহা হইলে, কিন্দ্র প্রাণ্ডাগ করে নাই। দেখ, এ যথন অপর জীকে আলিঞ্চন করে, তথন অভাজী ইহার ধ্যান করিয়া থাকে। এ ব্যক্তি নিশ্চয়ই বিদ্যাপ্রদানরূপ মুল্য লইয়া, আপনাকে দাশবৎ বিক্রের করিয়াছে। নত্বা, বছ ল্লীর নায়ক কি কথন স্থানরূপ প্রেমের প্রেমিক হইতে পারে প্রক্রিংলি! আমার পতিই ধভা এবং আমিও ধভা। দেখ, আমাদের পরম্পারের মন এক জনেই চিরকাল সংস্ক্র হইয়া আছে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, অপবাজিত স্থনোচিঃ দকল প্রাণির ভাষা ব্রিতেন। দেইজন্ত এই কণা ভানিয়া, লজ্জিত হইয়া, ভাবিতে লাগিলেন, চক্রবাকী দতাই বলিয়াছে; নিগান নহে। অনজ্জ শতবর্ষ অতীত হইলে, একলা পত্নীগণের গহিত দেই মহানিরিতে বিহার করিতে করিতে সম্প্রে এক মৃগকে অবলোকন করিলেন। ভাহার অবয়ব স্থানিয় ও হাইপুট্ট। দে আপনার অহারপ মৃগীনসমূহে পরিবেটিত হইয়া, তাহাদের যুথমধ্যে বিহার করিতেছে। মৃগীরাও দকলে আণাপুটক আকর্ষণপূর্বক তাহাকে আআণ করিতেছে। দে উদর্শনে ভাহানিগকে বলিতে লাগিল, ভোনাদের লজ্জা নাই। অন্তর গমন কর। অয়ি স্থলোচনা দকল । আমাকে এই স্বরোচিঃ পাও নাই। আমার চরিত্রও ইহার মত নহে। তোমাদের আয় নির্জ্জা অনেক আছে। ভাহাদেরই নিকট গমন কর। এক স্থা বেমন বহু পুরুষের অহুগতা হইলে, লোকের অবজ্ঞাম্পদ হইয়া থাকে, দেইরপ, এক পুরুষ অনেক স্থীর ভোগদৃষ্টির বিষয়ীভূত হইলে, হাস্তাম্পদ হয়। ভাদৃশ পুক্ষের গিন দিনই ধর্মক্রিয়ার হানি হইয়া থাকে। কেননা, সে দর্বদাই এক ভার্যাতে আমক্ত ও অপর ভার্যার কামাদক্ত হইয়া থাকে। অন্ত যে ব্যক্তি ভাদৃশ বা তম্বং চরিতবিশিষ্ট এবং ভজ্জ্র পরলোকপরাল্ব ইইয়া থাকে, ভোমরা ভাহারেই কামনা কর। ভোমাদের ভত্রলাভ হউক। আমি স্বরোচির তুল্য নহি।

ইতি মুগবাক্য নাম পঞ্ষষ্টিতম অধ্যায়।

# ष हे यष्टि जम व्यथाय ।

মার্কণ্ডের কহিলেন, হরিণ এইরূপে ঐসকল মৃগীকে প্রভাগান করিতে আরম্ভ করিলে, বরোচি: ভাগা শ্রবণ করিয়া, আত্মাকে পতিতের ভার বোধ করিলেন। মূনিসন্তম! তথন তিনি পরীগণের সকলকেই ত্যাগ করিতে ক্রতসন্ধর হইলেন। চক্রবাকী ও মৃগ উচ্যুকর্তৃক এরপ অতিহিত এবং মৃগচন্চার ভূগুপিতে হওরাতে, তাঁগার তাদৃশ সংক্র সম্খিত হইল। কিন্তু পূন্রায় পরীদের সহিত মিলিত হইবামাত্র, কাম অতিমাত্র প্রবল হইয়া উঠিল; সমুদার নির্কেদবাক্য প্রে বিস্কান করিয়া, ষট্শতবর্ষ তাহাদের সমিত্বাহারে বিহারে বাপন করিলেন। তাঁহার বৃদ্ধি উদার্গ গুণে ভূষিত ছিল। সেইলার ধর্মের কোনক্রপে ব্যাঘাত লা করিয়া, ধর্মাশিত ক্রিমাকণা-

পের অফুটানসহকারে তাহাদের সহিত বিষয়সজ্যোগে প্রবৃত হইলেন। অনন্তর কালসকারে তাঁহার তিন পুত্র উন্ত হইল। তাঁহাদের নাম বিষয়, মেরুনন্দ ও প্রভাব। তন্মধ্যে ইন্দীবরাত্মধা মনোরনা বিজয়ের, বিভাবরী মেরুনন্দের ও কণাবতী প্রভাবের জনয়িত্রী। অরোচি: পদ্মিনী নামে যে সক্ষপ্রকার ভোগস্থের সাধনভূতা বিদ্যা লাভ করেন, তংপ্রভাবে পুত্রত্মের জন্ম পুরুত্তম্ব কলনা করিয়া, বিজয়নামক পুত্রকে প্রথমে প্রাচা দিকে কামরূপে পর্কাতের উপরি বিজয়নামক উৎক্তই পুর প্রদান করিলেন। অনন্তর উদীচী দিকে মেরুনন্দের জন্ম নন্দ্বতীনামে পরমপ্রনিদ্ধিশালিনী, অভ্যুচ্চ-বপ্র-প্রাকার-শোভিনী পুরী প্রতিষ্ঠিত করিয়া, তৃতীয় পুত্র কলাবতীনন্দন প্রভাবের জন্ম দিশাপ্রসমাপ্রিত তালনামক পুর সংস্থাপন করিলেন।

এইরপে পুরুষ প্রবর স্বরোতিঃ পুত্রদিগকে তত্তৎ পুরে নিবেশিত করিরা, পত্নীদিগের সহিত পরমননাহর প্রদেশ সকলে বিহার করিতে লাগিলেন। একদা অরণ্যে গমন ও ধহুদ্ধারণপূর্বক বিহার করিতে করিতে, অভিদূরগামী এক ব্রাহকে দশন করিয়া, ধহু আকর্ষণ করিলেন। তৎক্ষণাং কোন হরিণাসনা অভ্যাগতা হইয়া, বারধার বিনিতে লাগিল, প্রসন্ন হউন, আমার প্রতিই শর পাতিত করুন। অদা ইহাকে বিনাশ করিয়া, কি হইবে ? আন্ত আনাকেই বিনিপাতিত করুন। আপনার পরিতাক্ত শর আমাকে তুঃথ হইতে মুক্ত করিবে।

স্বরোচিঃ কহিলেন, তোমার শরীরে ত কোনরূপ রোগই দেখিতে পাইতেছি না। তবে তুমি কিকারণে প্রাণপরিহারে অভিলাধিণী হইয়াছ ?

মৃগী কহিল, যে ব্যক্তির হৃদয় অন্ত রমণীগণের প্রতি আসক্ত, তাংগতে আমার মন বদ্ধ হই-য়াছে। তাগার বিরহে আমার মৃত্যু উপস্থিত। ঔষধ আর কি আছে ?

স্বরোতিঃ কহিলেন, ভীক ! কে তোমার প্রতি কামনাপর নহে ? তুমিই বা কাধার প্রতি সামুরাগা হইয়াছ ? যাহাকে না পাওয়াতে, নিজের প্রাণপরিত্যাগে উদ্যত হইয়াছ ?

মৃগী কংলা, আপনার মঙ্গল হউক। আপনাকেই আমি কামনা করি। বেছেতু, আপনিই আমার মন হরণ করিয়াছেন। এই কারণেই আনি মৃত্যুকে বরণ করিভেছি। অতএব মামার প্রতিশ্ব নিয়োগ করুন।

সংরৌতি: কহিলেন, তেরি চঞ্লাপাঞ্চি! তুনি মৃগী, আর আমরা মহুধা। অতএব তোমার সহিত মাদৃশ মহুধোর কিরূপে সমাগম হইতে পারে ?

মৃগী কহিল, যনি আমার প্রতি আপনার চিত্ত অনুরাগবদ্ধ হইমা গাকে, তাহাইলৈ, আমারে আনিক্সন করন। যদি আপনার মনে কোনকপ অসাধুভাব না গাকে, তাহাইলৈ, আমি আপনাব যাহাইছো, তাহাই সাধন করিব। আপনি আলিক্সন করিলেই, আমি অতীব সম্মানিতা বোধ করিব।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তথন দেই স্বরোচিঃ হরিণাসনাকে আণিসন করিলেন। তৎকর্তৃক আলিস্থিতামাত্র দে তৎকণ্ৎ দিব্য দেহ ধারণ করিল। তদর্শনে স্বরোচিঃ বিস্মাবিষ্ট হইয়া, বিজ্ঞাসা করিলেন, তুমি কে ? হরিণী প্রেম ও লজ্জাবণে গদ্গদভাষিণী হইয়া কহিতে লাগিল, আমি এই কাননের দেবতা। দেবগণ আমারে সভার্থনা করিয়াছিলেন, তোমাকে আমার গর্ভে মফুর জন্ম দান করিতে ইইবে। অয়ি মহামতে ! আমি দেবগণের বচনাহ্দারে বলিতেভি, আপনি আমার গর্ভে ভূলোকের পরিপালক মফুর উৎপাদন করুন। আমিও আপনাতে প্রীতিমভী হইয়াছি।

মার্কণ্ডের কৃথিলেন, স্বরোচিঃ তাঁখার গর্ভে আয়োর ভার তেজ:পুঞ্জশরীরী সক্বিধ-স্থলক্ষণ-সম্পন্ন পুত্র তৎক্ষণে উৎপন্ন করিলেন। পূল্র জনিবামাত্র, দেবকাদ্য সক্ষ বাদিত হইরা উঠিল; গন্ধবিপতিরা গান আরম্ভ করিল ও অপ্সরোগণ নৃত্য করিতে লাগিল; হস্তী সকল শীকরপ্রাবে প্রের হইন এবং তপোধন ঋষিগণ ও দেবগণ সমস্তাৎ পুস্পবর্ষণ করিতে লাগিলেন। তদীর তেজ: পর্যবেশাকন ক্রিয়া, পিতা সুয়ং তাঁখার নাম হ্যতিমান্ রাখিলেন। কেননা, তদীয় তেজে সমুদার দিক্ বিদ্যোতিত হইয়া উঠিয়াছে। দেই ছাতিমান্নামক মহাবদ পরাক্রাম্ভ বালক বেহেতু অরোতির পুত্র, সেইহেতু খারোতিব নামে বিখাত হইলেন।

অনস্তর স্বরোচিঃ কোন সময়ে রমণীয় গিরিনির্কার বিহার করিতে করিতে হংসদম্পতীকে অবলোকন করিলেন। তন্মধো হংসী বারংবার স্বামীর প্রতি অভিলাষপরবশা হওয়াতে, হংস তাগাকে কহিতে লাগিল, আ্ঝাকে সংযত কর। আর কেন ? আমি অনেককাল তোমার সহিত বিহার করিয়াছি। তোমার চরম বয়স আসন্ন হইয়াছে। সর্ককাল ভোগ করিয়া, আর কি হইবে ? অয়ি জলচরি ! তোমার ও আমার উভায়রই প্রিতাগের কাল উপস্থিত হইয়াছে।

হংগী কহিল, এই জগং সর্কবিধ ভোগের জন্তই স্পৃষ্ট ইইয়াছে। অতএব ভোগের আবার অকাল কি ? দেখ, আজাণেরাও ভোগের জন্তই আত্মন্যনসহকারে যজ্ঞ সকলের অনুষ্ঠান করেন। বিবেকিগণও দৃষ্ট ও অদৃষ্ট ভোগ সকল কামনা কবিলা, দান ও পুণাধর্ম সকলের অনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হন। অতএব- তুমি কিজন্ত ভোগেহ্থে বীতস্পৃহ ইইতেত ? দেখ, ভোগ মন্বাের চেটার ফল। এ বিষয়ে বিবেকী, সংযতাত্মা ও পশুপক্ষী, সকলেই সমভাববিশিষ্ট।

হংদ কহিল, যাহারা ভোগস্থথে আদক্তচিত্ত এবং বন্ধুগণে অনুরাগসম্পন্ন, তাহাদের মতি কথন কি প্রমার্থপথের অনুসারিণী হইতে পারে ? দেখ, বনা গজসমূহ যেমন সরঃপদ্ধাণ্যে মগ্র হইলে, জীর্ণ হয়, দেইলপ প্রানিমাত্রেই পুত্র, মিত্র ও কলতে আসক্তিবশতঃ অবসন্ধ হইরা থাকে। ভড়ে ! তুমি কি দেখিতেছ না, এই স্ব'বাচিঃ বাল্যকাল হইতে অনুরাগবদ্ধ ও তারিবদ্ধন কামসংসক্ত হওয়াতে, স্লেহান্ধুকর্দমে মগ্র হইলাভিল। পবে মৌবনে পদার্পণ করিয়া, পদ্ধাগণের প্রণয়ে এবং সম্প্রতি পুত্র ও নপ্তাবর্গের স্কেহে ইহাব মন মগ্র হইয়া উঠিয়াছে; কিকপে উদ্ধার প্রাপ্ত হইবে ? অয়ি জলচবি ! আমি স্বরোচিব তুলা স্ক্রীর বাধ্য নহি। আমার বিবেক জন্মিয়াছে। দেইজন্ত সম্প্রতি ভোগস্থা বিনিবৃত্র হইযাছি।

মার্কিণ্ডেয় কহিলেন, পক্ষীর এই কণা শুনিরা, উদ্বেশের উদ্রেক হওগাতে, স্ববোচিঃ পদ্ধী-দিগকে শইয়া, তপশ্চরণার্থ অভাতর তপোবনে গমন করিলেন। সেই উদার-ধী তথায় ভার্যাগণের সহিত কঠোর তপভা করিয়া, সর্কভোভাবে নিম্পাপ ও নিহুল্ফ হইয়া, অমল লোক সকলে স্মাগত হইলেন।

ইতি অংরোচির পুণ্যলোকলাভ নাম ষট্বষ্টিতম অধ্যায়।

## সপ্তবন্তিত্য অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন। অনন্তর ভগবান্ একা খরোচির পুল ছাতিমানকে প্রজাপতি মন্তর পদে প্রতিষ্ঠিত করিলেন। তদীয় মন্তর প্রবণ কর। দেই মন্তরের যে দকল দেবতা ও ঋষির আবিভাব হয়, তাঁহার যে দকল পুর জন্মে এবং যাহারা রাজপদে প্রতিষ্ঠিত হয়, তাহাদেরও রভাদ্ধ
বলিতেছি, প্রবণ কর। পারাবত ও ভ্বিতগণ দেই মন্তরের দেবতা এবং ইন্দের নাম বিপশ্চিৎ।
উর্জ্জ, তার, প্রোণ, দভোলি, খারভ, নিশ্চর, অর্ধর রান্ এই সাত জন লাহাল ক্ষি। চেন্ত ও
কিপ্রদাদি মহাক্ষারা তাহার পুত্র। ইহারা সাতজনেই স্থবিপুল-বীর্ণাসম্পন্ন ও প্রিবীপরিণালক
হিলেন। যত দিন তাহার মন্তরের ছিল, তত দিন তাহার বংশপরশেরা এই সম্প্র বর্ণনতা
ভোগ করিয়াছিলেন। তদনতার বিতীয় মন্তরেরর আরম্ভ হয়। ম্বোটিঃ ও তাহার পুত্র,
উভরের জন্ম ও চরিত্রক্ষণা প্রভাবহকারে প্রবণ করিলে, সকল পাণের শাস্তি হইয়া থাকে।

ইতি স্বারোচিষ ময়ন্তর নাম সপ্তব্টিতম অধ্যায়।

#### অফ্রম্ভিতম অধ্যায়।

ক্রেটি কৃষ্ণিক কৃষ্ণিন, ভগবন্ । আপনি অরোচি ও তদীয় পুত্র উভয়েরই কম্ম ও চরিতকথা এবং সেই সর্বভোগসাধনী পদ্মিনীনামী বিদ্যা, সমুদ্রই সবিভার আমার নিকট বর্ণন করিলেন। অধুনা, সেই বিদ্যার আপ্রিত নিধি সকলের বৃত্তান্ত আদ্যোপান্ত কীর্ত্তন করুন। গুরো! বে আটিটী নিধি আছে, তাহাদের স্বরূপ ও দ্রবাদংহিতি আপনার প্রমুখাৎ প্রবণ করিতে আমার সবিশেষ ইচ্ছা হইভেচে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, গন্ধিনীনামী দেই বিদ্যার অধিষ্ঠাত্রী দেবতা লক্ষ্ম। নিধি সকল তাহার আাশ্রিত। তাহা বনিতেছি, শ্রবণ কর। পদ্ম, মহাপদ্ম, মকর, কচ্ছপ, মুকুল, নন্দ, নীল, শঙ্কা, এই আট নিধি। ঋত্বির আবির্ভাব যেখানে, ইহাদের ও আবির্ভাব সেখানে এবং সেখানেই দিন্তির আবির্ভাব হইয়া থাকে। ক্রোইটুকে! এই আট নিধির বিষয় তোমার নিকট বলিলাম। দেবগণের প্রসন্ধ্রতা ও সাধুগপের সেবা এই বিবিধ উপায়ে ইহাদের দৃষ্টি হইলেই, লোকের সর্কাদা বিত্তাগম হয়। ইহাদের যাদশ স্বরূপ, তাহাও যলিতেছি, শ্রবণ কর।

ৰিজ! পদ্মনামক প্ৰথম নিবি ময়ের অধিক্কত। তাহার পুঞ, পৌত্র ও প্রপৌত্রপরক্ষরা ক্রেমে নিতা এই নিধির ভোগ ইইতেছে। পুক্ষ এই নিধি কর্তৃক অধিষ্ঠিত হইলে, দাকিণাসার, স্থাবার ও পরমভোগশালী হইয়া থাকে। যেহেতু, এই নিবি স্বস্থান্ত অনিষ্ঠিত। ইংার প্রভাবে স্বর্ণ, রূপ্য ও তাদ্রাদি যাবতীয় ধাত্র ভূরিপরিমাণে ভোগ ও ক্রেয় বিক্রিয় বিনিষ্পন্ন হইয়া থাকে এবং নিতা দ্কিণাসহ যজ্ঞ সকলেরও অনুষ্ঠান করা যাইতে পারে। তদ্ব্যতীত, গোকে তদ্গত চিত্তে সভা ও দেবালয় সক্পও প্রতিষ্ঠা করে।

অন্তত্তর নিধির নাম মহাণদা। ইহাও সত্তগুণের আধার। ইহার অধিষ্ঠান যেথানে, সেধানে লোকে অত্ত্বপ্রধান হইয়া থাকে এবং সতত পদারাগাদি রত্ন, প্রবাল ও মৃক্তা সকলের ভোগ ও তাহাদের ক্রম বিক্রম করে এবং স্বয়ং যোগশীল হইয়া, জন্মগ্রহণপূর্বক যোগশীলদিগকে তৎসমন্ত দান ও তাহাদের আবস্থ সকল সংস্থাপন করিয়া গাকে। তাহার পুত্রপৌত্রাদিক্রমে বংশপরম্পরাও তাহার সমান চরিত সম্পন্ন হয়। এই নিধি তাহার সপ্ত পুক্ষকেও ত্যাগ করে না।

ইংার পর মকর নামে তমংপ্রধান নিধি, যাহার প্রাত দৃষ্টি করে, সে ফুশীল হইলেড, তমংপ্রধান হইয়া থাকে। তাহার বাণ, থড়াগ, ঋষ্টি, ধয় ও চর্মা এই সকলের ভোগ এবং নরপতিগণের সহিতে মিত্রভা জন্মে। যাহারা শৌর্ব্যোপজাবী এবং যাহারা নরপতিগণের প্রিয়, তাহাদিগকেই সে ঐ সকল দিয়া-থাকে এবং শল্প সকলের ক্রয় বিক্রমেই তাগার প্রীতি জন্ম; অন্ত বিষয়ে নহে। তাহারই কেবল ৠয়প্ হয়; তাহার বংশপরপ্রায় সেরপ ঘটে না। সে দ্বোর জন্ত দয়াহতে ও সংগ্রামে বিন্ত ইইয়া থাকে।

অনন্তর কচ্ছপনামক নিধি। এই নিধিও তম:প্রধান। সেইজন্ম যাহার প্রতি ইহার দৃষ্টি হয়, তাহারও অভাবৈ তম:প্রধান হইয়া থাকে। সে পুণাপরস্পরার অনুষ্ঠানপ্রসঙ্গে অন্দেহবিধ বাগপারে প্রবৃত্ত ও সাল্লালিকিও তাহাতে প্রয়োজিত করে; কাঁহার্মিই প্রতি তাহার বিশাস হয় না। করুপ থেমন আপনার সমস্ত অঙ্গ সংহরণ করে, সে সেইরূপ আয়ভচিত্ত হইয়া, লোকের তিত্তসংহরণপূর্কক আয়ভাব গোপন করিয়া, অবস্থিতিকরে। সে যেমন বিনাশভয়ে কোন বস্তুই কাহাকে বেয় না, তেমনি আপনিও ভোগ করে না। সমস্তই ভূমিতে পুতিয়া রাথে। এইনিমিস্ত একপুরুষমাত্রভোগ হইয়া থাকে।

মুকুলনায়ক অন্ত বে নিধি পাছে, তাহা রজোগুণ্মর। বিজ ! তাহার দৃষ্টি হইলে, লোকেরও

চাব রক্ষোগুণমর হইরা থাকে। সে বীণা, বেণু, মূলক ও মাতোণ্য দকল সম্ভোগ এবং গায়ক ও কুলিগকে বিত্ত প্রাণান করিয়া থাকে। ছিক্স! তহাতীত, সে ব্যক্তি বন্দি, স্ত, মাগধ ও টুলিগকে অংনিশি ভোগ্য বস্তু প্রাণান ও তাহাদের সহিত স্বয়ং ভোগ করে। কুল্টা ও ত্রিধ ফাল্য ব্যক্তিগণে তাহার বিরতি জন্মিয়া থাকে। এই নিধি ধাহাকে ভক্ষনা করে, সে একেরই শুহুইরা থাকে।

নলনামক মহানিধি রক্ষ ও তম উভয় গুণময়। ইহার দৃষ্টি হইলে, লোকের রাশি রাশি সম্ধাতু, রক্ষ, পুণা ও ধাল্লানির দংগ্রহ ও ভোগ হইয়া থাকে এবং সর্বাণ দে তাহারই ক্রেম্ব করে। স্বন্ধনা ত, অভ্যাগত, সকলকেই সে আগ্রয় প্রদান করে। মহামুনে ! তাহার মাত্রও অপমানোক্তি সহু হয় না। তাহার শুব করিলে, সে পরম প্রীতিমান হইয়া, যে যাহা মনা করে, তাহাকে তাহাই প্রদান করে এবং মৃহত্ব অবলঘন করিয়া থাকে। সে ব্যক্তি বছ ব্যার পতি হয়। সেই-সকল পত্নী পরমন্ত্রপনালিনী ও সন্তানপ্রদ্বিনী হইয়া থাকে। হার সাত পুক্ষ এই নিধি ভোগ করে। সত্তম ! এই নিধি অই ভাগে প্রবৃদ্ধিত হইয়া, সমুনাম হবের দীর্ঘ আয়ু বিধান এবং বন্ধুগণের ও দ্র হইতে উপাগত বাক্তি সকলের ভরণপোষণ করিয়া ক। কিন্তু পরলোকে ইহার আদর জন্মে না এবং সহবাদিগণেও স্লেহ্রে উদ্ভব হয় না। পুর্ব্বমিত্র-গকে শৈনিলা ও অক্যান্তিদিগকে প্রীতি করিয়া থাকে।

নীলনামক মহানিধি সত্ব ও রজ এই উভয়বিধ গুণ ভজনা করে। তাছার দৃষ্টি হেইলে, লোঁক-ং অভাব ঐরপে সত্ব ও রজোগুণময় হইয়া থাকে। মূনে! সে বাক্তি রাশি রাশি বৃদ্ধা, কাপান, ফাদি, ফল, পূপা, মূকা, বিদ্রুম, শঙ্ম ও শুক্তি প্রভৃতি ও অফান্ত জালজাত দ্বা এবং কাঠাদি ফান্ত দ্বা সকল ভোগ ও তাহাদের ক্রয় বিক্রয় করে। অফ্রন্ত তাহার অফুরাণ জামে না। দে গাগ, প্করিণী ও আরাম সকলের প্রতিঠা, নদী সকলের সেতৃ নির্দাণ ও বৃদ্ধান্তর রোপণ া অফুলেপন ও পূম্পাদি ভোগ করিয়া থাকে। এই নীশনামক নিধি পুক্ষক্রয় ভোগ হয়।

শশ্বনামে অন্ত যে নিবি আছে, সে রজন্তমোময়। সেইজন্ত তাহার অধীশ্বরও তদ্পুণময় যা থাকে। ইহা একপুক্ষমাত্র ভোগ করিতে পারা যায়; বিতীয় পুক্ষ নহে। এই নিধি যাহার গত হয়, তাহার অভাব চরি নালি যেরপ হইয়া থাকে, শ্রবণ কর। সে একাকী নিরু আন নিজে বত করিয়া, ভক্ষণ করে এবং নিব্য বন্ধণরিধান করিয়া থাকে। তাহার পরিজনেরা কদর্য্য ভক্ষণ ও কুৎসিত বন্ধাদি ধারণ করে। সে সর্কাদা আত্মপোষণ-প্রায়ণ হইয়া, অ্লুৎ, ভার্যা, তা, পুত্র ও বধ্ প্রভৃতিকে দান করে না। এই রূপে নিবি সক্ষ মন্ত্রাদিগের অর্থদেবতা এবং শ্রুটবশত: মিশ্রভাববিশিষ্ট ও অভাবান্থ্যায়ী ফলপ্রদ হইয়া থাকে। ফলতঃ, ইহাদের দৃষ্টি- এই লোকে ইংাদের অনুরূপ-স্বভাববিশিষ্ট হয়। সাক্ষাৎ শ্রীর্বিণী প্রিনী ইংাদের সক্ষেব্রই পরি আধিপত্য করেন।

ইতি নিধিনির্ণয় নাগ অষ্ট্রষ্টিতম অধ্যায়।

#### একোনসপ্ততিতম অধ্যায়।

ক্রেণ্টুকি কহিলেন, ত্রহ্মন্! আগনি আমার নিকট স্বারোচিব মহস্তর ও আমার প্রিজ্ঞানিছ স্ফাটনিধির রুডান্ত বিস্তারপূর্ককি বর্ণন করিলেন। পূর্কেই সায়স্ত্র মহস্তরও কীর্ত্তন করিয়াছেন স্থানা উত্তমনামক তৃতীয় মহস্তর বর্ণন করুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, উরানপালের পুত্র উত্তম নামে বিখ্যাত। স্কুক্তি তাঁহাকে গর্ভে ধারু করেন। তিনি মহাবলপরাক্রমবিশিষ্ট, ধর্মাত্মা, মহাত্মা ও পরাক্রম-ধন রাজা ভিলেন এব ভারর ভার, পরাক্রম-বিস্তারপূর্নক সকল ভূতকেই অতিক্রম করিয়া, শোভমান হইয়াছিলেন অধি মহামুনে ! শত্রু, মিত্র. পুরু, পুলু, সর্পাত্রই তাঁহার সমভাব এবং ধর্মের প্রকৃত স্বরূপ তাঁহা পরিজ্ঞাত ছিল। তিনি তুষ্টের যম ও শিষ্টের সোমবৎ ছিলেন। ইন্দ্র শচীর ক্রায়, তিনি ব্রুতনর বহুলার পাণিগ্রহণ করেন। বিজ্ঞেষ্ঠ। ঐ বহুলা যেমন অতীব প্রতিপত্তিশালিনী ছিলেন, সেই রূপ স্বামীর মন, রোহিণীতে চল্রের আয়, তাঁহাতে অতিমাত্র স্লেহবিশিষ্ট ও নিহিতাম্পদ হইয়াছিল বহুলা ভিন্ন, অন্ত কোনরূপ প্রায়োজনেই তাঁহার চিত্ত আগত হুইত না। এমন কি. সেই ধর্মবিং উত্তানপাদতনয় স্বপ্নেও তদাদক্তিত্ত ছিলেন এবং দেই দর্মাঙ্গস্থলারী ললনার দর্শন করিয়া অবি গাত্রে স্পর্শনদান করিতেন এবং দেই গাত্রস্পর্শেই তন্ময় হইয়াছিলেন। তাগতে, দেই ল্লন শ্রুতিকট বাক্যপ্রয়োগ করিলেও, রাজাকে অতি মধর লাগিত এবং যৎপরোনান্তি অপমান করি **লেও. প্রভৃত দন্মান** বলিয়া **তাঁহার বোধ হইত। তিনি উৎকৃষ্ট মালা ও আভরণ দান ক**রিলেও দে তাহাতে অবজ্ঞা করিত এবং রাজা বরাগবপানে প্রবৃত্ত হইলে, তাঁহার দাক্ষাৎ অঙ্গুপীড়ার লায় উঠিয়া যাইত। তিনি ভোজন করিবার সময়ে করধারণ করিলে, সে ক্ষণমাত্র সাগান্ত ভোজন করিত; তাখাও আবার অতীব আহলাদের সহিত নহে। রাজা এইরূপে অমুকূলচারী হইলেও দে প্রতিকৃশ ব্যবহার করিত। তথাপি রাজা তাহার প্রতি অতিমাত্র প্রভূততর **অ**তুরাগ স্থাপ করিয়াছিলেন।

অনন্তর রাজা এক দিন মদ্য পান করিতে করিতে, আদরসহকারে স্থরাপৃত পানপাত্র দেই মন্থিনীর হত্তে প্রদান করিলেন। তৎকালে প্রধান প্রধান বেশ্যাগণ তথায় উপস্থিত পাকিরা মধুর স্বরে তৎপর চিত্তে গান করিতেছিল। অন্তান্ত ভূমিপালবর্গও তথায় সমবেত ছিলেন উাহাদের সমক্ষে রাজা পানপাত্র দান করিলেন। কিন্তু সে প্ররাপানে পরাজ্বী ইইরা, দেই পার্ত্ত করিল না। উপস্থিত নরপতিরা এই ব্যাপার দেখিতে লাগিলেন। মহিনীকে উিচ্ছাল বাদিতেন। কিন্তু মহিনী তাঁহার প্রতি বীতরাগা ছিলেন। দেইগ্রন্থ তাঁহাকে প্রত্যাখাদ করিলেন। রাজা তরিবন্ধন ক্রম হইয়া, ধারপালকে আহ্বান করিয়া, উরগের স্থায়, নিশাসভার পরিহারনহকারে বলিতে লাগিলেন, তুমি এই ছ্ট্রদ্যাকে বিজন বনে লইয়া গিয়া, অবিলংখা ছাঙ্গা দিয়া আইদ। আমার কথায় কোন বিচার করিবার আবগুক হা নাই।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন দারপাল রোজার কথায় কোনপ্রকার বিচার না করিরা, তাহার অনুসরণপূর্বক দেই অ্লকে জননে আরোপিত করিরা, বনে ছাড়িরানিল। নরপতি কর্ত্বক অরণে পরিক্যকা হইরা, তাঁহার দৃষ্টির বহিত্ তা হইলেন, ভাবিরা, মহিনী পরম অন্ত্রহেই বোধ করিবন। এনিকে মহিনীর অন্ত্রাগার্ত্তি দহনে মন দহমান হওয়াতে, রাজা আর পত্মন্তর পরিবার করিবেন না। অতিমাত্র নির্বিশ্ব ইইরা, অহরহ তাঁহারই অরণপ্রসকে বাপন করিতে লাগিলেন এবং তদ্বস্থার ধর্মানুসারে প্রজাপাননহকারে নিজ রাজ্য শাসন করিতে আরম্ভ করিলেন।

এই রূপে তিনি ঔরদ পুত্রের ভার, পিতৃবৎ প্রজাপাননে প্রবৃত্ত আছেন, এমন সময়ে কোন 
রাক্ষণ আঠ চিত্তে আগমন করিয়া, বলিতে লাগিলেন, মহারাজ! আমি অতিমাত্র আঠ হইয়াছি।
রানিতেছি, শ্রবণ করুন। দেখুন, রাজা ভিল্ল অভ কেহই গোকের আর্ত্তিতাণে সমর্থ হয় না। আমি
রাত্রিতে ঘুমাইয়া ছিলাম। আমার গৃহের য়ার খোলা ছিল। এই সুযোগে কোনও ব্যক্তি আমার
রীকে হরণ করিয়াছে। অমুগ্রহপূর্কক তাঁহাকে আনিয়া দেন।

রাজা কহিলেন, বিজ ! আপনি জানেন না, কোন্ব্যক্তি ইরণ করিরাছে এবং কোণায় বা লইয়া গিয়াছে। অতএব কাহার বিরুদ্ধে যাত্রা করি এবং কোণা ইইতেই বা আপনার পত্নীকে আনয়ন করিব ?

বান্ধণ কহিলেন, রাজন্! রাত্রিতে ধারদেশে কপাট বন্ধ ক্রিয়া, ঘুমাইয়া থাকিলে, কেহ যদি কাহারও ভার্যা:ক হরণ করে, তাহা কি আপনি জানিতে পারেন ? দেখুন! আপনি আমা দের নিকট বড়ভাগ গ্রহণরূপ বেতন লইয়া, সকলের রক্ষা ক্রিয়া থাকেন। সেইজ্ঞা স্কলে নিশ্চিন্ত হইয়া, নিদ্রা যায়।

বাজা কহিলেন, আনি আপনার ভার্যাকে কখন দেখি নাই। অতএব তাঁথার ক্লপ, দেহ, বয়স ও স্বভারতাদিই বা কিরূপ, তাথা বিশেষ ক্রিয়া বলুন।

বান্ধণ কহিলেন, রাজন্! তাঁহার নেত্র কঠোর দেহ অতি উন্নত, বাছ হুম্ব, আনন ক্লণ ও রূপ বিরূপ; আমি তাঁহার নিলা করিতেছি না। তিনি বান্তবিকই ঐরূপ। তাঁহার কণা অতি কর্কণ; তিনি স্থানীশা নহেন; সাতিশয় অপিয়দর্শনা। আনি এই নিজ ভার্যার পরিচয় প্রদান করিলাম। রাজন্! তাঁহার প্রথম বয়স কিয়ৎ পরিমাণে অতাত ২ইয়াছে মাত্র। আমার ভার্যা নিশ্চয়ই তান্শ-রূপশালিনী। আমি সত্যই বিশোম।

রাজা কহিলেন, একন্ ! আপনার আর তাদৃণী ভার্যায় প্রয়োজন নাই। আমি আপনাকে অন্ত ভার্যা প্রদান করিব। দেখুন, পত্নী সর্বস্থ শালিনী হইলেই, স্থ সম্ভাবন করেন এবং আপনার ভার্যার হার হইলেই, হৃংথের হেতৃ হইয়া থাকেন। স্থানর রূপ ও স্থাণতা এই উভয়ই কণ্যাণের হেতৃভূত। সেইজন্ত, রূপ ও শীল বিহীনা হইলে, ভার্যাকে ত্যাগ করা বিধেয়।

বাক্ষণ কহিলেন, রাজন্! ভার্যাকে রক্ষা করা সর্বাথা কর্ত্তবা, এইরূপ উৎকৃষ্ট লোকপ্রবাদ কি প্রচিনিত নাই ? দেখুন, ভার্যাকে রক্ষা করিলে, প্রজার রক্ষা করা হয়। নরেশর! আহ্মা প্ররূপে ভার্যাতে জন্মগ্রহণ করেন। সেইজ্ল ভার্যার রক্ষা করা কর্ত্তবা। পুনশ্চ, প্রজার রক্ষার করিলে, আহ্মা রক্ষিত হইয়া থাকেন। তাহার রক্ষা না করিলে, বর্ণদকের সংঘটিত হয়। ত্রি-ক্রন, পূর্বতিন পিতৃপুর্বাণ স্বর্গ হইতে অবংগতিত হইয়া থাকেন। যাহার ভাগ্যা নাই, তাহার জহিনি ধর্মহানি হইয়া থাকে। নিতা ক্রিয়ার বিভ্রংশবশতঃ তাহাকে পতিত হইতে হয়। রাজন্! সেই ভার্যাতে আমার সন্ততি জন্মিরে। সেই স্ততি আপনাকে হড্ভাগ দান করিয়া, ধর্ম সক্ষ করিবে। প্রভো! এই কারণেই আমি নিজপঞ্চার রূপগুণাদি নবিশেষ বর্ণনা করিগাম। একণে তাহাকে আনিয়া দেন। বেহেতু, আপনি রক্ষা করিবার জন্মই আছেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা ভাঁহার এবংবিধ বচন শ্রবণ ও সবিশেষ পর্য্যালোচনপূর্বক সর্ববিধ-উপকরণদন্দর মহারণে আরোহণ করিলেন এবং তৎসহারে ইতন্ততঃ পৃথিবী পরিভ্রমণ করিতে গাগিলেন। অনস্তর মহারণ্যে রুমণীয়,তাপদাশ্রম দর্শন করিয়া, তথায় অবতরণপূর্বক প্রবিষ্ট হইয়া, অবণোকন করিলেন, ঋবি কুশাদনে উপবেশন করিয়া, বীয় তেজে যেন অনিতেছেন। রাজাকে সনাগত দেখিয়া, তিনি ত্রাম্থিত হইয়া, তৎক্ষণাৎ উথান ও স্বাগতবাদ সহকারে তাঁহার সভাজন করিয়া, শিষ্যকে কহিলেন, অর্থ্য আনয়ন কর। শিষ্য তাঁহাকে ধারে ধীরে বলিলেন, ইহাঁকে কিরপ অর্থ্য প্রদান করা যাইবে, আজা করুন। আপনার আজা সবিশেষ বিচার করিয়া, তদপ্ররপ অহুঠান করিব। তথ্ন মহর্ষি রাজার বুড়ান্ত অবগত হইয়া, সন্তাধণ ও আদন দান হারা স্থান রক্ষা

করিলেন। অনন্তর বলিতে লাগিলেন, আপনি কিজন্ত এখানে আসিয়াছেন ? আপনার অভিপ্রা কি ? রাজন্। আমি জানি, আপনি উত্তানপাদের পত্র উত্তম।

রাজা কহিলেন, মূনে ! ব্রান্ধণের পত্নীকে কোন্ব্যক্তি গৃহ হইতে হরিয়া লইয়া গিয়াছে। তাহার কোনরপ র্তান্তই আমার জানা নাই। সেই ব্রান্ধণভাগ্যারই অধ্যেণার্থ এখানে আদি, লাম। আমি প্রণামপ্র্কক আপনাকে জিজাদিতেছি। বিশেষতঃ, আপনার গৃহে আমি অভ্যাগত। অত্যব যাহা জিজাদা করিতেছি, অমুকম্পাপুর্কক বলিতে হইবে।

শৰি কহিলেন, রাজন্। যাহা জিজ্ঞান্ত আছে, শঙ্কাতগাগপূৰ্বক তাহা জিজ্ঞানা কক্ষন। यह বক্তব্য হয়, তাহাহইলে, যথায়থ বিধানে আপনাকে বনিব।

রাজা কথিলেন, আমি আপনার গৃহে আগমন করিলে, প্রথম দর্শনেই আমাকে যে অর্ধ্য দান করিতে উদ্যত হইয়াছিলেন, কিজন্ত তাহা দেওয়া হইল না ?

ঋষি কহিলেন, রাজন্! আপনাকে দেখিয়াই, আমি পূর্ব্বাপর না ভাবিয়া, হঠাৎ মনের আরেনে এই শিষ্যকে আজ্ঞা করিয়াছিলাম। দেইজন্ম এ ব্যক্তি আমাকে প্রতিবোধিত করিল। এই শিষ্য আমার প্রসাদে জাগতিক যাবতীয় ভূত, ভবিষ্যৎ ও বর্ত্তনান ঘটনা আমার ভায় বিদিত আছে। এইজন্ম, সবিশেষ বিবেচনা করিয়া, আজ্ঞা করুন, এইপ্রকার বলাতেই, আমার এবিয়য় হৈতন্ত জল্মে। দেইজন্তই আমি আপনাকে বিধানাম্বসারে অর্থ্য প্রদান করি নাই। রাজন্তিত বটে, আপনি স্বায়ন্ত্ব বংশে জনিয়াছেন। এইজন্ত অর্থ্যের যোগ্যপাত্র। তথাপি আম্রা আপনাকে বিশিষ্ট বিধানে অর্থ্যযোগ্য মনে করি না ?

রাঞ্জা কহিলেন, ব্রহ্মন্! আমি জ্ঞান বা অজ্ঞানবশতঃ এমন কি ক্রিয়াছি, যাহাতে বহ কালের পর আমি অভ্যাগত হইলেও, আপনার অর্থার যোগ্য হইলাম না।

ঋষি কহিলেন, তুমি কি ভূনিয়া গিয়াছ, অরণ্যে পত্নীকে ত্যাগ করিয়াছ। এক পক্ষ নিভ্যকর্ম নাই; তাহাঁর সহিত ধর্মও পরিত্যাগ করিয়াছ। এক পক্ষ নিভ্যকর্ম নাকরিলে, লোকে অস্পৃশ্ম হইয়া থাকে। কিন্তু তুমি এক বৎসর নিভ্যকর্ম কর নাই। রাষন্! স্বামী ছ:শীল হইলে, পত্মীর যেরপ তাঁহার সম্বন্ধে অমুক্লচারিলী হওয়া কর্ত্তব্য; ভার্যা ছ:শীলা হইলে, তাহাকে ভেমনি পোষণ করা স্বামীর কর্ত্তব্য। দেখুন, আহ্মণের সেই পত্মীকে হয়ণ করিয়াছে। তিনি প্রতিক্লচারিলী হইলেও, এ আহ্মণ ধর্মকামনায় তাহারেই পাইবার জন্ম নিতাম উৎস্ক হইয়াছেন এবং তাহাতেই তাঁহার মন অভিমাত্র বন্ধ হইয়া উঠিয়াছে। মহারাজ। আগি উৎপথ প্রবৃত্ত পুক্ষনিগকে স্বর্ধে সংস্থাপন করেন। অভএব আগনি যদি সেইরপে স্বধ্র্ম হইটেবিচলিত হন, তাহাইইলে, আর কোন্ব্যক্তি আপনাকে স্থাপন করিবে ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, সেই ধীমান্ তপোধন এইপ্রকার কহিলে, রাজা অভিমাত্র অপ্রতিভালজিত হইরা, তাগতেই সমতিদানপূর্বক ঋষিকে জিজ্ঞাসা করিলেন, ভগবন্। কোন্ বাহি বাদানের সেই পত্নীকে কোণার হরণ করিয়া লইয়া গিরাছে ? আপনি জগতের যাবভীর অতী ও অনাগত ঘটনাই অবিতথ দর্শন করেন।

ঋষি কৃতিলেন, মহারাজ ! অদির পুত্র বলাকনামক রাক্ষণ ব্রাহ্মণীকে হরণ করিয়াছে আপনি অন্য তাঁহাকে উৎপলাবতক অরণো দেখিতে পাইবেন। অতএব, গমন করুন এবং শীবেই ব্রাহ্মণের সহিত তদীয় ভার্যার সংযোগ সমাহিত করুন। আপনার ভার, সেই ব্রাহ্মণকে শেদিন দিন পাশভাগ্রী হইতে না হয়।

ইতি ঋষিবাক্য নাম একোনদগুতিত্ব অধ্যায়।

#### সপ্ততিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর রাজা মহামুনিকে প্রণাম করিয়া, রথে আরোহণপূর্মক তলীয় কথিত উৎপলাবতকাননে সমাগত হইলেন, তথার দেখিলেন। আদাণের দেই ভার্যা প্রীক্ষণ ভক্ষণ করিতেছেন। স্বামী বেরূপ বর্ণন করিয়াছিলেন। তাঁখার স্বরূপ অবিক্ল দেইরূপ। তথন তিনি তাঁখাকে বিজ্ঞানা করিলেন, ভবে । স্পাই বন, ভূমি কি দেই বিশানতনর মুশ্র্মার পত্নী ?

বান্ধণী কহিলেন, আমি অভিরাত্তের কন্তা। তিনি অর্ণ্যবাদ আত্রর করিরাছেন। আপনি বাহার নাম করিলেন, দেই বিশান তনম্বই আমার স্বামী। হুরায়া বলাক রাক্ষদ নিজিত অবছায় আমাকে হরণ করিয়া আনিয়া, মাতা ও লাতার দহিত আমার বিয়োগ সমাহিত করিয়াছে।
দে বেমন আমাকে এইরপে বিয়োজিতা করিয়াছে, তেমনি ভশ্মীভূত হউক। মাতা ও লাতাগণ এবং
অন্তান্ত আগ্রেরগণের দহিত বিয়োপ সংঘটিত হওয়াতে, আনি অভিমাত্র ছংথিতা হইয়া, এখানে
অবস্থিতি করিতেছি। রাক্ষন আমাকে ঈদৃণ গহনবনে আনিয়া ছাড়িয়া নিয়াছে। কি কারণে আনিয়াছে, তাহা জানি না। কেন না, দে আমাকে এপব্যস্ত উপভোগ বা ভক্ষণ, কিছুই করে নাই।

রাজা কহিলেন, তুমি কি জান, রাক্ষ্য তোমাকে ছাড়িয়া দিয়া, কোথায় গিয়াছে? অবি বিজনদিনি! তোমার স্বামাই আমাকে এখানে পাঠাইয়া দিয়াছেন।

প্রাহ্মণী কহিলেন, রাক্ষদ এই কাননেরই প্রান্তভাগে অবস্থিতি কবিতেছে। যদি ভয় না পান, তাহাহইলে প্রবেশ করিয়া দেখুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর আহ্মণী পথ দেখাইরা দিলে, রাজা প্রবেশ করিরা দেখিলেন, বলাক পরিবারবর্গে বেষ্টিত হইরা রহিয়াছে। রাজাকে দেখিবামাত্র, অরমাণ হইয়া, দ্র হই-তেই মন্তক দ্বারা মহী স্পর্শ করিয়া, পাদান্তিকে আগমন করিল এবং কহিতে লাগিল, মহারাজঃ! আমার গৃহে পদার্পণ করিয়া, মহান্ অমুগ্রহ বিতরণ করিলেন। আপনারই রাজ্যে আমি বাদ করি। অত এব কি করিব, আজা করন। এই অর্গ্য গ্রহণ করন। এই আদেনে উপবিষ্ট হউন। আমরা ভৃত্যে, আপনি প্রভু। অত এব দুদুরূগে আজা করন।

রাজা ক্ছিলেন, তোমার দর্কভোভাবেই আতিথাসৎকার করা হইরাছে। কোন আংশেই তাহার ক্রাট হয় নাই। আয় নিশাচর! তুমি কিজন্ত বাহ্মণপদ্ধীকে হরিয়া আনিয়াত ? যদি ভার্যার্থ হরিয়া থাক, ইনি হ্রপা নহেন; অন্তান্ত অনেক হ্রপা রমণী আছে। আর যদি ভক্ষণার্থ আনিয়া থাক, তাহাহইলে কিজন্ত হা বা ভক্ষণ কর নাই? আমাকে বলিতে হইতেছে।

রাক্ষণ কহিল, মহারাজ! আমরা মানুষ থাই না; অন্তান্ত রাক্ষণেরা মানুষ থাইয়া থাকে।
আমরা পুণার যে ফল, ভাহাই ভক্ষণ করিয়া থাকি। আমরা সন্মানিত বা অপমানিত হইলে,
নরনারীগণের স্বভাব ভক্ষণ করিয়া থাকি। তাহানিগকে ভক্ষণ করি না। সেই কারণে আমরা
যখন গোকের ক্ষমাগুণ ভক্ষণ করি, তাহারা তথন কুদ্ধ হইয়া থাকে। আমার, যখন ভাহাদের
দ্বিত স্বভাব ভক্ষণ করি, তথন তাহারা পুণাবান হয়। ভূপ! আমাদের গৃহে অপ্সরা সমান
ক্ষণশানিনী প্রমন্ধাণের অভাব নাই। তাদৃশ রাক্ষী সকল থাকিতে, মহুষারম্পীতে আমাদের
আমানিতির সম্ভাবনা কোথায় ৪

রাজা কহিলেন, নিশাচর ! যদি ইহাকে উপভোগ বা আহার, কিছুই না করা অভিপ্রেত হর, তাহাহইলে, কিজ্ঞ ব্রাহ্মণের গৃহে প্রবেশ করিয়া, ইহাকে হবণ করিয়াছিলে ?

রাক্ষণ কহিল, নূপ! ইহার স্বামী মন্ত্র জানেন। আমি যে যে যজ্ঞে গমন করি, তিনি বক্ষোয় মন্ত্রপাঠ করিয়া, তাহাতেই সামার উচ্চাটন করিয়া গাকেন। তদীয় সংহাচোটন কর্ম হারা আনাদের কুখার নির্ত্তি হয় না। তিনি যদি সকল যজেই ঋষিক হন, তাহাহইলে, আমরা আর কোণার যাইব ? এই কারণেই তাঁহার এইরূপ বিকলতা উপপন্ন করিয়াছি। পদ্দী ব্যতিবেকে পুরুষ যাগ কর্মের যোগ্য হয় না।

মার্কণ্ডের কহিলেন, দেই ব্রাহ্মণকে বিকল করা হইরাছে, বলাতে, রাশা অতিমাত্র বিষঃ হইলেন। তিনি ভাবিলেন, ব্রাহ্মণকে বিকল করা হইরাছে, বলিয়া আমাকে নিন্দা করিতেছে। ইতিপূর্বে দেই মুনিসন্তমন্ত আমাকে অধ্যপ্রদানের অযোগ্য বলিয়াছেন। রাহ্মণ আমার ভার দেই ব্রাহ্মণের বিকলতা নির্দেশ করিল। পত্নী ব্যতিরেকে আমার মহাস্কটই উপস্থিত হইরাছে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তিনি এইরূপ চিন্তা করিতে লাগিলে, রাক্ষণ পুনরায় প্রণতিনম্রতা সহকারে বন্ধাঞ্জিপ্টে কহিল, রাজন্। আজাপ্রধান দারা আমারে অহুগৃহীত কর্মন। দেখুন, আমি আপনার ভূতা, প্রণত ও অধিকারনিবাসী।

রাজা কহিলেন, নিশাচর ! তুমি যে কহিলে. আমরা সভাব ভক্ষণ করিরা থাকি আমি থে কার্যোর জন্ম তাহা প্রার্থনা করিতেছি, তাহা শ্রবণ কর। অদ্য তোমাকে এই প্রাহ্মণীর হঃশীলতা উপযোগ করিতে হইবে। তুমি ইহার ছঃশীলতা ভক্ষণ করিলে, ইনি বিনয়গুণে ভূষিতা হইবেন। নিশাচর ! ইনি বাহার ভাষ্যা, ইহাঁকে তাঁহার গৃহে রাগিয়া আইস। আমি তোমার গৃহে অভ্যাগত হইরাছি। অত এব, ঐরপ অনুষ্ঠান করিলে. আমার সকল করা হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন রাক্ষণ স্বকীয় মারাগহায়ে আক্ষণীর অন্তরে প্রবেশ করিরা, রাজার আজাহসারে নিজ শক্তি দ্বারা তদীয় ত্:শীলতা ভক্ষণ করিল। তাহাতে অতীব ভরঙ্কর ত্:শীলতার পরিহার হইলে, আক্ষণপত্মী রাজাকে কহিলেন, আনি মহাত্মা স্বামীর স্বকীয় কর্মফলের বিপাক বশত: বিঘোজিতা হইয়ছিলাম। এই নিশাচর তাহার হেতু হয়। ইহার দোষ নাই; আমার সেই মহাত্মা স্বামীরও কোন অপরাধ নাই। অথবা অন্ত কাহারও দোষ নাই। আমারই সকল দোষ। সকলেই স্ব স্ব কর্মের ফলভোগ করিয়া থাকে। অন্ত জনো অবশু আমি কাহারও বিরহযোগ সাধন করিয়াছিলাম। এজনো আমার নিজেরই তাহা ঘটিল। ইহাতে এই মহাত্মার দোক কি ?

রাক্ষদ কহিল, রাজন্! আপেনার আদেশক্রমে ইহাঁকে ইহাঁর স্বামীর গৃহে লইয়া যাইব। ভয়তীত, আর যাহা করিতে হইবে, তাহাও আজা করুন।

রাজা কহিলেন, রজনীচর ! ইহাঁকে ইহাঁর স্বামীর গৃহে দিয়া আদিলেই, আমার দকল করা ছইবে। পরে কার্য্যকালে যথন শারণ করিব, তথন অবশ্র আদিবে।

মার্কণ্ডেয় কৃথিলেন, রাক্ষণ যে আজা বলিয়া, বিজ্ঞান্তনাকে গ্রহণ করিয়া, তাঁহার স্বামীর গৃহে ক্লাথিয়া আদিল। জুঃশীলতার পরিহার প্রযুক্ত, বিজ্ঞপত্নীর শুক্তিসকার হইল।

ইতি বিজ্ঞান্তানয়ন নাম সপ্ততিতম অধ্যায়।

#### একদপ্ততিতম অধ্যায় ৷

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, রাজা ব্রাশ্বণপত্নীকে অকীর আমীর গৃহে পাঠাইয়া দিয়া, নিখান ত্যাক্ষ করিয়া, চিস্তা করিতে লাগিলেন, উপস্থিত বিদয়ে এখন কি করিলে, ভাল হইডে পায়ে। সেই মহামনা: ঋবি আমার অর্জ্য-বোগ্যভার অভাব জন্ত কন্ত স্পাইই নির্দেশ করিয়াছেন। এই নিশাচর ও আবার ব্রাহ্মণকে উপলক্ষ করিয়া, আমার বিকলতার উল্লেখ করিল। আমার এখন কি করা কর্ত্তবা ? আমি পত্নীপরিত্যাগী হইয়াছি। অথবা সেই জ্ঞানদৃষ্টে মুনিসন্তমকেই এবিষয়ে জিঞানা করিব। এইপ্রকার বিশেষরূপে চিন্তা করিয়া রাজা সেই র্থারোহণে, ঘেখানে উল্লিখিত ত্রিকালদাশী ধর্মপারদর্শী মহর্ষি বাদ করিতেছেন, গমন করিলেন। রথ হইছে অবরোহণ ও টাহার সহিত সাক্ষাৎ করিয়া, প্রণামপ্রক রাক্ষসের সহিত সমাগম ব্রভান্ত হইয়াছে; উাহাকে যে আমীর গৃহে পাঠান হইয়াছে এবং অয়ং যেজন্ত পুনরায় আনিয়াছেন, তাহাও ব্রিলেন।

ধবি কহিলেন, রাজন্ ! তুমি যে এই সকল করিয়াত তাং। পুর্কেই আমি জানিয়াতি এবং যেজন্ত আমার দমাপে আনিয়াত, তাং। ও সমস্ত আমার বিদিত হইয়াছে । জিজ্ঞানা কর, আমাকে কি করিতে হইবে । তজ্জন্ত আমার মন উদ্বিশ্ন হইয়াছে । মহারাজ ! তুমি আদিয়াত, একণে তোমাকে যাহা করিতে হইবে, তাং। শ্রবণ কর । স্ত্রীই ধর্মার্থকাম পুরুষণণের বলবৎ কারণ । বিশেষতঃ, তুমি তাঁহাকে তাাগ করিয়া, নিশ্চয়ই ধর্মত্যাগী হইয়াছ । তুপ ! অপত্রীক মহব্য নিজকর্মের যোগ্য হয় না । এ বিষয়ে আলগ, কত্র, বৈশ্ব অথবা শুল বনিয়া । কোন প্রভেদ নাই । তুনি পত্নীকে ত্যাগ করিয়া, কোনমতেই ভাল কর নাই । আমী যেমন স্ত্রীর অত্যাজ্য, সেইয়প্র তাাগ করা ভর্ডার কর্ত্বা নহে ।

রাজা কহিলেন, ভগবন্! আমি কি করিব! আমার কর্মবিপাক বশেই এইরূপ আশোভন সংবটন হইরাছি। দেখুন, আমি অফুকুল হইলেও দে প্রতিক্লকারিণী হইরাছিল। পাছে ভাবার বিরহযন্ত্রণা সহা করিতে হয়, এই ভয়ে অভরায়া আক্রান্ত হওয়াতে, আমি দহামান চিত্তে তংসমতঃ সহাকরিয়াছি। সম্প্রতি তাংগকৈ বনে দিয়াছি। কোথায় গিয়াছে, অপবা সিংহ, বাংল ও নিশাচরগণই বা ভক্ষণ করিয়াছে, কিছুই জানি না।

ঋষি কহিলেন, ভূপাল! দিংহ, ব্যাঘ্র অথবা নিশাচরগণ তাঁহাকে ভক্ষণ করে নাই। তিনি আপনার পাতিব্রত্য সম্ভাতাতা রক্ষা করিয়া, সম্প্রতি রসাতলে অবস্থিতি করিতেছেন।

রাজা কহিলেন, কে তাঁহাকে পাতালে লইয়া গেল ? কিরপেই বা তিনি শুক্চারিণী ছইয়া, তথার বাদ ক্রিতেছেন ? ব্দ্ধন্ । এই সক্দ ঘটনা নিতাও বিশ্বয়জনক। অতথ্ব অভ্থাহপূর্কক কিঁওনি ক্রন।

ঋষি কহিলেন, পাতালে কপোতক নামে বিখ্যাত নাগরাজ আছেন।তুমি ত্যাগ করিলে, তোমার পদ্ধী মহারণ্যে ভ্রমণ করিতে করিতে, সেই নাগরাজের দর্শনগোচরে পতিত হইলেন। তিনি সম্পার ঘটনা বিদিত হইলা, অফুরাগডরে তোমার সেই রপশানিনী যুবতী ভার্য্যারে পাতালে শইরা গেলেন। মহারাজ! নাগরাজের কন্তার নাম নলা এবং ভার্যার নাম মনোরমা। তোমার বী অলোকজামান্ত-লাবণ্যশালিনী।পাছে জননীর সপত্নী হন, এই ভরে ঐ কন্তা তাঁহাকে অন্তঃপ্রে গোপন করিয়া রাথিয়া দেন। পিতা প্রার্থানা করিলেও, তিনি যথন কোন উত্তর প্রদান করেন নাই, তখন পিতা শাপ দিয়া কহিলেন, তুনি মুকা হইবে। স্থতা এইকপে পিতা কর্তৃক অভিশ্রেই ইয়াছেন। উরগ্রাজ্ তাঁহাকে লইয়া গিয়াছেন। তানীয় কন্তা তাঁহাকে রক্ষা করিয়া আছেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন রাজা অভিমাত্র হ্রাবিষ্ট হট্রা, সেই বিজবর্ষ্যকৈ স্ত্রীকৃত অকীর দোর্ভাগোর কারণ জিজাদা করিয়া কহিলেন, ভগবন্! দকণ লোকেই আমাকে অকৃত্রিম প্রীতি করে। কিন্তু আমার পদ্ধী আমায় দেরপ প্রীতি করেন না, ইহার কারণ কি ? মহামুনে! আমি যেমন তাঁহাকে প্রাণ অপেকাও অধিক ভালবাদি, তিনি তেমনি আমার প্রতি ছ্র্ব্বহার করেন, ইহার কারণ কি, বলিতে আজা হউক।

শ্বি কহিলেন, পাণিগ্রংণকালে তোমার প্রতি স্থা, ভৌম, ও শনৈশ্চরের এবং তোমার পদ্ধীর প্রতি শুক্ত ও বৃহস্পতির দৃষ্টি হয়। তোমার দিকে দেই মুহুর্জে চক্ত ও পদ্ধীর দকে চক্তের পুত্র ছিলেন। ইহাঁরা প্রস্পর বিপক্ষভাবে তোমাদের বিরুদ্ধে অবস্থিতি করিয়াছিলেন। সেইজ্ভই ভোমার এইরূপ অনিষ্ট সংঘটন হইয়াছে। অতএব গ্রমন কর, স্বকীয় ধ্র্মাছুগারে পৃথিবীপাশনে প্রেবৃত্ত হও এবং পদ্ধীদ্ধায় হইয়া, যাবতীয় ধ্র্মবিতী ক্রিয়াদ্ধ্রে অষ্ঠান কর।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইপ্রকার অভিহিত হইলে, তিনি ঋষিকে প্রানিপাতপূর্বক জননে আবাহা করিয়া, অকীয় পুরে প্রত্যাগত হইলেন।

ইতি উত্তমপ্রত্যাগমন নাম একদপ্রতিতম অধ্যায়।

#### দ্বিদপ্ততিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, অনস্তর তিনি অনগরে সমাগত হইয়া. সেই আক্ষণের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন। দেখিলেন, তিনি ফুণীলা পত্নীর সহবাদে প্রম হর্ষে আছেন।

বান্ধণ তাঁহাকে কহিলেন, নরণতিকুলাগ্রগণ্য! আমি রুতার্থ ইইয়াছি। যেহেতু. আপনি ধর্মজঃ; আমার পত্নীকে আনিয়া দিয়া, ধর্ম রকা করিলেন। '

রাজা কহিলেন, বিজশ্রেষ্ঠ ! আপনি নিজ ধর্ম পালন করিয়া, কৃতার্থ হইরাছেন। আমি বড় সঙ্কটে পড়িয়াছি। বেহেতু, আমার গৃহ গৃহিণীশূত হইয়াছে।

বাহাণ কহিলেন, নরেন্দ্র । অরণ্যে যদি তাঁগাকে খাপদে ভহ্নণ করিয়া থাকে, তাঁগাকে আর প্রয়োজন কি ? আপনি কেন পত্যন্তর পরিগ্রহ করিতেছেন না ? দেখুন, আপনি ক্রোধের বশবর্তী হুইয়া, ধর্মের হানি করিয়াছেন।

রাজা কহিলেন, আমার সেই দয়িতা খাপদ-কবলিতা হন নাই; জীবিতা আছেন। তাঁংরি চরিত্রও দ্বিত হয় নাই। আমি এখন কি করিব ?

ব্রাহ্মণ কৃতিশেন, যদি তোমার দয়িতা জীবিতা থাকেন এবং যদি তাঁহার ব্যক্তিচারিতা ঘটিয়া না থাকে, তাহাহইলে, তুমি কিজ্ঞ পত্নীপরিত্যাগজনিত পাপের অমুঠান করিতেছ ?

রাজা কৰিলেন, স্থানয়ন করিলেও, তিনি আমার প্রতি সর্বাদা প্রতিক্ল ব্যবহার করিবেন। আমার প্রতি জাঁহার মিত্রভাব নাই; স্থতরাং হঃথ ভিন্ন কথনই সূথ হইবে না। অতএব, যাংগতে তিনি আমার বশ্যামিনী হন. আপনি তদ্মুরূপ যত্ন কর্মন।

বান্ধণ কহিলেন, রাজন্! মিত্রকাম পুরুষগণ ঘাহার অমুষ্ঠানে প্রার্ভ্ত হন, আমি সেই যাগ-ক্রিয়া করিব। ইহা ছারা লোকের মিত্রলাভ হয়, সেইজন্ত ঐ যাগক্রিয়ার নাম মিত্রবিন্ধা। ইহা সকলের উপকার সাধন করে। এই ক্রিয়ার অমুষ্ঠান করিলেই, রাজমহিষী আপনার প্রতি প্রম্ শ্রীভিন্তী হইবেন। বলিতে কি, এই যাগক্রিয়া ছারা প্রম্পর অপ্রীতিমান্ স্ত্রীপুরুষেরও প্রীতি সমৃদ্ভূত ও নবাঁমুরাগ সমাহিত হইরা থাকে। তোনার উদ্দেশেই ভাহা আমি করিব। মহীপ্তে! দেই স্ক্রত যেধানে আছেন, তথা হইতে তাঁহাকে আনয়ন করুন। দেখিবেন, আপনার প্রতি তাঁহার পরম প্রীতির সঞ্চার হইয়াছে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইপ্রকার অভিহিত হইলে, নরণতি অশেষবিধ দ্রবাজাত আনরন ও সেই প্রাক্ষণ ও উলিখিত যাগজিয়া করিলেন। তিনি রাজার পরী সম্পাদন জন্ত বারধার সাতবার সেই যজ্ঞ করিয়া, যথন বুঝিলেন, রাজপত্নী স্থানীর প্রতি মৈত্রীগুলে অন্তপ্রাণিতা হইরাছেন, তথন রাজাকে কহিলেন, নরপ্রেষ্ঠ! আপনি এখন আপনার দ্রিতাকে অন্তিকে আনায়ন করিয়া, তাহাঁর সহিত ভোগ সকল সন্তোগ ও যজ্ঞ সকলের অনুষ্ঠান করন।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, প্রান্ধণ এইপ্রকার বলিলে, নরপতি বিশ্বিত হইয়া, সেই সভাপ্রতিঞ্জ মহাবীর্মা নিশাচরকে শারণ করিলেন। মহামুনে! শ্বতমাত্র নিশাচর তৎক্ষণাৎ রাজার গোচরে সমাগত হইয়া, প্রিণিগাত করিয়া কহিল, কি করিতে হইবে, আজ্ঞা করুন। অনন্তর রাজা বিস্তারপূর্কক সম্পায় ভাগার গোচর করিলে, সেপাতালে গমন করিয়া, রাজ্ঞপদ্ধিকে আনিয়া উপত্তিত করিল। তথন মহিবী অতীব প্রণয় ও প্রীতিসহকারে রাজাকে দর্শন করিয়া, পরম আহলাদিতা হইয়া, বারস্থার বলিতে লাগিলেন, আমার প্রতি প্রসন্ন হইয়াই আছি। তবে আর এরপ বলিতেছ কেন ?

পত্নী কহিলেন, নরেক্র ! যদি আমার প্রতি আপনার মন প্রসাদপ্রবণ হইন্না থাকে, তাহা-হইলে, আমি যাহা আপনার নিকট যাজা করিতেছি. তাহা পরিপুরণ করুন।

রাঙ্গা কহিলেন, নিঃশঙ্কে বল ; ভীরু ! তোমার যাথা কিছু অভিলধিত আছে, আমার নিকট তাহা অণভ্য হইবে না। আমি তোমারই আয়ন্ত, ইহাতে অন্তণা নাই।

পদ্মী কহিলেন, নাগরাজ আমার দ্বী নিজ ছহিতাকে আমারই জন্ত শাপ দিয়া বনিরাছেন, তুনি মৃক। হইবে। তদমুদারে তাহাঁর মৃক্রগংবটন হইরাছে। যদি আমার প্রতি প্রাতিবশতঃ, তাহাব এই মৃক্রের শান্তিজন্ত প্রতিক্রিয়া করিতে পারেন, তাহাহইলে, আমার কি না ক্রেন।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তথন রাজা সেই ব্রাহ্মণকে কহিলেন, এবিধয়ে মৃক্তের শান্তি এত কীনৃশী ক্রিয়ার অফ্রান করা যাইতে পারে?

রান্ধণ কহিলেন, ভূপ! আপনার আদেশাহ্যারে গারস্বতীনামী যাগক্রিয়া করিব। নাগ্রাজ্হহিতার বাক্শক্তিপ্রবর্তন জন্ম আপনার পদ্ধী ঋণ হইতে মুক্ত হউন।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, অনন্তর সেই বিজোতম তদর্থ সারস্বতীনায়ী যাগক্রিয়ায় প্রবৃত্ত হইয়া, সমাহিত চিত্তে সারস্বত স্কুল সকল জপ করিতে লাগিলেন। তথন নাগরাজহৃহিতার বাক্শক্রিপুন; প্ররোহিতা হইলে, গর্গ তাঁহাকে কহিলেন, তোমার স্থীর স্থামী এই অতিহৃহর উপকার করিলেন। নন্দা এই বিষম অবগত হইয়া, শীত্রগতি পুরে আগমন ও আপনার স্থী রাজীকে আনিক্ষন করিলেন এবং রাজাকে কল্যাণবাক্যে মধুর স্বরে বারস্থার ত্বব করিয়া, আসনপরিগ্রহণ্রক বলিতে লাগিলেন, বার! আপনি অধুনা আমার যে উপকার করিলেন, তদ্বারা আমার স্বদ্ধ আরুই ইইয়াছে। অভ এই যাহা বলিতেছি, শ্রবণ করুন। নরাধিপ! আপনার উর্বেদ মহাবীর পুত্র জন্মগ্রহণ করিবেন। তাহাঁর চক্র সমগ্র ভ্রবেন অপ্রতিহত হইবে। সেই পুত্র স্বর্পালার্থ-তিত্বে সম্পূর্ণ জ্ঞান লাভ করিবেন, ধর্মানুষ্ঠানতংপর হইবেন, পরমবৃদ্ধি অধিকার করিবেন এবং মন্তর্গর স্বন্ধর ও মন্ত হইবেন। নাগরাজহ্হিতা তাঁহাকে এইপ্রকার বর দিয়া, সেই স্থীকে আলিক্ষন করিয়া, পাতালে গমন করিলেন।

এনিকে পত্নীর সহিত বিহার ও প্রজা পালন করিতে করিতে, রাজার বহকাল অতীত হইল। তথন সেই মহাত্মা রাজার পত্নীর গর্ভে, পৌর্ণদাদীতে সম্পূর্ণমণ্ডল চক্তের স্থার, সর্বাংশাক্ষনোহর পূত্র জন্মগ্রহণ করিল।

সেই মহায়ার জন্ম হইলে, প্রজালোকের জামোদের দীমা রহিব না। দেবসুন্তি স্কর্ নিনাদিত ও পুন্বৃষ্টি পতিত হইল। মুনিগণ সমাগত হইয়া, তদীয় কমনীর কলেবর ও ভাবী পবিত্র চরিত্র পর্যাবলোকন করিয়া, তাঁহার নাম উত্তম রাখিলেন। তাঁহারা বলিলেন, এই পুত্র উত্তম বংশে উত্তম সময়ে উত্তম কলেবরে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। এই ক্স্তু উত্তমনামে বিধ্যাত হইবেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, উত্তমের সেই পুত্র উত্তমনামে বিখ্যাত মহু হইরাছিলেন। তাঁহার প্রভাব বিশিতেছি, প্রবণ কর্মন। উত্তমের ইতিবৃত্ত ও উত্তমের জন্মকথা প্রতিদিন প্রবণ করিলে, ক্ষিন্ কালে বিদ্বেভাজন হইতে হয় না। যে বাক্তি ইহা প্রবণ বা পাঠ করে, তাহার কথন পুত্র, কলত্ত, মিত্র, এই সক্ল বাহিত বস্তার সহিত বিয়োগ ঘটে না। ত্রহান্। তদীয় মহস্তর বিতিভেছি, প্রবণ ক্ষান। সেই মহস্তরে যিনি ইক্তা এবং যাহারা দেবতা ও ঋষি হইয়াছিলেন, তাঁহাদের ক্যাও শুহা।

ইতি উত্তমজন্ম নাম দ্বিসপ্ততিতম অধ্যায়।

#### ত্রিসপ্ততিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই প্রজাপতি উত্তমের অধিকৃত তৃতীয় মন্বস্তরে বাঁহারা দেবতা, ঋরি ও রাজা হইরাভিলেন, তাহা আমি বলিতেছি, শ্রবণ করুন। এই মন্বস্তুরে স্বধানা নামে দেবগণ প্রাতৃ-ভূতি হন। তাইারা স্থানামের অন্থতি সাধন ক্রিয়াছিলেন। তদ্বাতীত, স্তানামে অন্ত দেব-গণ আপবিভুতি হন। মুনিদত্তম ! শিবনামে আর এক দেবগণের আবিভাব হইয়াছিল। তাঁহারা স্থানতঃ সাকাৎ শিব এবং পাণবিনাশ করিতেন, এইরূপ বিখাতি আছে। মুনিসত্তম। প্রতর্দন নামে আর এক দেবগণ প্রাত্ত ত ইয়াছিলেন। ঔত্তম মম্বন্তরে ইহাঁরা চতুর্থ গণ বলিয়া ক্রিত হয়েন। তদ্বাতীত, দেবতাদের আবে এক গণের আবিভাব হয়। তাঁহাদের নাম বশবর্তী। এই পঞ্চ দেবগণ সকলেই মজভুক বলিয়া বিখ্যাত। এই মম্বস্ত সক্ষেত্ত ছাদশ দেবগণ আবি-ভতি হইরাছিলেন। তাহাঁদের ইন্দ্রের নাম স্থশান্তি। এই মহাভাগ স্থশান্তি শত যজ্ঞের আহরণপুর্বক তৈলোক্যে সর্বোপরি কর্ত্ত করেন। উপসর্গ সকলের বিনাশ জন্ত যাহাঁর নামাক্ষরবিভূষিত গাথা অন্যাপি মামুদ্রেরা গান করিয়া থাকে। সকল লোকের কমনীয় এই দেবরাজ স্থানিত উল্লিখিত শিব, সত্য ও বশবর্ত্তী প্রস্তৃতি খাদশ দেবগণের সহিত মিলিত হইয়া, প্রমশান্তি প্রদান করেন। এই মনুর অজ. পর ভুচি ও দিব্যনামে যে দকল পুত্র জন্মগ্রহণ করেন, তাঁখারা দকলেই মহাবল পরাক্রান্ত, সকলেই বিধ্যাত এবং সকলেই তিদশনদৃশ। সেই পরমতেজ্বী মহুর মন্বন্তর হতদিন ছিল, তভদিন তাঁহার পুত্রপৌত্রাদিক্রমে বংশপরম্পরা নবপতিপদে অধিরচ হইয়া, সমগ্র পৃথিবী পাগন করিয়াছিলেন। সকলের শ্রেষ্ঠ এই মহাস্থার সপ্ত পুত্রই স্বকীয় তপত্তের সহায়ে তদীয় অন্তরে সহা ঋষি হইয়াছিলেন।

আমি এই তোমার নিকট তৃতীয় মখন্তর কীর্ত্তন করিলাম। অনন্তর তামদনামক মন্ত্র অন্তর্ক চতুর্থ মন্বন্তর বলিয়া থাকে। এই মন্ত্র্তর্বোনিতে জন্মগ্রহণ করিয়া, স্বীয় ষশে সমুদার জগৎ বিদ্যোতিত করিয়াছিলেন। তাহাঁর জন্মবুতান্ত বলিতেছি, শ্রবণ কর। মন্ত্র প্রভৃতি এই মহাস্থা-গণের সক্ষেত্রই জন্ম চরিত এবং প্রভাব ইন্তিয়ের অতীত বলিয়া জানিবে।

ইতি ঔত্তম্মশ্বস্তর নাম ত্রিসপ্ততিত্য অধ্যার।

## চতুঃসপ্ততিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, পৃথিবীতে স্বরাষ্ট্র নামে বিধাতে বীর্যাবান্ এক রাজা ছিলেন। সংগ্রাবে কথন তিনি পরাজিত হন নাই। তিনি অনেক যজ্ঞ ক্রিয়াছিলেন এবং প্রমজ্ঞানশালী ছিলেন। মগ্রিকর্তৃক আরাধিত হইয়া ভগবান্ ভাষর তাঁহাকে অতি দীর্ঘ আয়ু প্রদান করেন। তাহাঁর প**ন্নী**র সংখ্যা একশত। তাহাঁরা সকণেই সক্ষ লোকের প্রশংসাভাজন ছিলেন। কিন্তু তিনি বেমন দীর্ঘায় হইয়াছিলেন, তাঁহার পত্নীরা তজ্ঞপ দীর্ঘায়ু হইতে গারেন নাই। **এইচন্ত কালসহকারে** তাহাঁরা নিধন প্রাপ্ত হন এবং তাহাঁর ভ্তা, মন্ত্রী ও অভাভ পরিজনবর্গও ঐক্লপ অকারুবশতঃ কাণধর্মের বশবর্তী হইয়াছিল। তয়িবদ্ধন মনে উদ্বেগের স্কার হওয়াতে, অফুদিন বীর্বাহীন হইতে লাণিলেন। বীর্যাহীন দেখিয়া পর্ম অন্তর্ম ভ্তাগণ তাহাকে তাাগ করিল। তিনি অতিমাত্র ছঃখিত হইয়া উঠিলেন। তদবভায় বিমর্জনামে এক জন বিপক্ষ ভাইাকে রাজাচাত করিল। রাজাচাত হওয়াতে, তিনি নির্বিল হৃদয়ে বনে গমন করিয়া, বিতভানদীর ভীরদেশে আশ্রম পূর্বকি তপশ্চরণে প্রবৃত্ত হইলেন। গ্রীমকালে পঞ্তপা, শীতকালে জনশায়ী হইয়া, আহার তাাগ করিয়া, তপস্থা করিতে আরম্ভ করিলে, বর্ধাকালে মেঘ সকল অনবরত বর্ধণ করাতে, প্রতি-দিনই পৃথিবী জ্বলে প্লাবিত হইতে লাগিলেন। বোর গভীর অন্ধকারে সমুদার বেন অমুদিপ্ত हहेल, পূর্ব্ব, পশ্চিম, দক্ষিণ বা উত্তর কোন নিক্ই আরু কেংই জানিতে পারিল না। অনস্তর অতিমাত জলপ্লাবন হওয়াতে, নরপতি অতীববেগশালী স্লিলপ্রবাহে অনায়ত হট্যা ভাদিয়া যাইতে লাগিলেন। প্রার্থনা করিয়াও, ভটভূমি প্রাপ্ত হইলেন না। দূরে ভানিয়া গিয়া, তিনি জনমধ্যে এক মুগীকে প্রাপ্ত ছইলেন এবং তাধারই পুচ্ছ ধারণ করিলেন। অনন্তর সেই পুচ্ছকেই ভেলাপ্রকণ করিয়া, তন্ধারা বাহিত হইয়া যাইতে লাগিলেন। অন্ধকারে ইভন্তত: এম**ণ ক**রিয়া, পরে তটভূমি প্রাপ্ত হইলেন। তাহাঁকে তৎকালে অতিমাত্র ত্তরেও বিস্তারবিশিষ্ট পদ্ধ উত্ত-বণ করিতে হইয়াছিল। সেই মহাভাগ নরপতি তপঃপ্রভাবে ক্লপ ও শিরামাত্রদার হইরাছিলেন: মতরাং পুচ্ছদেশে লগ্ন হইলে. হরিণী তাঁহাকে সেই অন্ধকারে আকর্ষণ করিয়া লইরা বাইতে শাগিল। তিনি কুষামাণ হইয়া, অন্ত রমণীয় বন প্রাপ্ত হইলেন। তংকালে অন্ধকারে ভ্রমণ করিতে করিতে, হরিণীর পুচ্ছদেশ স্পর্শ করিয়া, তজ্জনিত অতিমাত্র হর্ষ লাভ করিলেন এবং তদীয় মন কামবেণে আরুই হইয়া উঠিল। এইরূপে অমুরাণের সঞ্চার হওয়াতে, তিনি তৎপর চিত্তে মুগীর পৃষ্ঠদেশ স্পর্শ করিতে লাগিলেন। মুগী তাংগ জানিতে পারিয়া. সেই বনমধ্যে রাজাকে <sup>সংঘাধ</sup>ন করিয়া কহিল, কিজ্ঞ আবাপনি কম্পিত হত্তে আমার পুঠদেশ স্পর্শ করিতেছেন 📍 বাজন্! কার্য্যের গতি বিপরীত রূপে প্রাত্তুতি হইয়াছে। সত্য বটে, আপনার মন আছানে <sup>সক্ত হয়</sup> নাই এবং আমিও আপনার অগম্যা নহি। কিন্তু এই লোণ আপনার সক্ষে আমার ব্যাধাত করিতেছে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, নরপতি মুগীর এবছিধ বাক্য শ্রবণ করিয়া, কৌত্হণামিত হইয়া, ভাষাকে জিজাগা করিপোন, মৃগী ! তুমি কে ? কিরপেই বা মাহবের ভাষ, কথা বিণিতেছ ? গোগই বা কে, যে ভোষার সঙ্গমে আমার বিল করিতেছে ?

যুগী কহিল, ভূপ ! আনি পূর্বে আপনার দ্রিতা ভার্যা ছিলাম। আমার নাম উৎপল্য-বিচী। আমি দৃদ্ধবার ছ্হিতা। আপনার বে সকল মহিবী ছিল, তাহার মধ্যে আমিই সকলের বাধানা ছিলাম।

রাজা কহিলেন, ভূমি এমন কি কর্ম করিয়াছ, যাহার প্রভাবে তোমার ঈদৃশ যোনি সংঘটন ছইল পুনেথ, ভূমি পতিত্রতা ও ধর্মপরায়ণা ছিলে। তবে কিরুপে এইরপ হইলে ?

মৃগী কহিল, আমি পিতৃগুছে অবস্থিতিকালে দণীগণের সহিত অরণ্যবিহারে গমন করিয়া, তথার দর্শন করিলাম, এক মৃগ মৃগীর সহিত সমাগত হইরাছে। তথন আমি সমীপবর্তিনী হইরা, মৃগীকে তাড়না করিলাম। মৃগী আমার ভয়ে অভ্যত্ত গমন করিল। ইহাতে মৃগ কুক হইয়া কহিল, মৃঢ়ে! তুমি কিলভ এরপ মতা হইয়া উঠিয়াছ ? ধিক্ তোমার ঈদৃশ হঃশীলতায়! দেথ, তুম আমার এই আধানকাশ বিফল করিলে?

দে মাকুষের স্থায় বাক্যে এইরপ কহিলে, আমি শুনিরা, ভীতা হইরা, বলিলাম, তুমি কে, ঈদুলী বোনি প্রাপ্ত হইরাছ ? তথন সে কহিল, আমি নির্ভি-চক্ল্-নামক ঋষির পুত্র, নাম স্কুজগ। মৃগীতে অভিলাষ হওয়াতে, মৃগ হইয়া, প্রেমভরে ইহার অনুগত হইয়াছিলাম। এই মৃগীও বন মধ্যে আমার কামনা করিয়াছিল। ছুটে! তুমি তাহার সহিত আমার বিয়োগ সভ্যটিত করিলে। এইজন্ত তোমাকে আমি শাপ দিব।

আমি কহিলাম, মুনে! না জানিয়াই এই অপরাধ করিয়াছি। অতএব প্রাপ্ত ইউন; আমাকে আর শাপ দিবেন না। রাজন্! আমি এই প্রকার কহিলে, তিনিও বলিলেন, যদি তোমাকে আত্মদান করিতে পারি, তাহাহইলে, আর শাপ দিব না। আমি কহিলাম, আমি মৃগী নহি। আপনি মৃগরূপ ধারণ করিয়া, অরণ্যমধ্যে অন্ত মৃগী লাভ করিতে পারিবেন। অতএব আমাতে অনুরাগবদ্ধ ইইবেন না।

` এই কথা কৃথিলে, রোগভরে তাঁহার লোচন্যুগল অরণভাতি ধারণ করিল। তথন প্রক্তি অধরে আমারে কৃথিলেন, তুমি বলিলে, আমি মূগী নহি। অতএব মূঢ়ে! তুমি মূগীই হইবে। তথন আমি অতিমাতা ব্যথিতা হইয়া, তাঁহাকে প্রণাম করিলে, তিনি যদিও অতিমাত্ত কৃষ

তথন আমি অতিমাত্র বাথিতা হইয়া, তাঁহাকে প্রণাম করিলে, তিনি যদিও অতিমাত্ত জ্ব হইয়াছিলেন; কিন্তু তৎক্ষণে স্বরূপ ধারণ করিলেন। আমি বারম্বার বলিতে লাগিলাম, প্রসদ্ধান। আমি বারম্বার বলিতে লাগিলাম, প্রসদ্ধান। আমি বালিকা; কি বলিলে, কি হয়, তাহা জানি না। সেইজন্তই এইরূপ কৃথিয়াছি। পিতা না থাকিলেই, স্ত্রীজাতি স্বয়ং পতিংবরা হইয়া থাকে। কিন্তু মুনিসত্তম! পিতা স্বম্বে আমি কিরুপে স্বয়ং পতিবরণ করিব ? অথবা, আমি অপরাধিনী হইয়াছি। সেইজন্ত পদ্মুগলে প্রণাম করিতেছি; প্রসাম হউন। প্রসাম ও জােধ উভয় বিষয়েই আপনার অসীম ক্ষমতা আছে। আমি পুনরায় প্রণাম করিতেছি। অতএব, প্রসাম হউন, প্রসাম হউন।

এইরপে বারধার কা চরোজি করিলে, সেই ম্নিপুঙ্গব আমারে কহিলেন, আমি বে কথা বলিয়াছি, তাংগ কলাচ অন্তথা হইবে না। তোমাকে মরণান্তর অন্ত জন্ম এই বনে মৃগী হইতে হইবে। ভাবিনি! মহধি সিদ্ধবীর্য্যের পুত্র মহাবাহু লোল সেই মৃগী অবস্থায় তোমার গর্ভে জন্মগ্রহণ করেবেন। তুমি জাতিমরা হইবে। অতএব গর্ভ উপস্থিত হইলে, তুমি স্থাভিলাল করিয়া, মানুষের ন্তায় কথা কহিতে পারিবে। অনন্তর লোল জনিলে, পতি কর্তৃক অর্কিটিয়ার, মুগীধোনি পরিহার করিবে এবং ছন্ধতকারী পুরুষগণের অপ্রাপ্য লোকসকল প্রাপ্ত হইবে। মহাবীব্য লোলও পিতার শক্ষণিগকে বিনাশ ও সমগ্র মেদিনী জয় করিয়া, পরে ময়ু হইবেন।

এইরণে আমি অভিশপ্তা হইয়া, মরণান্তর এই মৃগীথোনি লাভ করিয়াছি। আপনার সংস্পর্শে আমার ক্ষঠরে গর্ভও সভ্ত হইয়াছে। এইজ্ঞাই বলিতেছি, আপনার মন অস্থানে সঙ্গত হয় নাই এবং আমিও আপনার অগ্যান্ছি। কিন্তু এই গর্ভস্থ লোল আমার বিশ্ব ক্রিডেছে।

মার্কণ্ডের কৃথিলেন, এই প্রকার কৃথিত হইলে, দেই রাজা নির্তিশ্র আহলাদিত হইরা চিন্তা ক্রিলেন, আমার পুত্র শত্রু সকল জয় ক্রিয়া পৃথিবীতে মহু হইবেন। অনন্তর মূগী দেই সর্ক অ্লক্ষণসম্পন্ন পুত্র প্রস্থাব ক্রিল। পুত্র ভূমিষ্ঠ হইলে, সর্কভূত হর্ষাবিষ্ট হইল। বিশেষতঃ, সেই মহাবল পুত্র জন্মগ্রহণ ক্রিলে, রাজা অতিমাত্র আনন্দ অন্তত্ব ক্রিলেন। তা সমরে মূগী শাপমুকা হইরা, অম্বন গোক সকল প্রাপ্তা হইল। অনন্তর শ্বিগণ সকলে সমবেছ হইরা, সেই সহাত্তব প্রের তাবিনী সমৃদ্ধি পর্যাবলোকন করিয়া, এইরূপ নাম রাধিলেন, ইনি তামসী বোনিতে পতিতা মাতার গর্ছে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। বর্তমানে লোক সকলও তামসপ্রাকৃতি হইয়া উঠিয়াছে। এইজন্ম ইহার নাম তামস হইবে। মুনিসন্তন! অনন্তর পেই তামস পিতা কর্তৃক বনমধ্যে সংবর্ধিত হইয়া, বৃদ্ধির উদয় হইলে, তাঁগাকে কহিলেন আপানি কে ? আমিই বা কে ? কিরপেই বা আপনার পুর হইলাম ? আমার মাতাই বা কে ? কিরল্পই বা আপনি আগমন করিয়াছেন ? এই সমুদার সত্য করিয়া আমাকে বলুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন মহাবার জগতীপতি পিতা, পুজের নিকট আপনার রাজাচ্যুতি প্রস্তি যাবতীয় ঘটনা আফুপ্রিক কীর্ত্তন করিলেন। সম্পায় শুনিয়া তিনি ভগবান্ ভাল্পরের আরাধনা করিয়া, সংহারদমেত যাবতীয় দিবা অন্ত প্রাপু ইইলেন। অনস্তর কৃত্তার হইয়া, আরাতিদিগকে জয় ও পিতার অভিকে আনমন করিয়া, তদীয় অফুজাফ্দারে পুনরায় সকলকেই ছার্ডিয়া দিলেন। এ দিকে, তদীয় পিতা পুত্রম্থত্থ দর্শন করিয়া, কলেবরপরিহারপুর:সর তপতা ও যজ্বেয়ে অভিক্ত স্বকীয় লোক সমস্ত প্রাপ্ত ইইলেন। নরপতি তামস সমস্ত পৃথিবী জয় করিয়া, তামসনামা ময়্ ইইলেন। তাঁহার অস্তর শ্রবণ কর। সেই ময়স্তরে দেবগণ, রাজগণ, ঋষিগণ, ইন্দ্র এবং সেই ময়্বর যে সকল পুত্র পৃথিবীপাল ইইয়াতিলেন, তাঁহাদের সকলেরও কথা বিশিব। এই ময়স্তরে সত্য, স্থাণী ও হরি প্রস্তিত নামক সপ্রবিংশতি দেবগণ প্রাহৃত্ত হন। মহাবল, মহাবীর্গ্য, শত্যজ্ঞের আহির লিশি এ সকল দেবগণের ইন্দ্র ইইয়াছিলেন। আর, জ্যোতিধামা, পৃথু, কাব্য, চৈত্র, অগ্রি বলক পীবর এই সাতজন সপ্রবিপদ অবিকার করেন। নর, ক্যান্তি, শাস্ত, দাস্ত, জাহ্য, জাহ্য ইইয়াছিলেন।

ইতি তামদম্মন্তর নাম চতুঃদপ্ততিতম অধ্যায়।

### ্পঞ্সপ্ততিত্ম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ব্রহ্মন্ ! পঞ্চম মহু রৈবতনামে বিখ্যাত । তাঁহার উংপত্তি বিভার জনে বলিতেছি, শ্রবণ কর ।

ঋতবাক্ নামে বিখ্যাত মহাভাগ ঋষি ছিলেন। তাঁহার পুত্র হয় নাই। পরে রেবতীনক্ষত্রের অস্তে এক পুত্র হইল। তিনি দেই পুত্রের বিধিবৎ জাতক্র্যাদিক ক্রিয়া এবং উপনর্নাদিও ফ্রাক্রমে সম্পাদন করিলেন। পুত্র অসচরিত্র হইলা উঠিল। এদিকে দে জনিয়া অবধি, ঋষি দীর্ঘরাগ প্রাপ্ত হইলেন। তাঁহার পঞ্জীও প্রস্ব করিয়া অবধি কুঠরোলাদি পীরিতা হইয়া, পরব আর্ত্তি জোগ করিতে লাগিলেন। তখন ঋষি ছংখিত হইয়া, চিয়া করিতে লাগিলেন, এ কি হইল। ঐ সময়ে তাঁহার দেই অত্যন্তর্মতি পুত্র অপর মুনিপুত্রের প্রিয়ত্র্যা হার্যাকে পরিগ্রহ করিল। তদ্দল্লে ঋতবাক্ বিষয়না হইয়া, বিতিত লাগিলেন, পুত্র না হওয়া ময়্বারের বরং ভাল; কুপুত্র হওয়া নিতান্ত অমঙ্গলের কারণ। যেহেতু, কুপুত্র সর্পনা পিতা ও মাতা উভয়ের আয়াদ দম্বপাদন করে এবং স্বর্গতিত স্বকীয় পিতৃপ্র্যধিপকে অধ্পাতিত করিয়া থাকে। ভাহার দারা স্ক্র্পণধের উপকার হয় না; পিতৃগণেরও তৃপ্তি জলেম না এবং পিতা মাতার নিরবিভিন্ন তৃংথ উৎপন হয়; স্ক্রমাং, তাদৃশ হয়্বতক্র্যা পুত্রের কলেম বিক্! ভাহারাই খন্ত, যাহাদের পুত্রগণ সকল লোকেরই নিরতিশ্য সম্মানভাজন এবং সর্বণ শান্তির অন্সরব-প্রকি পরের উপকার ও নিয়মাম্বার সাধুক্রের অনুষ্ঠান করে। কুপুত্রের সংস্বর্শত আমা-

ংলর জন্ম বেমন সর্কাধা পাঞ্চ ও শান্তিলেশপরিশৃক্ত, সেইরূপ পরলোকপরাছুর্থ বলিরা, নরকের হেতৃ; কোনমতেই সদগতির নিমিত্ত নহে। কুপুত্ত স্কুলপণের দৈল্প, বিপক্ষণণের হর্ষ ও পিতা মাতার অকাশ জরা উপতাপিত করে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই রপে মহর্ষি শতবাক্ অত্যন্ত গ্রন্থতাব পুত্রের চরিত্রে দহ্মানচিত্ত হইরা, গর্গকে জিজাদা করিলেন, আমি ফাবিধানে ব্রত্বিধানপূর্বক বেদ সকল গ্রহণ ও বথাবিধি তৎসমন্ত সমাপন করিরা, দারপরিগ্রহ করিয়াছি। অনন্তর সপত্নীক হইরা, শ্রোত, আর্ত্ত বরট্ ক্রিয়া প্রভৃতি কর্ত্তরা ক্রিয়া সকল সম্পাদন করিয়াছি। অরি মহামুনে । এ পর্যান্ত আমি কোন ক্রিয়াই অঙ্গতীন করিরা, সম্পন্ন করি নাই। বলিতেকি, আমি পুনামনরকভরে আক্রান্ত হইরা, গর্জাধানবিধিক্রমে এই প্রের জন্মদান করিয়াহি; কামপ্রবৃত্তি চরিতার্থ করিবার ভত্ত নহে। অত্রব্র বই প্রে আপনার দোধে, কি, আমার দোধে ছংশীল হইরা, আমাদের ছংখ সমুদ্ধাবন ও বরুগণের শোক সংখ্টন পূর্কক জন্ম গ্রহণ করিল ?

গর্গ কহিলেন, ম্নিশ্রেষ্ঠ 1. তোমার এই পুত্র রেব তীর অন্তে জনিয়াছে। যেহেতু, ঐরপ দ্বিত সমরে জন্ম হইরাছে, সেইংহ্রু, তোমার জ:থের নিনিত্তীভূত হইরাছে। নতুবা, তোমার বা ইহার অথবা ইহার জননীর, কিথা তোমার বংশের কোনপ্রকার অপচার নাই। একমাত্র রেবতীর অন্তেদশাই ইহার জ:শীলভার হেতুরূপে প্রাত্তুতি হইরাছে।

ঋতবাক্ কহিলেন, বেহেতু, আমার একনাত্র পুত্র রেবতীর অন্তদশাগুনিত তু:শীলতাদোষে আক্রান্ত হইয়াছে, নেইহেতু, রেবতীর আশু পতন হউক।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তিনি এই প্রকার শাপ প্রদান করিলে, রেবতীনক্ষত্র পতিত হইল।
সকল লোক বিশ্বয়াবিষ্ট ভিত্তে এই ব্যাপার দেখিতে লাগিল। কুমুদপর্কতের সমস্তাৎ রেবতীনক্ষত্র
সহলা পতিত হইয়া, সমুদায় বন, কন্দর ও নির্বর উন্তামিত করিয়া তুলিল। তদীয় পতনপ্রথক্ত তদবি কুমুদপর্কতের নাম রৈবতক হইল। তরিবন্ধন, এই ভূধর সমুদায় পৃথিবীর মধ্যে
অতীব রমণীয়। সেই নক্ষত্রের যে কান্তি পৃষ্কজিনীরূপে প্রায়ভূতি হইল, তাহা হইতে অতীব
স্থান্তন-রূপশালিনী এক কন্তা জন্মগ্রহণ করিল। অয়ি ভাগুরে! মহর্ষি প্রমোচ রেবতীর কান্তিসন্ত্রা দেই কন্তাকে দর্শন করিয়া, তাঁহার নাম রেবতী রাধিলেন। ঐ কন্তা তাঁহার আন্ত্রমের সারিধ্যে জন্মিয়াভিল। মহাভাগ প্রমোচ তাহাকে সেই মহাচলেই পোষণ করিতে লাগিলেন। ঐ কন্তা যৌবনসীমায় প্রদার্শন করিয়া, সমধিক রূপবতী হইলে, ঋষি দর্শন করিয়া,
ভাবিতে লাগিলেন, না জানি, কোন্ ব্যক্তি ইহার ভর্তা হইবেন। এইরূপ চিন্তাপ্রসঙ্গে তাঁহার
বৃহকাল অতীত হইয়া গেল। তথাপি, সেই মহামুনি কন্তার সদৃশ বর লাভ করিতে পারিলেন না।
অনস্তর তিনি অমিশালায় প্রবেশ করিয়া, এ বিষয় জানিতে ইচ্ছুক হইলে, স্বয়ং ভ্তাশন তাহারে
ক্রিণেন, তুর্গম নামে মহাবল, মহাবীর্য্য, প্রিয়ভাষী, ধর্মবিৎদল মহীপতি ইহার ভর্তা হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর সেই নরপতি ধীমান্ ছর্গম মৃগরাপ্রসঙ্গে তাদীর আশ্রমণদে আগমন করিলেন। তিনি প্রিরত্তর বংশোদ্ভব ও মহাবদ পরাক্রান্ত এবং রাজা বিক্রমশীনের শুরুকে কালিন্দীর জঠরে জন্মগ্রহণ করিরাছেন। সেই জগতীপতি আশ্রমপদে প্রবেশ করিরা, ধারিকে দেখিতে না পাইরা, সেই তম্বদীকে প্রিয়ামস্তাহণে জিল্ঞাসা করিলেন, ভগবান্ ম্নিপুন্ধ এই আশ্রম হইতে কোণার গমন করিরাছেন? আমি তাঁহাকে প্রণাম করিতে ইছে। করি। অতএব শোভনে! তিনি কোণার বল ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, ঋষি তথন অধিশাশার ছিলেন। রাজার কথা ও প্রিরাসভাষণ প্রবিদ করিরা, সত্থার বাহির হইরা আদিলেন এবং সত্মুখেই নরেক্তলক্ষণলক্ষিত মহাত্মা হুর্গমকে অব-লোকন করিলেন। তিনি বিনয়ভারে অবনত হইলেন। তাঁহাকে দর্শন করিরা, ঋষি আপেনার শিষ্য গৌতমকৈ কহিলেন, গৌতম! তুমি শীল্প এই রাজার জক্ত অর্থ্য আনরন কর। একেইত এই রাজা বছকালের পর জাদিরাছেন। বিশেবে, আবার জামাতা। অতএব আমার মতে অর্থাদানের যোগ্যপাতা।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন রাজা ভাবিতে লাগিলেন, কিজন্ত আমাকে জামাতা বলা হইল। ভাবিরা কিছুই অবধারণ করিতে না পারিরা, অগত্যা মৌনী হইরা, অর্থ্য গ্রহণ করিলেন। তিনি অর্থ্যগ্রহণান্তর আসন পরিগ্রহ করিলে, মহানুনি তাঁহাকে স্বাসভ্বাদসহকারে জিজাসা করিতে লাগিলেন, আপনার গৃহে কুশণ ? অয়ি নরেখর! আপনার কোর, বল, মিত্র, ভৃত্য ও রমাত্য সকলেরও মঙ্গণ? মহাবাহো! যাহাতে এই সকণ প্রতিষ্ঠিত আছে, তোমার সেই লাক্ষাও কুশলে আছে? তোমার এই পত্নী সর্কান কুশগভোগ করিতেছেন। মেহেত্, ভূমি ইহাঁরে প্রিরদ্ভাষণানি দারা সম্বিক আপ্যারিত করিলে। সেইহেত্ আমি ইহাঁর কুশণ জিজাগা আরু কি করিব ? ভবে ভোমার অত্যান্ত পত্নীগণের কুশণ জিজাগা করিতেছি।

রাঞ্জা কহিলেন, ভগবন্! আপনার প্রবাদে আমার কোন বিষয়েই অকুশল নাই। একণে আমার কৌতৃহল জামিয়াছে, এই বনে আমার পত্নী কে ?

ঋষি কৃহিলেন, যিনি ত্রিভূবনের মধ্যে স্থলরী, সেই প্রমন্মহাভাগা বরারোহা রেবতী আপনার ভার্যা। আপনি কি তাঁহাকে জানেন না ?

রাজা কহিলেন, স্বভজা, শাস্ততনয়া, কাবেরীতনয়া, স্বরাইজা, স্ফাতা, কদখা, বর্মধান বিপাঠা ও নশিনী, ইহাঁরাই আমার ভার্যা, গৃহে আছেন, জানি। তিঙিয়, রেবতীকে জানি না। ইনি কে ?

ঋষি কহিলেন, ভূপাল। আপনি যে বরবর্ণিনীকে প্রিয়া বলিয়া এইমাত্র সংবাধন করিলেন, তিনিই আপনার শ্লাঘ্যা গৃহিণী। আপনি কি ভূলিয়া গেলেন ?

রাজা কহিলেন, মুনে ! আপনি সতা বলিয়াছেন। কিন্তু আমার কোনরূপ ছুই ভাব নাই। অত এব প্রার্থনা করিতেতি, আমার প্রতি আপনি রুই হুইবেন না।

শ্বি কহিলেন, মহারাজ ! সভাই বলিভেছেন, আপনার কোনরূপ হট ভাব নাই। আপনি অগ্নির প্রেরণাবশ্বদ হইয়াই, এইরূপ বাক্য প্রয়োগ করিয়াছেন। রাজন্! আনি অগ্নিকে জিল্লানা করিয়াছিলান, কোন্ব্যক্তি ইহার ভঠা হইবেন। তিনি কহিলেন, আপনিই অন্য ইহার ভঠা হইবেন। অভএব আনি আপনাকে ক্যালান করিলান; আপনি গ্রহণ ক্রন। দেখুন, আপনিও ইহাকে প্রিয়া বলিয়া আন্মল্ল করিয়াছেন। অভএব কিজ্য় আর বিচার করিতেছেন ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, তিনি এইরপ কহিলে, রাজা মৌনী হইরা রহিলেন। তথন ঋবি সেই কন্যার বৈবাহিক বিধি সমাধানার্থ উদাত হইলেন। মহানুনে! পিতা বিবাহ দিবার জন্ম উদাত হইলে, সেই কন্যা প্রস্রাবনত ববনে তাঁহাকে যংকিঞ্ছিৎ কহিলেন, তাত! আপনি যদি আনার প্রতি প্রীতিমান হইরা থাকেন, তাহাহইলে, প্রদর্গ হউন। প্রদর্গ হইরা, বেবতীনক্ষত্তে আনার বিবাহ দিন।

পাব কহিলেন, ভদে ! চদ্রের সহিত একবোগে অবস্থিত সেই রেবতীনক্ষত্তের পতন হইরাছে।
শবি কহিলেন, ভদে ! চদ্রের সহাত্ত অনেক নক্ষত্র আছে।
শবি স্থক্ত ! তোমার বিবাহের অভাত্ত অনেক নক্ষত্র আছে।

কঞা কহিলেন, তাত! সেই নক্ষত্র বাতিরেকে কাল বিফল বণিয়া, আমার প্রতিভাত হই-তেছে। বিফল কালে মাদৃশী কঞার বিবাহ কিরূপে হইতে পারে ?

খৰি কহিলেন, ঋতবাক্ নামে বিখাত তপৰী রেবতীর প্রতি জাতকোধ হইরাছিলেন।
খৰি কহিলেন, ঋতবাক্ নামে বিখাত তপৰী রেবতীর প্রতি জাতকোধ হইরাছিলেন।
করিরাছি, এই মনিরেকণা আপনার ভাগ্যা। জতএব তুমি বদি বিবাহে সমত কর, তাহাহইলে,
শ্বিরাছি, এই মনিরেকণা আপনার ভাগ্যা।

কলা কহি:লন, তাত ৷ দেই ঋৰি ঋতবাক্ কি এইরূপ তপন্থা করিরাছেন ? আমার পিতা আপুনি কি দেরপ তপন্থা করেন নাই ? তবে কি আমি অধম আন্ধণের কলা ?

ঋবি কহিলেন, বালে ! তুর্মি বিশ্ববন্ধুর কন্তানহ এবং সামান্ত তপস্থিরও পুঞ্জীনহ। তুমি আমার কন্তা; যে ফানি মন্ত দেবগণের স্থাই করিতে ক্ষমবান্।

ক্সা কহিলেন, যদি আমার পিতা বাস্তবিকই তপধী হন, তাহাহইলে, কিছ্নস্ত রেবতীকে পুনরায় অস্তবিক্ষে সমারোহিত করিয়া, সেই নঞ্জে আমার বিবাহ দিতেছেন না ?

ঋষি কহিলেন, ভদ্রে ! তাহাই হইবে। তোমার কল্যাণ হউক। ওমি প্রীতিমতী হও। আমি তোমার জন্ম রেবতীকে পুনরায় চন্দ্রমার্থে আ'.রাপিত করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিভোৱম! অনস্তর মহর্ষি প্রমোচ রেবতী নক্ষতকে তপঃপ্রভাবে পুনরার পূর্বের আর, চল্লের সহিত সংযোজিত করিলেন। পরে বিধানাস্থারে মন্ত্রেরারপ্রাসর ছহিতার বিবাহ সমাহিত করিয়া, প্রীতিমান্ হইয়া, পুনরার জামা তাকে কহিলেন, ভূপাল! আমি তোমাকে কিরপ যৌতুক দিব, বল। আমার তপভা কোনরপে প্রতিহত হয় না। অতএব ছর্শভ হইলেও, ভোমাকে দান করিব।

রাজা কহিলেন, মুনে । আমি স্বায়স্ত্র মন্ত্র বংশে উৎপন্ন হইয়াছি। সেইজন্ত, স্থাপনার প্রদাদাৎ আমি এরপ পুত্র প্রার্থনা করি, সে যেন মন্ত্রয়।

ঋষি কহিলেন, তোমার এই কামনা পূর্ণ হইবে। রাজন্! তোমার পুত্র মন্থ হইরা, সমগ্র মেদিনী ভোগ করিবে এবং ধর্মজ হইবে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তথন রাজা রেব তীকে লইয়া, স্বকীয় পুরে প্রস্থান করিলেন। সেই রেবতীর গর্ভে তাঁহার পুত্র উৎপন্ন হইল। সেই পুত্রই রৈবত মন্থ হইয়াছিলেন। বৈবত মন্থ বেমন যাবতীয় মানবধর্মে অলক্ষ্রত ও সকলের অপরাজিত, সেইকপ বেদবিদাা ও অর্থশাল্প এবং যাবতীয় শাল্পার্থ পরিজ্ঞাত ভিলেন। ত্রহ্মন্। ভদীয় মল্পত্রের যে যে দেবতা, ঋষি ও রাজা এবং ইক্স প্রাচ্ছত্ত হইয়াভিলেন, বলিতেতি, সমাহিত হইয়া, শ্রবণ কর। দিক ! এই মল্পত্রের স্থানান নামক দেবগণ এবং বৈকুঠ ও অমি শালনামে নরপতিগণ আবিভ্তি হন। ইহারা প্রভাকেই চতুর্দণ গণে বিভক্ত। তন্মধ্যে, বিভু উলিখিত দেবগণচ চুইবের অধিপতি ইক্স ইইয়াভিলেন। তিনি একশত যজানুছান করেন। হিরণারোমা, বেদশী, উর্মাত, বেদবাহ, স্থামা, পর্জন্ত এবং বেদ-বেদান্তপারগ মহাভাগ বশিষ্ঠ ইইারা রৈবতমন্ত্রেরের স্থামি। আর, বলবন্ধ, মহাবীধ্য, স্থেইবা ও সভ্যকাদ্য অন্যান্ত মহান্না নৈব হমন্বর পুত্র। আমি তোনাব নিকট আদি হইতে বৈবত পর্যান্ত বেদ্ধক্র কথা বলিলান, ইহারা সকলেই স্বায়ন্ত্র নামে বিখ্যাত। কেবল স্থারোচিষ মন্থ নহেন।

ইতি রৈবতমন্বস্থর নাম পঞ্চপ্রতিত্য অধ্যায়।

# ষট্দপ্ততিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কৃহিলেন, এই আনি তোমার নিকট পঞ্ মন্তর কীর্ত্তন করিলাম। অধুনা চাকুৰনামক বঠ মন্ত্রের শ্রবণ কর। অভ জন্মে প্রণেটার চকু হইতে ইহাঁর জন্ম হয়। সেইজভ বর্তমান
জন্মেও তাঁহার চাকুৰ নাম হইরাছিল। মহাত্মা রাজবি অনমিত্রের ভাব্যা ভলা এক পুত্র প্রসব
করেন। এ পুত্র অভিশন্ন বিধান, গুচি, জাভিম্মর ও বিভাবসপ্পন্ন। ভিনি জানিলে, জাননী
তাঁহাকে নিজ উৎসঙ্গে ভাপন করিয়া, উল্লাপনসহকারে আলিঙ্গন ও পুন্রায় প্রম্প্রীতিভরে
উল্লাপন ক্রিভে লাগিলেন। তিনি জাভিম্মর হইরা জন্মগ্রহণ করিয়াভ্লেন; স্থভরাং, মাভার

ক্রোড়ে থাকিয়া, এই বাাপার অবশোকন করিরা, হাত করিতে লাগিলেন। তদর্শনে অননী অতিমাত্র জাতকোধা হইরা, কহিলেন, বৎস! আমি ভীতা হইরাছি। যেহেতু, তোমার বদনে হাতের উদ্রেক হইরাছে। এ কি! অকালে তোমার বোধোদী ইইরাছে! তুমি কি কোনরূপ শোতন ঘটনা অবলোকন করিতেছ?

পুত্র কহিলেন, আপনি কি দেখিতেছেন না, সন্থা এ বিজালী আমাকে ভক্ষণ করিতে অভিলাধিণী হইয়াছে। আর ঐ বিভায়া জাতহারিণীও অন্তহিতা হইয়া রহিয়াছে। এ দিকে, আপনি পুত্র-প্রীতির বশ্বর্তিনী ও নিরতিশয় অহুরাগিণী হইয়া, আমারে দর্শন করত বারম্বার বছবিধ উল্লাপনসহকারে আলিক্ষন করিতেছেন। তজ্জন্ত আপনার পুলক সঞ্চারিত এবং মেহসম্ভূত অঞ্চানিলে লোচন-মুগল কর্বিত হইয়া উঠিয়াছে। সেইজন্তই আনি হাল্য করিয়াছিলাম। ইহার কারণ প্রশ্বণ ক্ষন।

এই বিড়াগী ধেমন স্বার্থগাধন-তৎপরা হইয়া, প্রসক্ত নয়নে আমারে দর্শন করিতেছে, বিতীয়া লাতহারিণীও ভ্রুপ অস্তর্জানগতা হইয়া, আমারে দেখিতেছে। ইহারা উভয়ে ধেমন একমার স্বার্থের জন্মই আমার উপরি নিয়হ্লয়া হইয়াছে, দেইরূপ আপনিও একমার স্বার্থের বশবন্তিনী হইয়া, আমাকে এইরূপ শাণিঙ্গনাদি করিতেছেন। ইহাই আমার স্পষ্ট প্রতীত হইয়াছে। তবে বিশেষ এই, এই মার্জারী ও জাতহারিণী উভয়ে আমারে এখনই উপভোগ করিবার জন্ম উপভোগ হইয়াছে; কিন্তু আপনি ক্রমে ক্রমে উপভোগযোগ্য ফল কামনা করিতেছেন। দেখুন, আমি কে, আপনি তাহা জানেন না। আবার, আমি আপনার কোন উপকারই করি নাই। এ দিকে, আবার আপনার সহিত আমার অধিক দিনেরও সহবাদাদি হয় নাই। পাঁর্চ সাত দিন মাত্র প্রস্পারের সংসর্গ ঘটিয়াছে। তথাপি, আপনি স্নেহের বশব্তিনী হইয়া, সাঞ্চলোচনে অকণ্ট হলয়ে আমারে তাত। বৎস! ভজ! ইত্যাদি বাক্যে সম্বোধনপূর্বক গাঢ়তর আনিঙ্গন করিতেছেন গ এইজন্ত আনি হাসিয়াছি।

মাতা কহিলেন, বংদ! আমি উপকারপ্রত্যাশায় তোমাকে আলিখন করি নাই; নৈদর্গিক প্রীতির বশবর্ত্তিনী হইয়াই এই রূপ করিয়াছি। তথাপি, তোমার যদি ইহাতে প্রীতি সঞ্চারিত না হয় এবং তজ্জ্য আমি যদি তোমার পরিতাক্তা হই তাহাহইলে, তোমা ইইতে ভবিষ্যতে আমার বে স্বার্থনাভ্যস্তাবিনা, আমিও তাহা ত্যাগ করিলাম।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই বণিয়া, তিনি তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া, হিতকাগৃহ হইতে বহির্গ্ছা হইলেন। যদিও তাঁহার অঙ্গ ও ইন্দ্রির সমস্ত তৎকালে স্বস্থ-কার্য্য-সাধন-শক্তি প্রাপ্ত হয় নাই; কিন্তু তাঁহার অন্ত:করণ ও আত্মার কষার দ্রাভূত হইয়াছিল। জননী পরিত্যাগ করিবানার, জাতহারিণী তথনি তাঁহাকে হরণ করিল। হরণ করিয়া, মহারাজ বিক্রান্তের মহিনী যাহাতে শ্রন করিয়াছিলেন, তাহাতে তাঁহাকে হাপন করিয়া, সেই রাজার তৎকালদন্ত পুত্তকে গ্রহণ করিল। তাহাকেও আবার অভ্য গৃহে লইয়া গিয়া, এইকপে স্থাপনপূর্ব্বক তাহার পুত্রকে গ্রহণ ও ভক্ষণ করিল। দেই জাতহারিণী ক্রমে ক্রমে তৃতীয় শিশুকে এইরপে ভক্ষণ করিতে শাগিল। সে অভিমাত্র স্বণাশ্স্তা। একটার পর আবার একটা শিশুকে হরণ করিয়া, তৃতীয়টীর বেশা ভক্ষণ করিয়া থাকে এবং অন্থানিন পরম্পারের পরিবর্ত্তন করে।

যাহা হউক, রাজা বিক্রান্ত পরম আহলাদিত হইয়া, সেই পুত্রের ক্ষরিয়োচিত সংঝার সমা-হিত এবং বিধানামূলারে তাঁহার নামকরণ করিলেন। তাহাতে তাঁহার নাম আনল হইগ। অনন্তর কুমারের উপনরনগংখার সম্পন্ন হইলে, শুক তাঁহাকে কহিলেন, প্রথমে অননীর বন্ধনা ও অভিবাদন কর। তথন কুমার শুকুর কথা শুনিয়া, হাস্ত করিয়া কহিলেন, আমি জননী অথবা পালনী, কোন মাতার বন্ধনা করিব ?

শুক কহিলেন, মহাভাগ ! ভোমার এই ফারথনন্দিনী জননীর বন্দনা কর। বিনি রাজা বিক্রান্তের প্রধানা মহিনী ও বাহার নাম হৈমিনী। আনল কহিলেন, বিনি বিশালগ্রামনিবাসী ও বোধের পুত্র, সেই চৈত্র ইহার গর্ভে জানি রাছেন। আমি নহি; ইনি সেই চৈত্রেরই জননী।

শুন কহিলেন, অরি আনন্দ শুনুনি কোথা হইতে আনিয়াত? চৈত্রই বা কে, বাঁহার কথা ছুমি বলিলে? তুমি কোথায় অন্মিয়াই? এখানেই বা কেন ? কি বলিতেছ? আমার মহাসংকট বিনিয়া বোধ হইতেছে। আনন্দ কহিলেন, আমি অবনীপতি ক্ষিয়ের গৃহে তদীয় পত্নী গিরিভিত্তার গর্ভে জন্মগ্রহণ করিয়াছি। জাতহারিনী আমারে গ্রহণ করিয়া, এখানে ছাড়িয়া দিরাছে এবং হৈমিনীর পুত্রকে গ্রহণ করিয়া, বিজ্প্রধান বোধের গৃহে লইয়া গিয়াছে এবং তাঁহার পুত্রকে ভক্ষণ করিয়াছে। হৈমিনীর পুত্র দেই প্রাক্ষণের গৃহে অজাতিবিহিত সংস্কারে সংস্কৃত হইয়াছেন। আরু, মহাভাগ। শুকু আপনি এখানে আমার সংস্কার সমাধান করিয়াছেন। আপনার আদিশ পাশন করা আমার অবশ্য কর্ত্তবা। অত্যব কোন্ মাতার বন্দনা করি, বনুন।

গুরু করিলেন, বংব! মহাদংকটই উপস্থিত। কি করিব, ভাবিয়া কিছুই স্থির করিতে পারিতেতি না। মোহের আবির্ভাববশে বৃত্তি যেন ঘৃণার্মানা হইতেছে। তজ্জয় আমার কিছুই জ্ঞানগ্য হইতেছে না।

আনশ কহিলেন, সংসার শুদ্ধই এইরূপ। অতএব মোহের অবদর কোণার ? দেখুন, কেহ কাহার পুত্র বা কেহ কাহার বা কেন নহে। জন্ম গ্রহণ করিয়া অবধি লোকের যে পরশ্বর সম্বন্ধ সম্বন্ধ সংঘটিত হয়, মৃত্যু সেই সম্বন্ধ বিনাশ করিয়া গাকে। এইরূপে একদিকে যেমন সম্বন্ধ ঘটিতেছে, অভ্যাদিকে সেইরূপ বিনাই হইতেছে। ফলডঃ, জন্মগ্রহণ করিলে, বান্ধবগণের সহিত্য যে সম্বন্ধন হয়, দেহের অবশানেই তাহার অবশান হয়। ইহাই বিখের নিয়ম। এই কারণেই বলিভেছি, সংগারে কেহ কাহার ও বান্ধব নহে। আবার, কেইবা কাহার সতত বন্ধু হইরা গাকে? তবে কেন আপনার মতিবিভ্রম সংঘটিত হইতেছে? আমি এই জন্মেই তুই পিতা ও তুই মাতা প্রাপ্ত হইরাছি। অন্ত জন্ম যদি আবার এইরূপ মটে, তাহাতেই বা বিচিত্রতা কি ? আমি এখন তপস্থা করিব। অত্যব এই রাজার যিনি পুত্র, আপনি ভাঁহাকে বিশালগ্রাম হইতে এখানে আন্যন কঞ্ন।

মার্কণ্ডেম কহিলেন, এই সমস্ত শ্রেবণ করিয়া, রাজা ভার্যাও বন্ধুগণের সহিত বিশ্বরাবিষ্টি হইলেন এবং ভাঁহা হইতে সমতার প্রাত্যাহার করিয়া, তাঁহাকে বনগমনে অনুমতি প্রদান করিবেন। অনস্তম তৈ ক্রাজ্যোগ্য করিয়া, যে ব্রাহ্মণ পুত্রবৃদ্ধির বশ্বব্রী হইয়া, তাঁহাকে পালন করিয়াভিলেন, সেই ব্রাহ্মণের সন্মাননা রক্ষা করিলেন। এদিকে আনন্দ বালক অবস্থাতেই মহাবনে তপশ্চরণে প্রবৃত্ত হইয়া, মুক্তির প্রধান অন্তরায় সকলের ক্ষয় করিতে লাগিকোন। তিনি তপভা করিতে আরস্ত করিলে, ভগবান্ প্রজাপতি তাঁহাকে কহিলেন, বংশ! তুমি কিজান্ত তীব্র তপভায় প্রবৃত্ত হইয়াছ, নির্দেশ কর।

তিনি কহিলেন, ভগবন্। আমি মুক্তির অন্তরায়সরপ কর্ম সকলের ক্ষয় সাধন ও তৎসহকারে আয়ু ছবি বিধান করিবার অভিলাধে তপভা করিতেতি।

ব্রদা কহিলেন, কর্মবান্ বাজির অধিকার নাই। স্তরাং দে মুক্তিলাভের যোগ্য হইতে পারে না। তবে, ত্মি সন্ধাধিকারবান্ হইয়া, কিরপে মুক্তিলাভ করিবে ? ভৌগাকে ষঠ মন্থ হইতে হইবে। অতএব গমন করিয়া, তাহাই কর। ভোমার তপভার প্রয়োজন নাই। মন্থ্য ক্রিণেই, ভোমার মুক্তিলাভ হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, একা এইপ্রকার কহিলে, দেই মহামতি আনন্দ তপশ্চরণে বিরত ও মহুর কার্য্য করিতে অভিমত হইরা, প্রস্থান করিলেন। একা উাহাকে তপস্তা হইতে বিনিবর্তিত করিরা, চাকুষ বিনিয়া সংখাধন করিলেন। তাহাতেই তিনি পূর্বনামে চাকুষ মন্ত্র বিলিয়া প্রখাত হৈলেন। রাজা উপ্রের পূক্রী বিদর্ভার সহিত তাঁহার বিবাহ হইল। তাঁহার গর্ভে তিনি প্রখাত বিক্রম পূক্রপরশেরার জন্মনান করিলেন। বিজ । কীহার মহন্তরে বাহারা দেবতা ও ঋরি, বিনি

ইক্স এবং বে সকল তাঁহার পুত্র উৎপন্ন হইরাভিল, তাঁহাদের বৃত্তান্ত শ্রবণ কর। সেই মন্বন্ধরে আর্থানামক দেবগণের আবিভাব হয়। তাঁহারা নম গণে বিদ্ধান্ত। তাঁহারা সকলেই প্রখ্যাত-কর্মা; সকলেই প্রখ্যাত-বলবীর্থ্যসম্পন্ন; সকলেই যজে হব্য ভৌজন করিতেন; সকলেই প্রভাব-মণ্ডল সহায়ে ছিনিরীক্ষা হিলেন। প্রস্তুত নামে আর এক দেবগণের আবিভাব হয়। তাঁহাদের সম্পারে আট গণ। পুনরার ভবনামে আই গণে ব্যবহ্ছিন্ন ভূটীয় দেবগণ প্রাহ্ম্পূত হইরাছিলেন। ভদনন্তর যুখনামক অইগণাবিছিন্ন চতুর্থ দেবগণ আবিভূতি হন। ইহাঁদের মধ্যে অপর গণের থে প্রাত্তাবিহন, তাঁহাদের নাম লেখ। বিনি শত যজের আহরণ করিয়া, তাঁহাদের অধিপত্তি হন, তাঁহার নাম মনোজব। এই মনোজবই এই মন্তর্গের যজ্ঞভাগভূক ইক্স নামে বিখ্যাত।

স্থেষণা, বিরজা, হবিম্মান, উন্নত, মধু, অতিনামা ও সহিত্য, এই সাত জন এই মন্তরের ধবি। উন্নত, পুরু ও শতহান প্রথ নিরতিশন সহাবল পুরুষগণ চাকুষ মহুর পুতা। তাঁহারা সকলেই পৃথিবীপতি হইরাভিলেন।

ধিজ ! এই আমি আপনার নিকট ষষ্ঠ ময়স্তর কীর্ত্তন করিশাম। সঙ্গে সংশ্ব মহাত্মা চাকুষ মহুর জন্ম ও চরি তকথাও বলিশাম। সংশ্রতি যে মহুর আবির্ভাব হইরাছে, তাঁহার নাম বৈবস্বত মতু। এই সপ্তম ময়স্তবের দেবতা প্রভৃতির নামাদি কীর্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ কঞ্চন।

ইতি চাকুৰ মৰম্বর নাম বট্দপ্ততিতম অবগার।

#### সপ্রসপ্ততিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, মহাভাগ! বিশ্বকর্মার পুত্রী সংজ্ঞা স্থেয়র পদ্ধী। ভগবান্ ভান্ধর তাঁহার গর্ভে মন্ত্র জন্মণান করেন। মন্ত্র যশ যেমন প্রখ্যাত; সেইরপ তিনি অনেক-জ্ঞানপারগ ছিলেন। বেংহতু, তিনি বিবস্বানের পুত্র, সেইহেতু, তাঁহার নাম বৈবস্বত হইল। স্থোর দৃষ্টিপাত্তমাত্তেই সংজ্ঞা নয়নব্গল নিনাশিত করেন। সেইহেতু, স্থা জাতকোধ হইয়া, সংজ্ঞাকে নির্ভুর বাক্যে কহিলেন, আমাকে দেখিলেই, তুমি সক্ষণা নেত্র সংব্ম করিয়া থাক। সেইহেতু, মুটে! তুমি প্রজাগণের সংব্মন ব্যক্তে প্রস্ব করিবে।

মার্কণ্ডের কহিংলন, তথন দেবী সংজ্ঞা ভরাকুলা হইরা, চপণ দৃষ্টি আশ্রম করিংশন। তাঁহাকে বিলোনদৃষ্টি দেশন করিরা, রবি পুনরার কহিংলন, যে হতু, আমাকে দেশন করিয়া, তুমি অধুনা বিলোনদৃষ্টি হইনে, দেইহেতু, চঞ্চলস্বভাবা নিশীকে তন্যারূপে প্রাস্ব করিবে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, অনন্তর দেই শাপে সংজ্ঞার গর্ভে যম এবং বিখ্যাত স্থমহানদী মমুনা ল্মা গ্রহণ করিলেন। তথন সংজ্ঞা রবির তেজ: অতিকটেই সহু করিকে লাগিলেন। অবশেবে তিনি তদীয় তেজ: সহু করিতে না পারিয়া, চিন্তা করিলেন, কি করি, কোণায় ঘাই, কোণায় বাংশেই বা নির্ভি লাভ হইবে এবং স্থামীর আর কোপে পড়িতে হইবে না। প্রজ্ঞাপতির প্রী মহাভাগা সংজ্ঞা বারথার এই প্রকার চিন্তা করিয়া, পিতার আশ্রয়গ্রহণই প্রশস্ত কর মনে করিলেন। তখন যশ্মিনী পিতৃগৃহগ্যনে কুত্রেমি হইয়া, আত্মতমুকে রবির দয়িতা ছায়ায়পে নির্দাণ করিলেন এবং তাহাকে কহিলেন, তুমি, আমার ভায় রবির গৃহে অবস্থিতি করিবে এবং আমি বেমন তাহার ও প্রগণের প্রতি বাবহার করি তাম, তুমিও দেই ভাবে থাকিবে। রবি বিজ্ঞাসা করিলে, আমি বে গমন করিয়াছি, তাহা বলিবে না। প্রত্যুত, সর্ব্বদাই বলিবে, আমিই সেই সংজ্ঞা।

ছারাসংজ্ঞা কৃহিলেন, দেবি ! রবি যে পর্যান্ত না আমার কেশাকর্বণ অথবা শাপ প্রদান করি-বেন, তাবৎ আপনার আদেশ পালন করিব। শাপ দিলে অথবা আকর্বণ করিলেই, সমুদার বলিব। এইপ্রকার অভিহিতা হইয়া, সেই দেবী সংজ্ঞা পিতার তবনে প্রমন করিয়া, তাঁহার সহিত্ত সাক্ষাৎ করিলেন। তপোবলে বিশ্বকর্মার অশেষ কল্ম নিরাস হইয়াছিল। তিনি বহমানবশতঃ কল্পার পূজা করিলেন। অনিকিতা সংজ্ঞা কিছুকান পিতৃগৃহে অবস্থিতি করিলেন। তথন পিতা নাতিচিরোমিতা নেই চার্কালী ছহিতাকে প্রেম ও বহুমান প্রঃসর তাব করিয়া কহিলেন, বংসে। তোমাকে দর্শন করিলে, আমার অনেক দিন মুহুর্তার্কের সমান হইয়া থাকে। কিছু ধর্মালে হইতেছে। পিতৃগৃহে বহুদিন বাস করা জীজাতির পক্ষে যশস্কর নহে। সে আমীর গৃহে অবস্থিতি করিবে, ইহাই তাহার বান্ধবগণের মনোরথ। দেখ, তুমি যে স্থেগ্র সহিত সঙ্গতা হইয়াছ, তান তিত্বনের নাথ। অতএব পুলিকে। পিতৃগৃহে আর অধিক কাল অবস্থিতি করা তোমার ভাল দেখায় না। অতএব স্থামীর গৃহে গমন কর। আনে তুই হইয়া, তোমার পূজা করিতেছি। আর গুডে আমার দর্শনার্থ পুনরায় আগমন করিও।

মার্কণ্ডের ক্হি:লন, পিতা এইরপ কহিলে, সংজ্ঞা যে আগারা বলিয়া, তাঁহাকে সবিশেষ পূলা ক্রিয়া, উত্তরকুক্তে গমন ক্রিলেন এবং স্থাতেজে ভীতা ও তদীয় তাপসহনে মনিচ্ছামিতা হইয়া, বঙ্বারপ্ধারণপূর্বক তথায় তপশ্চরণে প্রেৱা হইলেন।

এ দিকে, দিবাপতি সংজ্ঞাজানে দেই ধিতীয়া পরীতে ছই পুত্র ও মনোরমা এক কথা উৎপাদন করিলেন। কিন্তু ছায়া আপনার অপত্যবর্গে বেরপে অতিমাত্র বাংস্ন্যপ্রকাশে প্রবৃত্তা ছইলেন, সংজ্ঞার কথা ও অপত্যবংয়র প্রতি দেরপ নহেন। মহু এবিষয়ে তাঁহার প্রতি ক্ষমাপর হইলেন। কিন্তু যম ক্ষমা করেওে পারেলেন না। কোপ বশতঃ জননাকে মারিবার জ্ঞা পাদ্ধয় উরোলন করিলেন। কিন্তু পরক্ষণেই ক্ষমাগুণের বশব্ধী ইইয়া, তনীয় দেহে নিপাতেত করিলেন না। তথন সংজ্ঞা রোষায়িতা হইয়া, পাণিপল্লব কাম্পত ও ওয় কিঞ্চিং প্রক্রারত করেয়া, য়মকে শাপ দিয়া কহিলেন, আমি তোমার পিতার পয়ী। তথাপি তুমি মর্যাদাশ্র্য হইয়া, আমারে পদপ্রহারে উদ্যুত্ত হইলে, দেইহেতু, অন্যই তোমার এই পদ পতিত হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, যম জননীর প্রাণন্ড এই শাপ শ্রবণ করিয়া, ভয়াতুর হইয়া, পিতাকে গিয়া, প্রণিপাত করিয়া, বলিতে লাগিলেন, তাত! ইহা অতিমাত্র আশ্চর্যা, কেহ কথন দেখে নাই, মাতা বাংদ্লা ত্যাগ করিয়া, প্রকে শাপ দিয়া থাকেন। মহু যেরপ বলিয়া থাকেন, উনি আমাবেশ্র মাতা নহেন, আমারও সেইরপ বোধ হইতেছে। কেননা, প্র বিগুণ হইলেও, জননী কথন বিগুণা হয়েন না।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, ভগবান তিমিরার যমের সেই কথা শুনিরা, ছারাকে আহ্বানপূর্কক জিজ্ঞানা করিলেন, সংজ্ঞা কোথায় গিয়াছেন? ছায়া ক হ'লন, বিভাবনো! আমিই দ্বাইর তনয়া সেই সংজ্ঞা, তোমার পত্রা ও এই সকণ অপত্যের জননা। বিবস্থান বারথার এইপ্রকার জিজ্ঞানা করিলে, তিনে যথন বিশিলেন না, তথন দেই দিবাকর জাতক্রোধ হইয়া, তাঁহারে শাপনানে উদাত হইশেন। তদ্দর্শনে ছায়া সম্পায় যথাযথ তাঁহার নিকট কীর্তন করিলেন। ভগবান্ ভায়র বিদিতার্থ হইয়া, দ্বাইর আলয়ে সমাগত হইলেন। বিশ্বকর্মা সেই ত্রেলাক্যপৃত্তিত নিজ্বাগত ভায়রকে পরমভক্তিসহকারে প্রা করিলেন এবং সংজ্ঞার কথা জিজ্ঞানা করাতে, তাঁহাকে কহিলেন, আপানি পাঠাইয়া দেওয়াতে, তিনি আমার গৃহে আসিয়াছিলেন। ওথন দিবাকর সমাধ্র হইয়া, অবলোকন করিলেন, আমার স্বামী সৌমামুক্তি ও শুভাকার হউন, এইপ্রকার কামনার বশবন্তিনী হইয়া, সংজ্ঞা বড়বারপ্রধারণপূর্বক উত্তরকুক্ষতে তপশ্চরণ করেছেন। দিবাকর তাঁহার তপভার উদ্দেশ বৃথিতে পারিয়া, সংজ্ঞার পিতা সেই বিশ্বক্যাকে কহিলেন, আদা আমার তেজের কয় করিয়া দিন। তথন বিশ্বক্যা তাঁহার তেজের কয় করিলে, দেবভারা ত্বকরিতে গাণিলেন।

ইতি ক্র্যোর তেজঃকর নাম সপ্তবগুতিতম মধ্যার।

### অফসপ্ততিত্ম অধ্যায় 🕈 .

মার্কণ্ডের ক্ছিলেন, অনস্তর দেবগণ ও দেব্যিগণ স্মাগত হইরা, সমুদার ত্রৈণাক্ষ্যের পুলনীর দিবাকরকে বক্যমাণ বাকো তাব ক্রিতে লা গলেন।

দেবগণ কহিলেন, আপেনি ঋক্ষরপ, আপনাকে নমস্বার। আপেনি সামস্বরপ, আপনাকে নমস্কার। আপনি সকলের আশ্রয় বা তেজ: প্রণোদিত করেন; আপনাকে নম্মার। আপনি জ্ঞানের একমাত্র আধার। আপনি বিভদ্ধজ্যোতিমূরণ। আপনে দর্কদোধবহিদ্ধত ও জনলায়। এবং আপনাতে তমোগুণের লেশমাত্র নাই। আপনি সকলের বার্ছ, ব্রেণ্য ও প্রক্তরপ পরমাত্মা। আপনার স্বরূপ সমস্ত জগদ্বাপী। আপনি আমুমূর্ত্তি। আপনাকে নমস্বার। আপনি সকলের কারণ ও জ্ঞানচেতাদিগের চরম আশ্রয়স্বরূপ। আপনি সুর্যাস্বরূপ ও প্রকাশায়-শ্বরূপ। আপনাকে নমস্কার। আপনি ভারর, আপনাকে নমস্কার। আপনি দিনকর, আপনাকে নমস্কার। আপনি না পাকিলে, স্বাত্রি হয় না, সন্ধ্যা হয় না ও জ্যোৎমা হয় না; আপনাকে নমস্কার। ভগবন। আপুনিই এই দৃশ্যমান বিশ্ব। আপুনি ভ্রমণ ও উদ্ভ্রমণ প্রেসকে এই স্থাবর্জকমাত্রক অখিল ব্রহ্মাণ্ড আবিদ্ধ করিয়া গাকেন। আপনার কিরণ্যংম্পর্শে এই সমুদায় প্রিক্ত। লাভ করে। বলিতে কি. আপনার কর্নিকর স্পর্শ করিলে, জলানিরও পবিত্রতা সংঘটিত হয়। যাবং এই জগৎ তদীয় কিরণসংযোগ প্রাপ্ত না হয়, তাবং হোম ও দানাদিক ধর্ম অনুষ্ঠান করিলেও. কোন উপকার পাওয়া যায় না। তোমাব এক অঙ্গ হইতে ঋকু সকল, অপর অঙ্গ হইতে সাম সকল এবং অভ্য অঙ্গ হইতে যজু সকল নিপ জত হইয়াছে। জগন্নাথ ! তুমি ঋগ্বেদময়। তুমি যজু-র্কেনময়। তুমি সামবেদনয়। এই কারণে তুমিই ত্রয়ীনয়। তুমিই ত্রন্ধের স্থুণ, আবার, অব্যক্ত রূপ। তুনি মূর্ত্ত আবার অমূর্ত্ত। তুমি হল্প আবার স্থলরপে বিরাজ করিতেছ। তুমি নিমের ও কাঠাদি-মর, সকলের ক্ষ্কারক কালস্বরূপ এবং ভূমি কামরূপ। অভএব প্রায় হও এবং **স্কীয় ভেজের** উপদংহার কর।

মার্কণ্ডের কহিলেন, দেবগণ ও দেবদিগণ এইরপে বিশিষ্ট বিধানে তব করিলে, তেজারাশি অবায়রপ্রপ দিবাকর তৎক্ষণাৎ স্বকীয় তেজ: মোচন করিলেন। তমধ্যে ঠাহার বে তেজ ঋথেদেনর, তত্বারা মেদিনী সন্ত্ত হইরাছেন। যে তেজ: যজুর্ময়, তত্বারা অন্তরীক বিনিমিত এবং যে তেজ সামময়, তত্বারা স্বর্গর উদ্ভব হইরাছে। মহায়া বিশ্বক্ষা ঐরপে ঠাহার তেজের যে প্রকশ সংশ ক্ষেত্ত করিলেন, তত্বারা শিবের অশ্ল, বিফুর চক্র বস্থগণের শহরের ও পাবক্রে স্থাকণ শক্তি, ধনদের শিবিকা এবং যক্ষ, বিদাধর ও অভাত স্বর্গণের তত্ত প্রচণ্ড অস্ত্র সক্ষ নির্মাণ করিয়া দিলেন। ভগবান্ ভার তদবি বোড্শ ভাগ তেজ ধারণ করেন। বিশ্বক্ষা তাঁহার তেজ: ঐরপে প্রদশ্য ক্ষিত্ত করিয়াছেন।

অনস্তর ভগবান্ ভারর মখরণ ধারণ করিয়া, উত্তরকুরতে গমন ও বড়বার্কণিণী সংস্ঞারে দর্শন করিলেন। সংস্ঞা তাঁহাকে আদিতে দেখিয়া, পরপুরুষ ভাবিয়া, প্রক্রমণতংপরা হইয়া, তাঁহার সন্মুখে সমাগতা হইলেন। অনগ্রর পরপার সংমিলিত হইলে, উভয়ের নাসার নাসার যোগ হইল। তাহাতে রেতঃপাত হইলে, অখীর বক্তৃ হইতে অধিনীকুমারণম বিনির্গত এবং খড়গা, চর্মা, বর্মা, বাণ ও তুল ধারণপূর্কক অখারত রেবস্ত সমৃত্ত হইলেন। তখন ভগবান্ ভারমান্ স্বরূপ প্রদর্শন করিলেন। ঐ রূপের তুলনা নাই। সংগ্রা তাঁহার সেই স্বরূপ দর্শন পূর্ণমর নির্ভিশর আইলাদিতা হইলেন এবং নিজরপ ধারণ করিলেন। তখন স্পিলতর্কর ভাষর স্কর্মণ ধারিশী সেই প্রীতিম্ভী সহধ্যিশী সংস্ঞারে নিজগৃহে লইয়া আলিবেন। অনস্তর তাঁহার প্রথম

পুত্র বৈশ্বত মহু হইলেন। ধি তীর পুত্র ষম জননীর শাপবশতঃ ধর্মদৃষ্টি হইরাছিলেন। পিতা শ্বং এই বণিরা তাঁহার শাপান্ত করিলেন, কৃমি সকল ইহার পাদ ইইতে মাংস গ্রহণ করিরা, মহীতলে পিতিত হইবে। যেহেতু, তিনি ধর্মদৃষ্টি ও শক্র মিত্রে সমদ্শী হইরাছেন, দেইতেতু পিতা তাঁহাকে যমের পদে নিযুক্ত করিলেন। যমুনা কালিন্দান্তরবাহিনী নদী হইলেন। অখিনীকুমারেরা মহান্মা পিতা কর্তৃক দেববৈদ্যপদে প্রতিষ্ঠিত ও রেবস্ত ও্তৃক্গণের আধিপত্যে নিয়োজিত হইলেন।

একণে ছারাসংজ্ঞার পুরুগণের নিয়োগবিধি আমার নিকট শ্রবণ কর। ছারাসংজ্ঞার প্রথমজাত পুরু সকলের আগ্র সমূর তুল্ডাবাপর। তিনি সাবনি সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইলেন। বে সমরে
বিশি ইন্দ্রপদ পাইবেন, সেই সময়ে, তিনি মন্থ ইইবেন। শনৈশ্বর পিতা কর্তৃক গ্রহণণ মধ্যে
নিমোজিত হইলেন। তাঁহার তৃতীর ক্যা, যাহার নাম তপতী, তিনি সংবরণের ওরসে
মহজেশব ক্লকে পুরুরপে প্রণব করিলেন। আমি সেই বৈবস্থত মহুর সপ্তম মন্তর এবং সেই
সম্বন্ধরের রাজা, ঋষি, দৈবতা ও ইন্দ্র এবং তাঁহার পুরুগণ, সকলের বুরান্ত কীর্তন করিব।

ইতি বৈবন্ধতোৎপত্তি নাম অষ্ট্ৰপ্ততিতম অধ্যার।

### একোনাশীতিত্য অধ্যায়।

মার্কিণ্ডের কহিলেন, আদিত্যগণ, বহুগণ, কদুগণ, সাধ্যগণ, বিশ্বদেবগণ, মকদ্গণ, ভৃত্ত ও আদিরা, ইহাঁরা বৈবস্থত মহন্তরের দেবগণ বলিয়া পরিগণিত হরেন। তন্মধ্যে আদিত্যগণ, বার্গণ, কদুগণ, ইহাঁরা ক্রাণের আন্তর্জন আন্তর্জন আন্তর্জন ক্রাণ্ডিগ্রাণ, কদুগণ, ইহাঁরা ক্রাণ্ডিগ্রাণ, ক্রাণ্ডিগ্রাণ, বহুগণ ও বিশ্বদেবগণ, ইহাঁরা ধর্মের পুত্র। ইহাঁদের ইক্রের নাম উজ্জিয়ী। তিনি মহাত্মা ও যজ্ঞাগভূক্। যে সকল ইক্র হইরাছেন, বা হইবেন এবং যাঁহারা বিদামান আছেন, তাঁহারা সকলেই সহস্রদোচন; সকলেরই হল্তে বজ্র শোভ্যান; সকলেই প্রন্দর; সকলেই মহ্বান, সকলেই ব্যস্তর্জণ; সকলেই শৃসী; সকলেই গঙ্গামী, সকলেই শতক্রত্ এবং সকলেই তেজঃসহায়ে সকল ভূতেরই অভিতর ক্রিতে সমর্থ, সকলেই ধর্মাদি বিশুক সাধন বলে আধিপত্যগুণসম্পন্ন এবং সকলেই ভূত, ভবিষা ও বর্ত্তমানের অধিনেতা।

একণে ত্রৈলোকা কাহাকে বলে, প্রবণ কর। এই ভূর্ণোকের নাম ভূমি, অন্তরীকের নাম দিব এবং অর্গের নাম দিব্য। ইছাই ত্রৈলোকা, বলিয়া পাকে।

আবি, বশিষ্ঠ, মহর্ষি গৌতম, ভরবাজ, বিশ্বামিত্র, কৌশিক ও মহাত্মা ঋচীকের পুত্র ভগবান্ জমদ্বি: ইঠারা সাতজন এই মহস্তবের ঋষি।

ইক্ষুকু, নাভগ, ধুই, শ্যাতি, নরিষ্যস্ত, ধিই, করুৰ, পৃষ্ড, বহুমান্, এই নয় জন বৈৰ্থত মন্ত্র পুত্র।

ব্রহ্মন্ । আপনার নিকট এই বৈব্যুত ময়স্তর কীর্ত্তন করিলাম। সত্তম । ইহা শ্রবণ বা পাঠ করিলে, লোকে তৎকণাং যাবতীয় পাপ হইতে বিমৃক্ত ও রাশি রাশি পুণ্য সঞ্চরে সমর্থ হয়।

ইতি বৈবস্থত মধস্তর নাম একোনানীতিতম অধ্যার।

### শ্ৰীতিক্ৰম অধ্যায়।

জোষ্টু কি কহিলেন, মহর্ষে! আপনি স্বায়স্ত্ব মহ এবং তদস্তর্ম্ভ দেবগণ, রাজগণ ও সুকি-গণের বৃত্তান্ত বর্ণন করিলেন। বর্ত্তমান করে অন্ত দে সপ্ত মহু এবং তত্তৎ মহুর অন্তরে বাহারা দেবাদি হইবেন, তাঁহাদের বিষয় বিস্তারপূর্মক বর্ণন কঞ্চন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, আমি তোমার নিকট ছারাসংজ্ঞার পুত্র সাবর্ণির কথা বলিরাছি। তিনি পূর্ব্বজ মহার তুলা এবং তিনিই অটম মহু হটবেন। রাম, ব্যাস, গালব, দীপ্রিমান, রূপ, ঝ্রাশৃক ও দ্রোণি ইহারা এই অস্তংরর সাত থাবি। আর, স্থতগা, অনিতাত ও মুখা ইহারা দেবতা। এই তিন দেবতার সমুদারে বাটি গণ কথিত হইরাছে। তন্মধো তপং, তপ, শক্রু, ছাতি, জ্যোতি, প্রভাকর, প্রভাব, দরিত, ধর্ম্ম, তেজ, রিমা ব কতু, ইত্যাদি স্থতগানামক দেবগণের বিংশগণ। আর প্রভু, বিভূ, বিভাগাদি, ইহারা অনিতাতনামক দেবগণের অক্তর বিংশগণ। তৃতীয় গণ বর্ণন করিতেছি, শ্রবন কর। দম, দাস্ত, রিত, সোম ও বিস্ত ইত্যাদি ম্থানামক দেবগণের বিংশগণ। ইহারা মলপ্রবিধিতি বিলিয়া বিখ্যাত। ইহারা প্রজাপতি মারীচের পূত্র। ইহারাই সাব্ধ মন্বস্তুর হেবন। মুনে! বিরোচনপুত্র বলি তাহাদের ভবিষ্য ইন্দ্র। অন্যাপি যিন নির্মব্বদনে বহু হিয়া, পাতালে বাদ করিতেছেন। বিরজা; চার্কবীর, নির্মোহ, সত্যবাক্, কৃতি ও বিষ্ণু প্রাভৃতি এই শাব্ধ সম্বর তনর।

ইতি দাবৰ্ণিক মহস্তর নাম অশীতিত্য অধ্যায়।

একাশীতিত্য অধ্যার।

-:\*:--

# শ্ৰীশ্ৰীদেবীমাহাত্ম্য।

### अँ नरमा ठिखकारेम ।

মার্কণ্ডের কছিলেন, সুর্য্যের তনর সাবণি; বাঁহাকে অন্তম মহ বলে; তাঁহার উৎপত্তি বিভার পূর্বক বলিতেছি, শ্রবণ কর। সুর্য্যের পূর্দ্র মেই মহা গাগ সাবণি মহামারার প্র গাবে বেরপে মহ- ওরের অধিপতি হইরাছিলেন, তাহাও বলিব। পূর্ব্বে স্থারোচিব মহন্তরে চৈত্রবংশসমূত্র সুর্য্থ সমস্ত ক্ষিতিমপ্তলের রাজা হইরাছিলেন। তিনি ঔরণ প্রের ন্তার দম্যগ্র্বপে প্রজাপাণনে প্রব্ত্ত হইলে, ক্ষোলাবিধ্বংদী নরপতিগণ তাঁহার বিপক্ষণকে অন্তাধিত হইলেন। তাঁহাদের সহিত্ত দেই অতি প্রবল-দ্ভথের রাজা স্থরপের যুদ্ধ উপস্থিত হইল। কোনাবিধ্বংদী নরপতিগণ হীনবল হইলেও, রাজা স্থরপরে প্রাজিত করিলেন। তথন তিনি অ্কার রাজধানীতে আগমনপূর্ব্বক নিজদেশের আধিপত্যে প্রতিষ্ঠিত হইলেন। উল্লিখিত বগশানী বৈরীগণ পুনরায় তথার আগমনপূর্ব্বক তাঁহাকে আক্রমণ করিলে, তিনি মুর্বাণ হইরা পড়িলেন। তথন তুই ও ছ্রায়া আমাত্যগণ বনবান হইরা, তাঁহার কোষ ও বল অপহরণ করিল। এইরপে তাঁহার প্রভুষ অপহত হওয়াতে তিনি মুগ্রাবাপদেশে একাকী অথা আরোহণ করিল। এইরপে তাঁহার প্রভুষ অপহত হওয়াতে

মেধনের আশ্রমণদ তাঁহার নরনবিবরে পতিত হইল। ঐ আশ্রম শান্তম্বভাব খাপদগণে পরিবেটিত ও শিষ্যপরম্পরার পরিশোভিত। মুনি কর্তৃক সংকৃত হইরা, তথার তিনি কিরৎকাল অতিবাহিত করিলেন। তৎকালে তিনি সেই আশ্রমের ইতন্তত: বিচরণ করিতেন। হৃদর মমতাবশে আক্রষ্ট হওরাতে তিনি তথার অবস্থিতিকালে সর্বাণাই এইরপ চিন্তা করেন, আমার পূর্বপ্রেরা প্রথমে যাহার পালন করিরাছেন, আজি সেই পুর আমার অধিকারব হিতৃতি হইরাছে। আমার সেই ছুর্ভি ভৃতোরা ধর্মার্ল্যারে ইহার পালন করিতেছে, কি না, ফানি না। আমার সে প্রধান শ্রহন্তী, সর্বাণা যাহার মদকরণ হইত, বৈরীগণের এখন বশীভূত হইরাছে। আমার সে তথান উপভোগ করিতেছে। যাহারা নিত্য আমার প্রযাণ, ধন ও ভোজন গ্রহণপূর্বক আনার আন্থগত্য করিত, তাহারা একণে নিশ্চরই অন্ত রাজাদের অন্তর্বতি করিতেছে। তাহারা স্মাগর্বাপে বার করিতে জানে না। নিশ্চরই সত্ত বার করিরা, আমার সেই অতিক্ষেষ্ট প্রকৃতি কোরা থাকেন।

অনস্তর তিনি সেই আশ্রমের নিকটে কোন বৈশুকে দর্শন করিয়া, ঞ্জিলাগ করিলেন, তুমি কে ? কিহেতু এখানে আগগনন করিয়াছ ? কিজ্তুই বা তোমাকে শোকাষিত ও গুর্মনার ভাষ দেখিতেছি ?

রাজা প্রাণেশনপূর্বক এইপ্রকাব বাকা প্রায়োগ করিলে. বৈশ্য উহা প্রবণ করিয়া, প্রোপ্রাবনত হইয়া, প্রাণ্ডর করিল, আমি সমাধিনামে বৈশ্য, ধনিবংশে আমার জন্ম হইয়াছে। আমার প্রাণ্ডরের ধনলোভে আমাকে নিবাক্ত কবিয়াতে। আমার ধনও তাহারা সকলে মিনিয়া লইয়াছে। আমার আপুবন্ধাও আমাকে পবিত্যাগ করিয়াছে। এইরূপে আমি ধনহীন, প্রহীন ও স্ত্রীবিহান এবং তরিবন্ধন ছঃথে আক্রান্ত হইয়া, বনে আনিয়াছি এবং এইথানেই অবস্থিতি করিতেছি; স্ত্রাং, আমার দেই স্ত্রী, পুর ও স্বভনবর্গ এথন ভাগ আছে, কি মল আছে, তাহার কোন সংবাদই জানি না। তাহাদের গৃহে এখন লাভ হইতেছে, কি, ক্ষতি হইতেছে, স্থবা আয় হইতেছে কি অপচয় হইতেছে এবং তাহার। এখন সদাশয় কি ছ্রাভার হইয়াছে, তাহারও কোন সংবাদ অবগত নহি।

রাজা কহিলেন, যে গ্রী পূত্র প্রভৃতিরা ধনলোভে তোমাকে তাড়াইয়া নিয়াছে, তাহাদের প্রতি তোমার মন কিজন্ত সেহেপবণ হইতেছে ?

বৈথা কহিল আপনি হাহা কহিলেন, তাহা কোন অংশেই মিগ্যা ন'হ; কিন্তু কি করি, আমার মন কোনরপেই দরাশ্য হইতে পারিতেছে না। যাহারা ধনলুর হইরা, পিতৃঃসহ. স্বলন্ত্রে ও সানিস্থে পরিত্যাগ করিয়া, আমারে নিরাক্ত করিয়াছে, আমার অন্তর্করণ তাহাদেরই প্রতি স্বেহপ্রবণ হইতেছে। অন্তি মহামতে ! এই রূপে আমার বন্ধ্যণ আমার প্রতিকূল হইয়াছে; ইহা জানিলেও, আমার মন তাহাদের প্রতি প্রেমপ্রবণ হইতেছে। ইহা কি, তাহা বুঝিতে পারিতেছি না। দেখুন, ভাহাদের কুব্যবহায়েই আনি হর্মনায়নান হইয়া, অনবরত্ত দীর্ঘনিশাস ভাগা করিতেছি। আমার প্রতি তাহাদের প্রীতির নশ নাই। তথাপি, আমার মন তাহাদের প্রতি নিঠুর হইতেছে না। অভ্যাব, কি করি ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিপ্র! অনন্তর সেই সমানিনামক বৈশ্ব ও রাজা হ্রবণ একতে মহর্বি মেধনের স্কাশে সমাগত হুইলেন এবং তাঁহাকে ভারাহ্লদারে যথাবাগ্য বিধানে প্রণাম ও অভিবাদনাদি করিয়া, উপবেশনপূর্বক নানাপ্রকার কণোপকণন আরম্ভ করিলেন। রাজা মহর্বিকে সংবাধন করিয়া কহিলেন, জগবন্। আমার মন আয়ত্ত নহে। সেইজন্ত যে বিষয় ভাহার হুংপের হুই কুই হুইরাছে, তৎসম্বন্ধে আমি কোন কথা জিজ্ঞাদা করিতে অভিগান করি, অন্ত্রহপূর্বক ভাহা বলিতে ছুইবে। আমার রাজাও রাজ্যার সম্পার যে কিছুই নহে, তাহা আমি বিশক্ষণ বিধিত আছি। এইরপ জানসংখ্য অজ্ঞানের ভার, এ স্ক্লে আমার মমভার স্কার হুইতেছে।

ভার কারণ কি ? মার, এই বৈশ্র পুত্র, কলত্র ও ভৃত্যগণ কর্তৃক পরিতাক্ত এবং অঞ্চনগণ কর্তৃক ারীকৃত হট্যাছে। ভথাপি, ভাহাদের প্রতি গৌহার্দ্ধবন্ধন করিতেছে। এইক্লপে আমি ও এই ্বশ্র, আমরা উভরেই হঃধগ্রন্ত হইয়াছি এবং স্ত্রী পুতাদি বিষয় সকলের ভত্তৎ দোবও আমাদের পরিজ্ঞাত হইরাছে। তথাপি, আমাদের মন তত্তৎ বিষয়ে মমতারুষ্ট হইতেছে, ইহার কারণ কি 📍 ুদ্ধন, **আমরা উ**ভরেই জ্ঞানলাভ করিয়াছি। তথাপি, বিবেকাদ্ধ হইলে, <mark>যেরপ মোহের আবেশ</mark> চয় আমাদেরও সেইরপ ঘটিতেতে। ইহারট বা কারণ কি १

ঋষি কৃষ্টিলেন, সমস্ত প্রানির্বই আহার বিহারাদি বিষয়ে তুলারূপ জ্ঞান আছে। এরূপ জ্ঞান থাকিলে, যদি জ্ঞানী হওয়া যায়, ভাহাহ<sup>ট</sup>লে, তোমরাও জ্ঞানী। কিন্তু প্রক্লুতপক্ষে ভাহা মহে। বিষয় সকল পূথক পূথক শ্ৰেণীতে সমিবিষ্ট। কেহ দিবদে দেখিতে পায় না ষেমন পেচক; কেই রাজিতে দেখিতে পায় না, ষেমন বকাদি; আবার কেই কেই দিবা ও রাজি উভন্ন সমন্দে সমান দেখিতে পার, বেমন বিড়াব প্রভৃতি। মহুষ্যেরা জ্ঞানী সত্য: কিন্তু কেবৰ তাহারাই জ্ঞানী নতে। কেন না, পত, পক্ষী ও বনচর মুগাদিরও এরপ জীবদাধারণ জ্ঞান আছে। এই কপে মুদ্ধাদের যে জ্ঞান আছে, পশু পক্ষীদেরও সে জ্ঞান আছে। আবার পশু পক্ষীদের বে জ্ঞান আছে, মহুবাগণেরও সে জ্ঞান আছে; স্কুতরাং, তাহারা সকলেই পরম্পর তুলারপ জ্ঞানবিশিষ্ট। ঐপকার জ্ঞান সংস্কৃত, অবংলাকন কর. পক্ষীরা স্বয়ং কুধায় পীডাুমান হইয়া, মোহবশত: আদির সহকারে তণ্ডুলাদির সংগৃহীত কণ সমস্ত শাবকগণের চঞ্তে নিকেপ করিরা থাকে। এদিকে, আবার কি দেখিতেছেন না, মন্তব্যবা লোভবশতঃ প্রত্যুপকার প্রাপ্তিবাদনাবশংবদ হইয়া আপ-নারা না থাইয়াও, স্ব স্ত্রিগকে ঐকপে থাওয়াইয়া থাকে। এই সকল জানিয়া ওনিয়াও, লোকে যে মমতার আবর্তে ও মোহের গৃতে বিনিপ্তিত হইয়া, নানাপ্রকারে সংসারবিস্তার করে, একমাত্র মহামারার প্রভাবই তাহার কারণ। এ বিধ্যে বিশ্বয় প্রকাশ করা উচিত নছে। এই মহামায়া জগৎপতি হরির দাকাৎ যোগনিলা। তাঁহারই প্রভাবে নিবিল জগৎ ঐরপ মোহপাশে বন্ধ ও মমতাবর্ত্তে পৃতিত হইয়া থাকে। অনিক কি, ঐ সহামায়াই দেবী ভগবতী। তিনি জ্ঞানী-গণের চিত্তকেও বলপূর্ণক আকর্ষণ করিয়া, মোহের আয়ত করেন। এই স্থাবর জন্মাত্মক বিশ্ব-জগৎ সেই মহামায়ারই সৃষ্টি। তিনি প্রদল্প ইউলে, বরণান ও লোকের মুক্তি বিধান করিয়া থাকেন। তিনিই প্রমাবিদ্যা, তিনিই নিত্যস্বরূপা, তিনিই সমুদায় ঈশ্রগণের ও ঈশ্রী এবং তিনিই মূতির হেতু, আবার, তিনিই সংসারব্য়ের কারণ।

রাজা কহিলেন, ভগবন্! আপনি যাহার কণা বনিতেছেন, দেই দেবী মহানারা কে, কিরুপে উৎপন্না হন এবং কিরূপ কার্যোর অমুঠান করেন, ঙাহার স্বভাব ও স্বরূপই বা কিরূপ এবং কোথা হইতেই বা তাঁহার উত্তব হইল, তৎদমন্ত আপনার প্রদাদাৎ প্রবণ করিতে ইছে। করি।

षांत्रित जन्मविष्गरणत रतिर्थ।

খবি কহিলেন, তাহাঁর জন্ম নাই, মৃত্যু নাই, চিরকানই আত্তের। এই জগৎ তাঁছার মৃষ্টি এবং তিনিই সমুদায় ব্যাপিয়া আছেন। তথাপি, তিনি বেরূপে বার্থার সমুংপলা হন, বলিতেভি, শ্রবণ কর। তিনি মথন দেবগণের কার্যানিদ্ধির জন্ম আবিভূতি। হন, তথনই লোকে বণিরা পাকে, তিনি উৎপদা হইয়াছেন। ক্লান্তে সমুদার জগৎ একা-বীক্তত করিয়া সকলের প্রভূ তগবান বিষ্ণু বধন যোগনিজার আশ্রয় প্রসলে অনস্তের ফণমগুলে শয়ন করেন, তংকালে মধুও किंछ नाम विथाज अजीवलयकत अकृति इरे अस्त उनीय कर्गमन रहेट नमूड्ड रहेना, একাকে সংহার করিতে উদ্যত হইল।ছিল। প্রজাপতি একা বিষ্ণুর নাতিক্ষণ আন্তর করিল। ছিলেন ৷ অপুর্হয়কে অবলোকন ও বিফুকে নিজাছের দর্শন করিবা, একাঞা হাদরে অবস্থান প্র্কক, ভগবান্ হরির আগরণার্থ সেই বোগনিস্তার তব করিতে লাগিলেন। এই বোগনিজাই বিখের ঈশ্রী, অগতের ধালী ও সকলের হিতিশংহারকারিশী; স্বতরাং কুলাপি ভাষার ভুগনা हत ना। ठिनि यांशनिर यांशनात ष्ठेशमा। बना एटकांत्रणी नातांत्रशह राहे बांगनिकारक वकामान वाट्या खब कतिया कहिलान, जूमिर चारा, जूमिर चथा, जूमिर ववहँकात. जुमिर. উদারাদি স্বরম্বরণ, তুমিই স্থা, তুমিই অক্ষরা ও নিত্যস্বরূপা, তুমিই ত্রিধা মাত্রাকারে অব্স্থিতি করিতেছ। বিশেষতঃ, যাহা উচ্চারণ করা যায় না, তুনিই দেই শাখতরূপিণী অধ্নমানা। তুমিই সাবিত্রী, তুমিই সকলের জননী, তুমিই সকলের শ্রেষ্ঠা দেবীরপিণী, তুমিই সকলের আশ্রন্থ ভূমিট নিথিল লোকের স্টিক্রী। দেবি। তুমিই সকলের পালয়িতী, তুমিই সকলের সংহার-করী, তুমিই স্টিকালে স্টিরপা, তুমিই পালনকালে স্থিতিরপাণ করি জগন্মরি ! তুমিই সংহার-সময়ে সংহাররপা, তুর্নিই মহাবিদ্যা ও মহামায়া, তুনিই মহামেধা ও মহাস্ত্রতি, তুনিই মহামোহা মহাদেবী ও মহাস্থরী। তুমিই দকলের প্রকৃতি ও গুণত্ররের যোজনকারিণী। তুমিই কালরাত্তি, প্রশার ও অনীবভয়করী মোহরাতি। তুনিই লক্ষী, তুনিই ঈশ্রী। তুনিই লজ্জা, বৃদ্ধি ও ক্ষানরপিণী। তুনিই তুষ্টি, পুষ্টি, শান্তি ও কমা। তুনিই থড়াধারিণী ও শুলধারিণী। তুনিই বোর-ক্ষপিণী চক্রধারিণী ও গদাধারিণী। তুমিই শঙ্খধারিণী ও শরাসনধারিণী। বাণ, ভূষণ্ডী ও পরিষ তোমারই আছুধ। দংগারে যাবতীয় স্থন্দর বা মনোহর পদার্থ আছে, তুমিই তাহাদের মধ্যে প্রধান। তুনিই দৌমারূপিণী। তুমিই যাব তীয় দৌমা পদার্থ অপেক্ষা অতীব স্থন্দরী। তুমিই পরাৎ-পরা, পরমা ও পরমেখরী। দংগারে যাহা কিছু দৎ ও অসৎ বস্তু আছে, তুমিই তৎসমন্ত। > এবং ভূনিই সকলের আয়া। ভূনিই সর্বস্বরূপ মহাদেবের শক্তি। অত্তর আমি ভোমার কি স্তব করিব ? যিনি ব্রহ্মারপে জগতের স্পষ্ট করেন, বিষ্ণুকপে পালন করিয়া থাকেন এবং রুদ্র-ক্সপে ইহার সংহার করেন, তাঁহাকেও তুমি যথন নিজার বশীভূত করিয়াছ, তখন ভোগাকে স্তব করিবার কাহার ক্ষমতা আছে ? সামি, বিষ্ণু ও মহাদেব আমরা তিন জনে তোমারই প্রভাবে শরীর পরিগ্রহ করিয়াছি এবং স্ব স্ব কার্য্যে প্রবৃত্ত আছি। অত্রব কোন ব্যক্তি তোমার তব করিতে শক্তিমান হইয়া থাকে ? দেবি ! আমি তোমারে এইরূপে তোমার উদার প্রভাবপর ম্পরার পরিকীর্ত্তন পুর সর বিশিষ্টরূপে গুব করিলাম। তুমি এইরূপই উদার প্রভাবপরম্পরার আধারস্বরূপা। সেইজন্তই তোমাকে সকলে সকল কালে এইরূপে শুব করিয়া থাকে। অভএব তুনি এই মধুকৈটভের মোহ সমুভাবিত কর। ইহাদিগকে দমন করা আমার জংলাধ্য হইয়া উঠিয়াছে। পুনশ্চ, এই জগৎপতি বিঞুর দছরে নিদ্রাভন্ন করিয়া, অহরেছয়ের সংহারার্থ জাগ-

শ্বিষ কহিলেন, ব্রহ্মা এইরপে তাব করিলে, সেই তামসর্মপিণী যোগমায়া বিষ্ণুকে প্রবোধিত করিয়া, অস্থ্রন্থরের সংহার করিবার নিমিত্ত তাঁহার নেত্র, মুখ, নাসিকা, বাহ, হৃদর ও বক্ষরণ হঠতে বিনির্গতা হইরা, অবা কজন্মা ব্রহ্মার নয়নগোচরে আবি ভূতি। হইলেন। তিনি পরিত্যাপ করিলে, জগরাথ জনার্দন একার্ণবশায়ী অহিশ্যা হইতে উত্থান করিয়া, সেই হুরাআ অস্তর্ধয়কে অবলোকন করিলেন। তাহারা অতিবীর্ঘ্য-পরাক্র্ম-সম্পন্ন। রোধারণ লোচনে ব্রহ্মাকে তক্ষণ করিবার অস্ত উদাতে হইয়াছে। ভগবান হরি তথন সমুখিত হইয়া, বাহ্মাত্র আয়ুধসহায়ে তাহালের সহিত্ত বুলে প্রত্ত্ত হুইরালেন। তাহারা মহামায়াকর্ভ্ক বিমোহিত ও অভিবলোনালে অভিভূত হুইয়াছিল। সেইজ্লভ ভগবান জনার্দনকে কহিল, আমালের নিক্ট বর গ্রহণ কর। ভগবান্ কহিলেন, তোমরা যদি আমার প্রতি সন্ত্ত্ত হুইয়া থাক, ভাহাহইলে, এই বর দান কর, তোমানিগকে যেন আমি বধ করিতে পারি। ইহাই আমার একমাত্র প্রেথিনীয় বর। অস্ত বরে আমার প্রয়েজন নাই।

ঋৰি ক্তিৰেন, তাহারা এইরপে বঞ্চিত হইরা, সমুদায় তগৎ জলময় দর্শন করিরা, ভগবানকে বঞ্চা করিবার অন্ত কহিল, আনবা ভোমার বুদ্ধে সম্ভই হইরাছি। ভোমারই হত্তে আমানের মৃত্যু হওরা স্ক্তোভাবে প্রশত। অতএব বেখানে জল নাই, সেইখানেই আমানের সংহার কর।

ধবি কহিলেন, তথন শহা-চক্রধারী ভগবান্ তাহাতেই সমত হইয়া, আপনার ভ্রনাপরি হাপন করিরা, চক্রের আঘাতে তাহাদের উভয়ের মন্তক ছেদন করিলেন। পুর্বে স্বয়ং ক্রেলে করিলে, এই রূপে এই মহামায়া উৎপন্না হইয়াছিলেন। পুনরায় আমি এই দেবীর প্রভাব বর্ণন করিতেছি, প্রবণ করন।

ইতি মধুকৈটভবধ নাম একাশীতিতম অধ্যার।

### ষ্যশীতিত্য অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, পূর্ব্ধে দেব ও অফুরগণের অকশভব্যাপী যুদ্ধ হইয়াছিল। তাহাতে মহিষাসুদ্ধ অফুরগণের ও পূর্নদর ফুরগণের আধিপত্যে নিয়োজিত হন।অফুরেরা মহাবীধ্যবিশিষ্ট। দেবসৈঞ্জ পরাসয় করিল। তাহাতে, মহিষাফুর সমুদায় দেবতাকে অয় করিয়া, ইক্রপদে অধিবিট্ট হুইল।

এদিকে, দেবগণ পরাজিত হইয়া, প্রজ্ঞাপতি পদ্মযোনিকে প্রস্কৃত করিয়া, বাহাদের ও মহাদেবের নিকট গমনপূর্বক মহিষাহ্বরে অফুটিত সম্দায় ঘটনা যণাযথ তাঁহাদের গোচর করিলেন
এবং দেবগণ ধে অভিভূত হইয়াছিলেন, তাহাও বিনিলেন। তাহারা কহিলেন, মহিষাহ্বর শবঃই
শ্র্যা, ইক্র, আয়ি, আনিল, চক্র, যম, বরুণ ও অভাভ দেবগণের কার্য্য করিতেছে এবং দেবগণের
সকলকেই স্বর্গ হইতে তাড়াইয়া দিয়াছে। তাইারা ছ্রায়া মহিষকর্তৃক এইরূপে নিরাক্ত হইয়া,
মন্ত্রগণের ভায়, ইতন্ততঃ বিচরণ ক রতেছেন। অফ্রগণের কার্য্যকণাপ আপনাদের নিকট এই
বর্ণন করিলাম। আমরা এক্ষণে আপনাদের শরণাপর। অতএব মহিষাহ্র যাহাতে বিনষ্ট হয়,
তাহা চিন্তা করুন।

শস্ত ও জনার্দন উভয়ে দেবগণের এইপ্রকার বাক্য আকর্ণন করিয়া, জাতকোধ হইলেন: উভয়েরই বদন ত্রুকুটি-কুটিল হইয়া উঠিল। অনস্তর অতিকোপপূর্ণ জনার্দন, ব্রহ্মা ও শহর এই তিন জনেরই বদন হইতে মহৎ কেজঃ বিনির্গত হইল। ঐ সময়ে ইল্ল প্রভৃতি অভাস্ত অমর-গণেরও শরীর হইতে ঐরপ স্থবিপুল তেজ বিনির্গমনপূর্বক উহাতে মিলিত হইল। স্বরণ তখন দর্শন করিলেন, সেই স্থবিল তেজোরাশি প্রজলিত পর্বতের ভাষ, শিথাপরম্পরার সমুদার <sup>দিগন্তর</sup> ব্যাপ্ত করিয়াছে। সেই সর্ধদেব-শরীর-সমৃত্ত অতুল তেল:পুঞ্ল একত্ব হটয়া, অকীর দীপ্তিতে লোকজুর ব্যাপ্ত করিয়া, নারীরূপে প্রাগ্রভূতি হইল। তক্মধ্যে মহাদেবের বদন হইতে **রে** েজ বিনিঃস্ত হইরাভিল, তাহা ছারা সেই নারীর মুখ হইল। যমের তেকে তাহার কেশপাশ, বিষ্ণুর তেকে বাছ সকল, চল্ছের তেজে অনযুগল, ইল্রের তেজে কটিদেশ, বরুণের তেজে জলাও ও উক্ল, পৃথিবীর তেজে নিতম্ব, ত্রন্ধার তেজে পদ্যুগণ, স্ব্যার তেকে পারের অফুলি সকল, ব্যুগণের তেজে করালুনিদম্হ, কুবেরের তেলে নাদিকা, প্রজাপতির তেজে দশনপংকি, পাব-কের তেজে নয়ন্তিতয়, উভয় সন্ধার তেজে ত্র্যুগল, অনিলের তেজে প্রবশ্বিতয় এবং অক্সান্ত দেবগণের তেকে ভ্রীর শিবারপ সমুদ্র ভ হইন। এইরপে সমুদার দেবগণের ভেসোরাশি হইতে ঐ নারী জন্মগ্রহণ করিবেন, দর্শন করিয়া, মহিগাহরকর্তৃক নিপীড়িত অসরগণ আফ্লাদিও হই-শেন। তথন পিণাকধারী মহাদেব খীর শূল হইতে শূল বিনিচাশিত করিয়া, তাঁহাকে প্রদান क्तिरल, विकृ जानमात ठक, वक्न मच, जिम्र मिल, वाम् ध्र ६ वाननूर्न ज्वीत अवः अभवाधिनिछ ইব বকীয় বন্ধ হইতে বন্ধ সমুৎপাদিত করিয়া, তাহাঁকে দিলেন এবং এরাবতের ঘণ্টা লইয়াও, ছাহাকে প্রদান করিলেন। পরে বম কালদও হইতে দও, বরণ পাশ, প্রজাপতি বন্ধা অক্ষালা <sup>৪ কম্পুৰু</sup>, দিবাকর ভাঁহার সম্ভ রোমকূপে অকীয় রশিষসমূহ, কাল ১জা ও নিশ্ল চর্ম এবং কীরোদদাগর তাঁহাকে নির্দাণ হার, অকয় বয়, দিবা চ্ডামিদি, দিবা ক্র্ডলব্দল ও কটক সমূহ এবং বিগুক্ব লগাটভূষণ, সমূদীয় বাহতে কেয়্র, স্থনির্দাণ নৃপ্রযুগল, অন্তম কঠভূষণ ও সমূদার আফুলিতে রয়ময় অলুরীয় সকল পরাইয়া দিলেন। অনস্তর বিশ্বকর্মা তাঁহাকে অতিনির্দাণ পরত, অনেকবিধ অয়, অভেদ্য কবচ ও মন্তকে ও বকছলে অয়ানপক্ষা মালা, অলনিধি শোভন পক্ষল, হিমালয় বাহনার্থ সিংহ ও বিবিধ রজ, সম্প্রদান করিলেন। পরে কুবের অমৃতপূর্ণ পানপার, সর্কনাগেশ্ব শেষ, বিনি পৃথিবীকে ধারণ করিয়া আছেন, মহামণি-বিভূষিত নাগহার এবং অয়ায়্র দেবগণ অয়ায়্র ভ্রমণ ও আয়ুদ্ধ প্রদানপূর্কক সম্মাননা করিলে, দেই দেবী বারহার অট্রান্ত গহকারে উচ্চেবরে শল করিছে লাগিলেন। তাঁহার সেই ভয়য়য় শলে সমৃদায় আকাশ পরিপ্রিত গহঁরা উঠিল। বলিতে কি, ঐ স্বিশ্ল শল সমৃদায় বিশ্ব তদাদি তদজক্রমে পূর্ণ করিয়া, অনবরত বিস্তৃত হইতে লাগিল। ক্রাপি তাহার স্থান সম্ভূলন হইল না। তৎকালে ভাহার যে ভূম্ল প্রতিশ্ব সমৃথিত হইল, তাহাতে সমৃদায় লোক ক্রিত হইয়া উঠিল, সাগর সকল কম্পিত হইত্বে, লাগিল, সমগ্র মেদিনীমণ্ডল বিচ্পিত হইল, মহীধর সকল আন্দোলিত হইতে লাগিল। তথন দেবগণ হর্ষভ্রে উন্নাসিত হইয়া, সেই শিংহবাহিনীরে কহিলেন, তোমার জয় ইউক। মূনিগণ ভক্তিতরে নম্বুর্তি ওইলোন, তাহার হইয়া, তাহার স্তবগানে প্রের হইলেন।

এনিকে, সম্পায় তৈলোকা নিতান্ত ক্ষ্ভিত হইরাছে, দর্শন করিয়া, অন্তর্গণ কার্ধ উদ্যত ও জাহাদের দৈন্ত সকলও করত ধারণপূর্বক যুদ্ধার্থ অভাগান করেল। কিন্তু মহিবাহের জাতকোধ হইয়া, তাহাদিগকে কহিল, আঃ, একি ! এই বিনিয়াই সে যাবতীয় অন্তর্গণে পরিবৃত হইয়া, সেই শব্দ লক্ষ্যে ধারমান হইল। অনন্তর নিকটে গিয়া, অবলোকন করিল, দেবী স্বকীয় শরীর-প্রভার লোকত্রের ব্যাপ্তা, পদভরে পৃথিবা অবনামিত, কিরীটে অম্বরতল উদ্বভিত, ধন্তর্পশত্বে সম্পায় পাতাল ক্ষৃতিত এবং ভ্লসহত্র সহায়ে দিক্ সকল সমন্তাৎ নীর্দ্ধিত করিয়া, বিরাজমান হইতেছেন।

অনস্তর দেবীর সহিত অহারগণের যুদ্ধ উপস্থিত হইল। তাহারা সেই যুদ্ধে নানাবিধ অস্ত ু নিক্ষেপ ক্রিয়া, দিগঞ্জ উত্তাধিত ক্রেয়া তুনিল। মহিধাস্থ্রের দেনাপতি চামর ও চিশুর এই ছই মহাস্কুর চতুরস্বলে পরিবৃত হইয়া, দেবীর দহিত যুদ্ধ করিতে লাগিল। তাহার অন্তর পেনাপতি ছয় অযুত রথ লইয়া, যুদ্ধে প্রবৃত হইল। তাহার আর একজন সেনানী মহাহত্ব অযুত সহস্র রথ সমভিব াহারে সমর্গাগরে অবতরণ করিল। অনস্তর তাহার অস্ততর দেনাপতি মহাসুর অদিলোমা পঞাশৎ নিযুত রথ লইয়া, যুদ্ধ করিতে লাগিল। বাস্কলনামক অপর দেনানী ষ্ট্রি লক্ষ দৈত্তের সহিত যুদ্ধভূমিতে অবতরণ করিল। অনেক সহস্র গজবাজী এবং কোটি রগ ভাহাকে বেষ্টন করিলা চলিল। অনন্তর বিভাগাকনামক তাহার আর এক সেনাপতি অযুত দৈল ও প্রশাশৎ অব্যুত রবে পরিবেটিত হইয়া, রণস্বে যুদ্ধ করিতে লাগিল। অস্তান্ত মহাত্র সকলঃ অবৃত্ত অবৃত রুণ, হস্তী ও অংখ পরিবৃত হইয়া, দেবীর সহিত সংগ্রামে প্রবৃত হইল। মহিৰারুর শ্বসং কোটি কোটি দহত্র রণ, হত্তী ও অশ্ব দকলে বেষ্টিত হইয়া, দেই যুদ্ধে যোগদান করিল। এই-ক্লপে অস্কুরগণ নিলুত হইয়া, রাশি রাশি তোমর, তিন্দিপাল, শক্তি, মুখন, খড়লা, পরও ও পট্টিশ প্রকারপুর: দর দেবীর সহিত ঘোর যুদ্ধে প্রবৃত হইল। তাহাদের মধ্যে কেহ শক্তি অর্থাৎ নৌহময়ী শলাকা ও কেহ কেহ পাশ প্রক্ষেপ করিতে লাগিল। কেহ কেহ এড়াপ্রহার পুর: সর ভাছারে সংহার করিতে উদ্যত হইব। তদর্শনে সেই দেবী চণ্ডিকা অকীয় শত্র ও কর সকল বর্ষণ করিয়া, তাহাণের সেই দকণ অন্ত শত্র অবনীগাক্রমেই ছেনন করিলেন। অনবর্ত যুদ্ধ করিয়াও, ভণীয় ৰণনমণ্ডলে কোনজপ আয়াসের লক্ষণ প্রকাশ পাইল না। তদ্ধনে দেব<sup>গ্র</sup> ও अविश्रन अक्रावारण जमीत्र खनगीरन अवृद्ध स्टेरनन। के नमस्य रन्दे केथती अञ्चलम्राह्द भवीतः সমূহে অন্ত্ৰ ও শত্ৰসমূহ যোচন করিতে লাগিবেন। তাঁহার বাহন কেশরীও কুছ হইরা, কেশ্রস<sup>মূহ</sup> কলিগ ও প্রাক্ত করিয়া, বনমধো ত্তাশনের ভাষ, অহারুশৈভামধো বিচরণ করিতে আরম্ভ করিল। দেবী অধিকা যুদ্ধ করিতে করিতে বে নিধাসভার পরিহার করিবেন, তাহা হইতে তংকলাং শত সহত্র প্রাথ সৈভা সভ্ত ও তদীয় শক্তিতে অহ্পাণিত হইয়া, পরভা, পট্টিশ, আনি ও ভিন্দিপাল প্রহারপুরংসর অহারণিগকে সংহার করিয়া, যুদ্ধ করিতে লাগিল এবং সেই যুদ্ধাহাংস্বে প্রায়ুভ ইয়া, দলে দলে পট্ছ, শহা ও সুদক সকল বাদিত করিতে আরম্ভ করিল।

অনস্তর দেবী ত্রিশূল, গদা, শক্তি, ঋষ্টিও থড়গানি প্রয়োগপুরঃসর শত শক্ত অস্থরের প্রাণ সংহার এবং অস্তান্ত নিগকে ঘণ্টাশবে বিমোহিত করিয়া, নিপাতিত করিলেন। আবার, কোন কোন অন্তরকে পাশে বন্ধ করিয়া, ভূমিতলে আকর্ষণ করিতে লাগিলেন কাহাকেও বা মুশাণিত খড়গ-পাতে হুই থণ্ড করিয়া ফেলিলেন। কেহ কেহ বা তদীয় গণানিপাতনে বিমর্দিত ছইয়া, ভূমি-তলে শয়ন করিল। কোন কোন অপ্ররেরা গুফতর মুধলাঘাতে কবির বমন করিতে লাগিল। কেছ কেছ বা শুলের স্মাধাতে বিদীর্ণয়দয় হইয়া, ভূমিতে নিপাতিত হইল। কেছ কেছ বা তদীর শ্রজালে এরপ সমাচ্চল হইল, যে, তাহাদের শরীরে কুমাপি রন্ধুমাত রা চিচনমাত্রও স্থান রহিণ না : একবারেই তাহারা যেন শর্ময় হইয়া উঠিব। যে দক্ষ অস্ত্র দেনাগণের পশ্চাতে গাকিয়া, তাহাদিগকে চালনা বা তাহাদের পৃষ্ঠপোষণ করিতেছিল, তাহাদের মধ্যে কাহারও বাহ ও কাহারও গ্রীবা. দেবীর শরপ্রহারে ভিন্ন হইয়া গেল: কাহারও মত্তক ধরাশারী হইল: কাহারও বা মধাস্থল তিনি বিদারিত করিলেন। তাঁহার দারুণ প্রহারে জঙ্গা ছিন্ন ভিন্ন হইলে, কোন কোন মহাস্থারের। ধরাতলে পতিত হইল। দেবী কাহাকে অন্তপ্রহারে একবাছ, একচরণ ও একচকু এবং কাহাকে 🕏 বা ছই থণ্ড করিলেন। কোন কোন অমুরগণের শির ছিন্ন ছইলে, ভাছাদের কবৰ, অর্থাং মন্তক্হীন দেহ দক্ত পতিত হইয়া, পুনরায় উত্থানপূর্ব্বক উৎকৃত্ত আয়ুধ দক্ত গ্রহণ ক্রিয়া, দেবীর সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিল। কেহ কেহ বা তদবস্থায় খ্জা, শক্তি ও ঋষি হত্তে শ্লিম আশ্র করিয়া, তালে তালে নৃত্য করিতে আরম্ভ করিল এবং কেহ কেহ বা দেবীকে ০ৡ তিৡ বলিতে লাগিল। যেখানে সেই তুমুল সংগ্রাম সমুপণ্ডিত হইয়াছিল, সেখানকার ভূমি ৰবীর নিপাতিত রাশি রাশি রথ, হঙী, অখ ও অফ্রগণের পতনে অগম্যা হইয়া উঠিল। শাণিতৌবনশানিনী মহানদী সকলও সদ্য হতী, অখ ও অন্তর্গৈত্তের মধ্যে প্রবাহিত হইল। কি বেমন রাশি রাশি তৃণ কার্ত তৎক্ষণে দগ্ধ করে, সেইকপ দেবী অধিকা ক্ষণমধ্যেই সেই অহার-াণের স্থবিপুল সৈতা ক্ষিত করিলেন। তাঁহার বাহন সিংহ কেশররাশি উদ্ভ করিয়া, গভীর-ার্জন-বিদর্জন-পুরঃসর অন্থরদিগের শরীর হইতে যেন সাক্ষাৎকারে বল্পুর্কক প্রাণ আকর্ষণ দ্রিতে লাগিল। দেবীর নিখাপোৎপন্ন উনিধিত দৈন্ত সকলও এরপে যুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিল, ্ব, দেবগুৰ অর্গে থাকিয়া, ভাহাদের ত্তব ও তাহাদের উপরি পুস্বরৃষ্টি করতে লাগিলেন।

ইতি মহিধাসুর সৈক্তনিধন নাম ধ্যুদীতিতম অধ্যায়।

#### ত্ত্যেশীতিত্ম অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, দৈশ্ব সকল নিহত হইতেছে, দর্শন করিয়া, দেনাপতি মহাল্লর চিকুর কাতকোধ ছইয়া, যুদ্ধ করিবার অভিলাষে দেবীর সকাশে গমন করিল এবং জলধর যেমন মেদ্রপর্কতের শিথরদেশে জলবর্ষণ করে, তক্রপ ভাষার উপরি শর বর্ষণ করিতে লাগিল। তথন দেবী অবলীলাক্রমে ভাদীয় শর্র্ন্তি নিরাক্ত করিয়া, বাণপরম্পরাপ্রেলগপূর্কক তাহার অইসমূহ ও সাং- থিকে সংহার এবং তৎক্ষণাৎ তাহার ধন্ম ও সম্চ্ছিত্র ধরজ ছেদন করিয়া ফেলিলেন।ছেদন করিয়াই, তাহার সর্ক্শরীরে বাণ সকল বিদ্ধ করিতে লাগিলেন। তথন সে হতসার্থি, হতরণ, হতার ও হতধন্ম ইয়া, ওজ্ঞা-চর্ম-ধারণপূর্কক দেবীর অভিম্বে ধাবমান ইইল এবং ভীক্ষধার এজা দারা সিংহের মন্তক আহত করিয়া, অভীব বেগভরে দেবীর সব্য ভূজে আঘাত করিল। ন্পনক্ষন! তদীয় ভূজ প্রাপ্তমাত করিল। ন্পনক্ষন! তদীয় ভূজ প্রাপ্তমাত করিল। ক্রমন করিয়া, ভেদকালীর প্রতি নিক্ষেপ করিল। তথন, সেই শূল তেজঃপ্রে ভাজারানান ইয়া, আকাশ হইতে রবিবিহের ভায়, আগ্যন করিতে লাগিলে, দেবী তাহা দর্শন করিয়া, ভাপনার শূল মোচন করিলেন। তৎকণাৎ সেই মহান্তর আপনার শ্লের সহিত, দেবীর ক্র শূলাঘাতে শত শত থতে বিভক্ত হইয়া গেল।

মহিধের চমুপতি মহাবীর চিকুর নিহত হইলে, দেবগণ-নিক্দন চামর গলারোহণে সমাগত ছইল এবং দেবীর উদ্দেশে শক্তি মোচন করিল। তিনি সম্বরে ছক্কারপরিহারণহকারে সেই শক্তিকে অভিহত ও প্রভারহিত করিয়া, ভূপ্ঠে পাতিত করিলেন। শক্তি ভগ্ন হইয়া, ভূপ্ঠে পতিত হইল, দর্শন করিরা, চামর ক্রোধসময়িত হইয়া, শূল প্রয়োগ করিল। দেবী শ্রণমূহ-সন্ধানপুর্ধক ভাহাও ছেদন করিয়া ফেলিলেন। তথন তদীয় বাহন দিংহ সমুৎপতিত হইয়া, অস্ত্রের গল্পের কুস্তাস্তরে আরোহণ করিয়া, সেই চামরের সহিত তুমূল বাত্যুদ্দে প্রবৃত্ত হইল। অসনস্তর উভয়ে যুদ্ধ করিতে করিতে, হস্তী হইতে মহীতলে অবতরণ করিয়া, অতিমাত্র রোধভরে অতীব দারুণ প্রহার সহকারে যুদ্ধ করিতে লাগিল। অনস্তর মৃগারি সবেগে আকাশে উৎপতন-পূর্বক তথা হইতে পতিত হইয়া, করপ্রহারপুরঃ দর ভাহার মন্তক পৃথক্ করিয়া দেশিল। তথন দেবী শিলা-বৃক্ষাদি-প্রহারে উদ্প্রনামক সেনাপ্তিকে সংহার করিয়া, দ্স্তাথাত, মুট্যাবাত ও চপেটাবাত বারা করালনামক অন্তত্তর চম্পতিকে নিপাতিত, ক্রোধভরে পদাপ্রহারপুরঃদর উদ্ধতনামক আব এক দেনানীকে চুণিত, ভিলিপাণ দাবা ভাষরকে ভূপাতিত, শ্রসমূহ দাবা ভাম ও অন্ধনামক অস্ত্রকে মৃত্যুর কবলদাংকৃত এবং গ্রিশূল দারা উগ্রাভি, উগ্রবীধা ও মহাহত্ নামক অপর অস্তর এরকে নিহত করিলেন। অনস্তর সেই তিনেতা পরমেখরী অসির আঘাতে বিড়ালের মন্তক শরীর হইতে ভূপাতিত করিয়া, হর্ছর ও হন্মুৰ নামক অস্করম্বরতে শ্রপরপরার আঘাতে স্বালয় পাঠাইয়া দিলেন।

এইরণে অকীর সৈন্ত ক্রমশ: অতিমাত্র কর পাইতে লাগিলে, মহিষাস্থর মাহিষরপ ধারণ করিরা, দেবীর সেই নিখানোৎপর সৈন্তানিগকে ত্রাসিত করিতে লাগিল এবং কাহাকে তুও প্রহারে, কাহাকে থ্রনিকেপণহকারে ও কাহাকে লালুলের আঘাতে তাড়িত এবং কাহাকে বা শুল্বরপ্রহারে বিনারিত করিন। অনন্তর কাহাকে বেগ ঘারা, কাহাকে গর্জন ঘারা, কাহাকে ত্রমণ ঘারা ও কাহাকে বা নিখাগপবন ঘারা ভূতলে পাতিত করিতে লাগিল। এইরপে দেবীর সেই প্রমণ সৈন্তানিগকে নিপাতিত করিরা, ভণীয় নিংহকে সংহার করিবার জন্ত স্বেগে ধাবমান হইল। তদ্ধনিন দেবীর অন্তরে ত্রোধ পন গ্রহণ করিবেল, সেই মহাবার্গ্য অন্তর্গর জাতকোধ

হইয়া, পুর প্রহারপুর: দর মহীতন কোনিত ও অভ্যুক্ত পর্মত দকন দ্রে অপদারিত করিয়া, গর্জন করিতে লাগিল। দে দবেগে ভ্রমণ করাতে, পৃথিবী অভিশন্ত ক্র ও বিশীণ হইরা উঠিলেন। তাহার লাকুলে আহত হওয়াতে, দরিংপতি দর্মতোভাবে প্লাবিত হইন। তাহার শৃক্ষাননে নেব দকন ছিল্লভিল ও পণ্ড পণ্ড হইয়া গেল। তাহার নিখানপ্রনে পরিচাণিত হইয়া, শত শত পর্মত আকাশ হইতে নিপ্তিত হইতে লাগিল।

এই রূপে দেই মহিষাস্বর ক্রোধে গর্জন করিতে করিতে, সালিগ্যে আগমন করিতে লাগিলে, দেবী চণ্ডিকা দর্শন করিয়া, তদীয় সংহারার্থ রোষাবিষ্টা হইলেন। তথন তিনি পাশান্ত্র নিক্ষেপ করিয়া, ভাহাকে বন্ধন করিলেন। সে বন্ধ হইয়া, মহিষরপ তাাগ করিয়া, যেমন সিংহরপ ধারণ করিল. মহামারাও তেমনি তথনি তাহার মন্তক ছেদন করিলেন। অহরও সঙ্গে সঙ্গেই খড়গাপাণি শুরুষ-মৃত্তিতে অধিকার দৃষ্টিপথে উপস্থিত হইল। অনন্তর দেবী শরপরস্পরা প্রয়োগপূর্কক সেই পুন্ধকে ছেদন করিলেন। তাহার থড়া চর্দ্ধিও সঙ্গেল করিলেন। তথন সে মহামাতলম্বিতে প্রত্তিত্ব হইয়া, ভাতাবি থড়া চর্দ্ধিও সঙ্গেল আকর্ষণ করিয়াই, গর্জন করিতে লাগিল। দেবী আকর্ষণ দমকালেই থড়া ধারা দেবীর বাহন সিংহকে আকর্ষণ করিয়াই, গর্জন করিতে লাগিল। দেবী আকর্ষণমকালেই থড়া ধারা তদায় ভাতাবিও করিয়া, তালাকা কুন্ধ করিছে লাগিল। তদর্শনে দেবী জগলাতা চিত্তিকা অমৃত পান করিয়া, অরুণলোচনে ক্রোধন্তরে বারবার হান্ত করিতে আরম্ভ করিলেন। মহাহ্মর মহিষত্ত বার্বীয়ামদে সমুদ্ধত হইয়া, গর্জনপুরঃসর শৃক্ষমন্ সাহায্যে ভূধর সকল উৎপাটিত করিয়া, তাহার ওলেশে নিক্ষেপ করিতে লাগিল। দেবী শর্লপারা প্রয়োগ করিয়া, তাহার প্রেরিত তৎসমন্ত পর্বত চুণ করত, মদোদ্বত লোহিত বদনে গলাদ বচনে তাহাকৈ কহিলেন, মুঢ়! যাবৎ আমি মধুপান না করিতেভি, তাবং আর ক্ষণকাণ গর্জন করিয়া লও। অনন্তর আনি তোনারে এখনই সংহার করিলে, দেবগণ গর্জন করিবেন।

ঋষি কহিলেন, এই বলিয়াই তি ন লক্ষপ্রদানপূর্বক উর্ক্ষে উথি গ হইয়া. মহিষাপ্রেরে উপরি আরোহণ ও পাদ দ্বারা তদীয় কঠদেশ আক্রমণ করিয়া, শুণ দ্বারা হাহারে ভাড়না করিলেন। তথন দে দেবীর পদ দ্বারা আক্রান্ত হইয়া, নিজম্থ হইতে মহিষাপ্রের অর্জাক বাহির করিলে, দেই দেবী অন্ধিকা অভিমাত্র বীর্যপ্রকাশপূর্বক তৎক্ষণাৎ হাহাকে বন্ধ করিলেন। দে অর্জনিক্রান্ত হইয়াই, যুদ্ধ করিতে লাগিল। দেবী তথন স্থবিপুল থড়োর আঘাতে শিরক্ষেদন করিয়া, তাহাকে নিপাভিত করিলেন। তদর্শনে সমুদায় দৈহাদৈন হাহাকার সহকারে পলায়্মান হইল। দেবগণ ও দিবা মহর্ষিগণ সকলেই অভিমাত্র হ্রাবিট ইইয়া, দেবীর তাব করিতে লাগিলেন। গন্ধর্মপ্রিরা গান আরম্ভ করিল এবং অধ্যরোগণ নৃত্য করিতে লাগিল।

ইতি মহিধাসুরবধনাম তাশীতিতম অধায়।

### চতুরশীতিত্য অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, দেবী মহামায়া অভিমাত্রবীর্যাবিশিষ্ট ছরায়া মহিবাসুরকে সদৈজে বিনাশ করিলে, ইক্সপ্রমুখ অমরবর্গ অভিমাত্র আফলাদ অমুভব করিলেন। পুণকোলামবশতঃ তাইা-দের দেহ অভিশার প্রীভিভাত হইয়া উঠিল। তথন তাইারা প্রণতিবশে নতগ্রীব ও নতক্ষম ইইয়া, বক্ষ্যমাণ বাক্যে দেবীর তাব করিতে লাগিলেন যে দেবী স্বকীয় শক্তি সহায়ে এই বিশ্ব ব্রহ্মাণ্ড প্রস্থাক করিয়াছেন; যাবতীয় দেবভার শক্তিসমন্তিই বাহার মূর্ত্তি; সমুদায় মহর্ষি ও অমরবর্গ বাহার পূঞা করেন; আমরা ভিজ্ঞাবে তাহারে প্রণাম করিতেছি। তিনি আমাদের

মঙ্কলপরম্পারা বিধান কঙ্কন। বাঁহার প্রভাবের ও বলের তুলনা নাই; সেইঞ্জ ভগবান আনতঃ, ব্রহ্মা ও মহাদেবও বর্ণন করিতে সমর্থ হন না, সেই চণ্ডিকা নিধিল জগতের পরিপালন ও বাব-তীয় অনঙ্গণ নির্বাদে প্রবৃত্তা হউন। যিনি স্কৃতিগণের সাকাৎ 🕮 ; যিনি গুড়তিগণের মৃতিমান্ অণক্ষী; যিনি ক্লতবৃদ্ধিগণের হৃদরে বৃদ্ধি; যিনি সাধুগণের শ্রদ্ধা; যিনি সংকুণোত্তব ব্যক্তিগণের শজ্জা, সেই আপনাকে আমরা প্রণাম করিতেছি; আপনি এই বিশ্ব প্রবিপাশন করুন। দেবী। তোমার এই মৃষ্টি চিস্তার অতীত এবং তুনি বে বীর্য্যনহায়ে অস্তরগণের ক্ষয় করিয়া থাক, ভাহাও বেরপ বিপুল, সেইরপ লোকাতীত। আবার, তুমি প্রত্যেক যুদ্ধেই যেরপ অনুষ্ঠান করিরাছ, তাহাও সমুদার দেবগণ ও অস্ত্রগণ ইত্যাদি যাবতীয় গণকেই অতিক্রম করিয়াছে; কেহই তদমুরপ অমুষ্ঠানে সমর্থ হন না। অত্তব আমরা আর ঐ সকলের কি বর্ণনা করিব ? তুমি সমস্ত ব্রুগতের উদ্ভবক্ষেত্র; সন্থ রক্ষ তম এই গুণত্রর তোমার স্বরূপ। তোমার মহিমার পার নাই। হরিহরাদিরাও তোমার প্রকৃত স্বরূপ পরিজ্ঞাত নহেন। রাগাদি দোষ সমস্ত তোমার বিদীমার যাইতে পারে না। তুমি সকণের আল্লেয়। এই অথিণ জ্বগৎ তোমারই অংশ। তোমার জন্ম নাই, মৃত্যুও নাই। তুমিই আদ্যা ও প্রমা প্রকৃতি। যাহার উচ্চারণমাত্রেই সমস্ত স্করগণ সম্দাম যজে তৃপ্তিশাভ করেন, তুমি দেই সাহা। তুমিই পিতৃগণের তৃপ্তিহেতু। সেইজ্লভ লোকে তোমাকে স্বধা বলিয়া থাকে। তুমিই মুক্তির হেতু। তোমার স্বরূপ চিস্তা করিয়া, অব-ধারণ করা যায় না। তুমি মহাব্রতা। দেবি। তুমি পরাংপরম্বরূপিণী বিদ্যারপিণী ভগব্তী। এইজ্ঞ মুনিগণ মোকলাভকামনায় ইন্দ্রিয়গ্রান সংঘত করিয়া, তোমার সাধনা করেন। তুমি ত্রিবেদ-স্বরূপা। তুমি স্থবিমল ঋগ্বেদ ও যজুর্বেদের নিধান। তুমি উদাতাদি স্বরুদংযোগে সমুচ্চা-রিভ রমণীয় পদ ও পাঠদম্পল্ল সামবেদের মাশ্রয়। তুমি দেবী ভগবভী। তুমি তিন বেদ। তুমি সমত্ত জগতের পরমার্ত্তি বিনাশ করিয়া পাক। দেবি ! যাহা দারা যাবতীয় শাস্ত্রদার বিদিত হওয়া যায়, তুমি সেই মেধা। তুমি ছুর্গতি দূর করিয়া থাক। তুমি অজীবছুস্পার ভবপারাবারের তরণী। তুমি কিছুতেই নিপ্তা নহ। বিনি কৈটভনিস্থান বাস্ত্রণেবের স্কার্থেই একমাত্র অবস্থিতি করেন, তুমি দেই লক্ষ্মী এবং থিনি মহাদেবের হৃদয়চারিণী, তুমি দেই গৌরী। তোমার যে বদন-মণ্ডল স্মিত্বিক্ষিত ও প্রমনির্মালস্বরূপ; যাহার কান্তি কনক অপেকাণ্ড কননীয়; এইজন্ত যাহা সকল লোকেরই মনোহর এবং যাহা পৌর্ণমাদী চক্রবিষের সর্বাংশেই অনুকারী, সেই বদন-মণ্ডল বিলোকন করিয়াও, মহিধামুর সহসা রোধবশ হইয়া, তোমারে প্রহার করিয়াছিল; ইহা অপেকা অভিমাত বিশ্বয়ের বিষয় মার কি হইতে পারে ? দেবি ! আবার, তোমার বদনমণ্ডল যথন কোপবশে অকুটি করাল হইয়া, উদীয়দান শশাকের দদৃশ র জমুর্তি ধারণ করিয়াছিল, তথন তাহা দর্শন করিয়াও যে, মহিষাম্বর তৎক্ষণেই প্রাণ পরি গ্রাগ করে নাই ইহাও মতীব বিচিত্র। কেননা, কুপিত ক্লতান্তকে দর্শন করিলে, কেই বা বাহিয়া থাকিতে পারে ? দেবি ! তুমি পরাং-পরস্বরূপিণী। সকলের মঙ্গল জন্ম প্রদল্লা হও। তৃণি কুপিতা হইলে, যে, তৎক্ষণেই কুলসকল বিনাশ করিয়া থাক, ইহা তখনই জানিতে পারা গিয়াছে। কেননা, তুমি কোপবশে এইমাত্র এই মহিষাস্থরের স্থবিপুল দৈন্ত বিনষ্ট করিলে ! তুমি সর্বাদা যাহাদের প্রতি প্রসন্না হইরা, অভাদর বিধান কর, ভাহারাই জ্বনপদ সকলের সবিশেষ সন্মানভাগন হয়। তাহারাই পুথিবীর যাবতীয় ধন অধিকার করে। তাহারাই কীর্তিমান হইয়া থাকে। তাহালের ধর্মানি চতুর্বর্গও কখন অবসন্ম হয় না। তাহারাই ধস্ত। তাহাদেরই পুত্র, কণত্র ও ভূতাবর্গ বণীভূত হইরা থাকে। দেবি ! অুকৃতী ব্যক্তি ভোমার প্রসাদে প্রতিদিন আদরসহকারে সর্কানই ধর্মসন্মত কার্য্য সকলের অনুষ্ঠান করিয়া অর্গে গমন করে। তুমি ত্রিলোকেরই মঙ্গলবিধান করিয়া থাক। তুর্গে। ভোমাকে স্বরণ করিলে, ভুমি যাবতীয় প্রাণীর ভয় হরণ কর। আবার, আকপট ভাবে ভোমার শ্বরণ করিলে, তুমি অতীব ওভমতি প্রদান করিয়া থাক। তুমি দারিভ্রংথ ও ভর দক্র হরণ কর। তোশা

ভিন্ন অন্ত আর কে সকলের সর্কবিধ উপকারকরণার্থ সর্কাদাই দ্যার্দ্রটিতা হইরা আছে ? এই অহরগণ নিহত হওয়াতে, অদ্য অধিল বিখের স্থুখ সঞ্চিত্রত হইল। ইহারা বেন জার পাপ করিরা নরকে গমন না করে; প্রভাত, সংগ্রামে কলেবরপরিহারপুর:সর অর্গ বেন প্রাপ্ত হয় টিহাই তোমার है छ।। এই ইচ্ছার বশবর্তিনী হইয়াই, তুমি সংসারের শত্রু সকলের সংছার করিয়া থাক। ভূমি দৃষ্টিপাতমাত্রেই অহারদিগের সকলকে তৎক্ষণে একবারেই ভদ্ম করিতে পার। কিন্তু তাহা না করিয়া, তাহাদের প্রতি শস্ত্র সকণ প্রয়োগ করিয়াছিলে। ইহার কারণ কি, না, শক্রগণ শল্পপর্শে বীতপাপ হইয়া, ভত লোক সকণ লাভ করক। তাহাদের প্রতি ভোমার এইপ্রকার সাধীয়দী মতি সমুদ্ধত হইয়াছিল। দেবি ! তোমার থজা হইতে যথন অভাগ্র প্রভারাশি প্রক্রিত এবং তোমার শূল হইতেও গথন একপ দীপ্তিপুঞ্জ বিনিঃস্ত হইয়াছিল, তথন তাহা দর্শন করিয়াই, যে অন্তরগণের দৃষ্টি দক্ষ হইয়া যায় নাই, ইহার কারণ কেবল ইহাই বোধ হয়, বে, ভাহারা ভোমার অমিশ্ব-কিরণশালী চল্লের স্থায়, স্কুমার বদনমণ্ডল বিলোকন করিয়াছিল। তাংগতেই এরণে রক্ষা পাইয়াছে। দেবি ! তোমার চরিত্র ছর্ব তগণের ছষ্ট চরিত্র বিনষ্ট করে। ত্রিভূবনে কুত্রাপি বাহার তুলনা ইয় না এবং চিন্তা করিয়াও যাহার স্বরূপ নির্দ্ধারণ করা যায় না, ভোমার সেইরূপও ছবু বিগণের বুত্তবিনাশে সমর্থ হইয়া থাকে। অধিক কি, তোমার বীধ্যও দেবগণের পরাক্রমহারী অমুর্দিগের নাশ করিতে পারে। তথাপি, তুমি দেই শত্রুগণের প্রতি ঈদুশী দয়া প্রকৃটিত করিলে। ভাহারা স্বর্গলাভ করিল! দেবি! সংসাবে কাহারই বা সহিত তোমার এই পরাক্রমের তুলনা হইতে পারে ? আবার, তোমার রূপ যেরূপ শত্রুগণের ভয়কারা, সেইরূপ সকল লোকের জন্ম-প্রাণ-মনোহারী। তাহারই বা তুলনা কোণায় ? আবার, তোমার অন্তরে দয়া ও সমরনিষ্ঠ্রতা উভয়েই একাধারে বিরাজ করিতেছে। ত্রিভূবনের মধ্যে কেবল ভোমাতেই এইরূপ প্রস্পার-বিক্ষম গুণ সকলের অনিষ্ঠান দেখিতে পাওয়া যায়। তুমি শত্রুদিগকে স্করেলাকে প্রেরণ করিয়া, তাহাদের হইতে সমুদ্ভ ত ভয়ে আমানিগকেও উদ্ধার করিলে। অতএব তোমাকে নমস্কার।

দেবি ! তুমি আমাদিগকে শ্ল ঘারা রক্ষা কর। অধিকে ! তুমি আমাদিগকে খড়াল ধারা রক্ষা কর। তুমি ঘণ্টাশকা ও ধনুইক্ষার থারা পালন কর। চণ্ডিকে ! তুমি আমাদিগকে উত্তর, পূর্ক, দকিল, পশ্চিম সকল দিকে আত্মশূল পরিভ্রামিত করিয়া, রক্ষা কর। তোমার যে মতিশাও ও মতিঘোর রূপ সকল তৈলোকেঃ বিচরণ করিতেছে, তাহাদের সকলের ঘারা আমাদের ও পৃথিবীর রক্ষা কর। অধিকে ! তোমার করপল্লবে থড়া, শ্ল ও গদাদি যে সকল অন্ত আছে, তাহাদের ঘারা আমাদের স্বতোভাবে রক্ষা কর।

ঋষি কহিলেন, স্বলণ এইরপে তব করিয়া, নন্দন কানন-সমৃত্ত দিবা কুষ্ম ও দিবা গ্ৰাম-লেপন দারা তাঁহার অর্জনা এবং ভক্তিভরে সকলে দিবা ধূপ থারা সেই জলনাঞীকে ধূপিতা করিলেন। তথন তিনি প্রসাদোল্নী হইলা, সেই প্রণতিপরায়ণ দেবগণকে কহিলেন, ফিলশগণ! তোমরা সকলে আমার নিক্ট অভিবাঞ্চিত বর প্রার্থনা কর। তোমরা এইরপে তব করিয়া, আমার বে বিশিষ্ট বিধানে পূজা করিয়াছ, তাহাতে আমি তোমাদের প্রতি অতিমাতা প্রীতিমতী হইয়াছি। এইজ্লা তোমাদিগকে বর দিব।

দেবগণ কহিলেন, ভগবতী আপনি আমাদের সকলই করিয়াছেন। কিছুই অবশিষ্ট রাখেন নাই। যেহেতু, আপনি আমাদের শক্র মহিষাগ্রহকে নিহত করিলেন। তথাপি, যদি মহেশরী আমাদিগকে বর দেওয়া উচিত বোধ করেন, তাহাহইলে, আমরা যখন যখন মরণ করিব, তখন তখনই বেন আমাদের পরম আপদ সকল এই রূপে বিনাশ করেন। আর, হে অমলাননে! বে সকল ব্যক্তি আমাদের প্রথিত এই তাব ছারা ভোমার তাব করিবে, আমাদের প্রতি প্রসন্না হইরা, বিত্ত, ঋদি ও বিভবরাশি প্রদানপূর্ণের তাহাদের প্রজ্ঞ দারানি সম্পদের বৃদ্ধিধাননার্থ দর্মণা উমুখী হইবে।

শ্বি কহিংশন রাজন্! দেবগণ আপনাদের ও সম্দার জগতের নিমিত্ত এইরপে প্রান্ত্র করিলে, দেবী ভদ্রকানী, ভাহাই হইবে, বলিয়া, অন্তর্হিণা হইবেন । রাজন্! পুর্ব্বে তিনি জগণতেরের হিত্তকামনা-বশবর্ত্তিনী হইরা, দেবগণের শরীর হইতে থেরপে প্রান্তর্ভূতা হইরাছিলেন, তাহা এই কহিশাম। প্নরায় তিনি শুস্ত, নিশুস্ত ও অভ্যান্ত গৃত্ত দৈ ত্যগণের সংহার, লোক সক্লোক রক্ষা ও দেবগণের উপকার করণার্থ গৌরীদেহে সমুদ্তা হইরাছিলেন। তাহারও বৃত্তান্ত আদ্যোপাত্ত ভোমার নিক্ট কহিতেছি, শ্রবণ কর।

ইতি দেবগণের দেবীন্তব নাম চতুরণীতিত্ম অধ্যায়।

#### পঞ্চাশীতিত্য অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, পূর্বে শুন্ত ও নিশুত ইহারা উভয়ে মদবলের আবেশ প্রযুক্ত শচীপতির নিকট ছইতে তৈশেক্য ও ষজভাগ উভয়ই হরণ করিয়া লইয়াছিল। অধিক কি, ভাহারাই সূধ্য হইয়া-ছিল। তাহারাই চক্রের কার্য্য করিত। তাহারাই কুবের, যম ও বরুণের অধিকার আয়ুসাৎ করিয়াছিল। তাহারাই বায়ুর ও অগ্নির কার্যা করিত। ফলতঃ, তাহারা ছই জনে দেবপণের সকলকেই পরাজিত করিয়া, রাজ্যভ্রষ্ট ও অধিকারচ্যত করত, স্বর্গ হইতে তাড়াইয়া দিয়াভিল। দেবগণ মহারম্ম কর্তৃক এইরপে নিরাক্ত ও পর্যুদন্ত হইয়া, সেই অপরাজিতা দেবী ভগবতী হুর্গাকে অরণ করিতে লাগিলেন, দেবি ! তুমি আমানিগকে বর নিয়াছ, যে, আপদে পঙ্রা ম্মরণ করিলেই, তৎক্ষণাৎ তোমাদের পরম আপৎ বিনাশ করিব। অনস্তর তাঁহারা সকলে এরপ कुछनः कन्न रहेना, नगाविताल रिमाला गमनपूर्वक এर विलया, त्यर विक्रमात्रा (पवीत छव कतिएक नांशितन, ज्ञि तनती, व्यर्शा नोनांतिश्रहमश्री, ज्ञि महाताती व्यर्शा नकतनत श्रकानकांत्रिये. তুমি শিবা অর্থাৎ সকলের মঙ্গলবিধায়িনী। তোমাকে নমস্বার করি। তুমি প্রকৃতি অর্থাৎ ব্রঙ্গাদ্বিরও স্ষ্টি করিয়াছ। তুমি সকলের গুভসজ্যটন করিয়া থাক। এই কারণে আমরা প্রণামপুর্বাক নিয়ত চিত্তে তোমারে নমস্বার করিতেতি। তুমি সংহাররপণী। তুমি ওদ্ধার্মী। তুমি সক-লের ধাত্রী, তোমাকে নমস্কার। তুমি পরমজ্যোতিশ্রী; তুমি সকলের আমনলবিধায়িনী বা আনন্দরপিণী। তুমি সকলের স্থাস্তরপা; তোমাকে নমস্বার। তুমি কল্যাণী; তুমি সকলের বৃদ্ধিস্বরূপা: তুমি অণিমাদি অষ্ট দিনি। তোমাকে নমস্বার, নমন্বার। তুমি অন্তরগণের শক্তি; তুমি নরপতিগণের লক্ষী: তুমি বিশ্বরূপা; তোমাকে নমস্বার। তুমি ছুর্গা। তুমি ছুর্গমে পতিত ব্যক্তিদিগকে উদ্ধার করিয়া থাক। তুনি ব্রহ্মরূপা। তুনি সর্বকারিণী। তুনি সকলের প্রতিষ্ঠা। তুমি তমোরপিণী। তুমি দর্কপ্রচ্ছাদকস্বরপিণী; তোমাকে দতত নমস্বার করি। 'তোমার ভার স্থলরী আর কেহ নাই। তুমি রৌদ্ররণা; তোমাকে নমস্বার, নমস্বার। তুমি জগতের আধারশক্তি বা প্রাণশক্তি। তুমি স্বয়ং প্রকাশস্বরূপিণী। তুমি সাক্ষাং ক্রিয়াশক্তি। ভোমাকে नमकात, नमकात।

যে দেবী সর্বভ্তে বিষ্ণুমায় নামে কথিতা হইয়া থাকেন; যাঁহার মায়ায় সমন্ত সংগার আয়বিশ্বত হইয়া আছে, তাঁহাকে নমস্বার, তাঁহাকে নমস্বার, তাঁহাকে নমস্বার, তাঁহাকে নমস্বার, তাঁহাকে নমস্বার, তাঁ ঐ ঐ । বে দেবী সর্বভ্তে বৃদ্ধিরণে বাস করিতেছেন. তাঁহাকে নমস্বার, ঐ ঐ ঐ । বে দেবী সর্বভ্তে বৃদ্ধিরণে করিতেছেন, তাঁহাকে এ ঐ ঐ । বে দেবী সর্বভ্তে স্থা-

রপে ঐ প ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে ছায়ারপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে শক্তিরপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে ভ্ষারপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে ক্ষারপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে ক্ষারপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে লাজাও লাভিরপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে শান্তিরপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে শান্তিরপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে কাজিও লাল্লীরপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে বৃত্তিরপে ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে দ্বার্রপ ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে দ্বার্রপ ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে দাভ্রপ ঐ ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে ভাত্তিরপে ঐ ঐ। যে দেবী ই শ্রিমাগণের অধিঠা ঐ। ও সমুদার প্রাণীর প্রবৃত্তি নিবৃত্তির কারণ, তাঁহাকে ঐ ঐ। যে দেবী চৈত্তারপে সমুদার লগং বাাপ্ত করিয়া আছেন, তাঁহাকে ঐ। যে দেবী সর্কভ্তে সাক্ষার নমস্বার, নমস্বার।

পূর্ব্বে স্থরগণ অভীষ্টসিন্ধির জন্ম থাহার শুব করিয়াছিলেন এবং দেবরাক পরং অন্ত দিনে থাহার উপাসনা করেন, বিনি সম্পায় মঙ্গলের কার। ও থিনি সকলের ঈশ্বরা; তিনি আমাদের মঙ্গলপরশ্বরা ও শুভপরম্পরা বিধান ও সম্পায় আপদ ধ্বংস করেন, থিনি সকলের নিম্থী; স্থরগণ সম্প্রতি উদ্ধৃত দৈত্যগণ কর্ত্বক সম্ভাপিত হট্যা, থাহারে নমস্বার করিতেছেন, আমরা ভক্তি বিন্ত্রম্প্রতি অন্ত করিবাধাত্র বিনি তংক্ষণে আমা দর সম্পায় বিপং বিনাশ করেন। তিনি অন্য আমাদের মঙ্গলিবধান কর্ত্বন।

শ্বি কহিলেন, নৃপনন্দন। দেবাণ এইরপ স্তবানিযোগে প্রবৃত্ত হইলে, দেবী পার্ক্তী তাঁহাদের সেই স্থান দিরা, জাহুবীতে সান করিতে গমন করিলেন। ঘাইবার সময় তাঁহানিগকে বলিতে
লাগিলেন, তোমরা কাহার স্তব করিতেছ? এই কথা বনিবামাত্র তাঁহার শ্রীরকোষ হইতে
শিবা সমৃত্তা হইরা, কহিলেন, শুন্ত ও নিশুন্ত সমরে পরাজয়পূর্বক স্থা হইতে নিহা শিত করিয়াছে। তজ্জ্লা দেবগণ সমবেত হইয়া, আমারই স্তব করিতেতেন। পার্ক্তীর শ্রীরকোষ
হইতে সেই অধিকা বিনিঃস্তা হইলেন; এইপ্রা তাঁহার নাম কৌষ্কী বলিয়া সমন্ত সংসারে
পরিগণিত হইয়া থাকে।

সেই কৌষিকী বিনির্গতা হটলে, পার্মতী ক্লফাম্র্তি পরিগ্রহ করিলেন। উহার নাম কালিকা বিশিয়া, সংসারে বিখ্যাত। এই কালিকা হিমালয় আশ্রম করিয়া আছেন। অনন্তর দেবী অধিকা পরম স্থমনোহর রূপ ধারণ করিলে, গুল্জ নিগুল্ভের ভূতা চণ্ড ও মুখ্ড তাহা দর্শন করিয়া, শুল্ভকে গিয়া বলিল, মহারাজ ৷ অতীবস্নমনোহরা কোন রমণী হিমাচল উদ্ভাদিত করিয়া, তথায় বিরাজ করিতেছে। কেহ কথন কুত্রাপি দেরপ উৎক্ল রপ দর্শন করে নাই। অভএব অহারখর। त्मेर (मरी, तक, कारून वर: गहेशा चास्न। तहे ठार्सकी वाखिविकरे खीशन मध्य तब्रवक्ता। তাহার শরীর-প্রভার সমুদায় দিক আলোকময়ী হইয়াছে। সে হিমাপয়ে এখনও রহিয়াছে। তাহাকে দর্শন করিতে আবলা হউক। প্রভো। গজ ও অখাদি যে কিছু মণি ও রত্ন পরম্পরা ত্রৈলোকো প্রাপ্ত হওয়া যায়, দে সমস্তই এখন আপনার গৃহে আছে। আপনি পুরন্দরের নিকট ইইতে গ্লব্ড ঐরাব্তকে আনয়ন করিয়াছেন। বৃক্তরত্ব পারিলাত ও অধরত্ব উচৈঃ শ্রবাও পাপনার গতে বিরাজ করিতেছে। স্বরং পিতানহের অধিকৃত রত্নভূত, হংসমূক বিমানও আনম্বন করিয়া, আপনার অকনে রাখা হইয়াটে। ধনেখারের অধিকত এই মহাপলনানক নিধিরত্বও আপনি আনম্বন করিয়াছেন। স্বরং দরিৎপতি আপনাকে ঐ অমানপঙ্কলা মালা প্রদান করিয়া-ছেন। বাহা কাঞ্চন প্রাপব করিরা থাকে, সেই বরুণের ছত্ত্ত আপনার গৃহে আছে। পূর্কে বাহা জীলাপভিত্ন অধিকারে ছিল, সেই এই জন্দন-রত্বও আপনার আয়ত্ত হইয়াছে। ওটিল, আপনি ঘমের উৎক্রান্তিদানায়ী শক্তিও আনম্বন করিয়াছেন। আর বক্লণের পাশ ভবনীয় লাতার করণত হইরাছে। তথাতীত, তিনি সাগ্রসভূত অস্তাম্ভ সমত রত্নতিও অধিকার করিয়াছেন। অগ্নি অকীর দাহিকাশক্তি খারা বে ছইখান বন্ধ রচনা করিয়াছেন, তাহাও তিনি আপনাকে দিয়াছেন। দৈতোক ! এইরূপে, সমস্ত রক্কই আপর্নি আহরণ করিয়াছেন। অভএব কিজন্ত এই কলাণী স্ত্রীরত্নকে গ্রহণ না করিভেছেন ?

ঋষি কহিলেন, শুম্ভ চণ্ড ও মুণ্ডের এই কণা কর্ণগোচর করিয়া, মহামুর স্থতীবকে দুতরূপে দেবীর সকাশে প্রেরণ করিণ এবং বলিয়া দিল, স্থগ্রীব ! তুমি গমন করিয়া, আমার আদেশামুসায়ে তাহাকে এই এই কথা বনিবে এবং যাহাতে দে সম্প্রীতিসহকারে আগমন করে, তুমি মীঘ তাহা করিবে। স্থতীব এই আজা পাইয়া, দেবীর অধিষ্ঠিত দেই অতিশোভন শৈলোদেশে গমন করিয়া, তাঁহাকৈ মৃহ মধুর বাকে। বলিতে লাগিল, দেবি ! যিনি এখন তৈলোক্যের পর-মেশ্বর, দেই দৈত্যেশ্বর শুস্ত আমাকে তোমার স্কাশে দৃত্রপে প্রেরণ ক্রিয়াছেন। দেইজ্লুই তোমার সকাশে আসিয়াছি। তিনি সমন্ত স্থরগণকে নিংশেবে জয় করিয়াছেন। यक গয়র্ব রাক্ষণাদি কেহই তাঁহার আজা লজ্মন করিতে পারে না। তিনি যাহা বলিয়া দিয়াছেন, ভুন। তিনি বনিয়াছেন, আমারই এই তিভুবন। দেবগণও আমার বশীভূত। আমিই এখন ইক্রাদি দেবগণের উদ্দেশে পৃথক্ পৃথক্ রূপে প্রদন্ত বজ্ঞভাগ নকল একতে ভোগ করিয়া থাকি। তৈলোকো বে সকল উৎকৃষ্ট রত্ন আছে, আমিই এখন নিঃশেষে তৎসমন্ত অধিকার করিতেছি। আমি দেবেক্সের বাহন গঞ্জরত্ব এরাবভকেও আত্মগত করিয়াছি। ক্লীরোদসাগর মন্থন করিয়া, যে উল্লে: শ্রবানামক অশ্বরত্ব উদ্ভূত হয়, দেবগণ প্রণতিসহকারে তাহাও আমাকে সমর্পণ করিয়াছে। অমি শোভনে ! দেব, গন্ধবঁ ও উরগবর্গ মধ্যে অত্যাত যে সকল রত্ন আছে. তৎসম্ভত এখন আমার অধীন হইয়াছে। দেবি ! তোমাকে সংসারে স্ত্রীরত্ব বলিয়া, আমাদের প্রতীতি জিমিরাছে। অতথব তুমি আমাণিগকে জজনা কর। দেখ, আমরাই একমাত রত্নের ভোগ-কর্ত্তা। অন্নি চপলাপাঙ্গি ! বেংহতু, তুনি রত্নস্বরূপা। দেইছেতু আমাকে অথবা আমার অনুত্র উর্কবিক্রম নিশুস্তকে ভজনা কর। আনার পরিগ্রহ হইলে, তুমি পরম ঐশ্বর্যা ভোগ করিবে, ভুবনে বে ঐশর্যার তুলনা নাই। বুরিসহকারে এই সকল বিশেষরূপে আলোচনা করিয়া, আমার পরিগ্রহ হও।

ঋষি কহিলেন, দেই ভদ্রারপিণী ভগবতী দেবী হুগা এই প্রকার অভিহিতা হইরা, মনে মনে গন্ধীর ভাবে হাস্ত করিরা, তাহাকে কহিলেন, তুমি দত্য বলিরাছ। তুমি যাহা বলিলে, তাহার কিছুই মিধান নহে। শুস্ত ও তাহার ভ্রাতা নিশুস্ত উভয়েই ত্রৈলোকের অধিপতি। কিছু এবিষরে আমি যাহা প্রক্তি করিয়াছি, তাহা কিরপে মিধান করিতে পারি ? আমার বৃদ্ধি অতি সামান্ত। তজ্জ্য পুর্বেষে প্রতিক্তা করিয়াছি, তাহা শ্রবণ কর। আমার প্রতিক্তা এই, যে ব্যক্তি যুদ্ধে আমাকে জয় ও আমার দর্প বাপোহিত করিবে, এবং যে ব্যক্তি আমার প্রতিবল হইবে, সেই আমাকে পরিগ্রহ করিবে। অতএব শুস্তই হউক, আর নিশুস্তই হউক, এধানে আগমন এবং আমারে জয় করিয়া, সম্বরে আমার পাণিগ্রহণ করক। বিশ্বেষ আর প্রয়োজন নাই।

দ্ত কহিল, দেবি ! তুমি গর্কিত হইয়াছ। যাহাহউক, আমার সন্মুথে আর এরপ বলিও না। দেব, শুস্ত ও নিশুস্তের অগ্রসর হইতে পারে, তৈলোক্যে এমন পুরুষ কে আছে ? দেবি ! সমুদায় দেবগণ যথন একর হইয়াও. অস্তান্ত সামাত্ত দৈত্যপুণের সন্মুথে ভিষ্ঠিতে পারেন না, তথন তোমার তায় একজন স্ত্রীলোক একাকিনী কিরপে শুস্ত ও নিশুস্তের সন্মুথে থাকিতে পারিবে ? অধিক কি, ইক্রাদি সমুদায় অমরগণ যে শুস্তাদির যুদ্ধে অবস্থিতি করিতে সমর্থ নাহেন, তুনি স্ত্রী ইইয়া, কিরপে তাঁহাদের সন্মুখীনা হইবে। অতএব আনি বলিতেছি, তুমি শুস্ত নিশুস্তের পার্থে গামন কর। প্রার্থনা করি, তোমাকে যেন কেশাকর্ষণ প্রযুক্ত হতগোরবা হইয়া, জীহাদের নিকট যাইতে না হয়।

দেবী কহিলেন, দৃত। স্বীকার করিলাম, ভোশাদের শুস্ত ও নিশুস্ত উভয়েই অভিমাত্ত বলী ও বীর্যাশালী। কিন্তু পূর্ব্বে আমি না ভাবিয়া ও না বুঝিয়া, প্রতিজ্ঞা করিয়াছি। এখন কি করিতে পারি। অতথব.তুমি গমন কর। যাহা বলিলাম, আদর সহকারে সেই অস্বরালকে তাহা বিশেষ করিরা বলিও। যাহা ভাল হয়, সে তাহা করিবে।

ইতি স্থাীবদংবাদ নাম প্রাশীতিতম অধ্যায়।

### ষড়শীতিতম অধ্যায়।

্থাবি কছিলেন, স্থগীব দেবীর এই কথা শুনিরা, আমর্থপুরিত হইরা, বৈতারালকে গিরা, বিতারপুর্বক সমুদার বলিল। তথন অসুরপতি শুন্তরে নেই বাকা কর্ণগোচর করিরা, রোধা-বিষ্ট হইরা, বৈত্যাধিপতি ধ্মলোচনকে কহিল, ধ্মলোচন। তুমি স্থকীর দৈতে পরিবেটিত হইরা, বনপূর্বক কেশাকর্ষণসহকারে তাহারে বিহুবলা করিয়া, সম্বরে মদীয় গোচরে আনেয়ন কর। যদি অপর কোন বাক্তি তাহার পরিত্রাণ জন্ত তোমার বিক্তমে অভ্যুখান করে; অমর, যক্ষ বা গ্রহ্ব হইলেও, তাহাকে বধ করিবে।

ঋষি কহিলেন, ধ্মণোচন এইরপ আজা পাইরা, শীঘ্র ষষ্টিসহত্র অস্তরনৈতে পরিবৃত হইরা, ক্রতপদে বাত্রা করিল। অনস্তর হিমাচলবাসিনী সেই দেবীকে দর্শন করিরা, উটেচ: স্বরে বলিতে লাগিল, ভূমি শুন্ত নিশুন্তের নিকট গমন কর। যদি ভূমি প্রীতিপূর্বক তাঁহাদের নিকট না যাও, ভাহাহইলে, আমি বলপুর্বক কেশাক্র্যণসহকারে ভোমারে বিহ্বলা ক্রিরা, লইরা যাইব।

দেবী কছিলেন, তুমি বলবান; তাহাতে আবার বলবেষ্টিত হটয়া, বলশালী দৈতারাজ কর্তৃক প্রেরিত হটয়াছ। অতএব আমাকে বলি বলপ্র্কক লইয়া যাও, তাহাতে আমি কি করিতে পারি ?

ঋষি কহিলেন, ধ্রালাচন এই প্রকার অভিহিত হইয়া, বেমন অভিমুধে ধাবমান হইল, তেমনি দেবী এক হলারেই তাহাকে তথনি ভন্ম করিয়া ফেলিলেন। তদর্শনে স্থিপুল অস্তর- দৈন্ত কুদ্ধ হটয়া, তাঁহার উপরি রাশি রাশি শক্তি, পরখধ ও স্থতীক্ষ সামক সমস্ত বর্ষণ করিছে লাগিল। তথন দেবীর স্থবাহন মৃগরাজ রোবভরে সটাচ্ছটা ক্লিত করিয়া, অভীব ভৈরব রবে অস্তরসেনার উপরি পতিত হইল এবং কাহাকে করপ্রহারে, কাহাকে ভ্ওপ্রহারে, কাহাকে অধরপ্রহারে ও কাহাকে বা পাদপ্রহারে সংহার করিয়া, নথর-প্রহারপ্রংগর অভাত স্থমহান্ অস্তরগণের কোঠ সকল বিপাটিত, তলপ্রহারে কাহারও বা মন্তক সকল পূণক্রত, কাহার কাহার বাহ ও শির ছেদিত এবং কলিত কেশরে কাহারও কোব হইতে ক্ষির পান করিছে লাগিল। সেই মহাপ্রাণ কেশরী অতিমাত্র রোবাবিষ্ট হইয়া, কণ্মধ্যেই তাদৃশ বিপুল অস্তরসৈত ক্ষর করিয়া ফেলিল।

এদিকে দেবী কর্ত্ব ধ্যুলোচন নিহত ও তদীয় বাহন কেশরী কর্ত্ব সমুদায় সৈন্ত ক্ষায়ত হইরাছে, শ্রবণ করিরা, দৈতাপতি গুড় রোষাধিই হইরা, ক্ষুরিত ক্ষারের চণ্ড মুণ্ড উভরকে আজা করিল, হে চণ্ড! হে মুণ্ড! তোমরা উভয়ে স্থবিপুল সৈতে পরিবেটিত হইরা, তথার গমন করিরা, সম্বর্ধে দেই বামারে আনরন কর। তাহারে কেশে আকর্ষণ, না স্মে, বন্ধন করিরা, গমন করিরা, সম্বর্ধে তোমানের সংশায় উপস্থিত হয়, তাহাতেও নির্ভ হইবে না। সমুদার ক্ষায়র দানিবে। যদি যুদ্ধে তোমানের সংশায় উপস্থিত হয়, তাহাতেও নির্ভ হইবে না। সমুদার ক্ষায়র দৈল মিনিরা, বাবতীয় আয়ুধ-প্রয়োগপুর:সর তাহারে সংহার ক্রিও। তাহার বাহন শিংহ বিনিপাতিত হইবে, সেই ক্ষিকাকে বন্ধন করিরা, শীঘ্র আমার নিকট লইরা আদিবে।

ইতি ধূমণোচনবধ নাম ধড়শীতিতম সধ্যায়।

#### সপ্তাশীভিতম অধ্যায়।

ঋৰি কহিলেন, আজ্ঞামাত্ৰ চণ্ড ও মুণ্ডপ্ৰমুধ দৈত্যগণ চতুরদিণী বাহিনী সমভিব্যাহারে স্থস আয়ুধ উদাত করিয়া, প্রস্থান করিল। দেখিল, দেবী ভগবতী শৈলরাজ হিণালয়ের কাঞ্চনময় স্থবিশাল শঙ্কে সিংহের উপরি সহাস্ত আস্তে বিরাজ করিতেছেন। তাহারা ভাঁহাকে দর্শন করিয়া. উদ্যম প্রকাশপুর: দর তাঁহাকে গ্রহণ করিবার উপক্রম করিল। অভ্যান্তেরা ধহু: ও ২ড়া আকর্ষণ পূর্বক ধারণ করিয়া, তাঁহার সমীপস্থ হইল। তদ্দশ্নে দেবী অন্থিকা তাহাদের প্রতি অতিমাত্র রোষ প্রকাশ করিলেন। কোপবশতঃ তদীয় বদন তৎক্ষণাৎ কালীবর্ণ হইয়া গেল। পরক্ষণেই তাঁহার ক্রকটিকুটিল ললাটফলক হইতে জভবেগে করালবদনা কালী বিনিজ্ঞান্ত। হইলেন। তাঁহার ছত্তে অসি, পাশ ও বিচিত্র থট্রাঙ্গ। তাঁহার বিভূষণ নর্মালা। তাঁহার পরিধান ব্যাঘ্রচর্ম। তাঁহার শরীরের মাংস ৩ ফ। তাঁহার দৃগ্র ও কভাব উভয়ই অতি ভয়ানক। তাঁহার বদনমণ্ডল অতীব বিস্তত। তাঁহার জিহবা লোল লোল করিতেছে। তজ্জন্ম তাঁহারে দেখিলে, অতিমাত ভয় জন্ম। তাঁহার দেহ মধভাবাপর ও লোচন্যুগল রক্তবর্ণ এবং তাঁহার গভীর গর্জনে সমুদায় দিল্ম ওল পরিপুরিত হইয়াছে। তিনি দবেগে দৈত্যদৈন্তে নিপতিত হইয়া, মহাস্কর দকলকে নিপাতিত ও দেনা সকলকে ভক্ষণ করিতে লাগিলেন। হস্তী সকলকে তাহাদের পাঞ্চিরক্ষক, অন্ধ্রণারীও ঘণ্টাসমেত এক হত্তে সবলে গ্রহণ করিয়া, মুখমধ্যে নিকেপ করিতে আরম্ভ করিলেন। সার্থির স্থিত রুধ ও অধ্বের স্থিত যোধদিগকে বক্তমধ্যে প্রবেশিত করিয়া, সকলের অতিমাত্র-ভয়-সমুদ্ধাবনসহকারে দশন দারা চর্কণ করিতে লাগিলেন। কাহাকে কেশে, কাহাকে গলদেশে. কাহাকে বা পাদ দ্বারা আক্রমণ করিয়া, বিমর্দিত করিতে প্রবৃতা হইলেন। অম্পরেরা যে সমস্ত শস্ত্র ও মহাত্র দকল মোচন করিল, তৎসমস্ত মুধ দারা গ্রহণ করিয়া, দন্ত দারা মণিত করিয়া ফেলিলেন ৷ সেই মহাবল ও মহাপ্রাণ অস্তরগণের সমুদায় দৈন্তই তিনি মর্দন ও অন্তান্ত অস্তর-দিগের কাহাকে ভক্ষণ ও কাহাকে বা তাড়না করিতে আরম্ভ করিলেন এবং কাহাকে অদির আঘাতে নিহত ও কাহাকে বা থড়েগর অঞ্ডাগ দারা তাড়িত করিতে নাগিলেন। অস্থরেরা তাঁহার দম্ভারে অভিহত হইয়া, যমভবনে গমন করিল। ক্ষণমধ্যেই অম্ব্রদিগের সেই স্থবিপুল ইদক্ত নিপাতিত হইল।

ভদ্দনে চণ্ড অভিভীষণা ভীমলোচনা সেই কালীর অভিমুথে ধাবমান ইইয়া, অতীৰ ভর্মর শরদমূহ বর্ষণ ও মুগু সহস্র সহস্র চক্র ক্ষেপণ-পুরঃসর তাঁহাকে আছেয় করিল। সেই বহুদংখা চক্র দেবী কালীর মুখমধ্যে প্রবেশ করিয়া, মেঘমধ্যে প্রবিষ্ট স্থাবিদ্দমূহের ভায়, বিরাজমান হইল। তথন ভিনি অতীব রোধান্বিতা হইয়া, ভয়য়র গর্জনসহকারে হাস্থ করিতে লাগিলেন। ভাহাতে, তাঁহার করাল বদন-বিবরের অস্তর্কার্তী ছ্নিরীক্ষা দশনপ্রভায় তদীয় কলেবর উজ্জল হইয়া উঠিল। তথন তিনি মহাসিংহে আরোহণ করিয়া, চণ্ডের প্রতি ধাবমানা হইলেন এবং তাহার কেশপাশ গ্রহণ করিয়া, অসির আঘাতে মন্তক ছেদন করিয়া ফেসিলেন। চণ্ডকে নিপাতিত হইতে দেখিয়া, মুগু তাহার প্রতি যেমন অভিধাবিত হইক, তিনি তৎক্ষণে রোষভরে থক্সোর আঘাতে তাহাকেও ভূপাতিত করিলেন। চণ্ড ও মুগু উভয়েই অভিমাত্র বীধ্যবিশিষ্ট। তাহারা উভয়েই নিপাতিত হইল, দর্শন করিয়া, হতাবশিষ্ট সেন্সেরা ভয়াতুর হইয়া, যাহার যে দিকে ইছা, পলায়মান হইল। তথন কালী মুণ্ডের সহিত চণ্ডের শির গ্রহণ ও চণ্ডিকার নিকট গমন করিয়া, প্রচণ্ড অট্টহাস্থ সহকারে বিলিতে লাগিলেন, আমি চণ্ড ও মুগু উভয়কে মহাপশুরূপে আপনার নিকট উপহার দিতেছি। আগ্রানি শ্রমং যুদ্ধজ্ঞে গুজ ও নিশুস্তকে বধ করিবেন।

ঋৰি কহিলেন, কলাণী চণ্ডিকা মহাত্ত্ব চণ্ড মৃণ্ডকে আনমন করিতে অবলোকন করিরা, মধুর বাকো কাণীকে কহিলেন, দেবি ! বেহেতৃ তুমি চণ্ড ও মৃণ্ড উভয়কে গ্রহণ করিরা, আমার নিকট আদিয়াছ, সেইহেতৃ সংসারে চামুণ্ডা নামে স্মাধান্তা হইবে।

ইতি চণ্ডমুণ্ডবধ নাম সপ্তানীতিতম অধ্যায়।

#### অফাশীতিত্য অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, চণ্ড নিহত, মৃণ্ড বিনিপাতিত এবং বতল দৈন্ত ক্ষয়ত হইলে, প্রতাপবান্ ক্ষয়ের বর্ষ বিজ্ঞান ক্ষয়ের কিন্তু ক্ষয়ের বিল্লে ক্ষয়ের বিজ্ঞান কিন্তু ক্ষয়ের বিজ্ঞান কিন্তু ক্ষয়ের বিজ্ঞান কিন্তু ক্ষয়ের ক্ষয়ের

এদিকে, চণ্ডিকা অভিভীষণ দেই সম্বাদৈশতকে আদিতে দেখিয়া, ধমুই কারসহকারে রোদোরকা, প্রপ্রিত করিলেন। তথন তাঁহার দিংহও অতীব মহানাদে গর্জ্জিয়া উঠিল। অম্বিকা স্বগভীর ঘণ্টাধ্বনি করিয়া, দেই গর্জন আরও বর্দ্ধিত করিয়া দিলেন। ধমুইকার, দিংহ ও ঘণ্টা এই তিনের শব্দে সমস্ত দিক্ আপুরিত করিয়া, দেবী কালী বদনবাদানপুরঃসর এরূপ ভয়ম্বর গর্জন করিতে লাগিলেন, যে, ভাহাতে সমুদায় শব্দই ভিরম্কত ও বিশ্বক্ষাও অভিভবগ্রস্ত হইল। দৈতাদৈন্তেরা দেই নিনাদ প্রবণ করিয়া, রোষবশ হইয়া, দেবী, দিংহ ও কালী দকলকেই চতুর্দিকে বেইন করিয়া ফেলিল।

রাজন্! এই অবদরে অত্বরগণের বিনাশার্গ, ব্রহ্মা, বিষ্ণু মহেশ্বর, কার্থিক ও ইক্স ইইাদের অতীববীর্যাবলশালিনী শক্তি দকল শরীর হইতে বিনিক্ষান্তা হইয়া, দেইরপেই চঙিকার নিকট গমন করিলেন। যে দেবতার যেপ্রকার রূপ, যেপ্রকার ভ্রত তথার দমাগত হউলেন। ব্রহ্মার শক্তি বাহনী নামে বিখ্যাতা। তিনি অক্স্ত্র ও কমগুলু ধারণ করিয়া, হংদযুক্ত বিমানে তথার আগমন করিলেন। মাহেশ্বরী শক্তি বৃষ্টে আরোহণ ও উৎকৃষ্ট ত্রিশুল ধারণ করিয়া, সমাগতা হইলেন। তাঁহার হল্তে স্থর্হং দর্পবলয় এবং শেধরদেশে চক্ররেগা বিভ্রব। গুহুরূপিনী কৌমারী শক্তিহত্তে ময়ুরবাহনে অস্ত্ররগণের দহিত যুদ্ধি অভ্যাগতা হইলেন। বৈক্ষবী শক্তি গরুজের উপরি অবস্থিতি করিয়া, শক্ষা, চক্রন গদা, শার্ল্প ও থভগহত্তে আগমন করিলেন। হরির যে শক্তি অক্সেম যজ্ঞবরাহ্ম্র্রি ধারণ করিয়াছিলেন, তিনি বারাহীরূপে সমাগতা হইলেন। নৃদিংহের শক্তি নারিদংহী সদৃশ বপু পরিগ্রহ করিয়া, সটাক্ষেপে নক্রেদিগকে ইতন্ততঃ বিশ্বিপ্ত করিয়া, তথার পদার্পণ করিলেন। ইক্সের শক্তি ক্রিয়া, ইক্রের ন্তায়, ব্রহুত্তে গ্রহান্তের উপরি অধিষ্ঠানপূর্ব্ধক সহস্ত্র-লোচন বিক্ষারণ করিয়া, যুদ্ধার্থ অভ্যাগতা হইলেন।

অনন্তর স্বয়ং ঈশান উল্লিখিত দেবশক্তিসমূহে পরিবৃত হইয়া, চণ্ডিকাকে কহিতে কাগিলেন, আমার প্রতি প্রীতিবশতঃ তুমি আত অহ্বদিগকে সংহার কর। তথন দেবীর শরীর ইইতে অতিভয়করা মতি প্রতি চিঙিকা শক্তি বিনিক্রান্তা ইইলেন। শত শত শিবা তাঁহার

চতুর্দিকে শব্দ করিতে লাগিল। অনস্তর দেই অপরাজিতা চণ্ডিকা ধ্মের ভায় বর্ণশালী-জটাজ্ট্রণরী মহাদেবকে কহিলেন, ভগবন্! আপনি দৃত হইয়া, গুল্জ নিশুন্তের নিকট গমন কর্মন এবং সেই অতিগর্কিত দানব্দমকে ও যুদ্ধার্ম তথায় সমুপস্থিত অভান্ত দানবদিগকেও বলুন, ইক্স বৈশোকে,র অধিপতি হউন; দেবগণ হবির্ভোজন কর্মন এবং যদি জীবিত থাকিতে ইচ্ছা হয়, ভাহাহইলে, ভোমরা দকলে পাতালতলে প্রয়াণ কর। আর, যদি বনদর্পবশতঃ যুদ্ধ করিতে অভিলাষী হও, তাহাহইলে, আগমন কর। আমার পার্শ্চারিনী এই শিবা দকল ভোমাদের মাংদ ভোজন করিয়া, তৃপ্তি লাভ করক। যেহেতু, অয়ং শিব দেবীকর্ত্ক দোতা নিযুক্ত হবৈন, সেইহেতু, তাঁহার নাম তদবধি সংগারে শিবদুকী বিদ্যা, বিধ্যাতি লাভ করিয়াছে।

কাত্যায়নীর এই কথা গুনিয়া, সেই সকল মহাত্মর অমর্থপুরিত হইয়া, তাহাঁর সালিধ্যে গমন করিল। অনন্তর অতিমা্ত্র বর্জিত অমর্যভরে প্রথমেই অত্রে তাহার উপরি রাশি রাশি শর, শক্তি ও ক্ষিষ্ট বর্ষণ করিছে লাগিল। তিনিও ধর্মইক্ষারসহকারে ত্মবিপুল শরসমূহ প্রয়োগ করিয়া, তাহাদের প্রেরিত তত্তৎ বাণ, পরগু, শৃল ও চক্র সকল অবলীলাক্রমে ছেদন করিয়া ফেণিলেন। ঐ সময়ে কালী অস্ত্রনিগকে শৃল প্রহারে বিদারিত ও থট্টাক্সের আঘাতে বিমন্দিত করিয়া, অত্রে অত্রে বিচরণ করিতে লাগিলেন। তদ্দলি ব্রহ্মার শক্তি ব্রহ্মাণী ইতন্ততঃ ধাবমানা হইয়া, তত্তৎ-স্থানন্ত্রিত অস্তরনিগকে কমগুলুস্থ জলক্ষেপ সহকারে হত্রীগ্য ও হত্তেজ করিতে আরম্ভ করিলেন এবং মাহেধরী িশ্ল ছারা, বৈষ্ণবী চক্র ছারা ও অতিকোপনা সেই কৌমারী শক্তি ছারা তাহানিগকে নিহত করিতে প্রত্তা হইলে, ঐক্রীর প্রয়োজিত বক্তের আঘাতে বিদারিত হইয়া, শত্ত শত ট্লত্য ও দানব রাশি রাশি শরবর্ষণ করত, ভুপ্ঠে পতিত হইতে লাগিল। তদ্দশনে দেবী বারাহী অস্তরনিগকে তুগু প্রহারে বিনই, দংষ্ট্রাগ্রণতে ক্তন্তন্ম এবং চক্রপহারে বিদারিত করিয়া, নিপাতিত করিতে আরম্ভ করিলে, নার্সিংহী অ্গভীর গর্জনে সমুদায় দিক্ ও সমুদায় আকাশ প্রতিধনিত ও অ্যান্ত অস্তরনিগকে থব-নথর প্রহারে বিদারিত করিয়া, ভক্ষণ করত, সমুদায় আকাশ প্রতিধনিত ও অ্যান্ত অস্তরনিগকে থব-নথর প্রহারে বিদারিত করিয়া, ভক্ষণ করত, সমুদায় আকাশ প্রতিধনিত ত লাগিলেন। তথন শিবদুতী প্রচণ্ড অট্টান সহকারে অস্তরনিগকে বিমোহিত করিয়া, ধরাতনে নিপাতিত করত ভক্ষণ করিতে প্রস্থা হইলেন।

এইরপে মাতৃকাগণ ক্রন্ধ হইয়া, বিবিধ অভাপায় সহকারে মহাস্থর সকলকে বিমর্দ্দিত করিতে আরম্ভ করিলেন, দর্শন করিয়া, দৈতাদৈনিকেরা পলায়মান হইল। মহাত্মর রক্তবীঞ্জ, তাহা-দিগকে মাতৃগণ কর্ত্তক মন্দিত হইয়া, পণায়ন করিতে দেখিয়া, রোষভরে যুদ্ধ করিবার জভ অভিযান কর। তাহার শরার হইতে যেমাত একবিন্দু রক্ত ভূনিতে পতিত হয়, তৎক্ষণাৎ তাহার সমপ্রিমাণ অন্তত্তর অমুর ফেনিনা হইতে সমুৎপ্তিত হইয়া থাকে। এইজন্ত তাহার নাম রক্তবীল। সেই মহাত্বর রক্তবীজ গদাপাণি হটয়া ইত্রশক্তির সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিল। তথন এট্রী শক্তি স্বকীয় বজের সহায়তায় রক্তবীলকে তাড়িত করিলেন। বজে আহত হইবামাত তাহার শোণিত আব হটতে লাগিল। তৎক্ষণাং রক্তবীকের অমুরপ রপ ও পরিমাণ বিশিষ্ট বোধ সকল প্রাত্তুতি হইল। তাহার শ্রীর হইতে যত রক্তবিন্দু পতিত হইয়াছিল, তত পুরুষ জনাগ্রহণ করিল। তাহারা দকলেই তাহার দমান বীর্ঘ্য, বল ও বিক্রম সম্পন্ন। সেই রক্তসমুখ্যুত পুরুষগণও তৎকালে অত্যগ্র শস্ত্রপাত সহকারে অতীব ভর সমুদ্ধাবন করিয়া, মাতৃকাগণের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিল। পুনরার বজাঘাতে রক্বীজের শির ধেমাত্র কত হইরা, রক্ত বিনি:-সরণ করিল, তৎকণাৎ সহত্র সহত্র পুরুষ প্রাহভূতি হটল। ঐ সময়ে বৈষ্ণবী শক্তি তাহারে চক্তের আঘাত করিলে, এক্রী সেই অপুরেখরকে গদা সহায়ে আহত করিলেন। অন্তর বৈঞ্বীয় চক্রাণাতে বিদারিত হইলা, অস্থরের রুণিরপ্রাণ হইলে, তাহা হইতে তৎপ্রমাণ মহাস্তর সকল সমুৎ-পন্ন হইরা, সমুদার সংসার পরিবাধি করিব। তখন বারাহী অন্ত ছারা, কৌমারী শক্তি ছারা ও মাহেধরী ত্রিশূল দ্বারা রক্তবীজকে আঘাত করিলে, দে কোপদ্যাবিষ্ট ইট্রা, তাঁহাদের দক্শকেই ধনার ধারা পৃথক্ পৃথক্ প্রতিঘাত করিন। বছবিধ শ্ল ও শক্তি প্রভৃতির আঘাতে ভাহার শরীর হইতে তৎকালে যে রক্তরাশি পৃতিত হইল, ভাহাহইতে, শৃত শৃত অমূর এমাগ্রহণ করিল।

ঐ সকণ রক্তসন্ত্ত অহারে সম্দায় ভগৎ ব্যাপ্ত হইলে, দেবগণ নিরতিশন্ন ভীত হইলা উঠিলেন। দেবগণ বিষয় হইলাছেন, দেশন করিলা, চিপ্তিকা সম্বরে কাণীকে কহিলেন, অমি চাম্তে ছুমি বদন ব্যাদিত কর। আমার শত্রপাতে যে সকল রক্তবিদ্ সম্ভূত ও সেই রক্তবিদ্ হইতে যে সকল রক্তবিদ্ সম্ভূত ও সেই রক্তবিদ্ হইতে যে সকল রক্তবিদ বারা ভাহানিগকে গ্রহণ করিতে আরম্ভ কর। এই রাপে ভূমি রক্ত ও রক্ত হইতে সম্পেল্ল মহাত্মর সকলকে ভক্ষণ করত, সংগ্রামে বিচরণ করিতে প্রবৃত্তা হও। তাহাহইলেই, এই দৈত্য ক্ষণিরক্ত হইলা, ক্ষয় প্রাপ্ত হইবে। আর ভূমি সেই উগ্রপ্ত অহ্র দিগকে ভক্ষণ করিতে আরম্ভ করিলে, অভাভা রক্তবীদ্ধ সকল আর উৎপন্ন হইবে না।

দেবী চাম্ভাকে এইরপ কহিয়া, রক্তবীজকে যেমন শ্লের আঘাত করিলেন, কানী তেমনি তাহার শোণিত বাানিত বদনে ধারণ করিয়া কেলিলেন। তথন রক্তবীজ চাম্ভাকে গদার আঘাত করিল। কিন্তু তাহাতে তাহাঁর অয়নাত্র বেদনাপ্ত উন্তুত হইল না। এদিকে তাহার আহত দেহ হইতে ভ্রিপরিমাণ রক্ত বিনিঃস্থত হইল। যে যে স্থানে সেই রক্ত পজিল, চাম্ভা সেই সেই স্থানেই তাহা ব্যাদিত বদনে পান করিয়া ফেলিলেন। রক্ত হইতে তাঁহার মুখে যে যে রক্তবীজ উন্তুত হইল, চাম্ভা তাহানিগকেও ভক্ষণ ও তাহার শোণিত পান করিলেন। চাম্ভা ঐরপে তদীয় শোণিত পানে প্রতা হইলে, দেবী কৌষিকী শ্ল, বজ্ল, বাণ, থভাগ ও ঋষ্টি প্রহার প্রঃসর তাহাকে আঘাত করিতে আরম্ভ করিলেন। রাজন্! এইরপে রাশি রাশি শল্পে সমাহত হইয়া, সেই মহাস্থর বক্তবীজ রক্তশ্ভ হইয়া, ভ্পুঠে পতিত হইল। নৃপ! তদ্দেনে ত্রিদশগণ অতুল হর্ব লাভ করিলেন এবং তাহাঁদের শক্তিরপা মাত্কাগণও রক্তমদে উদ্ধৃতা হইয়া, নৃত্য করিতে লাগিলেন।

ইতি রক্তবীজ্বধ নাম অপ্তাশীতিত্ম অধ্যায়।

### একোননবতিত্ম অধ্যায়।

রাজা কহিলেন, ভগবন্! আপনি দেবী চণ্ডিকার এই রক্তবীছবধ-ষ্টিত বিচিত্র চরিত-মাহায়্য কীর্ত্তন করিলেন। রক্তবীজ নিপতিত হইলে, অতীবকোপনস্থভাব শুভ ও নিশুভ কি করিয়াছিল, পুনরায় তাহা শুনিতে ইচ্ছা হইতেছে।

ঋষি কহিলেন, রক্তীল নিপাতিত ও অভাভ অহরগণ যুদ্ধে নিহত হইলে, শুভ ও নিশুভ অত্ন কোপের বণীভূত হইল। নিশুভ দেই হৃবিপুল সৈভকে হগুমান অবলোকন করিয়া, অভ র মুখ্য অহরদেনার সহিত যুদ্ধার্থ যাত্রা করিল। তথন তাহার অত্তা, পৃঠে ও উভয় পার্ধে মহাত্রর সকল রোষাবিঠ হইয়া ও৯পুট সল্পুট করিয়া, দেবীকে বিনষ্ট করিবার জভ গমন করিতে নাগিল। মহাবীর্যা শুভও অকীয় সৈভে পরিবৃত হইয়া, রোষভরে মাতৃকাগণের সমভিব্যাহারে সম্বে প্রবৃত হইয়া, চিগুকারে সংহার করিবার জভ সমাগত হইল। অনস্তর দেবীর সহিত উভ ও নিশুভ, বর্ষমাণ মেহদ্যের ভায়, শরর্ষ্ট সহকারে যুদ্ধ আরম্ভ করিল। দেবী চিগুকা শর্নিকর-প্রয়োগপুর:সর সভ্রে তাহাদের বাণ সমস্ত ছেদন করিয়া, পুনরার শর্মমৃহ্মোচন-পুর্কি তাহাদের স্কাল বিদ্ধ করিলেন। তথন নিশুভ নিশিত থড়া ও হালর প্রভাশানী চর্মা গহন করিয়া, দেবীর বাহন সিংহের মন্তকে আবাত করিল। বাহন আহত হইলে, দেবী কুরপ্র-

শংহার সহকারে সদ্ধরে তাহার সেই খড়গ ও অইচক্সবিশিষ্ট চর্ম ছেদন করিয়াদিলেন। চর্ম ও খড়গ ছিল হইলে, অফ্র শক্তি নিক্পে করিল। ঐ শক্তি বেমন অভিমূপে আসিল, দেবী তেমনি চক্রের মাবাতে তাহা ছই খণ্ড করিলেন। তথন নিশুস্ত ক্রোধে পরিপূর্ণ হইরা, শূল গ্রহণ করিলে, দেবী মৃষ্টি গ্রহার ঘারাই নিকটে আগত সেই শূল চূর্ণ করিয়া ফেলিলেন। ভদ্দনে অফ্র গদা আবিদ্ধ করিয়া, চণ্ডিকার প্রতি নিক্পে করিল। দেবী আশুল ঘারা তাহাও ছিল্ল ও ভন্মভাবাপিল করিলেন। ভখন দৈত্যপতি পরশুহত্তে আগমন করিলেন, দেবী শরপরম্পরার আবাতে তাহাকে ভূমিতলে নিপাতিত করিলেন।

ভীমবিক্রম ল্রাভা নিশুন্ত ভূনিলাং হইলে, শুন্ত মতিমাত্র কুর হইয়া, দেবী অধিকাকে বধ ক্রিবার জন্ম প্রয়াণ করিল। তাগার আট হাত।তাহাদের তুলনা হয় না। সে প্রত্যেক হস্তেই উৎ-ক্ত আর্ধ সক্র গ্রহণ ও অত্যাত রখে আরোহণপুর্বকে সমুদার আকাশ বাাপ্ত করিয়া, শোভমান হইল। তাহাকে আসিতে দেখিয়া, দেবী শৃত্যধ্বনিসহকারে অতীব ত্র:সহ ধরুইস্কারে প্রবৃত্তা হুইলেন এবং স্বকীয় ঘণ্টাধ্বনিতে দিক সকল প্রপুরিত করিয়া, সমস্ত দৈত্যসৈল্ভের তেছ: সংহরণ করিতে লাগিলেন। তদর্শনে সিংহ মহানাদে গর্জন করিয়া উঠিল। তাহাতে দিক. বিদিক, আকাশ, পৃথিবী সমন্তই পরিপুরিত হইল এবং মদমত মাত্র সকলের অহতারগর্ক চর্ণ হইরা গেল। তাহারা ভয়ে ভাও ওটাইরা, পলাইতে লাগিল। তথন কালী আকাশে উৎপত্ন-পূর্বক করাঘাতে পৃথিবীকে আহত করিলেন। তদীয় আঘাতশব্দে পূর্ব্বোক্ত ঘণ্টাধ্বনি প্রভৃতি সমুলর শব্দই তিরোহিত হইয়া গেল। ঐ সময়ে শিবদতী অট্টে হাদিয়া উঠিলে, তাঁহার দেই অশিব রবে অহুর সকল ত্রাসযুক্ত ও তদ্দর্শনে গুম্ভ অতিমাত্র রোষাবিষ্ট হইল। দেবী তাহাকে বণিতে লাগিলেন, ছরায়ন । থাক, থাক। তচ্ছবণে দেবগণ আকাশে থাকিয়া, দেবীর জয় হউক, বিশিয়া উঠিলেন। তৎকালে শুদ্ধ দবেগে আগমন করিয়া, রাশীকৃত অগ্নির স্থায় দশুসম্পন্ন এক শক্তি প্রয়োগ করিল। চতুর্দিকে শিখা সকল সমুখিত হওয়াতে, উহা অতিমাত্র ভয় সমুদ্ধাবন করিতে লাগিল। দেবী মহোত্রা প্রয়োগ করিয়া, সেই শক্তিকে আগমনসময়েই নিরস্ত করিলেন। রাজন! শুন্ত তদ্দর্শনে সিংহের ভাষ গভীর গর্জন বিসর্জন করিয়া, লোকত্রয়ান্তর পরিপ্রিত করিল। তথন দেবীর পক্ষ হইতেও বজুপাডোপম ভয়ত্বর শব্দ প্রাহভূতি হইয়া, দেই শব্দকে পরাহত করিল। ঐ সময়ে দেবী ও শুম্ভ উভয়েই শত শত ও সহস্র সহস্র ভয়স্কর শর প্রায়োগ করিয়া, পরম্পরের প্রেরিত বাণপরম্পরা ছেদন করিতে লাগিলেন। অনম্বর দেবী ক্রন্ধা হইয়া, ভাহাকে শূলের আঘাত করিলেন। দে সেই আঘাতেই মৃদ্ধিত হইয়া, ধরাতলে পতিত হইল।

ঐ সময়ে নিগুন্ত চেতনা লাভ করিয়া, কাশুক গ্রহণ ও শর সকল প্রয়োগ করিয়া, দেবী, কালী ও দিংছ তিন জনকেই সমকালে আহত করিল এবং পুনরায় অয়ৃত বাল্থ আবিদ্ধৃত করিয়া, একবারে অয়ৃত-চক্র-প্রয়োগপূর্বক দেবী চণ্ডিকাকে আছেল করিয়া ফেলিল। অনস্তর দৈতাদেনা-সম্হে পরির ত ইইয়া, দেবীকে বধ করিবার জন্ম অভিধাবন করিল। চণ্ডিকা স্থাণিত থক্তা ধারা আগগননসময়েই আশু তাহার গদা ছেদন করিয়া দিলেন। তথন দৈতা শূল গ্রহণ করিল। অমরারি নিশুন্ত এইরূপে শূলগহণ করিয়া, সমাগত হইলে, দেবী সবেগে স্বীয় শূল আবিদ্ধ করিয়া, তাহার হৃদয় বিদ্ধ করিয়া ফেলিলেন। শূলাঘাতে বিদ্ধ হইবামাত্র, তাহার হৃদয় হইতে আর এক মহাবদ মহাবীর্যা পুরুষ, তিষ্ঠ, এইপ্রকার বাক্য প্রয়োগ প্রয়ণর বিনিংস্ত হইল। নিক্রমণসমকালেই দেবী উচ্চৈংশরে হান্ত করিয়া, থক্তোর আঘাতে তাহার মন্তক ছেদন করিলে, তৎক্ষণাং স্কৃমিতে পভিত হইল। তথন সিংহ ভয়্মর দংগ্রাপ্রহারে গ্রীবাদেশ ছিল্ল করিয়া, অমুরদিগকে ভক্ষণ করিতে আরম্ভ করিলে, কালী ও শিবদ্তীও তদমুরপ অমুর্ভানে প্রস্তুতা হইলেন। ঐ সমরে দেবী কৌমারী শক্তিপ্রয়োগপূর্বক অন্তান্ত অম্রেদিগকে ছিন্নবিভিন্ন করিতে আরম্ভ করিলে, তাহার। প্লায়ন করিল। এদিকে দেবী ব্রহ্মণী মন্ত্রপুত স্লিল রারা অনেকানেক অমুরকে নিরাক্রের

৪ মাহেশারী ত্রিশ্নপ্রহারে বিদারিত করিয়া, অনেককে ভূপাতিত, বারাহী তুণ্ডের মাঘাতে অপরাপর অসুরদিগকে চুণীকত ও বৈঞ্বী চক্রের আঘাতে অনেককে থণ্ড থণ্ড করিয়া ফেলিলেন। তরাতীত, ক্রিমীর হস্তাগ্রবিমূক্ত বজ্ঞের মাঘাতে অস্তাস্ত অনেক অসুর ধরাশায়ী হইল এবং কালী, নিবদ্তী ও সিংহ এই তিন জনে অনেক অসুরকে একেবারে থাইয়া ফেলিলেন। অবশিষ্টেরা কেহ বিনাষ্ট ও কেহবা প্রাণভয়ে যুদ্ধাংল হইতে প্লায়মান হইল।

ইতি নিশুন্তবধ নাম একোননবতিতম অধ্যায়।

#### নবতিতম অধ্যায় !

ঋষি কহিলেন, প্রাণ্দম ভ্রাতা নিশুস্তকে নিহত ও দৈনা দকলকেও হঞ্মান অবলোকন করিলা, ৪স্ত ক্রোণ্ডরে দেবীরে বলিতে লাগিল, ছর্বে ! তুমি বলমদে নিতাস্ত ছর্বি । ইইয়া উঠিয়াছ । বুং 1 ক্রিক করিও না। তোমার নিজের বল নাই। এই দকল স্ত্রীর বলেই তুমি যুদ্ধ করিতেছ। তাহাতেই তোমার অভিমান ও অহকার বৃদ্ধিত হইয়া উঠিয়াছে।

দেবী কহিলেন, আমি এই জগতে একাই বিহার করি। আমার মার বিতীয় কে আছে? রে ছষ্ট। এই সকল আমারই বিভৃতি; আমাতেই প্রবেশ করিয়াছে, অবলোকন কর।

ঋষি কহিলেন, এই কথা বলিবামাত্র, ব্রহ্মাণীপ্রমুখ উল্লিখিত স্ত্রীশক্তি সমন্ত তৎকণে দেবীর শরীরে বিলীনা হইলেন। দেবী অধিকাই কেবল একাকী রহিলেন। তদবস্থার তিনি কহিতে লাগিলেন, আমি বে বছবিও রূপ ও বছবিধ শরীর আবিদারপূর্ধক সংগ্রামে অবতরণ করিবাছিলাম, তৎসমন্ত এই সংহরণ ক্রিলাম। এখন আমি একাই রহিলাম। তুমি স্থির হইরা মুদ্ধ কর, পলাইও না।

ঋষি কহিলেন, অনন্তর দেবী ও শুস্ত উভয়ে দারণ যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলে, সমুদার দেবগণ ও অন্তরণণ তাহা দেখিতে লাগিল। তাঁহারা প্রস্পার স্থাণিত শন্ত্র ও ভরত্তর মন্ত্র সকল বর্ষণ করিরা, সর্কানোকভরাবহ যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন। অস্থিকা বে শঙ্গ শঙ্গ দিবা অন্তর মোচন করিতে লাগিলেন, শুস্ত তৎপ্রতিঘাতক অন্তরসমূহে তৎসমন্ত প্রতিহত করিল। আবার, শুস্ত যে সকল দিবা অন্ত প্রেরণে প্রবৃত্ত হইল, প্রমেখরী অধিকা ভয়ত্বর হন্ধারশলাদি ধারাই অবলীশাক্রমে তাহাদের প্রতিহণ্যক করিতে লাগিলেন। অনন্তর অন্তর শঙ্গ শঙ্গ শত শরে দেবীরে একবারে আক্রে করিরা কেলিল। দেবীও কুপিতা হইরা, শরোৎকরপ্রাগে তাহার ধন্ন করিছিত সেই শক্তিও ধন্ন ছিল হইলে, দৈতারাক্র শক্তি গ্রহণ করিল। দেবী চক্র প্রহারে তাহার করিছিত সেই শক্তিও ধন্ন ছিল করিরা কেলিলেন। তথন শুস্ত প্রমপ্রভাসম্পন্ন, শতচক্রশোভিত বড়লা গ্রহণ করিরা, দেবীর মভিদ্বেধ ধ্রমান হইল।

চণ্ডিকা আগমনসমকালেই শ্রাসন-বিনিমুকি স্থাণিত শ্রসমূহ আণু ভাহার ধঙ্গা ও 
হণ্যকরণরিত চর্মা ছেদন করিয়া ফেলিলেন। ঐ সময়ে তিনি তাহার অখ, সারণি ও শ্রাসন ছিল্ল
ও নিহত করিলে, সে দেবার নিধনগাধনমানদে ভয়ন্তর মুগগর গ্রহণ করিল। দেবী নিকটে
ও নিহত করিলে, স্থোলিত শ্রসমূহে সেই মুগগরও ছেদন করলেন। তথাপি, সে মৃষ্টি উদাত
আদিতে আদিতেই, স্থোলিত শ্রসমূহে সেই মুগগরও ছেদন করলেন। তথাপি, সে মৃষ্টি উদাত
করিয়া, সবেগে অভিধাবিত হইল এবং দেবীর হৃদয়ে সেই মৃষ্টির আঘাত ক্রিল। তথন দেবীও
করিয়া, সবেগে অভিধাবিত হইল এবং দেবীর হৃদয়ে প্রতিত হইয়া, তৎক্ষণাৎ ভূমিতে পতিত
ভাহার বক্ষঃস্থলে চপেটাঘাত করিলেন। সে তলপ্রহারে অভিহত হইয়া, তৎক্ষণাৎ ভূমিতে পতিত
ভাহার বক্ষঃস্থলে চপেটাঘাত করিলেন। ও উৎপতনপ্রাক দেবীকে গ্রহণ করিয়া, আফালে আয়োহণ
ইইল এবং পুনরায় তথনই উথান ও উৎপতনপ্রাক দেবীকে গ্রহণ করিয়া, আফালেন। তাঁহায়া
করিল। দেবী চণ্ডিকা সেখানেও নিরালকে তাহার সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। তাঁহায়া

পরপার আকাশে থাকিয়া, এরপে যুদ্ধ আরম্ভ করিলে, দিদ্ধ ও মুনিগণ বিশিত হইয়া উঠিলেন। ইহাই সংসারে প্রথম যুদ্ধ, যাহাতে প্ররূপে দিদ্ধ ও মুনিগণেরও বিশায় জ্পিয়াছিল। জ্বিকা বছ্কণ তাহার সহিত যুদ্ধ করিয়া, ভাহাকে উৎপাতনপূর্বক ঘুরাইয়া পৃথিবীতে নিক্ষেপ করিলেন। দে নিক্ষিপ্ত ও ধরাতল প্রাপ্ত হইয়া, মৃষ্টি উদ্যত করিয়া, দেবী চণ্ডিকার নিধনসাধনবাসনায় সবেগে জ্বভিধাবিত হইল। তিনি ধাবনস্থয়েই বক্ষংস্থলে শূলের আঘাত করিয়া, সেই সর্বন্ধির ভ্রতকে ধরাশায়ী করিলেন। সে দেবীর শূলাগ্রে বিক্ষত হইয়া, তৎক্ষণাৎ প্রাণ্পরিহারপুরংসর ধরাতলৈ পত্তিত হইল। তাহার পত্তনবেগে সাগর, পর্বত ও ধীপ সমেত সমগ্র মেদিনী কম্পিত হইয়া উঠিল।

অনন্তর সেই ছ্রাআ নিহত হইলে, সমুদার সংসার প্রসার ও অতীব স্বস্থাবাপর ইইন, আকাশমণ্ডল নির্দাহ ইয়া উঠিন; যে সকল উৎপাতমের ও উল্লাই তিপুর্ব্বে প্রাহ্রভূত ইইরাছিন, ভাহারাও তিরাহিত ইইন। সে নিপাতিত ইইলে, সরিং সকলও পুর্বের আয়া, যথাযথ পথে প্রবাহিতা ইইতে লাগিল। অনন্তর সেই দৈত্যপতি শুন্ত নিহত ইইলে, দেবগণ সকলেই হর্বনির্ভ্র চিন্ত ইইলেন; গদ্ধব্বেরা ললিত গাঁত আরম্ভ করিল; অআত্যেরা বাদ্যবাদনে প্রবৃত্ত ইইল; অপ্রোগণ নৃত্য করিতে লাগিল; অনুক্ল বায়ু প্রাহিত ইইল; দিবাকর স্প্রতিভ ইইয়া উঠিলেন; আয়া পুর্বের আয়া, শাস্তভাবে প্রজ্ঞাত ইইতে লাগিলেন; দিক্সকল শাস্তম্বিধি ধারণ করিল

ইতি গুজুবধ নাম নবতিতম অধ্যায়।

### একনবতিত্ম অধ্যায়।

খবি কহিলেন, দেবী কাত্যায়নী অস্তরপতি গুস্তকে সংহার করিলে, অভীষ্টদিভিবশতঃ দেবগণের বদনমণ্ডল প্রাফুল হইয়া উঠিল এবং তাঁহাদের আশাও নবীভূতরূপে প্রাহভূতি হইল। তথন তাঁহারা ইস্কের সহিত অগ্নিকে পুরোবর্তী করিয়া, বক্ষ্যমাণ বাক্যে দেবীর স্তব করিতে লাগিলেন; দেবি ! প্রসন্না হও। তুনি প্রপন্ন ব্যক্তিগণের যাবতীয় ছঃখসন্তাপ দ্র করিয়া থাক। তুমি অধিল বিখের জননী। দকলের প্রতি প্রদল্ল হও। তুমি বিখের ঈশরী। প্রদল্ল হও এবং বিখের রক্ষা কর। দেবি ! তুমি চরাচরের ঈশ্রী। তুমিই একমাত্র জগতের আধারভূতা। বেহেতু, তুমি সাক্ষাং পৃথিবীরূপে ইহাকে ধারণ করিয়া আছ এবং জলরূপে অবস্থিতি করিয়া, সকলকে আপ্যায়িত করিতেছ। তোমার বীর্য্য লজ্মন করা কাহার ও সাধ্য নহে। তুমি বৈঞ্চবী শক্তি। তোমার বীর্যোর শেষ <del>জা</del>ই। তুমিই বিখের বীজ। তুমিই প্রমা মায়া। দেবি! তুমিই <sup>এই</sup> বিশ্বজ্ঞাৎ মোহিত-করিয়া রাখিয়াছ। তুমিই প্রদলা হইলে, মুক্তি সমুদ্ভাবন করিয়া থাক। দেবি! সমুদায় বিদ্যা তোমারই ভেদমাত । সমুদায় জগতীস্থ স্ত্রী তোমারই অংশীমাত । তুমিই জননীরূপে একাকিনী অধিল সংসার ব্যাপিরা আছে। তুনি বাকে/র অতীত এবং ওবের অতীত। তোমার আর কি অতি করিব ? তাহার উপর আবার তুনি সর্ববরণা এবং অর্গ ও মৃক্তি প্রদান করিয়া থাক। বিশেষতঃ, থাহা বলিয়া তত্ত্ব করিতে হয়, দে সমন্ত বলিয়াই, তোমার তত্ত্ব করা হইরাছে। বলিবার আর কিছুই অবশিষ্ট নাই। অতএব তোমার আর কি তব করিব ? আর, তোমার উপযুক্তরপ তাব করিবার উৎক্ল বাকাই বা আছে কি ? ত্থি সক্স লোকের জদয়ে বুদ্ধিরপে অব স্থিতি করিতেছ। তুনি স্বর্গ ও অপবর্গ দান করিয়া থাক। তুনি দেবী নারায়ণী। তোমাকে নমস্বার। তুমি কলা-কাণ্ঠাদিরপে অবহিতি করিতেছ। তুমি কার্যামাত্রের ফলপ্রদান করিরা থাক। তু<sup>রি</sup> বিখের সংহারশকি। তুনি নারায়ণী। তোমাকে নমকার। তুমি সমুদার মঙ্গলশ্বরূপা। তু<sup>রি</sup>

পর্যকল্যাপরপিনী। ভূমি সর্কার্থদাধিনী। ভূমি সকলের রক্ষাকারিনী। ভূমি জিলোচনী। ভূমি ওদ্ধব্দবর্গপিণী নারারণী। তোমাকে নমস্কার। তুমি স্বাষ্ট, স্থিতি ও প্রালয়কারিণী গুনাতনী শক্তি। তৃমি গুণের আশ্রর। তৃমি গুণমরী নারারণী। তোমাকে নমন্বার। তৃমি শরণাগত, দীন ও আর্ত্ত ইহাদিগের পরি ক্রাণের এক মাত্র উপায়স্থান এবং ভাহাই ভোমার এক মাত্র ব্যব-সার। **তুমি সকলের হঃখ**দস্তাপগুরিণী দেবী নারায়ণী। তোমাকে নমস্কার। তুমি হংস্যু<del>জ</del>-বিমানতারিশী ব্রহাণীরপ্রারিণী এবং মন্তপুত কুশ্দলিলে শত্রুক্লক্ষরকারিণী নারাঘণী। তোমাকে নমন্ধার। ভূমি ত্রিশ্ল, চক্ত ও অহিধারিণী, মহার্যভবাহিনী, মাহেশরী অরপিণী নারায়ণী। তোমাকে নমকার।. তুমি ময়ুর ও কুকুটগণে পরিবৃতা, মহাশক্তিম্শোভিতা, পাপলেশবিরহিতা, কৌমারীরপদংস্থিতা নারায়ণী। তোনাকে নমস্বার। তুমি শৃত্যা, চক্র, গদা ও শান্ধাদি প্রমার্ধ-ধারিণী, বৈষ্ণবীরপিণী, নারায়ণী। ভোমাকে নমস্কার। তুমি প্রসন্না হও। তুমি বরাহর পণী। তোমার হত্তে ভয়কর মহাচক্র। তুমি দংখ্রী দারা জলমগা বহন্ধরারে উদ্ধার করিয়াছ। তুমি শিব-স্বরূপিণী। তোনাকে নমস্কার। তুমি ভয়াবহ নৃদিংহবিগ্রহ পরিগ্রহ করিয়া, দৈত্যদমূহকে বিনাশ করিতে উদ্যতা হইয়াছিলে। তুমি ত্রৈলোক্যের তাণকারিণী নারায়ণী। তোমাকে নমস্বার। তুমি কিরীটশোভিনী, স্বিপুল-বজ্ঞধারিণী, সহস্র-নয়ন-সমুদ্ভানিনী, বৃত্তসংহারিণী, ইক্তশক্তি নারায়ণী। তোমাকে নমস্কার। তুমি ভয়য়য়র রপণারিণী, মহারাববিরাবিণী, দৈতাগণের মহা-বণবিনাশিনী, শিবদ্তীরপিণী নারায়ণী। তোমাকে নমস্কার। তুমি চামুভারপে মুভংক বিনাশ করিলাছ। তোমার বদনমণ্ডল দং ট্রাকরাল এবং গলদেশে, হত্তে ও কটিতটে মৃওমালার অলম্বার বিরাজমান। তুমি নারায়ঀ। তোমাকে নমফার। তুমিই লক্ষী, লজ্জা, মহাবিদ্যা, শ্রন্ধা, পুষ্টি, স্বধা, ধ্রুবা, মহারাত্রি ও মহাবিদ্যাশ্বরূপিণী নারায়ণী। তোমাকে নমস্কার। ভূমি মেধা। ভূমি সরস্বতী। তুমি বরস্কুপা তুমি ভৃতিস্কুপা। তুমি তমোঞ্গস্কুপা। তুমি সনাতন্কুপিনী**, সকলের** দ্বরপ্রপণী নারায়ণী। তোমাকে নমস্কার। তুমি প্রসন্নাহও। তুমি সর্ক্রপা। তুমি সর্কোশা। তুমি সর্বশক্তিসম্বিতা। তুমি দেবীরূপা। তুমি হুগাস্বরূপা। আমানের সক্লের ভর দূর কর। দেবি ! তোমাকে নমস্বার।

তোমার এই লোচনত্রস্থিত প্রমহলর বদনমগুল সর্ব ভূত হইতে আমাদের রক্ষা করক। তুমি কাত্যায়নী। তোমাকে নমস্বার। তোমার এই যে তিশুল সভাবতই নিতাস্ত প্রচেপ্ত; তাহার উপর আবার শিথাসমূহ সমূলতে হওরাতে, আরও ভর্তর হইরাছে; তুমি ইহা দারা অশেষ অহুর সংহার করিয়াছ। এই ত্রিশুল আমাদিগকে ভর হইতে পরিত্রাণ করুক। তুমি ভদ্দানী, তোমাকে নমস্বার। তোমার এই যে ঘণ্টা স্বকীয় হুগভীর নিনাদে সমূদায় সংগার প্রপূর্বিত করিয়া, দৈতাগণের তেজ হবণ করিয়া থাকে, ইহা পুক্তের ভাায়, আমাদের যাবতীয় পাতক নিরাক্ত করুক। তোমার এই যে থড়গ তোমার করপ্রভার সমৃদ্ধানিত ও অহুরগণের করিয়ান্যবে পরিশিপ্ত হইয়াছে, অসি চণ্ডিকে! আমরা তোমারে প্রণাম করিতেছি, ইহা আমাদের শুভ্দাধন করুন।

ভূমি তুটা হইলে, যাব গীর রোগ নই করিয়া থাক। আবার, ফটা হইলে, দকল অভীইই দ্রষ্ট করিয়া লাও। তোমাকে আশ্রয় করিলে, লোকের কোন বিপদই আরু উপস্থিত হর না। অবিক কি, যে তোমায় আশ্রিত হর, তাহাকে দকলেই আশ্রয় করিয়া থাকৈ। দেবি ! ভূমি অদ্য এই বে বছবিধ অরপে আয়ুম্র্জি আবিদ্ধত করিয়া, এই দকল ধর্মবেধী মহাস্ক্রগণের সংহার করিলে, ভোমা ব্যতিরেকে আর কাহার দায় আছে যে, এইরপ করিতে দমর্থ হর ! তোমা বাতিরেকে আর কেই বা এই অধিল অগৎকে বোর গভীর অন্ধকারপূর্ণ মমন্তর্কণ গর্জে অতিবেগে ভ্রমণ করাইতে পারে ? অধিক কি, লোকে যে বিবিধ বিদ্যা, বছবিধ শান্ত এবং বেদাদি বিবেকপ্রক্ষুর্ক নানাপ্রকার আদ্য বাক্যের আলোচনা প্রসঙ্গে এই সংগারে ভ্রমণ করিয়া থাকে,

দ্যাহার একমাত্র কারণ তুমিই; স্নার কেহই নছে। যেখানে রাক্ষণ সকল, অথবা বেখানে উপ্রবিধ আশীবিদ সকল, কিশা যেখানে শত্রুণ সকল, অথবা বেখানে দ্যান্ত্রল, তুমি সেই সেই স্থলে এবং নাগরমধ্যে অবস্থিতি করিয়া, এই বিশ্বের রক্ষা করিয়া খাক। তুমি এই বিশ্বের ঈশ্বরী। তুমি বিশ্বের পরিপালনকর্ত্ত্রী। তুমি বিশ্বের আছা। তুমিই বিশ্বকে সর্ব্বাভোবে ধারণ করিয়া আছে। বিশ্বের ঈশ্বর সকল ওু তোমার বন্দনা করেন। খাহারা ভোমাতে ভক্তিন্ত্র হয়, তাহারা বিশ্বের আশ্রয় হইয়া থাকে। অত এব দেবি! প্রসন্ত্রা হও। অধুনা ধেমন সদ্যই অস্করদিগকে বধ করিয়া, আমাদের পরিত্রাণ করিলে, সেইরূপে নিতাই অরিভ্রের আমাদিগকে রক্ষা কর এবং তৎসহকারে সমস্ত সংসারের সমস্ত পাপ ও উদ্বাপাত প্রভৃতি উৎপাতবিপাকজনিত মহা উপসর্গ সকল দূর কর। দেবি! আমরা প্রণাম করিতেছি, আমাদের প্রতি প্রসন্ত্রা হও। তুমি বিশ্বের যাবতীয় হঃখ সন্তাপ হরণ করিয়া থাক। তৈলোক্যবাণিগণ এই কারণে তোমার স্তব্ ও পূজা করে। একংণ তাহাদের সকলকেই বরদান কর।

দেবী কহিলেন, সকলকে ব্রদান করাই আমার এত বা স্বভাব। অতএব সুরগণ! যাহাতে অপতের উপকার হইতে পারে, ইচ্ছামতে তাদৃশ বর প্রার্থনা কর, আমি তাহাই প্রদান করিব।

দেবগণ কহিলেন তুমি অথিলের ঈশ্বরী। অত এব ত্রিভ্বনের সম্দয় বিম্বিপত্তি প্রশমন ও আমাদের বৈরি বিনশন করিতে হইবে। ইহাই আমাদের অভিল্বিত বর।

দেবী কহিলেন, দেবগণ! অটাবি:শতি যুগ সমাগত হইলে, বৈবস্বতনানক মহুর অধিকার-সময়ে শুস্ত ও নিশুক্ত নামে যে দৈতঃ হয় জন্মগ্রহণ করিবে, আমি নন্দগোপগৃহে যশোদার গর্ত্তে অবতরণ করিয়া, বিদ্যাচল আশ্রয়পূর্বক তাহাদের বিনাশ করিব। পুনরায় অতীবসংহারিণী মুষ্টি পরিগ্রহ করিলা, পৃথিবীতে অবতীর্ণা হইলা, বিপ্রচিতির বংশোন্তব দানবদিগকে বিনষ্ট করিব। নেই ভয়ন্তরপ্রকৃতি অসুর্দিগকে ভক্ষণ করিতে আরম্ভ করিলে, আমার দস্ত দকল দাড়িমীকুসুম সদৃশ রক্তবর্ণ হইবে। তাহাতে অর্গে দেবগণ ও মর্ক্তে মানবগণ আমাকে রক্তদস্তিকা বলিয়া সত্ত স্তব করিবে। পুনরায় যথন জলের অভাববশতঃ শত বংসর ব্যাপিয়া অনাবৃষ্টি হইবে, তথন ঋষি-গণ আমার বিশিষ্ট বিধানে তব করিলে, আমি অধোনিজা অর্থাৎ বয়ংই সম্ৎপন্না হইব। তৎকালে শত নেত্র বিভার করিয়া, মুনিদিগের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে, মহযোরা ভল্লিবন্ধন আমারে শ্তাকী বলিয়া কীর্ত্তন করিবে। ঐ সময়ে বেপ্যান্ত না বৃষ্টি হইবে, তাবৎ আমি আপ্নার দেহ হইতে লোক সকলের প্রাণধারণোপযোগী শাক সকল সমুভাবিত করিয়া, সকলের ভরণ করিব। ভাহাতে আমারে লোকে শাকন্তরী বলিয়া কীর্ত্তন করিবে। সেই সময়েই আমি ছর্গনামক মহা-হ্মরকে বিনাশ করিব। ভাহাতে আমার নাম ছর্গা দেবী বলিয়া সংসারে বিথাত হইবে। পুন-শ্বার বথন আমি ভরাবহ বিগ্রহ পরিগ্রহ করিরা, হিনাচল আশ্রমপূর্বক মুনিগণের পরিগ্রাণ কারণ রাক্ষসগণের সংহার ক্রিব, তথ্য মুনিগণ সকলে অবনত দেহে আমার তাব ক্রিবেন এবং ক্ষামার নামও তদবধি ভীমা বলিয়া বিখ্যাত হইবে। অনস্তর অরুণনামক অসুর যথন ত্রিভুবনের বিপুল বিশ্ব সমুৎপাদন করিবে, তথন আমি অসংখ্য ষট্পদবিশিষ্ট ভ্রমরমূর্তি ধারণ করিয়া, তৈলো-কোর হিতার্থে তাহারে বিনাশ করিব। তৎপ্রযুক্ত লোক দকল আমারে ভ্রামরী বলিয়া সর্কতো ভাবে তাব করিবে ৷ এইরূপে যে যে সময়ে দানবগণ হইতে লোকের বিম্বিপত্তি উপস্থিত হইবে, শেই দেই দৰ্যেই আমি অবভীণা হইয়া, শত্ৰুক্ল নিৰ্দ্মুল করিব।

ইতি দেবীর বরদান নাম একনবভিতম অধ্যায়।

### দ্বিনবভিত্তম অধ্যায়।

দেবী কহিলেন, যে ব্যক্তি সমাহিত হইয়া, ভোণাদের প্রয়োজিত এ সকল ভব হারা নিভা আমার শ্বব করিবে, আমি তাহার সকল বিপত্তিই বিনাশ করিব, ভাহাতে সংশন্ন নাই। বাহারা মধুকৈটভবধ, মহিব্যুস্ত্র-সংহরণ এবং শুস্ত নিশুস্তের নিধনরপ আমার অসীম মাহান্তা ভক্তি-সহকারে অষ্ট্রমী, নব্মী বা চতুর্দশীতে একতান চিত্তে পাঠ বা শ্রবণ করিবে, ভাহাদের কোন-রূপ ছঙ্কৃতি থাকিবে না এবং ছঙ্কৃতিজনিত কোনরূপ বিপদও ভাহাদিগকে কথন আংক্রমণ করিতে পারিবে না। তাহাদের দারিদ্রংখও দূর হইবে এবং কথন ইটবিনাশ সংঘটিত হইবে না। তাহারা কথন শত্রু হইতে, দহা হইতে, রাজা হইতে, শত্রু হইতে, অগ্নি হইতে এবং দ্বিল হই তেও কোনরপ ভয় পাইবে না। এই কারণে এক গান মনে ভক্তিসহকারে সর্কদা আমার এই মাহাত্ম্য পাঠ করিব ও শ্রবণ করিবে। কেননা, ইহাই পরম অক্তায়ন। আমার মাহাত্ম্য পাঠ করিলে, মহামারী হইতে সমুদ্রত যাবতীয় উপদর্গ এবং তিবিধ উৎপাত প্রশমিত হয়। আমার যে আয়তনে নিত্য সমাগ্রূপে ইহা পাঠ করা হয়. আনি কখনই তাহা ত্যাগ করি না। সর্ব-দাই তথার সন্নিহিত থাকি। বনিপ্রদান, পূজা, অগ্নিকার্য্য ও মহোংসব এই সকল ঘটনায় আমার এই চরিত্র সম্পূর্ণরূপে পাঠ ও শ্রবণ করিবে। জানিগাই হউক বা না জানিয়াই হউক, যে বাক্তি আমার এই চরিতপাঠসহকারে ভঞ্জিভরে বনি, পূজা, বহিছোম ও মহোৎদ্যাদি করিবে, আমি প্রীতিসহকারে তৎসমন্ত প্রতিগ্রহ করিব। প্রতিবংগর শরংকালে আমার যে মহাপুঞা করা হয়. তাহাতে আমার এই মাহাত্মা ভক্তিসমন্বিত হইয়া শ্রবণ ক্রিলে, লোকে আমার প্রসাদে সর্পবিধ-বিন্নবিপত্তি-বিনিম্ ক্ত ও ধন-ধান্ত-পুত্রসমন্বিত হইয়া থাকে, তাহাতে সন্দেহই নাই। আমার এই মাহাত্মা ও পরম পবিত্র অবতারপরম্পরা এবং আমার যুদ্ধবিক্রম শ্রবণ করিলে, লোকে নির্ভয় হইয়া থাকে। অধিক কি. আমার মাহাত্মাশ্রবণে প্রবৃত্ত হইলে, লোকের শক্রনাশ হয়, কল্যাণলাভ হয় এবং বংশও আনন্দিত হয়। স্ম্বিণ শান্তিকার্য্য, ছঃম্প্রদর্শন ও গ্রহণীড়া-সমূহ, এই দক্ত ঘটনার আমার মাহাত্ম শ্রণ করিবে। শ্রণ করিলে, দক্ত উপদর্গেরই শাস্তি হয়, দাকণ গ্রহপীড়া সকলের নিবৃত্তি হয় এবং লোকে যে ছঃম্বন্ন দর্শন করে, তাহা মুম্বন্নে পরিণত হইয়া থাকে। যে দকল বালকের উপরে বালগ্রহগণের দৃষ্টি হয়, আমার এই মাহান্য পাঠ করিলে, তাহাদের শান্তি হইয়া থাকে এবা যে যে স্থলে স্কর্নভেদ সংঘটিত হয়, সেই সেই স্থলে পাঠ করিলে. উৎক্রম্ভ দৈত্রী সঙ্কলিত হইয়া থাকে। আমার এই চরিত্র পাঠ করিবামাত্র, তৎক্ষণে যাবতীয় ছর্ব ত-গণের বলহানি হয় এবং রাক্ষম, পিশাচ ও ভতগণেরও বিনাশ হইয়া থাকে। আমার এই মাহাত্ম্য আন্দ্রোপান্ত যেখানে পঠিত হয়, দেই থানেই আমার সালিখ্য-দল্মটন হইন্না থাকে। সংবৎদর অহর্নিশ পঞ্চ, পুষ্প, অর্ঘ্য, ধৃপ, উৎকৃত্ত গন্ধদীপ, ত্রান্ধণভোজন, হোম, স্বানীয় আহরণ এবং অক্সান্ত বিবিধ ভোজা প্রদান করিলে, আমার যে প্রীতি সঞ্চিত হয়, আমার এই পরম পবিত্র চরিত্র একবারমাত্র পাঠ করিলেই, তদমুরূপ প্রীতি সমুংপর হইয়া থাকে। ইহার শ্রবণ-মাত্র পাপ দকল দুর হয়, রোগ দকলের নিয়ত্তি হয় এবং ভূতজানিত বিপদে রক্ষা হয়। আমার জন্মকথা কীর্ত্তন করিলেও, এরপ ফল প্রাপ্ত হওয়া যায়। অধিক কি, আমার এই ছই-দৈতঃ নিস্দন যুদ্ধচরিত শ্রবণ করিলে, লোকের শত্রুকত ভর নিরস্ত হইরা থাকে। তোমরা আমার যে ত্তব করিলে এবং ব্রহ্মর্বিগণও স্বয়ং যে স্তুতি করিয়াছেন, তৎসমত্ত প্রবণ বা পঠন করিলে, ভুত মতির সঞ্চার হয়। অন্তরণ্যে বা প্রাক্তরে অথবা দাবাগ্নি মধ্যে পতিত হইলে, দম্যাগণ কর্ত্তক পরি-রুত বা অসহায় অবস্থায় উপনীত অথবা শত্তুগণ কর্ত্ত গৃহীত হইলে, কিয়া বনমধ্যে সিংহ, থান্ন ও বনহন্তী কর্তৃক অনুষাত হইলে, অথবা কুন্ধ নরপতির আঞ্হানুসারে বধ্য ভূমিতে উপনীত দ অথবা বন্ধনএন্ত হইলে, অথবা বাতাবন্তে পিডিত হইলে, কিয়া মহার্ণব্যধ্যে পোতে অবন্ধিত হইলে, অথবা অভিদারণ সংগ্রামে শল্পমমূহে আক্রান্ত হইলে, কিয়া ভরত্বর বিদ্নপরস্পারার সংঘর্ষ জনিত বেদনায় অভিমাত্র অন্ধিত হইলে, আমার এই মাহাত্মা অরণ করিবামাত্র লোকের ভত্তৎ সঙ্ক'ট তৎক্ষণাৎ উদ্ধার হইয়া থাকে। আমার চরিত্র অরণ করিলে, আমার প্রভাবে দ্যাগণ, বৈরিগণ ও সিংহ প্রভৃতি সকলেই দূর হইতে প্লায়ন করে।

ঋষি কহিলেন, প্রচণ্ডবিক্রমশানিনী ভগবতী চণ্ডিকা এই বিলিয়াই, ষ্ট্রেবগণের সমক্ষে দেই হানে তৎক্ষণাৎ অন্তর্ভিত্য হইলেন। তথন দেবগণ শক্রনাশ্বশতঃ সর্বতোভাবে ভরশ্ন্ত হইরা, ত্ব অধিকার লাভ করিয়া, পূর্বের ভার যজ্ঞভাগভোগে প্রবৃত্ত হইলেন। এদিকে, দেবগণের দারণ শক্র, অন্ত্রমবিক্রির লাভ করিয়া, পূর্বের ভার যজ্ঞভাগভোগে প্রবৃত্ত হইলেন। এদিকে, দেবগণের দারণ শক্র, অন্তর্পরিবিল্ট করিক বৃদ্ধে বিনষ্ট হইলে, হতাবশিষ্ট দৈতাগণ পাতালে প্রবেশ করিল। ভূপ! এইরূপে দেবী ভগবতী জন্ম-মৃত্যু-বিরহিতা হইলেও, বারম্বার মবতরণ করিয়া, জগতের পরিপালন করেন। অধিক কি, তিনিই এই বিশ্বের মোহ সমুদ্ধাবন ও তিনিই ইহার প্রস্বেকরিয়া থাকেন। ভাইার নিকট যাজ্ঞা করিলে, তিনি প্রসায়া হইয়া, বিজ্ঞান দান ও সমৃদ্ধি সম্প্রদান করেন। অন্তর্ম মন্থ্রম্বর তিনিই এই বিশ্বর্মাণ্ড ব্যাপ্ত করিয়া আছেন। তিনি প্রসম্বাহ্ম মহামারীম্বর্গি পরিগ্রহ করেন। আবার তিনিই স্টিরূপে আবিভূতা হইয়া থাকেন। তাহার জন্ম নাই। সেই সনাতনীই হিতিসময়ে লোকের স্থিতিবিধান করেন; সম্পৎসমরে তিনিই লোকের গৃহে লল্মীরূপে অবতরণ করিয়া সমৃদ্ধিদাধন করিয়া থাকেন। আবার তিনিই অভাবন্যয়ে অলন্ধীরূপে তাহাদের বিনাশ করেন। পুল, ধুপ ও গন্ধদি দারা তর ও পুজা করি:ল, তিনি লোকদিগকে ধন, পুত্র এবং ধর্ম্মে মিতি প্রদান করিয়া থাকেন।

ইতি দেবীমাহাত্মা ফলশ্রুতি নাম দ্বিনবতিতম ত্রুধাায়।

### ত্রিনবভিতম অধ্যায়।

ঋষি কহিলেন, ভূপ! আনি আপনার নিকট অমুত্তম দেবীমাহাত্ম্য কীর্ত্তন করিলাম। শেই দেবীর প্রভাবই এই এপ। কেন না, তিনিই জগৎ ধারণ করিয়া আছেন। তিনি সাক্ষাৎ জগবান্ বিজ্ঞুর মায়া। তিনিই তোমাকে, এই বৈগুকে ও অন্তান্ত বিবেকী ব্যক্তিদিগকে যেমন জ্ঞানদান করেন, তেমনি মোহিতও করিয়া থাকেন। অন্তান্তেরাও আবার তৎকর্ত্ত মোহিত হইয়া, আত্মবিস্কৃত হইবে। অতএব মহারাজ! আপনি এক মাত্র সেই প্রমেশ্রী মহামায়ারই শ্রণ প্রহণ করুন। এক মাত্র তাঁহার আবাধনা করিলে, লোকে স্বর্গ ও ক্লপ্রর্গ প্রাপ্ত হয়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা স্থরণ সেই সংশিতরত মহাভাগ মহর্ষির এই কণা শুনিরা, তাঁহাকে প্রানিগাত করিলেন। অতীব মমতা ও রাজ্যাপহরণ, এই ছই কারণে তাঁহার নির্বেদ উপস্থিত হইরাছিল। তজ্জ্য তৎকণাৎ তপশ্চর নির্বেদ করিলেন। বৈশ্রেরও ঐরপ নির্বেদ করিছিল। সেও তাঁহার পথবর্ত্তী হইণ। তাঁহারা উভরেই দেবী অধিকার সন্দর্শন বাসনাবশ্বদ হইরা, নদীপুনিন আশ্রে করিরা, দেবীস্ কুজপসহকারে তপশ্চরণে প্রায়ত্ত হইলেন এবং দেবীর মৃথারী মূর্ত্তি নির্মাণ করিরা, সেই নদীতীরেই পূজা, ধৃপ ও হোম দারা তাঁহার উপস্থান করিতে লাগিলেন। তাঁহারা উভরেই কথন একবারেই আহার ত্যাগ ও কথন বা আহার সংব্দ করিরা, সমাধিত্ব হইরা, তদশত চিত্তে স্বকীর শরীরের রক্ত দেবীর উল্লেশে বিশিক্ষাণ করিতে আরম্ভ করিলেন।

এইরূপ যতিতি তিন বৎসর বিশিষ্ট বিধানে আরাধনা করিলে, জগদ্ধানী চাওকা তাঁছাদের দর্শনগোচরে আবিভূতি হইরা, বলিতে লাগিলেন, রাজন্। তুমি যাহা প্রার্থনা করিতেছ এবং কুলনন্দন বৈশ্র। তুমিও যাহার প্রার্থনায় প্রয়ত্ত হইরাছ, তাহার সমন্তই তোমরা প্রাপ্ত হইবে। আমি তোমাদের প্রতি পরম তুটা হইরাছি; উহা দান করিব।

মার্কণ্ডেম কহিলেন, তথন নরপতি হরও এই বর প্রার্থনা করিলেন, আমি খেন পরজন্মে কথন রাজ্যচ্যত না হই এবং ইহজন্মেও থেন বলপূর্বক শক্রনল দলন করিয়া, নিজ অপহাত রাজ্য লাভ করিছে পারি। অনস্তর বৈশু এই বর প্রার্থনা করিলেন, আমার মন মমতাপাশে বছ হওয়াতে, নিতান্ত নির্কোণ্ড হইয়াছে। অতএব যাহাতে মমতার হেতৃভূত আমজির বিনাশ হইতে পারে, আমার হেন তাদুশ জ্ঞানলাভ হয় এবং আমি থেন প্রজ্ঞাস্পান্ন হইতে পারি।

দেবী কহিলেন, রাজন্! স্বল্লানধ্যেই তোমার স্বরাজ্যলাভ হইবে। তুমি সমুদ্র শত্রু বিনাশ করিয়া, সেই রাজা চির ধায়ী করিতে পারিবে। এতভিন্ন, তুমি দেহাবদানে পুনরায় ভগবান্ ভাস্বরের ঔর্বে জন্মগ্রহণ করিয়া, দাব্ণিক নামে মহু হইবে।

খ্যনন্তর তিনি বৈশ্যকে কহিলেন, তুমি আমার নিকট যে বর প্রার্থনা করিলে, খ্যামি তাহা প্রদান করিতেছি। তুমি জ্ঞানলাভ ও তৎসহকারে বিশিষ্টরূপ দিকি সমাধান করিবে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, দেবী এইরূপে তাঁহাদের ছই জনকেই মভিণাষত বরপ্রদান করিয়া, তৎক্ষণাং অন্তর্হিতা হইলেন। তাঁহারা উভ:য় ভক্তিভরে বিহিত বিধানে তাঁহার তাব করিণেন। এইরূপে দেবীর বরে ক্ষ্তিয়প্রেঞ্চ সুর্থ সুংগ্র উর্গে জন্মগ্রহণ করিয়া দাবণি মহু হইলেন।

ইতি দেবীমাহাত্ম সমাপ্তি নাম ত্রিনবভিতম অধ্যায়।

### চতুর্বতিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, মানি তোগার নিকট এই সাবণিক ময়ন্তর এবং দেবীমাহাল্মা ও মহিৰামরবিনাশ সন্যক্রপে কার্ত্তন করিলাম। দেবী ও মাতৃকাগণ এবং লায়ং দেবী চণ্ডিকা বুজে

যেরপে উৎপার ইইয়ভিলেন, তাহাও তোগার নিকট বলিলাম। তিরার, শিবল্ তীর মাহাল্মা,

৬৪ নিওন্তের বধ, রক্তবীল্লবধ, এই সম্পায়ও কীর্ত্তন করিলাম। ম্নিশ্রেট। অতঃপর অপর সাবপিক ময়্ব বৃত্তান্ত প্রবণ কর্জন। ইনি দক্ষপুত্র সাবণ। সেই ময়ন্তরের যে যে দেবতা, মুনি ও নরপতিগণের আবিভাব হইবে, তাহাও প্রবণ কর। পার, মরীচিভার্গ ও মধ্রা ইইারা সেই ময়ন্তরের

দেবতা। ইইারা লাদশ গণে বিভক্ত। তাহাদের ভবিষা ইক্রও মহাবণ ও সহস্রণোচন হইবেন।

সম্প্রতি বিনি অয়ির পুত্র বড়ানন কার্ত্তিকেয়রপে বিরাজ করিতেছেন, তিনিই এই ময়ন্তরের অন্তর্তনামা ইক্র হেবৈন। মেধাতিণি, বস্তু, সত্যা, জ্যোতিয়ান্, ছাতিমান্, সবল, হব্ববাহন এই সাতজন

মধি হইবেন। আরু ধৃইকেতু, বহ্বেক্র, পঞ্চন্ত, নিরাময়, পৃথুপ্রবা, অর্চিয়ান্, ভূছারিয়, বৃহত্তর,

ইহারা সেই দক্ষপুক্রের পুত্র ও রাজা হইবেন।

षिख ! অধুনা দশম ন্যন্তরের বৃত্তান্ত শ্রবণ কর । ধীমান্ একপ্রের এই মহন্তরে স্থাদীন ও নিক্ষ নামে দেবগণের আবিভাব ছইবে। তাঁহাদের সংখ্যা সম্দারে একশত । শান্তি ঐ শক্ত দেবতার ইক্স ইইবেন । তিনি ইজের যাবতীর গুণই অবিভার করিবেন । তৎকালে বাহারা সপ্রধি হইবেন, তাঁহাদেরও নাম শ্রবণ কর । আপোম্ন্তি, হবিয়ান্, স্কুত, সত্য, নাচাগ, স্প্রঞ্জ ও বালিঠ, এই সাতজন ধবি। আর স্কুমেজ, উত্যোজা, ভ্রিংসন, বীর্যান্, শতানীক, বিভ, অন্নিজ, ক্রপ্র, ভ্রিহার, স্প্রকা, ইইারা সকলে সেই মহুর পুত্রবণে জন্মগ্রহণ করিবেন।

অধুনা ধর্মপুত্র সাবর্ণ মন্ত্র অন্তর্রতান্ত প্রবণ কর। দেই মধ্বেরে বিহলম, কামগ ও নির্মাণ-পতি এই তিনপ্রকার দেবগণ আবিভূতি ও প্রত্যেক প্রকার ত্রিংশৎ গণে বিভক্ত হইবেন। তর্মধ্যে মাস, ঝঙু ও দিবস ইহারাই নির্মাণপতি হইবেন। আর রাত্রি সকল বিহল ও মৌহুর্জ সকল কাম-গণ হইবেন। প্রথাত-বিক্রমর্থ ইহাদের ইক্রপদ গ্রহণ করিবেন। হবিমান, বরিষ্ঠ, আই, আক্রি, নিন্দর, বিষ্টি, এবং অগ্নিদেব ইহারা ঐ মহন্তরের সপ্তর্ষি হইবেন। আর সর্বাগ, স্থেশ্র্মা, দেবানীক, পুরুষহ, হেমধ্রা, দৃঢ়ায়ু, ইহারা সেই মহুর ভাবী পুত্র।

ইহার পর কলপুত্র সাবর্ণ মছর বাদশ মন্বন্তর উপস্থিত হইলে, যাঁহারা দেবঙা ও মুনি হইবেন, শ্রাবণ কর। স্থার্থনা, স্থানা, ছরিত, রোহিত, স্বর্ণ এই পাঁচ দেই মন্বন্তরের দেবতা। ইহারা দশগণণে বিভক্ত। মহাবল ঋতধামা তাঁহাদের অধিপতি ইন্ত্র, জানিবে। তিনি যাবতীর ইন্তরণাই ভূষিত। অধুনা ঐ মন্বন্তরের সপ্তর্থবির নামও শ্রবণ কর। ছাতি, তপন্থী, স্থতপা, তপোম্রি, তপোনিধি, তপোরতি তপেশুভি, এই সাতজন ঋষি। আর দেববান, উপদেব, দেবশ্রেষ্ঠ, বিদ্রুথ, মিত্রবান, মিত্রবিল্ল ইহারা সেই মহর ভবিষ্য পূত্র। অনস্তর রোচ্যনামক অয়োদশ মহর প্রা, সপ্তর্ধি এবং নরপতি ও দেবগণের কথা বলিতেছি, শ্রবণ কর। স্থার্থা, স্থক্যা ও স্থার্থা ইহারা সকলে সেই মন্বন্তরের দেবগণ। তাঁহাদের ইন্তের্যর নাম দিবস্পতি। তিনি মহাবল ও মহাবীয় হইবেন। যাঁহারা সপ্তর্ধি হইবেন, তাঁহাদের বিষয় বলিতেছি, শ্রবণ কর। ধৃতিমান, অব্যয়, তবদশা, নিক্তংস্ক, নির্দোহ, স্থত্পা, নিশ্রক্ষপ, এই সাতজন ঋষি। আর চিত্রদেন, বিচিত্র, নর্মতি, নির্ভর, দৃচ, স্থনের, ক্তর্ব্রি, স্থবত ইহারা সেই মহর ভবিষা পূত্র।

ইতি সর্বাদাবর্ণমন্বস্তর নাম চতুর্নবতিত্রম অধ্যায়।

### পঞ্নবতিত্ম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, পূর্ব্বে প্রজাপতি কচি নির্দান, নিরহকার ও নিশঃক্ষ হইয়া, নিজাদংঘমপূর্বাক পৃথিবীপরিভ্রমণে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন। তদীয় পিতৃগণ তাঁহাকে অয়িশৃন্তা, গহশ্তা, আশ্রমশৃত্ত ও সঙ্গাত্ত এবং একাহার দর্শন করিয়া, বলিতে লাগিলেন, বংদ! তুমি কিজন্তা পরমপবিত্রঅরপ দারপরিগ্রহ করিতেছ না ? দেখ, দারপরিগ্রহ করিলে, অর্গ ও অপবর্গলাভ হয় এবং না
করিলে, বন্ধনদংঘটন হইয়া থাকে। গৃহী পূর্বে সমস্ত দেবগণ, পিতৃগণ, ঋষিগণ ও অতিধিগণের পূজা করিয়া, লোক সকল ভোগ করে। দারপরিগ্রহ না করাতে, তুমি দেবঋণ, পিতৃঋণ,
মর্মাঞ্জণ ও ভ্তঞ্গণে দিন দিন বন্ধ হইতেছ। তুমি পূজ সকল উৎপাদন এবং দেবগণ ও পিতৃগণের তৃপ্তিদাধন না করিয়া, মৃঢ় তাবশতঃ কিরপে সদগতিলাভের ইচ্ছা করিয়াছ ? পূজা! দারপরিগ্রহ না করাতে, আমাদের স্পষ্টই বোধ হইতেছে তোমার পৃথক্ পৃথক্ ক্লেশ সংঘটিত হইবে।
প্রথম ক্লেশ, মৃত্যুর পর নরক এবং ভাহার পর অন্ত জন্মেও ক্লেশ উপস্থিত হইবে।

ক্ষৃতি কহিলেন, পরিগ্রহ করিলে, অতিমাত্র ছাংশ পতিত হইতে হয়, নরকণাভও হয় এবং অধাগতিও ভোগ করিছে হয়। এইজগুই আমি পূর্বে দার গ্রহণ করি নাই। সমাকরপে নিয়প্ত করিয়া, আঝাকে যে সংযত করা যায়, তাহাই মুক্তির হেতু হইয়া থাকে। কিন্তু পরিগ্রহ করিলে, তাহা হয় না। আঝা মমত্বপঙ্কে লিপ্ত হইলেও, নিস্পরিগ্রহ হইয়া, চিৎসভারপ সনিশে অমৃদিন ভাহাকে যে প্রক্ষানন করা যায়, তাহাই স্ব্রাপেক্ষা শ্রেষ্ঠ বা প্রশন্ত কয় । এই কারণে ইক্সিয়্রাম সংযত করিয়া, সধাননারপ সনিণ ঘারা অনেক-জয়্মসভ্ত কর্ময়প পঙ্কে পরিণিপ্ত আঝাকে প্রক্ষানন করা পণ্ডিভগণের একমাত্র কর্ব্য।

পিতৃগণ কহিলেন, ইন্সিয়গ্রাম সংযত করিয়া, আয়ার প্রকালন করা যুক্তিযুক্ত বটে; কিছ বংশ ! তুমি যে পাণের পথিক হইয়াল, তাহাতে কি মোক্ষণাত হইবে ? পরস্ক, নিকাম হইয়া, দান করিলে, যেমন অশুভানাশ হয়; সেইরূপ শুভান্তভ ভোগরূপ ফল ছারা প্রাক্তন কর্পের কর ইয়া থাকে। এইরূপে যাহারা করণামাত্রপরায়ণ হইয়া, কার্যায়ুঠানে প্রবৃত্ত হয়, তাহারা ক্থন বন্ধনগ্রত্ত হয় লা। সেইরূপ, কামনাত্যায়পুর্বক কার্যা করিলেও, বন্ধন চ্যুত্ত হয় ভারারা ক্রমন বন্ধনগ্রত্ত হয় লা। সেইরূপ, কামনাত্যায়পুর্বক কার্যা করিলেও, বন্ধন চ্যুত্ত হয় লাবার, অহনিশ স্থাও তঃথের ভোগ ছারা পুর্বক্ত কর্পের ক্ষমসভাটন হয়। ফলতঃ, এইরূপে পাপ পুণা লইয়াই মন্ম্যাদিগের পদবী প্রবৃত্তিত হয়য়াছে। প্রাক্ত পুর্বয়ণ এইরূপ বিধানক্রমেই আয়াকে প্রকাণিত ও বন্ধ হইতে স্বর্কিত করেন। তাহাতে, আর আয়াকে বিবেক্বিহীন ও তজ্জন্ত পাপপণত্ত ও পরিলিপ্ত হইতে হয় না।

কৃচি কহিলেন, পিতামহগণ ! বেদে কর্মমার্গকেই অবিদাা বিশিয়া, উল্লেখ করা হইয়াছে। ভবে আপনারা কিন্ধপে আমাকে দেই কর্মমার্গেই সংযোজিত করিতেছেন ?

শিতৃগণ কহিলেন, বেদে যাহা বনিয়াছেন, তাহা সত্য বটে। কিন্তু কর্ম হারা একেপ বটে, দেকথা মিপা। বণিতে কি, কর্মই একমাত্র বিদ্যাপ্রাপ্তির হেতু, তাহাতে সংশ্র নাই। অসৎ প্রুষণণ বিহিত্তের অনুষ্ঠান করিয়া, মুক্রির জন্ত যে আত্মসংঘম করে, তাহা মুক্তি প্রদান না করিয়া, প্রত্যুত, পরিণামে অধাগতি প্রদান করিয়া থাকে। বংস! তুমি আত্মাকে প্রকালন করিয়া, প্রত্যুত, পরিণামে অধাগতি প্রদান করিয়া থাকে। বংস! তুমি আত্মাকে প্রকালন করিয়া, ক

ক্ষৃতি কহিলেন, পিতৃগণ! আমি সম্প্রতি বাদ্ধক্যে উপনীত হইয়াছি। এ অবহায় কোন্ ব্যক্তি আমাকে পদ্মী প্রদান করিবে। ইহার উপর আমি আবার দরিদ্র; স্ক্তরাং, দারসংগ্রহ করা স্ক্রিথা হুবটি।

পিতৃগণ কহিলেন, বৎস! যদি তুমি আমাদের কথা না শুন, তাহাহইলে, আমাদের পতন ও তৎসহকারে তোমারও অধোগতি হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন. মুনিসভম ! পিতৃগণ এইপ্রকার কহিয়া, ক্রচির সমক্ষেই বাভাহত প্রাণী-পের ভাষ, সহ্সা অদৃভা হইলেন।

ইতি ফুচির উপাধ্যান নাম পঞ্চনবতিতম অধ্যায়।

## ষধ্বতিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, পিতৃগণের এ কথা ওনিয়া, কচির মন অতিমাত্র উবেগযুক্ত হইল। তজ্জন্ত নি কল্পানিলাবী হইয়া, পৃথিবীপরিভ্রমণে প্রবৃত্ত হইলেন। কিন্ত কুলাপি কল্পানাত করিছে। বিলেন না। তথন পিতৃবাক্যরূপ অনলে অতিমাত্র দহমান হইয়া, অতীব উদ্বিহতিও ও একাত বিলেন না। তথন পিতৃবাক্যরূপ অনলে অতিমাত্র দহমান হইয়া, অতীব উদ্বিহতিও ও একাত ব্যাক্রাত্ত ইলেন। ভাবিলেন, কি করি, কোথায় ঘাই, কি করিলেই বা আভ দারপরিপ্রহ আক্রাক্ত ইলেন। ভাবিলেন, কি করি, কোথায় ঘাই, কি করিলেই বা আভ দারপরিপ্রহ হয়া, পিতৃপুক্ষণাণের অভ্যাদর লাভ হইতে পারে ? এই প্রকার চিল্তাপ্রস্কলে সেই মহাত্মা সভর ইয়া, পিতৃপুক্ষণাণের অভ্যাদর লাভ হইতে পারে ? এই প্রকার চিল্তাপ্রস্কল করিলেন তপল্ডরপস্কলারে ক্ষলবানি এক্ষার আরাধনা করিব। এইরপ ক্রসভ্রম হইয়া, বিলেনে তপল্ডরপস্কলারে ক্ষলবানি এক্ষার আরাধনা করিবেন। তিনি বিশিষ্টরূপ নিয়ম্ব-

বন্ধনসহকারে ভাঁহার আরাধনা করিতে লাগিলেন। তদ্ধনে লোকপিতামহ ব্রহ্মা ভাঁহাকে দর্শন দিরা, কহিলেন, আমি প্রদন্ত হইরাছি। কি ভোমার অভিলাব, বস। তথন ক্ষতি অগৎপতি ব্রহ্মাকে প্রণিপাত করিরা, পিতৃগণের বচনাত্মারে যাহা করিতে অভিলাধী হইরাছেন, তাহা ভাঁহার গোচরে নিবেদন করিলেন।

পিতামহ তাঁহার অভিল্যিত শ্রবণ করিয়া, কহিলেন, তুমি প্রফাপতি হইরা, প্রকা স্কল স্ষ্টি করিবে এবং প্রকালেকৈর স্টি, পুত্র সকলের উৎপাদন ও ক্রিয়া সকলের অষ্ঠানানস্তর, ত্বীর অধিকার পর্যাবদিত হইলে, দিন্ধি প্রাপ্ত হইবে। একলে তুমি পিতৃগণের আদেশামূরপ দার পরি-প্রহ কর। আমি যাহা বলিলাম, মনে মনে তাহাই সঙ্কর করিয়া, পিতৃগণের পূঞা কর। তাঁহারা তাহাতেই তুই হেইয়া, তোমার অভীপিত পত্নী ও পুত্র সকল প্রদান করিবেন। দেখ, পিতৃগণ সম্ভট হইলে, কি না দান করেন ?

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, ক্রচি অব্যক্তযোনি ত্রহ্মার এই কণা শুনিয়া, বিবিক্ত নদীপুলিন আশ্র করিয়া, পিতৃগণের দক্তোবসাধনে প্রবৃত্ত হইলেন এবং একাগ্র ও প্রবৃত্ত হইয়া, ভক্তিনম কন্ধরে আদরসহকারে বক্ষামাণ বাক্যে তাঁহাদের স্তব করিতে লাগিলেন, যাঁহারা প্রান্ধে অধিষ্ঠাত্তী দেবতা রূপে অবিষ্ঠান করেন এবং দেবগণও শ্রাদ্ধে বাঁহাদের স্বধোচ্চারণসহকারে তৃপ্তি বিধান করিয়া থাকেন, সেই পিতৃগণকে আমি নমস্বার করি। মহর্ষিরা ভুক্তি ও মুক্তির অভিলাষী হইরা, ভক্তি-সহকারে বাঁহাদের তৃপ্তি বিধান করেন; সেই ইত্যাদি। স্বর্গে সিদ্ধগণও শ্রাদ্ধ করিয়া, যাবতীয় অত্যুৎ-ক্লষ্ট দিব্য উপহার প্রদান সহকারে যাঁহাদিগকে তৃপ্ত করেন, সেই ইত্যাদি। গুহুকগণ্ও আত্যস্তিকী পরম ঋদ্ধি কামনা করিয়া, তন্ময় হইয়া, ভক্তিগহকারে বাঁহাদিগকে তৃপ্ত করেন; মর্ত্ত্যগণও পৃথিবীতে সর্বাদা শ্রদাসহকারে প্রাদ্ধ করিয়া, যাঁহাদের তৃপ্তি বিধান করে এবং যাঁহারা অভীষ্ট লোক সকল প্রদান করিয়া থাকেন; বান্ধণেরা পৃথিবীতে বাঞ্চিত অভীষ্টলাভের জ্বন্ত সর্ব্বদা বাহাদের অর্চনা করেন এবং ধাঁহারা তাঁহাদিগকে প্রাঞ্জাপত্য স্থান প্রদান করিয়া থাকেন; অরণ্য-বাদীরা তপো-বলে সর্বাথা নিস্পাপ হইয়া, আহারসংযমস্হকারে আর্ণ্যক বিধানে শ্রাদ্ধ করিয়া, যাঁহাদিগকে তৃপ্ত করেন; নৈষ্টিকব্রতচারী বান্ধণগণ্ড আত্ম-সংঘ্যাহকারে স্মাধিস্থ হইয়া, স্ম্যুগরূপে বাঁহা-দের তৃথি বিধান করেন; ক্রিয়েরা ম্থাবিধি যাবতীয় কব্য প্রদানসহকারে প্রান্ধ করিয়া, ইছা-দিগকে তৃপ্ত করেন এবং বাঁহারা লোকত্রয় ফল প্রদান করিয়া থাকেন; বৈশ্রেরা পৃথিবীতে সর্বদা অজাতিবিহিত-কর্মপর হইয়া, নিত্য পুষ্প, খুদ, আর ও জল প্রদানপুর:সর বাঁহাদের অর্চনা করেন; শূদ্রেরাও ভক্তিসহকারে প্রান্ধ করিয়া, বাঁহাদের তৃপ্তি বিধান করে এবং বাঁহারা স্কালীনামে বিখ্যাত; পাতালে মহামুরগণও সর্বাদা দন্ত মদ ত্যাগ করিয়া, শ্রদ্ধাসহকারে বাঁহা-দের তৃপ্তি বিধান করেন এবং স্বধাই থাঁহাদের আহার; নাগগণও রুগাতলে বিবিধ কাম কামনা করিয়া, যথাবিধি অশেষবিধ ভোগপ্রদানগহকারে প্রাদ্ধ করত যাঁহাদের অর্চনা করেন: দর্প-গণও রুগাতলে সর্বাণা বিধিবিহিত মঞ্জোচ্চারণস্হকারে ভোগসমূদ্ধি নিবেদনপুর্ব্বক শ্রাদ্ধ করিয়া, বাঁহাদিগকে তৃপ্ত করেন. সেই পিতৃগণকে আমি নমস্কার করি।

যাহারা সাকাৎ দেবলোকে, অন্তরীকে ও মহীতলে নিবপতি করেন এবং অ্রাদিরাও যাহাদের পূলা করিয়া থাকেন, সেই পিতৃগণকে আনি নমন্ধার করি। তাঁহার। আমার নিবেদিত প্রতিগ্রহ করেন। বাঁহারা সাকাৎ প্রমালা, বাঁহারা মূর্ত্তি পরিগ্রহ করিয়া, সর্বাদা বিমানে অধিষ্ঠান করেন; যোগীযারগণও নিমান ক্রামের বাঁহাদের আশ্রর লইয়া থাকেন এবং বাঁহারা ক্লেশমুক্তির হেতু, সেই পিতৃগণকে আমি নমন্বার করি।

বাহারা অর্থে মূর্তিমান্ হইয়া বিরাজ করেন, বাঁহারা অধাডোজী; বাঁহারা সমুদার কামনাই পূরণ করিতে সমর্থ এবং নিকান ব্যক্তিদিগকে বাঁহারা মূক্তিপ্রকান করেন; বাঁহারা কামনান্দ্রকামনা পূরণ করেন এবং বাঁহারা দেবছ, ইক্সম্ম ও ভাহা অপেকাও

দ্ধিকত্ব এবং পুলু, পত্ত, ধন, বল ও গৃহ সকল প্রদান করিয়া গাকেন, সেই পিতৃগণ সকলেই बाबाর এই প্রণতিক্রিরায় সক্তই হউন। বাঁহারা চল্লের রশিসমূহে, বাঁহারা সূর্য।বিদে, বাঁহারা গুরুবর্ণ বিমানে সর্বাদা বাদ করেন, দেই পিতৃগণের উদ্দেশে অর, অল ও গদ্ধাদি নিবেদন করি-তেছি, তাঁহারা তদ্বারা পুষ্ট ও সঙ্গুষ্ট হটন। হবি খারা অনলে হোম করিলে, ঘাঁহারা তৃথি লাভ करत्रन : वैश्विता विश्वभतीत आध्यप्रभूक्क ट्लाबन कत्रिया शास्त्रन ध्वरः शिष्ठमान कत्रिरन, वैश्वित আনুমোদ উপস্থিত হয়; তাঁহারা আনার প্রাদত্ত অল ও জল ছারা সভ্ত হউন। ছারগণ ও মহবি-শ্রেষ্ঠন। মথারমাংন, দিব্য মনোহর ক্ষণতিল ও কাল শাক, এই দক্ত এব্য প্রদানপূর্কক বাঁহাদিগকে পরিতৃপ্ত করেন, তাঁহারা আমার রুত এই প্রাদ্ধে সম্ভষ্ট হউন। ধাবতীয় কবা বাঁহাদের নির্তিশ্য অভিগাষের সামগ্রী, অমরগণও বাঁহাদের অর্চনা করেন, আমি এই গন্ধ, পুষ্প ও ভোজা নিবেদন করিতেছি; তাঁহার। সলিহিত হউন। দিন দিন, আবার মানাতে বাঁহাদের পুলা করা হয়, বাঁহারা অষ্টকাতে অর্কিত হইয়া থাকেন এবং বংসরান্তে অভ্যাদয়ে বাঁহাদের পূজা করা হয়, সেই পিতৃগণ আমার এই আাছে পরিতৃপ্ত হটন। বাহারা চক্র ও কুম্দবৎ কান্তি ধারণ করিয়া, আহ্মণগণের পূঞা গ্রহণ করেন; ক্ষতিয়গণ বাহাদিগকে উদীয়মান তপন সম বর্ণে অর্চনা করিয়া থাকেন; বাহারা কনকবৎ অবদাত দেহে বৈশ্রগণ কর্তৃক পুলিত হন এবং বাঁহারা নীণীনিভা পরিগ্রহ করিয়া, শুডলনের পূণা গ্রহণ করেন, আমি সেই পিতৃ-পুরুষদিগকে সর্বাণা প্রণাম করিতেছি। তাঁহারা আমার নিবেদিত পুষ্প, গন্ধ, ধুপ, আর ও তোয়াদি ছারা আমার প্রাদ্ধে দল্ভই ছউন। হাঁছারা পবিত্র অনলে আছত দেবপুর্ব কব্য দক্ল অবতীৰ তৃথির জাল ভোজন করেন এবং ভোজন করিয়া, তৃথ হইয়া, বিবিধ ঐমার্য প্রদান করিয়া থাকেন, আমি তাঁহাদিগকে প্রণাম করিছেছি। তাঁহারা আমার প্রাক্ষে তৃপ্ত হউন। বাঁহারা রাক্ষ্পদিগকে, উগপ্রকৃতি অন্তর দিগকে, ও ভ্তদিগকে নিঃশেষে নাশ ও প্রজা সকলের অমঞ্চল বিনাশ করেন, বাঁহারা স্থ্রগণের আদি এবং বাঁহারা অমরেশগণের ও পূজ্য, আমি সেই পিতৃগণের দকনকেই প্রণাম করিতেছি, তাঁহারা আমার ক্বত এই প্রাদ্ধে তৃপ্ত হউন।

অধিধাত, বহিষদ, আজাপ ও সোমপ এই সকল পিতৃগণের আমি এই আছে তৃথিবিধান করিতেছি। তাঁহারা তৃথা হউন। অধিধাত পিতৃগণ আমার প্রাচী দিক্ রক্ষা করুন। বহিষদ্ পিতৃগণ আমার দক্ষিণ দিক্ রক্ষা করুন। আজাপ পিতৃগণ প্রতীচী দিক্ ও সোমপ পিতৃগণ পামার উদীচী দিক্ রক্ষা করুন। তাঁহাদের অধিপতি যম আমাকে রাক্ষণণ হইতে, ভৃতগণ আমার উদীচী দিক্ রক্ষা করুন। তাঁহাদের অধিপতি যম আমাকে রাক্ষণণ হইতে, ভৃতগণ হইতে, পিশাচগণ হইতে এবং অস্কুরণণ হইতে স্ক্তোভাবে রক্ষা করুন।

বিশ, বিশ্বভূক্, আরাধা, ধর্ম, ধন্ত, শুভানন, ভূতিদ, ভূতিরুৎ, ভূতি, পিতৃগণের এই নর্মী শণ। তরাজীত, কলাাণ, কলাতা, কর্ত্তা, কলা, কলাতরাশ্রম, কলাতাহেত্ ও অবধ, এই ছয়টী শণ। তরাজীত, কলাাণ, কলাতা, কৃত্তিদ, বিশ্বপাতা ও ধাতা, এই সাতটী গণ; মহান, মহাঝা, ণ; বর, বরেণা, বরদ, পৃষ্টিদ, ভূতিদ, বিশ্বপাতা ও ধাতা, এই সাভানী, ধর্মদ, ভূতিদ, এই হিত, মহিমাবান, মহাবল, এই পাঁচটী পাপনাশন গণ; আর স্থান, ধন্দ, ধর্মদ, ভূতিদ, এই হিত, মহিমাবান, মহাবল, এই পাঁচটী পাপনাশন এই অধিল লগৎ ব্যাপিয়া আছেন, ওাঁহারা বিটী গণ; সম্কারে একতিংশং পিতৃগণ। বাঁহারা এই অধিল লগৎ ব্যাপিয়া আছেন, ওাঁহারা মামার এই প্রাক্তে ভটন ও সন্তঃই হউন এবুং সর্বাণা আমার হিত সম্প্রণান কম্বন।

ইতি পিতৃপুরুষন্তোত্রকথন নাম ষণ্ণবৃতি তম অধ্যায়।

### সপ্তনবতিতম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কৃছিলেন, এই প্রকার স্তব করিতে করিতে, সহসা সমুক্তিত তেকোরাশি উাহার গোচারে প্রাত্ত ত হইরা, আকাশ পর্যান্ত ব্যাপ্ত করিয়া ফেলিল। অনন্তর স্থবিপুল সেই তেজঃ জগৎ প্রাপ্ত হইরা, দ্বিতাব আশ্রয় করিলে, কচি তাহা দর্শন করিরা, কিভিত্ন-অভ্যাস হইরা, এই বলিয়া, শুবগান আরম্ভ করিলেন, সকলেই বাঁহাদের অর্চনা করে; বাঁহাদের মূর্তি নাই, যাঁহাদের তেজ অতিমাত্র প্রতিভাবিশিষ্ট, যাঁহারা দর্মদাই ধানে নিবিষ্ট ও যাঁহারা দিবাদৃষ্টি, वाि नर्कता छैशि मिश्रक नगन्नात कति। यैशिता हेक्सा नि व्यवतंत्रति । यैशिता नक, মরীচি. সপ্তর্ধি ও অভাভ সকলেরও নিয় হা ও কামনা পূরণ করিয়া থাকেন; আমি সেই পিতৃ-দিগকে সর্বাদা নমস্বার করি। বাঁহারা ম্যাদি মুনীস্ত্রগণের, স্ব্য ও চন্দ্রের এবং জল ও উদ্ধিরও নেতা, সেই পিতৃদিগকে আমি সর্বাদা নমন্বার করি। যাঁহারা নক্ষত্রগণের, গ্রহ সকলের, বাযুর, অগ্নির, আকাশের, অর্গের ও পৃথিবীর নেতা, তাঁহাদিগকে কৃতাঞ্জনিপুটে আমার নমস্বার। যাঁহারা দেব্যিগণেরও জনিতা. যাহারা দকল লোকের নুমস্কৃত, যাহারা দ্বদা অক্ষয় ফল দান করেন, তাঁহাদিগকে আমার ক্লভাঞ্জলিপুটে নমস্কার। সঙ্গে সাসে আমি প্রজাপতিকে, কশ্রুপকে, সোমকে, বরুণকে ও যোগেশর দিগকেও দর্কদা কুতাঞ্জলি হইয়া নমস্বার করিতেছি। সপ্ত শোকে ্য সংগু গুণ আছেন, তাঁহাদিগকে আমি নমস্কার করি। যিনি স্বয়ংকৃ ও যোগচকু, সেই ব্রহ্মা-্ক ও আমার নমস্কার। সোমই ধাঁহাদের আধার এবং যোগই বাঁহাদের মূর্ত্তি, আমি সেই পিতৃ-দি।কে এবং জগতের পিতা দোমকেও নম্মার করি। অগ্নিই বাঁহাদের রূপ, বাঁহাদের ইইতে এই বিশ্ব অগ্নীধোমময় হইয়াছে, দেই অন্তান্ত পিতৃদিগকেও আমি নমস্কার করি। তেজই ধাঁং।-দের আধার; দোম, সুর্যা ও অগ্রই বাঁহাদের মৃত্তি এবং জগৎ ও একাই বাঁহাদের স্বরূপ এবং থাহারা যোগপরায়ণ. সেই মধিল পিতৃপুক্ষ দিগকে আমার যত মান্দে নুমন্ধার, নুমন্ধার, নুম স্কার। স্বধা তাঁহাদের আহার। তাঁহারা আনার প্রতি প্রদন্ন হউন।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, মুনিসভম! কচি এই প্রকার ন্তব করিলে, পিতৃগণ উল্লিখিত গগনবাপী তেজে দশ দিক্ সমুন্তানিত করিয়া, বিনিজ্ঞান্ত হইলেন। কচি দেখিলেন, তিনি যে পুশাগন্ধাহলেপন নিবেদন করিয়াছিলেন, পিতৃগণ গেই সকলে বিভূষিত হইয়া, তাঁহার পুরোহাণে অবপ্রিতি করিতেছেন। তদর্শনে তিনি পুনরায় ভাজভরে প্রণাম করিয়া, পুনর্কার কভাঞ্জলি হইয়া,
আদরসহকারে তাঁহাদের পৃথক্ পৃথক্ ন্তব করিতে লাগিলেন, ভোমাকে নমন্থার, তোমাকে নমদার। তথন পিতৃগণ প্রপন্ন হইয়া, কচিকে কহলেন, বর প্রোর্থনা কর। মুনিসভ্য কচি নতকন্ধর হইয়া কহলেন, ব্রহ্মা কহিলেন, ব্রহ্মাকরিতে আদেশ করিয়াছেন। সেইজ্ঞা,
ভামি প্রালাভের ইচ্ছা করি। এ প্রী যেন প্রজাবতী, দিবাস্বভাবশালিনী ও শাঘনী য়া হয়।

পিতৃপৰ কহিলেন, এই স্থানেই এই মুহুৰে তোনার মনোরমা পদ্ধী আবিভূতা হইবেন। তাহার গর্ভে তোনার যে পুত্র জান্মবেন, তিনি মহু হইবেন। ক্লচে! তোনার নামেই সেই ধীমান্ মন্থয়াবিপতির নাম হইবে। অর্থাৎ, িনি রৌচ্যনামে জগল্লয়ে বিখ্যাতি লাভ করিবেন। তাহারও জনেক পুত্র জান্মবে। তাহারা সকলেই মহাবল পরাক্রমবিশিষ্ট, সকলেই মহাবল পরাক্রমবিশিষ্ট, সকলেই মহাবা এবং সকলেই পৃথিবীপালক হইবেন। তুমিও প্রজাপতি হইরা, চতুর্বিধ প্রজা সৃষ্টি করিরা, ধর্মজ হইরা, অকীর মধিকারাবসানে সিদ্ধিলাভ করিবে। আর যে ব্যক্তি ভক্তিভারে এই তোর পাঠসহকারে আমালের তব করিবে, আমরা তাহার প্রতি সহস্ট হইরা, তাহাকে উৎকৃষ্ট আল্ল

এই সকল কামনা করিবে তাহারা তোমার প্রবোজিত উনিখিত তাব বারা আমানের তাবানে প্রবৃত্ত হইবে। এই তাব আমানের প্রীতিজনক। যে ব্যক্তি হক্তিসহকারে প্রাদ্ধে ভেলেপ্রতৃত্ত বিজ্ঞানির প্রোভাগে অবস্থিতি করিয়া, এই তাব পাঠ করিবে, আমরা উহার প্রবণ-সম্প্রীতির বশবর্তী হইরা, তথায় সন্নিহিত হইলে, তৎপ্রভাবে সেই প্রাদ্ধ অক্ষয় হইবে, তাহাতে সংশ্বনাই। যদিও সেই প্রাদ্ধ প্রোক্রিয়ণ্ড হয়; অথবা ব দও সেই প্রাদ্ধ উপহত হয়়, অথবা যদিও অক্লামপথে উপার্জিত বিত্ত কিয়া প্রাদ্ধেযাগ্য নহে, এরূপ উপহত উপহার বারা সেই প্রাদ্ধ করা হইয়া থাকে; অথবা যদিও অকালে, অস্থানে ও অবিধিক্রমে তাহার অমুর্চান করা হয়; অথবা যদিও প্রদ্ধানীন ও দন্তপরারণ হইয়া, সেই প্রাদ্ধ প্রবর্তিত করা হইয়া থাকে; তথাপি, এই ওব পাঠ করিপেই, সেই প্রাদ্ধ আমানের তৃথি বিধান করিবে।

অধিক কি, আমাদের স্থাবহ এই স্তোত্ত যে আদ্দে পঠিত হইবে, তাহাতে, আমাদের বাদশ্বাধিকী তৃপ্তি সমৃদ্ভূত হইবে। হেমন্তে পাঠ করলে, দাদশাল তৃপ্তি প্রদান কারবে। শিশিরে এই পবিত্র তোত্ত পাঠ করিলে, আমরা তাহার দ্বিওণ তৃপ্তি ভোগ করিব। বসস্তে প্রাক্ষণের ইহা পাঠ করিলে, মোড়শালবাপিনী তৃপ্তে সমৃদ্ভূত হইবে। গ্রীমে পাঠ করিলেও, বোড়শাল পৃথির সমৃৎপাদন করিবে। কংচে! বর্ধাকালে আদ্ধ অঙ্গহান করণেও, এই ডোত্রপাঠ দারা আমাদের অক্ষ তৃপ্তি উপপর হইয়া থাকে। শরৎকালে আদ্ধ কালে পাঠ করিলে, পঞ্চদশবর্ধব্যাপিনী তৃপ্তি সমৃদ্ভাবন করে। যে গৃহে নিত্য ইহা লিখিত থাকে, সে গৃহে আদ্ধ করিবাগাত্র, আমাদের সানিধ্য সভ্যতন হয়। সেইজন্তই আদ্ধণণ শালভোজনে প্রবৃত্ত হইলে, তুমি তাহাদের পুরোভাগে উপস্থিত হইয়া, ইহা প্রবণ করাইবে। মহাভাগ। তাহাহইলে, আমরা পৃষ্টি লাভ করিব। গয়ায়, পৃক্ষরে, কুরুক্তেতেও নৈ মবে আদ্ধ করণে যে ফল লাভ হয়, এই স্তোত্ত প্রবণ ও ধারণ করিলে, সেই ফল লাভ হইবে। ফ্রিকে এইপ্রকার বর দিয়া, পিতৃগণ সিদ্ধি লাভ করিলেন।

ইতে পিতৃগণের বর প্রদান নাম সপ্তনবতিতম অধাার। 🔊

### অফীনবভিত্য অধায়।

মার্কণের কহিলেন, পিতৃগণ প্রস্থান করিলে, সেই নদীর মণ্য হইতে প্রয়োগানামী মনো-হারিণী কশার্রা বরাপ্সরা কচির সনীপদেশে সম্খিতী হটল। সে মহাত্রা কচিকে প্রমমধুর স্বরে বিনয়াবনতা হইয়া বলিতে লাগিল, অয়ি তপস্থিপ্রবর! বরুণের পুত্র মহাত্রা পুকরের ঔরসে আমার গর্প্তে প্রমন্থ্রারী যে কলা জনিয়াছে, আমি সেই বরবণিনীকে ভাগ্যার্থে আপনার হস্ত সম্প্রদান ক্রিতেছি, গ্রহণ করুন। তাহার গর্প্তে মহামত মহু আপনার প্রক্রপে সমুৎপর ইইবেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, কচি এই কণার দমত হইলে, বরাপারা প্রশ্লোচা মাননীনামী দেই প্রশন্তশ্লীরশালিনী ক্সাকে দলিল হইতে সম্থাপিত করিল। তথন মূনিসত্তম ক্ষৃতি মহামূনিলিগকে আনাইরা, দেই নদীপুলিনে বিভিত বিধানে তাইার পাণিপীড়ন করিলেন। তদীয় গর্ডে তাইার মহাবীর্ঘা মহানতি পুজ উংপর হইল। ঐ পুত্র পিতার নামে পুণিবীতে রৌচা বলিয়া খ্যাতিলাভ করিলেন। ভাঁহার মহন্তরে বাঁহারা দেবতা, ঋষি, রাজা ও ভাঁহার পুত্র ইয়াছিলেন, ভাঁহাদের বিষয় পুক্ষেই সমাক্ রূপে তোনারে বলিয়াছি। এই মম্বন্তরকণা শ্রবণ করিলে, লোকের ধনবুরি, রোগনাশ, ধনধান্ত ও স্থতোংগতি ইইয়া থাকে, ভাহাতে সন্দেহ

নাই। মহামুনে! পিতৃগণের উল্লিখিত তাব ও তাঁহাদের গণবিবরণ প্রবণ করিলেও, তাঁহাদের প্রদাদে সমুদার কামনাই দিল্ধ হইরা থাকে।

ইতি মানিনীর বিবাহনাম অইনব্তিত্ম অধ্যায়।

#### নবনবভিত্ম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অতঃপর ভৌত্যের উৎপতি এবং ভাহার অধিকারম্ভ দেবগণ, অধিগণ, পুত্রগণ ও রাজগণেরও বিষয় ত'বণ কর। অঙ্গিরার ভৃতিনামে এক শিষ্য ছিলেন। তিনি অতি-কোপনশ্বভাব; অল্লেই অতিভয়াবহ শাপ প্রদান করিতেন। তিনি মিষ্ট কথা বলিতে জানিতেন না। ভাহাঁর আপ্রাম স্বয়ং বায়ুও অতি ধীরে ধীরে প্রবাহিত হইতেন; কথনও তাহার বাতিক্রম করিতে পারিতেন না। স্বয়ং রবিও মৃহ মৃহ তাপ দান করিতেন; মেঘও এরপে বর্ষণ করিতেন, যাহাতে অতিমাত্র কর্দম জন্মিতে পারিত না; স্বয়ং চক্রমা রশিমগুলে পূর্ণ হইলেও. নাতিশীত কিরণ বিকিরণ করিতেন। অধিক কি. ঋতুগণও দেই অভিতেজস্বী কোপনন্বভাব ঋষির ভয়ে আপনাদের পর্যায়ক্রম ত্যাগ করিয়া, তদীয় আগুলুদারে আশ্রমজাত বৃক্ষসমূহে সর্ক্কাল-স্থলভ ফল পুষ্প সমৃত্তাবন করিত। সেই মহাতপার প্রভাবভারে ভীত হইয়া, আশ্রমসমীপত্ব জলরাশি ভাহার ইচ্চামুলারে বারম্বার তাঁহার কমওলুমণ্যে প্রবেশ করিত। বিপ্র! তিনি অতিমাত্র-কোপনম্বভাব ছিলেন; অতি-ক্লেশ সহ করিতে পারিতেন না। তিনি অপুত্র ছিলেন। এই অস্ত তিনি তপশ্চরণে মনন করিলেন, আমি পুত্রকামনাবশংবদ হইয়া, আহরসংযম করিয়া শীত, বাত ও অনলে আহত হইয়া, তপ্সা করিব। এই প্রকার চিন্তা করিয়া তিনি তপ্সাতেই মনো-নিবেশ করিলেন। তথন ইন্দু নাতি-শীত প্রদানে প্রবৃত্ত হইলেন; হৃষ্য নাতিতাপ প্রদান করিতে লাগিলেন; মহামুনে! বার্ও নাতিবহনে প্রবৃত্ত হইলেন। এইরূপে মহায়নি ভৃতি স্থতঃখাদি হন্দু সকলে পীডামান হইয়া, যথন পুত্রলাভে সমর্থ হইলেন না, তপন্থা হইতে বিনির্ত হইলেন।

তাঁহার সুবর্চা নামে এক লাতা ছিলেন। তিনি যজ্ঞ করিয়া ভূতিকে তাহাতে অভিমন্ত্রিত করিলেন। ভূতি তদমুদারে দেই যজ্ঞে গমন করিতে অভিগামী হইলেন। ভূতির শাস্তি নামে এক শিষা ছিলেন। তিনি ধেমন নিরতিশয় বুদ্ধিনান্, অতিমাত্র শাস্তব্যভাব ও বিনীত, দেইরুপ গুরুর কার্য্যে সর্বাঘাই উন্যুক্ত, শুদ্ধানার ও উণারস্বভাব ছিলেন। ভূতি তাঁহাকে কহিলেন, অনি শাস্তি! আমি লাতা স্বর্চার যজ্ঞে যাইব ; তিনি আমাকে আহ্বান করিয়া পাঠাইয়াছেন। তোমাকে যাহা করিতে হইবে, প্রবণ কর। তুমি আমার আশ্রমে থাকিয়া, যাহাতে অগ্নি কোনরূপেই নির্বাণ প্রাপ্ত না হন, তজ্জার্য যরাতিশয় সহকারে জাগরণ করিবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই প্রকার আজা পাইরা, শিষ্য শান্তি, যে আজা বলিলে, শুরু ভূতি জ্যেষ্ঠ লাহা কর্ত্ক আহত হইরা, তাঁহার যজে গমন করিলেন। এদিকে শান্তি, মহাত্মা গুরুর ভূতি নিমিত্ত বন হইতে যেমন সনিৎ, পূশা ও ফগাদি আহরণ ও শুরুভিকর বশবর্তী হইরা থেমন অভাভা কর্মকরণে প্রবৃত্ত হইলেন, তেমনি গুরুর রক্তিত অগ্নি নির্কাণ হইরা গেলেন। অনব নির্বাণ হইলেন, দেখিরা মহামতি শান্তি অতিমাত্র ছংথিত ও গুরুর ভয়ে ভীত হইরা, বারম্বার ডিস্তা করিতে লাগিলেন। ভাবিলেন, আমি কি করিব ? কিরপে বা গুরুর এখানে আগমন হইবে ? আমারই বা আদ্য কিরপ করা যুক্তিযুক্ত ? কি করিলেই বা সর্বাণ স্থাসকত হইবে ? গুরু যদি আপনার রক্তিত ও আলিত অগ্নিকে নির্বাণ অবলোকন করেন, তাহা হইলে, আদ্য আমাকে বিষম বিপদেই কেনিবেন। যদি আমি মন্ত অগ্নি এই অগ্নিছানে স্থাপন করি, তাহা হইলে, তিনি অবশ্র জমাকে

ভন্ম করিবেন। কেননা, তিনি ভূত ভবিষা বর্ত্তমান সমুদায় প্রত্যক্ষ দেখিরা থাকেন; স্থ্ডরাং এবিষর কথন গোপনে থাকিবে না। তিনি অবশ্রুই জানিতে পারিবেন। এই রূপে পাপায়া আমি গুরুর কোপ ও শাপ উভরেরই নিমিত্ত হই গাম। গুরুর বিরুদ্ধে পাপ করিয়া, আমার বেরুপ শোক হইতেছে, নিজের অভ্য সেরুপ হইতেছে না। অনগ নির্বাণ হইয়াছেন, দেখিয়া, গুরু নিশ্চরই আমাকে শাপ দিবেন। অথবা হয়ং অমিও তথন কুদ্ধ হইয়া আমারে অভিশপ্ত করিতে পারেন। কেননা, গুরুর আমার এরপই প্রভাব। অমি অবগ্রুই তাহাঁর সম্মাননা করিবেন। দেবগণ্ও ভাহাঁর প্রভাবে ভীত হইয়া, আজাণভ্যনে কোন মতেই সম্প্রিক না। তিনি বাত্তবিক্ট অপরাধী আমাকে কোন্যুক্তিতে শাপ প্রদান না করিবেন ?

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তিনি বুদ্ধিমান ব্যক্তিগণের শ্রেষ্ঠ এবং গুরুকে সর্মদাই ভন্ন করিতেন। এই-জন্ম বারম্বার ঐরপ চিস্তা করিয়া, অ্মিরই শরণাপন হইলেন এবং চিত্ত সংযত করিয়া, কিভিত্ত-ি ল্যস্তজাত্ম ও কৃতাঞ্জনি হইয়া, একখনে বঞ্চমাণ বিধানে তাহাঁর স্তব করিতে লাগিলেন, ওঁ সর্বস্থেতর খিনস্থারূপ বিরাটরূপী অগ্নিকে নমস্বার। তিনি রাজস্থ্যজ্ঞে ষড়াআ। হইয়া বিরাজ করেন। তিনি মন্ত দেবতার বৃত্তি বিধান করেন। তিনি পরমস্থলর-দীপ্তিবিশিষ্ট, তাহাঁকে নমন্ধার। তিনি কাৎ শুক্র স্বরূপ; দেই এন্ত সমস্ত জগতের স্থিতি প্রদ। তুমি দমস্ত দেবতার মুধ। ভগবান্ তোমারই হায়ে হবিভোন্ধন ও মথিল দেবতার তৃপ্তিদাধন করেন; স্কুতরাং তুমিই সমস্ত দেবতার প্রাণ। গমাতে যে হবি আছত হয়, তাহা পরমপবিএভাব প্রাপ্ত হইয়া, পরে জলজপে প রণত হইয়া থাকে। াহাতে অথিল ওষ্ধির জন্ম হয়। দেই ওষ্ধি ছারাই জন্তগণ হথে জীবিত ধারণ করে। মহুবোরা ঐ পে তোমার স্ঠ ওষ্টিসমূহে যজ সকল বিধান করিয়া থাকে। হে অনিল্যার্থি ! হে পাবক ! াই সমস্ত যজ্ঞ দারা দেবগণ, দৈতাগণ ও রাক্ষদগণ আপাায়িত হয়। হে হতাশন! এইরূপে ।কমাত্র তুমিই সেই হক্ত সকলের আধার। এই কারণে, হে অমি ! তুমিই সকলের যোনি এবং ্মিই সর্কায়। (হ পাবক। দেবগণ, দানবগণ, যক্ষগণ, দৈত্যগণ, গন্ধর্কগণ, রাক্ষণগণ, মহুব্য-ণ, প্রগণ, বৃক্ষগণ, মৃগগণ, প্রিগণ, সরীস্প্রণ সকলেই ত্ৎকর্তৃক আপ্যায়িত ও সম্বন্ধ হইয়া াকে এবং তোমাতেই উদ্ভ ও তোমাতেই অত্তে লয়প্রাপ্ত হয়। হে দেব। তুমিই জলের ষ্টে কর। আবার তুমিই তাহার ভক্ষণ করিয়া থাক। আবার তৎকর্ত্কই পচ্যমান হইয়া, ং দমত্ত প্রাণিগণের পৃষ্টির কারণ হইয়া থাকে। তুমি দেবগণে তেজোকপে ও দিদ্ধগণে কাভিরপে মবস্থিতি করিতেছ। তুমি নাগগণে বিষরপে ও পক্ষিগণে বায়ুরূপে বিরাজ্যান হইতেছ। তুমি । ত্রাগণে কোধরপে ও পাকিযুগানিতে মোহকপে প্রতিষ্ঠিত আছ । ত্মি তরগণে অবইজরপে ও ্ধিবীতে কাঠিন্তরপে অধিষ্ঠান করিতেছ। তুমিই লগে দ্রবদ, তুমিই বাযুতে বেগশাণিদ, তুমিই মাকাশে ব্যাপিত এবং তৃনিই দর্বত আত্মারূপে অবস্থিত আহ। হে মগ্লি! তৃনিই দর্বত্তের মন্তরে বিচরণ করিয়া, তাহাদের পরিপালন করিতেছ। কবিগণ তৌমাকে এক ও পুনর্কার অবিধ বলিয় নির্দেশ করিয়াছেন। আবার তোমাকে অইধা কয়না করিয়া, আলা য়য়ের কয়না ক্রিয়াছিলেন। পরম্বিগণ বলিয়াছেন, তৃতিই এই বিখের সৃষ্টি করিয়াছ। হে ছতাশন। তুমি ना शांकितन, धरे तथा बका छ उरकर गरे नम् आश रम। बाक्र गरेवा कि वात प्रधा व पारा উচ্চারণ করিয়া, একমাত্র তোমার পূজা করত স্বক মবিহিত গতি লাভ করেন। অম্যুগণও তোমার পূজা করিয়া থাকেন। প্রাণিগণের প্রিণাম, আঝা ও বীর্যাম্বরপ শিখা দক্ত ভোমা হইতে নিজান্ত হইয়া পরে দর্বভূতের দাহন করে। তুমি ঝাতবেদ। তুমি মহাতাতি। এই বিশৃষ্টি তোমারই, বৈদিক কমাও তোমারই। তুমি অন্ত, তোমাকে নমন্বার। তুমি পিরাক। তোমাকে ন্মকার। তৃষ্মি চতাশুন, তোমাকে ন্মকার। তৃষি পাবক ও স্কলের আদি, তোমাকে ন্ম-কার। তুমিই হ্বাবাহন, তোমাকে নমন্বার। তুমিই ভুক্ত ও পীত এব্য সকলের পাচন কর। এইজন্ত তুমিই বিশ্বপাবক। তুমিই শক্ত সকল পরিপক করিয়া থাক। তুমিই জগতের পৃষ্টিবিধান কর। তুমিই <u>মে</u>দ, তুমিই বার, তুমিই শহুহেতুক বীঞা, তুমিই সর্প্ন ভূতের পোষণ করিয়া থাক। তুমিই ভূত, ভবিষ্য ও বর্ত্তমান। তুমিই সর্প্রভূতে জ্যোতিঃ, তুমিই আনিত্য, তুমিই বিভাবস্থ, তুমিই রাত্তি, তুমিই দিন, তুমিই উভয়বিধ সন্ধা, হৈ বহি ! তুমিই হিরণারেতাঃ, তুমিই হিরণার্যা, হে বহি ! তুমিই হিরণার্য্যা, তুমিই হিরণার্যাদৃশ প্রভাবিশিষ্ট, তুমিই মুহুর্ত, তুমিই কলা, তুমিই ক্রেটা, তুমিই লব, হে জগৎপ্রভূ ! তুমিই কলা, কাঠা ওনিমেষাদিক্রপে বিরাশ করিতেছ, তুমিই এই অধিল বিশ্ব, তুমিই সকলের পরিণামাত্মক কাল।

প্রভো! তোমার বে কানীনামী জিহলা কালের আশ্রয়স্বরূপা, তদ্বারা তুমি আমাদিগকে ভর হইতে, সমুদার পাপ হইতে এবং এহিক ও পারলোকিক মহাভয় ইইতে রক্ষা কর।

ভোমরি যে করালীনামী জিহলা মহাপ্রলয়ের কারণ, তুমি তল্পারা আমাদিগকে সমুদার পাপ ছইতে ও এইকি মহাভয় হইতে রক্ষা কর।

তেমির বে মনৌজবানায়ী জিহবা লবিমাগুণশালিনী, তদারা তুমি আমাদিগকে যাবতীয় পাপ হইতে ও এহিক মহাভয় হইতে পরিত্রাণ কর।

তোমার যে স্থানাহিতানামী জিহলা ভূতগণের কামনা পূরণ করেন, তুমি তদ্বারা আমাদিগকে বাবতীয় পাপ ইইতে ও এহিক মহাভয় হইতে রক্ষা কর।

তোমার বে ধ্রবর্ণা জিহবা প্রাণিগণের রোগের কারণ, তুমি তদ্বারা আমাদিগকে সমুদার পাপ হততে ও এতিক মহাভয় হইতে রকা কর।

তোমার যে কুনিলিনানামী জিহনা দকল মলণের হেতু, তদ্বারা তুনি আমাদিগকে সম্লায় পাপু হুইতে ও ইইলোকিক মহাভয় হুইতে রক্ষা কর।

তোমার যে বিশ্বানামী জিহলা প্রাণিগণের শর্ম সম্প্রদান করে, তদ্বারা তুমি আমাদিগকে সমুদার পাপ হইতে ও এহিক মহাভর হইতে রক্ষা কর।

তুমি পিলাক। তুমি লোহি চগ্রীব। তুমি রুফাবর্ণ। তুমি হুতাশন। তুমি আমাকে সমুদার দোষ হইতে পরিজ্ঞান ও এই সংগারসঙ্কট হইতে উদ্ধার কর। হে বছে! হে সপ্তার্তি! হে কুশানো! হে হব্যবাহন! তুমি প্রসন্ন হও; আমি তোমার অগ্নি, পাবক ও গুক্ত প্রভৃতি স্কট নাম উচ্চারণ করিতেছি, তুমি প্রসন্ন হও। হে সর্গ্যে! হে সর্বভৃতের মধ্রে সমুদ্ধৃত! হে বিভাবসো! হে হ্বাবাহ! হে মবার! হে অবার! তুমি প্রসন্ন হও।

তুমি অক্ষুৰ্নপ ও অচিন্তাৰ্নপ। তুমি বহি । তুমি সমৃদ্ধিমান্, হুশুসহ ও অতিতীব্ৰন্ধণ। তুমি অচিবীহা ও মৃৰ্ভিমান্। তুমিই এই অবায়ৰ্নপ, ভীমৰানপ অশেষ লোক সংহান করিয়া থাক। তুমিই উংক্টৰানপ। তুমিই অশেষ সভাব হংপুগুরীক। তুমিই অনস্তৰাপ ও সকলের পূজ্যাক্রপ। তোমা হইতেই এই স্থাবরজ্পমাত্মক বিশ্বপাহ্তুতি হট্যাছে। হে হুভাশন। তুমি এক. আবার অনেক। তুমি অক্ষুৰ্ন্নপ। তুমিই কানন ও পর্বত সমেত এই পৃথিবী। তুমিই চক্র ও হুগ্ সহিত ও আকাশমন্ত্র। তুমিই রাত্মি ও দিনসমন্ত্রিত সম্দর কাগ। তুমিই মহাসাগরের অঠরমধ্যবর্তী বাড় অনক। তুমিই পরম বিভৃতি সহায়ে স্থোৱ ও চক্রের কিরণে বিবাধ করিতেছ।

মহর্ষিণণ নির নপরায়ণ হইয়া, মহায়জে ছতাশন বলিয়া, তোমারই সর্বাণ পুজা করেন। ভূমি য়েজে অভিষ্টু ত হইয়া, সোমপান করিয়া থাক এবং তুমিই, বরট্কার-উচ্চারণপূর্বক-আহত হবি পান করিয়া, লোকদিগকে সমৃদ্ধি প্রদান করিয়া থাক। রাজ্ঞণগণ ফলকামনার বশবর্তী হইয়া, সতত তোমারই পুজা করেন। তুমিই সমৃদয় বেদে গীয়নান হইয়া থাক। বিজেজগণ তোমারই কারণে য়জনপরায়ণ হইয়া, সকল কালে বেদ সকল অধিগত করেন। তুমিই য়জনপরায়ণ রক্ষা। তুমিই বিষ্ণু, তুমিই মহাদেব, তুমিই ইক্র, তুমিই অর্থামা, তুমিই বৃহণ। হর্ষা, চক্র, সমৃদয় হব ও অহ্বরণ, সকলেই হব্য বারা সংস্থাবিত করিয়া অভিমত ফলপ্রাপ্ত হইয়া থাকেন।

ৰম্ভ সক্ৰ বতই কেন উপবাতদ্ধিত হউক, তোমার অর্চির পর্শমাত্তেই ভটি হইরা

থাকে। আবার, তোমার ভন্ম বারা মান করিলেও, অভিমাত্র পবিত্রতা সমাহিত হয়। মুনিগণ সদ্ধাসময়ে এই কারণেই ভোমার সেবা করেন। তুমি ওচিনামা বহিল, প্রসন্ত হও। তুমি বারু, তুমি বিমলস্বরূপ, তুমি অভিনীপ্তিবিশিষ্ট, প্রসন্ত হও। তুমি পাবক, তুমি বৈছাত, তুমি আদা, প্রসন্ত হও। তুমি হব্যাশন, আমাকে রক্ষা কর। হে বহেণ্ ভোমার বে স্ক্কিল্যাণময় রূপ এবং ভোমার বে সপ্ত জিহ্বা, তন্ধারা তুমি, আযুজ প্রকে পিতার আয়, আমাদিগকে রক্ষা কর; আমি ভোমার স্তব করিতেছি।

ইতি অধিস্তোত্তনাম নবনবভিত্তম অধ্যায়।

#### শততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মুনে! তিনি এইপ্রকার স্তব করিলে, ভগবান্ হবাবাহন শিধাসমূহে পরিরত হইরা, তাঁহার পুরোভাগে আবিভূত হইলেন। বিজ ! দেব বিভাস্থ উল্লিখিত যোত্তে প্রীজ হটরাছিলেন। এইজন্ত প্রণতিপ্রায়ণ শান্তিকে মেঘগন্তীর বাক্যে বলিতে লাগিলেন, বিপ্র! তুমি ভক্তিপ্রকাশপুর: সর আমার যে তাব করিলে, তদ্বারা আমি তোমার প্রতি পরিতৃষ্ট হইরাছি। অত্যব তোমাকে বর দিব, যাহা তোমার অভিল্যিত, প্রার্থনা কর।

শান্তি কহিলেন, ভগবন্! আমি ক্তক্ত চুইলাম। যেহেতু আপনাকে প্রত্যক্ষ দর্শন করিতেছি। তপাপি, ভক্তিনম হইরা, যাহা বলিতেটি, তাহা ভনিতে আজা ইউক। দেব ! আমার
ভক্তদেব প্রাতার বজ্ঞে নিজ আশ্রম হইতে গমন করিয়াছেন। এই বর দিন, তিনি বেন আশ্রমে
প্রতাগমন করিয়া দেখিতে পান, আপনি অগ্নিগৃহে পূর্কবিং সন্নিহিত আছেন। হে বিভাবসো !
আমারই অপরাধে আপনি যে অগ্নিছান পরিত্যাগ করিয়াছেন, তিনি যেন পূর্কের স্থার ঐ স্থানকে
আপনা কর্তৃক অধিষ্ঠিত অবলোকন করেন। হে দেব ! আমাকে যদি আর একটা অস্থাহ করেন,
তাহা হইলে, আমার গুরু নিঃসন্তান আছেন; তাহাঁর যেন একটা বিশিষ্ট পুত্র জন্মন এবং গুরুণ্
দেব সেই পুত্রে যেমন মৈত্রীসম্পান্ন হইবেন, যেন মন্তান্ত যাবতীয় প্রাণীতে তাহার মন সেইরূপ
মৃত্তাব অবলম্বন করে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অগ্নি তাঁহার এই কথা গুনিরা, পুনরার তংকর্জ্ক ভোরপাঠ-সহক্ষত গুরুভিজ সহারে আরাধিত হইরা, কহিতে লাগিলেন, ত্রন্ধন্। তুমি গুরুর অন্তই বরণর থাক্রা করিলে, আত্মার অন্ত নহে। শৈই কারণে ভোমার প্রতি আমার অতিমাত্র প্রীতির সঞ্চার হইবাছে। অত্রব তুমি গুরুন অন্ত থাহা প্রাথিনা করিলে, তংসমন্তই সম্পন্ন হইবে। তোমার গুরুন সর্বাহে। আত্রব তুমি গুরুন করিবেন এবং তাহার পূত্রও জন্মিবে। সেই পূত্র মরন্তরের অধিপতি ও তাহার নাম ভোত্র বলিয়া বিখাত হইবে। আর, তোমার গুরুপ মহাবেল, মহাবীর্যা ও মহাবিজ হইবেন। যে ব্যক্তি সমাহিত হইরা, এই গুরুত্র হারা আমার ন্তব করিবে, তাহার সম্পার অভিল্যিত সম্পন্ন ও পূণ্য সঞ্চিত হইবে। যজে, পর্কালে, তীর্থে ও হোমকর্মে, ধর্মের অন্ত ইহা পাঠ করিলে, ঐরপ পূণ্যানি লাভ করিবে। এই স্তোত্র আনার বেমন পরম পৃষ্টিকর, সেইকাপ আমার নির্ভিশ্ব তৃষ্টিজনক। ইহা একবার মাত্র শ্রবণ করিলে, যে সকল দোর হ্বা একবার মাত্র শ্রবণ করিলে, বে সকল দোর হর এবং স্বোগ্য ব্যক্তি হারা হোম করিলে, সে সমন্ত দোর ঘটিরা থাকে, এই স্তোত্র সমাক্ রূপে শ্রবণ করিলে, সে সকল দোরবিনাশ পাইবে। পৌর্বমারী, অমাবতা ও অত্যান্ত পর্বান্ম হহা বিশিষ্ট বিধানে শ্রবণ করিলে, পাপ সকল তথনই বিনষ্ট হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ভগবান্ অমি এই প্রকার কহিরা, তাঁহার সমক্ষেই তৎকণে নির্বাত-প্রাণীপত্রের আর, অদৃশ্য হইলেন। বহিং প্রায়ান্ত্রুক্রিলে, শাস্তি হর্ষভরে প্রাকৃত কলেবরে পরি-তুই অস্তরে গুরুর আশ্রমে প্রবেশ ক্রিলেন। তদেখিলেন, ছতাশন পূর্বের আর, গুরুর প্রতিষ্ঠিত প্রাণেশ কাজ্যামান রহিরাছেন। তদ্শনে তিনি অতিমাত আহ্লাদ অমুভর ক্রিলেন।

এই স্বন্ধে নেই মহায়া শান্তির গুলুও যবীয়ান্ লাতার যক্ত হইতে স্কীয় আশ্রমে প্রত্যাগত হইনেন। শান্তি অগ্রেই তাঁহার পালভিবলন করিলেন। তথন গুলু আসম ও পূলা পরিগ্রহ করিয়া, তাঁহাকে বলিতে লাগিলেন, বৎস! তোমার প্রতি ও অন্তান্ত জ্ঞানার অতিমাত্ত মৈত্রী সঞ্চরিত ইয়াছে। ইহা কি, ব্ঝিতে পারিতেছি না। যদি তোমার জানা থাকে, ভাহাহইলে, শীঘ্র আমাকে বল। তথন শান্তি অগ্রির বিনাশাদি আদ্যোপান্ত সমন্ত ঘটনাই গুলুর গোচর করিলেন। গুলু শ্রবণ করিয়া, সেহার্দ্র নয়নে তাঁহাকে আলিলন করিয়া, অল ও উপাল্প সহিত সম্দর বেদ প্রদান করিবেন।

এদিকে ভূতির ঔরগে ভৌতানামক মহু প্ররূপে সমৃত্ত হইলেন। তদীয় মন্তরন্থ দেবগণ, ঋবিগণ ও নরপতিগণের বৃত্তান্ত আমার নিকট প্রবণ কর। আমি বিস্তারক্রমে দেই ভবিষ্য
মন্তর তত্তৎ ভবিষা নুপাদির নামাদি কীর্ত্তন করিব। যিনি দেই মন্তর্গরে ইক্স হইবেন, দেই
বিখ্যাতক্র্যারও বিষয় বিশিত্তি, শুন। চালুষ, কনিষ্ঠ, পবিত্র, লাজির ও ধারার্ক, এই পঞ্চ
দেবগণ ভৌত্য মন্তর্গর আবিভূতি হইবেন। শুচি ইইাদের ইক্সপদ গ্রহণ করিবেন। তিনি
মহাবল, মহাবীর্যা ও যাবভীয় ইক্সপ্তণে অলঙ্কত। অগ্রীর, অগ্রিবাহ্ন, শুচি, মুক্ত, মাধ্ব, শক্র
ও অজিত, এই সাত জন সংগ্রমি হইবেন। শুক, গভীর, ত্রার, ভরত, অনুগ্রহ, জীথানী, প্রতীর,
বিষ্ণু, সংক্রেন্সন, তেজনী, স্ববণ, ইহারা তাঁহার প্রা।

আমি তোমার নিকট এই চতুর্দ্ধশ মন্বন্তর কীর্ত্তন করিলাম। মুনিদ্ভম ! ক্রমাতুর্দারে এই সকল মহস্তরকণা প্রবণ করিলে, লোকে পুণ্য সঞ্য় ও অক্ষয় সম্ভতি লাভ করিয়া থাকে। প্রথম মন্বন্তর প্রবণ করিলে, ধর্মালাভ হয়। স্বারোচিষ মন্বন্তর প্রবণ করিলে, সমুদায় কামনা সম্পন্ন হয়। ওঁতম মন্বস্তর প্রবণ করিলে, জ্ঞানগাভ হয়। তামদ মন্বতর ও রৈবতে বুদ্ধি ও স্থলরী জী প্রাপ্তি হয়। চাকুষে আরোগ্য ও বললাভ হয়। স্থ্য সাবর্ণিকে গুণবানু পুত্র ও পৌত্র সকল প্রাপ্তি হয়। ত্রহ্মদাবর্ণে মাহাত্মালাভ হয়। ধর্মদাবর্ণে মঙ্গলপ্রাপ্তি হয়। রুজদাবর্ণিকে বৃদ্ধি ও জয় লাভ হয়। দক্ষ্মাবর্ণিকে জ্ঞাতিগণ মধ্যে শ্রেষ্ঠ ও গুণ সকলে অলক্ষ্ত হওয়া বায়। বৌচ্যুম্বস্তর শ্রবণ করিলে, শত্রুকুল ক্ষয় পায়। ভৌত্যমন্বস্তর শ্রবণ করিলে, দেবপ্রদাদ প্রাপ্ত হওয়া যায় এবং অগ্নিহোত্র ও গুণবান পুত্র দকণও লাভ করা ঘাইতে পারে। মুনিদত্তম ! যে ব্যক্তি অফুক্রমে সমুদার মধ্তরই শ্রবণ করে, তাহার বেরপ ফল লাভ হয়, শ্রবণকর। বিপ্র! তত্তৎ মধ্তরের দেবতা, ঋবি, ইক্স, রাজা, মহু, মহুর পুত্র ও তাঁহাদের বংশ সকণ প্রবণ করিলে, সক্কবিধ পাপ হইতেই নিষ্কৃতি পাওয়া যায়। তত্তৎ ইন্দ্র, দেবতা, ঋষি ও নরপতিগণ এবং মন্থ সকলও অতি-মাত্র প্রীত হন এবং প্রীত হইলা, গুভমতি প্রদান করেন। তথন গুভমতি লাভ ও গুভ কর্মের অনুষ্ঠান করিয়া, লোকে শুভগতি সকল প্রাপ্ত হয়। যত দিন চতুর্দশ ইক্স বিরাজ্যমান থাকেন, তত্তিন তাহারা ঐক্লপ ভভাত্ত ভোগ করে। বনিতে কি, অমুক্রমে মর্ম্বরম্বিতি প্রবণ করিলে, সম্পর অতৃগণ মঞ্চলকারী হয় এবং সম্পর গ্রহণণও অতৃকৃত্ত ও প্রদল্ল হইয়া থাকেন, ভাহাতে সন্মেহ নাই।

ইতি চতুর্দশমন্তরকথন নাম শতত্ম অধ্যায়।

### একাধিকশততম অধ্যায়।

ক্রেট্রিক কহিলেন, ভগবন্! আপনি ক্রমার্সারে সবিভারে সমাক্র্রকারে সমুদর মন্ত্রক কীর্ত্রন করিলেন। আমিও আপনার নিকট সবিশেষ শুনিগাম।

**ছিলসভ্য ! অধুনা** ব্রকাদি হইতে নরপ্তিগণের অধিল বংশ্বিবরণ শ্বণ করিতে আমার অভিলাধ হইতেছে। ভগবন্! সমাগ্রূপে তাহা কীর্তন করন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বৎস! যিনি জগতের মৃল, সেই প্রজ্ঞাপতি হইতে আরম্ভ করিয়া, সম্নর নরপতিগণের উৎপত্তি ও চরিতকথা শ্রবণ কর। যাহারা বতবিদ যক্ত ও সংগ্রাম জয় করিয়াছেন, তাদৃশ শত শত ধর্মজ্ঞ নরপতি এই বংশ অলয়্পত করিয়াছেন। এই সকল নরপতির চরিত ও উৎপত্তি শ্রবণ করিলে, লোকের সম্দয় পাপ বিনষ্ট হইয়া থাকে। বৎস! যাহাতে মহু, ইক্ষুক্, অনরণ্য, ভগীরপ এবং অভাভ যাগনীল, শোর্যাশালী ও সমাগ্রুপে অক্জ নরপতিগণ জমগ্রহণ করিয়া পৃথিবী পালন করিয়াছেন, সেই বংশকথা শ্রবণ করিলে, প্রস্ক্রের পাপমোচন হয়। অত এব এই বংশবিবরণ শ্রবণ কর। এই বংশ হইতেই অভাভ সহত্র সহস্র বংশ, বটবৃক্ষ হইতে অবরোহের ভার, প্রাভ্তুতি হইয়াছে।

বিজ্ঞান পুর্বে প্রজাপতি একা বিবিধ প্রজা-স্টেকামনায় স্থীয় দক্ষিণ অসুষ্ঠ হইতে দক্ষের ও বাম অসুষ্ঠ হইতে তদীয় পিন্ধীর স্টে করিলেন। এই কপে জগতের জনক ভগবান বিভূ একা জগতের পরম কারণ উদ্বাবিত করিলেন। শোভনা অদিতি দক্ষের ক্যারপে সমুংপল্লা হইলেন। ক্যাপ সেই ক্যার গর্ভে দেব <u>মার্ডিওর</u> জন্মদান করিলেন। এই মার্ত্ত প্রক্ষরপ, সম্দল্প জগতের বরদাহা ও আদি মধ্য ও অস্তস্ক্রপ এবং স্টে, স্থিতি ও প্রণায়র প্রতিষ্ঠাতা। দ্বিল গ্রাহা হইতে এই অধিল জগতের আবিভাব হইয়াছে। তাঁহাতেই ইহা প্রতিষ্ঠিত আছে। তিনিই দেব, অসুর ও মহুষ্য সমেত সমুদায় ব্রক্ষাণ্ড। তিনিই সর্বাহ্বা। তিনিই পর্বারা। তিনিই স্বারা। তিনিই স্বারা। তিনিই স্বারা ত্রাবান্ তাঁহার গর্ভে অবতীর্ণ হইলেন।

ক্রেট্টুকি কহিলেন, ভগবন্! ভগবান্বিবস্থানের যেরূপ স্থরপ এবং যে কারণে সেই আাদি-দেব কগ্রপের সাত্মজ হইলেন, শুনিবার জন্ম ইছো জনিতেছে। সেই দেবী মণিতি ও কগুপ বেরূপে আরাধনা করিয়াছিলেন; আরাধনা করিলে, সেই দেব ভাসান্ যাহা বলিয়াছিলেন, আপনার প্রমুখাৎ তৎসমস্ত আদ্যোপাস্ত শুনিতে অভিনাধ করি।

মার্কণ্ডের কহিলেন, থেই বিব্যান্দলন জগতের রূপ। বিন্দাং, পরনা বিদ্যা, জ্যোতির্জা, লাবতী, ক্ষ্টা, কৈবল্য, জ্ঞান, আবির্জ্, প্রাকান্য, দ্বিং, বোধ, অবগতি, স্থাতি, বিজ্ঞান, ইত্যাদি তাহার রূপ। মহাভাগ! তুমি যে ভারান্ ভাররের আবির্ভাববিষয় জিঞানা করিলে, আনি বিস্তার্বহুকারে তাহা বর্ণন করিতেছি, শ্রবণ কর। এই সংগার প্রভাহীন, আলোকহীনও স্বত্যভাবে অন্ধকারে বিলীন হইলে, এক অও সম্ভুত হইল। উহাই সকলের আদিকারণ। উহার ক্ষরণ নাই। ভগবান্ পিতামহ একা ব্যাং তদীয় অন্তরে থাকিয়া, ভাহা বিদারিত করিলেন। এই ব্যাহি জগতের স্থায় ও প্রভ্ । মহামুনে! তাহার মুথ হইতে, ওম্, এই মহান্ শব্দ আবির্জ্ ত ইল। তাহা হইতে প্রথমে ভূ, পরে ভ্রং, অনন্তর ব্যর্ সম্ভুত হইল। এই তিন ব্যাহিতিই সেই বিব্যানের স্থান্য। সেই ওম্বার্ন ইত্তই আদিত্যের পরম ক্ষরণ আবির্জ্ ত হইয়াছে। আন্তর্জ তাহা হইতে মহা, জনঃ, তপঃ ও গতা ইত্যাদি ভেদে যথাক্ষমে স্থাও প্রাক্তা বহেত্ত,

ইহাদের অভাব ও ভাবের ভাব ও অভাব সভাটিও হয়। বিপ্রা আমি বে তাঁহার ওম্সকপ পরম-কুলা রূপের কথা বলিলাম, উহাই সকলের আদি ও অস্তম্বরূপ। ঐ পরম রূপের কোনপ্রকারি আকার নাই। উহাই সাকাৎ পরব্রমা এবং উহাই তাঁহার বপু।

ইতি আদিত্যজন্ম নাম একাধিকশতত্ম অধ্যার।

#### দ্যধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, দেই অও বিভিন্ন হইলে, মুনে । অব্যক্তধোনি ব্রহ্মার প্রাণম বদন হইলত ঋক্সকল প্রাণম আবিভূতি হইল। ভাহারা জবাকুস্মসনিভ এবং তেজ ও রূপ এই উভরের এক শেষে অলঙ্কত। ভাহারা সক্ষেই র্জোকপধারী এবং কাহারও সহিত কেহ সম্পন্ধ নহে।

অনস্তর ব্রহ্মার দ্বিংগ মুখ হইতে ষজু: স্কণ অনাহত বেগে প্রাত্তুতি হইল। কাঞ্নের যেরপ বর্ণ, ভাহাদেরও তক্ত্রপ বর্ণ। তাহারাও প্রস্পর অসংহত।

অনন্তর ব্রহ্মার পশ্চিম বদন হইতে দাম দকল ও তত্তৎ ছল্প দক্ষণ আবিভূতি ইইল। তদনন্তর প্রমেষী ব্রহ্মার উত্তর বদন হইতে ভূক ও অঞ্জনপূঞ্জসনিত ঘোরস্বরূপ সম্পায় অপর্বরূপ প্রকাতি ভূত হইল। ঐ অথর্বরূপ শান্তিক ও আভিচারিক ভেনে ছিবিধ এবং স্থু, সম্ভ ও তমঃ-প্রধান এবং গৌমা ও অসোমা বিবিধ স্বরূপ বিশিষ্ট। মৃনে! ঋক্ দক্ল র্জোভণ্যমপুল, মজুং দকল সম্ভ্রণদ্দার, মজুং দকল সম্ভ্রণদ্দার, মাম দক্ষ তমো ভণ্যমপুল আবিশিষ্ট ও অথর্বরূপ তমঃ ও দত্ত এই বিবিধ গুলে মণ্ডিত। ইহারা অপ্রতিম টেইজি জিজ্জিল্মান ইইলা, পূর্বের হার পূপক্ পূথক্ অবস্থিতি করিল।

জনপ্তর সেই আলা তেজ, মাহার নাম ওম্, বালয়া অভিহিত হইয়া থাকে, তাহার অভাব হইতে দে তেজ সমৃত্ত হইল, তাহা উলিবিত আলা তেজকে সমাক্রপে আবরণ করিয়া, অবথিতি করিল। অথাৎ যজুর্ম তেজ ও তরৎ সান্ময় তেজ পরম্পর মিনিত হইয়া, সেই পরম
তেজে অধিষ্ঠিত হইল। ত্রজন্! এইরপে শান্তিক, পেইজিক ও আভিচারক এই ত্রিতয়, অক্
প্রভৃতি ত্রিতয়ে লয়প্রাপ্ত হইল। তাহাতেই তংকণাং সেই গভার মহকার বিনিত্ত হইলা, সম্পার
সংশার স্থানির্মণ হইয়া উঠিল এবং তরিবয়ন তাহার মধঃ, উর্জ ও তিয়াক্ প্রশান্ত প্রতিভাত হইল।
অনস্তর সেই ছলোময় উৎরা তেজা মণ্ডলীভূত হইয়া, উলিবিত পরম তেজের সহিত এক হইয়া
গোল। এইরপে আলিতে উন্ত হইল বিলায়া, উহার নাম আদিত্য হইল। মহাভাগ! এ
অব্যায়্মক তেজাই এই বিশ্বের কারণ। সেই ঋক্-যজুং সাম সংজ্ঞিত ত্রয়ীই প্রাতঃ, মধ্যন্দিন ও
অপরাহ্ এই তিন কালে তাপ প্রদান করেন। তল্মধ্যে ঋক্ সকল প্রাহে, যজুং সকল মধ্যাহে
ও সাম সকল অপরাহে তাপ দিয়া থাকেন। প্রাহে ঋক্ সকল প্রাহে, মধ্যন্দিন ও অপরাহ্ এই বিশিধ
সময়ে আভিচারিক এবং অপরাহে সাম বারা পিতুগণের কাগ্য করিবে। ত্রমা স্টিকালে হর্মা,
বিষ্কু বিভিকালে যজুর্ময় ও কল্প অস্তকালে নান্ময় ইইয়া থাকেন।

এই কারণেই এইরপে ভগবান্ ভাস্কর বেণাঝা, বেদনংস্থিত ও বেদবিদ্যান স্বরম প্রশ্ন বণিরা উলিখিত হরেন। এই কারণেই তিনি কৃষ্টি, থিতি ও প্রসায়ের হেতু এবং রজ ও স্থাদি গুণ আশ্র করিয়া, ব্রন্ধা ও বিষ্ণু প্রভৃতি সংজ্ঞা প্রাপ্ত ইন। তিনি বেদম্ভি ও অধিন-মন্ত্যমূর্তী, আবার তিনি অমূর্ত্তি। তিনি আবার ও বিশ্বের শাশ্রয়। তিনি জ্যোতিঃস্বর্গ। তিনি বেদান্তগ্র্যা ও

পরাৎপর এবং দেবগণ সর্ব্বদাই তাহার স্তব করেন।

ইতি মার্ভ্যাহাত্মানাম ছাধিকশত হম অধ্যার।

# ত্র্যধিকশতভ্য অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, সেই ভারবের তেজে অধ ও উর্জ সন্তথ হইরা উঠিলে, প্রাণোনি পিডা-মহ স্টেকামনাবশংবদ হট্য়া, চিন্তা করি:ত লাগিলেন, আমি স্টে করিলেই, এই স্টি:সংহার-স্থিতি-কারণ, মহায়া ভাররের তেজে বিনাশ পাইবে। প্রাণী সকল প্রাণহীন হইবে, সমুদার স্বিল ভকাইয়া ষাইবে। এবিকে, স্বিল বাতিরেকে বিখের স্টি হইবে না। এই প্রকার চিন্তা করিয়া, ভগবান্ লোকপিতামহ ব্রহ্মা ত্রায় হইয়া, ভগবান্ ভারবের তব করিতে লাগিলেন, এই অথিল বিশ্ব যুনায়, বিনি দুর্বনিয়া, বিনি বিশ্বমূর্ত্তি ও পরম জোতিঃ, যে জ্যোতির যোগিগণ धान করিয়া থাকেন; विनि ঋথেদময়, विनि यङ्ग्र्यित्मय निधान, विनि माम সকলের উদ্ভবস্তান, বিনি অভিস্তাশক্তি, বিনি স্থলতপ্রযুক্ত এয়ীময়, অর্দ্ধনাতা বাঁহাব প্রস্বহ্নপ্, বিনি গুণাতীত, যিনি সকলের কারণ, যিনি পরম তবনীয় ও পরম জেয়সকপ, বিনি অবহ্লিকপ আন্যু পরম জ্যোতি, যিনি বেদাঝা বলিয়া স্থূলস্বরূপ, সেই পরাংপর ও সকলের আদি ভাষানকে নুমুখার করি। তোমার যে শক্তি আদা সক্রপা, আনি তৎকর্তৃক প্রেরিত হইয়া, জন্মইী, প্রন, অশ্বি, ভেব তালি ও প্রণবাদি স্বরূপ-বিশিষ্ট অশেষবিধ স্থাষ্ট করিয়া থাকি এবং ভাহাদের যথাক্রমে স্থিতি ও লয়ও বিধান করি। নিজের ইড়ায় কখন ঐকপ করিতে পারি না। তুমিই বহিং। তৎপ্রভাবে ফাল শোষণ করিয়া, আমি পৃথিবীর সৃষ্টি ও জগতের আদ্যাপাক সম্পাদন করি। ভগবন্! ভূমি কিখ-বাপী। তুমি আকাশস্কলপ। তুমি এই বিশ্বজগং পঞ্চধা পরিপাশন করিতেছ। পর্মাত্মবিং পুরুষ গণ যজ্ঞ করিয়া, তোমারই যজন করেন। তুনি বিবস্থান। তুমি বিঞ্পররপ। তুনি সকলের ঈশ্বর ও প্রাংপ্রস্কুপ। যতিগণ্ও আলুবিন্স্তির অভিলাধী হইয়া, আলু ও মন সংযত করিয়া, ভোমার ধান করেন। তুমি দেবরূপ. তোমাকে নমস্কার। তুনি যজ্ঞরপ, তোমাকে নমস্কার। তুমি পর-ব্ৰহ্মস্বৰূপ এবং যোগিগণ ভোষারই চিথা করেন, ভোষাকে নমস্কার। বিভো় আমামি স্ষ্টি করিতে উদাত হইয়াছি। তোমার এই তেজঃপুঞ্জ তাহার বিল্ল করিতেছে। অভ এব এই তেজঃ উপদংহরণ কর।

মার্ক শুষেক, স্টেকেরা ব্রহ্ম এই রূপে বিশিষ্ট বিধানে তাব করিলে, ভগবান্ ভাষর স্কীয় দেই পরম তেজের সংহরণ করিলা, স্বল্লাত্র ডেজ ধারণ করিলেন। তথন প্রথোনি মহাত্তাগ ব্রহ্ম পুর্ককলা কৈ বিশ্ব করিলা ওপন স্থাদি, মহ্য্য ও প্যাদি, বৃদ্ধ ও শতা স্ক্র এবং নরকসমূহ স্ট করিলেন।

হাত ব্রহ্মার হু 🖟 নাম ত্র্যাদিকশততম সধ্যায়।

# চতুরধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, একা এই জগৎ সৃষ্টি করিয়া, পুর্নের ভার বণাবণবিধানে, বন, আশ্রম, সম্জ্র, পর্বান্ত ও দ্বীপ সকলের বিভাগ এবং দেব, দৈতা ও উরগাদি সকলের রূপ ও স্থান করনা করিলেন। তৎকালে অক্ষার মরীচিনামে বিখাত যে পুত্র উত্ত হইলেন, ছাঁহার পুত্র কগুপ। তিনি কাগ্রপ নামে পরিগণিত হইরা থাকেন। একন্! দক্ষের অয়োদশ পুত্রী তাহাঁর ভার্যা। দেব, দৈতা ও উরগাদিতেদে তাহাঁর বহু পুত্র উৎপর হইয়াছিলেন। অদিতি জিত্বনের ঈশ্বর

দেবগণকে প্রদৰ এবং দিতি দৈত্য সকলকে ও দমু প্রবল্পরাক্রম ও প্রচণ্ডপ্রকৃতি দানবদিগকে সম্ভাবন করিলেন। বিনতার গর্ডে গরুড় ও অকণ, যক্ষ ও রাক্রম সকল এবং অভাভ পক্ষী সকল সম্ভাত হইল। কর্দ্র নাগ সকল ও মুনি গন্ধর্মদিগকে প্রদৰ করিলেন। ক্রোধা ইইতে কুল্যার জন্ম হইল। রিঠা অপ্ররোগণকে প্রদৰ করিলেন। বিজ ! ইরার গর্ডে ঐরাবতাদি মাতঙ্গ সকল সম্পদ্ধ হইল। তামা ভোনী প্রম্থ কভা সকলের জন্মদান করিল। খোন, ভাগ ও শুকাদি বিহঙ্গ সকল ইহাদেরই প্রস্ত। ইলার গর্ডে পাদপ্রণের জন্ম হইল। প্রধা প্রগ্রাবে প্রস্ব করিলেন।

অদিতির গর্ডে কগুপের যে সন্ততি ভদিল, তাহাঁদের পুজ, দৌহিত্র ও পৌত্র দৌহিত ত্রাণি দারা এবং এই সকল পত্র ও দৌহিত্রীর বংশপরম্পরায় সমস্ত জগৎ ব্যাপ্ত হইরা উঠিল। কশ্র-পের ঐ সকণ পুজের মধ্যে দেবগণই প্রধান। তাহাঁদের তিন গণ, সাথিক, রাজ্য, তাম্য। ব্রক্ষবিদ্গণের শ্রেষ্ঠ, প্রমেষ্ঠী, প্রজাপতি ব্রজা সেই দেবগণকে যক্তভাগভাগীও ত্রিভবনের ঈশ্ব করিলেন। তাহাঁদের বৈমাত্র দৈতা ও দানবগণ মিলিত হইয়া, ভাহাঁদের বিমু করিতে লাগিল। রাক্ষদগণও তাহাতে যোগদান করিল। তল্লিবন্ধন উভয় পক্ষে অতিদারণ যুদ্ধ উপস্থিত হইল। ্ঐ যুদ্ধে দেবমানের সহস্র বংসর অতীত হইলে, দেবগণ প্রাজয় লাভ ক্রিলেন। বিপ্রা ও দানবগণ জয়ী হওয়াতে, আরও প্রবল হইয়া উঠিল। অনন্তর অদিতি আপনার পুত্র দেব-গণকে দৈত্য ও দানবগণ কর্তৃক নিরাক্ত ও ত্রিভুবনের আধিপত্য হইতে বহিষ্কৃত এবং যঞ্জভাগ হইতে নিক্ষাশিত অবণোকন করিয়া, শোকে অতিমাত্র অভিভূতা হইয়া, ভগবান্ গবিতার আরা-ধনার্থ অতিমাত্র যত্নবতী হইলেন এবং নির্তিশয় নিয়নবন্ধন ও আহারদংযমন পুরঃদর একাগ্র . হৃদয়ে গগনমধাৰ ঠীতেজোৱাশি ভাস্করের ভাৰ ক্রিতে লাগিলেন। কহিলেন, তুমি অভীবস্ক্র স্থবর্ণময় শরীর ধারণ করিয়া থাক। তোমাকে নমস্কার। তুমি সাক্ষাং তেজঃ ও তেজস্বিগণের ঈশ্বর, তুমি নিতা বিশ্যমান ও তেজের আধার, তোমাকে নমস্কার। তুমি তাপ ও কিরণের নির্তা। তুমি জগতের উপকারার্থ দলিলগ্রহণে দমুদ্যত হইলে, তোমার যে তীব্র রূপের আবির্ভাব হইয়া থাকে, আমি তাহাকে নমস্কার করি। ভাষানা উলিখিত রস বর্ধণার্থ মোচন করিতে উন্যত হইলে, তোমার যে, দকল প্রাণীর প্রমসন্তোষদায়ক মেঘরপ রূপের আবিভাব হইয়া থাকে, আমি তাহাকে নমস্কার করি। আবার, দেই বারিবর্ষণ হইতে যে সকল 'ওষধি সমুদ্ভ ত হয়, তং-সমস্ত পক করিবার জন্ম তোমার যে ভালরররপ আবিভূতি হইয়া থাকে, আমি তাহাকৈ নমলার করি। স্থা। তুমি তৎকাণজনিত শশু সকলের পোষণ জন্ত যে অতীব-ছিমোৎদর্গাদি-শীতণ ৰূপ ধারণ করিয়া থাক, আমি ভাহাঁকে নমস্কার করি। ভোমার যে রূপ অতি ভীত্র নংহ, আবার অতি শীতণও নহে হে দেব! হে রবে! আনি তোমার সেই বসন্তকাণীন সৌম্য রূপকে বার্ষার নমস্কার করি। স্থাবার, তোমার যে রূপ সমুদয় দেবগণের ও সমুদয় পিতৃগণের পরম তৃপ্তিজনক এবং শভ্রপাকের কারণ, আমি তাহাকে নমস্বার করি। তোমার যে রূপ বীরুধ সকলের জীবনের একমাত্র তে অমুতের আধার এবং সেইজন্ত দেবগণ ও পিতৃগণ যাহা পান করিয়া থাকেন, দেই দোমা থাকে নমস্কার। হে অর্ক । তোমার এই অগ্নীষোমমর বিবিধ রূপ সন্মিতিত হইয়া, যে বিশ্বময় রূপ সমুদ্রাবিত করিয়াছে, সেই গণাঝাকে নমস্কার করি। ঋক্, যজু ও গাঞ বেদ এক ব হইয়া, তোমার যে রূপ আবিভাবিত করিয়াছ, যাহা এই বিশ্ব ও যাহার নাম এগী, তাহাকে নমস্কার। আবার, তোমার যে রূপ তাহা হইতেও শ্রেষ্ঠ, যাহাকে ওঁম বলিয়া থাকে, যাহা মতি স্ক্রবরূপ, যাহার অন্ত নাই, যাহা সর্ক্রাণ বিরাজ্যান এবং যাহাতে কোনপ্রকার त्मायां नित्र मण्यक् नाष्ट्रे, ज्याभि छाङ्गेटक नमस्रात कति।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মুনে! এই রূপে দেবী অদিতি নিয়মবন্ধনসহকারে নিরাহারা হ<sup>ট্রা</sup>, ভাররের আরাধনামানদে অহর্নিশ তব করিতে লাগিলেন। বিজোত্ম! অনস্তর বহুকাল পরে ভাগবান্তপন আকাশে তাঁহার প্রত্যক্ষোচ্যে উপনীত হুইলেন। তিনি দেখিলেন, রাশীরুত তেজ যুগপৎ আকাশ ও পৃথিবী আশ্রম করিয়া, অতীব প্রভাশালিনী শিথাপরস্পরার সংযোগবশতঃ অতীব প্রনিরীক্ষা হইয়া, বিরাজ করিডেছে। তদ্দলিন দেবী আদিতির অস্তঃকরণে অতিনাত্র ভারের উদ্রেক হইল। তথন তিনি বণিতে লাগিলেন, প্রামন্ত আমা তোমাকে দেখিতে পাইতেছি না। আমি নিরাহারা হইয়া, প্রথমে তোমাকে আকাশ আশ্রমপূর্কক বেরপ অতিমাত্র প্রনিরীক্ষা হইয়া, যুগপৎ আলোক ও তাপ বিকিরণ করিতে দর্শন করিয়াছি; তদনত্তর পৃথিবীতিও, তোমাকে দেইরপ তেজোরাশিরপে অবলোকন করিতেছি। অতএব দিবাকর! প্রসম্বত্ত, আমি তোমাকে দর্শন করি। তুমি ভক্তের প্রতি অম্কম্পা করিয়া থাক। আমি তোমার ভক্তা। আমার পুশ্রদিগকে রক্ষা কর।

তুমি ধাতা, এই বিশ্বকে উৎপাদন করিয়া থাক। তুমি দ্বিতিসাধনে সমৃদ্যত হইয়া, ইহাকে পালন করিছে। আবার, অস্তে সমস্ত সংসার তোমাতেই লয় পাইয়া থাকে। তুমি ভির সর্কালোকে অস্ত গতি আর নাই। তুমি রক্ষা, তুমি হরি, তুমি মহাদেব, তুমি ইক্ষ ও ধনদ। তুমি পিছুপতি যম ও জলপতি বরণ। তুমি বায়ু ও চক্ষ। তুমি অয়ি, আকাশ, অবনিধর ও আজি। এই ক্রমে তুমি সর্কায়া ও সর্করপ। তোমার আর তব কি করিব ? তুমি যজের ঈশর। বিজাতিগণ অয়্বিন আত্মকর্মের অল্পরণপূর্কক বিবিধ পদ হারা তোমার তব ও যাজন করিয়া থাকেন এবং বিশেষরূপে মন:সংযম সহকারে যোগমার্গে প্রবৃত্ত হইয়া, তোমারই ধানে করত যোগম্ভি পরিগ্রহ করিয়া, পরমপদে প্রয়াণ করেন। তুমিই বিশ্বে তাপদান, সাকবিধান, পালন ও ভত্মীকরণ করিয়া থাক। তুমিই কিরণবিকিরণপূর্কক ইহাকে প্রকটিত ও সন্লিগও মন্থ্যাণ বিত্তারসহকারে আপ্যায়িত কর। দেব ও মানব সকলেই তোমাকে প্রণাম করেন। পাপকারী পুরুষপণ তোমাকে প্রাপ্ত হয় না।

ইতি দিবাকরস্তৃতি নাম চতুরধিক শততম অধ্যায়।

# পঞ্চাধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, তথন বিভাবস্থ স্থা আপনার সেই তেনোমগুলমধ্য হুইতে আবিভূতি হুইয়া, প্রভণ্ড-ভাদ্র-দৃশ্শ কলেবরে অদিতির নয়নগোচরে উপনীত ইইলেন। মুনে! তাহাঁকে দুর্শন করিবামাত্র অদিতি প্রণাম করিলেন। ভগবান ভাষর তাহাঁকে কহিলেন, যাহা ইছো, দুর্শন করিবামাত্র অদিতি প্রণাম করিলেন। ভগবান ভাষর তাহাঁকে কহিলেন, যাহা ইছো, আমার নিকট বর প্রার্থনা কর। অদিতি ভাষু ধারা পৃথিবী স্পর্শ ও মন্তক ধারা প্রণাম করিয়া, সমুথে সমাগত সেই সরদাতা সবিতাকে কহিলেন, দেব! প্রদাম হউন। দৈত্য ও দানবগণ প্রত্ব সমাগত সেই সরদাতা সবিতাকে কহিলেন, দেব! প্রদাহ। আমার প্রতি ত্রিমিও প্রকাশ হইয়া, আমার প্রত্রগণের ত্রিভূবন ও যজভাগ হরণ করিয়া, হার্হাদের শত্রু নাশ কর। প্রদাদ বিতরণ করিতে হইবে। খীয় অংশে তার্হাদের ত্রাভূগমন করিয়া, হার্হাদের শত্রু নাশ কর। প্রাকরণ স্থাম, যাহাতে পুনরায় যজভাগভাগী ও ত্রিভূবনের ঈশ্বর হয়, দিবাকর! আমার প্রত্রো পূর্কের আয়, যাহাতে পুনরায় যজভাগভাগী ও ত্রিভূবনের ঈশ্বর হয়, তাহাদের প্রতি স্প্রস্ব হয়া তদ্মরূপ অমুক্সপা কর। তুমি বিপল্লের বিপদ হরণ করিয়া থাক। তোমাকেই স্থিতিকর্ত্তা বলিয়া থাকে।

তানাদেশ । বাজপতা বালানা বাজে।
মার্কণ্ডের কহিলেন, বিপ্র ! তথন বারি-তম্বর ভগবান্ ভাস্কর প্রানাদ-স্মুধ হইরা, প্রণতিপরারণা
মার্কণ্ডের কহিলেন, আমি জ্বনীর গর্ভে সহস্রাংশে সমৃত্ত হইরা, তোমার পুত্রের শত্তণিপকে আত আদিতিকে কহিলেন, আমি জ্বনীর গর্ভে সহস্রাংশে সমৃত্ত হইরা, তোমার পুত্রের শত্তণিপকে আত মি:শেষে নাশ ক্রিব। ইহা ক হ্রা, ভগবান্ ভাস্কর সম্ভর্তিত হইলেন। তথন সমৃদর কামনা মি:শেষে নাশ ক্রিব। ইহা ক হ্রা, ভগবান্ ভাস্কর সম্ভর্তিত ক্রিন্ত্তা হইরো, বেরির সৌধুমনামক কর ভ্রনীর উপরে আব-পূর্ণ হওরাতে, অনিতি তপতা হইতে বিনিত্তা হইরা, পৌচ অবস্থনপূর্কক ক্লছু-চাল্লারণাদি-ব্রভাস্থ-ভরণ ক্রিব। দেবজননী অদিতিও সমাহিতা হইরা, পৌচ অবস্থনপূর্কক ক্লছু-চাল্লারণাদি-ব্রভাস্থ- ষ্ঠানপূর্বক দেই দিবা গর্ভ বহন করিতে লাগিলেন। তদ্দ্নে কগ্রপ কিঞাৎ কোপ-প্লুত অক্ষরে তাইারে কহিলেন, তুমি নিত্য উপবাদ করিরা, এই গর্ভাগুকে মারিবে না কি ? তিনি কহিলেন, অরি কোপন! তুমি এই যে গর্ভাগু দেখিতেছ, ইহাকে আমি মারিত অর্থাৎ মারি নাই। এই গর্ভাগু বিপক্ষগণের মৃত্যুর নিমিত্ত হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই বলিয়াই দেবী অদিতি স্থামিবাক্যে কুনা হইরা, সেই গর্ভ তৎক্ষণাৎ ত্যাগ করিলে, উহা তেলোভরে প্রজ্ঞলিত হইতে লাগিল। কশুপ উদীয়মান ভান্ধরের
ভার প্রভাবিশিষ্ট সেই গর্ভকে দর্শন করিয়া, প্রণামপূর্কক আদর দহকারে আদ্য ঋক্ সকল সহারে
ভব করিতে প্রবৃত্ত ইংগুন। তৎকর্তৃক ভূয়্মান হইয়া, ভগবান্ ভান্ধর প্রপ্রাশ-প্রতিভ কলেবরে সেই গর্ভান্ত ইংগু প্রকট হইয়া, স্বকীয় তেলে দিয়্ব পরিব্যাপ্ত করিলেন। অনন্তর ম্নিসভম কগ্রপকে অয়রীক হইতে সভাষণ করিয়া, সলিলগর্ভ জলধরের ভারে, গান্তীগালালিনী দৈববাণী এইরূপ বিগতে লাগিলেন, ম্নে। যেহেতৃ, তুমি এই অওকে মারিত (অর্থাং মারিয়া
ফেলিলে) বলিলে, সেইহেতু ভোমার এই পুল্রের নাম মার্ভণ্ড ইইবে। এই পুল্র জগতে প্র্যোর
কার্যা করিবেন এবং যুজ্ঞাগহারী অম্বনিগের সকলকেই সংহার করিবেন।

দেবণেণ গগন হইজে সমুপাগত এই বাক্য শ্রবণ করিয়া, অতুল প্রহর্ষ লাভ করিলেন এবং অস্করণের তেজ হরিয়া গেল। তথন শতক্রত্ ইন্দ্র অস্করিপিকে যুদ্ধের জন্ম আহ্বান করিলে, তাহারা আহ্বাদিত হইয়া, দেনপাণের দহিত সম্মিনিত হইল। তাহাতে অস্করণণের সহিত অমরগণের ঘার বুদ্ধ উপস্থিত হইলে, সমস্ত ভ্বনাস্তর উভয় পক্ষের শ্রোক্রণীপ্তিতে সন্দীপ্ত হইয়া উঠিল। সেই যুদ্ধে মহাত্রর দকণ ভগবান্ মার্ত্ত কর্ত্ক নিরীক্ষিত্রমাত্র তদীয় তেজে দহামান হইয়া, ভমীভুত হইল। তদ্দর্শনে সমুদায় দেবগণ অতুল প্রহর্ষ প্রাপ্ত হইয়া, তেজোবোনি মার্ত্ত প্রদিতি উভয়কেই স্তব করিতে লাগিলেন। অনস্তর তাহারা সকলেই পুর্বের ভায়, স্বম্ব অধিকার ও যজ্ঞতাগ অবিকার করিলে, ভগবান্ মার্ত্ত স্থাধিকারকরণে প্রের্ত হইলেন এবং কদম্বন্দ্র প্রতিভা-বিকাশসহকারে অধঃ ও উদ্ধি রশ্মি বিকিরণ করিতে লাগিলেন। তিনি দেখিতে প্রেনিত অ্যিপিড্রের ভায় হইলেন এবং অনতি-প্রফ্রিত কলেবর ধারণ করিলেন।

ইতি মার্তভোৎপত্তি নাম পঞাধিকশততম অধ্যায়।

### ষড়ধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, অনন্তর প্রজাপতি বিশ্বক্ষা প্রণতিপূর্ব্বক প্রসন্ন করিয়া, ত্র্যাকে স্বকীয়
সংজ্ঞানায়ী কলা সম্প্রদান করিলেন। তাঁহার গর্ভে ত্রেরে ইরনে বৈব্যত মহ আবিভূতি হই-লেন। পূর্ব্বেই আমি ইহার স্বরূপাদি বিশেষরূপে কীর্ত্তন করিয়াছি। গো-পতি ত্র্যা ঐ সংজ্ঞার গর্ভে সর্ব্বেমতে অপত্যত্তরের অন্মদান করেন। ইহাঁদের মধ্যে ছুইটা পরম মহাভাগ পূল্ল এবং একটি কল্পা। কল্পার নাম যমুনা। বৈব্যত মহ ইহাঁদের জোট। তাঁহার পর যম ও যমী যমল অনিয়াভিলেন। গেই বিব্যান্ মার্ত্তের যে তেজা অতিমাত্র সম্বর্জিত, তিনি তদ্ধারা স্থাবর-জ্লমমর তিন লোক অভিশ্ব সন্ত্রপ্র করিয়া ত্লিলেন। সংজ্ঞা ত্র্যার গেই গোলাকার রূপ দর্শন করিয়া, কোন মতেই তদীয় মহৎ তেজ সল্থ করিতে না পারিয়া, স্বীয় ছায়াকে নিরীক্ষণপূর্ব্বক কহিতে লাগিলেন, তোমার মলল হউক। আমি আপনার পিতৃগেহে পমন করিব। ততে ! তুমি আমার কথামতে ত্রেরের সমীপে নির্বিক্রার ভাবে অবহিতি করিবে। আমার এই পূল্র হুইটা

্ এবং এই বরব্ণিনী ক্লা, ইহাদিগকে বিশেষরপে লালন পালন করিবে। সাব্ধান, এ ক্থা ভগবান্ স্থ্যের নিক্ট প্রকাশ করিও না।

চারা কহিলেন, দেবি ! ভগবান হর্যা যে পর্যন্ত না আমার কেশ গ্রহণ অথবা বে পর্যন্ত না শাপ দান করিবেন, তাবং আমি ভোমার অভিপ্রেত তাঁহাকে বণিব না। তুমি বেখানে ইচ্ছা গমন কর।

ছারা এই প্রকার কহিলে, স্থলোচনা সংজ্ঞা পিতৃ ছবনে গমন করিরা, কিয়ৎকাল তথার বাদ করিলেন। অনম্বর পিতা বার্ষার স্থামিদকাশে গমন করিবার জন্ম অমুরোধ করিলে, তিনি বড়বারূপ ধারণ করিরা, উত্তর কুকতে সমাগতা হইলেন। মহামুনে । তথার পতিব্রতা সংজ্ঞা নিরাহারা হইরা, তপশ্চরণ মার্ভ করিলেন।

এদিকে সংজ্ঞা পিতৃগেছে গমন করিলে, ছায়া তণীয়-বাক্যতৎপরা হইয়া, তাঁহার রূপ ধারণ করিয়া, ভাস্করের পরিচরণে প্রবৃত্তা হইলেন। স্থ্য সংজ্ঞাবোধে তাঁহার গর্ভেও ছই পুত্র ও এক কল্পা সমুৎপাদন করিলেন। ছিজসভম! সেই পুত্রছয়ের মধ্যে খিনি অত্যে জ্ঞানিলেন, তিনি পুর্বজাত বৈবস্থত মনুর তুল্য; সেইজ্লু সাবর্ণি নামে বিধ্যাত হইলেন। ইহাঁদের মধ্যে দিতীয় থিনি, তিনি শনৈশ্চর প্রহু হইলেন। ক্লার নাম তপতী। রাজা সম্বর্ণ তাঁহাকে পত্নীজে বর্ণ করিলেন।

ছারা-সংজ্ঞা আপনার আত্মজনিগকে যেরপ মেহ করিতে শাগ্নিশেন, সংজ্ঞার সন্তানদিগকে সেরপ নহে। মহু তাহা ক্ষমা করিলেন। কিন্তু যম ক্ষমা করিতে পারিলেন না। এক্স ছায়া বারম্বার তাঁহার নিকট প্রার্থনা করিতে লাগিলেন। কিন্তু তিনি অভিমাত ছ:থিত হইরাছিলেন। এই জন্ম জাতকোধ হইরা, বাণ সভাব ও ভাবী ঘটনার বণবতা প্রায়ুক্ত ছারা-সংজ্ঞাকে পাদ-প্রহার করিতে উদাত হই লেন। ছায়া মতিমাত অমর্ধপর্বশা হইরা, এই বিলয়া ধনকে শাপ দিলেন, আমি তোমার পিতার ভাগ্যা। দেই কারণে তোমার প্রম গুরু। কিন্তু তুমি তাহা না ভাবিয়া, আমারে পাদ ছারা তর্জনা করিলে। এই কারণে তোমার ঐ চরণ পতিত হইবে. তাহাতে সংশয় নাই। ধর্মাত্মা যম এই শাপে অতিশ্য পীড়িত্তিও ও মহুর সহিত একংযাপ হইয়া, সমুদ্য পিতার গোচর করিলেন। কহিলেন, দেব ! জননী আমাদের সকলের প্রতি স্থান স্বেহ করেন না। আম্বা জেষ্ঠ; আ্মাদিগকে তাগ করিয়া, কনিষ্ঠদিগেরই ভর্ন পোহনে উৎস্থকা হইয়া থাকেন। সেই কারণে আমি পাদপ্রহারে উদ্যত হইয়াছিলাম। কিন্তু প্রহার করি নাই। আমামি যদি বাশকভাবশতঃ অথবা মোহপ্রায়ক্তই এরূপ করিয়া পাকি, আপনাকে আমায় ক্ষমা করিতে হইবে। তাত ! আমি পুত্র। তণাপি জননী আমাকে রোষবলে শাপ নিলেন। ইহাতে, তাঁহাকে আমাদের প্রকৃত জননী বণিয়াই বোধ হইতেছে না। দেখুন, পুত্রেরা বিগুণ হইলেও, জননী কথন বিগুণা হন না; স্কুতরাং, পুত্রুকে কথন, তোমার পা থিবিয়া বাইবে, ববিয়া, তিনি শাপ ৰিতে পারেন না। ভগবন্! আপনার প্রদাদে মাতৃশাপে বাহাতে . আনার পা পড়িয়া না যায়, অদ্য তদত্রপ তিন্তা করুন।

স্থ্য কহিলেন, পুত্র ! ভূমি ধর্মজ্ঞ ও সত্যবাণী। তোমারও যথন রোধাবেশ ইইরাছে, তথন এবিষরে নিঃসন্দেহই কোন কারণ আছে। সমুদর শাপেরই প্রতিগাভ আছে। কিছু জননী যে শাপ দেন, ভাহার কোনমতেই নিবর্তন হয় না। অতএব ভোমার জননীর এই শাপ কথন বার্থ করিতে পারিব না। ভবে পুত্রমেহ প্রযুক্ত ভোমার প্রতি কিঃশৃং ক্ষম্প্রত্থ করিব। ভূমি সকল ভোমার পা হইতে মাংস গ্রহণ করিরা, মহীতলে প্রয়াণ করিবে। ভাহাহইলেই, ভাঁহার ক্যা সভ্য ও ভোমারও পরি গ্রাণ হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর আনিত্য ছারাকে বনিলেন, পুত্রগণ সকলেই সমান। তবে তুমি কিজন্ত একজনকে অধিক স্নেহ করিয়া থাক ? বিশেষতঃ, পুত্রেরা বিগুণ হইলেও, জননী কথন তাহাদিগকে শাপ দিতে পারে না। ইহাতে বোধ হইতেছে, তুমি ইহাদের জননী সংজ্ঞানহ। তুমি আর কেহ হইবে; আমার নিকট আসিয়াছ। ছায়া এ কথার পরিহার করিরা, হায়াকে করিরা, ভার কিলেন। তজ্জ্ঞ তিনি শাপনানে সম্পাত হইলে, ছায়াকংজ্ঞা তাহা দর্শন করিয়া, ভার কিশিতা হইয়া, সম্পায় রুতান্ত যথাবং তাহারে নিবেদন করিলেন। স্বায়্র শ্রবাক করিয়া, জাতক্রোধ হইয়া, য়য়তরের নিকট সমাগত হইলেন। অনস্তর তিনি রোষভরে নিংশেষে দক্ষ করিতে অভিলাবী হইলে, স্বত্রত বিশ্বক্রা তাহাকে বথাবিধি অর্জনা ও সাল্বনা করিয়া কহিলেন, আপনার বর্রপ অতিমাত্র তেজে ব্যাপ্ত হওয়াতে, নিতান্ত হংসহ হইয়া উঠিয়াছে। তজ্জ্ঞ সংজ্ঞা সহ করিতে না পারিয়া, বনে গিয়া, তপ্তা করিতেছেন। আপনার নেই ভ্রচারিণী সহধর্মিণী, আপনার অপেকার্কত তেজোহান স্থাম্মির্ম রূপের অভিলাধিণী ও কানন্বাগিনী হইয়া, যে, অতীব কঠোর-তপশ্চারিণী হইয়াছেন, অদ্য দেখানে গেলেই দেখিতে পাইবিন। হে দিম্পপতে! ব্রন্ধার কথা আনার মনে পড়িয়াছে। অতএব যদি আপনার অভিমত হয়, তাহাহইলে, আপনার এই রূপকে কমনীয় করিয়া দি।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ভগবান্ স্থোর রূপ পূর্বে যওলাকার দিল। সেইজন্ম তিনি বিশ্বকর্মাকে কহিলেন, আছো, তাহাই হই ব। তথন বিশ্বকর্মা আজ্ঞা পাইরা, শাক্রীপে স্থাকে ভ্রমিতে আরোপিত করিয়া, তদীয় তেলঃ কয় করিতে উদাত হইলেন। সমুদয় জগতের নাভিষরপ ভগবান্ ভাষান্ ভ্রমিতে আরোহণ করিয়া, ভ্রমিতে আরম্ভ করিলে, গাগর, পর্বত ও কানন সমেত সমগ্র মেদিনী আকাশে উত্থান করিলেন। ত্রুল্ । তৎসহকারে চল্ল, গ্রহ ও তারার সহিত্র সমন্ত গগনও অধোগত, আফিপ্ত ও আকুল হইয়া উঠিল। সাগর সকলের সলিলরাশি বিশিপ্ত হইতে লাগিল। মহাশৈল সকল বিদারিত ও তাহাদের সাম্পকল বিশীর্ণ হইয়া গেল। ভগবান্ ভাষর স্বেগে ভ্রমণ করাতে, যে সমীরণ সমুখিত হইল, তদ্বারা মহামেল সকল ঘোর রবে সমন্ততঃ বিচরণ করত বিশীর্ণ হইতে লাগিল। মুনিসভ্রম। তৎকালে তদীয় ভ্রমণ্বেগে আকাশ, পাতাল ও প্রিবী সমুদয়ই বিভ্রান্ত হর্যাতে, এই নিখিল জগৎ অতিমাত্র আকুল হইয়া উঠিল।

তথন সমুদ্র হৈলোক্য ভ্রমণ করিতে আরম্ভ করিলে, দেবগণ ও দেববিগণ ব্রহ্মার সহিত একবোণে ভগবান্ ভাস্করের এই বলিয়া তাব করিতে লাগিলেন, তুমি আদিদেব। দেবগণের ইহা স্থারপতঃ পরিজ্ঞাত হইয়াছে, তুমি স্টে, স্থিতি, ও প্রাণয় সময়ে ভিন্ন ভিন্ন রূপতায় ধারণ করিয়া, বিরাজ্ঞান হইয়া থাক। তুমি জগতের নাথ। অত এব স্থিরভাব অবশ্যন কর। তুমি প্রীন্ম, বর্ষা ও শিশির এই সকলের আকর। তুমি দেবদেব দিবাকর। অত এব লোক সকলের শাস্তি বিধান কর।

ঐ সমরে ইক্সও আগমন করিয়া, সেই ভ্রমিষয়ে আবোগিত দিবাকরকে এই বলিয়া শুব করিলেন. তুমি সমূলর ২০গৎ ব্যাপিয়া আছে। তোমার জয় হউক। তুমি অশেষ জগতের পতি। তোমার জয় হউক।

তৎকালে বশিষ্ঠ ও অত্রিপ্রমূপ সপ্ত ঋষিও, স্মৃতি স্বতি বলিয়া, বিবিধ তোতা সহায়ে তাঁহার তব করিতে লাগিলেন।

বাণখিল্যগণপু প্রমহর্ধাবিষ্ট হইয়া, বেণোক আদা ও অত্যুৎকৃষ্ট ঋক্ সকণ ছারা তাঁহার ছব আরম্ভ ক্রিলেন। তাঁহারা কহিলেন, তুমিই সকলের নাথ। তুমি মুক্তপুরুষদিগের মুক্তি। তুমি ধানশীনগণের ধ্যেয়। তুমি কর্মকাণ্ডে প্রবর্তমান সর্বভ্তের গতি। তুমি দেবগণের ঈশর। তোমার প্রসাদে প্রজাগণের প্রম ক্ল্যাণ সমুদ্ভূত হউক। তুমি জগতের পতি। আমাদের শং (অর্থাৎ নির্ভি হুধ, মালল ও শাস্তি বিধান কর।) আমাদের ছিপদ সকলে শং বিহিত হুটক। তোমার প্রসাদে আমাদের চুতুলদসমূহেও শংবিহিত হুটক।

শনস্তর বিদ্যাধরগণ, রাক্ষণগণ, ষক্ষগণ ও পরগগণ দক্ষে ক্রভাঞ্জিপিটে প্রণত মন্তক্ষেতি ক্রন্তর্বাক্ষি বিদ্যাধরগণ, রাক্ষ্য করিয়া, বলিতে লাগিলেন, তুমিই ভূতগণের সমুদ্রাবন করিয়াছ। অত এব তোমার তেল তাহাদের সহ হউক! অনস্তর ষড়ল, মধাম, গালার ও তানতর বিশারদ এবং গাল্ল্কনিপুণ হাহাচ্ছ, নারদ ও তুব্ক মিলিত হইয়া, মৃদ্র্না ও প্রয়োগ সহিত্ত তালসহকারে স্থপ্রদ বাক্যে স্তর্গানে প্রবৃত্ত হইনেন।

বিশানী, মৃতাচী, উর্কাশী, তিলোভমা, মেনকা, সহজ্ঞা, রস্তা, এই সকল অপ্সর:শ্রেষ্ঠা হাবভাব বিলাদভূষিত বছবিধ অভিনর প্রদর্শনপ্র:সর নৃত্য করিতে আরম্ভ করিল। এ সময়ে শত
শত ও সহস্র সহস্র বেণ্, বীণা, দর্দ্র, পণব, পুছর, মৃদক্র, পটহ, আনক, দেবচন্দ্তি ও শহ্মসমূহ বানিত হইতে লাগিল। গদ্ধর্কেরা গান, অপ্সরারা নৃত্য এবং তুর্য্য ও বানিত্র সকল শক্ষিত
হওরাতে, সম্দয় কোণাহলময় হইয়া উঠিল। তথন সম্দয় দেবতা ভি ভিরে অবনত হইয়া,
কৃতাঞ্জলিপুটে সেই ভগবান্ ভাস্করকে প্রণাম করিলেন। এইরপে সম্দয় দেবতার সমাগমে
তুম্ন কোলাহল সম্থিত হইলে, বিশ্বকর্মা ধীরে ধীরে ভাস্করের তেজঃ শাতন (অর্থাৎ কুদে
চাচিয়া কেলা) করিতে লাগিলেন।

ভগবান্ ভাষর হইতেই গ্রীম, বর্ষা ও শিশিরের প্রাত্রভাব হইয়া গাকে। হরি হর, অক্ষাও তাঁহার তাব করেন। তাঁহার এই তেজঃশাতন শ্রবণ করিলে, মৃত্যুর পর দিবাকরণোক প্রাপ্ত হওয়া যায়।

ইতি সুর্ব্যের তেজোনিশাতন নাম ষড়ধিকশততম অধ্যার।

#### সপ্তাধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, প্রজাপতি বিশ্বকর্মা ভগবান্ ভাত্মানের শরীর লেখন করিতে করিতে, এই বলিরা তত্ত্ব করেতে আরম্ভ করিলেন, তুমি সম্পর প্রভার আকর। যাহারা তোমাকে ভক্তি-ভরে প্রণাম করে, তুমি তাহার হিত অমুঠান ও অমুকম্পা করিরা থাক। তুমি বিরাট-শরীরী। তোমার সাত্টী পথ, সকলেই সমান বেগ বিশি?। তুমি স্থকোমণ তেজের মাধার। এইজন্ত কমণ সকলকে বিক্ষিত ক্রিয়া থাক। ভ্যঃপ্টলপাটনে তোমার পটুতার সীমা নাই। ভোমাকে নমস্কার। তুমি সুকলের পবিএতা বিধান করিয়াথাক। তুমি অতিশয় পুণাকশা। তুমি বছবিধ অভিলংণীর বিষয় প্রদান করিয়াথাক। তুমি প্রমপ্রভাবিশিষ্ট অনল ও কির্ণমণ্ডণের আমার। ভূমি সকল লোকের হিতকারী। তোমাকে নমস্কার। তোমার জন্ম নাই। তোমা হইতেই লোক আর উদ্ভ হইরাছে। তুমি ভূতগণের আবাঝা। তুমি বিখের পতি। তুমি সাক্ষাৎ ধর্ম। ত্মি প্রমকাকণিকগণেরও প্রধান। তুমি সকলের দৃষ্টিদাতা স্থা। তোমাকে নমস্কার। তুমি বিবস্থান্। তুমি জ্ঞানিগণের অভরাঝা। তোমাতেই জগৎ প্রতিষ্ঠিত আছে। তুমি জগতের হিতৈবী। তুমি ভরং সমুভূত হইরাছ। তুমি লোক সকলের চকু। তুমি সমুদর দেবতার প্রধান। তোমার তেজের শুনীমা নাই। তোমাকে নমস্বার। ময়্থদহত্র ভোমার বপু। ভূমি লগতের মঙ্গল ও উপকার বিধান ক্রিয়াথাক। তুমি দেবগণের সহিত ক্ষণকাল উদয়াচলের মৌলি-মাণারূপে বিরাজ করিয়া, আককার নিরাকরণপূর্ধক সংগারে খীয় প্রতিভা বিস্তার কর। সংগার-তিমির্ক্প মদ্য পান করিয়া, মদবশে ঘুদীয় বিগ্রহ অতিমাত্র লোহিতবর্ণ হইয়া উঠে। ভাহাতেই তোমার ক্রিভ্বন-প্রকাশক প্রভাসমূহের আবিভাব হয়। সেই কারণে জুমি অতিমাক বিরাজ-মান হইরা থাক। ভগবন্! তোমার রথ পরমহম্বর ও সমক্রপ অবরববিশিষ্ট। তুনি সেই চাক-বিকশিত রথে আরোহণ করিরা, অধিল তুর্লম সহারে অগতের কল্যাণ্নাধনার্থ সভত অঞ্জি- হত ভাবে বিচরণ করিয়া থাক। তুমি অমৃত ও স্থাংও রস যুগপৎ প্রদান করিয়া, দেবগণ ও পিতৃগণের তৃপ্তি বিধান এবং অরিগণের নিধন সাধন কর। সেইজন্তই আমি প্রণামপূর্বক জগতের
হিত কামনার তোমার তেজঃ শাতন করিতেছি। তুমি ভক্তবংসণ ও ত্রিভ্বনের পাবন।
আমি তোমারে প্রণাম করিতেছি। আমারে রক্ষা কর। তুমি জগতের প্রস্তিস্করণ। তুমি
ত্রিভ্বনের প্রমপ্রামর ধামস্বর্লণ। তুমি অধিশ জগতের প্রনীপ্ররূপ। অধিক কি, তুমিই
ভগবান্ বিশ্বক্র্যা। তোমাকে প্রণাম করি।

ইতি সুৰ্যান্তৰ নাম সপ্তাধিকশততম অধায়।

# অফীধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিশ্বক্সা এইরূপে সুর্য্যের তব করিয়া, তাঁহার তেজের যোড়শ ভাগ মণ্ডলন্থ করিলেন। পনর ভাগ তেজ শাতিত হওয়াতে, ভালুর শরীর অতীব কান্তিবিশিষ্ট হইল। তাঁহার দেই পনর ভাগ তেজ বারা তিনি বিষ্ণুর চক্রে, মহাদেবের শূল, ধনদের শিবিকা, বমের দণ্ড ও কার্ত্তিকেরের শক্তি নির্মাণ করিলেন। অনস্তর তিনি ভালুর উল্লিখিত তেজ বারা অভাল্য দেবগণেরও শক্রশাসনার্থ পরমপ্রভাবিশিষ্ট অন্ত সকল রচনা করিলেন। এইরূপে তেজঃ শাতিত হওয়াতে, ভগবান্ ভাল্মান্ অনতি তেজ ধারণ করিয়া, যেমন শোভমান হইলেন, তেমনি তাঁহার শরীরও সর্বাঙ্গশাভন হইয়া উঠিল। তথন তিনি সমাণিত হইয়া, অবলোকন করিলেন, তণীর ভার্যা সংজ্ঞা তপভা ও নিয়ম প্রভাবে সর্বভ্তের অনভিভাবনীয়া বড়বামূর্ত্তি ধারণ করিয়াতেন। অনস্তর তিনি উত্তরকুকতে গমন করিয়া, অশমূর্ত্তি-পরিগ্রহপুর্কক তাঁহার সক্ষাণে সমাণত হইলেন। সংজ্ঞা তাঁহাকে দর্শন করিয়া, পর-পুরুষ-শক্ষায় পৃঠরকণে তৎপরা হইয়া, তাঁহার সম্মুণে গমন করিলেন। তাহাতে পরম্পের নাদিকাযোগ প্রাপ্ত হইলে, সেই নাদিকারন্ধ বারা বিব্যানের তেজ বড়বাতে প্রবেশ করিল। প্রবেশ করিবামাত, ভিষক্প্রবর অশ্বনীকুমারহুর উৎপন্ধ হইলেন। তাঁহারা উভয়ে অশ্বের বক্ত হইতে বিনিজ্ঞান করিলেন। তাঁহারা অশ্বরপ্রর মার্ত্তের প্রতা। অনস্তর গুরুপাতান্তের রেবন্ত জন্মগহণ করিলেন। তাঁহার হত্তে থজা, ধমু, বাণ, তুণ ও প্রতীরে কবচ এবং তিনি অখে আর্রাহণ করিয়া আহেন।

তথন ভাস্থান্ আপনার নির্মাণসরূপ প্রদর্শন করিলেন। তাঁহার .সই শান্তম্প্রি দর্শন করিয়া, সংজ্ঞা আফ্রাদিতা হইলেন। অনস্তর বারিতস্কর ভাস্কর স্বরূপধারিণী প্রীতিমতী ভার্যা সংজ্ঞাকে স্কীয় আগরে লইয়া গেলেন। তাঁহার প্রথম পুত্র বৈবস্বত মহ হইলেন। বিতীয় পুত্র যম শাপ ও অন্তর্হবশত্তঃ একমাত্র ধর্মেরই অফুসারী হইলেন। জননীর শাপে মন অতিমাত্র পীড়িত হওরাতে, একমাত্র ধর্মেরই তাঁহার মতি হইরাছিল। সেইজ্রত তাঁহার নাম ধর্ম্মাক্র ইইল। পিতা এই বিদরা, তাঁহার শাপান্ত করিলেন, ক্রমি সক্ল তোমার পর হইতে মাংল গ্রহণ করিয়া, ভূমিতে পতিত হইবে। বেহেতু একমাত্র ধর্মেই তাঁহার দৃষ্টি ও শক্র মিরে সমন্তাব জন্মিয়াছিল, সেই-হেতু পিতা তাঁহাকে যমের কার্যে নিয়োগ করিলেন। বিপ্র! ভণীর পিতা ভগবান্ ভাষর তাঁহার প্রতি পরিস্কৃই হইরাছিলেন। এইজন্ত তাঁহাকে লোকপালপদ ও পিতৃপণের আধিপতা প্রণান করিলেন। অনস্তর ভিনি যম্নাকে কলিলান্তর বাহিনী নদী করিয়া দিলেন। অমিনীক্রমার্ম্মার সেই মহাদ্ধা পিতা কর্তৃক দেবগণের বৈদ্যপদে নিয়োজিত ও রেবস্ত ভাইবার, দুম্বার এইরপ কহিলেন, বংল! ভূমিও জণেব লোকের প্রনীয় হইবে। বাহারা অরণাাধি

শ্বাদিশেছ, শত্রুতর ও দ্যুতর এই সকলে ভোমাকে দরণ করিবে, ভাছাদের মহা,বিপংপরশ্বাদ্রীরত হইবে। বাহারা ভোমার পূজা করিবে, ভাছাদিগকে ভূমি সহাই ইইয়া, দেশ, বৃদ্ধি,
ঘণ, রাজা, আরোগ্য ও উরতি প্রদান করিবে। ছারা-সংজ্ঞার পূজ অমহারশা নাবর্ণও ভবিব্যকালে সাবর্ণ নামে অটন মহ হইবেন। সেই প্রভু সাবর্ণ অল্যাপি নেক্স-পৃঠে বাের তপতা করিতেছেন। তলীর লাভা শনৈশ্বর পিভার আঞ্জাক্রমে গ্রহ হইরাছেন। বিলোভম। অর্থার ঔরনে
বে ববীরসী ক্সার জন্ম হয়, ভিনি সর্কলোকপাবনী ভরদিণী শ্রেরী মনুনানদী হইরাছেন। বিনি
সকলের জার্ঠ, সম্প্রতি বাহার স্ষ্টি চলিভেছে, সেই মহাভাগ বৈবন্ধত মহর সবিভার বুরাভ
বর্ণন করিব। বাহারা দেবগণের, বৈবন্ধত মহর, ভদীর আল্লেগণের এবং জগবান ভাররের
এই জন্ম ও মাহান্ধ্য শ্রবণ করে, অথবা পাঠ করে, ভাহার আপভিত আপং দ্রীকৃত ও যশোলাশি
সঞ্চিত ইইরা থাকে। অধিক কি, আনিদেব মহান্ধা মার্তণ্ডের এই মাহান্ধ্য শ্রবণ করেণে, আহোরাত্রক্ত পাপের শান্তি হয়।

ইতি স্থামাহাত্মের ফলশ্রতি নাম অষ্টাচিকশততম অধ্যার।

#### নবাধিকশততম অধ্যায়।

ক্রেট্রিক কহিলেন, ভগবন্! আপনি ভগবান্ ভাগর সম্ভতিসম্ভব এবং তাঁহার মাহাত্মা ও অরপও অতিবিভারপূক্ক সমাগ্রিধানে কীর্তন করিলেন। মুনিসভম! আমি পুনরপি সেই আদিদেব ভাস্করের মাহাত্মা সমাক্রপে শ্রবণ করিতে ইচ্ছা করি। আপনি প্রদন্ধ হইরা, ভাহা বসুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, পূর্ব্বে লোক গকল আরাধনা করিলে, আদিদেব আদিত্য যাহা করিরা-ছিলেন, তাঁহার সেই মাহাত্ম্য কার্ত্তন করিতেছি, শ্রবণ কর। দমের পূর বিখাতে রাজ্যবদ্ধন রাজা হইয়াহিলেন। তিনি রাজা হইয়া, সম্যক্রপে পৃথিবীর পাগন করিরাছিলেন। সেই মহাত্মা ধর্মাম্পারে রাজ্যশাসনে প্রায় ভইলে, তদীর রাষ্ট্র অঞ্চিন ধন ও জনের সহিত বৃদ্ধিত হইতে লাগিল। তাঁহার রাজত্বলৈ পৌর ও জানপদ সকলেই অতীব হুইপুট হইয়া উঠিল এবং সকলেই রাজার জায়, বিভবাদি-বিশিষ্ট হইল। উপসর্গের নাম্মাত্র রহিল না; ব্যাধিরও সম্পর্কার রহিল না; ব্যালান্ত্র ভয়েরও লেশমাত্র রহিল না। অধিক কি, সেই দমপুত্র মহীপতি হইলে, আনার্ষ্টিভয়ও একবারেই দ্র হইয়া গল। তিনি মহাযজ্ঞ সকলের অঞ্চান করিলেন। অধিকিক আনব্রত দান করতে লাগিলেন। যাহা প্রকৃত ধর্মা, তাহার অবিরোধে বিষয়-ভোগে প্রস্ত হইলেন।

এইরপে ধর্মান্নারে প্রজাপানন করিয়া, রাজা করিতে করিতে, তাঁহার সহা বর্ষাহ্র এক দিনের ন্থার, অভিবাহিত হইয়া গেল। দাক্ষিণাভ্যের অধিপতি বিদ্রধের মানিনীনারী নশিনী তাঁহার সহধর্মিনী ১ইলেন। কোন সমরে দেই মাননী বাগীর মন্তকের অভ্যঞ্জনে সমৃদ্যত হইয়া, সম্বেত নরপতিগণের সমক্ষে অঞ্যরাশি মোচন করিলেন। দেই অঞ্পবিশ্ব রাজার গাতে পতিত হইলে, তিনি ভার্যাকে অঞ্যবদনা দশন করিয়া, জিজাগা করিলেন, এ কি ? মানিনী নিংশবে অঞ্পবিশ্ব মোচন করিয়া, রোদন করিছেলেন। তদর্শনে নরপতি এরপ লিজ্ঞাগা করিলেন। মোনিনী তৎকর্ত্ক জিজাগিত হইয়া, তাঁহাকে কোন কথাই বিশিলেন না। রাজা প্রসায় জিজাগা করিলেন। অনন্তর বার বার জিজাগা করিতে লাগিলে, সেই মন্বিনী অ্থন্মা মানিনা কেশ্ডারান্তর-সমৃত্তে প্রতি প্রস্থানত প্রদর্শনপূর্বক রাজাকে কহিলেন, মহায়াল! আপনার কেশ্ডা

ভারাত্তর পাকিয়া খেতবর্ণ হইয়াছে। ইহা কি, দেখুন<sup>®</sup>। ইহাই আমার ছ:খের কারণ হইরাছে। আমি অতি-হত ভাগিনী। রাজা এই কথায় হাস্ত করিলেন। হাস্ত করিয়া, তথায় সমব্তে পৌরগণ ও মহীপালগণ সকলেরই প্রবণগোচরে কহিতে লাগিলেন, অন্নি বিশালাকি। শোকে প্রয়োজন নাই। গুভে ! আর রোপন করিতে হইবে না। সকল জন্তকেই যথাক্রমে জন্য, বৃদ্ধি ও ক্ষম প্রভৃতি বিকার ভোগ করিতে হয়। বরাননে। আমি সমুদায় বেদ অধ্যয়ন করিয়াছি: সহস্র সহস্র বস্তু ও করিয়াছি; ব্রান্ধণদিগকেও অনেক দান করিয়াছি; পুত্র সকণও সমুৎপাদন করিয়াছি; তোমার সহিত মহুবাগণের অভিচ্লভি ভোগ দক্রও ভোগ করিয়াছি; সম্যক্রপে পৃথিবীরও পরিপালন করিয়াছি, শত শত সংগ্রামও জয় করিয়াছি: অভীষ্ট মিত্রগণেরও সহিত আমোদ প্রমোদ ও বন-মধ্যে অনেক বিহার করিয়াছি। ভদ্রে ! এমন কি কার্য্য আছে, যাহা আমি করি নাই। ভবে কেন তুমি, আমার কেল সকল পাকিয়াছে, দেখিয়া, ভয় করিতেছ ? অয়ি কল্যাণি ! আমার কেশ সকল পণিত ও বলি সকল সম্পূর্ণত এবং শরীর শিথিল হউক; তাহাতে ক্ষতিই বা কি 🕈 আমি ত কৃতকৃতা হইয়াছি। কল্যাণি! তুমি আমার মন্তকে যে পণিত দর্শন করিলে, আমি অরণ্য আশ্রয় করিয়া, ইহার চিকিৎদা করিব। দেখ, আমার পূর্ব্ধপুরুষ দকল বাল্যে বাণ্য-ক্রিয়া, কৌগারে কুমারক্রিয়া, যৌবনে যুবক্যোগ্য ক্রিয়া এবং বার্দ্ধক্যে বন আশ্রয় করিয়া-ছিলেন। আমিও তাহাই করিব। অতএব তোমার অশ্রপাতের কোনকপ কারণই দেখিতেছি না। ভদ্রে ! তুমি আর হৃংথ করিও না। তুমি যে পলিত দর্শন করিয়াছ, ইংাতে আমার অভ্য দারেই হেতৃ হইয়াছে। অতএব নিপ্রায়োলন রোদন করিও না।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, মহর্ব! তথন স্মীপ্রর্ত্তী পৌরগণ ও ভূপি গিগণ সকলে রাজ্যবদ্ধনকে প্রণাম করিয়া, শাস্তবাক্যে কহিতে লাগিলেন, মহারাজ! আপনার পত্নীর রোগন করিবার কোন কারণ নাই। কিন্তু আমাদিগকে অথবা সমুদ্র প্রাণিকে কেবল রোগন করিবেত হইবে, দেখিতেছি। নাথ! আপনি যে বনবাদের কথা বলিলেন, তাহা শুনিয়া আমাদের সকলেরই প্রাণ প্রনামুধ্ হইয়াছে। কেন না, আপনি আমাদিগকে বহুয়জেই পালন করিয়াছেন। অতএব আপনি যদি বনে যাম, তাহাহইলে, আমরা সকলেই তথায় গমন করিব। বলিতে কি, আপনি সকলের রক্ষাকর্ত্তা। অতএব আপনি বনে গেলে, সমুদ্র পৃথিবীবাদিগণের যাবতীয় ক্রিয়াহানি হইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই। এই রূপে যদি ধর্মেরই উপযাত হয়, তাহাহইলে, বনবাদে আর গমন করিবেন না। আপনি সপ্ত সহস্র বর্ষ এই পৃথিবীর পালন করিয়াছেন। তজ্জ্য আপনার বে পর্ম পুণা স্থিত হইরাছে, তাহা প্রাব্লোকন কর্নন। মহারাজ! আপনি বনে বাদ করিয়া, যে তপ্যা করিবেন, তাহা রাজ্যপালনের য়োড্শাংশর ও একাংশের থাগ্য হইবে না।

রাজা কহিলেন, আনি সপ্তবর্ষসহস্ত এই পৃথিবী পাগন করিয়াছি। একণে আমার বনবাসের কাল উপ স্বত হইরাছে। আমার অপত্য সকল জনিয়াছে। তাহাদেরও অপত্যসম্ভতি আনি দর্শন করিয়াছি। তাতি অল্পিন নধ্যেই আমার এই সকল দর্শন হইরাছে। অতএব অস্তক আর সহু করিবে না। হে পৌরগণ! আমার মস্তকে যে কেশ্ভার পক হইরাছে, তাহাকেই অস্ত্রা-প্রেক্তি অনাধ্য স্ত্যুর দূত স্বরূপ, জানিবে। অতএব আমি পুত্তকে রাজা করিয়া, স্বয়ং ভোগস্থেধি বিরত হায়া, যাবং ধমদৈনিক সকল সমাগত না হয়, ভাবং বন আশ্রম করিয়া, তপশ্চরণ কবিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর নরপতি অরণ্যগদনে উংস্ক হইরা, দৈবজ্ঞদিগকে পুত্রের রাজ্যাভিষেকার্থ দিন লগ্ন সকল জিজাদা করিলেন। রাজার এই কণা শুনিরা, তাহাদের সকলেরই মন ব্যাকুল হইরা উঠিল। তজ্জ্য, শালে জ্ঞান থাকিলেও, তাহারা দিন, লগ্ন সকলই ভূলিরী গোল। কিছুই ব্ঝিতে না পারিরা, বাস্পাদাদ বচনে রাজাকে কহিল, রাজন্! আপনার এই কথা শুনিরা, আখাদের সমুদ্র জ্ঞান বিনষ্ট হইয়াছে।

অনস্তর অস্তান্ত নগর সকল হইতে, ভূতারাষ্ট্রসমূহ হইতে এবং সেই নগর হইতেও ভূরি ভূরি

বান্ধানত্ত্বি অভ্যাপাগত হইলেন। তাঁহারা সকলে রাজার গোচরে উপনীত হইরা, প্রকশ্বিজ মন্তব্দে বলিতে লাগিলেন, রাজন্। প্রসন্ন হউন ; পূর্বে বেমন আমানিগকে পালন করিয়াছিলেন, সেইরপে পালন করন। মহারাজ। আপনি অরণ্য আশ্রুষ্করিলে, অধিল লোক অবসন্ন হইবে। অত এব এরপ সন্ধান করন, যাহাতে জগৎ অবসন্ন না হয়। বীর ! বলিতে কি, আমন্না বভিনি বাঁচিব, তাতদিন, অল্লাণ্ড এই সিংহাননকে আপ্নাশ্য দেখিতে ইচ্ছা করি না।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই রূপে সেই সকল রাহ্মণ ও অন্তান্ত বিজ্ঞাতিগণ, পৌরগণ, ভূতাগণ, ভূপগণ ও অমাত্যগণ বার্মার বলিতে লাগিলে, তিনি যথন কোনমতেই বনবাদনির্ক্ত্র ভাগ করিলেন না, প্রত্যুত, এই বলিয়া উত্তর দিতে লাগিলেন, অন্তর আর ক্ষমা করিবে না, তথন অমাত্যগণ, ভূত্যগণ, পৌরগণ, বৃদ্ধগণ ও রাহ্মণগণ সকলে সমবেত হইরা, কি করা কর্ত্তবা, তিহিষ্ক মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন। রাজা অতিমাত্র ধার্মিক। সেইজন্ত তাঁহার প্রতি তাঁহানের আহ্বরাগের দীমা ছিল না। বিজ ! ঐ কারনে মন্ত্রণা করিতে করিতে, সকলেই নিশ্চর করিলেন, সকলে মিলিয়া সম্যক্রপে ধানপ্রায়ণ ও সমাহিত হইরা, তপশ্চরণ সহকারে ভগবান্ ভাষরের পূজা করিয়া, এই রাজার আয়ুং প্রার্থনা করা হউক। এইরপে সর্ক্রিদিদ্মতিক্রমে ভাষরের আরাধনা করাই স্থির হইলে, কেহ আপনাদের গেহে সম্যক্ বিধানে অর্থ্য ও উপচারাদি উপহার-সন্তার প্রদানপুরংসর ভাষরের পূজায় প্রবৃত্ত হইলেন। কেহ মৌনী হইয়া, ঋক্ সকল জপ করত তাঁহার আরাধনা করিতে লাগিলেন। অপরেরা যজুং সকল ও অন্তান্তেরা সাম সকল উচ্চারণ করিয়া, তাঁহার সম্ভোষ সাধন আরম্ভ করিলেন। কোন কোন রাহ্মণ আহার পরিহার ও নদীপুলিনে শ্রন

এইরপে তাঁহারা তত্তৎ বিধি আশ্র করিয়া, ভাররের আরাধনার্থ উক্তরূপ বছরূপ মতিনিক্জে প্রবৃত্ত হইলেন। তাঁহারা সকলে সুযোর উপাসনার্থ তাদৃশ অধ্যবসায় অবলম্বন করিলে, সুদামা নামে গন্ধর্ম উপাগত হইয়া, বলিতে লাগিল, হে বিপ্রগণ! ভাররের আরাধনা করাই যদি তোমা-দের অভিলম্বিত হইয়া থাকে, তাহাহইলে, যাহাতে তিনি সন্তই হইবেন, এরপ অফুঠান কর। কামরূপে মহাশৈলের উপরি বিশালনামে সিদ্ধাণনিষ্বৈত এক বন আছে। তোমরা সম্পত্ত তথার গমন কর এবং গমন করিয়া, ভাত্র আরাধনায় সবিশেষ সমাধি সহকারে প্রবৃত্ত হও। ঐ বন, সকলের উপকারী দিদকেতা। তথায় উপাসনা করিলে, সম্দয় কামনা পূর্ণ হইবে।

মার্কণ্ডের ক ইলেন. বিজ্ঞাতিগণ তাঁহার এই কথা গুনিরা, উক্ত কাননে গমন করিরা, ভাষ-রের সেই পরমপবিত্র ও পরমন্দলমন্ন আয়তন দর্শন করিলেন। তথার সেই বিপ্রাদি বর্ণ সকল আহারসংঘমসহকারে আলভ্য ত্যাগ করিরা, রাশি রাশি ধূপ ও প্লোপহার প্রদানপূর্বক ভাষ-রের আরাধনার প্রবৃত্ত ইইলেন। ত্রহ্মনৃ ! বিজ্ঞগণ সমাহিত হইরা, পুল্প ও অন্তলেপনাদি, ধূপ ও গন্ধাদি এবং জপ, হোম, অর ও দীপাদি প্রদানপূর্বক পূলা করিরা, বক্ষ্যমাণ বাব্যে ভাষরের তব করিতে লাগিলেন, যিনি সমুদ্র দানব, যক্ষ, গ্রহ ও জ্যোতিছগণের অপেক্ষা সমধিক-তের্জ্ঞান্ধর সেই রবির শরণ গ্রহণ করিলাম। যিনি নেবগণের ৬ ঈর্যর, যিনি আকাশে থাকিরা, কিরণবিকিরণপূর্বক বহুধা ও অন্তরীক্ষ ব্যাপ্ত করিরা, বিদ্যোতিত করেন, যিনি আকাশে থাকিরা, ফিরণবিকিরণপূর্বক বহুধা ও অন্তরীক্ষ ব্যাপ্ত করিরা, বিদ্যোতিত করেন, যিনি আদিতা ও ভাষর, যিনি সবিত্তা ও দিবাকর, যিনি পূর্য, অর্য্যা, ভায়, হুর্ভায় ও দীপ্রদীধিতি; যিনি চতুর্পান্ত-কালায়ি, যিনি হুল্লেক্ষা ও প্রলন্নন্তগামী, যিনি বোগিগণের ঈর্যর ও অনন্ত, বিনি রক্ত-পীত-শ্বত-কালায়ি, যিনি অধিগণের অন্তর্গামী, বিনি বোগিগণের ঈর্যর ও অনন্ত, বিনি রক্ত-পীত-শ্বত-ক্ষেত্ত-বর্গবিশিন্ত, যিনি অধিগণের অন্তর্গান্ত, সমুদার যজ্ঞে ও সমন্ত দেবগণে অবস্থিত আছেন, বিনি পরম অক্ষয় হুর্নপিও নির্বিলয় অফ্রনপ, যিনি মোকের হার, বাহা অপেকা উৎকৃত্ত কেই নাই, বিনি ছলোরপ অর্থ সকন সহারে আকাশে গমন করিরা থাকেন, যিনি সর্বদাই মেক্ষর প্রপশ্বিণপূর্বক উদিত ও অনন্তন, বিনি বিশের

আর্মরন্থান এবং মিনি চিন্তার ক্ষতীত, আমরা সেই প্রভাকরের শরণাপর হইলাম। বিনি ব্রহ্মা, বিনি মহাদেব, যিনি বিষ্ণু, থিনি প্রজাপতি; যিনি বারু, আকাশ ও জল; যিনি পৃথিবী, পর্কত ও লাগর; যিনি গ্রহ, নক্ষত্র ও চন্তানি জ্যোতিঃ সমুদর; যিনি বানস্পত্যা, বিনি বৃক্ষ ও এবধিবর্গ; বিনি বাক্ত ও অব্যক্ত সমুদর ভূতে ধর্মাধর্মের প্রবর্তক; বাজী, মাহেধরী ও বৈক্ষবী ভত্তেদে বাহার ক্ষরণ তিনপ্রকার, সেই প্রভাকর প্রসম্ম হউন। বিনি জগতের প্রাভ্ত ক্ষমরহিত; এই বিশ্বন্যার বাহার অলম্বরূপ, যিনি জগতের জীবন, সেই ভালর আমাদের প্রতি প্রসম হউন। বাহার এক ভালরম্থি প্রভামগুলে পরিবেটিত বলিরা, সকলেরই ত্রিনীক্ষ্য এবং বাহার দিতীর মৃত্তি পরমসোম্যভাববিশিষ্ট চক্রস্কর্মণ, সেই ভালান্ আমাদের প্রতি প্রসম হউন। বাহার উনিধিত তুই মূর্তি বারা এই বিশ্ব বিনির্মিত ও জ্বীবোমমর হইরাছে, সেই ভগবান্ ভালান্ আমাদের প্রতি প্রসম হউন।

মার্কণের কহিলেন, বিজ্ঞান্তম! তাঁহারা তিন মাদ ভক্তিসহকারে এই প্রকার ন্তব করিরা, সমাক্রপে পূজা করিলে, ভগবান্ ভালর তাঁহাদের প্রতি সম্ভই ইইলেন। তথন তিনি ছনিরীকা ইইলেও, অরণসম প্রভা ধারণ করিরা, মণ্ডল হইতে অবভরণপূর্কক তাঁহাদিগকে দর্শন দান করিলেন। তদ্পনি বাহ্মণ ও অভাভ লোক সকল পূলকভরে উৎকম্পিত ও ভক্তিভরে অবনত হইরা, সেই স্পাইরূপ প্রভাকরকে এই বনিরা প্রণাম করিতে লাগিলেন হে সহত্ররশো। তোমাকে নম্ভার, নম্ভার। তুমি সকলের হেতু। তুমি সকলের কেতু। তুমি সকলের পূজনীর ও শুবনীর। আমাদের সকলকে রক্ষা কর। তুমি সমুদ্র যজ্ঞের আশ্রয়। যোগবিদ্গণ ভোমারই ধ্যান করেন। আমাদের প্রতি প্রস্তু হও।

ইতি ভাগ্নত্ব নাম নবাধিকশততম অধ্যার।

### দশাধিকশত তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন ভগবান্ ভায় প্রসন্ন হইয়া, সকলকেই বিনিলেন, হে বিজাতিবর্গ ! তোমরা আমার নিকট যাহা পাইবার জন্ম অভিপ্রায় করিয়ার, তাহা প্রার্থনা কর। বিপ্র ! এাক্ষণাদি সমবেত ব্যক্তি সকল ভগবান্ ভায়রকে প্রোভাগে বিরাজমান অবলোকন করিয়া, সসম্প্রেপামপূর্বক বিনিতে লাগিলেন, ভগবন্ তিমিরনাশন ! যদি আমাদের ভাজতে প্রসন্ন হইয়া থাকেন, তাহাইলৈ, আমাদের রাজা দশবর্ষনহক্র জীবিত থাকুন। তাঁহার বেন আর রোগ হয় না। তিনি যেন আরাতিদিগকে ভয় করেন। তাঁহার কোব যেন পরিপূর্ণ থাকে। তিনি যেন বির্যাধিন হন। প্ররায়, তিনি যেন দশবর্ষনহক্র বাঁচিয়া থাকেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মহামুনে ! ভগবান্ ভান্ধর, তাহাই হইবে, বলিয়া, তুর্নিরীক্ষা স্থরূপ ধারণ করিলেন । তাহারাও বর লাভ করিয়া, হর্বাবিষ্ট হইয়া, রাজার নিকট সমাগত হইলেন । বিজ ! তাহারা স্থেগ্র নিকট বেরপ বর লাভ করিয়াছিলেন, তৎসমন্ত আব্যোগান্ত রাজার গোচর করিলেন । তাহা শ্রবণ করিয়া, তদীর সহধর্ষিট্ট সেই মানিনী আ্লোদশালিনী হইলেন । কিন্তু রাজা বহকণ ধানিপরায়ণ রহিলেন ৷ তাহাদিগকে কোন কথাই বলিলেন না ৷ অনন্তর মানিনী হর্বপূর্ণ তিতে রাজাকে কহিলেন, মহারাল ! আপনি ভাগাবলে দীর্ঘায়্ হইলেন ৷ মানিনী হর্বসহকারে এই প্রকারে ভর্তারে সভাজন করিলে, তিমি কোন কথাই বলিলেন না ৷ তাহার মন চিত্তাবশে লড়ীভূত হইয়াছিল ৷ তিনি অংধামুধে বলিয়া, ঐয়পে চিন্তা করিতে লাগিলেন ৷ মানিনী পুন্রার তাহারে কহিলেন, মহারাল ! উল্লুক্ষ অভীব ওছ সংঘটনেও ক্রক্ত আপনি আহলান কর্তুত্ব

^ করিতেছেন না ? দেখুন, আগনি অন্য হইতে নীরোগ ও ছিরবৌবন হইরা, দশবর্বসহত্র বাঁচিরা থাকিবেন। তথাপি, কিজন্ম হর্ষিত হইতেছেন না ? অগ্নি পৃথিবীপতে ! উদৃশ প্রমাজ্যদর প্রাপ্ত হইরাও, আপনার অন্তঃকরণ যে কারণে চিন্তাকৃষ্ট হইরাছে, তাহা বলুন।

রাজা কহিলেন, ডাল্রে! আমার আর অভাদয় কি ? কিল্লন্তই বা তুমি আমাকে সন্তাজিত করিতেছ ? ভাবিরা দেখিলে, আমার হংখনহত্তই উপনীত হইয়াছ; ত্বতরাং, কি আর সঙাজন করিবে ? আমি দশবর্ষ সহত্য জীবিত রহিব। তুমি থাকিবে না। পুত্র, পৌত্র, প্রেপৌত্র ও অক্লাক্ত ইইবাদ্ধবিদিগকেও মৃত্যুম্বে নিপতিত দেখিয়া, আমার কি অর হংখ উপস্থিত হইবে ? অতীবস্তক্ত ভ্তাগণ ও মিত্রসমূহের মৃত্যুতেও আমার সর্বাদাই অপার হংখ সংঘটিত হইবে। বাহারা আমার জক্ত শরীর ক্লাও শিরামাত্র সার করিয়া, এইরপ তপস্থা করিলেন, তাইরাপ্ত সুকলে মিরবেন। আমিই কেবল বাঁচিয়া ভোগ করিব। আমাকে কেননা ধিক্। অভএব বরারোহে! আমার ইহা অভাদয় নহে, মহাবিপদ উপস্থিত। তুমি ইহা কিল্লন্ট বা ব্রিভেছ না ? সেইল্লন্ট অদ্য সভালন করিতেছ।

মানিনী কহিলেন, মহারাঞ্ছ আপনি বাহা আজ্ঞা করিতেছেন, তাহা তাহাই; এবিবরে সংশর নাই। কিন্তু আমি ও এই পৌরগণ প্রীতিবশতঃ এবিবরে লক্ষ্য করি নাই। অভএব নরনাথ! এইরপ অবস্থায় কি করা কর্ত্তবা, তাহা চিন্তা করন। তগবান্ রবি প্রসন্ন হইরা, বাহা বলিয়াছেন, তাহা অবস্তাই হইবে, অন্তথা হইবে না। রাজা কহিলেন, পৌর ও ভৃত্যগণ প্রীতিপূর্বক আমার যে উপকার করিয়াছে, আমি তাহার শোধ না করিয়া, কিয়পে ভোগ সকল ভোগ করিব ? অতএব আমিও আজ হইতে পর্বতে গমন করিয়া, নিয়ভচিত্তে ভাত্মর আরাধনায় উল্যুত্ত হইয়া, আহার-পরিহার-প্রঃসর উপাসনা করিব। আমি যেমন ভগবান্ ভাত্মর প্রাণাণং স্থির-যৌবন হইয়া, দশসহপ্রবর্ষ জীবিত থাকিব, কোনরূপ রোগ ভোগ করিব না; অয়ি বরাননে! আমার প্রজা সকল, ভৃত্যবর্গ, তৃমি, কল্লা সকল, পুত্র, পৌত্র ও প্রপৌত্রসমূহ এবং স্থল্পণ সকলেই যদি তাহার প্রসাদে সেইরপ জীবিত থাকে, তাহা হইলেই, আমি রাজা থাকিয়া, আহলাদসহকারে তবিষয় ভোগ করিব। অয়ি মানিনি! ভাহা যদি তিনি না করেন, ভাহা হইলে, সেই পর্বতে থাকিয়াই, নিরাহার হইয়া, যাবজ্জীবিত সংক্ষয় উপাসনা করিব।

মার্ক গুরু কহিলেন, এইরূপ অভিহিতা হইয়া, মানিনী তাহাঁকে কহিলেন, আছো, ভাহাই করন। এই বলিয়া তিনিও স্থামীর সহিত উক্ত পর্কতে গমন করিলেন। নরপতি শীয় ভাগাার সহিত দেই আয়তনে গমন করিয়া, গুলুষানিরত হইয়া, ভাত্ম আরাধনায় প্রস্তুত হইলেন। আহার পরিহার করাতে, কুল হইয়া পড়িলেন। তাহার পত্নীরও তলমূরূপ দলা উপন্থিত হইল। তিনি স্থামীর প্রায় শীত ও আতপ সহু করিয়া, অভীব কঠিন তপশ্চরণ আরম্ভ করিলেন। তিনি প্রায় শীত ও আতপ সহু করিয়া, অভীব কঠিন তপশ্চরণ আরম্ভ করিলেন। তিনি প্রস্তুবা করিবে সহকারে পূজা করিতে প্রস্তুত্ত হইলে, কিঞ্চিদ্ধিক এক বংসরের পর ভগবান্ ভাত্মান প্রীত হইলেন। অরি বিজ্ববোর্ষ। তখন তিনি রাজার অভিলাবাস্ক্রেলে সমভ ভ্তা ও পৌরাদি প্রগণের জন্ম বর প্রদান করিলেন। রাজা বরলাত করিয়া, স্বকীয় পূরে প্রত্যাগত হইলা, আইলাদসহকারে ধর্মাহুসারে প্রস্তাপনন্মরংসল রাজ্য করিতে লাগিলেন এং কোলে তিনি মানিনীর সহিত অনেক বন্ধ করিলেন। দশবর্ষস্ব্যুব্ধ, পৌর, ভ্তা ও পৌর প্রত্তির সহিত হির-বৌরন ও সর্ক্রাই আহলাদে রহিলেন।

ভৃত্তবংশীর প্রমতি তাইার এইপ্রকার চরিত দর্শন করিরা, বিশ্বরাক্ত অদরে এইরপ পাধা শান করিরাছিলেন, অহো! সুর্যাঞ্জির কি শক্তি! বেছেতু, রাণ্যবর্জন নিজের ও স্থান-গণের আয়ুর বর্জন করিরা লইলেন।

বিঞা! ভূষি বাহা বণিরাভিলে, ভবস্থনারে আনিদেব আনিভোর বাহান্তা এই ভোষার নিকট

ৰণিশান। বাদ্ধনেরা এই অম্ভন মাহাত্ম্য সমগ্র প্রবণ ও পাঠ করিলে, স্থা-রাত্র-ক্ষত পাজকু ছইতে বিমৃক্ত হয়। অন্তান্ত লোকেরও এইরপ হইরা থাকে। অধিক্ষ, বে জ্ঞানবান্ ব্যক্তি ইহা ধারণ করে, সে অরোগী হয়, ধনবান্ হয়, আঢ়া হয়, ধী শান্গণের উচ্চবংশে জ্মিরা থাকে এবং প্রমপ্রজ্ঞাশালী হয়। মুনিসভ্রম! ঘাহারা সংসারে সকল বিষয়েই হীন এবং যাহারা বিপদাদিতে আছেয়, তাহারা ত্রিস্ক্রা হর্মের লপ করিলে, পাতক হইতে বিমৃক্ত হয়। রবির দে আয়ভনে এই সময়্প মাহাত্ম্য পাঠ হয়, সেথানে তিনি সতত স্মিহিত থাকেন। কথন প্রিত্যাগ করেন না। অত্রব, ব্রহ্ম। আপনি নিরভিশ্য প্রাকাম হইয়া, রবির এই মাহাত্ম্য মনে ধারণ ও জপক্রিবেন। অসি বিজবর্ষ্য! অতাবশোভনালী, স্বর্ণশৃলী হ্রবিত্রী গাভী প্রদান করিলে, বে ফল লাভ হয়, আয়ুবান্ হইয়া, তিন দিন এই মাহাত্ম প্রবণ করিলেও, সেই প্রাক্ত্র হয়া থাকে।

े ইতি ভাতুমাহাত্মানাম দশাধিকশততম অধ্যায়।

#### একাদশাধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ক্রেটি কে । তুমি আমারে ভক্তিসহকারে যাহাঁর মাহান্থ্য জিজাগা করিরাছিলে, দেই অনাদিনিধন ভগবান্ ভাত্মান্ এব্ধিধপ্রভাববিশিষ্ট। যে সকল যোগী চিত্তের লর্মোগ ভোগ করিরা থাকেন, তিনিই তাঁহাদের পর্মাত্মা। তিনিই সাভ্যোগের ক্ষেত্রজ্ঞ ও ষাগশীলগণের যজ্ঞের। যিনি সপ্তম মন্ত্র্তের অধিপতি, দেই মন্ত্র তাহাঁর পুত্রপে সমৃত্র্ত হন। তাহাঁর কোন বিষয়েই কোনরূপ সন্দেহ ছিল না। ইকার্ক, নাভগ, রিষ্ট, নরিষ্যুত্ত, নাভাগ, পৃষ্ধ, ইহাঁরা দেই মন্ত্র পুত্র। ইহাঁরা সকলেই মহাবলপ্রাক্রান্ত, সকলেই স্বিধ্যাত-কীর্ষিমান্; সকলেই শাস্ত্র ও শত্রপার্গ এবং সকলেই পৃথিবীপালক হইয়াছিলেন।

ক্বতিপ্রবর মহ পুনরার বিশিষ্টতর-পূজ-কামনার মি এবি ফণের যত করিয়াছিংখন। মহামুনে ! যক্ত প্রবৃত্ত হইলে, হোতার অপচারবশতঃ পুজের পরিবর্তে মহুর ইলানামে এক হুমধ্যমা ক্যা সমুংপল্লা হইলেন। মহু তদবস্থা কভাকে দর্শন করিয়া, মিত্রাবরুণের স্তব করিয়া কহিলেন. আপনার প্রসাদে আমার দক্ষাংশেই উৎক্ট একটী পুত্র জন্মিবে, আশা করিয়া, এই যজ্ঞ করিয়া-ছিলাম। কিন্তু পুত্রের পরিবর্তে কতা জামিল। যদি আপনারা প্রদল্প ও বরদানে উদ্যত হইয়া থাকেন, তাহাহইলে, মানার এই কলা আপনাদের প্রদাদে অতিগুণান্বিত পুত্র হউক। তাহাঁরা, তাহাই হইবে, বলিলে, দেই কফাই তৎক্ষণাৎ হৃত্যমনামে বিধ্যাত পুত্র ক্রমণ প্রায়ভূতি হইল। অনস্তর অরণ্যে মুগরা প্রদক্ষে বিচরণদমরে ঈশরের কোপে পতিত হইয়া, সেই ধীমান মহনন্দন পুনরার পূর্ববং জাস্বরূপ লাভ এবং পুরুরবানামক তেজোবি শই চক্রবর্তী পুত্র প্রদেব করিলেন। পুত্র জন্মগ্রহণ করিলে, সুহাম অখনেধনানক নহায়ত করিয়া, পুনরার পুক্ষত প্রাপ্ত ও রাজা হুইলেন। স্কুল্যের তিন পুত্র, উৎকণ, বিনয় ও গয়। ইহাঁরা দকণেই স্কুল্যের পুরুষ অবস্থায় জন্মগ্রহণ করেন। সকলেই মহাবীধা, বাগশীল এবং অতিমাত্র তেজ্পী। তাগার পুরুষ অবস্থায় সমুভূত উল্লোখত তিন পুত্রই ধর্মে নিয়ত চিত্ত ও মহীপতিপদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিলেন। তাহাঁর ল্লী অবস্থার পুরুরবা লক্ষগ্রহণ করেন। তিনি পৃথিবীর ভাগ প্রাপ্ত হন নাই। বেহেতু, তিনি বুশের পুত্র। বশিষ্টের বচনাকুলারে তাহাঁকে প্রতিষ্ঠাননামক পুরোত্তম প্রদান করা হয়। তিনি নেই অতীব মনোহর পুরে রাজা হইলেন।

ইতি বংশামুক্রমনাম একাদশাধিকশতভ্রম অধ্যার।

### দাদশাধিকশত তম অধ্যার।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মহুর প্রথমামে যে পুদ্র ছিলেন, তিনি মুগরাপ্রসঙ্গে অরণ্যে গমন করিরাছিলেন। সেই নির্জ্ঞান গহনে ইভন্তভ: বিচরণ করিতে লাগিলেন। কিছু কোন মুগ প্রাপ্ত হইলেন না। ইভন্তভ: প্রমণ করিতে করিতে, স্থাকিরণে তাপিত এবং ক্পেপাসাতাপে অভিভূতাক হইরা উঠিলেন। তদবস্থার তিনি কোন অগ্নিহোত্রী বাহ্মণের মনোহর হোমধের দর্শন এবং তাহাকে গব্দ মনে করিয়া, শরাঘাত করিগেন। হোমধের তদীয় শরাঘাতে বিদীর্ণ-জন্ম হইয়া, ধরাতলে পতিত হইল। অগ্নিহোত্রীর তপোনিবত ব্হানারী পুদ্র পিভার হোমধেরকে নিপাতিত দর্শন করিয়া, রাজাকে শাপ দিলেন। তাহার নাম বাত্ররা। এ গাভীর চারণার্গ পিতা কর্ত্ব প্রেরিত হইয়াছিলেন। তাহার চিত্তর্তি ক্ষভাবতই কোপ ও অমর্থের প্রাণীন। স্ক্তরাং তিনি ক্রই হইয়া উঠিলেন। তরিবন্ধন বিগণিত ব্রেদ্যলিলে তদীয় লোচন্ম্পূল লোল ও আবিল ভবিপের হইল। রাজা পৃষ্ধ মুনিপ্তাকে রোষাবিত্ত কর্দন করিয়া, বলিতে লাগিলেন, প্রসন্ধ ইউন। শুদ্রের ভার, কিজন্ত রোষবন্ধ ইইতেছেন প্রাপনি যেনন বিশিষ্ট ব্রাহ্মণবংশে জন্মিয়াও, শুদ্রের ভার, বোষ প্রকাশ করিতেছেন, ক্রিয় বা বৈশ্য কাহাকেই তেমন ক্রমণ ভবিতে জার আর্ম করিতে পারে না।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা এইপ্রকার নির্ভংসনা করিলে, ঋষিকুমার তাহাঁকে শাপ দিয়া कहिर्तिन, राजानारक भूम हरेरा हरेरा। जुनि श्रुक्त श्रमुशार रा रात प्रभावन कतिवाह, जाहा আর প্রক্রিত হইবে না, ভূগিরা বাইবে। বেছেতু তুমি আমার গুরুর এই হোমধেলকে शि: विक क्रिल, तिरुट्क, ट्यामात्र खेलन चित्र। अपि धरेलन भान भित्न, ताका क्रमीत শাপে পরিপীড়িত ও কুম হইয়া উঠিলেন এবং প্রতিশাপপ্রদানে সমুদ্যত হইয়া, পাণি ছারা জলগ্রহণ করিলেন। তথন ঋষিপুত্রও রাজার বিনাশার্থ রোষপরবল হইলেন। ঐ সম্বে তদীয় পিতা মরাযুক্ত মাগ্যন করিয়া, তাহাঁকে প্রতিবেধ করত কহিলেন, বৎস ! কোপ সর্কপ্রকার উন্নতিরই প্রম শক্র। অত্তর্থ উহা একবারেই প্রিহার কর। শুমুই বিজাতিগণের ঐতিক 💩 পারলোকিক ভন্ন সম্পাদন করিয়া থাকে। কোপ তপ্তার বিনাশ করে, কোপ আযুর কর करत्र, त्काल खारनत्र शनि करत्र अवर त्काल वर्ष खः कतित्रा थारक । अधिक कि, त्कांश्मीन হইলে, অর্থপাত হয় না এবং ক্রোধশীল হইলে, স্লথের হেতৃভূত কামলাভও হয় না। অভএব वाका यि वित्यवक्षां कानियां अ, त्यामध्य वध कविया शास्त्र, छाराव्हेल अ, जाशनात विछ-বুদ্ধির বশরণ হইয়া, ইহাঁর প্রতি দরা করা যুক্তিযুক্ত। আর, যদি না জানিয়াই, এই ধেয়া বধ क्तिया शांत्कन, जाहाहहेतन, किंत्राल नांभाशांग हटेल भारतन ? त्याहरू, टेशांत यान भाभ नाहे। আপনার হিতলাভের ইচ্ছা মাছে, অথচ লোকদিগকে ব্যাহত করিয়া থাকে; এরপ বাঞির জ্ঞান প্রজ্ঞের হইরা গিয়াছে। দরালুদিগের কর্ত্তবা, তাদৃশ গোককে দরা করেন। আবর পণ্ডি-ভেরা যদি অজ্ঞানকত পাপের দণ্ড করেন, ভাহাহইলে, আমার মতে সেরপ পাণ্ডিতগণ অপেঞা অপণ্ডিভগ্ন শতগুনে শ্রেষ্ঠ। অতএব বংস ! রাজাকে অদ্য শাপ দেওরা তোমার উচিত হর নাই। দেখ, এই ধেয়ু আপনার কর্মবলেই কট্যুত্য লাভ করিয়া, পঙিতা হইরাছে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তখন পৃষধ মুনির প্রকে আনম্র কর্বে প্রণাম করিয়া, কহিলেন, প্রগন্ন ইউন, আনি একাণ্ডই না জানিয়া, এই ধেছকে বধ করিয়াছি। মুনি! আনি গবর জ্ঞান করিয়াই, জ্ঞানবল্ডঃ আপুনার এই হোমধেছকে বিনাশ করিয়াছি। অতএব আপুনি প্রগন্ন হউন।

ৰ্ষবিপুত্ৰ কৃহিলেন, মহারাজ ! আমি আজন কণন নিখা কণা বলি নাই। মহাভাগ !

ব্দা আমার ক্রোধ কথনই অন্তথা হইবে না। স্ত্তরাং রাজন্। আমি এই শাপের অন্তথা-করণে সমর্থ হইব না। তবে, আমি তোমাকে বে বিতীয় শাপ দানে উদ্যত হইরাছিলাম, তাহা প্রতিসংহার করিলাম। তিনি এইপ্রাকার কহিলে, পিতা সেই বাদক পুরকে সমন্তিব্যাহারে লইয়া, অকীয় আশ্রমে গমন করিলেন। রাজা পুরপ্ত পুত্ত হইলেন।

ইতি প্ৰধ্ৰের শূদ্ৰতাপ্ৰাপ্তি নাম ঘাদশাধিকশততম অধ্যায়।

#### ত্রোদশাধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, কর্ষের সাভশত পুর। তাহারা কার্য নামে বিখাত। তাহারা সক্রেই শূর ও সকলেই বীর। তাহাদের হইতে অভাভ সহস্র সহস্র পুর্পৌরাদির জন্ম হয়। নিষ্টের পুর নাভাগ। তিনি প্রথম-যৌবনেশপার্পণ করিয়া, অতীব-স্থমনোহরা বৈশ্রতন্ত্রাকে দর্শন করিলেন। তাহাকে দেখিবামাত্র তদীর মন মদনশরে আক্ষিপ্ত হইয়া উঠিল। তথন তিনি দীর্ঘনিখাদ-মাত্র-পরায়ণ হইলেন। অনস্তর তিনি সেই কভার পিতার নিকট গমন করিয়া, তাহাকে প্রার্থনা করিলেন। তাঁহার মনোর্ভি অনক্রের পরাধীন হইয়াছিল। ঐ কভার পিতা নাভাগের পিতাকে ভর করিছেন। তজ্জভ ক্রতাঞ্জলিপ্টে নাভাগকে বিনয়াবনত বচনে কহিলেন, আপনারা রাজা; আমরা ভ্রা। বিশেষতঃ, আপনারা বরদাতা। অতএব আমরা কথনই আপনানার বরদাতা। অতএব আমরা কথনই আপনানার সমকক নহি। তবে আপনি কির্পণে আমাদের সহিত সম্বর্ধননে অভিলাধী হইয়াছেন ?

রাজপুত্র কহিলেন, কাম ও মোহাদি বারাই মায়্য-দেহের সাম্য বিহিত হইয়া থাকে। কালসহকারে মায়্রের শরীরে দেই কাম মোহাদির যোজনা হয় এবং তদ্বারা তাহার উপকারও হইয়া থাকে। পরক্ষার ভিন্ন জাতি হইলেও, সাধুগণের মধ্যে পরক্ষার উপজীব্যতা দেখিতে পাওয়া বায়। কালসহকারে অযোগ্য বস্তুরও যোগ্যতা উপপন্ন হয়। আবার যোগ্য বস্তুরও আযোগ্যতা প্রাপ্ত হইয়া থাকে। এইরূপে যোগ্যতা একমাত্র কালেরই আয়ত্ত। ইভ্যাদি কারণেই আপনার এই তনয়া আমার অভিমতা হইয়াছেন। অতএব আমাকে সম্প্রদান কয়ন। স্প্রান্দান বা করিলে, দেখিবেন, আমার দেহের পতন হইয়াছে।

বৈশ্র কহিলেন, আমরা উভয়েই সমানরপ পরাধীন। অতএব আপনি স্বকীর পিতার সমু-মতি লইয়া, ইহাকে গ্রহণ করুন; আমি দান করিতেছি।

রাজপুত্র কহিলেন, সভ্য বটে; যাহাদের মাধার উপর গুরু আছে, ভাহাদের কর্ত্ব্য, সর্কার্য্যেই উাহাদের অধুমতি গ্রহণ করিবে। কিন্তু ঈদৃশ অকার্য্য সকলে কথন তাইাদের আদেশ লওয়া যাইতে পারে না। দেখুন, কাম কথার আগাপন এবং গুরুগণের প্রবণ, এই উভরে বহল অন্তর; স্থভরাং ঈদৃশ মন্মধ্বিষয় ভাহাদের কর্ণগোচর করা সর্কাণ যুক্তিবিক্ল। ভবে, অভাত্ত বিষয় ভাহাদিগকে ধিজ্ঞানা করা মন্ত্র্মাত্রেরই কর্ত্ব্য বটে।

বৈশ্র কহিল, আজো, স্বীকার করিলাম, গুরুকে জিজ্ঞানা করিতে গেলে, আপনার পশে ইহা স্থরানাপ হইবে। কিন্তু সামার পশে ইহা ঐরপ কামকথা হইবে না। অভএব আমিই প্রিজ্ঞান করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইরূপ অভিহিত হইলে, রাজপুত্র মৌনী হইরা রহিলেন। তথন বৈষ্ঠ রাজপুত্রের পিতাকে ডার্হার অভিপ্রেত বিষয় যথায়থ নিবেদন করিলেন। অনস্তর রাজা আগনার পুত্রকে আনমন করিয়া, শুচীকপ্রমুখ বিজোৱম ও অঞান্ত বারুণদিগকে বৈজ্ঞের কথিত বিষয় নিবেরন করিরা, কহিতে লাগিলেন, হে বিজ্ञনন্ত্রণ আমি এইরপ অবস্থার উপনীত হইয়াছি।
 অতএব বাহা কর্ত্তবা, তদত্বপ আদেশ করিতে আঞা হউক।

খৰিগণ কহিলেন, রাজপুর! আপনার যদি এই বৈশুক্সাতে অনুরাগ হইরা থাকে. তাহাই ধর্ম বিদিয়া গণা হইবে। কিন্তু তাহা স্তারানুসারে হ ৭য়া আবশ্রক; ডোমাকে প্রথমে মুর্নাভিষিক রাজার কন্তার পাণিগ্রহণ করিতে হইবে। পার এই বৈশ্রক্তা ডোমার ভাষা। ইইবেন। এই বিধানে ইইাকে উপভোগ করিলে, কোন দোব হইবেন। আপনি যদি এই বাণিকাকে হরণ করেন, তাহাহইবেন, আপনার উৎক্ত জাতি এই ইইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, সেই দকল মহায়া এইরপ বাক্য প্রয়োগ করিকে রালকুমার তাহা প্রাক্ত্রনা করিরাই, তংক্ষণে তথা হইতে বিনিজ্ঞান্ত হইলেন এবং দেই কল্পাকে গ্রহণ ও আযুধ্ধ উল্পাচ করিরা, কহিতে লালিলেন, আমি রাক্ষন বিবাহের অনুসরণপ্রসক্তে এই বৈশুক্ত্যাকে হরণ করিলাম। যাহার সামর্থ্য আচে, ক্ষে আনিরা, ইহাকে মোচন করুক। তথন বৈশ্র কভাকে গ্রহণ করিতে দেখিয়া, সম্বরে রালপুত্রের পিতাকে গিয়া, ত্রাণ করন, বলিয়া শরণপ্রহণ করিলেন। রালা কুর হইয়া, আপনার স্থবিপুল বাহিনীকে আদেশ করিলেন, তোমরা এই ধর্মান্থক ছট্ট নাভাগকে বধ কর, বধ কর। তথন দৈল্ল সকল রালপুত্রের সহিত্য বুদ্ধে প্রস্তুত্ত ইবল। রালপুত্র শিকিতাল ছিলেন। শল্লালাতে ভাহাদের অধিকাংশকেই নিপাতিত করিলেন। ভূপতি, স্থার প্রক্তিক করিলেন। ভ্পতি, প্রস্তুত্ত করিবার জন্ত গমন করিলেন। তথন পিতাপুত্র যুদ্ধ উপস্থিত হইলে, পুত্র পিতাকে শল্প ও অল্প বারা অতিক্রম করিলেন।

ঐ সময়ে অন্তরীক্ষ হইতে পরিপ্রাট মুনি সহসা আগমন করিয়া, রাজাকে কহিলেন, যুদ্ধ হইতে বিরত ছউন। মহাভাগ! আগনার মহা থা পুত্রের ধর্ম নাই ইইয়াছে। আপনারও বৈশ্রের সহিত যুদ্ধ করা ধর্মসঙ্গত ইইতেছে না। ত্রাহ্মণ প্রথমে প্রাহ্মণীর পাণিগ্রহণ করিয়া, পরে সম্পার বর্বে দারপরিপ্রাহ্ করিলে, কথন তাহাঁর প্রাহ্মণার হানি ইইতে পারে না। সেইয়প, ক্ষান্ত্রির প্রথমে ক্ষান্ত্রম্বতার পাণিপীড়ন করিয়া, পরে অক্সান্ত বর্বে মিলিত হইলে, অধর্ম হইতে পরিচ্যুত হন না। বৈশ্রও প্রথমে বৈশ্রকে গ্রহণ করিয়া, পশ্রে ক্ষান্ত্রমান্তরা কলার পাণিপীড়ন করিলে, বৈশ্রক্ত হয় না। ইহাই ক্রমান্ত্রমার বাবছা। নৃপ! প্রাহ্মণ, ক্ষান্ত্রমান্তর ক্ষান্তর বর্বার পাণিপীড়ন করিলেই, পভিত ইইয়া থাকে। ফলতঃ, লোকে বর্বসংঘােগ না করিয়া, অন্তর্ভরার পাণিপীড়ন করিলেই, পভিত ইইয়া থাকে। ফলতঃ, লোকে বর্বসংঘােগ না করিয়া, বে বে হীনা রম্বীর পাণিগ্রহণ করে, কথনই তম্বন্ত্রাণী ইইডে পারে না। আপনার এই মন্দম্ভি পুত্র এই কারণে বৈশ্রম্ব প্রাপ্ত ইইয়াছে। কিন্তু আপনি ক্ষান্ত্রমান্ত বার ইহার অধিকার নীই। নৃপনন্তন। বে কারণে এইরপ যুদ্ধ হইতে পারে, আমানের ড হা বিদিতই ইইডেছে না। অত্যব বন্ধ ইতে বিরত হও।

ইতি নাভাগচরিত নাম অয়োদশাধিকশততম অধ্যায় ৷

# চতুর্দ্দশাধিকশক্তম অধ্যায় ।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন রাজা পুল্রের সহিত ব্ছে নিবৃত্ত হইলেন। তাহাঁর পুত্র নাডার বৈশ্বতনরার পাণিগ্রহণ করিলেন। অনন্তর তিনি বৈগছ প্রাপ্ত হইরা, রাজার পোচরে আগমক পুর্বাক ক্ছিলেন, মহারাজ। আমাকে যাহা করিতে হইবে, আদেশ করন। রালা কহিলেন, বাত্রব প্রভৃতি তপশ্বিগণ ধর্মাবিকরণে নিযুক্ত আছেন। কি কর্ম করিলে, ইহার ধর্মলাচ হইতে পারেন, সকলে বলুন। তুমিও তলভ্রণ অভ্ঠান কর।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর মুনিগণ ও সভাসদ্বর্গ সকলেই কহিলেন, পাওপালা, কবি ও বাণিজাই ইহাঁর পরম ধর্ম। রাজনন্ধন নিজ ধর্ম হইতে পরিচ্যত হইরাছিলেন। স্বভরাং উরিখিত ধর্মবানিগণের আদেশানুরপ ধর্মাস্থলানে প্রবৃত্ত হইলান। তাহাঁর উরুসে ভনন্ধন নামে এক পুত্র জন্মগ্রহণ করিলেন। জননী তাহাকে আনেশ করিলেন, বৎস! তুমি গোপাল অর্থাৎ পৃথিবীপাল হও। তিনি জননী কর্ত্বক এইরপে নিযুক্ত হইরা, তাহাঁকে প্রনিপাত করিরা, হিমালবপ্র্যতিনিবাসী রাজর্ষি নৃপের নিকটে সমাগত হইলেন এবং যথাবিধি তদীয় পদহর বন্ধনা ও তাহারে প্রণাম করিরা, কহিতে লাগিলেন, ভগবন! জননী আমাকে আজা করিরাছেন, তুমি গোপাল হও। স্থতরাং আমাকে পৃথিবী পালন করিতে হইবে। কিন্তু, কিন্তুপে দেই পৃথিবীর সম্মতি পাওয়া বাইতে পারে ? পৃথিবী স্বীকার করিলেই, আমি তাহাঁকে পালন করিবে। আমার সেই পৃথিবী বলবান্ লায়াদগণ আক্রমণ করিরাছে। উহা এখন তাহাদেরই করগত। আমি আপনার একান্ত ভক্ত ও অনুগত। অভ্যুব্ আপনার প্রসাদাং যাহাতে সেই পৃথিবী প্রাপ্ত হইতে পারি, তদমুরূপ আদেশ কর্ণন; আমি ভাহা করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ত্রহান ! তথন রাজ্ধি নীপ মহাত্মা ভনন্দনকে যাবতীয় অন্তগ্রাম নিরব-শেবে প্রদান করিদেন। ভনন্দন অস্ত্রবিদ্যা প্রাপ্ত হইয়া, মহাত্মা নীপের আদেশারুদারে বস্তরাত প্রভৃতি পিতৃব্যপুল্রগণের স্কাশে স্মাগত হইলেন এবং পিতৃপৈতামহোটিত রাজ্যার্দ্ধ যাক্সা করি-লেন। তাহাঁরা কহিলেন, তুমি বৈখের পুল। কিরপে মেদিনী ভোগ করিবে ? ভনক্ষন আবাত্মবংশসমুদ্ধ সেই বহুরাতাদির সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইলেন। ভাহাঁরা কুদ্ধ হইরা, রুভাত্র ভনন্দনের উপরি অস্ত্র সকল বর্ষণ করিতে লাগিলেন তিনি তাঁহাদের সৈহাদিগকে অন্তপ্রহারে কত বিক্ষত ও ধর্মাযুদ্ধে তাঁহাদের সকলকেই পরাজিত করিয়া, পূণিবী আত্মসাৎ করিশেন। অনস্তর তিনি শত্তু জন্ম করিরা, সমুদর পৃথিবী ও রাজ্য পিতাকে নিবেদন করিলে, তাঁহার পিতা গ্রহণ করিবেন না। ভার্যার সন্মুখে পুত্রকে বলিতে লাগিলেন, ভনলন! ভোমার পূর্বপুরুষগণ এই রাল্য করিলা গিরাছেন। ইহা একণে ভোমার। ভূমিই ইহা পালন কর। আমি পুর্বেরাল্য क्ति नाहै। अनामर्था डेर्हांत कांत्रण नटर । आमि देवज्ञ आश ररेत्राकि। निजा आमारक ताजा-शांतान कारमण करत्रन नारे। रुग्टे कांत्र एके ताका हरे नारे। आभि देशकेशा शतिश्रह कतित्रा. পিতার অস্মীতিভালন হইয়ািলাম। একেত, রাজা সহজেই যাবৎ-প্রলয় পুণ্যলোকভোগে সমর্থ হন না। তাহার উপর যদি আমি পিতার আজা উরুজ্বন করিয়া, পুনরার পৃথিবী পালন পালন করি, তাহা হইলে, শত শত করে । নিশুরই আমার মোক্ষলাত হইবে না। বিশেষতঃ, আমি মানী। ভোমার বাছনির্জিত রাজাভোগ করা আমার যুক্তিযুক্ত নহে। ইহার উপর আমি আবার নিশেষ্টেও দুর্বল হইয়া পড়িয়াছি। অতএব তুমিই রাজ্য কর, অপবা জ্ঞাতিদিগকে প্রত্যর্পণ কর। আমি তোমার পিতা। আমার আজা পালন করা বেমন প্রশন্ত, পৃথিবী পালন করা সেরপ নহে।

মার্কণ্ডের কহিলেন এই কণায় তলীয় ভার্যা ভাবিনী স্থপ্তা উচ্চৈ:ম্বরে হাস্ত করিরা, তাহাঁকে প্রত্যুত্তর করিলেন, ভূপ! ভূমি এই স্থেমমূদ্ধ রাজা গ্রহণ কর। কেননা, ভূমি বৈশ্ব নহ; আমিও বৈশুক্লে জন্মগ্রহণ করি নাই। ভূমি কজির; আমিও সেইরপ ক্ষতিরবংশে সমূদ্ধতা হইরাছি। পূর্বে স্থান্দব নামে বিখ্যাত এক রাজা ছিলেন। ধুমান্দের পূল্ল লামে বিখ্যাত এক রাজা ছিলেন। ধুমান্দের পূল্ল লামে বিখ্যাত এক রাজা ছিলেন। ধুমান্দের পূল্ল লাম তাহার নথা হইরাছিলেন। রাজন্ । মধুমান সমাগত হইলে, রাজা স্থানে পত্নীগণের প্রত্যাহারে আম্বকাননে গমন করিলেন। তথাম তিনি উল্লিখিত পত্নীগণের ও স্থার সহিত স্থানিত হইরা, অনেক্রিধ পান ভোলন সমাধানাতে প্রত্রিণীর তীরে বিচরণ

করিকে করিতে, চ্যবনপুত্র প্রমন্তর পরমন্তরারিশী পার্ধিবনন্দিনী সহধ্যিশীকে অবলোকন করিবেন। তলীর সধা ছর্গতি নল রাজার সমক্ষেই তাঁহাকে গ্রহণ করিব। তাবিনী বার্যার চহিতে লাগিল, আমাকে রকা করুন, রকা করুন। তাহাঁর এই টিংকারশক প্রবণ করিবাই, তলীর পতি প্রমতি, এ কি, বণিতে বণিতে, ফ্রেডগদসঞ্চারে আগমন ও অবলোকন করিবিন, রাজা স্থাবে তথার রহিরাছেন এবং অতীব-চ্রাত্মা নল তলীর পত্নীকে গ্রহণ করিবাছে। তদ্দর্শনে প্রমতি রাজাকে কহিলেন, আপনি ইহাকে নিবৃত্ত করুন। দেখুন, আপনি রাজাও পাসনকর্তা। এই নল আপনার সমক্ষে স্কৃদ্ধ বিগহিত অনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত হইরাছে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, প্রামতি অতিমাত্র ব্যাকৃল হইরাছিলেন। রাজা ভাইার কথা ভনিরা, নলের প্রান্তি গোরববশতঃ কহিলেন, আমি বৈশ্র ৷ ক্ষত্রির নহি। অতএব আপনি ভার্যার পরিত্রাণার্থ অন্ত ক্রিরের নিকট গমন করন। রাজা আপনাকে বৈশ্র বিশিরা, পরিচন্ন দিলে, প্রমতি ক্র হইরা, তেজ বান্ধা বেন নিংশেবে দগ্ধ করিরা, প্রত্যুত্তর করিলেন, আপনি বৈশ্রই বটেন। কেননা, ক্ষত হইতে রক্ষা করিলেই, ক্ষত্রির হর। পাছে কেহ ব্যাকৃল হইরা চীৎকার করে, এইজগুই ক্ষত্রিরেরা শস্ত্র ধারণ করিরা থাকে। ভোমার ভাহা আলী। স্মতরাং, ভমি ক্ষত্রির নহ। তুমি কুলারার বৈশ্রই হইবে।

ইতি প্রমতিশাপ নাম চতুর্দ্বশাধিকশততম অধ্যার।

#### পঞ্চশাধিকশত্তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিজ ! ভৃগুবংশীর প্রমতি ক্রোধভরে রাজারে এইরূপ শাপ দিরা, পুনরার ক্রোধানলে ক্রৈলোক্য যেন দগ্ধ করিরা, নলকে কহিলেন, বেছেড্, ভূমি মদোক্ষত হইরা,
আমার এই আশ্রমে মদীয় ভার্যাক্ষে বলপুর্বক গ্রহণ করিলে, সেই হেড্ অচিরাৎ ভন্তীভূত হও।
এই প্রকার বাক্য প্রয়োগমাত্রেই তৎক্ষণে নলের শরীর হইতে হুডাশন প্রান্তভূতি হইরা, ভাহাকে
ভন্তপ্রপ্রপরিণত করিল।

রাজা অংদেব মহর্ষির এবস্থি প্রভাব দর্শনে মদহীন হইরা, প্রণামনম্রতাপুর:সর কহিতে লাগিলেন, ক্ষমা কফন, ক্ষমা কফন। ভগবন্! আমি স্থরাপানমদে আকুল হইরাছিলাম। অতএব আমাকে বাহা বলিরাছেন, তাহা ক্ষমা কফন; প্রসন্ন হউন। এই শাপ প্রতিসংহার ক্ষন।

রাহ্মা এই প্রকারে প্রদন্ধ করিলে এবং নল দগ্ধ হইলে, ভ্রুবংশীর প্রমৃতি কোপহীন হইরা, ভ্রুক চিত্তে কুটুলেন. আমি যাহা বলিরাছি, তাহা কথনই মিথ্যা হইবে না। তবে, বখন প্রগন্ধ হইরাছি, তখন বিশেষ অন্ত্র্যুহ করিব। তোমাকে বৈগ্রুছাতীর হইতে হইবে, ইহাতে সংশর নাই। কিন্তু তুমি দেই জন্মই আন্ত প্ররায় করির হইবে। যে সমরে কোন করির বলপূর্বক তোমার কন্তাকে গ্রহণ করিবে, তৎকালে ভূমি ক্রিয় হইবে। রাজন্! আমার পিতা ক্লেব এইরপে বৈশ্রুহইরাছিলেন। মহাচাগ! এক্ষণে আমি কে, তাহার সবিশেষ বলিতেছি, প্রবণ কর। পূর্বে গন্ধমাদনে সুর্থ নামে রাজবি ছিলেন। তিনি অরণ্য আশ্রুরপূর্বক আহার সংবম ও আমিকি ত্যাপ করিরা, তপ্যী হইরাছিলেন। তথার প্রেন্স্থ্রেই কোন শারিকাকে দর্শন করিরা, সেইন্মহালার অন্তরে বেখন করণার সক্ষার হইল, তেমনি মৃদ্ধা আসিরা, তাহাঁকে আক্রন করিব। অন্তর্যু বৃদ্ধার অন্তরে বেখন করণার সক্ষার হইল, তেমনি মৃদ্ধা আসিরা, তাহাঁকে আক্রন করিব। আন্তর্যু বৃদ্ধার অন্তর্যুর অবসানে আমি তাহাঁর শরীর হইতে সমুৎপর হইলাম। ভন্দলন অন্তর্যুব্ধে শ্লেহের

পঞ্চর হওয়াতে, তিনি মানারে গ্রহণ করিলেন। অনস্তর তিনি কহিলেন, বেহেড়ু, আমি রুপাজি-ভূত হওয়াতে, আমার এই মায়জা জন্মগ্রহণ করিলেন, সেইহেড়ু, ইহার নাম রুপাবতী হইবে।

অমন্তর পামি তাহাঁর আশ্রমে দিন দিন বর্জমানা হইতে লাগিলাম এবং অনুরূপা স্বীগণের সমভিব্যাহারে বনে বনে বিচরণ করিতে আরম্ভ করিলাম। অগস্ত্যের লাভা সাক্ষাম অগস্ত্যের জ্ঞার বিধ্যাত। তিনি বনমধ্যে বস্তু কন্মৃশাদি সংগ্রহ করিতেভিলেন। স্বীগণ তাহাঁর রোষ উৎপাদন করিলে, তিনি আমারে শাপ দিয়া কহিলেন, ধেহেতু, তুনি আমারে বৈশ্ব বিদ্যাল হইবে। তিনি শাপ দিলে, আমি কহিশাম বিজ্ঞান্তম । আমি আপনার নিকট অপরাধিনী হই নাই। অপরের অপরাধে কিজ্ঞ আমাকে শাপ দিলেন ?

ঋষি কহিলেন, হুটের সংসর্গে থাকিলে, অতুইকেও হুট হইতে হয়। দেখ, বিন্দুমাত্র হ্বরানিপতিত হইলে, পঞ্গব্যঘটাও দ্বিত হইয়া থাকে। তবে, তুমি স্থামাকে, নিজে নিরপরাধিনী বিশরা, প্রাণিপাতপূর্বক প্রদন্ধ করিয়াছ, দেইহেড়, তোমাকে যে অন্থগ্রহ করিতেছি, শ্রবণ কর। বৈশ্রঘোনিতে জন্ম করিয়া, তুমি যথন প্রকে রাজ্যপালনার্থ প্রেরণ করিবে, দেই সময়ে জাতিন্দরা হইবে এই সময়য় স্থামীর সহিত ক্রজাতি প্রাপ্ত হইয়া, দিব্য ভোগ সকল লাভ করিবে। অত এব তান কর; ভোমার আর কোন ভয় নাই। রাজেন্দ্র! পূর্বের সেই মহর্ষি জামাকে এইরপে অভিশাপ দিয়াছিলেন। আমার পিতাও পূর্বের প্রেমিটকর্তৃক সেইরপে অভিশপ্ত হন। অত এব, রাজন্। তুমি বৈশ্র নহ। তোমার পিতাও বৈশ্র নহেন। স্বতরাং আমিও আপুনি, জাময়া কেইই দোষগ্রস্ত নহি। অত এব আপনি আমার সংসর্গে কিরণে পভিত হইবেন ?

ইতি নাভাগচরিত নাম পঞ্চদশাধিকশততম অধ্যার।

### ষোড়শাধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা পত্নী ও পুত্র উভরের এই কণা শ্রবণ করিরা, পুনরার তাঁহাদের ছই জনকেই বলিতে লাগিলেন, আমি পিতার আদেশক্রমে যে রাজ্য ত্যাগ করিয়াছি, পুনরার তাহা গ্রহণ করিব না। অভএব রূপা কথার প্রয়োজন নাই; তুমিও আর আত্মাকে কিজ্য আকর্ষণ করিতেছ ? আমি এই বৈশ্বস্থতি অবগন্ধন করিয়াছি, তোমাকে কর প্রদান করিব। তৃষি ইছোমুগারে এই অংশেষ রাজ্য ভোগ কর, না হয়, ছাড়িয়া দাও।

রাজনন্দন ভনন্দন পিতাকর্জ্ক এইরপ উক্ত হইয়া, দারপরিগ্রহপ্র:সর ধর্মান্থসারে রাল্যশাসনে প্রাবৃত্ত হইলেন। বিজ ! তাহাঁর চক্র সম্দায় পৃথিবীতে অব্যাহত হইয়া উঠিল। ভূপগণ
সকলেই তাহাঁর বশুতা স্বীকার করিলেন। কাহারই আর অধর্মে মন রহিল না। তিনি বিধিবং
যক্ত করিলেন; সমাক্রণে পৃথিবীশাসন করিতে লাগিলেন। তিনিই পৃথিবীর একমাত্র ভর্তা
হইলেন। ভাঁহার শাসন সমুদায় মেনিনীতে ব্যাপ্ত হইয়া উঠিল।

তাহার এক পুত্র ক্ষিল। তাহার নাম বৎসপ্রী। সেই মহাত্মা গুণসমূহে পিতাকেও অতিক্রম করিলেন। বিল্রখনন্দিনী সৌনন্দা তাহার সহধর্মিণী হইলেন। তিনি বেমন মহাভাগা; সেইরপ পতিব্রতা। বংসপ্রী দেবরাল ইক্রের শত্র দৈত্যরাল কুল্ভকে বধ করিরা, ত্মকীয় বীর্ষ্যে তাহাকে প্রাপ্ত ইয়াছিলেন।

ক্রেটি কি কহিলেন, ভগরুন। বংগ শ্রী কিরপে কুজ্ভকে নিধন করিরা, এ পদ্ধীকে প্রাপ্ত হন, প্রসমন্তিতে সেই আধান কীর্ত্তন করুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিদ্রথনামে পৃথিবীতে খ্যাতকীর্ত্তি এক রাজা ছিলেন। তাঁহার ছই
পুত্র জন্মগ্রহণ করে; স্থনীতি ও স্থমতি। একদা সেই বিদ্রপ অরণ্য মৃগরা করিতে গিরা,
পৃথিবীর মুখের ভায়, উদগত স্থবিশাল গর্ত্ত দর্শন করিলেন। তদশনে চিন্তা করিতে লাগিলেন,
ইহা কি ? বোধ হর, এই অতীব ভয়কর গর্ত্ত পাতালবিবর হইবে। এইরপ চিন্তা করিতেছেন,
এমন সময়ে সেই বিজন বনে অবলোকন করিলেন, স্থব্তনামে তপন্থী বাদ্ধণ উপাগত হইলেন।
রাজা তাঁহাকে স্বিন্ময়ে জিজ্ঞাণা করিলেন, ইহা কি ? এই অতিগভীর গর্ত্তে অবনির অন্তর্গত
উদর দেখা থাইতেছে।

अधि कहिलान, महीशाल । मही छल यांहा किছू आहि, बाकांत कर्खता, छৎममछ विभिन्न हरमन। অত এব, ইহা কি, আপনি জালিতেছেন না ? র্যাতলে অতীবপ্রচ ওপ্রকৃতি, নিরতিশর-মহাবীর্যা দানব বাদ করে। দৈ পৃথিবীকে জ্ঞিত করিয়া পাকে। এইজ্ঞ তাংার নাম কুজ্ঞ। নরপতে! এই পুথিবীতে অণবা বর্গে যে কিছু হইয়াছে, সমুদায়ই তাহার কার্যা। অতথব আপনি তাহাকে क्षात्मन ना किकरण ? शर्र्स विश्वकर्षा अनम नास्य स्व मुश्क निर्माण क्षित्राहित्तन, के इत्राचा তাহা হরণ করিয়াছে। তাহা দারা সে রণে শত্রুদিগকে বঞ্চ করিয়া থাকে। সে পাতালমধ্য থাকিয়া, ঐ মুখল ছারা পুণিবীকে বিদারিত করে এবং তাহাতেই সমুদায় অস্করের ছার করিয়া দেয়। সে এথানে এই বস্থাকে স্থনন্দনামক মুবলায়ুধে এইরূপে বিদারিত করিয়াছে। আপনি দেই অহ্বকে জয় না করিয়া, কিরপে এই পৃথিবী ভোগ করিবেন ? ঐ মুবণই ভাঁহার আয়ৢধ। সে বেমন বলবান, দেইরপ উগ্রপ্তকৃতি। সে বজ্ঞ সকল ধ্বংস করে, দেবতাদিগকে নিশীড়িত করে এবং অস্থ্রদিগকে আপ্যায়িত করিয়া থাকে। যদি আপনি পাতালাস্তর-বিহারী সেই শক্রকে বধ করিতে পারেন. তাহাহইলেই, আপনি সমন্ত বস্থার পতি এবং তাহাহইলেই, আপনি প্রমেশ্বর, জানিব। ভাহার মুখলকে লোকে গৌনল বলিয়া থাকে। কোন কোন বিচলণ ব্যক্তি তাহাকে বলাবল নামেও নির্দেশ করেন। নূপ! জীলোকের সংস্পর্নাতেই দেইদিন ঐ মুবল নিবীর্ণ্য হইয়া যায়। কিন্তু বিতীয় দিনে আবার বীর্যাবিশিষ্ট হইয়া থাকে। তাহার মুবলের বে এই প্রকার প্রভাব এবং স্ত্রীলোকের করাগ্রসংস্পর্শে ই বে ঐ মুবলের বীর্বাবিনাশ হইরা গাকে. ঐ গুরাচার তাহা অবগত নহে। ভূপ! গুরামা দানবের ও তদীর মুষলের এববিধ বল, মাপ-নার নিকট কীর্ত্তন করিলাম। একণে যণাবিহিত অফুষ্ঠান কমন। পৃথিবীপতে। আপনার পুর-সালিখোই সে এই গর্জ করিয়াছে। তবে, আপনি কিরুপে নিশ্চিম্ভ রহিয়ছেন ? এই বণিয়া িনি প্রস্তান করিলে, রাজা অপুরে গমন করিয়া. মন্ত্রবিৎ মন্ত্রিগণের সহিত মত্রণা করিতে শাগি-শেন। মুবদের প্রভাব এবং সেই প্রভাবের বেরুপে হানি হইয়া থাকে, তাহা বেমন ওনিয়া-ছিলেন, তৎসমন্ত তাঁহাদিগকে কহিলেন। িটনি মন্ত্রিগণের সহিত এই যে মন্ত্রণা করিতেছিলেন, তদীয় ক্সা মৃদাবতী পার্শ্বে ধাকিয়া, তাহা তনিলেন। অনতরে কতিপর দিন অভীত হইলে. योजनमानिनी भूगावणी प्रविशत পत्रिवृषा हरेशा, हे अवतन शमन कत्रितनन। खे नमत्र कृत्रुष्ट তাহাঁকে হরণ করিল। রাজা গুনিয়া, জোধ-পর্যাকুলিত লোচনে গুত্তহরকে কহিলেন, ভোময়া শীঘ গমন কর। নির্বিদ্ধা নদীর তটদেশে যে গঠ আছে, তত্বারা গমন করিয়া, যে সহস্বতি মুদাবতীকে হরণ করিয়াছে, তাহাকে বধ কর। সেই রাজপুত্রেরা বনবিবরে সবিশেষ পারদর্শী ছিলেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর তাঁহারা ছইজনে সেই গর্ত প্রাপ্ত হইরা, তাহার পদাস্থ্যরণ ক্রমে মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর তাঁহারা ছইজনে সেই গর্ত প্রাণ্ডের ক্র্ডের সহিত বৃদ্ধ করিতে লাগিলেন। গাঁহালে গমন ও অতীব রোষভরে ইন্সেস সমহিবাহারে ক্র্ডের সহিত বৃদ্ধ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা নিরবহ্ছির রাশি রাশি পরিব, নিস্তিংশ, শক্তি, শৃল, প্রবধ্ব ও শ্রপরশারা প্রেরোগ

সহকারে স্থারণ বৃদ্ধে প্রবৃদ্ধ হবৈলন। আনবর মারাবলশানী কুৰুল সমুদার সৈত সংহারপূর্বক রাজপুত্রবরকে বৃদ্ধে বলী করিল। মুনিসভম ! পুত্রেরা বন্ধ হবৈলে, রাজা প্রবণ করিরা, অভিমাত্র বাাকুল হবৈরা, সমুদার সৈনিক্ষিপকে কহিলেন, যে ব্যক্তি লৈত্যকে বিনষ্ট করিরা, আমার ছই পুত্রকে উদ্ধার করিবে, আমি তাহাকে আমার সেই আরতলোচনা কলা লম্প্রান করিব। মুলে ! শ্লাজা পুত্র ও কলার মুক্তিকরণে নিরাশ হবৈরা, তৎকালে ঘকীর পূরে এইপ্রকার ঘোষণা করিরাক্রিলেন। ভনজনের পুত্র বৎসপ্রী এই ঘোষণা প্রবণ করিলেন। তিনি শিক্ষিতান্ত্র, বণবান্ ও শোর্যসংগর। পিতার অন্তর্কন সথা দেই পার্থিবসন্ত্রের সকাশে সমাগত ও বিনরাবনত হইরা, অভিবাদনপূর্বক বণিতে লাগিলেন, আমাকেই সম্বর আঞা করুন। আমি আপনারই তেজঃপ্রভাবে আও দৈত্যকে নিহত করিরা, আপনার তন্য তন্যার উদ্ধার করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা প্রিয়দথার পুত্র ভনদানকে আহলাদভরে আলিলন করিয়া, কহিলেন, বংন ! গমন কর, ভোমার দিছিলাভ হউক। যদি এই ক্রিভে পার, তাহাহইলে, প্রকৃত মিত্রপুত্রেরই কার্য্য করিবে। বংন ! যদি তোমার মন উৎসাহী হইয়া থাকে, সত্বর এই-রূপ বিধান কর।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন বীর ভনন্দন থকা ও ধয় ধারণ এবং গোধাসুনিআন বন্ধনিরা, সম্বরে উলিখিত গর্জবোক্ষেপাতালে গমনপূর্বক অতীব প্রচণ্ড ধয়্রইরার করিলেন। সেই ট্রারণান্দে সমন্ত পাতালরন্ধ পরিপ্রিত হইরা গেল। দানবেশ্বর কুজ্ভ সেই শব্দ শুনিরা, বুলৈন্তে পরিবেটিত হইরা, অতীব কোগভরে আগমন করিল। তাহার বেমন বল ও সমন্তিব্যাহারে সৈষ্ঠ ছিল; রাজনন্দনেরও তক্ষপ ছিল। উভরে যুদ্ধ উপস্থিত হইল। তিন দিন ভাঁহার সহিত যুদ্ধ করিরা, অসুর রোবাবিই চিন্তে মুবল আনিবার জন্ম গমন করিল। মহাভাগ! প্রালাপতির বিনির্দ্ধিত প্রমুবল অন্তঃপুরে স্থাপিত মাছে। গদ্ধ, মাল্য ও ধূপ প্রদানপূর্বক তাহার পূজা করা হইরা থাকে। মুদাবতী মুবলের প্রভাব জানিতেন। সেইজন্ত তিনি গ্রীবা অবনত করিরা, প্রমুবলপ্রেটকে স্পর্ণ করিলেন। মহাস্থ্র কুজ্প পুনরার বাবৎ মুবল প্রহণ করিল, তাবৎ তিনিও বন্ধনাজ্ঞলৈ অনেকবার উহাকে স্পর্ণ করিলেন। অনস্তর অস্তরপতি সেই মুবল লইরা, মুদ্ধ করিতে লাগিল। কিন্তু সেই সকল শক্ততে তাহার মুবলপাত ব্যর্থ হইরা পেল। সে বারমার মুবলের আবাত করিলেও, কোনরূপ ফলই হইল না। মুনে! তাহার সেই প্রমান্ত সোনন্দনামক সুব্দ নির্মীর্থ হইলে, সে অস্তান্ত রাশি রাশি অন্ত শত্র হার বল ছিল। কিন্তু তাহা বৃদ্ধিবলে বার্থ করা হইরাছে।

অনন্তর রালকুমার অস্থরের অন্ত শত্র সকল পরাহত করিয়া, তাহাকে তৎক্ষণে রথহীন করিলেন। তথদ দে পুনরায় থড়া চর্ম গ্রহণ করিয়া, অভিগাবিত হইল। সেই ইক্রশক্ত কুল্ড অতিমাত্র-পরাক্রম-প্রকাশপুরসঃর সবেগে ও সকোপে আগতিত হইলে, রালকুমার কাংনানা-সমপ্রত অনলাত্রে ভাহাকে সংহার করিলেন। পাবকান্তে হলর বিদীর্ণ হওয়াতে, সে আয়ুদেহ বিসর্জন করিল। তৎক্ষণে রসাতলান্তে মহোরগ সকল মিলিত হইয়া, মহোৎসবে প্রবৃত্ত হইল। তথন মহীপাল পুত্রের উপরি পুন্দারৃষ্টি পতিত হইতে লাগিল। গর্মজ্পতিরা গান আরম্ভ করিল। দেববাদিত্র সকল নিনাদিত হইতে লাগিল। দেই রালপুত্রও দৈত্যদিগকে নিহত করিয়া, রাজার জিলিত ছই পুত্র ও মুদারতীনায়ী সেই ভবলী ক্রাকে উদ্ধার করিলেন। এদিকে, কুল্ড বিনিপাতিত হইলে, নাগাধিপতি শেবসংক্ষিত অনন্ত সেই মুবল গ্রহণ করিলেন। সেই সর্কোরগেশ্বর শেব মুদাবতীর প্রতি পরম-পরিভূগ্ধ হইয়াছিলেন। কেন না, সেই অভিশোভনা মুদাবতী স্থানাকের করম্পর্শের প্রভাব বিশেষরপ আনিতেন। সেই অভ্যাব ক্রমন্থ মুদাবতী স্থানাকের করম্পর্শের প্রভাব বিশেষরপ আনিতেন। সেই অভ্যাব ক্রমন্থ মুবলকে স্পর্ক করিছিলেন। ভারিবন্ধন নাগরাল সামন্যে মুদাবতীর নাম স্থননা রাখিলেন। সৌনক্ষ মুবলকে স্বাস্থিতিন। তানিক্র মুবলকে মুবলের

ত্ব জন্তই এরপ নান হটল। খনভর দেই রাজপুত্র প্রাত্তরের সহিত মুদাবতীকে সভরে তীছাদের পিতৃ:গাঁচরে আনম্বন করিরা, প্রণিপাতপুর্কক বলিতে লাগিলেন, তাত ! আপনার আজাল্যারে ভবদীর তনর ও ভনরা সকলকেই এই আন্য়ন করিয়েছি। একণে আমাকে আর হাহা করিতে হইবে, আজা করুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন নরপতির হাদয় অতিমাত্র হর্ষে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিন। তিনি হ্যমধুর বাব্যে উটেচঃ মবে সাধু সাধু ও বৎদ! বৎস! বলিতে লাগিলেন। বংদ! আমি আলা তিবিধ কারণে দেবপণের সভাজন প্রাপ্ত হইগাম। প্রথমতঃ, তৃমি জাগাতা হইলে। মিতীয়তঃ, শক্র বিনিপাতিত হইল। তৃতীয়তঃ, আমার অপতা সকল পুনরায় অক্ষত দে:হ প্রতাবির্ত্তন করিলেন। অত্য ব আমি আজা করিতেতি, অলা দিন অতি উত্তম। আমার এই স্কাল্মুন্নী ক্যার পাণি-পীড়ন এবং এই মুদ্বিতীর প্রতি প্রীতি বশতঃ আমারও বাক্য সত্য কর।

রাজপুজ কহিলেন, আপ্রাক্তীত। আপনার আজ্ঞা পালন করা আনার অবস্থা কঠবা। অত এব যাহা বলিতেছেন, তাহা করিব। তাত ! আপনি ইহা অবপ্ত আছেন, আনাদের এবিষয়ে অধিকার আছে, কি, নাই।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন রাজা ত্রীয় চহিতা মুদাবতী ও ভনদনন্দন বংগপ্রী, উত্তরের বৈবাহিক বিনি সমাহিত করিলেন। বংগপ্রী নবযৌবেন প্লার্পণ করিয়াছিলেন। মুদাবতীর সহিত রমণীর প্রদেশসমূহে ও প্রাসাদশিখরপরপ্রার বিহার করিতে লাগিলেন। কালসহকারে বংগপ্রীর পিতা ভনদন বুদ্ধ হইয়া পড়িলেন। তদ্ধিগদ্ধন তিনি অরণো গমন করিলে, বংগপ্রী রাজা হইলেন এবং গতত ধর্মামুদারে প্রজাপালন করত যজ্ঞ সকলের অষ্ট্রান করিতে লাগিলেন। সেই মহাত্মা বংগপ্রী পুত্রবং প্রজাপালন প্রবৃত্ত হইলে, তাহাদের সমৃদ্ধির সীমা রহিল না। তাঁহার রাজ্ত্মমেরে বর্ণদহরের নাম্মাত্র রহিল না। লোক্মাত্তেরই দ্যুভ্র, ব্যাল্ভর ও চর্ব্তভ্র দ্র হইয়া পেশ। অধিক কি, তিনি শাসন করিতে প্রবৃত্ত হইলে, উপ র্যভ্রের ও নাম্যাত্র রহিল না।

ইতি বংগপ্রীচরিত নাম বোড়শাধিকশততম মধ্যায়।

# সপ্তদশাধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, স্থানলার পর্তে তাইার খানল পুত্র জন্ম গ্রহণ করিল। তাহাদের নাম প্রাংগ, প্রবীর, শ্ব. স্বচক্র, বিক্রম, ক্রম, বল, বলাক, চণ্ড, প্রচিত্ত, স্থিক্রম ও শ্বরণ। ইহারা সকলেই মহান্তাগ ও সকলেই সংগ্রামজিত্তম। তাহাদের জ্যেষ্ঠ মহাবীর্যা প্রাংগু রাজা হইরাছিলেন। অক্সান্ত লাভার ভ্রের ক্রার, তাইার বলবর্ত্তী হরেন। তাইার বজে পৃথিবীর বস্করানান সার্থক হইরাছিল। কেননা, বিজ্ঞাতিগণ ও অন্তান্ত নিক্টবর্ণ সকল অনেকবিণ ক্রারালি পরিভাগে করিরাছিল। তিনি ঔরণ প্রের ক্রার, প্রজালিগকে সমাক্রপে পালন করিতেন। তাইার কোরে বে ধনসক্ষর হইরাছিল, তদ্বারা তিনি যে সকল শত সহল বজ্ঞ করেন, তাহান্ত্র স্থান নাই। ব্নে! বলিতে কি, অব্তানি, কোটি ও প্রানি বারাও তাহাদের স্থান করা বার না। তাইার প্রের নাম প্রজাতি। বাইার যজে শতক্র সম্বন্ধ দেবগণের সহিত বজ্ঞানি প্রক্র করিরা, অভুল তৃথি লাভ করিরাছিলেন। বলিশ্রের প্রভাতি পরম-বীর্যাপালী সবন্ধতি অস্বর ও তাহাদের সৈক্ত এবং অস্করণত্ব অস্ত্রকে বিনাশ করেন। অন্তাভ স্থ্যহারীর্যা অমর্নিগক্ষের সংহার করিরাছিলেন।

প্রভাতির পাঁচ পুর। ভাহাদের নাম ধনিজ ইন্ডালি। ভাইাদের মধ্যে ধনিত্র নিল বিজ্ঞানি প্রাণাত ও রালা হইরাভিলেন। তিনি শাল্পছাব, সভ্যবাদী, শ্র, সকল প্রাণির হিতকারী, ফ্রীর-ধর্মনির চ, নিতা বৃদ্ধবেরী, বহুঞ্ত, বাথী, বিনীত, কৃতার, গর্মপুল্ড ও সকল গোকের প্রির এবং সর্বাদী এই প্রকার কহিতেন, সংগারে সকলেই আনল্যসপার ও বিজনসমূহেও প্রীতিনান্ ইউক। সকলেই সর্বতোভাবে স্থেথে থাক্ক ও একবারেই ভ্রপ্ত হউক। কাহারও যেন হাাধি না হয়; কাহার ও বেন কোনরূপ মন:কইও না ঘটে। সকলেই সকলের প্রতি মৈত্রী প্রদর্শন করক। বিজাতিগণের মঙ্গল হউক। ভাইারা পরম্পর প্রীতিগান্ হউন। সমুদ্র বর্ণই সমৃদ্রি লাভ করক। কার্যামান্তেই সিঠি সম্পার হউক। হে লোক সকল। সর্বাহিত্ত সর্বাদী ভোগাদের স্থাতি সঞ্জরিত হউক। ভোগরা আত্মাতে যেমন, পুত্রে ভেমন, সর্বকাশ হিত ইচ্ছা কর এবং সর্বাহৃত্তেও তেমন হিতব্রি হইরা থাক। ভোগাদের মধ্যে কেহ যদি কাহারও অপরাধ না করে, ভাহাইলে, ভাহাই ভোগাদের প্রক্ পর্য মঞ্চলের বিষয়। এ

কোন বাজি মৃচ্চৱভাবশতঃ কাহার যে কিছু অহিত ক র, তাহাকে নিশ্চরই পরং দেই অনিষ্ট ভোগ করিতে হয়। ঘেহেতু, কার্য্যে কণ কর্ত্পামী হইরা থাকে। হে শেকৈ সকণ! ভোগরা এই সকণ বিংবচনা করিয়া, সমন্ত প্রাণীতে হিত্রু ছাপন কর। গৌকিক পাপে নিপ্ত হইও না। তাহা হইলে, প্রালোক সকণ লাভ করিবে। যে ব্যক্তি অদ্য আমারে স্নেহ করিবে, সে স্ক্লো এই পৃথিবীতে পর্ম কণ্যাণে বাস কঞ্ক। আমার, যে আমার যে করিবে, সে ব্রিজ্ঞ কণ্যাণের পর কল্যাণ দর্শন করন।

সেই রাপার পুত্র থনির এবংশ্বরপ ছিলেন। সমস্ত গুণ তাহাঁর শরীর আশার ও প্রী তাহাঁকে আনিক্সন করিয়াছিল। তাহাঁর পোচনযুগল প্রপ্রের তার আরত। িনি প্রীতিসহকারে লাতানিকে পূণক্ পূথক্ রাজ্যে যোজিত করিয়া, শয়ঃ এই সাগরাধরা বস্থারা তোগ করিয়াছিলেন। তিনি শৌরিকে প্রাচীদিকে, উদাবস্থাক দিশিনিকে, প্ররুক্তে প্রতীচীদিকে এবং মহারথকে উত্তরদিকে নিয়োজিত করেন। তাহাঁর এবং তাহাদের সকলেরই গোর, প্রোহিত ও মুনিপুগক্ ছিলেন। বংশপর প্রায় এই প্রকার পার্থক। ছিল। তদমুসারে অন্তিকুণান্তব হুহোন শৌরির প্রোহিত হইয়াছিলেন। আর উদাবস্থার প্রোহিত ক্শাবর্ত গোত্রবংশে জন্মগ্রহণ করেন। স্মরের প্রোহিত ক্শাব্র প্রোহিত ক্শাব্র প্রোহিত ক্শাব্র। মহারথের প্রোহিত বাশিষ্ঠ। এই চারি লাভা রাজা হইয়া, স্বর্ধ রাজ্য ভোগ করিয়াছিলেন। পনিত্র সমস্ত বস্থামগুলের অধিপতি এবং তাহাদের সকলের মধিরাট্ ছিলেন। এইরূপে থনিত্র সমস্ত লাভার মধ্যে মহীপতি হইয়া, সর্বদাই পুত্রের ভার, সম্দর প্রজার হিতার্হান করিতেন।

একদা লৌরির মন্ত্রী বিশ্ববেদী তাইাকে নির্জ্জনে কহিলেন, মহীপান! আমার কিছু বক্তব্য আছে। যাইার এই সমগ্র পৃথিবী এবং সম্দর ভূপতি ঘাইার বদীভূত, তিনিই রাজা এবং তাইার পূল্ল, পৌত্র ও বংশাবনীও রাজা হইরা গাকে। তাইার অন্তান্ত লাভ্যাণ প্রথমে বেমন অর বিষয়ের মধিকারী হন, তাইাদের প্রেরা তেমনি হাহা অপেকা বর হারী হইরা গাকে এবং তাহাদের পৌত্রেরা মাবার আরও অরবিষয়ী হইরা পড়েন। জনে কানসহকারে পুরুষ হইতে পুরুষান্তর প্রাপ্ত প্রহার কংশাবলী রুষিনীবা হইরা থাকেন। দেখুন, লাভা কখন নিজের প্রাচাকে ভদীর স্নেহর বশবর্ত্তী হইরা উদার করে না। এরপ অবহার পরকীয় লাভ্যাক্তর মধ্যে ক্রের মধ্যে পরকার আরও পরবৃদ্ধি দানান মতেই সম্ভব নহে। আবার, ভাহাদের পুত্রহয়ের মধ্যে পরক্ষার পরারও পরবৃদ্ধি দানার গাকে। এরপ অবহার ভাহাদের পুত্র কি উদ্ধেশে প্রীভিষ্ক হইবে । অগবা, স্বালা বিধিবেন তেন প্রস্তাব্য বিদ্বার স্বালা করিবার প্রালান কি । আনপান আযার সহিত মন্ত্রণা করিলে, সমুদর রালা ভোগ করিছে পালেন। এরপ অবহার মধ্যি সংস্তাব্য অবলম্বন করেন, ভাহা হইলে, আর কিঞ্জ বৃধা সামান্ত রাহা

ধারণ করিতেছেন ? রাজ্য বধন কার্যানিপাণক, তথন উহার করণ ও কর্তা। উচরই আবশুক হইরা থাকে। তর্মধ্যে আপনি কর্তা ও আধরা করণ। আপনি দেই করণ আমাদের শহার গায় পিস্টুপৈতানহিক রাজ্য শাসন কলন।

রাজা কহিলেন, জানাদের জ্যেষ্ঠ রাজা ইইয়াছেন। যেহেতু, আনরা উহার অন্তর, সেই হৈতু, তিনি সম্প্র ব্যক্তরা-ভোগ করিতেছেন; জার লামরা জন্নমান্ত ভোগ কারতেছি। জার মহামতে! আমরা পাঁচ চাই, জার পৃথিবী একা। এই কারণে ইহার প্রভুত্ব পৃথক্ হইয়াছে; কিরপে সক্লেইই সম্প্র পৃথিবী হুইতে পা.র ?

বিশ্বনৌ কহিণ, নৃপ ! আঙা, ইহা বীকার করিলাম। কিন্তু পৃথিবী যদি একা হন, ওবে, আপনিই কেন একাকা ইহাকে গ্রহণ করিরা, সকণের জ্যেষ্ঠ হইরা, শানন করন না দু করওঃ, আপনিই সকল আতার মধ্যে স্কাধিপতি ও অধিগের ঈশ্বর হটন। ব.লতে কি, আইমি বেমন আপনার জন্ত যত্ন করিতেছি, তাহাঁদের মনীরাও তেমন ভাইাদের জন্ত যত্ন পরারণ আছে।

রাজা ক হণেন, আনাদের জ্যেষ্ঠ রাজা হইরা, অকীর পুত্রের স্থায়, আমাদের প্রতি প্রীতি প্রদ-শন করিয়া থাকেন। অভএব, আনি কিরপে তাইার আধিপত্যে মমতা স্থাপন করিতে পারি ৪

বিশবেদী কহিল, আপনিও ভার্চ হইয়া, রাজপদ অনিকার প্রঃমুর, ভারাদের সক্লকে
নিতা নব নব বিধানে আপাারিত ও সম্ভট করিতে পারেন। দেখুল, রাজ্যপ্রাণীনিগের মধ্যে
কনিষ্ঠ জোষ্ঠ বণিয়া কোনরূপ প্রভেদ নাই; তাহারা সক্লেই জোষ্ঠ, আবার, সক্লকেই কনিষ্ঠ।
ফলতঃ, যে যথন রাজ্য ক.র, সেই জোষ্ঠ হইয়া থাকে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা এই কশার সন্মত হইলে, মন্ত্রী বিশ্ববেদী তাহার সংহাদ্র সকলকে বলে আনরন করিলেন। অনন্তর তাহানের প্রোহিতদিগকে আপনার রাজার শান্তিক ও পৌটিকাদিতে এবং ধনাওর আভিচারিক নিয়াজিত করিয়া, সামদানাদি উপারে তাহার মন্তর্নিগকে বহিরপ করত, অকার দশুলাধনে নির্ভিশর উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। চারিজন প্রোহিত প্রতিদিন অতৃংকেট আভিচারক অনুষ্ঠানে পর্ত হলে, কুত্যাত্ইইর প্রাপ্ত হইল। উহারা অতাং-করাণ-প্রকৃতি ও দেখিতে নিতাত ভ্রজনক। উহাদের বদন অতি বিস্তৃত্ব হতে মহাশূণ সম্দাত রহিয়াছে। উহাদের কলেবর আতি প্রকাণ্ড। মাতদাদণ দেই কুত্যাত্ত্রে রাজা ধনিত্রের সকাশে সমাগত হইল। তিনি অভাবত: দোধস্পশ্বিহান; স্তরাং তাহার প্রাক্র প্রাক্র তাহারা নিরস্ত হইল এবং সেই সকল প্রোহিত ও মন্ত্রী বিশ্ববেদীকে যুগপৎ আক্রমণ করিল। অনপ্তর নিহন্তীনারা ক্রত্যা উরিখিত প্রোহিতগণের সহিত রাজা শৌরির—হট্ট মন্ত্রী বিশ্ববদীকে একবারেই দ্যু করিয়া ফেলিল।

ইতি থনি এচরিতে দপ্তদশাবিকশত হম মধ্যার।

### অন্টাদশাধিকশ তত্ম অধ্যায়।

মার্ক গুর কহিলেন, তাহারা দকণেই পুণক্ পুনক্ পুরে বাদ করিছ। কিন্ত এককাণেই বিনষ্ট হইল; দেখিলা, দমন্ত লোকেরই অভিনার বিময় এনিল। অনন্তর নরপতি ধনিরও এবণ করিলেন, আভুগণের পুরোহি চবর্গ ও মন্ত্রী বিশ্ববেদী দকণেই বুগণং নিলন প্রাপ্ত ইর্যাছে। তখন তিনি, ইহা কি হইল, ভাবিরা, অভিমাত্র বিশ্বরা ইই ইংগন। কারণ কি, তাহা জানিতে পারি-গেন না। অনন্তর বাশিষ্ঠ গৃহে আদিলে, রাজা খনিত্র তাহাঁকে জিজ্ঞানিলেন, আভুগণের পুরোহিতগণ ও মন্ত্রী কি কারণে বিনষ্ট হইলেন ? মহামুনি বশিষ্ঠ তৎকর্তৃক জিঞ্জানিত হইয়া, শৌরির

মন্ত্রী যাহা বণিরাছিল, শেরি শবং থাকা উত্তর করেন; আমত্তর মন্ত্রী আতৃগণের চেদদাধার্শ বেরপ অফ্টান করিয়াছিল, পুরোহিত্তগণও দেই ছুট্ট মন্ত্রির প্রেরোচনার যাহা যাহা করেন, এই-রূপে তাহারা পাপহীন থনিত্রের অপকার করেরা বে নিমিত্ত বিনট হইরাছিল, তৎসমত্ত আল্যোন্দাল রাজার গোচর করিলেন। তাহার পুরোহিত্বর্গ শক্তর প্রতিও দয়াপর।

রাজা খনিত্র এই স্কুর্ণ শুনিরা, হা হতোত্মি ব্লিয়া, ব্লিষ্টের সাক্ষাতে আপুনাকে অতিমাত্র নিন্দা করিয়া, কহিতে লাগিলেন, আনার কিছুমাত পুণাসংস্থান নাই। আমি অতি হুড্ডাগ্য। আমার সক্ষই অতি কুৎদিত ও অতীব জ্বতা। দৈবও আমার প্রতি অতিমাত প্রতিক্র। অধিক কি, আমি যেমন পাপাত্মা, তেমনি সর্বলোকবিগহিত। আমাকে ধিক। আমার জন্তই সেই আহ্মণচতুষ্ট্য বিনপ্ত হইয়াছেন। অভএব আমা অপেকা অভীব পাপাত্মা পুশিষীতে আর কে আছে-! আমি যদি পুরুষরূপে এই পৃথিবীতে সমৃদ্ভত না হইতাম, তাহা হইলে, মণীর আছ-পুরোহিছগণ বিনষ্ট হইতেন না। आমার রাজ্যে বিকৃ । আমার মহারাজবংশে জন্মেও ধিকৃ ! বেহেতু, আমি আক্ষণণণের বিনাশের হেতু হইলাম ! তাঁহারা আমার ভাতবর্গের যাজক; স্কুতরাং, স্বস্থাম।র জন্ত চেটা করিয়া, যথন বিনষ্ট হইয়াছেন, তখন ভাঁহাদের দোষ কি ? যত দোষ আমারই। কেমনা, আনিই তাঁহাদের বিনাশের কারণ হইলাম। আমি এখন কি করি ? কোথা যাই! আমা অপেকা পাপকারী পুলিবীতে আর বিতীয় নাই। দেণ, আমি বিজাতিগণের বিনা-শের হেতু হইলাম। পৃথিবীপতি থনিত এইরপে উদ্বিধ্বনয় হইয়া, অরণাগমন বাদনা করিয়া, পুলকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন। তাহাঁর পুত্রের নাম ক্ষুপ। মহীপতি তাহাঁকে অভিষিক্ত করিয়া, ভার্যাত্রর সমভিবাহারে তপশ্চরণ মান্দে অরণ্যে গমন করিলেন। তিনি বানপ্রস্থ বিধি অবগত ছিলেন। অরণ্যে গমন করিয়া, দার্দ্ধ তিনশত বংদর তপ্তা করিলেন। দিজবর্ষ্য ! সেই রাজবর্ষ্য তপোবলে ক্ষীণদেহ হট্মা, দর্কবিধ স্রোত নিগৃহীত করিয়া, বনে থাকিয়াই, প্রাণ বিস্ত্রুন করিলেন। নরপতিগণ অখনেধাদি দ্বারা যাহা প্রাপ্ত হইয়া থাকেন, তিনি স্ক্রিকাম প্রদ তাদুশ প্রমপ্রিত্র আক্রেয় লোক দক্ষ লাভ ক র্লেন। তাহাঁর তিন ভার্যাও তাহাঁর সহিত প্রাণ , প রহার করিয়া, দেই স্বয়হাভাগ রাজার দমান লোক দকলে দমাগত হইলেন। মহাভাগ থনিতের চরিত্র শ্রেণ ও পাঠ করিলে, ক্ঞাষ সমস্ত বিনণ্ট হইয়া থাকে। অভঃপর কুংপর চরিত্র শ্রেণ কর ।

ইতি থনি এচরিত্র নাম অপ্তারণাবিকশততম অধ্যায়।

## একোনবিংশত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, থনিত্রের পূল ক্ষুপ রাজ্যপাপ্ত হইয়া, পিতা যেমন, সেইরূপে অফ্রেরিজ করিয়া, ধর্মাফ্রারে প্রজাগণের পানন করিতে লাগিলেন। তিনি যেমন দানশীল ও যাগশীল, দেইরূপ ব্যবহারাদি মার্গে শক্র মিত্রে সমভাববিশিষ্ট হিলেন। একদা তিনি নিজ স্থানে বিনিয়া আছেন, এমন সময়ে স্তগণ ব লতে লাগিল, পূর্বের যেমন ক্ষুপ রাজা হইয়াছিলেন, তিনিও তেমনি রাজা হইয়াছেলেন। তাহার বেরূপ চরিত্র ছিল. বর্ত্তমান রাজা হইয়াছিলেন। তাহার বেরূপ চরিত্র ছিল. বর্ত্তমান ক্ষুপ গুলি

রালা কহিংনন, প্রম-মহাত্মা ক্ষ্পের চরিত শ্রবণে ইচ্ছা হইতেছে। যদি আমি তাদৃক্-চরিত-বিশিষ্ট হইতে পারি, তাহার চেঠা করিব।

স্ত সকল কহিল, ভূপ ! পূর্বে সেই রাজা কুপ গোরা নগদিগকে করহীন করিয়াছিলেন এবং বঠাংশ হারাই যজের অন্তর্ভান কবেন।

মাজা কহিলেন, মাদৃশ কোন্ ব্যক্তি তাদৃশ মহাত্মা নরপতিগণের অভ্করণ করিছে পারে ? আবার, তাঁহানের চরিত বেরপ উৎকৃত্তী, তাহাতে, মদ্বিধ ব্যক্তির ভবিষয়েও উদ্যানবান্ হওরা সম্ভবশর নহে। আমি শহুতির বে প্রতিক্রা করিছেছি, সকলে প্রবণ কর। আমি প্রতি মহারাজ ক্পের অভ্করণ করিব। আমি পৃথিবীতে এই প্রতিক্রা করিবাম, বে, তিন ভিনটী হক্ত করেব। প্রের্থিক গোও আন্ধণ সকল আমাকে যে ক্রদান ক্রিয়াছিল, আমি ভাহাদিগকে ভাহা প্রত্যপণ করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা কুপ এই প্রকার প্রতিজ্ঞা করিয়া, তাহা রক্ষা করিলেন। সেই যাজিকভাঠ নরপতি একমাত্র শভ লইয়াই, বজ্ঞার সমাহত করিলেন। গোও আদ্ধান সকল পূর্বের রাজানিগকে যে কর দিরাছিলেন, তিনি অভাভ গো আদ্ধানক তাবৎ সংখ্যার ধন প্রাদান করিলেন। তাই র মহিবীর নাম প্রমণ। তদীয় গর্কে নরপতি কুপের এক অনিন্তি বীর পুত্রের জন্ম হইল। ঐ পুত্রের প্রতাপ ও শৌর্বো সম্লায় রাজা বশীক্ষত হইলেন। বিনর্ভবংশীয় নিদ্দানীয় সহিত তাই র বিবাহ হইল। তিনি সেই দিরতা পদ্ধীতে বিবিংশ নামে পুত্রের উৎপাদন করিলেন। মহাতে জন্মী বিবিংশ রাজা হইয়া, মহীপালনে প্রবৃত্ত হইলে, মহীতল লোক সকলে এরূপ পরিপূর্ণ ইইয়া উঠিল, যে, কুমাপি আর স্থান রহিল না। মেঘ সকল মধাবার স্কুদণিত হইতে লাগিল। প্রবিশ্ব স্থাবার বনে পরিপূর্ণ হইল। রস সকলও আবার প্রতিধান করিতে লাগিল। প্রতিধান করিলেন করিল না। মহামুনে। তদীয় প্রভাপে রিপুণ্ণ ভীত হইরা উঠিল। স্বহ্ল্বর্গ স্বান্থালাভপ্র: সর অতিমাত্র হ্রাবিই হইলেন। তিনি স্বহ্ল্ ব্লের আহ্রণ ও সম্যক্ রূপে মেদিনী পরিপালন করিরা, সংগ্রামে নিহত হইরা, শক্রেলাকে গমন করিলেন।

ইতি বিবি শচরিত নাম একোনবিংশত্যধিকশত্তম অধ্যায়।

### বিংশত্যধিকশত্ত্ম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তাঁহার পুল্রের নাম ধনীনের। তিনি মহাবল পরাক্রমবিশিষ্ট ছিলেন। বাঁহার যজ্ঞে গন্ধর্কাণ বিশ্বয়াহিত হইয়া, গান করিয়াছিল, যে, থনীনেত্রের সমান পৃথিবীতে দিউটয় যাজিক নাই। তিনি অয়্য়ুত যজ্ঞ করিয়া, সদাগরা পৃথিবী দান করিয়াছিলেন। তিনি সমগ্র পৃথিবী মহাত্মা আন্ধাণিলগকে লান করিয়া, পরে তপাদাধনপুরাসর জব্য সংগ্রহ করিয়া, ভাহার মোচন করেন। সেই বলাভাগবর নরপতির নিকট অতুল বিত্ত সমৃদ্ধি প্রাপ্ত হওয়াতে, আন্ধাণিলগকে অভ কোন রালার নিকট প্রতিগ্রহ করিতে হয় নাই। তিনি সপ্রয়িষ্টি সহত্ম সপ্তর্মন্তিশন সংগ্রহি ভ্রিলকিণ যজ্ঞের আহরণ করিয়াছিলেন। মহামুনে! তাহার সন্ধান হয় নাই। সেইলভা তিনি পুরকামনার মাংসদংগ্রহে অভলাবী হইয়া, পিতৃযজ্ঞের নিমিন্ত ম্গরার গমন করিয়াছিলেন। সৈভা লা লইয়া, একাকী অশ্বারোহণে গোধালুনিআন পরিধান এবং বাব, শভ্লা ও য়য়্য় ধানণ করিয়া, মহাবনে প্রহান করিলেন। তিনি অগ্রত ত্রগ চালনা করিয়াছেন, এমন ক্রমণ্ড এই য়া, তাহাকে কহিল, আমাকে বধ করিয়া, আভিমত অন্তর্মান কর্মন।

রাজা কহিলেন, অভাভ মৃগ সকল আনাকে দেখিরাই, মহাভরে পণায়ন করিতেছে। তুমি কিজন্ত আহাত্ম প্রদান করিয়া, মৃত্যুগাড়ে উৎস্ক হইরাছ ? মৃগ কৰিণ, মহারার ! আনি নিঃসম্ভান ; স্কুতরাং, আমার কর্মগ্রহণ করা বুধা হইরাছে। বিচার করিয়া কেবিলাম, আণ্যারণে আর আবশুক্তা নাই।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ঐ সমরে অপর এক মৃগ অভাগত হইরা, উলিখিত মৃগের সমকেই বলিভে লাগিল, মহারাঞ্চা এই মৃগকে বধ করিয়া, আপনার কোন কার্যাই হইবে না। অভএব আমাকে হত্যা করিয়া, আমার মাংলে নিজের অভাই কার্য্য করন। তাহাহইলে, আমার বেমন কুতার্থতা হইবে, সেইরূপ আমি বিশেষ উপরুত হইব। মহারাজ! আপনি পুত্রের অভাই অকীর পিতৃপুরুষ-দিগের উজ্জেশে যঞ্চ করিতে অভিলাবী হইয়াছেন। অভএব, এই নিঃসন্তান মৃগের মাংলে কিরপেই বা বাহিত ফল লাভ করিবেন। বেমন কার্য্য করিতে হইবে, তাহার উপরুক্ত ভেমন জব্য আহরণ করা কর্ত্ত্বা। দেখুন, ছর্গরু বারা কথন হুগরু সক্লের গরুক্তান বিনিশীত হন্ধা।

রাজা কহিংশন, এই মৃগ আমার নিকট নিজের অপুত্রভাই বৈরাগ্যের কারণ বলিয়া নির্দেশ করিন। একংশ, ভোমার প্রাণভাগে বৈরাগ্যের কারণ কি, বল।

মৃগ ক হল, ভূপ! আবার অ.নক পুর ও অনেক ছহি চা। বাহাদের চিন্তাঞ্চনিত ছঃধ্দ্প দাবানন-জ্বানা মধ্যে আমি বান করিয়া থাকি। রাজন্। আমানের এই মৃগলাভি আভিশয় कुर्त्तन । त्महेक्क मरून धानीतरे बनावात्म बाव उपिन श्रेवा भारक । त्महे कांत्र गरे वे मरून পুত্র কল্লাতে আমার অভিমাত্র মমতা এবং সেই মমতাবলে আমার ছঃবের ও একলের উপস্থিত হইরাছে। কেননা, ঝানা.ক সর্বাদাই মহুব্য, সিংহ, শাদ্ল ও বুকাদির ভয় করিয়া চলিতে হর। এমন কি, যাহারা সমুদার প্রাণী অপেকাও হীন, দেই কুকুর দুগান প্রভৃতিকেও আমি ভয় করিয়া থাকি। এই কারণে আমার দর্কনাই ইচ্ছা হর, যে, এই দমুদার পৃথিবী যেন একবারেই মছুষ্য ও দিংহাদির ভয়শৃক্ত হর। বলিতে কি, আনার ঐ সন্তান গন্ততির পোষণার্থ ইহাও ইচ্ছা হয়, বে, গো, মেষ, ছাগ ও অখপ্রভৃতি অভাভ যে দক্ষ প্রাণী তৃণ ভক্ষণ করে, তাহারা যেন এক কাণেই নিধন প্রাপ্ত হয়। আমার অপতাগণ পৃণক্ পৃণক্ গৃহ হইতে বিনিক্রান্ত হইলে, তাহাদের মমতাবশে মদীর মন আ হল হইয়া উঠে। তথন আমি শত শত চিন্তায় আক্রান্ত হইয়া থাকি। মনে হয়, আমার পুত্র বনমধ্যে বিচরণ করিতে করিতে, হয়, কৃটপাশ, না হয়, বজ্ঞাঘাত, না হয়, বাগুরা, না হয় মমুধা দিংহাদির বশবতী হইয়াছে । ঐ সময়ে পুত্রগণের মধ্যে কেহ উপস্থিত হইলে, মনে হরু এই একজন গেছে আদিল; অক্তান্ত যাহারা স্থাহন কাননে গমন করিয়া, এখনও বিচ-वन कतिए छ। ना स्नानि, छोशांपत कि भवसा श्रेत्राहि। त्राक्षन्। अनस्वत स्नामात सामायस्त्रा সকলে बाबात नकारन नमांगड हरेल, जारानिगरक नर्नन कतिता, व्यापि स्वेष फेक्ट, निष्ठ हरेता, পুনরার তাহাদের রজনীর জন্ম মলন প্রার্থনা করি। আবার, প্রভাত হইলে, সমত দিবসের জন্ম মঙ্গন কামনা করিয়া থাকি। পুনরায় স্থা অন্তগত হইলে, নিশাভাগের মঙ্গল প্রার্থনা করি। এইরপে শানি ইজা ক রয়া থাকি, ক চদিনে তাহাদের সর্বকাল ক্ষেম সংঘটিত হইবে।

রাজন্! এই আনি মাপনার নিকট নিজের উরেগের হেতু নির্দেশ করিগান। অতথব আমার প্রতি প্রসদ্ধ হইরা, আনাতে ঐ শর নিপাতিত করন। মহারাজ! এইরপে আমি শত শত ছংগবিট হইরা, বে কারণে প্রিয়তন প্রাণ্ড তাগে করিতে উলাত হইরাছি, তাহা বিশিলান, অবধারণ করন। আত্মধাতী প্রবগণ বে সকল লোক লাভ করে, তাহানিগকে অস্থা বিলয় থাকে। কিন্তু বজ্ঞাপর্ক পতগণ উল্লিটি প্রাণ্ড হইয়া পাকে। পূর্বে অগ্নি পত ইইরাছিলেন এবং অরা জলানিপতি বঞ্গত পত হবেন। পরে স্থাও বজ্ঞে পত্তরপে মৃত্যুলাভ করিরা, উল্লিটি প্রাণ্ড হইরাছিলেন। অতথব, নৃপ! আমাকে এই অমুগ্রহ করেরা, উল্লিটি প্রাণ্ড করিরা, বির অভীট প্রাণ্ড ইবেন।

প্রথম সুগ কহিল, রাজেক্ত । ইহাকে বধ করিবেন না। কেননা, ইহাঁর বহু পুত্র ; সেই সভ এই মৃগই ধন্ত ও স্কৃতিমান্। অতএব আমাকে বধ করন। যেহতু, আমার সন্তান নাই। ছি তীর মৃগ কহিল, ভূমিই হল। কেন না, ভোমার এক দেহ-জনিত চঃধ। আমার বহু মেই; সেইজল আমার ছঃধও অনেক। আমি যখন পূর্বে একক ছিলান, তখন নিজের দেহমাত্রে মমতাবশতঃ একমাত্র ছঃধ ছিল। পরে ভার্য্যা হইলে, সেই ছঃধ ছিণাভূত হয়। অনজর অপত্য সকল সমূত্ত হইলে, ভাহাদের সম সংখ্যার আমার দেহজ ছঃধ প্রাহ্ভূত হইল। ভূমি কিছ এইরূপ অতিছঃধভোগের জল্ল জন্মগ্রহণ কর নাই। অতএব ভূমি রুতার্থ নহ ? আমি বেমন ইহলোকে ছঃধভোগের জল্ল জন্মগ্রহণ করিরাতি, সেইরূপ প্রণোকেও আমার বিবম ব্যাঘাত ঘটিবে। যেহেতু, আমি অপত্যগণের রুক্ষণ ও পোষণার্থ সতত চেটা করি ও তিয়া করিয়া থাকি, সেইহেতু, নরকে আমার নিশ্চর জন্ম হইবে।

রালা কহিলেন, মৃগ! পুত্রবান্ ব্যক্তিই ধন্ম, কি, অপুত্রই ধন্ম, তাহা আমি জানিতে পারি-তেই না। পুত্রের জন্মই আমার এই আরম্ভ। সেইহেত্, আমার মন দোলারমান হইতেছে। সত্য বটে, এহিক ও আম্মিক ছ:থের জন্মই সন্ততি। তথাপি, ওনিয়াহি, বাহাদের পুত্র নাই, ভেক্টাদিগকে ঋণ সকলে আবদ্ধ হইতে হয়। অতএব, মুগ! আমি প্রাণিবধ না করিয়া, প্রচেও তপশ্চরণ সহকারে পুর্ব মহীপতির ন্থার, পুত্রের জন্ম বত্বপরায়ণ হইব।

ইতি থনীনেত্রচরিত নাম বিংশত্যধিকশতভ্রম অধ্যার।

# একবিংশ ত্যুধিকশ ততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিংলন, অনন্তর রাজা পাপনাশিনী গোমতীতে গমন করিরা, নির্মাস্থ্যারী হইরা, পুরশরের তাব করিছে লাগিলেন। তিনি কায় মন বাকা সংযত করিয়া, প্রেত হইরা, পুরের জন্ত করিয়া, তারত হইরা, পুরের জন্ত করিয়া, তাবান স্থারে মার ইক্র তদীর তোন, তপভা ও ভিজি ধারা সভ্ত ইইয়া, তাহাকে কহিংলন, রাজন্! আমি তোনার এই তপভা, তাত্র ও ভিজি ধারা সভ্ত ইইয়া, তাহাকে কহিংলন, রাজন্! আমি তোনার এই তপভা, তাত্র ও ভিজি ধারা তোনার প্রতি পরিত্ত ইইয়াহি। অভএব গার্ধনা কর। রাজা কহিংলন, মামি অপুত্রক; আনার পুত্র হউন। দেই পুত্র বেন সম্পর শক্তধর বরিষ্ঠ.

ধর্ষার্থ্যান বিশিষ্ট, ধর্মজ্ঞানসম্পন্ন ও কৃতী হর এবং তাহার ঐশ্যা বেন কোন কালেই ব্যাহত হর না।
মার্ক.গুরু কহিংলন, দেবরাল, তাহাই হইবে, বলিলে, রালা কুডমনোরও হইরা. প্রজাপাণ নার্থ
নিল রাল্যে প্রভাগত ইইলেন। বিপ্র! তথার সম্যক্রপে প্রজাপালন-তৎপর হইরা, বজামুঠানে
প্রবৃত্ত হইলে, দেবরাজের প্রসাদে তাহার এক পূজ জন্মগ্রহণ করিল। পিঙা তাহার নাম বলাশ্ব
রাখিলেন এবং তাহাকে ধাবতীয় অন্ত্র্ঞানে স্থাশিকত করিলেন। বিপ্র! পিতার মৃত্যুর পর
ঐ পূজ্ব জ্বিরাজ্যে দ্বিত ও রালা হট্রা, প্রথিবিহ সমন্ত নরপতিকে বলে জ্বানিলেন এবং তাহাদের স্ক্রাকেই সারগ্রহাপুর্বক করনীকৃত করিরা, প্রজালোকের পালন করিতে লাগিলেন।

অন কর সেই সমন্ত নরপতি ও ছুর্মন নার্নানগণ সহত অন্তাখানে প্রার্থ ইইরা, উবিক্তে কর দেওরা বন্ধ করিল এবং সকলেই অসম্ভট ও ব্যারাজ্যে অভাষিত হইরা, তদীর মধির জ্মি আয়সাং করিরা লইল। তদিবদ্ধন তিনি ছুর্মণ হইরা পঞ্জিলন। তদবস্থায় আপনার রাজ্যনাত্র লইরা, অকীয় নগলে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। নরপতিগণ বহুবার ভাষার সহিত বিরোধ করিলেন। তাঁহারা সকলেই ক্মহং বীর্বালিটি এবং সকলেই সাধন ও ধনসক্ষা। একত্র নিনিত্র হইরা, ভনীর পুরে সমাগত হইরা, তাঁহাকে কন্ধ করিলেন। পুর কন্ধ হওরাতে, তিনি আত্রজাধ হইলেন। কিন্তু কোর কীণ ও দও হীন ভাষাপর হওরাতে, কিন্তুত্ব করিতে পারিলেন না। অবশেষে রক্ষার উপায় আর না লেখতে পাইরা, হইরা পঞ্জিলন। কিন্তুত্ব করিতে পারিলেন না। অবশেষে রক্ষার উপায় আর না লেখতে পাইরা,

কর্মুগ্রন মুধাত্রে ছাপন করিয়া, আর্জিডিড নিয়ার পরিচ্যাগ করিলেন। তথন তদীয় মুখবায়্তে সমাহত ছইয়া, শত শত রথ, নাগ, অয় ও বোধ সকল তাঁহার হতবিবর হইতে বিনিক্রান্ত হইল। সেই অতিবলবান সর্কোহেরই বল্গমূহ ক্লগমধ্যই ঐ রাজার সমুদয় নগর ব্যাপ্ত করিয়া ফোলিল। আনস্তর রাজা সেই স্থবিপুল অতিবলসমূহে পরির্ভ হইয়া, অকীয় নগর হইতে বিনির্গমনপূর্বক তাহাদের সকলকেই অয় করিলেন। মহাভাগ! তাহাদিগকে অয় করিয়া, বশে আনিয়া, প্রায়ায় কয়দীয়ত করত, পূর্ববেশিভাগ্যে সমলয়ত হইলেন। বেহেতু তাঁহার কয়ম্বলের ধৃতি অর্থাং কল্পন বা আলোলন ১ইতে সেই শত্রবল-কয়কারী সৈক্ত সকল সমৃত্ত হইল, সেইহেতু বলাখকে তদবি লোকে করলম বলিয়া থাকে। তিনি ধর্মায়া, মহায়া এবং সকল প্রাণীতেই মিত্রভাববিশিষ্ট; এইহেতু ত্রিভ্রনে বিধ্যাত হইয়াছিলেন। তিনি অয়ং ধর্ম কর্ত্বক প্রায়ত উক্রেপ বল লাভ করিয়া, পর্মান্তি-প্রাপ্ত লোক সকলের অয়াতিকুল বিনাশ করিয়া দিতেন।

ইতি করন্ধমচরিত নাম এক,বিংশতঃধিকশততম অধ্যায়।

#### দ্বাবিংশত্যধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বীর্ব্যচন্ত্রের পূত্রী স্কৃত্র ও সুব্রতা বীরা স্বর্গরে মহারাজ করন্ধনকে পরি-গ্রহ করিয়াভিলেন। তাঁহার গর্ভে বীর্যাবান্ রাজেন্ত্র করন্ধন অবীকিত নামে এক পূত্র সমুৎপাদন করেন। সেই পূত্র জন্মগ্রহণ করিলে, রাজা দৈবজ্ঞদিগকে জিজ্ঞাসা করিলেন, আমার পূত্র ত শুভলারে ও শুভনক্ত্রে জনিয়াছেন? শোভন গ্রহ দক্ত ত ইহার প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়াছে? ঘুষ্ট গ্রহগণের ত ইহার প্রতি দৃষ্টি হয় নাই?

তিনি এই প্রকার কহিলে, দৈবজেরা রাজারে বলিতে লাগিল, আপনার এই মহাবল, মহাবীধ্য, মহাভাগ পূল সর্বাধ শুভ-স্থে, শুভ-মুহুর্ত্তে ও শুভ-নক্ষরেই সমুৎপর হইরাছেন। মহারাজ! আপনার আত্মত্ব মহারাজ হইবেন। যেহেতু, দেবগণের মধ্যে শুরু ও শুক্ত সপ্তম স্থানে থাকিয়া, ইহাঁকে অবৈক্ষত অর্থাৎ ইহাঁর প্রতি দৃষ্টি করিয়াছেন। সোমও চতুর্থ স্থানে থাকিয়া, ইহাঁকে সমবেক্ষতে অর্থাৎ দৃষ্টি করিতেছেন। সোমের পূল্রও উপাত্তে পাকিয়া, ইহাঁকে অবৈক্ষত অর্থাৎ দৃষ্টি করিতেছেন। সোমের পূল্রও উপাত্তে পাকিয়া, ইহাঁকে অবৈক্ষত অর্থাৎ দুলন করিয়াছেন। কিন্তু স্থা, ভৌম ও পনৈশ্চর ইহাঁকে নাবৈক্ষত অর্থাৎ ইহার উপর দৃষ্টিপাত করেন নাই। মহারাজ! তোমার এই পূল্র ধন্ত ও সর্কবিধ কল্যাপসমৃদ্ধিসম্পন্ন ইইবেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা দৈবজ্ঞগণের ঈদৃশ বাক্য প্রবণ করিয়া, নিজ স্থানে থাকিয়া, হর্বপূর্ণ চিত্তে বনিতে লাগিলেন, দেবগণের মধ্যে গুলু, গুলু, সোম, ইহারা এই বানকের উপরি
দৃষ্টি করিয়াছেন এবং স্থ্য, বা মলল অথবা শনৈশ্চর ইহালের দৃষ্টি হয় নাই। ডোময়া বারমার এইয়পে ধে আবৈক্ষতশক প্রয়োপ করিলে, সেইকারণে আমার এই পুত্র অবীক্ষিতনামে পৃথিবীজে বিধ্যাত হইবেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অবীশিত বেদবেদালে পারদর্শিতা লাভ ও কণ্পুতের নিকট লগ্দর অল্প্রান প্রহণ করিরাহিলেন। সেই রাজকুমার রূপে অধিনীকুমারহরকে, বৃদ্ধিতে বাচম্পতিকে, কান্তিতে চক্তকে, ভেলে ক্র্যাকে, থৈব্যে সাগ্রকে, সহিফুতার পৃথিবীকে অতিক্রম ক্রিয়াহিলেন। শৌর্যে কেছই লেই বাব্যবান্ মহালা রাজপুতের সমকক হিল না। হেমধর্মের আত্মহা বরা, ক্রেদবের তনরা গৌরী, ব্রিরর পুত্রী স্ভলা, বীরের স্তা গীলাবতী, বীরভজের গৃহিতা নিভা,

ভীনের মায়লা নাজবতী, দল্ভের পুলী কুম্বতী, ইহাঁরা স্কলেই অয়মনে তাঁহারে গ্রহণ করিরা-হিলেন। ডব্রিল, বে সকণ রনধী অরম্বরে আমোদিনী হইরা, ইহাঁরে অভিনন্ধন করেন নাই, ভিনি অরং বলপুর্বক তাঁহাদিগকে গ্রহণ করিরাভিলেন। সেই বলবানু রাজপুত্র বলোজত হইরা, অকীয় বীব্য আশ্রমপুর্বক সমবেত নৃপতিদিগকে নিরাক্তও তত্তৎ লগনার পিতৃকুলকেও পরা-হত করিরা, ঐরপ অফুঠান করেন।

কোন সময়ে বৈদিশাধিপতি বিশালের আত্মজা অনতী বৈশালিনী অর্থরে প্রবৃত্তা হইয়া, তেন্ত্রা-জ্বারে তাঁহারে প্রত্যাধ্যান করিরাভিলেন। তিনি বলগর্মিত হইরা, সমবেত সমন্ত রাঞাকে পরিভূত করিরা, অন্তান্ত রমণীদিগের ভাষে ঐ বৈশালিনীকে বলপুর্বক হরণ করেন। তৎকালে ঐ সকল নরপতি সেই মানশালী অবীক্ষিত কর্তৃক বারধার নিরাকৃত ও তল্লিবন্ধন অতিমাত্র নির্মেণগ্রন্ত হইরা, আকুল হ্রদরে প্রস্পর বলিতে লাগিলেন, তোমাদের এই রাজজ্ঞার ধিক ! দেখ, তোমরা সকলেই বনশানী; তাহাতে মাবার সকলেই এক মাতি; তাহার উপর মাবার অনেকে এক এ বিশিত হইরাছ। কিন্তু এক জন এই লগনাকে অনায়াদেই গ্রহণ করিব। তোমরা দহ করিয়া त्रहिता। कुर्यान भूक्षणां काशांक अवश्व कराज खेंगाज शहात, त्य ताकि जाशांत काखांन व्यर्भाष ভাছাকে সেই আকুমণ হইতে উদ্ধার করিতে পারে, ভাহারই নাম প্রকৃত ক্ষ্তির। কিন্তু ত্রিওর ব্যক্তিরা রুগা প্রতির নাম ধারণ করে। অগবা, অন্তের কথা দূরে থাক, এই গুরান্ধা অবীকিত ভোমাদিগকে কত অধাৎ আক্রমণ করিলে, তোমরা তাহা হইতে আল্লাকে তাণ করিতে পারিলে না। অতেএব ক্তিয়বংশে জন্মগ্রহণ করিয়া, এইরূপ মণ্মানে তোমানের হৃদর কি কুল হইল না ? কুত, মাগধ ও বন্দিগণ, তোমাদিগকে যে স্ততি করিয়া থাকে, অদ্য অরাতি বিনাশ করিয়া, তাহা मठा कत : (यन जांश त्रुपा ना हत । जांभारतत्र अहे तालामक अपना रयन निगस्तत्र त्रुपा ममन-বোৰিত না হয়। যাহারা বিশিষ্ট কূলে জন্মগ্রহণ করিয়াছে, তাহাদের অপেকা পৌরুষবান পুরুষ-গণ শেষ্ঠ। মরণকে কে নাভয় ক:র ? আবার, বিনাবুদে কেই বা অমর হইয়া থাকে ? বিশে-ষতঃ, শস্ত্রই তোমাদের বৃত্তি। অতএব ঐ সক্ষ বিবেচনা করিয়া, পৌক্ষ পরিত্যাগ করিও না।

সেই সকন নরপতি এবন্ধি বাক্য প্রবণ করিয়া, অতিমাত্র বিফারিত অমর্থে পরিপ্রিত হটরা উঠিলেন এবং স্বস্থ আয়ুধ গ্রহণ করিয়া, বিপক্ষের প্রতি অভ্যুখান করিলেন। কেছ রথে, কেছ অখে ও কেছ বা গলে আরোহণ করিয়া এবং অস্তাগ্সরা অমর্থবশ্বদ হইয়া, প্রজ্ঞেই অবীক্ষি-ভের সকাশে স্মাগ্ত হইলেন।

ইতি স্বীক্ষিতচরিতে দ্বাবিংশতাধিকশতভ্য স্বধ্যার।

# ত্র্যোবিংশ ত্যধিকশত তম অধ্যার।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইরপে রাজা ও রাজপুত্রগণ সকলে রণসজ্জার সক্ষিত হইলে, মহাতাপ অবীক্ষিত তংকালেও ভাইানিগকে অনেকবার পরাত্ত ও পর্গুলত করিলেন। অনন্তর, মূনে । পেই একাকী অবীক্ষিতের সহিত ঐ বহুসংখ্যরাজা ও রাজপুত্রগণের লারণ সংগ্রাম উপাইত হইল। তাহাঁর। সকলেই অভিমাত্ত হুৰণে। অনি, শক্তি, পনা ও বাণ হতে ভাইারে আঘাত করত বুছ করিতে লাগিলেন। তিনিও ভাইারের সহিত বুছে প্রবৃত্ত হইলেন। তিনি কভাত্ত ও বলবান্। শত শত প্রচিও শরে ভাইারিগকে বিছ করিলে, তাহাঁরা স্পাণিত শরনিকর প্রহারে ভাইারে বিনীপ্ করিতে লাগিলেন। অনভর তিনি কাহারও বাহুও কাহারও বা শিরোধরা ছেদন করিরা, কাহারও হলর বিষ ও কাহারও বৃহংগ্র তাড়িত এবং কাহার হতীর কর ও অনেকের

শির ছেদন এবং মন্তান্তদিগের রপের অখ দক্ষ ও অপরের সার্থিকে সংহার করিলেন এবং সমুধে সমাগত শ্র সক্পকে শ্রপরম্পরার সাহায্যে বিগণ্ডিত করিয়া, হস্তগাঘবপ্রদর্শনপূর্কক কাহারও ধমুও কাহারওবা থজা ছেদন করিয়া ফেলিলেন। অনন্তর তিনি বর্ম ছেদন করিলে, কোন কোন নৃপনন্দন বিনষ্ট হইলেন এবং তৎকর্ত্ত আহত হইয়া কোন কোন পদাতি রণ পরিজাগ করিল। এইরপে তিনি সমগ্র রাজমণ্ডলীকে আকুলীকত করিলে, শত শত বীর মরণে ক্বত-নিশ্চয় হইয়া, অবস্থিতি ক্রিল। তাহারা দকণেই সংক্লদস্ভুত, দকলেই মুবা ও শৌগ্যশালী এবং সকলেই লজ্জাভারসম্বিত। অভাভ সকল দৈত নিঃশেষে পরাজিত হইয়া, পলায়নপরায়ণ হইল। মহীপতিনক্ষন সবীফিত অতিমাত্র রোধবশ হইয়া, ঐ গকল নরপালের সহিত ধর্মাতু-সারে যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। মহামুনে ! তিনি তাহাঁদের সকলেরই যন্ত্র ও কবচ ছিল্ল ভিল্ল করিতে কুত্রসংকল এবং ধ্রাহুদারে যুদ্ধ করিতে প্রবৃত হইলে, তাইারা ধর্ম ত্যাগ করিয়া, যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন। রাজনন্দনগণের বদনমণ্ডল প্রস্বেদসলিলে আর্দ্র হইয়া উঠিল। ঐ সময়ে কেছ শরপরম্পরা প্রহার করিয়া, তাহাঁরে বিদ্ধ, কেহ তাহাঁর ধহু ছিন্ন, কেহ তাহাঁর ধ্বল ভূপাতিত, অন্ত সকলে তাহাঁর অখনিগকে নিহত, অপরে তাহাঁর রথ ভগ, কেহ কেহ গদাপাত ও শ্রাঘাত-পূরক তাঁহার পৃঠদেশ তাড়িত করিলেন। শ্রাদন ছিন হেইলে, নুপনন্দন অবীকিতে অসি ওচর্ম গ্রহণ করিলেন। তাহাও অন্ত একজন যোদা ভূমিতে পাতিত করিল। অদি ও চর্ম ছিন্ন হইলে, তিনি ষেমন গলা গ্রহণ করিলেন, তৎক্ষণাৎ আর একজন কুডান্তের ভাষ, কুরপ্রের আঘাতে তাহাছেদন করিয়া দিল। অনন্তর কোন কোন রাজা শত সহস্র ও কেহ কেহ শত শত শরে ভাহাঁরে বিদ্ধ করিতে লাগি:লন। তাহাঁরা সকলেই ধম্ম যুদ্ধে পরামুণ হইয়াছিলেন। স্থতরাং, যাহার যেরপে ইচ্চা ও স্থবিধা, সেই রূপেই দকলে একনত ও একযোগ হইয়া, তাঁহাকে আঘাত করিতে লাগিলেন। এই রূপে িনি একাকী বহু কর্তৃক আর্দিত ও বিহবল হইয়া, পৃথিবী-পৃষ্ঠে প্তিত হইলেন। তথন মহাভাগ রাজপুত্রেরা তাইাকে বন্ধন করিলেন। তাঁহারা সকলেই ধর্ম ভ্যাণ করিয়া, ভাইাকে গ্রহণপূর্ক্ক রাজা বিশাণের সহিত বৈদিশপুরে প্রবিষ্ট হইলেন। অবী-কি তকে বন্ধনপূর্বক লইয়া গিয়া, তাঁহারা সকলেই অতি শত্র আহলান ও হর্ষ অন্নভব করিলেন।

অনন্তর তাইবা অবীক্ষিতের দহিত দেই স্বয়স্থরা কলাকে প্রমধ্যে স্থাপন করিলে, রাজা ও প্রোহত বারশার তাইবে কহিতে লাগিলেন, এই সমবেত নরপতিগণ মধো যাইকে ভোমার অভিকৃতি হয়, তাহাকেই বরণ কর। মুনে! এইপ্রকারে বারস্থার অনুরক্ষা হইলেও, যথন সেই মানিনী কাহাকেও বরণ করিলেন না, তথন রাজা তাহার বিবাহার্থ দৈবজকে জিজাগা করিলেন, ইহার বিবাহের অপেক্ষাক্ত বিশিষ্ট দিন নির্দেশ কঞ্চন। দেখুন, অদ্য ঈদৃশ বিশ্লোপপাদক যুদ্ধ সমুদ্ধ ত হইণ।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা এইপ্রকার জিপ্রাধা করিলে, দৈবজ্ঞ সবিশেষ বিবেচনা সহকারে প্রমার্থ পরিজ্ঞাত ও তরিবন্ধন ক্র্মনায়মান হইয়া. তাঁহাকে কহিছে লাগিলেন, মহারাজ! প্রশন্ত-গগ্ধ-যুক্ত অভাগ্র ভভ দিন সকল অতিরাৎ উপস্থিত হইবে। দেই সমস্ত উপস্থিত হইলেই, বিবাহার্থ উদ্যোগ করিবেন। আদ্যু আর বিবাহে প্রয়োজন নাই। কেননা, এই মহাবিদ্ধ উপস্থিত ইইল।

हे डि बरीकिट इत बिल डार्व नात्र बरबादिश्य छाधिक थ छ उम बधात ।

## চ ভূর্বিংশ ত্যধিকশত তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর করন্ধনপত্নী বীরা ও অভাভ নরপতিগণ দকলেট শুনিলেন, অবীকিত বন্ধ হইরাছেন। মহামুনে ! পূত্রকে অধর্মপূর্বক বন্ধ করা ইইরাছে, শ্রবণ করিয়া, রাজা করন্ধন বহকণ সামন্ত রাজগণের সহিত চিন্তা-প্রায়ণ ইইলেন। তাঁহাদের মধ্যে কেহ কেহ বিন্দিন, সমন্ত রাজাকেই বদ করা ইউক। কেননা. তাইারা দকলে মিনিত ইইরা, একালী রাজ্পশ্রকে অধর্মাছে। কেহ কেহ বিলিলেন, এখনই বাহিনী যোজনা করা ইউক; কিল্প বিসির ধাকা ইইতেছে ? ছরায়া বিশাণ ও তথার সমাগত অভাভ রাজালিগকে বদ করা ইউক। অভাভ লোকেরা কহিলেন, অবীকিতই প্রথমে ধর্ম ত্যাগ করিয়াছেন। ধেহেত্, তিনি অভায় করিয়া, বণপূর্ণক সেই কভাকে তাইার ইচ্ছার বিলন্ধে গ্রহণ করিয়াছেন। তিনি সম্পর্ম সম্বর্মর রাজপ্তানিগকে কর্মণে আপনার বিপক্ষ করিয়া তুলিয়াছেন। সেইজভ তাইারা সকলে দ্দিণিত ইইয়া, ভাইাকে বণ করিয়াছেন।

ভাষাদের এই কথা ভনিয়া, বীরপদ্মী, বীরপ্রস, বীরবংশীয়া বীরা দবিশেষ আহলাদিতা হইয়া. স্থামীর ও অন্তান্ত নরপতিগণের সমকে বলিতে লাগিলেন, হে পার্থিবগণ। আমার সেই ভদ্র-শালী পুত্র ভদু অনুষ্ঠান করিয়াছেন। বেছেড, তিনি সমুদয় রাজাকে জয় করিয়া, বলপুর্গ্ধক ক্সাকে গ্রহণ করিয়াছেন। তদর্থ ব যুদ্ধ উপস্থিত হয়, তাহাতে তিনি একাকী হইলে, সকলে মিলিয়া যে তাইার সহিত যুদ্ধ করিয়া অধর্ম করিয়াছে, ভাহাতেও আমার দেই পুত্তের, আমার মতে, কোনই অপ্রেয় হয় নাই লোকে, সিংহের ভাষ, জিঘাংসার প্রবণ হইয়া, যে, অধ্পর্যশে নয়মার্গ লজ্খন করে, তাহাই পুরুষকার। দেখ, আমার দেই প্র স্থাম্বর প্র রা খনেকানেক ক্লাকে অতি-মানশালী নরপতিগণের সমকে ঐকপ বলপর্বক গ্রহণ করিয়াছেন। সচরা6র হীনশ্রেণীর লোকেরাই যাক্রা করিয়া থাকে। স্থতরার্গ, যাক্রা কখন ক্ষত্রিয়ের ধর্ম হইতে পারে না। তাঁহারা বলশালিগণের সমক্ষে বনপূর্বকই গ্রহণ করিয়া থাকেন। প্রকৃত-ক্ষত্রিয়-ধর্মবিশিষ্ট নরপতিগণ লোহশুঝালে বন্ধ হইলেও ক্থন কা চর হইয়া বঞ্চা স্বীকার করেন না, প্রভাত বলপুর্বকই অফু ষ্ঠানে প্রবৃত্ত হন। অত এব দৌর্মনতে প্রার্থালন নাই। তিনি যে বন্ধ হইবাছেন তাহা সর্কতো ভাবে শ্লাবারই বিষয়। একলে আপনাদের মন্তকে যদি আয়ুধ সকণ নিপতিত হয়, তাহাও ঐকপ শাঘনীয় হইবে। অহত এব যুদ্ধের জাত সকলে অরাপর হটন। আ ভ রণ সকলে অধিরোহণ করন। আর বিলম্ব না করিয়া, অম্ব, হস্তী ও সার্গি সক্সকেও স্ক্রিত করা হউক। আপুনারা বহুসংখ্যক রাজার সহিত এক জনের ধুদ্ধ কি মনে করিতেছেন ? যিনি শুর, তিনি আল যুদ্ধে একাকী এরপ বহু জনেরই দহিত যুদ্ধ করিয়া, পরিতোধ লাভ ক'রন। দেথুন, ষাহাদিগকে কোনমতেই ভয় হয় না, ভাদৃশ অল্লসংথাক নরেক্ত প্রভৃতি শহুগণে কাহারই বা সামর্থানা কলেয় ? বলিতে কি. ঐরপ ব্যক্তি স্বয়ং কাতর হইলেও, ভাহাদের গ্রতি সামর্থ্য প্রকাশ করিষা থাকে। দিবাকর বেমন চতুদ্দিগ্রাপ্ত অন্ধকাররাশি নিরাকরণ ক:রন, সেইরপ যে ব্যক্তি বলবীর্যাদিতে পৃথিবী-বাাপী সমন্ত লোককে অভিভূত করিয়া, বিরাজমান হয়, ভাহাকেই শুর বলে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, পত্নী এইরূপে উদ্ধিত ক্রিলে, রাজা কর্ত্তম পুত্রের পত্তদিগকে সং-হার ক্রিবার জন্ত নৈত সকল সজ্জিত ক্রিলেন। জনস্তর রাজা বিশাল ও সেই সকল ভূপতির সহিত তাইার যুদ্ধ উপিটিত হইল। এইরূপে বিশাল ও তাইার জন্মবর্তী নরেজ্বল মহীপতি কর্ত্তাকার সহিত তিন দিন বৃদ্ধ ক্রিলেন। জনস্তর সেই সম্পর ভূপমণ্ডল প্রাজয়প্রায় হইলে, রাজা বিশাল স্বয়ং আর্থ্য হত্তে মহীপতি কর্ত্তানের স্মীপত্ত ইইলেন এবং তাঁহার প্রাক্তে মেচিল করিরা দিলেন। করন্ধম তৎকর্ত্ক স্বিশেব পুঞ্জিত হইরা সম্প্রীতি সহকারে সেই নিশা স্থাধ বাস করিলেন।

অনস্তর রাজা বিশাল খীর ক্সাকে নইয়া. বিবাহার্থ সমুপছিত হুইলে, বিপ্রার্থ ! অবীক্ষিত পিতার সমূর্থে বলিতে লাগিলেন, নুপ! আমি ইহাকে অথবা অস্ত কোন রমনীকে পরিগ্রহ করিব না। কেননা, ইহার সমকে আমি শক্রু কর্তৃক পরাজিত হুইয়াছি। অস্ত বাক্তিকে এই ক্সা সম্প্রদান করা হুউক। এই ক্সা অস্ত কাহাকেও বরণ ক্রুক; শক্রুক্তৃক বাহার যুশ ও বীর্যা আমার স্তার পণ্ডিত ও অপমানও সংঘটিত হয় নাই। যেহেতু, আমি, শভাবতঃ হুর্বলা এই অবলার স্তার, শক্রুণ কর্তৃক পরাজিত হইয়াছি; অতএব আমার মহুয়্যুই বা আর কি আছে? ইহার সহিত আমার কোন প্রভেদই নাই। জীজাতি দর্ম্বাই পরতন্ত্রা এবং পুক্ষ সর্বনাই খাধীনতাব-বিশিষ্ট। অতএব বে ঘাক্তি পরতন্ত্র, তাহার আবার মহুয়্যু কি ? আমি যাহার সমূর্থে শক্রুণ প্রীয় তৃপগণ কর্তৃক পরাভূত হইয়াছি, তাহাকে আর কি বলিয়া, এই মুথ দেখাইব ?

রাজপুত্র এইরূপ কহিলে, ভূপতি বিশাল স্বীয় তনরাকে কহিলেন, বৎদে ! তুমি এই মহাত্মার কথা শুনিলে। অতএব, কণ্যানি ! অত্য যাহাকে তোমার মন যায়, তাঁহাকে পতিরূপে বরণ কর। আমরা তোমার প্রতি আদরবশত: যাহাকে তাহাকে বাদ প্রদান করিব। অগ্নি রুচিরাননে ! তুমি এই উত্তর্বিধ মার্গের একতর অবশ্বন কর।

কল্ঠা কহিলেন, তাত ! ইনি মণ ও বীর্য্যের হানিজনক সংগ্রামে সম্যগ্রপ অফুটান করিয়াছেন। কিন্তু ইহাঁর বিপক্ষপক অনেকে এক এ মিলিত হইয়া, অসম্যক্ আচরণপূর্বক ইহাঁকে পরাজিত করিয়াছে। দেখুন, ইনি একাকী, সিংহের ল্লায়, যুদ্দের জল্প সমাগত বহু লোকের সমক্ষে
বে অবস্থান করিয়াছিলেন, তাহাতেই ইহাঁর বিশিষ্টনপ বীর্য্য প্রকটীকৃত হইয়াছে। ইনি কেবল
যুদ্দে একপে অবস্থিতি করেন নাই; অনেকবার তাহাদের সকলকে জন্মও করিয়াছিলেন। ইহাতেও ইহার বিক্রম প্রকাশিত হইয়াছে। এই রূপে ইনি শৌর্য্য ও বিক্রম উভন্ন গুণেই অলক্ষত এবং
ধর্মায়ুসারে যুদ্ধ করিয়াছেন। কিন্তু সম্পায় নরপতি অধর্ম করিয়া, ইহাঁকে জন্ম করিয়াছেন।
অতএব, এবিষয়ে গজ্জার বিষয় কি ? তাত! আনি ইহাঁর রূপমাত্রেই লুক্টিতা হই নাই।
ইহাঁর শৌর্যা, বিক্রম ও ধৈর্যাও আনার মন হরণ করিয়াছে। অতএব অধিক কথার প্রেয়োজন
নাই। আপনি আমার জন্ম এই মহামুভাব নৃপতির নিকট যাজ্ঞা কর্মন। কেননা, ইনি ভিন্ন
অন্ত পতি আমি বরণ করিব না।

বিশার কহিলেন, রাজপুত্র ! আমার কলা যুক্তিনঙ্গতই বাক্য প্রয়োগ করিলেন এবং তোমার জুল্য কুমারও মহাতলে নাই। তোমার শোর্যা যেমন অবিসহাদী, পরাক্রমও তেমনি সর্বাতি-শায়ী। অতএব, বীর ! মদীয় ছহিতাকে পরিগ্রহ করিয়া, আমাদের বংশ পবিত্র কর।

রাজপুত্র কহিলেন, নৃপ ! আমি ইহাকে এবং অভ কোন রমণীকেই পরিগ্রহ করিব না। মুহুজেশ্ব ! আমার আত্মাতেই স্ত্রীময়ী বুদ্ধি প্রায়ভূতি হইয়াছে।

মার্কণ্ডের কহিংশন, তথন রাজা করম্বর পুত্রকে বলিতে লাগিলেন, বংস। এই স্বক্র বিশাশ-তনরা ভোমাতেই দৃঢ্রূপে অনুরাগবতী হইয়াছেন। সতএব তৃমি ইহাঁকে গ্রহণ কর।

রাজপুত্র কহিলেন, তাত ! আমি পুর্বেক কথন আপনার আজ্ঞাভঙ্গ করি নাই। অতএব,
আমাকে এরপ আজা কয়ন, যাহাঁ আমি করিতে পারি।

মার্কণ্ডের কহি লন, রাজপুত্র এইরঞ্জেনির্ক্ষাভিশর প্রদর্শনে বছচিত হইলে, রাজা বিশালের অবস্থ বাক্নীকৃত হইল। তথন ভিনি ক্সাকে কহিলেন, বংসে! তুমি এই প্রয়োজন হইতে স্বনীর মনকে বিনিবর্ত্তি কর। অঞ্জ অনেক রাজপুত্র আছেন। তাঁহাদের মধ্যে অন্তত্তরকে বরণ কর।

কল্পা কহিলেন, তাত ! ইনি যদি আমাকে 'পরি শ্রু না করেন, তাহাহইলে, এই বর প্রার্থনা করিতেছি, তপল্লা ভিন্ন অন্ত কেহই এই জন্মে আমার ভর্তা হইবে না।

मार्करश्वर कहिरनन, जनस्वत त्रांका कतकम विभारनत महिल हर्बमहकारत छथात्र निनखर जब-ষ্টতি করিরা, পরে নিজপুরে অভ্যাগত হইলেন। তৎকালে পিতা ও অক্সাক্ত নরপতিগণ বিবিধ নদর্শন ও প্রাবৃত্ত বর্ণনপূর্বক সান্তনা করিলে, রাজকুমার পুরে প্রভাগিমন করিলেম। এদিকে গট কথা কৰীৰ বাছবলৰ কৰ্ত্তক অভুজাতা হট্যা, অৱশ্যে গমন ও আহারভাগে পূৰ্মক প্রম वताना अवनयन कतिता, जनकत्व अवुला हरेलन। यानवत निताशांत अविशि कतांत. নরতিশর আর্ভাবাপরা, রুশা ও ধমনীসম্ভতা হইয়া উঠিলেন। এইরূপে মুমুর্ব লশা উপস্থিত हित्त, छाँहोत्र छेरमार कीन रहेम्रा व्यामित । छथन त्मरे वानिका त्मर्छात्म कृष्टमसमा रहेत्नम । দ্ৰগৃণ ভাষাকৈ আত্মভাগে কুতবৃদ্ধি লানিয়া, সকলে মিণিত হইয়া. দেবদুতকে ভাষায় অস্তিকে शिंशिहाँ विश्वत । पृत्र छाई।त नकात्न नमागठ रहेशा, कहिए नागितन, अप्ति भाषितासाम ! দ্বগ্ৰ আমাকে দৃত্রপে ভোমার নিকট পাঠাইয়াছেন। যাহা করিতে হইবে, ভন। এই শরীয় মতীব তুর্ল छ। ইহা তুমি ত্যাগ করিও না। অয়ি কল্যানি। তুমি চক্রবর্তীর অননী হইবে। बहा ভাগে। তোমার পুত্র অরাতিকুল নির্দান করিয়া, সপ্তৰীপা পৃথিবী ভোগ করিবেন। ভাইার লাক্সা অংপ্রতিহত হইবে। তিনি দেবগণের প্রমশক্ত তরুলিৎ ও অরংশভুকে সংহার এবং সমু-নার প্রজাকে ধর্মে সংস্থাপন করিয়া, অকীয় ধর্মাত্মারে অধিল চাতুর্কর্ণ্যের পরিপালন ; দক্ষ্য, মুদ্ধ ও অত্যাত্ত ছাইচিত্তগণের সংহরণ এবং বিশিষ্টদক্ষিণাদানপূর্বক বাজিমেধাদি বট্দহত বজের আহরণ করিবেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজনন্দিনী সেই দিবামাণ্যাপ্রলেপন অস্তরীক্ষম্ব দেবদ্তকে দর্শন করিরা, বলিতে লাগিলেন, তুমি দেবগণের দৃত; সত্যই স্বর্গ হইতে আগিরাছ, সন্দেহ নাই। কিন্তু স্থানী ব্যতিরেকে আমার তাগৃশ পুত্র কিরপে উৎপন্ন হইবে ? অবীক্ষিত ভিন্ন আন্ত কেইই একমে আমার ভর্ত্তা হইবেন না; ইহাই আমি পিতার নিকট প্রতিজ্ঞা করিরাছি। আমার পিতা ও স্থানীর জনক করন্ধন বার্থার অহুরোধ এবং আমিও সমাগ্বিধানে থাক্ষা করিরাছিলাম। তথাপি, তিনি আমাকে পরিগ্রহ করিলেন না।

দেবদ্ত কহিলেন, মহাভাগে ! তোমায় আর অধিক বনিবার প্রয়োজন নাই। তোমার পুত্র উৎপন্ন হইবে। অতএব তুমি অধর্ম করিয়া, আয়াকে তাাগ করিও না। এই কাননেই অবস্থিতি করিয়া, অকীয় এই ক্ষীণ শরীরকে পোষণ কর। তোমার তপঃপ্রভাবে এই সমন্তই সর্কাল-স্বন্ধস্থ সুসম্পন্ন হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই বণিরাই দেবদূত মধাগত প্রস্থান করিলেন। রাজনন্দিনীও অহুদিন আয়ুত্ত পোষণ করিতে লাগিণেন।

ইতি অবীকি ১৮রিতে চতুর্বিংশতাধিকশতভম অধ্যায়।

# পঞ্বিংশত্যধিকশতত্ম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর অবীক্ষিতের জননী বীরপ্রস্থ বীরা পুণাাহে পুত্রকে আছবান করিরা কহিলেন, বংদ । আমি ভোমার মহাত্মা পিতা কর্ত্ব অমুজ্ঞাতা হইরাছি। ছন্তর কিনিছিক বতের জক্ত উপবাদ করিব। এই বত ভোমার পিতার বেনন আরম্ভ, তেমনি ভোমার ও আমার উত্তরেরই সাধ্য। তুমি প্রতিজ্ঞা করিলেই, আমি এবিবরে প্রবৃত্তা হইতে পারি। আমি ভোমার পিতার মহাকোব হইতে অর্থ্বেশ্রুখন প্রদান করিব। এই ধন ভোমার পিতার আরম্ভ। তিনি আমাকে এ বিবরে অনুমতি করিরাছেন। এই বত ক্লেশাধ্য হইলেও, আমার আরম্ভ।

এক্ষণে তোমার কণ পরাক্রমে ইহা সাধাই হউক, আর অসাধাই হউক অণবা গৃঃথসাধাই হউক, বদি তুমি এ বিষয়ে প্রতিজ্ঞা কর, তাহাহইলে, আমি এই ব্রভের অমুষ্ঠান করি। অভএব ভোমার মত কি, বল ?

অবীক্ষিত কহিলেন, ধন আমার পিতার আয়ত। তাহাতে আমার স্থানিত্ব নাই। তবে আমার শরীর হারা বাহা নিশান্য হইবে, তাহা আমি ভাপনার আনেশানুসারে করিব। মাতঃ! যাহা কিছু ধন আছে, সমন্তই পিতার আয়ত। তিনি যদি আপনাকে অন্থমতি করিয়া থাকেন, তাহাহইবে, আপনি নিশ্চিতা ও নির্বাগা হইয়া, কিমিছকেরতে প্রবৃত্তা হউন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন সেই রাজমহিবী কিমিচ্ছক ত্রতের জন্ম সমাক্ রূপে উপবাস করিরা, সংযম ও পরমভক্তি সহকারে বণোক্ত বিধানে কুবেরের, সমুদায় নিধিগণের, নিধিপালবর্তির এবং সন্ধার পূজা করিলেন।

ঐ সময়ে নীতিশাত্র-বিশারদ সচিবগণ নির্জ্জনে গৃহমধ্যে আসীন রাজা করন্ধমকে কহিতে লাগিলেন, রাজন্ এই পৃথিবী শাসন করিতে করিতে, আপনার শেষ বয়স উপস্থিত হটয়াছে। এদিকে, আপনার একমাত্র পুত্র অবীক্ষিত দারপরিগ্রহ করেন নাই; স্থতরাং. তিনি নিঃসন্তান পরণোক গমন করিলে, এই পৃথিবী নিন্চিতই আপনার বিপক্ষপক্ষের অন্ধ্যামিনী হইবেন এবং আপনার বংশের ক্ষয় ও তৎসহকারে পিতৃগণের জলপিওও লোপ পাইবে। এইরপে ক্রিয়াহানির সহিত আপনার স্বিপুল শক্রভয় সংঘটিত হইবে। অতএব যাহাতে আপনার পুত্র সতত পিতৃগণের উপকারকল্লে মনোযোগী হন. তদমুরপ বিধান কর্জন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ঐ দমরে জগতীপতি করন্ধন শুনিতে পাইলেন, বীরার পুরোহিত সমাগত আবীর প্রতি এইরপ বাক্য প্রেরাগ করিতেছেন, তোমরা কে কি ত্ঃলাধ্য ইছে। কর ? তোমা-দের কাহার কি করিতে হইবে ? করন্ধনের মহিনী কিনিছকে ব্রের জভ উপবাদ করিয়াছেন। রাজপুত্র অবীক্ষিত পুরোহিতের কথা কর্ণগাতর করিয়া, রাজধারে সমাগত সমুদ্র অবীকে বিলিতে লাগিলেন, আমার এই শরীর ধারা কাহার কি কার্য্য সাধন হইতে পারে, বল। মদীয় মহাজাগা জননী কিনিছকে-ব্রতোপবাদ করিয়াছেন। অবিগণ ! দকলে প্রবণ কর। আমি তৎকালে প্রতিজ্ঞা করিয়াছি। দেইজভই এই কিনিছকে ব্রতের অহুঠান হইয়াছে। অতএব, তোমরা কি ইছে। কর, বল, আমি তাহা দিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা করন্ধন পুজের মুথ হইতে বিগণিত ঈদৃশ বাক্য আকর্ণন করিয়া, তৎক্ষণাৎ ভাষার সমীপস্থ হইয়া কহিলেন, বৎস! আমি এবিষয়ে একজন অর্থী; আমাকে আগার অভিশ্বিত বর প্রদান কর।

অবীক্ষিত কহিলেন, তাত ! আপনাকে যাহা দান করিতে হইবে, তাহা বলুন। সাধ্যই হউক, অসাধ্যই হউক. আর হঃসাধ্যই হউক, অবগ্য তাহা করিব।

রাঞ্জা কহিলেন, তুমি যদি পতাই প্রতিজ্ঞা করিয়া থাক, কিমিচ্ছক-দান করিবে, তাহাহইলে, আমাকে আমার ক্রোড়স্থিত পৌত্রের মুখ দর্শন করাও।

অবীকিত কহিলেন, রাজন্। আমি আপনার একমাত্র পুত্র; তাহাতে আবার, একচর্য। অবগন্ধন করিয়াছি। আমার পুত্র নাই। তবে আমি কিরপে পৌত্রের মুথ দর্শন করাইব ?

রাঞ্জা কহিলেন, তুমি এই যে, ত্রজাচর্য্য তাত অবলম্বন করিরাছ, ইহাতে তোমার পাপ হই-তেছে। অভএব তুমি আমাকে মোচন ক্রিয়া, আমাকে পৌত্রের মুখ দর্শন করাও।

অবীক্ষিত কহিলেন, মহারাল। ইহা আমার পকে বিষম হইবে। অতএব অন্ত কিছু আদেশ করুন। দেখুন, বৈরাগ্য উপস্থিত হওয়াতেই, আমি স্ত্রীসস্তোগ ত্যাগ করিয়াছি। অতএব আর স্ত্রীসভাগ করিব না

ंबाक्षा कविरानम्, दिवेतिनेन देशारिम अस्मरिक धक्क रहेत्रा, युद्धकरत्, रमशरिम अवशास कवित्री

থাকে। তথাপি, তুমি যদি বৈরাগ্য আশ্রয় কর, তাহাইইলে, তুমি অপণ্ডিত। অথবা, অধিক কথার প্রায়োজন কি ? ব্রহ্মচর্য্য পরিত্যাগ কর এবং মাতার ইচ্ছাস্থারে আমাকে পৌত্রস্থ দর্শন করাও।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অবীক্ষিত বারহার এইরূপ বলিলেও, রাজা করেন্দ বধন আর কিছু প্রার্থনা করিলেন না, তথন তিনি পুনরার কহিলেন, তাত! আপনাকে আমি কিমিছক দান করিরা, সহটেই পড়িলাম। অতএব আমি পুনরার লজ্জাতাাগ করিরা, দারপরিপ্রহ করিব। আমি স্ত্রীর সমক্ষে পরাজিত ও ধরণীতলে বিনিপাতিত হইয়াছি। পুনরার সেই ত্ত্রী পতি হইবে। ইহা অতীব হুছর। তথাপি, কি করিব ? সভাপাশে বন্ধ হইয়াছি। অতএব যাহা বলিতেছেন, তাহাই করিব। আপনি নিজ আজ্ঞার ফল ভোগ করুন।

ইতি অবীকিতচরিত নাম পঞ্বিংশত্যধিকশত্তম অধ্যায়।

# ষড়্বিংশত ধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, একদা রাজনন্দন অবীক্ষিত মৃগরায় গমন করিয়াছিলেন। বনমধ্যে মৃগ, বরাহ ও শার্দ্ লাদি দংটি দিগকে বিদ্ধ করিয়া, বিচরণ করিতে করিতে, সহলা শুনিতে পাইলেন, কোন রমণী বারহার তারহারে চীৎকার করিয়া, ভয়-গদ্গদ বাংকা বলিতেছে, আমাকে আশি কর, আগ কর। বামাকঠবিনিঃস্ত এই শব্দ শ্রবণ করিয়া, তিনি ভয় নাই, ভয় নাই, বলিতে বলিতে, যে হান হইতে ঐ শব্দ আদিতেছিল, তথায় সবেগে অহ্মকে চালাইয়া দিলেন। দহর পুশ্র দৃঢ়কেশ ঐ মানিনীকে আক্রমণ করিয়াছিল। তজ্জ্য তিনি সেই বিজনবনে এই বিদ্রা উচৈচেংবরে চীৎকারপূর্বক ক্লেন করিতেছেন, আমি রাজা করম্বনের পুশ্র পৃথিবীশ্বর ধীমান অবীক্তিরের ভার্যা। ছরায়া অহ্মর আমাকে হরণ করিতেছে। সম্দায় মহীপান, সম্দম্ম পদ্ধর্ব ও সম্দয় গছর্বা ওইকার গৃহার ভার্যা বাহার সম্মুথে তিষ্ঠিতে পারে না, তাঁহার ভার্যা আমি হতা হইলাম। মৃত্যুর ভার্যা বাহার ক্লেষ্য ভার্যা বাহার পরাক্রম, আমি দেই করন্ধনপুত্রের ভার্যা হইয়া, হতা হইলাম।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মহীপালপুত্র অবীক্ষিত শরাদন হতে এইপ্রকার প্রবণ করিরা, চিন্তা করিতে লাগিলেন, এ কি, আমার ভার্যা। এই কাননে ? অথবা ইহা কাননবাদী হুটপ্রস্থাতি রাক্ষ্য-গণেরই মারা। যাহাইউক, আমি যথন আসিয়াছি, তথন সমুদ্য কারণ অবগত হইব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর তিনি বনমধ্যে জভপদে গমন করিরা, সেই অভিমনোরমা সর্বালয়ারভূষিভা কল্পাকে একাকিনী অবলোকন করিলেন। দমুর পুত্র দৃঢ়কেশ দশুহত্তে তাঁহাকে গ্রহণ করিয়াছ। তিনি ভরিবন্ধন বারমার আহি আহি শব্দে চীৎকার করিতেছেন। তদ্দর্শনে অবীক্ষিত তাঁহারে জর নাই বলিয়া, দমুর পুত্রকে কহিলেন, তুমি হত হইলে: রালা কর্ম্ম এই পৃথিবী শাসন করিতেছেন। যাহার প্রতাপে সমুদর মহীকিতই অবনত হইয়াছেন। অভএব কার সাধা, কোনরপ ছুইতা করিতে পারে ? তিনি বর-কার্ম্ব গ্রহণ করিয়া, তগার সমাগত হউলে, তাঁহাকে দর্শন করিয়া, সেই ভ্রসী বারমার কহিতে লাগিলেন আমাকে এই হরণ করিয়া, পরিজ্ঞাণ ক্ষন। আমি রালা ক্রন্থের প্রবধ্ এবং অবীক্ষিত্রে ভার্যা; স্থতরাং আমি সনাধা হইলেও, এই হুই মনাধার ভার, আমাকে বনমধ্যে হরণ করিছে।

মার্কণ্ডের ক্রিলেন. অবীক্ষিত ক্লাব্ধু, ক্গামতে বিবেছনা করিছে লাগিলেন, এই লগনা ক্রিণে আমার ভাগা এবং শিতারই বা ক্রিণে প্তবধ্ ? অথবা এই ভবীকে অঞে উছার করি। পরে সম্দর জানিব। ক্ষত্রিরেরা আর্তের পরিত্রাণহেতুই অত্র ধারণ করেন। অনম্ভর বীর অবী-ক্ষিত ক্ষু হইরা, নেই অতীব ফুর্মতি দানবকে কহিলেন, এই ক্যাকে ছাড়িরা দিরা, প্রাণ লইরা, গমন কর। নত্রা মরিতে হইবে। তথন দানব ক্তাকে ছাড়িয়া, দণ্ড উত্তোলন করিয়া, অধী-কিতের অভিমুখে ধার্মান হইল। তিনিও তাহাকে শর্বর্ধে আছের করিয়া কেণিলেন। সেই অতিমদাধিত দানব শ্রুসমূহে বার্য্যমাণ হইয়া, রাজপুত্রের প্রতি শঙ্কু-শতাবৃত দণ্ড নিক্ষেপ করিল। িনি আপতন্যকালেই শ্রুসমূহে সেই দণ্ড ছেদন করিয়া ফেলিলেন। তথন দানব নিকটস্থ এক বুক গ্রহণ করিয়া, যুদ্ধে ব্যবস্থিত হইল এবং বাজপুত্র শরবর্ষণে প্রবৃত্ত হইলে, তাঁহার প্রতি & বুক নিকেপ করিল। তিনি কামুকি নিমুকি ভলপরপারায় তাহাও তিল তিল করিয়া ফেলিলেন। ভদর্শনে দানব তাঁহার উদ্দেশে শিলা নিক্ষেপ করিলে, তাহাও তৎকর্ত্তক লাঘ্যব্যশে উজ্জ্বিত ও বার্থ হইয়া, ভতলে পতিত হইল। এই রূপে দানব কুপিত হইয়া, যাহা যাহা নিক্ষেপ করিল, তিনি বাণপরপার সহায় ভায় অবলীলাক্রমেই তৎসমস্ত ছেদন করিয়া ফেলিলেন। এইরূপে ভাহার দও বিভিন্ন ও অভাত সমুদর আধুধও ছিল্লিল ইইলে, সে মৃষ্টি উদ্যত করিয়া, সজোধে রাজ-পুতের অভিমুখে ধাৰমান হইল। করন্ধমপুত্র ঐরপ ধাৰনসময়েই বেতদপত্র শর ছারা তদীয় মন্তক ছেদন করিয়া, ভূমিতে পাতিত করিলেন। সেই ছ্টাচেষ্টিত দানব নিহত হইলে, দেবগণ সকলে রাজপুত্রকে সাধু সাধু বলিতে লাগিলেন। অনন্তর তাহাঁরা তাঁহাকে কহিলেন, তুমি বর প্রার্থনা কর। তিনি পিতার প্রিয়কামনায় মহাবীর্ঘা পুত্র প্রার্থনা করিলেন।

দেবগণ কহিলেন, অনব ! তুমি এই যে কন্তাকে মোচন করিলে, ইহারই গর্ভে তোমার মহাবদ চক্রবর্তী পুত্র সমুৎপন্ন হইবে।

রাজপুত্র কহিলেন, পিতাকর্ত্ক সত্যপাশে বন্ধ ইইয়াই, আমি পুল্রকামনা করিলাম। নতুবা, নরপতিগণ কর্ত্ক যুদ্ধে নির্জ্জিত ইইয়া, আমি দারপরিএই তাগ করিয়াডি। আমি বেমন ঐ কারণে বিশাণতনয়াকে পরিত্যাগ করিয়াছি, তিনিও তেমনি আমার জন্ত আমাভির অন্ত প্রত্বের সহবাস ত্যাগ করিয়াছেন। অতএব আমি কিরপে নিতাম্ব নির্দিয়হদয় ইইয়া, সেই বিশালনন্দিনীকে ত্যাগ করিয়া, অন্ত নারী পরিএই করিব ?

দেবগণ কহিলেন, তুমি সর্কাদা যাঁহার শ্লাঘা করিয়া থাক, ইনিই সেই তোমার ভার্য্যা বিশাল-নিশানী। তোমারই অভ তপশ্চরণে প্রবৃত্তা হইয়াছেন। ইংগার গর্ভে ভোমার বীরপুত্ত জ্মিবে। ঐ পুত্র সপ্তাধীপের শাসনক্তা, যজ্ঞ সহস্রের আহঠা ও চক্রবর্তী হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, বিজ্ঞা দেবগণ করন্ধমের পুত্র অবীক্ষিতকে এইপ্রকার কহিয়া, প্রস্থান করিলেন। তথন তিনি পত্নীকে কহিলেন, ভীক্ষা বল, এ কি ? পত্নী তাঁহাকে বনিতে লাগিলেন, আপনি আমাকে ভাগে করিলে, আমি পিতা মাতা প্রভৃতিকে ত্যাগ করিয়া, নির্কোষপ্রতা ইইয়া, অরণ্য আশ্রর করিলাম। বার ! তথার তপতা করিয়া, কলেবর ক্ষীণপ্রায় ইইলে, আমি উহা ত্যাগ করিতে কুল্মক্রা ইইলাম। দেবদ্ত আসিয়া, নিবারণ করিয়া কহিলেন, তোমার গর্ভে মহাবস চক্রবর্ত্তী পুত্র জলিবে। ঐ পুত্র দেবগণের সস্থোষ সংসাধন ও অস্থরগণের সংহরণ করিবে। এইরপে দেবগণের আজাক্রমে দেবদ্ত নিবারণ করিলে, অদীর সক্ষম কামনায় কেহতাগ করিলাম না। মহাভাগ! পরশ্ব গলাহদে সান করিতে গিয়া, অবভরণ করিলে, এক র্ছ নাগ বলপ্রক আকর্ষণ করিয়া, আমাকে রনাতলে লইয়া গেল। তথার সহক্র নাগ স্থাপত্রী ও কুমার্থালের সহিত আমার সম্পুথে আদিয়া অবস্থিতি করিল। অনম্ভর কেহ আমারে তার ও কেহ আমারে পূত্রা করিতে লাগিল। তদনত্তর নাগগণ ও তাহাদের পত্নীগণ সবিনরে আমার নিকট প্রার্থিন করিলে, তামার পুত্র বিবরণ করে। আমরা অপরাধ করিলে, তোমার পুত্র বিবন মারিতে উদ্যুত হইবে। তারবদ্ধন তাহাকে ক্রোমার নিবারণ করিতে হইবে। এই অমুগ্রহ নিকট অপরাধী হইবে। তারবদ্ধন তাহাকে তোমার নিবারণ করিতে হইবে। এই অমুগ্রহ

বিতরণ কর। আমি, তাহাই হইবে, বলিলে, আমাকে দিবা পাতালভূষণ, উৎকৃষ্ট গন্ধ, বন্ধ ও পুশাসমূহে অলঙ্কতা করিরা, দেই বৃদ্ধ নাগ আমাকে এই আলোকে আনরন করিল। আমি পুর্বের ভাষ, কান্তিমতী ও রূপবতী হইরা উঠিলাম। আমাকে এইরূপ রূপান্ধিতা ও সর্কাল্যারভূষিতা দর্শন করিরা, এই স্তুর্গতি দৃঢ়কেশ হরণ করিবার অভিলাবে গ্রহণ করিল। রাজপুত্র ! আপনারই বাহবলে আমি এ যাত্রার উদ্ধার পাইলাম। অতএব, মহাবাহো ! প্রসন্ন হইরা, আমাকে পরিগ্রহ কর। তোমার স্মান ভূলোকে অন্ত রাজপুত্র নাই, আমি সত্যই ব্লিভেছি।

ইতি অবীকিতচরিতে বড়্বিংশত্যধিকশততম অধ্যার।

## সপ্তবিংশত্যধিকশত্তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তিনি, বাহার বে ইজা, তাহাকে তাহাই দিব, প্রতিজ্ঞা করাতে, তদীর পিতৃদেব যাহা বনিরাছিলেন, পদ্ধীর উল্লিখিত বাকা প্রবণপূর্কক তাহা মরণ করিয়া. তাহার জন্ত ভোগতাগিনী সেই ক্তাকে সাহরাগ চিত্তে বলিতে লাগিলেন, দেখ, আমি স্কলকে জন্ম করিয়া তেশীনকে লাভ করি। পরে মরাতিগণ কর্তৃক পরাজিত হইয়া, তোমাকে ত্যাগ করিয়াছি, এখন কি করিব ?

কন্তা কহিলেন, এই রমণীর কাননে আমার পাণিগ্রহণ কর। সকামের সহিত সকামার সমা-গম সর্বাণা সম্যাগ্রূপ স্থশান্তি বিধান করিবে।

রাজপুত্র কহিলেন, আছো, তাহাই করিব। তোমার মঙ্গললাভ হউক। এবিলয়ে বিধিই কারণ। অন্তথা, ভূমি বা কোথার, আর আমি বা কোথার ? উভরে সমাগম সম্পন্ন হইল।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, এই সময়ে তুনয়নামক গন্ধর্ম অন্তান্ত গন্ধর্বগণে ও বরাপরাসমূহে পরিবৃত হইয়া. তথায় সমাগত হইল এবং বলিতে লাগিল, রাজপুত্র ! এই মানিলী আমারই নন্দিনী, ইহার নাম ভামিনা। অগস্ত্যের অভিশাপে বিশালের তনয়া হইয়াছেন। ইনি ক্রীড়া করিতে করিতে বালস্থভাব বশতঃ অগস্তাের রোষ সমুদ্রাবন করিয়াছিলেন। তয়িবন্ধন আগস্তা, মার্থী হইবে, বলিয়া, ইহাকে অভিশপ্ত করেন। আমরা প্রশন্ধ করিয়া বলিলাম, ভগবন্! বালিকা কিছুই আনে নাও বুঝে না। সেইজন্ত আপনার নিকট অপরাধিনী হইয়াছে। অতএব প্রসম্ম হউন। আমবা প্রসন্ম করিলে, মহামুনি মগস্তা কহিলেন, বালিকা বলিয়াই, আমি সামান্তরপ শাপ প্রদান করিয়াছি; স্মতরাং ইহার অন্তাগ হইবে না। আমার পুরী এই ভামিনী অগত্যের শাপে এইকপে বিশালের ভবনে জন্মগ্রহণ করিয়াছে। এই কারণেই আমি ইহার নিমিত এখানে আনিলাম। তুমি এই নৃপাক্ষরা মণীয় আয়্রজাকে গ্রহণ কর। হহার গর্ভে তোমার চক্রবত্তী পুর উৎপন্ন হইবে। "

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজপুর অবীকিও এই কথার সমাত হইরা, তাহার পানিগ্রহণ করিলেন। তুর্ক ম্থাবিধি তাহাদের বৈবাহিক হোম করিলেন। দেব ও গন্ধর্কাণ ঐ সমরে গান করিতে লাগিলেন। অপ্যরারা নৃত্যু আরম্ভ করিলেন। মেদ সকল পুস্পবর্ধণে প্রস্তুত্ত ইল। দেববাদ্য সকল বাজিয়া উঠিল। সমস্ভ কিতিমগুলের আণকর্তার জননী সেই ক্সার সহিত বিবাহে রাজক্মার অবীকিত সন্মিলিত হইলে, ঐরপ ঘটনা সকল সংঘটিত হইল। অনস্তর তাঁহারা সকলে মহাত্মা তুনরের সহিত গন্ধর্মলোকে গমন ক্রিলে, অবীকিতও পদ্মীর সহিত তথার সমাগত হইলেন। তথার গমন করিয়া, তিনি সেই ভামিনীর সহবাবে বেরপ আমোদ অহন্তব করিতে

শাগিলেন, ভামিনীও ভোগসমৃদ্ধিসমন্থিত। হইরা, তজপ তদীর সংসর্গে আফ্লাদিত। হইলেন। তাঁহারা পরস্পর মিনিত হইরা, কথন অতিরমণীর নগরোপবনে ও কথন বা উপপর্কতে বিবিধ আমোদ আফ্লাদে বিচরণ করিতে লাগিলেন। কথন হংসদারস্পোভিত নদীপুনিনে, কথন ভবনাত্তে অতিশোভন প্রাসাদে এবং কথন বা অক্তান্ত রমণীর বিহারপ্রদেশসমূহে অহর্নিশ বিহার ফ্রিতে প্রস্তুত্ ইলেন। মুনি, গৃদ্ধর্ক ও কির্রগণ সকলে তথার তাঁহাদের ভক্ষ্য, অমুলেপন, বন্ত্র, মান্য ও পানাদি আহ্রণ করিতে লাগিলেন।

এইরপে দেই ছর্ল ভ গন্ধর্কলোকে তামিনীর সহিত বিহার করিতে করিতে, তাঁহার এক পুত্র জিমিল। সেই মহাবীর্যা পুত্র জন্মগ্রহণ করিলে, গন্ধর্কেরা মহোৎদবে প্রায়ন্ত হইল। কেহ গান করিতে লাগিল; কেহ মৃদক্ষ, পটহ ও আনক সকল বাদনে প্রায়ন্ত হইল; কেহ বেণু ও বীণাদি বাজাইতে আরম্ভ করিল। অপরোগণ অনেকে একত্র হইরা নৃত্য করিতে লাগিল; মেঘ সকল পুশার্টিসহকারে মুছনিম্বনে গর্জন আরম্ভ করিল। তাদৃশ কোগাহল প্রার্তিত হইলে, তুন্ম অরশ করিমাতে, তুম্ব সমাগত হইরা, বালকের জাতকর্মা বিনিম্পাদন করিলেন। দেবগণ তথার সমাগত হইলেন; নির্মালম্বভাব দেবর্ষিগণও আগমন করিলেন; পাতাল হইতে শেষ, বাফুকি ও তক্ষক প্রভৃতি প্রগ্রহণণ সমবেত হইলেন। হিজোভ্য। দেব ও অস্ত্ররগণের মধ্যে বাঁহারা প্রধান এবং যক্ষ ও গুহুকগণের মধ্যে বাঁহারা অর্থান, তাঁহারাও সকলে আদিলেন। তদ্ব্যতীত, মরদ্গণও তথার পদার্পণ করিলেন।

এইরপে অশেষ ঋষি, দেব, দানব, পর্মণ ও মুনিগণ আগমন করিলে, গন্ধর্মগণের সৈই মহাপুর আকুল হইরা উঠিগ। অনস্তর তুলুক জাতকথাদি ক্রিয়া সমাধান করিয়া, বক্ষামাণ বাক্যে তব করত দেই বালকের স্বস্তায়ন করিতে লাগিলেন, তুমি মহাবদ, মহাবীর্যা ও মহাবাছ বক্রবর্তী হইয়া, বহুকাল অথও মেদিনীমওলের আধিপত্য কর। ইল্পেমুথ এই লোকপালবর্গ এবং এই খ্যাগণ সকলেই তোমার স্বন্তি বিধান ও অরাতিগণের বিনাশদাধন বীর্যা সমাধান করুন। মকুৎ তোমার মঙ্গল করুন। পূর্ব মকুৎ ধূলিরাশি উপিত না করিয়া, তোমার কল্যাণকল্লে প্রবাহিত ইউন। দক্ষিণ মকুৎ অকীণ ও নির্দাল হইয়া, তোমার সপক্ষে অবস্থিতি করুন। পশ্চম মকুৎ তোমাক উৎকৃষ্ট বীর্যা প্রদান করুন। উত্তর মকুৎ তোমার বিশিষ্টরূপ বল আধান করুন।

এইরপে স্বস্তায়ন সমাহিত হইলে, অশরীরিণী বাণী বলিতে লাগিলেন, তোমার গুরু বারম্বার তোমার উদ্দেশে মরুংশন্ধ প্রয়োগ করিলেন। এইজন্ত এই বালক পৃথিবীতে মরুত নামে বিখ্যাত হইবেন। পৃথিবীস্থ সমস্ত রাজাই ইহার আজাবশীভূত হইবেন। ইনি সমস্ত ক্ষিতিপতিগণের মুর্দ্ধন্তপদ অধিকার এবং মহাবীর্ঘাবিশিষ্ঠ চক্রবর্তী হইয়া, সপ্তধীপবতী বহুমতীকে আক্রমণপূর্ব্ধক ভোগ করিবেন। কেহই ইহাকে প্রতিহত করিতে পারিবে না। ইনি সমুদায় নরপতিগণের ও সমস্ত যাগশীলবর্গের প্রধান হইবেন এবং সমুদায় রাজগণমধ্যে শৌর্ঘ্যে ও বীর্য্যে আধিক্য লাভ করিবেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এবমিধ দৈববাণী প্রবণ করিয়া, তথায় সমবেত বিপ্র ও গন্ধর্কাণ সকলে

এবং তদীয় পিতা মাতা উভয়েই পরম সভোধ লাভ করিলেন।

ইতি মরুত্তের জন্মকথা নাম সপ্তবিংশত্যধিকশততম অধ্যার।

## অফীবিংশত্যধিকশত্তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনন্তর রাজপুত্র অবীন্দিত আপনার পুত্র ও কলত্র সম্ভিব্যাধারে শইন। রে গমন করিলেন। গদ্ধপিণ পদব্রেজ তাহাঁর মন্ত্রগামী হইল। তিনি পিতৃভবন প্রাপ্ত হইরা, বাদর সহকারে হুদীয় চরণ বন্দনা করিলেন। দেই খ্রীমতী কুণাঙ্গী রাজনন্দিনীও তাহার পাদ্রে প্রণ্ডা হইলেন। অনন্তর অবীক্ষিত আপনার বালক পুত্রকে গ্রুচন করিয়া, ধর্মাসনে অধিচ্ পিতা করন্ধমকে সমুদ্য রাজগণ মধ্যে বলিতে লাগিলেন, আমি পুর্বেজ জননীর নিমিত্ত কিমিফক-ত্রতে আপনার নিকট যে প্রভিজ্ঞা কবিমাভিলাম, তত্ত্বসারে এই পৌরকে ক্রোড়ে লইয়া,
হার ম্থদর্শন করন। এই বলিয়া পিতার উৎসঙ্গে পুত্রকে হুত্ত করিয়া, তাঁহার গোচরে যথাত্র সমুদ্য নিবেদন করিলেন। রাজা করন্ধম পৌত্রকে আলিঙ্গন করিয়া, আনন্দাশ্রুদ্যিলে
মাবিল-লোচন হইয়া, আমিই ভাগ্যশালী, এই প্রকার বাক্য প্রয়োগ সহকারে আত্মাকে পুনঃ

অনন্তর তিনি আনন্দভরে অন্ত প্রোলন বিস্তৃত হইয়া, সম্পাগত গন্ধর্কদিগকে সমাগ্রূপে পর্যাদি বাবা সন্মানিত করিলেন। ঐ সময়ে প্রমধ্যে প্রত্যেক পূর্বাণী স্বস্থ গৃহে এই বলিয়া মহা আনান্দল প্রবৃত্ত হইল, যে, আনাদেব রক্ষাকর্তার সম্ভতি সমুংশন্ন হইরাছে। অতিচার্ক্সী বিলাসিনা রম্ণীরা সেই কৃত্তি পুর মধ্যে গীত-বাদ্যসহকারে উৎকৃত্ত বিধানেন্ত্য করিতে লাগিল। রাজা কৃত্তি চিত্তে প্রধান প্রধান আজ্পদিগকে রাশি রাশি ধন, রত্ব, অলক্ষার ও গোসকল প্রদান করিলেন।

অনন্তর সেই বালক, শুক্রপক্ষে শশীর ভাষা, বর্দ্ধিত হট্য়া, পিতৃগণের প্রীতি সম্পাদন ও লোকা দকলের অফুরাগ আকর্ষণ করিলেন। মুনে! তিনি প্রাথমে আচাধাগণের নিকট বেদ সমুদ্য, পরে অশেষ শাস্ত্র ও ধনুস্কানে করিলেন। অনশ্বর তিনি যথন শাস্ত্র ও ধনুস্কারে পড়াল করিলেন। অনশ্বর তিনি যথন শাস্ত্র ও প্রীতিপরায়ণ কাল্প্রচালনায় ও অভাত শস্ত্রস্ক্র ক্রোনোগ হটলেন, তথন বিনয়াবনত ও প্রীতিপরায়ণ হট্যা, ভৃপ্তবংশীয় ভাগীবের নিকট অস্ত্রস্কল গ্রহণ করিলেন। এইরপে তিনি সমুদ্য ধনুস্কেদির পারগ ও সমুদ্য বিদায় বিশেষ গারদশী হট্যা উঠিলেন। তাঁহা অপেকা ঐ স্কল বিষয়ে আরে কেইই শ্রেষ্ঠ রহিল্না।

এদিকে, রাজা বিশালও স্বীয় ছহিতার এই সমুদ্য বার্ত্তী ও দৌহিত্তের যোগ্যতা উপশক্তি করিয়া, হর্ষবশে অবশচিত্ত হইলেন। রাজা কলক্ষম পৌত্রের মুথ দর্শন, অনেক মঞ্জ নিম্পাদন, অবিদিপকে রাশি রাশি দান, সমুদ্য ক্রিয়া সম্পাদন, ধ্যান্ত্সারে পৃথিবী পরিপালন ও অবাতিপিগকে পরাজ্য করিয়া, ত্তমনোরথ ইইয়া, অরণ্যমনমানসে অবীক্ষিতকে কহিতে লাগিলেন,
বিংস! আমি বৃদ্ধ হইয়াভি, বনে ঘাইব; তুমি রাজ্য গ্রহণ কর। ধলিতে কি, আমি কৃতক্ত্য
ইয়াভি। তোমার অভিষেচন ব্যতিরেকে আমার আর অক্ত কিছু করিবার নাই। অতথ্ব,
আমি অর্পণ করিতেভি, স্কতিভোভাবে স্থাসিত এই রাজ্য গ্রহণ কর।

অবীক্ষিত্ত তপশ্চরণার্থ অরণাগমনে অভিলাষী হইরাছিলেন। এইজন্ত পিতা এইরপ আদেশ করিলে, তাঁহাকে প্রশ্রমাবনত হইয়া কহিতে লাগিলেন, তাত ! আমি পৃথিবী পরি-পালন করিব না। আমার মন হইতে লজা এখনও যায় নাই। অতএব আপেনি অন্ত কাহাকে রাজ্যে নিরোজিত কর্মন। দেখুন, আমি বন্দী হইয়াছিলাম। আপনিই আমাকে মোচন করিবা-রাজ্যে নিরোজিত কর্মন। দেখুন, আমি বন্দী হইয়াছিলাম। আপনিই আমাকে মোচন করিবা-তেন। আমি স্বকীর বীর্ষ্যে উদ্ধার পাই নাই; স্প্তরাং, আমার আবার পৌরুষ কি? যদি পৌরুষ না রহিল, তাহা হইলে, কির্পে পৃথিবী শাদন করিব? কেননা, যাহাদের পৌরুষ আছে, তাহারাই পৃথিবী পালন করিয়া থাকে। অধিক কি, আমি যখন আত্মাকে পালন করিতে পারিলাম না, তথন কিরপে পৃথিবীপালনে সমর্থ হইব ? অতর্এব অগুত্র রাজ্য নিংক্ষণ করুন। মন্ত্রী, অথবা আপনার সমানধর্ম-বিশিষ্ট পুরুষ, কিয়া অগ্র কোন বাক্তি যাহার কেহই বিবোধী নাই, ইহাদের অগ্রতরকে রাজ্য দিন। আপনার আত্মা স্ক্রণা মোহের অবিষয়ীভূত। সেই-জ্যু আমাকে বন্ধন হইতে মোচন করিয়াছেন। ভাবিয়া দেখিলে, আমি স্ক্রণা স্ত্রীজাতির সমান। অত্রব কিরপে মহীপতি হইব ?

পিতা কহিলেন, পিতা যেমন পুত্রের ভিন্ন নহেন, পুত্রও তেমনি পিতার সমান। ভোমাকে অতা কেহ মুক্ত করে নাই: অয়ং পিতাই তোমাকে মোচন করিবাছেন।

পুত্র কহিলেন, নরেশ্বর! আমি আর জ্বরকে ফ্রাইতে পারিব না। আপনি আমাকে মুক্ত করিয়াছেন। এই কারণে আমার জ্বাহর অতিমাত্র লজ্জা উপস্থিত হইয়াছে। বিশিত্ত কি, পিতার উপার্জ্জিত অর্থ ভোগ করে; অথবা পিতা কর্ত্তক রুচ্ছ হইতে মুক্ত হইয়া থাকে; অথবা পিতার নামেই লোক-সমাজ্ঞে পরিচিত হয়, এরূপ ব্যক্তি বেন আমানের বংশে না থাকে বা না জ্বাহ্ম। যাহারা স্বয়ং আর্থি সঞ্চয় করিয়া থাকে, যাহারা স্বয়ং কৃচ্ছ হইতে নিত্তীণ হয়, তাহাদের যে গতি হইয়া থাকে, আমারও যেন সেই গতি হয়।

মার্ক গুর কহিলেন, মুনে ! পিতা বারম্বার বলিলেও, অবীক্ষিত যথন ঐরপ উত্তর করিলেন, তখন তাহাঁর পুত্র মক্তকেই রাজ্যে রাজা করা হইল । মরুও পিতার অনুজ্ঞামুসারে পিতামহ হইতে রাজ্য প্রাথ হইরা, স্ক্লপ্পানর আনন্দ উপপাদিত করিয়া, সম্যুগ্রুপে শঙ্গিন করিতে লাগিলেন । তখন রাজা করয়ম পত্নীকে লইয়া, কায়মন বাকা সংযত করিয়া, তপশ্চরণার্থ বনে গমন করিলেন । তথায় বর্ষসহত্ত্ব তপভ্যা করিয়া, কলেবর-পরিহারপুরঃসর ইংস্ত্রের সলোকতা প্রাপ্ত ইলেন । তদীয় সহধ্যামী বীরা অর্গপ্রাপ্ত মহায়া স্বামীর সলোকতা কামনায় ভার্গবের আপ্রাম আপ্রায়, ফলম্ল মাত্র আহার, দ্বিজাতিপত্নীগণের মধ্যে অবস্থান ও দ্বিজাণণের ভ্রেমায় তৎপরতা নিয়োগপুর্বক জটিনা ও মনপঞ্জিল। হইয়া, শত বৎসর তপভ্যা করিলেন ।

ইতি মক্ত্রাভিষেক নাম অন্তাবিংশত্যধিকশততম অধ্যায়।

## একোনত্রিংশদ্ধিকশত্ত্য অধ্যায়।

কোটুকি কহিলেন, ভগবন্! আপনি করন্ধন ও অবীক্ষিত উভ্যেরই চরিত্র বিভারপূর্বক আমার নিকট কীর্ত্তন করিলেন। একণে অবীক্ষিতনন্দন মহাথা মক্তের চরিত্রশ্রণে অভিনাষ ইইয়াছে। শুনিরাছি, রাজা মক্ত অকীয় সাধুচরিতে সকলকেই অতিক্রম করিয়াছিলেন। তিনি বেমন বক্রবর্তী, মহাভাগ, শ্র, কান্ত, মহামতি, ধ্শক্ত ও ধর্মকৃৎ, সেইরূপ স্মাণ্রণে পৃথিবী পালন করিয়াছিলেন।

মাকিশুর কহিলেন, মক্তর পিতার আজাফুদারে পিতামহের নিকট রাজ্য প্রাপ্ত হটয়া, ঔরদ প্রকে পিতার ক্রায়, প্রজাদিগকে ধর্মতঃ পালন ও বিশিষ্ট বিধানে দক্ষিণাদানপূর্বক যথাবিধানে ভূরি ভূরি যক্ত করিরাছিলেন। তত্তৎ যক্তে ঋত্বিক ও পুরোহিতগণ ধ্যরপ আদেশ করেন, তাহাতে তিনি রতচিত্ত হইয়াছিলেন। সপ্রবীপের কোপাও তাঁহার চক্র প্রতিহত এবং তাঁহার গতিও আকাশ পাতাল ও জলাদি কুলাপি ব্যবচ্ছিন হইত না। বিগ্র! তিনি ধন প্রাপ্ত থপাবৎ স্বক্রিয়াণরারণ হইয়া, মহাযক্ত সকল নিস্পাদন করিয়া, ইক্রপ্রম্থ ক্রমরগণের যাজন করিরাছিলেন।

ष्मञ्जात वर्ग नक्ष जाराँत निक्रे धननाड्यक्त चत्र कार्य काजित हरेता, हेटाय्कानि किया-কলাপের অনুষ্ঠান করিত। বিজসভ্য। পৃথিবী মহাত্মা মক্ত কর্তৃক পরিপালিতা হইয়া, দেবপণে-রও সহিত স্পর্ক। করিতেন। তিনি যজ্ঞ করিয়া, কেবল রাজাদিগকেই অভিক্রম করেন নাই; শভ যজের অনুষ্ঠান করিয়া, দেবরালকেও পরাহত করিয়াছিলেন। স্বয়ং অঞ্চিরার পুত্র ও বৃহস্পতির ভ্রাতা, তপোনিধি মহাত্মা সম্বর্ত তাঁহার ঋতিক্। ছরগণের সেবিত সুপ্লবান্শনামে যে হুবর্ণমন্ত্র পর্কত আছে রাজা মরুত ভাহার শুক্স পাতিত করিয়া, য্ঞার্থ আহরণ করেন। যঞ্জের যাবভীর ভূমিভাগাদি তাহাতেই রচিত ও প্রাদাদ সকল তপোবলে একমাত্র কাঞ্চনেরই করা হইয়াছিল। ু ঋষিগণ সকলে বক্ষামাণ বাক্যে রাজা মকুতের চরিত্রসংস্কে গাথাসমূহ গান ও সর্কলা অংখ্যয়ন করিয়া থাকেন, রাজা মরুতের সমান যজমান পৃথিবীতে হয় নাই। বাঁহার যজে সদঃ সমস্ত ও প্রাসাদসমূহ কাঞ্নময় ছিল। ইক্র বাঁহার সোমরদ পান ও আক্ষণের। দক্ষিণা গ্রহণ করিয়া, মত্ত হইয়া গিয়াছিলেন। ইক্রাদি প্রধান প্রধান অমেরবর্গ যাহাঁর যজ্ঞে আক্ষণগণের পরিবেটা হইয়া-ছিলেন। ত্রাহ্মণেরামরুতের ভায়, আনে কাহার যজে রত্নপূর্ণ গৃহ সকলে সমুদর হুবর্ণ ত্যাগ করিয়াছিলেন ? ভাহাঁর যজে প্রাসাদাদি সমস্তই একমাত্র খর্ণে নিশাণ করা হয়। তিন বর্ণই তৎসমস্ত লাভ করিয়াছিল। আর কাহারা এরপ দান করিতে পারে ? তিনি দান করিয়া, যে সকল শিষ্ট লোকের মনোরথ পূর্ণ করেন, তাহাঁরা দেশে দেশে পৃথক্ পৃথক্ যজ্ঞ সকলের অহুষ্ঠান করিয়াছিল।

এইরপে তিনি সমাক্ বিধানে প্রজাপালনপুর:সর রাজ্যশাসনে প্রবৃত্ত হইলে, কোন তপশী আদিয়া, তাহাঁরে বলিতে লাগিলেন, নরেশ্বর । তাপসমগুলী মদোনাত উরগগণ কর্ত্ত বিষাভি-ভূত হইয়াছেন, দর্শন করিয়া, ভবদীয় পিতামহী বলয়া দিয়াছেন, ভোমার পিতামছ সমাগরাপে পৃথিবী পালন করিয়াছেন। আমি তপ্তরণে সংস্কুরণ হইয়া, ঔর্বের আশ্রমে অব্ভিতি করি-তেছি। তুমি যে রাজ্যশাসনে সমর্থ নহ, ভাহা আমার প্রভাক্রোচর হইয়াছে। কেননা, তোমার পিতামহের ও পূর্বপুরুষগণের অধিকারে যাহা ঘটে নাই, তোমার শাসনে ভাহা হইতেছে। তুমি নিশ্চয়ই ভোগস্থাও আসক অথবা ইক্রিয় সকলের বশীভূত হইয়াছ এবং তোমার চাররূপ চক্ষুর ও অন্ধতা ঘটিরাছে। সেইজন্ত তুমি প্রস্কাগণের ভদ্রাভদ্র অবগত নহ। দংশশীল ভূলস্পণ পাতাল হইতে সমাগত হইয়া, সপ্ত মুনিপুলকে দংশন ; তেদ, মূত্র ও পুরীষত্যাগপুর্বক জলাশয় সকল দৃষিত এবং অনলে আত্ত হবিও ঐরপে নষ্ট করিয়াছে। অপরাধ হইয়াছে, মনে করিয়া নাগগণের উদ্দেশে পূজা দেওয়া হইয়াছে। এই সকল ঋষি দর্প সকলকে অনায়াসেই ভন্ম করিতে পারেন। কিন্তু এই বিষয়ে ইহানের অধিকার নাই; তুমিই এতংসম্বন্ধে অধিকারবান। নুপ। যতদিন না মন্তকে অভিযেকস্থিল নিপ্তিত হয়, ততদিন রাজারা ভোগস্পথে মত হইতে পারেন। কাছারা আমার মিতা, কেইই বা আমার শক্ত, শক্তর বলইবা কীদুশ, আমিই বা কে, কোন্কোন মন্ত্রী ও কোন্কোন রাজারাই বা আমার পক্ষে আছেন; আমার সমত অধিকার বা নগরমধ্যে কোন ব্যক্তিই বা সম্যগ্রিধানে আমার প্রতি বিরক্ত; শত্রুগণ কোন ব্যক্তিরই বা ভেদসাধন করিয়াছে; কোন্ বাক্তিই বা ধর্মকর্ম আশ্রয়পূর্মক বথাবিধানে সংসারবাত্তা নির্মাহ कतिराउट , काहात मध । काहात है वा भागन कता कर्खवा, काहामिशतक है वा आभात विस्मवताल তত্ত্বাবধান বা লক্ষ্য রাখা সর্বতোভাবে বিধেয়; দেশকালদৃষ্টির বশবর্ত্তী হইয়া, সদ্ধিভেদ্ভীয়ৈ এই স্কল বিষয় স্তত্ত আলোচনা করা রাজার অবশ্র কর্তব্য মধ্যে পরিগণিত। তত্তির, রাজা অস্ত চরগণের অজ্ঞাত চার সকল নিয়োগ করিবেন। মন্ত্রিপ্রভৃতি সকল বিষয়েই ঐক্সপে চর সম্প্রদান क्त्रा कर्त्वता। ताला पिन तांकि दक्तन कहे नकन कार्या निविध हहेशा, गांभन कतिरवन। कथन ভোগণরায়ণ হইবেন না। মহীপতে ! রাজাদিগের শরীরধারণ ভোগের অস্ত নহে ; নিরতিশর क्रिम चीकात्रभूक्तंक भृथिती ও चकीत्र धर्मभागन वक्ष्टे कत्रिष्ठ हरेबाए । नमाक्तर्म भृथिती .ও বধর্মে রপালন ক্রিয়া, রাফাদিগের ইংলোকে বেমন মহাক্রেশ সক্ষতিত হয়ু, অর্থে সেইরূপ পরম অক্ষয় মুখ প্রান্তি হইরা থাকে। অভ এব নরেশ্বর! তুমি ইছা বিশেষকণে বৃথিরা, ভোগত্থ পরিহার করিয়া, পৃথিবীর পালনার্থ ক্রেশরীকারে প্রবৃত্ত হও। ভোমার শাসনে ঋষিগণের এই যে ভূকক্ষেত্ক মহাবিপদ উপস্থিত হইয়াছে, ভূমি চারান্ধ বনিয়া তাহা জানিতেছ না। এ বিষয়ে আর অধিক বনিয়া কি হইবে ? ভূইগণের দণ্ড ও শিষ্টগণের পালন কর। তাহা হইলে, ঘড়ভাগ প্রাপ্ত হইবে। আর যদি রক্ষা না কর, তাহা হইলে, ভ্ষেরা অবিনয়বশে যে সমস্ত পাপ করিবে, তোমাকে ভাহা ভোগ করিতে হইবে, সন্দেহ নাই। অভএব যাহা ইছো, তাহাই কর। আমি ভোমার পিতামহী। এইজস্তুই এই স্কল বিল্লাম। একণে এরূপ স্থলে যাহা ভোমার অভিক্রি

ইতি মরুত্তচরিত নাম একোনত্রিংশদ্ধিকশত্তম অধ্যায়।

#### ত্রিংশদধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তাপদের এই বাক্য গুনিরা, রাজা মফ্ত লজ্জাপর হইরা, চারাক্ষ আমাকে ধিক্ । এই প্রকার কহিরা, নিশাস ত্যাগ করিয়া, শরাসন গ্রহণ ও ছরিত পদে ঔর্কের আশ্রমপদে গমনপূর্কক পিতামহীর পদে নতমন্তকে প্রণাম করিলেন। অনস্তর তিনি তাপসদিগের সকলকে যথাবিধি বন্দনা করিলে, তাহাঁরা আশীর্কাদিপ্রোগপূর্কক তাহাঁর তাবগানে প্রবৃত্ত হইলেন। তৎপরে তিনি স্পদিষ্ট স্থা ঋষিকুমারকে দর্শন করিয়া, মুনিগণের স্মক্ষে বার্ধার আপনার নিন্দা করিয়া, কহিতে লাগিলেন, হুই ভূজক সকল মদীয় বীর্ষাের অব্যাননা করিয়া, আক্রণগণের শক্রণ করিতে আরম্ভ করিয়াছে। আল্য আমি ভাহাদের যাহা করিব, দেবাহ্রমান্ত্রসম্পর্কাহ্য সম্দ্রয়, সংসার তাহা দর্শন করক।

মার্কণ্ডেম্ন কছিলেন, এই বলিয়াই তিনি রোঘাবিত্ত ইইয়া, পাতাল ও পৃথিবী বিহারী সমস্ত নাগগণের বিনাশার্থ সম্বর্জক অন্ত গ্রহণ করিলেন। তথন সেই মহান্তের তেজে সম্পন্ধ নাগলোক দহ্দান ইইয়া, সমস্ততঃ সহসা জলিয়া উঠিল। কিছুতেই তাহার নিবারণ ইইল না। সেই অন্তর্কত সন্ত্রম উপস্থিত ইইলে, নাগগণ সকলেই, হা তাত! হা মাতঃ! হা বৎস। বলিয়া, তুমুল হাহাকার করিয়া উঠিল। কাহার পূজাগ ও কাহারও বা ফণমণ্ডল জলিতে লাগিল। তদবহায় নাগ সকল বন্ত ও অলঙ্কারাদি ভাগে ও পাতাল পরিহার করিয়া, স্বস্ব স্ত্রী পূল্রকে সঙ্গে লইয়া, মক্তের জননী ভামিনীর শরণাপার ইইল। তিনি পূর্ব্বে ভাহাদিগকে অভয় দিয়াছিলেন। উরগগণ সকলে ভয়াত্রর ইইয়া, তাঁহার সমীপে আগমন ও প্রণাম করিয়া, গদ্গদ বাক্যে কহিতে লাগিল, আমরা পূর্বে রসাতলে আপনাকে প্রণাম ও অভ্যর্জনা করিয়া, যাহা বলিয়াছিলাম, স্মরণ করুন। তাহার কালও উপস্থিত ইইয়াছে। অস্বি বীরপ্রসবিনি! আমাদিগকে রক্ষা করুন। রাজি! আপনার প্রত্বেক্ষাবারণ করুন। আমাদের সকলের প্রোণরক্ষা হউক। অন্তান্তল সমুদ্র নাগলোক দহুমান ইইয়া উঠিয়াছি। আপনি ভিন্ন আমাদের আর রক্ষার হান নাই। অভগ্রহ পশ্বিন! আমাদের প্রতি অন্ত্র্যহ করুন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, সেই সাধ্বী ভামিনী তাহাদের এই কথা গুনিয়া, তাহারা আদিতে যাহা বলিয়াছিল, তাহা বিলেবরূপে ত্মরণ করিয়া, সন্ত্রমণহকারে তামীকে বলিতে লাগিলেন, পাতালে ভূজক্মগণ অভ্যর্থনা করিয়া, আমার পুজের উদ্দেশে পূর্বে বাহা বলিয়াছিল, আমি আপনাকে ও তাহাকে কহিয়াছি। সেই নাগগণ পুত্রের তেজে দহুমান হইয়া, ভয় গ্রযুক্ত এখানে এই আসিরাছে এবং আমার শরণ গ্রহণ করিয়াছে। বেছেডু, আমি ইহাদিগকে অভয় প্রদান করিয়াছিলাম। আপনার সহিত আমার ধর্মচরণে পার্থক্য নাই; স্কুতরাং, আমার ধ্বন ইহায়া শরণাপর হইয়াছে, ত্বন আপনারও শরণ লইয়াছে, ব্ঝিতে হইবে। এই কারণে আমিও আপনার শরণাধিনী হইলাম। অতএব পুত্র মক্তকে নিবারণ কর্মন। আপনি বলিলে ও আমি অভ্যর্থনা করিলে, মক্ত অব্ভাবিত্ত হইবে।

অবীক্ষিত কহিলেন, গুরুতর অপরাধবশহুই মরুত এইরূপ নিরমপূর্বক ক্রোধের বশীভূত হই-মাছে। স্থতরাণ, তাহার এই ক্রোধের শান্তি করা সহজ হইবে, বোধ হইতেছে না।

নাগগণ কহিলেন, রাজন্। আমরা আপনার শরণাগত হইয়াছি। অতএব প্রসন্ন হউন। ক্ষতিয়েরা আর্তের পরিতাণ জন্মই অস্ত্র ধারণ করেন।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, মহাযশা অবীক্ষিত শরণার্থী নাগগণের এই কথা শুনিয়াও পত্নীকর্তৃক অভাপিত হইরা, বলিতে লাগিলেন, ডলে! আমি সত্তরে গমন করিয়া, তোমার পুত্রকে বলিব, নাগগণের পরিত্রাণ করিতে হইবে। শরণাগতের প্রত্যাখ্যান করা কর্ত্তবানহে। যদি মক্তর এই কথায় শত্র সংহরণ না করে, তাহাহইলে, আমাকে অন্তরহারা তদীয় অত্তরে প্রতিষ্ধে করিতে হইবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনপ্তর ক্ষত্রিয়োত্ম অবীক্ষিত ধহুগ্রহিণপূর্বক স্বরাধিত হইয়া, ভার্য্যার সহিত ভার্মবের আশ্রমে গ্রমন করিলেন।

ইতি মক্ত্রচরিত নাম ত্রিংশদ্ধিকশ্ভতম অধ্যায়।

## এক ত্রিংশদ্ধিকশত তম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রাজা গিয়া দেখিলেন, তদীয় পুত্র বর-কার্মুক গ্রহণ করিয়া, ভাহাতে সেই প্রচণ্ড অন্ধ যোজন করিয়াছেন। অল্লের শিধায় দিগন্তর ব্যাপ্ত হইয়াছে এবং উহা অধিল ভ্তল প্রদীপিত করিয়া, মহাবহ্ছি উদিগরণ করিছেছে। তিনি আরও দেখিলেন, ঐ অন্ধ যেমন ঘোরভীষণ, দেইরূপ, ভাহা সহু করা কাহারও সাধ্য নহে। উহা পাতালে প্রবেশ করিয়াছে। তিনি পুত্রকে জ্রকৃটি-কুটলানন দর্শন করিয়া, কহিতে লাগিলেন, মহুত ! অন্ধ উপসংহার কর। ক্রোধের বশীভ্ত হইও না। উদারবৃদ্ধি মহুত শরাসন গ্রহণ করিয়াছিলেন। পিতার এই কথা শ্রবণ ও বারম্বার তাহাকে দর্শন করিয়া, গৌরবসহকারে প্রণামপূর্বক বলিতে লাগিলেন, তাত ! এই প্রগোরা আমার গুহুতর অপরাধ করিয়াছে। দেশুন, আমি এই পৃথিবী শাসন করিতেছি। আমার বল পরিভ্ত করিয়া, ইহারা আশ্রমে আগ্রমন করিয়া, সাতজন ঋষিবালককে দংশ্ন করিয়াছে। অবনিপতে ! তব্যতাত, ইহারা, এই আশ্রমন্থ ঝিবগণের হিব দ্বিত এবং সমুদ্র জলাশন্ত দ্বিত করিয়াছে। এই কারণেই আমি বধ করিতে উদ্যত হইয়াছি। ইহারা ব্রীহত্যা করিয়াছে। অভএব আপনি কিছু বলিবেন না এবং আমাকেও নিবারণ করিবেন না।

স্ববীক্ষিত কহিলেন, যদি এই আহ্মণেরা নিহত ও উপরত হইরা, নরকে গমন করেন, তথাপি, ডোমাকে স্থামার এই কথা রাখিতে হইবে; অন্তপ্রয়োগে নির্ভ হও।

মকত কহিলেন, বলি আমি এই পাপী সকলের নিগ্রহে যত্ন না করি, তাহাহইলে, আমাকেই নরকে গমন ক্রিতে হইবে। অতএব আমাকে নিবারণ ক্রিবেন না। অবীক্ষিত কহিলেন, এই সকল পরগ আমার শরণাপর হইরাছে। অতএব আমার প্রতি গৌরববশতঃ অল্ল উপসংগ্রু ভকর।কোপে আর প্রয়োজন নাই।

মকৃত কহিলেন, ইহারা গুষ্ট ও অপরাধী। ইহাদিগকে ক্ষমা করিব না। আমি নিজের ধর্ম লজ্মন করিয়া, কিন্তুপে আপনার কথা রক্ষা করিব ? রাজা দণ্ডার্হের দণ্ড ও শিষ্ট সকলের পাসন করিয়া, পুণ্যলোক প্রাপ্ত হন; বিরুদ্ধাচারী হইলে, নরকে গমন করিয়া থাকেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইরূপে পিতা বারখার প্রতিষেধ করিলেও, পুত্র যথন অন্ত উপসংহার করিলেন না, তথন তিনি পুনরার বলিতে লাগিলেন, এই পর্য় সকল ভীত ও আমার শরণাগত হইয়াছে। এই কারণে তোমাকে প্রতিষেধ করিতেছি। তথাপি, তুমি ইহাদের হতাাকরণে উদাত হইয়াছ। এই কারণে আমি তোমার প্রতিক্রিয়া করিব। তুমিই কেবল পৃথিবীতে অস্ত্রজ্ঞ নহ। আমিও অন্ত সকল প্রাপ্ত হইয়াছি। আমার সমক্ষে তোমার আবার পুরুষ্থ
কি ৪ তুমি অভিতর্তি।

মার্কণ্ডের কহিলেন, মুনিপুক্ষৰ! অনস্তর রাজা অবীক্ষিত রোষাক্রণ লোচনে কালুকি আরোপণ করিরা, কালান্ত গ্রহণ করিলেন। উহা হইতে অনবরত শিখা সকল সমুদ্যত হইতে লাগিল। তিনি সেই অরাতি-কুল-নিস্দন মহাবীর্য্য কালান্ত ধহুকে যোজনা করিলেন। পৃথিবী পূর্কেই সম্বর্তকান্তে অতিমাত সন্তথ হইয়াছিলেন। একণে ঐ কালান্ত ধহুকে সংযোজিত হইলে, সাগর ও পর্কতের সহিত আরও কুভিত হইয়া উঠিলেন। পিতা কালান্ত ধহুকে যোজনা করিয়াছেন, দর্শন করিয়া, মকত উঠৈতঃ মারে বলিতে লাগিলেন, আমি ছাইর শাসন জন্য এই সংবর্তক অন্ত গোজন করিয়াছি; আপনার বধের জন্য নহে। তবে আপনি কিনিমিত আমার প্রতি কালান্ত প্রেয়াগ করিতেছেন? দেখুন, আমি আপনার প্রত। তাহাতে আবার সংপথে আছিও সর্কাদা আপনার আজ্ঞাপালন করিতেছি। মহাভাগ! প্রজাগণের পরিপালন করাই আমার কার্য্য। তবে আপনি কি কারণে আমারে মারিবার জন্য এই কালান্ত উদ্যত করিলেন ?

অবীক্ষিত কহিলেন, আমরা শরণাগতপরিতাণে সম্বল্প করিরাছি। তুমি তাহার ব্যাঘাত করি-তেছ। অতএব জীবন থাকিতে, আমার নিকট পার পাইবে না। হয়, তুমি আমাকে অন্তবীর্ণা বধ করিয়া, এই সকল তুই সর্পকে সংহার কর। না হয়, আমি তোমাকে অন্তবলে নিহত করিয়া, ইহাদিগকে রক্ষা করিব। বিপদে পড়িয়া, শরণার্থ সমাগত শত্রুপক্ষকেও যে ব্যক্তি অস্থাহ না করে, সেই পুরুষের জীবনে ধিক্! আমি ক্তিয়। ইহারা ভীত হইয়া, আমার শরণ লইয়াছে।কিন্ত তুমি ইহাদের অপকার করিতেছ। অতএব তুমি কিন্ত প্যামার বধ্য নহ ?

মকত কহিলেন, মিত্রই হউক, বাদ্ধবই হউক, পিতাই হউন আর গুরুই হউন, প্রজাপালনে বিম করিলে, সে ব্যক্তিকে রাজা অবশ্র বধ করিবেন। অতএব আমি আপনাকে প্রহার করিব। আপনি কোপ করিবেন না। দেখুন, সংধর্ম পালন করা আমার কর্তব্য কার্য। আপনার উপরি আমার ক্রোধ নাই।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তাঁহাদের পিতা পুত্র উভরকে পরস্পরের সংহারে ক্রতনিশ্চর দর্শন করিরা, জার্গবাদি মুনিগণ তৎক্ষণাৎ সমুৎপতিত হইরা, তাইাদের ত্ইজনের মধ্যস্থলে দণ্ডারমান হইলেন এবং মক্তকে কহিলেন, পিতার প্রতি অন্ধ্র প্রবোগ কর। তোমার কর্ত্তব্য হয় না। অনন্তর তাহারী অবীক্ষিতাকও কহিলেন, তোমার এই পুত্র প্রথাতবিক্রম। ইহাকে সংহার করা তোমার উচিত নহে।

মক্ত কহিলেন, আমি রাজা; স্কুডরাং আমার কর্ত্তব্য, ছুটের দমন ও শিষ্টের পালন করা। এই ভূলগণণ দোষ করিয়াছে। অভএব হে দিজাভিবর্গ। এবিধয়ে আমার অপরাধ কি ?

অবীক্ষিত কহিলেন, শরণাগতের রক্ষা করাই আমার একমাত্র কার্য্য। আমার এই পুত্র শরণাগতের সংহারে প্রবৃত্ত ইইরাছে। অতএব সর্ব্বণা অপরাধী। ঋষিগণ কহিলেন, এই ভূজজগণ আসহঞ্চল-লোচনে বলিতেছে, ছুঠ প্রগণণ যে আক্ষণদিগকে দংশন করিয়াছে, সামর। তাঁহাদিগকে বাঁচাইয়া দিব। অতএব পিতাপুত্রের বিবাদে প্রয়োজন নাই। তোমরা ছুইজনেই রাজার শ্রেষ্ঠ। অতএব প্রশন্ত। তোমরা ছুইজনেই যেমন ধর্মজ, দেইরপ ছুইজনেই স্থাতিজ্ঞা রক্ষা করিয়াছ।

মার্কণ্ডেম্ন কহিলেন, ঐ সময়ে অবীঞ্চিত্র জননী বীরা স্মাণ্ডা হইবা, পুত্রকে কহিছে লাগিলেন, তোমার এই পুত্র মক্তর আমারই কথামতে এই সকল প্রগকে সংহার করিতে ক্তো-দাম হইরাছেন। মৃত ব্রাহ্মণেরা যদি জীবিত হন, তাহাহইবল, আমি গাহা বলিয়াছিলাম, তাহা বিনিপার হইবে এবং তোমার শ্বণাগত এই সকল স্পতি জীবিত শ্রীরে উদ্ধার পাইবে।

মক্রতের জননী ভামিনী কহিলেন, এই পাতাশ্বাধী সর্পাণ পূর্ণে আমাবে অভার্থনা করিয়া-ছিল। তন্নিমিত্তই আমি ভর্তাকে এ বিষয়ে বিনিয়োগ করিয়াছি। আমার নিয়োগ সর্কাণা স্বষ্ঠু-ভাবেই বিনিম্পন্ন হইয়াছে। ইহা আমার সামী ও পুত্র এবং আপনার পৌত্র ও আয়াক উভ্যেরই প্রম শোভার বিষয় হইয়াছে।

মার্কওের কহিলেন, অনন্তর ঐ সকল ভূলদা সেই সকল রাজাণকে দিবা ওমধিজাত ও বিধ-সংহরণ দারা সঞ্জীবিত করিল। তানন মকত পিতার চরণ বন্দনা করিলে, অবীক্ষিত্র তাইারে প্রীতিভরে আলিন্ধন করিলে, আনীর্নাদ করিলেন, ভূমি শত্রগণের অভিমান চূর্ণ কর, তিরকাণ মেদিনী ভোগ কর, পুত্র পৌত্রের সহিত আমাদে কাল্যপন কর। তোমার শত্রপক্ষ সকল ও একবারেই বিনষ্ট হউক। অনন্তর পিতা পুত্র উভরে এবং ভানিনী, সকলে রাজাগণ ও বীরার অন্ত্রেরালান্তর রপারোহণে পুরে প্রত্যাগত হইলেন। এদিকে, ধর্মভূদ্বিটা মহাভাগা পতিরতা বীরা স্থাহৎ তপস্থা করিলা, পতিলোক পাভ করিলেন। মক ওও অবিবছ বর্গ বিনির্জ্ঞা ও প্রত্তঃ পৃথিবীর পরিপানন করিলা, ভোগ সকল সভোগ কবিতে লাগিলেন। বিদ্ভতনয় প্রভাবতী, স্বীরতনয়া সৌবীরা, স্থাপতি কে তুরীর্যোর ভনয়া প্রকেশী, মজরাজের তন্যা কেকল্লী, কেক্ষের ভনয়া সৌবীরা, দগ্রপতি কে তুরীর্যোর ভনয়া প্রকেশী, মজরাজের তন্যা কেকল্লী, কেক্ষের ভনয়া পৌরিন্ধী, নিজ্বাজের তন্যা বপুলতী ও চিনিরাজের তন্যা স্থোভনা, ইহারা মকত্তর ভার্মা। তাহাদের গর্ভে ভাইার অসালশ পুরের জন্ম হয়। তাহাদের মধ্যে নরিশ্যস্ত সকলের প্রধান ও ক্লেষ্ঠ। মহাদাজ মহাবল মকত্ব এবধিধ বার্যানান্ ছিলেন। ভাইার চক্র সপ্তরীপের কুমাপি প্রতিহত হইত না। সেই সত্ব-বিক্রণ নিশিং, অনিত্রেজা রাজ্বির সমান অপর কেহ রাজা হন নাই এবং হইবেনও না। বিজ্লেন্ত্রি! মহাজা। মকত্বের এই চরিত ও উৎক্রই জনার্ত প্রবণ করিলে, লোকে সর্বপাপবিনির্যাক্ত হইয়া গাকে।

ইতি মরুত্তিরিত নাম এক্তিংশদ্ধিকশ্ততম অধ্যায়।

# দ্বাত্রিংশদ্ধিকশতভ্রম অধ্যায়।

ক্রেটি কি কহিলেন, ভগবন ! আপনি মরুতের চরিত সবিভার বর্ণন করিলেন। একণে তাইার সম্ভাতিগণের বুতান্ত আন্দোপান্ত ওনিতে ইচ্ছা হইতেছে। তাঁহার সম্ভাতির মধ্যে বাঁহারা রাজা ও যাইারা রাজ্যার্হ, মহামুনে ! আপনার প্রমুধাৎ তাঁহাদের কথা ভনিতে আমি উৎস্ক ইইয়াছি।

মার্কণ্ডেম্ন কহিলেন, মরুতের যে পুত্র নরিষ্যন্ত নামে শিখ্যাত, তিনি তাঁহার অষ্টাদশ পুত্রের মধ্যে জ্যেষ্ঠ ও শ্রেষ্ঠ ছিলেন। ক্ষত্রিয়র্বত মরুত স্থতি সহস্র বৎসর সমগ্র পৃথিবী ভোগ করিয়া- ছিলেম। তিনি অধ্যাত্মারে রাজা পাদন, অত্তর যজ্ঞ সকল নিপাদন ও জ্যেষ্ঠ পুত্র নরিশ্যতকে অভিষেক করিয়া, অরণো গমন করেন। তথায় একাগ্রচিত্তে মহৎ তপোত্মগান করিয়া, স্বর্গ ও পৃথিবী যশে পূর্ণ করিয়া, দেবলোকে সমাগত হন।

তদীয় পুত্র নরিষ্যন্ত বিশিপ্তরূপ-বৃদ্ধি-বিশিষ্ট ছিলেন। তিনি পিতার ও অভ্যান্ত নরপতিগণের চরিত্র বিশেষরূপে আলোচনা করিয়া, চিন্তা করিতে লাগিলেন, আমাদের এই বংশে আমার পূর্বজ নরপতিগণ সকলেই মহায়া, সকলেই যাগশীল ও সকলেই প্রবল পরাক্রাস্ত ছিলেন: সকলেই ধর্মামুদারে পুথিবীর পালন করিয়াছেন; দকলেই রাশি রাশি ধনদান করিয়াছেন এবং দকতেই সংগ্রামে অপরাত্ম্য ছিলেন। সেই দকল মহাত্মার চরিতের অমুকরণ করা কাহারও দাধা ন হ। যাহাহউক, তাহাঁরা করেন নাই, এরপ ধর্মসঙ্গত ক্র্যান্ত্রানে আমার অভিনাধ হইতেছে। কিন্তু ভাহা নাই। অত্থব, কি করিব ? রাগার সভাবই এই, ধর্যামুগারে পুথিবীপালন করিবেন। ইহাতে মার গুণ কি ? অবর্দাত্মারে পানন করিলে, রাজাকে পাপভাগী হইয়া, নরকে গমন করিতে হয়। বিত্ত থাকিলে, রাজা মহাযক্ত নকলের অনুষ্ঠান ও দান করিবেন। ইহাতেও খার আশ্চর্য্ট বা কি ? দান করিয়া, অব্দল্ল হইলে, পরিণানে ঈশ্বর্ট রক্ষা করিয়া থাকেন। আভি-জাত্য, লজ্জা, অরিজনাশ্রয়, কোপ, সংগ্রাম হই তে অপলাযন, ইত্যাদি যাহা কিছু রাজার ধর্ম, আনার পূর্বপুরুষণণ ও পিতা মরুত তাহার সমস্তই করিয়াছেন। আবার এরপে করিয়াছেন, কেহই তাহা করিতে পারে না। অতএব আমি এমন কি করিব, যাহা আমার পূর্বপুরুষণণ করেন নাই। তাইারা থেমন যাক্তিক দকলের শ্রেষ্ঠ, দম গুণবিশিষ্ট ও সংগ্রামে অপরাল্পুথ ছিলেন; দেইরপ, চুৰ্জ্ঞয় সংগ্রাম সকলে প্রাবৃত্ত হওয়াতে, তাঁহাদের পৌরষও অবিস্থাদিত হইয়াছে। অত এব আমি সর্বাধা নিজাম কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিব। অথবা, আমার পূর্বাবভী নরপতিগণ স্বয়ং অবিশ্রামে ষজ্ঞ করিয়াছেন। অন্তকে তাহা করান নাই। আমি তাহা করিব।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এইপ্রকার চিন্তা করিয়া, তিনি এরপ এক যজ্ঞ করিলেন, যাহা অভে করে নাই। তিনি বিজাতিগণের জীবিকানির্কাহের উপযোগী স্থ্রপূপ ধন দান করিয়া, াহানিগ্রে যজ্ঞসময়ে পুনরায় শতগুণ অয় প্রদান করিলেন। তহাতীত, তিনি পৃথিবীয় স্টেসমন্ত বিজাতির প্রত্যেককে ভূরি ভূরি গো, বস্ত্র, অলঙ্কার ও ধান্তাগারাদি দান করিলেন। অনন্তর তিনি মধন পুনরায় যজ্ঞে প্রস্তু হইলেন, তথন আর সেই যজ্ঞে যাজকতা করিবার জন্ত আহ্বাপ্ত হইলেন না। তিনি যে যে আহ্বাপকে ঋষিক হইবার জন্ত বরণ করিলেন, তাহারাই কহিলেন, আমরা অন্তর যজ্ঞের নিমিত্ত দীকিত হইয়াছ। অত্রব আপনি অন্তর্কে বরণ কর্মন। আপনি আমাদিগকে, যজ্ঞ করিয়া, যে ধনদান করিয়াছেন, আমরা ভূরি ভূরি যজ্ঞ করিয়া, আজিও তাহা নিঃশেষ করিতে পারি নাই।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তিনি সমস্ত পৃথিবীর ঈশ্ব ছিলেন। তথাপি কুডাপি ঋষিক আদ্দাপকল প্রাপ্ত ইইলেন না। তথন তিনি বহির্দেশিতে দান করিতে আরম্ভ করিলেন। তথাপি কেই তাইার নিকট পরিগ্র করিল না। কেনলা, তাঁহার প্রদত্ত ধনে সকলেরই গৃহ পরিপূর্ণ ছইয়া গিয়াছিল। কাহারই আর কোনরপজভাব ছিল মা। তিনি পুনরায় আদ্দাকে দান করিতে উদ্যুত হইয়া, নির্দিল চিত্তে বলিতে লাগিলেন, অহা। ইহা অতি স্থের ও গৌভাগোরই বিষয়, য়ে, পৃথিবীতে আর কোন আদ্দাই ধনহান নাই। কিন্তু ইহা নিরভিশ্ম অন্থে ও অগৌভাগোর বিষয়, য়ে, বৃথা করাতে, আমার এই কোষ বিকল হইতেছে। সকল লোকেই মন্ত্রমান হই য়াছে। তজ্জা, কেইই আর মানক হইতে চাহে না এবং ওজ্জা আমি দান করিতে প্রেরুত হইলে, আদ্দাগণের মধ্যে আর কেহই তাহা গ্রহণ কারতে সম্বত হন না।

মার্কণ্ডের কহিলেন, অনস্তর তিনি•বার্ষার ভ্রিসহকারে প্রণাম করিয়া, কতিপর বিদ্যাতিকে স্থকীর বজে ঋত্বিক ক্রিলে, তাঁহারা সেই মহাবজ্ঞ নিম্পাদিত ক্রিলেন। ইহা নির্ভিশর বিশ্ব- মের বিষয় হইয় ছিল, মে, রাজা যথন সেই যজে প্রবৃত্ত ইংলেন, তথন পৃথিবীতে রাঝণগণের মধ্যে সমস্ত গোকই যজান হইয়ছিলেন। স্থতরাং, কেহই তাঁহার যজে দীকিত হইলেন না। তথন রাঝণগণের মধ্যে কেহ যজমান ও কেহ বা তাঁহাদের যাজক হইয়ছিলেন। ফলতঃ, রাজানরিরাস্ত যে যে সময়ে যজ্ঞ করিলেন, সেই সেই সায়য়ই তৎপ্রাদত্ত ধানে পৃথিবীতে সকলেই যজ্ঞ করিয়াছিলেন। তৎকালে প্রাচীনিকে স্ফানশকোট যজ্ঞ হইয়াছিল। প্রতীচীনিকে সপ্তকোটি, উনীচীনিকে পঞ্চাশৎকোটি ও দিকণিনকে চহুদ্শকোটি যজ্ঞ হইয়াছিল। এই সকল যজ্ঞ এককালেই বিনিম্পানিত হয়। বিপ্রা! মকতের প্র পুর্বে এইরপে রাজ্য ক্রিয়াছিলেন এবং এইরপ ধর্মান্ত্রা ও এইরপ প্রাতি বল-পৌর্ধবি শই হিলেন।

ইতি নরিষ্য স্তচরিত নাম দাত্রিংশণধিকশততম অধ্যায়।

## ত্রুব্রিংশদ্ধিকশ ততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, নরিষান্তের পুত্রের নান দন। তিনি ছ্টদেশ দলন ও শক্রদিগকে দমন করিতেন। তাঁহার বল ইল্পের ভার এবং দরা ও শীল মুনির ভার ছিল। তিনি বক্ততনরা ইল্র-দেনার গর্ভে জন্মগ্রহণ করেন। মহাবশা দম নরবংগর জননীজঠরে অবস্থিতি করিয়াছিলেন। ঐজপে ছঠরে থাকাতে, জননীকে যে দম অবশ্বন করিতে হইয়াছিল এবং তিনিও যে দমশীল হইবেন, সেই কারণে নরিষান্তের ত্রিকাগবিং পুরোহিত ঐ পুত্রের নান দম রাখিলেন। রাজপুত্র দম নর্বাজ ব্রপর্কার নিকট অশেব ধমুর্কেদে শিক্ষিত হইলেন। তদ্ব্যতীত, তিনি তপোবননিবাদী দৈতারাজ হৃদ্ভির নিকট সম্লায় অন্ত্রাম প্রয়োগ ও সংহার সহিত গ্রহণ করিলেন, শক্তির নিকট হইতে অথিল বেদ ও বেদাঞ্গ সম্লায় শিক্ষা করিলেন এবং আত্মবান্ হইয়া, রাজ্যি আঞ্বিবেণ্র নিকট হেতে অথিল বেদ ও বেদাঞ্গ সম্লায় শিক্ষা করিলেন এবং আত্মবান্ হইয়া, রাজ্যি

দশাণাধিপতি মহাবল চাক্ষকর্মার পূজী হুমনা পিতাকর্ভ্ক স্বয়্রম্বরে নিয়েজিতা ইইয়া, রাজনদনন দমকে পতিরূপে বরণ করিলেন। যাহারা তাইার জন্ম সমাগত হইয়াছিল, তাহাদের সমক্ষেই এই বাপোর সংঘটিত হঈল। এদিকে মদ্ররাজের পুত্র মহাবল পরাক্রমবিশিপ্ত মহানদ্দ হুমনার প্রতি বন্ধান্থরাগ হইয়াছিলেন। তদ্ভিন্ন, বিদর্ভাধিপতির পুত্র এবং সংক্রদনের আত্মজ এই হুই জনও সেই ক্যাতে অন্তর্গা স্থাপন করিয়াছিলেন। তাহারা তিনজনে হুটারিদমন দমকে ক্রেপে বরণ করিতে দেখিয়া, কামে মো হত হইয়া, পরম্পর মন্ত্রণা করিতে লাগিলেন, আমরা এই ক্রপশানিনী ক্যাকে বলপুর্বক গ্রহণ করিয়া, গুতু লইয়া যাই চল। পরে এই ক্যা আমাদের মধ্যে যাহাকে স্বয়্রম্ব বিদানে ইছার্সারে ভর্ত্বিক্তি গ্রহণ করিবে, তাহারই ধর্মপিয়ী ইইবে। যদি এই মদিরেক্ষণা বরারোহা ললনা আমাদের মধ্যে কাহাকে গ্রহণ না করে, তাহাইলৈ, সে ব্যুক্তি ক্যাকে সংহার করিবে, তাহারই ভার্যা। হইবে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, দেই তিন জন পাণিবনন্দন এই প্রকার নিশ্চর করিয়া, দমের পাশিংবর্ত্তিনী ঐ চার্কাপী ললনাকে গ্রহণ করিলেন। তথন নৃপগণের মধ্যে ঘাইারা তাঁহাদের পক্ষ,
তাহাঁরা চীৎকার করিয়া উঠিলেন। অভাভেরাও দেই চীৎকারে যোগদান করিলেন। কেং
কেহ বা তাহাঁদের মধ্যে মধ্যস্থ হইলেন। মহামুনে! তথন দম চত্দ্বিগ্রী গেই সকল ভূপালকে
অবলোকন করিয়া, অনাকুণ্টিতের বলিতে লাগিলেন, হে ভূপগণ! স্বয়্সরকে লোকে ধর্মকার্য্যের
মধ্যে বলিয়া থাকে। স্বত্ত্ব আপনারা সকলে বলুন, ইহারা এই কস্তাকে যে বণপূর্কাক গ্রহণ

করিতেছে, ইহা ধর্ম কি মধর্ম ? যদি অধর্ম না হয়, তাহা হইলে, এই ক্সায় আগার প্রয়োজন নাই; অস্তের ভার্যা হউক। আর যদি ধর্ম হয়, তাহা হইলে, তাদৃশ প্রাণৈ প্রয়োজন নাই; যে প্রাণ, অরিগণ এইরপে লজ্মন করিলেও, রক্ষা করা হইয়া থাকে।

মহামুনে! অনন্তর দশার্ণাধিপতি নরপতি চাককর্মা সেই সভাকে নিঃশন্দ করিয়া, বলিতে লাগিলেন, হে নৃপ্বর্গ! এই দম ধর্ম ও অধর্ম সম্বন্ধ যাহা কহিলেন, আপনারা, যাহাতে আনার ধর্মের লোপ না হয়, তদমুক্পে ইহার মীমাংসা ককন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন কোন কোন নরপতিবর্গ দশার্ণপতিকে বলিতে লাগিলেন, যেগানে পরম্পারর অনুরাগ, দেখানে গান্ধবিধিই প্রশস্ত। ক্ষত্তিরগণের পক্ষে উহাই পরম বাবস্থা; আবাদ্ধ, বৈশ্ব ও শ্দের পক্ষে স্থাসিন নহে। তদন্সারে এই দমের সহিত মাপনার কখার উহা নিম্পান্ন হইন্যাছে। স্থত্রাং, ইনি পর্যাস্থ্যারে দমেরই পরিগ্রহ; অভ কাহারই নহেন। যে বাজি কামাঝা, দেই মোহবশতঃ ইহার বিক্ষাত্রণে প্রবৃত্ত হইবে।

অনস্তর অস্থান্ত মহাত্মা নরপতিগণ তাহাঁদিগের এই বাক্যের প্রত্যুত্তর করিয়া বলিতে লাগিলেন, আপনারা মোহবশতঃ কি বলিতেছেন ? ফ ত্রিরগণের পক্ষে গান্ধর্বার্ম কোনমতেই প্রশস্ত নহে; অগবা, অস্ত কোন বিধিই বিহিত কল্ল হইতে পারে না। তাঁহারা যেমন শস্ত্রজীবী, তেমনি রাক্ষ্যবিধিই তাহাঁদের অসাধারণ ধর্ম। অতএব যে ব্যক্তি প্রতিহন্দীদিগকে হত্যা করিয়া, বলপ্র্রেক এই ক্সাকে হরণ করিবে, রাক্ষ্য-বিবাহান্ত্র্ণারে তাহারই পরিগ্রহ হটবে। বিবাহ-বিভারের মধ্যে এই রাক্ষ্য বিবাহই প্রধানতর। এইজ্ন মহানন্দানিরা ইহাকে ক্ষ্ত্রিয়গণের ধর্মধ্যে কল্পনা করিয়াছেন।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, সনস্তর, যে সকল রাজা পূর্কে বলিষাছিলেন, গুঁহারা পুনবায় পরস্পরের প্রতি সমুরাগ্রহকারে জাতিধর্মাঞিত বাক্যে কহিতে লাগিলেন, সতা বটে, ক্ষত্রিয়ণ্ণের পক্ষে রাক্ষস্বিধিই প্রমপ্রশন্ত কল্প। কিন্তু যথন পিতার ক্যাসম্প্রশান প্রভূতা আছে, তথন এই দ্মই এই কুমারীর সমুসত বর। মেন্তুলে পিতৃসম্বদ্ধকে বলপূর্ক্ক লগ্ন করিয়া, ক্যাকে হরণ করা যায়, তাহাকেই রাক্ষস্বিধি বলে। নতুবা, অন্ত স্বামীর পরিগৃহীতা ক্যাকে বলপূর্ক্ক হরণ করিলে, রাক্ষস্বিধি বলিতে পারা যায় না। দেখ, এই স্থানা যথন সমূদ্য নরপতিগণের সমক্ষে এই দ্মকে বর্মানা দিয়াছেন, তথন গান্ধক্বিবি বিধানেই বিবাহ হইয়াছে; রাক্ষস্বিধানে নহে। বিবাহিতা ক্যার ক্যান নাই। ক্যারই বিবাহে সম্বন্ধ ঘটিয়া পাকে; স্থতরাং, যাহারা বলপূর্ক্ক এই দ্মের নিক্ট হইতে এই ক্যাকে গ্রহণ করিতে উদ্যত হইয়াছেন, তাঁহাদের বল আছে, বলিয়াই ঐরপ্ক করিতেছেন। নৃত্বা, ইহা বিনিবাধিত নহে।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, দম তাহাঁদের এই কণা শুনিয়া, কোপকষায়ীকত লোচনে ধয়ুর্ধাজনা করিয়া বলিতে লাগিলেন, য়ণি ইহারা বলপ্রারাগপূর্কক আনার সমক্ষে আনার ভার্যাকে হরণ করে, তাহাহইলে, আমি ক্রীব হইয়া জনিয়াছি, প্রুষ নহি। স্বতরাং, আমার কুলে ও ভূজরয়ই বা প্রেয়াজন কি ? ভাহাহইলে, আমার অস্ত্র সকলে নিক্! শৌর্মো ধিক্! শরে ও শর সকলেও বিক্! তাহাহইলে, আমি যে নহায়া মকতের কুলে জনিয়াছি, তাহাও সর্কেব ব্যর্থ। স্বতরাং, তাহাতেও বিক্! অধিক কি, য়ণি এই মৃঢ়েরা বলাঘিত হইয়া, আমার ভার্যাকে গ্রহণ করিয়া, আমার জীবিত-অবহায় প্রস্থান করে, তাহাহইলে, আনার ধয়র্জারণও র্থা। স্বতরাং, উহাতেও বিক্! মহারিদমন বলশালী দম মহানন্দপ্রমুগ সেই মহীপালদিগকে এই প্রকার কহিয়া, প্নরায় সকলকেই বলিতে লাগিলেন, এই বালা স্থননা যেরূপ সৎকুলসম্ভূতা, য়েরূপ অভিমাত্র-শোভাসম্পায়া, তাহাতে ইনি যাহার ভার্যা না হইবেন, তাহার জন্মে প্রয়োজন কি ? অতএব ভূপালগণ। য়িল তোমাদের প্রক্রন্তই অভিমান থাকে, তাহাইলে, আমি যাহা বলিনাম, তাহা বিশেষরূপে চিঙা করিয়া, যুক্তে এরূপ যত্র কর, যাহাতে আমাকে নিজ্জিত করিয়া, ইহাকে পত্রী করিতে পার।

মার্ক শ্রেম কহিলেন, এই বলিয়াই তিনি, অন্ধকার হারা পাদপপুঞ্জের ভায়, সমুদায় মহীপতিকে আছেয় করিয়া, শরবর্ধণে থার্ত্ত হইলেন। দেই বীর মহীপালবর্গও রাশি রাশি শর, শক্তি, ঋষ্টি ও মুদগর সকল বর্ষণ করিছে লাগিলেন। দম অবলীলাক্রমেই তংসমন্ত ছেদন করিয়া ফেনিলেন। এই রূপে দম ও নরপতিগণ পরপ্রের প্রেরিত অস্ত্রশ্ত্র সকল ছেদ প্রতিছেদে করিতে আরম্ভ করিলেন। ক্ষিতিপালপুরগণের সহিত দমের তাদৃশ যুদ্ধ উপস্থিত হইলে, মহানন্দ অভ্নাহতে দমের সমীপে সমাগত হইলেন। দম তাহাঁকে অভ্নাহতে আদিতে দেখিয়া, প্রন্দর যেমন বারিবর্ষণ করেন, দেইরূপ অনবরত শরবর্ষণ আরম্ভ করিলেন। মহানন্দ তৎক্ষণাৎ অভ্না হারা তাহাঁর সেই সকল শস্ত্র প্রারাভার করিয়া ছেলিলেন। অনভর অভাভ শর সকলও ছেদন করিয়া, রোমভরে দমের রথে আরোহণপুর্কিক তাহার সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। মহাবীয়া মহানন্দ অনেকক্ষণ যুদ্ধ করিলে, দম হস্তলাঘববশতঃ কালানলস্মিভ শর তদীয় হৃদয়ে মোচন করিলেন। তাহাতে, মহানন্দের বক্ষস্থল বিদীর্ণ হইয়া গেল। তথন তিনি হল্মলগ্র দেই বিন নেছেই উৎকর্ষণ করিয়া, দমের প্রতি উজ্জল অনি প্রেয়োগ করিলেন। দম পতনসমকালেই, উন্ধার ভায় প্রতিভাবিশিষ্ট ঐ অসি শক্তিপ্রহারে ছেদন করিয়া ফেলিলেন। অনন্তর তিনি বেতসপত্রের আহাতে মহানন্দের মত্তক শ্রীর হইতে বিদ্ধিল করিলেন।

মহানদ্দ নিহত হইলে, অধিকাংশ নরপতিই সংগ্রামে পরাজ্ব হইলেন। কুণ্ডনাধিপতি বপুআন অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। সেই দাক্ষিণাত্য-নিবাদী মহীপালপুত্র বলগর্মদান্বিত হইয়া,
রণ আশ্রমপূর্কক দমের সহিত যুদ্ধ প্রত্ত হইলেন। দম তাঁহার প্রচণ্ড করবাল, সার্থির মন্তক
ও ধ্বজ লঘুহত্তা প্রদর্শনি কাটিয়া ফেলিলেন। এজা ছিল্ল হইলে, বপুমান্ বহু-কণ্টক্বিদ্ধ
গদা যেমন গ্রহণ করিলেন, দম তেমনি সম্বরভাগহকারে তাঁহার হতে পাকিতে থাকিতেই উহা
ছেদন করিয়া দিলেন। তিনি পুনরায় যেমন অভ্য এক উংকৃষ্ট আয়ুধ গ্রহণ করিলেন, দম তেমনই
তাঁহাকে শরাঘাতে বিদ্ধ করয়া, ভূমিতলে নিপাতিত করিলেন। তিনি বিহলে-শরীরে কম্পিত
দেহে ভূপাতিত হইয়া, যুদ্ধ আর প্রত্ত হইলেন না। আয়্রবান্ স্থানা দম তাঁহাকে তথাভূত
অযুদ্ধতি নিরীক্ষণ কবিয়া, প্রভাগে করত, স্থানাকৈ সমভিব্যাহারে লইয়া, প্রভান করিলেন।
তথন দশাগিদিপতি প্রীতিনান্ হইয়া, বিধানান্ধারে দম ও স্থানা উভরের বিবাহ সম্পাদন করিলেন। দম ক্রেদার হইয়া, তথায় পুরে কিয়হকাল যাপন করিয়া, পরে ভাগ্রের সহিত নিজ গৃহে
স্থাগত হইলেন। আদিবার সময় দশাগ্পতি বহুমংথা অয়, হয়ী, রণ, গো, গর্দ্ধ উট্র, দাদ,
দাসী, বস্ত্র ও প্রস্থার বাহুক্সকরপ প্রদান এবং ক্রান্ত প্রস্থাত পরিপূর্ণ করিয়া, তাহাকে
বিস্ক্রন করিলেন।

ইতি স্থমনাস্বর্গ্র নাম এর্প্রিংশদ্ধিকশত্তম অধ্যায়।

## চতুন্ত্রিংশদধিকশততম অধাায়।

মার্কণ্ডের ক্রিলেন, মুনিসভ্য! দন স্থানাকে পদ্দী লাভ করিরা, পিতা ও মাতা উভয়েরই চরণে প্রণাম করিলেন। স্থান্ন স্থানাও তাঁহাদের চরণে প্রণতা হইলেন। আনন্তর তাঁহার। পুঞা ও পুঞাবধু উভয়কেই আশীঃ প্রয়োগ-সহকারে অভিনন্দিত করিলেন। দম কতদার হইরা, দশার্থ-নগর হইতে সমাগত হইলে, রাজা জারিষাভের পুরন্ধ্যে মংহাৎস্ব প্রবৃত্তি হইন। অয়ং দশার্থ-পিতির সহিত দক্ষ-সভ্টন ও সম্পন্ধ নরপতি প্রাজিত হইয়াছেন; প্রবণ করিয়া, রাজা নরিষ্য আফ্লানিত হইলেন।

এদিকে মহারাজনক্ষন দম স্থানার সহিত উৎকৃষ্ট উপ্যান, বনভূমি, প্রাণাদ ও গিরিগালু-সমূহে বিহার করিতে লাগিলেন। ঐ সময়ে মহীপতি নরিবাস্ত যাবতীয় ভোগ সম্ভোগপূর্বক বরঃ-পরিণতি প্রাপ্ত ইয়া, দমকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিয়া, যশ্বিনী পদ্মী ইন্দ্রনোর সহিত অরণো গমন ও বান প্রস্থ বিধানে তথায় অবস্থিতি করিলেন।

দক্ষিণাদেশ-নিবাদী সংক্রন্সনের পুল্ল অতিমাত্র তুর্ত্ত বপুখান্ স্থ্যমাত্র অনুগামিবর্গে পরিবৃত্ত হইরা, ঐ বনে মৃগ্যা- করিতে নিয়াছিল। সে মলপদ্ধিল তাপদবেশধারী রাজা নরিষ্যন্ত ও তদীয় সহধ্যিনী তপঃপ্রভাবে অতীবহর্কলে ভাবাপনা ইন্দ্রদেনাকে দর্শন করিয়া, জিজ্ঞাদা করিল, আপনি কে, আহ্মণ, না ক্ষত্রিয়, অধ্বা শুলু বনচারী ও বানপ্রস্থায়দারী ইইয়াছেন, আমারে বলুন ? রাজা নরিষ্যন্ত মৌনত্রত অবলখন করিয়াছিলেন। সেইজ্ল উত্তর দিলেন না। তদীয় পত্নী ইন্দ্র-সেনা সমুদ্র যথাত্বও তাঁহার গোচর করিলেন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, রপুমান্ আপনার শত্রুর পিতা নরিষ্যন্তের পরিচয় প্রাপ্ত ইইয়া, এত দিনে পাইয়াছি, বলিয়া, কোপতরে তাহার জটাজ্ট গ্রহণ করিল। তদ্দশনে ইন্দ্রদেনা হাহাকার-পুরংদর বাস্পাদগদ বচংন রুদ্যানা হইয়া উঠিলেন। অনন্তর বপুমান্ রোষভরে থড়া আকর্ষণ-পুর্ক বলিতে লাগিল, যে মামারে সমরে জয় করিয়াছে এবং যে আমার স্থমনাকে হরণ করিয়া লইয়াছে, দেই দমের পিতাকে বধ করিব। দম মাগিয়া রক্ষা কয়ক। যে, কয়ার্থ সমাগত নিথিল মহীপালপুত্রদিগকে পরাভূত করিয়াছে, দেই ছম্বি দমের পিতাকে বধ করিব।

মার্কণ্ডেয় কহিলেন, ছরাচার অবনিপতি বপুমান এই বনিয়া, রোদনপ্রায়ণা ইন্দ্রদেনার সমকে নরিষাত্তের মন্তক ছেদন করিয়া ফেলিল। তদর্শনে মনিজনেরা ও অভাত বনবাদিরা বার্যার তাহারে ধিকার দিতে লাগিলেন। সে তাহা দেখিয়া অপুরে প্রস্থান করিল। বপুমান চলিয়া গেলে ইক্রদেনা দীর্ঘনিখাস ত্যাগ করিয়া, পুত্রের নিকটে একজন শুদ্রতাপদকে এই বলিয়া, পাঠাইয়া দিলেন, তুমি শীঘ্র গিয়া, আমার পুত্রকে আগার কথা বল। তুমি আমার স্বামীর মৃত্যুবৃত্তান্ত স্বিশেষ জান। অতএব আর তোমাকে কি অধিক বলিব। তথাপি, আমি অতীব ছঃথিত হৃদ্ধে যাহা ব্লিতেছি, তাহা আমার পুত্রকে ব্লিও। তুমিও স্বচক্ষে মহীপ্তি নরিষ্যাষ্ট্রের ঈদশী লজ্মনা অবলোকন করিয়া যাইতেছ। আমার পুত্রকে বলিও, তুমি এখন চারিবর্ণের পরিপাশক ও প্রকৃত অধিকারবান রাজা হইয়াছ। তোমার হত্তেই সকলের রক্ষাভার ন্তুত্ত হইরাছে। অতএব ভূমি যে, আশ্রমচারী তাপদগণের রক্ষা করিতেছ না, ইহা কি তোমার পক্ষে উপযুক্ত হইতেছে ? আমার স্বামী নরিষাস্ত তপস্বী হইয়া, তপস্তা কুরিতেছিলেন। তথাপি, ত্রমি থাকিতেও, তিনি অনাথের ভাষ, বপুমানের হত্তে হত হইলেন। আমি বিলাপ করিতে লাগিলে, বপুমান বিনাপরাধে কেশাকর্ষণপূর্বক তাঁহারে সংহার করিল। রাজার এই খ্যাতি চিরকালের জন্ম রহিয়া গেল। যাহা হউক, এরপ অবস্থায় যাহা করা কর্ত্তব্য, ধর্মের অব্যা-ঘাতে তদ্মুরপ অনুষ্ঠান কর। আমি এখন তাপদী হইয়াছি। ইহার অধিক আর আমার বলা কর্ত্তবা নহে। তোমার পিতা একে বৃদ্ধ, তাহাতে তপম্বী, তাহাতে আবার কোন অপরাধেই দ্বিত নহেন। এরপ অবস্থায় যে ব্যক্তি তাঁহাকে বধ করিয়াছে, তাহার যাহা প্রতিকার করা . কর্ত্তব্য, তাহা বিশেষরূপে চিন্তা কর। তোমার সর্বশান্তার্থ-তত্ত্বত অনেক বীর মন্ত্রী আছেন। তাঁহাদের দৃহিত মন্ত্রণা করিয়া, এরূপ অবস্থায় যাহা করা কর্ত্ব্যা, তাহা কর। নরাধিপ ! আমরা फांभनी: बामारमञ्ज अविश्रम अधिकांत्र नांहे। विमृत्रः थत कनक द्यमन यवन कर्ज्क हठ हहेशाहितन, বংব। তেমনি দেই বপুলান ভোমার পিতাকে সংহার করিয়াছে। অহুররাজ জভের পিতাকে ভুজনমগ্রণ দংশন করিলে, দে অধিল পাতালবাদী দর্পদিগকে নিহত করিয়াছিল। প্রাশর, স্বকীয় পিতা রাক্ষম কর্তৃক হত হইরাছেন, ভিনিয়া, অমিতে রুৎম-রাক্ষ্যবংশ নিপাতিত করিয়াছিলেন। শীয় বংশেরও কেই অবমাননা করিলে, ক্ষত্রিয়েরা যথন তাহা সহু করেন না, তথন আর পিছ- হতার কথা কি বলিব ? অথবা, তোমার পিতা নিহত হন নাই এবং তাঁহার উপরিও শল্প নিপাতিত হয় নাই। আমার মতে তোমারই উপর শল্পাবাত হইয়াছে এবং তোমাকেই নিহত করিয়াছে। যে ব্যক্তি বনবানী দিগের উপর শল্প প্রয়োগ করে, তাহাকে কেই বা ভয় করে ? তবে, তুমি
রাজার পুত্র। তোমাকে মারিলেই, ভয়ের বিষয় হইয়া থাকে। যাহা হউক, সে তোমার পিতাকে
মারে নাই, তোমাকেই মারিয়াছে। অতএব, মহারাজ ! ভ্তা, জ্ঞাতি ও বাদ্ধবের সহিত সেই
বপুমানের সম্বন্ধ যাহা করা কর্ত্বা, সম্বর তাহা কর।

মার্কণ্ডের কহিলেন, ইন্দ্রণাগকে এইপ্রকার আদেশপ্রকানপূর্বক বিদায় দিয়া, সেই মনস্বিনী ইন্দ্রদেনা পতিদেহ আলিঙ্গন করিয়া, অনলে প্রবেশ ক্রিলেন।

ইতি ইক্রদেনার অগ্নিপ্রবেশ নাম চতুরিংশদ্ধিকশততম অধ্যায়।

## পঞ্চত্রিংশদ্ধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, শূদুতাপদ ইন্দ্রদাদ ইন্দ্রদোর আজ্ঞাত্মদারে দুমের গোচরে ভদীয় পিতার নিধনর ভাস্ত যথাযথ বর্ণন করিল। দে পিতার বধরু ভাস্ত কীর্ত্তন করিলে, দম, ঘুতাহত হতা-শনের স্থায়, ক্রোধে অতিমাত্র জলিয়া উঠিলেন। মহামুনে ! 'ধীরস্বভাব দম ক্রোধানশে দৃষ্মান হইয়া, কর দারা কর নিজেষণ করিয়া, বলিতে লাগিলেন, আমি পুত্র জীবিত থাকিতে, অতীব-নুশংদ বপুলান মনীয় কুলের পরিভব করিয়া, আমার পিতাকে অনাথের স্থায়, বধ করিল। ছটের দমন ও শিতের পালনেই আমরা নিয়োজিত হইয়াছি। শক্ররা আমার পিতাকে নিহত দেখিয়া, এখনও জীবিত রহিয়াছে। অতএব আবে অধিক বাক্যবায়ে প্রয়োজন কি ? হা তাত। বলিয়া, বিলাপ করিয়াও, আর ফল কি ? যাহা কর্ত্তব্য, এখনই ভাহা করিব। যদি আমি দেই বপুলানের শরীরদম্থিত রক্তে পিতার তর্পণ না করি, তাহাহইলে, অনলে প্রবেশ করিব। দে আমার পিতাকে বিনিপাতিত করিয়াছে। অতএব যুদ্ধে তাহার শোণিতপাত করিয়া, তদ্ধারা যদি পি তার উদককার্য্য না করি এবং তাহার মাংস দারাও যদি সমাগরপে দিজভোলন না করাই. ভাহাহইলে অনলে প্রবেশ করিব। স্থর, অস্থর, যক্ষ, গন্ধর্ম, বিদ্যাধর ও নিদ্ধাণ সকলে মিলিত হুইয়া, তাহার যদি সাহায্য করেন, তাঁহাদিগকেও রোষসমন্বিত হুইয়া, অস্ত্রানলে ভশ্মীভূত করিব। দেই শোর্যাধীন, ধর্মধীন, প্রশংসাধীন, দাকিণাতাকে সমরে নিহত করিয়া, পরে সম্প্র মেদিনী ভোগ করিব। যদি নিহত করিতে না পারি, তাহাহট্লে, অনলে প্রবিষ্ট হইব। সেই অভিমাত্র তরায়া বপুয়ান সামার তপোনিরত, বৃদ্ধ, মৌনত্রত, বদস্তিত ও শাস্তবাক্য পিতাকে যেমন বধ ক্রিয়াছে, আমি তেমনি তাহাকে অদাই অধিল বন্ধু, মিঅ, পদাতি, হন্ত্রী, অশ্ব ও বলসমেত সংহার ক্রিব। এই আদি থড়া ও ধরু ধারণপূর্ধক রথে আরোহণ করিয়া, অরিদৈন্তে দমুৎপতিত হইয়া. ধে সংহারক্তো প্রার্ভ হইব, সমস্ত দেবগণ সমবেত হইয়া, ভাহা অবংশাকন কর্মন। সে অন্য আমার সহিত সংগ্রামে প্রবৃত্ত হইলে, বে বে তাহার দহার হইবে, আমি নিজ-বাছমাত্র দৈল্প-সাহাযো আন্ত তাহাদের নিঃশেষে কৃণক্ষ করিবার জন্ত সমুদ্যত হইলাম। বলি দেবরাজ কুলিশ হস্তে মথবা যদি পিতৃপতি যম রোষভরে দণ্ড উদ্যত করিয়া, কিখা ধনপতি, বমণ ও অর্ক ইহারাও ষদি সংগ্রামে ভাহার রক্ষা করিতে যত্নবান হন, ভাহাইইলেও, নিশিত শরবরপরম্পরা প্রয়োগ क तिया. मश्चात कतित। आभात भिठा नियं वर्मात अ मर्सामानित्र हिट हरेया, मर्सफुट रेम्बी স্থাপন ও কাননবাদ আশ্রম করিয়া, বৃক্তইতে বিগণিত ফলমার ভক্ষ করিতেন। আমি

তাঁহার পুত্র ও সকলের প্রভূ। আমি বর্ত্তমান থাকিতে, যে তাহাঁকে বধ করিয়াছে, অন্য গৃত্তগণ তাহার মাংস ভক্ষণ ও ক্ষির পান করিয়া, ভৃপ্তিলাভ কর্মক।

ইতি দ্যবাক্য নাম প্ঞ্তিংশদ্ধিকশ্তত্ম অধ্যায়।

# ষট্তিংশদধিকশততম অধ্যায়।

মার্কণ্ডের কহিলেন, নরিষ্যন্তের পুর দম এই প্রকার প্রতিজ্ঞা করিয়া, রোষ ও অমর্ধবাশে ঘূর্ণিত লোচন হইয়া, পাণি দারা শাশ্রু আবরণ, হা হতোত্মি বলিয়া পিতৃদেবের ধ্যান ও দৈবের নিলা করত সম্পার মন্ত্রী ও পুরোহিতকে আনেয়ন করিলেন। তাঁহারা সকলে একত্র সমবেত হইলে, বলিতে লাগিলেন, পিতৃদেব অর্গে গমন করিয়াছেন। শুদ্র ১পস্বী যাহা বলিয়া গেল, তাহা আপনারা ভনিয়াছেন। একণে ইতিকর্ত্রতা নির্দেশ করুন। আমার পিতার্দ্ধ ও তপস্বী এবং আনার জননীর সহিত বানপ্রস্ত্রত আশ্র করিয়া, মৌনব্রত অবলম্বন করিয়াছিলেন। ঘুটায়া বপুমান আমার জননাকৈ জিলাদা করিয়া, সম্পায় তথ্য অবগত হইয়া, স্বাপাণি দারা খঙ্গা আকর্ষণপূর্কক সেই লোকনাথকে খনাখবং হত্যা করিয়াছে। জননা আমাকে উদ্দেশ করিয়া, বিক্লার প্রধানপূর্বক হেতাশনে প্রবিষ্ঠি ইয়াছেন এবং তদ্বাহাম পতিকে আলিখনপূর্কক তিদিশালয়ে গমন করিয়াছেন। তিনি যাহা বলিয়া পাঠাইয়াছেন, অদ্য আমি তাহা করিব। অতএব হত্তী, অশ্ব, রণ ও পদাতি সৈন্ত সজ্জিত করা হউক। পিতৃত্বৈর নির্যাত্রন ও তদীয় হত্যাকারীয় সংহরণ ও জননীর আদেশ পালন না করিয়া, আমি কিয়পে প্রাণধারণে উৎদাহা হইব ?

মার্কণ্ডের কহিলেন, মন্ত্রিগণ তাঁহার এই কপা গুনিয়া, হাহাকারপুরঃদর তাহাঁর আদেশায়ুরপ অনুগানে প্রবৃত্ত ও দুর্ঘনায়মান হইয়া, ভৃত্য, বল, বাংন ও পরিকরের সহিত থজা, শক্তিও ঋষ্টিহস্তে তৎক্ষণাৎ বহির্গত হইলেন। তথন দমও ত্রিকালবিৎ স্বকায় পুরোহিতের আশীর্কাদ প্রহণ ও অহিরাজের ভায় নিম্মান বিদর্জনপূর্বক বপুয়ানের উদ্দেশে যুদ্ধানা করিলেন এবং সীমাপালাদি সামস্তদিগকে সংহার করিতে করিতে, দক্ষিণ্দিকে তরা সহকারে গমন করিতে লাগিলেন। অনস্তর তিনি অমাত্য, ভৃত্য ও বাহনাদির সহিত সমাণত হইলে, বপুয়ান্ তাহা অবগত হইয়া, অক্ষিত ভ্লম্যে আপনার সৈভালিগকে যুদ্ধের জন্ম আদেশ করিয়া, নগর হইতে বহির্গত হইয়া, তাহার নিকট এই বনিয়া দৃত পাঠাইলেন, যত শীত্র পার, তৃমি আমার নিকট আগমন কর। বে ক্ষন্তিরাধ্য । তোমার পিতা তোমার অপেকা করিতেছে। অত এব তৃনি আমার নিকট ভার্যার সহিত আগমন কর। এই শিলাশাণিত পীত্রন বাণ দ্কল মদীয় বাছ হইতে বিনির্কত হইয়া, তোমার শরীরভেদপূর্বক ক্ষির পান করেবে।

মার্কণ্ডের কহিলেন, দন দৃত্যুথে এই সমস্ত শ্রবণ করিয়া, আপনার পূর্বোক্ত প্রতিজ্ঞা দারণ ও উরগের ভায় নিখাদ বিদর্জন পূর: সর ছরিতপদে গমন ও তাহাঁকে এই বিদিয়া যুদ্ধার্থ আহ্বান করিলেন, যে ব্যক্তি প্রকৃত পূক্ষ, সে কথন বাক্যমাতে গর্ম করে না। অনন্তর দম ও বপুমান্ উভয়ের অতীব যুদ্ধ উপস্থিত হইল। রথী রথীর সহিত, হস্তী হস্তীর সহিত ও অখ অখের সহিত্যুদ্ধ করিতে লাগিল। তাহাতে, সেই যুদ্ধ তুমূল হইয়া উঠিল। সম্দায় দেবগণ, নিদ্ধাণ, গদ্ধর্মগণ ও যাগশীলগণ এই যুদ্ধ দেখিতে লাগিলেন। দম ক্রোধভরে যুদ্ধে প্রস্তুত হইলা, ব্রহ্মণ্ পৃথিবী কম্পিতা হইয়া উঠিলেন। এমন গল নাই, বা এমন রথী নাই, বা এমন অখও নাই, বে তাহার বাণ সন্থ করিতে পারিল। তথন বপুমানের সেনাধ্যক্ষ দেগের সহিত্যুদ্ধ আরম্ভ করিল।

শম শরামাতে তাহার হাদর গাঢ়তর বিদ্ধ করিলে, সে যেমন নিপ্তিত হইল, তেমনি সৈম্ভপ্তল পলায়নপর হইরা, প্রস্থান করিল।

তথন শক্রণমন দম তাহাদের স্বামী বপুমান্কে কহিতে লাগিলেন, রে ছষ্ট। আমার পিতৃদেব তপন্থী হইরা, শস্ত্রতাগপূর্বক তপশ্চরণে প্রবৃত্ত হইরাছিলেন। তুমি তদবহার ভাইাকে দংহার ক্রিরা, এখন কোণার বাইতেছ ? বদি ক্ষিত্র হও, তাহাহইলে, গমনে ক্ষান্ত হও।

মার্কণ্ডের কহিলেন, তথন বপুমান্ সদন্তে নিবৃত্ত হইয়া, অম্জ পুত্র, সম্বন্ধী ও বাদ্ধবগণের সহিত রথারোছণে যুদ্ধ করিতে লাগিলেন এবং শরাদনবিনিমুক্তি শরপরপারার আকাশ আছের করিরা কেলিলেন। অনস্তর তিনি শর সকল প্রয়োগ করিয়া, রথ ও অখের সহিত দমকে পরিপূর্ণ করিলে, তিনি পিতৃবধজনিত রোবভরে দেই সকক্ষ শর ছেদন করিয়া, এক এক বাণে বপুমানের সপ্ত পুত্র, অমুজবর্গ এবং সম্বন্ধী ও মিত্রালিগকে যমসদনের অতিথি করিলেন। আছাজ ও বাদ্ধবগণ সকলে নিহত হইলে, বপুমান্ জাতকোধ হইয়া, আশীবিষদদৃশ শর সকল সন্ধানপূর্ধক দমের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। মহামুনে। দম তাহাঁর প্রেরিত বাণ সমন্ত ছেদন করিয়া কেলিলেন। তথন পরপ্রের বধবাদনায় শরাবাতপূর্বক পরপ্রের ধয়ু ছিল্ল করিয়া, অতীব রোবভরে যুদ্ধে প্রের হইলেন। তাহাঁরা উভয়েই মহাবল। উভয়েই থড়াতাহণপূর্বক উত্তরণপূর্বঃ- সর যুদ্ধকীড়া আরম্ভ করিলেন। ঐ সময়ে দম বনবানী পিতৃদ্বেকে কণকাল ধ্যান করিয়া, কেশাকর্ষণ সহকারে বপুয়ান্কে ধরাতলে পাতিত ও তদীয় শিরোধরায় পাদপ্রদানপুরঃসর ভুল্ল উদ্যত করিয়া, বলিতে লাগিলেন, আমি এই ক্ষাভ্রমকুলকলক্ষ বপুমানের হৃদন্ধ বিপাটিত করিতে ভি: দেবগণ, মন্থ্যগণ, নিজ্বণ ও প্রগণণ সকলে দশন কন্ধন।

মার্কণ্ডের কহিলেন, এই বিনিয়া দম অসির আঘাতে বপুমানের হৃদয় বিদারিত করিয়া, ভদীর কিধিরে সান করিতে উদাত হইলে, দেবগণ তাইাকে প্রতিষেধ করিলেন। তথন দম তাঁহার ক্ষিরে উদক্রিয়াও মাংসে পিওদান করিয়া, রাক্ষ্যকুল্যমুভূত রাক্ষণিদিগকে ভোলন করাইলেন এবং পিতার ঋণ শোধ করিয়া, পরে পুনরায় অকীয় পুরে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। স্থাবংশে এবম্বিধ নরপতি সকলই জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। তদ্ভিয়, অভাত্ত শৌর্যাশালী, বৃদ্ধিশালী, যাগশীল ও ধর্মশীল নৃপতিগণও অবতীণ ইইয়াছিলেন। তাহারা সকলেই বেদান্তপারগ। তাহাদের সংখ্যা করা সাধ্যনহে। তাইাদের চরিত্র শ্বণ করিলে, লোকে পাপ হইতে বিনিম্পুক্ত ইয়া থাকে।

ু ইতি দমচরিত নাম বট্ঞিংশদধিকশততম অধ্যার।

## সঞ্জেশেদ্ধিকশতত্ম অধ্যায়।

পশিরা কহিলেন, মহাত্পা মার্কণ্ডেয় এই প্রকার করিয়া, ক্রোষ্ট ক্লিকে বিদার দিয়া, মাধ্যক্তিকী ক্রিয়া সমাধান করিলেন। মহামূনে। আমরা তাঁহার নিকট বাহা শুনিয়াছিলায়, তোমাকে তাহা বিশিলায়। পুর্বে স্বয়ং স্বয়ন্ধু মুনি মার্কণ্ডেয়কে এই মনাদিদির বিষয় বলিয়াছিলেন। তেই পুরা ও পবিত্র কথা পাঠ ও প্রবণ করিলে, লোকের কায়ুর্লি হয়, য়য়্দুদার কামার্থদিরি হয় এবং সর্কবিধ পাতাশক পরিহারপ্রাপ্তি হইয়া থাকে। তুমি প্রথমে রে প্রয়াচত্ত্রয় করিয়াহিলে; তাহার সহিত পিতাপুত্রের সংবাদ, ক্রন্ধার ক্রেয়া, মহুগণের উৎপত্তি ও নরপতিগণের চরিত্র তোমার নিকট বরিবাম। আর কি শুনিতে ইচ্ছা হয়, বল। এই সকল বর্তান্ত প্রবণ বা সভা সকলে পাঠ করিলে, লোকে সমুদায় পাত্তক বিধৃত করিয়া, চরমে ব্রন্ধে লম্ম পাইয়া থাকে। পিতামহ যে অষ্টাদশ পুরাণ কীর্ত্তন করিয়াহেন, তাহার মধ্যে এই স্ক্রিঝাত মার্কণ্ডেয় পুরাণ সপ্তম্ম, জানিবে। ব্রাহ্ম, পাল, বৈষ্ণব, শৈব, ভাগবত, নারদীয় সপ্তমু মার্কণ্ডেয়, ক্রিম আবেয়, নবম ভবিষা, দশম ব্রহ্মবৈর্ত্ত, একাদশ নৃদিংহ, ঘাদশ বারাহ, ত্রেমান্ত ক্রেম পাঠ বা নিত্য ত্রিসন্ধান লপ করিলে, আধ্যমণ্ডের কলপ্রাপ্ত হয়য়া থাকে।

তন্মধ্যে এই চতুর্বিধ-প্রশ্ন-সমন্ত্রিত মার্কভেরনামক পুরাণ শ্রবণ করিলে, ক্রকোটিশত-সম্ভূত্ত পাপ বিনষ্ট হয়। তিজির, ব্রহ্মহত্যাদি পাপ সমস্ত ও অন্তান্ত অগুভ সকল, বাতাহত তুলার ন্তার্ম, বিনাশ করিয়া থাকে। পুন্ধরদনিলে স্নান করিলে, যে পুণ্য সঞ্চিত হয়, ইহার শ্রবণেও তদমুরূপ পুণাপ্রাপ্তি সংঘটিত হইয়া থাকে। বদ্ধাই হউক, মৃতবৎগাই হউক, তত্তত: ইহা শ্রবণ করিলে, মর্কলন্থণসম্পন্ন পুত্র প্রদাব করিয়া থাকে। ইহা শ্রবণ করিলে, ধন, ধান্তা ও অক্ষম্ন স্থানি লাভ হয়। স্থানাম্বা ও উত্তর্কর্মা ইহা শ্রবণ করিলে, সর্কপাপবিনির্দ্ধ ও স্থানোকে মহিত হইয়া থাকে। বিজ্পত্তম! ইহার শ্রবণ আয়ু, আরোগ্য, এখর্ষ্যা, ধন, ধান্তা, স্থানি ও রংশপ্রাপ্তি সংঘটিত হয়। ইহা সমগ্র শ্রবণ করিয়া, যাহা করিতে হইবে, তাহা শ্রবণ করে। বিচক্ষণ ব্যক্তি তৎকালে অমি আধানপূর্বাক হোম এবং এই পুরাণ ধ্যান পুরঃসর হুৎপত্মে গোবিন্দের ধ্যান করিবেন। পুরাণপাঠককে সপত্নীক পুজা করিয়া, পরে সবৎদা ছুগ্পবজী গাভী, শশুবতী ভূমি, হিরণ্য, রজত, বাহন ও গ্রামাদি বস্তু সকল ঘ্যাশক্তি দান করা নৃপ্গণের কর্তব্য। পাঠককে সস্তুই করিয়া, স্বতিবাচন করিতে হইবে। পাঠককে পুজা না করিয়া, একমাত্র শ্লোকও যে ব্যক্তিশ্রবণ করে, সে পুণালাতে বঞ্চিত হয়; পণ্ডিতেরা তাহাকে শাস্ত্রচৌর বলিয়া থাকেন। দেবগণ বা পিতৃগণ তাহার প্রতি সন্থই হন না। পিতৃগণও তাহার প্রদন্ত শ্রাদ্ধ গ্রহণ করেন না। সে স্নানতীর্থকলাভেও সমর্থ হয় না। বেদপাঠকগণ তাহাকে শাস্ত্রচোর বলিয়া নিন্দা করেন।

মার্কণ্ডের পুরাণপাঠ সমাপ্ত হইলে, উৎসবে প্রবৃত্ত হইবে এবং সর্ক্রপাপবিনির্ম্মুক্তির জন্ত পর-বিনী ধের দান করিবে। তি উন্ন, সপদ্ধীক আদ্ধাকে বসন সকল, রত্ন সকল, কুণ্ডলম্পাল, কঞুক, উন্ধীশ, শ্যা, উপানং, স্বর্ণমূলিকা, সপ্তধান্ত, ভোজনার্থ স্বতপাত্রের সহিত কাংশুপাত্র, দান করিতে হইবে। বিজ্ঞান্ত থিইরপ করিলে, লোকে রুত্রকতা হইরা গাকে। সমাগ্বিধানে ইহা শ্রবণ করিলে, সহস্র অখনেধ ও শত রাজস্ব যজের ফললাত হয়; কখন যমের ভর থাকে না; নরকেরও ভয় করিতে হয় না; সর্ক্রপাপবিনির্ম্মুক্ত হইরা, বংশের পবিত্রতাসাধনে সমর্থ হওয়া যার; বংশও সর্কাণ অবিচিল্ন হইরা থাকে, সন্দেহ নাই; ইল্পানোক ও তথা হইতে স্নাতন বন্ধ্রণাকে গমন করিতে পারা যার; প্নরায় আর তথা হইতে চুত্ত হইরা, মহ্বা হইতে হয় না।

শাধিক কি, এই পুরাণ শ্রণমাত্রেই পরমবোগ অধিকৃত হয়। নাত্তিক, স্বধার্শিক, বেদনিন্দক, শুক্লবিবেষক, ভগন্তত, পিতৃমাতৃপরিত্যাগী, বুর্ণটোর, মর্যাদাভদকারী, আতিদ্বক, এই দকন বাজিকে, প্রাণ কঠাগত হইলেও, ইহা দান করিবে না। লোভবশতঃ, মোহবশতঃ, বিশেষতঃ ভরবশতঃ ইহা পাঠ করিবে বা করাইলে, নিশ্চয়ই নরকে যাইতে হয়।

কৈমিনি কহিলেন, বিজগণ! ভারতেও আমার যে সন্দেহ ফোটন হয় নাই, আপনারা মৈত্রীবশতঃ তাহা করিলেন। আর কে এরপ করিবে ? অত এব তোমরা দীর্বায়ু হও, নীরোগ হও, অপথে প্রেরত হও, সাংখ্যোগে অব্যভিচরিত জ্ঞান লাভ কর; পিতৃশাপক্ষত-দোঘদনিত দৌর্দানত পরিহার কর। এই বলিয়াই ভিনি স্বকীয় আশ্রমে সমাগত হইলেন। যাইবার সময় সেই পরম মহাভাগ জৈমিনি উল্লিখিত বিল্লাভ্রমিণিকে পূলা করিলেন এবং তাহাঁদের উদীরিত প্রমোদার বাক্য তিনা ক্রিতে লাগিলেন।

ইতি মার্কণ্ডের পুরাণ-ফলশ্রুতি নাম সপ্তক্রিংশদ্ধিকশতভম অধ্যার।

মার্কভেয় পুরাণ সমাপ্ত।

ওঁ নমশ্চণ্ডিকার্টয়।

এ: এ: এ:।

